कॉम्पैरेटिव
मेटिरिया मेडिका ।

प्रैक्टिस, थेराप्युटिकस, रेपर्टरी और मेटिरिया मेडिका-समन्वित

[चिकित्सक, छात्र तथा नये विद्यार्थियोंके लिये]

कलकत्ता "माडर्न होमियो-कालेज' के अध्यापक और

"प्रैक्टिसनर्स गाइड" तथा "कालेरा ट्रिटमेण्ट" के ग्रन्थकार

डाक्टर

श्रीनारायणचन्द्र घोष, एम० डी० (U S A)

प्रणीत

प्रकाशक—

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग कम्पनी

१६४, बहुबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

मूल्य ६॥)

प्रकाशक—
श्रीप्रफुल्लचन्द्र भड
हैनिमैन पब्लिशिङ्ग कम्पनी
१६५ बहूबाजार स्ट्रीट,
कलकत्ता।

मुद्रक—
श्रीमोतीलाल सरकार
नन्दी प्रिण्टिङ्ग वर्क्स
२२७ रासविहारी एेविन्यू
कलकत्ता।



डा' एन, सि, घोष, एम-डि (I S A)



औषध-सूची।

— * —

नोट—× निशान लगी दवाएँ मूल औषधिके अन्तर्गत तुलना-मे दी गयी हैं, पृष्ठ सख्याके अनुसार देखें।

कॉम्पैरेटिव
मेटिरिया मेडिका।

———०※※०———

होमियोपैथी क्या है ?

किसी भी स्वस्थ शरीरमें, किसी एक दवाका बार बार प्रयोग करने पर, दवाके लक्षणसे उत्पन्न हुए कितने ही लक्षण प्रकट हुआ करते हैं। यदि किसी बीमारीमें वे ही सब लक्षण प्रकट हों, तो उस रोगमें उसी दवाकी सूक्ष्म मात्राका प्रयोग कर जो चिकित्सा की जाती है, उसे होमियोपैथी या सदृश-विधान चिकित्सा कहते हैं।

इस चिकित्साकी नींव महात्मा हैनिमैनने डाली थी। वे जर्मनीके एक कीर्त्तिप्राप्त उच्चपदवीधारी एलोपैथिक डाक्टर थे। कितने ही प्रधान प्रधान चिकित्सालयोंमें बहुत-से रोगियोंका इलाज कर, अन्तमें यह बात उनके ध्यानमें आयी कि अनुमानसे रोग-निर्वाचन (diagnosis) कर, और कितनी ही जगह अनुमानपर निर्भर रह कर दवा देनेके कारण भयंकर हानियाँ होती हैं। यहाँतक कि इस तरह बहुत-से रोगियोंकी मृत्यु तक हो जाया करती है।

इसी वजहसे उन्हें बहुत ही अनुताप हुआ और अन्तमें उन्होंने इस अम्पूर्ण चिकित्सा द्वारा, असत् उपायसे धन-उपार्जन करनेकी लालसा ही त्याग दी और स्थिर किया कि अब पुस्तकोंका भाषान्तर कर ही वे अपनी जीविका निर्वाह करेंगे। एक दिन, एक "मेटिरिया-मेडिका" का अनुवाद करते समय उन्होंने देखा कि, शरीर स्वस्थ रहने पर यदि सिनकोनाकी छाल सेवन की जाये तो कम्प-ज्वर (जाड़ा वोखार) पैदा हो जाता है, और सिनकोना ही कम्प-ज्वरकी प्रधान दवा है। यही महात्मा हैनिमैनकी नवीन चिकित्सा के आविष्कारका मूल सूत्र हुआ। इसके बाद, इसी सूत्रके अनुसार, उन्होंने कितने ही भेषज-द्रव्योंका स्वय सेवन किया और उनसे जो जो लक्षण पैदा हुए, उनकी परीक्षा की। साथ ही किसी रोगमें यदि वे ही सब लक्षण दिखाई देते तो उसी भेषज-द्रव्यको दे कर, वे रोगीको रोग-मुक्त भी करने लगे। हैनिमैन अबतक पहलेकी भाँति एलोपैथिक अर्थात स्थूल मात्रामे ही दवाओंका प्रयोग करते थे। इससे उन्हें अब यह मालूम हुआ कि रोग आरोग्य होने पर भी, कुछ दिन बाद, रोगीमें दुबारा कितने ही नये लक्षण उत्पन्न होते हैं। जैसे किनाइनका सेवन करने पर ज्वर तो आराम हो जाता है, पर इसके बाद रोगीमें रक्तहीनता, प्लीहा, यकृत, पिलई, शोथ, धीमा बोखार इत्यादि नाना प्रकारके नये नये उपसर्ग प्रकट हो कर, रोगीको एक दम जर्जर बना डालते हैं। बस, इसी समयसे उन्होंने दवाकी मात्रा घटानी आरम्भ कर दी। इससे उन्हें यह मालूम हुआ कि—परिमाण भले ही जितना ही कम हो, आरोग्यदायिनी

शक्ति पहलेकी तरह ही मौजूद रहती है , बल्कि ऊपर जो दुष्परिणाम बताये गये हैं, वे भी नहीं पैदा होते। अन्तमें उन्होंने दवाका परिमाण क्रमश: भग्नांशके आकारमे प्रयोग करना आरम्भ किया। और ये ही भग्नांश दवाएँ—फ्रेंच स्पिरिट, दूधकी चीनी और चुआया हुआ पानी इत्यादि, दवाका गुण न रहनेवाली चीजोंके साथ मिलाकर व्यवहार करने लगे। यही इस समय सदृश विधान (होमियोपैथिक) चिकित्साके नामसे प्रचलित हो रहा है। महात्मा हैनिमैनका जन्म सन् १७५५ ई० की १० वीं एप्रिलको जर्मन साम्राज्यके अन्तर्गत सैक्सनी प्रदेशके माइसन नामक एक छोटेसे गाँवमें हुआ था, और सन् १८४३ ई० की २ री जुलाईको, वे यह जगत त्याग, नवासी वर्षकी अवस्थामें, चिकित्सा-विधानमें एक अक्षय कीर्त्ति स्थापित कर अमर धामको पधार गये थे। "कीर्त्तिर्यस्य स जीवति"—आज कौन कह सकता है, कि वे इस जगतमें नहीं हैं ? हमलोग तो अब भी उन्हें जीवित ही अनुभव करते हैं।

होमियोपैथिक चिकित्साके सम्बन्धमें चिकित्सकोके जानने योग्य कुछ विषय

———※०※———

(हैनिमैनके उपदेशका स्थूल तात्पर्य)

१। किसी बीमारीकी चिकित्सा करते समय, रोगीके धातुगत लक्षण, मानसिक लक्षण और रोगके लक्षणोंके साथ, जिस दवाके लक्षणोंका (majority of symptoms) सबसे अधिक सादृश्य हो, उसी दवाका उस रोगमें प्रयोग करना चाहिये।

२। दवाका परिमाण और मात्रा यथासम्भव जितनी ही कम होती है, फायदा भी उतना ही अधिक होता है और क्रिया भी अधिक दिनोतक स्थायी रहा करती है। पुरानी बीमारीका इलाज करते समय, १०, १५ या २० नम्बरकी पोस्ताके दानेकी तरहवाली दो चार छोटी गोलियाँ (अनुवटिका—Globules) जीभपर रख कर या आध छटाँक चआये हुए पानीमें मिलाकर सवेरे, खाली पेटसे हाथ-मुँह धो लेने बाद, रोगीको खिला देनी चाहियें। इसके बाद कमसे कम दो घण्टोतक न तो कोई चीज खिलानी चाहिये और न पीने ही देनी चाहिये। एक, दो या तीन सप्ताहोतक इसके नतीजेको राह देखनी चाहिये। यदि फायदा न हो अथवा बीमारी बढती

६ । कितनों ही का ऐसा कहना है, कि कोई भीतरी दवा सेवन करते समय मदर-टिंचर इत्यादि किसी तरहकी बाहरी प्रयोगकी दवाका व्यवहार करना नियमके विरुद्ध है । क्योंकि भीतरी दवाका परिमाण बहुत ही थोड़ा होता है और बाहरी प्रयोगकी दवाओंका परिमाण अत्यन्त स्थूल अर्थात् अधिक होता है। इसलिये इससे सम्भव है कि भीतरी दवाकी क्रिया नष्ट हो जाये। परन्तु कितने ही मनुष्य बाहरी दवाके प्रयोगके पक्षपाती भी हैं और कितनी ही बार उससे रोगकी तकलीफ जल्दी घटती भी दिखाई देती है। ऐसे स्थानपर और जखम आदिमें जरूरत मालूम होनेपर, जो औषध रोगी सेवन कर रहा हो, वही या उसके सदृश ही कोई दवा अर्थात् जिस दवासे सेवन करने-वाली दवाकी क्रियामें कोई व्याघात inimical, antidote—शत्रुभावापन्न) न हो, ऐसी कोई एक दवा नीचे बतायी प्रणालीसे व्यवहार की जा सकती है। साधारणतः एक आउन्स वैसेलिन, ग्लिसरिन या ओलिव-आयल (जैतूनका तेल) या पानीमें २० बूंद मूल अर्क (mother tinture) मिला लेनेपर बाहरी प्रयोगकी हल्की दवा तैयार होती है।

७। एक मात्रा दवा सेवन कराने बाद जब तक फायदा दिखाई देता रहे, तबतक रोगीको केवल गोलियाँ (globules), सुगर आफ मिल्क (दूधकी चीनी, Sugar of milk) या केवल २।४ बूँद स्पिरिट थोड़े पानीमें मिलाकर, दिनमें तीन चार बार सेवन कराते रहना चाहिये। इससे रोगीको भरोसा रहेगा कि वह नित्य औषध

मालूम हो तो जब तक उस दवाकी क्रिया समाप्त न हो जाये, अर्थात् जब तक उस दवाकी क्रियासे साफ साफ फायदा होता दिखाई देता रहे, तबतक कभी उसी दवाकी कोई दूसरी मात्राका प्रयोग न करना चाहिये, न दूसरी ही देनी चाहिये।

४। अगर किसी दवाका प्रयोग करनेपर रोग बढ़ जाय (aggravation) तो ऐसा कभी न समझ लें कि दवाके चुनाव मे भूल हुई है। ऐसी जगह, दो चार दिनोंतक दवा बन्द रखनेपर इस ढङ्गकी वृद्धि आप ही आप घट जायगी तथा कुछ दिनोंतक और भी राह देखनेपर, असली बीमारी भी आपसे आप धीरे धीरे आरोग्य होती रहेगी। दवाके सेवनसे जो रोग-वृद्धि होती है, वह साधारणत ३।४ दिनोंमे ही घट जाती है, पर ऐसा न होकर, यदि रोग-लक्षण बराबर बढते ही जायं, तो समझना होगा, कि यह दवा सेवनके कारण पैदा हुई रोग-वृद्धि (aggravation) नहीं है। दवा सेवनके कारण जो रोग-वृद्धि होती है, उसमे दुबारा दवाका प्रयोग करनेपर, दवाकी क्रियामे बाधा पडती है, और रोगकी स्वाभाविक वृद्धिमें, यदि दवाका प्रयोग नहीं किया जाता तो बीमारी बहुत ज्यादा बढ जाती है।

५। किसी ओषधिके सेवन करते ही, अगर किसी पुरानी बीमारीके उपसर्ग सब गायब हो जायें तो समझना होगा कि दवा का चुनाव ठीक ठीक नहीं हुआ और उससे वह बीमारी भी आराम न होगी। इस ढङ्गसे जो रोग घटते है, उन्हें (palliative) क्षण-स्थायी लाभ या समय काटना कहते हैं।

पहले घटाकर रोगीको सु-स्थिर रखनेकी चेष्टा करनी चाहिये। चिकित्सा करते समय, चिकित्सकको रोगीके—यकृत, फेफडे, मस्तिष्क, हृत्पिण्ड इत्यादि भीतरी यन्त्रोंपर हमेशा नजर रखनी चाहिये। कभी भी जल्दी जल्दी दवा न बदलनी चाहिये और जबतक रोगका भोग जारी रहे, तबतक चिकित्सकको कभी जल्दबाजी न करनी चाहिये।

१०। पुरानी जटिल बीमारियोंकी चिकित्सा करते समय यदि साधारण रोग लक्षणोंपर अधिक लक्ष्य न रखा जाये, तो भी कोई विशेष हानि नहीं होती, पर रोगका मूल कारण अर्थात् शरीरमें कौनसा विष छिपा हुआ बैठा है, और रोग कहाँसे उत्पन्न हुआ है—सबसे पहले इसपर ही नजर रखनी होगी। हैनिमैनने अपने क्रानिक डिजीज नामक ग्रन्थमें—सोरा, सिफिलिस और साइ-कोसिस (सल्फर अध्याय देखिये) इन तीन प्रकारके विषोंको, सब तरहके रोगोंका घर या उत्पत्ति स्थान बताया है। इसलिये, इन तीन प्रकारके मूल विषोंके प्रतिविष (antidote) औषध के प्रयोग द्वारा ही पहले चिकित्सा आरम्भ करनी होगी। इसके बाद लक्षणोंके अनुसार, एकके बाद दूसरी दवाका प्रयोग करना पड़ेगा। पुरानी बीमारीकी चिकित्साके समय चिकित्सक और रोगी—दोनोंको ही बहुत धीरज रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस देशके आयुर्वेदिक चिकित्सकगण—सब बीमारियोंको तीन भागों में विभक्त करते हैं। जैसे—साध्य, असाध्य और याप्य। हैनिमैन कहते हैं, कि अत्यन्त जटिल पुरानी बीमारीमें कमसे कम दो वर्षोंतक दवा सेवन कर देखना चाहिये।

सेवन कर रहा है। इस तरहकी शून्य दवायें फाइटम, निलम् या प्लैसिबो इत्यादि कही जाती हैं।

८। पर्यायक्रमसे औषध अर्थात् एक बार एक, दूसरी बार दूसरी, इस तरह एकके बाद दूसरी, दो तीन प्रकारकी दवाका सेवन होमियोपैथीकी नीतिके विरुद्ध है। इससे यह होता है, कि एक औषधकी क्रिया, दूसरी दवाकी क्रियामें यथासाध्य बाधा पहुँचाया करती है। ऐसी अवस्थामें, कोई कोई यह भी कह सकते हैं, कि वे ऐसा ही करते हैं और इससे रोग आरोग्य भी होता है। परन्तु ऐसे विचारवालोंके लिये मेरा यह कथन है—वे केवल एक दवा, एक बार व्यवहार कर देखें। इतनेसे ही उनकी समझमें आ जायगा कि दो दवाओंका पर्यायक्रमसे प्रयोग कर जो बीमारी सात दिनोंमें आराम होती थी, वही एक दवाके व्यवहारसे तीन चार दिनोंमें आरोग्य हुई है। पर हैजाकी बीमारीमें कभी कभी दो दवाओंका पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है और उससे लाभ भी विशेष होता है। शुसलरकी टीशू दवाओं (बायोकेमिक ओषधियाँ) का पर्यायक्रमसे व्यवहार होता है। डा० ह्यूजेजका कथन है कि समस्त सदृश लक्षण यदि एक दवामें न मिलें तो (concordan) दो दवाएँ, एकके बाद दूसरी, इस तरह व्यवहार की जा सकती हैं। पर महात्मा हैनिमैन इस मतके घोर विरोधी हैं।

९। कोई नयी बीमारी,—जैसे ज्वर, निमोनिया, अतिसार, हैजा इत्यादिकी चिकित्सा करते समय रोगके उपसर्गोंमें, जो उपसर्ग सबसे जबर्दस्त और अधिक तकलीफ देनेवाला हो, उसीको

शक्तिका प्रयोग किया गया पर कोई फायदा न हुआ—दूसरी बार मध्य शक्तिकी वही दवा, और अन्तमें निम्न-शक्तिकी, फिर—उच्चशक्ति। प्रत्येक बार केवल शक्तिका ही इस तरह अदल-बदल कर देनेपर भी लाभ होगा। पानीमें मिली हुई दवाको रोज सेवन करनेके समय, शीशीका पेंदा हाथके ऊपर छः बार ठोकना (6 strokes) चाहिये, इससे शक्तिका कुछ परिवर्त्तन होकर अधिक लाभ दिखाई देता होता है। (हैनिमैन)

१४। आयुर्वेदिक या ऐलोपैथिक चिकित्साके बाद, यदि कोई रोगी सदृश-विधानके अनुसार चिकित्सा कराने आये—तो पहले पहल ६ ठी शक्तिसे और होमियोपैथीके छोड़े हुए रोगीको ३० वीं शक्ति देकर चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिये। कलकत्तेके विख्यात स्वर्गीय डा० जी० मानुक एम० बी०, सी० एम० और डा० डब्ल्यू, यूनन एम० बी०, सी० एम० महोदयगणकी ऐसी ही राय है।

१५। दवा सेवन करते समय पानके साथ चूना, सोडा, लैमोनेड, सिर्काका व्यवहार और खड़िया तथा तीते पदार्थोंसे दाँत माँजना (दतवन),—ये कई कार्य एक दम त्याग देने चाहियें। (हीपर, कैल्केरिया व्यवहारके समय चूना मना है)।

१६। दवा सेवन करते समय सुगन्धित या तेज गन्धवाली चीजें, सड़े और जल्द न पचनेवाले पदार्थ, गर्म मसाले, पेयाज, लहसुन, कपूर, शराब, नशीले पदार्थ, धूमपान, ज्यादा फल-मूल, चाय इत्यादि किसी उत्तेजक पदार्थका व्यवहार निषिद्ध है। रोगीको हमेशा साफ सुथरा रहना चाहिये। रोगीके रहनेका कमरा हवादार और ऐसा होना

११। नवसिखुओंको दवाकी शक्ति (potency) के विषयमें बहुत ही तग होना पडता है। इस विषयमें बहुत मतभेद है। कोई उच्च-क्रमकी दवाके पक्षपाती हैं, कोई निम्न क्रमकी। पर दवाका चुनाव ठीक ठीक होनेपर ओषधिको शक्तिमे कुछ जाता आता नहीं है। पर साधारणत नयी बीमारीमे १ म और १x से लेकर ३० शक्ति, कभी कभी २०० शक्ति और पुरानी बीमारीमे—३० वीं या २०० वीं से एम० एम० शक्तितक व्यवहृत हुआ करती है। औपधकी शक्ति जितनी ही ऊँची होती है, मूल औपधका परिमाण भी निम्न शक्तिकी अर्थात् स्थूल मात्राकी दवा की अपेक्षा अधिक दिनोतक स्थायी रहता है। (किसी किसीका तो कथन है कि परीक्षामे केवल बारहवीं शक्ति तक मूल-औपधका अ श पाया जाता है।) इस पुस्तककी हरेक दवाके अध्यायमे औपधकी अनुमानसे शक्ति और क्रियाका आनुमानिक स्थितिकाल लिखा गया है।

१२। उच्चशक्तिका साकेतिक चिन्ह—सी (C)—१०० ; डी (D)—५०० , एम (M)—१००० , (C M)—१००.०००, डी० एम (D M)—५००,००० , एम० एम० (M M)—१० ०० ००० है।

१३। रोग-लक्षणके साथ दवाका लक्षण मिल जानेपर भी, जब किसी अच्छी तरह चुनी हुई दवासे फायदा न हो, उस समय दवाको ही न बदलकर, केवल उस दवाकी शक्तिमे ही हेर-फेर कर प्रयोग करनेपर, फायदा हो सकता है। जैसे—पहले उच्च-

शक्तिका प्रयोग किया गया पर कोई फायदा न हुआ—दूसरी बार मध्य शक्तिकी वही दवा, और अन्तमें निम्न-शक्तिकी, फिर—उच्चशक्ति। प्रत्येक बार केवल शक्तिका ही इस तरह अदल-बदल कर देनेपर भी लाभ होगा। पानीमें मिली हुई दवाको रोज़ सेवन करनेके समय, शीशीका पेंदा हाथके ऊपर छ: बार ठोकना (6 strokes) चाहिये, इससे शक्तिका कुछ परिवर्तन होकर अधिक लाभ दिखाई देता होता है। (हैनिमैन)

१४। आयुर्वेदिक या एलोपैथिक चिकित्साके बाद, यदि कोई रोगी सदृश-विधानके अनुसार चिकित्सा कराने आये—तो पहले पहल ६ ठीं शक्तिसे और होमियोपैथीके छोड़े हुए रोगीको ३० वीं शक्ति देकर चिकित्सा आरम्भ करनी चाहिये। कलकत्तेके विख्यात स्वर्गीय डा० जी० मानुक एम० बी०, सी० एम० और डा० डब्ल्यू, य़ुनन एम० बी०, सी० एम० महोदयगणकी ऐसी ही राय है।

१५। दवा सेवन करते समय पानके साथ चूना, सोडा, लेमोनेड, सिर्काका व्यवहार और खड़िया तथा तीते पदार्थोंसे दाँत माँजना (दतवन),—ये कई कार्य एक दम त्याग देने चाहियें। (हीपर, कैल्केरिया व्यवहारके समय चूना मना है)।

१६। दवा सेवन करते समय सुगन्धित या तेज गन्धवाली चीजें, सड़े और जल्द न पचनेवाले पदार्थ, गर्म मसाले, पेयाज, लहसुन, कपूर, शराब, नशीले पदार्थ, धूमपान, ज्यादा फल-मूल, चाय इत्यादि किसी उत्तेजक पदार्थका व्यवहार निषिद्ध है। रोगीको हमेशा साफ सुथरा रहना चाहिये। रोगीके रहनेका कमरा हवादार और ऐसा होना

चाहिये, जिसमे धूप जाती हो। अफीम तथा चाय पीनेवाले, जिनको इनका वहुत दिनोका अभ्यास हो, उन्हें यथासम्भव खूब कम परिमाणमे इनका व्यवहार करना चाहिये। तम्वाकू या वीडी पीनेके एक घण्टा और अफीम खानेके २ घण्टा पहले या बाद दवा सेवन करना उचित है। पुरानी वीमारीमे दवा खानेके पहले मुँह अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिये और सवेरे खाली पेट दवा सेवन करनेका ही नियम है।

१७। औपधकी शक्तिको—डाइनामजेशन (dynamization), पोटेंशटाइजेशन (potentization), एटेनियुएशन (atten uation), डाइल्यूशन (dilution), स्ट्रेङ्ग्थ (strength) या पोटेन्सी (potency) कहते है। इनका साधारण अर्थ प्राय' एक ही प्रकारका अर्थात् शक्तिकरण है। एक भाग मूल औपध, ९९ भाग सुरासार (alcohal) के साथ मिलाकर औपधकी १ ली शक्ति वनती है। इसका एक अश, फिर ९९ भाग सुरासारमे मिलानेपर—२री शक्ति, इसी तरह क्रमश' लाख लाख शक्ति तक की दवा तैयार होती है। यहाँ ऐसा मालूम होता है—शक्ति जितनी ही ऊँची होती है, मूल औपधका अश भी उतना ही क्रमश घटता जाता है, पर उसकी क्रिया तेज और वहुत दिनोतक स्थायी होती है। १ भाग मूल औपध, ९ भाग दूध की चीनीके साथ, अच्छी तरह खरल करनेपर—१x विचूर्ण शक्ति तैयार हुआ करती है। उसका १ भाग फिर ९ भाग उसी तरह दूध की चीनीके साथ मिलाकर घोंटनेपर—२x विचूर्ण

शक्ति, इसी तरह क्रमशः—१२x, ३०x, २००x, इत्यादि शक्तियाँ भी इसी नियमके अनुसार तैयार हुआ करती हैं। पर सब जगह यही नियम लागू नहीं होता। कितनी ही दवा ४ भाग मूल अर्क, ६ भाग डाइल्यूट अलकोहल या सुरासारके साथ मिलाकर निम्न शततमिक शक्ति तैयार होती है, कितनी ८ भागमें २ भाग मूल औषध मिलाकर दशमिक शक्ति तैयार होती है। १ ली से लेकर ३ री शक्ति तक तैयार करनेमें विशेप गडबडी है। ये सभी फार्मूला अर्थात औषध प्रस्तुत प्रणाली (इस पुस्तककी प्रत्येक दवाके अध्यायके अन्तमें यह लिखा हुआ है, कि दवा किस फारमूलाके अनुसार तैयार होती है)। दवा बनाना सीखनेके लिये फार्माकोपियाकी जरूरत पडती है। इस परिच्छेदका पहले कहा हुआ प्रकरण शततमिक है, यह जवान—पूरी उमर वालोंके लिये प्रत्येक मात्रामें १ बूँद तक,अन्तवाले प्रकरण दशमिक, यह दो ग्रेन पर्यन्तकी मात्रामें प्रत्येक बार व्यवहृत हो सकता है। बालकोको आधी या चौथाई मात्रा देनी चाहिये।

१८। जिस कमरेमें होमियोपैथिक दवाका बक्स रहे, यह कमरा खूब सूखा, साफ-सुथरा और उजियाला होना आवश्यक है। धूप, धुआ, एलोपैथिक दवाएँ, इयुकैलिप्टस, नेप्थैलाइन इत्यादि किसी तरहकी भी तेज गन्धवाली चीज या एसेन्स प्रभृति सुगन्धित पदार्थके पास दवाका बक्स न रखना चाहिये। दवाकी शीशीमें या नीचे (तली) सफेद सफेद, फूही, रूईकी रोंयेकी तरह पदार्थ रहनेपर और दवाका रंग कुछ भी बदल जानेपर, समझ

लेना चाहिये, कि दवा नष्ट हो गयी है। घरमें धूना, गन्धक प्रभृति जलाने और फेनाइलसे धोनेकी जरूरत हो तो दवा दूसरे कमरेमें हटा देनी चाहिये।

१६। दवाका चुनाव ठीक होनेपर भी कितनी ही बार दवाकी गडबडीके कारण रोग आरोग्य होनेमें बाधा पहुँचती है और चिकित्सकको अपयश प्राप्त होता है। होमियोपैथिक दवाका रंग, रूप देखकर यह निर्णय करना कठिन है, कि कौन शुद्ध है और कौन अशुद्ध तथा कौनसी नष्ट हो गयी है। अतएव, यदि कोई हमसे यह पूछेगा कि किस तरह यह बात कुछ कुछ जानी जा सकती है, तो तुरन्त उसका ठीक ठीक उत्तर भेजा जायगा।

एबिस नाइग्रा ।

(ABIES NIGRA)

(झाऊ गाछकी तरह अमेरिकाके एक वृक्षकी गोंदसे तैयार होता है)—इस दवाकी क्रिया लम्बी होती है तथा इसकी क्रिया पाकस्थलीपर ही अधिक होती है। किसी रोगके साथ वायु और अम्लके लक्षण रहें, वृद्धोंके अम्ल और अजीर्ण रोगके साथ हृत्पिण्डकी भी कोई बीमारी रहनेपर और बहुत ज्यादा चाय पीने और तम्बाकू खानेके कारण डिस्पेप्सिया (मन्दाग्नि) की बीमारी हो जानेपर—इससे अधिक फायदा होता है। नर्वस (स्नायविक), लिखने-पढ़नेका काम या सोचनेकी शक्तिका लोप होजाना, दिनमें औंघाई आना—रातमें नींद न आना, कब्जियत, भोजनके बाद ही पेटमें दर्द, खाई हुई चीजका पेटमें गोलेकी तरह पड़े रहना या चिपक जाना, दर्द, प्रभृति इसके—चरित्रगत लक्षण हैं।

अम्लशूलका दर्द—पेटभर खानेसे ही एक तरहका तकलीफ देनेवाला दर्द पैदा हो जाता है। ऐसा मालूम होता है, कि पाकस्थलीके मुहपर (in cardia) मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ अड़ा हुआ है (ऐनाकार्डियम और सिनकोना अध्याय देखिये), एबिसके रोगीका एक अद्भुत लक्षण है—दिनके दो पहरके समय और रातमें बेतरह भूख लगती है, यहाँ तक कि भूखकी वजहसे नींद नहीं आती ; पर सबेरेके समय बिल्कुल ही भूख नहीं रहती।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमें एक तरहका दर्द होता है और वहाँ ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ अड़ा हुआ है। इसी वजहसे रोगी बार बार खाँसता है, खाँसनेके समय मुहसे बराबर पानी निकलता है। मानो किसीने गला दबा रखा है। ऐसा अनुभव होता है, कि दम घुटा चाहता है। हृत्पिण्डमें तेज दर्द, हृत्पिण्ड भारी, तथा हृत्पिण्डकी क्रिया भी धीमी होती है, टैकिकार्डिया (हृत्पिण्डकी अति तीव्र गति), ब्रेडिकार्डिया (हृत्पिण्डकी अत्यन्त धीमी गति) प्रभृतिमे इससे लाभ होता है।

ऋतुस्राव—दो तीन महीनोंका अन्तर देकर होता है। फिर बन्द हो जाता है।

सम्बन्ध (complements)—ब्रायोनिया, नक्स, थूजा, कैलि-कार्ब।

वृद्धि (aggravation)—भोजनके बाद ही।

क्रम (potency)—१ से ३० शक्ति। फारमुला—६-प।

एब्रोटेनम।

(ABROTANUM)

(एक तरहकी लताके पत्तोंका टिंचर)। कन्धे, हाथ, कलाई, और पैंडीमें दर्द, गाँठ फड़ी, अकड़ी, वातके कारण दर्द, शरीर काँपना, निराशा, काम-काजसे अनिच्छा, नींद न आना, पर्यायक्रमसे

घात और बवासीर, आमाशय (पेचिश), बहुत कमजोरीके साथ हेक्टिक-ज्वर (क्षय-ज्वर), बच्चोंका एक तरहका हेक्टिक-ज्वर (इन्फ्लुएंजाके बाद), मेटैस्टैसिस (किसी रोगका एक अंगसे दूसरेमें चला जाना), बच्चोंका मारास्मस (सुखण्डी—marasmus) इत्यादिमें इसका प्रयोग होता है और येही इसके—चरित्रगत लक्षण हैं। डा० केण्टका कथन है—बच्चोंकी नाकसे खून गिरना, नाभीसे रस रक्त निकलना, अण्डकोषका फूलना और उसके साथ ही यदि देह सूखती चली जाये तो यह विशेष लाभ करता है। बच्चोंके मारास्मस (सुखण्डी) के लिये, एब्रोटेनमके अलावा—नैट्रम-म्यूर, आयोडम, सार्सापैरिला, साइलिसिया, कैल्केरिया-फास इत्यादि भी फायदेमन्द दवाएँ हैं। इनके लक्षणोंका प्रभेद नीचे देखिये —

सार्सापैरिला—वृद्ध मनुष्योंकी भाँति शरीरके चमडेमें सलवट पड़ जाती है। इसमें शरीरकी अपेक्षा गर्दन अधिक पतली पड जाया करती है।

नैट्रम-म्यूर—हमेशा बच्चा बहुत खाता है, इतने पर भी उसका शरीर सूखता ही जाता है। इसमें गर्दनका पीछे वाला भाग अधिक पतला पड़ता है।

आयोडम—हमेशा ही भूख, खानेके लिये रोया ही करता है, खाकर उठने बाद ही फिर खानेको मांगता है। इसमें समूचा शरीर सूख जाता है। (लैपिस पत्वा देखिये)।

एब्रोटेनम—समूची देह तो सूख ही जाती है, पर इसमें पैरकी तरफ पतला पड जानेका भाव अधिक है (यह लक्षण ट्यूबरक्युलि-

नममें भी है), Wasting disease from malnutration. पोषणकी कमीके कारण क्षय करनेवाले रोग।

वात—कन्धा, हाथकी कलाई और पैरकी पँडीमें (ankle) बहुत तकलीफ भरा वात होनेपर या प्रदाहवाले वातमें रोगवाली जगह फूलनेके पहले किसी स्थानमें दर्द होनेपर और प्लुरिसी (फुसफुसवेस्ट-प्रदाह) रोगमें, एकोनाइट तथा ब्रायोनियाके व्यवहार के बाद कलेजा दवा रखनेकी तरह दर्द और साथ ही साथ साँस खींचनेमें कष्ट होता हो—तो एब्रोटेनमसे लाभ होता है। Metastatic rheumatism—रोगवाली जगहसे वात वक्षमें चला जाता है (कोलचिकम अध्याय देखिये), कमरमें दर्द—रेतोरज्जु (स्पर्माटिक-कार्ड) के भीतरसे दर्द जाता है, गाँठें कडी और अकडी रहा करती हैं, रोगी लँगडाकर चलता है, एब्रोटेनम—इसकी एक बढ़िया दवा है।

पाकस्थलीकी बीमारी—भूख मजेमें लगती है, पर शरीर दिनोदिन सूखता जाता है। जो खाता है, वह अजीर्ण अवस्थामें मलके साथ निकल जाता है। पाकस्थलीमें काटने फाडनेकी तरह असह्य दर्द होता है, कभी कभी सडी बदबू-भरा वमन भी होता है। इसके अलावा—पेट फूलना, पाकस्थलीके भीतर एक कडे ढेलेकी तरह पदार्थका रहना, पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतले-दस्त प्रभृति लक्षणोंमें और वृद्धोंकी मन्दाग्निके साथ हृत्पिण्डकी गडबडीमें—एब्रोटेनमका प्रयोग होता है।

बवासीर—बवासीरकी बीमारीके साथ त्रिकास्थिमें दर्द, लगातार पाखानेकी हाजत बनी रहना और वेग, रोगी पाखाने जाता है, पाखाना बहुत थोडा होता है, सिर्फ खूनका स्राव होता है (साइमेक्स अध्याय देखिये)

सदृश (complements)—वक्षस्थलकी बीमार में—एकोनाइट, ब्रायो, कोल्चि। वातमें—एसिड बेन्ज़ो, ब्रायो। प्लुरिसि में—एकोनाइट, ब्रायोनियाके बाद, सुखण्डी—आयोडिन, नेट्रम-म्यूर।

वृद्धि—ठण्डी हवामें। ह्रास—हिलने-डोलने पर।

क्रम—(potency)—६x—३० शक्ति। फारमुला—४।

एब्सिन्थियम

(ABSINTHIUM)

(Common Wormwood—एक पौधा, इसके फूल और पत्तोंसे मूल अर्क तैयार होता है)। मस्तिष्क, मज्जा (medulla) और मेरुदण्डमें रक्तकी अधिकता (कानजेशन), मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकताकी वजहसे टाइफायड ज्वरमें नींद न आना (कैरिङ्गटन), सर्दी लगकर आँखका प्रदाह (आँख उठना), यकृत-प्लीहा बढी हुई, मालूम होता है, मानो यकृत फूल गया है, पेटमें बहुत वायु जमा होना, वायु-शूलका दर्द (wind colic), बच्चोंको बहुत देरतक

रहनेवाली अकडन, मृगी, मन्दाग्नि (डिस्पेप्शिया), हरित-पाण्डु रोग (क्लोरोसिस), गृध्रसी वात (सायटिका), बेंगका छत्ता खानेके कारण जहरका फैल जाना, हमेशा पेशाब करनेकी इच्छा, कडवी गन्ध प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें इसका हमेशा प्रयोग होता है।

मृगी—रोग आरम्भ होनेके पहले रोगीके सरमें चक्कर आता है, आँखोंके सामने कोई मूर्त्ति दिखाई देती है, कानसे सुन नहीं पाता, काँपा करता है, शरीर सुन्नकी तरह मालूम होता है, इसके बाद ही अकडन (convulsion) आरम्भ होती है, दाँती लग जाती है, दाँत कटकटाता है, जीभ काटता है और इसी वजहसे मुँहसे खून मिला फेन निकलता है। डा० फ्लेनका कथन है—इसमें अकडन पहले मुँहसे आरम्भ होती है और इसके बाद शरीरके दूसरे दूसरे अगोंमें चली जाती है। वे यह भी कहते है, कि—मृगीके फिटके समय इसका मूल अर्क (टिंचर), १ बूँद, रोगीकी जीभपर टपका देनेपर बहुत भयानक अकडन भी बहुत थोडे समयमें दूर हो जाती है। यदि बच्चोंकी अकडन बहुत देरतक रहे तो इससे बहुत अधिक फायदा होता है। डा० हैल्बर्ट कहते है—यदि बीमारी हलकी हो, रोगी एकदम बेहोश न हो गया हो, तो इससे अधिक फायदा होता है।

एमिल-नाइट्रेट—φ ; बीमारीके दौराके समय ५।७ बूँद दवा रूमालमें डाल कर सुँघानेपर बेहोशीका दौरा घट जाता है (इसका अध्याय देखिये)

आर्टिमिसिया-वलगैरिस—३x ; एक बार बेहोशी हुई, फिर

रुको, फिर वेहोशी आयी, इसी तरह एकके बाद दूसरी वेहोशी आती है, इसके बाद रोगी सो जाता है (क्रिमिकी वजहसे होनेवाली अकड़नमें भी इससे लाभ होता है)।

एसिड-कार्बोल—६, यदि किसी दवासे भी लाभ न हो तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

ब्यूफो राना—१x—३, दौरा आरम्भ होनेके पहले रोगी खूब ज़ोरसे चिल्ला उठता है। क्या कहता है, वह ठीक ठीक समझमें नहीं आता। इसका कारण या तो जननेन्द्रियकी उत्तेजना रहती है, अथवा जननेन्द्रियसे सुरसुरी (aura) आरम्भ होकर, यदि मृगीका दौरा हो तो इससे फायदा होगा। दौरा होनेके बाद सो जाना इसका एक दूसरा लक्षण है। डा० लिपि कहते हैं—डर जानेपर, या स्त्रियोंको ऋतुके समय दौरा होनेपर और दिनकी अपेक्षा यदि रातमें अधिक वार दौरा हो तो इससे जल्दी उपकार होता है। इसके फिटका वेग (aura) कितनी ही वार अण्डखण्डके स्थानसे आरम्भ होता है।

कैलि-ब्रोम—३, इस दवासे बीमारी आराम होती है या नहीं सन्देहकी बात है, पर इससे कितनी ही वार फिट और बीमारी बहुत जल्द घट जाती है (only palliative in true epilepsy)। कोई कोई कहता है, कि क्रमशः मात्रा बढ़ाकर सेवन करने पर कुछ दिनोंके लिये दौरेका होना बन्द तो रहता है; पर अन्तमें बीमारी और भी कड़ी हो जाती है।

जिङ्कम और हायोसियामस—अवस्था-प्राप्त बालकोंकी बीमारीमें लाभदायक है।

इनके अलावा—कूप्रम, आर्जेण्ट-नाइट्रिक, इग्ने, हाइड्रोसियानिक-एसिड, वेल, ग्लोनोयिन, कैल्के-सल्फ, काकु, साइलि (साइलिसिया में भी वीमारीका झोंक अण्डखण्डके स्थानसे आरम्भ होता है)प्रभृति भी इस रोगकी दवाएँ हैं।

यदि स्त्रियोंको ऋतुस्रावके समय मृगीका दौरा हो—अर्जेण्ट-नाइट्रिकम, व्यूफो, इनैन्थि, (œnanthe), प्लम्बम, सलफर, प्रभृति दवाएँ फायदा करती हैं। अगर अनियमित और थोडे ऋतुस्रावके साथ वीमारी हो—आर्टिमिसिया, सिमिसिफ्यूगा और पहली वार ऋतु होनेके समय रोग हो तो—कास्टिकम प्रभृति लाभ करते हैं।

स्त्री-रोग—दाहिनी ओरके डिम्बाशयमे तेज दर्द (यह लक्षण एपिसमे भी है), हरित-रोगवाली (chlorosis) स्त्रियोंकी वीमारीमें (इस वीमारीका लक्षण यह है, कि रोगिनीका चेहरा हरा दिखाई देता है, बहुत कमजोर हो पडती है, कलेजा धडकता है)—एब्सिन्थियम विशेष फायदा करता है।

पेशावकी वीमारी—पेशावकी परीक्षा करनेपर यदि उसमें अण्डलाल (albumen) दिखाई दे तो एब्सिन्थियम फायदा करेगा। इसमें पेशावका रग कमला नेवूकी तरह और उसमें घोडेके पेशावकी तरह गन्ध रहती है (एसिड नाइट्रिक अध्याय देखिये), पेशाव बहुत जल्दी जल्दी लगता है।

कानकी वीमारी—किसी तरहका भी सर-दर्द आराम होनेपर यदि कानमें पीव हो जाये—एब्सिन्थियमसे लाभ होगा।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डकी गति समान नहीं रहती। इसके अलावा—हृत्पिण्ड इस तरह जोरसे धड़ाम धड़ाम चलता है कि पीठकी ओरसे भी उसके स्पन्दनकी आवाज सुन पड़ती है। नाड़ी पहले तेज रहती है, फिर धीरे धीरे क्षीण होती जाती है।

सदृश (complements)—आर्टिमिसिया, एसिड हाइड्रो, साइक्यूटा, सिना।

क्रम (potency)—१—६ शक्ति। फारमुला—३।

एकालिफा इण्डिका।

(ACALYPHA INDICA)

(इस देशके मुक्तावर्षीके पत्तेसे तैयार होता है)—यह धीमा धोखार, दिनोंदिन शरीरका दुबला होते जाना, खाँसी, खून-मिली खाँसी, यक्ष्मा और फेफड़ेसे रक्तस्रावमें ही अधिक व्यवहृत होता है। खाँसते खाँसते बलगमके साथ रक्त निकलना, वक्षस्थलमें दर्द रहना और खाँसते खाँसते यक्ष्माके रोगियोंकी खाँसीका बहुत बढ़ जाना—इनमें इससे विशेष लाभ होता है। एकालिफाके खून का रंग—चमकीला लाल या कुछ काला रंग लिये होता है, इसके साथ ही रोगीको स्वरभंग भी रहता है, सबेरे पतला ताजा रक्त और तीसरे पहर काला, थक्का थक्का रक्त आना भी इसका एक दूसरा लक्षण है।

जिरेनियम मैकुलेटम—रक्तोत्कास (खून-मिली खाँसी) और रक्त-वमन (खूनकी कै) (Hæmopysis & Hæmatemesis) रोगमें साधारणतः—एकालिफा, एकोनाइट, इपिकाक, आर्निका, हैमामेलिस, मिलिफोलियम, आर्सेनिक, वेलेडोना, चायना, फेरम, कार्बो, क्रोकस, फास्फोरस, सिकेलि इत्यादि औषधियाँ लाभदायक होनेपर भी जब किसी दवासे भरपूर फायदा न दिखाई दे या स्थायी लाभ न हो, तो इसका मूल अर्क (मदर टिंचर), ५ से ३० बूँद अर्ककी मात्रामें, रोगकी तेजीके अनुसार, २।३ घार, ४ घण्टोंका अन्तर देकर प्रयोग करने पर कभी कभी जादूके मन्त्रकी तरह बीमारी घट जाती है। पाकस्थलीका जखम (Gastric Ulcer) और बच्चोंके अतिसारमें भी यह लाभ करता है।

डा० एच० आर० आर्णडेके "प्रैक्टिस आफ मेडिसिन" नामक ग्रन्थमें—Simple ulcer of the stomach अध्यायके अन्तिम भागमें हिमाटिमेसिस नामक जो परिच्छेद लिखा है, उसके अन्तकी सतरोंमें लिखा है "* * * * * * यह देखा गया है कि आधे ड्रामकी मात्रामें जिरेनियम मैकुलेटमका प्रयोग उस समय रोगकी तकलीफ घटा देता है जब किसी दूसरी दवासे लाभ नहीं होता।" डा० विलियम बोरिकने अपनी मेटिरिया मेडिकामें—जिरेनियम मैकुलेटम अध्यायके पहले ही लिखा है "* * * भिन्न भिन्न यन्त्रोंसे बहुत अधिक रक्तस्राव, खूनकी कै।" पाकस्थलीके जखमसे हो, पाकस्थलीसे हो, फेफड़ेसे आता हो,

थोड़ा हो या अधिक हो, मुँहसे नाकसे बार बार रक्त निकलकर रोगीका आसन्न मृत्युकाल भी यदि आ गया हो, तो समयपर इसका प्रयोग होनेसे, रक्त बन्द होकर, जल्द ही रोगी पुनर्जीवन प्राप्त करेगा।

रक्तवमन और रक्तोत्कासमे—"जिरेनियं मैकुलेटम" शीर्षक एक प्रबन्ध और एक मृतप्राय रोगीकी मैंने स्वयं जिस तरह चिकित्सा की थी, उसके पूरे पूरे इतिहासके साथ किस सूत्रके अनुसार "जिरेनियम" का मै रक्तस्रावमे पहले पहल व्यवहार करता हूँ और किस तरह जिरेनियम आज रक्तस्रावकी पेटेण्ट दवाकी तरह होमियोपैथीमे प्रचलित हुआ, इसका पूरा पूरा विवरण—होमियोपैथीके श्रेष्ठ मासिक-पत्र "हैनिमैन" १३२६ बंगाब्दकी कार्तिककी सख्यामें छपा है। एकालिफामे—सवेरे ताजा रक्त और सन्ध्यामे कालापन लिये जमा रक्त निकलता है। इसकी खाँसी सूखी और खाँसने बाद जो बलगम निकलता है, उसके साथ रक्त रहता है।

अतिसार और आमाशय—पैलोजकी भाँति एकालिफामें भी बदबूदार वायु निकलनेके साथ, आवाजके साथ, पतला मल बड़े वेगसे निकलता है। तलपेटमे नीचेकी ओर इस तरहका दर्द होता है, मानो पेटकी नस-नाड़ियाँ बाहर निकल पड़ेंगी। पेट गड़गड़ाता है, पेटमें आवाज होती है, पेट फूलता है और पेटमें मरोड़का दर्द होता है। मलद्वारसे भी रक्तस्राव होता है (rectal-haemorrhage) और रक्त सवेरे ही अधिक निकलता है।

कामला—चर्म्मपर छोटे छोटे फोडेकी तरह दाने निकलते हैं और वे चकत्तेकी तरह फूल उठते हैं, तथा बहुत खुजलाते है।

द्रष्टव्य :—मुक्तावर्पांके पत्तेको दोनो हाथोंसे मसलकर स्लेटकी पेन्सिलकी तरह मोटा और डेढ इञ्च लम्बा बना, मल-द्वारके भीतर दबाकर घुसा देना चाहिये। साथ ही साथ पाखाना हो जाता है।

वृद्धि (aggravation)—रोग-लक्षण सवेरे।

सदृश (complements)—एसिड-एसेटिक, कैलि-नाइट्रि, मिलिफो, आंन, इपि, फास।

क्रम (potency)—१x—६ शक्ति। फारमुला—३।

एसिटैनिलिडियम।

(ACETANILIDIUM)

(खनिज पदार्थ)—यह दवा न्यू रेमिडीजके अन्तर्गत है। इसलिये चिकित्सामे इसका बहुत कम व्यवहार होता है। जहाँ ज्वरका ताप बहुत अधिक (१०५।१०६।१०७ डिग्री) दिखाई देता हो, इसके साथ ही हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज हो और समान न होती हो, वहाँ, इसे एक बार अवश्य स्मरण करना चाहिये। इससे तेज श्वास प्रश्वास, हृत्पिण्डका जल्दी जल्दी स्पन्दन और ब्लड-प्रेशर (रक्तका दबाव) घटता है (ब्लडप्रेशरकी वृद्धि—एड्रिनैलिन—१x, ६x, शक्ति),

पेसिटैनिलिडियममें—क्रमशः चढा हुआ ऊँचा वोखार घटता जाता है (पाइरोजिन देखिये)। पॅडीकी गाठ और पैरके तलवेकी सूजनमें इससे फायदा होता है। (तापका ह्रास Temperature Subnormal—६६—डिग्री, समूचा शरीर और भीतर बरफकी तरह ठण्डा—हेलोडर्मा)।

पेसिटैनिलिडियमके रोगीको जरा-सी ठण्डमे ही सर्दी लग जाती है, सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं होती। क्रूड-फार्म—१ से ३ ग्रेन मात्रामें व्यवहार करनेपर नाना प्रकारके कष्टप्रद स्नायुशूलके दर्द (न्यूरैलजिक) और सर-दर्द तुरन्त घट जाता है। यह अवसादक (sedative) औषधि है।

सदृश—एण्टि-पाइरिन।

होमियोपैथीमें—३x से ३ री शक्ति व्यवहृत होती है।

एसिड एसेटिक।

(ACID ACETIC)

(सिर्काका तेजाब या विनिगर)—यह बहुमूत्र और उदरी रोगमें व्यवहारके लिये ही विशेष प्रसिद्ध है। रक्तहीनता, चेहरा सफेद हो जाना, ज्वरके सिवा और सभी रोगोंमें तेज प्यास, पाकस्थलीका कर्कट (कैन्सर), जल जाना, कीडे काटना, तिल या मसे, पैरमें गड्ढे प्रभृति रोगोंकी भी यह बहुत बढ़िया दवा है। नश्तर लगवानेके

रोग और गर्मीकी बीमारीवाली धातुके रोगियोंके बहुमूत्रकी बीमारीमें यह अधिक लाभदायक है।

एमोन-एसेटिकम—बहुत ज्यादा चीनी मिला पेशाब, इसके साथ ही अत्यन्त पसीना, पसीना इतना अधिक होता है, मानो नहा लिया है।

एसिड लैक्टिक, एसिड फास, रस-एरोमेटिक, क्रियोजोट, मस्कस, हेलोनियस प्रभृति भी बहुमूत्रकी दवाएँ हैं।

शोथ और उदरी—सारे शरीरमें शोथ या उदरीके साथ पतले दस्त आना और वमन सिर्फ एसेटिक-एसिडमें ही है, किसी दूसरी दवामें नहीं है। एपिसके शोथ और सूजनमें रोगीको बहुत थोड़ी मात्रामें पेशाब होता है। इस पेशाबमें अण्डलाल मिला रहता है और वह गदला रहता है। एसेटिक एसिडमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है, और उसके साथ ही कमरमें दर्द रहता है, यह दर्द पट सोनेपर घटता है। अतिसारके साथ पैर और पैरके तलवेमें सूजन—एसिड एसेटिक लाभदायक है।

पाकस्थली और उदर—पेट फूलता है, पेटमें शूलका दर्द और जलन। पाकस्थली और फलेजेमें जलन, शरीर ठण्डा और कपालमें ठण्डा पसीना।

रक्तहीनता—पतले दस्त, रातके समय पसीना, खांसी वगैरह कई बीमारियोंमें और प्रसूतिकी रक्तहीनतामें (एनिमिया) लाभदायक है।

रक्तस्राव—विनिगरमे कपडेका टुकडा या रूई तरकर, दवा रखनेपर प्राय सब तरहका रक्तस्राव बन्द हो जाता है। यह नाक, फेफडा, पाकस्थली, आतें, जरायु प्रभृति शरीरके सभी द्वारो से होनेवाले रक्तस्रावकी महौषधि है। ऋतुके समय और प्रसवके बाद होनेवाले रक्तस्रावमे भी लाभ करता है। (हैमामेलिस देखिये)। यदि शरीरके किसी एक जगहसे होनेवाला रक्तस्राव बन्द होकर दूसरी जगहसे होने लगे, या गिर जानेके कारण अथवा चोट लगकर नाकसे रक्तस्राव हो तो भी इससे फायदा होता है।

ज्वर—धीमा बोखार, इसके साथ ही रातमे पसीना (सलफर), हेक्टिक ज्वर (क्षय-ज्वर)—इसके साथ ही अतिसार, रातम पसीना, श्वासमे तकलीफ, शरीरका धीरे धीरे सूखते जाना और निम्नाङ्गका शोथ तथा सूजन, कभी कभी बहुत ज्यादा पसीना (चायना)। ज्वरके समय रोगीको प्यास बिलकुल ही नहीं रहती।

सम्बन्ध—एसिड-एसेटिक प्राय सभी तरहकी बेहोश करनेवाली दवाओं (क्लोरोफार्म प्रभृति) के सॅघनेके दोषका प्रति विष है। रक्तस्रावमे—चायनाके बाद और शोथमे—डिजिटेलिसके बाद इसके प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है। जीर्ण शीर्ण, ढीली पेशीवाले और रक्तहीन सफेद मनुष्योंपर इसकी अधिक क्रिया होती है।

स्टीम-ओटोमाइजर नामक यन्त्रमे या किसी दूसरे प्रकारके साइडर विनिगरमें (यह भी एक तरहका एसेटिक एसिड है) भाप बनाकर उसी भापको नाक, मुँहकी राहसे ग्रहण करनेपर बहुत कड़ी कड़ी क्रूप (काली खांसी) और डिफ्थीरिया रोग भी

घट जाता है। श्वास रोगमें गलेमें घरघराहट होती है, गलेमें आवाज़ होती है।

क्रिया-व्याघातक (inimical)—वारैकस, कास्टिकम, नक्स, रैनानक्युलस, सार्सापैरिला।

विष-क्रिया-नाशक—पेकोन, नैट्रम, नक्स, सिपि, टैवेक, चूना।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१४—२० दिन।

क्रम (potency)—६—३० शक्ति। खाली खांसीके अलावा, अन्य समस्त रोगोंमें बार-बार प्रयोग करना मना है।

फरमुला—५-प।

एसिड बेञ्जोयिक।

(ACID BENZOICUM)

(लोहवान)—पेशावमें घोडेके पेशावकी तरह कड़वी गन्ध, अनजानमें पेशाव हो जाना, वात, गठिया वात इत्यादि रोगमें यह दवा विशेष फायदा करती है। सारांश यह कि कोई भी बीमारी क्यों न हो,—बदबूदार पेशाव, पेशावमें घोडेके पेशावकी तरह कटु गन्ध रहनेपर इसका सबसे पहले प्रयोग करना चाहिये। (एसिड नाइट्रिक अध्याय देखिये)। इसके पेशावमें किसी तरहकी तली (sediment) नहीं जमती।

एस्पेरेगस—सिस्टाइटिस (मूत्राशयप्रदाह), प्रोस्टैटाइटिस (मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिका प्रदाह) या पेशाव-सम्बन्धी किसी

दूसरी तरहकी बीमारीमें पीव और श्लेष्मा निकलनेके साथ पेशावमें बहुत ही तीखी गन्ध और उसके साथ ही कलेजेमें धडकन, हृत्पिण्डके चारों ओर दर्द प्रभृति लक्षण रहते हैं। वृद्धोंके दुर्बल हृत्पिण्डके साथ बहुत थोडी मात्रामें अत्यन्त बदबूदार पेशाव होना और बायें कन्धे तथा छातीमें दर्द, तकलीफ प्रभृति रहनेपर इससे विशेष लाभ होता है। क्रम—६ ठीं शक्ति। एक तरहके वृक्षकी नयी सोरसे इसका मूल अर्क तैयार होता है। फारमुला—२।

सूजाक (प्रमेह) या उपदंश-विषसे दूषित धातु रहनेके साथ ही साथ जिनमें वातका दोष भी मिल गया है, ऐसी धातुवाले मनुष्योंपर बेञ्जोयिक एसिडकी क्रिया जल्दी होती है। सूजाकका मवाद आना बन्द होकर, यदि किसीको वात रोग हो जाये तो इससे ज्यादा फायदा होनेकी सम्भावना रहती है।

वातमें—कोलचिकमके और सूजाकमें कोपेवाके बाद इसका प्रयोग होता है।

वृद्धि—(aggravation)—खुली हवामें शरीरका वस्त्र उतार देनेपर।

सदृश (complements)—फेरम, कोपेवा, थूजा।

विष-क्रिया-नाशक (antidote)—कोपेवा।

क्रम (potency)—६—२०० शक्ति। फारमुला—७।

एसिड कार्बोलिकम।

(ACID CARBOLICUM)

(पत्थरके कोयलेके अलकतरेसे चुआया हुआ पदार्थ)—एलो-पैथिक मतसे यह सडना दूर करनेवाली और एण्टिसेप्टिक है। वास्तवमें रक्त दूषित होकर होनेवाली सभी बीमारियाँ, जैसे—पियोरपैरेल (सूतिका), सेप्टिक (सडन पैदा करनेवाली) और नालियोंकी गैससे उत्पन्न विषैले बोखार प्रभृतिमें इससे बहुत फायदा दिखाई देता है। इसके अलावा—सब तरहके बदबूदार ज़खम, नाकमें जखम, सडा बदबूदार स्राव, ओजिना (नकसीर) और बहुत सड़ा बदबूदार पाखाना भी इसका विशेष लक्षण है।

एपिथेलियोमा (उपचर्मका कर्कट), प्रुराइटिस (खुजली), प्रुरिगो (सूखी तेज खुजली और दाने) तथा डिस्पेप्सिया (मन्दाग्नि) के रोगियोंका बहुमूत्र और ब्राइट्स डिजिज (मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह), लैरिंजाइटिस (स्वर-नलीका प्रदाह), हूपिङ्ग कफ, (कुकुर खाँसी), थाइसिस (यक्ष्मा) इत्यादि बीमारियोंमें बदबूदार बलगम निकलना, अजीर्ण, शराब पीनेवालोंका वमन, गर्भावस्थाकी मिचली और वमन, सडे बदबूदार वस्तके साथ खूनी-पेचिश, एक तरहका सर दर्द—जिसमें ऐसा मालूम होता है, मानो कपालमें रबरकी पट्टी या डोरी बँधी है, माथेके बीचके स्थानमें जलन (फ्यूमस-सल्फ) प्रभृति बीमारियोंकी यह एक लाभदायक दवा है। गर्भस्राव होनेके

या प्रसवके बाद जरायुके भीतर, कुछ सडकर या लोकिया (परिस्राव) के स्रावमें सडी बदबू रहनेपर—१ बोतल कुछ गर्म पानीमें ८।१० बूँद शुद्ध कार्बोलिक एसिड मिलाकर, योनिमें डूश देकर, योनि धुलवा लेनेसे बदबू जल्द ही नष्ट हो जाती है और सडन पैदा हो जानेकी आशका दूर हो जाती है। आभ्यन्तरिक ६ ठीं शक्तिका सेवन करना चाहिये।

जखम—जले घाव या अन्य किसी तरहके भी बदबूदार फोडेमें वैसिलिन, ओलिव आयल (जेतूनका तेल) या ग्लिसरिन मिलाकर मरहम बना (१ आउन्समें ८ बूँद शुद्ध कार्बोलिक एसिड) कर लगाने और उसकी ६ ठीं या निम्न-शक्ति सेवन करनेपर तुरन्त फायदा होता है। पाकस्थलीके कैन्सरकी बीमारीमें—कार्बोलिक एसिड लाभदायक है।

गैस्ट्रो-एण्टेराइटिस और हैजा—पक्वाशय अन्त्राशय प्रदाह और हैजामें पानीमें रखे बासी भातका पानी, या चावलके धोवनके पानीकी तरह और सडे अण्डेकी तरह बदबूदार दस्त, रक्त और आम-मिले दस्त, दस्तमें इतनी बदबू रहती है, मानो पेटके भीतरवाले सभी पदार्थ सडकर बाहर निकल रहे हैं, सोये सोये अनजानमें ही पाखाना होना, रोगी बेतरह कराहता और छटपटाता है, रह-रहकर चिल्लाकर रो उठता है (एपिसमें भी यह लक्षण है, परन्तु उसमें प्यास नहीं रहती और उसके दस्त-कैका रंग भी जुदा ही होता है)। कार्बोलिक एसिड—

कितनी ही जगह शिशु-विसूचिकामे अत्यन्त आवश्यक होता है। बच्चेको जो के होती है, उसका रग हरा या काला रहता है। पेशाव—गदला, काला या हरे रगका। बच्चोंके गैस्ट्रो एण्टेराइटिस (पकाशय तथा आँतोका प्रदाह) नामक बीमारीमे रोग अकसर मारात्मक हो जाता है। इस रोगमे ऊपर लिखे लक्षणोके साथ यदि वमन, ज्वर-विकार, छटपटी इत्यादि रहे—एसिड कार्बोलिक बराबर लाभ करता है।

श्वेत-प्रदर—छोटी-छोटी बालिकाओंका श्वेत-प्रदर (कैनाबिस सैटाइवा, कैलेडियम)।

ज्वर—मैलेरिया, सविराम ज्वर, प्लीहा-मिला धीमा बोखार इत्यादि सब तरहके ज्वरोंमे ही इसका प्रयोग होता है।

कार्बोलिक एसिड—दूषित गैससे उत्पन्न सभी बीमारियोंकी यह महौषधि है।

खाँसी—लगातार खुसखुसी कष्टदायक खाँसी,—यह ब्राङ्काइटिस (वायुनली-प्रदाह), लैरिञ्जाइटिस (स्वरयन्त्र प्रदाह), थाइसिस (यक्ष्मा), किसी भी बीमारीके साथ क्यो न हो, एसिड कार्बोलिक लाभ करता है, हूपिङ्ग खाँसीमे—कार्बोलिक एसिड निम्न शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

चेचक रोग—चिकित्साकी गडबडीके कारण चेचकके निकलते ही रोगियोंके जखममें कीडे पड जाते है और उस जखमसे इतनी सडी गन्ध निकलती है कि उसके पास नहीं जाया जाता।

जिस घरमे रोगी रहता है, उस घरमे घुसने ही ओकाई आने लगती है ; ऐसे मरणासन्न रोगीको कार्बोलिक एसिडकी—६ ठीं शक्ति २।३ घण्टेके अन्तरसे तबतक देनी चाहिये, जबतक फायदा न हो। नित्य ४।६ मात्रा सेवन कराना चाहिये और एक पाउण्ड ओलिव आयलमे या वेसेलिनमे १ ड्राम शुद्ध कार्बोलिक एसिड, १ आउन्समे ७।८ बूँद मिलाकर, वही तेल या वैसेलिन घरमे लगाकर रोगीके जखम-पर लगानेसे प्राय: दो तीन दिनोंमे ही बदबू घट जाती है और चेचकके चिकित्सक द्वारा त्यागा हुआ मृतवत् रोगी भी फिर जी उठता है। इसकी हम कितनी ही बार परीक्षा कर चुके है। यदि चेचककी गोटिया थोडी सी निकलकर फिर न निकलें और इसी वजहसे विकार पैदा हो जाये, पतन अवस्था (शीत) आ जाये, तो इस दवाकी—३० या २०० शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

सदृश (complements)—आर्सेनिक, क्रियोजोट , बदबूदार रसवाले जखममे—मर्क-सोल, सल्फर।

क्रम (potency)—६—३० शक्ति। फारमुला ६-ए।

एसिड क्राइसोफेनिक।

(ACID CHRYSOPHANIC)

यद्यपि होमियोपैथीमें यह दवा बहुत कम चलती है, तथापि—दाद, सोरियेसिस (विचर्चिका, चम्बल रोग), हर्पिस (इन्द्रविद्धि,

छाजन), एकनि रोजेसिया (मुँहासे), निम्नाङ्गका एकजिमा (अकौता)—उसमें बेतरह खुजलाहट, बहुत ज्यादा बदबूदार स्राव होना, प्रभृति कितनी ही बीमारियाँ और लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है। यह दादकी एक प्रधान पेलोपैथिक दवा है और दादकी जितनी पेटेण्ट दवाएँ हैं, प्राय सबमें रहता है।

सूखी और तर खुजली—हैनिमैनने सब तरहके चर्मरोगोंमें ही कोई बाहरी दवा—मरहम प्रभृति लगानेका निषेध किया है, क्योंकि उससे दानोंका रस निकलना एकाएक बन्द हो जाता है और रोगका विष भीतरकी ओर जाकर, और भी गहरी हानि पहुँचाता है, कितनी ही नयी नयी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं, रोग क्रमश जटिल और दुरारोग्य हो जाता है और रोगी रोग भोगता भोगता अन्तमें मर जाता है। इसलिये, खुजली प्रभृतिके रोगीको मैं सिर्फ भीतरी दवा देनेके सिवा कभी बाहरी मरहम प्रभृति लगानेकी व्यवस्था नहीं देता। पर प्रदाह, तकलीफ, खुजलाहट प्रभृतिको दूर करनेके लिये नीमके पत्तेको घीमें अच्छी तरह भूनकर, जब वह घी काला हो जाये, तब वही नीमका घी, वैसेलिन, शुद्ध ग्लिसरिन प्रभृतिका कितनी ही बार प्रयोग किया करता हूँ। यह रोग आरोग्य होनेमें अकसर देर होती है।

यदि कोई खुजलीका रोगी, जल्दी आराम होनेके लिये घबडा उठे और चिकित्सकको भी तंगकर डाले तो शुद्ध कार्ब्बोलिक एसिड—१५।४० ग्रेन, एक आउन्स ऊपर लिखे ढंगसे बताये, नीमका

घी, ग्लिसरिन, वैसेलिन, ओलिव आयल, न मिलें तो नारियलके तेलके साथ मिलाकर लगानेके लिये दे देनेसे ५।७ दिनोंमें ही अर्कसर खुजलीका घाव सूख जाता है। (एचिनेशिया देखिये)।

क्रम ३—६ शक्ति—आभ्यन्तरिक सेवन करना चाहिये। फारमुला—७।

एसिड साइट्रिक।

(ACID CITRIC)

(नेबूका रस)—खानेकी चीजें जब अच्छी तरह नहीं पचतीं तब शरीरके पोषणमें गडबडी होती है। रक्तहीनता, मसूढ़ोंकी सूजन शीताद् (scurvy) प्रभृति रोगोंमें यह लाभदायक है। साइट्रिक एसिड—स्कर्वी (मुँह ओर मसूढ़ोंका जखम) रोग दूर करता है और पीतज्वरकी प्रतिषेधक दवा है। १ ड्राम शुद्ध साइट्रिक एसिड, ८ आउन्स (एक पाव) पानीमें मिलाकर, कैन्सरके जखममें प्रयोग करनेपर उसकी तकलीफ घट जाती है।

ऋतुस्राव—जिन्हें हर महीने बहुत अधिक रजःस्राव होता हो, वे यदि नियमित रूपसे इस एसिडका सेवन करें तो बहुत जल्द फायदा होगा।

ज्वर—बोखारमें पानीके साथ नीबूका रस पीनेपर प्यास बन्द हो जाती है, कै या मिचली हो तो वह भी घट जाती है, पर

इसके प्रयोगके पहले यह अच्छी तरह देख लेना चाहिये, कि मूल रोगके लिये जो दवाएँ दी जायँगी, यह उनका प्रतिषेधक (antidote) तो नहीं है ।

साइट्रस-वल्गैरिस—निम्न शक्ति, सर दर्दके साथ मिचली, सरमें चक्कर आना, मुँहके दाहिनी ओरका स्नायुशूल (न्युरैलजिया), हमेशा जम्हाई आना,—यह इन कई बीमारियोंकी दवा है ।

साइट्रिक एसिडका मूल अर्क ही हमेशा व्यवहृत होता है । फारमुला ७ ।

एसिड फ्लोरिकम ।

(ACID FLUORICUM)

(एक तरहका पथरका चूर, गन्धकके तेजाबमें मिलाकर, किसी रासायनिक प्रक्रिया द्वारा औषध तैयार होता है)—हड्डीका जखम, विशेषकर ट्यिुमर (अर्बुद), जघास्रा, अलना (अन्तःप्रकोष्ठ), टिबिया (अनुजघास्थि) अर्थात् हाथ-पैरकी सभी लम्बी हड्डियोंका और टेम्पोरल (कपालास्थि) हड्डीका जखम, उससे क्षय करनेवाला पतला रस निकलता हो तो इससे बहुत उपकार होता है । इसके अलावा दाँतके मसूढेकी सूजनकी और आँखके नासूरकी भी यही प्रायः एकमात्र दवा है । फ्लोरिक एसिडके जखमकी तकलीफ

ठण्डे प्रयोगसे घटती है (साइलिसियामे—ठण्डसे तकलीफ बढती है), उपदंशसे उत्पन्न हुए प्राय सब तरहके अस्थिक्षतमें यह लाभदायक है। इसका रोगी कम उमरमें ही वृद्धो की तरह दिखाई देता है। रोगी अक्लान्त भावसे परिश्रम कर सकता है, गर्मी या सर्दी से घबडा नहीं जाता है।

दाँतकी बीमारी—दाँतके मसूढेमें फोडा हो कर, उसमें फिश्चुला (नासूर) पड जाता है और आराम न होनेपर, क्रमश दाँतकी जडकी हड्डीतक रोग जा पहुँचता है (केरीज), पीबमें बहुत बदबू रहती है और मुँहसे सडी गन्ध निकलती है। इस रोगमें धीरजके साथ २-३ महीनो तक दवा सेवन करना आवश्यक है। (हेक्ला-लावा देखिये)।

द्रष्टव्य :—हड्डी या दाँतके जखममें यदि साइलिसियाका प्रयोगकर बहुत कुछ फायदा हुआ हो , पर बीमारी एकदम आराम न होती हो, ऐसे स्थानपर साइलिसियाके बाद—पसिड फ्लोरिकके प्रयोगसे लाभ होगा। पुराना जखमका चिन्ह, फिर लाल हो जाता है, बढता है, घाव हो जाता है।

अँगुलबेढ़ा—नश्तर लगाने बाद जखम, उसमें ठण्डा पानी लगनेपर यदि तकलीफ घट जाये, तो इससे लाभ होनेकी सम्भावना है। (डायस्कोरिया अध्याय देखिये)।

शिराका फूलना—हैमामेलिसकी तरह इससे भी शिरा-स्फीति रोग आरोग्य होता है। हैमामेलिस बाहरी और भीतरी,

दोनों प्रकारके प्रयोगोंमें आता है। यदि शिरा-स्फीति नयी हो—हैमामेलिस, पुरानी होनेपर एसिड-फ्लोरिक लाभदायक है।

दर्द—दाहिनी स्कन्ध-सन्धिमें दर्द, दर्द ऊपरसे अंगुलीतक जाता है। बायीं तर्जनी या समूची अङ्गुलियोंके दर्द और प्रदाहमे—एसिड फ्लोरिक उपयोगी है। समूचे हाथका फूलना, फूली जगह पहले बहुत गर्म हो जाती है और उसमें तकलीफ रहती है, इसके बाद पक जाती है। इसमे भी—फ्लोरिक एसिड लाभ करता है।

पेशाब—पेशाब करनेके समय और पेशाब करनेके बाद मूत्रनलीमे आगसे जल जानेकी तरह जलना (ऐसी जलन—कैन्थेरिसमे भी पायी जाती है), पेशाबके समय नहीं, अन्य समय जलन—स्टैफिसेग्रिया।

चर्म-रोग—किसी चर्म्मरोगमे यदि बेतरह खुजलाहट रहे—फ्लोरिक एसिड फायदा करेगा। मेजेरियम—इसकी उच्च शक्तिसे कितनी ही बार खुजली, तर खुजली, अकौता इत्यादिकी बेतरह खुजलाहट आराम हो जाती है। फ्लोरिक एसिडमे—शरीरके भिन्न भिन्न अंशोंमे, थोडीसी जगहमें, उद्भेद निकलते है, रोगीकी त्वचा सूखी और रुखडी रहती है।

पाकस्थलीके रोग—अजीर्ण रोगमे पेट फूलना, पेटमें दर्द और पेटमें तकलीफ, रोगीको प्यास बहुत अधिक लगती है, केवल ठण्डा पानी पीना चाहता है, खाने-पीनेकी थोडी भी गडबडीसे तबियत खराब हो जाती है। पित्तकी कै होती है, हमेशा डकार

लिया करता है, उसमे वायु निकलती है। इससे रोगीको आराम मिलता है।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा—साइनोवाइटिस (घुटनेकी सन्धिका प्रदाह), उदरी, खासकर शराबियोंकी, यकृत बडा और कडा हो जाना, हाइड्रोथोरैक्स (कलेजेमे पानी इकट्ठा होना), नाककी पुरानी सर्दी, गलगण्ड (घेघा), गलेके भीतर उपदंशका जखम, नाकके भीतर सडे घाव, (Ozœna-नकसीर) कानमे पीव, सरके केश झड जाना, खल्वाट पड जाना, लहसन (Nœvi), जखम आराम हो कर फिर लाल हो जाना और खुजलाना प्रभृति बीमारियोंमे भी—फ्लोरिक एसिड लाभदायक है।

सदृश (complements)-कोका, साइलिसिया।

सम्बन्ध—फ्लोरिक-एसिड, दाँतके दर्द मे—काफिया और स्टैफिसेग्रियाके बाद, हिप-ज्वाएण्ट (उरु-सन्धि) की बीमारीमे—कैलि-कार्बके बाद, शराबियोंके शोथ और उदरी रोगमे—आर्सेनिकके बाद, बहुमूत्र रोगमें—एसिड फासके बाद; अस्थि-रोगमे—साइलिसिया और सिम्फाइटमके बाद और कण्ठमालामें—स्पजियाके बाद व्यवहार करना चाहिये।

विष-क्रिया नाशक (antidote)—साइलिसिया।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम (potency)—६—२०० शक्ति। फारमुला—५-श्री।

एसिड गैलिकम।

(ACID GALICUM)

(माजूफल)—यह रक्तस्राव रोकनेके लिये प्रसिद्ध है। ब्राइट्स-डिजिजके कारण रक्तस्राव, मसाने (किडनी) से रक्तस्राव, प्रोस्टेट ग्लैण्ड (यह मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थि मूत्राशयके मुँहपर नीचेकी ओर रहती है) प्रदाहकी वजहसे रक्तस्राव इत्यादि रोगोंमें और मूत्रग्रन्थिके प्रदाह (nephritis) की वजहसे पेशाबमें जलन रहनेपर कितनी ही बार, इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है। साधारणत इसका—१x ट्राइटुरेशन ही अधिक लाभदायक होता है।

थाइसिस—यक्ष्मा रोगमे यह दवा नियमित रूपसे सेवन करनेपर दूषित स्राव निकलना बन्द हो आता है और पाकस्थलीकी क्रिया और भूख बढ जाती है। फेफड़ोंमें दर्द, फेफड़ेसे, मुहसे रक्तस्राव, बहुत ज्यादा बलगम निकलना, सवेरे कण्ठमें बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा इकट्ठा रहता है, पर रातमे सूखा—कुछ भी नहीं रहता, यदि थाइसिसकी बीमारीके साथ ये उपसर्ग रहें—गैलिक एसिडसे और भी ज्यादा लाभ होगा।

कब्जियत—कितनोंका ही यह कहना है, कि होमियोपैथीमें कब्जियतकी बढ़िया दवा नहीं है, जिनकी ऐसी धारणा हो, वे नीचे लिखी दवाओंकी परीक्षा कर।

एसिड गैलिक—१x विचूर्ण, ५ से १० ग्रेन मात्रामें, कुछ दिनोंतक २।३ बार सेवन करना चाहिये। हाइड्रैस्टिस (देखिये)

इलाटिरियम—१x शक्ति, २।१ बूंद मात्रामें, नित्य सबेरे इसका सेवन करनेपर कोठा साफ हो जाता है।

"Elaterin $\frac{1}{20}$ of a grain palliative" अर्थात् इलाटिरिन—१ ग्रेन विचूर्ण मूल औषधको २० भाग कर, उसका १ भाग सेवन करनेपर सामायिक जुलाबकी तरह क्रिया होती है।

डा० शुसलरके मतसे—कैलि-म्यूर—६x शक्ति, १० ग्रेन मात्रामें गर्म पानीके साथ सेवन करनेपर कोठा साफ हो जाता है।

ओपियम ३०, रोज सबेरे, १ मात्राके हिसाबसे ५।७ दिनोंतक सेवन करनेपर कब्जियतमें फायदा दिखाई देता है। यदि एक मात्रासे फायदा न हो तो नित्य ४।५ मात्रा और जितने दिनोंतक पेटमें दर्द न आरम्भ हो जाये, तबतक सेवन करना चाहिये। पेटमें दर्द होते ही समझना होगा कि दवाकी क्रिया हुई है।

सदृश (complements)—आर्स-आयोड, कैल्केरिया-कार्ब, फास, सल्फर।

क्रम (potency)—१x—६x विचूर्ण।

एसिड हाइड्रोसियानिकम।

(ACID HYDROCYANICUM)

तीता बादाम, शफ्तालूके बीये, आता फलका बीज, बेरकी गुठली प्रभृतिके बीजों और पीच गाछके पत्तेमें एक तरहका तेज

धनुष्टङ्कार—शरीर कड़ा हो जाता है, माथा पीठकी ओर धनुषकी तरह टेढ़ा हो जाता है, सांस देरसे चलती है, जबड़े अटक जाते हैं, मुँहमें फेन भर आता है, और गर्दनमें खींचन होती है। यदि वक्षस्थलमें खींचन हो—साइक्यूटा। साइक्यूटाका रोगी टकटकी लगाकर देखता रहता है, बेहोशी जल्दी-जल्दी आती है। हाइड्रोसियानिक एसिडकी बेहोशी ज्यादा देरतक ठहरती है।

मृगी—असली मृगी नहीं, मृगीकी तरह ही बेहोशी और खींचन, खींचन आरम्भ होनेके पहले वमन, जी मिचलाना, मुँहमें पानी भर आना प्रभृति कई लक्षण रहते हैं (एब्सिन्थियम देखिये।) दाँती लग जाती है, मुँहसे फेन निकलता है, पलकें स्थिर हो जाती हैं या बड़ी हो जाती हैं।

खाँसी—हृत्पिण्डकी बीमारीके साथ खाँसी और यक्ष्मा रोगियोंकी सुखी सुसखुसी खाँसीमें—एसिड हाइड्रो लाभदायक है। यक्ष्माकी खाँसी अगर रातमें बढ़े और खाँसीके साथ ही साथ थोड़ा बलगम, उसमें खूनके छींटे मिले रहें—लोरोसिरेससे लाभ होता है। (लैकनैन्थिस देखिये)।

अकड़न—इस रोगमें अगर ऊपर बताये धनुष्टङ्कारके सब या थोड़े लक्षण मिलें—हाइड्रोसियानिक एसिडका व्यवहार करना चाहिये।

शूलका दर्द—गैस्ट्रैलजिया या पाकाशयका शूल, पेटमें भयानक दर्द, पेट खाली होते ही दर्द बढ़ जाता है।

हृद्रोग—कलेजेमें बहुत धडकन, नाडी कमजोर, असम, सारा शरीर ठढा, कलेजेमें तकलीफ देनेवाला दर्द, एन्जाइना-पेक्टोरिस (हृत्-शूल)।

ज्वर—किसी भी ज्वरमे यदि नाडी छूटकर रोगीकी हालत खराब हो जाये—सबके पहले हाइड्रोसियानिक एसिडको स्मरण करना चाहिये।

विष-क्रिया-नाशक (antidote)—ऐमोन-कार्व, कैम्फर, ओपियम।

क्रम (potency)—३x—३० शक्ति। फारमुला ६-वी।

एसिड लैक्टिकम।

(ACID LACTICUM)

(मठा या दहीमें अलकोहल मिलाकर तैयार होता है)—यह पेशाबकी बीमारी और बहुमूत्र (diabetes) रोगमें ही अधिक व्यवहृत होता है। बहुमूत्रकी बीमारीमें—जिनके पेशाबमें अधिक चीनी (sugar) रहती है, पेशाब परिमाणमें बहुत अधिक और बार-बार होता है, बहुत अधिक कब्जियत रहा करती है, जिन्हें जुलाब लेनेके विना पाखाना ही नहीं होता, उनकी बीमारीमें यह अधिक फायदा करता है।

लैक्टिक-एसिड—रोगीके पैरमे पसीना होता है, टेलुरियम, साइलिसिया, थूजा, एसिड-नाइट्रिक, ग्रेफाइटिस, कैलि-कार्ब, इत्यादि दवाओंमे भी पैरमे पसीना होनेका लक्षण है, पर इनके पसीनेमे बदबू रहती है, लैक्टिक एसिडके पसीनेमे बदबू नहीं रहती।

लैक्टिक-एसिड—इसकी क्रिया श्लैष्मिक झिल्ली और जोडापर होती है, इससे पहले प्रदाह और इसके बाद वात रोगकी तरह लक्षण पैदा होते है।

चरित्रगत लक्षण —

१। सन्धि या पेशी वात, रातमें और हिलने-डोलनेपर बढ़ना, २। डिस्पेप्सिया—खाई हुई चीज अम्लमे परिणत हो जाती है, गर्म, कडवी, तीती डकारें आती है और पाकस्थलीसे मुँहतक जलन होती है। ऐसा मालूम होता है, कि गलेमे एक गोला अडा हुआ है, ३। मुँहमे पानी भर आता है, लार बहती है, कै, जी मिचलाता है, ४। गर्भावस्थाकी कै, कमजोर, रक्त-हीन तथा रक्त-प्रदर रोगवाली स्त्रियोकी कै की बीमारी, ५। नाक से खून जाना (epistaxis), ६। चीनी मिला बहुमूत्र—दिन-रात सभी समय पेशाब लगता है, पेशाब परिमाणमें अधिक, पेशाब रोक रखनेकी चेष्टा करने पर दर्द।

गांठोंकी बीमारी—बगलकी गांठका फूलना और प्रदाह, इससे कलेजे तक दर्द होता है और यह दर्द हाथतक चला जाता है।

वातका दर्द—कमरमें दर्द, दर्द कन्धेतक जाता है, कमरके नीचे दर्द—चलने पर बढता है। सभी ग्रन्थियोंमें तेज दर्द। हाथकी कलाई, कोहनी, अङ्गुलियोंके जोड या सभी जोडोंका फूल जाना और तेज दर्द (एक्टिया-स्पाइकेटा, कालोफाइलम), घुटना तथा अन्यान्य सन्धियाँ कडीं, अकडीं और उनमें दर्द। लैक्टिक-एसिड—गठिया वात और पेशी-वात, दोनों तरहके वातोंमें ही उपयोगी है। इसका दर्द रातमें और हिलने-डोलने पर बहुत बढता है, रोगीको बहुत अधिक पसीना होता है, चलनेके समय समूचा शरीर काँपता है। प्रत्यग आदि ठण्डे अनुभव करता है।

गलेके भीतरकी बीमारियाँ—जलनके साथ एक तरहकी गरम गैस पाकस्थलीसे गले तक चढ़ती है, बहुत ज्यादा, गादकी तरह लसदार बलगम निकलता है, इसके अलावा ऐसा अनुभव होता है, कि मानो गलेमें एक पोटली या छोटे गोलेकी तरह पदार्थ अडा हुआ है। इसी वजहसे रोगी बराबर घूँट लिया करता है।

गर्भावस्थामें वमन—इस एसिडके सेवनसे आराम हो जाता है।

बादकी दवाएँ (follows well)—सोरिनम।

क्रियामें व्याघात करनेवाला (inimical)—काफिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—ब्रायोनिया।

क्रम (potency)—२४—३० शक्ति। फारमुल—६-ष्ठी।

एसिड म्यूरियेटिकम ।

(ACID MURIATICUM)

(Hydrochloric acid नमकके तेजाब या नौसादरसे तैयार होता है)

ज्वर-विकार (सान्निपातिक ज्वर), ज्वर, मुँहमे घाव, सडे घाव, गलेका जखम, जीभका जखम, अतिसार, घाण्टी या उपजिह्वाका बढना, डिफ्थीरिया, सिरोसिस-लिवर (यकृतका सिकुड जाना), आँत उतरना (हर्निया), कमजोर बच्चे और गर्भवती स्त्रियोका बवासीर इत्यादि बीमारियोंमें इसका हमेशा प्रयोग होता है।

म्यूरियेटिक एसिड—गैंगलियोनिक नर्वस-सिस्टमके (पिंगल नाडी-मण्डल) ऊपर क्रिया प्रकट कर, यह रक्त, चर्म और समूचे अन्न-पथपर अपनी क्रिया प्रकट किया करता है। इसमें अकसर मुँह और मलद्वारपर ही रोगका आक्रमण दिखाई देता है, पाकस्थली और आँतोंकी श्लैष्मिक झिल्लीमें (म्यूकस-मेम्ब्रेन) प्रदाह और जखम हो जाते है, रक्त दूषित हो जाता है, रक्त जमने लगता है और खून खराब हो जाता है। कितने ही टायफायड ज्वरोंमें (मोतीझरा) इस एसिडकी क्रिया साफ साफ दिखाई देती है। काले केश, काली आँखें और काले चेहरेके मनुष्योंकी बीमारीमें यह ज्यादा उपयोगी होता है।

<u>चरित्रगत लक्षण</u> —रोगी उत्तेजित, चिडचिडा, जरा-सेमें रज हो जाता है और बिगड उठता है, २। ताकत घटानेवाली सब

तरहकी बीमारीमें रोगी बेहोश अवस्थामे पडा पडा गोंगियाया करता है, ३। भीषण कमजोरी, तकियेपर सर नहीं रहता—लुडक पडता है, नीचेका जबड़ा झूल पडता है, उठ-बैठनेपर आँखे बन्द हुई जाती है, ४। जीभ और मलद्वार-रोधक (sphincter ani) पेशी अपना काम नहीं करती, ५। जखममें दानेकी तरह पदार्थ पैदा होना, ६। स्त्री-जननेन्द्रियका जखम, मुँहका सांघातिक जखम, जखम गहरा, छेद कर डालता है, जखमके किनारे काले रगके, मुँहसे सडी गन्ध, इसके साथ ही भयानक कमजोरी और शक्तिहीनता, ७। मलद्वारका छुआ न जाना, दर्द, ८। बवासीरमें भयानक दर्द रहनेके कारण मलद्वारको हाथसे छूने नहीं देता; ९। अतिसार—पेशाबके साथ ही अनजानमें पाखाना हो जाता है (हवा खुलनेका समय होनेपर—पेलो), १०। कलेजेमे धडकन, मुँहतक मालूम होती है, ११। टाइफायड और टाइफस-ज्वरमे (मोहज्वर) बहुत कमजोरी, गहरी नींदका भाव, अज्ञान, जोर जोरसे कराहता है या बुदबुदाकर बकता है, जीभके किनारे मैले, दाँतपर कीट (sordes) जमना, जीभ सूखी, चमडेकी तरह, सुन्न हो जाती है, अनजानमें बदबूदार दस्त आते हैं, १२। हृत्पिण्ड—तेज, क्षीण, ३ रा स्पन्दन मन्द-सा हो जाता है।

ज्वर-विकार (मियादी बोखार)—जब रोगी इतना कमजोर हो जाता है, कि बिछावनमें पैतानेकी ओर सरक आता है, अनजानमे पाखाना-पेशाब हुआ करता है, आँतोंका सडना धीरे धीरे बढता जाता है, बुदबुदाकर बका करता है, बेहोश हो जाता है, जोर जोर

[म्यूरियेटिक एसिड—कार्बङ्कलका जखम, वेरिकोज अलसर, (शिराका जखम), जीभका जखम, शय्याक्षत प्रभृति कितनी ही तरह के जखमोंमें लाभदायक है। जखमका रग नीला या कालिमा लिये नीला, जरामे ही जखम्से खून निकलने लगता है और वहुत-सा पीव-खून निकलता है, रोगी जल्दी जल्दी कमजोर हो पडता है]।

उपजिह्वा फूलना—उपजिह्वा फूलकर खूब मोटी हो जाती है और जीभपर गिरती है, इसलिये, वच्चे खाँसते और कै करते है।

बवासीर—ववासीरके मसेका रग नीला, वहुत दर्द, हाथसे छुआ नहीं जाता, कपडा लग जानेसे भी तकलीफ होती है, जरा-सा ठगडा पानी लगनेपर भी तकलीफ वढ जाती है, गरमीसे तकलीफ घटती है। गर्भावस्थामे ववासीरकी वीमारी होनेपर यह ज्यादा लाभ करता है। पेशाव करनेके समय ववासीरका मसा निकल पडता है।

अतिसार—पेशाव करनेके समय अनजानमे ही मल निकल पडता है, कपडा खराव हो जाता है। हवा छूटनेके समय भी कभी कभी मल निकल पडता है (एलो और ओलियैराडर देखिये)। पतला पाखाना अनजानमे निकलना, पेट वोलना, पेटमें दर्द न रहना। वमन—पेटमें कुछ नहीं रहता और टाइफायड ज्वरमे या दूसरी दूसरी वीमारियोंमें मुँहमें जखम और उसके साथ ही ऊपर कहे ढंगका पेटका दोष रहनेपर इससे विशेष फायदा होगा।

वृद्धि (aggravation)—तर हवामें।

सम्बन्ध—ब्रायोनिया, मर्क्युरियस और रसटक्सके बाद प्रयोग होना चाहिये। यह बहुत अधिक तम्बाकू या अफीम खानेके कारण पैदा हुई कमजोरी दूर करता है।

बादवाली दवाएँ (follows well)-कैल्के, कैलि-कार्ब, नक्स, पल्स, सिपिया, सल्फर, साइलिसिया।

क्रिया-नाशक—(antidote)-ब्रायोनिया, केम्फर।

क्रियाका स्थिति-काल (duration)—३५ दिन।

क्रम (potency)—६-३० शक्ति।   फारमुला—५-प।

एसिड नाइट्रिकम।

(ACID NITRICUM)

(सल्फ्युरिक एसिड और नाइट्रेट आफ पोटाससे तैयार होता है) पारा, गर्मी रोग, कण्ठमाला इत्यादिके धातुगत विषसे पैदा हुए रोगोंमें यह एसिड, प्रतिविष (antidote) की तरह काम करता है।

नाइट्रिक एसिड—अस्थि, चर्म, रक्त, श्लैष्मिक-झिल्ली (म्यूकस मेम्ब्रेन) और चर्मका सन्धि-स्थान, ग्रन्थियाँ, ओंठका कोना, मलद्वार, योनि प्रभृतिपर इसकी क्रिया अधिक होती है। जिन मनुष्योंकी पेशियाँ कड़ी पर शरीर दुबला रहता है, काले केश, काली आँखें, स्नायु-प्रधान धातु रहता है, जो अकसर पुरानी बीमारियाँ भोगते

रहते हैं, जिन्हें सहजमें ही सर्दी लग जाती है, जरा-सा अनियम होते ही जिनका पेट खराब हो जाता है और पेटकी बीमारी पैदा हो जाती है, उनपर ही इस दवाकी विशेष क्रिया होती है। जिन्हें कब्जियत रहती है, उनकी बीमारीमें यह उतना लाभदायक नहीं होता। बुढापेकी कमजोरी और अतिसारमें इससे जल्दी फायदा होता है। इसका रोगी थोडेसे कारणसे ही उत्तेजित हो उठता है, रंज हो जाता है, बहुत चिडचिडाता है, अपने आरोग्यके विषयमें निराश रहता है और हमेशा ही न जाने क्या क्या सोचा करता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। गलेके भीतर अथवा किसी दूसरी जगहके दर्दमें, ऐसा अनुभव होना कि काटा या सींक गड गयी है, दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही गायब हो जाता है, एक बार एक जगह तो दूसरी बार दूसरी जगह चबानेकी तरह दर्द, ऋतु-परिवर्तन और नींदके समय बढ जाता है, २। टाइफायड-ज्वर (मोतीझरा) मे रक्तस्राव, जखमसे खून बहना, शरीरके सभी द्वारोंसे खून जाना, जरासेमे भी खून निकलने लगना, ३। पेशाब गदला, थोडा, पेशाब कडवा, या झाल गन्ध-भरा, पसीना, मल इत्यादि सबमे ही बदबू; ४। पारा और उपदंश (गर्मी रोग) की वजहसे प्राइमरी (प्राथमिक), सेकेण्डरी (गौण) या टार्सियारी उपदंशका जखम, पाराके अपव्यवहारकी वजहसे मुँहका जखम, ५। पारा, गर्मी, प्रभृति रोगोंके कारण स्वास्थ्य-भग हो जाना, रोगी होना, ६। अतिसार—बहुत कूथन, पर मल बहुत थोडा ही निकलता है; ऐसा

मालूम होता है—मानो भीतर बहुत-सा मल भरा हुआ है, निफलता नहीं है, मलद्वारमें ऐसा दर्द मानो घाव हो गया है, ७। बवासीर या दूसरी दूसरी बीमारियोंमें पाखाना होने बाद, बहुत देरतक मल-द्वारमें जलन और कांटा गडनेकी तरह दर्द (रैटानहिया), पाखाने के समय भी तेज दर्द, मलद्वारमें फटे घाव (फिशर), ८। मुहके कोनेमें फटे घाव (नैट्रम), ९। टाइफायड ज्वरमें—आँतोंसे रक्त-स्राव (एसिड-म्यूर), गर्भ-स्राव, प्रसवके कारण या कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे अथवा बहुत ज्यादा परिश्रमके बाद रक्तस्राव, रक्त परिमाणमें अधिक, चमकीला, लाल या काले रंगका, १०। गर्मी या प्रमेहकी वजहसे मसे, ११। खडिया मिट्टी, पेन्सिल प्रभृति खानेकी इच्छा, १२। हड्डीके चारों ओर या माथेके चारो ओर ऐसा मालूम होता है, मानो पट्टी बँधी हुई है, १३। किसी भी ऊँची शक्तिकी दवाके प्रयोगके बाद रोगका बढ़ जाना, १४। अपनी बीमारी और बीती हुई तकलीफोंके विषयको लगातार सोचते रहना, हैजाकी बीमारी हो जानेका भय, १५। कानसे सुन नहीं पडता; परन्तु चलती हुई गाडी अथवा रेलगाडीमें चढनेपर उस समय अच्छी तरह सुन सकता है, १६। ऋतुस्राव आरम्भ होनेके पहले मन खराब हो जाता है; १७। रोगी दिनों-दिन दुबला और कमजोर होता जाता है, यहांतक कि मानो कांपता रहता है, हमेशा पडा रहना चाहता है; १८। नाडीकी गति रुक रुककर; १९। सरके केश झड जाते हैं। मूर्दा देहमें स्पर्श सहन न होना, दर्द होते रहना।

उपदंश—ऐसा मालूम होता कि उपदंशके सफेद फूही जमनेवाले (slough) जखमको कोई कांटीसे खोद रहा है और उस जखमके चारों ओर जो मांसांकुर (granulation) पैदा होता है, उसमे हाथ लगते ही खून निकलने लगता है, बँधी हुई पट्टी (bandage) खूनसे भींग जाती है, इसमें फायदा होगा। नाइट्रिक एसिडके उद्भेद (इरपशन) ताँबेके रंगके तथा छोटी छोटी फुन्सियोंकी तरह होते हैं, नाक तथा ओंठके कोनेमे जखम हो जाता है, या फटता है, घावसे जो पीव या रस निकलता है, उसमें बहुत बदबू रहती है, जखम गहरा रहता है। "कांटीसे खोदना और जलन मालूम होना"—ये नाइट्रिक-एसिडके एक विशेष लक्षण हैं। नाइट्रिक एसिडमे—हड्डीका दर्द रातके समय, बर्सातके दिनोंमे या वर्षा ऋतुमे अधिक बढता है। इसके दाने हाथ, माथा और डाढीकी हड्डीमें अधिक होते हैं। पारदकी प्रधान क्रिया-नाशक (antidote) दवा है—<u>हिपर-सलफर</u>, पर यदि उपदंशके साथ पाराका विष मिला रहे—नाइट्रिक-एसिड अधिक लाभ करता है। मैस्टायड मेल (गोस्तन कोष) में प्रदाह पैदा हो कर जखम हो जानेपर (Caries of mastoid) और यह जखम यदि क्रमशः अस्थितक चला जाये—<u>अरम-मेट, नाइट्रिक एसिड</u> लाभ करता है। <u>कैप्सिकम</u>—प्रदाहकी पहली अवस्थाकी दवा है।

मुंहका जखम—मुँहके घावमे मुँहसे लगातार लार बहा करती है। उस घावमें कांटी या सींक गडनेकी तरह दर्द होता है—

इसलक्षणमें नाइट्रिक एसिड अधिक फायदा करता है। अगर जखम जीभ अथवा दाँतके मसूढ़ेसे आरम्भ हो कर गलेके भीतर तक फैल जाये और जखममें काटा गडनेकी तरह दर्द हो, तो इससे जरूर जरूर फायदा होगा। मसूढ़ेमें जखम, उससे रस-रक्त निकलना, सूजन, जलन इत्यादिमें नाइट्रिक एसिडसे खूब फायदा दिखाई देता है। अगर पारा या उपदंशके कारण हो तो और भी फायदा करता है।

जखम—जो जखम बहुत जल्दी जल्दी बढते है, जखमसे बिगडा बदबूदार पीव निकलता है, उसमें हाथ लगते ही खून निकलने लगे तो नाइट्रिक एसिड लाभ करता है। खूनी मसामें इससे ज्यादा फायदा होता है।

पैरकी अंगुलीका जखम—पैरके तलवेमें जखम हो कर उसमें तेज अकडन और खोंचा मारनेकी तरह दर्द। नाइट्रिक एसिडके पसीनेमें बहुत बदबू रहती है। जिनके हाथ, तलहत्थी और बगलमें पसीना होता है, उनके लिये अधिक फायदेमन्द है।

आँखकी बीमारी—कनीनिकका जखम, दो देखना, गुहोरी, घाव इत्यादिमें यह ज्यादा फायदा करता है, यदि फायदा न हो तो—कैल्केरिया-सल्फ प्रयोग करना चाहिये। पारदके अधिक व्यवहारके कारण आइराइटिस (तारकामण्डल प्रदाह) रोगमें—आँखके चारों ओर और यहाँकी हड्डीके भीतर दर्द रहनेपर—नाइट्रिक-एसिडसे लाभ होता है। इसके अलावा—एसाफिटिडा, ...

यस-कोर प्रभृति दवाएँ भी उपयोगिनी है। उनका प्रभेद देखिये। पेसाफिटिडाका दर्द—नाइट्रिक-एसिडकी अपेक्षा और भी ज्यादा होता है और रातमे उपसर्ग बढ जाते है (सिनाबेरिस देखिये)।

सरमें चक्कर और सर-दर्द—सवेरे, रातमें, बिछावन से उठने और टहलनेके समय बढ़ता है और गाड़ीमे चढनेपर दर्द घटता है। सर-दर्दके समय ऐसा मालूम होता है, मानो हड्डीके भीतर दर्द हो रहा है, ऊपर बताये समयोंके अलावा रातमे भी दर्द चढता है। ऐसा मालूम होता है, कि माथेमे एक पट्टी बँधी है। टोपीके दबावसे भी सर-दर्द बढता है, और दर्द कानसे ब्रह्मतालुतक फैल जाता है।

खाँसी—यकृतकी गडबडीके कारण खाँसी, गलेमे सुर-सुरी हो कर खाँसी, रातमे सोने या नींद लग जानेपर खाँसी बढती है। कितनी ही बार सूखी खाँसी आती है, रातकी खाँसीमे अकसर कुछ नहीं निकलता, बलगम खून-मिला, पुरानी सूखी खाँसी, गलेमे जखमकी तरह दर्द, इसके अलावा—यक्ष्मा-रोगकी खाँसीमें भी नाइट्रिक एसिड उपयोगी है। जब फेफड़ेमे ट्यिुबरकल् (गुटिका) फटकर जखम हो जाता है, हेक्टिक-ज्वर (क्षय-ज्वर) और रातमे पसीना हुआ करता है, छातीमे बहुत दर्द होता है, मुँहसे लगातार चमकीला लाल रगका खून निकला करता है, श्वासमे तकलीफ होती है, सबेरे स्वरभग और रोग-वृद्धिके साथ ही साथ पतले दस्त आते है, परीक्षा करनेपर वक्षमे जोरकी घरघर आवाज

मिलती है (loud rales), पीव मिला बदबूदार बलगम निकलता है, उस समय—नाइद्रिक पसिड विशेष लाभ करता है।

थाइसिस (यक्ष्मा)—यह रोग एक तरहसे दुरारोग्य रहनेपर भी जब रोगीके कलेजेमें खून इकट्ठा होता है, इतना दर्द होता है, कि कलेजेपर हाथ नहीं रखा जाता, मुँहसे रक्त आता है, श्वासकष्ट और दम रुक जानेकी तरह हो जाता है, रोगी बहुत अधिक कमजोर हो पडता है, रातमे पसीना होता है, उस समय इससे कुछ फायदा हो सकता है।

भगन्दर और बवासीर—पाखाना ढीला या कडा, पाखानेके समय मलद्वारमें भयानक जलन और ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें काटा चुभोया गया है। नाइद्रिक पसिडमे—पाखानेके समय और बाद भयानक कूथन और वेग रहता है, मलद्वार फटकर घाव हो जाता है, उससे खून गिरता है।

ग्रैफाइटिस—नाइद्रिक पसिडके कितने ही लक्षण रहनेपर भी इसमें वेग और कूथन नहीं रहती।

रैटानहिया (Ratanhia)—३x—६x शक्ति, पाखानेके समय बहुत अधिक वेग रहता है; इसके अलावा जलन इतनी अधिक रहती है, मानो किसीने लाल मिर्चकी बुकनी छिडक दी है।

पियोनिया-आफिसिनेलिस (Pæonia)—२-६; मलद्वारसे हमेशा ही रस निकला करता है और वहाँ दर्द तथा अकडन बहुत

अधिक रहती है। डा० ह्याजेस कहते हैं—कमरके नीचे कहीं भी घाव क्यों न हो, वह पियोनियासे आरोग्य हो जाता है।

मलद्वारमें खुजली, फूलन, मलद्वारमें भयानक जलन, पाखानेके बाद बहुत जाडा मालूम होना, भगन्दर और अतिसार, तकलीफ देनेवाला जखम, पेरिनियम (सीवन) के ऊपरसे लगातार बदबूदार स्राव बहा करता है, बवासीर, मलद्वारका फटना प्रभृति भी पियोनियाके अन्तर्गत है। इसका अध्याय देखिये।

साइलिसिया—बहुत कब्जियत, मल बाहर निकलकर फिर भीतर घुस जाता है।

बवासीरके रोगीको नित्य सवेरे छिलका उतारी काली-तिल पीसकर २ भरी, मक्खन २ भरी, मिसरी २ भरी, मिलाकर खाना चाहिये। बवासीरसे रक्तस्रावके लिये साइमेन्स और इस्क्युलस अध्याय देखिये।

मलद्वारका मसा—मलद्वारके एक तरहके फटे फटे घावके साथ मलद्वारके पास खूब ऊँचा मसा और इसके साथ ही वहाँकी हड्डीमें दर्द रहता है।

पेशावकी बीमारी—थोडा हो या अधिक, पेशावमें अकसर मूत्र रहता है और पेशावमें घोडेके पेशावकी तरह झाल गन्ध रहती है (एसिड बेंजो), It is also useful in oxaluria लगातार पेशावका वेग, पर पेशाव थोडा थोडा होता है, पेशावके समय बहुत जलन रहती है, मूत्रनलीके भीतर जलन, जलन

दूर करनेके लिये रोगी बारबार पेशाब करनेकी चेष्टा करता है, पर उससे तकलीफ और भी बढ जाती है। ये लक्षण अकसर नाइ-ट्रिक एसिडमें दिखाई देते हैं। प्रमेह रोगमें या किसी दूसरे कारण से मूत्रनलीमें जखम होनेपर—नाइट्रिक एसिडसे विशेष फायदा हुआ करता है।

अतिसार और आमाशय—पाखानेमें बहुत बदबू, सड़ी गन्ध, हरा रंग, कालिमा लिये हुरे, पानीकी तरह पतले दस्त, उनमें खूनके छींटे, पाखानेके समय चूर चूर श्लेष्माके टुकडेकी तरह पदार्थ रहता है। पाखानेके समय पेटमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द और जलन और पाखानेके बहुत देर बाद तक दर्द और जलन रहती है। रक्तामाशयमें—बहुत कूथन और वेग, लगातार पाखानेका वेग होता है, पर सभी समय पाखाना नहीं होता, कभी कभी तो खाली खूनका पाखाना होता है, इसके साथ ज्वर भी रहता है। नाइट्रिक एसिडके रोगीको प्राय: पतले दस्त ही होते है, कब्जियत नहीं रहती।

वात-श्लेष्मा-ज्वर—इस रोगमें २ रे या ३ रे सप्ताह म प्राय: आँतमें (Peyer's patches) जखम हो जाता है। जब ज्वरके साथ अतिसार, बदबूदार गहरा हरे रंगका, पीला-हरा, आम या रक्त-मिला पाखाना हुआ करता है, पेटमें कभी कभी तेज दर्द, जीभमें छाले हो जाते है, उस समय नाइट्रिक एसिड लाभ करता है। इस ज्वरमें अकसर निमोनिया हो जाया करता है। छातीमें श्लेष्माकी

घरघराहटकी आवाज, यह लक्षण फेफडेके पक्षाघातका लक्षण बताने-वाला है। जो हो, यह लक्षण दिखाई देते ही क्षणभरकी भी देर न कर, तुरन्त नाइट्रिक एसिडका प्रयोग करें। इस समय रोगीकी नाडी हरेक तीसरे स्पन्दनपर रुक जाती है (एसिड-म्यूरमे भी यह लक्षण है)। टाइफायड ज्वरमें मलद्वारसे रक्तस्राव होनेपर—नाइट्रिक एसिड अधिक लाभ करता है। इसके अलावा, इस ज्वरमे रक्त-स्रावकी और भी कई दवाएँ लक्षणके अनुसार प्रयोग की जाती हैं —

पल्यूमिना—इसका रक्त थक्का थक्का, एक एक थक्का खूब बडा पेटमें दर्द बिलकुल ही नहीं रहता।

हैमामेलिस—रक्त कुछ काला (ठीक हैमामेलिस मदर टिचरके रंगकी तरह), इसमे रक्तस्रावके समय पेटमें दर्द रहता है। खूब थक्का थक्का नहीं रहता।

एसिड-नाइट्रिक—रक्तका रंग चमकीला, चमकीला लाल, रक्त थक्के नहीं रहते, यहाँतक कि छोटे थक्के भी नहीं रहते।

आर्निका—रक्त घोर लाल रंगका, इसके साथ ही छोटे छोटे थक्के रहते हैं।

लैकेसिस—सडी दुर्गन्ध, काले रंगके पाखानेके साथ रक्त।

टेरिबिन्थ—रक्तस्रावके साथ पेट फूलना (पेशावकी राहसे रक्तस्राव)।

चायना—अधिक रक्तस्रावके कारण कमजोरी, इसमें कानमें भों भों आवाज होती है और बेहोशीका भाव हो जाता है। स्मरण

खें—टाइफायड ज्वरकी प्रधान दवाएँ—वैप्टीशिया, आर्सेनिक, म्यूरियेटिक-एसिडसे भी रक्तस्राव बन्द होता है ।

गर्भस्राव—गर्भस्राव होने वाद या प्रसवके वाद, बहुत अधिक रक्तस्रावके साथ ऐसा दर्द हो कि योनिकी राहसे पेटकी नस-नाड़ियाँ निकल पड़ेंगी और कमर, उरु-देश तथा कुल्हेंमें दर्द रहनेपर—एसिड नाइट्रिक अधिक उपयोगी होता है ।

स्त्री-रोग—कुछ पीले रंगका सड़ा बदबूदार प्रदर-स्राव, ऋतुस्रावके वाद बढ़ना, जरायु-ग्रीवामें जखम और प्रदाह, जरायु-मुखपर घतोंड़ीकी तरह उत्पत्ति, उससे पानीकी तरह पतला खाल उधेड़ देनेवाला बदबूदार स्राव निकलता है । योनि-मुखमें अकड़न-सी होती है और खूब खुजलाता है, योनिके भीतर काँटा गड़नेकी तरह दर्द । जरायुसे या जरायुके जखम और अर्बुदसे लगातार रक्त-स्राव हुआ करता है । जरायुसे रक्तस्राव होनेपर तलपेटसे नीचेकी ओर भयानक दर्द होता है । दर्द उरुतक उतर जाता है, पेशाबमें कटु गन्ध रहती है, रोगी कमजोर और रक्तहीन हो जाता है । मासिक ऋतुस्राव खून जल्दी जल्दी और परिमाणमें अधिक होता है, खूनका रंग कीचड़-मिले पानीकी तरह रहता है । प्रसवके बाद जरायुसे रक्तस्राव (Metrorrhagia) ।

सविराम ज्वर—जिनको मर्क्युरीको धातु है, उनके पुराने ज्वरमें नाइट्रिक एसिडका विशेष लक्षण है—मुँहमें छाले, पेशाबमें बदबू, सन्ध्यामें, रातमें या ऋतु-परिवर्तनके समय यदि ज्वर बढ़े

तो यह विशेष उपयोगी है। नाइट्रिक एसिडका ज्वर दो या तीन दिनोका अन्तर दे कर आता है। सविराम ज्वर—तीसरे पहर सध्यामे या रातमे अगर आये—नक्स-वोमिकाकी तरह लगातार जाडा लगता रहता है, इसके बाद १०।१५ मिनिटके लिये ताप और उसके बाद पसीना हो, सभी अवस्थाओमे प्यास न रहे, पैर बहुत ठण्डे रहें, इसके पसीने और मूत्रमें घोडेके पेशावकी तरह बदबू रहती हो, ओठके कोने फटे और ओठमे घावकी तरह हो जाये, यकृतके साथ पुराना बोखार हो—नाइट्रिक एसिड लाभदायक है।

कानकी बीमारी—कानके भीतरसे पानीकी तरह स्राव निकलता है, उसमे बहुत बदबू रहती है। कानमें काँटा गडनेकी तरह टपकका दर्द और तकलीफ होती है, गर्मी रोगवाले मनुष्यका कान पकना, कानके पीछे सूजन और पककर सड जाना।

बहरापन—रोगी कुछ भी सुन नहीं पाता, पर जब गाडी या रेल-गाडीमे सवारी करता है, उस समय धीरे धीरे बात करनेपर भी सुन पाता है (ग्रैफाइटिस देखिये)। इसका एक लक्षण और भी है—गाडीमे जाने आनेके समय गाड़ीकी आवाजसे उसे कोई तकलीफ नहीं होती, पर पक्की सडकसे जानेवाली गाडीकी आवाज सहन नहीं होती, तकलीफ मालूम होती है। कुछ चबानेपर कानमे खटखट आवाज होती है।

नाइट्रिक-एसिड—पारेके अपव्यवहारके कारण बीमारियाँ और अधिक मात्रामे डिजिटेलिस खानेके कारण पैदा हुए रोगों

प्रतिषेधक है। यह उपदंश रोगको एक महौषधि है, केलेडियमसे पहले और बाद तथा कैल्केरिया, हिपर और थूजाके और खासकर कैलि-कार्बके बाद ज्यादा फायदा करता है। लकेसिसके पहले या बाद इसका व्यवहार करना उचित नहीं है।

वृद्धि—आधी रातके बाद, छूनेपर, सर्दी-गर्मीके हेरफेरसे, पसीना निकलनेपर, पानीमें धोनेपर, नहानेपर, गरमीकी ऋतुमें, शीत-प्रधान स्थानोंमें, जागनेपर, टहलनेपर।

ह्रास—सवारी आदिमें घूमनेके समय (काकुलस—वृद्धि)।

बादकी दवा—आर्निका, परम-ड्राइ, बेल, कैल्के, कार्बो, कैलि-कार्ब, क्रियो, मार्क, फास, पल्स, साइलि, सल्फ, सिपि, थूजा।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोनाइट, कैल्केरिया, हिपर, कोनि, मर्क, मेजेरि, सल्फ।

क्रियाका स्थिति-काल (duration)—४० से ६० दिन।

क्रम (potency)—६—२०० शक्ति (पारद-विष-नाशक—२०० शक्ति ही उत्तम है)। फारमुला—५-प।

एसिड आक्जैलिकम।

(ACID OXALICUM)

(रेयत चीनी प्रभृतिसे उत्पन्न एक विषाक्त तेजाब)—सन् १८४४ ईस्वीमें डा० चार्ल्स न्यूहाउने इसकी परीक्षा की और

उसमें पाकस्थली और आँतोंका प्रबल प्रदाह, इसके साथ ही नाडीकी चाल अनियमित, अज्ञान भाव, शीत आ जाना, अकडन प्रभृति कितने ही लक्षण उत्पन्न हुए। इससे स्पाइनल-कार्ड (मेरुदण्ड) का प्रदाह पैदा होता है और मोटर सेण्टर (गति-केन्द्र) का पक्षाघात होता है। गला, छाती और श्वासनलीके आक्षेपकी वजहसे श्वास कष्ट होता है, गला फँस जाता है और स्वरभग होता है। इसका मानसिक लक्षण—मनमें बहुत आनन्द, कोई भी विषय मनमें पैदा होते ही तुरन्त कार्यमें परिणत करता है, किसी बीमारी के विषयमें सोचते ही वह उत्पन्न हो जाती है। नीचे लिखी कई बीमारियोंमें यह लाभदायक है —

दर्द—प्राय आधा इचसे लेकर १ इच तक, शरीरकी इतनी छोटी-सी किसी एक जगहपर तेज दर्द,यह बहुत जल्दी जल्दी पैदा होता है और छूट जाता है, बहुत थोडी देरतक रहता है—यहाँतक कि कई सेकेण्डसे अधिक नहीं ठहरता। गठिया वातकी तरह—इसमे सन्धियोमे भी खूब दर्द होता है, पर जिनके पेशाबमे आकजैलेट रहता है, उनकी बीमारियोंमें यह अधिक लाभ करता है। कमरका दर्द—यह कूल्हा और पीठतक फैल जाता है, रोगी सोया रहे या बैठा,चाहे जिस अवस्थामे रहे,उस अवस्थाको बदल देनेपर दर्द कुछ घटता है। वातका दर्द—शरीरकी बायीं ओर अधिक हमला होता है।

स्नायुशूलका दर्द—मेरुदण्डके (spinal) स्नायु-शूलके रोगीमें अङ्ग-प्रत्यङ्ग हिलानेकी शक्ति नहीं रहती। अण्डकोषके

स्पर्मेटिक कार्ड (शुक्रवहा नली) का स्नायुशूलका दर्द, जरा हिलने डोलनेमे ही मानो जान निकल जाती है। अण्डकोष भारी और ऐसा मालूम होता है, मानो कुचल गया है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमें तेज धडकनके साथ श्वासमें तकलीफ, हृत्पिण्डके पास सभी समय मानो कुछ धडफड करता है, रातमें सोनेपर वह बहुत बढ जाता है। बायाँ फेफडा और हृत्पिण्डके पास खोचा मारनेकी तरह बेतरह दर्द, यह दर्द बन्द करनेके लिये रोगी बडे कष्टसे खींचकर साँस लेता है और फिर श्वास जोरसे छोड देता है। एन्‌जिना-पेक्टोरिस अर्थात् हृत्शूल (इसका लक्षण ग्लोनोयिन अध्यायमें हृत्पिण्डकी बीमारीमें देखिये)।

अतिसार—पानीकी तरह पतले और बहुत ज्यादा परिमाणमें दस्त, रक्त और आम मिले पतले दस्त। कभी कभी केवल आम, इसके साथ ही दस्त आनेके पहले और दस्तके समय नाभीकी जगहपर ऐंठनकी तरह दर्द, इसमें दस्तके बाद कभी कभी जी मिचलाता है, दस्त ज्यादा आनेपर पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है, रोग हैजाकी भाँतिके लक्षणोंमें परिणत हो जाता है।

अम्लशूलका-दर्द—नाभीके स्थानपर और नाभीके ऊपरी भागमें पेटमें कालिक (शूलका) दर्द, दर्द भोजनके दो घण्टे बाद आरम्भ होता है, पेट फूल उठता है, पेटमें वायु इकट्ठा होता है, यकृतके स्थानपर सुई गडनेकी तरह दर्द होता है, तलपेटकी किसी एक छोटी-सी जगहमें जलन होती है। खट्टी, तीती या स्वादशून्य

डकार आती है, मुँहसे लार बहती है, पेटमें दर्द होता है, छूनेपर बढता है (कोलोसिन्थ और पेनाकार्डियम अध्याय देखिये।)

हैजा—आवाज बैठी, कष्टसे साँस लेना, कलेजा धडकना, हृत्पिण्डमें दर्द।

वृद्धि—रातके ३ बजे, बाई ओर, साधारण छूनेपर, रोगके विषयमें सोचनेपर।

सम्बन्ध—आर्सेनिक, कोलचिकम, आर्जेण्ट, पिक्रिक-एसिड सदृश।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला, जलीय—५-वीं।

एसिड फास्फोरिकम।

(ACID PHOSPHORICUM)

(फास्फोरस और आक्सिजेन मिलाकर तैयार होता है—६० भाग डिस्टिल्ड वाटरमें एक भाग शुद्ध एसिड गलाकर उसका १० भाग अलकोहलमें मिलानेपर २x शक्ति तैयार होगी)—यह साधारणत मूत्रयन्त्र, स्नायु-मण्डल और आँतोंपर अधिक प्रभाव पहुँचाता है। धातु-दौर्बल्य और वीर्यक्षयके कारण बीमारियाँ, बहुत अधिक इन्द्रिय-भोग,—जैसे स्वप्न-दोष, हस्तमैथुन इत्यादि कारणोंसे बालकोंको नाना प्रकारकी बीमारियाँ हो जाती हैं और वे धीरे धीरे इतने कमजोर हो पडते हैं, कि बोलनेमें भी कलेजेमें कमजोरी मालूम होती है। कितनो ही का कथन है, कि ऐसी जगह यह मन्त्र-

शक्तिकी तरह काम करता है। स्टैनम—नामक दवामें भी वक्ष-स्थलमें कमजोरीका भाव है, पर यदि यह शुक्रक्षयके कारण हो, स्वप्न-दोषके कारण हो या पाखाना-पेशाबके समय ज़ोर देनेके कारण हो शुक्र निकलनेके कारण होना चाहिये—एसिड-फास उपयोगी होता है। ऐसे स्थानपर प्रायः ऐसा दिखाई देगा, कि रोगी मानो उदास, सरमें चक्कर आता है, शरीर काँपता है, लिङ्ग शिथिल हो जाता है, पुरुषत्व घट जाता है, लिङ्गमें कडापन बिलकुल ही नहीं आता। चायना—यह भी कमजोरीकी बहुत बढ़िया दवा है, पर यदि बहुत दिनोंसे शुक्रक्षयके कारण बीमारी हो—एसिड-फास २x, ३x, निम्न डाइल्यूशन (क्रम) और एसिड-फास-डिल ही अधिक उपयोगी है। (इन्द्रिय अध्याय देखिये)।

एसिड फासमें—पहले मानसिक दुर्बलता होती है। इसके बाद शरीर पर आक्रमण होता है म्युरियेटिक एसिडके विपरीत), जो युवक खूब जल्दी-जल्दी बढते हैं, जिन्हें बहुत ज्यादा शारीरिक और मानसिक परिश्रम करना पडता है, यह उनके लिये उपयोगी है। किसी नयी बीमारीके कारण यदि स्वास्थ्य भग्न हो पड़े, बहुत दुःख, प्रेमका प्राप्त न होना, या शरीरके ओजवाले पदार्थोंका क्षय हो जानेके कारण शरीर नष्ट हो जानेकी सम्भावना हो, तो इसे स्मरण करना चाहिये।

चरित्रगत लक्षण —

१। न्युरेस्थीनिया (दौर्बल्य), नर्वस डिबिलिटी (स्नायु-दौर्बल्यकी बीमारी), २। निद्रित अवस्थामें और पेशाबके समय या

पाखानेमें वेग देनेके बाद अनजानमे वीर्य निकल जाना (सैलिक्स नाइग्राके समान), ३। अण्डकोष फूलना और दर्द ; ४। अति रज, अधिक दिनो तक सन्तानको स्तनसे दूध पिलाना, श्वेत प्रदर, प्रमेह-स्राव इत्यादि कारणोंकी वजहसे बहुत कमजोरी , ५ थोडी ही उमरमे केश पक जाना , ६। विना चीनीका बहुमू (डा० काउपरथायेट कहते हैं, कि चीनी आने वाले बहुमूत्रकी य अमोघ दवा है), ७। पेशाव दूधकी तरह दिखाई देता है, इस साथ ही एलबुमेन (अण्डलाल), बहुत जल्द सडने लगता है विना दर्दका पुराना अतिसार, उससे कमजोरी न आना , ' लैरिञ्जाइटिस (स्वरयन्त्र प्रदाह), ट्रैकियाइटिस (टेंटुआका प्रदाह ब्राङ्काइटिस (वायुनलीका प्रदाह) प्रभृति बीमारियोंमे छाती निचले भागमे सुरसुरी होकर खाँसी आती है, खाँसी सध्यामें अ सोनेके बाद वढती है, सवेरे बलगम निकलता है, उसका स्व नमकीन रहता है , ६। फेफडेकी बीमारीमे कलेजेके भीतर ब कमजोरी मालूम होना , १०। लम्बर-वर्टेब्राका कैरीज (क कशेरुकाका अस्थि-क्षय रोग), ११। हिपज्वायण्ट (कूल्हे सन्धि) के रोग, ग्रन्थियोकी दर्द-रहित सूजन और पैरका ज (atonic), १२। हस्तमैथुनके कारण युवकोका व्रण, स्फोटक , १३। पलसेटिलाकी तरह कोमल प्रकृति , १४। ट फायड (सान्निपातिक ज्वर), टाइफस-ज्वर (मोह-ज्वर) अज्ञानकी तरह पडा रहता है, पुकारने पर भी जवाब नहीं देत पर जब जागता है, तब अच्छी तरह ज्ञान रहता है , १५। शर

चींटी रेंगनेकी तरह सुरसुरी होती है, १६। गठिया वातकी तरह दर्द, १७। सर दर्द—माथेके ऊपरी भागमे दर्द, दवाव मालूम होना, कानमे भों भों शब्द, १८। नाकसे रक्तस्राव, १९। रक्त-स्फोटक।

बहुमूत्र और काइल्युरिया—चीनीके साथ (with sugar) और विना चीनीका (Diabetes insipidus) दोनों तरहके बहुमूत्रमें ही—एसिड फास लाभदायक है। रोगीको रातमें कितनी ही बार पेशाव करना पडता है, रातमें पेशाव ज्यादा होता है, तेज प्यास, लगातार जीर्णा शीर्णा और कमजोर हो पडता है (डा० ह्यजेस कहते हैं—स्नायु-दौर्बल्यके कारण बहुमूत्र रोगमें यह अधिक लाभदायक है), दूधकी तरह सफेद या खडिया घुली रहनेकी तरह यदि पेशाव आता हो, तो उसमें भी यह लाभ करता है। आयोडम और कैल्केरिया-कार्बमे—भी खडिया-घुली रहनेकी तरह पेशाव होनेका लक्षण है, पर उनका धातुगत लक्षण रहना चाहिये। डा० जार कहते हैं—दूधकी तरह सफेद पेशाव होनेपर मैं एसिड-फासके अलावा—कार्बो-वेज, डल्कामारा और कभी-कभी एसिड-म्यूर व्यवहार करता हूं, और उनसे खासा फायदा दिखाई देता है (गाढा दूध, मठा या चायकी तरह हल्की लाली लिये पेशाव होने पर—उसे काइल्यूरिया कहते हैं। उसमें पेशावके साथ मिला हुआ रक्त और चर्बी निकलनेके कारण, पेशावका रंग ऐसा दिखाई देता है।) मैंने

फाइल्यूरिया रोग—एसिड-फास—३x शक्ति, नित्य ४ मात्रा, सिर्फ २ सप्ताह तक सेवन कराकर आरोग्य कर दिया था। एलो-पैथोंने कहा था कि यह बीमारी आरोग्य नहीं हो सकती। एसिड-फासमें—पेशाबको रख छोड़ने पर उसमें चाशनीकी तरह तली जमती है। जो हो, इस एसिडको व्यवहार करनेके समय रोगीके धातुदौर्बल्य पर सबसे पहले नजर रखनी चाहिये।

खाँसी—रोगी सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता, हवा लगते ही नयी सर्दी पैदा हो जाती है। सवेरे, शामको और सोने बाद खाँसी बढ़ती है, सवेरे बलगम अधिक निकलता है, बलगमका स्वाद नमकीन और रङ्ग पीला रहता है। फास्फोरिक-एसिडकी खाँसी ढीली होती है, ऐसा मालूम होता है मानो पाकस्थलीसे खाँसी आ रही है। गलेमें सुरसुरी होकर कभी-कभी आक्षेपिक खाँसी होती है। ब्राङ्को-निमोनियामें—बहुत ज्यादा बलगम निकलता है।

अतिसार—बार-बार दस्त, दस्त परिमाणमें अधिक, पाखानेके साथ अजीर्ण पदार्थ, अनजानमें दस्त, वायु निकलनेके साथ साथ अनजानमें दस्त आता है (एलोकी तरह), उसमें पेट फूलता है, पेट बहुत गड़गड़ाता है, भुटभाट किया करता है, पेटमें गड़गड़ आवाज होती है, पर दर्द जरा भी नहीं रहता, पाखानेका रङ्ग प्राय सफेद या पानीकी तरह और पीले रङ्गका। एसिड-फास प्रयोग करनेके समय सभी बीमारियोंमें कमजोरीका लक्षण रहना चाहिये,

परन्तु अतिसारमें कमज़ोरी बिलकुल ही नहीं रहती, यही इसकी एक खास विशेषता याद रखे (पाखाना या पेशाव यह समझ में नहीं आता, मलका कोई रङ्ग ही नहीं रहता—मार्क-डल-सिस)।

एसिड-फासके साथ चायनाका बहुत ही निकट सम्बन्ध है, दोनोंका ही नयी और पुरानी बीमारीमें प्रयोग होता है। चायनाके मलका रग—पीला, सफेद, मल पतला, लसदार और रोगी जो खाता है, वही पाखानेके साथ कुछ निकलता है। ओलियेण्डर में भी—इसी तरह अजीर्ण खाद्य निकलनेका लक्षण है, परन्तु उसमें रोगीने बहुत पहले जो कुछ खाया था, वह भी निकलता है। एसिड-फासमें पाखानेका रङ्ग प्राय सफेद होता है, चायनामें कमजोरी बहुत अधिक रहती है और खाने-पीने बाद ही पाखाना बढ जाता है। रातमें अतिसारका बढ जाना, चायनाका एक और भी प्रधान लक्षण है।

सर-दर्द—बहुत पढनेके कारण छात्रोंको सर-दर्द और जिनकी आकृति असली उमरसे अधिक दिखाई देती है, यह उनके लिये बहुत लाभदायक है। कैल्केरिया-फास, नैट्रम-म्यूर भी इनकी प्रधान दवाएं हैं।

स्नायु-दौर्बल्य—सरमें दर्द, सरमें चक्कर, कलेजा धड-धड करना, इन्द्रियोंका अवश हो जाना, पेट फूलना, अजीर्ण, हाथ-पैरोंमें सुनसुनी, स्मरण शक्तिका लोप हो जाना, किसी

सोच न सकना, बात करनेकी इच्छा न होना, नींद न आना, मानसिक सुस्ती इत्यादि इस बीमारीके लक्षण हैं और एनाकार्डियम, आर्जेण्ट-नाइट्रिकम, एम्ब्राग्रिसिया, एसिड-पिक्रिक, कैलिब्रोम, जिङ्कम, फास्फोरस, एसिड-फास, जेलसिमियम, मस्कस, इत्यादि भी लक्षणके प्रभेदके अनुसार इसकी साधारण दवाएँ हैं। फास्फोरिक एसिडमें—थोडेसे परिश्रमसे भी रोगीको कमजोरी मालूम होती है, स्त्री-सगकी इच्छा वहुत प्रवल रहती है। वहुत देरतक लिङ्गमे कडापन रहता है। इससे रात रातभर जागते रहना पडता है, इसके वाद वहुत ज्यादा परिमाणमे वीर्य-स्खलन होता है।

एसिड-पिक्रिक—डा० नैश कहते हैं, स्नायु-दौर्वल्यकी जितनी अच्छी दवाएँ है—रोगका कारण अगर "वहुत ज्यादा इन्द्रिय-परिचालन" हो तो पिक्रिक एसिड सबसे बढ कर, दवा है। इस एसिडका रोगी हमेशा मन-मारे रहता है, केवल सोये रहनेकी इच्छा होती है, उदासीनता, आँखोंके आगे अन्धेरा दिखाई देता है, सभी कामोंकी इच्छा नहीं रहती, पैर हमेशा भारी मालूम होते है और कमरमें दर्द, शरीरमे जलन अनुभव होना, किसी विषयमें मन न लगा सकना—इन लक्षणोका स्पष्ट समावेश दिखाई देता है। क्रम ६ से लेकर सी० एम० शक्तितक।

मसानेके प्रदाहमें—जहाँ पेशाबमे फास्फेट, इयुरिक-एसिड, एलवुमेन और शुगर (चीनी) रहती है, रोगी क्रमश कमजोर हो पडता है, वहाँ भी पिक्रिक एसिड लाभ करता है।

एनाकार्डियम—शुक्रक्षयके कारण स्नायविक दुर्बलता और स्मरण-शक्ति घट जानेपर यह लाभ करता है। अन्यान्य दवाओंके लक्षण उनके अध्यायमें मिलेंगे।

स्त्री-रोग—जो स्त्रियाँ बहुत कमजोर और रक्तहीन होती हैं, (एनिमिक), जिन्हें हरित्पाण्डु रोग रहता है। (क्लोरोटिक), ऋतुके समय यकृतमें दर्द, सभी कामोंसे उदासीन, जिनका गर्भाशय कमजोरीके कारण बाहर निकल पडता है (*Prolapsus of uterus*), ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है, और स्राव बहुत ज्यादा होता है, पेशाब भी परिमाणमें अधिक होता है, इसीसे कमजोरी आ जाती है। जरायु सूज उठता है—इससे ऐसा मालूम होता है, कि गर्भाशयमें हवा भर गयी है, रोगिनी प्रदर-रोग भोगा करती है, ऋतु-स्रावका रङ्ग काला होता है—ऐसी धातुवालियोंके लिये—एसिड-फास अधिक उपयोगी है।

टाइफायड ज्वर—(सान्निपातिक ज्वर)—रोगकी पहली अवस्थामें एसिड-फास उपयोगी है, इसके बाद जब ज्वर—विकारमें बदल जाता है, उस समय भी इसका प्रयोग होता है। विकारकी अवस्थामें रोगी चुपचाप मुर्देकी तरह पडा रहता है, मानो तन्द्रासे घिरा है, कोई यदि कुछ पूछता या पुकारता है तो उत्तर देता है, पर क्षणभर बाद ही इस तरह बेहोश-सा हो जाता है, मानो सो रहा है, नींद खुलने बाद रोगीको ज्ञान मालूम होता है, इसके साथ ही कभी पतले दस्त, पेट फूलना, इस तरहके लक्षणों

में—फास्फोरिक एसिड फायदा करता है, पर यदि कभी इन लक्षणोंमें फास्फोरिक एसिडसे लाभ न हो तो, तो उस समय—स्पिरिट आव नाइटरसे बहुत फायदा होगा (मूल औषध ४।५ बूँद मात्रामें थोडे पानीके साथ २।२॥ घण्टेके अन्तरमें कई मात्राएँ, फायदा न होने तक देनी चाहियें)। उत्तर देता देता रोगी सो जाये—बैप्टिशिया और आर्निकामें है, पर बेप्टिशियाके मल-मूत्रमें बहुत बदबू रहती है, और आर्निकामें—मोतीझरा नामके एक तरहके दाने (इरपूशन) निकलते हैं, शरीरमें काली-लकीर-सा दाग पड़ता है—एसिड फासमें यह सब कुछ नहीं रहता। रसटक्समें—रोगी बहुत अधिक छटपटाया करता है। ऊपर कहे लक्षणोंके साथ, आच्छन्न भावके साथ, रोगीमें यदि पेटकी गडबडी रहे—एसिड-फास ही विशेष लाभ करता है। ओपियमके विकार-में—रोगी मोहाच्छन्नकी भाँति पडा रहता है, पुकारनेपर भी उत्तर नहीं देता, आँखें ऊपर चढ़ी रहती हैं और इसी तरह पडा रहता है, जोर जोरसे साँस छोडता है। नक्स-मस्केटामें—बेहोशीका भाव, अतिसार, पेट बोलना और पेट बहुत फूलनेका भाव रहता है, पर रोगीमें जरा भी प्यास नहीं रहती। टाइफायड ज्वरकी पहली अवस्थामें नाकसे रक्त गिरने पर भी रोगमें कोई फायदा न हो—फास्फोरिक एसिड, और रोग घटनेपर—रसटक्स लाभ करता है। पेयर्स पैच (आँतोंकी गाँठ) में उत्तेजनाके कारण, रोगी इस तरह नाक खोंटता है, मानो क्रिमिका लक्षण है, इसके साथ

ही पेट फूलना, अतिसार, अनजानमें पाखाना, पीले या सादे रंगका पेशाव, पेशावमें एल्बुमेन (अण्डलाल) और फास्फेट निकलने पर—एसिड-फास लाभ करता है। ऐसी अवस्थामें सिनासे कोई लाभ नहीं होता।

वृद्धि—मानसिक विकार, वीर्यनाश, वातचीत, बहुत ज्यादा रति प्रभृतिसे।

ह्रास—हिलने-डोलने, कभी कभी दबाने।

सम्बन्ध—वात-श्लेष्मा ज्वरमें—कास, पल्स, एसिड-पिक्रिक, साइलि, एसिड-म्यूर और मोह तथा प्रलापमें—नाइट्रिक-स्पिरि-डलसिसके साथ तुलना करनी चाहिये। भोजनके पहले मूर्च्छाका भाव—नक्स।

बादकी दवा (follows well)—चायना, फेरम, सेलिनि, लाइको, नक्स, सल्फ, पल्स, बेल, कास्टि, आर्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, काफि, स्टैफि।

क्रियाका स्थिति-काल (duration)—४० दिन।

क्रम (potency)—३०x—२०० शक्ति। फारमुला—५-८।

एसिड सल्फरिकम।

(ACID SULPHURICUM)

(गन्धकका तेजाब)—१x और २x शक्ति पानीमें, ३x शक्ति डाइल्यूट अल्कोहलमें और बादकी शक्तियाँ अलकोहलमें तैयार

होती हैं। यह शराब पीनेके कारण पैदा होनेवाली बीमारियाँ या जिन्होंने शराब पीकर अपना स्वास्थ्य नष्ट कर डाला है, उनके लिये अधिक उपयोगी है। नक्स-वोमिका भी—शराब पीनेके कारण पैदा हुई अधिकाश बीमारियोंकी महौषधि है ; पर जब रोगीका पेट बहुत खराब हो जाता है, जो कुछ पीता है, सभी अम्ल हो जाता है, पेट और कलेजेमें जलन होती है, खट्टी कै होती है, वह एकदम रक्तशून्य हो जाता है,—उस समय एसिड-सल्फसे बहुत ज्यादा फायदा होता है। यकृत बढ जानेपर, और पटकी गडबडीके कारण एक तरहकी खाँसी पैदा हो जानेपर भी यह लाभ करता है।

त्वचा, म्यूकस-टीशू (श्लैष्मिक तन्तु), अन्ननली और श्वास-नली-पथपर सल्फरिक एसिडकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। हमेशा जल्दबाज, सभी काम बहुत जल्दी जल्दी करता है, २। दर्द खूब धीरे धीरे बढ़ता है, पर जब बढता बढता चरम सीमापर पहुँच जाता है, तब एकाएक घट जाता है, ३। वृद्ध मनुष्य या किसी दूसरेको ही चोटकी जगहपर ग्रैंग्रीन (सडन) होनेकी तैयारी ४। ताकत न रहनेके कारण किसी सवालका जवाब देनेकी इच्छा न होना ; ५। बच्चेको खूब नहला धुला और पोंछ -देनेपर भी खट्टी गन्ध शरीरसे आती है (मैग-कार्ब, रियुम, हिपर), ६। मुँह, मसूढे या मुँहके भीतरके समी स्थानोंका

जखम, ७। पुरानी कलेजेकी जलन, खट्टी डकार आना, दाँत खट्टे, खट्टी कै (रोबिनिया), ८। शरीरके सभी स्थानोंसे काले रंगका रक्तस्राव, ९। गिर जाने या चोट लगनेकी वजहसे मस्तिष्ककी क्रियाका न होना (concussion), १०। शरीर ठण्डा, पर समूचा शरीर पसीनेसे तर रहता है।

बवासीर—शराबियोंकी बवासीरका मसा जब बहुत बड़ा हो जाता है, और उससे मलद्वार रुक जाता है, जलन होती है, रस टपकता है, उस समय यह लाभ करता है। एसिड-म्यूर भी इस लक्षणमें विशेष फायदेमन्द है, पर उसमें स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता। एसिड-सल्फमें—मलद्वारसे हमेशा ही रस गिरा करता है, कपड़ा भींगा रहता है (इस्क्यूलस देखिये)। यह इनकारसिरेटेड हार्निया (इसमें आँत उतर कर फिर नहीं चढ़ती या चढ़कर भी फिर उतर आती है।) में भी लाभ करता है (नक्स-वोमिका अध्याय देखिये)।

मुंहके घाव—यदि रोगी बहुत दिनों तक कोई बीमारी भोगता रहे और इसके बाद मुँहमें घाव हो जाय—एसिड-सल्फ लाभ करता है। छोटे बच्चोंके अतिसारके साथ मुँहमें घाव (particularly in children with marasmus अर्थात खासकर जिन बच्चोंको सुखड़ी रोगके साथ दस्त आते हों) बहुत लार गिरती हो, खट्टी कै होती हो, शरीरमें खट्टी गन्ध निकलती हो ; बच्चोंको इसके साथ ही अकसर खाँसी रहती है और खाँसने बाद डकार आती है।

वमन—खट्टी कैके साथ छातीमें जलन, खट्टी डकार, दाँत खट्टे हो जाते हैं (रोबिनिया नामक दवामें भी यह लक्षण है)। गर्भावस्थामें सवेरे खट्टी कै, कै होनेके पहले खाँसी आती है। भोजन कर लेने बाद ऊपरी पेटमें दर्द होता है।

अम्लकी बीमारी—पेटमें बहुत अधिक वायु होनेके साथ रोगी हाउ हाउ कर बदबूदार डकार लेता है ; इस लक्षणमें एसिड सैलिसाइलिक लाभ करता है , पर यदि खट्टी खट्टी डकारें, खट्टी कै , कलेजेमें जलन, पीले रंगका पाखाना, कमजोरी इत्यादि लक्षण रहे, तो—एसिड सल्फ लाभ करता है।

एसिड-सैलिसाइलिक—यह सड़नेका लक्षण रहने वाली मन्दाग्नि (डिस्पेप्सिया) की बहुत बहुत बढ़िया दवा है, यदि खायी हुई सामग्री पेटमें सड़े, बदबूदार डकार आये, खट्टी डकार आती हो, पेट फूले, जीभका रंग सीसेकी तरह दिखाई दे, तो यह लाभ करता है।

दुर्बलता और कम्पन—ठीक कमजोरी नहीं है, पर खूब कमजोर आदमीकी तरह शरीरके भीतर एक तरहकी कपकपी अनुभव होती है , रोगीको इससे बहुत तकलीफ होती है और डरता है, कि कोई कड़ी बीमारी हो गयी है।

इन ऊपर कही दवाओंके अलावा, नीचे लिखी बीमारियोंमें भी सल्फरिक एसिडको स्मरण करना चाहिये —

सर्दी लगकर आँखोंका प्रदाह, हेक्टिक ज्वर, हिमाप्टोसिस (रक्तोत्कास), ट्यिुबरक्युलोसिस (यक्ष्मा), एक तरहकी अजीर्णकी बीमारी (डिस्पेप्शिया), जिसमें रोगी समझता है, कि उसकी पाकस्थली ठण्डी और कमजोर है—इसीलिये, चाय, ब्राण्डी, वगैरह उत्तेजक पदार्थ पीना चाहता है। गर्भावस्थामें वमन, पेटकी गड़बड़ीकी वजहसे खाँसी, खाँसीके बाद डकार आना, टानसिलाइटिस (तालुमूल प्रदाह), डिफ्थीरिया, हमेशा नींद आनेका भाव, पतली चीजें पीने पर नाकसे बाहर निकल आना, बढ़ी हुई प्लीहा, आँत उतरना (हर्निया), चोट लगना, कुचल जाना, रोगवाली जगहका बहुत दिनों तक नीला रहना, हिमारेजिक पपुरिया—त्वचाके नीचे रक्त इकट्ठा होनेकी वजहसे त्वचा जगह जगह लाल हो उठती है—ये सब भी इस पसिडके अन्तर्गत हैं।

द्रष्टव्य :—डा० घोरिक कहते हैं, मूल सल्फरिक पसिड—१ भाग। ३ भाग स्पिरिटमें मिलाकर, उसकी १० से १५ बूँद मात्रामें नित्य तीन बार ३।४ सप्ताह तक सेवन करने पर शराब पीनेकी अदम्य इच्छा भी दूर हो जाती है।

यदि शराब या स्पिरिट ज़ियादा मात्रामें पीकर कोई बेहोश हो जाये, तो उसकी अवस्था खराब होते होते जब तक कम्प न पैदा हो जाये तब तक माथे पर ठण्डा पानी डालना चाहिये। प्रत्येक १० १५ मिनिटका अन्तर देकर, नाकके आगे स्ट्राङ्ग एमोनियाकी शीशी रखें और एसिड सल्फ-डिल ८।१० बून्द या विनिगर २।१ चायके चम्मचकी मात्रामें आध छँटाक पानीके साथ एक घण्टेके अन्तरसे

कई मात्राएँ पिलायं तथा जव तक पूरा पूरा ज्ञान न हो और स्वस्थ न हो जाये तवतक सोने न दें। स्टामक-पम्पसे वमन करा देने पर भी कितनी ही बार वहुत लाभ होता है।

प्लीहा—मैलेरिया या स्वल्प-विराम ज्वरके वाद अगर प्लीहा वढ जाये और प्लीहामें दर्द रहे—एसिड-सल्फ लाभ करता है। प्लीहा और यकृतकी प्रधान दवाएँ—सियानोथस और चियो॰ नैन्थस देखिये।

वृद्धि—छूनेपर, रगडनेपर, सवेरे, सर्दीमें, ठण्डी-चीजें पीनेपर, शराव पीनेपर, सन्ध्यामें और रातमें।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, रोगवाली करवट सोने पर, विश्रामसे।

क्रिया-नाशक (antidote)—पलसेटिला।

सम्बन्ध—आर्निका, कैलेण्डुला, लिडम, रूटा, सिम्फाइटमके सदृश है।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३९—४० दिन।

क्रम ६—२०० शक्ति। फारमुला—५-प।

एकोनाइट नेपिलस।

(ACONITE NAPELLUS)

(काठविष, डकरा)—एक तरहके गाछसे तैयार होता है। इस वृक्षकी अमेरिकामें खेती होती है। एशिया, मध्य युरोप और हिमा-

लय पहाड़में भी यह बहुत ज्यादा पैदा होता है। एकोनाइट पाँच प्रकारका होता है -१। एकोनाइट नेपिलस (Aconite Napellus), २। एकोनाइट-कैमारम (Aconite Cammarum), ३। एकोनाइट-फेरास्स (Aconite Ferox), ४। एकोनाइट लाइकोटोनम (Aconite Lycotonum), ५। एकोनाइट रैडिक्स (Aconite Radix), इनमे एकोनाइट नेपिलसका टिंचर—गाछमें फूल आनेके समय,फूल, कली, पत्ते और समूचे वृक्षसे, एकोनाइट कैमारम—ताजी सोरसे, एकोनाइट-फेरक्स जडसे, एकोनाइट-लाइकोटोनम-गाछमें फूल खिलनेके समय लता-पत्तोंसे, और एकोनाइट रैडिक्स—जड और सोरसे तैयार होता है। इन पाँच प्रकारके एकोनाइटोंमें—एकोनाइट-कैमारम—प्राय चिकित्साके काममें व्यवहृत ही नहीं होता, एकोनाइट-लाइकोटोनम—गर्दन, बगल, स्तन वगैरह की गाठोंकी सूजनमें, एकोनाइट-रैडिक्स—हैजामें और एकोनाइट-फेरास्स—हृत्पिण्ड या फेफडेकी बीमारीमें जब बहुत श्वास-कष्ट, जल्दी जल्दी श्वास लेना छोडना, हाँफा करता है, सो नहीं सकता, इसी वजहसे बैठा रहता है, दम रुक जानेका भाव होना प्रभृति कई लक्षणोंमें बड़े फायदेसे व्यवहृत होता है। एकोनाइट-नेपिलस—होमियोपैथीकी एक प्रधान दवा है। केवल एकोनाइट कह देनेसे हमलोग—एकोनाइट नेपिलस ही समझते हैं। सेरिब्रोस्पाइनल नर्वस सिस्टमपर अर्थात् मस्तिष्क और मेरुमज्जाके स्नायु-मण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। एकोनाइटके द्वारा धमनी (आर्टरी) और कैपिलरीज (कैशिका नाड़ियोंकी) रक्त सचालन

कई मात्राएँ पिलायें तथा जब तक पूरा पूरा ज्ञान न हो और स्वस्थ न हो जाये तबतक सोने न दें। स्टामक-पम्पसे वमन करा देने पर भी कितनी ही बार बहुत लाभ होता है।

प्लीहा—मैलेरिया या स्वल्प-विराम ज्वरके बाद अगर प्लीहा बढ जाये और प्लीहामें दर्द रहे—एसिड-सल्फ लाभ करता है। प्लीहा और यकृतकी प्रधान दवाएँ—सियानोथस और चियोनैन्थस देखिये।

वृद्धि—छूनेपर, रगडनेपर, सवेरे, सर्दीमें, ठण्डी-चीजें पीनेपर, शराब पीनेपर, सन्ध्यामें और रातमें।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, रोगवाली करवट सोनेपर, विश्रामसे।

क्रिया-नाशक (antidote)—पलसेटिला।

सम्बन्ध—आर्निका, कैलेण्डुला, लिडम, रूटा, सिम्फाइटमके सदृश है।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३६—४० दिन।

क्रम ६—२०० शक्ति। फारमुला—५-८।

एकोनाइट नेपिलस।

(ACONITE NAPELLUS)

(काठविष, इकरा)—एक तरहके गाछसे तैयार होता है। इस वृक्षकी अमेरिकामें खेती होती है। एशिया, मध्य युरोप और हिमा-

लय पहाड़में भी यह बहुत ज्यादा पैदा होता है। एकोनाइट पाँच प्रकारका होता है -१। एकोनाइट नेपिलस (Aconite Napellus), २। एकोनाइट-कैमारम (Aconite Cammarum), ३। एकोनाइट-फेराक्स (Aconite Ferox), ४। एकोनाइट लाइकोटोनम (Aconite Lycotonum), ५। एकोनाइट रैडिक्स (Aconite Radix), इनमें एकोनाइट नेपिलसका टिंचर—गाछमें फूल आनेके समय,फूल, कली, पत्ते और समूचे वृक्षसे, एकोनाइट कैमारम—ताजी सोरसे, एकोनाइट-फेरक्स जड़से, एकोनाइट-लाइकोटोनम-गाछमें फूल खिलनेके समय लत्ता-पत्तेसे, और एकोनाइट रैडिक्स—जड़ और सोरसे तैयार होता है। इन पाँच प्रकारके एकोनाइटोंमें—एकोनाइट-कैमारम—प्राय चिकित्साके काममें व्यवहृत ही नहीं होता, एकोनाइट-लाइकोटोनम—गर्दन, बगल, स्तन वगैरहकी गांठोंकी सूजनमें, एकोनाइट-रेडिक्स—हैजामें और एकोनाइट-फेराक्स—हृत्पिण्ड या फेफड़ेकी बीमारीमें जब बहुत श्वास-कष्ट, जल्दी जल्दी श्वास लेना छोड़ना, हाँफा करता है, सो नहीं सकता, इसी वजहसे बैठा रहता है, दम रुक जानेका भाव होना प्रभृति कई लक्षणोंमें बड़े फायदेसे व्यवहृत होता है। एकोनाइट-नेपिलस—होमियोपैथीकी एक प्रधान दवा है। केवल एकोनाइट कह देनेसे हमलोग—एकोनाइट नेपिलस ही समझते हैं। सेरि... नर्भस सिस्टमपर अर्थात् मस्तिष्क और मेरुमज्ज... मण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। एकोनाइटके (आर्टरी) और कैपिलरीज़ (केशिका नाड़ियोंकी)

क्रिया वन्द हो कर शरीरमें कितनी ही जगह, जैसे—मस्तिष्क मेरु-मज्जा, श्लैष्मिक झिल्ली (mucous and serous membrane both), पेशी, सन्धियाँ, पाकस्थली, फेफडा, हृत्पिण्ड, यकृत, श्वासनली (ब्राङ्काई), प्लुरा (फुस्फुस-वेस्ट), गलनली प्रभृतिमें रक्तकी अधिकता (कानजेसशन) और प्रदाह हो जाता है , इसी-लिये, हमलोग कितनी ही तरहके प्रदाहमे और उसकी वजहसे पैदा हुए वोखारकी पहली अवस्थामे इसका व्यवहार करते हैं और इससे विशेष लाभ भी होता है। एकोनाइटके द्वारा शरीरके भीतरवाले किसी यन्त्रमे परिवर्त्तन (organic change) नहीं होता, सिर्फ यन्त्रोंकी क्रियामें परिवर्त्तन होता है (functional)। हृत्पिण्डपर इसकी क्रिया रहनेके कारण यदि हृत्पिण्डकी किसी वीमारीमें इसका प्रयोग होता भी है, तो रोगको उस समयके लिये घटा देनेके वास्ते (palliative)। जो हो, किसी भी वीमारी मे यदि एकोनाइटका प्रयोग करना हो, तो सबसे पहले इसका चरित्रगत या विशेष लक्षण, जैसे—बहुत ज्यादा छटपटाना, भय, चलने-फिरनेमें हमेशा ही शका और भय, मृत्यु-भय, मुँहसे कहता है, कि मै अब न जियूँगा, मुझे बचा न सके, तेज प्यास, बहुत ज्यादा परिमाणमे पानी पीना, जल्दी जल्दी पानी पीना, पानीके सिवा और सब चीजें तीती मालूम होना (ब्रायोनियामें सभी तीता मालूम होता है), अन्तर्दाह , पर शरीरका कपडा उतारते ही जाडा मालूम होना, तेज, कडी, मोटी नाडी, पसीना एकदम बन्द रातमें उपसर्गोका बढना, सूखी ठण्डी (उत्तरी या पश्चिमा) हवा

लगकर या पसीना बन्द हो कर अथवा डरकर रोग पैदा हो जाना, इन कई लक्षणोंपर सबके पहले नजर रखनी होगी।

ज्वर हो या प्रदाह हो, अथवा कोई दूसरी बीमारी ही क्यों न हो, यदि वह एकोनाइटकी बीमारी है, तो रोगका आक्रमण एकाएक होगा और देखते-देखते रोग-लक्षण बढ जायँगे। यदि ज्वरमें यह दिखाई दे, कि दाह बहुत है, तेज प्यास, भयानक भीतरी दाह, छटपटी, तकलीफसे एकदम बेचैन हो पडना, नाडी बहुत तेज, नाडी स्थूल (मोटी) और तारकी तरह कडी है, शरीर पर जरा भी पसीना नहीं है, त्वचा रूखी और रुखडी है—एकोनाइट दें, साथ साथ ही फायदा मालूम होगा। ज्वरमें हमलोग हमेशा ही पहले—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, जेलसिमियम इत्यादि दवाएँ व्यवहार करते हैं। नीचे इनका पार्थक्य देखिये। एकोनाइट के साथ कभी भी कोई दवा पर्यायक्रमसे प्रयोग न करें। यदि एको-नाइटकी बीमारी होगी तो वह केवल एकोनाइटसे ही आरोग्य हो जायगी।

एकोनाइट—इसके बोखारमें पसीना बिल्कुल ही नहीं होता, रोगीमें अन्तर्दाह, छटपटी, इधर उधर करवट बदलना, प्यास, मृत्यु-भय बहुत अधिक रहता है। इससे हृत्पिण्ड और वक्षस्थलमें अधिक तकलीफ होती है, रोगी विकारमें भूल नहीं बकता, नाडी खूब स्थूल और वेगवती रहती है। एकोनाइट—स्वल्पविराम या सविराम दगवाले बोखारमें बिल्कुल ही लाभ नहीं करता है, तेज और लगातार बने रहने वाले ज्वरमें ही लाभ करता है।

पसीना होने पर फिर इसकी जरूरत ही नहीं रहती (फेरम-फास देखिये)। ज्वर बढनेके समय खाँसीका बढना और खांसने पर सर और छातीका दर्द बढ़ना भी एकोनाइटका एक दूसरा लक्षण है।

बेलेडोना—वोखारमें रोगीका शरीर बहुत गर्म रहता है, इतना गरम मानो हाथ जल जाता है, बीच बीचमें पसीना होता है, और ऐसा मालूम होता है, कि अब ज्वर छूट जायगा, परन्तु शरीर वैसा ही गरम और वोखार ज्यो का त्यों ही बना रहता है वेलेडोनामें जो अङ्ग दवा हुआ रहता है, वहीं अधिक पसीना होता है, इसमें सर-दर्द, माथेमें बहुत अधिक दर्द, रोगी भूल बक करता है, कोई भी जानवर या भूत या कोई काल्पनिक छाया देखकर डर जाता है, नींद आती है, पर लगती नहीं, रोगी रह रह कर चौंक उठता है, इसमें मस्तिष्कके लक्षण ही अधिक प्रबल रहते हैं।

ब्रायोनिया—रोगी चुपचाप पडा रहता है, इसके रोग-लक्षण हिलने-डोलनेसे बढते है, कलेजेमें न जाने कैसा मालूम होता है आँख, कनपटी और माथेमें बेतरह दर्द होता है, यह दर्द हिलने डोलनेसे ही बढता है, यहाँतक कि आँख खोलने पर भी बढ़ता है, इसलिये रोगी आँख बन्द किये चुपचाप पडा रहता है। समूचे शरीरमें दर्द होता है, यह हिलने-डोलने पर बढता है, दवा देनेपर आराम माल्म होता है। रोगीके उठ बैठने या सर उठाने पर जी मिचलाने लगता है और सरमें चक्कर आ जाता है, मुँहका स्वाद

तीता रहता है, जीभ पर पीला या सफेद लेप तथा जीभ सूखी रहती है। थोडा बहुत पसीना होता है, हिलने-डोलने पर पसीना होता है, कभी पसीना एकदम ही नहीं रहता।

जेलसिमियम—रोगी तन्द्रासे आच्छन्न और अघोर भावसे चुपचाप पडा रहता है, बोलता भी नहीं और आँख खोलकर देखता भी नहीं है, इसमे प्यास कुछ अधिक नहीं रहती। बच्चोंके घोसारमें अगर यह लक्षण रहे तो यह अचूक दवा है। जेलसिमियममें—स्नायविक दुर्बलताके कारण रोगी चुप पडा रहता है।

अब देखिये—कि किस ढङ्गके ज्वरमें एकोनाइटका प्रयोग करना चाहिये, एकोनाइट—सर्दी ज्वर (synochal), प्रवल ज्वर (sthenic) और अविराम (बराबर बना रहने वाला continued) प्रकारके ज्वरमें उपयोगी है। जेलसिमियम—सविराम और स्वल्प-विराम दोनों प्रकारके ज्वरमें उपयोगी है। एकोनाइट—टाइफायड (मियादी), इण्टरमिटेण्ट (सविराम), या रेमिटेण्ट (स्वल्पविराम) प्रकारके ज्वरमें बिलकुल ही फायदा नहीं करता। टाइफायड ज्वर मे—नाडीकी तेज गति और तापको घटानेके लिये एकोनाइटका प्रयोग करना भयकर भूल है। एकोनाइटके ज्वरमें, नाडी full, hard & bounding (भरी, कडी और उछलती हुई) रहती है, जेलसिमियममें—full and flowing (भारी और मृदु), एपिसमें—accelerated full and strong (वेगवती, पूर्ण और कठिन) या fluttering, wiry and frequent फड़कती हुई, तारकी

महीन तथा मृदु रहता है। एकोनाइटकी नाडी हाथमे तारकी तरह कडी और मोटी और जेलसिमियमकी नाडी केचुएकी तरह कोमल मालूम होती है।

फेरम-फास—एकोनाइटकी तरह प्रादाहिक ज्वरकी पहली अवस्थामे व्यवहृत होता है। यह एकोनाइट और जेलसिमियमके बीचकी दवा है अर्थात् एकोनाइटकी छटपटी इत्यादि लक्षण और जेलसिमियमका अभिभूत भाव आदि इसमे नहीं है। फेरमकी नाडी—full, bounding and soft, अर्थात पूर्ण, उछलती हुई और कोमल रहती है, प्रादाहिक रोगमे प्रदाहवाली जगहोंमे रस-सचय (exudation) होनेके पहले एकोनाइटकी तरह यह भी प्रथमावस्थामे व्यवहृत होता है और कान्टिन्यूड (अविराम), रेमि-टेण्ट (स्वल्प-विराम) प्रभृति प्राय सब तरहके ज्वरोंमे लाभ करता है। (फेरम-फास अध्याय देखिये)।

एक-ज्वर और सर्दी-ज्वर—इस ज्वरकी पहली अवस्थामे एकोनाइट लाभदायक है। जिस रोगीमे—मृत्यु-भय, छटपटी, मानसिक चचलता, शरीरमे दाह, त्वचा सूखी, पसीना होनेपर सब उपसर्गो का घट जाना और जिसे सर्दी लगकर बोखार होता है अथवा पानीमें भींगनेके कारण या पसीना होने बाद सर्दी लगकर ज्वर होता है—उसके लिये—एकोनाइट लाभदायक होता है। यदि ऐसा मालूम हो कि एकोनाइटके प्रयोगसे ऊपर लिखे लक्षण न घटे, शरीरकी गर्मी और दूसरे दूसरे उपसर्ग कुछ भी कम न हों, रोगी धीरे धीरे कमजोर, सुस्त और अभिभूत हो पडे, बोलो

जकड जाये। ऐसा मालूम हो कि शायद विकार हो गया, उस समय २x मात्रा सलकर प्रयोग कर, इससे बहुत लाभ होगा। निमोनिया रोगकी पहली अवस्थामें बहुत अधिक श्वासकष्ट, श्वास-कृच्छ्रता रहे—वेरेट्रम-विरिडिसे लाभ होता है, इसका कितने ही स्थानोंमें, ज्वरमें एकोनाइटके बदले प्रयोग किया जाता है, पर विरेट्रम-विरिडकी २x मात्रासे अधिक कभी व्यवहार न करें, इससे हृत्पिण्डकी क्रियामें गड़बडी हो कर रोगीकी अवस्था बहुत खराब हो सकती है।

ज्वरमें एकोनाइटके व्यवहारके सम्बन्धमें डा० फरिङ्गटन :—कोई भी बीमारीमें, रोगके साथवाला उपसर्ग—प्रवल ज्वर रहनेपर, पहले एकोनाइटसे उस ज्वरको दूर कर उसके बाद दूसरे दूसरे उपसर्गोंके लिये दूसरी दवा देना—ऐसी धारणा बना लेना एकदम गलत है। दृष्टान्त—एक व्यक्तिको आरक्त-ज्वर (स्कार्लेट-फीवर) हुआ है, रोगीको बहुत अधिक बोखार है (१०४-१०५ डिग्री), शरीर खूब गरम है, त्वचा सूखी और उत्तप्त, नाडी तेज, कडी और कमरमें दर्द, वमन, गलेके भीतर दर्द और लाली, गलेमें जखम प्रभृति कितने ही लक्षण वर्त्तमान हैं; यहाँ पहले कहे हुए कई लक्षण, अर्थात्—तेज ज्वर, कडी नाडी, सूखी त्वचा प्रभृति कई लक्षणोंपर निर्भर कर या केवल बोखार घटा देनेके लिये, कभी भी एकोनाइटका प्रयोग न करें। हमलोगोंको वही दवा देनी होगी जिसमें उद्भेदके निकल आनेमें सहायता पहुँचे। आरक्त-ज्वरमें—एकोनाइट बिल्कुल ही फायदा नहीं

करता, पर यदि एकोनाइटके मानसिक लक्षण—मृत्यु-भय, छट-पटी प्रभृति स्पष्ट दिखाई दें, तो उसे उक्त इरप्टिव ज्वरमें (उद्भेद-ज्वर) में भी प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु इतनेपर भी एको-नाइटका प्रयोग होनेके कारण सौ में ९० मनुष्योंको हानि ही पहुँचेगी।

प्रादाहिक रोग—इस रोगकी पहली नयी अवस्थामें एकोनाइट लाभ करता है। दर्द ही सब तरहके प्रदाहोंका प्रधान लक्षण है, वातका दर्द हो या शूलका, अथवा न्यूरैल्जिया (स्नायु-शूलका दर्द) ही क्यों न हो, एकोनाइटका प्रधान लक्षण छटपटी, भय और तेज प्यास रहनेपर—एकोनाइटसे अवश्य ही लाभ होगा। दर्दमें—एकोनाइटके सदृश और भी दो दवाएँ हैं—कैमोमिला और काफिया। एकोनाइटका दर्द काटने या नोच फेंकनेकी तरह होता है और उसके साथ ही यह भय रहता है, कि न जाने किस समय क्या होगा, रोगवाली जगहको छूने नहीं देता। कैमोमिलामें-भीतरी तकलीफ, प्यास अथवा ज्वर नहीं रहता, पर रोगी दर्दसे छटपटाता है, रज होता है और कडवी बात कहता है। काफिया-मे—ज्वर या प्यास बिलकुल ही नहीं रहती, मिजाज भी तेज नहीं होता, पर रोगी कहता है—दर्द न घटा तो मर जाऊँगा। दर्दसे इधर उधर करवट बदलना—रसटक्समें है। पर प्रभेद यह है, कि, एकोनाइटमें—उद्वेगके कारण रोगी छटपटाता है और रसटक्समें—अकड़न, पेंठनका दर्द, हिलने-डोलनेसे घटनेके लिये रोगी करवट

बदलता है। आर्सेनिकमें—मृत्यु-भय और छटपटी है, पर एकोनाइटकी तुलनामें यह बहुत थोडी है।

भय—यदि डर जानेकी वजहसे कोई बीमारी हो तो एकोनाइट अव्यर्थ ओषधि है। डर कर—बेहोशी, गर्भ-स्राव, मूर्च्छा, अतिसार, हैजा प्रभृति चाहे जो हो जाये—एकोनाइट उपयोगी है। डरसे पैदा हुई बीमारियोंमें—इग्नेशिया, ओपियम, वेरेट्रम इत्यादिका भी व्यवहार होता है (कैनाबिस-इण्डिका देखिये)। एकोनाइटमें डरके कारण घरसे बाहर नहीं निकलना चाहता या किसी मेले-तमाशे अथवा भीड-भाडकी जगहमें नहीं जाना चाहता, कोई बीमारी होनेपर डरसे कहता है, कि मैं न जियूँगा, मुझे कोई बचा न सकेगा।

वक्षःस्थलके रोग—प्लुरिसि (फेफडेको ढकनेवाले परदेका प्रदाह), प्लुरोडाइनिया (कलेजेके बगलमें सुई गडनेकी तरह और बातकी भाँतिका एक तरहका तेज दर्द), निमोनिया (फेफडेका प्रदाह), सर्दी, खाँसी, हृत्पिण्ड या हृत्पिण्डके पास-वाले स्थानमें दर्द और कलेजा धडकना इत्यादि अधिकांश रोगोंमें ही एकोनाइट पहली अवस्थामें अर्थात् जबतक प्रदाहका लक्षण रहता है, तबतक उपयोगी है। कलेजेमें बहुत तेज खोंचा मारनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही ज्वर इत्यादि लक्षणोंके साथ एकोनाइटके विशेष लक्षण यदि मिलें तो एकोनाइट उपयोगी है। ब्रायोनियामें भी—इसी भाँतिका खोंचा मारनेकी तरह दर्द है, पर यह दर्द

सांस खींचने, सांस छोड़ने या हिलने-डोलनेपर ही बढ़ता है, खांसनेके समय रोगी हाथसे कलेजा दवा लेता है, क्योंकि उसे आराम मिलता है। ब्रायोनियाका रोगी—चुपचाप पड़ा रहता है और एकोनाइटकी तरह छटपटी और शरीरका कपडा उतारनेपर जाडेका भाव नहीं रहता (ब्रायोनियासे लाभ न हो तो—एसक्लिपियस)।

दमा-खाँसी—इस रोगमें कोई एकोनाइटका व्यवहार मानता है या नहीं, नहीं जानता, पर मैं दमाका खिंचाव और श्वास-कष्टकी पहली अवस्थामें एकोनाइट १x शक्तिकी एक या दो बूँद ४ आउन्स पानीमें मिलाकर, उसका दो एक चम्मच प्रत्येक दो एक घण्टेके अन्तरसे सेवन कराता हूँ, और सूर्यास्तके बाद, कोई भी चीज खानेकी मनाही कर देता हूँ। कितने ही स्थानोंपर इससे ४ घण्टे के भीतर ही दमा और उसकी हँफनीका वेग घट जाता है, इसके बाद सेनेगा या लोबेलिया १x शक्ति, २।३ घण्टोंके अन्तरसे एक एक मात्रा, नित्य ४।५ बार, २।१ दिन सेवन कराता हूँ। इससे बहुत फायदा दिखाई देता है (कैनाबिस अध्याय देखिये), एकोनाइट सर्दी लगनेकी वजहसे पैदा हुए और cardiac दमामें अधिक लाभदायक है।

ब्लैटा ओरियण्टैलिस—यह इस देशके तेलचट्टे से तैयार होता है और होमियोपैथीमें दमा-खाँसीकी बहुत बढ़िया दवा है। ५।६ बूँद मूल टिंचर, ४ आउन्स पानीमें मिलाकर, उसको २।१ चम्मचकी

मात्रामें, तीन घण्टेके अन्तरसे सेवन करानेपर श्वासकष्ट और दमाका तेज खिंचाव तुरन्त दब जाता है। (किसी किसीका कथन है—उक्त मदर टिंचरकी अपेक्षा—इसकी १x विचूर्ण शक्तिसे जल्दी फायदा होता है), स्थायी लाभके लिये—२०० या और भी उच्च शक्ति, एक या दो सप्ताहके अन्तरसे प्रयोग करनी चाहिये।

इस पुस्तकका छैठा अध्याय देखिये।

खाँसी—सर्दी लगकर सूखी खाँसी (एरालिया अध्याय देखिये)।

काली खाँसी—क्रूप खाँसीकी पहली अवस्थामें अर्थात् जब तक प्रबल ज्वर, दम रुक जानेका भाव, सूखी खाँसी, गलेमें साँय साँय आवाज इत्यादि लक्षण रहें तभीतक एकोनाइट लाभ करता है, पर यदि ४।७ मात्रा दे देनेपर भी सर्दी और खाँसीके खिंचावमें लाभ न हो, ज्वर कम हो जाये, तो—स्पञ्जियाका प्रयोग करना चाहिये। इसके बाद जब खाँसी ढीली पड़ जाय अर्थात् गला घर घर करने लगे तो—हिपर-सल्फर ३।१ मात्रा प्रयोगकर दो चार दिन कोई दवा न देनेसे खासा फायदा दिखाई देगा (स्पञ्जिया अध्याय देखिये)।

सर्दी—एकाएक ठण्ड लगकर नयी सर्दी हो जाये, इसके साथ ही सरमें भयानक दर्द, नाककी जड़में दर्द, बेचैनी, नाकसे सर्दी निकलनेके साथ ही कितनी ही बार रक्त भी गिरता है, छींक आती है, नाक सूखती है या नाकमें सर्दी थोड़ी रहती है।

अतिसार—मलका रंग हरा, काला, पानीकी तरह, सेंवार की भाँति, दस्तके साथ पित्त मिला रहना, आम मिली रहना, पेटमें वहुत दर्दके साथ वार वार पाखाना होना। वच्चोंके पेटमें दर्दके साथ हरे रंगका पाखाना। बच्चा हमेशा रोया करता है, सोता नहीं, बैठा रहता है। यदि दिनमें गरमी, रातमें सर्दी पड़े, ऐसे समयकी बीमारी हो, तो एकोनाइट सबसे अधिक लाभदायक दवा होती है। (ऐसे मौके पर १x शक्ति दे, २।३ बूंदमें—८ मात्रा)।

आमाशय—आम सफेद हो या रक्त मिली आम हो, रोगकी पहली अवस्थामें पाखाना परिमाणमें बहुत थोड़ा, उसके साथ केवल आम या रक्त रहे और पेटमें दर्द, कूथन, पाखानेका जल्दी जल्दी वेग होना या पाखाना होना इत्यादि लक्षण रहनेपर—एकोनाइट विशेष लाभ करता है (इसकी १x शक्तिकी २।३ बूंद ८।१० मात्रा पानीमें मिलाकर प्रति २।३ घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करनी चाहिये) मैंने देखा है—अधिकांश आमाशयकी बीमारी ऊपर कहे लक्षणोंमें प्राय: एकोनाइटसे आरोग्य हो जाती है। किसी दूसरी दवाकी जरूरत ही नहीं होती।

अभिज्ञताका परिणाम—मैं आमाशयकी बीमारीकी पहली अवस्थामें, यहाँतक कि दो तीन दिनोंकी बीमारी हो जानेपर भी यदि रोगी आता है तो बिना कोई विशेष लक्षण मिलाये, जल्दी में एकोनाइट नैप १x शक्तिकी दो तीन बूँदें, १२ मात्रा पानीमें मिला

कर,उसीकी एक एक मात्रा २।३ घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करता हूँ और पेटमे दर्द अधिक रहनेपर कोलोसिन्थ ϕ, २० बूद, १ आउन्स ग्लिसरिनमे मिलाकर, उसकी २५।३० बूद पेटपर मालिश कर, रुई या फ्लानैलसे पेट बाँध देनेके लिये कहता हूँ। इससे भी यह नतीजा दिखाई देता है, कि कितने ही रोगी आरोग्य हो जाते हैं, एकदम आरोग्य न होने पर भी पेटका दर्द वगैरह बहुत घट जाता है, इसके बाद लक्षणके अनुसार—कोलोसिन्थ, मर्कुरियस, हिपर, कोलचिकम प्रभृति दवाओंका प्रयोग करता हूँ। पुरानी बीमारीमें—ड्राम्बिडियम, सलफर और हिपरसे उपकार होता है। अगर पेटमे दर्द ज्यादा न हो,—चैपारो—ϕ, दिनमें ४।५ मात्राके हिसाबसे ५।६ दिनांतक दें।

पेशाबको बीमारी—पेशाबका रग लाल, गरम और बहुत तकलीफ देनेवाला, परिमाणमें बहुत थोडा, पेशाब बन्द, रोगी छटपटाया करता है; चिल्लाकर रोता है, लिङ्ग मुट्ठीमें पकड लेता है, पेशाब बूँद बूँद होता है, खूनका पेशाब, मूत्रनलीमें जलन, पेशाबमें कूथन, पेशाब करनेके पहले भय मालूम होना। पैदा पैदा होते ही यदि पेशाब बन्द हो जाये—एकोनाइटके प्रयोगसे लाभ होगा।

उदरशूल और अम्लशूलका दर्द—दर्द के पैदा होनेका समय कोई बँधा नहीं, कभी खाली पेट रहनेपर, कभी कुछ खा लेने पर ही दर्द पैदा हो जाता है। रोगी छटपटाया करता है, किसी दवासे स्थायी लाभ अथवा थोड़ा भी फायदा नहीं होता

ऐसे स्थान पर—एकोनाइट नैप १x शक्तिकी २।३ बूंदें, १०।१२ मात्रा पानीमें मिलाकर,—यदि खाली पेट रहने पर दर्द होता हो तो नित्य खाली पेट २।३ घण्टेका अन्तर देकर ४।५ बार और यदि खाने बाद दर्द बढता हो, तो प्रत्येक बार तुरन्त खाने बाद ही एक-एक मात्रा सेवन करानेपर सम्भवत फायदा होगा। परीक्षा करनी चाहिये। (कोलोसिन्थ अध्याय देखिये)।

अंग-प्रत्यंगका दर्द—रोगवाली जगह सुन्न या झुनझुनी पैदा हो जानेकी तरह। हाथ-पैर बरफकी तरह ठण्डे और सुन्न, हाथ मानो अकड़ा, भारी और सुन्न हो गया हो अथवा ऐसा दर्द होता है, मानो किसीने मारा है, बाएँ हाथका दर्द ऊपरसे नीचे उतरता है (कैक्टस, केल्मिया प्रभृतिमें भी यह लक्षण है)। वात, गठिया वात, गाँठोंका नया प्रदाह, घुटनेकी कमजोरी, चलनेके समय पैरका ठीक ठीक जगह न गिरना, सब जोड़ोंके पेशी बन्धन (ligaments) मानो ढीले पड गये है, हिलने-डोलने पर जोड़ोंके भीतर, बिना दर्दकी एक तरहकी कटकट आवाज प्रभृति लक्षण एकोनाइटके अन्तर्गत है (गुयेकम देखिये)। पीठमें दर्द, साँस लेनेके समय दर्द होता है।

हैजा—इस रोगकी पहली, दूसरी और तीसरी तीनों ही अवस्थाओंमें एकोनाइटका व्यवहार होता है। <u>पहली अवस्थामें</u>—मल्का रंगका गदला, तरबूजके पानीकी तरह या पित्त-मिला, और दिनमें गरमी, रातमें सर्दी, इस ढङ्गके समयकी बीमारी होनेपर

और पाखानेके समय मलद्वारमें गरमी मालूम होनेपर तथा पेटमें बहुत दर्द रहने पर इससे फायदा होगा। फिर दूसरी अवस्थामें—जब रोगीके मुँहसे पेटतक जलन मालूम होती है, तेज प्यास रहती है, पर पानी पीते ही कै हो जाती है, बहुत छटपटाता है, बिना दर्दका, चावलके धोवनकी तरह, सफेद रङ्गका पाखाना होता है, चेहरा मुर्देकी तरह डरावना और नीला दिखाई देता है, सारा शरीर ठण्डा हुआ जाता है, नाडी सूतकी तरह महीन हो जाती है, या एकदम मिलती ही नहीं, उस समय यदि एकोनाइटके प्रधान लक्षण रहें तो एकोनाइटका प्रयोग करे। यह हिमांग (शीत आ जाना) अवस्थामें भी लाभदायक है और जिस हैजामें ऐंठन नहीं होती या बहुत कम ऐंठन रहती है, उस हैजामें अर्थात अनाक्षेपिक (बिना अकडनवाले) जातीय हैजाकी उत्तम दवा है। एकाएक या धीरे धीरे हार्टफेलियोर (heart failure कलेजेकी धडकन बन्द हो जाना) होनेकी सम्भावना देखनेपर इससे तुरन्त लाभ होता है, पर यह स्मरण रखना चाहिये—इसमें छटपटी, मृत्युभय वगैरह कितने ही मानसिक लक्षण रहने चाहिये, नहीं तो उतना लाभ नहीं होगा। जिस समय हैजा फैला हुआ है (cholera epidemic) उस समय कितनों को ही डरकर हैजा हो जाता है, एकोनाइट उसकी प्रधान दवा है। एकोनाइटके प्रयोगसे दबी नाडी उठ जाती है और जीवनी शक्ति उत्तेजित हो उठती है। ३।३ बूंद—६ या १x शक्ति, २ आउन्स पानीमें मिलाकर, एक या दो चम्मचकी मात्रामें, प्रत्येक १० से ३० मिनिटका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये। कितनों

का ही ऐसा कहना है, कि हैजामें एकोनाइट नैपकी अपेक्षा—एकोनाइट रैडिक्स अधिक लाभ करता है (मैं एकोनाइट-रैडिक्स १x शक्ति अधिक व्यवहार करता हूँ)। ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा एकोनाइट और भी कितनी ही बीमारियोंमे व्यवहृत होता है। नीचे उनका विवरण सक्षेपमे दिया जाता है :—

रजःरोध—डरकर रजस्राव वन्द होनेपर एकोनाइट लाभ करता है।

मस्तिष्कमें रक्त-संचालन (माथेमे रक्त चढ जाना)—एकाएक धूप लगकर या क्रोध आनेकी वजहसे अगर माथेमे रक्त अधिक चढ जाये और कोई बीमारी हो पडे—एकोनाइट फायदा करेगा। ग्लोनोइन और बेलेडोना भी इस रोगकी दवाएँ हैं। जहाँ नींद लगी अवस्थामे या एक जगह स्थिर भावसे रहनेपर, माथेमे अधिक धूप लगकर कोई बीमारी पैदा हो जाये, वहाँ—एकोनाइट लाभ करता है, और जहाँ ज्यादा देरतक धूपमे घूमनेकी वजहसे बीमारी पैदा होती है, वहाँ बेलेडोना और ग्लोनोयिन काम करता है। एकोनाइटमें हृत्पिण्डकी क्रिया पहले तेज़ और जोरकी होती है, धीरे धीरे घटती जाती है। मिनिटमे १२०—१३० वार स्पन्दन होता है।

सर-दर्द—ठण्ड लगकर सर्दी हो, सर्दी बैठकर सरमें दर्द पैदा हो जाये। माथेका दर्द—सरमे भीतरकी ओर आरम्भ होकर, क्रमशः बाहरकी ओर आता है, माथेमे टपक होती है; कपाल,

और तकलीफ देनेवाले लक्षण सब दूर हो जानेपर—ब्रायोनिया इत्यादि दवा व्यवहार करनी चाहिये। श्वास-प्रश्वासमें बहुत कष्ट, सांस लेनेमें खिचाव, हॉफना तेज और स्थूल नाडी प्रभृति लक्षणोंमे—वेरेट्रम-विरिडि फायदा करता है। एकोनाइटमें—दाहिनी करवट सो नहीं सकता, मूर्च्छाका भाव होता है। उठनेपर जी मिचलाता है, नाडीकी गति धीमी रहती है। शरीरमे ठण्डा भाव रहता है (एण्टिम-टार्ट, हिपर, सलफर देखिये)।

रक्तोत्कास (खून-मिली खांसी)—निकला हुआ रक्त ताजा,चमकीला लाल, जरा-सा भी खाँसनेपर, बिना तकलीफके रक्त निकलता है। इसके साथ ही मृत्यु-भय। मिलिफोलियममें भी बिना तकलीफके रक्त निकलता है। पर इसमें एकोनाइटकी तरह उद्वेग या बेचैनी नहीं रहती (एकालिफा और हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

प्लुरिसि या प्लुराइटिस—इस रोगकी पहली अवस्थामें जब बोखार खूब तेज रहता है, जाडा मालूम होता है, पसीना नहीं होता, कलेजेमें धका देनेकी तरह दर्द होता है और जलन रहती है, उस समय एकोनाइट लाभ करता है। इसके बाद ब्रायोनिया इत्यादि दवाकी जरूरत होती है(उनका अध्याय देखिये)।

आँखकी बीमारी—सर्दी लगकर या सर्द हवा लगकर आँख उठना, इसके अलावा—अगर एकाएक आँखोंमें प्रदाह हो, आँख फूल जाये, लाल हो, आँखके भीतर गरमी मालूम होती

हो, करकराती हो, मानो आँखमें बालू गिर गयी हो, जलन होती हो। देखा नहीं जाता। यदि ये लक्षण रहें, तो एकोनाइटसे लाभ होगा। आँखमें हवा और सूर्यकी रोशनी सहन नहीं होती।

कानकी बीमारी—मनुष्य स्वस्थ है, किसी तरहकी तकलीफ नहीं है। एकाएक कानके भीतर तकलीफ, कुटकुटाहट, टपकका दर्द होने लगता है, कभी कभी एकाएक सर्दी लगकर इस तरहका दर्द होता है। इसके साथ ही ज्वर और एकोनाइटकी चरित्रगत छटपटी भय इत्यादि लक्षण रहते हैं। कभी कभी सुननेकी ताकत तेज हो जाती है, किसी तरहकी आवाज, खासकर गाने-बजानेका शब्द सहन नहीं होता।

दाँतकी बीमारी—सर्दी लगकर दांतकी जड फूल जाती है। दर्द, कनकनी इत्यादि होनेपर पहली अवस्थामें—एकोनाइट लाभ करता है।

प्रमेह (सूजाक)—पहली अवस्थामें बार बार पेशाब लगता है, पेशाब करनेके समय जलन, पेशाब गरम, बहुत थोडी मात्रामें प्रमेहका मवाद निकलना, साथ ही साथ बोखार, प्यास, भय इत्यादि लक्षण रहनेपर—एकोनाइट-१x—३x शक्तिसे फायदा होगा। २।३ बूँद दवा—१० तुराक पानीमें मिलाकर, उसकी एक एक मात्रा तबतक सेवन करनी चाहिये, जबतक फायदा न हो (कैनाबिस देखिये)।

दूधका बोखार (दुग्ध-ज्वर)—स्तन-प्रदाहकी पहली अवस्थामें स्तन गर्म, लाल, फूला, चिलक मारनेकी तरह दर्द, इसके

साथ ही बेचैनी, प्यास, ज्वर इत्यादि रहनेपर एकोनाइटका प्रयोग करना चाहिये (इस रोगकी लाभदायक दवा है—ब्रायोनिया, फाइटोलैका इत्यादि), ब्रायोनिया अध्याय देखिये। दुग्ध-ज्वरमें—खड़ी मसूरकी दाल पीसकर स्तनमें गर्म पुल्टीस देनेपर तकलीफ घट जाती है। स्तन हमेशा बांधे रखना चाहिये, जिसमें हिले नहीं।

वृद्धि—सन्ध्यामें, रातम, गर्म घरमें, बिछावनसे उठनेपर, रोगवाली करवट सोनेपर।

ह्रास—खुली हवामें।

सम्बन्ध—ज्वरकी असह्य तकलीफमें—काफिया, चोटमें—आर्निका। एकोनाइट—सलफरका अनुपूरक है। जहां नयी बीमारीमें—एकोनाइट, रोग-पुराना होनेपर वहां—सलफर प्रयोग करना चाहिये। अधिक मात्रामें सलफरका सेवन हो जानेपर—एकोनाइट उसकी प्रतिषेधक दवा है।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के, कैन्थर, हीपर, इपि, मार्क, पल्स, रस, स्पञ्जि, सल्फ, साइलि।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसेटिक एसिड, बेल, वार्बेरिस, काफिया, सल्फ, साइलि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ दिन।

क्रम (potency)—१x— ३० शक्ति।

फारमुला—२ (अमेरिका), १ (जर्मनी)।

एक्टिया रेसिमोसा।

(ACTÆA RACEMOSA)

(अमेरिकाके एक प्रकारके वृक्षसे टिंचर तैयार होता है)

इसका एक दूसरा नाम है, सिमिसिफ्यूगा, स्त्रियोंकी नाना प्रकार की बीमारीमें तथा वात रोगमें इसका अधिक व्यवहार होता है। इसका मानसिक लक्षण—लगातार शोक-युक्त और सुस्त रहना, नींद न आना, रोगी सोचता है, कि मैं पागल हो जाऊँगा, जी घबराता है और लम्बी साँस लेता है। यह मेरुमज्जाके स्नायु (spinal nerves) और इसके ऊपरी अंशपर (upper part of the cord) पर अपनी क्रिया प्रकट कर मस्तिष्क झिल्ली प्रदाहके प्राय अधिकांश लक्षण और शरीरमें बायीं ओर अधिक क्रिया प्रकट करता है। इसीलिये, इसके द्वारा बाये डिम्बकोषका प्रदाह, डिम्बकोषका स्नायविक दर्द, बाये उरुमें स्नायविक दर्द, बायीं ओरके गर्दनमें और कन्धेमें दर्द, वात, गर्दन अकड़ जाना इत्यादि नाना प्रकारके बायें अङ्गोंकी बीमारी आरोग्य करता है।

चरित्रगत लक्षण :—

१। सूतिका उन्माद, मनमें समझता है, कि वह पागल हो गया है, अपनेको नष्ट कर देनेकी चेष्टा करता है। २। सोचता है, कि एक गहरा काला बादल उसे ढके हुए है, चारों ओर अन्धेरा है। ३। आँखोंका स्नायुशूलका दर्द, चक्षुगोलकमें तेज

दर्द और वह दर्द कनपटीमे, माथेके बीचके भागमे और क्रमश गर्दनके पिछले भागतक उतर आता है , ४। जरायु या डिम्ब-कोपकी परावर्तित क्रिया (reflex action) की वजहसे हृत्पिण्डमे दर्द, एकाएक मानो हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द हो जाती है, उससे श्वास रुकनेकी तरह हो जाता है, जरा हिलने डोलनेसे ही कलेजा धडकता है, वाएँ स्तनके नीचे तेज दर्द , ५। अनियमित और तकलीफके साथ ऋतुस्राव, सर्दी लग जाना, मानसिक गडवडीकी वजहसे ज्वर प्रभृति कारणसे देरसे ऋतु होना या ऋतुस्रावका रुक जाना , ६। ऋतुके समय ताण्डव (कोरिया), गुल्मवायु (हिस्टीरिया), मानसिक गडवडी प्रभृति , ७। गर्भावस्थामे वमन, नींद न आना, प्रसवके वादका दर्द, ३ रे महीनेमे गर्भस्राव ; ८। प्रसवके दर्दके समय कँपकपी, जाडा मालूम होना, मानसिक विकार, जरायुका मुँह कडा, अकडनका दर्द , ९। गर्भके अन्तिम महीनेमे इसका प्रयोग करनेपर प्रसवके दर्दकी तकलीफ घट जाती है , १०। गर्दनका पिछला भाग, पीठ और कमरमें वातकी तरह दर्द , ११। वात रोगवाली स्त्रियोंका वाधकका दर्द , १२। दर्दकी गति विजलीकी लहरकी तरह।

मेनिञ्जाइटिस— (मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह)— सभी मतके चिकित्सकोंको स्वीकार करना पडेगा, कि इस रोगकी प्राय दवा ही नहीं है, सैकडे ९०।९५ मनुष्योंकी मृत्यु हो जाती है, यदि आपके हाथमे कोई रोगी आये तो कोई दवा देकर यदि फायदा न दिखाई दे तो वृथा समय नष्ट न कर पहले—सिमिसिफ्यूगा—३x

कि, प्रत्येक १॥।२ घण्टेके अन्तरसे, ५।६ मात्रा प्रयोग कर, अन्तमें
डोरिनम—२०० शक्ति, एक मात्रा खिलाकर ४।५ घण्टों तक
थे, यदि पूरा पूरा फायदा न दिखाई दे तो, अन्तमें लाक्रोसे-
यम—२०० शक्ति १ मात्रा और आँखे लाल रहने पर बेलेडोना
। प्रयोग करें, वहुत सम्भव है, कि इसीमें लाभ होगा।
तकमें लिखा जिङ्कम अध्याय भी पढे ।

स्त्री-रोग—जरायुकी बीमारी, उसमें काँटा गड़नेकी
ई, तलपेटमें एक ओरसे दूसरी ओर तक दर्द—यह
वेगसे परिचालित होता है। कमरमें तेज दर्द, जरायुमें
ईकी तरह वेग और दर्द, उससे ऐसा मालूम होता है,
रसे पेटकी सब नस नाडियाँ बाहर निकली पड़ती हैं।
ग हुआ बाधकका दर्द, ऋतु अनियमित—कभी कम,
मिक, कभी समय पर, कभी कभी देरसे, कभी
ता है, सरमें दर्द, कूल्हे और उरुमें भार मालूम
इत्यादि इसके विशेष लक्षण हैं। पल्फ़िया रेसिमोसा
निकला रक्तस्राव परिमाणमें अधिक ही होता है।
सूताओंकी तीसरे महीने गर्भस्राव (सेयाडना)
। प्रसवका दर्द कष्टकर, इसके साथ ही मूर्च्छा,
न दर्द, दर्द उरुतक चला जाता है, बायीं
ीतरकी ओर) काँटा गडनेकी तरह दर्द इत्यादि
ा विशेष लाभ होता है। गर्भवतियोंको यदि
ाधन कराया जाय तो प्रसव आराममें होता है।

लोकिया (पीबकी तरह क्लेदका स्राव) का स्राव बन्द होकर या किसी दूसरे कारणसे बोखार, सरमे दर्द, विकारका लक्षण, प्रलाप बकना, चिल्लाना, भूतका भय इत्यादि उपसर्ग यदि हो और उसमें बेलेडोना, स्ट्रैमोनियमके लक्षण रहें तो भी पहले सिमिसिफ्यूगा का प्रयोग कर देखना उचित है। सौरी घरमें ही प्रसूताओंको उन्माद रोग हो जाने पर इससे बहुत फायदा होगा। प्रसवके बाद जरायुमे सकोचनके लिये यह आर्गट (argot—सिकेलि) की अपेक्षा भी ज्यादा फायदा करता है। गर्भावस्थाकी मिचली और वमनमे भी इससे लाभ पाया जाता है।

प्रसवका दर्द—दर्दके समय प्रसूताको मूर्च्छा आ जाती है (nervous or hysterical—स्नायविक या हिस्टीरियाके कारण), गर्भाशयका मुँह कडा बना रहता है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—सौरी घरमे पहले पहल दर्द आरम्भ होनेके समय यदि जच्चाको कँपकपी पैदा हो जाये (खासकर अगर वह डरसे काँपती हो) तो इससे बहुत फायदा होता है। सिमिसिफ्यूगाके साथ कालीफाइलमके दर्दका प्रभेद —

सिमिसिफ्यूगा—प्रसवका दर्द बहुत देरतक स्थायी होता है। यहाँतक कि पहली बार आरम्भ होनेके समय भी दर्द बहुत देरतक स्थायी रहता है, दर्द तलपेटसे कमरमे चला जाता है, गर्भाशयकी पेशियाँ कडी रहती हैं।

कालोफाइलम—इसका दर्द बहुत थोडी देर ठहरता है (clonic), दर्द प्यूबिक-अस्थिके ऊपर (तलपेटके नीचे जननेन्द्रियकी

(जड़की हड्डीको प्यूबिक अस्थि कहते हैं—विटपास्थि) ठहरता है और वहाँ एक तरहका अकड़नका दर्द होता है। ये ठनके दर्दकी तरह, जरायुकी पेशी क्रमशः क्षीण हो जाती है (ϕ या १x, आधा घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये)।

वात—शरीरके मांस-भरे स्थानोंका वात, विशेषकर पैरकी पोटलीमें (belly of the muscle) दर्द। गर्दन, कमर, पीठ और पसलियोंके भीतर (intercostal) दर्द, यदि वह जरायुकी किसी भी तरहकी बीमारीके साथ हो तो पल्सेटिला और भी अधिक लाभदायक है। फोलोफाइलम भी सिमिसिफ्यूगाकी सदृश दवा है, जरायुकी बीमारीके साथ छोटी छोटी सन्धियोंमें (small joints) वात होनेपर—इससे अधिक लाभ होता है। सिमिसिफ्यूगाके वातका दर्द हिलने-डोलनेपर बढ़ता है; पर ब्रायोनियाकी भाँति प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर नहीं बढ़ता। इसका दर्द बहुत कुछ रसटक्सकी तरह होता है और पहली बार हिलनेके समय बढ़ता है, पर रसटक्समें—रोगी जितनी बार हिलाता है, उतनी ही बार दर्द घटता है, सिमिसिफ्यूगामें—वैसा नहीं होता। कमरके वातमें—मैकरोटिनम लाभ करता है। नितम्ब और कमरकी हड्डीमें दर्द, यह उल्लफ उतर आता है।

पल्सेटिला-स्पाइकेटा—हाथ पैरकी अँगुलियाँ, कलाई, अँगूठा (small joints), हाथ-पैरके पोर इत्यादिका वात और सूजन, सूजनका रंग लाल, उसमें बेहद तकलीफ और छुआ न जाना इत्यादि

रहनेपर इससे विशेप लाभ होता है। इसका दर्द, कभी कभी जगह बदला करता है (कलाईके वातमें यह सबसे अधिक लाभदायक है)। जगह बदलनेवाले दर्द मे—कैलि-बाइक्रोम, केलि-सल्फ, पलसेटिला, लैक-कैनाइनम, मैंगेनम, लिडम, कैलमिया, रोडोडेंड्रन, फोलचिकम प्रभृति फायदेमन्द हैं।

खाँसी—प्राय सूखी और कष्टकर, रातमे खासीका बढना, गलेमें सुरसुरी हो कर खासी, स्नायविक खांसी, बोलनेके समय खासीका बढना, इसके साथ ही पोठमे दर्द और प्लुरोडाइनिया (कलेजेके बगलमें सुई गडने और वातकी तरहका दर्द) की तरह कलेजेके पास दर्द रहनेपर—सिमिसिफ्यूगा और भी लाभदायक है (रैनानक्युलस)।

स्नायुशूलका दर्द—डायफ्राम-पेशी (वक्षोदर मध्यस्थ-पेशी) का शूलका दर्द, जरा जोरसे सांस लेनेपर, खाँसनेपर और सोनेपर भी दर्द बढना (डायफ्रामका मध्यभाग अग्रखण्डके नीचे और दोनो सिरा ७वें पँजरेके नीचे रहता है)।

आँखकी बीमारी—आँखकी पुतली और भवोंके पास बहुत दर्द, इसके साथ ही माथेमें दर्द, दर्दकी प्रकृति धका देने या तीर विधनेकी तरह। ऐसा दर्द बायीं आँखपर ही अधिक होता है।

अनिद्रा—काफिया वगैरहकी तरह यह भी नींद न आने की बीमारीकी एक महौषधि है। डा० हैल्करका कथन है, कि जो

ादमी पहले अफीम सेवन करते थे, उनकी अनिद्राकी बीमारीमें ह खासकर फायदा करता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय स्तिष्कमें उपदाह और अनिद्रामें—एक्टिया लाभ करता है।

सिमिसिफ्यूगाका उग्रवीर्य ओषध—मैकरोटिनम (Macrotinum)—अगर सिमिसिफ्यूगाके लक्षण सब रहें, उससे फायदा न हो तो मैकरोटिनमका—३x—६x ड्राइटुरेशन या ६ठी शक्ति, डिम्बकोष और जरायुकी बीमारीमें तथा बाधकके दर्दमें मन्त्रकी तरह फायदा करती है। मैकरोटिनम—कमरके दर्दमें (Lumbago) ज्यादा लाभदायक है। इससे प्राय सब तरहका कमरका दर्द आरोग्य होता है।

हृत्पिण्ड—एन्जिना पेक्टोरिस (हृत्-शूल), हृत्क्रिया एकाएक बन्द होकर श्वासमें कष्ट। असमान काँपती हुई नाड़ी, बायीं ओरके स्तनके भीतर दर्द।

वृद्धि—छूनेपर, शरीर हिलाने पर, ठण्डी हवामें, गर्म घरमें, रातमें, सबेरे और सन्ध्यामें, ऋतुस्रावके समय (स्रावके परिमाण के अनुसार तकलीफोंका घटना और बढ़ना)।

ह्रास—विश्राम करने पर, निर्मल वायुमें, उत्तापसे और भोजन के बाद।

सम्बन्ध—जरायु और वातके दर्दमें—कालोफाइलम, पल्स, लिलियम, सिपिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, बैप्टीशिया।

क्रियाका स्थितिकाल (duration) ८—१२ दिन ।

क्रम—(potency), १x—३० शक्ति । फारमूला—१ ।

एक्टिया स्पाइकेटा ।

(ACTÆA SPICATA)

(स्पेन प्रभृति स्थानोंके एक प्रकारके पौधेकी सोरका टिंचर)। यह साधारणतः छोटी छोटी सन्धियोंमें, जैसे हाथकी कलाई, अङ्गुलियोंकी ग्रन्थियाँ, एँड़ी इत्यादिके वातका दर्द (sub-acute rheumatic pain of the small jionts specially useful when sour stomach is present अर्थात् क्षुद्र सन्धियोंके नवीन वातके दर्दमें खासकर जब अम्लका रोग भी हो तो अत्यन्त उपयोगी है) महौषधि है और वातमें प्रायः कालोफाइलम और एपोसाइनम एगड्रोसिके सदृश दवा है। प्रभेद जाननेके लिये उनका अध्याय देखिये।

मुंहकी बीमारी—इसमें ऊपरी जबडेमें एक तरहका तेज कष्टदायक दर्द होता है, यह दाँतसे आरम्भ होकर गण्डास्थि के बीचसे होता हुआ कनपटी तक चला जाता है।

वात—इसका लक्षण एक्टिया-रेसिमोसा अध्यायमें लिखा गया है, पढकर देख लें। निम्नाङ्ग फूल जाता है, दर्द होता है, उसको उठाने पर काँपता है, घुटनेमें बहुत कमजोरी मालूम होती है। हाथमें पक्षाघातकी तरह कमजोरी और दर्द रहता है।

सुस्ती—बोलते, खाते, चलते चलते, अवसन्न हो पड़ता है।

पाकस्थली—वमनके साथ तलपेटमें शूलका दर्द, उससे श्वासकष्ट पैदा हो जाता है।

सदृश—एकोन, कालोफाइलम, सिमिसि, लिडम।

क्रम—३ री शक्ति। फारमुला—३।

इस्कियुलस हिपोकैस्टेनम।

(ÆSCULUS HIPPOCASTANUM)

(युरोप और अमेरिकाके एक प्रकारके वृक्षसे टिंचर तैयार होता है)—यह बवासीर, कितने ही स्त्री-रोग और फेरिञ्जाइटिस (गलनली प्रदाह) इत्यादि रोगोंमें व्यवहारके लिये प्रसिद्ध है। इस्कियुलसका रोगी क्रोधी और आशाहीन रहता है। डा० हेल कहते हैं, इस्कियुलसकी क्रिया यकृत, याकृती धमनी और शिरा प्रभृति (liver and portal system) के ऊपर होती है।

क्रिया—यकृतकी क्रियाकी गड़बड़ी तथा और भी कितने ही कारणोंसे मलद्वारके बगलकी और भीतरकी श्लैष्मिक झिल्लीकी हिमरायडल (निम्न सरल्लांत्र) शिराओंमें रक्तकी अधिकता होकर वह फूल उठती है। उस हिमारायडल-शिरामें खून ज्यादा हो जानेकी वजहसे यह शिरा फट जाती है और मलद्वारसे खून निकलने लगता है (इसे ही हमलोग खूनी बवासीर कहते हैं), इसमें मलद्वारमें प्रदाह,

उस शिराका आखिरी भाग फूलकर मलद्वारके भीतर या बाहर बकरीके स्तनकी तरह हो जाना, कब्जियत प्रभृति कितने ही उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। यही बवासीर और बवासीरका मसा है। इसपर इस्कियुलसकी विशेष क्रिया होती है।

नीचे लिखी बीमारियोंमें इस्कियुलसकी अधिक जरूरत होती है—

१। बवासीर और बवासीरका मसा, २। कमर और कूल्हेकी हड्डीमें तेज दर्द, इसी वजहसे काम-काज न कर सकना (मैकरोडिनिया), ३। कब्जियत, सरलॉंत्र (कांच) निकलना, ४। अर्श या पित्त-वृद्धिके साथ मन्दाग्नि, उदर-शूल (गैस्ट्रैलजिया), ५। बाधक, श्वेत-प्रदर, ऋतुस्रावका रंग कालिमा लिये, स्राव गाढ़ा, खाल उधेड़ देनेवाला, ६। फालिकियुलर-फेरिञ्जाइटिस। (गल-कोषकी ग्रंथि-वृद्धिके साथ गलकोषका प्रदाह।)

चरित्रगत लक्षण —

शरीरके कितने ही स्थानोंमें, जैसे—हृत्पिण्ड, फेफड़े, पाकस्थली, मस्तिष्क, तलपेट, चर्म प्रभृति स्थानोंपर, इस तरहका भार मालूम होना मानो खून जमा हुआ है, हमेशा ही दुःखित, क्रोधी स्वभाववाले मनुष्य, २। यकृत और हेमरायडल-शिरा (मलनालीका नीचेवाला शिरा-जाल) में रक्त इकट्ठा होना, दर्द, ३। मुँह, गला, मलनाली प्रभृतिकी श्लैष्मिक झिल्लीका फूलना, वहाँ दर्द, जलन और सूखापन मालूम होना, ४। नाकसे कच्चे पानीकी तरह सर्दीका स्राव निकलना, नाकमें जलन, नाकमें घावकी तरह दर्द, ठण्डी

हवा लगनेसे तकलीफका बढना, ५। ववासीर, मलद्वारमे जलन, खुजली, सूखापन, गरमी और भार मालूम होना, ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमे खील ठोकी हुई है, ६। कमर और फूल्हेकी हड्डीमे तेज दर्द के साथ कब्जियत, गर्भावस्थामें कमरमें बेतरह दर्द, जरायुका अपने स्थानसे हटना (प्रोलैप्सस), श्वेत-प्रदर ; ७। गलकोप प्रदाह रोगमे—गलेमे जलन, गलेमे गोदनेकी तरह दर्द और सूखापन, सूखी खाँसी।

अर्श—मलद्वारमें कुछ गडते रहनेकी तरह दर्द, अकडनका दर्द, (pain in sacro-iliac symphysis pubis), मलद्वारमे भार मालूम होना, मानो मलद्वार भींजा हुआ है, जलन, खुजली मसा, (भीतरी या बाहरी मसा) उसमे बहुत दर्द, यकृतकी जगह पर भार मालूम होना, कमरमे दर्द, पाखाना हो जाने बाद, मलद्वारमे बहुत देरतक जलनका रहना, पाखाना हो जानेके पहले मानो मलद्वार रुका है ऐसा मालूम होना इत्यादि इसके विशेष लक्षण हैं। इस्कियुलसकी ववासीरमे—रक्तस्राव नहीं रहता (Blind piles-बादी ववासीर), पर बीमारी पुरानी हो जानेपर रक्तस्राव होता है। इसम अर्शमे दर्द—कमर और पीठतक फैल जाता है। इस्कियु-लस—नक्स-वोमिका, सल्फर और कालिन्सोनियामे किसी तरह का फायदा न दिखाई देनेपर, उनके बाद इसका प्रयोग करनेसे विशेष लाभ दिखाई देता है। इसका दर्द आदि विश्राम करनेपर घटता है और हिलने-डोलनेपर बढ़ता है (ब्रायोनिया प्रभृतिकी तरह और अन्यान्य कितने ही लक्षण—एलोकी तरह)।

नक्स-वोमिका—इसकी बवासीरमें अकसर खून जाता है, पाखाना लगता है, पर होता नहीं है। इसका मलद्वारका दर्द और कमरका दर्द इस्कियुलसके दर्दकी अपेक्षा बहुत कम होता है और विश्राम करनेपर घटना और हिलने-डोलनेपर बढना —यह लक्षण भी नहीं है। नक्ससे—बीमारी कुछ घटनेपर सलफरसे लाभ होता है। कितनी ही पुस्तकोंमें बवासीरकी बीमारीमें सबेरे सलफर और शामको नक्सवोमिकाके व्यवहारका उपदेश दिया गया है, पर हम इस तरह पर्यायक्रमसे औषध प्रयोग करनेके पक्षपाती नहीं हैं।

रैटान्हिया—(एक तरहके वृक्षकी जडसे मदर-टिंचर तैयार होता है)—क्रम—३-२००, मलद्वारमें मानो काँचके टुकडे गड रहे हैं, और दर्द इस्कियुलसकी बनिस्बत कम रहनेपर भी, इसमें इतनी अधिक जलन रहती है, मानो किसीने लाल-मिर्चकी बुकनी छिडक दी है। पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें असह्य दर्द, और बहुत देरतक जलन रहती है। इस्कियुलसमें—पाखानेके बहुत देर बाद और रैटान्हियामें—पाखाना होनेके बादसे ही जलन आरम्भ हो जाती है। मलद्वारमें फिशर (फटना), उसमें स्पर्श सहन न होना, दर्द और स्तनकी घुंडीका फटना (फिशर) में भी—रैटान्हिया (Ratanhia) फायदेमन्द है।

कालिन्सोनिया—बवासीरसे लगातार खून जाना (खून न जानेपर भी इसमें लाभ होता है), रोगी समझता है, कि मलद्वारमें काँचका चूर या एक धारदार काँटा गडा हुई है। इसके उपसर्ग

रातमें बढते हैं, भयानक कब्जियत, मल कडा और गेंदकी तरह गोल रहता है।

पलो—बवासीरमें ठण्डे पानीका प्रयोग करनेपर तकलीफ घटती है। इसमें पाखाना—वायु निकलनेके साथ या पेशाबके वेगमें अनजानमें निकल जाता है, पेटमें वायु होता है (इग्नेशिया अध्याय देखिये)।

हैमामेलिस—बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव, इसका अध्याय देखिये।

द्रष्टव्य :—अर्श (बवासीर) एक तरहका धातुगत रोग है, यह एकदम आरोग्य नहीं होता, कुछ दिनोंके लिये दब जाता है। फिर बीच बीचमें इसके उपसर्ग दिखाई देते हैं, इस रोगमें यदि किसी दवासे कोई लाभ न दिखाई दे, तो आल्पीन या सुईसे ४।५ जीवित खटमल पकडकर एक टुकडे पके केलेमें ३।१ दिन सबेरे, खाली पेटसे निगल जाये। खूनी बवासीरमें इससे खून जाना अकसर बन्द हो जाता है। तीसरे दिनसे २।३ खटमल, इस तरह २।३ सप्ताह खानेपर उसमे—या तो रोगी एकदम आरोग्य हो जायगा अथवा रोगी बहुत दिनोंतक अच्छा रहेगा। खूनी बवासीरमें यह मेरा परीक्षित दवा है। (साल्मेक्स देखिये)। जो आलसी हों, काम काज करनेकी इच्छा न होती हो, शराब प्रभृति पीते हों, उनकी बीमारीमें—इस्कियुलस ग्लैबरा।

बच्चोंकी बवासीरमें एमोन-कार्ब, बोराक्स, मर्कुरियस; बूढोंकी—एमोन-कार्ब, एनाकार्डियम; गर्भावस्थामें—लाइकोपोडियम,

नक्स; सौरी घरमें—पलसेटिला; शराबियोंकी बवासीरमें—लैकेसिस, नक्स प्रभृति (बवासीरकी तकलीफके लिये—प्लैण्टेगो देखिये, अर्शके कारण यदि काँच बाहर निकल पड़े और भीतर न जाये, रूटा—ϕ बाहरी और—३० या २०० शक्तिका भीतरी प्रयोग करना चाहिये।)

स्त्री-रोग—जरायु-ग्रीवाका फूलना, दर्द, गर्भाशयका टेढा हो जाना या घूम जाना, जरायु कड़ा होना, उसमें टपक इत्यादिमें इस्कियुलस बहुत फायदा करता है। पीले रंगका प्रदरका स्राव, बाधकका दर्द—इसके साथ ही कमरमें दर्द इत्यादिमें भी यह लाभदायक है। इसके साथ ही बवासीर, यकृतका दोष प्रभृति कुछ भी देखनेकी जरूरत नहीं है।

खाँसी—फालिक्युलर फैरिञ्जाइटिस—सबेरे बलगम अधिक निकलता है, गला फँसा, गलेमें घाव, दर्द, सूखापन, जलन (Chronic pharyngitis—पुराना गलकोप-प्रदाह), बवासीर रोग वाले रोगियोंकी इस बीमारीमें—इस्कियुलस अधिक लाभदायक है।

सदृश (complements)—बवासीरमें—एलो, कालिन्सो, इग्ने, एसिड-म्यूर, नक्स, सलफर।

सम्बन्ध—अर्शमें कालिन्सोनियाके बाद इस्कियुलससे रोग एकदम आरोग्य होता है। नक्स और सलफरसे फायदा न होनेपर—इस्कियुलसकी जरूरत पड़ती है।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स।

क्रियाका-स्थितिकाल (duration) ३० दिन।

क्रम—(potency) २x—६x शक्ति। फार्मुला—३।

इथूजा सिनैपियम।

(ÆTHUSA CYNAPIUM)

(युरोपका एक तरहका बदबूदार पौधा)—यह बच्चोंकी बीमारीका महौषध है। पाकस्थली और आँतोंकी बीमारीकी वजह से यदि किसी तरह स्नायु-विकार हो उसपर और मस्तिष्कपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। इसका मानसिक लक्षण —लडका मन्द-बुद्धि, बेचैन, उत्कण्ठित रहता है, लगातार रोया करता है। बच्चोंकी प्रकृतिवाले वृद्ध।

चरित्रगत लक्षण —

१। बच्चेको दूध या दूधसे बनी कोई चीज सहन नहीं होती; २। दांत निकलनेके समय या गरमीके दिनोंमें बच्चेका हैजा, अतिसार, दस्त कै, खींचन, अकडन इत्यादि रोग; ३। बहुत कमजोरी, सर नहीं ऊँचा कर सकता; ४। दूध पीने बाद बडे बडे थक्कोंमें वमन हो जाता है, या पीने बाद ही जोरसे वमन होता है, कै होने बाद एकदम सुस्त हो जाता है, तन्द्राका भाव; ५। खानेके प्राय एक घण्टा बाद वमन, हरे रंगका वमन; ६। अकडन,

तरह खींचन, अँगूठा मुट्ठीमे मुडा, चेहरा लाल, आँखकी पुतली स्थिर और बडी होना, मुँहमे फेन, दांती लगना, नाडी तेज और कडी ; ७। ऊपर लिखे किसी भी लक्षणके साथ बच्चोंका पक्षाघात (Infantile paralysis—बच्चोंका लकवा रोग)।

बच्चोंका अतिसार और हैजा—पाखानेका रंग हलका पीला या हलका हरा, कभी पानीकी तरह पतला, उसमें आम या खून मिला रहता है, पाखानेके साथ ही पेटमे दर्द, वेग और कूथन खूब ज्यादा रहती है। अकसर देखा जाता है, कि बच्चोंको इस तरह दस्त आते आते अन्तमे बीमारी हैजामे परिणत हो जाती है, उस समय दूध भी बिलकुल सहन नहीं होता, बच्चेके दूध पीते ही दहीकी तरह थक्का थक्का वमन हो जाता है, कै खूब जोरसे होती है, अकसर दूध पीनेके बाद ही कै होती है, अगर कुछ देरतक दूध पेटमे रह जाता है, तो खूब बडे बडे थक्कोंके रूपमे कै होती है, उसमें खट्टी गन्ध रहती है, प्यास नहीं रहती। जो हो, इस तरह दस्त कै आनेपर बच्चा एकदम कमजोर और निस्तेज हो जाता है, नींद बिलकुल ही नहीं आती। यदि कुछ जरा-सा नींदका भाव होता भी है, तो हाथ पैर काँप उठते हैं और नींद खुल जाती है। इसके बाद फिर नींद नहीं आती है, बहुत छटपटाया करता है। इथूजामे—हरेक बार दस्त कै होनेके बाद, बच्चा कुछ देरतक मुर्देकी तरह चुपचाप पडा रहता है। बच्चेके हैजामे—बोखार आकर नाडी क्षीण या यदि नाडी लोप हो जाये और बराबर छटपटी रहे, कुछ आर्सेनिककी तरह लक्षण

मालूम हों, ऊपर बताये कितने ही लक्षण आर्सेनिकके रहनेपर भी—आर्सेनिकमें प्यास रहती है; पर इथूजामें प्यास बिल्कुल ही नहीं रहती। ऐसा भी दिखाई देता है, कि इस तरह दस्त के हो कर, कभी कभी बच्चोंको अकड़न या टंकार पैदा हो जाता है। यदि यह दिखाई दे कि अकड़नके समय बच्चा अँगूठेको जोरसे मुट्ठीमें दबाता है, जबड़े कड़े पड़ जाते हैं और सोनेपर हाथ-पैर काँप उठते हैं, नाड़ी क्षीण और कड़ी है, तो—इथूजासे ज्यादा लाभ होगा। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय ऊपर बताये ढगके दस्त के हों, या किसी दूसरी बीमारीमें ये लक्षण रहें, तो इथूजासे फायदा होगा। इथूजाके बाद—सलफरसे रोग अकसर आरोग्य हो जाता है। डा० पियर्स कहते हैं—सांघातिक प्रकारके गैस्ट्रो-इण्टेस्टाइनैल फैवर—(उदर और आँतोंकी सर्दी) भी इससे आरोग्य होता है। बच्चोंकी इस बीमारीकी—कियुफिया, कैल्केरिया, पोडिम-क्रूड, इपिकाक प्रभृति और भी कई दवाएँ हैं—

कियुफिया-विस्कोसिसिमा—φ; यह एक नयी दवा है। डा० सुसलरका—कैलि-फास जिस तरह हैजाकी सभी अवस्थाओंके काममें आता है, यह भी उसी तरह बच्चोंके हैजाकी प्रायः सब अवस्थाओंमें ही व्यवहृत होता है—और इससे फायदा भी भरपूर दिखाई देता है। इसके अलावा हैजाके दूसरे दूसरे लक्षणों के सिवा बच्चोंका तेज बोखार, बेचैनी, नींद न आना प्रभृति लक्षण रहनेपर इससे और भी अधिक लाभ होता है। यह—इथूजा, एसु-

फ़ोर्बिया, सिकेलि, और आर्सेनिकके सदृश दवा है। मेटिरिया-मेडिकामे इसका गुण इस तरह लिखा है —* * * अर्थात विना पची चीजोंकी कै, बच्चोंका हैजा, बहुत अम्ल होना, बार बार हरे, पानी जैसे, खट्टे दस्त, खींचन और तेज दर्द, जोरका पाखाना, बेचैनी और नींद न आना।

बच्चोंका हैजा, आम-रक्त, अम्ल होना, दहीकी तरह वमन, दूध या खायी हुई चीजका अम्लमें परिणत हो जाना, खायी हुई चीज बिना पची अवस्थामें या दूध दहीके रूपमें कै हो जाती है। बच्चेको बार बार हरे रंगके पानीकी तरह, खट्टे दस्त आते हैं और बहुत बेचैन हो जाता है, पेटमे कुछ भी नहीं रहता, पीते ही पाखाना लग आता है, मानो मुँहसे पेटमे जाते ही मलद्वारसे बाहर निकल जाता है। आमाशयका मल थोडा, बार बार थोड़ा खून-मिला मल, बहुत कूथन और तकलीफके साथ मलका निकलना, प्रवल ज्वर इत्यादि—कियुफियाके चरित्रगत लक्षण हैं (ताजे गाछसे इसका मूल अर्क तैयार होता है—फार्मुला—२)।

<u>कैल्केरिया-कार्ब</u>—इसको व्यवहार करनेके पहले इसका धातु सबसे पहले ध्यानमे रख लेना चाहिये। इसके दस्त भी खट्टे होते हैं और कै भी खट्टी रहती है, पर कै खट्टी और पीले रङ्गकी रहने पर भी, इसमें इथूजाकी तरह इतने बडे बडे थक्के के साथ नहीं निकलते। इसके अलावा कैल्केरियाकी तरह इथूजा दस्तके साथ जमा हुआ दूध भी नहीं निकला करता।

पल्सेटिला-क्रूड—बच्चा जो खाता है, वही दस्तके साथ निकल जाता है। जमे हुए दूधकी कै होती है, पर इथूजाकी तरह इतने बड़े बड़े दहीकी तरह थक्के थक्के वमन इसमें नहीं होता। इसके अलावा इसमे इथूजाकी तरह जोरसे वमन नहीं होता। पल्सेटिला क्रूडमे —वमनके बाद बच्चा दूध नहीं पीना चाहता, जीभ पर सफेद लेप रहता है, मानो दूध लगा हुआ है, बच्चा हमेशा चिड-चिडा बना रहता है।

इपिकाक—इसमे वमनकी अपेक्षा मिचली अधिक रहती है। दस्तका रङ्ग घास या कुचले हुए पत्तेकी तरह हरा होता है। कभी थोड़ा हरा, हरा-पीला मिला, उसमे थूक या फेनकी तरह फेन-भरा पदार्थ मिला रहता है।

वृद्धि—खाने पीने बाद, वमन, दस्त और पेठनके अन्तमें।

ह्रास—(amelioration) हवा खानेपर।

सदृश—(complements) फैल्के, पल्सेटिला-क्रूड, आर्स, साइलिशिया।

क्रियानाशक—vegetable acid—साग-सब्जियोंका अम्ल।

क्रम—(potency) ६—३० शक्ति। फारमुला—३।

एगरिकस मस्केरियस।

(AGARICUS MUSCARIUS)

(फंगस, धंगका छत्ता)—दूसरी दूसरी बीमारियोंमें इसका व्यवहार होनेपर भी हैजा रोगके बाद विकार और ज्वर-विकार

मिफाइटिस—रोगी मानो मतवाला, नशेमें बक रहा है।

सिमिसिफ्यूगा—ऋतुस्राव होना बन्द हो कर बीमारी, इसके साथ ही बकना, प्रसवके बादकी बीमारी (Puerperal mania—सौरी बाई), विकारमें रोगिनी चूहा, छुछुन्दर, प्रभृति जन्तु सब देखती है, मानो उसके सरके ऊपरसे जगली जानवर सब दौड़ते हैं, लगातार बकती और बातें बदला करती है, स्थिर नहीं रह सकती, करवट बदला करती है, सो नहीं सकती।

लैकेसिस—इसका एक प्रधान लक्षण है—रोगीका हाथ-पैर काँपता है, बहुत कमजोर हो जाता है, पतले दस्त आते हैं—इन सब लक्षणोंके साथ विकारमें बकता है। रातमें यह बकना बढ़ जाता है, आच्छन्न या बदहवास-सा रहकर बका करता है, चेहरा लाल, बड़े कष्टसे बोलता है, जबड़े झूल पड़ते हैं, बेतरह बकता है, लगातार बातें बदला करता है।

श्वासयंत्रकी बीमारी—फेफड़ेमें ठीक ठीक खूनका दौरान न होनेके कारण आक्सिजेन (अम्लजान) वायु नहीं प्रवेश कर पाती, इससे रोगीके श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ होती है। जी-भर साँस नहीं ले सकता, हाँफा करता है। हैजाकी बीमारीकी आखिरी अवस्थामें यह लक्षण अकसर दिखाई देता है, इसमें एगारिकस—निम्न-शक्ति खूब फायदा करती है, यदि इससे फायदा न हो तो—मस्केरिन निम्न-क्रम—३-६ शक्तिके प्रयोगसे फायदा होगा। आक्षेपिक स्नायविक खाँसीमें और जप

भी गडबडीसे कलेजेमें धड़कन हो जानेपर भी यह फायदा करता है।

नाककी बीमारी—सर्दी लगी नहीं, नाकमें किसी तरह का प्रवाह भी नहीं है, पर नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह सर्दीका स्राव हुआ करता है, इसके साथ ही छींक (पलियम-सिया देखिये)।

फुन्सी-फोड़े—छोटे बच्चोंके ओंठमें फोडा और फुन्सिया की तरह एक तरहके उद्भेद् निकलते हैं और अन्तमें वे छाले बन जाते हैं, उनके भीतर पीले रंगका रस भरता है।

दर्द—शरीरकी किसी एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है। इस जानेकी भी एक विशेषता है—"कोनाकोनी" जैसे—ऊपरका बायाँ हाथ, नीचेका दाहिना पैर (डा० हेरिङ्ग कहते हैं—ऊपरका बायाँ हाथ, नीचेका दाहिना-पैर, डा० बोनिङ्गहोसेन कहते हैं—ऊपरका दाहिना अङ्ग, नीचेका बायाँ अङ्ग—यहाँ थोडा मत-भेद दिखाई देता है)। पगारिकसके सभी दर्द नियुरैल्जिक (स्नाय-विक) ढङ्गके होते हैं, इसीलिये, जीभका स्नायविक दर्द, दाँतका स्नायविक दर्द, माथेका स्नायविक दर्द प्रभृति कई तरहके स्नायविक दर्दोंमें इससे लाभ होता है। सर-दर्द, माथेकी एक बहुत छोटी-सी जगहमें ऐसा मालूम होता है, मानो कोई काँटी ठोक रहा है, दर्दकी जगहका बहुत ठण्डा भाव रहता है, इतना ठण्डा मानो

घरक रखा हुआ है या बरफकी सुई गड रही है। इसीलिये, रोगी गर्म कपडेसे माथा बाँधे रखना चाहता है।

आँखकी बीमारी—धुँधला देखना, आँखोंसे बहुत ज्यादा काम लेनेसे ही इस ढगकी बीमारी होती है। पलकें और आँखकी पुतली काँप उठती है, आँखोंमें अकडन खींचन (spasm) होती है।

इनके अलावा और कई बीमारियाँ जेसे—ताण्डव (Chorea), ताण्डव-रोगकी तरह कँपकपी, खासकर मुँहकी पेशी का काँपना, मूर्च्छा, बैठनेपर कमरके दर्दका बढ जाना, अँगुलियोंका सुन्न हो जाना और कडापन, कोनेकी तरह (angular) बनकर हाथ-पैर हिल उठते हैं, स्नायविक या बहुत अधिक वीर्यक्षयकी वजहसे पैदा हुई बीमारी इत्यादिमें हाथ-पैरकी पेशियाँ, पलकें, ओंठ इत्यादिका काँपना और पीठकी त्वचामें कीडे रेंगनेकी तरह सुरसुरी खुजली (स्पाइनल इरिटेशन), पेशाबकी बीमारीमें—पेशाब थोडा, बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाबके समय जलन और काँटा चुभनेकी तरह दर्द, मूत्रनलीसे लसदार स्राव निकलना, आक्षेपिक बाधकमें दर्दके साथ तलपेटका कोई पदार्थ योनि-पथसे बाहर निकल पडेगा, ऐसा अनुभव होना (सिपिया, लिलियमकी तरह)। इसके साथ ही योनिमें खुजली, एकाएक आक्षेपिक खाँसी आरम्भ होकर फेफडेसे खून निकलना, रातमें नींद लगते ही आक्षेपिक सूखी खाँसी। चाय, काफी या तम्बाकू पीनेवालोंका

फलेजा धडकना ; हृत्पिण्डकी अनियमित और गड़बड़ गति। मेरुदण्डका उपदाह (Spinal irritation) होकर वहाँ जलन, सुई गडनेकी तरह दर्द और स्पर्शका सहन न होना इत्यादिमें इससे विशेप लाभ होता है। एगरिकस—खाल उघडने या बिवाई फटने (Chilblain) की बढ़िया दवा है। इसके बाहरी और भीतरी दोनों ही प्रयोग होते हैं।—

वृद्धि—भोजनके बाद, ठण्डी या खुली हवा सेवनसे, मानसिक परिश्रमसे।

बादकी दवा (follows well)—वेल, कैल्के, कूप्रम, मार्क, ओपियम, पल्स, रसटक्स, साइलि, ट्युबर्कु।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन।

क्रम—३-३० और २००, चर्मरोगमें निम्नशक्ति। फारमुला ३।

एगरिकस फैलायडेस।

(AGARICUS PHALLOIDES)

(एक दूसरी जातिके बगके छत्तेसे—कगससे तैयार होता है)

इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है—दस्त और कै, लगातार पाखाना और पाखानेकी चेष्टा, दस्तका रङ्ग चावलके धोवन या बासी भातके पानीकी तरह, ठण्डा पानी पीनेकी अदम्य प्यास, शरीरकी त्वचा सूखी, हिमाङ्ग (शीत आ जाना), कमजोरी, नाड़ी

क्षीण, रुक रुक कर (सविराम) या लोप हो जाना, पाकस्थली भयानक ऐंठन (cramps), श्वास-प्रश्वासका धीरे धीरे चलते चलते एकाएक तेज होना अथवा साँस तेज चलते चल एकाएक धीमी हो जाना, पेशाब निकलना बन्द या पेशाब इकट्ठ न होना, ये लक्षण प्राय सभी हैजाके लक्षण हैं, अतएव, यदि किसी हैजाके रोगीमे इस तरहके लक्षण दिखाई दें तो अप पोलिकेस्टस दवाएँ (होमियोपैथीमे जो सब परीक्षित दवाएं बहुत तरहकी बीमारियोंमे हमेशासे व्यवहृत होती आती हैं, उनक पोलिकेस्टस कहते हैं) व्यवहार कर, यदि कोई विशेष फायद न दिखाई दे अथवा इसे ही पहले दे। यदि यह मालूम हो कि उस प्रकारके लक्षणवाले दस्त कै और दूसरे दूसरे उपसर्गोंके सा पाकस्थली, आत, मलनाली प्रभृतिमे दर्द बिलकुल नहीं है, रोगी उतना हिमांग भी नहीं है, तो इससे विशेष लाभ होगा। इ तरहके लक्षण भी उस औषध लक्षणके अन्तर्गत हैं।

क्रम—φ—१x, ३—३० शक्ति। फारमुला—३

एगनस केस्टस।

(AGNUS CASTUS)

(युरोपके एक तरहके गुल्मका फल)—स्त्री और पुरुष दोनों ही जननेन्द्रियोंपर इसकी प्रधान क्रिया है। परन्तु स्त्रीकी अपेक्ष पुरुषके ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक होती है। बहुत अधि

स्त्री-सहवासके कारण असमयमें ही बुढापा, बार बार प्रमेहका आक्रमण और ध्वजभग इत्यादि रोगोंमें इसका अधिक व्यवहार होता है। जिस मनुष्योंको बहुत दिनोंतक इन्द्रिय-सेवनकर (old sinners) क्रमसे एकदम ध्वजभग हो पडा हो, जिनकी विषय करनेकी इच्छा बहुत प्रबल रहनेपर भी एकदम हीनशक्ति हो रहे हैं, लिङ्ग शिथिल, ठण्डा, आकारमें एकदम छोटा हो गया हो, या जिन्हें रमणेच्छा बिलकुल ही नहीं होती, किसी कामोत्तेजक बात या आलिङ्गन करनेपर भी जिन्हें लिङ्गोच्छ्वास नहीं होता, उनके लिये, और जिन्हें बार बार प्रमेह हो कर ध्वजभग हो गया हो,—उनके लिये पगनस अमृतकी तरह कार्य करता है। इसके अलावा जो स्त्री वन्ध्या हो, ऋतु बन्द या बहुत थोडा स्राव होता हो, स्वामि-सगकी इच्छा बिलकुल ही न होती हो, स्तनमें दूध न रहना, जरायुकी सूजन और प्रदाह इत्यादि स्त्री-रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है। पगनस—लिम्फेटिक धातु (लसिका धातु) में अधिक लाभदायक है। कुचलकर या मोच खा जानेके कारण दर्दमें भी यह लाभ करता है।

पगनस—मेह, स्पर्माटोरिया (वीर्य-स्खलन), ध्वजभग, लिङ्गके मुँहपर पीले रगका लसदार स्राव थोड़ा-सा लगा रहना, पाखानेके वेगके साथ या नींदके समय वीर्य-स्खलन इत्यादि रोगमें भी यह विशेष लाभदायक है।

डा० हेरिङ्ग कहते हैं —बहुत ज्यादा शुक्र नष्टकर जो सब पुरुष थोडी ही उमरमें वृद्धोंकी तरह हो जाते हैं,यह उनका परम बन्धु है।

शुक्रक्षय और जननेन्द्रियकी कम्जोरीकी और भी कई दवाओंका विवरण नीचे दिया जाता है :—

स्त्री-सहवासकी इच्छा बहुत थोड़ी या एकदम शक्तिहीन—सलफर।

लिङ्ग इतना शिथिल और कमज़ोर कि किसीके साथ नाना प्रकारकी चेष्टा या कल्पना करनेपर भी लिङ्गोद्रेक नहीं होता—एगरिकस, कोनियम।

लिङ्ग क्रमशः छोटा और शिथिल होता जाता है—आर्जेण्ट-नाइट्रिकम।

स्त्री-सहवासके बाद भी वीर्य-जाते रहना—फास्फोरस।

किसी तरहका स्वप्न न दिखाई देनेपर वीर्य-स्खलन—जेलसि-मियम।

प्रमेह रोगकी ग्लीट अवस्थामें ध्वजभग—सलफर।

पीले रगके प्रमेहके स्रावके साथ—हाइड्रैस्टिस, पल्सेटिला।

पाखानेमें वेग देनेके समय सफेद रगका शुक्र जाना—एसिड-फास, सैलिक्स-नाइग्रा, साइलिसिया—१००० शक्तिकी एक मात्रा, १ पक्ष या १ महीनेका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये (टर्नेरा देखिये)। ध्वजभगमें—टर्नेरा, व्यूफो प्रभृति।

स्तनका दूध घटना—फ्रैगेरिया या गैलेगा—

नामक दोनो ओषधियोंकी निम्न-शक्ति, यदि प्रसूता नियमित रूपसे सेवन करें तो दूधका परिमाण बढ जाता है, स्तनका दूध यदि

एकदम घट गया हो तो भी फायदा होता है, इससे भूख बढती है। पगनस भी—स्तनमें दूध न रहनेकी दवा है।

श्वेत-प्रदर—जननेन्द्रियकी शिथिलताके कारण अन-जानमें पीले रंगका दाग पडता है। वन्ध्यत्व (अरम-म्यूर-नैट्रो)।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, ब्रायो, कैलेडि, इग्ने, लाइको, पल्स, सेलिनियम, सलफर (नपुसकता रोगमें—कैलेडियम और सेलिनियमके बाद ज्यादा लाभ करता है)।

क्रिया-नाशक—(antidote)—कैम्फर, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल—(duration) ८—१४ दिन।

क्रम—(potency ३x से उच्च शक्ति। फारमुला—२।

एलान्थस।

(AILANTHUS)

चीन, जापान प्रभृति स्थानोंमें एक वृक्ष होता है। यह देखनेमें बहुत सुन्दर होता है, पर जब उसमें फूल होता है,—तब इतनी बदबू निकलती है, कि कोई पास नहीं रह सकता।

डिफ्थीरिया, फालिक्युलर टान्सिलाइटिस, आरक्त ज्वर (Scarlet fever), किसी भी बीमारीमें शरीरकी त्वचाका एकाएक बैंगनी (purplish) रंगका हो जाना, चेहरा महागनी लकड़ीकी तरह काला हो जाना, अतिसार, आमाशय, आमरक्त

(पेचिश) अथवा किसी दूसरी बीमारीमे बहुत कमजोरीके साथ तेज क्षीण नाडी प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमे इसका साधारणतः प्रयोग होता है।

अतिसार—पलोंकी तरह पेशाव करनेके समय अनजानमे मल निकल जाना।

ज्वर—किसी तेज बोखारमे रोगीका बेहोश और आच्छन्न की तरह पडे रहना, बीच बीचमे लम्बी साँस लेना, मस्तक और मनकी अवस्था बहुत गडबड, बेहोशीके भावके साथ साथ छटपटी, आँखोंकी पुतलीका बडा हो जाना, अनजानमे पाखाना पेशाब प्रभृति कितने ही लक्षणोंके साथ यदि शरीरका रग बैंगनी या लाल एकाएक हो जाये, चेहरेका रग काला पड जाये तो इससे लाभ होगा।

सर्दीका स्राव—नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें पानी की तरह सर्दीका स्राव होता है, उसके साथ ही रक्त भी रहता है। सूखी यन्त्रणादायक खाँसी, छातीमे सूजन और दर्द।

चर्म-रोग—हर बरस काले या नीले रगके एक तरहके उद्भेद निकलते है, ये दाने खूब धीरे-धीरे निकलते हैं, अँगुली से दबाने पर मिट जाते है, पर फिर धीरे धीरे निकल आते है। बडे छालेकी तरह उद्भेदका निकलना, उसके भीतर काले रगका रस-भरा।

विकार—बुदबुदाकर बकता है, आदमी नहीं पहचान सकता, आँख गदली।

गलेके भीतरके रोग—गलेके भीतर और बाहर फूल कर लाल हो जाना या बैंगनी पड जाना, गर्दनके पिछले भागमे इतना दर्द कि छुआ नहीं जाता तथा सूजन, गला बैठ जाना, सूखी खाँसी, नाकसे पानीकी तरह बलगम निकलना। दांतमे मैल जमना (सार्डिस) प्रभृति लक्षणमे इसका व्यवहार होता है , डिफ्थीरिया रोगमें ये लक्षण रहनेपर इसको सबसे पहले प्रयोग करना चाहिये (मार्क सियोनेटस)।

सदृश—एमोन-कार्ब, एसिड-म्यूर, लैकेसिस, आर्निका, बेप्टिशिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स, रसटक्स।

क्रम (potency)—३—६ शक्ति। फरमुला—२

एलेट्रिस फेरिनोसा।

(ALETRIS FARINOSA)

(अमेरिकाके एक प्रकारके पौधेकी ताजी जडसे टिंचर तैयार होता है)—दुर्बल, क्षीण शरीरवाली स्त्रियोंकी गर्भाशयकी किसी भी बीमारीके साथ प्रदर और कब्जियत रहने पर, साथ ही पाचन-शक्तिका घटना, भोजनके बाद कष्ट, पेटमें भार इत्यादि लक्षण रहने पर इससे विशेष लाभ होता है। गर्भस्रावकी तैयारी होकर पेमरमें दर्द मालूम होते ही इसका प्रयोग करने पर सम्भवत

गर्भस्राव बन्द हो सकता है। प्लेट्रिसमें—समय न रहनेपर भी बहुत ज्यादा परिमाणमें खूनका स्राव होता है, इसके साथ ही पेटमें तेज दर्द रहता है, खून कभी काला, कभी थका थका। जरायु बाहर निकलने और बार बार गर्भ-स्राव होनेपर इससे फायदा होगा।

वाइवर्नम-प्रुनिफोलियम—मृतवत्सा (जिसे मरी सन्तान होती हो) दोष, चोट वगैरह किसी कारणसे गर्भस्राव होनेका लक्षण होकर कमरमे दर्द, तलपेटमे दर्द, पानी जाने लगना, रक्त-श्लेष्मा निकलना, सन्तानका नीचेकी ओर सरक जाना इत्यादि गर्भस्रावका पूर्व लक्षण मालूम होते ही पहले इस दवाकी परीक्षा करनी चाहिये। अमेरिकाके सभी चिकित्सकोंने एक स्वरसे स्वीकार किया है, कि गर्भस्राव रोकनेकी वाइवर्नमसे बढ कर कोई दूसरी दवा नहीं है, किसी दूसरी दवासे इसकी तुलना नहीं हो सकती। इससे जिस तरह तेजीसे दर्द घटता है, उसी तरह बहुत जल्दी जल्दी रक्तस्राव भी रुक जाता है, और गर्भाशय स्वाभाविक अवस्थामे आ जाता है। अकसर २।१ महीनेका गर्भ नष्ट होता है।

गर्भस्रावके अलावा—प्रसवके बाद जो दर्द होता है, उसमे यह सिकेलि, आर्निका इत्यादि दूसरी दूसरी दवाओंकी बनिस्वत ज्यादा फायदा करता है। प्रसूताके पेटमें दर्द, पेटमें ऐंठन, कलेजेमे धड़कन, कमरमे दर्द इत्यादि उपसर्गोंकी भी यह एक बहुत बढिया दवा है। सामयिक प्रसवके दर्दके पहले किसी किसीको दर्द

होता है, उससे जङ्घाको बहुत तकलीफ होती है, उसमें और जरायुको अपनी जगहसे हट जानेका दोषवाली स्त्रियोंके अनियमित ऋतुमें भी वाइवर्नम लाभदायक है।

वाइवर्नम—इसमें खूनको रोकने और दर्द दूर करनेकी शक्ति रहनेके कारण, भयानक अकड़नके दर्दके साथ यदि रक्त-प्रदर हो तो उसमें भी लाभ करता है। डिम्बकोषके (ovary) प्रादाहिक और स्नायुशूलके दर्दमें भी इसका प्रयोग कर कितने ही स्थानोंमें तुरन्त फायदा दिखाई देता है। बहुत ही तक-लीफ देनेवाले बाधकके दर्दमें, ऋतुकालके ५।७ दिन पहलेसे दिनमें ३।४ बार और ऋतुस्रावके समयके दर्दमें २।३ घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करने पर—काफिया प्रभृति अज्ञान करनेवाली दवाओंकी तरह तेजीसे तकलीफ घट जाती है (कालोफाइलम देखिये)।

वाइवर्नम प्रुनिफोलियम और वाइवर्नम ओपुलसकी क्रिया प्रायः एक ही तरहकी है, पर प्रुनिफोलियम—बहुत ज्यादा खून जाना और गर्भस्राव रोकनेके लिये तथा वाइवर्नम ओपुलस—बाधक और प्रसवके बादके दर्दमें ज्यादा उपयोगी है। इसमें ऋतु बहुत देरसे होता है, स्राव परिमाणमें थोड़ा होता है, केवल कई घण्टे रहता है, कभी बदबू, कभी दर्द, कभी दर्द नहीं रहता, ऐसा भी हुआ करता है। क्रम-θ—१x शक्ति अधिक लाभदायक है। पके फलसे—प्रुनिफोलियम और मोरकी छालसे—ओपुलसका टिंचर तैयार होता है। फारमुला—३।

पलियम-सिपा फायदा करता है (सैंगुनेरिया-नाइट्रेट इस रोगकी बहुत बढ़िया दवा है, उसका अध्याय देखिये)

पाकस्थलीके रोग—पाकस्थलीके आखिरी मुँहपर और छोटी आँतकी जड़में (in pyloric region) तेज़ दर्द, उसके साथ ही हाउ हाउ कर डकार लेना, जी मिचलाना, पेट गड़गडाना, बदबूदार वायु निकलनेके साथ साथ पतले दस्त आना, मलद्वारमें खोचा मारनेकी तरह दर्द, खुजली और गरमी मालूम होना प्रभृति इसके लक्षण है।

जखम—पैरकी पँडीमे घाव, जूतेका घाव और नखके चारों ओर अँगूठेके तकलीफ देनेवाले दर्द मे यह लाभदायक है।

कानकी बीमारी—ठण्ड लगकर सर्दी और कानमें दर्द। यह दर्द कानके भीतरसे गले तक चला जाता है। डा० केन्ट कहते है—बच्चोंके कानका अधिकांश दर्द कैमोमिला, पलसेटिला और पलियम सिपासे आरोग्य होता है। पलसेटिला का बच्चा बहुत करुण स्वरसे रोता है, कराहता है, कैमोमिलाका बच्चा उद्धत, क्रोधी रहता है और जोर जोरसे चिल्लाता है।

स्नायुशूलका दर्द—(न्युरैल्जिया)—शाखा अंग (हाथ-पैर आदि) में नश्तर लगवाने या स्नायुमे चोट पहुँचनेके बाद स्नायुशूल हो जाये और चोट लगनेके कारण पुराना स्नायु-प्रदाह (नियुराइटिस) मे—सिपा लाभदायक है। (पेमोन-प्यूर देखिये)।

वृद्धि—गरम हवामे, कमरा गरम रहने पर, उसमें रहनेसे।

सदृश (complements)—फास, पल्स, थूजा, सार्सा।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, साइलि (नाकके दमे —सिपा इसके पहले व्यवहार करना चाहिये)।
क्रिया-व्याघातक (inimical)—एलियम-सैट, एलो, सिना।
क्रिया-नाशक (antidote)—आर्निका, कैमो, नक्स, थूजा, ट।
क्रियाका स्थितिकाल—(duration)—१ दिन।
क्रम—३x—६ शक्ति। फारमुला—३।

एलियम सैटाइव्हा।

(ALLIUM SATIVA)

(लहसुनका मूल अर्क) बहुत ज्यादा श्लेष्मा निकलना, पुरानी सी, थोड़ी-सी भी सर्दी लग जानेपर खाँसीका बढ़ जाना और कना, खाँसी, वक्षमें दर्द, गाठोंका सूजना, स्तन-ग्रन्थिका फूलना, टि-लम्बी पेशी (psoas) और इलियकस (iliacus श्रोणिकी) में भयानक दर्द इत्यादि रोगोंमें यह विशेष लाभ करता है। नी भी पुरानी बीमारीकी क्षय अवस्थामें (adinamic stage) र रक्तकास इत्यादि कितनी ही बीमारियोंमें इससे बहुत फायदा ता है। इससे खाँसी और बलगम घट जाता है, शरीरकी सी स्वाभाविक हो जाती है, रोगीके शरीरमें मांस बढ़ता है और ाभाविक रूपमें नींद होती है। यह बैसिलिनमके सदृश दवा है।
क्रम (potency)—३x—६ शक्ति। फारमुला—३।

एलनस ।

(ALNUS)

इस दवाकी चिकित्सामें अधिक चलन न रहनेपर भी साधारणत: नीचे लिखी दो तीन बीमारियोंमें इसकी खास क्रिया पाचक यन्त्र और ग्रन्थियोंपर होती है। दाद, पीब-मिला या विसर्पकी तरह और एकजिमा (अकौत) की तरहके चर्म्म-रोगमें भी इससे फायदा होता है।

ग्रन्थियोंका फूलना—यदि गांठ (ग्लैण्ड) खूब बड़ी हो जाये, दर्द रहे और बेलेडोना, हिपर, मर्कुरियस इत्यादि दवाओंसे लाभ न हो, तो इससे फायदा होना सम्भव है, पर दूसरी दूसरी जगहोंकी गाँठोंकी अपेक्षा सब-मैक्सिलरी-ग्लैण्ड (निम्न-हनुकी ग्रन्थि) की सूजनमें इससे लाभ होता है।

बदहज़मी—जिन्हें मांस, मछली, दाल प्रभृति प्रोटीड जातिके खाद्य-पदार्थ हजम नहीं होते, गैस्ट्रिक जूस (पाचक रस) ठीक ठीक तरीकेसे नहीं निकलता (imperfect secretion of gastric juice), पाचक-रस न निकलनेके कारण, मन्दाग्नि हो जाती है, उनकी बीमारीमें यह खूब फायदा करती है।

जखम—मुँह और गलेकी श्लैष्मिक झिल्लीके जखममें लाभदायक है।

क्रम—ϕ—६ ठीं शक्ति। इसका बाहरी प्रयोग भी होता है। फारमुला—३।

एलो सोक्रोटिना।

(ALOE SOCROTINA)

(मुसब्बरके वृक्षकी गोंद)—यह अतिसार, आमाशय, रक्ताशाय, यकृतमें खून अधिक हो जानेके कारण बीमारियाँ, बवासीर, रक्की बीमारी वगैरहमें व्यवहारके लिये बहुत मशहूर है। इसका रोगी मानसिक परिश्रम नहीं करना चाहता, क्रोधी और चिडचिडा रहता है।

एलो—यकृतके ऊपर क्रिया प्रकटकर याकृती-धमनी (लिवर-की धमनी) में रक्तकी अधिकता और ज्यादा मात्रामें पित्त निकलने की क्रियाको बढा देता है। बड़ी आँत, तलपेट (pelvis viscera) और मलद्वार प्रभृतिपर भी इसकी क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। हर साल जाडा आरम्भ होते ही चर्म्म रोगका आरम्भ हो जाना (पेट्रोलियम) २। कब्जियतकी अवस्थामें—मिजाज क्रोधी और क्षुब्ध होता है। ३। सर-दर्द—आर्सेनिककी तरह गरमीमें बढ़ना, ठण्डेमें घटना। प्रत्येक कदम चलनेपर माथेमें दर्द, तकलीफ, सर-दर्दके साथ जी मिचलाना, आँख भारी मालूम होना, ४। खाने-पीने बाद ही पाखाना लग आना, दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है (क्रोटोन), मानों मलद्वार खुला हुआ है, सवेरे पाखानेके लिये जल्दीमें बिछावनसे उठकर जाना पड़ता है (सोरिनम, सलफर, रियुमेक्स)। ५। वायु निकलनेपर प्राय अनजानमें ही

पाखाना हो जाता है (एसिड-फ्यूर, ओलियेण्डर), ६। निकले हुए वायुमें बहुत बदबू रहती है, मलद्वारमें जलन होती है, पाखाने के समय वायु अधिक निकलती है, मलका अंश बहुत थोडा रहता है, ७। आम-मिला अथवा कडा मल रहनेपर भी अनजानमें निकल जाता है, ८। तलपेटमें दाहिनी ओर एक तरहका भयानक एंठनकी तरह दर्द रहता है। पाखाना होनेके पहले और समय तेज दर्द, पाखाना हो जाने बाद घटना, ९। पाखाना होनेके पहले पेट गडगडाता है, पेटमें आवाज होती है, एकाएक पाखाना लग आता है, पाखाना हो जाने बाद—कमजोरी, पसीना मूर्च्छाका भाव, १०। बवासीरमें अंगूरके भब्बेकी तरह मसे (एसिड-फ्यूर) हमेशा ही मलद्वारमे धक्का देनेकी तरह दर्द, मलद्वार गरम, बहुत खुजलाता है, रक्तस्राव होता है, ११। मलद्वारमें खुजली और जलनकी वजहसे नींद न आना।

उदरामय, आमाशय और हैज़ा—पाखानेका रंग पीला, टुकडा टुकडा, पानीकी तरह पतला और गरम तथा आम मिला या केवल थक्का थक्का खून-मिली आम, पाखाना कभी थोडा और कभी अधिक होता है। अतिसारमें पाखाना होनेपर पाखाना परिमाणमें अधिक ही हुआ करता है। मलद्वार सुन्न, स्वाभाविक पाखाना होनेपर भी अनजानमें ही हो जाता है, वायु छूटनेके साथ ही साथ मल बाहर निकल पडता है, पाखाना होनेके पहले पेट खूब गडगडाता है, रोगी समझता है, कि बहुत पाखाना होगा—पर वास्तवमें वैसा होता नहीं है, केवल आवाजके साथ वायु ही

निकला करती है, तलपेट और मलद्वारमें हमेशा भार बना रहता है, नाभीके चारो ओर दर्द, पाखानेके पहले और पाखाना होनेके समय पेटमें मरोडका दर्द रहता है, पर पाखाना होने बाद वह बन्द हो जाता है। पाखाना होने बाद कमजोरी और पसीना, यहाँतक कि बेहोशी तक आ जाती है। एलोमें—दस्त आना सवेरे ५ बजे या रातके अन्तिम भागमें बढता है। डा० एलेन कहते है—खानेके ठीक बाद ही पाखाना होना, इसका विशेष लक्षण है।

अनजानमें दस्त—एलोमें अनजानमें ही पाखाना निकल जाता है, यहाँतक कि पेशाब करते समय या वायु निकलने के साथ साथ ही मल निकल पडता है। रोगीको पेशाब करते समय सावधान रहना पडता है, कि कहीं पाखाना न हो जाये। ओलियेण्डर और एसिड म्यूरमें—वायु निकलनेके साथ साथ मल निकल पडनेका लक्षण है। पर पाखाना होनेके पहले गडगड, कलकल आवाज पेटमें होना और मलद्वारमें भार मालूम होना सिर्फ एलोमें ही है। एसिड-म्यूरमें—पेशाब करनेके समय अनजानमें पाखाना होनेका और पेशाबके लिये वेग देनेके समय काँच निकल आनेका लक्षण भी विशेष रूपसे है, पर यदि किसीको स्वाभाविक दस्त भी अनजानमें हो जाता हो, यहाँतक कि नींदमें भी अनजानमें मल निकल जाये, तो एलो ही उसकी एकमात्र दवा है। इसके अलावा अनजानमें (नींदकी अवस्थामें भी) पाखाना—एसिड-फास और फास्फोरसमें भी है; परन्तु इनमें दस्तके साथ पेटमें किसी

तरहका दर्द नहीं रहता। एलोमे—मलद्वारकी आकुञ्चनी पेशीमें सिकुड़नेकी शक्ति बिलकुल ही नहीं रहती, और एसिड-फास और फास्फोरसमें—मलद्वार मानो खुला रहता है। अनजानमें पाखाना निकलता है। एलोमें जिस तरह पेटका दर्द, पाखाना होने बाद कुछ घट जाता है, नक्स-वोमिकामें भी वैसा ही लक्षण है, पर नक्समें—पाखाना खूब थोडा और पेटका दर्द पाखानेके समय और पाखानेके पहले भी रहता है, पर पेटमे आवाज, पेट गडगडाना प्रभृति एलोकी तरह नक्समें बिलकुल ही नहीं है। एलोमें—आम मिला दस्त ही अधिक होता है। एलोका और भी एक लक्षण है—खाने-पीनेके बाद ही अधिक दस्त आने लगना और पाखाना लगते ही रोगी एक मिनिट भी रुक नहीं सकता, रोग भोगनेके समय भूख खूब रहती है (क्रोटोन-टिग्लि देखिये)। आर्निकामे—कडा मल अनजानमे निकल जाता है (रातमे अनजानमें दस्त—आर्नि, हायोसि)।

द्रष्टव्य:—कोई कोई कहते हैं, कि अतिसारमे एलोकी निम्न-शक्तिके व्यवहारसे रोग बढ जाता है, इसीलिये, इसकी उच्च शक्ति—३०—२०० का प्रयोग करना चाहिये।

शूलका दर्द—तलपेटमें दाहिनी ओर मरोडका दर्द, गडनेकी तरह दर्द, काँच गडनेकी तरह दर्द, पाखाना होनेके पहले और समय पेटमें भयानक दर्द, पाखाना हो जाने बाद दर्द एकदम घट जाता है, पर रोगीको बहुत अधिक पसीना होता है, रोगी

कमजोर हो पड़ता है, रोग आरम्भ होनेके पहले खूब अधिक कब्जियत रहती है।

बवासीर—पाखानेके वेगके साथ अगूरके झब्बेकी तरह मसे बाहर निकल पड़ते हैं, बवासीरमें बहुत खुजली और जलन होती है, यह जलन ठण्डे पानीसे घटती है (मलद्वारकी खुजली, और जलनके कारण नींद न आना—इण्डिगो।) एलोमें रोगीको अकसर पतले दस्त आते हैं, म्यूरियेटिक-एसिडमें—अगूरके झब्बे की तरह मसे निकलते हैं, पर उसकी जलन गरम पानी या गरम सेंक देनेपर घटती है। इसमें अकड़नका दर्द बहुत अधिक रहता है, छूने या कपड़ेकी रगड़में भी तकलीफ होती है। कालिन्सोनिया में—कब्जियत अधिक रहती है। इसमें कभी खून जाता है, कभी नहीं भी जाता है।

सर-दर्द—यदि अतिसार शुरू होने पर सरका दर्द घट जाये और दस्त आना बन्द होने पर सर दर्द बढ़े,—तो एलो लाभ करता है। दर्द—सरके ऊपरसे उतर कर आँखोंपर दबाव देता है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—जो सर-दर्द गर्मीमें बढ़ता है और कोई ठण्डी चीज प्रयोग करने पर घटता है, उसमें—एलो फायदे-मन्द है। (आर्सेनिकमें मार्थेमें जलन रहती है)।

कमरका बात—जरा हिलने डोलने पर ही कमरका दर्द बढ़ता है। कूल्हेकी हड्डीके भीतर होकर (through sacrum) मानो सुई घुमाता है। एक बार कमरमें बात, एक बार सर दर्द

और बवासीरमें तकलीफ, इस तरहके बदलनेवाले लक्षण भी एलोमें है।

पाकस्थलीके रोग—तीती डकार, मिचली, वक्षोस्थि (स्टर्नम) के नीचे दबाव मालूम होना।

यकृत—यकृतका स्थान भारी और दर्द भरा रहता है। दाहिने पँजरेके नीचे दर्द। यकृतसे लेकर छाती तक सुई गडनेकी तरह दर्द, श्वासमें तकलीफ।

क्षय-कास—डा० विलियम बोरिक कहते हैं—"क्षय-कासवाले रोगीको (एलो) मुसब्बरके पत्तेका रस सेवन करानेपर बहुतसे रोगियोंको फायदा हुआ है।" यदि परीक्षा करने पर किसीको लाभ दिखाई दे तो लिखे।

एलोका संक्षिप्त विवरण—एलो वृक्षकी कितनी ही जातियाँ हैं। एलो-सोकोट्रिना (अगुरु काष्ठ— इसमें सुगन्ध रहती है) सकोत्रा द्वीपमें तथा भारत महासागरके किनारे पर बहुत पैदा होता है। एलो-इण्डिका (घीकुवार, मुसब्बर)—यह भारतमें ही पाया जाता है, पर पश्चिमोत्तर प्रान्तमें अधिक पैदा होता है। इससे चूनेकी तरहका एक तरहका रस निकलता है, जो बहुत तीता और दवाके गन्धकी तरह उसमे गन्ध रहती है। एलो—रेचक पदार्थ है। आजकल बाजारमें जो जुलाबकी पेटेण्ट गोलियाँ बिकती हैं, प्रायः उन सबमें एलो रहता है। ब्राण्डर्स पिल्में—थोडा कोलोसिन्थ, ज्यादा मात्रामें गैम्बोज, और इनका दूना

एलो रहता है। लिटिल लिवर-पिलमें—दो भाग एलो, एक भाग पोडो फाइलिन है। एलोके सेवनसे बड़े बड़े केंचुए (एसकेरिस) और सूत्र-कृमि (थ्रेड-वर्मस)—दोनों प्रकारकी ही क्रिमियाँ निकलती हैं।

चर्म-रोग—हर वर्ष जाड़ेके दिनोंमें खुजली हो जाती है। यदि यह दिखाई दे कि किसी भी दवासे रोगीको कोई फायदा नहीं होता, तो वहाँ यह सलफरकी तरह चिकित्सकको ठीक ठीक दवा चुननेमें सहायता पहुँचाता है। दबे हुए उद्भेदोंको बाहर ला देता है।

वृद्धि—(aggravation)—खाने पीने बाद, गर्म वायुमें, खड़े होने, चलने-फिरने पर, सवेरे ५ बजे और ग्रीष्म ऋतुमें।

ह्रास—(amelioration)—ठण्डे पानीसे, ठण्डी हवामें, वायु और मल निकलने पर।

सहग (complements)—सल्फर।

धातुकी दवा—कैलि-बाई, सिपि, सल्फ, एसिड-सल्फ।

क्रिया-व्याघातक—(antidote) कैम्फर, लाइको, नक्स, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल—३०—४० दिन।

शक्ति-१x—२०० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७, टिंचर—४।

एल्स्टोनिया।

(ALSTONIA)

(कुत्तेकी जातिका एक खास तरहका वृक्ष)—यह मलेरिया से उत्पन्न धीमा बोखार, रक्त-हीनता, कमजोरी, अजीर्ण, अतिसार इत्यादिकी उपयोगी महोषधि है।

रक्तामाशय और अतिसार—पेटमें मरोडके दर्दके साथ बहुत अधिक दस्त आना, भोजन समाप्त होते न होते ही पाखाना लग आता है, खाई हुई चीज बहुत दिनों तक बिना पची अवस्थामें पाकस्थलीमे पडी रहती है। तलपेटमे गरमी और उत्तेजना, आमाशयमे खून मिले दस्त, मलेरियासे उत्पन्न बिना दर्द वाला अतिसार और दूषित पानी वगैरह पीनेके कारण अतिसारमें यह बहुत फायदेमन्द है।

टाइफायड वगैरह ताकत घटा देनेवाले बोखार या कोई दूसरी कडी बीमारी भोगने बाद लोग इसे बलकारक (टानिक) ओषधिके रूपमें व्यवहार करते है। प्रसवके बाद सन्तानको दूध पिलाने या अतिसार, आमाशय इत्यादि भोगनेकी वजहसे स्वास्थ्य बिगडने और कमजोर हो जानेकी—एलस्टोनिया प्रधान दवा है। इसके बाहरी प्रयोगसे जखम आराम होता है।

क्रम (potency)—ϕ—३० शक्ति। फारमुला—४।

एल्यूमेन।

(ALUMEN)

(फिटकिरी—इसमे एल्यूमिना, सलफर और पोटास—ये तीन पदार्थ पाये जाते है)—बहुत अधिक कब्जियत, २।३।४ दिनोंतक पाखाना न तो लगता है और न इच्छा होती है, जोर देकर मल बाहर निकाल देनेकी ताकत गायब हो जाती है, मार्बल गोलीकी तरह गोल गोल मल निकलता है, इतने पर भी ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार भरा है, पाखाना हो जाने बाद मलद्वारमें खुजली और बहुत देरतक दर्द बना रहता है, खूनी बवासीर, मियादी बोखार (टायफायड ज्वरमें) खूनका स्राव होना—मलके साथ गाढा बडा थक्काके रूपमें रक्त निकलता है, मलद्वारके जखमसे बदबू आती है प्रभृति कई उपसर्गोंमे इसमे बहुत फायदा होता है।

स्वरभंग (आवाज बैठ जाना), गलेमें सर्दी लग जाना, तालुमूल (टानसिल) बढना, अन्ननली-पथका सकोचनका भाव। वृद्धोंका ब्राङ्काइटिस (वायुनलीका प्रदाह), स्तन और जरायु-ग्रीवाकी ग्रन्थियोंका कडा पड जाना, श्वेतप्रदरका स्राव पीले रंगका, पीले रंगका पुराना प्रमेहका स्राव प्रभृति कई बीमारियोंकी यह दवा है।

आगसे जलना—एल्यूमिना अध्यायमें और मेटालियु-टिकम देखिये।

वृद्धि—सर दर्दके सिवा सभी उपसर्ग सर्दीमें बढते हैं (आर्स)।

क्रम—६ से ३० शक्ति। उच्च शक्तिसे विशेष लाभ होता है।

१०।१२ ग्रेन फिटकिरी जीभ पर रखनेसे दमाका खिचाव बहुत कुछ घट जाता है। फारमुला—७।

एल्यूमिना।

(ALUMINA)

(वेमेल मिट्टीसे पहले विचूर्ण दवा तैयार होती है)—यह सदा रक्तस्राव, कब्जियत, खाँसी और कई स्त्री-रोगोंमें अधिक काममें लायी जाती है। यह दुबले, सूखे, म्लान, कण्ठमाला-धातुवाले तथा जो कोई पुरानी बीमारी बहुत दिनोंसे भोगते आ रहे हैं उनके वास्ते और जो बच्चे नकली आहार पर पाले गये हैं, उनके लिये, बहुत उपयोगी है। इसका रोगी दु खित, शोकसे कातर, उत्तेजित, चिडचिडा रहता है। डा० टैलकर कहते हैं—"रोगी रक्त या छुरी देखते ही आत्महत्या करनेकी चेष्टा करता है।" मानसिक लक्षण—सवेरे शुरू होते हैं और जितना ही दिन चढता जाता है, उतने ही प्रबल होते जाते हैं। मन हमेशा ही अशान्त रहता है—मानो उसने कुछ अनुचित काम किया है।

एल्यूमिना—मेरुमज्जाके स्नायु (spinal nerves) और जहाँ श्लैष्मिक झिल्ली सूखी रहती है, वहाँ अधिक क्रिया प्रकट करता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। समय बहुत धीरे धीरे बीतता है, १ घण्टेका समय एक दिनकी तरह मालूम होता है (कैनाबिस-इण्डिका), २। आँख बन्द कर चलनेको कहनेपर विलकुल ही चल नहीं सकता, झटके खाता है, गिर जाता है, ३। स्टार्चवाले पदार्थ, खडिया, कोयला, नकम, चाय या काफीका चूर, एसिड तथा जो चीजें सहजमें पचन नहीं होतीं, वही खाता है। आलू नहीं सहन होता (साइक्यू, तोरि), ४। नमक, शराब, मिर्च, सिरका प्रभृति खानेसे ही खाँसी आने लगती है, ५। भयानक कब्जियत, जबतक पेटमें बहुत अधिक मल नहीं इकट्ठा हो जाता, तबतक पाखाना नहीं होता, पाखाना लगता भी नहीं है। पाखानेके समय बहुत काँखना और जोर देना पडता है, मल कडा गाँठ गाँठ—उसमें आम लिपटी रहती है; ६। मलनालीकी क्रिया न होना—ढीले पाखानेके लिये भी जोर देना पडता है; ७। गर्भावस्थाकी, बूढ़ोंकी तथा शीशीमें दूध पीनेवाले बच्चोंकी कब्जियत; ८। बहुत दिनोंसे पुराना डकार आनेका रोग, शामको बढना, ६। श्वेत-प्रदरका स्राव बहुत अधिक, पैरसे होकर एँडीतक बह जाता है, १०। ऋतुस्रावके बाद शारीरिक और मानसिक भयानक कमजोरी, बोला नहीं जाता (काकुलस, कार्बो-एनि); ११। शरीरकी त्वचा सूखी, खरखरी, पसीना नहीं होता (कैल्केरियाके विपरीत); १२। शरीरके स्वाभाविक तापका घटना, कमजोरीके कारण थोडी ही उमरमें बूढ़े हो जाना।

गति-शक्ति-राहित्य—आँखसे देखे विना एक कदम भी रोगी नहीं चल सकता, अंग प्रत्यग मानो भारी रहते हैं, चलने के समय हरेक कदमपर मानो झटका खा जाता है, सीधे भावसे एक कदम भी नही चल सकता, आँखें बन्दकर, दोनो हाथ फैला स्थिर भावसे खडे रहनेको यदि कहा जाता है तो ढुलक पडता है (ये ही इस रोगके लक्षण है), ऐसा मालूम होता है, कि पैरके तलवा कोमल और फूला हुआ है, मानो पँडोमें बल नहीं है और वह सुन्न हो रही है। डा० वोनिङ्गहोसेन कहते हैं—पेल्यूमिनियम मेटालिकमसे उन्होंने इस ढगके ४।५ रोगी आरोग्य किये है।

कब्जियत और अतिसार—बेहद कब्जियत, मल पत्थर की तरह कडा, कभी कभी हफ्तोंतक न पाखाना लगता है, न इच्छा होती है। पाखानेके समय बहुत जोर लगाना पडता है, पतले दस्त होनेपर भी जोर दिये विना सहजमे नही निकलता, पाखानेकी तरह पेशाव भी इसी तरह बेग दिये विना नही होता। पाखानेके समयके अलावा दूसरे समय पेशाव नही होता। जबतक पेटमें बहुत ज्यादा परिमाणमे मल नहो इकट्ठा हो जाता, तवतक पाखाने की इच्छा या ताकत एकदम नही रहती। मल पत्थरकी तरह कडा, गाठ गाठ और आम-मिला। डा० हियुजेस कहते हैं—कब्जियत और अम्लशूलमें—ओपियमसे फायदा न होनेपर—एल्यूमिना फायदा करता है। कब्जियतमे—एनाकार्डियम, सिपिया साइलिसिया, वेरेट्रम-एल्बम, मैग्नेशिया प्रभृति लक्षण-भेद से

लाभदायक हैं। पल्यूमिना—स्तन पीनेवाले बच्चोंकी कब्जियतमें, खासकर जो बोतलसे दूध पीते हैं या दूसरी चीजें खाते हैं, उनकी कब्जियतकी यह बढ़िया दवा है।

टाइफायडमें रक्तस्राव—टाइफायड (मियादी) बोखारमें मलद्वारसे काला थक्का थक्का रक्त, बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलनेपर—पल्यूमिना लाभदायक है (पसिड नाइट्रिक अध्याय देखिये)।

पेशावकी बीमारी—पेशावके समय भी बहुत वेग देना पड़ता है। यहाँतक कि पेशावके वेगसे पाखाना लग आता है।

खाँसी—उपजिह्वा बढ़ जानेके कारण खाँसी और सवेरे आनेवाली सूखी खाँसी, बड़ी तकलीफसे थोड़ा-सा बलगम निकल कर यदि खाँसी कुछ घट जाती हो तो इससे बहुत फायदा होता है। एक तरहकी सूखी खाँसी रहती है—उसमें ऐसा मालूम होता है, कि खाँसते खाँसते कलेजा फट जायगा, खाँसीकी धमकसे २।४ बूँद पेशाब निकल जाता है (कास्टिकममें भी यह लक्षण है)। कोई उत्तेजक पदार्थ जैसे—नमक, मिर्च, शराब वगैरह खाने-पीनेपर खाँसी आती है।

स्त्री-रोग—रोगिनी बहुत कमजोर, चेहरा उतरा हुआ और रक्तहीन (anæmic), बिल्कुल ही परिश्रम नहीं कर सकती, रजःस्राव बहुत देरमें होता है, यह भी बहुत थोड़ा और खूनका रंग भी खूब लाल नहीं रहता, केवल फीके रंगका गदला-पानी

जैसा दिखाई देता है। श्वेत-प्रदरका स्राव—सफेद या पीला औ
लसदार, मानो हाथमें चिपक जाता है। वह परिमाणमें इतन
अधिक होता है कि बहता हुआ पैरकी एँडीतक आ पहुँचता
(क्लोरोसिस—हरित्पाण्डु-रोग और जरायुके बाहर निकलने
बीमारीमें यह फायदेमन्द है)।

रुचि—पल्यूमिनाके रोगीकी रुचि बड़ी ही विचित्र रहत
है। वह दीवारकी बालू, चूना, स्लेटका चूर, खड़िया, मिट्टी, भात
फेन, चावल, साफ कपड़ेका टुकड़ा इत्यादि खाता है या खाने
इच्छा करता है। चाय, काफी, खट्टी चीजें और जितनी न पचने
वाली चीजें है, उन्हें ही पसन्द करता है, आलू खानेपर रोग ब
जाता है।

शुक्रस्खलन—धातुक्षय, पाखानेके समय काँखनेके व
वीर्य निकल आना—इसी वजहसे ध्वजभगका लक्षण। वृद्धोंको य
बीमारी होनेपर और भी लाभदायक है। (एगनस अध्याय
देखिये)।

प्रमेह—ग्लीटकी अवस्थामें (पुराने सूजाकमें) अर्था
प्रमेहकी पुरानी अवस्थामें पीले रंगका स्राव निकलनेपर यह हा
ड्रैस्टिसकी तरह लाभदायक है (पल्यूमेन)।

आँखकी बीमारी—अस्पष्ट या धुँधली दृष्टि, मान
कुहरेके भीतरसे देख रहा है, रोगी समझता है, कि उसक
आँखके सामने केश या पर्दा है, इसीलिये, लगातार आँख रगड़

पडती है। सभी चीजें पीली दिखाई देती हैं। पुराना चक्षु-प्रदाह (क्रानिक काजङ्क्टिवाइटिस)। पलकोंपर छोटी छोटी फुन्सियाँ।

नाककी सर्दी—एल्यूमिना—नाककी पुरानी सर्दीमें लाभ करता है। नाकके भीतर सूखापन, नाक झाडनेपर श्लेष्माका कडा ढेला निकलता है, नाकके भीतर दर्द, मानो जखम हो गया है, नाककी डोर लाल दिखाई देती है। रोगीको किसी चीजकी न्ध नहीं मिलती।

कानकी बीमारी—कानमें गुन गुन आवाज, गरजनेकी तरह एक प्रकारकी आवाज आती है। ऐसा मालूम होता है, मानो कानके भीतर कोई ठेपी (plug) लगी हुई है। मुँह फाडनेपर कानमें चिल्क मार उठती है।

गलनलीकी बीमारी—उपजिह्वाका बढना, गलनलीका जखम इत्यादिमें निगलनेके समय गलेके भीतर फूलकर कुछ अटका हुआ है, इन लक्षणमें यह—अर्जेण्ट, नाइट्रिक-एसिड और हिपरकी तरह लाभदायक है। एल्यूमिनामें—गलनली बहुत सूखी रहती है। खानेकी कोई चीज निगलनेके समय गलेमें उपदाह होता है और वहाँसे यह समूची अन्ननलीमें मालूम होता है, एल्यूमिना प्रयोगके समय—सूखापनका भाव, कब्जियत और पाखाना तथा पेशाबका एक मात्र ही वेग, ये कई लक्षण हमेशा याद रखने चाहियें। (Alumina is the chronic to Bryonia—अर्थात जहाँ नयी बीमारीमें ब्रायोनिया व्यवहृत होता है, वहाँ पुरानी बीमारीमें

पल्यूमिनाका व्यवहार होता है)। गवैये तथा व्याख्यान देनेवालों मे प्रायः एक तरहका जखम गलेमें होता है, गलनली सूखी रहता है, वे लगातार खाँसते हैं, गला कुटकुटाता है।

चर्म-रोग—त्वचा सूखी, रुखडी, गन्दी, बहुत खुन-लाती है। जबतक खून नहीं निकलता तबतक खुजलाता रहता है। बिछावनकी गरमीसे या थोडा भी गरम रहनेपर सारे शरीरम खुजली आरम्भ हो जाती है। चर्म-रोगके साथ कब्जियत।

किसी भी चर्म रोगमे—यदि रोगीको ऐसा मालूम हो, कि उसके मुँह अथवा आँखके चारो ओर अण्डेकी लसी सूखकर लगी हुई है और दाढीमे मकडेका जाल फँसा है, तो—पल्यूमिना ही उसकी एकमात्र दवा है। इसमे जाडेके दिनोंमे, शरीरमे एक तरहकी दादकी तरहके उद्भेद निकलते हैं, वे बहुत खुजलाते हैं।

आगसे जलना—यदि शरीरका कोई स्थान आग या गरम तेलसे जल जाये तो फिटकिरी पीसकर लगा देनेसे लाभ होता है (कैन्थेरिस अध्याय)।

वृद्धि—(aggravation)—ठण्डी हवामें, जाडेके दिनोंमें, आलू खाने पर, एक दिनके अन्तरसे, अमावस्या और पूर्णिमाको (साइलिसियाकी तरह)।

ह्रास—(amelioration)—गरमीके दिनोंमें, गरम पानीसे।

सदृश (complements)—ब्रायोनिया, फेरम। जिस रोग की नयी अवस्थामें ब्रायोनियाका प्रयोग होता है, उसी रोगकी

पुरानी अवस्थामें पल्यूमिनाका व्यवहार होता है। वृद्धोंकी बीमारी में यह बैराइटा और कोनायमके सदृश है।

बादकी दवा (follows well) ब्रायो, आर्जण्ट-मेट।

क्रियानाशक (antidote) ब्रायो, कैम्फर, कैमो, इपि।

क्रियाका स्थितिकाल—४०—६० दिन (क्रिया धीरे धीरे प्रकट होती है—इसलिये दवा जल्द न बदल देनी चाहिये)।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—७।

एम्ब्रा ग्रिसिया।

(AMBRA GRISEA)

(तिमि मछलीकी आँत और विष्ठाके भीतरसे एक तरहका पदार्थ लेकर तैयार होता है)—जो सब बालिकाएं स्नायु-प्रधान और क्षीण तथा हिस्टीरिया रोगसे ग्रस्त रहती हैं और इसी वजहसे नाना प्रकारकी स्नायविक दुर्बलताके कारण उनके शरीरमें ताकत नहीं भर पाती, काम-काजकी वजहसे जिन्हें भरपूर नींद नहीं आती, उनके लिये तथा वृद्ध और बच्चोंके लिये यह दवा विशेष लाभदायक है। नीचे कई रोगोंके इसके लक्षण लिखे जाते हैं —

१। श्वेतप्रदर—गाढ़ा, श्लेष्माकी तरह, सफेदी लिये नीला, रातमें स्राव होता है।

२। स्त्रियोंको दो ऋतुओंके बीचके समयमें कुछ अधिक चलन या पाखाना कडा होनेके समय जोर देनेपर रक्तस्राव होता है।

३। हूपिङ्ग खाँसी (कुकुर खाँसी)—खाँसनेके बाद "कौं" शब्द नहीं होता (कौं शब्द रहनेपर—सिना), बहुत ही कष्टदायक खाँसी, इसके साथ ही डकार आना, खाँसीके साथ पँजरेमें दर्द, स्वरभंग, उपजिह्वाका बढना, मुँहमें बदबू, वृद्ध और कमजोर बच्चों की सर्दी, दमा-खाँसी। स्त्री-संसर्गकी चेष्टा करने पर हँफनीका बढ जाना—इन सब लक्षणोंकी—एम्ब्रा ग्रिसिया एक बढिया दवा है।

४। दमाके खिंचावकी तरह खिंचावके साथ खाँसी और स्नायविक आक्षेपिक खाँसी—खाँसीके साथ ही डकार, गलेमें बेतरह सुरसुरी, कुटकुटी होकर आक्षेपिक खाँसी, जोरसे बोलने या पढने पर खाँसी बढती है, गला जकड़ जाता है, खाँसनेके समय मानो कलेजा चिपक जाता है, इससे बहुत तकलीफ होती है। कुत्तेकी आवाज (barking) या ढोलकी खोखली (hollow) आवाजकी तरह एक तरहकी ढपढप आवाजवाली खाँसीमें भी एम्ब्रा ग्रिसिया लाभ करता है। (बार्बेरकम)। इसकी खाँसी सबेरे सोकर उठनेपर बढती है, छातीमें साँय साँय आवाज होती है।

कलेजा धडकना—एञ्जिना पेक्टोरिस (हृत्-शूल) या कोई दूसरी वक्षस्थलकी बीमारीमें, कलेजेमें बहुत ज्यादा धडकन होनेके साथही साथ, छातीमें बहुत दबाव मालूम होना, मानो बँधा हुआ है, ये लक्षण रहने पर—एम्ब्रा ग्रिसिया लाभ करता है।

वृद्धि—गर्म चीज पीनेपर, गर्म घरमें, सवेरे, बहुत आदमी इकट्ठे हो जानेपर, गाने-बजानेसे ।

ह्रास—भोजनके बाद, ठण्डी हवामें, ठण्डे खान-पानसे, धीरे धीरे चलनेपर, रोगवाली जगह दबाकर सोनेपर ।

बादकी दवा (follows well)—लाइको, पल्स, सिपि, सल्फ ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, काफि, नक्स, पल्स, स्टैफि ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन ।

क्रम ६—३० शक्ति । फारमुला—विचूर्ण—७, टिंचर—४ ।

एमोनियम वेञ्जोयिकम ।

(AMMONIUM BENZOICUM)

(बेनजोयेट आफ एमोनिया) यह गठिया वात, शोथ, उदरी, पिलई (कामला) और पेशाबकी बीमारीमें लाभदायक है ।

वात—गठिया वात, जोड़ सब फूलकर लाल हो जाते हैं, तेज दर्द, इसके अलावा अँगूठेके वातमें और दूसरी दूसरी अँगुलियोंके सन्धि-वातमें भी यह लाभदायक है ।

शोथ और उदरी—जिन मनुष्योंके पेशाबमें अलबुमन (albumen) रहता है । पेशाब परिमाणमें बहुत थोड़ा होता है, पेशाब रख छोड़नेपर उसमें धुँएकी तरह पदार्थ दिखाई दे

है, बहुत कडवी गन्ध रहती है, कभी कभी पेशाव लाल होता है तथा लाल रगको ही गाढी तली जमती है, उनकी बीमारीमें और शोथमें यह ज्यादा फायदा करता है।

पाण्डुरोग—(कामला)—पित्तकी क्रिया रुक जानेकी वजहसे कामला, इसमे शरीर फूल जानेपर और उसके साथ ही पेशावमें कटु गन्ध रहनेपर यह ज्यादा फायदा करता है। बच्चोंके यकृत-रोगकी अन्तिम अवस्थामे जब यकृत सिकुडकर शोथ हो जाता है तो बीमारी बिगड़ जाती है। ऐसे मौकेपर यह दवा धीरज के साथ व्यवहार करनेपर फायदा होनेकी सम्भावना रहती है।

सदृश (complements)—एपिस, आर्निका, ओपियम, टेरिबिन्थ, कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब।

क्रम (potency)—३x—६x विचूर्ण। फारमुला—७।

एमोनियम कार्बोनिकम।

(AMMONIUM CARBONICUM)

(स्मेलिङ्ग साल्ट)। प्राय बराबरकी मात्रामें चूना और नौसादर मिला लेनेपर एमोन-कार्ब तैयार होता है। यह किसी शीशीमें कसा काग लगाकर रखना पडता है। सरमें भार या बेहोशीके समय इसको सूँघनेपर बहुत कुछ फायदा होता है (एमिल-नाइट्रेट)। रक्तस्रावी प्रकृति (जिसे बहुत ज्यादा खून निकलता हो),

देखनेमें खासा मोटा-ताजा, पेट बढा हुआ पर कमजोर, जो ज्यादा मिहनत नहीं कर सकते, आलसियोंकी तरह दिन काटते हैं, यह उनके लिये उपयोगी है। जो स्त्रियाँ हमेशा खुशबूदार एमोनिया सूँघा करती है, उनके लिये और बलगमी प्रकृतिकी स्त्रियोंके लिये यह फायदेमन्द है।

एमोन-कार्ब—यह खूनपर अपनी क्रिया प्रकटकर खूनको पतला बना देता है, लाल रक्तके कण नष्ट कर देता है, खून सडने लगता है, नतीजा यह होता है, कि खून निकलना आरम्भ होता है, रोगी कमजोर हो पडता है। गेङ्गलियोनियक-नर्वस-सिस्टम (पिङ्गल नाडी-मण्डलकी नाडियाँ) के बीचसे कुछ समयके लिये हृत्पिण्ड और धमनीकी क्रिया बढा देता है। इससे हृत्पिण्डकी चाल तेज हो जाती है, शरीरके अन्यान्य यन्त्रोंकी भी क्रिया बढती है। पाकस्थली, आँत, फेफडेको ढकनेवाला परदा (mucus linings) मे खूनकी अधिकता और उसमें प्रदाह पैदा हो जाता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। बच्चा नहाना नहीं चाहता (एण्टिम-क्रूड, सल्फरकी तरह); २। सोनेपर साँस रुक जानेकी तरह हो जाना और झपटकर उठ बैठना (ग्रिण्डेलिया, लैकेसिसकी तरह); ३। सवेरे हाथ-मुँह धोनेके समय नाकसे खून गिरना (आर्निका, मैग-कार्ब की तरह); ४। रातमें नाक बन्द हो जाना और बहुत दिनोंतक नाकसे पानीकी तरह सर्दी टपकना ; ५। ब्रान्कारटिस (वायुनली-

प्रदाह) और ब्राङ्को-निमोनिया (वायु-पथ-फुसफुस प्रदाह); ६। ऋतुस्राव आरम्भ होते ही हैजाकी तरह लक्षण प्रकट हो जाते हैं (वोविस्टा, वेरेट्रमकी तरह), ७। रातके ३।४ वजेसे गलेमें सुर-सुरी होकर खाँसी (केलि-कार्वकी तरह), ८। सावातिक आरक्त ज्वर (लाल वोखार) या उसकी तरह शरीरका लाल हो जाना (एलान्थसकी तरह), ९। एम्फाइसिमा (नफका) और युरिमिया (मूत्र-विकार), १०। सीढी दो एक धाप चढनेसे ही या थोडी-सी भी मिहनत करनेसे ही कलेजा धडकने लगना और हाँफने लगना, ११। ऋतु जल्दी जल्दी होता है और स्राव भी ज्यादा परिमाणमें होता है, इसके साथ ही शूलका दर्द।

खाँसी—पुराना ब्राङ्काइटिस और पुरानी खाँसी—छातीमें सर्दी भर जाती है, गला साँय साँय कर रहा है, लगातार खाँसी भी आती है, पर कुछ भी निकलता नहीं है, यदि कुछ निकलता भी है, तो वडे कष्टसे, खाँसी प्राय रातके ३।४ वजनेके समय वढती है, गलेमें सुरसुरी होती है, खाँसते खाँसते दम अटक जाता है, कभी कभी मुँहसे खून भी निकलता है। यक्ष्माकी खाँसीकी पहली अवस्थामें—ऊपर लिखे लक्षणके साथ मज्जागत ज्वर (Hectic fever), खून निकलना और उसके साथ ही रोगीमें वहुत कमजोरी दिखाई देनेपर इसमें वहुत फायदा होता है। ब्राङ्को निमोनियामें—एण्टिम और हिपरसे फायदा न होनेपर इससे फायदा होगा।

फेफड़ेकी बीमारी—ऊपर बताये ढगकी खाँसी और मज्जागत ज्वरकी तरह ज्वर। बहुत कमजोरीके साथ हृत्पिण्ड में खून इकट्ठा होनेकी तैयारी। इसी वजहसे जोर जोरसे साँस फूलना और कलेजेमें धड़कन रहनेपर इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है, इसके अलावा छातीमें भार मालूम होता है और दर्द रहता है और छातीमें गोलेकी तरहका एक पदार्थ धक्का देकर ऊपर चढता है। एमोन-कार्बमें—रातमें रोगीकी नाक बन्द हो जाती है, इसी वजहसे रोगी मुँहसे साँस लेता है, या सोया सोया साँस रुककर उठ बैठता है। सैम्बुकस, लाइको, नक्स और स्पिक्टा इत्यादि दवाओंको भी यहाँ याद करे।

हैजा—हैजाकी आखिरी अवस्थामें हृत्पिण्डमें खून इकट्ठा होकर (embolism), हृत्पिण्डकी क्रिया लोप होकर कितने ही रोगी मर जाते हैं। ऐसी ही जगह पर कितनी ही बार एमोन-कार्ब से बहुत कुछ फायदा हो सकता है। इसके अलावा मूत्र-विकार (युरिमिया) में—जब रोगी बेहोश रहता है, गला घरघर किया करता है, हाथ बढाकर मानो कुछ पकड़ना चाहता है, इसके साथ ही ओठ और शरीर नीले हो जाते हैं, उस स्थान पर भी—एमोन-कार्बके प्रयोगसे लाभ हो सकता है। यह अवस्था हैजाकी बहुत भयानक अवस्था है।

रज-स्राव—ऋतु होनेके साथ ही साथ यदि किसीको पाखाना पेशाब आदि प्रायः हैजेके लक्षण प्रकट हो जाते हैं—

न निकलें और लेपकी तरह हो जायें, शरीरका रग लाल दिखाई दे तो इससे फायदा होता।

पेशाव—हमेशा पेशावकी इच्छा वनी रहना, रातमें अनजानमें पेशाव। पेशाव—सफेद, खून-मिला, परिमाणमें अधिक, गदला, वदवूदार, तलीमे वालूकी तरह पदार्थ, पेशाव वन्द हो जानेके कारण विकार (युरिमिया)।

सौरी-घरके वच्चेकी वीमारी—सौरी-घरके दरवाजे और खिडकियाँ वन्द रहनेकी वजहसे जच्चा और वच्चा, दोनोको ही कोयलेके धुएँसे पैदा हुई कार्वन गेस उत्पन्न होकर, उनकी साँसमे जाकर वेहोश हो जायें तो एमोन-कार्वके सेवनसे वहुत फायदा होता है (प्रसवके वाद ही वच्चा वेहोश—एकोनाइट—१८)।

ववासीर—मल कडा, गांठ गाठ, तकलीफसे निकलता है। खूनी ववासीर—ऋतुके समय वढना, मलद्वारमें खुजलाहट होती है, पाखानेके समय मसा वाहर निकल पडता है, पाखानेके वाद वहुत तकलीफ। (Flatulent Hernia)।

स्वप्न—भूत, प्रेत, और मरे मनुष्य सपनेमें देखना, नींदमे दम घुटनेका भार होकर जाग उठना।

ऊपर लिखी वीमारियोंके अलावा—एमोन-कार्व, सडा वदवूदार गलेका जखम, पैरोटाइटिस (गल-सूजा), साँसके साथ गलेमें घर घर आवाज (ओपियम), मस्तिष्कमें पक्षाघात पैदा हो जाना, हृत्पिण्डका वढना, कलेजेमें धडकन, क्रानिक ब्राङ्का-

इटिस (पुराना वायुनली प्रदाह), छोटी छोटी फुन्सियोंकी तरह उद्भेद (Miliary rash)—इसमें शरीरका रंग लाल दिखाई देना इत्यादि रोगोंका यह महौषध है।

वृद्धि—ठण्डी हवामें, बर्सातके दिनोंमें, तर पुल्टीससे, नहानेपर ऋतुके समय, सवेरे ३।४ बजेके बीचमें।

ह्रास—रोगवाली और दर्दवाली करवट सोनेपर, सूखी हवामें, गरमीकी ऋतुमें।

बादकी दवा—(follows well) बेल, ब्रायो, लाइको, पल्स, फास, रस, सल्फ।

क्रिया-व्याघातक (inimical)—लेकेसिस।

क्रिया-नाशक—(antidote)—आर्निका, हिपर, कैम्फर।

क्रियाका स्थिति-काल—४० दिन। क्रम—६-२०० शक्ति।

फारमुला—टिंचर—१-५, विचूर्ण—७।

एमोनियम कास्टिकम।

(AMMONIUM CAUSTICUM)

(एकोया आफ एमोनिया)—इसका एक प्रधान लक्षण है—नाकमें जलन-भरा, खाल उधेड़नेवाला पतला स्राव बहता है। वक्षोस्थि (sternum—वक्षके बीचकी हड्डी) के पीछे जलन और दर्द रहता है।

साँसके साथ हो या खाँसकर हो, इसके द्वारा श्लैष्मिक झिल्लीमे उपदाह होता है, इससे झिल्लियाँ फूलती हैं, जखम हो जाता है।

श्वासनली-मुखकी अकड़न—बच्चोंको ही ज्यादातर यह बीमारी होती है। एकाएक इस बीमारीका हमला हो जाता है और कई सेकेण्डसे लेकर २।१ मिनिट तक रहती है, बच्चा कुछ देरके लिये अच्छा रहता है, फिर बीमारीका दौरा होता है, इसी तरह बार बार दौरा हुआ करता है। बीमारीका दौरा होनेके समय गलेमें एक तरहकी सो सो (whistling, crowing) आवाज हुआ करती है, श्वासनली रुक जानेकी तरह हो जाता है या थोडी देरके लिये श्वास-प्रश्वास एकदम वन्द हो जाता है, बच्चा घबडाने लगता है। इस रोगमे ब्रोमियम, स्पञ्जिया, कूप्रम, मस्कस, इपिकाक, सैम्बुकस, लैकेसिसकी तरह—एमोन कास्टिकम भी एक प्रधान दवा है। इसमे खूब जोरसे साँस खींचने और छातीके भीतर अन्नवहानलीमे दर्द मालूम होता है।

एमोन कास्टिकम—स्वरभग (Aphonia), गलकोष और स्वरयन्त्रका प्रदाह, इसके साथ ही बहुत कमजोरी, गलेमे जलन, बहुत अधिक एँठनका दर्द, उपजिह्वामे बलगम लिपटा रहना इत्यादि रोगोंमे यह सुन्दर काम करता है।

मूर्च्छा, हृत्पिण्डका सुस्त पड जाना, छातीमें खूनका थक्का जमकर खून अटकना (Thrombosis), रक्तस्राव, कन्धेकी पेशीका

धात, धाड्डाइट्सिमें बहुत अधिक सर्दी, निकलना, साँप काटना वगैरहमे यह लाभदायक है।

मल—बार बार वेग, मलमे केवल रक्त, काँखना।

क्रम—३ शक्ति। फारमुला—५ प।

एमोनियम म्यूरियेटिकम।

(AMMONIUM MURIATICUM)

(नासादर)—यह ऐसे आदमियोंको फायदा करता है, जिनके हाथ-पैर दुबले पतले हों, पर शरीर मोटा ताजा हो। हमेशा सर्दी खाँसी, घोखार, कब्जियत इत्यादि बीमारियोंमे ही इसका व्यवहार होता है। इसमें माथा और वक्तकी बीमारियाँ—सवेरे, पेटकी बीमारी तीसरे पहर और शाखा अग (हाथ-पैर) का दर्द तथा गर्मि और ज्वरके लक्षण—सध्या समय बढते हैं।

एमोन-म्यूरके रोगीको अकसर यकृतका पुराना रक्तसञ्चय Lever congestion) रहता है, इससे कब्जियत रहती है, पेट गड़गड़ाया करता है, मलद्वारसे हवा छूटती है।

सर्दी-खाँसी—नाकसे पानीकी तरह सर्दीका स्राव होता है, इसमें ओठकी खाल उधड़ जाती है (एलियम-सिपामें यह लक्षण है), रातमें प्राय दोनों ही नाकके छेद सट जाते हैं या बन्द हो जाते हैं, इसके अलावा कभी कभी दिनमें भी एक नाक और रातमें

दोनो नाकें बन्द हो जाती हैं, इससे रोगीकी छातीमे बहुत जलन और भार मालूम होता है और ब्राङ्को निमोनिया और पुरानी सर्दी खाँसीकी बीमारियोंमे, छातीके ऊपरी भागमे और दोनों कन्धोंके बीचमे ठण्डक मालूम होती है। खाँसीकी बीमारीमें—रोगी बहुत खाँसता है, गलेका स्वर बन्द हो जाता है, गलेके भीतर जलन होती है और सुरसुरी पैदा हो जाती है तथा अकडन जैसा दर्द होता है। खाँसी दिनमें ढीली और रातमे सूखी रहती है। यमोन म्यूरमे—सर्दी साधारणत ढीली और घर घर करनेवाली, बहुत ज्यादा परिमाणमे गोंदकी तरह लसदार बलगम निकलता है। दाहिनी करवट और चित्त सोनेसे खाँसी बढ़ती है। छातीमे इस तरहका दबाव मालूम होता है मानो खाया पदार्थ अडा हुआ है।

कब्जियत—दुरारोग्य कब्जियत, मल इतना कडा कि टुकडे टुकडे होकर बाहर निकलता है, पेशाब करनेके समय भी बहुत जोर देना पडता है, पेटमे वायु खूब इकट्ठा होता है, पेट गडगड़ किया करता है और वायु निकलता है, मल कभी कभी आम मिला होता है (कास्टिकम—मलके चारो ओर चर्बीकी तरह आम लिपटी रहती है)।

ऋतुस्राव—ऋतुस्राव दिनमें बिलकुल ही नहीं रहता ; पर रातमें बहुत ज्यादा स्राव होता है। क्रियोजोट—जब रोगिनी सोयी रहती है, उस समय रज:स्राव होता है ; पर उठ बैठने या घूमने पर स्राव बन्द हो जाता है। लिलियममें—सिर्फ चलने,

फिरने घूमनेपर ही यह स्राव बढ़ता है। मैग्नेशिया-कार्बमे—चलता-फिरना आरम्भ करने पर स्राव बन्द हो जाता है, पर रात में सोनेपर स्राव बढ़ता है। एमोन-म्यूरमे—बहुत ज्यादा परिमाणमे और बहुत जल्दा जल्दी रज:स्राव होता है, रातमे स्राव बढ़ता है, ऋतुके समय पेट फूला रहता है और रातमे खून आता है। फेकूस—स्राव सोने पर बन्द हो जाता है, पर बैठने या घूमने फिरने पर फिर होने लगता है। इसके साथ ही कुछ न कुछ दोष कलेजेमे भी अवश्य रहता है।

श्वेत-प्रदर—बहुत ज्यादा परिमाणमे होता है, अण्डेके सफेद अंशकी तरह गाढ़ा, जमा और सफेद (एल्यूमिना, बोरैक्स, कैलि-फास), स्राव निकलनेके पहले नाभीकी जगह पर दर्द होता है, इसमे हरेक बार पेशाब करने बाद श्लेष्माकी तरह स्राव होता है, उस समय किसी तरहका दर्द नहीं होता।

बवासीर—मलद्वारमे जलमकी तरह दर्द, डंक मारने की तरह दर्द और जलन—पाखाना होने बाद बहुत देरतक रहता है (इस्कयु, सल्फर, रैटानहिया)।

सविराम-ज्वर—एक सप्ताहका नागा देकर, एक दिन जाड़ा देकर बोखार आये और पसीना होकर छूटे—एमोन-म्यूर लाभदायक है। शीतावस्थामें बहुत जाड़ा लगता है, शरीर का कपड़ा नहीं उतार सकना, आध घण्टाका अन्तर देकर पर्याय-क्रमसे जाड़ा और ताप पैदा होता है, कमरमें दर्द रहता है।

डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—यह दवा किसी भी नयी हालतमें और दर्द घटानेके लिये कभी व्यवहार न करनी चाहिये। जब गांठमें खडियाके चूरकी तरह एक तरहका सफेद पदार्थ (con cretion of urate of soda) जमने लगे, रोग धातुगत हो पडे, रोगवाली जगह टेढी होकर विकृत अवस्थामें जा पहुँचे, तो वही इसके व्यवहारका ठीक ठीक वक्त है।

स्कन्ध-सन्धिमें दर्द—कलेजेके चारों ओर मानो कसकर बाँधा हुआ है, शरीर मानो एक भारी बोझा हो रहा है, चलनेके समय पैर ठीक ठिकाने नहीं पडते, चेहरेका पक्षाघात, जरा भी ठण्डी हवा लगते ही—सर्दी लग जाना, सवेरे छींक, इसके साथ ही आँख नाकसे लगातार पानी गिरना, खाँसीमें हरे रंगका बलगम निकलना इत्यादि लक्षण और रोगमें इसका व्यवहार होता है।

क्रम—3x विचूर्ण। फारमुला—७।

एमोनियम पिक्रेटम।

(AMMONIUM PICRATUM)

(पिकरेटम आफ एमोनिया)—पुराना बोखार, मैलेरिया, हूप-खाँसी और कभी कभी पैदा होनेवाला सर-दर्द इत्यादि रोगोंमें यह ज्यादा फायदा करता है, परीक्षाकी जरूरत है।

सर-दर्द—प्राय २१४ दिन बाद कष्टदायक सिर-दर्द पैदा होकर रोगीको बहुत तकलीफ देता है। औरतोंको ऋतु (महीना)

होनेके पहले और बाद बहुत कष्टदायक सर-दर्द । इसके अलावा—Neurasthenia—जो शारीरिक और मानसिक परिश्रमकर बहुत कमजोर हो पड़े हैं, मस्तिष्क बहुत कमजोर, हाथ-पैर काँपते हैं, ज़रा परिश्रम करनेसे ही सर-दर्द होता है, नींद एकदम नहीं आती, कभी बहुत ज्यादा नींद आती है, पर उससे मनमें फुर्ती नहीं आती, शरीर धीरे धीरे निस्तेज हुआ जाता है, यह उनके लिये फायदेमन्द है। आक्सिपिटेल प्रदेशमें अर्थात् गर्दनके दाहिनी तरफके दर्दकी यह महौषधि है। यह दर्द कभी कभी कान और आँखोंतक चला जाता है।

सविराम ज्वर—मज्जागत ज्वर, ज्वर किसी तरह नहीं छोड़ता, यह एक तरहका मैलेरियाकी श्रेणीका रहता है, कितने ही का कहना है—एमोन-पिक्रेटम इसमें लाभ करता है।

क्रम—३x—६x विचूर्ण।

एमिलेनम नाइट्रोसम ।

(AMYLENUM NITROSUM)

(एमिल, अल्कोहल और नाइट्रिक एसिड—रासायनिक प्रक्रिया से तैयार होता है),—यह बहुत थोड़ी मात्रामें ही प्रसारक-सकोचक स्नायु (vasomotor nerves) का पक्षाघात पैदा करता है और केशिका (capillary) और धमनी (artery) समूहोंको फैलाता

और शिथिल बनाता है। इससे शरीरमें उद्वेग, आँख-मुँह लाल, हृत्पिण्डकी क्रिया गडबड हो जाती है। इन्फ्लुएन्जाके बाद और किसी बोखारमे बहुत ज्यादा परिमाणमें पसीना और हिमांग (शीत आ जाना) होनेपर यह लाभ करता है।

यह सूँघकर या खाकर, जिस तरह भी भीतर जाये, बहुत जल्द क्रिया होती है—यहाँतक कि आध मिनिटमे ही हो जाती है; पर इसकी क्रिया जितनी जल्दी होती है, उतनी ही जल्दी नष्ट भी हो जाती है। इसीलिये, होमियोपैथीमें इसका प्रयोग करनेपर, खूब जल्दी जल्दी प्रयोग करना उचित है। एमिल नाइट्रेटको बहुत सावधानीसे रखना पडता है, कारण यह है, कि थोडी भी सर्दी या गरमीसे इसके गुण नष्ट हो जाते हैं और यह कपूरकी तरह उड जाता है।

मृगी-रोग—इस रोगमे जब रोगीको बेहोशीके साथ खींचन होती है, उसमें इसका—φ—५।७ बूँद, रूमालमें डालकर या नाकके सामने शीशी रखनेपर खींचन घट जाती है। असली मृगीमें फिट होनेके पहले—औरा (शरीरमे एक तरहकी सुरसुरी) मालूम होती है, अतएव, रोगी ठीक समयपर अगर बार बार एमिल नाइट्रेट सूघे, तो सम्भवत रोगके आक्रमणसे बच सकता है। (एब्सिन्थियम देखिये)। एञ्जिना-पेक्टोरिस (हृत्शूलका दर्द) और सर्दी गर्मी प्रभृति बीमारियोंमे भी इस तरह एमिल-नाइट्रेट सूँघनेसे लाभ होता है।

हिचकी—तेज हिचकी, यदि किसी तरह न दबे तो इसे सुँघाना चाहिये (नक्स-वोमिका देखिये)।

सर-दर्द—एक तरहका स्नायविक ढगका स्नायशूलका सर-दर्द (Neuralgic headache), यह एकाएक पैदा हो जाता है, रोगीका आँख-मुँह लाल हो जाता है, श्वासमे कष्ट होता है, श्वास-प्रश्वासके लिये मुँह फाडा करता है। और भी एक तरहका सर-दर्द होता है, वह सवेरे ६ बजेसे आरम्भ होकर दो पहर तक बहुत बढ जाता है और शामसे घटने लगता है, इसमें भी—एमिल-नाइट्रेट फायदा करता है। इसको सूँघनेसे अधकपालीका दर्द घटता है।

स्त्री-रोग—जहाँ ऐसा दिखाई दे कि रजोधर्म बहुत देरसे होता है, ऋतु-स्राव आरम्भ होकर—एकाध दिन ही ठहरता है या महीना होना एकदम बन्द अथवा महीना होना बन्द होनेकी उमरमे ऋतु होना बन्द होकर सर-दर्द, माथेमे टपक, शरीरका ऊपरी हिस्सा और आँख-मुँह लाल रगके हो उठे, हमेशा आगकी तरह गरमी अनुभव हो, चेहरे तथा गर्दनमे पसीना होता हो, प्रभृति कितने ही बुरे लक्षण प्रकट हों, वहाँ सबके पहले इसकी परीक्षा करनी चाहिये। प्रसवके बाद धड़कन, खींचन, इसके साथ ही बहुत ज्यादा रक्तस्राव होनेपर इसे सूँघनेसे लाभ होता है।

धनुष्टंकार—यह बहुत ही सांघातिक रोग है। इसमें अकसर रोगीकी जान जाती है। इस रोगमें जब खूब जोरोंका

और खींचनका दर्द बार बार जल्दी जल्दी हो, एक बारका दौरा खतम होते न होते फिर बेहोशी आ जाये, रोगी धनुषकी तरह पीछेकी ओर टेढा पड जाये, खाना-पीना बन्द हो जाये, उस समय इसकी भीतरी—३x शक्ति सेवन करना और बार बार सूँघनेसे फायदा हो सकता है।

जलन—शरीरमे आगमे जल जानेकी तरह जलन होती है। एक मिनिटतक भी शरीरपर कपडा नहीं रख सकता, जाडेके दिनोंमे भी शरीरका कपडा फेंककर दरवाजे खिडकियाँ खोल रखता है, अतएव, जहाँ—सलफर, सिकेलि, नैट्रम-सल्फ, कैप्सिकम, कैन्थर प्रभृति दवाएँ सेवन करनेपर भी जलन नहीं दूर होती, वहीं इसकी परीक्षा करनी उचित है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमे बहुत धडकन, कलेजेमें मानो कुछ उछलता कूदता है, बायीं ओरके स्तनके स्थानपर हाथ रखकर देखनेसे स्पष्ट मालूम होता है, कि इसके साथ ही कैरोटिडका पलसेशन अर्थात् कानके नीचेकी धमनी और ग्रन्थिमे टपक होती है। इसके अलावा हृत्पिण्डमे बहुत भार मालूम होता है, हृत्पिण्डको मानो कोई खींच रहा है, तेजीसे कलेजा धडकना, हृत्पिण्डके चारों ओर और हृत्पिण्डमें हमेशा ही तकलीफ अनुभव होना प्रभृति लक्षणोंमे भी—एमिल नाइट्रेट लाभ करता है। हृदयन्त्रकी वृद्धि (Hypertrophy of the heart) और हृत्पिण्डकी महाधमनीके अर्द्ध चन्द्राकार कपाट (aortic valve) की बीमारीमें भी इससे सामयिक लाभ होता है।

सदृश—(complement) ग्लोनोयिन, लैकेसिस, कैकूस ।

प्रतिविष—(antidote) कैक्टस, स्ट्रिकनिन, आर्गोटिन ।

क्रम—भीतरी सेवनके लिये—३ री शक्ति । सूँघनेके लिये—ϕ, मूल औषध ५।६ बूँद रूमालमें डालकर सूँघना चाहिये ।

फारमुला—६-५ ।

एनाकार्डियम ओरियेण्टेलि ।

(ANACARDIUM ORIENTALE)

(भेलावा, धोबी इससे कपडोंपर चिन्ह बनाते हैं)—अम्लशूल, अजीर्ण, कब्जियत, श्लीपद (फीलपाया), कोढ इत्यादिमें इसका व्यवहार होता है । शरीरके किसी स्थानमें मानो कुछ गडा हुआ है (plug-like pain) इस तरहका दर्द और स्मरण-शक्तिका घटना—ये दो इसके—विशेष लक्षण हैं । स्नायु-प्रधान और हिस्टीरियावाली स्त्रियाँ और वृद्ध, चित्तोन्माद और विषयी व्यक्तियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है ।

चरित्रगत लक्षण'—

१। बहुत अधिक मानसिक चिन्ताकी वजहसे मस्तिष्ककी कोई बीमारी, एकाएक स्मरण-शक्तिका गायब हो जाना, हरेक विषयको यही समझता है, कि यह सपना है, सभी कामोंमें भूल करता है, इसी वजहसे सब कामोंके अयोग्य रहता है ; २। लगा-

तार शाप देने और कसम खानेकी इच्छा , ३। अपनेको तथा सभी दूसरोंपर विश्वास नहीं करता , ४। सोचता है, कि उसकी दो इच्छाएँ हैं—एक काम करने कहती है और दूसरी मना करती है। ५। अपनेको भूत-भ्रत समझता है , ६। बहुत हलके विषयको भारी और भारी विषयको बिलकुल तुच्छ समझकर हँसता है , ७। खूब जल्दी जल्दी खाता-पीता है , ८। खाने-पीनेके समय मानो गला रुक जाता है, इससे दम घुटनेकी तरह हो जाता है , ९। भयानक कब्जियत , १०। हाथ तथा हाथकी तलहत्थीपर मसे।

एनाकार्डियमके ऐसे कितने ही रोगी रहते हैं, जो जहाँ ही जाते हैं—वहीं एक तरहकी मैल या विष्ठाकी गन्ध आती है , अपने कपडे, शरीर, जो कुछ सूँघता है, उसमें ही मैल या चिडियोंकी विष्ठाकी गन्ध आती है। चलनेके समय सोचता है, मानो कोई पीछे पीछे आ रहा है।

अम्लशूलका दर्द—पेटमें दर्द, यदि पेट खाली रहता है, तो क्रमश: बढता है और कुछ खानेपर घट जाता है और थोडी ही देर बाद फिर बढता है, ऐसा होनेपर—एनाकार्डियम उपयोगी होता है , पर यही दर्द अगर भोजनके २।३ घण्टे बाद अर्थात् पाचन-क्रियाके समय बढ जानेपर—नक्स-वोमिका , यदि ठीक खाने बाद ही दर्द बढ जाये, तो—एबिस-नाइग्रा , ये तीन दवाएँ लक्षण-भेदसे अम्लशूलकी बीमारीमें फायदा करती हैं। कोलोसिन्थ—पेटमें एक तरहका दर्द होता है (मरोडके दर्दकी तरह), वह थोडा

भी खाने-पीनेसे बढ़ता है और पट सोने या दबानेपर घटता है। हैनिमैन कहते हैं—एनाकार्डियमके शूलका दर्द भोजनके दो घण्टे बाद आरम्भ होता है (कोलोसिन्थ अध्याय अच्छी तरह पढ़े)। हाइड्रोमियोनिक एसिड—पेटमें एक तरहका शूलका भयकर दर्द होता है, वह पेट खाली रहनेपर ही बढता है। एसिड-आक्जेलिक—नाभीके स्थानमें और ऊपरी अगमें दर्द, भोजनके २ घण्टे बाद आरम्भ होता है, पेट फूलता है, पेटमे वायु इकट्ठा होता है, यकृतके स्थानपर मानो सुई गडती है।

कब्जियत—कब्जियतमें पाखाना लगता है, पर पाखाना फिरनेकी चेष्टा करते ही वह वेग गायब हो जाता है। इसके साथ ही अगर ऐसा मालूम हो, कि मानो मलद्वारमें कोई चीज अडी हुई है (plug), तो—एनाकार्डियमसे ही फायदा होगा।

नक्स-वोमिकामें—पाखानेके ऊपर लिखे कई लक्षण रहनेपर भी मलद्वारमें मानो कोई चीज अडी हुई है (plug), यह भाव नहीं रहता। यदि कोई बीमारी या तकलीफ खाते ही छूट जाये और ऐसा मालूम हो कि शरीरके किसी द्वारमें कुछ अडा हुआ है (plug) तो—एनाकार्डियम ही एक महौषध है। भोजन करने मे ही दर्दका दूर होना—एनाकार्डियम, ब्रोमियम, चेलिडोनियम, ग्रेफाइटिस, हिपर, हाइड्रोमियानिक-एसिड, इग्नेशिया, क्रियोजोट, लैकेसिस, नेट्रम-म्यूर, पेट्रोलियम, पल्सेटिला, सिपिया इत्यादि दवाओंमें भी निर्दिष्ट है।

हृदावरक भिल्ली-प्रदाह—हृदयको ढकनेवाले परदे का प्रदाह। यह बीमारी अगर वातकी वजहसे हो तो यह और भी फायदा करता है। रोगीको ऐसा मालूम होता है, कि हृदयके स्थानपर कोई सुई गडा रहा है, कलेजा धडकता है।

मेरुदण्डकी बीमारी—घुटने और मेरुदण्डकी बीमारीके साथ किसी एक खास अंगका पक्षाघात। रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी पीठकी रीढके भीतर कुछ ठोका हुआ है या उसको किसीने कसकर बन्धनसे बाँध दिया है, इसी कारण चल नहीं सकता। एक तरहका रह रहकर होनेवाला अकडनका दर्द—यह पैरकी एँडीमें आरम्भ होकर पैरकी पोटली (भिल्ली) के भीतर तक जाता है।

पुरुषत्व-हीनता—डा० हियुजेस कहते हैं—जानमें हो या अनजानमें, लगातार वीर्यक्षय होकर अगर यह बीमारी हो जाय और उसके साथ ही स्नायविक दुर्बलताके लक्षण रहें—एना-कार्डियम-ओरियेण्टेलि, १२ वाँ क्रम रोज सवेरे दो गोलियाँ खा लेने पर आशातीत लाभ होता है।

स्मरण-शक्तिका नाश—कुछ भी याद नहीं रहता। अभी कह दीजिये, क्षणभर बाद ही भूल जायगा। वृद्धोंकी स्मरण-शक्तिका घट जाना, कोई कमजोर करनेवाली बीमारी भोगने बाद स्मरण-शक्तिका घटना। एनाकार्डियम-ओरियेण्ट विद्यार्थियोंके

लिये "स्मृति-सुधा" है, परीक्षाके १०।१५ दिन पहलेसे रोज १ बार सेवन करनेपर स्मरण-शक्ति बढ जाती है।

वात और दर्द—पनाकार्डियम-ओरियेण्टेलिसमें—गर्दन अकड जानेकी तरह गर्दनमें एक तरहका दर्द होता है, गर्दन झुकाने से ही यह दर्द बढता है। लिडम-पैलस्टर अध्यायमें वात-रोगमें—पनाकार्डियमके लक्षण देखें।

चेचक—किसी भी तरहकी बीमारी क्यों न हो, चेचक की गोटियोंके बीचमें काले रंगका गडहा अगर दिखाई पडे तो इसमे फायदा होगा।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा, एक तरहकी बीमारी—वहम (Hypochondriasis) होती है, जिसमें रोगीकी याददाश्त बहुत घट जाती है, हमेशा दुःखित, सभी कामोंमें उदास, हमेशा कसम खाना या लोगोंको गालियाँ देना, ऐसी इच्छा (very irritable, passionate and contradictory बहुत ही क्रोधी, उत्तेजित और बात काटनेवाला), सब पर ही अविश्वास करता है, मानो वह इस पृथ्वीका आदमी ही नहीं—पनाकार्डियम इसमें भी लाभदायक है। इसका रोगी आग और मुर्दोंके सपने देखता है, मानो वह श्मशानमें है, ऐसा सुन पडता है, मानो उसे कोई कह रहा है, तुम मरोगे।

पनाकार्डियम-गाक्सिडेण्टलिस—इसमें चेहरा या शरीरकी त्वचापर पहले छालेकी तरह नोकदार एक तरहके दाने निकलने

हैं, इसके बाद वे सब लेपकी तरह हो जाते हैं और बहुत खुजलाते हैं। इसके चर्म-रोगके सब लक्षण रसटक्सकी तरह हैं। मसे पैरके गड्ढे, जखम, पैरके तलवे फटना, विसर्प (इरिसिपिलस, जमड़ा) वगैरह बीमारीमें इसके द्वारा विशेष लाभ होता है। कोढ की बीमारीमें भी इसका व्यवहार होता है (कोमोक्लेडिया देखिये)।

वादकी दवा (follows well)—लाइको, प्लाटिना, पल्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—क्लिमेटिस, क्रोटोन, काफि, जुगलैन्स, रैनान-वल्बो, रसटक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम (potency)—६x—३० शक्ति। अम्लशूलके दर्दमें—२०० या और भी ऊँची शक्ति लाभदायक है।

फारमुला विचूर्ण ६, टिंचर—४।

ऐङ्गस्टियुरा वेरा।

(ANGUSTURA VERA)

(गैलिपिया—कैस्पेरिया नामक वृक्षकी छाल)—यह धनुष्टङ्कार, हड्डीका जखम, पेशाबकी बीमारी, अतिसार इत्यादि रोगोंमें लाभदायक है।

स्पाइनल-मोटर-नर्व (मेरुदण्ड-गति-स्नायु) और म्यूकस मेम्ब्रेन (श्लैष्मिक झिल्ली) के ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। इसका चरित्रगत लक्षण है—काफी पीनेकी प्रबल इच्छा।

धनुष्टङ्कार—किसी जगहके जखमसे पीव या दूसरे ाव एकाएक बन्द होकर कोई बीमारी (Trismus) होनेपर सके बहुत फायदा होता है। चोटवाली जगह पककर यह ीमारी होनेपर—पङ्कस्टियुरा लाभदायक है। बेलेडोना, साइ-यूटा, साइलिसिया प्रभृतिमें भी ठीक ऐसा ही लक्षण है। बच्चोंको नुष्टङ्कारकी बीमारीमें—बेलेडोना ही प्राय अकेली दवा है। रुदण्डमें उत्तेजनाकी वजहसे बीमारी होनेपर—हाइड्रोसियानिक सिड लाभ करता है, इसमें धीरे धीरे और देरतक ठहरने ाली अकडन होती (tonic spasm) है। स्ट्रिकनियामें—काकसे होनेवाली और क्षणस्थायी अकडन होती है, इसमें कोई ावाज करने या रोगीका शरीर छूनेमें ही दौरा हो जाता है। साइक्यूटा देखिये)

द्रष्टव्य :—धनुष्टङ्कार की बीमारी बहुत मारात्मक होती ै। इसके रोगीके जीवनकी आशा प्राय नहीं रहती। तम्बाकूके त्ते गरम पानीमें भिगो कर वही पानी पिचकारीकी सहायतासे ाखानेकी राहसे (per rectum of an infusion of leaf obacco) प्रयोग करनेपर रोगकी तेज़ी, रोग पैदा करनेवाले ीड़े (बैसिलाई) नष्ट होते हैं और तनाव घट जाता है, पेशियाँ ीली पड़ जाती हैं। युरोपके उत्तरी भागके शिकारी और जगली नुष्य इस बीमारीमें इसका बहुत व्यवहार करते हैं (आर्नड), ामिल नाइट्रेट अध्याय देखिये।

वातका दर्द—दोनो घुटनोंके जोडोंमें पे ठनका चलनेके समय प्रत्यगोंमे दर्द, जोडोंके भीतर एक तरहकी क आवाज होती है, जोड और पेशियाँ कडी और अकडी रहती है

मुंहकी बीमारी—चेहरेकी पेशीमें खींचनका भाव, फाडनेपर कनपटीकी पेशीमे (टेम्पोरल-मस्ल) दर्द, मसूढेके जो जगहकी मैसिटर पेशीमे दर्द, गालमें नया दर्द।

हड्डीका जखम—शरीरके लम्बे हाडोंमे जैसे उर्व (femur), जघास्थि (tibia) इत्यादिकी हड्डीमें सडनेवाले ज (-caries of long bones) या किसी जखमके एक बार आर होकर फिरसे पैदा हो जानेपर इससे लाभ होनेकी सम्भावना रहती

पेशाबकी बीमारी—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेश होनेपर भी पेशाबकी जगहपर हमेशा वेग बना रहता है।

अतिसार—बहुत ज्यादा पतला पाखाना होता है, इत पर भी मलद्वारका वेग दूर नहीं होता। गरमीके दिनोका अति सार—पाखानेका रग सफेद, पेटमें दर्द, पेट फूलना, प्रभृति लक्ष दिखाई देते हैं। इसमे पेटमे एक तरहका शूलका दर्द होता है, व नाभीसे लेकर छातीकी बीचकी हड्डी वक्षोस्थि—(sternum) तक चला जाता है।

बादकी दवा (follows well)—बेल, इग्ने, लाइको, सिपि।

क्रिया-नाशक (antidote)—काफि।

क्रम—३x—६ शक्ति। फारमुला—४।

एन्थ्रासिनम ।

(ANTHRACINUM)

(कार्बङ्कलके विपसे प्रस्तुत) यह कार्बङ्कल, विपैला-फोडा, ारात्मक जखम (malignant ulcer), सडे पदार्थसे पैदा हुए हरके कारण प्रदाह (septic inflammation), सेप्टिसि-मेया, दूपित फोडा या किसी फोडेकी तरह ददोरे, (eruption), ावो, सयोजक तन्तु (connective tissues) समूहोंका प्रदाह और यहाँ पीब पैदा होना, विसर्प प्रभृतिकी महोपधि है और नोजो-ड्स जातिकी ओपधि है। प्रदाहकी भयकर जलन ही इस दवाका— वरित्रगत लक्षण है।

कार्बङ्कल—कार्बङ्कलकी भयानक जलनमें—एन्थ्रासिनम, आर्सेनिक और टैरेण्टुला—इन दवाओंकी हमेशा जरूरत पडा करती है। नीचे उनका अन्तर देखिये —

एन्थ्राक्सिन—कार्बङ्कलमें भयानक जलन, रोगवाली जगह छोटे छोटे ब्रेणोंसे भरी, रग कुछ काला, उससे पानीकी तरह पतला पीव या रस निकलता है, पीवमें भयानक बदबू रहती है, जखममें इतना दर्द रहता है कि छुआ नहीं जाता, रोगीको योखार रहता है। जलन इतनी ज्यादा रहती है,कि उसपर सिर्फ पानी ढालना चाहता है और छटपटाया करता है। कार्बङ्कलकी बीमारीकी पहली अवस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है। नीचे दिया हुआ "द्रष्टव्य" स्थान पढ़िये।

कार्वङ्कलके सिवा—कोई दूसरी तरहके तेज दर्द-भरे छोटे छोटे फोडे वरावर निकलते रहें—आर्निका, हिपर, प्रभृतिकी अपेक्षा पन्थ्यासिनम ज्यादा फायदा करता है (वडे वडे फोडे—पचिनेसिया)।

आर्सेनिक—इसके विशेप लक्षण हमेशा याद रखें। यदि यह जलन और दूसरे दूसरे उपसर्ग सर्दीमें और आधी रातके वाद वडे और भीतरी तकलीफ वगैरह लक्षण न रहें, तो कभी इसका प्रयोग कर वृथा ही समय नष्ट न करें। (इसका अध्याय देखिये)।

टैरेण्टुला—भयानक दर्द और जलन, पहले कपकपी होकर वोखार आता है, इसके वाद ताप वढता है, ज्वरका ताप १०४ डिग्रीतक चढता है, वदनमे जलन, प्यास और छटपटी वहुत ज्यादा रहती है।

लेकेसिस—रोगकी गति वहुत धीमी, सहजमे पीव नहीं होता, रोगवाली जगहका रग कालिमा लिये नीला (वैंगनी रगकी तरह) पीव होनेपर जखमसे थोडे परिमाणमें पीव निकलता है, यह कितनी ही वार खून मिला भी रहता है, जखममे दर्द इतना अधिक रहता है कि रोगी वाँधने नहीं देता, रोगी वहुत कमजोर हो जाता है, मस्तिष्ककी गडवडीके लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

कार्वोविज—जखमका रग काला, जखममे वहुत जलन और दर्द, स्रावमें वहुत वदबू यहाँतक कि सडन पैदा हो जानेके वाद भी स्रावमें वदबू रहा करती है, खून विपैला हो जाता है, रोगीको हिमाग (शीत) हो जाता है।

क्रियोज़ोट—रोगके भोगके समय रोगीका अंग-प्रत्यंग एक तरहसे जोरसे फड़कता (pulsation) है, घावमें बदबू रहती रहती है, बहुत कमजोर हो पड़ता है, बेहोशी आ जाती है, नींद आती है, पर सो नहीं सकता।

हिपर-सलफर—रोगवाली जगहका चारों ओरका किनारा कड़ा, जखममें तेज दर्द और जलन, जखमके भीतर मानो सुई गड़ती है, सो नहीं सकता।

ऊपर लिखी दवाओंके अलावा—बेलडोना, म्यूरियेटिक एसिड, और नाइट्रिक एसिड, साइलिसिया, सिकेलि प्रभृति दवाओंकी भी इस रोगमें जरूरत पड़ती है। (उनका लक्षण देखिये।)

द्रष्टव्य :—कार्बङ्कलकी जलन २।१ घण्टोंमें मिटानेके लिये थोड़े-से टोमाटो (जिसे विलायती बैंगन कहते हैं, स्वाद खट्टा रहता है) चन्दन घिसनेके पत्थरपर रख कर, चन्दनकी लकड़ीसे ही कुचलकर और चन्दनकी लकड़ीसे ही अच्छी तरह पीसकर समूचे कार्बङ्कलपर लेप चढ़ा देना चाहिये। मालूम होगा कि दस मिनिटोंके भीतर ही तकलीफ कम होनी शुरू हो गयी, २।३ घण्टे बाद यह लेप बदलकर दूसरा चढ़ा देना चाहिये। इस तरह २०।२५ घण्टोंके भीतर जलन एकदम घट जायगी और कार्बङ्कलके मुँहसे पीब बहना आरम्भ हो जायगा। जलन घटनेपर फिर यह लेप न चढ़ाना चाहिये। इसके बाद पकानेके लिये तीसी, छोटा गोयालपत्ता, नीमके पत्ते वगैरहकी गरम पुल्टीस लगायें। बोरिक कम्प्रेस भी दे सकते हैं (रोग और उसकी प्रकृतिगत दवाएँ देखिये)।

इसके अलावा—एन्थ्रासिनम, शरीरके किसी भी द्वारसे काले रंगका रक्त जाना, खून बाहर निकलते ही जल्दी जल्दी जम जाना, कर्णमूल ग्रन्थि (parotid gland) का फूलना, सडनेवाला कर्णमूल प्रदाह (गैंग्रीनस पैरोटाइटिस), सौत्रिक-तन्तु (cellular tissues) का कडा हो जाना और फूलना, मुर्दा चीरनेके समय कटकर जखम। बर्रं, लखेडो प्रभृति कोडोका काटना और कर्णमूलका सडना प्रभृति कई रोगोकी यह बढिया दवा है। कोई दूपित रोगवाले रोगीकी साँस और मुर्दा चीरनेके समय या किसी दूसरी तरहकी दुर्गन्ध नाकमे जानेपर कोई बीमारी अगर पैदा हो जाये तो इससे फायदा होगा।

सदृश—आर्स, पाइरोजेन, लेकेसिस, क्रोटेलस, एचिनेशिया।

बादकी दवा (follows well)—जलनके लिये—आर्सेनिक पीबके लिये—साइलिसिया।

क्रम (potency)—३० शक्ति (दिनमे सिर्फ १ बार)।

एन्थ्राकोकालि।

(ANTHRAKOKALI)

एन्थ्रासाइट कोयला खौलते हुए गर्म कास्टिक पोटासमें गलाकर तैयार होता है, इसकी निम्नशक्ति सेवन करने पर—सूखी तर खुजली, बहुत खुजलाहट (प्रुरिगो), ओठ या किसी

दूसरी जगहका फटना, जखम, पुराना दाद, प्रभृति कई चर्म रोगोंमें बहुत फायदा होता है। पित्तकी कै, पैत्तिकता,—इसके साथ ही पेट कड़ा हो जाना, पेट फूलना इत्यादिमें भी यह फायदा करता है।

क्रम—निम्न-शक्ति। फारमुला—७ विचूर्ण।

एण्टिमोनियम आर्सेनिकम ।

(ANTIMONIUM ARSENICUM)

(आर्सनाइट आफ एण्टिमोनि)—ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, इन्फ्लुएञ्जा और ब्राङ्को-निमोनियामें—जहाँ छातीमें एण्टिम-टार्टकी तरह ढीली घरघराहटकी सर्दी, ज्वर और दूसरे दूसरे लक्षणके साथ बहुत कमजोरी, श्वासकष्ट, छटपटी, प्यास इत्यादि आर्सेनिककी तरहके कितने ही लक्षण मौजूद रहते हैं, वहाँ यह दवा पहले ही याद करनी चाहिये।

फेफड़ेकी वायुस्फीति रोग—जिस रोगीको बहुत अधिक श्वासकष्ट, खाँसी, कुछ खाने या सोने पर रोग बढ़ जाता है, वहाँ इसका प्रयोग होता है।

बाईं ओरका वक्षावरक झिल्ली-प्रदाह (प्लुरिसि) और हृद्-पिण्डके आवरक पर्देका प्रदाह (पेरिकार्डाइटिस) में पानी संचय होनेपर और आँखोंका प्रदाह और उसके साथ ही चेहरेकी सूजन रहने पर फायदा होता है।

दमा-खाँसी—छातीमे घर घर शब्द करनेवाली सर्दी, श्वास कष्ट, और ऊपर लिखे कितने ही लक्षण रहने पर इसकी निम्न शक्तिसे फायदा होगा।

बादकी दवा (follows well)—ब्रायो, सल्फ, लोबेलिया, मार्क, आर्स।

क्रम—३x—६x विचूर्ण, ३० शक्ति भी लाभ करती है।

फारमुला—७।

एण्टिमोनियम क्रूडम।

(ANTIMONIUM CRUDUM)

(ब्लैक सलफाइड-आफ-एण्टिमोनी)—बच्चा, जवान, सबकी ही बीमारियोंमें यह लाभदायक है, यह बच्चोंके लिये ज्यादा फायदेमन्द है। नीचे लिखे लक्षण दवाके चुनावमें बहुत सहायता पहुँचाते हैं और इन्हें ही इनका चरित्रगत लक्षण जानना चाहिये —

१। बच्चा बहुत चिडचिडा और रोगी। यदि कोई उसकी ओर देखता या शरीरमे हाथ लगाता है तो वह और भी चिढ उठता है। जवान आदमी हमेशा उदास, दुःखित और रंज-से रहते हैं; बात बातमें रोना, बच्चा बहुत जल्दी-जल्दी मोटा होता जाता है।

२। जीभ पर सफेद लेप, मानो दूध लगा हुआ है (इस लक्षणमें अधिकांश रोग इससे आरोग्य हो जाते हैं)।

३। नाकका भीतरी भाग, ओंठका विचला भाग फटा, वहाँ खरोंट जमती है।

४। अँगुलीका नख, ओंठके कोने और नाककी छेदके किनारे फटे रहते हैं।

५। बहुत ज्यादा खानेकी वजहसे (घी, दूध, मांस, मिठाई इत्यादि खाकर) पेटकी बीमारी।

६। ठण्डे पानीमें नहानेके बाद बीमारी बढ जाती है, नहानेकी इच्छा नहीं होती।

७। ठण्डा पानी पीने या नहाने-धोने, दोनोंसे ही रोग बढता है।

८। यदि रोग लक्षण एक बार आराम होकर फिर पैदा होते हैं, तो अपनी जगह बदल देते हैं।

९। ज्यादा सर्दी या गर्मी दोनोंमें ही बीमारी बढती है।

१०। पैरके तलवे और गट्टे में दर्द, इसीलिये, चलनेमें कष्ट।

११। खट्टी चीज खानेकी इच्छा, खाता भी है; पर सहन नहीं होती।

१२। पर्यायक्रमसे अतिसार और कब्ज।

१३। छोटी माताके बाद उद्भेदोंका निकलना और मायेमें अकौत (एकजिमा)।

अतिसार—खाने-पीनेकी गड़बड़ीसे पतले दस्त आना, ज्यादा खानेकी वजहसे पेटकी बीमारी, मल कुछ पतला, कुछ गांठ गांठ कड़ा, कुछ दिनों तक कब्ज रहने पर अगर फिर पतले दस्त

आने लगें, खासकर वृद्धोंके इस तरहके लक्षणमें यह लाभदायक है। एण्टिम-क्रूडमें—जो खाता है, ठीक उसीकी डकार आती है और रोगी तकलीफसे कै कर देनेकी इच्छा करता है। यह पुरानीकी अपेक्षा नयी बीमारीमें और गरमीके दिनोंके अतिसारमें बहुत फायदा करता है।

पाकस्थलीकी बीमारी—जीभ पर सफेद रंगकी मोटी लेप चढी रहती है, भूख नहीं रहती, जो खाता है, उसीकी डकार आती है, खानेके बाद इतना जी मिचलाता है, कि किसी तरह कै कर दिये बिना चैन नहीं पडती, छातीमें जलन होती है पेट फूलता है, कभी कभी खायी हुई चीज आपसे आप के हो जाती है, हमेशा हाउ हाउकर डकार लिया करता है, मुँहमें मीठा पानी भर आता है, रोगी खट्टी चीजें खाना चाहता है, खाता भी है—पर सहन नहीं होती। बहुत देरतक धूप या आगके सामने रहनेके कारण अगर कोई बीमारी हो जाये तथा ज्यादा खानेकी वजहसे पेटके रोग हों तो इससे फायदा होता है। भूख अच्छी है, पर पाकस्थलीके ऊपरी अशमें और छातीमें जलन होती है, मानो अम्ल हो गया है।

बच्चोंका वमन—हैजा अध्याय देखिये। कोई मिठाई खाकर यदि बच्चेको बीमारी हो तो यह ज्यादा फायदा करता है।

हैजा—पहले रोगीकी जीभ देखें—जीभका रंग सफेद, मानो समूची जीभपर दूध लगा हुआ है। इसके बाद रोगीके मान

सिक लक्षणपर ध्यान दें;—बच्चा हमेशा क्रोधी, दुःखित, चिड़चिड़ा और नाक भों चढ़ानेवाला रहता है, यदि कोई उसकी ओर देखता है तो चिढ़ उठता है और रोता है, एण्टिम-क्रूडकी नाड़ी अकसर अनियमित रहती है। इसका एक यह भी लक्षण है—ओठ के कोने और नाकके छेदके किनारे फटे रहते हैं। इसमें वमन, ओकाई, मिचली अधिक रहती है, कुछ खाने-पीने बाद ही कै हो जाती है, बच्चा जमे हुए दूधकी तरह कै करता है, उसका रंग सफेद रहता है, इथूजाकी तरह कितने ही रंगकी कै नहीं होती है और इतने झोंकसे भी कै नहीं होती है। एण्टिममें—वमनके बाद भूख लगती है। इथूजामें—बच्चा वमनके बाद कुछ देरतक सोया या बेहोश-सा पड़ा रहता है और इसके बाद जागते ही भूख लगती है, माताका स्तन पीना चाहता है। एण्टिममें—स्तनका दूध नहीं पीना चाहता—बल्कि दूसरा दूध पीना चाहता है। पाखाना—पतला मल के साथ कड़ा मल गाठ गाठ मल मिला रहता है, परिमाणमें भी ज्यादा होता है, पाखानेके साथ जमे जमे दूधके टुकड़े रहते हैं, इसीलिये, मलका रंग सफेद दिखाई देता है; यह गरमीके दिनोंकी बीमारीमें फायदा करता है।

चर्म-रोग—मुँहमें, कानमें, नाकमें, गालमें, दाढ़ीमें और माथेमें अकौत (एक्जिमा), फोड़ा या छालेकी तरह दाने, पीबभरे दाने। एण्टिममें—सींगकी तरह, ऊँचे मसेकी तरह (horny excrescences), कमलके काटेकी तरह एक तरहके उद्भेद, ये सब हाथों और पैरके तलवेमें ही ज्यादा निकलते हैं।

घमौरी—गर्दन, चेहरा, पीठ, छाती और हाथोंमे दाने, ये दाने खूब खुजलाते हैं, जरा परिश्रम करने या गरमीमे रहनेपर—बढ़ना, विश्राम और ठण्डकमें—घटना।

कब्ज—पर्यायक्रमसे कब्जियत और पतले दस्त, खासकर यदि वृद्धोंको ऐसा हो जाय—पल्टिम-फूड ज्यादा लाभ करता है। कडे मलके साथ पतला मल और इसके साथ ही खूनका स्राव, मल द्वारसे लाल-सफेद मिले पानीकी तरह रस निकलता है।

खाँसी—पेट गरम होकर खाँसी, सवेरेके वक्त एकाएक जोरकी खाँसी, पहले खूब जोरकी खाँसी आकर क्रमश कम हो जाती है, उसमे ढेरका ढेर बलगम निकलता है। नाकके भीतर पीले रंगका श्लेष्मा जमता है।

आँखकी बीमारी—बहुत दिनोंकी पुरानी आँख उठने की बीमारी, खासकर बच्चोको यह बहुत फायदा करती है। पलकों का प्रदाह, किरकिरी होती है, खुजलाती है, रातमे आँखे सट जाती है, दर्दके साथ पुराना पलकोंका प्रदाह, आँखे लाल और रातमे सटना।

दाँतकी बीमारी—खोखले दाँत, कीडे लगे और गडहे पडे दाँत—उनमे दर्द, कुछ खाने या दाँतमे ठण्डा पानी लगनेपर मानो प्राण निकल जाते हैं। दाँतसे मसूढे अलग हो जाते है, जरामें ही खून निकल आता है।

पैरके तलवेमें दर्द—पक्की सड़क या पत्थर पर चलनेकी जहसे तलवेमें दर्द। दबानेपर इतना दर्द नहीं मालूम होता, पर लनेके समय बहुत दर्द होता है, भीतरी दवा सेवन करना और दूर-टिंचर लगाना चाहिये। पैरकी पँडीके दर्दमें भी—एण्टिम-ड़ लाभदायक है।

पँडीके दर्दमें—एण्टिम क्रूडके अलावा—मैंगेनम-म्यूर, मैंगेनम-सेटिकम, फाइटोलैका, साइक्लामेन, लीडम, कास्टिकम प्रभृति वाएं भी लाभ करती हैं।

मैंगेनम-म्यूर—पैरके जोड़ और पैरकी हड्डीमें दर्द, मैंगेनम-एसेटिकम—पँडीमें दर्द, हड्डीमें तेज दर्द, जोड़ोंमें दर्द, और सूजन, जोड़ोंका रंग लाल और चमकीला दिखाई देता है, पैरके तलवेमें बात, मैंगेनम-आक्साइडेटम—पैरकी हड्डी (टिबिया हड्डी) में दर्द। फाइटोलैका—उरुदेशके नीचे दर्द, पँडीमें ऐंठनका दर्द; साइक्लामेन—पँडीमें जलन और जख्मकी तरह दर्द, दाहिने पैरके अंगूठे और तर्जनी अंगुलीमें खींच रखनेकी तरह दर्द; लिडममें—पँडीमें सूजन, तलवेमें बेहद दर्द, रोगी पैरपर भार देकर चल नहीं सकता।

वात—नया वात, अंगुलियोंपर ही ज्यादा हमला होता है, इसके साथ ही पेटकी भी गड़बड़ी रहती है। मध्याह्के बाद सोने पर या सबेरे गर्दन, पीठ मानो जकड़ जाती है, इस तरहका अनु-भव होता है, वृद्धि—झुकने पर, सर नीचा करने पर।

ज्वर—रेमिटेण्ट (स्वल्पविराम) और इण्टर्मिटेण्ट (सविराम) दोनों तरहके बोखारोंमे ही एण्टिम-क्रूड लाभदायक है, पर बच्चोंके स्वल्प-विराम-ज्वरमें यह ज्यादा फायदा करता है। जिस बोखारमें पेटकी गडबडी शामिल रहे, जीभपर सफेद मैल चढा हो, और रोगी औंघता-सा दिखाई दे, उसीमें—एण्टिम-क्रूड को याद करना चाहिये। ज्वरमें इसका प्रयोग करते समय इसके ऊपर बताये कितने ही चरित्रगत और कितने ही विशेष लक्षणपर भी नजर रखनी चाहिये, नहीं तो ज्यादा फायदा न होगा। इसका बोखार दोपहरमे या तीसरे पहरमें आता है और एक दिनका नागा देकर ठीक एक ही समय पर आता है। ज्वर आनेके पहले की हालत—पूर्वावस्था (prodrome)—पेटकी गडबडीके लक्षण प्रकट होते है और मिजाज खराब रहता है। शीत यानी जाडेकी अवस्था (chill)—प्यास बिलकुल नहीं रहती, दिनके १० बजेके वक्त कॅपकपीके साथ बोखार आता है, इस जाडेके साथ पर्याय-क्रमसे पसीना अर्थात एक बार जाडा और फिर पसीना, फिर जाडा इस तरह होता है, गरमीके प्रयोगसे जाडा बढता है, इस हालतमें रोगीकी नाक बरफकी तरह ठण्डी रहती है, और वह औंघासा बना रहता है। तापकी हालत—उत्तापावस्था—(heat) एक बार उत्ताप, फिर पसीना कभी कभी आधी रातके समय ताप खूब बढ जाता है, इसके साथ ही पैर ठण्डे रहते हैं, छातीमें दर्द और वमन होता है, रोगी इस अवस्थामे भी तन्द्रामें पडा रहता है

एपिस, एण्टिम-क्रूड, एण्टिम-टार्ट, ओपियम)। पसीनेवाली
वस्था—(sweat)—पर्यायक्रमसे अर्थात एक बार शीत एक
र पसीना , पर ताप पैदा होते ही पसीना बन्द हो जाता है।
र छूटनेवाली अवस्था (apyrexia) इस अवस्थामें पसीना
व अधिक होता है और कै, मिचली, पेट फूलना, डकार आना,
में दर्द इत्यादि पाकाशयके लक्षण बढ जाते हैं। रोगी खट्टी चीज
ाना चाहता है। एण्टिम-क्रूडमें—अकसर किसी भी अवस्था
ं प्यास नहीं रहती। जीभ—जीभपर सफेद मोटी तही चढी रहती
ै, रोगीमें या तो कब्जियत रहती है—या पतले दस्त आते हैं।

पेशाब—गदला, बार बार लगता है, बदबूदार होनेके
समय जलन।

द्रष्टव्य :—किसी भी बीमारीमें "रोगी क्रोधी, चिडचिडा,
ओंठके काने, नथुनेके किनारे फटे या पपड़ी जमे—ये कई लक्षण
दिखाई देनेपर, कोई भी बीमारी हो—एण्टिमसे आरोग्य होगी।
डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—एक बच्चेमें ये कई लक्षण मिलनेकी
वजहसे केवल एण्टिम-क्रूड द्वारा मैंने उसका डिफथीरिया आरोग्य
कर दिया है।

एण्टिमोनियम-क्लोराइड—यह कैन्सर रोगकी दवा
है, रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है, शरीरकी गरमी घट जाती है,
किसी तरहकी श्लैष्मिक झिल्लीका यदि क्षय हो जाये, रोगी शीत
आ आनेकी तरह हो पड़े और बहुत ही निस्तेज हो जाये तो

प्रयोग करना चाहिये। क्रम—३x विचूर्ण (जरायुका कैन्सर—लैपिस-पल्वा या रेडियम-ब्रोमसे लाभ न-होनेपर—कैडमियम सल्फ)।

एण्टिमोनियम-आयोडेटम—यह ढीली घरघराहट मिली सर्दीके साथ हँफनी, निमोनिया, ब्राङ्काटिस, कमजोरी, भूख न लगना, शरीरकी त्वचा पीली हो जाना प्रभृति रोगोंकी लाभदायक दवा है।

वृद्धि (aggravation)—भोजनके बाद, ठण्डे पानीसे, नहाने पर, खट्टी चीजोंसे, धूपमें, आगकी गरमीसे, जाडा-गरमीकी अधिकतासे।

ह्रास—हवा खाने पर, विश्रामसे और गर्म पानीसे नहाने पर।
बादकी दवा—लैके, मार्क, पल्स, सिपि, सल्फ।
क्रियानाशक (antidote)—कैल्के, हिपर, मार्क, पल्स।
क्रियाका स्थितिकाल—(duration) ४० दिन।
क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—

एण्टिमोनियम सल्फरिकम ।

(ANTIMONIUM SULPHURICUM)

साधारणतः नाक और छातीकी पुरानी सर्दीके लिये यह ज्यादा काममें आती है। गला कुटकुटाकर खाँसी, बहुत ज़्यादा परिमाणमें बलगम निकलता है, इतनेपर भी मानो वायु-पथ (bronchi)

ा, श्वास लेने और छोड़नेमें तकलीफ। कलेजा मानो रुका और
ा और श्वासनली और स्वर-नलीमें कड़ा बलगम इकट्ठा हो जाना,
ी खाँसी और फेफड़ेमें पीब-मिला श्लेष्मा रहनेके कारण दमा
रह बीमारियोंमें इससे फायदा होता है। जिन्हें हर बरस जाड़ेके
ोंमें खाँसी आती है, रोगीको हमेशा शरीरमें चोट लगनेकी तरह
होता रहता है, यह उनकी ही बामारीमें ज्यादा फायदा
रता है।

किसी चर्म-रोगमें अगर हाथकी तलहत्थी और पैरके तलवे
या अण्डकोषमें बहुत खुजली रहे तो—एण्टिम-सल्फसे फायदा
ोता है।

पाखाना—एलोकी तरह एकाएक पाखाना लग आता
। वायुके साथ मल निकल जाता है। पहले पीला, इसके बाद
ीला दस्त, अन्तमें पेटमें भयानक दर्द होता है और पेटमें
ड़गड़ आवाज होती है

क्रम—२x—३x विचर्ण, कमी कभी—६-३०।
फारमुला—७।

एण्टिमोनियम टार्टरिकम।

(ANTIMONIUM TARTARICUM)

(टार्टर एमेटिक, एण्टिमोनी और पोटाश—रासायनिक प्रक्रिया
से प्रस्तुत)—सर्दी-खाँसी, निमोनिया, ब्राङ्काइटिस, कैपिलरी-ब्राङ्का-

ऐपिस मेलिफिका।

(APIS MELIFICA)

(मधुमक्खीका टिंचर)—यह विधवा स्त्री और पित्त-प्रधान स्नायविक धातु (नर्वस) और कण्ठमाला-ग्रस्त धातु (स्क्राफुलस) वाले रोगियोंके लिये ज्यादा लाभदायक है। नीचे इसके कई चरित्रगत लक्षण लिखे जाते है —

आँखकी निचली पलक थैलीको तरह फूल जाती है (ऊपरी पलक फूलती है—कैलि-कार्ब)। डक मारनेकी तरह दर्द और जलन, दर्द एकाएक पैदा होता है, थोडी देर बाद एकाएक जगह बदलता है (जगह बदलनेवाला दर्द—पल्सेटिला, केलि-बाइक्रोम, सलफर प्रभृति), कैलि-बाइक्रोम अध्यायमें-दर्द देखिये, दर्द अनिश्चित-कालोफाइलम), शरीरकी कितनी ही जगहें फूलती हैं। बिना प्यासका शोथ, फूलन, थोडा पेशाब, ताप सहन नहीं होता, ठण्डे प्रयोगसे जलन घटती है (गरम प्रयोगसे घटना—आर्सेनिक), मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह (मेनिञ्जाइटिस), मस्तिष्कमे जलसञ्चय (हाइड्रो-केफालस), विकार अथवा किसी दूसरी बीमारीमें नींदकी हालतमें या नींद खुलनेपर चिल्ला उठना, ३ बजे दिनके समय बोखार आना, बिना प्यासका बोखार, रोगके लक्षण ३ बजेसे ४ बजेके भीतर बढते हैं। बेहोशीका भाव, औंघनेका भाव, मूत्रकृच्छ्रता—(पेशाबमें तकलीफ)—रातमें पेशाब थोडा और पेशाबके पहले,

समय और पीछे जलन होती है, दाहिनी ओरका डिम्बाशय (ovary) फूला और जलन और उसमे डक मारनेकी तरह दर्द, बच्चों का पुराना अतिसार इत्यादि। इसकी बीमारियाँ पहले दाहिनी ओर होती हैं, पीछे बाई तरफ चली जाती है। किसी भी बीमारीमें—रोगीके शरीरका चमडा मोमकी तरह सफेद, प्राय प्यास नहीं रहती और पेशाब थोडा देखते ही पहले—पपिसको याद करना चाहिये।

यह सौत्रिक तन्तुपर क्रिया प्रकट कर श्लैष्मिक झिल्ली और चर्मकी सूजन पैदा करता है। किसी किसी बीमारीमे पपिसका प्रयोगकर २।३ दिन राह देखनी पडती है, क्योंकि इसकी क्रिया धीरे धीरे प्रकट होती है।

स्त्री-जननेन्द्रियके रोग—डिम्बकोषका प्रदाह (Ovaritis), दाहिनी ओरके डिम्बकोषका प्रदाह, वहाँ डक मारनेकी तरह दर्द और जलनके साथ जरायुका प्रदाह, दाहिनी ओरका टियुमर (अर्बुद), सिस्टिक टियुमर (मसानेका अर्बुद) और खाँसी, छातीमे खींचनका भाव इत्यादि जरायुकी परावर्तित क्रिया (reflex action) की वजहसे पैदा हुई बीमारीमे भी—पपिस उपयोगी है (पपिसमे कभी कभी बायें डिम्बाशयमे भी दर्द होता है)। बाई ओरके प्रदाहमें—लैकेसिस फायदा करता है। लैकेसिसमे—नींद आने या नींद लगने और नींदसे बाद रोग बढता है। पपिसमें बराबर दर्द बना रहता है। स्त्रियोंकी रजोरोधकी बीमारीमें-

माथेमें खून जमकर मस्तिष्कमे तकलीफ और जरायु-प्रदेशमें दर्द होता हो तो—पपिसके प्रयोगसे ऋतुस्राव होकर सभी तकलीफ घट जाती है (किसी भी प्रादाहिक बीमारीमे इसके रोगीकी तकलीफ गरम सेंकसे बढ जाती है और ठण्डे प्रयोगसे आराम मालूम होता है।)

इयुपियोन—३-३० शक्ति, इसमे भी पपिसकी तरह दाहिने डिम्बकोषमे (R ovary) दर्द होता है। प्रदर का स्राव रह रह कर झोंकसे निकलता है। फालप-नल (fallopian tube) और उसके पासवाले प्राय सभी यन्त्रोंकी बीमारीमे यह लाभदायक है। रोगिनी ऋतुस्राव के समय बोलना नहीं चाहती, छातीमे, हृत्पिण्ड में जलन और डक मारनेकी तरह दर्द, ऋतुस्रावके बाद, पीले रगका प्रदरका स्राव और उसके साथ ही कमरमें दर्द, कमरका दर्द घटनेपर प्रदरका स्राव बढना, प्रदर-स्रावके समय योनिमुखमे जलन, योनि-मुखमें दर्दके साथ बार बार पेशाव, योनिमुखमें (labia) मे सूजन, ब्रह्मतालु गरम, ब्रह्मतालुमे भयानक सुई गडनेकी तरह दर्दके साथ सर-दर्द,—ये सब इयुपियोनके विशेष लक्षण हैं।

पेशावकी बीमारी—पेशाव करनेके समय मूत्रनलीमे बेहद जलन और डक मारनेकी तरह दर्द, जल्दी जल्दी पेशाब लगना, पर होता २।१ बूँद ही है, पेशाव लगनेपर रोगी एक मिनिटके लिये भी उसे रोक नहीं सकता, जलन और तकलीफके साथ रक्तस्राव और मूत्रकृच्छ्रता, ब्राइट्स डिजीज (कोरयाड-घटित

[मू]त्रग्रन्थि-प्रदाह), हैजा रोगके मूत्र-विकार (युरिमिया) की अवस्थामें, [दू]सरे-दूसरे लक्षणोंके साथ एपिसका चरित्रगत लक्षण, प्यासका न [र]हना—कैन्थरिस, टेरिबिन्थिना प्रभृतिकी तरह यह भी पेशाव [हो]नेमें सहायता पहुँचाता है। मूत्रग्रन्थि-प्रदाह, मूत्रकृच्छ्र और [व]ातज मूत्रकृच्छ्रमें कैन्थरिसके बाद एपिसका ही स्थान है। पेशावमें [ब]हुत अण्डलाल मिला रहता है और इसमें तली जमती है।

ज्वर—यह सविराम, अविराम, स्वल्पविराम, सान्निपा[ति]क (टायफायड), विकार, छोटी माता, चेचकके लक्षण मौजूद रहने पर—मैलेरिया, प्लीहा और यकृत मिले, किनाइनसे [द]बे हुए इत्यादि सब ज्वरोंमें भी इसका व्यवहार होता है।

सविराम ज्वर—एपिसमें—ज्वर प्राय: दिनके ३ बजने के समय आता है, कभी जाड़ा रहता है, कभी नहीं रहता। यदि जाड़ा लगता भी है तो वह पेट या घुटनेसे ही आरम्भ होता है, त्वचा सूखी, बीच बीचमें लसदार पसीना होता है, कभी पसीना होता है, कभी नहीं। प्यास प्राय: किसी भी अवस्थामें नहीं रहती। शीतावस्थाम—कभी कभी प्यास लगती है ; पर वह भी बहुत थोड़ी। छाती बहुत भारी और दबाव मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी, जाड़ा बन्द होकर जब ताप आरम्भ होता है, तब रोगी सो पड़ता है ; इस अवस्थामें कभी कभी शरीरमें आमवात होता है। उत्तापावस्थामें—रोगीके शरीरमें दाह और छातीमें भार मालूम होता है और साँस रुक जानेका भाव और भी बढ़ जाता है।

पसीनेवाली अवस्थामे—औंधनेका भाव, इस अवस्थामें पसीना बिलकुल ही नहीं होता, यदि कुछ बदन चपचपाता भी है, तो उसी समय सूख जाता है। ज्वर छूटनेकी अवस्थामें—प्लीहाकी जगह पर और बदनमें दर्द रहता है, पेशाब बहुत थोडा होता है।

सारांश—जिस ज्वरमें पेशाब थोडा होता है, ज्वर ३ बजे आक्रमण करता है, प्यास (तीसरे पहर अगर जाडा लगकर बोखार आता है, तो प्यास रहती है डा० बोरिक), बदन में दाह, बोखारके समय औंघाई, लसदार पसीना, एक बार होता है, फिर उसी समय सूख जाता है, ये लक्षण सब मौजूद रहते हैं—उस ज्वरको एपिस अच्छी तरह आरोग्य कर सकता है। बहुत ज्यादा किनाइन सेवनकी वजहसे दुबारा आनेवाला बोखार (द्वौ-कालीन ज्वर) और पुराने बोखारके साथ सूजन, उदरी और शोथ इत्यादि रहने पर—एपिस लाभदायक है।

प्रादाहिक रोग और ज्वर—साइनोवाइटिस (जोडको तरी पहुँचानेवाली झिल्लीका वर्म—यह हमेशा घुटने पर ही होता है) इसकी पहली अवस्थामे जबतक प्रदाहका लक्षण रहता है,—तब तक एकोनाइट या फेरम-फास उपयोगी है, पर जब रोगवाली जगह रस-सञ्चय होता है (serous effusion), रोगीको डक मारनेकी तरह तकलीफ, जलन और दर्दसे कातर हो पडता है, उस समय एपिसका प्रयोग करना चाहिये , मेनिञ्जाइटिस -रोगकी पहली अवस्थामे लक्षण मिलनेपर—एकोनाइटका प्रयोग करना चाहिये।

पर जब रोगी अधीर और वेहोश की तरह रहकर बीच बीचमें चिल्ला उठता है (cephalic cry), उस समय—पपिस उपयोगी होता है। प्लुराइटिस (Pleuritis) रोगमें, जब फुस्फुसावरक झिल्ली (pleura) में रस जमकर छातीमें दर्दके साथ हँफनी, श्वासकष्ट (Dyspnœa) होता है और उसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द इत्यादि लक्षण वर्त्तमान रहते हैं, उस समय—पपिसका प्रयोग होता है। अब ज्वरमें—पपिसके साथ जेलसिमियमका क्या प्रभेद है, यह नीचे देखिये।

जेलसिमियम—हमेशा ही ओंघाईका भाव, आँखकी पलकें फूली फूली और भारी, रोगी-हिलना-डोलना नहीं चाहता और पसीना होनेपर सब तकलीफें दूर हो जाती हैं। जेलसिमियमका तीन "D" लक्षण—dullness, dizziness, drowsiness, सुस्ती, चक्कर, औंघाई—हमेशा याद रखना चाहिये। जेलसिमियममें—अप्रबल रक्त-सञ्चय (passive congestion) की वजहसे रोगी अघोर और आच्छन्नकी तरह पड़ा रहता है। यह ज्वर-विकारकी पहली अवस्थामें और पित्तज्वरमें ही प्रायः व्यवहार होता है। यदि किसी समय ऐसा मालूम हो, कि रोगीके ऊपर बताये लक्षण अर्थात् आच्छन्न भावके बदले पूरी पूरी कमजोरी और अज्ञानताका भाव (prostration and stupor) आ पहुँचा है, तो कभी भी जेल-सिमियमका प्रयोग न करें।

पपिसमें—रोगी सोना चाहता है। पर स्नायविक लक्षण इतने प्रबल रहते हैं, कि किसी तरह सो नहीं सकता, बुदबुदाकर बका

करता है। जेलसिमियममें—semi conscious muttering अर्द्ध-चेतन अवस्थामें बुदबुदाकर बकना, पपिसमें unconscious muttering रोगी सम्पूर्ण अज्ञान रहकर बका करता है।

विकार-ज्वर—विकारमे रोगी बुदबुदाकर बकता है और अचेत होकर पडा रहता है। चेहरा कुछ लाल रगका या सफेद दिखाई देता है, पसीना विलकुल ही नहीं रहता। यदि होता भी है तो उसी समय सूख जाता है। रोगी इतना कमजोर हो जाता है कि तकियेपर माथातक नहीं रख सकता। जीभ बाहर निकालने पर काँपती है, जीभका अगला भाग लाल, पर बीचका भाग और किनारे सफेद और वे भी छालोंसे भरे रहते हैं। रोगी अचेतनकी तरह पडा रहता है, पर सोता नहीं है। इसके अलावा इसके साथ ही कभी कभी छटपटी और क्रोधका भाव भी दिखाई देता है। रसटक्समे भी—छटपटी है, पर उसका विशेष लक्षण है—रोगी यदि चुपचाप पडा रहता है तो उसको तकलीफ होती है और इधर उधर करवट बदलते रहनेपर उसे आराम मिलता है, इसीलिये, छटपटाया करता है (ब्रायोनियामे—हिलने-डोलनेपर तकलीफ होती है) और पपिसके—रोगीमें सुस्ती और कमजोरी अधिक रहती है, उससे मानो लटक पडता है। इसीलिये, छटपटाता है (विकारमें अज्ञानका भाव—coma, ओपियमसे नहीं घटता, पर इसके बाद पपिससे आराम हुआ है। इसका प्रमाण भी मिलता है)। म्यूरियेटिक-एसिडमें—ज्वर विकारमें भी बहुत काम

ती मालूम होती है। विछावनमें पायतानेकी ओर सरक जाता है। में रोगीकी जीभ बहुत सूखी रहती है और बाहर निकालनेपर डा-हिलनेकी तरह खडखड आवाज होती है। पपिसमें—रोगी जीभ निकालना चाहता है तो दाँतमें अडती है, या जीभ पती है।

मसानेका अर्बुद—इस रोगकी पहली अवस्थामें पपिस ामदायक है।

शोथ और उदरी—आर्सेनिक अध्याय देखिये। पपिस ं शोथमें रोगीको बहुत अधिक श्वासकष्ट होता है।

विसर्प (इरिसिपिलस) (लैकेसिस अध्याय देखिये)।

मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह)—ज्वर-विकार ा किसी दूसरी बीमारीमें रोगी सोया सोया एकाएक चिल्लाकर रो उठता है या बेहोशीके साथ रोने लगता है—पपिस उपयोगी है। कोई भी उद्भेद (इरपशन) यदि बैठ जाये, यह बीमारी या मस्तिष्क-सम्बन्धी कोई दूसरी बीमारी हो जाये तो यह और भी अधिक उपयोगी है (जिङ्कम और एकिया-रेसिमोसा अध्याय देखिये)।

एपोप्लेक्सी (सन्यास-रोग)—इस रोगमें अगर रोगी बरहयाम हालतमें हो तो पहले—ओपियम, फायदा न होनेपर—पपिस दे।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमें जल-सञ्चय) इस रोग की पहली अवस्थामें जब बच्चा सोया सोया एकाएक चिल्ला उठता

है और तकियेपर माथा इधरसे उधर किया करता है, उस समय—एपिस लाभदायक है। इसमें शरीरमें एक ओर अकड़न हुआ करती है और दूसरी ओरका हिस्सा लकवा मार जानेकी तरह सुन्न पडा रहता है। (हेलिबोरस, जिङ्कम और साइप्रिपिडियम देखिये)। एपिसमें—माथेमें पानी इकट्ठा होता है, माथेमें पानी इकट्ठा होनेपर—एपिसके बाद एपोसाइनमका प्रयोग करें।

अतिसार—गरमीके दिनोंका अतिसार। टाइफायड ज्वरके साथ पतले दस्त आना, बच्चोंका पुराना अतिसार और बच्चोंके हैजामें मस्तिष्कमें जल-सचयकी (Hydrocephaloid) अवस्थामें यह—एपिस लाभदायक है। एपिसमें—थोडा भी हिलने डोलनेपर मल निकल पडता है, मानो मल-द्वारमें दरार-सी बनी रहती है। मल आप ही आप चू-कर निकलता है, पाखाना होनेके समय रोगीको कुछ भी मालूम नहीं होता, थोडा-सा भी दवाव पेट पर डालनेसे तकलीफ मालूम होती है और रोगी चौंक उठता है। एपिसमें—मलका रग पीला, हरा, आम-मिला, साफ सुथरे पानीकी तरह, कभी कभी खून मिला रहता है। मलमें कभी कभी बदबू भी रहती है। (साफ पानीको तरह मल—मर्क-डलसिस)।

आमवात—एपिसके प्राय सभी उद्भेदोंका रग गुलाबी रहता है (मानो दूधमें अलता घोल दिया गया है)। गुलाबी रगके या कुछ सफेद रगके चकत्तेकी तरह-चमडेपर छुलपित्ती निकलती है। वह बहुत खुजलाती है, जलन होती है और उसमें डक मारते

की तरह दर्द होता है। खुजली सन्ध्याके ४ बजेसे बढती है। इन सब लक्षणों में—पपिस लाभदायक है।

आर्टिका इयुरेन्स—ϕ—१x, यह प्राय सब तरहकी क्षुलपित्तियोंमें उपयोगी है। क्षुलपित्तियोंमें बहुत खुजली होती है, जलन और कांटा गडनेकी तरह दर्द रहता है, रोगी लगातार उनपर हाथ फेरता है। हाथ, मुँह और छातीका चमडा फूल जाता है, गरम हो उठता है, फुन्सियाँ निकलती है, सोनेपर ये दाने गायब हो जाते हैं, पर बिछावनसे उठते ही फिर निकल आते है। चिंगडी वगैरह छालदार मछलियाँ (shell fish) खानेके कारण—आमवात।

क्लोरम—उच्च शक्ति, जिस स्थानपर रोगके कारणका ठीक ठीक पता न लगे, वहाँ इसका प्रयोग होता है और फायदा भी करता है।

बोविष्ट—अतिसारके साथ आमवात, बिछावनकी गरमीसे खुजलीका बढना।

इसके अलावा—पाकाशयकी गडबडीके लक्षणके साथ आमवात होनेपर—एण्टिम-क्रूड, रक्तहीन हो जानेके कारण आमवात होनेपर, सर्दीमें रोगका बढना, उत्तापसे घटना लक्षणमें—आर्सेनिक, गर्भावस्थाके आमवातमें—डल्किस। पुराने आमवातमें जाडा आरम्भ होते ही रोगलक्षण पैदा हो जाते हैं—हल्का और रियुमेक्स। ऋतुज्वरके बाद—क्रियोजोट। मांस खानेपर दाने निकलने हों—पल्स और रूटा। खुजलीके साथ जलन और दर्द—

एसिड-नाइट्रिक प्रभृति दवाएँ भी लक्षण-भेदके अनुसार लाभ पहुँचाया करती हैं।

मेडुसा—हाथ और मुख, कन्धेमें, छातीमें, छालेकी तरह उद्भेद, आमवात, आँख, नाक, मुँह और कानोंका फूलना।

बहुत दिनोंके पुराने आमवातमें—हाइड्रैस्टिस १x, ३x निम्न-शक्तिकी परीक्षा करें (देशी हलदीसे बनी दवाएँ भी लाभ करती हैं।)

सविराम ज्वरके साथ आमवात—इलाटिरियम, नैट्रम आदि दवाएँ देखिये।

प्रदाह—डक मारनेकी तरह तकलीफ, दर्द, जलन, सूजन सूजी हुई जगह लाल होना,—वह चाहे जहाँ हो,—गलेमें, मलद्वारमें बवासीरमें, अँगुलवेढामें, कैन्सरमें, डिपथीरियामें—ये ऊपर बताये कई लक्षण रहनेपर—एपिस दें। कभी कभी ऐसा भी होता है कि डक मारनेकी तरह दर्द न होकर केवल एपिसकी चरित्रगत सूजन ही रहती है—एपिस उपयोगी होता है। एपिसकी सूजन सभी जगहें होती हैं; उनमें—मुख-गह्वर, तालुमूल, उपजिह्वा, गला मुँह, आँख इत्यादि पर ही बीमारीका दौरा ज्यादा होता है। मल द्वार और अण्डकोषकी सूजनमें भी—एपिस लाभ करता है, जीभ की जड़के सभी स्थानोंके (स्वरयन्त्र-मुख, कण्ठ, कोमल-तालु प्रदाहमें और सूजनमें,—सूजन खूब जल्दी जल्दी बढती रहने और साँस लेने छोड़ने और खाने पीनेमें तकलीफ रहनेपर

पिसका प्रयोग होना चाहिये। (डिफ्थीरियामें भी कितनी ही
र ये सब लक्षण रहते हैं। आँख, मुँह, नाक, कान या समूचे
हरेकी सूजनमें—मेडुसा (Medusa)

पपिसमें—गलनलीका सकोचनभाव और उसमें डक मारनेकी
रह दर्द रहता है। उपजिह्वा और गलेके भीतरी भागमें और
गहरी थैलीकी तरह (sac-like) स्थानमें सूजन पैदा होती है।
सी तरह तालुमूल भी फूलता है, तालुमूल (tonsil) के ऊपर
घाव हो जाता है—इसके अलावा—ऐसा मालूम होता है, कि
गलेके भीतर मछलीका काँटा गड रहा है—इस अवस्थामें भी
इससे फायदा होता है। (हिपर, मसिड-नाइट्रिक देखिये)।

डरिसिपिलस (विसर्प)—पपिसकी सभी बीमारियोंका
दौरा अकसर दाहिनी तरफ ही होता है, इसके बाद वह बायीं ओर
चला जाता है। इस बीमारीमें पहले रोगीकी दाहिनी आँखमें बीमारी
होती है, इसके बाद प्रदाह चेहरेके ऊपरसे होता हुआ बाँई ओर
चला जाता है। पपिसकी सूजन—थैलीकी तरह दिखाई देती है
(baggy appearance), उसके भीतर मानो ठीक ठीक पानी
भरा हुआ है, फूली हुई जगह दबाने पर गड्ढा नहीं होता, बहुत दर्द
होता है। दर्द डक मारनेकी तरह और जलन-मिला या ऐसा
मालूम होता है, मानो रोगवाली जगह पर कोई सुई या आलपीन
गड़ा रहा है। रोगी हमेशा कोई ठण्ढी चीज या किसी दूसरी तरह
की ठण्ढी चीज प्रयोग करना चाहता है, ठण्ढे प्रयोगसे तकलीफ

कुछ घटती है (अन्यान्य दवाओंके साथ प्रभेद—बेलेडोना अध्यायमें देखिये)।

आँखकी बीमारी—आँखके भीतर और बाहरका प्रदाह, बहुत जलन और उसके साथ ही डक मारने या कुछ गड़ने की तरह दर्द, पलकें थैलीकी तरह फूल उठती है, लाल हो जाती है, आँख खोल नहीं सकता—आँख बन्द हो जाती है, रोशनी सहन नहीं होती—आँखका भीतरी भाग लाल हो जाता है, कुट-कुटाता है, पानी गिरता है, पीब जमता है और आँख सट जाता है। एपिसमें—आँखकी निचली पलक ही ज्यादा फूलती है, ऊपरी पलक ज्यादा फूलने पर—कैलि-कार्ब, आँखके चारो ओरकी और समूची पलककी सूजनमें—फास्फोरसका प्रयोग होता है। एपिस के आँखका दर्द ठण्डे पानीसे घटता है, यदि गर्म पानीसे घटे—रसटक्स, रसटक्समें—पलक फूलती है (एपिसकी तरह थैली जैसी नहीं फूलती), पीबकी तरह पपड़ी नहीं जमती, आँखका दर्द रातमे बहुत बढ जाता है (एपिसमें—शामको और रातमे बढता है)।

गर्भावस्थामें, दो तीन म्हीनेका गर्भ होनेके समय इस दवाकी निम्न-शक्तिका व्यवहार न करना चाहिये। इससे गर्भस्राव हो सकता है।

वृद्धि—अतिसार, स्वरभग, पेठनका दर्द—सवेरे; ज्वर (सविराम)—तीसरे पहर, सर-दर्द, दर्द, आँख और वक्षकी

बीमारियाँ—रातमें तथा सब तरहकी वृद्धि—तीसरे पहर प्रायः ५ बजे और गरमीसे होती है।

ह्रास—निर्मल हवामें, ठण्डे पानीसे नहाने पर, जलनकी तकलीफ—ठण्ड या ठण्डे पानीके प्रयोगसे।

सम्बन्ध—नैट्रम-म्यूर, Apium virus—anti-toxemia with pus products

बादकी दवा—(follows well) आर्नि, आर्स, ग्रैफा, आयोड, लाइको, पल्स, नैट्रम-म्यूर, स्ट्रैमो, सल्फ।

क्रिया-व्याघातक—(inimical)—रसटक्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसिड-कार्बोल, कैन्थर, इपि, लैके, लैक्टि-एसि, लीडम, नेट्र-म्यूर, प्लैण्टेगो, नमक, मीठी चीज, तेल, प्याज।

क्रम (potency)—६—२०० शक्ति। फारमुला—४।

एपोसाइनम कैनाबिनम्।

(APOCYNUM CANNABINUM)

यह दवा दो तरहकी होती है —

१। एपोसाइनम-एण्ड्रोसिमिफोलियम—वृक्षकी ताजी जड़में इसका मूल अर्क तैयार होता है। साधारणतः वात, गठिया वात, छोटी सन्धियोंका वात और दर्द, पैरका तलवा

गरम हो जाना प्रभृतिके लिये ही इसका अधिक व्यवहार होता है। डा० बोरिक कहते हैं—"इस दवाके बातके लक्षणोंसे बहुत ही आरोग्यकर परिणाम प्राप्त होता है।" इसके बातमें प्राय शरीरकी सभी गाठोंमें दर्द होता है ; पैरकी अँगुलियाँ और तलवेमें भयानक दर्द होता है,हाथ-पैर फूलते हैं,पैरके तलवेमें झुनझुनी होताहै या एक तरहका आलपीन गडनेकी तरह हलका दर्द होता है। इसका एक दूसरा लक्षण है—पैरका तलवा आगकी तरह गरम हो जाता है और उसमे जलन होती है। सलफरमें—यह लक्षण रहने पर भी एपोसाइनमकी बनिस्वत कम है। कैलि-बाइक्रोम, पल्स, मैगनोलि और सलफरकी तरह जगह बदलने वाले दर्दमें भी यह लाभ करता है। क्रम—ϕ से निम्न शक्ति।

२। **एपोसाइनम कैनाबिनम**—कैनाडा और युक्तराज्य प्रभृति स्थानोंमें hemp नामका एक तरहका पौधा होता है (गांजेका वृक्ष)। उसी गाछकी जडसे मूल अर्क तैयार होता है। इसमें ऊपर लिखे एपोसाइनम—एराड्रोसिके कोई भी लक्षण नहीं हैं। यह हमेशा जिन बीमारियोंमें काममें लाया जाता है, उनमेसे कुछका लक्षण नीचे लिखा जाता है। इसकी बीमारीके उपसर्ग सर्दीसे बढते हैं और गरमीसे घटते हैं। (एपिस के विपरीत)।

पेशाबकी बीमारी—पेशाब थोडा, पेशाब रुका, मूत्रकृच्छ्रता, पेशाबमें कष्ट, मूत्राशयका फूलना, शोथ, उदरी, शोथ-रोगमें

तेज प्यास, मिचली, वमन, प्रभृति पाकस्थलीकी उत्तेजना, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, हृत्पिण्डकी कई कड़ी बीमारियाँ इत्यादिमें प्राय इसका व्यवहार होता है।

शोथ और उदरी—आर्सेनिक, हेलिबोरस और आक्सिडेण्ड्रन देखिये।

हृत्पिण्डकी बीमारियाँ—डिजिटेलिस अध्याय देखिये।

हाइड्रोकेफालस (मस्तिष्कमें जल-सञ्चय)—एपिस और जिङ्कम देखिये। इस रोगमें माथेमें पानी इकट्ठा होनेपर और हाइड्रोथोरैक्समें—छातीमें पानी इकट्ठा होनेपर लाभ करता है।

मस्तिष्कमें जल-सञ्चय (Hydrocephalus) रोगकी बाद-वाली अवस्थामें अर्थात् बेहोशी (comatose) और निदान अवस्थामें, एक बच्चेकी मैंने एपोसाइनम-कैनाबिनम—ϕ के द्वारा चिकित्सा कर जान बचायी थी। इस अवस्थामें रोगी प्राय नहीं बचता, दूसरी दवाओंसे चिकित्साकर मेरे हाथों ही कितने ही बच्चे मरे हैं। (जिङ्कम अध्याय देखिये)।

अतिरज:—लगातार रजस्राव या कुछ दिन बन्द रहकर बीच बीचमें बहुत ही ज्यादा रक्तस्राव, इसके साथ ही मिचली, वमन, जीवनी-शक्तिका ह्रास, उठनेपर मूर्च्छाका भाव और स्त्रियोंको ऋतु बन्द होनेकी उमरमें बहुत ज्यादा रजस्राव होनेपर—एपोसाइनम लाभ करता है।

सदृश—एपिस, आर्सेनिक, डिजिटेलिस, हेलिबोरस।

क्रम—ϕ, मात्रा १० बूँद तक। २।३ बूँद मात्रामें दिनमें ३ बार सेवन करना ही यथेष्ट है। पुराने और गौण (secondary) शोथमें—मूल अर्कसे फायदा होता है। ३, ६ और २०० शक्तिका भी व्यवहार होता है। फारमुला—३।

एरालिया रेसिमोसा।

(ARALIA RECEMOSA)

(अमेरिकाका एक तरहका छोटी जातिका वृक्ष)—श्वास-प्रश्वासके यन्त्रोपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। इसीलिये, असली दमा या ब्राङ्काइटिसकी वजहसे हॅफनीकी तरह अवस्था (पहले आँख नाकसे पानी गिरता है। पीछे वह गाढा हो जाता है और दमाकी तरह खिंचाव होता है) और साधारण सर्दी खाँसी में भी इससे बहुत फायदा होता है।

दमा—रोगी किसी तरह भी लेटा नहीं रह सकता, सोते ही श्वासकी तकलीफ बढ़ जाती है। यहाँतक कि उस समय ऐसा मालूम होता है, मानो साँस रुक जायगी, इसीलिये, दिन-रात बैठा रहता है। इसके अलावा इसमें हिलने-डोलनेपर या दो चार कदम चलनेपर भी इसी तरहका श्वास रुकनेका भाव पैदा हो जाता है, रोगीको इस वजहसे भी स्थिर होकर बैठे रहना पड़ता है। डा० जोन्स कहते हैं—एरालियाका रोगी सर झुकाकर, घुटने

और कोहनीपर भार देकर, पट होकर बैठा रहता है। सोना होता है, तो सामने तकिया रखकर, हाथपर हाथरख, बडे कष्टसे थोडा-सा सोता है। एरालियामें—साँस लेनेके समय बहुत तकलीफ होती है, इसीलिये, साँस लेनेके समय सर उठाकर, छाती फैला लेता है, साँस छोडनेके समय सरलता-पूर्वक छोडता है, कोई तकलीफ नहीं होती।

खाँसी—अच्छी तरह सो रहा है, एकाएक नींद खुलकर झाकसे खाँसी आने लगती है, इस तरहकी खाँसी अकसर पहली नींदके बाद ही होती है, खाँसते खाँसते मानो दम घुटने लगता है, किसी तरह भी खाँसी कम नहीं होती, खूब जोरसे खाँसता है, बहुत देरतक खाँसनेके बाद थोडा-सा बल्गम निकलनेपर खाँसी कुछ घटती है, खाँसनेके समय और पहले गलेमें सुरसुरी होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो कोई पदार्थ वहाँ अडा है।

होमियोपैथीमें खाँसीका इलाज बहुत ही मुश्किल है। इसीलिये, कई तरहकी खाँसियोंकी दवाओंका संक्षिप्त विवरण आगे लिखा जाता है —

खाँसी सोनेपर बढती है, रोगी बैठा रहता है —

कोनियम—आक्षेपिक सूखी खाँसी, दिन-रात खाँसता है, पर शामको और रातमें ही अधिक बढती है, गला और छाती फुटफुट करते हैं, गर्भावस्थामें खाँसी, बहुत देरतक खाँसनेके बाद, थोडा-सा बल्गम निकलता है। सोनेपर खाँसी बढती है।

हायोसियामस—रातमें झोंकसे आक्षेपिक खाँसी, सोये रहने पर भयानक खाँसी आया करती है, उठ बैठनेपर घटती है। घर्म बढनेकी वजहसे खाँसी (पसिङ-म्यूर)।

फेलाण्ड्रियम—छातीकी बीचकी हड्डीके पास दाहिनी ओर सुई गडनेकी तरह दर्द, दर्द कन्धेके पास और पीठतक चला जाता है लगातार खाँसी, सबेरे खाँसी बहुत बढ जाती है, सडा बदबूदार बलगम निकलनेके साथ खाँसी, सो नहीं सकता—बैठा रहता है।

सैंगुनेरिया—अम्लकी बीमारीकी वजहसे खाँसी, खाँसीके साथ छातीमें जलन और दर्द, दाहिनी ओर अधिक बीमारी होना, हूप खाँसी या इन्फ्लुएञ्जाके बाद आक्षेपिक खाँसी, हर बरस जाडेके दिनोंमें फिरसे खाँसीका पैदा हो जाना, गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, रातमें सोनेपर खाँसी बहुत बढ जाती है, इसीलिये, बाध्य होकर, उठकर बैठ जाना पडता है और ऊपर तथा नीचेसे वायु निकलता है।

जिङ्कम-मेट—स्वरभंग, बहुत आक्षेपिक खाँसी, मीठी चीज खानेपर खाँसी बढ जाती है, खाँसनेके समय बच्चा लिङ्गमें हाथ देता है, छाती जकड जाती है, वक्षोदर-मध्यस्थपेशीके स्थानमें जलन होती है, फेनकी तरह बलगम निकलता है, सोनेपर खाँसी बढ़ती है, उठ बैठने पर घटती है (बैठनेपर घटना—आर्स, लोरोसि, हायोसि.)।

इसके अलावा—एण्टिम-आर्स, एरालिया, ग्रण्डीलिया, नैट्रम-सल्फ, फास्फोरस, पल्सेटिला, सैम्बुकस, स्पञ्जिया, स्टिक्टा प्रभृति

दवाओंमें भी सोनेपर खाँसी बढ जाती है, उठ बैठनेपर कुछ समय के लिये घटती है।

बैठे रहनेपर खाँसीका बढना, सोनेपर घटना —

केल्केरिया-फास—बच्चोंकी सांस बन्द होकर आक्षेपिक खाँसी सोनेपर खाँसी कम पड जाती है। गला फँसना, वाएँ फेफडेके नीचे दर्द।

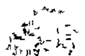
केलि-ब्राइकोम—इसके लक्षण—गला फसना, घरघर खाँसी, आक्षेपिक खाँसी, बहुत ज्यादा मात्रामें पीले रंगका बलगम, गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी; खाली बदन रहनेपर खाँसीका बढना, खाँसीके साथ छातीके बीचकी हड्डीमें दर्द। इस दवाकी खाँसी कितनी ही बार लेटने पर घट जाती है (रातमें सोनेपर घटना—अर्जेण्ट-मेट।)

सोरिनम—दमा, कलेजेमें दर्दके साथ सूखी खाँसी, सोनेपर घटना।

मैंगेनम-एसेटिकम—पुराना स्वरभंग, स्वरयन्त्रका टियुबरक्यु-लोसिस (Laryngeal tuberculosis), खाँसी सन्ध्यामें बढती है और सोनेपर घटती है। गलकोषमें अर्थात लैरिङ्क्समें—डंक मारने तरह दर्द, दर्द कानतक चला आता है।

सिनापिस-नाइग्रा—सुरसुरी होकर खाँसी, सूखी खाँसी, सोने पर खाँसी कम पडती है।

युपेटोरियम-पर्फो—चित सोनेपर खाँसी बढती है, किसी करवट सोनेपर घटती है।



नक्स-वोमिका—चित्त सोनेपर खाँसी, पट सोनेपर घटना।

दाहिनी करवट सोनेपर खाँसीका बढ़ना—एमोन-म्यूर, पलिड बेञ्जो, मार्क-वाइवस, सेनेगा, स्टैनम।

लगातार खाँसी, खाँसी रुकती नहीं —

कास्टिकम—कम हो या अधिक—खाँसी हमेशा ही आती है, बोलने और साँस छोड़नेपर खाँसी बढती है। बीडी और चुरुक धूएँको पीनेकी वजहसे खाँसी।

इग्नेशिया—स्नायविक खाँसी, खाँसी हमेशा ही रहती है, जितना ही खाँसता है, उतनी ही खाँसनेकी इच्छा होती है।

मेन्था-पिपरेटा—उत्तेजक खाँसी, ठण्डी हवा लगनेपर और तम्बाकू खानेपर खाँसी बढती है।

रियुमेक्स—गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, ठुसठुसी खाँसी, रह रह कर झोंकसे खाँसी, रातमें लगातार खाँसी आती है।

स्टिक्टा—अँगरेजीमें इसको "minute gun" खाँसी कहते हैं, रोगी प्राय प्रत्येक मिनिट एक बार खाँसता है, छोटी माताके बाद लगातार खाँसी और स्नायविक खाँसीमें इससे ज्यादा लाभ होता है (कोरालियममें भी "minute gun" खाँसी होती है)।

हूप-खाँसीमें मुँह नीला होता है।—कोरैलियम-रूब्रम, कूप्रम, इपिकाक, मिफाइटिस (सब तरहकी हूप खाँसीमें—"टिंचर-पर्टुसिन— १० से ३०-४० बूँद मात्रामे, दूधके साथ मिलाकर दिनमें ३।४ बार सेवन करनेपर बहुतसे आदमियोंको फायदा होता है। एक हफ्तेमें

फ़ायदा मालूम होता है—यह एलोपैथिक पेटेण्ट दवा है)। पार्टुसिन-२०० शक्तिका लाभदायक है।

हूप-खाँसीमें रक्तस्राव —

आर्निका—खाँसीके साथ नाकसे काले रंगका रक्तस्राव, आँखसे रक्तस्राव—(आँखसे पानी गिरनेके साथ केवल एक दिन खाँसी—यूफ्रेशिया)।

बेलेडोना—माथा खूब गरम, नाक अथवा आँखसे खून गिरता है।

कोरैलियम रूब्रम—रह रहकर भयानक खाँसीका दौरा होता है। चेहरा नीला हो जाता है, लडका मानो कातर हो पडता है। बलगम सख्त ढेलेकी तरह, बलगम या जो कुछ खाता है, उसे ही वमनकर देता है, कभी कभी मुँहकी राहसे खून भी आता है (ड्रोसेरा अध्याय देखिये)।

क्रोटेलस होरिडस—हृत्पिण्डकी कमजोरीके साथ बहुत दुःखना, चेहरा नीला और फूला फूला दिखाई देता है, आँख, कान और मसूढ़ेसे रक्तस्राव होता है (सब द्वारोंसे रक्तस्राव—ड्रोसेरा)।

कार्बसिनेला—इसका अध्याय देखिये।

ड्रोसेरा—नाक-मुँहसे रक्तस्राव, खाँसीकी धमकसे दम रुक जानेकी तरह हो जाता है, खाँसनेके साथ हाथसे कलेजेके दोनों तरफ दबा रखता है (३० शक्तिकी एक मात्रासे अधिक न प्रयोग कर, एक मात्रा देकर ५।७ दिन कोई दवा न दें—हनिमैन ; पर कोई कोई १x शक्ति बार बार देने कहते हैं और कोई बेलेडोना—

निम्न-शक्ति—३x के साथ पर्यायक्रमसे देनेकी सलाह देते हैं। देखा गया है, कि इससे शीघ्र ही फायदा होता है।)

इपिकाक—खाँसी बीचबीचमें झोंकसे आती है, खाँसीकी धमक से पाखाना या वमन हो जाता है, मुँह नीला दिखाई देता है, आँख, नाक और फेफड़ेमें रक्तस्राव होता है।

ब्रोमियम—इसको बराबर १०।१२ दिनोंतक प्रयोग करना पडता है।

सिना—डा० लिलियेन्थेल कहते हैं—हूपिङ्ग खाँसीमें लडका बोलने और हिलनेसे डरता है, क्योंकि उनसे उसे खाँसीका दौरा हो जाता है।

स्नायविक खाँसी —

एगरिकस—एकाएक खाँसी आती है, बेहोशकी तरह हो जाता है, रक्तस्राव होता है।

एम्ब्राग्रिसिया—आक्षेपिक खाँसी, सवेरेके वक्त अधिक खाँसी आती है। कई डकारें आती हैं, इसमे खाँसी कम पड जाती है।

चायना—सूखी खाँसी, झोंकसे खाँसी, कलेजा धडकता है, कसकर कपडा नहीं पहना जाता।

सिमिसिफ्यूगा—जितनी ही बार बोलनेकी चेष्टा करता है, उतनी ही बार खाँसी आती है। गलेमें सुरसुरी होती है, खाँसी सूखी, रातमे बढना।

काफिया—उद्वेग और अनिद्राके साथ खांसी।

— लैकेसिस—औरतोका ऋतुस्राव बन्द होनेकी उमरमे खाँसी।

स्टिक्टा—बिना तकलीफके लगातार खुसखुसी खाँसी।

पाकस्थलीके विकारकी वजहसे खांसी (stomach cough)-
ब्रायोनिया, कोनियम, फास्फोरस, एसिड-फास, म्यूरेक्स।

वर्षा और सीड़भरी ऋतुमें खाँसीका बढना —

कैल्केरिया-कार्ब—पानीमें भींजनेपर या तर जगहमें रहनेपर सभी उपसर्ग बढ जाते हैं।

डलकामारा—शीत या वर्षा होनेपर खाँसी बढती है।

इपिकाक—बच्चोंका ब्राङ्कोनिमोनिया, गरमी और बरसात मिली ऋतुमें रोगका पैदा होना।

नेट्रम-सल्फ—बरसातमें और रातके ३ बजेसे ४ बजेके बाचमे खाँसीका बढना।

रसटक्स—बरसातमें खासीका बढना।

खाँसी ढीली और घरघर आवाज़ —

एमोन-कार्ब—छातीमें बहुत ज्यादा परिमाणमें सर्दी जमकर घरघर आवाज होती है; पर खाँसनेपर कुछ नहीं निकलता है या निकलता है तो बडे कष्टसे निकलता है, श्वासमें तकलीफ होती है।

एमोन-म्यूर—गला घरघर करता है और बहुत ज्यादा मात्रामें बलगम निकलता है।

एण्टिम-आर्स—ढीली, घरघर खाँसी, बहुत कमजोरी और बेचैनी।

एण्टिम-टार्ट—घरघर सर्दीके साथ बहुत सुस्ती, शरीरमें ठण्डा पसीना, किसी तरहका दर्द नहीं होता।

चेलिडोनियम—छातीमे घरघर सर्दी, बलगम बडे कष्टसे निकलता है। दाहिने कन्धेमें दर्द, चेहरेका रग लाल, जोर जोरसे सास छोडता है।

हिपर-सलफर—कलेजेमें सर्दी भरी हुई, खाँसता है, पर बलगम सहजमें निकाल नहीं सकता, बहुत ज्यादा पसीना, ठगडी हवा लगने और अधिकाश स्थानोमे सबेरे खासी बढती है।

इपिकाक—छातीमे साँय साँय या खूब जोरकी घरघर आवाज होती है, वमन होता है, वमनके साथ बलगम निकलता है।

मिफाइटिस—हूप खासीकी तरह आक्षेपिक खाँसी, छातीमें श्लेष्माकी घरघर आवाज।

मर्करियस-वाइवस—बिछावनकी गरमीसे, दाहिनी करवट सोने पर खाँसीका बढना। जब खाँसता है तब खाँसीका झोक दो बार होता है।

सेनेगा—छातीमे बलगमकी घरघराहट होती है। दाहिनी ओरका निमोनिया—छातीमे धक्का देनेकी तरह या छेदनेकी तरह दर्द, साँस खींचनेपर या खाँसनेपर बहुत दर्द मालूम होता है।

साइलिसिया—यक्ष्मा (phthisis) की अन्तिम अवस्थामें जब फेफडेमे पीब होता है, वृद्ध मनुष्योका ब्राङ्को निमोनिया, ढेरका ढेर बदबूदार बलगम निकलता है।

स्कुइला—ढीली, घरघर करनेवाली आक्षेपिक खाँसी, सहजमें बलगम नहीं निकलता, छातीमे दोनों ओर, खासकर बाईं ओर तेज दर्द।

ऐंटेड्रम-पल्व—वृद्ध मनुष्योंकी ब्राङ्काइटिस, छातीमें घरघर आवाज, बलगम नहीं निकाल सकता, शरीरमें ठण्डा पसीना, बहुत कमजोरी, सुस्ती।

छींकके साथ खाँसी —

बेडियागा—खाँसते ही छींक आती है।

ब्रायोनिया—खाँसीके समय दो बार छींक।

ओस्मियम—मुँहके भीतर सूतकी तरह सर्दी रहती हैं, रोगी निकाल फेंकनेकी चेष्टा करता है, खाँसता है, उससे वमन हो जाता है, पर खाँसकर निकाल फेंक नहीं सकता, पीछे छींक आती है—छींकनेपर बलगम निकल जाता है।

स्क्विला—बहुत खाँसी, आँखसे पानी गिरता है और छींक आया करती है।

आँखसे पानी गिरनेके साथ खाँसी—एलियम-सिपा, इयुफ्रेशिया, नेट्रम-म्यूर, पल्सेटिला, सैबाडिला, स्क्विला।

सनिपात ज्वरके साथ खाँसी—ब्रायोनिया, इयुपेटोरियम-पर्फो, लाइकोपोडियम, रसटक्स, एकोनाइट।

बहुत सर-दर्दके साथ खाँसी—ब्रायोनिया, कैप्सिकम, लाइको, नेट्रम-म्यूर, नक्स-वोमिका।

अजीर्णकी बीमारीके साथ खाँसी—नक्स-वोमिका, कोनियम।

खाँसीकी धमकसे पेशाब निकलना —

कास्टिकम—सूखी आक्षेपिक खाँसीके साथ

नैट्रम-म्यूर—खाँसीके साफ पेशाव निकालना और सरदर्द।

नक्स-वोमिका—सवेरेके वक्तकी खाँसी, इसके साथ ही अन जानमें पेशाव निकलना।

फास्फोरस—प्रवल खाँसीके साथ अनजानमे पेशाव।

स्कुइला—घरघर सर्दी, छातीमें छेदनेकी तरह दर्द, अनजानमें बूँद बूँद पेशाव निकलना।

वेरेट्रम-एल्बम—हपिङ्ग खाँसीमे खाँसनेके समय पेशाव निकलना।

पहली नींदके बाद खाँसी बढना—एगेरिकस, एरालिया, हायोसियामस, लैकेसिस।

आधी रातमें खाँसी—आर्सेनिक, ड्रोसेरा, रियुमेक्स, सैम्बुस्यजि।

रात ३ बजे खाँसी—एमोन-कार्ब, कैलि-कार्ब, नैट्रम-सल्फ।

प्रथम नींद खुलते ही जागनेपर—सिना, काकुलस, सिपिया।

नींद खुलने वादसे शय्यासे उठनेके पहले तक—एम्ब्राग्रिसिया, काकुलस, कैलि-वाइक्रोम, नक्स-वोमिका, सिपिया।

खाँसीकी साधारण वृद्धि —

दिनके समय—इयुफ्रेसि, रातमें—कक्कस, स्टैनम, रातके ११ बजे—वेल, ३—४ बजेतकके बीचमें—कैलि-कार्ब, एक नींदके बाद—लैके, सवेरे नींद खुलनेके बाद—पल्सूमि, सोने

र—कोनि, पसिड-नाई, हायोसि चलनेपर—मैंगेनम,—सर्दीके दिनोंमें—कक्कस, बैराइटा, पसिड नाई ;—प्रत्येक वर्ष जाडेके दिनो में—पेट्रोलि, सोरिनम, सैंगु सर्दीसे गरमीमें जानेपर—पसिड-नाई, अर्जेण्ट, पण्टिम-टार्ट, गरमीसे ठण्डमें कैलि-कार्ब, फास, हिलने-डोलनेपर—ब्रायो, लम्बी साँस लेनेपर—कोनि, लम्बी साँस छोड़नेपर—कास्टि, ठण्डा पानी पीनेपर—स्पञ्जि, हँसने या बोलनेपर—अर्जेण्ट-मेट, मैंगेनम, हायोसि, जितना ही खाँसता है उतनी ही खाँसी बढती है—इग्ने, सोया सोया खाँसता है, पर नींद नहीं खुलती-कैमो, लैके,—थोडे भी परिश्रमसे—कोन्ना, वंशगत यक्ष्मा रोगीका—पसिड-नाई, पसिड आकजै, नहाने बाद-पण्टिम्-ड ; छोटी मातके बाद—स्टिक्टा, ड्रोसे, कालि-कार्ब, ब्राङ्का-इटिस, निमोनिया, प्लुरिसि, क्रूप इत्यादि बीमारियाँ होनेके कारण फफडेके दोपसे, पुरानी खाँसी—बैसिलिनम।

खाँसी घटना —

बैठनेपर—हायोसि, आर्स, लोरोसि, सोनेपर—सोरि, मैंगे हायसे छाती दबानेपर—ब्रायो, फास, नेट्रम-सल्फ ;—ठण्डा पानी पीनेपर—कास्टि, कुप्रम, एक हायसे छाती और दूसरेसे सर दबा रखनेपर—ड्रोसे, गरमीसे—कैलि-कार्ब, फास, कैलि-बाई, पट सोनेपर—बैराइटा, मेडोरिन, ठण्डमें—काक्कस, पल्स, धीरे धीरे चलनेपर—फेरम।

बल्गमका स्वाद :—मीठा—स्टैनम, खट्टा—मैंगु, फास्नि, फेल्सफिड्र, खारा—कैल्के, नमकीन—कैलि-आयोड।

खाँसीके समयकी अवस्था —

शरीर नीला और ठण्डा हो जाता है—लोरोसि ; ओठ पीला हो जाता है—डिजि छातीमें दर्द पीठतक जाता है—फेलाण्ड्रि, कैलि-आयोड, अनजानमें पेशाव होता है—कास्टि, सेनेगा, छातीमें दर्द होता है—ब्रायो, फास, हाथ पैर या दूसरी जगह दर्द होता है—कैप्सि, बलगम निकल जानेपर छातीमें जलन होती है—ककस, खायी हुई चीजकी कै होती है—फेरम, मलद्वारमें दर्द होता है—लैके, पाखाना हो जाता है—स्कुइला या सिली,— दाहिने पखौरेकी हड्डी (scapula) में दर्द—चेलिडोन, डकार—सैंगु।

श्वेत-प्रदर—लसदार श्लेष्माकी तरह या पानीकी तरह स्रावसे योनिद्वारकी खाल उधड जाती है, इसमें—परालिया—लाभ करता है।

सदृश—आर्स-आयोड,एलियम-सिपा, सैम्बुकस, सिनैपिनायग्रा।

क्रम—ϕ-६, १२, ३० शक्ति। फारमुला—३।

अर्जेण्टम मेटालिकम।

(ARGENTUM METALICUM)

(शुद्ध चाँदीसे तैयार होता है)। महात्मा हनिमैनने पहले पहल इसकी परीक्षा की है। हिस्टीरिया रोगसे ग्रस्त, स्नायविक

स्त्री और जो पुरुष वीर्य-क्षय कर कमजोर हो पड़े हैं, उनके लिये यह अधिक उपयोगी है।

पाचन-यन्त्र और दूसरी दूसरी जगहोंकी श्लैष्मिक झिल्ली और हड्डी, उपास्थि, बन्धनी (ligaments), स्वरयन्त्र और मूत्रयन्त्रपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। रोगी दुबला-पतला, लम्बा और उत्तेजित स्वभावका होता है, २। लगभग रोज रातमें लिङ्गमें कड़ापन आये बिना ही स्वप्नदोष हो जाता है, हस्तमैथुनका दुष्परिणाम, लिङ्ग शिथिल और छोटा ; ३। गवैये और व्याख्यान देनेवालोंका गला फसना, ४। खाँसने या निगलनेपर गलेमें तकलीफ, ५। हँसनेपर खाँसी ; ६। पकाया हुआ स्टार्च या चाशनीकी तरह लसदार बलगम गलेमें रुका होता है, पर वह सहजमें ही निकल जाता है, ७, नाकमें पानीकी तरह नयी सर्दीके साथ छींक, ८। ऋतु बन्द होनेके समयकी उमरमें बहुत अधिक रजःस्राव ; ६। बायें डिम्बाशय (ovary) में दर्दके साथ जरायुका बाहर निकल आना (दाहिने डिम्बाशयमें—पैलेडियम), १०। बाईं ओरकी छातीमें बहुत कमजोरी मालूम होना, ११। सुस्ती—हमेशा सोये रहनेकी इच्छा।

इसके रोगीके पैर फूलते हैं, निम्नाङ्ग घुटनेमें कुछ भी ताकत नहीं रहती, प्रत्येक दिन क्षय-ज्वर (Hectic fever) की तरह होता है। दिनके १ बजे ज्वर आता है और २।१ घण्टा रहकर छूट जाता है

याददाश्त गायब हो जाती है, बात कहता कहता भूल जाता है और चुपचाप पडा पडता है, उमर जितनी रहती है, उससे कहीं अधिक उमर मालूम होती है, स्वभाव चिडचिड़ा, किसीके साथ बात करना पसन्द नहीं करता, बेचैनी और दुश्चिन्ताकी वजहसे एक जगह पर रह नहीं सकता।

दर्द—शरीरके किसी स्थानमे भी दर्द क्यों न हो (अधिकांश स्थानोंमे बायीं ओर), यह क्रमशः माथे तक चढता जाता है, दर्द धीरे धीरे बढता है, चरम-सीमापर जा पहुँचता है, इसके बाद एकाएक घट जाता है।

खाँसी—स्वरयंत्र, कण्ठनली या वायुनली, किसी भी स्थानकी पुरानी बीमारीमें चाशनीकी तरह बलगम जमा रहता है, रोगी उसे बार बार खाँसकर निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करता है। जोरसे हँसने या पढ़नेपर खाँसी आती है।

नये या पुराने ... (Laryngi...
तथा व्याख्यान दे... फस जानेप...
अथवा गलेके ... तरह
मेटालिकम ... एक ...
जब खाँसता है, ... दर्द
जब खाता पीता ... त...
हँसने, बोलने
आना इसका

पेशावकी बीमारी—बहुमूत्र (Diabetes insipidus) में बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब, पेशाबका रंग गदला, उसमें मीठी गन्ध।

स्त्री-रोग—बाएँ डिम्बकोष (left ovary) की बीमारी की यह एक प्रधान दवा है। बाईं ओरके डिम्बकोषमें ऐसा मालूम होता है, कि वह खूब बडा हो गया है (दाहिने डिम्बकोषमें—अर्जेण्ट-नाइट्रि), वहाँ दर्द, दर्द कमर और बाये उरू तक चला जाता है। दर्दके साथ जरायु बाहर निकल पडता है (prolapsus), पीले रंगका प्रदरका स्राव होता है, स्राव जहाँ लगता है, वहाँकी खाल उधड जाती है, स्रावमें बदबू रहती है। जरायु-ग्रीवा का (cervix) जख्म और सूजन, बदबूदार स्राव जाना और जरायुके कैन्सरमें भी इससे सामयिक लाभ होता है (लेपिस और राइयम देखिये), ऋतु बन्द रहता है। समूचे तलपेटमें दर्द रहता है।

पु०—जननेन्द्रियकी बीमारी—अण्डकोषमें यदि कुचल जानेकी तरह दर्द मालूम हो और लिङ्गमें कडापन आये बिना ही अनजानमें वीर्यपात या स्वप्नदोष हो तो इससे फायदा होगा। पुराने ग्लीट रोगमें गाढा स्राव निकलता है, पर जलन और दर्द नहीं रहता। (हाइड्रैस्टिस)।

अतिसार—मलद्वारके पास लगातार वेग, पाखाने जाता है, पर पाखाना बहुत थोडा और पतला होता है, कभी सूखी बालूकी तरह पाखाना होता है।

यादृदाश्त गायब हो जाती है, बात कहता कहता भूल जाता है और चुपचाप पड़ा रहता है, उमर जितनी रहती है, उससे कहीं अधिक उमर मालूम होती है, स्वभाव चिड़चिड़ा, किसीके साथ बात करना पसन्द नहीं करता, बेचैनी और दुश्चिन्ताकी वजहसे एक जगह पर रह नहीं सकता।

दर्द—शरीरके किसी स्थानमें भी दर्द क्यों न हो (अधिकांश स्थानोंमें बायीं ओर), यह क्रमशः माथे तक चढ़ता जाता है। दर्द धीरे धीरे बढ़ता है, चरम-सीमापर जा पहुँचता है, इसके बाद एकाएक घट जाता है।

खाँसी—स्वरयन्त्र, कण्ठनली या वायुनली, किसी स्थानकी पुरानी बीमारीमें चाशनीकी तरह बलगम जमा रहता है, रोगी उसे बार बार खाँसकर निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करता है। जोरसे हँसने या पढ़नेपर खाँसी आती है।

नये या पुराने स्वरयन्त्र प्रदाहमें (Laryngitis) और गायकों तथा व्याख्यान देनेवालोंका गला फँस जानेपर और स्वरयन्त्र अथवा गलेके भीतर होनेवाले घावकी तरह दर्दमें—अर्जेण्ट मेटालिकम फायदा करता है। इसकी एक विशेषता यह है कि रोगी जब खाँसता है, तभी उसे उस तरहका दर्द अनुभव होता है। जब खाता पीता है, उस समय किसी तरहका दर्द नहीं होता। हँसने, बोलने अथवा जोरसे पढ़नेपर, या गानेपर खाँसी पैदा हो जाना इसका एक दूसरा लक्षण है।

पेशावकी बीमारी—बहुमूत्र (Diabetes insipidus) में बार बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाव, पेशावका रंग गदला, उसमें मीठी गन्ध ।

स्त्री-रोग—बाएँ डिम्बकोष (left ovary) की बीमारी की यह एक प्रधान दवा है । बाईं ओरके डिम्बकोषमें ऐसा मालूम होता है, कि वह खूब बड़ा हो गया है (दाहिने डिम्बकोषमें—अर्जेण्ट-नाइट्रि), वहाँ दर्द, दर्द कमर और बाये उरू तक चला जाता है । दर्दके साथ जरायु बाहर निकल पड़ता है (prolapsus), पीले रंगका प्रदरका स्राव होता है, स्राव जहाँ लगता है, यहाँकी खाल उधड़ जाती है, स्रावमें बदबू रहती है । जरायु-ग्रीवा का (cervix) जख्म और सूजन, बदबूदार स्राव जाना और जरायुके कैन्सरमें भी इससे सामयिक लाभ होता है (लेपिस और रेडियम देखिये), ऋतु बन्द रहता है । समूचे तलपेटमें दर्द रहता है ।

पु०-जननेन्द्रियकी बीमारी—अण्डकोषमें यदि कुचल जानेकी तरह दर्द मालूम हो और लिङ्गमें कड़ापन आये बिना ही अनजानमें वीर्यपात या स्वप्नदोष हो तो इससे फायदा होगा । पुराने ग्लीट रोगमें गाढ़ा स्राव निकलता है, पर जलन और दर्द नहीं रहता । (हाइड्रैस्टिस) ।

अतिसार—मलद्वारके पास लगातार वेग, पाखाने जाता है, पर पाखाना बहुत थोड़ा और पतला होता है, कभी सूखे साग्की तरह पाखाना होता है ।

वात—जोड, कोहनी और घुटनेपर रोगका आक्रमण होता है। पैरोंमें कमजोरी—पैर काँपते हैं, सामनेवाले बाहुका आंशिक पक्षाघात, पँडी फूल जाती है, लेखकोंकी अँगुलियाँ काँपती हैं (writers cramp) पीठमें दर्द रहता है, कुबडा होकर चलता है।

वृद्धि—छूनेपर, दो पहरमें।

ह्रास—खुली हवामें, खाँसनेपर, रातमें सोनेपर खाँसी (हायोसियामसके विपरीत लक्षण)।

बादकी दवा (follows well)—केल्के, पल्स, सिपि।

सदृश—पेल्यूमिनाके बाद इसके प्रयोगसे खूब लाभ होता है हँसनेसे पैदा हुई खाँसीमें—स्टैनमके और डिम्बकोषकी बीमारीमें—पलेडियमके सदृश दवा है।

प्रतिविष औषध (antidote)—पल्स, मर्क्युरियस।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—६-३० और २०० शक्ति। फारमुला—७

अर्जेण्टम नाइट्रिकम।

(ARGENTUM NITRICUM)

(कास्टिक, नाइट्रेट आफ सिल्वर)—पाकस्थली, आँत मस्तिष्क, आँख, मूत्रयंत्र और जननेन्द्रियके रोगमें ही इसका अधिक व्यवहार होता है। रक्तपर इसकी क्रिया ज्यादा होती है। डा

लेन कहते हैं—जब कोई सूखी, क्षीण-देह, क्षय हुआ मास (दुबला), सा हुआ चेहरा, गढेमें धँसी आखें और वृद्धोंकी तरह शरीरवाला नुष्य दिखाई दे, तो उसी समय अर्जेण्ट-नाइट्रिको स्मरण करना चाहिये। (सिकेलि) इसका रोगी हमेशा अपनी बीमारी और अवस्थाकी बातें कहा करता है और बात-चीतके लिये हमेशा ही एक आदमी चाहता है। अर्जेण्टसे तेज प्रदाह उत्पन्न होकर—गला, पाकस्थली और अन्यान्य सभी स्थानोंकी श्लैष्मिक झिल्लीमें जखम हो जाता है। लाल रक्तकण सब नष्ट हो जाते हैं, और शरीरका क्षय हो जाता है, शारीरिक उत्तापका ह्रास हो जाता है, पहले धनु-ष्टंकारकी तरह अकड़न होकर इसके बाद पक्षाघात हो जाता है। श्लैष्मिक झिल्लीमें प्रदाह होनेपर—उसमें तेज दर्द होता है और श्लेष्मा तथा पीब-मिला स्राव होता है। इसका रोगी किसी काममें हाथ नहीं दिया चाहता, सोचता है, कि उसको इस काममें सफ-लता न मिलेगी।

चरित्रगत लक्षण —

१। सब कामोंमें ही जल्दबाज, खूब जल्दी जल्दी सब काम करता है, उद्विग्न, उत्तेजित और स्नायविक रहता है। २। किसी जगह जाना होता है तो पाखाना लग आता है, ३। पुराने मन्दाग्नि रोगके रोगी; ४। पुष्ट भोजनकी कमीके कारण कोई बीमारी पैदा हो जाना; ५। अधकपारीका सर-दर्द; जोरसे बाँधनेपर घटता है; ६। तुरन्तके जनमे बच्चेका आँखका प्रदाह; ७। पेटमें इतना वायु होता है, कि मालूम होता है, कि पेट फट जायगा,

वात—जोड, कोहनी और घुटनेपर रोगका आक्रमण होता है। पैरोंमें कमजोरी—पैर काँपते है, सामनेवाले बाहुका आंशिक पक्षाघात, एँडी फूल जाती है, लेखकोंकी अँगुलियाँ काँपती है (writers cramp) पीठमें दर्द रहता है, कुबडा होकर चलता है।

वृद्धि—छूनेपर, दो पहरमें।

ह्रास—खुली हवामे, खाँसनेपर, रातमें सोनेपर खाँसी (हायो सियामसके विपरीत लक्षण)।

बादकी दवा (follows well)—केल्के, पल्स, सिपि।

सदृश—पेल्यूमिनाके बाद इसके प्रयोगसे खूब लाभ होता है हँसनेसे पैदा हुई खाँसीमें—स्टैनमके और डिम्बकोषकी बीमारीमें—पलेडियमके सदृश दवा है।

प्रतिविष औषध (antidote)—पल्स, मर्कुरियस।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—६-३० और २०० शक्ति। फारमुला—७

अर्जेण्टम नाइट्रिकम।

(ARGENTUM NITRICUM)

(कास्टिक, नाइट्रेट आफ सिलवर)—पाकस्थली, आँत मस्तिष्क, आँख, मूत्रयंत्र और जननेन्द्रियके रोगमे ही इसका अधिक व्यवहार होता है। रक्तपर इसकी क्रिया ज्यादा होती है। डा

लक्षणमें और बीच बीचमें अभ्रकपारीके सर-दर्दमें यह ज्यादा लाभदायक है। अर्जेण्टमें—सरमें चक्कर आनेके साथ कानमें भोंभों आवाज और सुस्ती, कमजोरी, हाथ-पैरोंका काँपना इत्यादि लक्षण भी रहते हैं। जेलसिमियममें ये लक्षण हैं, पर लक्षण मिलनेपर—जेलसिमियम—नयी बीमारीमें, और अर्जेण्ट—पुरानी बीमारीमें फायदा करता है।

आँखकी बीमारी—आँख सड़कर उसमें पीबकी तरह पपड़ी जमने लगती है अथवा आँखके किसी अंशमें प्रदाह होकर उसका जख्ममें परिणत हो जाना और पीब या पीले रंगकी पपड़ी जमने लगना लक्षणमें—अर्जेण्टम ज्यादा फायदा करता है। तुरन्तके जनमे, सौरी घरके बच्चेकी आँख उठनेकी (Opthalmia neonatorum) की यह एक अव्यर्थ लाभदायक दवा है। मर्कुरियस-सोल—२०० शक्ति भी इस रोगकी अच्छी दवा है। अर्जेण्टम—आँखकी बीमारीमें २०० शक्तिकी प्राय १ मात्रासे ही लाभ होता है। पल्सेटिलामें भी—ऊपर लिखे लक्षण मौजूद रहते हैं, इसीलिये यह बता देना आवश्यक है, कि,—यदि अर्जेण्टके प्रयोगसे बीमारी कुछ घटे, पर फिर फायदा होना बन्द हो जाये, तो बीचमें एक मात्रा पल्सेटिलाका प्रयोग कर फिर अर्जेण्टका प्रयोग करनेसे ज्यादा लाभ होगा। इनके अलावा प्रमेहके कारण आँखकी बीमारियाँ, ब्लेफराइटिस (पलकोंका प्रदाह) नामक आँखकी बीमारी, आँखके सफेद भाग—कर्णीनिका (cornea) में जख्म, जो अक्सर

डकार नहीं आती, बहुत चेष्टा करनेपर तब कहीं जोरसे डक
आती है , ८। पाकस्थलीमें नीचेकी ओर सूजन , ९। कुछ पीते
पाखाना लग आता है , १०। फडफडकर वायु निकलनेके स
दस्त , ११। बच्चा केवल मिश्री या चीनी खाता है, पर खाते
पेटकी बीमारी हो जाती है , १२। दिन-रात अनजानमें पेश
निकलना , १३। ध्वजभंग, रमणके समय लिङ्ग शिथिल
पडता है , १४। कष्टकर सगम, इसके बाद योनिसे रक्तस्राव , १
वन्ध्या और विधवा युवतियोंका अत्यधिक रक्तस्राव (Metror
hagia) , तलपेटकी कमजोरीकी वजहसे चलनेमें अंगोंका कांपन
१७। निगलनेके समय ऐसा अनुभव होना मानो गलेमें कुछ ग
हुआ है , १८। जखममें बहुत ज्यादा मांसांकुर (ग्रैनुलेशन) क
उत्पत्ति , १९। टाइफायड ज्वरके बाद काला पड जाना , २०
दर्द धीरे धीरे बढता है और घट जाता है , २१। नाककी स
किसी चीजकी भी गन्ध नहीं आती , २२। नाकका जखम, जराय
का जखम प्रभृति , २३। बीडी, सिगरेट वगैरह पीनेवालोंक
खाँसी, खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कें
फँसा है , फिर धूमपान करनेपर यह भाव दूर होता।

सर-दर्द और सरमें चक्कर—सर-दर्दके साथ सरमें
चक्कर आना, किसी ऊँचे मकानकी ओर देखते ही सरमें चक्कर आ
जाता है, रोगी समझता है, कि उसका सर बडा हो गया है, माथे
में भी सुरसुरी होती है। मानो कोई कीडा रग रहा है। इस तरहके

डकार आनेपर पेटका फूलना कुछ घटता है, भोजनके बाद पेटमें दर्द आरम्भ होता है, और जबतक खायी हुई चीज पेटमें रहती है, दर्द बना रहता है (पल्सेटिला-नाइग्रामें भी यह लक्षण है)। पाकाशयका घाव (Gastric ulcer) और अजीर्ण रोगमें भोजनके कुछ बाद ही वमन होता है, पेटमें खूब दर्द होता है और बार बार डकार आती है—अजीर्ण रोगमें—पेट फूलना, पेट डगड करना और इसके साथ ही कलेजा धडकना प्रभृति लक्षण अकसर दिखाई देते हैं। यकृतके स्थानपर इतना दर्द होता है—मानो छुरीसे काटता है।

गलनलीकी बीमारी—कैलि-बाइक्रोम की तरह—अर्जेण्ट-नाइट्रिकममें भी गलेमें गाढा लसदार श्लेष्मा जमा रहता है। यह श्लेष्मा खींचनेपर तारकी तरह बढता है। रोगी उसे निकाल डालनेके लिये बार बार खाँसता है। गलेमें दर्द तथा अकडनका भाव और गलेमें ऐसा मालूम होना मानो किसीने खरोंच लिया है। इसीलिये, रोगीको गला खखारकर साफ करना पडता है और निगलनेके समय गलेमें काँटा गडनेकी तरह दर्द होता है (नाइट्रिक एसिड और हिपरमें भी गलेमें काँटा गडनेकी तरहका लक्षण है)। अर्जेण्ट—रोगी समझता है, मानो गलेमें मसेकी तरह कुछ हो गया है। गवैये, वक्ता और वकील-बैरिस्टरोंके गलेके जखममें इसके लक्षण रहनेपर—अर्जेण्ट ज्यादा लाभदायक है।

कमरका दर्द—बैठे बैठे उठनेपर कमरमें बहुत दर्द, पर चलना फिरना आरम्भ कर देनेपर यह दर्द घट जाता है (सल्फर

आराम नहीं होना चाहता—उसमे भी अर्जेण्ट-नाइट्रिकम उपयोगी है। (अर्जेण्टम-नाइट्रिकम—φ, २ बूँद या कास्टिकम—२ ग्रेन, १ आउन्स चुआये हुए पानीमे मिलाकर, जो लोशन तैयार होता है उसको आँखमे डालनेसे तकलीफ बहुत घट जाती है—(इयुफ्रेशिया अध्याय देखिये) ।

ग्रैनुलर-फाञ्जङ्कटिवाइटिस—इस रोगमे आँखका सफेद अंश घोर लाल हो जाता है, आँखमे पीव, पपडी जमना, रोशनीका सहन न होना, दर्द, जलन, करकराना, दिखाई न देना इत्यादि उपसर्ग रहनेपर—अर्जेण्टसे विशेष लाभ होता है, यदि इसके साथ अजीर्ण और पेटकी गडबडी रहे तो और भी फायदा करता है। रसटक्समें—हमेशा पलकें बन्द रहती हैं, पर आँख खोलते ही सोतेकी तरह गर्म आँसू निकला करता है। रसटक्समें—आँखके चारों ओर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं। इयुफ्रेशिया और क्रियोजोट, इस रोगकी महौषधि है, उनका लक्षण देखें। आँखमें पीव इकट्ठा होकर अगर पलकें फूल उठे—एपिससे फायदा होगा, रसटक्ससे भी फायदा होता है।

पाकस्थलीकी बीमारी—पेट वायुसे भर जाता है फूल उठता है, रोगी चेष्टा कर बडे कष्टसे डकार लेता है, भोजनके बाद पेटमें बहुत वायु होता है। इससे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा, रोगी बार बार डकार लेनेकी चेष्टा करता है और अन्तमें बडी आवाजके साथ डकार आती है।

डकार आनेपर पेटका फूलना कुछ घटता है, भोजनके बाद पेटमें दर्द आरम्भ होता है, और जबतक खायी हुई चीज पेटमें रहती है, दर्द बना रहता है (पल्सि-नाइग्रामें भी यह लक्षण है)। पाकाशयका घाव (Gastric ulcer) और अजीर्ण रोगमें भोजनके कुछ बाद ही वमन होता है, पेटमें खूब दर्द होता है और वार वार डकार आती है—अजीर्ण रोगमें—पेट फूलना, पेट गडगड करना और इसके साथ ही कलेजा धडकना प्रभृति लक्षण अक्सर दिखाई देते हैं। यकृतके स्थानपर इतना दर्द होता है—मानो छुरीसे काटता है।

गलनलीकी बीमारी—कैलि-बाइक्रोम की तरह—अर्जेण्ट-नाइट्रिकममें भी गलेमें गाढा लसदार श्लेष्मा जमा रहता है। यह श्लेष्मा खींचनेपर तारकी तरह बढता है। रोगी उसे निकाल डालनेके लिये बार बार खाँसता है। गलेमें दर्द तथा अकडनका भाव और गलेमें ऐसा मालूम होना मानो किसीने खरोंच लिया है। इसीलिये, रोगीको गला खखारकर साफ करना पडता है और निगलनेके समय गलेमें काँटा गडनेकी तरह दर्द होता है (नाइट्रिक एसिड और हिपरमें भी गलेमें काँटा गडनेकी तरहका लक्षण है)। अर्जेण्ट—रोगी समझता है, मानो गलेमें मसेकी तरह कुछ हो गया है। गवैये, वक्ता और वकील-बैरिस्टरोंके गलेके जखममें इनके लक्षण रहनेपर—अर्जेण्ट ज्यादा लाभदायक है।

कमरका दर्द—बैठे बैठे उठनेपर कमरमें बहुत दर्द, पर चलना फिरना आरम्भ कर देनेपर यह दर्द घट जाता है (सल्फर

और कास्टिकममें भी यह लक्षण है)। पीठमें और कमरमें क
वजहसे बहुत सुस्ती, सरमें चक्कर, हाथ-पैर कांपना। (नैश)

प्रमेह—(सूजाक) स्राव पीवकी तरह गाढा, कैना
आदि सेवन करनेपर नया प्रदाह घटकर भी पीवकी तरह
होता है, साथ ही मूत्रनलीमें सूजन रहती है, अकडनकी तरह
रहता है, पेशाबके समय जलन, खूनका पेशाब इत्यादि ल
रहनेपर—अर्जेण्ट विशेष लाभदायक है। (मर्कुरियस-कोरे
पेशाबके पहले, पेशाबके समय और बाद जलन होती है
सार्सापैरिलामें भी पेशाबके बाद जलनका लक्षण रहता है।

ध्वजभंग—पहले चाहे जो हो, पर ठीक संगमके स
ही लिङ्ग शिथिल हो पड़ता है, इसी वजहसे मनोकष्ट, कितनी
बार संगमकी इच्छा बिलकुल नहीं रहती। संगमके समय दद

श्वेत-प्रदर—अगर सूजाककी वजहसे यह बीमारी
और पीवकी तरह या खून पीव-मिला स्राव बहुत ज़्यादा होता
तो—अर्जेण्ट लाभदायक है।

पेशाबकी बीमारी—बहुमूत्र या पेशाबकी कोई दू
बीमारी बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होना, आपसे आप पे
हो जाना, पेशाबका वेग सम्हाल न सकना, पेशाब हो जाने
भी दो एक बूँद पेशाब निकलता रहता है। किसी किसीका मत
कि छोटी छोटी पथरीके कारण मसानेमें खून इकट्ठा होकर पेशा
समय जलन और तकलीफ होनेपर—अर्जेण्ट लाभदायक

त्रनलीमें काँटा गडनेकी तरह दर्द, पेशावके अन्तमें कई बूँद स्राव निकलनेके समय मूत्रनलीकी जडसे मलद्वारतक काटने-गडनेकी तरह दर्द, इन सब लक्षणोंमें भी—अर्जेण्ट लाभदायक है।

अतिसार और बच्चोंका हैजा—कुछ पीनेके बाद ही पाखाना लग आना, वायुशूल, डकार आना, भोजनके बाद ही पेट फूलना और पाखानेके साथ जोरसे फडफड शब्द होकर वायु निकलना, ये कई लक्षण अतिसारमें—अर्जेण्टके विशेष लक्षण समझ कर याद रखने चाहिये। पाखानेमें बहुत बदबू, पाखानेका रग थोडा हरा या पीले रगका, इसके सिवा पीले रगका पाखाना होनेपर भी यदि वह कुछ देरतक कपडेमें पडा रहता है तो हरा हो जाता है, चीनी, मिश्री या ज्यादा मीठा खाकर अतिसार होनेपर इससे विशेष फायदा होता है। कैल्केरिया-फासमें—हरे रगका पाखाना वायुके साथ निकलता है। अर्जेण्ट और कैल्केरिया-फास, ये दोनों दवाएँ ही एण्टरो-कोलाइटिस (आँतोंका प्रदाह) रोगमें लाभदायक है। रोग पुराना होनेपर जब बच्चेके मस्तिष्कमें जल-सचय होकर नाना प्रकारकी बीमारियाँ होती हैं (हाइड्रोकेफालायेड), उस समय ये दोनों दवाएँ ही लाभ करती हैं, पर प्रभेद यह है, कि जब ज्यादा दिनोंतक रोग भोगनेकी वजहसे माथेकी हड्डी धँस जाती है, माथेमें खूब अधिक पसीना होता है, उस समय—कैल्केरिया-फासकी आवश्यकता अधिक होती है। कैल्केरिया-फासका रोगी नमकीन पदार्थ ज्यादा खाना चाहता है।

और कास्टिकममे भी यह लक्षण है)। पीठमे और कमरमें
वजहसे बहुत सुस्ती, सरमे चक्कर, हाथ-पैर काँपना। (नैश

प्रमेह—(सूजाक) स्राव पीवकी तरह गाढा, कौ
आदि सेवन करनेपर नया प्रदाह घटकर भी पीवकी तरह
होता है, साथ ही मूत्रनलीमें सूजन रहती है, अकड़नकी त
रहता है, पेशाबके समय जलन, खूनका पेशाव इत्यादि
रहनेपर—अर्जेण्ट विशेष लाभदायक है। (मर्कुरियस-को
पेशावके पहले, पेशावके समय और बाद जलन होती है
सार्सापैरिलामे भी पेशावके बाद जलनका लक्षण रहता है।

ध्वजभंग—पहले चाहे जो हो, पर ठीक सगमके
ही लिङ्ग शिथिल हो पडता है, इसी वजहसे मनोकष्ट, कितने
वार सगमकी इच्छा बिलकुल नहीं रहती। संगमके समय द

श्वेत-प्रदर—अगर सूजाककी वजहसे यह बीमारी
और पीवकी तरह या खून पीव-मिला स्राव बहुत ज्यादा होता
तो—अर्जेण्ट लाभदायक है।

पेशावकी बीमारी—बहुमूत्र या पेशावकी कोई दु
बीमारी बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाव होना, आपसे आप पे
हो जाना, पेशावका वेग सम्हाल न सकना, पेशाव हो जाने
भी दो एक बूँद पेशाव निकलता रहता है। किसी किसीका मत
कि छोटी छोटी पथरीके कारण मसानेमें खून इकट्ठा होकर पेशा
समय जलन और तकलीफ होनेपर—अर्जेण्ट लाभदायक

अर्जेण्ट—इसके अलावा स्नायविक और मस्तिष्ककी किसी पुरानी बीमारीमें, मृगी या मृगीकी तरह अकड़नके साथ ; पक्षाघात, अर्द्धाङ्गका आक्षेप (Paraplegia), मुखमण्डल स्नायुशूल (Proso-palgia) और हृत्शूल (Cardialgia), शूल (Gastrialgia), मूत्राशय शूल (Nephralgia), शक्ति-राहित्य (Locomotor-ataxy) , दुर्बलता (Debi-) और सम्पूर्ण शरीरका काँपना इत्यादि बीमारियोंकी दवा है।

वृद्धि—(aggravation)—ठण्डे भोजनसे, ठण्डी हवासे, रसे, कुलफी बरफ खानेसे, व्यायाम और मानसिक परिश्रमसे।

ह्रास—निर्मल हवामें, ठण्डे पानीसे नहाने पर।

बादकी दवा—(follows well)—ब्रायो, कैलि-कार्ब, मर्क, , सिपि, स्पाइजे, स्पञ्जि, साइलि, वेरेट।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैल्के, लाइको, नेट्रम-म्यूर, साइलि, फास, पल्स, रसटक्स, सिपि, सल्फ, सेलिनियम।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—त्रिचूर्ण ७। जलीय ५-८।

आर्निका माण्टेना।

(ARNICA MONTANA)

(पेड़के रसमे मूल अर्क तैयार होता है)—गिरने या चोट आ की वजहसे बीमारियाँ और शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द

अर्जेण्ट-नाइट्रिकममें—मिशरी या मीठी चीज खाना पसन्द करता है। बहुत दिनोंकी पुरानी आमाशयकी बीमारीमें, जहाँ ऐसा मालूम होता है, कि आंतोंमें जखम हो गया है, वहाँ अर्जेण्टम लाभ होता है (चेपारो—φ, ३x,पुराने आमाशयकी बढिया दवा है)।

जखम—जखममें ग्रैनुलेशन (दाने) होनेपर अर्थात जखमके गड्ढेमें मास भरकर, यदि मांस अधिक ऊपर चढ आये तो अर्जेण्ट मध्य या उच्च शक्तिसे लाभ होगा। जखमका कैन्सरकी तरह हो जाना इसमें भी लाभदायक है।

जरायुका जखम—जब जरायु फूलता है, उसका आकार बडा हो जाता है, रक्तस्राव होता है, पीवकी तरह पीला स्राव निकला करता है, उस समय—अर्जेण्ट लाभदायक है।

लोकोमोटर-ऐटैक्सि—(गति-शक्ति-राहित्य)—रोगी आँख बन्दकर या अन्धकारमें एक कदम भी नहीं चल सकता। पैरमें मानो पक्षाघात हो गया है और पैर भारी मालूम होते हैं, चलनेके समय झटके खाता हुआ चलता है, स्थिर और सीधे भावसे एक कदम भी नहीं चल सकता। पैर काँपते हैं, पैर पतले पड़ जाते हैं, समूचा शरीर रह रहकर फडक उठता है। (कासडुरे गो देखिये)।

एरागैलस-लैम्बार्टी—न्यू-रेमिडिजकी दवाओंमें यह गति-शक्ति-राहित्यकी एक बहुत उत्तम औषधि है। क्रम—६ ठी से २०० और उच्च शक्ति।

अर्जेंटट—इसके अलावा स्नायविक और मस्तिष्ककी किसी भी पुरानी बीमारीमें, मृगी या मृगीकी तरह अकडनके साथ टङ्कार, पक्षाघात, अर्द्धाङ्गका आक्षेप (Paraplegia), मुखमण्डल का स्नायुशूल (Proso-palgia) और हृत्शूल (Cardialgia), उदर-शूल (Gastrialgia), मूत्राशय शूल (Nephralgia), गतिशक्ति-राहित्य (Locomotor-atаxy) , दुर्बलता (Debility) और सम्पूर्ण शरीरका कांपना इत्यादि बीमारियोंकी दवा है।

वृद्धि—(aggravation)—ठण्डे भोजनसे, ठण्डी हवासे, मिष्ठान्नसे, कुल्फी बरफ खानेसे, व्यायाम और मानसिक परिश्रमसे।

ह्रास—निर्मल हवामें, ठण्डे पानीसे नहाने पर।

बादकी दवा—(follows well)—आर्ज़ो, कैलि-कार्ब, मर्क, पल्स, सिपि, स्पाइजे, स्पञ्जि, साइलि, वेरेट।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैल्के, लाइको, नेट्रम-म्यूर, मर्क, साइलि, फास, पल्स, रसटक्स, सिपि, सल्फ, सेलिनियम।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण ७। जलीय ४-५।

आर्निका माण्टेना।

(ARNICA MONTANA)

(पेड़के रसमे मूल अर्क तैयार होता है)—गिरने या चोट आ जानेकी वजहसे बीमारियाँ और शरीरमें कुचल जानेकी तरह दर्द

प्रभृतिमें इसका हमेशा व्यवहार होता है। इसके अलावा विकार, स्मरण-शक्तिका लोप हो जाना, पक्षाघात, मस्तिष्कमें गड़बड़ी, बेहोशी, अनजानमें पाखाना-पेशाव, सभी विषयोंमें मन न लगना, रोगी समझता है, कि वह अच्छा है, मोह, शीर्णता, रक्तस्राव, शय्या का जखम, खून खराब होकर बीमारियाँ, दर्द-भरे फोड़े, व्रण, जखम प्रसवके बादका दर्द, हूपिङ्ग-खाँसी, सवेरे, शामको या रातमें, सर्दी लगने या शीत और बरसातमें उपसर्गोंका बढ़ना, खुली हवा और विश्रामसे घटना, छूने, शारीरिक परिश्रम करने और हिलने-डोलने पर बढ़ना इत्यादि—<u>इसके चरित्रगत लक्षण हैं</u>। <u>आर्निकाकी</u>—सभी बीमारियोंका दौरा बायें अगपर होता है। जो आदमी नाटे और मोटे ताजे रहते हैं, यह उनके लिये अधिक उपयोगी है। <u>माथा गरम और शरीर ठण्डा</u>—यह लक्षण देखकर कितनी ही बीमारियोंमें, कितने ही स्थानोंपर आर्निकासे फायदा मालूम होता है।

<u>विशेष लक्षण</u> —चोट या अंग-प्रत्यगको बहुत हिलाने-डोलाने की वजहसे उपसर्ग या बीमारी, इसके अलावा यदि किसी बीमारीमें रोगी अज्ञान बेहोश-सा पड़ा पड़ा अनजानमें पाखाना-पेशाव करता हो तो सबके पहले—आर्निकाको स्मरण करें।

स्नायविक स्त्री, रक्त-प्रधान मनुष्य, जिनका मुँह और चेहरा खूब लाल रहता है, जो किसी तरहका दर्द सहन नहीं कर सकते, शरीर छूते ही तकलीफ मालूम होती है, ऐसे व्यक्तियोंके लिये आर्निका उपयोगी है।

गिरने या चोटकी वजहसे वीमारी—चोट लगकर पैदा होनेवाली सभी वीमारियाँ—वह दर्द हो या मूर्च्छा, वेहोशी हो या अकडन या गर्भपात हो—आर्निका उपयोगी है। इसके सिवा—वहुत दिन पहले चोट लगकर कोई वीमारी पैदा हो गयी हो और वह किसी तरह आराम न होती हो तो उच्च-शक्तिके आर्निकासे आरोग्य हो सकती है।

कैलेण्डुला—चोटकी वजहसे चमडा या मांस फट-फट जानेपर इसका भीतरी और वाहरी प्रयोग करना चाहिये।

सिम्फाइटम—हड्डीमें चोट या हड्डी टूट जानेपर लाभ करता है।

आर्निका—किसी जगह चोट लगकर या कुचलकर स्पष्ट काला दाग (Echymosis) पडता है।

पमोन-म्यूर—वहुत दिन पहलेसे होनेपर भी (Chronic sprains) किसी स्थानमें मोच आ जानेके कारण दर्द होनेपर यह उपयोगी है।

वेलिस-पिरेनिस—निम्न-शक्ति, कितनों ही का कहना है, कि चोट लगना और मोच आ जाना और कुचल जानेकी वजहसे दर्दमें यह आर्निकाकी अपेक्षा भी ज्यादा उपयोगी है।

शरीरके किसी स्थानमें यदि गहरी चोट आ जाये या कुचल जाये तो १ पाइण्ट, अन्दाजन डेढ़ पाव पानीमें १५।२० वूँद आर्निका-मदर टिंचर मिलाकर, उसी पानीकी पट्टी, २४ घण्टे लगाये रहनेपर और निम्न-शक्तिकी दवा भीतर सेवन करनेसे वहुत जल्दी फायदा

होता है। मूल अर्क ३० बूँद, १ आउन्स स्पिरिटके साथ मिला
लगानेसे भी फायदा होता है।

प्रसवके बादका दर्द—प्रसवके बाद आर्निका
प्रयोग करनेपर, उसके द्वारा जिस तरह तेजीसे दर्द और तक
घटती है, उसी तरह जल्दी जल्दी रक्तस्राव भी बन्द होता
आर्निका—एण्टि-सेप्टिक दवा है। फारसेप यंत्रसे प्रसव करा
बाद इसका यदि प्रयोग होता है तो दर्द वगैरह तो दूर होत
है, साथ ही विष फैलना या सडन पैदा होनेसे भी रक्षा होती
डा० फैरिङ्गटन कहते हैं, कि इससे गर्भाशयकी सकोचन श
बढती है और फूलका टूटा हुआ, भीतर बचा अश, टूटी हुई झि
और खूनके थक्के सब बहुत जल्द बाहर निकल जाते हैं। आर्नि
पाइमिया (Pyæmia—पीव पैदा होना) की उत्कृष्ट दवा
(एलेट्रिस अध्यायमें वाइबर्नम और सिकेलि-कोर देखिये)
विश्वास है—सिकेलि—φ, प्रसवके बादवाले दर्दकी और ए
शिया—φ, १x पाइमियाकी सबसे बढिया दवा है)।

माथेमे चोट (Concussion)—आर्निकासे लाभ न होने
उसके बाद—हेलिबोरस देना चाहिये।

कोयलेके धुएँसे दम घुटना—सौरी घरके दर
खिडकियाँ बन्द रख, भीतर कोयला जलानेपर, उस आगके धु
जो कार्बोनिक-एसिड गैस तैयार होती है, उसको बच्चा और
दोनों ही साँसमे खींचकर बेहोश हो जाते हैं और मरनेकी नौ

आ जाती है। इसमें—आर्निका, बोविस्टा, ओपियम—ये तीनों ही दवाएँ बढ़िया काम करती हैं (पेमोन-कार्ब अध्याय देखिये)।

छोटे-फोड़े—अनगिनती छोटे छोटे फोड़े होते रहनेपर और उसमें बहुत दर्द और तकलीफ रहनेपर—आर्निकाके सेवनसे फोड़ा तो फट ही जाता है और तकलीफ भी दूर हो जाती है तथा नया फोड़ा फिर पैदा ही नहीं होने देता। गर्मीके दिनोंके गर्मिगाटा (उसरा) नामक फोड़ेमें—यदि आर्निका और सार्सापैरिलासे कोई ज्यादा फायदा न हो—आर्कटियम-लैप्पा (Arctium Lappa) नामक दवाकी १x से ३x शक्ति प्रयोग करनेपर बहुत ज्यादा फायदा होता है। आर्कटियम—माथेमें, मुँहमें, गर्दनमें एकज़िमा (अकौता), रस और पीव बहा करता है। त्रण, पलकोंमें घाव और गुहौरीकी बहुत बढ़िया दवा है और सालसाकी भाँति ही खून साफ करनेवाली दवा है। बेलिस-पेरेनिस (Bellis Perennis)—φ—३ री शक्ति, शरीरके सब स्थानोंके फोड़ेमें (Boils) लाभदायक है।

मुँहासे और फोड़े—पसिड पिक्रिक फायदा करता है। डा० फेरिङ्गटन कहते हैं—फोड़ा छोटा हो या बड़ा (Boils & Abscess) पीब जमकर यदि ऊपरकी फूली जगह सिकुड़ जाये—आर्निका खाने और उसका मदर टिंचर लगानेपर भीतरका पीब फिर बाहर निकल आता है। इस समय या तो फोड़ा आप ही फट जाता है या नश्तर लगानेकी सुविधा हो जाती है।

रक्तस्राव—रक्तके ऊपर हैमामेलिसकी तरह आर्निका भी बढिया काम करता है। इसलिये जहाँ रक्तमे विकलता (disorganization) पैदा होकर बहुत अधिक मात्रामे, शिरासे काला रक्त स्राव होता है, वहाँ बहुत थोडी मात्रामे, इसका भीतरी प्रयोग करनेसे शीघ्र ही शोषण-क्रिया आरम्भ हो जाती है और खूनका जाना बन्द हो जाता है। यही वजह है कि सेरिब्रैल एपोप्लेक्सी (Cerebral appoplexy—मस्तिष्क सन्यास—इस रोगमे मस्तिष्कसे रक्तस्राव होता है), आँखका सफेद अश (शुक्ल मण्डल), चित्रपट (रेटिना) से रक्तस्राव वगैरहमें इसका व्यवहारकर फायदाकी आशा की जा सकती है। यहाँतक कि अगर कोई नये उपसर्ग पैदा न हो जायें तो सिर्फ इसी दवापर बहुत दिनोतक भरोसा किया जा सकता है (हैमामेलिस अध्याय देखिये)। सन्यास (Appoplexy) की बीमारीमे जब रोगीके साँस लेने और छोडनेकी आवाज घर्राटेकी-सी हो जाती है, पाखाना-पेशाब अनजानमे होता है, किसी तरहकी भी मस्तिष्ककी उत्तेजना नहीं रहती, रोगी एकदम बेहोश, साँसमे बदबू रहती है। उस समय—आर्निकाका प्रयोग करना चाहिये।

नाकसे रक्तस्राव—खून पतला और काले रंगका, यह अगर चोटकी वजहसे हो तो—आर्निका फायदा करता है। हूप-खाँसी मे कितनी ही बार बहुत देरतक जोरसे खाँसते खाँसते आँखमे (in the conjunctiva) रक्तस्राव होता है, इसमें भी आर्निका फायदा करता है (हैमामेलिस देखिये)।

खाँसी—बच्चेको क्रोध आते ही खाँसी, हूप-खाँसीमें—दि खाँसी आनेके पहले बच्चा रोता है—आर्निका (बेलेडोना लिये) और यदि खाँसीके बाद रोये—कैम्सिकम लाभ करता है खाँसीके पहले और बाद रोनेसे भी इससे फायदा होता है)। मिंने खाँसते नाकसे खून गिरना, आँखें लाल (blood shot yes) हो जाना, आँखसे खून गिरना, फेनभरा या थक्का थक्का मुँहसे निकलना इत्यादि लक्षणोंमें भी—आर्निका लाभ करता है।

टइफायड ज्वर—इस रोगमें आर्निकाके साथ बैप्टीशियाका बहुत कुछ सादृश्य है। अकड़नका दर्द, बिछावन कड़ा मालूम होता है, आच्छन्न भावसे रोगी पड़ा रहता है, पर जगानेपर जागता है, फिर बेहोश-सा पड जाता है, जीभपर काल तला दाग, मुँहका भाव घोर लाल, ये सब लक्षण इन दोनो ही दवाओंमें हैं, पर अगर करवट बदलता रहता है, प्रलाप बकता है, सभी स्राव अर्थात्—मल, मूत्र, पसीना, सबमें ही बहुत बदबू है, रोगीको पुकारनेपर जवाब देते न देते फिर बेहोश हो जाता है, तो बैप्टिसिया, पर यदि रोगीको पाखाना पेशाब अनजानमें हो, शरीर की त्वचा कलडी सूखी, लाल आभा लिये दिखाई दे, एकदम अज्ञान और बेहोश-सा रहे, श्वास प्रश्वासमें घरघर आवाज हो और साँसमें बहुत बदबू हो, हमेशा टकटकी लगाकर देखता रहे, ज्ञान रहनेपर यह समझे कि जो घरमें आ रहे हैं, वे मारेंगे, शरीरपर काले दाग दिखाई दें, माथा और मुँह खूब गर्म और लाल रहे, समूची

देह और हाथ-पैर ठण्डे हों, तो—आर्निका ही उपयोगी होता है।
ज्वरमें आर्निकाकी जीभ सूखी और ज़खमसे भरी—कभी काली होत
है। प्यास अधिक नहीं रहती, शरीरमें बहुत दर्द, अकेला रहन
चाहता है, डरता है कि कोई छू न ले, पेटमें वायु इकट्ठा होता है
पाखानेके समय पेट गडगड़ाता है।

सविराम ज्वर—ज्वरके पहलेकी अवस्थामें—ख
प्यास रहती है और बहुत पानी पीता है, शीतावस्थामें—प्यास
सारे शरीरमें कपकपी, समूचा शरीर यहाँतक कि हड्डीमें भी द
माथा गर्म, उत्तापावस्थामें—और भी तेज़ प्यास, पर जाड़ा रह
है, शरीरका कपड़ा उतार डालता है, इससे जाड़ा मालूम होता है
रोगी बहुत कमजोर होता है, आच्छन्न भाव रहता है। पसी
वाली अवस्थामें—खट्टी गन्धका पसीना, माथा और समूचे श
में पेठनका दर्द, जाड़ा अब भी रहता है, इस अवस्थामें केवल
का दर्द घटता है (नैट्रम-म्यूरमें—इस समय सभी दर्द घटता है
जीभ हमेशा गदली, सांसमें बदबू और मुँह बेस्वाद रह
है। ज्वर छूट जानेपर भी सरका दर्द और बदनका दर्द न
जाता। किनाइनका सेवन कर घोरखार आराम न होनेपर

आर्निकासे कितनी ही बार बहुत लाभ होता है। (आर्निक
लक्षणके साथ इयुपेटोरियमकी बहुत बड़ी समानता है, प्र
देख ल।)

बदबूदार डकार और वमन—मुँह में लगातार पानी भर आता है, डकार आती है ; डकारमें सडी खराब गन्ध रहती है, वमन होनेपर भी उसमें सडी गन्ध रहती है ।

अतिसार और आमाशय—अतिसार में—पाखाने बहुत ही सडी गन्ध रहती है, कभी नींदमें, अनजानमें पेशाब हो जाता है, रोगी बहुत कमजोर हो पडता है । आमाशयमें, मलमें—आम, रक्त या पीब मिला रहता है । पाखाना बारमें कम होता है, पर पेटमें बहुत दर्द रहता है, वेग और कूथन भी रहती है । टाइफायड (सान्निपातिक) और टाइफस-ज्वर (मोहज्वर) में मलद्वारसे काले रंगका खून निकलता है ।

वृद्धि—छूने, देह हिलाने, शीतसे, तर हवामें और शराब पीनेपर ।

ह्रास—सर नीचाकर सोनेपर, विश्रामसे, खुली हवामें ।

बादकी दवा (follows well)—एकोन, बेल, ब्रायो, चायना, हिपर, लिडम, रसटक्स, एसिड-सल्फ, सल्फ ।

सम्बन्ध—चोट लगनेके कारण किसी पुरानी बीमारीमें—कोनियम, आँखमें चोट लगनेपर—हैमामेलिस ।

क्रिया-नाशक (duration)—एकोन, आर्स, कैम्फर, चायना, इग्ने, इपि ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६ से १० दिन ।

क्रम (potency)—६—२०० शक्ति ।

फारमुला—जर्मनी-४ ; अमेरिकन—३ ।

देह और हाथ-पेंर ठण्डे हो, तो—आर्निका ही उपयोगी होता है
ज्वरमें आर्निकाकी जीभ सूखी और जखमसे भरी—कभी काली हो
है। प्यास अधिक नहीं रहती, शरीरमे बहुत दर्द, अकेला रह
चाहता है, डरता है कि कोई छू न ले, पेटमे वायु इकट्ठा होता
पाखानेके समय पेट गडगडाता है।

सविराम ज्वर—ज्वरके पहलेकी अवस्थामें—
प्यास रहती है और बहुत पानी पीता है, शीतावस्थामें—प्या
सारे शरीरमें कपकपी, समूचा शरीर यहाँतक कि हड्डीमें भी
माथा गर्म, उत्तापावस्थामें—और भी तेज प्यास, पर जाडा रह
है, शरीरका कपडा उतार डालता है, इससे जाडा मालूम होता
रोगी बहुत कमजोर होता है, आच्छन्न भाव रहता है। पसी
वाली अवस्थामें—खट्टी गन्धका पसीना, माथा और समूचे श
में पेठनका दर्द, जाडा अब भी रहता है, इस अवस्थामें केवल
का दर्द घटता है (नैट्रम-म्यूरमें—इस समय सभी दर्द घटता है
जीभ हमेशा गदली, सासमें बदबू और मुँह बेस्वाद रह
है। ज्वर छूट जानेपर भी सरका दर्द और बदनका दर्द
जाता। किनाइनका सेवन कर बोखार आराम न होनेपर

आर्निकासे कितनी ही बार बहुत लाभ होता है। (आर्नि
लक्षणके साथ इयपेटोरियमकी बहुत बडी समानता है, प्र
देख ल।)

यह पहले ही कहा जा चुका है कि "छटपटी और इसके साथ ही इधर उधर करवट बदलना"—यह एकोनाइटमें है। एकोनाइट—यह प्रदाह और दर्दसे उत्पन्न और ज्वर मिले रोग तथा रोगकी पहली अवस्थामें, और आर्सेनिक प्रायः रोगकी बढ़ी हुई अवस्थामें अर्थात—जिस समय रोगी बहुत दिनोंतक या लगातार रोग भोगता भोगता एकदम कमज़ोर हो पड़ता है, हिलनेकी भी शक्ति नहीं रहती, इतने पर भी भीतरी दाह और छटपटी तथा लगातार इधर उधर करवट बदलना, जगह बदलते रहना—चाहता है। आर्सेनिकमें मानसिक बेचैनी ही ज्यादा रहती है। आर्सेनिकमें—एकोनाइटकी तरह मृत्यु-भय है पर इतना अधिक नहीं, पर रोगी अपने जीवनसे निराश रहता है। रोगी कहता है—चिकित्सासे कुछ न होगा, मृत्यु ही होगी। एकोनाइटमें—कितनी ही बार अपना निश्चित मृत्यु-समय भी बताता है और कितनी ही बार अपने जीवनकी आशा बिल्कुल ही त्याग देता है। आर्सेनिकमें ऐसा दिखाई देता है—दर्द जरा भी नहीं है, इतनेपर भी रोगी भीतरी दाहकी वजहसे स्थिर नहीं रह सकता। किसी रोगमें इस तरहके लक्षण दिखाई देते ही आर्सेनिकका प्रयोग करें। उससे पहले भीतरी दाह दूर होगा और इसके बाद धीरे धीरे दूसरे लक्षण भी दूर हो जायेंगे। भीतरी दाह, कमजोरी और छटपटी ही आर्सेनिकके गुणावली पहली सीढ़ी है।

छटपटीकी तरह जलनमें भी आर्सेनिक—सबसे प्रधान है, पर यह जलन—रोगकी पहली अवस्थामें नहीं, यह रोग

आर्सेनिकम एलबम।

(ARSENICUM ALBUM)

यह एक तरहका विष है (संखिया)। इस विषका प्रयोग करनेके समय एकोनाइटकी तरह इसके विशेष लक्षण—बेचैनी, शरीरमे दाह और प्यास—इन तीन लक्षणोंपर हमेशा नजर रखनी पडती है। दूसरे दूसरे लक्षणोंके साथ अगर रोगके लक्षणका विशेष समानता न रहे तो समझ लें कि उस रोगमे आर्सेनिक बिलकुल ही फायदा न करेगा। ऊपर लिखे तीनों लक्षणोंके सिवा इनके और भी कई चरित्रगत लक्षण हैं। जैसे—मृत्यु-भय, भीतरी दाह, इधर उधर करवट बदलना, सारे शरीरमे जलन, आधी रातके बाद रोग लक्षणोंका बढना, पाकाशयमें जलन, नाकसे पानी की तरह गरम सर्दी निकलनेके साथ ही नाक चिपक जाना, रोग का पर्यायक्रमसे पैदा होना, चित्त सो न सकना, ठण्डा लसदार पसीना, दर्द तथा दूसरे उपसर्गोंका ठण्डमे बढना—गरम प्रयोगसे घटना, स्थिर पडे रहनेपर उपसर्ग या दर्दका बढना, क्विनाइनसे रुका हुआ बोखार, शोथ या सूजन, बरफ, फलमूल इत्यादि खाकर पतले दस्त इत्यादि लक्षण भी इसमें है। नीचे इसके कई लक्षणों का सक्षेपमें वर्णन तथा दूसरी दूसरी समान लक्षणवाली खास खास दवाओंके साथ इसका जो प्रभेद है, वह भी दिखाया जाता है :—

यह पहले ही कहा जा चुका है कि "छटपटी और इसके साथ इधर उधर करवट बदलना"—यह एकोनाइटमें है। एकोनाइट—प्रदाह और दर्दसे उत्पन्न और ज्वर मिले रोग तथा रोगकी ...ी अवस्थामें, और आर्सेनिक प्रायः रोगकी बढ़ी हुई अवस्थामें ...ांत—जिस समय रोगी बहुत दिनोंतक या लगातार रोग भोगता ...गता एकदम कमजोर हो पड़ता है, हिलनेकी भी शक्ति नहीं ...ती, इतने पर भी भीतरी दाह और छटपटी तथा लगातार ...र उधर करवट बदलना, जगह बदलते रहना—चाहता है। ...र्सेनिकमें मानसिक बेचैनी ही ज्यादा रहती है। आर्सेनिकमें—...कोनाइटकी तरह मृत्यु-भय है पर इतना अधिक नहीं; पर ...गी अपने जीवनसे निराश रहता है। रोगी कहता है—...िकित्सासे कुछ न होगा, मृत्यु ही होगी। एकोनाइटमें—...ितनी ही बार अपना निश्चित मृत्यु-समय भी बताता है और ...ितनी ही बार अपने जीवनकी आशा बिलकुल ही त्याग देता है। ...र्सेनिकमें ऐसा दिखाई देता है—दर्द जरा भी नहीं है, इतनेपर ...ी रोगी भीतरी दाहकी वजहसे स्थिर नहीं रह सकता। किसी ...ोगमें इस तरहके लक्षण दिखाई देते ही आर्सेनिकका प्रयोग करें। इससे पहले भीतरी दाह दूर होगा और इसके बाद धीरे धीरे दूसरे लक्षण भी दूर हो जायेंगे। भीतरी दाह, कमजोरी और छटपटी ही आर्सेनिकके चुनावकी पहली सीढ़ी है।

छटपटीकी तरह जलनमें भी आर्सेनिक—सबसे प्रधान है, पर यह जलन—रोगकी पहली अवस्थामें नहीं, यह रोग भोगनेकी

कर पानी नहीं पीना चाहता। पेटमे भयानक जलन, दस्त चावल के धोवनकी तरह हो या जैसा हो, उसमे बहुत ही तेज गन्ध रहता है, बढी हुई अवस्थामें—जब नाडी बहुत जल्द दब जाती है, या एकदम लोप हो जाती है अथवा सूतकी तरह क्षीण हो जाती है और उसके साथ ही तेज प्यास, पानी पीते ही वमन, जीवनसे निराशा, शरीर बरफकी तरह ठण्डा, पसीना, भीतर और पेटमें जलन, रोगी इधर उधर करवट बदलता और छटपटाता है, एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकता, उस समय—आर्सेनिकका प्रयोग करे, इससे साथ साथ ही फायदा होगा। हैजामे सिकेलिके बाद आर्सेनिक और आर्सेनिकके बाद सिकेलि ज्यादा फायदा करता है। सिकेलिमे देखे गे—अन्यान्य लक्षणोके साथ रोगी, एक क्षण भी शरीरपर कपड़ा नहीं रख सकता, रोगी नगा पडा रहता है, परन्तु आर्सेनिकमे—शरीरमे जलन बनी रहनेपर भी और ताकत रहनेपर भी यदि जरा भी शरीरपर कपडा रह जाता है, तो उसी समय खींच कर ओढ़ लेता है। आर्सेनिक—आक्षेपिक जातीय (spasmodic variety) के हैजाकी दवा है। इस जातिके हैजेमे अकडनकी प्रधानता एक भयावह लक्षण है। पहले हाथ-पैर निम्नाङ्गमे, पीछे ऊपरी अगमे, फिर उदर-पेशीमे पीठ-छातीमें अकडन पैदा होना आरम्भ हो जाता है। वक्षोदरमध्यस्थपेशी (diaphram) और हृत्पिण्डकी पेशीपर इस अकडनका दौरा होकर, क्रमसे साँस रुक जाती है और बेहोशी आ जाती है, इसम पे ठनके उपसर्गका भाग है

धिक है (कैम्फर अध्याय देखिये)। सलफरमें—प्यास, छटपटी खूब ज्यादा है और रोगी केवल ठण्डक चाहता है, नाडीमें भी खूब तेजी रहती है, आर्सेनिकमें—इतनी ठण्डक नहीं चाहता और नाडी या तो क्षीण रहती है अथवा मिलती ही नहीं, इसके लक्षण दोपहरके बाद बढते हैं। मैलेरिया ज्वर आदिके बाद हैजा होनेपर आर्सेनिक ज्यादा फायदा करता है, लक्षण मिलने पर बच्चोंके हैजामें भी इसका प्रयोग करना चाहिये। आर्सेनिकका रोगी अकेला नहीं रहना चाहता और अब न जियूँगा—कहता और डरता है। कालराकी अन्तिम अवस्थामें श्वासकष्ट—आर्सेनिक लाभदायक है। आर्सेनिकके रोगीको—साँस छोडनेमें तकलीफ नहीं होती, पर खींचनेमें बहुत तकलीफ होती है (हाइड्रोसियानिक एसिड इसके ठीक विपरीत है—साँस छोडनेमें तकलीफ होती है ; पर खींच सकता है मजेमें।) हैजाकी आखिरी हालतमें यह लैकेसिस और कोब्राके समान है। मूत्र-विकार (युरिमिया) की अवस्थामें—वमन, प्रलाप बकना, बेचैनी, श्वासकष्ट इत्यादि लक्षणमें भी आर्सेनिक विशेष लाभदायक है। किसी स्थानपर कुछ सडकर वहाँकी हवा दूषित हो जाये और कोई बीमारी हो जाये तथा उसके साथ हैजाके लक्षण रहनेपर आर्सेनिक विशेष लाभदायक है। (वैरेट्रम, सिकेलि इत्यादिका अध्याय देखिये)। आर्सेनिकके लक्षणके साथ यकोनाइटका भ्रम हो जानेकी सम्भावना अधिक है, इसलिये बहुत सावधानीसे दोनोंका प्रभेद देखना चाहिये

(कैलेडियम-सल्फ नामक दवामें आर्सेनिकके बहुतसे लक्षण पाये जाते हैं, उसका अध्याय देखिये)।

ज्वर—आर्सेनिककी कोई भी बीमारी क्यों न हो, उसमें छटपटी और अन्तर्दाहका लक्षण रहना चाहिये (एकोनाइटके साथ इसका प्रभेद हमेशा याद रखें), आर्सेनिक—सविराम, वात-श्लेष्मा, स्वल्प-विराम, अविराम, सब तरहके ज्वरोंमें इसका व्यवहार होता है, आर्सेनिककी नाडी—पूर्ण और उछलती हुई (full and bounding) रहती है। एक-जरामे (Continued fever) लक्षण मिलनेपर—आर्सेनिक, एकोनाइटके समान ही लाभदायक है। बोखारके साथ छटपटी, अन्तर्दाह, बोखार एकदम ही नहीं छूटता, किसी समय जरा-सा घट भर जाता है, इसके बाद ताप जितना ही बढ़ता है, छटपटी और कमजोरी भी उतनी ही बढती है। इसके बाद क्रमसे विकार-भाव आता है—ये सब आर्सेनिकके प्रिय लक्षण है। रक्त-दूषित होकर सेप्टिक ज्वरमें—आर्सेनिक लाभदायक है। नये बोखारमे—शरीरमें दाह, छटपटी इत्यादि लक्षण घटकर यदि रोगी-अघोर और बढ़बड़ासकी तरह विकार-भावमें आ जाये—सल्फर उपयोगी है। सल्फरमें—बहुत तेज दाह रहती हैं, हाथ-पैर, आँख मुँहसे आगकी तरह गरमी निकलती है, ठण्डकसे इसकी जलन घटती है, इसलिये इसका रोगी हाथ-पैर ओढनेसे बाहर निकाले रखता है, प्यास रह भी सकती है और नहीं भी रह सकती है। आर्सेनिककी सभी ज्वलाएँ गरम प्रयोगसे घटती हैं, केवल माथेकी जलन ठण्डेसे घटी मालूम होती है। (क्रूप्रम, सल्फ)।

द्रष्टव्य:—किसी रोगमें यदि आर्सके लक्षणके साथ रोगी ठण्डकी इच्छा करता हो, वहाँ—आर्स-सल्फ, और जो गरमीकी इच्छा करता हो, उसे—आर्स-एल्ब दे।

ज्वरमें—आर्सेनिककी जीभ,—सूखी, लाल रंगकी, भूरी या काले रंगकी हो जाती है। वार्निश करनेकी तरह चमकीली रहती है और पाकस्थलीकी बीमारीमें फटीफटी और कच्चे मांसके टुकड़ेकी तरह दिखाई देती है।

ज्वर-विकार—टाइफायड ज्वर मालूम होते ही कितने ही आर्सेनिकका प्रयोग कर देते हैं। यह एकदम होमियोपैथीकी नीतिके विरुद्ध है। आर्सेनिककी—जरूरत प्राय ज्वरकी बढ़ी हुई अवस्थामें ही पड़ती है। रसटक्स—आदि दवाओंसे कोई फायदा न होनेपर अर्थात् छटपटी, कमजोरी, पेटका दोष इत्यादि न घटने पर—आर्सेनिक दिया जा सकता है। पर आर्सेनिकके ऊपर लिखे व्यक्तिगत लक्षण अगर न रहें तो कभी इसका प्रयोग न करना चाहिये।

एपिडेम्यूर—इसमें अँतोंके सड़नेका लक्षण बहुत अधिक है, और कमजोरीकी वजहसे रोगी बिछावनमें पायतानेकी ओर सरक जाता है, अनजानमें पाखाना-पेशाब होता है। यदि नाड़ी लोप हो और शीत आ जाये, तथा रोगी मुर्देकी तरह चुपचाप पड़ा रहे—, कार्बो-वेज लाभ करता है। टाइफायड ज्वरमें—मलद्वारसे रक्तस्राव—नूतन रंग कालापन लिये, पतला और छोटे छोटे जमे रक्तके टुकड़े

(कैलेडियम-सल्फ नामक दवामे आर्सेनिकके बहुतसे लक्षण पाये जाते हैं, उसका अध्याय देखिये)।

ज्वर—आर्सेनिककी कोई भी बीमारी क्यों न हो, उसमें छटपटी और अन्तर्दाहका लक्षण रहना चाहिये (एकोनाइटके साथ इसका प्रभेद हमेशा याद रखो), आर्सेनिक—सविराम, वात-श्लेष्मा स्वल्प-विराम, अविराम, सब तरहके ज्वरोंमें इसका व्यवहार होता है, आर्सेनिककी नाडी—पूर्ण और उछलती हुई (full and bounding) रहती है। एक-ज्वरमे (Continued fever) लक्षण मिलनेपर—आर्सेनिक, एकोनाइटके समान ही लाभदायक है। बोखारके साथ छटपटी, अन्तर्दाह, बोखार एकदम ही नहीं छूटता किसी समय जरा-सा घट भर जाता है, इसके बाद ताप जितना ही बढता है, छटपटी और कमजोरी भी उतनी ही बढती है। इसके बाद क्रमसे विकार-भाव आता है—ये सब आर्सेनिकके प्रिय लक्षण हैं। रक्त-दूषित होकर सेप्टिक ज्वरमे—आर्सेनिक लाभदायक है। नये बोखारमे—शरीरमे दाह, छटपटी इत्यादि लक्षण घटकर यदि रोगी-अघोर और बदहवासकी तरह विकार-भावमे आ जाये—सल्फ उपयोगी है। सलफरमे—बहुत तेज दाह रहती है, हाथ-पैर, और मुँहसे आगकी तरह गरमी निकलती है, ठण्डकसे इसकी जलन घटती है, इसलिये इसका रोगी हाथ-पैर ओढनेसे बाहर निकाल रखता है, प्यास रह भी सकती है और नहीं भी रह सकती है। आर्सेनिककी सभी ज्वलाएँ गरम प्रयोगसे घटती हैं, केवल माथेकी जलन ठण्डेसे घटी मालूम होती है। (क्रमम, सल्फ)।

सर्दी-खाँसी—नाकसे पानीकी तरह नयी सर्दीके स्रावमें—आर्सेनिक, एलियम-सिपा, इयुफ्रेशिया और मर्कुरियस-सोल लाभदायक है। आर्सेनिकका-स्राव—गरम और जलन करनेवाला, जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड जाती है, ओंठकी खाल उधड जाती है, इसके साथ ही छींक, मर्कुरियसका-स्राव—ठण्डा, पर जब मर्कुरियससे लाभ नहीं होता तो—आर्सेनिकसे फायदा होता है। एक तरहकी सूखी खाँसी जो तीसरे पहर और सन्ध्यासे ही बढ़ती है; बलगम बिलकुल नहीं निकलता, श्वासनली सूख जाती है, खाँसी खूब जल्दी जल्दी आती है, रोगीको साँस छोड़नेमें तकलीफ होती है, इसके साथ ही यदि अन्तर्दाह वगैरह लक्षण भी रहें—आर्सेनिक उपयोगी है। और भी एक तरहकी खाँसी होती है—उससे रोगी समझता है, कि उसकी साँसमें गन्धकका धुआँ जा रहा है, इसीलिये खाँसी आती है।

द्रष्टव्य :—नयी सर्दी और सर्दी ज्वरकी पहली अवस्थामें छींक, नाकसे पानी गिरना, खाँसी, बदनमें दर्द इत्यादि रहनेपर—स्पिरिट कैम्फर—४।५ बूँद, चीनी या बताशेके साथ दिनमें दो तीन बार या साधारण कपूर—२ ग्रेन मात्रामें चीनीके साथ २।३ बार सेवन करनेपर, उसी दिन फायदा होता है, दूसरी दवाकी जरूरत ही नहीं होती।

छींक—रह रहकर छींक, रह रहकर नाकसे छींक, छींक गिनतीमें इतनी ज्यादा आती है, कि रोगीको साँस लेनेका अवसर नहीं मिलता, थक जाता है।

नब्बे मनुष्य आरोग्य होते है (चिनिनम-आर्स देखिये)। इस दवासे लाभ न होनेपर, हरीतकी—५ वीं या ६ ठी शक्ति।

अतिसार—दस्त, हरा, पीला, काला पानीकी तरह, खून इत्यादि नाना प्रकारके रंगोंका और परिमाणमे थोडा होता है, दस्त बहुत सडा और उसमे सड़ी दुर्गन्ध, इसके साथ ही शरीरमे दाह और छटपटी, ठराडा पानी पीनेकी प्यास, पानी पीते ही पेटका दर्द बढ जाना और साथ ही साथ—दस्त या कै होती है—वमन पित्त मिला, हडहडाकर होना, प्रभृति कितने ही आनुसगिक लक्षण भी रह सकते है, कुछ खाने पीने वाद ही बीमारी बढ जाती है बहुत ज्यादा फल या वरफ खाकर अगर बीमारी पैदा हो जाये— आर्सेनिक बहुत फायदा करता है। इसमे तलपेटमे बहुत दर्द और मलद्वारमे जलन रहती है।

ऑखकी बीमारी—आँखसे जो पानी गिरता है, वह गरम मालूम होता है—आर्सेनिक उपयोगी है। आर्सेनिकमें—पलक फूलती है और बहुत अधिक तकलीफ रहती है। यह तकलीफ गरम सक प्रभृति गरम प्रयोगोंसे घटती है। एपिसके—ऊपर लिखे लक्षण रहनेपर भी ठण्डा पानी या कोई ठराडी चीजके प्रयोगसे घटती है। एपिसमें—आँख गुलाबी-लाल, आर्सेनिकमें—उजली, यूफ्रेशियामे—आँखमे जलन-दर्द और आँसू बहता है, पर जलन-दर्द आर्सेनिकमे ही सबसे ज्यादा है।

सर्दी-खाँसी—नाकसे पानीकी तरह नयी सर्दीके स्रावमें—आर्सेनिक, एलियम-सिया, इयुफ्रेशिया और मर्कुरियस-सोल लाभदायक है। आर्सेनिकका-स्राव—गरम और जलन करनेवाला, जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड़ जाती है, ओंठकी खाल उधड़ जाती है, इसके साथ ही छींक, मर्कुरियसका-स्राव—ठण्डा, पर जब मर्कुरियससे लाभ नहीं होता तो—आर्सेनिकसे फायदा होता है। एक तरहकी सूखी खाँसी जो तीसरे पहर और सन्ध्यामें ही बढ़ती है, बलगम बिलकुल नहीं निकलता, श्वासनली सूज जाती है, खाँसी खूब जल्दी जल्दी आती है, रोगीको साँस छोड़नेमें तकलीफ होती है, इसके साथ ही यदि अन्तर्दाह वगैरह लक्षण भी रहें—आर्सेनिक उपयोगी है। और भी एक तरहकी खाँसी होती है—जिसमें रोगी समझता है, कि उसकी साँसमें गन्धकका धुआँ जा रहा है, इसीलिये खाँसी आती है।

द्रष्टव्य :—नयी सर्दी और सर्दी ज्वरकी पहली अवस्थामें छींक, नाकसे पानी गिरना, खाँसी, बदनमें दर्द इत्यादि रहनेपर—स्पिरिट कैम्फर—४।५ बूँद, चीनी या बताशेके साथ दिनमें दो तीन बार या साधारण कपूर—२ ग्रेन मात्रामें चीनीके साथ २।३ बार सेवन करनेपर, उसी दिन फायदा होता है, दूसरी दवाकी जरूरत नहीं होती।

छींक—रह रहकर छींक, रह रहकर झोंकसे छींक, छींक इतनीमें इतनी ज्यादा आती है, कि रोगीको साँस लेनेका अवसर नहीं मिलता, थक जाता है।

एस्क्लिपियस-कार्णिउटी—सेवनसे पसीना और पेशाबकी मात्रा बढ जाती है, इसीलिये, यह सब तरहके शोथ, खासकर हृत्पिण्डकी बीमारी और मसानेके रोगसे पैदा हुए शोथमें ज्यादा फायदा करता है।—क्रम—ϕ

एस्क्लिपियस-साइरिका—इसका शोथ रोगमें सेवन करनेपर मसानेकी क्रिया बढ जाती है, और पेशाबका परिमाण बढ जाता है, इसीलिये, यह सब तरहके शोथ-रोगमें ज्यादा लाभदायक है। क्रम—६ ठीं या निम्न शक्ति।

लाइकोपोडियम—यकृतके दोषकी वजहसे होनेवाले शोथमें अधिक उपकारी है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथमें—आर्सेनिकसे फायदा न होनेपर इससे होता है।

एसेटिक-एसिड—जिस तरह प्यास ज्यादा, उसी तरह पेशाब भी ज्यादा, इसके साथ ही पेटकी गडबडी, वमन, पेटमें जल इत्यादि लक्षण रहते हैं।

आर्सेनिक-आयोड—चाइट्रस डिजिज़के साथ शोथमें—यह आर्सेनिकसे अधिक फायदा करता है।

डिजिटेलिस—हृत्पिण्डके रोगकी वजहसे शोथमे और शरीरके सभी स्थानोंकी सूजनमें लाभ करता है। लैकेसिस—गर्भावस्थामें पैर फूलना।

द्रष्टव्य :—मैं शोथ रोगमें पहले—सिर्फ ४ दवाओंका प्रयोग करता हूँ—१। कब्जियतके साथ शोथमें—एपिस—२।

क्ति,—२। अतिसार और पतले मलके साथ शोथमें—एपोसाइ-
न—२x शक्ति,—३। सार्वाङ्गिक शोथमें—आर्सेनिक—२००
क्ति, फायदा न होनेपर दूसरी दवाएँ देता हूँ और—४। अति-
सार अम्ल तथा प्यासके साथ शोथमें—एसिड-एसेटिक।

चर्म-रोग—एकजिमा (अकौता) में— आर्सेनिक,
ग्रेफाइटिस, रस-वेन, रस-टक्स, ग्रैफाइटिस इत्यादि लक्षण भेदसे
फायदा करते हैं। आर्सेनिकके चर्मरोगमें—बहुत बदबू रहती है।
इसका उद्भेद—कपाल और माथेमें अधिक होता है। आर्सेनिकके
उद्भेदोंके विशेष लक्षण हैं—भूसीकी तरह सूखी पपड़ीवाले
बुरोंट पड़े, इसके अलावा काले उद्भेद, फुन्सियाँ, फोड़े, घुक्षा,
लेपरस प्रभृति।

खुजली-खसड़ा—सूखी खुजली या दूसरी तरहके
चर्मरोगमें भी बहुत खुजली और खुजलाने बाद बेहद जलन होती
है। खुजलानेके समय बहुत आराम मालूम होता है; पर इसके
बाद ही जलनसे प्राण निकलने लगते हैं—यही याद आनेपर
रोगी खुजलाना बन्द कर देता है। ठण्डा पानी लगनेपर इसमें
खुजली बढ़ती है और गरमसे घटती है। आर्सेनिक—माथेमें रूसी
होनेकी भी बढ़िया दवा है; (एचिनेनिया,एसिड-फ्लाइसो देखिये)।

बवासीर—बवासीरमें आगसे जलनेकी तरह जलन, यह
जलन सर्द प्रयोगमें न घटकर गर्म प्रयोगमें घटती है
आर्सेनिक लाभदायक है।

<u>एस्क्लिपियस-कार्णिउटी</u>—सेवनसे पसीना और पेशाबकी मात्रा चढ़ जाती है, इसीलिये, यह सब तरहके शोथ, खासकर हृत्पिण्डकी बीमारी और मसानेके रोगसे पैदा हुए शोथमें ज्यादा फायदा करता है।—क्रम—ϕ

<u>एस्क्लिपियस-साइरिका</u>—इसका शोथ रोगमें सेवन करनेपर मसानेकी क्रिया बढ जाती है, और पेशाबका परिमाण बढ जाता है, इसीलिये, यह सब तरहके शोथ-रोगमे ज्यादा लाभदायक है। क्रम—६ ठाँ या निम्न शक्ति।

<u>लाइकोपोडियम</u>—यकृतके दोषकी वजहसे होनेवाले शोथमें अधिक उपकारी है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथमे—आर्सेनिकसे फायदा न होनेपर इससे होता है।

<u>एसेटिक-एसिड</u>—जिस तरह प्यास ज्यादा, उसी तरह पेशाब भी ज्यादा, इसके साथ ही पेटकी गडबडी, वमन, पेटमें जलन इत्यादि लक्षण रहते हैं।

आर्सेनिक-आयोड—ब्राइट्स डिजिजके साथ शोथमें—यह आर्सेनिकसे अधिक फायदा करता है।

<u>डिजिटेलिस</u>—हृत्पिण्डके रोगकी वजहसे शोथमे और शरीरके सभी स्थानोंकी सूजनमे लाभ करता है। लैकेसिस—<u>गर्भावस्थामें पैर फूलना</u>।

द्रष्टव्य :—मैं शोथ रोगमें पहले—सिर्फ ४ दवाओंका प्रयोग करता हूँ—१। कब्जियतके साथ शोथमें—एपिस—३ री

जखम—किसी भी जखममें जलन, दर्द, बदबूदार स्राव निकलना, खाल उधड जाना इत्यादि लक्षण रहनेपर आर्सेनिक उपयोगी है। मुँह और जीभका घाव (Epithelioma), मुँहका घाव, यदि वह सडनेकी तरह हो जाये, खासकर अगर बच्चोंमें ये ऊपर लिखे लक्षण रहें—आर्सेनिकसे लाभ होगा—इसमे रोगी मुँहमें सडा, तीता, खट्टा, मीठा, धातुका स्वाद इत्यादि नाना-प्रकारके स्वाद अनुभव करता है।

मूलाशय-प्रदाह—इस रोगमें पेशाबका परिमाण बहुत घट जाता है और जलन तथा तकलीफ रहनेपर—आर्सेनिकसे लाभ होगा।

श्वासयंत्रकी बीमारी—किसी भी बीमारीमें सास लेनेमें कष्ट, पर छोडनेमें उतना कष्ट नहीं होता। इस लक्षणके साथ गलेमें सांस सांय शब्द, छातीमे दर्द, बहुत कष्टकर खाँसी के साथ थूकको तरह बहुत कम बलगम निकलना, चित नहीं [illegible] जाता, आधी रातके बाद और ठण्डी हवामे रोगका बढना [illegible]लक्षणके साथ आर्सेनिकके अन्यान्य विशेष लक्षण रहनेपर

(सांस छोडनेमें कष्ट—पसिड-हाइड्रो)।
[illegible] नामकी एक दवा है—इसमें
[illegible] ले सकता है, पर सहजमे छोड
[illegible] यहांतक कि कभी कभी रोगीके
[illegible] है। सांस छोडनेके समय

साइटिका—दर्द रातमे आरम्भ होता या बढता है—इसके साथ ही जलन, सेंकनेसे तकलीफ घटना। (विस्कम-एल्वम देखिये)।

रजःस्राव—स्राव बहुत थोडा, पर बहुत दिनोंतक रहता है, कभी बहुत जल्दी जल्दी ऋतुस्राव होता है और बहुत दिनोंतक होता रहता है, इससे रोगिनी रक्तहीन और कमजोर हो पडती है। रक्तहीनताके लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

रजःरोध—ऋतुस्राव न होकर, उसके बदले बहुत अधिक परिमाणमे प्रदरका स्राव होता है। इससे रोगिनी क्रमशः कमजोर होती जाती है। प्रदरका स्राव लगकर योनिकी खाल उधड जाती है, जलन होती है, स्राव बहुत बदबूदार रहता है।

डिम्बकोषकी बीमारियाँ—दाहिने डिम्बकोष में बीमारी होनेपर—आर्सेनिकसे फायदा होता है, रोगवाली जगह आगकी तरह जला करती है और जलन, दर्द वगैरह उपसर्ग आधी रातसे बढने लगते हैं।

इसके अलावा जरायुकी नाना प्रकारकी बीमा...
जरायुका प्रदाह, जखम, कैन्सर, रक्तस्राव वगैरह
और छुरी मारनेकी ... तकलीफ रहनेपर,
कारी है। इसमे ... गरमीसे
पल्बा देखिये)।

जखम—किसी भी जखममें जलन, दर्द, बदबूदार स्राव निकलना, खाल उधड जाना इत्यादि लक्षण रहनेपर आर्सेनिक उपयोगी है। मुँह और जीभका घाव (Epithelioma), मुँहका घाव, यदि वह सडनेकी तरह हो जाये, खासकर अगर बच्चोंमें भी ऊपर लिखे लक्षण रहें—आर्सेनिकसे लाभ होगा—इसमें रोगी मुँहमें सडा, तीता, खट्टा, मीठा, धातुका स्वाद इत्यादि नाना-प्रकारके स्वाद अनुभव करता है।

मूलाशय-प्रदाह—इस रोगमें पेशाबका परिमाण बहुत घट जाता है और जलन तथा तकलीफ रहनेपर—आर्सेनिकसे लाभ होगा।

श्वासयंत्रकी बीमारी—किसी भी बीमारीमें सांस लेनेमें कष्ट, पर छोडनेमें उतना कष्ट नहीं होता। इस लक्षणके साथ गलेमें साँस साँय शब्द, छातीमे दर्द, बहुत कष्टकर खाँसी के साथ थूकको तरह बहुत कम बलगम निकलना, चित नहीं सोया जाता, आधी रातके बाद और ठण्डी हवामे रोगका बढना इत्यादि लक्षणोंके साथ आर्सेनिकके अन्यान्य विशेष लक्षण रहनेपर आर्सेनिक उपयोगी है। (सांस छोडनेमे कष्ट—पसिड-हाइड्रो)। क्लोरम (chlorum) या क्लोरिन नामकी एक दवा है—इसमें रोगी बहुत सरलतापूर्वक सांस ले सकता है, पर सहजमें छोड नहीं सकता, भीषण कष्ट होता है, यहांतक कि कभी कभी रोगीके लिये सांस छोडना असम्भव हो जाता है। सांस छोडनेके

फों फों, सांय सांय, फडफड एक तरहकी आवाज होती है। ग्लौटिस अर्थात श्वासनलीके मुँहके आक्षेपके लक्षण प्रकट होते है और ये लक्षण रहनेपर—लैरिञ्जिसमस-स्ट्रिडुलस (स्वरयन्त्रका ऐंठन) और दमा रोगमें भी इससे फायदा होता है। (सैम्बुकस अध्याय देखिये)।

दमा—दमाका खिचाव आधी रातके समय बढता है, भीतरी दाह, छटपटी, रोगी माथा नीचाकर तकियेपर भार देकर बैठा रहता है, सोनेकी शक्तिका न रहना, छातीमें दबाव, दम रुकनेका भाव, छातीमें सांय साय शब्द, बलगमका बिलकुल ही न निकलना—इत्यादि लक्षणोंमें—आर्सेनिक उपयोगी है (एकोनाइट देखिये)। वृद्धोंकी और नाकका स्राव बन्द होकर यह बीमारी होनेपर लाभदायक है।

कार्बङ्कल—कार्बङ्कलमे बहुत जलन आर्सेनिकसे अगर न घटे तो—एन्थ्रासिनम, एन्थ्रासिनमसे फायदा न हो तो—यूफोर्बियाकी परीक्षा करें। जिन्हें बहुमूत्रकी बीमारी हो, उनका इस बीमारीमे—आर्सेनिक ज्यादा फायदा करता है (किसी किसी चिकित्सकको १२ वीं शक्तिसे फायदा दिखाई दिया है), एन्थ्रासिनम अध्याय देखिये।

अंग-प्रत्यंगकी बीमारियाँ—ऊर्द्धाङ्ग, अँगुलीके नोकसे लेकर कन्धेतक खींचने, झटकने और नोच फेंकनेकी तरह दर्द; रातमें जिस करवट सोता है, उसी ओरके हाथमें दर्द।

नाङ्गमें—बेचैनी मालूम होना, रातमें पैर स्थिर नहीं रख सकता, आराम मिलनेके लिये बराबर इधर उधर करता रहता, पैर, पैरका तलवा सुन्न, झुनझुनी पैदा हो जाती है। पैरके तले या अँगुलीमें घाव और सूजन।

आर्सेनिक—मुर्दा चीरनेके समय छुरीसे शरीका कोई अंश कट जाना, कार्बङ्कलका रक्तदोष और विषैले कीडे आदि काटनेमें विशेष काम करता है।

वृद्धि—(aggravation)—आधी रातके बाद, दिनके १ बजेसे २ बजेके बीचमें, सर्दी लगनेपर, ठण्डा खाने-पीनेपर, रोगवाली करवट और सर झुकाकर सोनेपर।

ह्रास—(amelioration)—सर-दर्दके सिवा और सभी लक्षण, यहाँतक कि जलन और दर्द तक गर्म प्रयोगसे घटते हैं। मार्येके ब्रह्मतालुमें जलन—आर्स, फ्रम-सल्फ, सलफर।

बादकी दवा (follows well)—एपालिया, आर्निका, एपिस, बेल, बैकूल, कैल्के-फास, कैमो, साइक्यू, लैके, लाइको, नैट-सल्फ, फास, रैनान, थूजा।

क्रिया-नाशक—(antidote)—चिन-सल्फ, कैम्फर, कार्बो-वेज, चायना, इयुफेशिया, फेरम, इपेका, हिपर, आयोड, इपि, कैलि-ब्रोम, मार्क, नक्स-वोम, नक्स-मस्क, ओपि, सल्फ, टैबेकम, वेरेट।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६०—९० दिन।

क्रम—३x—१००० शक्ति।

फारमुला—टिंचर—६—थीं, विचूर्ण—७।

पल्मोनेरिया-टियुवरक्युलोसिस—थाइसिस (यक्ष्मा) रोगको वढी हुई अवस्थामे जब फुस्फुसमें गहवर (cavity) या फोडा हो जाता है , हेक्टिक-ज्वर, पुराना कैटेरल या ब्राङ्कोनिमोनिया जिसमें पीवकी तरह ढेरका ढेर वलगम निकलता है और उसके साथ श्वासमें कष्ट और रातमे पसीना रहता है। नया कैटरल ब्राङ्कोनिमोनिया, फेफडेके प्रदाहके अन्यान्य लक्षणोके साथ खून जाना और फेफडेके तन्तुओंका ध्वस होकर गडहा होना आरम्भ हो जाता है, इसके अलावा—फेफडेकी नाना-प्रकारकी नयी और पुरानी वीमारीमे और कितनी ही तरहके थाइसिसमे आर्स-आयोडसे लाभ होता है। इस दवाका चरित्रगत लक्षण है—बहुत तेजीसे वलक्षय, बहुत कमजोरी और रातके समय पसीना, (यह फेफडेमे गडहा पडनेके पहले हो या वाद हो), नाडी तेज और क्षीण, वार वार आनेवाला वोखार, पसीना और उदरामय, किसी भी वीमारीमे रहनेपर—वह आर्स-आयोडसे अवश्य ही आरोग्य होगा। (स्टैनम-आयोड देखिये)।

नयी-सर्दी—खून-मिली सर्दी, पतले पानीका तरह सर्दी नाकसे निकलती है, निकला हुआ स्राव लगकर ओठकी खाल उघड जाती है। छींकता है, नाक और गलेमे जलन होती है, नाकमे घाव हो जाता है, पपडी जमती है—इन सव लक्षणोंमे—आर्सेनिक आयोड लाभदायक है। (सर्दी-ज्वर देखिये)।

यहाँ यह वता देना जरूरी है, कि ये ऊपर लिखे लक्षण सव आर्सेनिकमे भी है, पर प्रभेद यह है, कि आर्सेनिक-आयोडकी वीमारी आर्सेनिककी अपेक्षा भी ज्यादा तेज रहती है। अतएव,

यदि आर्सेनिकसे फायदा न हो तो उसके बाद—आर्सेनिक-आयोड का प्रयोग करना चाहिये। क्रम—६ शक्ति।

इन्फ्लुएंज़ा—इस रोगमें रोगीको एक बार शीत फिर उत्ताप यह लक्षण अगर रहे तो—आर्सेनिक-आयोडसे फायदा होता है। सर्दी पहले पतली रहती है, फिर गाढ़ी हो जाती है। इसके बाद हँफनीकी तरह खिंचाव होता है, श्वासमें तकलीफ और बोखार होनेपर यह लाभ करता है (इयुपेटोरियम अध्यायमें—परालिया देखिये)। डा० हेल कहते हैं—ऊपर लिखे, शीत-उत्तापके लक्षणके साथ पीठकी ओर अधिक जाड़ा अगर मालूम हो—तो आर्सेनिक-आयोडके साथ पर्यायक्रमसे जेलसिमियमका व्यवहार करनेपर बीमारी बहुत जल्द घट जाती है। (जेलसिमियम अध्यायमें, ज्वर देखिये)।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डका बढ़ना, कलेजेमें बहुत धड़कन, उसके साथ ही दमाकी तरह खिंचाव और श्वासमें कष्ट रहना।

स्त्री-रोग—पीले रंगका श्वेत-प्रदर, उसमें कभी कभी रक्त रहता है, ऋतुस्राव परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और एक महीनेमें दो तीन बार ऋतुस्राव होता है। जरायु-मुखका जखम, अर्बुद, उसमें बेहद दर्द।

ज्वर—बार बार आनेवाला ज्वर, पसीना। ज्वरसे बहुत कमजोर हो जाता है। इतना पसीना मानो नहाकर आया है।

कुछ दिनोतक व्यवहारसे लाभ होगा (कुष्ठ-व्याधिके लिये—हाइड्रो कोटाइल अध्याय देखिये)।

घुटनेके जोड़में दर्द, प्रत्यग आदि पक्षाघातकी तरह कुछ, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, लैरिञ्जियल थाइसिस (स्वरयत्रका क्षय रोगमें) प्रभृतिमें लाभ करता है।

क्रम—३x, ६, ३० शक्ति।

आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम रूब्रम।

(ARSENICUM SULPHURATUM RUBRUM.)

सोरायसिस (चोयटेदार चर्मरोग, चक्कर चोका) प्रभृति कई तरहके चर्म-रोगमें और बहुत दिनोंके पुराने अतिसारमें—मलमें बहुत बदबू, इस लक्षणमें इससे विशेष लाभ होता है। इन्फ्लुएञ्जा रोगकी भी यह एक अच्छी दवा है। जहाँ रोगमें—सर्दी, खाँसी, श्लेष्माका भाग बहुत ज्यादा, ज्वरमें शरीरका ताप खूब अधिक, बहुत कमजोरी हो, वहीं इसका प्रयोग करना चाहिये। इसमें कभी कभी पीबकी तरह बलगम निकलता है, जहाँ—आर्सेनिकके लक्षणके साथ रोगी ठण्डक चाहता हो, वहाँ—आर्सेनिक-सल्फ-रूब्र, और जहाँ गरमीकी इच्छा करता हो—वहाँ आर्स-फ्लव देना चाहिये।

क्रम—६x चिचर्ण, ३, ३०, शक्ति। फारमुला—७।

आर्टिमिसिया वल्गैरिस।

(ARTEMISIA VULGARIS)

एक तरहके पौधेकी ताजी सोरसे टिंचर तैयार होता है। साधारणतः मृगीकी अकडन, बचपनमें किसी बीमारीके साथ अकडन (Convulsion), युवती स्त्रियोंकी मृगी, डर जाने अथवा अन्य किसी तरहकी प्रबल उत्तेजना अथवा हस्त-मैथुन आदिके द्वारा शुक्रक्षय कर मृगी हो जाना प्रभृति और बहुत तरहकी स्नायविक बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है।

चोट—चोट लगते ही बहुतसे आर्निकाका प्रयोग करते हैं। आर्टिमिसिया—सिर्फ आँखमें चोट लगनेकी और इसी वजहसे पैदा हुए उपसर्गोंकी बढ़िया दवा है। इसका लगाने और खाने—दोनों तरहका ही प्रयोग होता है। बाहरी प्रयोगके लिये—मूल अर्क २०।२५ बूँद, चुआये हुआ पानी १ आउन्समें, इस तरह मिला लेना चाहिये।

मृगी—आर्टिमिसिया दवा डाक्टर बोरिक और ड्रिङ्कसेसे पहले ली गयी, स्वस्थ शरीरपर होमियोपैथिक पद्धतिमें इसकी परीक्षा नहीं हुई। वे कहते हैं—जिन स्त्रियोंको मासिक ऋतु-स्राव नियमित समयपर नहीं होता, उनको और जिन्हें पहली बार ऋतु-दर्शन होनेकी उमरमें मृगी हो जाती है, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। इसमें अकड़नका दौरा इतनी जल्दी जल्दी होता है,

कि रोगीको होशमें आनेका मौका ही नहीं मिलता। (एब्सिन्थि-यम अध्याय देखिये)। हिस्टेरो-एपिलेप्सीमें—टैरेण्टुला-हिसा-निया लाभदायक है।

द्रष्टव्य :—मृगी एक दुरारोग्य बीमारी है। यदि किसी को लाभ न हो तो लिखे।

सदृश—साइक्युटा, एब्सिन्थ, सिना।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—२

एरम ट्राइफाइलम।

(ARUM TRIPHYLLUM)

इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है—रोगी दिन भर अँगुली डालकर नाक खोटा करता है, उससे खून निकलता है, यहांतक कि घाव भी हो जाता है, नाकसे पतला जलन करनेवाला स्राव निकलता है, उससे नाकके छेदकी खाल उधड़ जाती है। नाक बन्द—इतनेपर भी पानीकी तरह सर्दी निकलती है, छींक आती है। गवैये और वक्ताओंका गलेका जखम, सम्पूर्ण स्वरभंग, मुँहसे बहुत ज्यादा परिमाणमें जलन करनेवाली लार बहती है—उससे मुँहका भीतरी भाग और जीभकी खाल उधड़ जाती है, खून निकलता है। स्वल्प-विराम ज्वर (Remittent fever), सान्निपातिक ज्वर (Typhoid fever)—रोगी नाक और ओंठ नोचता है—या

क्षण अकसर दिखाई देता है। इस लक्षणमें इस दवाका प्रयोग
रनेपर बीमारी एकदम आराम न हो जानेपर भी घट जाती है।

तालूमूल-प्रदाह, गलनलीकी सूजन और किसी दूसरी तरहके
लनलीके प्रदाहमें, कांटा गड़ने या डंक मारनेकी तरह जलन रहने
र इससे बहुत फायदा होगा। (हिपर, एसिड-नाइट्रिक)।

क्रिया-व्याघातक (inimical)—कैलेडियम, फास।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसेटिक-एसिड, बेल, एसिड-
ाइट्रिक, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—२ दिन।

क्रम—६x—३० शक्ति। फारमुला—जर्मनी—१, अमेरिका—३

एराण्डो मारिटेनिका।

(ARUNDO MAURITANICA)

(वृक्षके अंकुरसे टिंचर तैयार होता है), दिनों दिन होमि-
ोपैथीकी उन्नतिके साथ ही साथ नयी नयी दवाओंका भी आवि-
ष्कार हो रहा है। दुःखकी बात है कि अधिक परिमाणमें व्यव-
ार न होनेके कारण उसका फायदा अब तक पूरा पूरा देखनेमें
नहीं आया। नीचे लिखी कई बीमारियोंमें इस दवासे बहुत फायदा
होता देखा जाता है —

अतिसार—दूध पीनेवाले बच्चोंको दांत निकलनेके समय पतले दस्त ; इस बक्तकी खास दवाएं—कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, कैमोमिला, पोडोफाइलम प्रभृति व्यवहार कर यदि फायदा न मालूम हो तो आखिरमें इस दवाकी आजमायश करें। पराण्डोके दस्तका रंग—ज्यादाकर हरा और मलद्वारमें जलन रहती है। जिन दूध पीनेवाले बच्चोंको अकसर अतिसार हो जाता है, उनके अतिसारकी यह प्रधान दवा है।

कोलोस्ट्रम—६-३० शक्ति। यह नयी प्रसूताकी पहली अवस्थाके दूधसे तैयार होता है, वह भी बच्चोंके अतिसारकी एक बढिया दवा है। मल—पतला, हरा, पीला, पित्त-मिला, श्लेष्मा भरा, इत्यादि नाना प्रकारका हुआ करता है। मलकी गन्ध बहुत खट्टी, बच्चेके शरीरसे भी खट्टी गन्ध आती है (मेग-कार्ब देखिये) वमन होनेपर या तो पित्तकी कै होती है या अम्लकी (खट्टी), बच्चा बहुत चिडचिडा रहता है (कैमोमिलामें—बच्चा चिडचिडा होनेपर भी उसके मलमे गन्ध खट्टी नहीं रहती,—सडी बदबू रहती है)।

सर्दी-खाँसी—नाकसे पानीकी तरह नयी सर्दी बहना, सर्दीके आरम्भ होनेके पहले नाकके भीतर, आँख और मुँहके भीतर बहुत कुटकुटाहट और जलन होती है। छींकें आती हैं और किसी चीजकी गन्ध नहीं मिलती।

श्वासयन्त्रकी बीमारीमें—पहले ऊपर लिखे ढगकी नयी सर्दी हो : क्रमसे सूख जाती है, कलेजेमें बैठ जाती है, हँफनी और खिंचाव तरह हो जाता है। (पलालिया अध्यायमें देखिये), नीले का बलगम निकलता है, बहुत श्वासकष्ट और स्तनके पास होता है, जलन होती है (पानीकी तरह नयी सर्दीमें—नेट्रम-म्यूर भदायक है)।

इन बीमारियोंके अलावा—कानके नीचेका एकज़िमा (अकौता) रके केश झड़ जाना, केशोंकी जड़ोंमें दर्द, माथेमें पीबभरे फोड़े, रके तलवेमें फूलन और जलन, पैरके तलवेमें बदबू और पसीना ोना इत्यादिमें भी—पराण्डो लाभदायक है।

क्रम—३ से ६ ठी शक्ति। फारमुला—३

एसाफिटिडा।

(ASAFŒTIDA)

(हींगसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—फारस देशके रहनेवाले अपने खाद्य-पदार्थोंका स्वाद बढ़ानेके लिये हींगका व्यवहार करते हैं। कष्ट देनेवाली डकार बराबर आते रहनेपर सवोंकि बराबर एक टुकड़ा हींग केला या किसी मीठी चीजमें रखकर खा लेनेपर तुरन्त डकार आना और बहुत बार हिचकी भी बन्द हो जाती है। हींग एक पाकस्थलीका बल बढ़ानेवाली दवा है और फ्लेटोनिक डिस्पेप्सिया (आमाशयिक रस-विकार) का

महौषध है। हींगका सेवन करनेपर—नीचेकी राहसे वायु निकल कर पेट हलका हो जाता है, आँतोका रसस्राव बढनेके कारण हाजमा बढता है, आँते ढीली होती है और मन प्रसन्न रहता है।

हिस्टीरिया, ग्लोवस हिस्टिरिया (वाईगोला), पेटमे अधिक वायु होना और पेट फूलना, इससे ऐसा मालूम होना कि फट जायगा, वायु नीचेकी ओरसे न निकलकर उर्द्ध गामी हो जाती है और डकार आती है, वहुत दिनोका श्वेत-प्रदरका स्राव, पुरानी सर्दीकी बीमारी पुराना उदरामय एकाएक वन्द होकर—हिस्टीरिया, आक्षेप (spasm), पारा सेवन करने या गर्मीकी बीमारीकी वजहसे जखम, अस्थिका जखम इत्यादिमे यह उपकारी है।

पेट फूलना—कार्बो और लाइकोपोडियम अध्याय देखिये।

हिस्टीरिया—(इग्नेशिया अध्याय देखिये)।

जखम—गरमीकी बीमारीमे या पारा सेवनकी वजहसे हड्डियोंका जखम होनेपर, खासकर टिबिया अस्थिमे जखम होनेपर और उस जखममे भयानक टपक और पेशावमे दुर्गन्ध रहनेपर—एसाफिटिडा लाभदायक है। इसके जखममे इतना दर्द रहता है, कि किसीको भी छूने नहीं देता, दर्द रातमे बढता है। पारदके अपव्यवहारकी वजहसे दूसरे स्थानोंके जखममे जैसे—हिपर, नाइट्रिक प्रभृति हैं, उसी तरह अस्थिक्षत (हड्डीके जखममे) एसाफिटिडा, आरम, पेट्रुस्टियुरा लाभदायक है।

क्रम—६, ३० शक्ति।

एस्क्लिपियस टियुबरोसा।

(ASCLEPIAS TUBEROSA)

इसकी कितनी ही श्रेणियाँ रहनेपर भी—एसक्लिपियस—कार्निउटा और एसक्लिपियस- टियुबरोसा—इन दो प्रकारके एस-क्लिपियस हमलोग अधिक व्यवहार करते हैं। एस्क्लिपियस नामक वृक्षकी ताजी सोरसे टिंचर तैयार होता है।

एसक्लिपियस-कार्निउटी या साइरिका—यह खासकर पेशाब सम्बन्धी कई बीमारियाँ, शोथ रोगमें और वातमे व्यवहृत होता है। शोथ और उदरी रोगमें मूतुबन्ध।

शोथ—आर्सेनिक अध्यायमें शोथ उदरी देखिये, इसके सेवनसे पसीना और पेशावका परिमाण बढ़कर शोथ रोग घट जाता है।

मूल-विकार—कैन्थरिस अध्याय देखिये।

वात—शरीरकी बड़ी सन्धियोंपर बीमारीका दौरा होनेपर यह लाभदायक है।

क्रम—१—३ शक्ति। फारमुला—२

एसक्लिपियस टियुबरोसा—शीत ऋतुमें रक्तातिसार, भोजनके बाद पेट फूलना और दर्द, पाखानेके पहले पेट गड़गड़ाना और दर्द (एलो, पपिस, नैट्रम-सल्फ, पल्स, थूजा,

गांठ (ग्लैण्ड) फूल उठती है, कडी और ढेलेकी तरह हो जाती है।

कब्जियत—दुरारोग्य कब्ज, मलका कडापन (प्लम्बम एसेट)। कल कड़ा गांठ गांठ।

स्नायवीय रोग—चलनेके समय इच्छानुसार चल नहीं सकता ; अपनी इच्छाके अनुसार हाथ-पैर घुमा नहीं सकता।

स्त्री-रोग—मासिक ऋतुस्राव आरम्भ होते ही शूलका दर्द (Colic) और अन्यान्य सभी उपसर्ग घट जाते है। (लैकेसिसमें भी यह लक्षण दिखाई देता है, लैकेसिस—कमजोर और दुबले-पतले मनुष्योंके लिये ज्यादा उपयोगी है)।

मृगी—दौरा होनेके ४।५ दिन पहलेसे ही पेशियाँ फड़कती हैं।

सम्बन्ध—स्तनके कैन्सरमें—आर्स, कोनियम, कार्बो-एनि ; मृगी रोगमें—सलफर, कैल्केरिया, वेल प्रभृति।

क्रिया-नाशक—जिङ्कम, प्लम्बम।

क्रम—३, ६—२०० शक्ति। फारमुला—४

आरम मेटालिकम ।

(AURUM METALLICUM)

(स्वर्ण) पाराके अपव्यवहारके कारण सब तरहकी बीमारियाँ, हड्डी और खासकर नाककी हड्डीका जखम, हाड और पेरियोस्टियम (अस्थि-आवरक पर्दा) में भयानक दर्द, जीवनसे हताश, सुस्ती आत्महत्याकी इच्छा, उपदंश इत्यादि इसके विशेष लक्षण हैं। पारा के अपव्यवहारकी वजहसे या उपदंशसे उत्पन्न हुई किसी भी बीमारीमें रोगीकी आत्महत्याकी इच्छा बलवती रहनेपर इसे पहले ही स्मरण करना चाहिये। हृत्पिण्डकी बीमारीके साथ यकृतका फूलना, पेटमें दाहिनी ओर जलन, यन्त्रणा और लिवर सिरोसिस (यकृत सिकुड़ना) आनेकी वजहसे शोथ, उदरी, अनिद्रा, इसके साथ ही मनमें आत्महत्याकी इच्छा उदय होनेपर—आरम ही निर्दिष्ट है। आरममें—आत्महत्याकी इच्छाके अलावा विषादोन्माद है, रोगी रोता है, धर्म-सम्बन्धी बातें बकता है, लगातार एक भावमें प्रार्थना करता है। इसमें एक तरहका मानसिक लक्षण और भी दिखाई देता है,—रोगी लगातार सवालपर सवाल किया करता है, जवाबके लिये क्षण भर भी नहीं ठहरता। कण्ठमाला और रक्त-प्रधान धातु और गर्मी रोगवाले तथा पाराग्रस्त मनुष्योंके लिये यह अधिक उपयोगी है ("अण्डकोषकी बीमारी" के लिये अंडेवाला परिच्छेद देखिये)।

चरित्रगत लक्षण —गर्मी रोग और पाराकी वजहसे स्वास्थ्य विगड जाना, सर्दी विलकुल ही सहन नहीं होती, २। प्रेममें निराश या दुःखित होकर वीमारी, ३। डर, क्रोध, विराग या आनन्द न मिलनेकी वजहसे वीमारी, ४। गर्मी-रोग या पाराके दोषका वजहसे हड्डीकी वीमारी, ५। नाक और कनपटीकी हड्डी (mastoid) का जखम, ओजिना (नाकके सडे घाव), कानमें पीब (ओटोरिया), ६। हड्डी और अस्थि-आवरक-झिल्ली (periosteum) का दर्द, ७। कलेजा वहुत धडकना, हृदयके चर्बीके तन्तुओं की खरावी (fatty degeneration of heart)

स्त्री-रोग—जरायुका वढना, जरायुका झूल पडना, वहाँ जलन और यन्त्रणा, ये लक्षण सिपिया और आरम दोनोंमें ही हैं। पर यदि हृत्पिण्डकी किसी वीमारीके साथ—जैसे हृत्पिण्डमें दर्द, कलेजा धडकना, जी घवडाना इत्यादि लक्षणोंके साथ आत्महत्या की इच्छा वलवती रहती है, और रोगी अपने मनमें समझता है, कि उसने अपने रिश्तेदारोंका प्रेम खो दिया है, उसकी वीमारी आराम नहीं हो सकती, इसलिये, उसका मर जाना ही अच्छा है, ऐसी अवस्थाकी आरम ही दवा है। आरमके रोगीका पेट मोटा और देखनेमें भी वह मोटा ताजा रहता है और सिपियाका रोगी वहुत कमजोर और दुवला, सिपियामें भी जी घवडानेका लक्षण है, आरममें रोगिनीकी कामेच्छा वहुत प्रवल रहती है और जरायु वढ जानेके कारण झूल पडता है, जरायुका पुराना प्रदाह, कडापन

: अपनी जगहसे हट जाना, स्वास्थ्यहीनता या जरायुका
न (ligaments) की कमजोरीकी वजहसे जरायु-भ्रंश
lapsus) होनेपर—नक्स, लिलियम और पलो फायदेमन्द
स्त्रियोंकी जरायुकी बहुतसी बीमारियोंमें—आरम-म्यूर-नेट्रो-
म नामक दवा विशेष लाभदायक है, उसका अध्याय देखिये।
का वन्ध्या रहना, इसी वजहसे बहुत मनोकष्ट, हिस्टिरिया।

नाकका जखम—गर्मी प्रभृति रोगमें पारदके अपथ्य-
ारकी वजहसे या कण्ठमाला धातुके व्यक्तियोंकी नाकके जखम,
ककी हड्डीपर उस जखमका हमला हो जाना और उसमें छेद
कर हड्डीके टुकड़े निकलनेपर—आरम उपयोगी है। पारदके
पथ्यव्यवहारकी वजहसे मुँहके भीतरके तालुमें जखम होकर वहाँकी
ड्डीमें छेद हो जानेपर भी—आरम उपकारी है। हमेशा सर्दी होकर
 किसी दूसरी वजहसे नाकमें जखम होकर हड्डीपर भी उसका
भाव हो जाये—आरमसे उपकार होता है (पचिनेमिया)। बहुत
दिनोंकी पुरानी नाककी सर्दी, नाकसे सड़ी गन्ध निकलना और
ाकमें सड़े घाव (ओजिना) की बीमारीकी भी यह बढ़िया दवा
। नाकके भीतर पालिपस (गुमड़ा), अर्बुद (ट्यूमर)—
ेगुनेशिया नाइट्रेट देखिये।

अस्थि-सड़ना—(Necrosis—अस्थिक्षय)—मुँहके
ीतर तालुकी हड्डीमें (palatine) जखम होकर, वहाँकी हड्डी
ड़कर, यदि हड्डीका नष्ट होना आरम्भ हो जाये तो जिस तरह

आरम उपयोगी है, उसी तरह शखास्थि (mastoid) और माथे की खोल (cranial) हड्डीमें उस ढङ्गका सडा जखम होनेमें आरम उपयोगी है। यदि शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंकी हड्डीमें रोग हो जाये, कितनी ही भिन्न भिन्न दवाओंकी जरूरत पडती है, जैसे:

चेहरेकी (facial)—हिपर, मेजेरियम, साइलि ; उरु हड्डी (femur)—स्ट्रान्शिया-कार्ब, लम्बी अस्थि पसाफि टिडा, फ्लूस्पियुरा, एसिड-फ्लोर, स्ट्रान्शिया-कार्ब, शंखास्थि और कपालकी अस्थि (temporal)—कैल-फ्लोर, नाककी अस्थि (nasal)—अरम, कैलिबाई, वक्षोस्थि (sternum) कोनियम, एँडीकी हड्डी (tarsus)—प्लैटिना-म्यूर, घुटनेके नीचेकी पैरकी लम्बी अस्थि (tibia)—एसाफिट, हिपर, लैकेसिस एसिड-नाइट्रि, फास, मेरुदण्डकी अस्थि (vertebra)—कैल कार्ब, नैट-म्यूर, सिफिलिनम, एसिड-फास, हन्वस्थि (maxilla) फास्फोरस इत्यादि। अस्थिके दर्दमें भी—आरम लाभदायक है।

आँखकी बीमारी—ऐसा दर्द मानो कोई आँख उखाडता है या भीतरकी ओर खींचता है। यह दर्द बाहरसे आँखके भीतर जाता है। आरममें एक चीज दो दिखाई देती है या किसी चीजका सिर्फ आधा भाग दिखाई देता है, समूचा दिखाई नहीं देता। गर्मी रोगवालोंके आइराइटिस (तारकामण्डल प्रदाह), ग्लौकोमा (धुन्ध, धूमदृष्टि), रेटिनाका काञ्जेशन (चित्रपत्रमें रक्तसंचय) इत्यादिमें आरम लाभदायक है (नाइट्रिक-एसिड और मर्क्युरियस देखिये), लाइकोपोडियममें—चीजोंका दाहिना आधा और

परिश्रम करनेपर ही कलेजा धड़कने लगता है, वक्षोस्थिके भीतर ऐसा मालूम होता है, कि कोई भारी पदार्थ रखा हुआ है (पल्से कार्व), इसी वजहसे चलनेमे कष्ट, रह रहकर एकाएक हृत्पिण्ड का काँपना (जिङ्कम और कोनायमकी तरह) इत्यादि लक्षण आरमके निर्दिष्ट लक्षण है।

डा० एलेन कहते है, कि यकृत, मसाना तथा हृत्पिण्डके भीतरी परिवर्तन तथा गठिया धातुदोषमे हमेशा इसे स्मरण करना चाहिये। "इन यन्त्रोमे चर्बीका होना (फास) व्यायामके बिना ही हृद-वृद्धि।" हृत्पिण्ड चलता चलता एकाएक मानो आ सेकेण्डके लिये बन्द हो गया। या एक वार एकाएक जोरसे चल कर फिर ठीक ठीक चलने लगना, नाडी क्षीण, दुर्बल और अस मान , वक्षोस्थिमे सुई गडनेकी तरह दर्द।

अण्डकोषकी बीमारी—गर्मी या पाराके दोषकी वजह से न होनेपर भी दाहिनी ओरके अण्डकोषके प्रदाहमे (Orchitis) आरम लाभदायक है। (बाईं ओरके स्पजिया)। अण्डकोषकी पुरानी सूजन, बढना , आबमज़ूल, रातमे लिङ्गमे कडापन आता और स्वप्नदोष होता है।

आरमका व्यवहार करते समय ऊपर बताये इसके मानसि लक्षणोंके सिवा और भी कुछ लक्षण याद रखेंगे—रोगी किसी ब का खराब नतीजा ही पहले सोचता है—निराशा, रोगी कहता वृथा ही अब क्यो चिकित्सा करायी जाये—यह बीमारी किसी त

पाम न होगी। रोता है, मृत्यु कामना करता है, सोचता है, कि इस पृथिवीके उपयुक्त नहीं है।

द्रष्टव्य :—ऊपर कहे आरम मेटालिकमके सिवा इसकी र भी कई श्रेणियाँ हैं, वे जिन बीमारियोंमें काममें आते हैं, उन्हें चे देखिये —

आरम-म्युरियेटिकम—जलन और क्षय करनेवाला ीले रगका श्वेत-प्रदर, जीभ, मलद्वार और जननेन्द्रियपर मसे, लद्वारमें नासूर (Fistula) या भगन्दर, नाकसे पीब और खून गिरना, बदबूदार नाकका स्राव, नाकके भीतर दर्द, नाकके भीतर सड़े घाव (Ozœna), उसमें बहुत बदबू, कण्ठमाला धातुवालोंकी नाककी बीमारी, तालुमूलका जखम, दाँतमें नासूर, मसूढ़े और हाडम हड्डीका जखम, ओंठ और जीभमें कैन्सर, गर्मी रोगमें प्रमेहकी तरह पीब गिरना ; पेशावमें बदबू, पेशाब गदला, थोड़ा या अधिक परिमाणमें पेशाब होना, पेशाबका वेग रोकनेमें असमर्थ, बार बार पेशाब ; दृष्टि-हीनता अथवा एकाएक अन्धा हो जाना, स्त्रियोंका प्रमेह, एञ्जाइना पेक्टोरिस (हृतशूल), रोगी—हृत्पिण्डकी जगहपर अत्यन्त कष्ट अनुभव करता है, पारा-गर्मी रोगवाले रोगियोंकी नाना प्रकारकी बीमारी और उपसर्ग, स्वरभंग, बोलनेमें कष्ट, श्वासकष्टता—ऐसा मालूम होता है, मानो स्वरनली रुकी हुई है, छातीमें दबाव मालूम होना, बाईं ओरकी प्लुरा (वक्षावरक झिल्ली) में दर्द प्रभृतिमें यह लाभदायक दवा है। क्रम २x शक्ति।

आरम-म्यूर-केलि—जरायु कड़ा और जरायुसे रक्तस्राव।

आरम-आयोडेटम—हृत्पिण्डके आवरक परदेका अर्थात् पेरिकार्डियमका पुराना प्रदाह, हृत्कम्प (valvular) की बीमारी, नकसीर फूलना, अस्थि-प्रदाह (Osteitis), डिम्बकोषका सिस्ट अर्थात् एक तरहका तरल पदार्थ जमकर अर्बुदकी तरह हो जाना। ल्यूपस (नकड़ा—Lupus)—इस रोगमें मुँह, नाक, कपाल, ओंठ और पलकोंमें एक तरहका धीरे धीरे बढ़नेवाला मारात्मक जखम होता है, वगैरह बीमारियोंकी यह अच्छी दवा है (स्टैनम-आयोड देखिये)।

आरम-सलफ्युरिकम—स्तनकी कई बीमारियाँ, जैसे स्तनका फूलना, स्तनमें दर्द, स्तनका फटना और पेरिलिसिस एजिटैन्स (कम्पन युक्त पक्षाघात)—इन दोनों बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है।

वृद्धि—(aggravation)—ठण्डी हवामें, सोनेपर, मानसिक परिश्रमसे, जाड़ेके दिनोंमें, सब तकलीफें रातमें।

ह्रास (amelioration)—गर्म हवामें, गरमीमें और सवेरे।

पूर्ववर्त्ती औषध—सिफिलिनम, गर्मी रोगवाले मनुष्योंको पहले १ मात्रा सिफिलिनमकी ऊँची शक्तिका प्रयोग कर, ३।४ दिन बादसे आरम-मेटालिकम व्यवहार करानेपर बहुत फायदा होता है।

बादकी दवा (follows well)—पकोन, बेल, कैल्के, चायना, लाइको, मर्क, एसिड-नाइट्रिकम, पल्स, रसटक्स, सिपि, सल्फ, सिकेलि।

क्रिया-नाशक (antidote)—बेल, चायना, काकु, काफि, जिम, मार्क, पल्स, स्पाइजे, कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—५०-६० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—७ (ट्राइटुरेशन)

आरम म्यूरियेटिकम नैट्रोनेटम।

(AURUM MURIATICUM NATRONATUM)

स्त्री-जननेन्द्रिय और जरायु, डिम्बकोष इत्यादि स्थानोंमें स्त्रियों की नाना प्रकारकी बीमारियोंमें यह दवा बहुत दिनासे और अत्यन्त सुकीर्तिके साथ व्यवहृत होती आ रही है। सोरियेसिस-सिफिलिटिका—(Psoriasis syphilitica) रोगमें इससे बहुत फायदा होता है। डा० हेल कहते हैं—इसकी २x शक्ति कुछ दिनोंतक सेवन करनेपर तम्बाकू और अफीम खानेका अभ्यास छूट जाता है। इसके रोग-लक्षण—ठण्डी-तर हवामें और आश्विन महीनेके अन्तसे वसन्त ऋतुतक बढ़ा करते हैं।

स्त्री-व्याधि—जरायु और डिम्बकोषमें अधिक रक्तसंचय होनेकी वजहसे प्रदाह, जरायुका तेज़ और नया प्रदाह (acute me-

tritis), सलफिञ्जो-ओफोराइटिस (Salphingo-Oophoritis) अर्थात् जरायु और कालल-नलका प्रदाह, अतिरज बार बार गर्भ स्राव, सब-इनवाल्यूशन (गर्भाशयका ढीला हो जाना), जरायु-ग्रीवा और योनिमें जखम, जरायुका बाहर निकल आना (prolapsus), जरायुका इतना बढ जाना, कि उससे समस्त वस्तिगह्वर (pelvis) का भर जाना, जरायु-ग्रीवाका अन्तर्वेस्ट-प्रदाह (Endocarditis), जरायु-पेशीकी कमजोरीकी वजहसे रजोरोध, स्वल्परज, बहुत देर से ऋतु होता है, श्वेत-प्रदर, डिम्बकोषका बढना और कड़ापन (ovary endurates), जननेन्द्रियपर पीव-भरे फोडे, (postules) निकलना, जरायुका कैन्सर, कामोन्माद (कैन्थर, हावोसि), डिम्ब कोषका शोथ, वन्ध्यत्व इत्यादि स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियोंमें यह लाभदायक है। सच तो यह है, कि यदि इसे स्त्री-रोगकी पेटेण्ट दवा कहा जाये तो भी अत्युक्ति नहीं है।

फ्रेक्सिनस-एमेरिकाना—जरायुका बढना (hypertrophy), जरायुका अपनी जगहसे हट जाना (displacement), प्रसवके बाद जरायुका आकार स्वाभाविक अवस्थामें न होना, (sub-involution), जरायुका सामनेकी ओर टेढा हो जाना (anteversion), जरायुका पीछेकी ओर टेढा पड़ जाना (retroversion), जरायुका बाहर निकल आना (prolapsus), जरायु का ट्यिुमर, बाधक, मेट्राइटिस प्रभृति स्त्रियोंकी जरायुकी कितनी ही बीमारीमें और तल्वेमें अकड़नमें यह लाभदायक है। इसको नियमित रूपसे सेवन करनेपर जरायु-बन्धन (लिगामेण्ट) सबल

हता है और जरायु अपने स्थानपर ठीक ठीक जा पहुँचता है। ह भी स्त्रियोंकी बीमारीकी पेटेण्ट दवाके समान है। मूल अर्क ० से १५ बूँद मात्रामें रोज २।३ बार सेवन करना चाहिये।

इन ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा—पुराना वात, गठिया ात, गाँठोंका फूलना, पेटके ऊपरी भागमें दर्द, कामला, बदहजमी, पदर, मसे, वाघी इत्यादि बीमारियोंमें भी आरम-म्यूर-नेट्रोनेटम ा व्यवहार होता है।

क्रम—२x—३x विचूर्ण। फारमुला—७

एट्रोपिया।

(ATROPIA)

(बेलेडोनाका उग्रवीर्य पदार्थ)—इसकी प्रधान क्रिया स्नायु-ण्डल पर होती है। पाकस्थलीकी पुरानी बीमारी—पाकस्थलीमें न दर्द, खायी हुई चीजकी के, खाने बाद ही पेटमें दर्द होने ागना, पाकस्थलीमें बहुत अधिक अम्ल इकट्ठा होना, रह रहकर ोन और तकलीफ देनेवाला अम्लशूलका दर्द होना, दृष्टि-शक्तिकी ड़बड़ी, मानो —भ्रम-देखना, दो देखना, सब चीज बड़ी दिखाई ेना, और उठनेके बाद नाना प्रकारकी बीमारियाँ और प्रसूतिकी ाकड़न (Puerperal convulsion), पेरिटोनाइटिस प्रभृति ः बीमारियोंमें इसका व्यवहार करनेपर विशेष फायदा होता है।

पलोपैथिक-एट्रोपिन-सल्फ—आँखकी पुतली फैलो और आँख की बीमारी पैदा करनेवाले सचित पदार्थको पक्षाघातकी तरह सुन्न बना देनेके लिये इसका व्यवहार होता है। आइराटिस (चक्षुतारा प्रदाह) की बीमारीमें पेलोपैथगण एक प्रकारसे पेटेण्ट रूपमें इसका व्यवहार करते हैं।

एट्रोपिन-सल्फ—मार्फिया, ओपियम, प्रुसिक-एसिड और फाइजस्टिगमाकी क्रियाका विरोधी है। ₁⁄₁₀₀ ग्रेन एट्रोपियाके द्वारा १ ग्रेन मार्फियाकी विष-क्रिया नष्ट हो जाती है (antagonistic); इसका भीतरी सेवन भी होता है और हाइपोडर्मिक इंजेक्शन भी होता है। local anæsthetic—अर्थात् शरीरका कोई एक स्थान सुन्न उसकी चेतना-शक्तिको गायब करनेके लिये इसका बाहरी प्रयोग होता है, इसके द्वारा स्पैज्म अर्थात् आक्षेप (अकड़न) बन्द होता है और शरीरके कितने ही स्वाभाविक स्राव, जैसे—स्तनका दूध आदि सूखते हैं।

मात्रा—एट्रोपिन-सल्फ ₁⁄₁₀₀ से ₁⁄₅₀ ग्रेन (बोरिक)।

क्रम—१२ से ३० शक्ति। फारमुला—७।

बैडियागा।

(BADIAGA)

युरोपके जलाशयोंमें उत्पन्न स्पञ्ज। यद्यपि नाना प्रकारकी बीमारियोंमें इससे फायदा दिखाई देता है, तथापि हमेशा सर्दी लगकर जो सब बीमारियाँ होती हैं, उनमें की २।१ बीमारियाँ और शरीरके किसी स्थानकी गाँठ फूलनेपर अर्थात् ग्लैण्डका प्रदाह होनेपर हमलोग इसका प्रयोग करते हैं और इससे आशासे अधिक लाभ होता है। यह एक एण्टि-सोरिक (सोरा-विष-नाशक) दवा है और ग्लैण्ड पर अपनी क्रिया प्रकट कर कण्ठमाला (Scrofula) का लक्षण प्रकट करता है। इसका खाने और लगाने, दोनों तरहका ही प्रयोग होता है। इसका रोगी गरमीमें अच्छा रहता है, उसे जाड़ा और बरसात सहन नहीं होती।

सर्दी-खाँसी—छींक लगकर नाकसे पानीकी तरह सर्दी बहना, छींक और ज्वर-भाव (स्पिरिट-कैम्फर, नैट्रम-म्यूर, आर्सेनिक, मर्कुरियस), इसके अलावा उस तरहकी सर्दीमें क्रमशः दमाकी तरह खिंचाव, साँस लेने और छोड़नेमें कष्ट इत्यादि लक्षणोंके प्रकट होनेपर भी। इसके द्वारा बहुत बार बहुत फायदा होता है (एरालिया देखिये)। इन्फ्लुएञ्जा, हूप-खाँसी और फुसफुसमें डंक मारनेकी तरह दर्दमें भी यह लाभदायक है।

बाघी—गर्मीकी बीमारी हो जानेकी वजहसे बाघी, पुरेका गाँठ कडी और फूली (भीतरी दवा सेवन करते समय इसका मदर टिंचर बाहर लगानेसे बहुत फायदा होता है)।

गाँठोंका फूलना—गाल, गला, गर्दन, बगल, कानकी जड और जबडेकी गाँठका फूलना और बाघी—यह प्रमेह, गर्मी रोग, प्लेग प्रभृति किसी भी कारणसे क्यों न हो, यदि गाँठ पत्थरकी तरह कडी रहे तो इसका व्यवहार करनेपर कडापन घटकर जल्दी आराम होगी। गाँठोंकी बीमारीमें—भीतरी दवा सेवन करते समय, रूईसे इसका मूल अर्क सूजनपर लगानेपर और भी जल्दी लाभ होता है। कार्बो-एनिमेलिस भी इस तरहकी गाँठोंकी सूजन में लाभदायक है। उसका अध्याय देखिये। दर्दकी जगहपर कपडे की रगड तक सहन नहीं होती।

अभिज्ञताका परिणाम—कण्ठमाला धातु रहनेपर अकसर कानकी जड और जबडेकी नीचेकी गाँठें फूली रहती हैं। इसमें मैं बैडियागा ६ ठीं शक्ति फायदा न होनेतक दिनमें दो बार खिलाना और मूल अर्क—दिनमे दो तीन बार बाहर लगानेका व्यवस्था करता हूँ। उससे थोड़े ही दिनोंमे फायदा होता दिखाई देता है।

एक रोगीकी गर्दन और जबडेके नीचेकी ५।७ गाँठे, छोटी बडी दर्द-भरी निकला करती थीं। प्रत्येक एकादशीके बादसे अमावस्या और पूर्णिमाके बीचमें उसके शरीरकी अवस्था अच्छी नहीं रहती

, कभी कभी कम्प देकर बोखार आता था। इस रोगीके लिये
इलिसिया—२०० शक्ति एक मात्रा, प्रति एकादशीको और
च बीचमें २।१ मात्रा कर बेडियागा सेवनके लिये देता था।
ली मात्रा साइलिसिया सेवनके १५।२० दिन बाद जब रोगी
सरी बार मुझे दिखाने आया, तो देखा कि उसकी सब गाँठे
दृश्य हो गयी हैं, शरीरकी अवस्था पहलेकी अपेक्षा बहुत अच्छी
, बोखार नहीं आता। औषध-सेवन बन्द कर दिया। इसके बादसे
गीकी और किसी तरहकी तकलीफका समाचार नहीं मालूम हुआ।

नीचे लिखी और भी कई बीमारियोंमें बेडियागा लाभ किया
रता है —

१। दाहिनी आँखमें स्नायुशूल; २। हुप-खाँसीमें जोरसे
लगम निकलना, ३। जरायुसे रक्तस्राव, इसका रातमें बढ़ना और
सके साथ ही माथा बड़ा हो जानेकी तरह अनुभव होना, ४।
घराम्रोर, मसे; ५। घोड़ेके पैरका जख्म, घोड़ेके खुरमें चोट,
६। शरीरकी सभी पेशियाँ और चमड़ेमें इस तरहका दर्द मानो
किसीने मारा है, ७। स्पर्श तक सहन नहीं होता।

सदृश—थेराइडा-कार्य, आयोड, मार्क, फाइटो, स्पञ्ज साइलि।
क्रम—३x—६ठी शक्ति। फारमुला—४

बैलसमम पेरूवियेनम।

(BALSUMUM PERUVIANUM)

(अमेरिकाके एक प्रकारके वृक्षका गोंद)—किसी भी स्थानमें एकदम बदबू, हेक्टिक (क्षय) ज्वरकी तरह लगातार बराबर ज्वर, (पीवका विष फैलनेपर इस तरहका ज्वर होता है) और इसके साथ ही कमजोरी रहनेपर इसका प्रयोग कर देखें १। भीतरी सेवन,—२। बाहरी लगाना और ३। स्टीम आटोमाइजर नामके यन्त्र द्वारा धुआँ पैदा कर साँससे ग्रहण करना। यह तीन तरहका व्यवहार होता है।

थाइसिस, ब्राङ्काइटिस और निमोनिया—इन तीन बीमारियोंमें जब फेफड़ेमे बहुत बदबू, गाढ़ा, हरा या पीले रंगका पीवकी तरह या मक्खनकी तरह बलगम निकला करता है, हेक्टिक ज्वर रहता है, रातमें पसीना होता है, वहाँ इससे फायदा दिखाई देना सम्भव है। इसकी सर्दी खूब ढाली और घरघर करनेवाली (कैलि-सल्फ और एण्टिमकी तरह) रहता है, रोगी खाँसता है, ढेरका ढेर बलगम निकलता है। खाँसनेपर कितनी ही बार बलगम और खायी हुई चीज भी कै हो जाती है।

बहुत दिनोंकी नाककी पुरानी सर्दी—सर्दीमें बहुत बदबू, नाकसे सड़ी गन्ध निकलती है, पास बैठनेसे घृणा होती है, नाकसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ी सर्दी निकलती है। नाकके छेदमें फटे घाव और जखम हो जाता है।

जखम—किसी भी प्रकारके चर्मरोगमें (एकजिमाके) थ जखम, जखमसे लगातार गाढा बदबूदार स्राव और पीव निक- ता है। सूखी और तर खुजली, स्तनकी घुंडीमें जखम, शय्याक्षत र दूसरे दूसरे सभी तरहके सडे जखमोंमें—इसका मूल अर्क भाग, ३० भाग वैसिलिनके साथ मिलाकर बाहरी प्रयोग करनेपर द ही जखमकी बदबू नष्ट हो जाती है, जखम भी भर जाता है। जली खसडेमें भी इसका मूल अर्क प्रयोग करनेपर लाभ होता । (यसिड-फ्लास्तो देखिये)।

आमाशय—बीमारीकी पुरानी अवस्थामें मलके साथ बदूदार पीव और रक्त अथवा ज्यादा परिमाणमें आम निकलती है।

पेशाब—परिमाणमें बहुत थोडा, उसकी तली श्लेष्मासे ।

क्रम—१, १x—३ शक्ति (हेक्टिक ज्वरमें—६x शक्ति)।

फागमुला—५-८।

बेप्टिसिया टिङ्कटोरिया।

(BAPTISIA TINCTORIA)

(जंगली नील गाछकी जड और छालसे इसका टिंचर तैयार ता है)—टाइफायड, इन्फ्लुएंजा, प्रभृति रक्तके दोषसे उत्पन्न मारियां और शरीरसे निकले हुए किसी भी स्रावमें बहुत बदबू

रहनेपर इसके व्यवहारसे विशेष लाभ होता है। यह श्लेष्मा और रस-प्रधान धातुमें कुछ जल्द क्रिया प्रकट करता है।

बैप्टिसिया—रक्तके ऊपर क्रिया प्रकटकर रक्तमें विकार पैदा करता है, टाइफायड लक्षण उत्पन्न करता है, मुख, गला, आँत और श्लैष्मिक झिल्लीमें जखम होता है, गति और ज्ञान-नाड़ियोंमें रोगका हमला होकर अंगको हिलाने और ज्ञान, दोनोंका ही पक्षाघात और कमजोरी पैदा करता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। टाइफायड या किसी दूसरी नयी बीमारीमें—पाखाना पेशाब, श्वास-प्रश्वास, पसीना, जखमका स्राव प्रभृति सबमें सड़ी-बदबू, २। सभी कामोंमें उदासीन, किसी काममें मन नहीं लगा सकता, किसी भी विषयको सोचनेकी ताकतका गायब हो जाना, ३। ज्वर-विकार—बेहोशी, सवालका जबाव देते देते ही सो जाना, ठीक उत्तर न दे सकना, (ठीक उत्तर देता है, पर तुरत ही आच्छन्न हो जाता है—आर्निका), जीभपर पहले सफेद लेप, जीभके काँटे लाल, सूखे, जीभके बीचके स्थानपर पीला-भूरा रंग और जीभ सूखी फटी और जखम-भरी, दाँतमें मैल (sordes) जमना, मुँह लाल तमतमाया (dusky dark red), जिस करवट सोता है, उसी ओर कुचलनेकी तरह दर्द अनुभव होना, तरल पतली चीजोंके सिवा कड़ी चीज निगलनेकी शक्तिका न रहना शय्याक्षत, ४। टाइफायड अथवा टाइफायडकी तरहके ज्वरमें ऊँचे तापके साथ मस्तिष्कके लक्षण, आच्छन्न भाव, पेट फूलना,—

पेट दबानेपर नरम मालूम होना, पेटमे गडगड आवाज, ४। ठीक आमाशयमे और बच्चोंके उदरामयमे बदबूदार दस्त।

टाइफायड ज्वर—जब पहले सप्ताहमें कोई ज्वर कौन , यह स्थिर न हो तो ब्रायोनिया और जेलसिमियमकी तरह उपगी है। टाइफायड ज्वर यदि बहुत जल्द जल्द बढता जाये और सके साथ ही पेटकी गडबडी भी पैदा हो जाये, तो तुरन्त बैप्टिसियाका प्रयोग करना चाहिये, नहीं तो आँतोंके तरल पदार्थका डना आरम्भ होकर जल्द ही रोग कठिन आकार धारण कर लेगा। टाइफायडके पहले सप्ताहमे—आँतोंमे घाव होनेके पहले और न बोखारमे इससे बहुत जल्द फायदा होता है। बढी हुई अवस्था मे—२ रे या ३ रे सप्ताहमे—बैप्टिसियाके प्रयोगके समयके नीचे लिखे लक्षण स्मरण रखने चाहिये।

समूचे शरीरमें भयानक दर्द, तलपेट फूलना, पर नरम, तलपेटमे दाहिने पुट्ठेके कुछ ऊपर दबानेपर गडगड शब्द और दर्द, कभी कभी समूचे तलपेटमे दर्द, बेचैनी, जाडा मालूम होना, कभी कहता है, पिशाबन बहुत कडा है, सोये रहनेपर दर्दका बढना, नाडी स्थूल और कोमल पर तेज; कभी कभी परिवर्त्तन-शील, मांसमे भार और मरोडकी तरह मालूम होना; सर दर्द। काल्पनिक विकार, विकारमे आच्छन्न भाव, कभी कभी बेमतलबकी बातें बकता है। पुकारनेपर उत्तर देता है; पर कुछ पूछनेपर आधा-थोड़ा जवाब देकर फिर बेहोश सा हो जाता है, ठीक मानो सो

गया। जागते रहनेपर भी सवालका जवाब देनेकी इच्छा नहीं रहती, हमेशा करवट बदलता रहता है, मुँह तमतमाया, घोर लाल रंगका, मुँहका भाव मुर्दोंकी तरह, दाँत और ओंठमे काले रगका मैल-सञ्चय (sordes) होता है, जीभके बीचमे पीलेका रगका मैल जमा रहता है, पर किनारे सूखे, लाल रगके और चमकीले रहते हैं। प्यास, साँस, पसीना और मल-मूत्र सबमें ही बदबू, मटरकी दालके शोरवेकी तरह हरे रगका मल और उसमें फेन मिला रहता है, उसमें बदबू, आँतोंमे जखम होनेकी सम्भावना इत्यादि। टाइफायड मे—रक्तामाशय (Dysentry) कुंथन और वेग रहनेपर या बहुत थोडी मात्रामे रहनेपर इससे फायदा होगा।

वैप्टिसिया, ब्रायोनिया और जेलसिमियम,—इन तीन दवाओं मे—शरीरमें दर्द, सुस्ती और कमजोरी है, बेहोश रहनेपर—<u>जेलसिमियम</u> और दर्दकी ज्यादतीकी वजहसे आच्छन्न होनेपर—<u>ब्रायोनिया</u>, वैप्टिसियाकी आच्छन्नता—विकारकी आच्छन्नता है। <u>ब्रायोनियाका शरीरका दर्द</u>—हिलने-डोलनेपर उपसर्ग बढते हैं इसीलिये, रोगी चुपचाप पडा रहता है। ब्रायोनियामे—कब्जियत, वेप्टिसियामें—बदबूदार पतले दस्त (कभी कभी कब्ज) और <u>जेलसिमियममे</u>—बहुत पतले दस्त भी नहीं और बहुत कब्जियत भी नहीं, <u>चेहरेका घोर लाल रग</u>—वेप्टिसियामे ज्यादा, उससे घट कर जेलसिमियम और उसके नीचे ब्रायोनियामें। इनतीनो दवाओं मे मल-मूत्र आदि स्रावमे बदबू सिर्फ वैप्टिसियामे है। <u>वेप्टिसिया</u>

में—विकारमें रोगी कुछ न कुछ आच्छन्न भावसे स्थिर होकर पड़ा रहता है, या बेमतलबका प्रलाप बकता है, ब्रायोनियामें,—अपने दिन-भरके काम या दैनिक व्यवसायके सम्बन्धमें प्रलाप बकता है। जेलसिमियममें—प्राय प्रलाप बकता ही नहीं है।

जीभ—ब्रायोनियामें जीभपर सफेद मैल, ओंठ सूखे, बहुत प्यास, जेलसिमियममें—जीभ काँपती है, मैल थोड़ी। वेप्टिसिया में—बीचका भाग भूरा, अगला भाग और अगल-बगल लाल रंग, इसमें कभी कभी पहले जीभ सफेद लेप चढ़ी दिखाई देती है। इसके बाद भूरारंग धारण करती है। रसटक्समें—जीभका अगला भाग लाल, त्रिभुज आकार—तिकोनिया दिखाई देता है (जीभ, सफेद—एण्टिम-क्रूड, चमकीली—आर्नि, सूखी—पल्सिड-म्यूर, गहरी पीली—एसिड-फास; काली—कार्बो)।

पेशाब—ब्रायोनियामें—थोड़ा और लाल रंगका, जेलसिमियममें—पेशाब अधिक, वैप्टिसियामें—पेशाब थोड़ा, गहरे लाल रंगका और बहुत बदबू। रोगकी बढ़ी हुई अवस्थामें—विकारग्रस्त वैप्टिसियाके साथ आर्निकाका और एसिड-म्यूरका जो प्रभेद है, वह नीचे लिखा जाता है—

आर्निका—उदासीनता—बातका जवाब देता देता भूलकर मानो सो जाता है और चुपचाप पड़ा रहता है। रोगीको पूछनेपर कहता है "अच्छा हूँ" नीचेवाला ओंठ काँपता है, नींदके समय जोर से साँस लेता और खोंढता है, पतली चीजें निगलनेमें गलेमें गड़गड़

आवाज़ होती है, अनजानमे पाखाना-पेशाव होता है, नाडी तेज, रोगीका पहलेसे ही बेहोश भाव, सुननेकी ताकतका घट जाना।

एसिड-म्यूर—एकदम ज्ञानका लोप हो जाना, कानमें सूखापन रहनेके कारण श्रवण-शक्तिका घटना, मुँहमे छोटे छोटे बदबूदार जखम, जखम गहरे और लाल रगके, जीभ सूखी, चमडेकी तरह खडखड, जीभ बाहर नहीं निकल सकता, अनजानमे पाखाना-पेशाव होता है, पेशावकी चेष्टा करनेपर अनजानमे मल निकल जाता है, मलमें बहुत बदबू, नाडीकी गति प्रत्येक तीसरे स्पन्दनपर लोप हो जाती है और फिर चलने लगती है। आसन्न अवस्थाम— अगर रोगीको आम-मिले पतले दस्त आयें तो इससे फायदा होता है।

बेप्टिसिया—उद्वेगसे भरा, वातका जवाव देता देता सो जाता है। नीचेका जवडा झूल पडता है, और रोगी विछावनसे पाताने की ओर सरक जाता है, मुँह फाडकर साँस लेता है, अनजानमें वदबूदार दस्त आते है। नाडीकी गति—तेज, पूर्ण और परिवर्तन-शील। ज्वर भोगनेके समय अथवा वाद सुननेकी ताकत घट जाती है। मुँहमें वदबूदार जखम, मुँहसे लसदार लार बहना, जीभ सूखी, वहुत वदबूदार मल अज्ञानमें निकलना, कभी अतिसार और कभी कब्जियत प्रभृति।

द्रष्टव्य :—ऊपर टाइफायड ज्वरके बैप्टिसियाके जो लक्षण वर्णान किये गये है, उन सब लक्षणोंमें अगर समय पर वैप्टिसियाका प्रयोग हो जाता है, तो जो बीमारी ५।७ सप्ताहका

समय लेती मालूम होती थी, आप देखेंगे कि बीमारी प्राय ७।८
दिनोंमें ही आरोग्य हो गयी। मैं पहले बैप्टिसिया—φ या—१x,
इसके बाद ६ ठीसे लेकर ३० वीं शक्तितक व्यवहार करता हूँ,
रोग असली टाइफायड लक्षणवाला होनेपर देखा है, कि अधिकांश
रोगी सिर्फ बैप्टिसियाके प्रयोगसे ही आरोग्य हो जाते हैं। तेज
बुखार, पेटकी गडबडी, सभी जल्दी जल्दी घटने लगता है। एक
प्रसिद्ध वृद्ध डा० लिपिने कहा है—यदि टाइफायडके रोगीपर
किसी भी दवासे फायदा न हो तो उसे सलफरकी तरह बीच
बीचमें एक मात्रा ऐकेसिस देना चाहिये। आजकल अधिकांश टाइ-
फायड रोगियोंको कब्ज रहता है, मैं १०२ से १०३।१०४ डिगरी
ज्वर, कब्ज या अतिसार, थोडी-सी मस्तिष्ककी गडबडीका लक्षण
देखते ही बैप्टिसियाका प्रयोग करता हूँ और उससे विशेष लाभ
दिखाई देता है।

मुहका जखम—मुँहमें हो या दाँतमें हो, अथवा गलेमें
हो, यहाँतक कि डिफ्थीरियामें भी—यदि घावमें बहुत बदबू रहे।
और जखमवाली जगह घोर लाल हो, पर उसमें ऐसा मालूम हो
कि न जाने कितना दर्द है, पर दर्द जरा भी नहीं रहता—इन सब
लक्षणोंमें—बैप्टिसिया निर्दिष्ट है।

आमाशय—आमाशयमें वेग और कुयन बहुत अधिक
रहती है। पाखानेमें बहुत बदबू, पर पेटमें जरा भी दर्द नहीं
रहता। रोगी बहुत कमजोर हो जाता है।

गर्भ-स्राव—गर्भके बालककी मृत्यु होकर योनिद्वारसे बदबूदार स्राव होनेपर, यहाँतक कि अन्तमें सेप्टिसिमिया रोग तक पैदा हो जानेपर इसके भीतरी और बाहरी प्रयोगसे (समयपर यदि प्रयोग हो) तो विपत्तिकी कोई आशका नहीं रहती (आंशिक सडा भ्रूण निकालनेके लिये—सिकेलि-⁶, और कालोफाइलम-१—१२ लाभदायक हैं)।

सदृश—आर्नि, आर्स, ब्रायो, जेलसि।

अनुपूरक औषध—एसिड-नाई, एसिड-म्यूर, टेरिबिन्थ, क्रोटोन, हैमा (ये सब टाइफायडके रक्तस्रावमें बैप्टिसियाके बाद फायदा करते हैं)।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६—८ दिन।

क्रम—मदर टिंचरसे २०० शक्ति। टाइफायड ज्वरमें—१-१२। और ३ री शक्तिका ही अधिक व्यवहार होता है।

फारमुला—३।

बेराइटा कार्बोनिका।

(BARYTA CARBONICA)

(एक तरहका पदार्थ, खनिज पदार्थ)—यह सोरिक (सोरा-दोष ग्रस्त) और कण्ठमाला-धातु तथा यक्ष्मा-धातुवालोंके लिये उपयोगी दवा है। यह दवा व्यवहार करते समय रोगीकी धातुपर खास नजर रखे।

जिन मनुष्योंकी याददाश्त कमजोर है, जो मूर्ख बुद्धि-हीन हैं, जल्दी-जल्दी बढ़ते नहीं, बौने, कुरूप, झुके (बच्चा जल्दी जल्दी बढ़ता है—केल्केरिया-कार्ब), जिनका पेट मोटा तथा और और अंग-प्रत्यंग दुबले रहते हैं, जरासेमें ही यहाँतक कि माथेमें ठण्डी हवा लगनेपर या माथा धोनेपर सर्दी लग जाती है, सर्दी हो जाती है, छींकें आने लगती हैं, तालुमूल फूलते हैं, पैरके तलवेमें हमेशा पसीना होता है, पैर ठण्डे रहते हैं, शरीरमें तकलीफ देनेवाले गट्टे (corns) होते हैं, युवावस्थामें कब्जियत और जलन-भरी अर्शकी बीमारोंसे कष्ट पाते हैं—मल-कड़ा, उनकी और वृद्धोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें यह उपयोगी है। बच्चेको कुछ भी याद नहीं रहता, कुछ भी सीख नहीं सकता, चलना नहीं सीखता, खेलता नहीं है, भूख थोड़ी, पेटमें शूलका दर्द होता है स्त्रियोंका ऋतुस्राव बहुत थोड़ा होता है, युवक हस्तमैथुन या किसी दूसरे उपायसे वीर्य नष्टकर डिस्पेपसिया (मन्दाग्नि) भोगा करते हैं, इसके साथ ही कलेजेमें धड़कन; किसीके आनेपर छिप जाता है, पतलीके सिवा कड़ी चीज निगल नहीं सकता। ये सभी इस दवाके चरित्रगत लक्षण हैं (characteristic symptoms)। इसमें शरीरकी धातु और रोगका आक्रमण अधिक होता है।

स्मरण-शक्ति—युवकोंकी स्मरण-शक्ति अगर घट जाये तो—एनाकार्डियम, पर वृद्धोंकी स्मरण-शक्ति अगर घटे तो बैराइटा-कार्ब, खासकर सन्यास रोगमें लाभदायक है।

सुखण्डी—बालक या वृद्ध बहुत ज्यादा खाते पीते हैं, पर सूखते हैं, मानसिक या शारीरिक बहुत कमजोरी, पेट निकला और दूसरे दूसरे अंग खासकर निम्न अंग सूख जाते हैं। माथा शरीरकी अपेक्षा बड़ा रहता है, थोड़ी-सी सर्दी लग जानेपर भी बीमारी हो जाती है, बर्सातमें बीमारी बढ़ती है,—ये ही वेराइटा-कार्बके लक्षण हैं, ये ही लक्षण—साइलिसियामें भी है, पर साइलिसियामें माथेमें पसीना रहता है, वेराइटामें माथेमें पसीना नहीं होता। वेराइटामें—मानसिक दुर्बलता अधिक, साइलिसियामें—एकागी भाव दिखाई देता है, बच्चा हमेशा ही रोता रहता है (एब्रोटेनम अध्याय देखिये, सलफर अध्यायमें मारास्मसका लक्षण देखिये)।

टानसिल-प्रदाह—(तालुमूल-प्रदाह)—सर्दी लग कर टानसिलका प्रदाह—तालुमूलमें बेहद दर्द, दाहिनी ओरका तालुमूल बहुत फूलता है, थूकने या घूँट लेनेमें अधिक दर्द होता है, इन सब लक्षणोंमें—वेराइटा ज्यादा फायदा करता है। इसके अलावा—अगर टानसिल पककर पीब, जखम या गलेका जखम हो जाये, तो भी यह फायदा करता है। जिन्हें अकसर इस ढगकी बीमारी हो जाती है, उनके लिये एक मात्रा—वेराइटा उच्च शक्तिकी प्रयोगकर देनेपर बहुत फायदा होता है। लैकेसिस और लाइको-पोडियम भी इस बीमारीमें लाभ करते हैं, उनका प्रभेद देख लें।

घेघा और टियुमर—गला और गर्दनमें नरम थुलथुल चर्बी-भरा अर्बुद (मिदार्बुद—[illegible] ... कहते हैं।)

[आ]शयका अर्बुद (सिस्टिक टियुमर), गला या गर्दनके पिछले [भ]ागका अर्बुद, गर्दन फूली, कर्णमूल और निचले जबडेकी गाँठ [फ]ूलना प्रभृतिमें बेराइटा लाभदायक है।

चर्म-रोग—माथेमें पपडी जमती है (Crusta lactea) [के]श झड जाते है, थोडी उमरमें ही खलवाट निकल आता है—खासकर माथेकी चांदीके केश झड जाते हैं। कण्ठमाला-धातुवालों के भी इस तरह केश झड जाते हैं—बैराइटा ज्यादा लाभ करता है।

कानकी बीमारी—गलक्षत (Quinsy) रोगके साथ कानमें पीब रहनेपर बैराइटासे लाभ होता है।

गलक्षत—एक जगह पर डा० एलेनने कहा है,—जिसे रह रहकर इस ढङ्गकी बीमारी हो जाती है, वे बैराइटा कार्ब ३० शक्ति; नियमित रूपमें सेवन करें तो इससे छुटकारा पा जायँगे। (Baryta will act as a preventive against quinsy) अर्थात् बैराइटा तालुमूल प्रदाहका प्रतिषेधक है।

खाँसी—तालुमूल प्रदाहकी वजहसे खाँसीमें बैराइटा उपयोगी है। पानीके साथ बराबर भागमें सुरासार (रेक्टिफायड स्पिरिट) मिलाकर कुल्ला करनेपर तालुमूल प्रदाह और खाँसीमें बहुत अच्छी फायदा दिखाई देता है।

मुंहकी बीमारी—मसूड़ेमें रक्तस्राव, रक्तस्रावके पहले दाँतमें दर्द, मुँहका भीतरी भाग छालोंसे भरा, मुँहसे बदबू निकलती है। जीभकी नोकमें जलन और दर्द, लार बहना।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा—युवक या मध्य उमरके आदमियोंका ध्वजभग,सब मेक्सिलरी (तालुमूल ग्रन्थि) और मेसे एटरिक (ओदरिक ग्रन्थियाँ) बढना, फैरी टियुमर खासकर पाठ का, वृद्धोंको दम अटकानेवाली खाँसी, सर्दी, स्त्री-सगमकी इच्छा प्रवल पर शक्ति का न रहना, प्रोस्टेट ग्रन्थिका बढना, अर्थात् मूत्रा शय मुखाशायी ग्रन्थिका बढना, मस्तिष्ककी क्रियाकी दुर्बलताकी वजहसे पक्षाघात, कब्जियत (मल कडा, परिमाणमें थोडा) इत्यादि बीमारियोंकी यह महोपधि है। डा० एलेन कहते हैं—बेराइटा मोतिया बिन्दु (Cataract) की एक बढिया दवा है।

वृद्धि (aggravation)—रोगके विषयमे सोचनेपर, रोगवाला अश दबाकर सोनेपर, भोजनके बाद, धोनेपर।

ह्रास—निर्मल वायुमे और सोनेपर।

सदृश—गलगराडमे बैराइटाके बाद सोरिनम लाभदायक है।

क्रिया-व्याघातक (inimical)—कैल्केरियाके बाद—बैराइटा।

क्रिया-नाशक (antidote)—एण्टिम-टार्ट, बेल, कैम्फर, डल्का, जिङ्कम।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—७।

वैराइटा आयोडेटा ।

(BARYTA IODATA)

(आयोडाइड आफ वैराइटा)—श्लेष्मा-प्रवण और रस-प्रधान
ं इस दवाकी क्रिया अधिक प्रकट होती है। निम्न-तालुमूल
(sub maxillary) फूलती है, ट्यिुमरकी तरह हो जाती
हुत दिनोंकी पुरानी अण्डकोषकी सूजन और कड़ापन, उमर
के साथ ही साथ शारीरिक और मानसिक वृद्धिकी कमी
े इसके विशेष लक्षण हैं।

नीचे लिखी कई दवाओंमें भिन्न भिन्न स्थानोंकी गांठोंपर रोग
ाक्रमण होता है और वे वैराइटाके सदृश हैं। गांठोंमें बाहरी
। के निमित्त चिकित्सामें गांठोंकी सूजन और बाघी देखिये।

फकोनाइटम-लाइकोटेनम—Swelling of glands गर्दन,
: और स्तन प्रभृतिकी ग्रन्थियोंकी सूजन।

कोनियम—स्तनकी ग्रन्थिकी सूजन।

कार्बो-एनिमिलिस—बाघी और बगलकी गांठ फूली, पीब
होता।

मर्कुरियस आयोड और विन-आयोड—बुद्दे और बाघी प्रभृति।

ैपिस-एल्बा—गलेकी गांठ, गलगण्ड (क्रम—६ ठी शक्ति)

कैल्केरिया-आयोड—कैल्केरिया धातुके मनुष्योंकी गांठोंकी
दिनोंकी पुरानी सूजन। कैल्केरिया-आयोड और कैल्केरिया-
किसी भी ग्राङ्कियल ट्यिुब (वायुनली) के भीतरकी ग्रन्थि।

थाइरायडिनम और आयोडम—गलगण्ड, Enlargment of the thyroid gland (यह ग्लैण्ड कृकायेड-कार्टिलेजके ऊपर टेटुआके दोनों ओर रहती है)। वैराइटा म्यूर—गर्दनका कानकी जडकी, निचले हनुकी, पुट्ठे की गाँठ फूलती है, कड़ी हो जाती है।

कैमोमिला—पैरोटिड (कर्णमूलीय ग्रन्थि) और सब-मैक्सिलरी ग्लैण्ड (तालुमूल ग्रन्थि) की सूजन।

वैराइटा-कार्ब—कानके नीचेसे आरम्भ होकर गलेकी ओर सूजन उतरती है।

गुयेकम—टानसिल (तालुमूल) फूलना, विशेषकर प्रथमावस्थामें गलक्षत (क्विनजी)। गलेके भीतर बहुत अधिक जलन। मुँह बदरंग, सड़ी दुर्गन्ध, रोगकी गति जल्दी जल्दी पकनेकी ओर रहती है।

फाइटोलैका—टानसिलाइटिस (तालुमूल-प्रदाह)।

सिस्टस—एक डोरीमें एकके बाद दूसरी गाँठ देनेपर जैसा हो जाता है, ठीक उसी तरह गाँठें फूल उठती है।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—७।

बैराइटा म्यूरियेटिकम।

(BARYTA MURIATICUM)

यह दवा भी बैराइटा कार्बकी तरह ही है—मूर्ख-बुद्धिहीन, [गू]गना, बौना, स्मरण-शक्तिसे हीन और कण्ठमाला धातुग्रस्त [व्य]क्तियोंके लिये यह उपयोगी है। यह पाचन-यन्त्रपर क्रिया प्रकट [क]र—दस्त, कै, मिचली, ओकाई आना, पेटमे दर्द और पेशी तथा [ग्र]न्थियोंपर क्रिया प्रकट कर प्रत्यंगोको कड़ा और अकड़न पैदा कर [दे]ता है। इससे रोगी कुबडेकी तरह हो जाता है। इसमे शरीरकी [ला]ल रक्त-कणिकाएँ घट जाती हैं और श्वेतकण बढ़ जाते है (leucocytes), इसलिये, रोगीका चेहरा सफेद होता जाता है। [इ]सका एक और भी लक्षण है—"कोई चीज खाते-पीते ही अन्ननली [का] मुँह सकुचित होता जाता है, उससे निगलनेके समय दर्द होता है और ऐसा मालूम होता है, मानो गलेकी नलीमे कुछ अड़ा हुआ है।"

कानकी बीमारी—कानके भीतर एक तरहका कों कों सों सों शब्द। खाने-पीने या छींकनेके समय कानके भीतर फड़फड़-सी आवाज या सों सों आवाज होती है। कानमें पीब—बहुत बदबू।

पाकस्थलीकी बीमारी—अरुचि, वमन, पेटमें जलन, ऐसा मालूम होता है, मानो एक उत्ताप या गर्मीका भाप, पेटसे छाती और माथेकी ओर चढ़ रहा है।

ग्रन्थि-फूलना—गर्दनकी, कर्णमूलकी (paro
निचले जवडेकी ग्लैण्ड (sub-maxillary gand) फूल
है और कडी हो जाती है, पुट्ठा फूलता है ।

गलेके भीतरकी वीमारी—उपजिह्वा बढ
तालुमूल फूल जाता है और वडा हो जाता है, इसीलिये, नि
तकलीफ होती है , सर्दी लगकर वीमारी उत्पन्न हो जाना
सब व्यक्तियोंको वार वार तालुमूल प्रदाह (Tonsilitis) ह
है, तालुमूल पकता है, पीव होता है, उनके लिये वेरा
लाभदायक है । वहुत दिनोंकी पुरानी टानसिलाइटिस भी
उच्च शक्तिसे आरोग्य होती है, परीक्षा करें ।

श्वासयंत्रकी वीमारी—वृद्धोंका ब्राङ्काइटिस
रोगमें कलेजेमें श्लेष्मा घरघर करता है , पर उसे वाहर नहीं
सकता ।

पेशाबकी वीमारी—पेशावकी परीक्षामें क्लो
अश घटना, युरिक एसिडका परिमाण वहुत अधिक ।

पक्षाघात—रोगवाला अश सुन्न, शरीर इतन
मानो वरफ ।

जननेन्द्रियके रोग—स्त्री या पुरुषको कामो
जाता है । आत्महत्याकी प्रवृत्तिके साथ—ओरिगोनम ; प्रस
प्लैटि , पुरुषका—एसिड पिक्रि, केन्यर ; शराबियोंका—

सदृश—वैराइटा-कार्ब, आरम-म्यूर।
क्रम ३x—२०० शक्ति।
फारमुला—विचूर्ण—४। जलीय क्रम—५-८।

बेलेडोना।

(BELLADONA)

(युरोपमें एक तरहका छोटा गाछ होता है)—इसका अधिक मात्रामें व्यवहार करनेपर हृत्पिण्डका (न्युमोगैस्ट्रिकका) पक्षाघात, सहानुभूतिक स्नायु (sympathetic nerve) की शक्तिकी वृद्धि, हृत्पिण्डकी क्रिया तेज और नाड़ीकी गति पूर्ण और वेगवती होती है। शरीरके दाहिनी ओर और मस्तिष्क, स्नायु और ग्रन्थि प्रभृतिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता (congestion) की वजहसे सर-दर्द, चेहरा तथा आंखें लाल, कपालकी शिरायें (carotid artery) में टपक, श्लैष्मिक—झिल्ली-प्रदाह, तालुमूल प्रदाह (टानसिलाइटिस), तेज विकार-लक्षण, ग्रन्थियोंका फूलना,—उसमें बिलकुल ही स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द, प्रदाहवाली जगहका लाल होना, बेचैनी, नींद न आना, दर्दका एकाएक पैदा हो जाना और घटना, लेटे रहनेपर दर्दका बढ़ना—इत्यादि—इसके विशेष लक्षण हैं। यह रक्त-प्रधान, रस-प्रधान और पित्त-प्रकृति वाले मनुष्योंके लिये—जो जरा अच्छे रहनेपर ही रसिक और

कौतुहल-प्रिय होते हैं और जरा भी बीमार होनेपर बहुत ही ज्यादा कातर हो जाते हैं, स्नायविक (नर्वस) उनके लिये तथा सुन्दर चेहरा, पतले केश, नीली आँखें और ट्यिुबरकियुलस (यक्ष्मा-ग्रस्त) व्यक्तियोंपर इसकी विशेष क्रिया प्रकट होती है। वेलेडोनाकी अधि-काश बीमारियाँ शरीरके दाहिने ओर होती है, इसीलिये—दाँतका दर्द, चेहरेके दाहिनी ओरका स्नायुशूलका दर्द, दर्द एकाएक पैदा होता और एकाएक ही चला जाता है, दाहिने कन्धेमें शूलका दर्द, दाहिने डिम्बकोषका प्रदाह या स्नायुशूलका दर्द प्रभृतिमें इससे बहुत ही थोडे समयमें फायदा पाया जाता है। किसी बीमारीमें यदि रोगवाली जगह चमकीली लाल हो जाये, उसमें बहुत दर्द शरीरका चमडा लाल-ज्वरकी तरह लाल हो जाये, लाल रगके दाने निकले, खूनी बवासीर, मलद्वारमें दर्द, मिचली, खायी हुई चीनकी कै, छातीमें जलन, उसके साथ ही बहुत ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा पाकस्थलीमें दर्द—यह मेरुदण्डके भीतरसे कन्धेतक चला जाता है, गलनलीके किसी तरहके प्रदाहकी पहली अवस्थामें गलेमें वेदना दर्द, गलनली सकुचित रहना, इसीलिये, कुछ खाने-पीनेपर उसका बाहर निकल आना, जरायुका नया प्रदाह और उसका बाहर निकलना, प्रसवके बाद चमकीले लाल रगका ज्यादा परिमाणमें गरम रक्त-स्राव, फूलका कुछ अश टूटकर भीतर रह जाना, प्रसव दर्दके समय जरायुका मुँह कडा और सकुचित बना रहना प्रभृति कई लक्षण और रोगमें इसे पहले ही स्मरण करें। वेलेडोना आरक्त-ज्वर (स्कार्लेट) की महोपधि है और प्रतिषेध

है। तोतलाकर बोलनेमें भी इससे कभी कभी फायदा
ता है।

बेलेडोनाका प्रधान चरित्रगत लक्षण —

१। जरा भी ठण्ड लगनेपर, ठण्डी हवामें, सरमें कोई आवरण
रहनेपर यहाँतक कि केश कटवानेपर भी सर्दी लग जाती है,
र्दी हो जाती है। बीमार हो जाता है, (पैरमें ठण्ड लगकर
मारी—माइलि, कोनि, फ़ुम्म); २। सभी तरहके दर्द एकाएक
ा होते और एकाएक ही गायब हो जाते हैं, चेहरा और आँखें
ल तथा माथा-भारी हो जाता है। गर्दनकी दोनो धमनियाँ
करोटिड) मे टपक होती है। ३। बच्चोंको दाँत निकलनेके
मय ज्वरके साथ टङ्कार (ज्वर न रहनेपर—मेग-फास), माथा
रम, पैर ठण्डे; ४। माथा और चेहरेपर रक्तकी अधिकता,
ाँख-मुँह लाल (ग्लोनोयिन, मिलिलोट), ५। विसर्प (इरिसि-
लस), या आरक्त ज्वर (स्कार्लेटिना)—त्वचा चमकीली लाल,
चिकनी, गरम, जलन-भरी, फूलन बहुत थोड़ी; ६। तलपेटमें
दाहिने पुट्ठेकी जगहपर तेज दर्द, जरा भी छूना या कपड़ेका भार भी
सहन न होना; ७। पेट फूलना और इतना दर्दकी छूना सहन नहीं
होना; झटका लग जानेके डरसे रोगी बहुत सावधानतासे चलता
और हिलना-डोलना है; ८। माथा झुकानेपर या नीचे झुका
माथा उठानेपर ही सरमें चक्कर आ जाता है; ९। ज्वर-विकार—
विकारमें भयानक उग्र मूर्त्ति,—मारता है, काटता है (स्ट्रैमो,)
बाँधा-रस्सु तोड़ डालता है, भोंकता है, बिछावनसे उठकर भागता

है (हेलिबोर); जोरसे हँसता है, दाँत कडकडाता है, कल्पित चीजें देखकर डरता है; भूत, काला कुत्ता, बाघ, विकट मुख, नाना प्रकारके कीडे-फतिङ्गियाँ देखना, नींद आती है, पर सो नहीं सकता, आँखकी पुतली (pupil) फैल जाती है, १०। स्त्रियोंको जल्दी जल्दी ऋतुस्राव होता है,रक्तस्राव परिमाणमें अधिक होता है, इसके साथ ही काले थक्के, रक्त गरम, दर्दके साथ स्राव, दर्दमें ऐसा मालूम होता है, मानो योनि-पथसे पेटकी नाडियाँ बाहर निकल पडेंगी, ११। ठुनका, मसूढे फूल जाते हैं, कानके जडकी गाँठ फूलती है; १२। नेबू, नेबूका रस, खट्टी चीजें खानेकी इच्छा, खानेपर अच्छा भी रहता है, १३। शरीरके किसी अशमें रक्तकी अधिकता, आँखका रग घोर लाल, आँखमें दर्द इत्यादि।

ज्वर—बेलेडोना एक-ज्वर (Continued) या टाइफा-यड ज्वरमें बिलकुल ही फायदा नहीं करता, जो स्वल्पविराम (Remittent) प्रकारके ज्वर एकाएक आ जाते हैं और तकलीफें पैदा कर एकाएक घट जाते हैं, उनमें ही यह फायदा करता है इसमें रोगीकी आँखें और चेहरा तमतमाया और लाल दिखाई देता है, शरीरका ताप बहुत ज्यादा रहता है, बीच बीचमें पसीना होता है, पसीना गरम, रोगी जिस जगहको दबाकर सोता है या दबाये रहता है, उसी ओर पसीना अधिक होता है, पर इस ढङ्गसे पसीना होनेपर भी बोखार बिलकुल ही नहीं घटता। कभी कभी इतना ज्यादा पसीना होता है, मालूम होता है, कि अब बोखार छूट जायगा, पर क्षण भर बाद ही फिर शरीर उसी तरह

रम और ज्वर, रोगीके माथेमें बेहद दर्द होता है, सोनेपर
पवने सपने या कोई काल्पनिक मूर्त्ति देखकर चौंक उठता है,
थ-पैर हिलाता है, शरीर और सन्धियोंमें बहुत दर्द रहता है।
दाहयुक्त ज्वर—जैसे—गाल, गला, बगल, पुट्ठा इत्यादि फूलकर
ोखार आनेपर यह एकोनाइटकी तरह प्रदाहकी पहली अवस्थामें
ौर जहाँ ज्वरमें—एकोनाइटके लक्षणके साथ इसका विशेष
मेद नहीं रहता, परन्तु इसके साथ ही पसीना रहता है,
वहाँ बेलेडोना फायदा करता है। बेलेडोनामें—तेज प्यास और
भीतरी दाह रहता है, रोगी नेबूका रस प्रभृति खट्टे तरल पदार्थ
पीना चाहता है। दाँत निकलनेके समय बच्चोंको ज्वर होनेपर—
बेलेडोनासे विशेष लाभ होता है (नीचे सम्बन्धका स्थान देखिये)।

ज्वर-विकार—विकारके लक्षण-भेद से—बेलेडोना, स्ट्रैमोनियम और हायोसियामस—ये तीन दवाएँ हमलोग अधिक व्यवहार करते ।

बेलेडोना—इसका प्रलाप बकना बहुत ही तेज है; रोगी मारता, दाँत काटता और चिल्लाता है, बिछावनसे उछल पड़ता है, भागता है, बदनपर थूक देता है, दाँत किटकिटाता है, इसके साथ ही चेहरा और आँख लाल और तमतमाया, इस समय यदि कुछ खा लेता है तो ये उपसर्ग कुछ घट जाते हैं।

स्ट्रैमोनियम—बहुत देरतक रोगी एक ही ढङ्गसे बकता है और नाना प्रकारकी भावभंगी बनाता है, बराबर अपने

पास आदमी और रोशनी रखनेकी इच्छा करता है, नहीं तो उसका विकार और बकना और भी बढ़ जाता है, रोगीकी आँखें बहुत लाल नहीं रहतीं, पर चेहरेका रंग लाल दिखाई देता है, आँखें छलछलायीं और उन्मादकी तरह। रोगी कभी प्रसन्न दिखाई देता है, कभी डरता है, कभी हँसता है, कभी मुँह चिढ़ाता है, कभी हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है।

हायोसियामस—इसका प्रलाप बहुत कुछ कोमल रहता है, बुदबुदाकर बकता है और बेहोशकी तरह रहता है, चेहरा रक्तहीन और सफेद दिखाई देता है, आँख गदलीकी तरह हो जाती है, चारो ओर टकटकी लगाकर देखता है, सामने या शून्यमें कुछ उड रहा है या घूम रहा है, ऐसा सोचकर हाथ बढाकर उसे पकडना चाहता है। बिछावनकी चादर खींचता है, नोचता है और बिछावनपर हाथ पटकता है, अनजानमें पाखाना पेशाब होता है। हायोसियामसमें—ज्वर अधिक नहीं रहता, मस्तिष्कके लक्षण ही अधिक रहते हैं।

ऊपरकी तीनों दवाओंके अलावा—विकार-ज्वरमें—रसटक्स भी लाभदायक है। उसमें रोगी केवल इस करवटसे उस करवट छटपटाया करता है। टाइफायड विकारकी पहली अवस्थामें बेलेडोना रोग बढ़ जानेपर—रसटक्स, उसमें फायदा न होनेपर हायोसियामस इत्यादि दवाओंकी जरूरत पडती है। फॉलेडियममें अर्द्ध-चैतन्य भावसे रोगी पडा पडा बडबडाया करता है। दवा सेवन करना नहीं चाहता, जबर्दस्ती दवा खिलानी पडती है।

विकारमें लक्षण-भेदसे और भी कई दवाओंकी जरूरत पड़ती नीचे उसकी एक सूची दी जाती है —

१। चुपचाप पड़ा रहता है—हेलिबोर, हायोसि, आर्नि, ड-फास, ब्रायो, जेलसि , २। छटपटाता है—आर्स, रस- [illegible]; ३। लगातार करवट बदलता है—आर्स, रस, पाइरो , केवल थकता है—लेके, कैलेडि, फास ; ५। बिछावनपर पटकता है, मानो कुछ खोज रहा है—चेप्टि, हायोसि, पाइरो , शून्यमें मानो कुछ पकड़ना चाहता है—हायोसि , ७। रोता -कूप्रम मेट ; ८। सबोंको सन्देह करता है—लैके, हायोसि , ६। [illegible] चिल्लाता है—कूप्रम, स्ट्रैमो, आर्स , १०। जाने-पहचाने [illegible]मोको भी पहचान नहीं सकता—नक्स-मस्के , ११। दाँत कड़[illegible]ाता है—हायोसि , १२। हँसता-गाता है—स्ट्रैमो, एगारि, [illegible]को ; १३। घर जाना चाहता है और अपने व्यवसाय तथा [illegible]म-काजकी बातें करता है—ब्रायो, हायोसि ; १४। मारता, [illegible]रता है—बेल, स्ट्रैमो , १५। नंगा हो जाता है—स्ट्रैमो, हायोसि ; [illegible]। सब समय ही कुछ न कुछ किया करता है ; नाक, नाक, [illegible]र ओठ खोंटता है—एरम, हायोसि, हेल्यिो ; १७। एकाएक [illegible]ावनसे उछल पड़ता है—स्ट्रैमो ; १८। कामोन्मादका परिचय [illegible]ा है—स्ट्रैमो, कैन्थर ; १९। तकियेसे सर उठाता है, फिर सो [illegible]ता है—हायोसि ; २०। किसी भी आयासमें जिद करता है—[illegible]के, ओपि ; २१। तन्द्राच्छन्न भावमें पड़ा रहता है—ओपि ; २२। [illegible]ोता नहीं, जागता रहता है—[illegible] ; २३। निद्राभिभूत भावमें

रहता है—जेलसि, २४। मतवालेकी तरह पडा रहता है—वैप्टि, २५। अधखुली आँखोंसे टकटकी लगाकर देखता रहता है—हेलिबोर, २६। आँखकी पलक नहीं गिरती—हेलिबोर, २७। जल्दी जल्दी बातका जवाब देता है—रसटक्स, २८। देरसे बात का जवाब देता है—हेलिबोर, ब्रायो, २९। एकाएक एक बातका उत्तर देता है—हायोसि, ३०। ३१ बात कह कर ही सो जाता है—वैप्टि, ३१। तकिये पर सर नहीं रहता, नीचेकी ओर लुढक पडता है—एसिड-म्यूर, वैप्टि, एसिड-फास, क्रोटे, ३२। आँखकी पुतली घूमती है—कूप्रम, ३३। कपाल कुँचित—स्ट्रैमो, हेलिबो, ३४। आँख-मुँह लाल रगके—बेल।

प्रादाहिक रोग—फोडा, बाघी इत्यादि किसी प्रदाहमें बेलेडोना व्यवहार करते समय—रोगवाली जगह चमकीली, गरम लाल, उसमें जलन और स्पर्शका सहन न होना, ये कई हमेशा याद रखने चाहियें। प्रादाहित स्थान फूलता है और इतना दर्द होता है कि रोगी उसे छूनेतक नहीं देता तथा बहुत जलन, डक मारनेकी तरह दर्द और टपककी तरहकी तकलीफ रहती है। बेलेडोना प्रदाहकी पहली अवस्थामें व्यवहृत होता है। परन्तु उसी प्रदाहवाली जगहमें जब पीव हो जाता है, तब लक्षणके अनुसार—मर्कुरियस, हिपर, साइलिसिया, माइरिस्टिका इत्यादि की जरूरत होती है। पाकस्थली या उदरके किसी तरहके प्रदाह या पेटमें सर्दी लगकर किसी तरहका प्रदाह पैदा होकर जो अन्न प्रदाह (एण्टेराइटिस), अन्त्र-आवरक पर्देका प्रदाह (पेरिटोनाइटिस

आदि बीमारियाँ होती हैं। उनमें यदि दर्द एकाएक पैदा हो और एकाएक ही गायब हो जाये, तो बेलेडोना ही उपयोगी होता है। बेलेडोनामें पेट फूलकर कड़ा हो जाता है, उसमें भयानक दर्द रहता है। जरा भी हिलने-डोलने, किसीके छूने यहाँतक कि यदि कोई बिछावनपर बगलमें जाना भी चाहे, तो रोगीका दर्द बढ़ जाता है और वह तकलीफसे अधीर हो जाता है। दाहिने इलियोसिकैल प्रदेशमें अर्थात्—दाहिनी ओरके कोखके ऊपरी भागकी तलपेटकी सूजनमें और अन्त्रान्त्र-प्रदाह (टिफलाइटिस), उपान्त्र-परदेका प्रदाह (Appendicitis) की बीमारीकी पहली अवस्थामें जब पेटमें बेहद दर्द, हाथसे छूने नहीं देता, कपड़ेका भारतक सहन नहीं होता, उस समय—बेलेडोना लाभ करता है।

पाकस्थलीकी बीमारी—लगातार मिचली और वमन, खायी हुई चीजकी कै, पेटमें ऐंठनकी तरह बहुत दर्द और जलन, ठण्डा पानी पीनेकी इच्छा, ये ही कई बेलेडोनाके प्रयोगके प्रधान लक्षण हैं।

गेस्ट्राइटिस और गेस्ट्रेलजिया—(पाकस्थलीका प्रदाह और पाकस्थलीका शूलका दर्द)—दर्द रह रहकर होता है, एकाएक आता है, तेज दर्द। इसमें दर्दमें—रोगी सामनेकी ओर नहीं झुक जाता बल्कि पीछेकी ओर अकड़ जाता है, दर्द मेरुदण्ड के भीतरसे कन्धेतक चला जाता है।

पेटमें दर्द—दर्द रह रहकर होता है। एक बार ज़ोरसे होता है। फिर घट जाता है, फिर होता है, पेटपर ज़रा भी दबाव डालने नहीं देता, दबाने या हाथ रखनेसे ही दर्द और तकलीफ बढ़ती है।

अंत-शूल—दर्दके समय दाहिने कोखसे बायें कोख तक वृहदन्त्र (transverse colon) फूल उठता है, भयानक दर्द होता है।

बच्चोंका अतिसार और आमाशय—बेलेडोनाकी तरह पतला और हरे रंगका, खड़िया मिट्टीकी तरह सफेद, केवल रक्त, खून-मिली आम, लसदार आम, सफेद आम इत्यादि नाना प्रकारके दस्त हुआ करते हैं। मलमें—खट्टी या सड़ी गन्ध रहती है, परिमाणमें बहुत थोड़ा और कभी कभी अनजानमें हो जाता है तीसरे पहर और नींदमें दस्त ज्यादा आते हैं, पाखानेके समय कूथन बहुत ज्यादा रहती है और रोगी सिहर उठता है। अतिसारके साथ ही साथ मिचली, ओकाई, ज्वर, प्यास इत्यादि रहनेपर इससे और भी ज्यादा फायदा होता है। बेलेडोनासे—बच्चोंके अतिसारमें कभी कभी बहुत फायदा होता है।

द्रष्टव्य :—आमाशय आदि पेटकी बीमारियोंकी पहली अवस्थामें—एकोनाइट १x शक्तिके प्रयोगसे प्राय अधिकांश स्थानों में रोगका प्रकोप घट जाता है।

टंकार—जिन बच्चोंका माथा बड़ा रहता है, उन्हें अकसर अकड़न हुआ करती है। यह अकड़न होनेपर कितने ही मनुष्य

लक्षणपर ध्यान न देकर बेलेडोनाका प्रयोग कर बैठते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि बेलेडोनाका लक्षण रहनेपर और ज्वर, अति-सार, आमाशयके साथ एकाएक बीमारीका हमला होनेपर, इत्यादि लक्षण रहनेपर अकड़नकी बेलेडोना ही दवा है। अभी अभी बच्चा अच्छा था, क्षणभर बाद ही उसको ज्वर, शरीर आगकी तरह गरम, मुँह लाल, सोया सोया चौंक उठाना और फिट होनेकी तरह खींचन होने लगना, ये सब लक्षण प्रकट होनेपर तुरन्त—बेलेडोना दे। क्युप्रम—अकड़नमें शरीर और चेहरा नीला हो जाता है और बच्चा मुट्ठी बाँधकर अँगूठा दबा लेता है। स्ट्रैमोनियममें—काँचकी तरह कोई चमकीली चीज देखते ही अकड़नका दौरा हो जाता है। मैग-फास—बेलेडोनामें कोई फायदा न होनेपर इसका प्रयोग करना चाहिये, इसमें दर्द रहता है, पर ज्वर नहीं रहता। मेलिलोटस—दाँत निकलनेके समय अकड़न।

सर-दर्द—ग्लोनोयिनम अध्याय देखिये।

सूतिका-ज्वर—इसमें भूल बकना, तेज प्रलाप, आँख मुँह लाल, चेहरा तमतमाया इत्यादि बेलेडोनाके चरित्रगत लक्षण रहनेपर—बेलेडोनाका ही प्रयोग होता है, नहीं तो जिन दवाओंमें रक्त दूषित होता है—जैसे, पाइरोजिन, एकिनेसिया, वेरेट्रम, कैलि-फास, एलैन्थस, एसिड-कार्बोल, लैकेसिस, आर्सेनिक इत्यादि दवाकी जरूरत होगी।

द्रष्टव्यः—प्रसवके बाद प्रसूताको—दुग्ध-ज्वर—सूतिका ज्वर, सूतिका आक्षेप, एक्लैम्पसिया, (अकडन), सूतिका-उन्माद, सूतिका उन्मत्तता, सूतिका—मेलेनेकोलिया—(धर्मोन्मत्तता) साधारणतः ये कई बीमारियाँ होती है। इनमे सूतिका-ज्वर अधिकाश स्थानोंमें रक्त दूषित होकर होता है और रक्त दूषित होनेपर—१। पियोरपैरल सेप्टिसिमिया, (सूतिका पीब-ज्वर) २। सैप्रिमिया और ३। पाइमिया, रोगीकी यह तीन तरहकी अवस्था होती है।

पियोरपैरैल-सेपटिसिमिया होनेपर—प्रसवके दो दिनसे चार दिनके बीचमे—एक दिन खूब जाडा लगकर घोरवार आता है, ज्वर १०४।१०५ डिगरी तक चढता है, प्रसवके बादका स्राव (प्रसवके बाद प्राय १ महीनेतक योनिसे खून और पीवकी तरह जो स्राव हुआ करता है, उसको लोकिया स्राव कहते हैं) बन्द हो जाता है, स्तनका दूध सूख जाता है, चेहरा बदरग और आँख-मुँह धँस जाता है। पियोरपैरेल सैप्रिमिया—इसका लक्षण—प्रसवके बाद ३ से ५ दिनोंके बीचमें ज्वर आता है, ज्वर १०१ से १० डिगरीतक चढता है। इसमे प्रसवान्तिक स्राव (लोकिया-स्राव) दूषित हो जाता है, स्रावमें बदबू पायी जाती है (लोकिया-स्राव दूषित हुआ है या नहीं, यह जाननेके लिये प्रसूताके काममें लाये हुए कपडे या रुईके रक्तकी परीक्षा करें। यदि रक्त शुद्ध होगा तो—उस रक्तके दागका बीचका हिस्सा लाल रगका रहेगा और उसके चारो ओर क्रमश सादा या उजला रहेगा, रक्त अगर दूषित

ा—बीचका भाग सफेद, उजला और चारों ओरके किनारे
रहेंगे), इसमें बोखार घटकर फिर बढ़ता है पियोरपैरैल
मियामें— प्रसवके बाद प्राय: ६।१० दिनों तक किसी भी
ारोका लक्षण नहीं रहता, पर इसके बाद एकाएक एक दिन
जाड़ा लगकर बोखार आता है, ज्वर १०५।१०६ डिगरीतक
ता है। यह ज्वर छूट जाता है और फिर २४ घण्टोंमें ज्वर
ा है, ज्वर भोगके समयके ३।४ दिनके भीतर ही शरीरमें
ह जगह बड़े बड़े फोड़े होने आरम्भ होते हैं। ये सब फोड़े
Abscess) शरीरके भीतरके मसाने, यकृत, प्लीहा, फेफड़े,
ंपगड, मस्तिष्क प्रभृति यन्त्रोंमें भी हो सकते हैं। रोग-विष जहाँ
 जाता है, वहीं एक तरहकी नयी बीमारी पैदा करता है। उस
की बीमारी और लक्षणोंमें—एचिनेशिया, आर्सेनिक, कैलि-फास,
रोज़िन, बैप्टिसिया, लैकेसिस, सलफर प्रभृति औषधोंकी ज़रू-
 होगी। बेलेडोना इत्यादिसे कोई लाभ न होगा।

प्रसवके बाद जरायुकी समायीप्राय: ६।१० दिनोंतक बढ़ी रहती है,
रको—सब-इनवाल्यूशन, कम्प देकर ज्वर, पसीना, स्तनका प्रदाह
नेपर, इसको—मिल्क-फिवर या दुग्ध-ज्वर। ज्वरमें—प्रसरा-
नरुद्वार बन्द, नाड़ीका स्पन्द तेज़ (मिनिटमें १२०।१२५), बल्क्षय,
मस्कष्ट, पसीना होनेपर भी किसी तरहसे न घटना इत्यादि
लग सब रहनेपर, उसको—पियोरपैरैल-फीवर या सूतिका-
र, प्रसवके बाद हाथ पैरोंमें अधिक खींचन होनेपर—पियोर-

पेरैल कान्वलशन, उस ढगकी खींचन, मूर्च्छाके साथ होनेपर—एक्लैमसिया (गर्भावस्थामें जिनके पेशाबमें एल्बुमेन रहता है उनको ही एक्लैमसिया अधिक होता है), ज्ञानलोप, सभी विषयों मे उदासीन, अपनी सन्तानको भी नहीं देखती—पियोरपेरैल इनसैनिटी, एक तरफा भाव, काममें जिद करना, लोगोंको मारना चाहती है—पियोरपेरैल मैनिया और स्थिर भावसे चुपचाप पड़ी रहती है, किसीके साथ भी बात नहीं करती, ऐसा मालूम होता है, न जाने कितने शोकमें है। ये लक्षण रहनेपर उसे—पियोरपेरैल मिलैनकोलिया कहते हैं। इन सब रोगोंकी दवा लक्षणके अनुसार प्रयोग करनी पड़ेगी (एक्लैमसियामें—इनैन्थि, एट्रोपिया, प्रहिणी बलको क्षय करनेवाला अतिसार—चैपारो—φ—३x और इन्थेरा—φ, उदरामयके साथ ज्वरमें—एचिनेशिया—φ; प्रसवान्तिक स्रावमें बदबू—क्रियोजोट—३० की परीक्षा करें)।

बच्चोंको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी—

कितने ही दाँत निकलनेकी उमरमें लड़कोंको कोई बीमारी होते देखते ही पहले—कैमोमिलाका प्रयोगकर बैठते हैं, पर कैमोमिलाके सिवा—बेलेडोना, कैल्केरिया, पोडोफाइलम आदि और भी कितनी ही दवाएँ हैं, जो लक्षण-भेदसे फायदा करती हैं। बेलेडोनाके ज्वरमें—चेहरेका रंग लाल हो जाता है, उत्तेजना रहती है और पसीना होता है।

बेलेडोना—प्रबल ज्वर, इसके साथ ही पसीना, लगातार सर ना। दाँत कड़कड़ाना, एकबार रोना—एक बार बेहोश-सा रहना, सोये सोये चौंक उठना, आँख-मुँह लाल हो जाना, पैर ठण्डे, आमाशय, पेटमें दर्द, सफेद रंगका पाखाना इत्यादि णोंमें उपयोगी है।

कैमोमिला—इसमें बेलेडोनाकी अपेक्षा ज्वर कम और आच्छन्न र, तथा आँख-मुँहकी लाली नहीं रहती (डा० नैश कहते हैं— र लड़केका एक गाल लाल दिखाई देता है), नींद आते ही चौंक ता है। बच्चा बहुत क्रोधी और चिड़चिड़ा हो जाता है। केवल रोयाता है और गोदमें चढ़कर घूमना चाहता है। इसमें पाखाना रमाणमें अधिक होता है, पाखाना—बहुत कुछ पानी, बहुत कुछ ड़ और बड़े वेगसे निकलता है, रंग—हरा, उसके साथ अण्डेकी तरह पदार्थ मिला रहता है।

मेलिलोटस—दाँत निकलनेके समय अकड़न, मुख लाल रंगका, नकी अधिकता।

विसर्प—बेलेडोनामें रोगवाली जगह घोर लाल रंगकी और चम- कीली तथा तेज लगे रहनेकी तरह मालूम होती है। उसमें बहुत दर्द रहता है और उसके भीतर न जाने क्या खौलता जैसा मालूम होता है और टपकका दर्द रहता है। (एपिस, लैकेसिस, रसटक्स इत्यादि) एपिसमें—बोअरकी तरह सूजन, डंक मारनेकी तरह दर्द और इसके साथ ही जलन, रसटक्समें—छालेकी तरह सूजन, रोगवाली जगह

घोर लाल रगकी, यह एपिसके ठीक विपरीत है अर्थात्—पहले
जलन, इसके बाद डक मारनेकी तरह दर्द , लैकेसिसमें—का
नीला दिखाई देता है।

आँखोंका प्रदाह—आँखके भीतर खूनकी तरह लाल,
उसमें यन्त्रणा, जलन, आँखसे पानी गिरना, चिलक उठना, दर्द, कर
कराहट प्रभृति खूब रहती है और इसके साथ ही सर-दर्द आदि और
भी दो एक आनुसगिक लक्षण रहते हैं। बेलेडोनामें—बत्ती और
दीयेकी रोशनीमें और एकोनाइटमें सूर्यकी रोशनीमें आँखकी तक
लीफ बढ़ जाती है (ऊपरी पलकका प्रदाह—एकोन, बेल, हिपर,
सल्फ, एपिस , भीतरी पलकमें—आर्स, बेल, मर्क, हिपर।)

ऋतुस्राव और रक्तप्रदर—चमकीले लाल रगके पतले
रक्तके साथ थक्का थक्का जमा रक्त, स्राव गरम, उसमें बहुत ही खराब
और सडी बदबू रहती है। बेलेडोनाका दर्द—रक्तसचय (कानजेशन)
से पैदा हुआ होता है, इसका दर्द पेटसे आरम्भ होकर कमरमें च
जाता है। पतले रक्तके साथ ही साथ थक्का थक्का रक्त भी रहता है—
सैबाइनामें भी है , सैबाइनाका दर्द कमरसे आरम्भ होकर पेटमें
जाता है। रक्त-प्रदरमें—बेलेडोनामें पहले खूब थोडा-सा ताजा
पतला रक्त और इसके बाद ही थक्का (clot) निकल जानेपर दर्द
बन्द हो जाता है , पर इस विरामके समयमें जरायुके भीतर फिर
नये थक्के बनने आरम्भ हो जाते हैं और इससे दर्द बढता है
और रक्तस्राव होने बाद फिर दर्द घट जाता है। इसी तरह लगा-

र हुआ करता है। मोटी स्त्रियोंकी बीमारोमें—वेलेडोना अधिक
पयोगी है (वेलेडोनाका रक्तस्राव गरम होता है)।

रक्त-प्रदरमें—इरिजिरन, ट्रिलियम, सैवाइना, चायना, सिकेलि,
पिया, थ्लाटिना, वाइवर्नम इत्यादिमें प्रभेद देखें (हैमामेलिस,
इपेरा और थ्लाटिना अध्याय देखिये)। प्रसवके बाद फूल टूट
र अत्यन्त रक्तस्राव यदि हो और उसके साथ ही दर्द रहे तो—
लेडोना उपयोगी होता है।

डिम्बकोषका प्रदाह—दाहिनी ओरके डिम्बकोषके
(ovary) प्रदाहमें वेतरह दर्द, जलन, अकड़नका दर्द इत्यादि
लक्षण रहनेपर और इस ढगका दर्द होकर ऋतु होना—होनेपर—
लेडोना ही उपयोगी है। डिम्बकोषके सिवा जरायुका प्रदाह और
दर्द, जरायुका बढ़ना और उसके साथ ही खींचने और झटका देने
की तरह दर्द, स्पर्शका सहन न होना, जलन, तकलीफ, मानो पेट
की नाड़ियाँ सब बाहर निकल पड़ेंगी, इन सब लक्षणोंमें—वेले-
डोना ज्यादा फायदा करता है। (वेलेडोनाका दर्द—एकाएक
पैदा होता है, एकाएक गायब होता है—यही लक्षण यहाँ भी
ध्यान रहता है, यह न भूले)।

तालुमूल-प्रदाह—तालुमूल (गलेके भीतर उपजिह्वा
के दोनों ओरकी ग्रन्थियां) फूल जाती हैं, उनमें बहुत तकलीफ,
लगनेवाली जगह चमकीली लाल, इसके साथ ही माथेमें दर्द, ज्वर
इत्यादि लक्षण रहने पर—वेलेडोना ही उपयोगी है (फाइटोलैका,
और बैराइटा म्यूर-देखिये)।

खाँसी—बेलेडोनाकी खाँसी सूखी, आक्षेपिक और बहुत तकलीफ देनेवाली रहती है, खाँसते खाँसते दम रुक जाता है, गले के भीतर दर्द और गरमी मालूम होती है, गलेमें स्वर-रोध जैसा हो जाता है, कुत्ता भोंकनेकी तरह खाँसीमें आवाज होती है, हमेशा ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कुछ अडा हुआ है। खाँसी दिनकी अपेक्षा रातमें सोनेपर ज्यादा होती है, बहुत देरतक खाँसने के बाद कडा एक ढेला बलगम निकलनेपर खाँसी कुछ घट जाती है। परन्तु फिर कुछ देर बाद पहलेकी ही तरह बढती है। हृपिङ्ग खाँसी में—खाँसी आते ही गलेमें दर्द मालूम होता है, इसीलिये, खाँसी आनेके पहले बच्चा रोता है (आर्निकामें भी यह लक्षण है)। खाँसीके बाद रुलाई—कैप्सिकमका लक्षण (परालिया अध्यायमें हृपिङ्ग खाँसी देखिये)।

एट्रोपिया—बेलेडोना वृक्षका उग्रवीर्य औषध, साधारणतः यह प्रसूतियोंकी अकडन, आक्षेप (Puerperal convulsion) और गति-शक्ति-राहित्य (Locomotor ataxia) रोगमें अधिक व्यवहार होता है।

एट्रोपिनम-सल्फ—इस दवामें प्रसवके समयकी या प्रसवके बादकी अकडनमें आँखकी पुतली घूमा करती है। किसी रोगी को क्लोरोफार्म सुँघाते सुँघाते यदि एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द हो जाये, तो इससे फायदा होगा। क्रम—निम्न शक्ति।

वृद्धि—छूनेपर, शरीर हिलानेपर, हवा लगनेपर, दिनके

नेके बाद और फिर आधी रातके बाद, पीनेके समय, माथा
ढानेपर, धूपमें सोनेपर ।

ह्रास—विश्राममे, सीधे होकर खडे होने पर और गरम घरमें ।

सम्बन्ध—बेलेडोनाके बाद कैल्केरिया रोगको एकदम आरोग्य
र देता है। ज्वर खूब थोड़ा, मस्तिष्कके लक्षण और अन्यान्य
पसर्ग ज्यादा—हायोसियामस, एकोनाइट, जेलसिमियम, ग्लोनो-
येन, फेरम-फास, कैमोमिला प्रभृति दवाएँ बेलेडोनाके पहले
इना जरूरी है। ज्वर, प्रदाह प्रभृति नयी बीमारीमें जबतक
ायदा न हो तबतक बेलेडोनाका बार बार प्रयोग करना उचित है।

क्रिया-नाशक—एकोन, कैम्फर, काफि, हिपर, ग्रायो, थोपि,
र्क, पल्स, सेबाडि, बाइवर्नम ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन ।

क्रम—१x—२०० शक्ति । फारमुला—१

वार्बेरिस वल्गैरिस ।

(BERBERIS VULGARIS)

(यूरोपके एक प्रकारके वृक्षकी जड़की छालसे प्रस्तुत होता
)—वार्बेरिसका चरित्रगत दर्द—पहले एक या दोनों ओरकी
कडनी (मसाना) में आरम्भ होकर मूत्रनली (युरेटर) के बीचसे
होकर, मूत्रस्थलीमें (ब्लेडर) और वहाँसे पेशाबकी नली (युरेथ्रा)

में आता है। इस समय मूत्रनली या यूरेथ्रामें बहुत जलन
हैं, मूत्रपथरीके दर्दमें इस तरहके लक्षण अकसर रहते हैं।
और यकृतपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। कमरमें दर्द
रोग, भगन्दर (Fistula in ano), भगन्दरमें नश्तर
बाद खाँसी और वक्षकी बीमारी, पेशाबकी बीमारीसे
मनुष्योंको वात और गठिया वात, गुर्देका शूल (Nep
colic), गुर्देका प्रदाह (नेफ्राइटिस), वीर्य-रज्जु और अण्ड
स्नायुशूल (क्लिमे, सिमिसि, पल्स), योनि-प्रदाह (Vagi
पित्तज अतिसार इत्यादि कितनी ही बीमारियोंमें भी—ब
लाभदायक है।

पित्त-पथरी—पित्त-पथरी और मूत्र-पथरी (B
calculi, Renal calculi) दोनों तरहकी बीमारि
पथरी निकलनेके समय जब फाडनेकी तरह दर्द होता है,
हिलनेकी भी शक्ति नहीं रहती, दर्द मसानेमे आरम्भ होकर
ओर उतर आता है, रोगी बार बार पेशाब करनेकी
प्रकट करता है, उस समय—बार्बेरिस मंत्र-शक्तिकी तर
करता है (कैन्थरिस अध्याय देखिये)।

बार्बेरिसका प्रयोग करते समय—पेरिटोनाइटिस (अ
पर्देका प्रदाह) हो या जरायुका प्रदाह (Metritis) या मस
ही बीमारी क्यों न हो, नीचे लिखे लक्षण स्मरण रखें। ये ही
प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं —

१। मसानेसे मूत्राशय तक फाटने-फाड़नेकी तरह दर्द।

२। दबानेपर दर्दका बढ़ना। यकृतसे पित्त निकलनेकी ...ाका घट जाना।

३। बायें मसानेसे दर्द आरम्भ होकर मूत्र निकलनेकी राह ...ेडर) में होता हुआ और वहांसे मूत्रनलीमें चला जाता है।

४। कमरमें भयानक दर्द और कमर तथा मसानेमें मानो ...ह बुदबुदा रहा है। पेशाबके समय उरु और कमरमें दर्द।

५। कमर कड़ी और अकड़ी, उरु और कमरमें भयानक दर्द।

६। पित्त-पथरी शूलका दर्द—इसके साथ ही कामला। ...चके रगके या राखकी तरहके रगके दस्त आते हैं।

७। पेशाब हरी आभा लिये या खूनकी तरह लाल, तलीमें ...दा श्लेष्मा।

८। पेशाब लगनेपर वेग नहीं रोक सकता, हिलने-डोलनेपर ...ाब सम्बन्धी तकलीफें बढ़ जाती हैं।

वात—वातमें बेञ्जोयिक एसिड, कैल्केरिया, लाइको-...डियम प्रभृतिके साथ इसका प्रभेद निर्णय कर बार्बेरिसका ...योग करें। बार्बेरिस—रोगवाली जगहपर बुदबुद करना और ...टने-फाड़नेकी तरह दर्द।

कमरका वात—डा० एलेन कहते हैं—पहले कमरमें ...र्द (Lumbago) होकर यदि यह दर्द समूचे शरीरमें फैल जाये, ...मरसे उतरकर उतरे और इसके साथ ही पेशाबका रग लाल हो ...था उसमें श्लेष्माकी तली जमे, तो बार्बेरिस एक अव्यर्थ महौषध है

डा० एलेन और भी कहते हैं—हायकी अँगुलीके नखके नाव वाली गाँठमें दर्द, तकलीफ और सूजनमें—वार्वेरिससे विशे फायदा होता है।

यकृतकी बीमारी—दाहिनी ओरके पञ्जरेके निचले भागमें धक्का देनेकी तरह दर्द, यकृतकी जगहसे दर्द पैदा होकर पञ्जरेमें धक्का देता है, कभी कभी यह दर्द पेटमें चला जाता है (पित्त पथरीमें यह लक्षण स्पष्ट रहता है)। इस लक्षणके साथ ही अगर वार्वेरिसके पेशावका लक्षण रहे तो—वार्वेरिस ही यकृतकी बीमारी की अमोघ दवा होगी।

मसानेकी बीमारी—इस रोगके साथ कमरमें भयानक दर्द, यह क्या सोने, क्या बैठने—सभी समय बढ़ता है। सुबह सवेरे बहुत अधिक होता है और यह कभी कभी उरुदेशतक चला जाता है। मसानेकी जगहपर ऐसी बुदबुदाहट मालूम होती है मानो पानी इकट्ठा हो रहा है या मूत्राशयसे मूत्रनलीतक काटने फाड़नेकी तरह दर्द, पेशावके पहले, समय और बाद जलन ये लक्षण चाहे, किसी भी बीमारीमें रहें—वार्वेरिस उपयोगी होगा। पैरिरा-ब्रेवा—दर्द उरुतक और वार्वेरिसका दर्द उरु-सन्धितक उतरता है।

अण्डकोषकी बीमारी—अण्डकोष और शुक्ररज्जु स्नायुशूलमें कितनी ही बार वार्वेरिस—२।४ मात्राके प्रयोगसे ही दर्द बहुत जल्द आरोग्य हो जाता है। (क्लिमे, सिमिसि, पल्स

थार्येरिस—पेशाब चमकीला पीला (bright yellow) या रक्की तरह लाल (blood-red)। पेशावकी तलीमें बहुत श्लेष्मा जमा रहता है, पेशाव कभी कभी गदला और परिमाणमें अधिक होता है।

बाधक वेदना—ऋतुस्राव बहुत थोड़ा होता है। दर्द पेटमें चक्कर काटता हुआ उरूमें उतरता है। ऋतुकी गड़बड़ी श्वेतप्रदरकी वजहसे कमरमें दर्द, इसके साथ ही पेशाव गदला, रहता है और पेशावमें श्लेष्मा रहता है।

सदृश—पथरी रोगमें—कैन्थर, लाइको, सार्सा, मेन्या। योनि-दाह, योनि-शूल—इसके साथ ही बाधकमें इसका पेशाव वाला मूत्रगत लक्षण यदि रहे।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, बेल।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—६० दिन।

क्रम—१—३० शक्ति। फारमुला ३ (अमेरिकन) ;—४। (जर्मनी)।

विस्मथ मेटालिकम।

(BISMUTH METALICUM)

(एक तरहका धातु, बिस्मथ सब नाइट्रेट)—अन्ननली, पाक-स्थली या पाचन-यंत्रके स्नायुपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। अकेला रह नहीं सकता, साथी चाहता है; २। चञ्चल और उद्विग्न—एक बार बैठता है, एक बार सोता है, टहलता है फिर बैठता है। एक जगहपर कभी ज्यादा देरतक रह नहीं सकता। ३। जल या पतली चीजें पीनेपर, पाकस्थली भर जाते ही वमन; पानीकी तरह बदबूदार दस्त, ४। हैजामें अधिक परिमाणमें दस्त-कै होनेपर भी बदन गर्म रहता है, शीत नहीं आ जाता।

कालरा—बच्चोंको हो या जवानोंको, यदि एकाएक बीमारी आरम्भ होकर देखते देखते रोग-लक्षण बढ जायँ, तो—विस्मथ, वेरट्रम आदि दवाओंका प्रयोग न करनेपर बीमारी बहुत साघातिक हो जाती है।

विस्मथ—दस्तके साथ पेटमे दर्द बिलकुल ही नहीं होता। दस्त पानीकी तरह पतला, परिमाणमें ज्यादा और बहुत बदबू। इसमें दस्त, कै, ओकाई, मिचली, बहुत ज्यादा प्यास सभी रहते हैं, पर इसका विशेषत्व यह है, कि प्यासमे पानी पीनेपर पानीकी कै हो जाती है, पर दूसरी खानेकी चीजें (solid) कुछ देरतक पेटमें रहती हैं। इसमे कभी पीते ही और कभी पेट भरनेपर वमन होता है। विस्मयमें—रोगीका शरीर भरपूर गरम, स्वाभाविक और उसके साथ ही कभी कभी पसीना होता है, वेरेट्रम, आर्सेनिक एण्टिम-टार्टकी तरह ठण्डा नहीं हो जाता। शीत आ जानेपर—विस्मथसे बिलकुल ही फायदा नहीं होता। आर्सेनिकमें—पानी और

ायी हुई चीज दोनोंकी ही कै होती है। विस्मयमें—बहुत कम-ारी, यहाँतक कि उससे रोगीका चेहरा मुर्देकी तरह बदरंग खाई देता है। अतिसारमें—निम्न क्रम, पर बच्चोंके हैजामें—मके उच्च क्रमसे बहुत फायदा होता है, पाकस्थलीके कैन्सरकी ीमारीमें पेटमें बहुत जलनके साथ अजीर्ण वमन होनेपर यह—क्रियोजोटकी तरह फायदा करता है। विस्मयमें—जीभपर गाढ़ा, ोदा सफेद मैल रहता है।

सर-दर्द—माथेका स्नायुशूलके ढङ्गका दर्द, सर-दर्द ाराम होनेपर पाकस्थलीमें शूलका दर्द (Gastralgia) या सर-र्दके साथ ही साथ पाकाशयमें दर्द, पर भोजन करनेके कुछ ही ाद सर-दर्द आरम्भ और खायी हुई चीजकी कै होनेपर सर-दर्द ा घट जाना, ये कई लक्षण दिखाई देते हैं। विस्मयका दर्द—ाथेसे मुँह और दाँततक चला आता है और ठण्डा पानी या कोई सरी ठण्डी चीजके प्रयोगसे घटता है।

पाकाशयका शूलका दर्द—पाकाशयमें पहले ऐंठन, मरोड़ आदिकी तरह दर्द होता है, पेटमें जलन होती है, कुछ खाने पर दर्द घटता है, ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीमें एक बड़ा ढेला अड़ा हुआ है। इसके बाद यह दर्द पेटके भीतर होता हुआ, पीठकी रीढ़में चला आता है। विस्मयका दर्द ठण्डकसे घटता है। यह मालूम हो कि पाकस्थलीका दर्द ठण्डी पतली चीजें पीनेसे घटता है, और भोजन करते करते पेट भरते ही वमन हो

बोरैक्स ।

(BORAX)

(सोहागा)—श्वेत-प्रदर, मुँहका जखम, बहुत दिनासे होने वाला कानका पीव, अतिसार इत्यादि बीमारियोंमे और किसी भी बीमारीके साथ नीचेकी ओरकी गतिमे डर मालूम होनेपर—बोरैक्सका यह प्रधान चरित्रगत लक्षण रहनेपर इससे विशेष लाभ होता है। बोरैक्सका रोगी बहुत ही स्नायविक, जरा सेमें ही डर जाता है। बन्दूक या वज्राघातकी आवाजसे बहुत डरता है। सामान्य आवाज या जरा भी गडबडी सहन नही कर सकता।

चरित्रगत लक्षण —

१। निम्न-गतिसे भय, २। बच्चा सोया सोया एकाएक चिल्लाकर रो उठता है, ३। केशोंकी जटा बँध जाती है, ४। नाकमें पपड़ी, नाककी ठोर चमकीली और लाल, पानीकी तरह पतली सर्दी निकलनेपर भी नाक बन्द, (एमोन-कार्ब), ५। मुँहके भीतर और जीभमें जखम, ६। प्रत्येक बार पेशाव करनेके पहले बच्चेका रोना, ७। अधिक परिमाणमें सफेद लसदार अण्डेके लसकी तरह प्रदरका स्राव, स्राव गरम, ८। शरीरकी त्वचा गन्दी, शरीरमे जरा-सा भी कुछ लग जानेपर घाव हो जाता है, पकता है, और पीव होता है (हिपर, साइलि)।

मुहके जखम—क्योंकि मुँहमे घाव, यथा स्तन मुँहमे
ा और छोड देता है, जखमसे रक्तस्राव होता है , मुँहके भीतर
भमे और तालुके अन्तिम भागमे घाव, मुँहका भीतरी भाग
म, इस तरहके मुँहके घाव या जीभके जखमके साथ यदि
वसका चरित्रगत नीचेकी ओरकी गतिमे भयका लक्षण रहे तो
अयर्थ दवा है। मर्कुरियसमे— मुँहके घावसे लार टपकती
। परम-ड्राइफाइलमके जखममे दर्द रहता है और नाक तथा
हके चारो ओर घडी घडी पपडी जमती है, रोगी केवल नाक
टता है। (सोहागाका लावा ग्लिसरिनके साथ मिलाकर जीभ
ए लगानेसे जीभका जखम आराम हो जाता है, कितने ही मनुष्य
भ और मुँहके छालेके लिये शहदमे मिलाकर सोहागाका लावा
गाते है, इससे अधिकाश स्थानोंमे नुकसान ही होता है। मधुमे
सिड फरमेण्टेशनकी वृद्धि होती है। अतएव, घाव और भी
धिक बढ जाता है। मुँहके छाले होनेपर चीनी वगैरह मीठी चीजें
गैर जिन पदार्थोंमे स्टार्च अधिक रहता है, वे सब चीजें जितनी ही
म खायी जाय, उतना ही अच्छा है, क्योंकि उससे भी फरमेण्टे-
नकी वृद्धि होती है)।

आँखकी बीमारी—पलकोंमे लसदार पपडी जमना,
इससे आँख सट जाती है। पलकोंके किनारोंमें बहुत दर्द होता है।

श्वेत-प्रदर—सफेद बहुत-सा, या अण्डेके सफेद अंशकी
तरह लसदार स्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलनेपर और यह

स्राव बहुत गरम मालूम होनेपर—बोरैक्स उपयोगी है। बोरैक्समें ऋतु बहुत जल्दी जल्दी और परिमाणमें ज्यादा होता है, ऋतुस्रावके पहले और बाद प्रदरका स्राव होता है। यह पुराने योनि प्रदाह और जरायु-प्रदाहकी बढ़िया दवा है।

कानकी बीमारी—कानसे पीव जाना और कानमें दर्द—कान फूलना, दर्द और कान बहुत गरम मालूम होनेपर—बोरैक्ससे फायदा होगा। खास कर यदि कान पककर उसमें गाढा श्लेष्माकी तरह पीव निकलता हो (डा० नैशने बोरैक्ससे १४ वर्षोंका पीव जाना बन्द किया था)।

पेशावमें जलन और रोना—बच्चा अकसर जल्दी जल्दी पेशाब करता है और हर बार पेशाव करनेके समय रो उठता है। इस लक्षणके साथ पेशावमें बहुत बदबू और पेशाब गरम रहनेपर—बोरैक्स लाभ करता है। यदि बच्चेके पेशावमें बालूकी तरह तली जमती हो, अर्थात पथरीकी बीमारीका लक्षण रहे, तो—लाइकोपोडियम, सार्सा-पैरिला फायदा करता है। पर यह अगर मूत्रनलीके प्रदाहकी वजहसे हो तो—कैन्थरिस फायदा करता है। पेट्रोसेलिनियममें—एकाएक पेशावका वेग पैदा हो जाता है। बच्चा रो उठता है और पेशाव करता है।

निद्रा—बच्चा प्राय सोनेके समय चिल्लाकर रो उठता है और माताको कसकर पकड रखता है, मानो वह स्वप्नमें बहुत डर गया है। असली कारण खोजे नहीं मिलता। रात दो बजनेके समय नींद खुल जाती है; फिर नींद नहीं। आती

अतिसार—बच्चोंका और खासकर दूध पीनेवाले बच्चों-
दस्त हरे रंगका, पतला या आम-मिला पीला मल, ऐसे पतले
तोंके साथ मुँहमें छाले और दस्तके पहले पेटमें दर्द होना
ादि लक्षण रहने पर—बोरैक्स उपयोगी है।

खाँसी—दाहिनी ओरकी छातीके ऊपरी भागमें अत्यन्त
ा मारनेकी तरह दर्दके साथ खाँसी, उससे साँस बन्द हो जाने
भाव, बलगममें बहुत बदबू, इन सब लक्षणोंमें साधारण खाँसी
ेकर यक्ष्मा तक हो जानेपर बोरैक्स फायदा करता है। सीढ़ी
ने पर इतना हाँफने लगता है, कि बोल नहीं सकता।

प्लुरिसि—असली प्लुरिसि हो या प्लुरोडाइनिया
सलीका दर्द) हो। उसमें यदि दाहिनी ओरकी छातीके ऊपरी
में सुई गड़नेकी तरह दर्द, साँस खींचनेपर और खाँसनेपर दर्द
बढ़ना, बलगममें कीचड़का स्वाद और गन्ध, ये लक्षण रहें—
रैक्स उपयोगी है।

केशकी बीमारी—केश सटकर जटाकी तरह बँध जाने
केश कटवा देनेपर भी ऐसा ही हो जाता है।

आभास—नीचेकी ओर उतरने या उतारनेके समय
भी डरता है। लड़केको गोदमें उतारते समय चिल्लाकर रो
ता है, और मातासे चिपक जाता है। गोदमें लेकर सीढ़ीसे
तरनेके समय भी ऐसा ही होता है। पालना, खाट, कुर्सी इत्यादि
भी उतरनेके समय इसी तरह रोता है। यदि किसी बच्चेके

रोनेके लक्षणमें यह लक्षण रहे, तो उसे चाहे जो बीमारी हो बोरैक्ससे आरोग्य होगी। जवान आदमी भी सीढी या किसी जगहसे जल्दी जल्दी उतर नहीं सकते, डरते हैं।

वृद्धि—नीचेकी ओरकी गतिसे, धूमपानमे, ठण्डी जलीय वायुमें, पेशाब करनेके पहले और जबतक पेशाब न हो जाय।

ह्रास—दबानेपर।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, ब्रायो, कैल्के, लाइको, नक्स, फास, साइलि, एसेटिक एसिडके पहले या बादमें इसका प्रयोग मना है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैमो, काफि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—१x, ३x और ३—३० शक्ति।

फारमुला—५ वी, विचूर्ण—७।

बोविस्टा।

(BOVISTA)

(ढेंगका छत्ता जातीय एक प्रकारके छोटे उद्भिदका टिंचर) साधारणतः यह स्त्रियोंकी कई बीमारियाँ और चर्म-रोगमें ही अधिक व्यवहृत होता है। चर्मरोग-ग्रस्त व्यक्ति जिनका शरीर हमेशा खुजलाया करता है, तोतले, वृद्धा स्त्री—अकसर कलेजा

ता है, बहुत असावधान, हमेशा हाथसे चीजें गिर जाती हैं अन्तमें नीचा देखना पड़ता है, जो कमरमें कसकर कपड़ा नहीं सकतीं, वे ही इसके उपयुक्त क्षेत्र हैं।

चरित्रगत लक्षण —

१। नाक और अन्यान्य स्थानोंकी श्लैष्मिक-झिल्लीसे जो निकलता है, वह कड़ा, डोरीकी तरह या तारकी तरह लम्बा लसदार (केलि-बाई) होता है , २। बगलमें पसीना होता सीनेमें लहसनकी तरह गन्ध आती है ; ३। दाँत उखड़वाने रक्तस्राव (हेमालिस) , ४। मेरुपुच्छमें असह्य खुजली , ५। थयों और हाथ-पैरोंमें बहुत अधिक कमजोरी , ६। रक्तका स्राव में होता है, दिनमें बन्द रहता है।

स्त्री-रोग—मासिक ऋतुस्राव बन्द होनेके बाद फिर तुकालके मध्यवर्ती समयमें कितनोंको ही बीच बीचमें ऋतुस्राव ता है, पर इस ऋतुस्रावमें किसी तरहका भी दर्द नहीं होता। स्राव रातमें और सवेरे ही अधिक होता है। यह कैशिकाओं apillaries) की शिथिलताकी वजहसे रक्तस्राव है, परिश्रम या सी दूसरी वजहसे नहीं होता,—इसमें बोविस्टा लाभदायक है। रेलि नामकी दवा इस तरहके रक्तस्रावकी दवा होनेपर भी सगे कितनी ही बार फायदा नहीं होता बल्कि—बोविस्टामें यदा होता है (सिर्फ रातके समयके रक्तस्रावमें—मैग-कार्ब ; नेपर रक्तस्राव बन्द—कैफ्रस, कास्टि, लिलियम)।

अस्टिलेगो (ustilago)—३x, ऋतुस्रावका रंग घोर चमकीला लाल रंग, पतले रक्तमें बहुत-सा जमा थक्का थक्का रक्त रहता है। ऋतुके समय इस तरह रक्तस्राव होनेपर या प्रसव और गर्भस्रावके बाद या गर्भस्रावके साथ और ऋतु बन्द हो जानेकी उमरमें इस तरहका रक्तस्राव होते रहनेपर—अस्टिलेगो लाभदायक है। यदि जरायु घूमकर या हिलकर रक्तस्राव हो—अस्टिलेगो फायदा करता है। बोविस्टाका एक प्रधान लक्षण है—ऋतुके समय और मोजन के बाद कलेजा धड़कना और रोगीकी छातीका भारी हो जाना रोगी समझता है, कि उसका माथा या छाती मानो फूलकर बड़े हो गये हैं। इरिजिरनमें—जरायुकी शिथिलताकी वजहसे रक्तस्राव होता है, इसमें पेशाबमें जलन और कूथन रहती है और रक्तस्राव रुक रुक कर होता है। मिचेलाके रक्तस्रावमें—पेशाबमें जलन है और उसमें—सिकेलि, अस्टिलेगो और बोविस्टाकी तरह स्राव थोड़ा थोड़ा निकलता है (passive hæmorrage) इसके अलावा कभी कभी रक्तस्राव एक बार खूब जोरसे होकर बहुत देरतक बन्द रहता है (हैमामेलिस, सिकेलि अध्याय देखिये)।

श्वेत-प्रदर—अण्डेके सफेद अंशकी तरह स्राव, ऋतुके कुछ दिन पहले और बादमें होता है।

नाककी बीमारी—नाकसे खून गिरता है, नाक लसदार सर्दी।

अतिसार—ऋतुके पहलेका और ऋतुस्रावके समय होने ला अतिसार (एमोन-कार्ब)। वृद्धोंका पुराना अतिसार, रातमें ौर सवेरे बढ़ना।

श्वासरोध—एमोन-कार्ब और हाइड्रोसियानिक एसिड तरह बोविस्टामें भी—श्वास-रोध और दम अटक जानेका भाव धूएँके कारण साँस रुकना और तोतलाकर बोलनेमें— वेस्टा लाभदायक है।

आमवात—उदरामयके साथ आमवात होनेपर—बोविस्टा लाभ होता है। (एपिस अध्याय देखिये)।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७-१४ दिन।

क्रम ६, ३, ६, ३० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७, टिंचर—४

ब्रोमियम।

(BROMIUM)

नमकीन झरनेके पानीमें और समुद्री पानीमें यह आयोडिनके साथ रहता है। रासायनिक प्रक्रियासे निकाल लेना पड़ता है। १ ली शक्तितक शुद्ध किये हुए पानीमें, २ री शक्ति—डाइल्यूट एल्कोहलमें और बादकी शक्तियाँ—साधारण स्पिरिटमें तैयार होती हैं।

अस्टिलेगो (ustilago)—३x, ऋतुस्रावका रंग घोर चमकीला लाल रंग, पतले रक्तमें बहुत-सा जमा थक्का थक्का रक्त रहता है। ऋतुके समय इस तरह रक्तस्राव होनेपर या प्रसव और गर्भस्रावके बाद या गर्भस्रावके साथ और ऋतु बन्द हो जानेकी उमरमें इस तरहका रक्तस्राव होते रहनेपर—अस्टिलेगो लाभदायक है। यदि जरायु घूमकर या हिलकर रक्तस्राव हो—अस्टिलेगो फायदा करता है। वोविस्टाका एक प्रधान लक्षण है—ऋतुके समय और मोक्षके बाद कलेजा धडकना और रोगीकी छातीका भारी हो जाना, रोगी समझता है, कि उसका माथा या छाती मानो फूलकर बड़े हो गये है। इरिजिरनमें—जरायुकी शिथिलताकी वजहसे रक्तस्राव होता है, इसमे पेशाबमें जलन और कुथन रहती है और रक्तस्राव रुक रुक कर होता है। मिचेलाके रक्तस्रावमें—पेशाबमें जलन है। और उसमें—सिकेलि, अस्टिलेगो और वोविस्टाकी तरह स्राव थोडा थोडा निकलता है (passive hæmorrage)। इसके अलावा कभी कभी रक्तस्राव एक बार खूब जोरसे होकर बहुत देरतक बन्द रहता है (हैमामेलिस, सिकेलि अध्याय देखिये)।

श्वेत-प्रदर—अण्डेके सफेद अंशकी तरह स्राव, ऋतुके कुछ दिन पहले और बादमें होता है।

नाककी बीमारी—नाकसे खून गिरता है, नाकमें लसदार सर्दी।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डका बढना (Hyper-ophy of the heart)—मे रोगी परिश्रम बिलकुल ही नहीं कर कता। जरा भी चलने-फिरनेपर या बैठे बैठे उठनेपर कलेजा डकने लगता है। इस रोगमें नाडीकी गति धीमी, नाडी-मोटी र कडी होना—ब्रोमियमका एक चरित्रगत लक्षण है। अतएव, सी भी बीमारीमें नाडीका ऐसा लक्षण रहनेपर तुरन्त—ब्रोमि-मका प्रयोग करे।

अण्डकोषकी बीमारी—अण्डकोष फूलता है, गरम ौर कडा हो जाता है बहुत दर्द, जरा भी हिलने-डोलनेपर मानो ान निकल जाती है।

नींद—सोया सोया स्वप्न देखता है, चौंक उठता है, जागकर ी काँपा करता है (कैलि-ब्रोम, हायोसियामस, ऐकेसिस देखिये)।

ब्रोमियम सेवन करते समय दूध पीना मना है।

वृद्धि—६ बजे—रातके १२ बजे, गरम घरमें।

ह्रास—हिलने-डोलनेपर, परिश्रमसे, समुद्रके किनारे।

सदृश—फार्स ब्रोमीन—आयोडम, हिपर, स्पंजिया।

क्रिया-नाशक—(antidote) कैम्फर, एमोन-कार्ब।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—५ वीं।

अगर ६ ठी शक्तिसे नीचेकी शक्तिका प्रयोग करना हो तो हर बार नयी दवा तैयार कर लेनी चाहिये।

पटुआ या सनकी तरह सुनहरे केश, नीली आँखें (काले केश, काली आँखें—आयोडम), कण्ठमाला धातु—जिनकी गाँठे अकसर फूला करती हैं और पकती हैं, खासकर कर्णमूलकी ग्रन्थि (parotid) अधिक फूला करती है। उन लोगोंकी बीमारीमें यह जल्दी क्रिया प्रकाश करता है और स्वरयन्त्र (लेरिङ्क्स) और श्वासनली (trachea) के ऊपर ही इसकी क्रिया अधिक होती है।

डिप्थीरिया—इस बीमारीके साथ कर्णमूलकी ग्रन्थिका रोगका दौरा होनेपर और बीमारी, स्वरयन्त्र अथवा श्वासनलीमें आरम्भ होकर अन्ननली मुख (फैरिङ्क्स) तक फैल जाती है—ब्रोमियमका प्रयोग करना चाहिये। इस रोगकी प्रधान दवा—मर्कुरियस सियानेटस है, इसका अध्याय देखिये।

खाँसी, दमा, हूपिङ्ग-खाँसी और काली खाँसी—आयोडम देखिये।

गाँठोंका फूलना—कोई भी गाँठ खासकर निचले हनुकी गाँठ और गलेकी गाँठ अगर पत्थरकी तरह कड़ी रहे और गण्डमालामें—आयोडमसे लाभ न हो तो ब्रोमियमसे फायदा होता है। तालुमूल प्रदाह रोगकी भी यह एक दवा है।

स्त्री-रोग—जरायुमें वायु-सञ्चय (Physometra), योनिपथसे जोरकी आवाजसे वायु-निकलना।

मानो कुछ चबा रहा है, ओंठ सूखे और फटे; १०। गरमी ते ही पतले दस्तोंका आना बढ़ जाता है; ११। सूतिका ज्वर, का, स्तन-प्रदाह; १२। उठ बैठनेपर जी मिचलाने लगता है र शरीर मानो सुन्न हुआ जाता है, सरमें चक्कर आता है; माथेके मनेवाले भागमें, पीछे-गर्दनमें, कन्धेमें और पीठमें दर्द, १३। याँ हाथ और बायाँ पैर लगातार हिलाता है, १४। ज्वरमें— गी चुपचाप पड़ा रहता है, ज्वरके साथ थोड़ा-बहुत पसीना होता , १५। फेफड़ेका प्रदाह, ब्राङ्काइटिस, ब्राङ्को-निमोनिया, वात-लेष्मा ज्वर प्रभृति रोगकी पहली अवस्थामें व्यवहार करना चाहिये। ाँसी—गलेमें कुटकुटाहट होती है, रातमें घटना इत्यादि।

दर्द—किसी दर्दमें सुई गड़नेकी तरह दर्द रहनेपर—ब्रायो-नेया और कैलि-कार्ब लाभदायक है। रस-स्रावी झिल्ली (serous membranes) का प्रदाह होकर जो दर्द होता है, उसकी विशे-ता है—सुई गड़नेकी तरह। प्लुरिसि, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह, पेरि-टोनाइटिस (अन्त्रावरक प्रदाह), पेरिकार्डाइटिस (हृद्वेष्ट प्रदाह) इत्यादि बीमारियोंमें गड़नेकी तरह दर्द रहनेपर—ब्रायोनिया ही महौषध है। कैलि-कार्बमें—सुई गड़नेकी तरह दर्द रहनेपर भी, यह ब्रायोनिया की तरह हिलने-डोलनेपर नहीं बढ़ता और उसमें यदि रोगी स्थिर होकर बैठ भी जाता है, तो दर्द घटता नहीं है। कैलि-कार्बका दर्द शरीरके सभी स्थानोंमें, यहाँतक कि दाँत तक होता है; पर दाहिनी ओरके कलेजेके नीचे ही अधिक होता है। सिरस कैविटीके भीतरी

ब्रायोनिया एल्बा।

(BRYONIA ALBA)

(युरोपकी एक तरहकी लता)—फाइब्रस टिशू, फेफडे, सिरस मेम्ब्रेन (रससावी, झिल्ली) यकृत और मस्तिष्क इत्यादि ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

वात और पित्त प्रकृति, सहजमें ही चिढ उठता है और रोगी दुबले-पतले काले रगके मनुष्योंके लिये यह अधिक उपयोगी है। नक्स-वोमिकाके रोगीके साथ इसका बहुत कुछ सादृश्य है।

नीचे लिखे लक्षण इसके चरित्रगत लक्षण हैं —

१। सरमें चक्कर आना—माथा मानो चक्केकी तरह गोलाकार घूमता है, सवेरे और विछावन या आसनसे उठते ही सर घूमता है, गिर जानेकी तरह हो जाता है, २। सूखापन—मानो ओंठ, मुँह जीभ, पाकस्थली सभी सूखे (जीभ बहुत सूखी—क्रोरम), ३। प्यासमें बहुत देरका अन्तर देकर ज्यादा ज्यादा पानी पीता है, ठण्ढा पानी पीना चाहता है, ४। मल—सूखा, कडा झामेकी तरह ५। ऋतुके समय नाकसे खून गिरना, ६। हिलने-डोलनेपर रोगका बढना, पेटके अलावा सभी स्थानोंमें दर्द,—दबानेपर घटना, ७। माथेके दर्दके सिवा सभी दर्दोंका गर्म प्रयोगमें घटना, दर्दकी प्रकृति सुई गडनेकी तरह, ८। प्रलापमें—दैनिक कार्य और व्यवसायकी बातें कहता हैं, ९। वात-श्लेष्मा ज्वरमें—ओंठ हिलाता

मानो कुछ चबा रहा है, ओंठ सूखे और फटे ; १०। गरमी
ढ़ते ही पतले वस्तोंका आना बढ जाता है, ११। सूतिका ज्वर,
नका, स्तन-प्रदाह ; १२। उठ बैठनेपर जी मिचलाने लगता है
ौर शरीर मानो सुन्न हुआ जाता है, सरमे चक्कर आता है, माथेके
ामनेवाले भागमे, पीछे-गर्दनमे, कन्धेमे और पीठमे दर्द, १३।
ायाँ हाथ और बायाँ पैर लगातार हिलाता है, १४। ज्वरमे—
ोगी चुपचाप पडा रहता है, ज्वरके साथ थोडा-बहुत पसीना होता
; १५। फेफडेका प्रदाह, ब्राङ्काइटिस, ब्राङ्को-निमोनिया, वात-
लेष्मा ज्वर प्रभृति रोगकी पहली अवस्थामे व्यवहार करना चाहिये।
ांसी—गलेमे कुटकुटाहट होती है, रातमे बढना इत्यादि।

दर्द—किसी दर्दमे सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर—ब्रायो-
नेया और कैलि-कार्ब लाभदायक है। रस-स्रावी झिल्ली (serous
membranes) का प्रदाह होकर जो दर्द होता है, उसकी विशे-
षता है—सुई गडनेकी तरह। प्लुरिसि, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह, पेरि-
टोनाइटिस (अन्त्रावरक प्रदाह), पेरिकार्डाइटिस (हृदवेष्ट प्रदाह) इत्यादि
बीमारियोंमे गडनेकी तरह दर्द रहनेपर—ब्रायोनिया ही महौषध है।
कैलि-कार्ब मे—सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर भी, यह ब्रायोनिया
की तरह हिलने-डोलनेपर नहीं बढता और उसमे यदि रोगी स्थिर
होकर बैठ भी जाता है, तो दर्द घटता नहीं है। कैलि-कार्बका दर्द
शरीरके सभी स्थानोंमे, यद्यपि कि बाँत सब होता है, पर दाहिनी
ओरके कलेजेके नीचे ही अधिक होता है। सिरके कंपिटोक भीतरी

रस-जमा होनेकी वजहसे होनेवाले दर्दमें—पपिससे भी फायदा होताहै। पर पपिसका दर्द डक मारनेकी तरह होता है

वात और कमरमें वात—ग्रन्थियाँ, खासकर बड़ी बड़ी ग्रन्थियाँ हैं, उन स्थानोंका दर्द और प्रदाहमें और कम वातमें—ब्रायोनिया फायदा करता है। कितनी ही बार इसका जगह बदला करता है, एक जगहसे दूसरी जगहपर चला है, पहले जिस जगहपर बीमारीका दौरा होता है, उस जगह कुल ही दर्द नहीं रहता या पहली रोग-वाली जगहपर थोड़ा दर्द रहता है और नयी जगहपर बहुत तेज दर्द रहता है। रोग जगह फूलती है, गरम और लाल हो जाती है, चमकती है, भी हिलने-डोलनेपर तकलीफ बढ़ती है, घुटना कड़ा और भरा, गाँठ फूली, गाँठ गरम और लाल हो जाती है, नोच फेंक तरह दर्द, जरा भी हिलने-डोलनेसे दर्दका बढ़ना, पैरका त फूलता है और गरम हो जाता है। गर्म सेक (फोमेण्टेश पोल्टीस या सेंकनेपर दर्द बहुत कुछ घटता है।

नया हो या पुराना, गठिया हो या मांसवाली जगहका है वातमें जहाँ ब्रायोनियाकी जरूरत रहती है, वहाँ अन्यान्य उपस साथ बहुत ज्यादा पसीना होता है।

ज्वर—सर्दी, वातका इन्फ्लुएञ्जा, स्वल्प-विराम, टाइफ नव-ज्वर इत्यादि सब तरहके ज्वरोंका लक्षण मिलनेपर—ब्रा नियाका प्रयोग किया जा सकता है (एकोनाइट अध्याय देखिये

योनियाका प्रयोग करते समय—प्यास, सर-दर्द, जीभपर मैल, इका तीता स्वाद, थोडा-बहुत पसीना (कमसे कम शरीर कुछ ला-सा), चुपचाप पडे रहना, इन्हीं कई लक्षणोंपर नजर रखनी ाहिये। ब्रायोनियाकी जीभ—ज्वरमें सूखी और खखडी रहती , उसके साथ पेटकी गडबडी रहनेपर (in gastric disorders)—जीभ भारी, सफेद या पीली मैल चढी हो जाती है।

टाइफायड ज्वर—ऊपर ही कहा है, कि इसका रोग-लक्षण—हिलने-डोलनेपर बढता है। इस बीमारीमें भी उसी तरह हिलने-डोलनेपर सब कष्ट बढते हैं, इसीलिये रोगी हिलने-डोलनेमें डरता है, शरीरमें बहुत तेज दर्द रहता है, नाकसे खून गिरता है, उसमें सरका दर्द कुछ घटता है, ओंठ फटते हैं। दोनों ओंठ हिलते हैं—ठीक मानो कुछ चबा रहा है, प्रलाप हल्का, रोगी अपने दिनके काम-काज या व्यवसाय सम्बन्धी प्रलाप बकता है। विकारमें रोगी घर जानेकी बात कहता है। वह समझता है, कि वह किसी दूसरी जगहपर है। ब्रायोनिया, जेलसिमियम, बैप्टिसिया, ये तीनों ही प्राय सान्निपातिक ज्वरकी प्रथम अवस्थाकी दवाएं हैं (प्रभेद बैप्टिसिया अध्यायमें देखिये)। ब्रायोनियाके रोगमें ठण्डा पानी पीनेकी तेज प्यास रहती है।

सविराम ज्वर—ज्वर आनेके समयकी कोई भी स्थिरता नहीं रहती, ज्वरकी पूर्वावस्थामें—माथेमें दर्द, हाथ-पैर, सारे शरीरमें पेठनका दर्द, तेज प्यास। शीतावस्थामें—प्यास, सूखी खांसी,

छातीमें सुई गडनेकी तरह दर्द, रोगी चुपचाप पडा रहता है। उत्तापावस्थामें—तेज प्यास, भीतर अत्यन्त दाह, तकियेसे सर नहीं उठा सकता, सर उठाते ही जी मिचलता है, सरमें चक्कर आता है और सरका दर्द बढ जाता है। पसीनेवाली अवस्थामें—बहुत ज्यादा पसीना, मुँह तीता और सूखा। घोखार छूटनेकी अवस्थामें—शरीर के सभी स्थानोंमें दर्द, यह दर्द दबानेपर घटता है, वमन होता है।

ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, प्लुरिसि, प्लुरोडाइनिया—इन सब बीमारियोंमें दूसर दूसरे उपसर्गोंके साथ यदि छातीमें दर्द हो—तो ब्रायोनिया ही पहली दवा है। निमोनियामें—फेरम-फास, एकोनाइट प्रभृति दवाओंके प्रयोगके बाद ज्वर और खाँसीके अन्यान्य लक्षणोंके साथ जब रोगीकी छटपटी घटती जाती है, खाँसी भी कुछ ढीली पड जाती है, जिधर दर्द होता है, वही करवट दबाकर सोता है और उसीसे आराम मालूम होता है, उस समय ब्रायोनिया विशेष लाभ करता है (दर्दवाली जगह खासकर बायीं ओर दबाकर सोनेमें तकलीफ मालूम होनेपर—फास्फोरस उपयोगी है)। प्लुरिसिमें—सुई गडनेकी तरह दर्द ही ब्रायोनियाके प्रयोगका प्रधान लक्षण है, खाँसीके समय रोगी हाथसे छाती दबा लेता है। दर्द—गरम प्रयोगसे घटता है। ब्रायोनियाकी सभी बीमारियाँ—दाहिनी ओर अधिक आक्रमण करती है (कैलि-कार्ब देखिये)। ब्रायोनिया—प्लुरो निमोनियामें विशेष लाभदायक है। ब्राङ्को निमोनियामें—फास्फोरस उपयोगी है। डा० हियुजेस कहते हैं—ब्राङ्को

ऐस रोगमें ब्रायोनियासे कोई फायदा नहीं होता, पर सूखी खाँसी, तनाव, वक्षोस्थिके निकट भार मालूम होना, लसदार खून-मिला बलगम, कुछ खानेपर खाँसीका बढना, खाँसते खाँसते वमन, खाँसते खाँसते रोगी कलेजा दबा रखता है, इन लक्षणोंके साथ ज्वर, सरमें दर्द—माथा मानो फटा जाता है, गलेमें दर्द, ये लक्षण सब अगर ब्राङ्काइटिसमें रहें—ब्रायोनियासे ज्यादा फायदा दिखाई देता है।

ब्राङ्काइटिस, प्लुरिसि, इण्टरकोस्टोल-न्युरैलजिया (पसलियोंका दर्द) प्रभृति रोगोंमें ब्रायोनियाकी तरह वक्षमें दर्दका लक्षण रहनेपर एसक्लिपियस टियुबारोसा (asclepias tuberosa)—नामकी दवा भी विशेष लाभदायक है। वक्षस्थलकी बीमारीमें ब्रायोनियाके साथ इसका बहुत कुछ सादृश्य दिखाई देता है। साँस छोड़नेके समय कलेजेमें दर्द, दर्द बायें फेफड़ेके निचले भागमें अधिक (ब्रायोनियामें दाहिनी ओर), सूखी खाँसी, खाँसनेके समय कनपटीमें और पेटमें दर्द, छातीकी बीचकी हड्डीके पीछे (behind sternum) काटने जैसेकी तरह या चिलक मारनेकी तरह दर्द, जोरसे साँस लेने या चलने-डोलनेपर यह दर्द और भी बढता है, छातीकी बीचकी हड्डीके दोनों ओरवाली पसलीकी हड्डीके बीचमें दबानेपर दर्द मालूम होता है। ये सब—एसक्लिपियसके लक्षण भी ब्रायोनियाके सदृश हैं। ब्रायोनियासे लाभ न होनेपर, उसके बाद—एसक्लिपियसका प्रयोग कर देखा जा सकता है, इसका निम्न-क्रम—१—१x शक्ति अधिक व्यवहृत होती है।

(निमोनयामें दाहिने फेफडेपर बीमारीका हमला होनेपर—बेल, ब्रायो, फास, चेलि, मर्क, एण्टि-टार्ट, रस , बायाँ फेफड़ा आक्रान्त होनेपर—सल्फ, एण्टि-टार्ट , दोनो फेफडे आक्रान्त एण्टिम-टार्ट, एण्टिम-आर्स, एण्टिम-सल्फ, हिपर, लाइको , दर्दका ओर दबानेसे आराम मालूम होना—ब्रायो , दबानेसे कष्ट—बेल, फास, मार्क , कलेजेंमे सुई गडनेकी तरह दर्द—ब्रायो, चेलि, फास। स्कुइला , खाँसीके साथ रक्त—कैन्थर, एसिड-फास, फास, रस, प्लुरो निमोनिया—ब्रायो,बेल, चेलिडोन , ब्राङ्को निमोनिया—फास। चुपचाप पडे रहना—बेल, ब्रायो, आर्नि, चेलिडोन , छटपटाना—एकोन, रस, आर्स , प्रमेहके बाद निमोनिया—थूजा, कैलि-म्यूर, नेट-सल्फ , सामान्य सर्दी होने बाद निमोनिया—मर्क, ब्रायो' टाइफायडके साथ निमोनिया—रसटक्स, एसिड-फास , नासा-पक्ष हिलते हैं—फास, एण्टिम, लाइको)।

यकृत—दाहिना अंश ही ब्रायोनियाका प्रिय स्थान है, यकृतकी बीमारीमें यकृतके स्थानपर सुई गडनेकी तरह दर्द, जलन, अकड़न का दर्द, सूजन , दबाने, खाँसने, साँस लेने पर भी दर्दका बढना, पेटके ऊपरी भागमें दर्द, जली मिट्टी—झामेकी तरह बहुत सूखा कडा मल, मुँहका स्वाद तीता, दाहिने कन्धेमें दर्द इत्यादि लक्षणों मे—ब्रायोनियाका प्रयोग होना चाहिये , परन्तु इसके सिवा इस रोगके ऊपर कहे प्राय' समस्त लक्षण ही चेलिडोनियममें हैं, केवल मलमें फर्क दिखाई देता है। चेलिडोनियममें—मल गन्धककी तरह,

ग अथवा राख या मिट्टीके रंगकी तरह होता है। इसमें खाना होनेके पहले पेटमें दर्द नहीं रहता, ब्रायोनियामें पतला त होनेपर भी वह हड़हड़ाकर और पेटमें मरोड़का दर्द नहीं ता है।

अभिज्ञताका परिणाम—चढ़े हुए या दर्द-भरे यकृत ब्रायोनियाका २।४ दिन व्यवहार कर यदि कोई फायदा न दिखाई —ब्रायोनियाके साथ मर्कुरियस पर्यायक्रमसे अर्थात् एक दिन ायोनिया, एक दिन मर्कुरियस सोल या वाइवस—६ ठा या ३० म, रोगकी तेजीके अनुसार रोज २।३ मात्रा देकर मैंने कितने ही गियोंको आरोग्य किया है। यकृतकी जगहपर बहुत अधिक अक- लका दर्द रहनेपर, ब्रायोनिया—मूल अर्क,—२० बूँद, १ आउन्स ग्लिसरिनमें अच्छी तरह मिलाकर—उसकी १०।१५ बूँदें, दर्दवाली गहमें रातमें दो तीन बार धीरे धीरे मालिश और गर्म पानी । गर्म गोमूत्रमें ऊनी कपड़ा डुबोकर, निचोड़ निचोड़कर सेकनेकी वस्था करता हूँ। इससे दर्द बहुत जल्द घट जाता है। मर्कुरियस- ाइवस २०० शक्ति। दो दिन सबेरे एक मात्राके हिसाबसे देकर क बार एक पेलोपैथका त्यागा हुआ यकृतके फोड़ेका रोगी मैंने ाय एक सप्ताहमें आरोग्य किया था। उस रोगको नित्य १०३। ०४ डिग्री ज्वर आता था। एलोपैथ चिकित्सकने कहा था कि न्तर लगाये बिना यह रोग आरोग्य न होगा। इसी वजहसे ोगी हारकर होमियोपैथीकी शरणमें आया था।

२५

सर-दर्द—सामने कनपटी और कपालमें, माथेके पिछले भागमे बहुत दर्द, मानो माथा फट जायगा, हिलने-डोलने, खांसने, गर्दन झुकाने और पलक खोलनेपर सर-दर्द बढ जाता है। उठ बेठनेपर जो मिचलाता है और चक्कर आ जानेकी तरह हो जाता है।

सर्दी—नाकसे सर्दी निकलनेपर भी नाकके भीतर सूखापन रहता है। ब्रायोनियामें—पीले रगकी तरह गाढा पका बलगम निकलता है, सर्दीका स्राव एकाएक बन्द होकर सरमे बहुत दर्द होनेपर—ब्रायोनिया उपयोगी है। लैकेसिस—इस प्रकारके सर दर्दमे यह लाभदायक है, इसमे बायीं ओर अधिक दर्द होता है। (स्टिक्टा देखिये)।

खाँसी—ब्रायोनियामे सर्वत्र सूखापनका भाव रहता है इसलिये, खाँसी भी सूखी रहती है, गलेमें सुरसुराहट होकर खांसी और स्वर कर्कश हो जाता है, बलगम बिलकुल ही नहीं निकलता। यदि निकलता भी है, तो बडे कष्टसे और बहुत थोडा निकलता है, उसका रग पीला या उसपर खूनके छींटे रहते हैं, रोगी खांसनेके समय हाथसे छाती दबा रखता है, खाँसीके साथ सरमें बेहद दर्द रहता है और गरम कमरेमे रहने या सोनेपर खाँसी बढ जाती है। खाँसीके साथ ही सर दर्द—नैट्रम-म्यूरमे है। पर उसमे हिलने, डोलने पर बढनेका लक्षण नहीं है।

नाकसे रक्तस्राव—किसी भी कारणसे हो, नाकसे रक्तस्राव होनेपर ब्रायोनियासे लाभ होता है; स्त्रियोंको ऋतुके

ाय या ऋतुस्रावके बदले नाकसे रक्तस्राव होनेपर—ब्रायोनिया
भ करता है। ऋतु बन्द होकर (Vicarious menses) फेफड़े
रक्तस्राव होनेपर—फास्फोरस और पाकस्थलीसे रक्तस्राव
ोनेपर—पलसेटिला फायदा किया करता है। सिनिसियो
Senecio) ऋतुस्राव बन्द होकर खाँसते खाँसते बलगमके साथ
न निकलनेपर फायदा करता है (हैमामेलिस, मिलिफोलियम)
त्यादि दवाओंके लक्षण देखें।

दुग्धज्वर या दूधका बोखार—पहली अवस्थामें
ब्रायोनियाके द्वारा ही अकसर स्तनका प्रदाह आराम हो जाता
। प्रदाहित स्थान लाल नहीं रहता, पर कड़ा और बहुत गरम,
था वहाँ तेज दर्द रहता है, जरा हिलने-डोलनेसे ही तकलीफ बढ़
ाती है। इस लक्षणमें—ब्रायोनिया फायदा करता है (फाइटो-
का अध्याय देखिये)। बेलेडोना, फाइटोलैका, मर्कुरियस, हीपर
ी अवस्थाके अनुसार इस रोगकी अच्छी दवाएँ हैं।

द्रष्टव्य :—डाक्टर फैरिङ्गटन कहते हैं, कि वे इस दूधके
ोखारमें बहुत दिनोंसे ब्रायोनियाका व्यवहार कर रहे हैं। इससे
ी अकसर बीमारी आराम हो जाती है। मैंने स्वयं भी परीक्षा की
ै—पहली अवस्थामें इसका प्रयोग करनेपर किसी दूसरी दवाकी
रूरत ही नहीं पड़ती। रहे मसूरकी दाल पीसकर गर्म कर,
ास पर लगा देने और स्तनको ऊँचाकर बाँध रखनेसे और भी
ज्यादा फायदा होता है।

कब्जियत—पलिमेण्टरी कैनेल (अन्नवहा नली) के सूखेपनकी वजहसे मल खूब बडा लेंड निकलता है, वह खूब सूखा और कडा रहता है। ओपियममें—मल काला, गोल गोल गेंदकी तरह होता है। एल्युमिनामें—पाखाना बिलकुल लगता ही नहीं इसमें बिना काँखे या जोर लगाये, यहाँतक कि पतला मल भी जोर दिये बिना नहीं निकलता। ऊपरकी तीनों ही दवाओंमें पाखाना लगता नहीं। (एसिड गैलिक अध्याय देखिये)।

अतिसार—गरमीके दिनोंका या गरमीकी ऋतुके पहले अगर खाने-पीनेकी गडबडीसे बीमारी हो जाये—ब्रायोनिया फायदा करता है। इसमें सवेरेके वक्त दस्त ज्यादा आते हैं, दस्तका रंग काला, कुछ न कुछ गन्ध भी रहती है। गन्ध सडे पनीरकी तरह, हिलने-डोलने या चलने-फिरनेपर दस्त आते हैं और शरीर गरम हो जानेपर दस्त आना बढ जाता है। ठण्डी पीनेकी चीजें, फल और साग-सब्जी खाकर अगर पतले दस्त आते हों और किसी तरहका भी उद्वेग वेठकर अगर अतिसार हो जाये तो—ब्रायोनिया फायदा करता है। सलफरमें—सवेरेकी ओर दस्त आते हैं, रोगी क्षणभर भी पाखानेका वेग सम्हाल नहीं सकता, इसमें रोगीको पाखाना लगकर नींद खुल जाती है। नैट्रम-सल्फ और ब्रायोनियामें—सोकर उठने बाद घूमना आरम्भ करनेपर पाखाना लगता है।

आभास—ब्रायोनियामें—दर्द और तकलीफ या रोगके उपसर्ग हिलने डोलनेपर बढते हैं। इसीलिये, रोगी चुपचाप पडा

हृता है। रसटक्सम—ठीक इससे उलटा और दर्द और तक-
लीफ हिलने-डोलनेपर घटती है, इसीलिये, रोगी छटपटाया करता
। छोटी माताकी गोटियाँ बेठ जानेपर या बाहर न निकलनेपर।
ब्रायोनियाका प्रयोग होता है।

वृद्धि—शरीर हिलाने, उठ बेठने, गरमीसे, गर्म चीजे खानेपर।
इसके अलावा इसके उपसर्ग खा-पी लेने बाद और सवेरे बढते हैं।

ह्रास—सोने, रोगवाली जगह दबाने, विश्रामसे, स्थिर होकर
बैठे रहने, ठण्डी चीज खाने पीनेपर घटते हैं।

सम्बन्ध—जिन रोगोंकी नयी अवस्थामें—ब्रायोनियाका प्रयोग
होता है, रोग पुराना हो जानेपर उनमें—<u>एल्यूमिनाका</u> प्रयोग
किया जाता है।

बादकी दवाएँ—पेल्सू, आर्स, एण्टि-टार्ट, बेल, डल्का, हायो,
कैलि-कार्ब, एसिड-म्यूर, नक्स, फास, पल्स, रस, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, फर्म, चेलि, कालि, इग्ने,
एसिड-म्यूर, नक्स, पल्स, रस, सेनेगा।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७ से २१ दिन।

क्रम (potency) ३x—२०० तथा इससे ऊँची।

नरमें—ऊँची शक्ति ज्यादा फायदा करती है। फार्मुला—१

ब्यूफो राना।

(BUFO RANA)

(Toad जातिके एक प्रकारके मेढकके चमड़ेकी ग्रन्थिसे निकले हुए रस या जहरसे विचूर्णके रूपमें यह दवा तैयार होती है)—जर्मनीके डा० कार्लने पहले पहल इसकी परीक्षा की। सभी स्नायु और चर्मपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। यद्यपि इसका दूसरे दूसरे रोगोंमें भी व्यवहार होता है, तथापि स्त्री-पुरुषोंकी बहुत-सी बीमारियाँ, मृगी और चर्मरोगपर ही इसका अधिक व्यवहार हुआ करता है।

पुरुषोंकी बीमारी—हस्तमैथुनकी बहुत अधिक इच्छा, रोगी एकान्त जगह खोजा करता है, स्त्री-संसर्गके समय खूब जल्दी जल्दी वीर्य-स्खलन हो जाता है, अनजानमें तथा आप ही आप वीर्य-स्खलन होता है—इससे रोगीको धीरे धीरे ध्वजभंग हो जाता है। कहावत है, कि ब्रेजिल वगैरह स्थानोंकी दुराचारिणी स्त्रियाँ अपनी कामेच्छा और बुरी वासनाकी पूर्त्तिके लिये खाने-पीनेकी चीजोंके साथ उस मेंढकके चमड़ेका रस मिलाकर अपने पतिको पिला देतीं और ध्वजभंग पैदा कर देती थीं।

स्त्री-रोग—ऋतु खूब जल्दी जल्दी होता है, पानीकी तरह पतला प्रदरका स्राव, ऋतुस्रावके समय और संगमके समय मृगी का दौरा, स्तनमें कड़ी गाँठें, जरायु और डिम्बकोषमें जलन, जरायु

ियामें जखम, खून-मिला बदबूदार स्राव निकलना, स्तनके दूधके ाथ खून आना, शिराओंका फूलना प्रभृति स्त्रियोंकी बीमारियोंमें सका व्यवहार होता है।

मृगी—एब्सिन्थियम देखिये। डरकर या ऋतुके समय ींचनका दौरा होना।

चर्म-रोग—तलहन्थी और तलवेमें—छालेकी तरह उद्भेद, थोडी-सी चोट लगनेपर भी जखम हो जाता है, पकता है और उसमेंसे पीव निकलता है। मुँह तथा गालोंमें जखम होकर वहाँ छेद हो जाता है, स्तनमें कैन्सरकी तरह जखम, दूषित कार्बङ्कल (एन्थ्रासिनम् देखिये)।

आभास—इस दवाके गुणोंकी परीक्षा करते समय प्राय ६।७ तरहके मेढक पकड़ कर परीक्षकोंने परीक्षा की ; डा० हेरिङ्गने इनमेंसे टोड जातिके एक प्रकारके मेढकको ही सबमें उत्कृष्ट पाया है। हमारे देशमें प्राय दो जातिके मेढक ही दिखाई देते हैं—घरकी दीवार वगैरहके छेदोंमें जिस जातिके मेढक रहते हैं, वह रहकर टर-टराया करते हैं, वे ही सम्भवत टोड जातिके मेढक हैं। जो हो, इन मेढकोंको अच्छी तरह सिझानेपर उनका काढ़ा बनाकर पिलानेसे शोथ रोग आराम होता है। यदि किसी रोगीका शरीर फूल जाये और किसी दवासे कोई ज्यादा फायदा न हो, तो नियमित रूपसे दवा सेवन करनेके साथ ही साथ उस मेढकका काढ़ा भी पिलाना चाहिये। अगरवायोंके पास जो गाल-फूले मेढक रहते हैं, वे पागल-

पनकी दवा है। उनका काढ़ा पागलोंको पिलाना चाहिये। बेंगका काढ़ा पिलाना कोई भयकी बात नहीं है। मेंढकका मांस तुरन्त ताकत वढानेवाला, श्लेष्मा वढानेवाला, तृष्णा, दाह, प्रमेह, क्षय कुष्ठ और वमनको घटानेवाला है।

क्रिया-नाशक (antidote)—लेके, सेनेगा।

वृद्धि (aggravation)—गर्म कमरेमें, नींद खुलनेपर, संगीतसे (पम्ब्रा), वहुत ही साधारण आवाजसे।

घटना (amelioration)—नहानेपर, ठण्डी हवामें, गरम पानीमें पैर डुवो रखनेपर।

क्रम—१२ से २०० शक्ति। फारमुला—१।

कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस।

(CACTUS GRANDIFLORUS)

(एक तरहका छोटा गाछ)—इटलीके डा० रूविनीने इसकी सबसे पहले परीक्षा की (यह हृत्पिण्ड और उसके अन्तर्गतकी शिराओंपर ही अधिक क्रिया प्रकट करता है)।—हृत्पिण्डका घात, नया एण्डोकार्डाइटिस, (अन्त्र प्रदाह), पेरिकार्डाइटिस, (हृद्-वेस्ट-प्रदाह) न्युरैलजिया, (स्नायुशूल) आक्षेप और हृत्पिण्डका वढना (Hypertrophy of the heart), कलेजा धड़कना हृत्पिण्डका शोथ इत्यादि बीमारियोंमें भी इससे फायदा होता है।

<u>चरित्रगत लक्षण—</u>

१। मृत्यु-भय, रोगी समझता है, कि उसकी बीमारी आराम हो सकती (आर्स), २। फेफड़ा, नाक, पाकस्थली, मलनाली आय प्रभृतिसे खूनका स्राव होना (मिलिफो, फास), ३। मालूम होता है, कि समूचा शरीर एक पींजड़ेमें फसा हुआ र पींजड़ेके सभी तार धीरे धीरे उसे जोरसे दबाते हैं। ४। पर मानो एक भारी चीज दबायी हुई है। इसी वजहसे कष्ट मानो लोहेकी पट्टीसे छाती फसी हुई है—इसीलिये हृत्पिण्डकी ाविक क्रियामें बाधा पहुँचती है, ५। ऐसा मालूम होता है, हृत्पिण्ड कोई कसकर मुट्ठीमे दबा लेता और फिर छोड़ देता है। बहुत ज्यादा कलेजा धड़कना और हृत्पिण्डका बढ़ना।

हृत्पिण्डकी बीमारी—रोगी कहता है, कि मानो एक बहुत वजनी कड़ी चीज उसके हृत्पिण्डपर रखी हुई है nstriction along the heart), उसका कलेजा मानो कोई बार कसकर मुट्ठीमे पकड़ लेता है, फिर छोड़ देता है, इसके मा—छातीपर कपड़ा रखनेसे भी यहाँ दर्द मालूम होता है। मों ही बार ये लक्षण अर्थात् कड़ी चीजमें दबने और अटक की तरह दर्द,—यह पेशाबकी जगहपर, मलद्वारमें, योनि इत्यादि ामि भी होनेपर—कैक्टसमे फायदा होगा। <u>आपोसिनमें</u>—हृत्पिण्ड कोई चलता रहा है ; <u>लिलियममें</u>—हृत्पिण्ड मानो कोई दबा है और फिर छोड़ देता है। <u>लैकेसिसमें</u>—नींद आनेपर या नींद ाद हृत्पिण्डकी तकलीफ बढ़ जानेका लक्षण है। <u>कैक्टसमें</u>—

ऊपर बताये लक्षणोंके अलावा—रोगी मानो साँस रुककर बेहोशकी तरह हो पड़ता है, पसीनेके साथ नाड़ीकी गति कम हो जाती है, बाँयीं करवट बिलकुल ही सो नहीं सकता, कलेजा धड़कने लगता है इत्यादि और भी कितने ही लक्षण है। कैक्टसके इस तरहके चरित्रगत हृत्पिण्डके लक्षणके साथ हृत्पिण्डका शोथ और साथ ही अंग-प्रत्यंगका शोथ, बहुत ही कष्टकर श्वास-प्रश्वास, सो न सकना इत्यादि लक्षणोंमें भी कैक्टस फायदा करता है। एनजिना पेक्टोरिस (हृत्-शूल)।

सर-दर्द—स्नायविक या रक्तकी अधिकताके कारण सर दर्द, धका देने और टपककी तरह दर्द, दर्द माथेके दाहिनी ओर और सरकी चोटी—मूर्द्धदेशमें ज्यादा होता है। माथा बहुत भारी ऐसा मालूम होता है, मानो कोई भारी चीज माथेपर दबायी हुई है, किसी तरहकी गड़बड़ी या रोशनी सहन नहीं होती। इसका और भी एक लक्षण है—भोजनका बँधा हुआ समय बीतते ही सरमें दर्द आरम्भ हो जाता है।

रक्तस्राव—ऊपर कही हृत्पिण्डकी बीमारीके लक्षण साथ कलेजेमें टपककी तरह दर्द, इसके साथ ही फेफड़ा, नाक मलद्वार, पाकस्थली, पेशाबका दरवाजा इत्यादि किसी भी स्थान रक्तस्राव क्यों न हो,—कैक्टस फायदा करता है। मूत्रनली से थक्का थक्का खून निकलता है। जल्दी जल्दी पेशाब होता है। मैलेरिया ज्वरमें—खूनके दस्त।

ऋतुस्राव—लेटनेपर बन्द हो जाता है, पर बैठने या चलने-डोलनेपर फिर होने लगता है। ऋतुस्राव खूब जल्द जल्दी होता है, स्रावका रंग-काला अलकतरेकी तरह (काकुलस, मैग-कार्ब)।

गलनलीकी बीमारी—गलनली सिकुड़ी हुई, जीभ सूखी, एक बूँद भी रस नहीं रहता, कोई चीज निगलनेके समय रोगीको भोजनके पदार्थके साथ बहुत ज्यादा पतली कोई चीज या पानी पीना पड़ता है।

वात—बायाँ हाथ सुन्न हो जाता है। हाथ बरफकी तरह ठण्डे और स्थिर नहीं रख सकता (restless), केवल हिला करता है, हाथ-पैरोंमें शोथ।

सविराम-ज्वर—कैक्टसके ज्वरमें एक ताज्जुब-भरी खासियत यह रहती है, कि ठीक दिनके या रातके ११ बजे यह ज्वर आता है। अगर दिनके ११ बजे आता है, तो रातके ११ बजे और रातके ११ बजे आता है, तो दिनके ११ बजे छूटता है। इसके साथ ही ऊपर कहे हृत्पिण्डके लक्षण और दम रुकनेका भाव मौजूद रहनेपर—कैक्टस और भी ज्यादा फायदा करता है। मलेरिया-ज्वरमें—ऊपर बताये रक्तस्रावके लक्षणके साथ रक्तस्राव होनेपर कैक्टससे ज्यादा फायदा होगा।

वृद्धि—ऊपर चढ़ने, टहलने, रातमें, बाईं करवट सोनेपर।

बादकी दवा (follows well)—डिजि, ईके, नक्स, सल्फ

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, कैम्फर, चायना।
क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७ से १० दिन।
क्रम (potency)—३x—३० शक्ति। फारमुला-३।

कैडमियम सल्फरिकम।

(CADMIUM SULPHURICUM)

(मिश्र-धातु)—हैजा, पीत-ज्वर प्रभृतिमें लगातार दस्त-कै होकर जब रोगी एकदम निस्तेज और कमजोर हो पड़ता है, रोगक गति मृत्युकी तरफ बढ़ती जाती है, उसी समय इसकी जरूर पड़ती है। नीचे लिखी बीमारियोंमें, लक्षण मिला और समझ बूझकर प्रयोग कर सकनेपर आशासे भी अधिक फायदा होता है कैडमियम—कैन्सरमें भी फायदा करता है (लेपिस देखिये)।

पाकस्थलीकी बीमारी—ऊपरी पेटमें दबानेपर थे रह दर्द, यकृतकी जगहपर दर्द, माडकी तरह या पीला-हरा मि या काले रंगका थका थका बदबूदार खूनका दस्त, मिचली, तार वमन, काले रंगका वमन, श्लेष्माका वमन, हरे रंगका व खूनकी कै, ओठमें किसी तरहकी खानेकी चीज लग ज ओकाई आने लगना और मिचली पैदा हो जाना, इसके साथ बहुत ज्यादा सुस्ती आ जाना, पाकस्थलीमें जलन और का

ड़नेकी तरह दर्द, हिमाँग (शीत आ जाना), पेशाव बन्द। गर्भा-
थामे दस्त कै।

हैजा—इस रोगमे वार वार दस्त कै होकर, रोगी वहुत
दा कमजोर और वेतरह सुस्त जड़ हो पडता है और इसके
र ही रत्ती भर भी कष्ट नहीं रहता है—तो कैडमियम
ा जा सकता है (आर्सेनिकमे कैडमियमके कितने ही लक्षण
ने पर भी उसमे अन्तर्दाह और छटपटी रहती है)।

पेशावकी वीमारी—मूत्रनलीमे दर्द, खून-पीव मिला
ाव।

नाककी वीमारी—पूतिनस्य या नकसीर, नाककी
क जड मानो रुकी हुई, बन्द, नाक बन्द, नाकका अर्बुद, नाक-
ी हड्डीमें अस्थि-क्षत (Caries), नाकके भीतर फोडा या घाव
आरम, पचिनेसिया)।

आँखकी वीमारी और नींद—आँखके चारों ओर
ीले रगका दाग, रतौंधीकी वीमारी, एक आँखकी पुतली फैली
ु, नींदके समय, आँखे खुली रहती है, बुदबुदा कर कुछ कहता
ौर हँसता है। इसका एक प्रधान लक्षण है—नींदमे एकाएक
म रुकनेकी तरह हो जाता है, रोगी जल्दी जल्दी उठ बैठता है,
नींदमें दम बन्द हो जायगा, इस डरसे फिर सोना नहीं चाहता।

मस्तिष्ककी वीमारी—सरमे चक्कर आना—रोगी
सोचता है, कि—मानो विछौना, घर और घरके सभी सामान

चक्केकी तरह घूम रहे हैं (काकुलस देखिये), कभी कभी वेहश हो जाता है। माथेका ब्रह्मतालु आगकी तरह गरम। माथेमें हथौड़ा से ठोकनेकी तरह दर्द। (नैट्रम-म्यूर)।

ज्वर—बोखार या किसी दूसरी बीमारीमें शरीर बरफकी तरह ठण्डा, बहुत जाड़ा, इतना जाड़ा कि आगके पास रहनेपर भी वह जाड़ा नहीं जाता।

द्रष्टव्य :—किसी बीमारीमें अगर कैडमियमका प्रयोग करना हो तो—ऊपर बताये लक्षणोंके अलावा रोगीके मानसिक लक्षणोंपर नजर रखनी होगी। इसमें बेचैनी बिलकुल ही नहीं रहती तकलीफ ज्यादा रहनेपर भी रोगीमें बेचैनी, छटपटी नहीं रहती बल्कि—ब्रायोनिया, जेलसिमियमकी तरह वह चुपचाप पड़ा रहता है।

बादकी दवा (follows well)—बेल, कार्बो, लोबेलिया।
क्रम—२x से ३० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७।

कैलेडियम सेग्विनम।

(CALADIUM SEGUINUM)

(एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार होता है)—इसकी खास क्रिया जननेन्द्रियपर है। इसके अलावा दमा वगैरह दो एक दूसरी बीमारियोंमें भी इसका प्रयोग होता है।

ध्वजभङ्ग—अगर बहुत दिनोंसे स्वप्नदोष होकर बीमारी ध्वजभगमें परिणत हो जाये तो कैलेडियम फायदा करता है। जहाँ ऐसा दिखाई दे, कि—नींद आने लगते ही लिङ्गमें कड़ापन आ जाता है और जागते ही लिङ्ग शिथिल हो पडता है, किसी तरहका भी कामोत्तेजक स्वप्न देखे बिना ही स्वप्नदोष हो जाता है, स्पर्श, आलिङ्गन आदि करनेपर भी लिङ्गमें कडापन नहीं आता, आता भी है तो बहुत थोडा—सगमके समय ही शिथिल हो जाता है, इच्छा बहुत, पर शक्ति बिलकुल ही नहीं रहती, वहाँ पहले इसीका प्रयोग करना चाहिये। इसमें लिङ्गमें प्रुराइटिस नामक एक प्रकारका चर्मरोग होता है, वह बहुत खुजलाता है, लिङ्गमणि (सुपारी—propuce) लाल हो जाता है, अण्डकोषका चमडा बडा, मोटा हो जाता है। सेलिनियम—भी ध्वजभगकी दवा है, पर इसमें आलिङ्गनके समय लिङ्गमें उत्तेजना या वीर्य-पतन कुछ भी नहीं होता। (टर्नेरा देखिये)।

चर्म-रोग—गर्भावस्थामें स्त्री-जननेन्द्रियपर एक प्रकारके दाने निकलते हैं, वे बहुत खुजलाते हैं।

दमा-खाँसी—रोगी खाँसता खाँसता थक जाता है। पर सहजमें बलगम नहीं निकलता। बलगम निकल जानेपर दमा का रिसाव कुछ घटता है, खाँसीके साथ थूक या लार निकलती है।

पसीना—पसीना मीठा, इसीलिये, वदनपर मक्खी बैठती है।

वृद्धि (aggravation)—हिलने-डोलनेपर।

ह्रास—बीमारीमें पसीना होनेपर, दिनमें सोनेपर।

सदृश (complement)—एसिड-नाइट्रिक।

बादकी दवा—एकोन, कैन्थर, कास्टि, पल्स, सिपि, सेलिनि।

क्रिया-नाशक—कैम्फर, कैप्सि, कार्बो, इग्ने, हायोसि, मर्क।

क्रियाका स्थितिकाल—३०—४० दिन। क्रम—३-३० शक्ति।

फारमुला—३।

कैलकेरिया एसेटिका।

(CALCAREA ACETICA)

इसके अधिकांश लक्षण कैल्केरिया-कार्वकी तरह है। इसमें खुली हवामे सरमे चक्कर आना वढ जाता है, किताव पढनेके समय सर-दर्दकी वजहसे वेहोशकी तरह हो जाता है और अधकपालीके सर-दर्दमें—यह ज्यादा फायदा करता है। रोगीको माथेमें सर्दी मालूम होती है और मुँहका स्वाद खट्टा हो जाता है। ढीली घर-घर आवाजवाली खाँसीमें बलगमके साथ श्वासनलीके वडे वडे—कैस्टस (श्वासनलीके आकारकी तरह एक पदार्थ) निकलनेपर इससे वहुत फायदा होता है। कम्प-ज्वरमें—हाथ-पैर ठण्डे, कपाल

एस, प्यास प्रभृति नहीं रहती। अतिसारमें—यह बहुत कुछ सिड-फासके सदृश है, पर पेटमें दर्द नहीं रहता, रोगी कमजोर ो नहीं होता।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण-७, जलीय ५ प।

कैल्केरिया आर्सेनिकम।

(CALCAREA ARSENICUM)

(आर्सेनेट आफ लाइम, एक तरहका मिश्रित धातु)—कण्ठ-ाला और यक्ष्मा-धातु, मोटी-ताजी स्त्रियाँ—जिनका ऋतु होने ा समय बीत गया है, बहुत ज्यादा चर्बी इकट्ठी होकर शरीर ोटा हो गया है, इस तरहके आदमियोंकी बीमारीमें यह ज्यादा ैदा करता है। बच्चेका यकृत और प्लीहा दोनों ही बढ़ी हुई, स्तिष्कमें खूनकी ज्यादती, श्लेष्म-ग्रन्थि (पैनक्रियस) की बीमारी, ामग्रन्थिका कैन्सर, जरायुका कैन्सर, शिराका प्रदाह, प्रभृति ागोंमें इसका हमेशा व्यवहार होता है। जब किसी बीमारीमें सा दिखाई दे, कि कितने ही लक्षण कैल्केरिया और कितने ही ार्सेनिकके हैं, वहाँ इसको सबसे पहले याद करना चाहिये।

प्रदर—खून मिला श्वेत-प्रदरका स्राव, मायेमें बहुत दर्द रहना।

कैन्सर—इस बीमारीको आरोग्य कर देनेवाली दवा कै-
न्सर किसी भी चिकित्सा पद्धतिमे नहीं दिखाई देती, पर पाकि
जरायु और पैनक्रियस प्रभृतिमे अगर कैन्सर हो जाये, तो उसकी
जलन घटानेके लिये इसका सामयिक रूपसे व्यवहार किया ज
सकता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डमे दर्द, कलेजा ध
कना, मोटी-ताजी स्त्रियोको ऋतुस्राव होना वन्द होनेकी उमरमें
(४० वर्षसे ऊपर) अगर थोड़ी भी मानसिक उत्तेजनासे कलेजा
धड़कने लगता हो, श्वासमे तकलीफ होने लगे—प्रभृति लक्षणोंमें
इसका व्यवहार होता है।

मृगी, मूर्च्छा—पहले हृत्पिण्डके किसी कपा
(valve) की बीमारी होने बाद मृगी, मूर्च्छा या इसी •
कोई दूसरी बीमारी होनेपर यह फायदा करता है।

बच्चोका यकृत, प्लीहा बढी हुई तथा और भी कई बीमारि
के लिये कैल्केरिया-कार्ब अध्याय २ रा परिच्छेद पढिये।

बादकी दवा (follows well)—क्रोनि, ग्लोनोयिन, ओपि
पल्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—कार्बो, ग्लोनोयिन, पल्स।

क्रम (potency)—६x, ६—२०० शक्ति।

<u>बच्चोंके यकृत और प्लीहामें</u>—३० शक्तिसे बढिया काम हो
है। फारमुला—विचूर्ण—

कैल्केरिया कार्बोनिकम।

(CALCAREA CARBONICUM)

किसी बीमारीमें यदि यह दवा प्रयोग करनी हो तो रोगकी
वेत्ता इसके धातु-गत लक्षणोंपर सबके पहले ध्यान रखना पडेगा।
ल्केरियाका रोगी देखनेमें खूब मोटा-ताजा, मेदसे भरा रहता है,
च्चे जडकी तरह रहते हैं, जल्दी हिल-डोल नहीं सकते, उनकी
चा सूखी, थुलथुली और नरम रहती है, हाथ-पैर पतले, शरीरका
तना आयतन रहता है, उससे माथा बडा, पेट और भी मोटा,
ा और कडा दिखाई देता है। माथेमें पसीना होता है। सोनेपर
ना पसीना होता है, कि माथेके पसीनेसे तकिया तर हो जाती
 ब्रह्मतालु (fontanelle—बच्चेके माथेका वह स्थान जहाँ हड्डी
ीं रहती) बहुत दिनातक नहीं भरता, उसके साथ ग्रन्थियोंकी
 ासकर लसिका-ग्रन्थियोंकी (लिम्फेटिक ग्लैण्ड) बहुत सूजन
ती है। पैरका तलवा बहुत ठण्ढा, यहाँतक कि दबाये रहनेपर
ी यह ठण्ढकका भाव दूर नहीं होता। रोगी अपने शरीरके
ीतर हमेशा ठण्ढक अनुभव करता है, खुली हवामें टहलनेसे
ता है। कण्ठमाला धातुवाले मनुष्योंको सहजमें ही सर्दी लग
ती है और साथ ही साथ बलगमका खांसी भी यह जाता है।
भी आराम होकर भी फिर बीमार हो जाता है। शरीरका चमडा
ग, भूरे रंगका; आंखोंमें ज्योति नहीं रहती और जब कब्ज
ता है तो वह अच्छा रहता है।

किसी भी बीमारीमें जब यह दिखाई दे कि उद्भेदका लक्षण-सलफरकी तरह है और धातुगत लक्षण कैल्केरियाका है, वहाँ-हिपर-सलफर और जहाँ धातुगत लक्षण कैल्केरियाके हों और उसके साथ ही मैलेरियासे उत्पन्न लक्षण वर्त्तमान रहें, वहाँ-कैल्केरिया आर्सकी जरूरत रहती है। कैल्केरिया-आर्स—पुराने मैलेरिया बोखार, अण्डलाल मिला पेशाब (पेल्वुमिनुरिया), शोथ, प्लीहा और मेसेण्टरिक ग्लैण्डकी बीमारीके दुष्परिणाम रक्तहीनता और रक्तमें लाल कण कम पड जाना (hæmoglobin and red corpuscles are low), थोड़े भी परिश्रमसे कलेजा धडकने लगना वगेरह बीमारियोंका यह महौषध है। स्वर्गीय डाकृर पी० सी० मजुमदार महाशयके मतसे अगर बच्चोंका यकृत और प्लीहा बढ जाये और उसके साथ ही बोखार रहे तो—कैल्केरिया-आर्स एक बहुत ही फायदेमन्द दवा होती है।

प्रधान चरित्रगत लक्षण —

१। जल्दी जल्दी मोटे (स्थूलकाय) होते जाना, २। माथा और पेट बहुत बडा, माथेका जोड और ब्रह्मरन्ध्र खुला, हड्डियाँ नरम, हड्डियाँ बहुत धीरे धीरे पुष्ट होती हैं, ३। हाड सब पतले, मांस थुलथुला, जरा-सा भी परिश्रम करनेपर पसीना होने लगता है, जरा भी ठण्ड हुई कि सर्दी लग गयी, ४। मेरुदण्ड की हड्डी, हाथ तथा पैरोंकी दूसरी दूसरी जगहोंकी लम्बी हड्डियाँ

हो, हाड समान नहीं रहते और टेढे होकर बढते हैं। रोगी विक-
ाङ्ग दिखाई देता है। ५। नींदवाली अवस्थामें सरमें बहुत अधिक
सीना होता है, तकिया भींज जाता है। माथा, गर्दन, पीठ, छाती,
ौर धडके ऊपरी भागके सभी हिस्सोंमें बहुत ज्यादा पसीना होता
।, ६। रोग भोग करनेके समय या आराम होनेवाली अवस्थामें
ण्डे खानेकी बहुत अधिक इच्छा, और भी जितनी ही जल्द न
चनेवाली बुरी चीजें हैं, सब खानेकी इच्छा, माम्समें घृणा, ७।
ट्टा पाखाना, खट्टी कै, खट्टे डकार, सारे शरीरसे खट्टी गन्ध
ाना (हिपर, रियुम), स्त्रियोंको जल्दी जल्दी और ज्यादा मात्रामें
तुस्राव होना, स्राव बहुत दिनोंतक जारी रहता है, अन्तमें
ोगिनी जब कमजोर हो जाती है, तब ऋतुस्राव होना बन्द हो
ाता है, ६। थोडी भी मानसिक उत्तेजना हुई कि ऋतुस्राव होने
गा, १०। दुबले, लम्बे और तेजीसे बढनेवाले युवकोंकी फेफडे
ी बीमारी; ११। हड्डी पुष्ट और ठीक भावसे पोषण किया न
ोनेकी वजहसे बीमारी, यथा चलना नहीं सीखता; १२।
ाकस्थलीका ऊपरी अंश, ढकनेकी तरह चौडा होना, १३। कब्ज
ाली अवस्थामें शरीरका अच्छा रहना; १४। पैरमें पसीना होकर,
ैरके तलवेमें घाव हो जाता है, वहाँकी खाल उघड जाती है; १५।
मरमें कपडा जोरसे कसकर नहीं पहन सकता; १६। पैर या माथेके
ाहर बाहर और शरीरके भीतर ठण्डा भाव मालूम होना इत्यादि।

चरित्रगत पृथक लक्षण :—जिस तरह सल्फरमें
ाहका लक्षण सबसे अधिक है, उसी तरह कैल्केरियामें ठण्डा

भाव सबसे ज्यादा है, अर्थात् ठीक उसके विपरीत। कैल्केरिया कार्बमे—रोगी जिस तरह पेट-मोटा और मेद-पूर्ण रहता है और रोगी अण्डे खानेकी इच्छा प्रकट करता है, कैल्केरिया-फासमें—उसी तरह रोगी दुबला और नमकीन पदार्थ तथा मांस ज्यादा खाना चाहता है। कैल्केरियाके रोगीके माथेके पिछले भागमें ज्यादा पसीना होता है और शरीरके सभी स्थानोंमें जैसे—छाती गर्दन, बगल, हाथ-पैर, घुटना इत्यादिमे भी पसीना होता है, साइलिसियामे उसी तरह—समूचा माथा और हाथ-पैरोंमें ज्यादा पसीना होता है। इस पसीनेमे बदबू या खट्टी गन्ध रहती है, इसके रोगीका माथा शरीरके दूसरे दूसरे अग-प्रत्यगोंकी अपेक्षा बहुत बडा रहता है, हाथ-पैर दुबले रहते हैं, रोगीके शरीरमे जो पसीना होता है, उसमें भी बदबू रहती है और उस पसीनेसे पैरका तलवा और अगुलियोंकी खाल उधड जाती है और घाव हो जाता है। सलफरमें—माथेमे सामनेकी ओर अधिक पसीना होता है। कैल्केरियामे—रोगी मूर्ख और जडकी तरह रहता है। साइलिसियामे—चिडचिडा और क्रोधका भाव। कैल्केरिया-कार्बमे—रोगीका पेट बडा, नादकी तरह पेट। कैल्केरिया-फासमे—पेट थुलथुला और गडहे पडनेकी तरह भाव। कैल्केरिया-कार्बमे—पाखाना सफेद और उसमे खट्टी गन्ध। कैल्केरिया-फासमे—पाखाना हरा, गरम, और वायु निकलनेके साथ पाखाना होता है। कैल्केरिया-फासमें—रोगी मानो हिल-डोल नहीं सकता, सलफरमें—रोगी उसी तरह श्रम सहने करनेवाला, चालाक और ठीक इसके विपरीत रहता है।

बच्चोंको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी—बच्चेकी दाँत निकलनेके समयकी उमर हो गयी, पर दाँत नहीं निकलते या बहुत देरसे निकलते हैं। इसी समय—ज्वर, पेटमें दर्द, ऐंठन इत्यादि नाना प्रकारकी बीमारियाँ होनेपर कैल्केरिया-कार्ब फायदा करता है।

बच्चोंको हैजा या अतिसार—ऊपर कैल्केरियाके धातुगत लक्षण बताये गये हैं। शिशु-रोगमें दूध बिलकुल ही सहन नहीं होता, दूध पीते ही बच्चेको दहीकी तरह जमी जमी खट्टी गन्ध आनेवाली कै हो जाती है। कै होने बाद ही भूख लगती है; परन्तु खानेपर हजम नहीं होता। पाखाना, कै इत्यादि रोगके सभी लक्षण तीसरे पहर और सन्ध्याके समय बढ़ते हैं। कैल्केरियामें—दस्तका रंग सफेद चूनेके गोलेकी तरह होता है या हरा अथवा पीला, कभी कभी दस्तके साथ फटा फटा दूध भी निकलता है, दस्तकी गन्ध खूब खट्टी, इसके अलावा कभी कभी सड़े मक्खनकी तरह एक तरहकी तेज गन्ध रहती है। यहाँ एथूजामें यह प्रभेद है, कि एथूजामें—बड़े बड़े जमे हुए थक्के दहीके कैके साथ निकलते हैं, पर दस्तके साथ जमा हुआ दूध नहीं निकलता। कैल्केरियामें—दूधके वमनमें लगे बड़े बड़े थक्के नहीं निकलते, पाखानेके साथ छोटी छोटी झिल्लि निकलती है। यदि माके स्तनका दूध पीकर बच्चेको अतिसार या हैजा हो जाये—कैल्के-

रियासे ज्यादा फायदा होता है। ऐसी जगहपर माताको भी यह दवा सेवन करना उचित है, उससे ज्यादा फायदा होता है।

विशेष लक्षण '—इथूजामें—दस्त कैके बाद बच्चा बेहोश-सा होकर मानो सो जाता है। एण्टिम-क्रूडमें—उसके मुँहकी ओर देखनेपर या बदनपर हाथ लगानेपर लडका रोता या रिरियाने लगता है। कैल्केरियामें—लडका जिद्दी रहता है और गोदमें उठान पर टकटकी लगाकर मूर्खोंकी तरह देखता रहता है। दस्त के आनेके कारण आँख-मुँह धस जाते हैं, तलपेटमें एक बडी ढकनीका तरह, कोई पदार्थ, ऊँचा होकर, फूले रहनेका भाव कैल्केरियाका एक और भी लक्षण है। इपिकाकमें—दस्तका रंग हरा, कभी कभी घास या पत्तोंके चूरकी तरह हरा, और इसके साथ ही फेन रहता है, कभी कभी थोडा हरा, नेबूके छिलकेकी तरह रंग, थूककी तरह बुलबुले, कभी कभी पतला, कभी पतले गुडकी तरह गाढा और काला, कभी कभी पानीकी तरह पतला। कैल्केरिया-फासमें—दस्त पानीकी तरह पतला, रंग हरा, परिमाणमें खूब ज्यादा और गरम। हरे रंगके दस्तमें—मैग्नेशिया-कार्ब, इपिकाक, नैट्रम-फास, ग्रैटियोला, पोडोफाइलम, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, कैमोमिला, डालकामारा, आइरिस, सलफर, वेरेट्रम इत्यादि बहुत-सी दवाएँ हैं; पर गरम दस्त आना—सिर्फ पोडोफाइलम और कैल्केरिया-फासमें ही पाया जाता है, पर—पोडोफाइलमका दस्त बहुत बदबूदार और परिमाणमें भी ज्यादा होता है। कैल्केरिया-फासका दस्त हडहडा,

खाता है, वही दस्तके साथ निकल जाता है (चायना और लिर्यैगडरकी तरह), इसमें पानीकी तरह पतले दस्तके साथ न्द थक्कोंकी तरह पदार्थ या गिरीकी तरह छोटे छोटे पदार्थ ते रहते हैं, या उसमें पीबकी तरह पदार्थ मिला रहता है, दूध कुछ खानेसे ही कै हो जाती है, दूध पीनेके बाद पेटमें पेंठन ती है और गडगडाकर दस्त आ जाते हैं। ३।४ बार दस्त आनेके द बच्चा मुर्देकी तरह निर्जीव हो पडता है; हाथ, पैर और बदन मी ठण्डे हो जाते हैं।

पाकस्थलीकी बीमारी—मांस चरबी-मिले भोजन और मिलाये हुए पदार्थसे घृणा, खडिया, कोयला, अण्डा, नमक, मीठे पदार्थ और वे चीजें जो सहजमें हजम नहीं हो सकतीं, उन्हें ही खाता है, खानेकी इच्छा प्रकट करता है, दूध एकदम सहन नहीं होता, हमेशा ही खट्टी डकार आया करती है, खट्टी कै होती है, भोजन करने बाद ही कलेजेमें जलन आरम्भ हो जाती है और जोरकी आवाजके साथ डकार आती है। पेटमें एक तरहका दर्द होता है, उसको दबानेमें दर्द बढता है। कभी कभी राक्षसी भूख लगती है, गरम चीजें खानेकी इच्छा नहीं होती, ठण्डी चीज सहन नहीं होती। परन्तु ठण्डी चीज पीनेका हमेशा आग्रह प्रकट किया करता है, ऊपरी पेटमें दर्द, उस जगहको छूनेसे दर्द बढ जाता है, पेटमें इस तरह कोई एक पदार्थ ऊँचा उठा रहता है। अतिसार—शो पहरके बादसे ही दस्त आना बढता है।

स्त्री-रोग—इसमें कैल्केरियाका धातु हमेशा याद रखना चाहिये। जो स्त्रियाँ देखनेमें खूब मोटी-ताजी और हृष्ट-पुष्ट रहती हैं, पर उनके रक्तमे सफेद कणका ही भाग अधिक रहता है, माथा और छातीमें अकसर रक्तकी अधिकता रहती है, ऋतुका समय बीत जाता है, पर ऋतु नहीं होता, कलेजेमें धड़कन, सर दर्द, साँसमें तकलीफ इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं, उनको—कैल्केरिया सेवन करानेपर ऋतु होकर बहुत जल्द ये तकलीफें दूर हो जाती हैं।

जरायुकी बीमारी—तलपेटमे भार मालूम होना, प्रसव के दर्दकी तरह—धक्का देनेवाला दर्द, खडे होनेपर दर्दका बढ़ना, जरायुमें (uterus) काटा गडनेकी तरह दर्द, ऋतु बँधे समयके पहले और बहुत ज्यादा परिमाणमे होता है, किसीको दो या तीन सप्ताहका अन्तर देकर या महीनेमे दो बार ऋतुस्राव होता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें रज निकलता है। थोडा-सा भी ज्यादा परिश्रम करनेपर ऋतुस्राव होने लगता है, इन सब लक्षणोंमें कैल्केरिया ज्यादा फायदा करता है। ट्रिलियम नामक दवामे भी—ज्यादा परिमाणमे रक्तस्राव और इसी वजहसे होनेवाली कमजोरीमें ज्यादा फायदा करता है (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

श्वेत-प्रदर—छोटी छोटी बालिकाओं का श्वेत-प्रदर कैल्केरिया और कालोफाइलम नामकी दवाएँ भी इसमें फायदेमन्द । साधारणत कैल्केरियाका स्राव दूधकी तरह सफेद होता

माणमें अधिक होता है, झोकसे होता है और पेशाबके साथ दा निकलता है। इसमें कभी कभी स्रावके साथ योनिकी हपर जलन और खुजली भी रहती है।

अनिद्रा—जिस स्थानपर रोगी रातभर जागता रहता बिलकुल ही नींद नहीं आती, आँखे बन्द करते ही डरावनी ज़ें सपनेमें देखता है, जरा-सी आवाज होनेसे ही चौंक उठता वहाँ—कैल्केरिया ३० शक्ति, रोज ३।४ बार सेवन करनेसे श्चर्यजनक फायदा दिखाई देता है।

ज्वर—टाइफायड ज्वरमें—टाइफायड-रैश (मच्छड़ काटने की तरह एक तरहके दाग या छोटी छोटी फुन्सियाँ) निकलनेके हले जब रोगी आँख बन्द करनेपर कुछ न कुछ डरावनी चीजें खता है, रोगीको ज्ञान रहनेपर भी ऐसी ही चीजें देखता है, नसे डरता है, या अज्ञान-भावसे छटपटाया करता है। उस समय कैल्केरियाके प्रयोगसे मोती-झरा निकल आता है और रोगीकी विपत्तिमें पड़नेकी आशंका दूर हो जाती है।

सविराम ज्वर—ज्वर आनेका समय दिनके दो बजे या ११ बजे, संध्या ६-७ बजे, एक दिन दिनके ११ बजे, दूसरे दिन तीसरे पहर ४ बजे। इसी तरह पर्यायक्रमसे बारबार आता है। अगर इसके धातुगत लक्षण रहें, तो आगे लिखे लक्षणोंमें, ज्वरमें—कैल्केरियाका प्रयोग करना चाहिये। शीतावस्था—प्यास रहे या न भी रहे (शीत—पाकस्थलीसे आरम्भ होता है)।—उत्तापावस्था-

इसमें प्यास नहीं रहती। माथा गरम, शरीरके वस्त्र फेंक देना चाहता है, (अगर ११ बजे ज्वर आता है, तो जाडा या प्यास कुछ भी नहीं रहती, सिर्फ गरमी मालूम होती है)। पसीनावाली अवस्थामें—प्यास नहीं रहती, सवेरे ही पसीना अधिक होता है और थोडा-सा भी परिश्रम करनेपर पसीना वढ जाता है, वोखार के साथ भी पसीना रहता है, पसीना—माथेमें, गर्दनमें और छाती में और रातमें ज्यादा होता है, कभी कभी शरीरके एक अंशमें और रातमे ज्यादा होता है, वच्चोके माथेमें ज्यादा होता है, माथेके पसीनेसे तकिया भींज जाता है। नाडी मोटी और तेज, ठण्डी हवा लगकर या कोई गीली और खुली हवामें काम करनेकी वजहसे—जो ज्वर आता है—उसमे कैल्केरिया ज्यादा फायदा करता है।

वीर्य-क्षयसे पैदा हुए रोग—हस्त-मैथुन, स्वप्नदोष या बहुत ज्यादा स्त्री-सम्भोगकी वजहसे पैदा हुई किसी भी वीमारीमें कैल्केरिया-कार्व, लाइकोपोडियम, सलफर और नक्स-वोमिका फायदा करता है। कैल्केरिया-कार्बमे—वहुत अधिक इच्छा रहनेपर भी लिङ्गमे पूरी तरह कडापन नहीं आता, इसी वजहसे स्त्री-सम्भोग की ताकत नहीं रहती, स्त्री-सहवासके वाद सरमें चक्कर आ जाता है, सरमें दर्द होता है। लाइकोपोडियममे—या तो लिङ्गमें वहुत थोडा कडापन आता है या विलकुल ही नहीं आता, लिङ्ग शिथिल और ठण्डा। नक्स-वोमिकामे—सवेरेके वक्त स्वप्नदोष होता है, माथा और कमरमे दर्द रहता है। नक्सके बाद सलफरसे स्थायी

होता है। इस रोगमे कभी जल्दी जल्दी दवाका प्रयोग न
ा चाहिये, एक मात्रा प्रयोगकर उससे क्या लाभ-हानि हुई, यह
नेके लिये कुछ दिन राह देखे और जब बहुत जरूरी मालूम
ब दूसरी खोराकका प्रयोग करे। (पनुस अध्याय देखिये)।

नाकसे खून गिरना—यह मोटे ताजे बच्चोकी बीमारी
ायदेमन्द है।

हाइड्रोकेफालस—बच्चोकी दांत निकलनेके समयकी
रीमें जब मस्तिष्कमे जलसचय हो जाता है, या होना आरम्भ
है, उस समय—कैलकेरिया-कार्बसे फायदा होता है। सल्फरके
कैल्केरियासे अधिक फायदा होता है। बेलेडोना—बेलेडोनाके
ासे अगर फायदा होकर भी रोग फिर बढ जाये, उस
ा बेलेडोनाके प्रयोगसे फिर फायदा नहीं होता—कैल्केरियासे
है। कैल्केरिया-फास—बच्चा लगातार दस्त कै करता करता
म निस्तेज, बेहोश और मुर्देकी तरह यदि हो जाये तो पहले—
ाका प्रयोग करनेपर रोगी बहुत कुछ सजीव हो जाता है,
द बाद कैल्केरिया-फासका प्रयोग करनेसे बहुत ज्यादा फायदा
ा है। यदि यह दिखाई दे, कि बराबर आच्छन्नता बढती बढती
ारी छिपे हुए विकारमें आ पहुंची है, रोगी सिर्फ सर हिलाता
ांत सदा कटकटाता है, कान-मुँह सब ठण्डे, माथा गरम, दोनों
दिखाता है, उस समय तुरन्त जिङ्कमका प्रयोग करे। स्वर्गीय

डा०जी० मानुक एम० बी० सी० एम० (एडिनबर्ग) इस अवस्थामें सलफरके बहुत पक्षपाती थे। कैलि-ब्रोम भी फायदा करता है।

चर्म-रोग—माथेपर एकजिमा, मोटी पपड़ी जमती है, बहुत बदबू निकलती है, माथेपर एकजिमा आरम्भ होकर, धीरे धीरे नीचेकी ओर मुँह तक उतर जाता है। (धातुगत लक्षण मिलाकर दवा देना उचित है)

आँखकी बीमारी—आँखकी सफेद त्वचाका जखम, आँखमें सूर्य या बत्तीकी रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती, स्वच्छ त्वचा (cornea) सदा ही गन्दी और पलकोंमें गाढ़ा जमा हुआ पीव रहता है। कनीनिकाका गदलापन अर्थात सफेद सफेद दाग पड़ना (Corneal opacity) इत्यादिको आरोग्य करनेमें कैल्केरिया ज्यादा लाभदायक है, पर यदि जखम बढ़कर क्रमशः स्वच्छ त्वचाको नष्ट कर देनेकी चेष्टा करे, स्वच्छ त्वकमें छेद हो जाये, तो—एसिड नाइट्रिक फायदा करता है। कण्ठमाला धातु वाले मनुष्योंकी आँखोंके प्रदाहमें—स्वच्छ त्वचाके जखमके साथ पलकोंके किनारे अगर मोटे हो जाये, पपड़ीसे आँख बन्द हो जाये, पलकोंके किनारे फटकर उसमेसे खून निकलनेपर और प्रदाह आँखके कोनेकी ओर ज्यादा रहनेपर—ग्रैफाइटिस उसे पूर्ण तरह आरोग्य कर सकता है। आँखकी बीमारीमें कैल्केरिया ३० शक्ति दो एक मात्रा पहले देकर कुछ दिनोंतक राह देखना अच्छा होता है। (आँखका स्वच्छत्वक, कार्नियां इत्यादि किसे कहते हैं यह कैलि-बाइक्रोमके चक्षुरोगमें देखिये)।

कानकी बीमारी—कानका प्रदाह, कानके भीतर और र दर्द, कानमें सों सो आवाज, बहरापन, कानमें पीब, यह पीब की तरह गाढ़ा, कर्ण-पटह (tympanum) का छेद और छेदके किनारे अर्बुद (polypus) की तरह होने और उसमें पीफ दर्द होनेपर—कैल्केरिया फायदा करता है। नहाने, ने भींजने, सर्दी लगकर बहरा होने या कानके भीतर सों सों को आवाज होते रहनेपर—कैल्केरियासे फायदा होता है, फायदा न हो तो कैडमियम सल्फ की परीक्षा करें। कानके र छोटे छोटे फोड़े होनेपर—कैल्केरिया-पिक्रेटा फायदा है।

अर्बुद—यदि नाक, कान और जरायुके अर्बुदमें रक्तस्राव रहे तो—फास्फोरस, नहीं तो कैल्केरिया फायदा करता है। रियामें—नाकके अर्बुदमें रक्तस्राव होता है, मोटे बच्चोंकी ने खून गिरनेपर—कैल्केरिया लाभदायक है।

पथरी—मूत्र-पथरी और पित्त-पथरी दोनों तरहकी रियोंमें कैल्केरिया फायदा करता है। डा० ह्यियुजेस कहते भयानक दर्द के समय इस दवाकी—३० वीं शक्ति (फायदा नेपर २०० वीं शक्ति), २।१ मात्रा सेवन करनेपर इतना दा होता है, कि क्लोरोफार्म और मार्फियाकी भी जरूरत नहीं ती। कैल्केरिया—पथरी रोगकी एक प्रतिषेधक दवा है। २ तीन सप्ताहके अन्तरसे—२०० या और भी उच्च शक्तिका—

सी० एम० एक माला सेवन करना चाहिये। इसके दर्दके रोगीको बहुत पसीना होता है।

चायना—पित्त-पथरीमें तेज दर्दके समय व्यवहार हो बहुत वार इससे फायदा होता है, इसकी ६ ठी शक्ति ही फायदा करती है। नित्य-प्रति २।१ माला, कुछ ज्यादा दिन सेवन करनेपर, फिर नयी पथरी पैदा नहीं हो सकती, आरोग्य हो जाता है। मेन्था-पिपरेटा, बार्बेरिस, लाइकोपे यम, इयोनाइमिन, सार्सापैरिला वगैरह भी इस बीमारीमें वायक हैं। (बार्बेरिस अध्याय देखिये)।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा, खाँसी—जो से बढ़ती है, गठिया वात—इसके साथ ही बदबूदार पेशाब, पे सफेद तली जमना, कैल्केरिया धातुवाली बालिकाओंका जिमा—जो माथेसे आरम्भ होकर, मुँहतक फैल जाता है जिसमें सफेद खड़ियाकी तरह पपड़ी जमती है, यक्ष्मा रो स्वरभंग—पर गलेमें दर्द न हो, पर छातीमें दर्द रहता है श्वासकृच्छ्रता, खाँसी, ढीली घर घर करनेवाली सर्दी, पतले आना इत्यादि उत्तण मिली बीमारीमें तथा हिप-ज्वायण्ट रो दूसरी अवस्थामें—कैल्केरिया फायदा करता है।

नीचे कैल्केरियाकी और भी कितनी ही श्रेणियाँ जाती हैं।

कैल्केरिया-पिक्रेटा—बार बार फोड़ा होते रहनेपर फायदा होता है (recurring or chronic boils), क

तर, कुल्हेकी हड्डी और जवास्थिके ऊपर, जिन स्थानोंकी मांस-शियाँ पतली रहती हैं, उन स्थानोंके फोडोंमें इससे ज्यादा फायदा ता है। पलकोंकी गुहौरीकी भी यह एक बढ़िया दवा है। कैलि-फास अध्यायमें—मुँहासा देखिये ।

कैल्केरिया-ब्रोमेटम (Calcarea bromata)—ढीली पेशी, ायविक धातु और चिड़चिड़े स्वभाववाले बालक-बालिकाओंको की बीमारी और मस्तिष्ककी उत्तेजनामें और जहाँ मस्तिष्कमें डबडी पैदा हो जानेकी अधिक सम्भावना रहती है, वहाँ इसका योग होता है। क्रम—६ ठी से ३० शक्ति।

कैल्केरिया-कास्टिकम (Calcarea caustica)—६ ठी क्ति। पीठ और पैरकी पिंडीमें, मसूड़ेमें और गण्डास्थि (गालकी ड्डी) में दर्द होनेपर फायदा करता है।

कैल्केरिया-म्यूर (Calcarea muriatica)—६-३० शक्ति। छोटे छोटे फोड़े, माथेमें बहुत खुजली और उद्वेग ; जो कुछ खाता-पीता है, सब के हो जाती है, इसके साथ ही पेटमें भयानक दर्द, पेटका फूलना वगैरहमें फायदा करता है।

कैल्केरिया-कैलसिनेटा (Calcarea calcinata)—६ ठी शक्ति, यह मस्सोंकी बहुत बढ़िया दवा है (मूजा अध्याय देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—सर्द और तर हवामें, ठण्डे पानीसे, सवेरे, नहानेसे और आधी रातके बाद, पूर्णिमाके दिन, भोजनके

बाद, मानसिक परिश्रमसे, रोशनीसे, वमनके समय और वमनके बाद, दूध पीनेपर।

ह्रास (amelioration)—सूखी हवामें, अन्धेरेमें, रोगवाले करवट सोनेपर, रगड़ने पर और केश छटवानेपर।

सम्बन्ध—कैल्केरियाके बाद—लाइको, नक्स, फास, साइलि प्रभृति अधिक फायदा करते हैं। हैनिमैन कहते हैं—नाइट्रिक एसिड और सल्फरके पहले कैल्केरियाका प्रयोग करना उचित नहीं। अवस्था प्राप्त जवान मनुष्योंके लिये बार बार और एक मात्राके फायदा होनेपर दूसरी मात्राका प्रयोग करना एकदम मना है। बच्चोंपर बार बार प्रयोग किया जा सकता है। आँखकी पुतली फैली रहनेपर—नाइट्रिक-एसिड, पल्स और सल्फरके बाद कैल्केरिया लाभदायक है।

क्रिया-नाशक (antidote)—ब्रायो, कैम्फर, चायना, इपि हिपर, एसिड-नाइट्रिक, नक्स, सिपि, सल्फ, नाइट्रिक-स्पिरिट-डल।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—३

कैल्केरिया आयोडेटा।

(CALCAREA IODATA).

(आयोडाइड आफ लाइम)—कण्ठमाला धातुके मनुष्य जिनकी कर्कसर गाँठें फूलती और बड़ी हो जाती हैं, तालुमूल (टानसिल)

लते हैं, नाकसे सर्दीका पानी गिरता है, प्राङ्काइटिस हो जाता है, हैं और खूब मोटे-ताजे बच्चे, जिन्हें जरा-सेमें सर्दी लग जाती है, नकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। टियुवर-कियुलर निज़ाइटिस और नाक या कानमें नरम अर्बुद (पालिपि) की भी ई एक बहुत बढ़िया दवा है।

सर्दी-खाँसी—पुरानी खाँसी, खाँसनेपर हरे रंगका ाव-मिला बलगम निकलता है। हेक्टिक ज्वर (क्षय ज्वर) हो ाता है। डा० ए० पि० बीवो०—क्रूप रोगमें इसकी बहुत प्रशंसा रते हैं।

गांठोंका फूलना—बैराइटा आयोड और बैराइटा म्यूर खिये।

टानसिलाइटिस—तालुमूल फूलते हैं, दर्द होता है। ानसिल्में बीच बीच जख्म और छेद हो जाता है। लाइकोपो-ियमने—दाहिनी ओरके तालुमूलपर बीमारीका दौरा होता है और लुमूल खूब बड़ा हो जाता है, उसके ऊपर एक छोटा और हा जख्म रहता है।

सदृश—कैल्केरिया-फ्लोर, मर्क्युरियस-आयोड, साइलिसिया।
क्रम—२x, ३x,—३० शक्ति। फारमुला—७।

कैल्केरिया फ्लोरेटा।

(CALCAREA FLOURATA)

(क्लोराइड आफ लाइम)—अस्थियाँ, ग्रन्थियाँ तथा शिराओंके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। हड्डियाँ, आँख तथा दाँतकी बीमारी कमरका वात इत्यादि रोगोंकी एक बहुत बढ़िया दवा है। एसिड फ्लोरिक और साइलिसियाकी एक साथ क्रियाका परिमाण—बहुत कुछ कैलरिया-फ्लोरकी तरह है। यह डा० शुसलरकी एक बायोकेमिक दवा है।

माथेकी बीमारी—माथेकी हड्डीमे घाव, चतौड़ीकी तरह फूल जाना, दर्द और बच्चोंके माथेमे खूनका अर्बुद होनेपर यह फायदा करता है।

अँगुलबेढा—इस बीमारीकी एसिड-फ्लोरिक एक बहुत उत्तम ओषधि है। यदि एसिड फ्लोरिकका लक्षण रहनेपर भी उससे फायदा न हो तो—कैल्केरिया-फ्लोर देना चाहिये। (नार स्कोरिया अध्याय देखे)

साइनोवाइटिस—(घुटनेका प्रदाह) घुटना तथा अन्यान्य गाठोंका पुराना प्रदाह (नये प्रदाहमे —एपिस, ब्रायोनिया प्रभृति)।

आँखकी बीमारी—मोतिया बिन्दुकी जितनी चुनी हुई दवाएँ हैं, उनमे —साइलिसिया, कोनियम और कैल्केरिया फ्लोर

से ज्यादा फायदा करती है, पर इतना अवश्य है, कि लेन्सका
वर(चित्रपत्रके तन्तु) नष्ट होनेके पहले इन दवाओंका प्रयोग
ा उचित है, नहीं तो कोई फायदा न होगा। मोतियाबिन्दु या
सी दूसरी पुरानी आंखकी बीमारीमें—कुछ देरतक आँखोंकी
लीमें दर्द हो, आँखके सामने मानो आगके कणकी तरह कुछ
ता हुआ दिखाई दे, स्वच्छत्वचामें (cornea)दाग रहे, तो—
केरिया-फ्लोर फायदा करता है।

सिनेरेरिया-मेरिटिमा-सक्स—कितने ही कहते हैं, कि यह
तिया-बिन्दुकी बहुत श्रेष्ठ दवा है। १ बूँद मात्रामें नित्य ४।५
र कर कई महीनोंतक आँखमें डालना पड़ता है। थोड़े दिनों
लाभ नहीं होता। इसका आँखमें डालते समय कोई भीतरी दवा
पन करनेसे और भी शीघ्र फायदा होता है।

नाककी बीमारी—नाककी हड्डीका जखम आरम मेटा-
टकमसे अगर फायदा न हो और इस जखमसे बदबूदार स्राव
निकलता रहता हो तो फैल्केरिया फ्लोरसे फायदा होता।

दाँतकी बीमारी—दाँत हिलनेके साथ ही साथ दाँतमें
ोई चीज लगनेपर जब दाँतकी तकलीफ बढ़ती है, या दाँत ढीले
ए आंखकी धमकसे हिलनेवाले दाँतमें दर्द होता है, उस समय—
फैल्केरिया-फ्लोर फायदा करता है। मसूड़ेमें फोड़ा, उसके साथ
ी अपड़े कड़े, फूले। दाँतके नासूरवाले घाव (Pyorrhoea)
में यदि मर्क्युरियस-फ्लोरसे फायदा न हो तो—फैल्केरिया-फ्लोर, इस

भी फायदा न हो—हेक्ला-लावा (लगाना और भीतर सेवन करना हेक्ला-लावा देखिये)।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा यह और भी कई बीमारियोंमें फायदा करता है :—साधारण हिचकीमें (हैजाकी हिचकी नहीं) जब किसी भी चुनी हुई दवासे फायदा नहीं होता, कब्जियतके साथ भीतरी मसाना, बवासीर, अण्डकोषमें जलसञ्चय और अण्डकोष का फूलना, स्तन-प्रदाह या स्तनका फोड़ा, वेरिकोस-वेन्स नामक बीमारी, असली क्रूप (काली खाँसी), वंश परम्परासे आया हुआ उपदंश, घेघा (गलगण्ड), पत्थरकी तरह कड़ी गांठ, पुराना कमर का बात—जिसमें पहले पहल चलनेके समय बहुत दर्द रहता है पर थोड़ा-सा चलनेके बाद फिर दर्द नहीं रहता, स्त्रियोंके जरायुकी कितनी ही बीमारियाँ—जैसे, जरायुका अपनी जगहसे हट जाना (नल्ला हटना), नीचे चलते आनेकी तरह दर्दके साथ जरायुका फूल पडना, जरायुमें दर्द, रक्त-प्रदर, ऋतुस्रावके साथ प्रसवके दर्दकी तरह दर्द और किसी हाडके जखममें पीब पैदा हो जाने पर—कैल्केरिया-फ्लोरका प्रयोग करना चाहिये।

वृद्धि (aggravation)—विश्रामसे, ऋतु-परिवर्तनसे।

ह्रास—गरमीसे, गरम प्रयोग करनेपर,

बादकी दवा (follows well) कैलि-फास, नैट्रम-म्यूर, फासिड-फास, साइलि।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—?

कैल्केरिया फास्फोरिका।

(CALCAREA PHOSPHORICA)

(फास्फेट आफ लाइम)—सुसलरकी बारह टिशू नामक [illegible]ओंमें यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। बालकोंकी दांत [नि]कलनेके समयकी बीमारियाँ, दांत निकलनेमें देर, दांत निक[ल]नेके बाद ही दांतमें घाव, सब तरहकी हड्डीकी बीमारियाँ, हड्डी [टू]टकर फिर जोड न लगना या जल्दी न जुटना; वातका दर्द, [प्र]त्येक ऋतु परिवर्तनके समय उसका बढना, सब तरहकी क्षय [क]रनेवाली बीमारियाँ आरोग्य होनेके बाद जब शरीरका खून [ब]ढता नहीं है या जीवनी-शक्ति जागरित नहीं होती, शारीरिक [ग]ठनकी कमी रहती है, शरीर सूखा रहता है, मेरुदण्डमें कम[जो]री और टेढापन रहता है, आपसे आप वीर्य निकल जाता है, [ख]ूनकी कमी हो जाती है। रक्तहीनता, कण्ठमाला धातुवाले [ब]च्चोंका आक्षेप, खींचन, अतिसार और बच्चोंका हैजा इत्यादि [रो]ग—इसके धरिवगत लक्षण हैं।

कैल्केरिया-कार्बका धातु—जो सब बच्चे बहुत ही दुबले-[पत]ले, शरीरकी गठन रोगी, उमरके अनुसार जिनका शरीर [पु]ष्ट नहीं होता या बढता नहीं है, पेट या तो धँसा या खूब ऊँचा, [म]ाथा बड़ा, हाथ-पैर पतले, पसलियाँ मानो हिलती-डोलती हैं, मांसकी हड्डी इतनी पतली मानो जरा दबानेसे ही टूट जायगी।

कागजकी तरह पतली हड्डी, गर्दन, गला और शरीरके दूसरे दूसरे स्थानोंमें गाँठ निकल आनेकी तरह गाँठें फूली रहती हैं, बहुत देर से दाँत निकलता है, मेरुदण्डकी कमजोरीकी वजहसे चल नहीं सकता, इन सब बच्चोंके लिये-कैल्केरिया-फास लाभदायक है।

हड्डियाँ पुष्ट नहीं होतीं और ब्रह्मरन्ध्र बहुत दिनोंतक नहीं जुड़ता। इस सम्बन्धमें डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—कैल्केरिया कार्ब—हड्डीके सामनेवाले भागमें और कैल्केरिया-फास—सामने और पीछे दोनों ही ओर (both anterior and posterior) अपनी क्रिया प्रकट करता है

दाँतकी बीमारी—बच्चोंके दाँत जिस तरह देरसे निकलते हैं, उसी तरह जल्दी नष्ट भी हो जाते हैं, जवानोंके भी दाँत नरम मालूम होते हैं, अकसर दाँतोंमें नये नये छेद दिखाई देते हैं पुराने दाँत स्वाभाविक दाँतकी बनिस्बत बड़े और उसकी जड़ अलग हुई रहती है और गिर जाते हैं। अमेरिकाके एक दाँतके डाक्टरका कहना है, कि—नियमित रूपसे कैल्केरिया-फास सेवन करनेपर कभी भी दाँत नष्ट होने या दाँतकी बीमारी होनेकी सम्भावना नहीं रहती।

बच्चोंका अतिसार या हैजा—ऊपर कैल्केरियाका धातु बताया जा चुका है। इस ढगके धातुके बच्चोंको यदि अतिसार या हैजा हो जाये और जब बच्चेके पेटमें दूध बिलकुल ही न ठहरता हो, कै हो जाती हो, लगातार दस्त आ रहे हों, दस्तका र

, उसके साथ सफेद और चमकीला एक तरहका पदार्थ रहता दस्त गरम और दस्तके साथ वायु निकलता हो, जिस पदार्थ पीता हो, वही दस्तके साथ निकल जाता हो या कै हो जाता बच्चेके आँख-मुँह बैठ जाते हैं, शरीर ठण्डा पड जाता है यह मुर्देकी तरह चुप पडा रहता है, उस समय—कल्केरिया-ल ज्यादा फायदा करता है।

हाइड्रोकेफालस—ऊपर बताये ढगसे लगातार दस्त-आकर जब बच्चा हिल-डोल नहीं सकता और एकदम बेहोश-पड़ा रहता है, उस समय चायना ही उत्तम दवा है; पनाके सेवनसे—पहले तो रोगीमें कुछ नया बल आता है, कि बाद—कैल्केरिया-फासमे ज्यादा फायदा होता है ; पर यदि रा न होकर बच्चा बेहोश और अचैतन्य भावसे पडा हुआ केवल र उधर सर हिलाता हो, बीच बीचमें दाँत कडकडाता हो, रमें स्वाभाविक तेज बिल्कुल ही न हो, हाथ-पैर कान सब ंडे हो जाये, दोनों पैर हिलते हों, तो—कैल्केरिया-फासकी वता—जिङ्कमसेट ज्यादा फायदेमन्द होता है। (जिङ्कम ्यायमें दूसरी बातें देखिये)।

डा० थान प्रायोन्द कहते हैं—यदि किसी रोगीके सन्तान-सन्त-यों बराबर कण्ठमाला धातु-ग्रस्त होते हैं या मस्तिष्कमें जल-पय (हाइड्रोकेफालस) की बीमारी हो जाती है, तो उस ीको गर्भधारणके समय एक दिन—कैल्केरिया-फास, दूसरे दिन

सैलफर, इस नियमसे दवा सेवन कराना चाहिये। इससे उनके बच्चोंको उस ढङ्गकी बीमारी होनेका डर न रहेगा। ... भ्रूणके सभी तन्तु (टीशू) पुष्ट हुआ करते हैं और कैल्केरिया फाससे—हड्डी पुष्ट हो जाती है।

बच्चोंका वमन—बच्चा दिन रात माताका दूध पीता है और वमन करता है।

रेकाइटिस—बच्चोंकी अस्थि-विकृति। बच्चोंको यह बीमारी आरम्भ होनेके पहले उन्हें सर्दी जरा भी सहन नहीं होती। जरा भी सर्दी पडी—यह बरसातके कारण हो अथवा शीतके कारणसे ही हो, या हरेक ऋतु परिवर्तनके समय ही हो, बच्चेके हाथ-पैर और अग-प्रत्यगमे दर्द होता है, पेंठन होती है, गर्दन अकड जाती है, ऐसे स्थानपर तुरन्त—कैल्केरिया-फासका प्रयोग करना होगा। ब्रायोनियामे—भी इस तरहका लक्षण है, पर रैकाइटिसका पूर्व लक्षण होनेपर इसके प्रयोगसे ऐसे ... कोई लाभ नहीं होता।

हड्डीकी बीमारी—शरीरके किसी भी स्थानकी हड्डी अगर टूट जाये और जल्दी न जुडे तो—सिम्फाइटम लाभदायक है। पर जब सिम्फाइटमसे फायदा नहीं होता, उस समय कैल्केरिया-फास निम्नशक्ति ६x—१२x का प्रयोग करें। हड्डी कोमल, कमजोर और सूखी रहनेपर—कैल्केरिया फासके प्रयोगसे वह मजबूत, ताकतवर और पुष्ट हो जाती है। यदि लडकोंका

ा हो तो इससे फायदा होता है। हिपजायण्ट रोगकी भी यह ौषधि है (साइलिसिया अध्याय देखिये)।

वात—प्रत्येक ऋतु-परिवर्तनके समय शरीरमें दर्द, पेठन र वातका दर्द बढता है। यह दर्द जगह बदला करता है। एक ासे दूसरेमें चला जाता है, दर्द कमरके नीचेकी हड्डी (sacrum ्रिकास्थि) में ज्यादा होता है, रोगी शरत और बसन्त ऋतुमें च्छा रहता है।

मुहासे—जवानीमें बहुतसे आदमियोंके मुँहपर छोटे छोटे ोडे होते हैं, इसको मुँहासा, वयोव्रण और अँग्रेजीमें—Acne हते हैं। यदि बालिकाओंको इसी तरहका मुँहासा हो—कैल्के-रिया-फास और बालकोंको होनेपर—कैल्केरिया पिक्रेटा फायदा करता है।

कैल्केरिया पिक्रेटा—यह गुहौरी की महौषधि है। इसके सेवनसे यह बहुत जल्द पककर पीव बह जाता है और जल्द ही फट भी जाती है। कानके फोडेमें भी (Furuncle of the ears) यह बहुत फायदा करता है। क्रम—३ री शक्ति ज्यादा फायदा करती है।

स्त्री-रोग—बालिकाओंको बहुत जल्दी जल्दी ऋतुस्राव होता है, यहांतक कि पन्द्रह दिनोंके अन्तरसे होता है। पर जवान स्त्रियोंको बहुत देरसे ऋतुस्राव होता है। ऋतुके समय प्रसवके दर्दकी तरह दर्द होता है। प्रदर-स्राव—अण्डेके सफेद भागकी

तरह, परिमाण कैल्केरिया-कार्बकी अपेक्षा थोडा, मतुस्राव घटते जानेके साथ ही साथ प्रदरका स्राव भी बढता है।

बादकी दवा (follows well)—रस, सल्फ, आयोड, सोरिनम, सैनिक्यु।

सदृश—रूटा, सल्फ, जिङ्कम।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—७।

कैल्केरिया हाइपोफास्फोरिक।

(CALCAREA HYPOPHOSPHORICA)

(हाइपोफास्फेट आफ लाइम)—खाँसी, यक्ष्मा प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें, एलोपैथिकमें इस दवाका बहुत अधिक व्यवहार होता है। इसके बहुत ज्यादा मात्रामें व्यवहारका कभी कभी यह नतीजा निकलता है, कि किसी किसीके मुँहमें खून आने लगता है। ऐसे स्थानपर कैल्केरिया हाइपोफासके प्रयोगसे बहुत जल्द फायदा होता है। बहुत ज्यादा पसीना, कमजोरी, खूनका घट जाना, शरीरका रंग उजला निकल आना, हाथ-पैर ठण्डे रहना प्रभृति इस दवाके—चरित्रगत लक्षण हैं। यक्ष्मा-कासमें—जब पतले दस्त, खाँसी, छातीमें दर्द, फेफडेसे खून निकलना प्रभृति लक्षणोंके साथ इसके ऊपर लिखे चरित्रगत लक्षण मौजूद रहते हैं, वहाँ

नका पहले ही प्रयोग करना चाहिये । मेसेएटरिक टियुबर्कुलोसिस इस रोगको—ग्रहणी रोग कहते हैं—प्राणघातक अतिसार ही नका प्रधान लक्षण है) इसमें कैल्केरिया-हाइपोफास फायदा करता (चैपारो देखिये)। केल्केरिया-हाइपोफासमे —पेटमें एक रहका दर्द होता है, यह भोजनके ठीक दो घण्टे बाद शुरू होता , और थोड़ा-सा दूध या जरा-सी कोई दूसरी चीज खा लेनेसे ही ान्द हो जाता है। इन बीमारियोंके अलावा—कैल्केरिया-हाइपो-फास बड़े बड़े फोड़े (big abscess) प्रभृतिमें रोग—हड्डीपर मला कर देता है। यहाँतक कि हड्डीमें अस्थिक्षत (निक्रोसिस) तक हो जाता है, रोगी दिनों-दिन दुबला होता जाता है और खाटसे लग जाता है (आरम), चिकित्सकको नश्तर लगानेका साहस नहीं होता, वहाँ तुरन्त इसका प्रयोग करना उचित है। यहाँ इसका निम्न-क्रम—१x शक्ति अधिक लाभदायक मालूम होती है। रोज ४।५ मात्रा तबतक खिलानी चाहिये जबतक फायदा न हो। इसी तरह कई दिनोंतक प्रयोग करना चाहिये।

कैल्केरिया-हाइपोफास—हिप-ज्वायण्ट (कूल्हेकी सन्धि) रोगकी एक उत्तम दवा है (साइलिसिया अध्यायमें इस रोगके एक रोगीका विवरण पढ़े।)

फोड़ा—कैल्केरिया-मक्र अध्यायका अन्तिम परिच्छेद देखिये।

शिराकी बीमारी—शिरायें सब बायुकणी डोरीकी तरह कड़ी हो जाती हैं।

वृद्धि (aggravation)—शीतमें, बरसातमें।
ह्रास (amelioration)—गरमीमे, सूखी ऋतुमे।
क्रम—१x—३x विचूर्ण। फारमुला—

कैल्केरिया सिलिका।

(CALCAREA SILICA)

(सिलिकेट आफ लाइम)—नेट्रम-सल्फकी तरह जलीय धातु जरा-सेमे ही सर्दी लग जाती है। ठण्ड सहन नहीं होती (हिपरकी तरह) और जो बहुत कमजोर, रोगी और शीतसे कातर रहते हैं पर अधिक गरमी पडनेसे ही बीमार हो जाते हैं, ऐसे आदमियोंकी बीमारीमे यह ज्यादा फायदा करता है। इसकी बीमारी खूब धीरे धीरे पैदा होती है और बीमारी अन्तिम सीमामे पहुँचते पहुँचते बहुत दिनोका समय लग जाता है। बच्चे धीरे धीरे छोटे और पतले पडते जाते है।

मानसिक लक्षण—कुछ भी याद नहीं रख सकता, मन इ सकल्पका नहीं रहता, अस्थिर, क्रोधी अपनेपर भी विश्वास नहीं रख सकता, डरपोक।

नीचे लिखी कई बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है:—

१। सरमें चकर आना, पर सरकी चादी गरमके बदले ठण्डी २। पीले रगकी गाढी सर्दी नाकसे निकलना, ३। भोजनके बा

फूलना, ४। वमन, डकार आना, ५। जरायुका बाहर ल आना, श्वेत-प्रदर, दर्द करनेवाला अनियमित ऋतु, दो के बीचके समयमें रजःस्राव, ६। श्वासयन्त्रकी बीमारीमें— ी हवा सहन नहीं होती, साँस लेने तथा छोड़नेमें तकलीफ, नलीका पुराना उपदाह, पीले हरे रंगका श्लेष्मा अधिक परि- में निकलना, ७। सोरा दोषके उद्भेद खुजलाते हैं, उनमें न होती है।

सदृश—आर्सेनिक, आयोडिन, वैराइटा-कार्ब, रियुवर्स्युलिन।

क्रम—निम्नसे उच्च शक्ति। फारमुला—४।

कैल्केरिया सल्फरिका।

(CALCAREA SULPHURICA)

(सल्फेट आफ लाइम)—इसकी क्रियाका नतीजा बहुत कुछ इलिसिया और कैलेण्डुलाकी तरह होता है। हिपर-सल्फरके य इस दवाका कोई भी सम्बन्ध नहीं है। डाक्टर शुसलरकी यों बेमिश्र दवाओंमें यह भी एक कीमती दवा है।

हिपर, साइलिसिया, मर्युरियसकी तरह कैल्केरिया सल्फकी प पैदा करनेकी ताकत नहीं है, पीप पैदा हो गया है (suppur- ion) फोड़ेके मुँहसे पीप निकल रहा है, ऐसी अवस्थामें इसका योग करनेपर पीप सूखकर जखम जल्दी आराम हो जाता है।

कैल्केरिया-सल्फ प्राय' सब तरहके पीवके स्रावमे, जैसे, टियुबरक्युलरका जखम, कनीनिकाका जखम इत्यादि जिस किसी तरह का जखम क्यों न हो, यदि पीव निकल रहा है तो इससे फायदा होगा ही। अगर किसी फोडे आदिमे बहुत दिनोतक पीव बहता रहे और किसी तरह भी आराम न होता हो—कैल्केरिया-सल्फका प्रयोग करना चाहिये।

हिपर, मर्कुरियस वगैरहकी निम्न-शक्तिका प्रयोग करनेपर जिस तरह फोडे आदि पक जाते है, पीव ऊपर चढ आता है, इसके बाद फूटकर पीव निकलनेमे सहायता मिलती है, कैल्केरिया-सल्फ ऐसा नहीं करता। जहाँ फोडा आदिसे लगातार पीव निकल रहा है, पीवकी माता जरा भी नहीं घटती। पीव बहना भी बन्द नहीं होता, वैसे स्थानपर हमारे—कैल्केरिया-सल्फकी जरूरत पडती है। कैल्केरिया-सल्फ, हिपर-सलफरकी बनिस्बत ज्यादा गहरी क्रिया करनेवाली दवा है। हमलोगोंके पास जब किसी फोडे प्रभृतिका रोगी इलाज करानेके लिये आता है, तो हमलोग साइलिसिया दे बैठते हैं, ऐसा करना एकदम गलत है। यद्यपि साइलिसियामे पीव रोकनेकी ताकत खासकर रहती है, पर कैल्केरियाकी तरह उसके भी धातुगत लक्षणोपर बहुत अधिक नजर रखनी होगी। और उसके साथ ही साइलिसियाके पीवकी प्रकृति भी देखनी पडेगी, नहीं तो कोई भी फायदा न होगा। साइलिसियाका पीव—बदबूदार पतला-पानी या रस आदिकी तरह होता है, कैल्केरिया-सल्फका पीव—उसमें किसी तरहकी गन्ध नहीं रहती, गाढ़ा और खून-

मिला रहता है। (साइलिसियाका धातु साइलिसिया अध्यायमें देखें) अतएव, यहाँ यह बता देना आवश्यक है, कि यदि जखम—हड्डी पर आक्रमण करे, तो कैल्केरिया सल्फका प्रयोग करनेसे किसी तरहका फायदा होनेकी उम्मीद नहीं है, उस समय कैल्केरिया-हाइपोफास, एसाफिटिडा, मर्क्युरियस, आरम, कैल्केरिया-फ्लोर इत्यादिकी लक्षणके अनुसार जरूरत पड़ेगी।

कैल्केरिया-सल्फ—इसके अलावा कानसे पीब या रक्त-मिला पीब निकलना, सूजाककी बीमारीमें या किसी दूसरी ही बीमारीमें पेशाबकी राहसे पीब या खून-पीब निकलना, आमाशयके मलमें पीबकी तरह सफेद या खून-मिली सफेद आम निकलना, स्तनका फोड़ा, कार्बङ्कल इत्यादि रोगोंकी भी यह दवा है।

कैल्केरिया-सल्फसे और भी कितनी ही बीमारियाँ—जैसे-दुरारोग्य ग्रन्थियोंका फूलना (torpid glandular swelling), नरम और थुल्थुला अर्बुद, (सिस्टिक टियुमर), एकजिमा (अकौता Eczema) इत्यादि भी आरोग्य होते हैं।

द्रष्टव्य—कैल्केरिया—हाइपोफास १x शक्तिसे ३x शक्ति। डा० नैश कहते हैं—फोड़े आदि निकलनेके समय जब किसी तरह भी पीब होना रोका नहीं जा सकता और इकट्ठा हुआ पीब भी नहीं सूखता, ऐसे स्थानपर इसका प्रयोग करनेपर अकसर फोड़ा फट जाता है, रहता नहीं है और यदि पीब इकट्ठा रहता है तो वह भी शीघ्र नष्ट हो जाता है (इसका अध्याय देखिये)।

ज्वर तथा दूसरी बीमारियाँ—हेक्टिक ज्वर (क्षय-ज्वर), पीब इकट्ठा हो जानेके कारण ज्वर, खाँसी, पैरके तलवेमें जखम, माथा तथा और और अगोंका एकजिमा, किसी बाहरी दवासे आराम होनेके बादका बोखार या कोई दूसरी बीमारीका पैदा हो जाना।

सदृश—कोनि, लैपिस, वेराइटा-म्यू, हेक्ला, रसटक्स।

वृद्धि (aggravation)—विश्रामसे, ऋतु-परिवर्तन होनेपर।

ह्रास (amelioration)—गरमसे सेंकनेपर।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—७।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस।

(CALENDULA OFFICINALIS)

(इस देशके गेंदेकी फूलकी तरहका एक प्रकारका फूल यूरोपके दक्षिण प्रान्तमें पैदा होता है। इसे अँग्रेजीमें मेरी गोल्ड कहते हैं। कैलेण्डुला उसी मेरी गोल्डका टिंचर या मूल अर्क है)।

यह जखम, घाव इत्यादिमें व्यवहारके लिये प्रसिद्ध है। घाव बहुत कुछ सड़ा रहनेपर भी इसका मरहम या लोशन लगानेपर वह बहुत जल्दी आराम हो जाता है। शरीरके किसी भी स्थानमें चोट लग कर चमड़ा छिल या फट जाये और इस तरह जखम हो जाये तो कैलेण्डुलाका भीतर सेवन करने और लगानेपर वहाँका

प्रदाह और जखम बहुत जल्द आराम हो जाता है, पर यदि चोटकी वजहसे चमडा न कट कर, खून जम जाये और काला दाग पड़ जाये तथा वहाँ कुचलनेकी तरह दर्द हो तो—आर्निका फायदा करता है। चोट लगकर अगर स्नायु घायल हो पड़े और अँगुली कुचलकर दर्द हो तो—हाइपेरिकम लाभदायक है। छुरी या किसी धारदार अस्त्रसे कट जानेपर और आल्पीन काँटी प्रभृति गडकर दर्द होनेपर और यह दर्द आर्निकासे न घटनेपर—लीडमसे फायदा होगा। सिम्फाइटम—हड्डी टूट जाने या टूटी हड्डीके जोड़ लगनेमें देर लगनेपर फायदा करता है।

फावलियारिया—मल १x, ३x शक्ति। मुँह, मसूड़े और गलेके जखममें इसके लोशन द्वारा (मदर टिंचर—२० से ८० बूँद; पानी १ आउन्स) कुल्ला करनेपर जखम साफ हो जाता है और जखमकी सड़ी बदबू नष्ट हो जाती है (फेरिन्क्लोरिकम देखिये) सूराक तथा कृमी निकालनेको भी यह बढ़िया दवा है।

फारिंटिग्स—θ, गरमी रोगवाले मनुष्योंके मुँह और गलेके जखममें लाभदायक है। कन्सरमें भी इसका व्यवहार होता है।

डयुपेटोरियम-एरोमैटिक—θ, ताजी जड़से इसका मदर टिंचर तैयार होता है। बच्चोंके मुँहके जखममें इसका मदर टिंचर २० बूँद, १ आउन्स ग्लिसरिनमें मिलाकर लगाने और १x से ६ठी शक्तितक सेवन करानेपर बहुत ज्यादा लाभ होता है। बोरेक्स, मर्क्युरियस, एसिड-म्युरियाटिक, हिपर प्रभृति दवाएँ भी इसरोगके

अनुसार फायदा करती है। कर्णास-सार्सिनेटामें—दूध पीनेवाले बच्चेके मुँहके भीतरके घावके साथ मुँहके ऊपर भी जल-भरे छालेकी तरह एक तरहका एकजिमा हुआ करता है।

क्रियानाशक—आर्निका।

क्रम—ϕ,—३x शक्ति। जखमको धोनेके लिये, कैलेण्डुला मदर टिंचर—५०।६० बूँद, ६ या ८ आउन्स (प्राय' १ पाव) गरम पानीमें मिलायें। जखम बाँधनेके लिये—मदर-टिंचर—२० से ३० बूँद—१ आउन्स (आध छटांक) गायका घी, ग्लिसरिन, वैसलिन या जैतूनके तेलके साथ साथ मिलाये। जखमको जल्द आराम करनेके लिये कैलेण्डुला—आफिसिनैलिसकी अपेक्षा कैलेण्डुला-सक्कसकी शक्ति अधिक रहती है। फारमुला—१।

कैलोट्रोपिस जाइगैण्टिया।

(CALOTROPIS GIGANTEA)

(अकवनके गाछकी छाल)—गर्मीकी वीमारीमें मर्करी अर्थात पारा वगैरहका व्यवहार करनेपर यदि कुछ ज्यादा फायदा न हो और गरमी रोगके सेकण्डरी स्टेज (गौण अवस्था) में इसका प्रयोग होनेपर ज्यादा फायदा होता है। इसके सेवनसे चर्ममें रक्त-सञ्चालनकी क्रिया बढ़जाती है और धातु ही बदलजाती है। चमड़ेके

ऊपरके जख्म और दाने (फुन्सी, बतौडी इत्यादि) आराम होकर रोगीका रोग एकदम छूट जाता है। गरमी रोगकी वजहसे अगर प्रथम अवस्यामें ही रक्तहीनता (एनिमिया) पैदा हो जाये तो उसमें भी कैलोट्रोपिस फायदा करता है। यदि मोटापन बढता जाये अर्थात स्थूलकायता रोगमें—इसको नियम पूर्वक सेवन करनेपर मासका चढना रुक जाता है और पेशियाँ मजबूत हो जाती है। कैलोट्रोपिस—फीलपाया (गोद-Elephantiasis), कुष्ठ रोग (Leprosy) और नये रक्तामाशय (Acute dysentery) प्रभृति रोगोंकी भी महौषधि है।

सदृश—मोटापन रोगमें—फाइटोलेका (इसका अध्याय देखिये)। पारा सेवनके बाद—कैलि-आयोड, सार्सापैरिला ,

क्रम—$^{\phi}$, १ से ५ बूँद, दिनमें ३ बार सेवन करना चाहिये।

फारमुला—४।

कैम्फोरा आफिसिनेरम ।

(CAMPHORA OFFICINARUM)

(कपूर, इसमे बहुत अधिक सर्दी निकलना, पित्त, प्यास और भीतरी ताप घट जाता है और मुँहका बेस्वादपन नष्ट हो जाता है)—यह हैजा तथा अन्य बीमारियोंकी हिमांग अवस्थाकी दवा है। साधारण अनजान मनुष्योंकी यही धारणा है, कि होमियोपैथीमें उसकी

प्रधान दवा—ऐकोनाइट, पेटकी बीमारियोंकी दवा—नक्स, और हैजाकी दवा कैम्फर है, इसीलिये, बहुतसे गृहस्थ किसीको भी दस्त-कै होनेपर अकसर पहले २।४ मात्रा कपूर देने बाद डाकृर बुलाते हैं। कैम्फरके रोगीको जरा-सी सरदीमें ही सरदी लग जाती है, ठण्डी हवा वह एकदम सहन नहीं कर सकता (हिपर और सोरिनमके रोगीको भी यही अवस्था रहती है)। उत्तेजित,शारीरिक और मानसिक कमजोर मनुष्योंपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। एशियाटिक हैजा या कालेरिनकी पहली अवस्थामें बहुत देरतक रहनेवाला प्रचण्ड शीत, २। एकाएक दस्त कैका आरम्भ हो जाना, नाक ठण्डी और बैठी, बेचैनी, साँस ठण्डी (वेरेट, जैट्रोफा), ३। शरीरकी त्वचा सिकुडी, बरफ जेसी ठण्डी, एकाएक सुस्ती आ जाना, नाडी बहुत क्षीण—यहाँतक कि कितनी ही बार मिलती ही नहीं, ४। शरीर बरफकी तरह ठण्डा इतनेपर भी बदनपर कपडा नहीं रखता—उतार फेंकता है (सिकेलि); ५। जीभ ठण्डी, थुलथुली और काँपती है, ६। पर्निशस इण्टरमिटेण्ट ज्वरमें या मस्तिष्क-झिल्ली प्रदाह (मेनिञ्जाइटिस) की हिमाङ्ग अवस्था।

हैजा—हैजामें कैम्फरका व्यवहार करते समय पहले किस तरहका हैजा (variety) है, यह समझ लिये बिना कभी कैम्फर का व्यवहार न करना चाहिये। अकडन-प्रधान हैजामें (spasmodic variety—आर्सेनिक अध्याय देखिये), जिसमें पहलेसे ही

साँस लेने और छोड़नेमें तकलीफ रहती है, सरमें चक्कर आता है, कानमें आवाज आती है, ऊपरी पेटमें दर्द रहता है, हृत्पिण्ड और नाडी बहुत जोरसे धडाम धडाम कर चला करती है ; कैम्फर चालक स्नायु (वैसोमोटर स्नायु) में उत्तेजना पैदा करता है। इसी उत्तेजनाकी वजहसे नर्मों शिराओंमें सङ्कोचन होता है, शिराओंका आयतन छोटा रहनेके कारण उसमें हृत्पिण्डका रक्त पहुँचानेके लिये, हृत्पिण्डके ज्यादा जोरसे सङ्कोचनकी जरूरत पडती है। इसी वजहसे नाडी कडी और जोरदार हो जाती है और कलेजेकी धडकन भी बहुत जोर जोरकी हुआ करती है।—इसके अलावा— दो एक बार दस्त के होकर ही अगर समूचा शरीर ठण्डा और नीला हो जाये, नाडी जोर जोरसे चलने लगे, रोगी बहुत छटपटाता हो, रोगी हमेशा हवा खानेकी इच्छा प्रकट करता हो तो—इन सब लक्षणोंमें भी कैम्फर फायदा करता है, ये सभी आक्षेपिक हैजाके लक्षण हैं और कैम्फरके सदृश हैं

कैम्फरकी क्रिया—मेडुला-आबलाङ्गाटासे (सुषुम्ना) आरम्भ होकर निउमो गैस्ट्रिक-नर्व (फस्फुस पाकाशयिक स्नायु) की राहसे सोलर-प्लेक्ससतक (अधगाड) चली जाती है। कुप्रमकी क्रिया—इसके ठीक विपरीत होती है। यह सोलर प्लेक्ससमें आरम्भ होकर निउमोगैस्ट्रिक नर्वकी राहसे मेडुला-आबलाङ्गाटामें जाती है। इसीलिये, इसका दर्द तलपेटके ऊपरी भागमें होता है।

पारालाइटिक (paralytic) प्रकारके हैजेमें—जिनमें हृत्पिण्ड की आवाज बहुत ही कमजोर धीमी होती है, यहाँतक कि इसकी

कभी सुन भी नहीं पडती, पहलेसे ही रोगी मुर्देकी तरह चुप पडा रहता है, हिलता-डोलता तक नहीं, उसमें कैम्फर बिलकुल ही फायदा नहीं करता। जहाँ ऐसा दिखाई दे, कि रोग एकाएक बढ गया, पाखाना परिमाणमें थोडा होता है, मिचलीका भाग अधिक है, रोगीको बहुत जाडा लगता है, समूचा शरीर बरफकी तरह ठण्डा और नीला हो रहा है, आवाज वैठ गयी है, क्षणभर भी बदनपर कपड़ा नहीं रखता, आँख मुँह बैठ गये है, दम बन्द हो जानेका भाव हो रहा है, साँस लेने और छोडनेमें तकलीफ होती है, अज्ञानकी तरह हो रहा है, टकटकी लगाकर देखता है, गोंगियाता, कराहता है, बहुत तेज प्यास (कभी कभी प्यास नहीं भी रहती)। पेशाव बन्द, पैरकी पोटली तथा दूसरी दूसरी पेशियोंमें ऐंठन, हृत्पिण्डकी जगहपर दर्द, चावल धोये पानीकी तरह दस्त, कभी विना किसी रंगका ही दस्त, ऐसी जगहपर ही समझना चाहिये, कि कैम्फरसे फायदा होगा, और २।४ मात्रा कैम्फरसे फायदा न होनेपर और पसीना ज्यादा आता हो, तो कूप्रम, वेरेट्रम, कार्वो, आर्सेनिक आदि दवाएँ लक्षणके अनुसार प्रयोग करनी चाहियें। कैम्फर—पतन और हिमाग (शीत आ जाना)—दोन ही अवस्थाओंमें लाभदायक है। पूर्ण-विकासावस्थामें—अगर दूसरी दूसरी दवाएँ ज्यादा पड गयी हों, तो इसकी दो एक मात्रा दे देनेसे प्रतिविष (antidote) का काम होगा। कैम्फर, आर्सेनिक और हाइड्रोसियानिक एसिडसे नाडीका वेग बढता है। पर फिर कलेजेकी चाल धीमी होती है। अकड़नवाले हैजाकी पहली

वस्थामें ही ये सब लक्षण दिखाई देते हैं। एकोनाइट—इसके क विपरीत है। एकोनाइट—जिसमें अकड़न नहीं होती (non-spasmodic) प्रकारके हैजाकी दवा है। कैम्फर, कुप्रम-आर्स, सिकेलि, आर्स, वेरेट, टैबेकम, हाइड्रोसियानिक एसिड, पोटैसियम सायानाइड ये ही कई आक्षेपिक हैजाकी प्रधान दवाएँ हैं।

डा० फेरिङ्गटन कहते हैं—एशियाटिक कालेराकी पहली अवस्थामें, जब दस्त कै नहीं आती, हैजाका विष—दस्त कैकी राहसे न निकलकर स्नायुमण्डलपर अपना प्रभाव पहुँचा देता है, समूचा शरीर बरफकी तरह ठण्डा, शरीर सूखकर या कमजोर करनेवाले लसदार ठण्डे पसीनेसे तर रहता है, जीभ ठण्डी, गलेकी आवाज बैठी, यहाँ—कैम्फरके प्रयोगसे बहुत जल्द प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है।

बच्चोंका हैजा—एकाएक रोगका आक्रमण हो जाये, दस्त कै, देखते देखते बच्चा कमजोर हो जाता है और शीत आ जाता है।

हैजाके अलावा—Epistaxis—रोगमें, अर्थात्—नाकसे लगातार धारा बाँधकर यदि खून गिरता रहे और इसी वजहसे रोगी बहुत कमजोर हो जानेपर और डिफ्थिरियाके रोगीके नाक से खून निकलते रहने पर और सारा शरीर ठण्डा होकर शीत आ जानेपर—कैम्फर लाभ करेगा। इसमें एकल्लायम क्रोटेलस भी फायदा करता है। मर्क्यूरियस सियानेटस (Mercurius Cyanatus) नामक दवा डिफ्थिरियाकी

एक प्रधान दवा है। छोटी माता, चेचक इत्यादि किसी तरहकी गोटियाँ बैठकर या एकाएक सर्दी लग जाने या चोट लगकर शीत आ जानेपर—कैम्फर उपयोगी है। ज्वर, निमोनिया इत्यादि कोई भी बीमारी क्यों न हो, यदि यह दिखाई दे, कि—रोगकी चरम अवस्थामे एकाएक हिमाग हो जाता है, और शरीर ठण्डा रहने के साथ ही भीतर दाह रहता है। रोगी बदनपर कपडा नही रखना चाहता, यह लक्षण स्पष्ट रहे, तो कैम्फरका प्रयोगसे फायदा हुए बिना नही रह सकता। इन्फ्लुएञ्जाके ज्वरमे—कैम्फर फायदेमन्द है। लक्षण—सर्दीके ज्वरकी तरह

सर्दीका बोखार और सर्दी—एकाएक ठण्ड लग कर सर्दी हो जाये, ज्वरका भाव, जाडा, लगातार छींक, बदनमें दर्द, नाक चिपक जाना, सर-दर्द इत्यादि लक्षण अगर पैदा हो जाये—तो प्रति मात्रा ४।५ बूँद अर्क-कपूर, दो तीन बार सेवन करनेसे ही बीमारीकी तकलीफ घट जायगी (छींकके साथ नयी सर्दी—नैट्रम-म्यूर, आर्सेनिक अध्याय देखिये)। दोनो नाकके छेदोंसे बिना किसी रंगकी पानीकी तरह सर्दीका स्राव निकलते रहने पर—कैम्फोरा ६ ठीं या ३० वीं शक्तिसे कभी कभी बहुत ज्यादा फायदा होता है (आर्सेनिक, आर्सेनिक-आयोड, मर्कुरियस प्रभृति उत्कृष्ट दवाएँ है, आर्सेनिक अध्याय देखिये)।

सविराम ज्वर—शीतमे सभी रोगी कपडा ओढ लेते है और गरममें कपडे फेंक देते है, यही साधारण नियम है; परन्तु कैम्फरके लक्षण बडे अद्भुत है,—शरीर पत्थरकी तरह ठण्डा, बहुत

शीत और कम्प, थरथर काँपा करता है, दाँतमें-दाँत लगना, कट-कटाता है, पर रोगी इस समय भी बदनपर कपडा नहीं रखता, बल्कि ठण्डक ही चाहता है। इसके अलावा जब ठण्डक और शीत का भाव दूर होकर, शरीरमें ताप पैदा होता है, उस समय शरीर ढके रहना चाहता है, और बदनपर कपडा ओढ लेता है। ज्वर हो या हैजा हो, या कोई दूसरी ही बीमारी हो, किसी भी रोगमें यह अद्भुत लक्षण रहनेपर पहले ही केम्फरको याद करना चाहिये। सविराम ज्वरमें, शीतावस्थामें—बहुत देरतक ठहरनेवाला शीत, इस समय रोगी शरीरपर वस्त्र नहीं रखता, ठण्डी हवाकी इच्छा करता है, शरीरके भीतर जलन रहती है, आँख-मुँह बैठ जाते हैं, उत्तापवाली अवस्थाम-शरीरपर कपडा ओढना पडता है, उत्ताप बहुत थोड़ी देरतक ही रहता है; पसीनेवाली अवस्थामें—खूब पसीना होता है, रोगी कमजोर हो पडता है। किसी भी अवस्थामें प्यास नहीं रहती।

द्रष्टव्य :—सभी अंग-प्रत्यंग बरफकी तरह ठण्डे, उद्वेग, बेचैनी, अन्तरमें जलन, प्यास, इन सब लक्षणोंमें—लैफ्फा-एकियु-टैङ्गुला (Laffa-acutangula)—ठीक कैम्फरके सदृश दवा है; वार्बा, ब्रायम, सिकेलि, ओपियम—इनके युद्ध व्यगोंमें सदृश है।

कैम्फोरा-मोनोब्रोम—यद्यपि हैजाम लाभदायक है, बिहुल देखिये।

बादकी दवा (follows well)—आर्स-एण्टिम-टार्ट, बेल, काकु, रस, वेरेट।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैन्थर, डलाकामारा, नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस, ओपियम, कैम्फर—उद्भिज्ज दवा और तम्बाकू का विषदोष नष्ट करनेवाला है।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ दिन।

क्रम—हैजामें रुबिनी-कैम्फर—१ से ५ बूँद मात्रामें बताशा या चीनीके साथ बार बार ५ से १० मिनिटका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये। सर्दीमें—स्पिरिट कैम्फरकी शीशी रोगीकी नाकके सामने रखकर बार बार सुंघानेसे दवा खानेकी तरह ही फायदा होता है।

डा० सरकार कहते है,—कैम्फर—पूरी उमरवालोंके लिये १ बूँद मात्रा ही काफी होती है, बच्चोंके लिये चौथाई बूँद या परिमाण और भी थोड़ा, प्रत्येक ५ मिनिटोंका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये। हिमाङ्ग अवस्थामें—रोगीको केवल दवा खिलानेके अलावा कैम्फर, रोगीका शरीर गर्म और शारीरिक और मानसिक तेजी जबतक न बढ़ जाये—माथेमें, गर्दनमे, छातीमें, पेटमें अच्छी तरह कुछ देरतक मालिश कर देना चाहिये। इससे प्राय: २४ घण्टोंमें ही फायदा होता है।

फारमुला—६।

कैनाबिस इण्डिका।

(CANNABIS INDICA)

(गांजा)—मस्तिष्क और मनके ऊपर और मनुष्यकी आत्मा जिन जिन विषयोंपर अधिकार करता है, उन सभी विषयोंपर, जैसे—सुख, दुःख, आवेग, उच्छ्वास, भय इत्यादिके ऊपर ही इसकी साधारण क्रिया होती है।

गांजा पीनेपर लगातार बकना, एकदम हँसने लगना, बहुत अधिक आनन्द, चिन्ता, रोना इत्यादि इसी तरहके कितने ही लक्षण उत्पन्न होते हैं। डा० टेलेस्ट कहते हैं—कोमल नम्र स्वभावका मनुष्य अगर गाँजा पी लेता है, तो उसका स्वभाव और भी नम्र तथा विनीत हो जाता है और उद्दण्ड प्रकृतिका मनुष्य और अधिक उद्धत तथा पापी बन जाता है। अगर किसी विकारवाले रोगीमे ये ऊपर कहे लक्षण मिले तो—कैनाबिस इण्डिका ही उसकी दवा है।

<u>चरित्रगत लक्षण</u> —

१। बहुत अधिक भूल जाना—कोई बात कहता कहता उसका आखिरी अंश भूल जाता है, कोई दूसरी ही बात कहने लगता है। २। साधारण-सी बातमें जोरसे हँसता है ३। मृत्युको पास समझकर बहुत डरता है। ४। यूरिमिक दैट—मूत्र-विकारके कारण सर-दर्द। ५। ऐसा मालूम होता है, मानो माथेकी खोप

एक वार खुलती है, एक वार बन्द होती है , ६। रक्त-प्रदरमें बहुत ज्यादा रक्तस्राव , ७। प्रमेह रोगमें प्रबल लिङ्गोच्छ्वास।

कैनाबिस-इण्डिका द्वारा नीचे लिखी कई बीमारियोंमें ज्यादा फायदा मिलता है :—

भय, भ्रान्ति, मानसिक दुर्वलता—कैनाबिसमें डरावने या मरे आदमियोंके सपने देखता है, हमेशा ही डरता रहता है, कि वह पागल हो जायगा, लगातार सर हिलाता और बकता है। **भय**—आर्सेनिकमें—मृत्युका भय, अकेला रह नहीं सकता , स्ट्रैमोनियममें—हिंसक जन्तुओंके आक्रमणका भय, भागनेकी चेष्टा करता है , कैल्केरिया—आँख बन्द करते ही डरावने दृश्य देखता है, इधर उधर ताकता रहता है, सो नहीं सकता , लैकेसिसमें—साँस और दम घुटनेका भय , ओपियममें—भूतका भय , पर रोगी भागता नहीं है, बल्कि बातचीत करता है , एमोन-कार्बमें—भूत प्रेत आदिका भय, सोया सोया उठ बैठता है। **भ्रान्ति**—कैनाबिसमें—अधिक दूरीको कई गजोंकी दूरी ही समझता है पर थोडे समयको समझता है,कि बहुत दिन या बहुत वर्ष अर्थात् एक दीर्घ समय मानता है। **मानसिक दुर्वलता**—कैनाबिसमें बोलते बोलते भूल जाता है, और खोजे नहीं पाता कि क्या कहना चाहिये।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजा बहुत धडकना, नींद खुल जाती है।

सर-दर्द—कैनाबिस सेटाइवा अध्यायमें सर-दर्द देखिये।

पेशावकी बीमारी—मूत्रनली (युरेथ्रा) में भयानक जलन और सुई गड़नेकी तरह दर्द, ये दो कष्टकर उपसर्ग—पेशाव करनेके पहले, समय और बाद बहुत अधिक होता है, पेशाव होना खतम होनेपर बूँद बूँद लगातार पेशाव टपका करता है (सैवाल-सेद अध्यायमें—कोचलिरिया देखिये)।

प्रमेह—कैनाबिस सैटाइवा अध्याय देखिये।

दमा-खाँसी—कैनाबिस सेटाइवा अध्याय देखिये।

स्त्री-रोग—बहुत दर्दके साथ और बहुत ज्यादा ऋतुस्राव, खून थक्का नहीं रहता, रंग काला—इस तरहके ऋतुस्रावके साथ इसका चरित्रगत सर-दर्द, पेशावमें जलन और दर्द इत्यादि लक्षण रहनेपर—कैनाबिस-इण्डिका ज्यादा फायदा करता है। रक्त-प्रदरमें—कभी कभी यह थाइरनम, जैन्थजाइलम, प्लाटिना प्रभृतिकी अपेक्षा भी ज्यादा फायदा करता है। यदि रोगिनी हिस्टि-रियाग्रस्त हो, या ऋतुके पहले, समय या बाद तेज कामेच्छा पैदा हो जाये, तो बाधक या अधिक रक्तस्रावमें यह सब दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदेमन्द है। अगर सात आठ महीनोंका गर्भ हो जानेपर रक्तस्राव होकर गर्भ गिर जानेका लक्षण दिखाई दे तो भी इससे फायदा होगा।

स्वप्नदोष—सोते ही वीर्य-स्खलन हो जाता है, सोते ही स्वप्नदोष, नींद नहीं आती।

वृद्धि (aggravation)—सवेरे, शराब, काफी और तम्बाकू खानेपर, दाहिनी करवट सोनेपर।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, ठण्डे पानीमें, विश्रामसे।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—प्राय १० दिन।

क्रम—६—३x शक्ति। फारमुला—४।

कैनाबिस सैटाइवा।

(CANNABIS SATIVA)

(भांगसे इसका मूल-अर्क तैयार होता है)—यह प्रमेह और दमाकी बीमारीमें ही ज्यादा काममें आता है।

चरित्रगत लक्षण '—

१। भयानक कब्जियत, पेशाब तक बन्द , २। अंगुलीमें मोच आ जानेपर अगुलीका खिंची रहना , ३। सीढी चढते समय घुटने की चक्की अपनी जगहसे हट जाती है , ४। खानेकी चीज निगलते समय श्वासमें तकलीफ, भोजनकी चीजें श्वासनलीमें प्रवेश कर जाती है (एनाकार्ड) , ५। सूजाककी नयी और प्रादाहिक अवस्था , द्वितीय अवस्थामें—पेशाबमें जलन, गाढा पीला रंगका या पीबकी तरह स्राव निकलता (कियुबेबा, हाइड्रैस्ट) , ६। मूत्रनलीमें स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द, पैर अलग अलग कर चलता है , ७, तकलीफ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन (Chordee)।

सूजाक—सूजाककी पहली अवस्थामें इस तरहकी लाभदायक दवा बहुत कम दिखाई देती है। पेशावकी नलीमें बेतरह दर्द, दबानेपर दर्द, छूनेपर दर्द, रोगी पैर अलग अलग कर चलता है, पेशावमें बहुत जलन, तकलीफ देनेवाला लिंगका कड़ापन, मूत्रनलीसे हरा या पीले रंगका स्राव निकलना, रक्तस्राव या खून मिला पेशाव, बार बार पेशावका वेग, इन सब लक्षणोंमें—कैनाबिसका मदर टिंचर ८।१० बून्द, ८ आउन्स पानीमें मिला कर उसको एक चम्मच मात्रामें, प्रति चार पाँच घण्टोंका अन्तर देकर दिनमें चार पाँच बार सेवन करनेसे प्रायः दो तीन दिनोंमें ही प्रवाहका भाग घटकर स्राव धीरे धीरे गाढ़ा हो जाता है और उसका रंग भी बदल जाता है। इस समय—मर्कुरियस-सोल ३x द्राइटुरेशन और अगर इस गाढ़े स्राव के साथ बहुत जलन और स्रावका रंग हरा हो, तो मर्कुरियस कोर—सी० एम० शक्तिका सेवन करनेपर बहुत-से रोगी आरोग्य हो जाते हैं। रोग पुराना होकर अगर ग्लीट (Gleet) में बदल जाये, तो—हाइड्रैस्टिस, सिपिया, कैलि-आयोड इत्यादि दवाएँ लक्षणके अनुसार प्रयोग करनी पड़ती हैं। पल्सेटिला और सिपियाका स्राव गाढ़ा होता है। ग्लीट अवस्थामें यदि अधिक जलन रहे—सल्फर देना चाहिये। कैन्थरिसमें—बहुत ज्यादा जलन रहती है। पर इसके साथ ही पेशाबके कॉंपनेका भाव और वेग रहता है, कैनाबिसमें उतना वेग नहीं रहता। तकलीफ देनेवाला लिंगका कड़ा-

न (Chordee)—कैन्यरिस और कैनाबिस दोनों ही दवाओंमें । पर कैनाबिसमें—लिङ्गमुण्डमें सूजन और दर्द रहता है, कैन्यरिसमें यह नहीं रहता। प्रमेहका जखम मूत्राशय (bladder) जा कर अगर मूत्रस्थलीसे खून निकलता हो और कमरमें दर्द हो तो—कैनाबिस ज्यादा फायदा करता है। कैनाबिसमें—पेशाबके साथ बहुत थोडा रक्तस्राव होता है, पेशाबके बाद अधिक जलन नहीं रहती; पर कैन्यरिसमें रक्तस्रावकी मात्रा ज्यादा और जलन रहती है—पेशाबके समयके अलावा भी बहुत देरतक जलन बनी रहती है। कैन्यरिसमें—बूँद बूँद कर पेशाब होता है और मानो पेशाब निकलनेके समय अड जाता है। टेरिबिन्थमें—सबसे ज्यादा रक्तस्राव होता है। जहाँ ऐसा दिखाई दे कि प्रमेहके साथ लिङ्गमें कड़ापन ज्यादा है, स्राव गाढा, पीले रंगका, मसानेसे पुट्टे तक दर्द—मानो जकडा हुआ है, इसके साथ ही मिचली रहती हो, ऐसी अवस्थामें—कैनाबिस देना चाहिये और बूँद बूँद पेशाब, कूथन, वेग और जलन यदि ज्यादा रहे—तो कैन्यरिस फायदा करता है। सूजाककी बीमारीकी नयी और तेजीवाली अवस्थामें अगर बहुत अधिक प्रदाह रहे—तो कैनाबिस-सैटाइवाकी अपेक्षा—कैनाबिस-इण्डिका अधिक फायदा करता है। (ऊपर बताये नियमसे मदर टिंचरका प्रयोग करना चाहिये)।

द्रष्टव्य :—प्रमेह रोगकी पहली अवस्थामें यदि कोई रोगी मेरे पास इलाजके लिये आता है तो मैं पहले पल्सेटिला—३x

नित्य ४-५ मात्रा, इसके बाद यदि अधिक जलन दर्द रहे तो—कैन्थरिस ६x शक्ति, ४।५ दिन। इसके बाद—हाइड्रैस्टिस—३x से १२ शक्ति दिनमें ३।४ बार दस पन्द्रह दिनोंतक देता हूँ और आर्निका लोशन (१ आउन्स चुआये हुए पानीमें आर्निका—θ, १० बूँद) से रोज ५।७ बार लिङ्ग धो डालनेकी व्यवस्था देता हूँ। यदि पेशाब कम आता है, तो दो तोला तीसी अन्दाजन एक सेर पानीमें सिझा कर, जब आधा सेर पानी रह जाता है, तब उतारकर छनवा लेता हूँ। यही तीसीका काढ़ा थोड़ी-सी चीनी मिलाकर दो तीन बार पीने कहता हूँ, इससे बहुत फायदा होता दिखाई देता है। पेशाबमें बहुत अधिक जलन, लिङ्गमें दर्द और सूजन, रातमें लिङ्गमें बहुत कड़ापन आना वगैरह लक्षण रहनेपर कभी कभी पल्सेटिलाके बाद—कैनाबिसकी जरूरत पड़ती है। ग्लीटवाली अवस्थामें अगर स्वप्नदोष हो जाये—डिजिटेलिन ३x शक्ति दो चार दिनातक व्यवहार करनेसे ही फायदा होता है।

टुसिलेगो-पेटोसाइटिस—θ-१x शक्ति, बहुत ज्यादा तकलीफ देनेवाला नया प्रमेह, लिङ्ग फूल जाता है और उसमें बहुत दर्द होता है, पेशाब करनेके समय इतनी तकलीफ होती है, कि जान निकल जायगी। खून निकलता है, रोगी छटपटाया करता है, बीचमें ज्वर भी हो आता है। इसमें जो स्राव निकलता है, उसका रंग पीला या सफेद रहता है और वह गाढ़ा रहता है, पेशाबकी नलीमें सुरसुरी होती है और किसीके उड़नेकी तरह एक

प्रकारका दर्द होता है। यह दवा नये और पुराने दोनो तरहके प्रमेह रोगमें ही फायदा करती है। शुक्र-रज्जुमें दर्द, सूजाकका मवाद आना बन्द होकर आँडोका प्रदाह और अण्डकोपकी बीमारी होनेपर तथा कमरका बहुत ही तकलीफ देनेवाला वात (Lumbago) होनेपर इससे बहुत फायदा होता है (फूलकी पॅखडियोंसे इस दवा का टिंचर तैयार होता है। फारमुला—२।)

मूत्रनलीका प्रदाह—(युरेथ्राइटिस)— मूत्रनलीमें जलन, पेशाव करनेके समय काटने फाडनेकी तरह दर्द, दर्द ऊपर मूत्राशयतक चला जाता है। लगातार पेशाव करनेकी इच्छा , पर मूत्रनलीकी सकोचक-पेशीकी (sphinctor) आक्षेपिक रुकावटकी वजहसे पेशाव करनेमे बहुत अधिक तकलीफ होती है। प्रमेहका प्रदाह फैल कर—मूत्रनली-प्रदाह (सिस्टाइटिस) की बीमारी हो जानेपर और पेशाबके साथ खून निकल जानेपर, पेशाबके पहले, बाद और पेशाब करनेके समय जल जानेकी तरह जलन और तकलीफ होनेपर, तथा बूँद बूँद पेशाव होते रहनेपर, कैनाबिस-सेटाइवा फायदा करता है। सूजाककी बीमारीमें—लिङ्गमुण्डकी चमडी (prepuce) बहुत फूलनेपर और पेशाबके समय और बाद विशेष कर पेशाब होनेके ठीक बाद ही जलन होती रहनेपर इससे ज्यादा फायदा होगा। (पेशाबके बाद जलन—सार्सापेरिला)।

दमा-खाँसी—आक्षेपिक दमा-खाँसी (Spasmodic asthma), इसमें मानो साँस रुक जाती है। रोगी हाँफा करता

है, छातीको मानो किसीने दबा रखा है, केवल हवाकी इच्छा करता है, पखेकी हवा करने कहता है,—ऐसे दमामें—कैनाबिस इण्डिकासे बहुत जल्द तकलीफ दूर हो जाती है। कार्डियक ऐजमा (Cardiac Asthma) जिसमें हृत्पिण्डमें दर्द होता है, कलेजा धड़कता है, हृत्पिण्ड भारी हो जाता है। रोगी बायीं करवट सो नहीं सकता, हृत्पिण्डकी जगहपर मानो कोई सुई गड़ाता है, जोर से साँस लेता और छोड़ता है, उसमें भी—कैनाबिस इण्डिका फायदा करता है (एकोनाइट, ब्लैटा और लोबेलिया अध्याय देखिये)।

(दमा, ब्राङ्कियल—आर्स, ब्रियण्ड, इपि, सल्फ; स्पैज्मोडिक—कुप्रम, ब्रियण्ड, नेप्थैल, सँगु, इपि, स्ट्रैमो; कार्डियक—ब्रिण्डे, ऐकोर, कैक्टस, कुरारि, प्रुणस, हिस्टिरिकैल—सम्बल, मस्कस)।

एसपिडासपर्म्मा—φ—१x विचूर्ण। अधिकांश दमा की बीमारियोंमें इस दवासे आशासे अधिक फायदा होता है। यह फेफड़ेमें ताकत भरता है और खूनमें आक्सिजेन बढ़ा देता है। रोगीकी श्वासकी तकलीफ दूर हो जाती है। कार्डियक एजमा। दमाके वेग रहनेके समय—एस्पिडोस्पर्मिन—हाइड्रोक्लोराइड—१x ग्रनिका १ ग्रेन। की घण्टे एक एक मात्रा, इस तरह कई मात्राएँ देनी चाहिये।

अभिज्ञताका नतीजा—दमाके वेग श्वासकष्टमें मैं पहले एकोनाइटका प्रयोग करता हूँ। मनुष्य था, इससे २४ से लेकर

३६ घण्टोंके बीचमें दमाका खिचाव और तकलीफ घट आती थी, पर अब मालूम होता है, कि कैनाबिस इण्डिकाका मूल अर्क—५ बूंद, ४ आउन्स पानीमे मिलाकर उसका एक या दो चम्मच, फी घण्टा एक एक मात्रा सेवन करनेसे प्राय' २।३ घण्टोंमे ही बहुत जोरका दौरा और श्वासकष्ट भी घट कर रोगी स्वस्थ हो जाता है। (एकोनाइट अध्याय देखिये। लोबेलिया भी दमाकी बढिया दवा है)।

सर-दर्द—अधकपालीका सर-दर्द, जो प्रत्येक ८ या १५ दिनोंका नागा देकर पैदा हो जाता है और रोगीको २।३ दिनोंतक बहुत तकलीफ देता है। उसमे—कैनाबिस इण्डिकासे बहुत ज्यादा फायदा देता है। रोगके बढे रहनेकी अवस्थामे इसका मूल अर्क ४।५ बूंदकी मात्रामें, रोज दिनमे ३ बार और आक्रमण के समय फी घण्टा १ बार, इस नियमसे कुछ दिनोतक सेवन करनेपर रोग आरोग्य हो जायगा और तकलीफ बहुत जल्द घट जायगी।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, मार्क।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ से १० दिन।

क्रम—ϕ, १x, ३x, और २०० शक्ति ज्यादा फायदा करती है।

फारमुला—१ (जर्मनी)—३ (अमेरिकन)

कैन्थरिस वेसिक्युलेरिस।

(CANTHARIS VESICULARIS)

(स्पेन देशकी मक्खीका (प्लस्टर)—मसाना, मूत्रनली और चर्मपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।)

<u>चरित्रगत लक्षण</u> :—

१। आगमें जल जानेकी वजहसे जलन, २। गला, छाती, पाकस्थली, डिम्बकोष, मूत्रद्वार वगैरहमें जल जानेकी तरह जलन होती है; ३। पेशाब करनेके पहले, समय और बाद भयानक जलन; ४। पेशाबके समय बहुत अधिक कूथन और वेग; ५। हमेशा पेशाब करनेकी इच्छा बनी रहना, बूंद बूंद कर पेशाब निकलना, पेशाबके साथ रक्त; ६। नाक, मुँह, आँख, मूत्रद्वार प्रभृतिसे खून आना; ७। खाने-पीने तथा धूमपानमें चिढ़; ८। स्त्री-पुरुष दोनोंमें ही कामशक्तिकी उत्तेजना; ९। खूनका पेशाब; १०। पानकी पीककी तरह लाल रंगका मल; ११। चर्मपर छालेकी तरह दाने—ये पकते हैं और उनमें घाव हो जाता है; १२। यकायक पेशाबका वेग और मूत्रनलीमें खुजली।

सिर्फ मूत्रयन्त्रपर भरोसा कर इससे कठिनसे कठिन रोग आरोग्य होते हैं। गला, दिमाग, फेफड़ा, पेट, मलद्वार, चर्म, इलैष्मिक झिल्ली इत्यादिके प्रदाहमें अगर पेशाबमें जलन, काटनेकी

तरह दर्द, बार बार पेशाब करनेकी इच्छा, बूँद बूँद पेशाब होना इत्यादि लक्षण रहें तो—कैन्थरिसको सबसे पहले याद करें।

खिदिरपुरके पुलके पास शंकर सिंहकी स्त्री, उमर अन्दाजन ३८ वर्ष, एक वर्षतक ऋतुका होना बन्द रहा—सविराम ज्वर, रक्तहीनता, अम्लकी बीमारी, सर-दर्द, बार बार पतले दस्त इत्यादि नाना प्रकारकी बीमारी पैदा होकर अन्तमें वह खाटसे लग गयी। मैंने लक्षणके अनुसार—पल्सेटिला, नैट्रम-म्यूर, आर्सेनिक नेट्रम-सल्फ, सलफर, किनाइन, प्रभृति दवाएँ दो महीनेतक दीं, पर कोई भी फायदा न हुआ। अन्तमे एक दिन उसने कहा—"मुझे पेशाब करनेमें बहुत तकलीफ होती है। ऐसा मालूम होता है, कि दवा खाकर मेरा गरम शरीर और भी गरम हो गया है। मैं अब दवा न खाऊँगी।" उस समय उस रोगिनीने पूछनेपर बताया कि बहुत दिनोंसे उसे पेशाब करनेके समय जलन होती है। मैंने उसे तुरन्त कैन्थरिस ३० की दो पुड़ियाएँ ८ घण्टेके अन्तरसे सेवन करनेके लिये दीं। प्रसन्नताकी बात है, कि उस दिवस एक मात्रा सेवन करनेके ४ घण्टे बाद ही उसे ऋतुस्राव हुआ और स्राव बहुत ज्यादा होनेके कारण, १५ दिन बाद—मैंने सैबाइना ३x दिया। इससे रजःस्राव बन्द हुआ। अब यह बता देना आवश्यक है, कि रजःस्राव आरम्भ होनेके दूसरे दिनसे रोगिनीकी ऊपर कही सभी बीमारियाँ और तकलीफें तथा रोगके उपसर्ग प्राय गायब हो गये थे। मैंने अन्तमे सिर्फ कई दिन उसकी कमजोरी दूर करनेके लिये चायनाका प्रयोग किया था। अब रोगिनी खासी

हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ट है और आजतक उसे ऋतुस्राव भी बराबर नियमित रूपसे हो रहा है।

जले घाव—शरीरकी कोई भी जगह अगर आगमे जल जाये तो तुरन्त कैन्थरिस लोशन (एक आउन्स चुआये हुए पानीमें १०-१५ बूँद मदर टिंचर) से तर कर रखना चाहिये। इससे जलन तो तुरन्त दूर हो जायगी ही साथ ही छाले भी न पड़ेंगे। यदि छाले होकर जख्म हो जाये, तो—कैन्थरिस और कार्बोलिक-एसिड आयण्टमेण्ट (मरहम) दोनों ही फायदा करते हैं (रोग और प्रकृत-गत लक्षण अध्यायमें—अग्नि-दग्ध देखिये)।

अतिसार रक्तामाशय—मांसके धोवनके पानीकी तरह फीके लाल रंगके पतले दस्त, मलके साथ लाल आभा या खूनकी तरह श्लेष्मा और छोटे मांसके टुकड़ेकी तरह पदार्थ निकलना, पाखानेके समय मलद्वारमें आगसे जल जानेकी तरह जलन, जलनके साथ ही कूथन ; पेशाब भी जोर लगाये या काँखे बिना नहीं निकलता। अतिसारमें—ये ही कैन्थरिसके लक्षण हैं। कैन्थरिसमें दस्त होते समय रोगीको बहुत सिहरावन मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो उसके शरीरपर किसीने पानी डाल दिया है। आमाशयमें—ऊपर कहे हुए अतिसारके प्राय सभी लक्षण मौजूद रहते हैं। मलद्वारमें जलन, कूथन, पेशाबके समय काँखना और वेग सभी रहता है। पर अतिसारकी अपेक्षा आमाशयमें कूथन और वेग बहुत अधिक रहता है। पेटमें बहुत

अधिक पेटनका दर्द हुआ करता है ऐसा मालूम होता है,कि कोई छुरीसे पेट काट रहा है। मलद्वारमें जलनके साथ कभी कभी—गलेमें, मुँहमे और ओंठमें जलन और बहुत तेज प्यास रहती है, हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं। हिमांगकी तरह हो जाता है (मर्क-कोर और नक्स-वोमिका देखिये)। <u>कोलोसिन्थमें</u>—कैन्थरिसकी तरह आम-रक्त और पेटमे पेटनका दर्द रहता है तथा दूसरे दूसरे उपसर्ग खाने-पीने बाद बढते हैं, पर फिर पाखाना होने बाद घट जाते है, दबानेपर पेटका दर्द घटता है। <u>कैन्थरिसमें</u>—पाखानेके समय शीत और कम्प होता है। <u>कैप्सिकममें</u>—प्यास लगनेपर पानी पीनेसे ही शीत कम्प, पेटमे दर्द और पेटकी जलन बढ़ जाती है। यदि आमाशय पुराना पडता जाये—<u>सलफर</u> और <u>हिपर-सलफर</u> दोनों ही फायदा करते हैं। आमाशयकी बीमारी ज्यादा दिनोंतक स्थायी होनेपर आँतोंमे जखम हो जाता है,उस समय अकसर किसी भी दवासे जल्दी फायदा नहीं होता। ऐसे स्थानपर एक बार हिपर-सल्फर उच्च शक्तिका प्रयोग कर देखे। मैंने कितनेही स्थानोंमे इसकी एक मात्रासे तुरन्त फायदा होते देखा है। <u>ट्राम्बिडियम</u>—यह आमाशयकी एक बहुत बढिया दवा है। रक्तामाशय, कूथन, पाखानेके समय पेटमे असह्य दर्द और तकलीफ, मलद्वारमे जलन, खाने-पीने बाद उपसर्गोंका बढना, इसका चरित्रगत लक्षण है; यदि पेटमें दर्द न रहे और पुरानी अवस्थामे चैपारो—दिनमें ४।५ बार सेवन करना चाहिये।

विसर्प—इस बीमारीमें आर्सेनिक, एपिस और कैन्थरिस लक्षणके भेदके अनुसार फायदा करते हैं। इन तीनों दवाओंमें ही जलन होती है। एपिसमें सूजन—शोथकी तरह, कैन्थरिसमें—छालेकी तरह ; एपिसमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द होकर जलन होती है ; कैन्थरिसमें—भयानक जलन, जलनकी वजहसे रोगी बहुत बेचैन हो पड़ता है और रोने लगता है (बेलेडोना अध्याय देखिये)।

आर्सेनिक—जलनके साथ ही रोगी बहुत छटपटाता है और उसको बहुत प्यास लगती है। एपिसमें—प्यास नहीं रहती। नाकके विसर्पमें—कैन्थरिस फायदा करता है।

प्रसूतिकी बीमारी—गर्भस्राव या प्रसवके बाद अगर फूलका सब हिस्सा न निकल जाये और उसका कुछ अंश अड़ा रहे, तो कैन्थरिससे फूल निकल जायगा (सिकेलि—ॅ के प्रयोगसे भी फायदा होता है)।

कामोन्माद—यदि स्त्रियोंमें बहुत अधिक संगमेच्छा पैदा हो जाये तो—कैन्थरिस फायदा करता है।

कामोद्रेक—स्वस्थ शरीरमें कैन्थरिसका सेवन करने पर स्त्री या पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रियमें उत्तेजना होती है। इस उत्तेजनाकी वजहसे रतिक्रियाकी इच्छा इतनी जबर्दस्त हो जाती है, कि नींद नहीं आती। स्त्रियोंको यदि सहवासकी इच्छा बहुत ज्यादा

हो और इसी वजहसे तन्दुरुस्ती विगडती जाये तो इसकी शक्तिकृत दवासे लाभ होगा।

कहा जाता है, कि अमेरिकाके किसी कालेजके नष्ट-चरित्र कई छात्र, शान्त छात्रियोंकी काम-इच्छाकी उत्तेजना दिलाने और उनका चरित्र नष्ट करनेके उद्देश्यसे, कालेजके वेयराको मिलाकर उनके टिफिनके साथ रोज कैन्थरिस—φ मिलवा देते थे। यह बात जब उस कालेजके अधिकारियोंको मालूम हुई, तो उन्होंने उन विद्यार्थियोंको कालेजसे निकलवा दिया और ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि फिर वे कहीं भरती ही न हो सके।

सूजाक—खून-मिला पेशाव, पेशावके अन्तमें पेशाव करने के समय और पेशावके पहले जलन, पेशावका जल्दी जल्दी वेग होना, बूँद बूँद पेशाव निकलना, कष्ट देनेवाला लिङ्गका कड़ापन इत्यादि कैन्थरिसके लक्षण हैं। सूजाक और पेशाव-सम्बन्धी रोगोंमें—लक्षण भेदसे और भी कितनी ही दवाएँ फायदा करती हैं। आगे उनका प्रभेद देखिये—

कैनाबिस-सैटाइवा और इण्डिका—प्रमेहका स्राव गाढ़ा, पीले रंगका, पेशाव करनेके समय जलन, लिङ्गमुण्डमें सूजन। कैनाबिसमें—कष्टदायक लिङ्गोद्रेक सबसे ज्यादा होता है, कैन्थरिसमें—वेग और कुथन अधिक रहती है।

इक्विजिटम हाइमेल—२ से ३० वीं शक्ति तक। इसमें पेशावके साथ खूनका स्राव होता है और श्लेष्माकी तरह

लसदार पदार्थ निकलता है, पेशावमें जल जानेकी तरह जलन रहती है, जल्दी जल्दी पेशाव लगता है। पर पेशाव होता बहुत थोड़ी मात्रामें है, उससे तकलीफ घटनेके बदले और भी बढ़ जाती है। पेशावके बाद मूत्राशय (bladder) में धीमा दर्द इसका प्रधान लक्षण है। इसमें पेशाव लगनेपर उसका वेग क्षणभर भी रोका नहीं जा सकता, कितनी ही बार तो आप ही आप पेशाव होने लगता है। इक्विजिटम—स्त्रियोंकी बीमारीमें यदि यही लक्षण रहे तो गर्भावस्थाम तथा प्रसवके बादकी स्वच्छताम ज्यादा फायदा करता है। पर इनके अलावा स्त्रियोंकी बीमारीमें इक्विजिटमके ये सब लक्षण रहनेपर—युपेटोरियम-पर्पियुरियम (Eupetorium Purpurium) नामक दवा ज्यादा फायदा करती है। युपेटोरियममें—रक्त कुछ ज्यादा नहीं रहता, पेशावके साथ श्लेष्मा का (mucous) भाग ही ज्यादा रहता है। इक्विजिटम—वृद्धोंमें पेशाव रोकनेकी शक्तिका न रहना, और जिन बच्चोंके पेशावमें कोई दोष नहीं मिलता, पर रोज रातमें बिछावनमें पेशावकर देते हैं, उनके लिये ज्यादा फायदेमन्द है। बच्चोंको अगर क्रिमिकी बीमारी हो जाये—सिना, सैण्टोनाइन वगैरह काम करते हैं (ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है)। फारमुला—३।

लिनेरिया—३x—६x, शक्ति। रोगी पेशावका वेग बिलकुल ही रोक नहीं सकता, रातके समय वेग और क्रन्दन आदि की वृद्धि हो जाती है, सो नहीं सकता (टाककामड़में—नाहरी शोषक भाप। स्ट्रैम्मो नेरिया)।

फोपेरा ३-६ ; सूजाकका मवाद दूधकी तरह सफेद और खा
उधेड देता है। मूत्रद्वार फूल जाता है और लाल हो जाता
(इसका अध्याय देखिये)।

थूजा—पेशावका वेग बहुत ज्यादा होनेके साथ बूँद बू
पेशाव निकलना, कभी कभी पेशावके साथ खून, मूत्रनलीमे खुजल
पेशावका रग हरा अथवा पीली आभा लिये हरा या नीला हर
मिला, इसमें रातमें लिङ्गमें बहुत अधिक कडापन आता है, उस
नींदमें बाधा पड़ जाती है। यदि रोगीको बार बार सूजाक
बीमारी हो जाती हो तो—थूजा और पगनस, सभी दवाओं
अपेक्षा बहुत फायदा करते हैं। (पगनस अध्याय देखिये)

कैप्सिकम—स्राव गाढा और पीले रगका, रोगीको पेशाव कर
के समय डक मारनेकी तरह दर्द और लाल मिर्च लग जानेक
तरह जलन अनुभव करता है। खूब मोटे ताजे मनुष्योंकी बीमार
में यह फायदा करता है।

पेट्रोसेलिनम ३x—६x।—एकाएक पेशाव लग आता है
वह वेग क्षण भर भी रोका नहीं जा सकता, पेशाव करनेके समय
बहुत जलन और तकलीफ होती है। यह दवा प्रयोग करते समय
पेशावकी नलीमें बेतरह खुजली और लिङ्गमुण्डमें दर्द, ये दो
विशेष लक्षण हमेशा याद रखने चाहिये। (इसका अध्याय देखिये)

सार्सापैरिला—३, ३०।—पेशाव होनेके अन्तिम भागमें
बहुत जलन, पर पेशाव करते समय या इसके पहले कुछ भी नहीं
होता (इसका अध्याय देखिये)।

क्लिमेटिस—इसमें पेशाब रुक रुककर निकलता है। इसी कारणसे रोगीको बहुत देरतक बैठे रहना पड़ता है। रोगी जबतक पेशाब करता है, तबतक उसे मूत्रनली और लिङ्गमुण्डमें दर्द मालूम होता है, इसमें पीब एकदम नहीं रहता। मूत्रनलीका छेद सँकरा पड़ जाना (Stricture) रोग हो जानेपर पहली अवस्था में क्लिमेटिस फायदा करता है। कोनियममें—पेशाब खूब धीरे धीरे और रुक रुककर निकलता है, पर इसमें सूजाकका मवाद शामिल रहता है। मर्क्युरियस सोलमें—पेशाबका रंग हरा और पीबकी तरह, मवाद आनेकी मात्रा रातमें बढ़ जाती है। मर्क्युरियस कोरमें—कैन्थरिसकी तरह वेग, कूथन, लगातार जलन और इसके अलावा लिङ्गमुण्डमें जलन रहती है; पर पेशाबके बाद कूथन, कैन्थरिसकी अपेक्षा मर्क्युरियसमें ज्यादा रहती है।

इपिजिया-रिपेन्स (Epigea Repens)—मूत्रद्वारसे पीब, खून और श्लेष्मा निकलना, बहुत जलन और तकलीफ, कूथन, मूत्राशयका प्रदाह, मूत्र-कृच्छ्र, पेशाबके बाद भी तकलीफ देनेवाला वेग, पेशाबमें मूत्रक्षार (यूरिक-एसिड) रहता है।

चिमाफिला (Chimaphila)—θ—३x, पेशाबके साथ बहुत ज्यादा मात्रामें चमकीला लसदार या खूनकी तरह एक प्रकारका श्लेष्मा और पीब मिला पदार्थ निकलता है। पेशाब अल्प अल्प-सा कर होता है। पेशाब निकलनेके समय बहुत ज्यादा जलन और पेशाबके बाद वेग रहता है। ऐसा मालूम होता है

मानो और भी पेशाब होगा। पेशाबका वेग खूब आता है पर बैठकर वेग देनेपर बिलकुल ही पेशाब नहीं होता। लिङ्गमुण्डसे लेकर मूत्रनलीके गलेतक बेतरह खुजलाहट रहती है (पेट्रोसेलिनियम), जल्दी जल्दी बार बार पेशाबका वेग होता है, रातमें ५।७ बार पेशाबके लिये उठना पडता है। कभी कभी पेशाब गदला, गाढा और बदबूदार होता है, पेशाबमें सुरखीकी तरह लाल तली जमती है।

सिस्टाइसिसकी बीमारीमें—पेशाबके साथ ऊपर बताये ढङ्ग का लसदार श्लेष्मा पीव आदि निकलनेपर—चिमाफिला फायदा करता है।

प्रोस्टेट-ग्लैण्डका प्रदाह—मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिके प्रदाहमें यदि ऊपर बताये अनुसार पेशाबका लक्षण हो, तो चिमाफिलामें—मलद्वारके पास मानो एक गोलेकी तरह पदार्थ है, ऐसा अनुभव होता है। उसके ऊपर वह बैठा हुआ है, रोगी ऐसा ही अनुभव करता है। ताजे गाछसे चिमाफिला टिंचर तैयार होता है। फारमुला—२।

एनान्थिरम—क्रम—Ø, ३ री—६ ठी शक्ति, पेशाब गदला, गाढ़ा, श्लेष्मासे भरा, लगातार पेशाब करनेकी इच्छा, थोडा पेशाब, मूत्राशयमें जरा-सा भी पेशाब नहीं रह जाता—आप ही आप निक- लता है, रातमें चलते चलते या सोनेके समय पेशाब-आपसे आप अनजानमें निकलता रहता है। सिस्टाइटिस (मूत्रनली

प्रदाह), उपदंश, शरीरमें कितनी ही जगहें फूल जाती हैं और पक उठती हैं। बड़ा फोड़ा, छोटे छोटे फोड़े, जखम, विसर्प, खुजली (प्रुराइटिस), भँसिया दाद (हर्पिस) वगैरह कितनी ही बीमारियोंकी भी यह बहुत बढ़िया दवा है (एक तरहके घासकी सूखी जड़से इस दवाका मूलअर्क तैयार होता है। फारमुला—४)।

वैरोस्मा—इसका दूसरा नाम बूचू (Buchu) है। क्रम—१x—३x। मूत्रयन्त्र और जननेन्द्रियकी किसी भी पुरानी बीमारीमें—पीबकी तरह श्लेष्मा (muco-purulent) निकलने पर यह फायदा करता है। मसाना और मूत्राशयकी श्लैष्मिक झिल्लीके पुराने प्रदाहमें पेशाबके साथ बहुत ज्यादा मात्रामें श्लेष्मा निकलता है। पुराना प्रमेह (Gleet) और मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी बीमारियोंकी वजहसे आप ही आप अनजानमें वीर्य निकल जाना या स्राव निकलना, मूत्रद्वारमें बेतरह जलन और दर्दके साथ पथरीकी तरह कोई पदार्थ निकलना, श्वेत-प्रदर, मूत्राशयमें दर्द और मूत्रनली में सैकर पड़ जानेपर यह खासा फायदा करता है (सूखे पत्तेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है, फारमुला—४)।

एनिलिनम—लिङ्गमें और अण्डकोषमें बहुत ज्यादा दर्दके साथ अण्डकोष फूल आनेपर और मूत्रनलीकी किसी जगह पर अर्बुद (टिउमर) होनेपर इस दवाकी परीक्षा करें। ये सब दवायें न्यू रेमिडिज्के अन्तर्गत हैं और चिकित्सामें इनका बहुत

थोडा व्यवहार होता है। एनिलिनम—coal tar product,—इससे मैजेण्टा रंग तैयार होता है। क्रम—६—३० शक्ति।

पल्सेटिला—पेशावके बाद थोडी जलन, तलपेटमें नीचे की ओर अकडनका दर्द और भार मालूम होना, स्राव पीला या हरे रंगका और गाढा। अर्जेण्ट-नाइट्रिकम—स्राव पीवकी तरह गाढा, मूत्रनलीमें जलन, अकडनका दर्द रहने पर कैन्थरिसके बाद इसकी जरूरत होती है। सलफर—रोग पुराना पडकर यदि ग्लीट होजाये, तो फायदा करता है। इसके विशेष लक्षण याद रखे।

मूत्रनाश-विकार (युरिमिया)—हैजामे जब पेशाब नहीं होता तो बहुतसे चिकित्सक अकसर इस दवाको पेटेण्ट दवा की तरह प्रयोग करते हैं। होमियोपैथीमें यदि रोगके लक्षणके साथ दवाका लक्षण नहीं मिलता तो उस दवासे कुछ भी फायदा नहीं होता। जिस स्थानपर कैन्थरिसकी जरूरत रहती है, वहाँ—पेशावका वेग और लगातार पेशाव करनेकी इच्छा रहती है, पर पेशाव होता नहीं है, यह लक्षण स्पष्ट रहना चाहिये। इसके अलावा—बेचैनी, चेहरा बदरंग, पेटमे ऐसा दर्द कि उसमें स्पर्श सहा नहीं जाता, विकार, बेहोशी, खींचन, शीत आ जाना, हाथ-पैर ठण्डे, नाडी क्षीण, शरीर ठण्डा पर भीतर जलन प्रभृति लक्षणोंपर नजर रखनी पडेगी। ये कैन्थरिसके प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं। इनके अलावा बँधी गतिके अनुसार यदि पहले कैन्थरिसके प्रयोगसे लाभ नहीं होता तो उसके बाद—टेरिबिन्थिनाकी व्यवस्था करते हैं। टेरिबिन्थ

में—पेशाव बिलकुल ही नहीं लगता, पेट फूला रहता है, पेटका फूलना मानो क्रमश: बढता जाता है। रोगीको श्वास लेनेमें तकलीफ होती है, कभी बद्हवासकी तरह पड़ा रहता है; जीभ लाल और चमकीली दिखाई देती है। एपिस, बेलेडोना, ओपियम, हायोसियामस (उच्च शक्ति) और आर्सेनिक प्रभृति दवाएं भी मूत्र—विकारमें काम देती हैं (हायोसियामस भी इस पुस्तकमें "रोग और रोगके प्रकृतिगत लक्षण" अध्यायमें—युरिमिया या मूत्र-विकार देखिये)।

एस्क्लिपियस-कार्नियुटी—डा० हेल कहते हैं, कि यदि गर्भावस्थामें मूत्रनाश-विकार पैदा हो जाये तो यह सबसे ज्यादा फायदा करता है।

मूत्र-पथरी—कैन्थरिसका प्रधान लक्षण पेशाबमें जलनकी तरह जलन, वेग, कूथन इत्यादि रहनेपर इस बीमारीमें भी—कैन्थरिससे फायदा होगा। बार्बेरिसमें—सुई गड़नेकी तरह दर्द मसानेसे आरम्भ होकर चारों ओर फैल जाता है और यह दर्द नीचे और सामनेकी ओर ही ज्यादा होता है, पेशाब बहुत चमकीला, इसके साथ ही कमर और फुत्तेम तथा उरुमें दर्द रहता है। पेरिरा-ब्राभा—इसमें पेशाब बार्बेरिसकी अपेक्षा कम चमकीला, इसमें गदली तली जमना, दर्द केवल फुत्तेतक उतरता है। यह पथरीके अलावा—मूत्राशय-पुरःस्थग्रन्थि-प्रदाह (Prostatitis), मूत्रनली प्रदाह (Urethritis) और सिस्टाइटिस (मसानेका प्रदाह)

रोगमे भी व्यवहृत होता है। पैरिरा-ब्रावामे—दर्दकी वजहसे रोगी लोटने लगता है, वेग, कूथन, पेशाव हो जाने वाद भी वूँद वूँद पेशाव निकलना प्रभृति लक्षण इसमें वहुत ज्यादा है। पेशावमे लिथिक एसिड और खून रहता है। इयुवा-उर्सी—मूत्रनलीमें पथरी रहनेकी वजहसे वहुत ज्यादा प्रवाह, पेशाव निकलता निकलता एकाएक वन्द हो जाता है, मानो भीतर पथरी अड गयी है। इसमे पेशाव सूतकी तरह दिखाई देता है।

टेरिविन्थिना—खूनका पेशाव या पेशावके साथ खून मिला रहनेपर इससे ज्यादा फायदा होता है।

ओपियम—मूत्रशूल या मसानेकी वीमारीमें अगर वहुत ज्यादा रक्तस्राव होता रहे तो यह फायदा करता है। इपोमिया-निल—मसानेकी वीमारीमे दर्दके समय वहुत मिचली रहनेपर और एक ओरके मसानेका दर्द दूसरी ओरकी मूत्रनली (युरेटर) तक फैल जानेपर फायदा करता है। (वार्वेरिस अध्याय देखिये)।

ओसिमम—दाहिने मसानेपर वीमारीका हमला होनेपर, दर्दके साथ जोरकी कै।

अभिज्ञताका नतीजा—मूत्रनलीके सकरे छेदसे पथरी (stone) निकलनेके समय जो एक अव्यक्त दर्द होता है, यह वही जान सकता है, जिसे यह हुआ है। एलोपैथ चिकित्सक इस तकलीफको दूर करनेके लिये अकसर वाध्य होकर मार्फिया वगैरह वेहोश कर देनेवाली दवाएँ देते हैं, पर हम होमियोपैथ केवल

भीतरी दवा सेवन कराकर कितने ही स्थानोंपर थोड़े ही समयमें यह तकलीफ दूर कर देते हैं।

मैं पहले इस बीमारीकी तकलीफ दूर करनेके लिये—बार्बेरिस, लाइको, कैल्केरिया, फाइयस, थ्लेस्पि, चायना, डायस्कोरिया प्रभृति कितनी ही दवाएं बराबर व्यवहार करता था, पर जिस दिनसे पूज्यपाद फैरिङ्टनकी "क्लिनिकल मेटिरिया-मेडिकामें" उनकी यह राय देखी, उसी दिनसे मूत्र-पथरी (Renal colic) की तकलीफमें छटपटाते हुए किसी रोगीको देखते ही प्राय किसी ओर ध्यान न देकर सबके पहले—कैन्थरिस ६ ठीं शक्ति ४।६ मात्रा, १५ मिनिटके अन्तरसे देता हूं और इससे कितने रोगी बहुत ही थोड़े समयमें इस भीषण रोगसे छुटकारा पा गये हैं, उसका ठिकाना नहीं है। इस दवाकी प्राय तीन चार मात्रा सेवन करनेके बाद ही रोगी सो जाता है।

इस दवासे सिर्फ मूत्र-पथरीकी तकलीफ ही नहीं घटती,—बल्कि पेशाबका परिमाण और वेग भी बढ़कर बड़ी बड़ी पथरी निकल जाने बहुत बार देखा है। अतएव, जो इस रोगकी केवल—बार्बेरिस, लाइकोपोडियम इत्यादि दवाएं ही जानते हैं, उनको एक बार—कैन्थरिसका व्यवहार करनेका अनुरोध करता हूं।

डा० फैरिङ्टन और भी कहते हैं, कि—क्योंकि पथरी रोगमें उप प्रदाह लिङ्गतक फैल जाता है, और बच्चा केवल लिङ्ग पकड़कर खींचता है, उस समय—कैन्थरिससे बहुत फायदा होता है। (लाइकोपोडियम अध्याय देखिये)।

ज्वर—दूसरी दूसरी बीमारियों की तरह बोखार में यदि कैन्थरिसके चरित्रगत लक्षण प्राप्त हों, और जलन तथा अन्यान्य उपसर्ग रहें, तो इससे फायदा होगा। कैन्थरिसमे—शीतवाली हालतमें—प्यास नहीं रहती, रोगीको बहुत अधिक जाडा मालूम होता है, उसके हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं ; पर मूत्रनली मे जलन रहती है। उत्तापावस्थामे—प्यास और समूचे शरीरमें आगकी तरह जलन मालूम होती है। पसीनेवाली अवस्थामे—बहुत ज्यादा पसीना। ज्वर न रहनेवाली दशामे—रोगीको पहले पेशावमें खून, जलन, दर्द तथा बहुत तकलीफसे थोडा-सा पेशाब होता है प्रभृति लक्षण वर्त्तमान रहते हैं। पर इसके बाद पेशावकी मात्रा बहुत बढ जाती है। इस समय प्यास रहनेपर भी पानी-पीनेकी इच्छा नहीं होती।

वृद्धि (aggravation)—काफी पीनेपर, ठण्डे पानीसे, शराब पीनेपर और पेशाबके समय।

ह्रास (amelioration)—घसनेपर, मलनेपर, सोने बाद और गरम प्रयोग करनेपर।

बादकी दवा (follows well)—बेल, कैलि-आयो, मर्क, फास, सिपि, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, एपिस, कैम्फर, लौरोसि, पल्स, रियुम, कैलि-नाइट्रि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—टिंचर—४, विचूर्ण—७

कैप्सिकम एनम।

(CAPSICUM ANNUM)

(मिर्चा)—यह कमजोर तथा ढीली मांसपेशी वाले मनुष्योंके लिये, जिनके शरीरकी स्वाभाविक गरमी, जितनी होनी चाहिये, उससे कम रहती है तथा जिनका शरीर स्थूल होता है, आलसी, परिश्रम नहीं करना चाहते। किसी विषयपर दिमाग लडानेकी जिनकी इच्छा नहीं रहती, बहुत गन्दे, उनका शरीर हमेशा ही गन्दा रहता है, अकेले रहने और केवल सोये रहने या नींद लेने की इच्छा रहती है, जिन्होंने बहुत दिनोंका शराब पीनेका अभ्यास त्याग दिया है, उनकी बीमारीमें यह अधिक लाभदायक है। गलेके भीतर मिर्चा पीसे रहनेकी तरह जलन, सर्दी मालूम होना, गल-नलीका संकोचन, श्लैष्मिक झिल्लीपर बीमारीका हमला होकर संकोचन पैदा हो जाना प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं।

चरित्रगत लक्षण—

१। नाक, गला, छाती, मूत्राशय, मूत्रनली, मलद्वार प्रभृति में संकोचन (constriction) मालूम होना; २। गलेके भीतर और शरीरके अन्यान्य स्थानोंमें मिर्चा खानेकी तरह जलन मालूम होना; ३। निगलनेके समय गलनलीका आक्षेपिक संकोचन और इसी वजहसे वमन; ४। खानेके पीछे सूजन, उसमें छूना बिल्कुल ही सहन न होना और दर्द; ५। दस्तके बाद पाखाना

होने बाद प्यास और प्रत्येक बार किसी तरहका पानीय पीनेपर काँपना, ६। एकाएक स्नायविक आक्षेपिक खाँसी पैदा हो जाना, ७। बहुत ज्यादा परिमाणमें बलगम निकलना और बलगममें सडी बदबू आना, ८। खाँसनेके समय मूत्राशय, पेर, कान प्रभृति दूरकी जगहोंमें भी दर्द, ६। सूजाककी ग्लीट अवस्थामें २।१ बूँद पेशाब होना, १०। सविराम ज्वरमें हमेशा ही शीत, शीतके पहले प्यास।

आमाशय—पाखानेके समय जलन, वेग और कुथन। मल—रक्त मिला, हरे रगका मानो पत्तेका चूर, रोगीमें बहुत अधिक प्यास रहती है, पर पानी पीते ही जाडा बढ जाता है और कँपकँपी होने लगती है। दस्त होने बाद कमरमें बेतरह दर्द और इसके साथ ही मलद्वारमे जलन। (मलद्वारमे जलन—आइरिस, आर्सेनिक, एसिड नाइट्रिकमें भी है, पर पेशाबमें जलन और यह भी कूथनके साथ होनेपर—मर्कुरियस कोर फायदा करता है)। कैप्सिकम—बरसातके आमाशयमें ज्यादा फायदा करता हैं। दर्द-भरे खूनी बवासीरमें भी इससे फायदा होता है।

कानकी बीमारी—अगर बहुत दिनोंतक कानसे पीव बहता रहे, कर्ण-पटहमें प्रायः छेद हो जाये, कर्ण-पटहमें छेद होकर गाढा पीले रगका पीब निकलता हो तो कैप्सिकम फायदा करता है। इसके साथ ही सरमें दर्द, सर्दी लगना इत्यादि चरित्रगत लक्षण रहनेपर यह और भी ज्यादा फायदा करता है (कैप्सिकमका सरन्दर्द ऐसा मालूम होता है, मानो माथा फट जायगा। जरा-

सा भी माथा हिलानेपर या चलने-फिरनेपर या खाँसनेपर बढ़ जाता है और गर्म-प्रयोगसे घटता है।) (शंखास्थिमें mastoid) फोड़ा या अस्थि-क्षत (Caries) रोग आरम्भ होनेपर यदि रोग-वाली जगह लाल रंगकी और उसमें हाथ न लगाया जाये, ऐसा दर्द होनेपर यह कैप्सिकम फायदा करता है।

गलेके भीतरकी बीमारी—उपजिह्वा बढ़ जाने पर भी इससे फायदा होता है। बाहरी प्रयोगसे (मदर टिंचर ४।६ बूंद ग्लिसरिन या जैतूनके तेलमें—१ ड्राम) खाँसी बहुत कुछ घट जाती है। अगर लाल मिर्च खानेकी तरह गलेके भीतर बहुत अधिक जलन रहे और कोई चीज खाने पीनेपर अगर वह जलन बहुत बढ़ जाये और गलनलीके सकोचनके कारण जो कुछ खाया जाये, वह उसी समय कै हो जाये, तो—कैप्सिकम फायदा करता है। यह शराबियोंकी गलेके जलनकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है।

श्वासयंत्रकी बीमारी—साधारण श्वास-प्रश्वासमें कुछ अधिक नहीं मालूम होता, पर जोरसे खाँसनेपर अगर बहुत अधिक बदबू आती हो, तो कैप्सिकम और सैंगुनेरिया फायदा करते हैं। ब्रङ्कोएक्टेसिसमें इसी तरहकी बदबू आती है—इनमें—बैल-समम और युकेलिप्टस फायदा करता है।

दमा-खाँसी—अगर खाँसीके साथ साँसमें बहुत बदबू रहे और बहुत देरतक खाँसता खाँसता रोगी बहुत थक जाये तब

थोडा-सा बलगम निकलकर दमाका खिंचाव कुछ घटे तो—कैप्सिकम फायदा करता है।

प्रमेह—(सूजाक)—रोगकी पुरानी अवस्थामें जब स्राव बहुत अधिक नहीं होता है (ग्लीट), दो एक बूँद गोंदकी तरह लसदार स्राव मूत्रनलीके मुँहपर लगा रहता है, उससे सवेरे पेशाब को राह बन्द हो जाती है और इसके साथ ही पेशाबमें जल जानेकी तरह जलन रहती है, उस समय—कैप्सिकम फायदा करता है। सिपिया, कैलि-आयोड, कोपेवा, हाइड्रैस्टिस, इस तरहके ग्लीटमें लाभदायक हैं। हाइड्रैस्टिस और सिपियाका स्राव पीले रंगका और उसमें जलन-यन्त्रणाका लेश भी नहीं रहता।

सविराम ज्वर—रोज सवेरे ५।६ बजनेके समय कन्धे की दोनों हड्डियोंके बीचसे जाडा आरम्भ होकर बोखार आता है और इस बोखारमें शरीरमें दाह और जाडेका भाव बहुत ज्यादा रहता है, शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है, शीतके पहले प्यास रहती है, रोगी जाडेकी वजहसे तापकी इच्छा करता है। जबतक जाडा रहता है, तबतक खूब अधिक प्यास रहती है, पर इस अवस्थामें पानी पीनेपर और भी शीत बढ जाता है। इसी वजहसे रोगी पानी पीनेका साहस नहीं करता। (इग्नेशिया देखिये)

इयुपेटोरियम-पर्फोलियेटम—शीत कमरकी जगहसे पैदा होता है, इसमें शरीरमें कपकपी स्पष्ट मालूम होती है, समूचे शरीरमें यहाँतक कि हड्डीके भीतरतक दर्द रहता है। शीतके साथ ही प्यास,

यह प्यास देखकर ही रोगी समझ जाता है, कि अब उसे बोखार आयगा, पानी पीते ही पित्तकी कै हो जाती है। प्यास—उत्तापावस्थातक रहती है, इसमें ज्वर—एक दिन दिनके ७ बजेसे ६ बजे तक और दूसरे दिन १२ बजे आता है। कैप्सिकमके—ज्वरके आनेके पहले हाड़ोंमें दर्द नहीं रहता, पर इयुपेटोरियममें—यही लक्षण प्रबल रहता है। कैप्सिकममें—शीतके सिवा किसी भी दूसरे अवस्थामें प्यास नहीं रहती (इग्नेशिया)।

वृद्धि (aggravation)—खाने-पीनेके बाद, बाहरी हवामें, रातके समय।

ह्रास (amelioration)—भोजनके बाद और गरमीसे, शराब पीनेके कारण मतवाले पनमें—इसका मूल अर्क—६० बूँद दूधके साथ सेवन करना चाहिये।

सदृश—पपिस, बेल, चायना, कैलेडि, पल्स, सिनाइनके अपव्यवहारके कारण पैदा हुए बोखारमें—कैप्सिकम बहुत ज्यादा फायदा करता है।

बादकी दवा (follows well)—बेल, सिना, लाइको, पल्स, सिपि।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैलेडि, कैम्फर, चायना, सिना, सल्फि-स्पस।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७ दिन।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—४।

कार्बो एनिमेलिस ।

(CARBO ANIMALIS)

(जान्तव कार्वन, साँढका चमडा जलाकर यह तैयार होता है ।)

ग्रन्थियों, चर्म और पाचन-यन्त्रपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। कण्ठमाला-धातु-ग्रस्त मनुष्योंकी बीमारी, जिस समय प्रसूता बच्चे को स्तनका दूध पिलाती है, उस समयकी बीमारियाँ इत्यादिमें यह ज्यादा फायदा करता है। सुना है, कि जो सब नासूर किसी तरह भी अच्छे नहीं होते, उन घावोंमें, मनुष्यकी हड्डीका चूर्ण बना कर लगानेसे वे जल्दी भर जाते हैं। कार्वङ्कलकी तरह व्रण या फोडे में यह ज्यादा फायदा करता है।

जवान और रक्तप्रधान धातुवाले मनुष्य, खासकर जब शिराओं में रक्तकी अधिकताकी वजहसे हाथ-पैरका चमडा और ओंठ नीले दिखाई देते हैं और बहुत कमजोर मनुष्योंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। जिन मनुष्योंके पैर ठण्डे रहते हैं, शारीरिक स्वाभाविक गरमी बहुत थोडी रहती है, ठण्डी और खुली सूखी हवा सहन नहीं होती, ऐसी प्रकृतिवालोंके लिये यह ज्यादा फायदे-मन्द है।

ग्रन्थियोंका फूलना—बगल, पुट्ठे, स्तन इत्यादिकी गाठोंका बढना, ग्रन्थियोका फूलना, गाँठें पत्थरकी तरह कडीं, इनके अलावा उपदंश या सूजाककी वजहसे बाघी निकलने और वह बहुत

कड़ी रहनेपर इसका व्यवहार होता है। बाघी चिरवाने बाद अगर जख्म न सूखे या उसके किनारे बहुत कड़े रहें तो इससे बहुत जल्द फायदा होगा। बैडियागा—नामक दवामें भी—कार्बो-एनिमेलिसकी तरहके ही लक्षण हैं, यह इसके समकक्ष है। बियुबोनियम—२०० या और भी ऊँची शक्ति एक मात्रा, पहली अवस्थामें सेवन करनेसे कितनी ही बाघियाँ दब जाती हैं। इसके अलावा—हिपर, सल्फर, मर्क्युरियस-आयोड, मर्क्युरियस-बिन-आयोड भी लक्षण भेदसे—ग्रन्थियोंका फूलना और बाघीमें फायदा करता है। (बेराइटा-म्यूर अध्याय देखिये)।

फेफड़ेकी बीमारी—निमोनिया, ब्राङ्काइटिस, यक्ष्मा इत्यादि बीमारियोंमें फेफड़ेके तन्तु-स्तर नष्ट होकर जब बलगम सड़कर बहुत बदबूदार हुए राखका या पीबकी तरह बलगम निकलने लगता है और इनके साथ ही—दम बन्द कर देनेवाली खाँसी, स्वरभंग, कलेजेमें ठण्डापनका भाव, दाहिने फेफड़ेपर बीमारीका हमला ज्यादा होना, दाहिनी ओर अधिक गहर (crackle) पड़ जाना इत्यादि लक्षण रहते हैं; उस समय—कार्बो-एनिमेलिस फायदा करता है। कार्बो-वेज—स्वरभंग, कलेजेमें जलन, गलेमें घरघराहट, श्वासमें कष्ट और सड़ा बदबूदार बलगम निकलना प्रभृति लक्षण हैं। प्लुरिसीकी बीमारीमें आराम हो जाने बाद छातीमें सुई गड़नेकी तरह दर्द रहनेपर—कार्बो-एनिमेलिस फायदा करता है। (कैनाम-बच्चो, कैलि-कार्ब)।

बदहजमी—बच्चा जबतक स्तनका दूध पीता रहता है, तबतक प्रसूताको अजीर्णकी बीमारी रहती है, कुछ खानेपर अगर पेटकी बीमारी हो और पेटका दर्द आदि बढ़ जाये और यह तकलीफ शान्ति अगर दबाने या जोरसे हाथसे मलनेपर घटे तो—कार्बो-एनिमिलिससे फायदा होता है।

कमजोरी—लगातार पुट्ठे, वाघी और दूसरी दूसरी गाँठोंमें पीव होकर शरीर बहुत कमजोर हो पड़े या प्रसूतिके शरीर से कोई पतला स्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलकर वह धीरे धीरे रक्तहीन हो जाये तो पहले—कार्बो-एनिमेलिसको ही स्मरण करना चाहिये।

कैन्सर—स्तनका कैन्सर या जरायुके कैन्सरमें यदि गाँठें फूलीं और जरायु-ग्रीवामें बहुत अधिक कड़ापन रहे तथा बहुत जलन और तकलीफके साथ जरायुसे खूनका स्राव हो, और उसके साथ ही किसी दूसरी तरहका भी बदबूदार स्राव निकलता हो तो—कार्बो-एनिमेलिस फायदा करता है। जो स्त्रियाँ बहुत कम-जोर रहती है, उनके जरायुमें अर्बुद (टियुमर) या किसी दूसरी तरहकी सूजन रहना और इसके साथ ही जलन करनेवाला दर्द और साथ ही साथ ऋतुमें गड़बड़ी इत्यादि लक्षण सब रहनेपर इससे फायदा होगा। लिवरका कैन्सर—यकृतमें काटने-फाड़नेकी तरह दर्द, इसी वजहसे सो नहीं सकता। यकृत फूला हुआ, ऐसा मालूम

होता है, मानो वायुसे भर रहा है, पेट फूल उठता है, पेटके ऊपर वाली शिराएँ सब दिखाई देती हैं।

एस्टिरियस-रियुबेन्स—६, स्त्रियोंके स्तन और बगलकी गांठोंका फूलना, उसमें तीर गड जानेकी तरह दर्द, स्तन के कैन्सर और घाये स्तनके स्नायुशूलकी यह बहुत बढिया दवा है।

स्त्री-रोग—ऋतुस्रावका रंग काला, कभी कभी मात्रामें बहुत थोड़ा, कभी कभी जल्दी जल्दी और बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव होता है। रोगिनी बहुत कमजोर हो पडती है। अगर ऋतु बन्द होकर कोई तकलीफ देनेवाला उपसर्ग पैदा हो जाय तो भी इससे फायदा होगा। रोगिनी क्रमश: दुखित और उदास रहती है। हमेशा अकेली रहना पसन्द करती है, पाकस्थली—उसे खाली मालूम होती है और बहुत कमजोरी हो जाती है। कार्बो-एनिमेलिसमें—दाहिने डिम्बकोषमें (R ovary) बीमारी ज्यादा होती है। डिम्बकोष क्रमश: खूब कड़ा हो जाता है, भारी और एक गोलेकी तरह बन जाता है। जरायु-प्रदाह (Metritis) की बीमारीमें—जरायु-ग्रीवा कड़ी होती जाती है, इसके बाद अर्बुद (टियुमर) और टियुमरके बाद कर्कट (Cancer) पैदा हो जाता है। बदबूदार स्राव निकला करता है और योनिदेश आगकी तरह जला करता है।

उपदंश—रागके अपव्यवहारके बाद यह बीमारी होनेपर कांखी तथा दूसरी गाँठोंमें कड़ा सूजन रहे और रोगी और

धीरे क्रमश रक्तहीन होता जाये, तो कार्बो-एनिमेलिस फायदा करता है। किसीके मुँह या शरीर पर ताँवेके रंगके छोटे-छोटे अनगिनती फोड़े अगर निकल आये तो इससे फायदा होगा।

वृद्धि (aggravation)—हजामत बनवाने बाद, छूनेपर, दो पहरमें, आधी रातके बाद।

सम्बन्ध—ग्रन्थि-रोगमें—केल्केरिया-फास। सड़ी मछली खाने पर—सिपि।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, ब्रायो, एसिड-नाइट्रि, फास, पल्स, सिपि, सिलि, सल्फ, वेरट।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैम्फर, नक्स, शराब।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—७।

कार्बो वेजिटेबिलिस।

(CARBO VEGETABILIS)

(उद्भिज-कार्बन—काठका कोयला)—शरीरका कोई रस या तरल पदार्थ क्षय हो जानेकी वजहसे जीवनी-शक्तिका घट जाना, सान्निपातिक ज्वर और हैजाके अन्तिम कालकी सुस्ती, ठण्डा पसीना, समूचा शरीर और निकली हुई साँसतक ठण्डी, नाड़ी लोप, पेटमें वायु-सञ्चय, पेट फूलना, किसी बीमारीमें लगातार

पखेकी हवा खानेकी इच्छा, रक्तस्राव इत्यादि। इसके—प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं।

दूसरे दूसरे कई लक्षण —

१। बहुत ज्यादा ऋतुस्रावकी वजहसे जीवनी-शक्तिका घट जाना, २। मसूढ़े अलग, जरासेमें ही खून निकल आता है, ३। रोगी वही खाना चाहता है, जिसके खानेसे बीमारी बढ़ती है; ४। डकार आनेपर पेटका फूलना कुछ देरके लिये घट जाता है, ५। शरीरमें खूनके दौरानमें बाधा पड़ कर चमड़ेका नीला हो जाना और शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाना; शीत आ जाना ६। लगातार अनजानमें सड़ी बदबू भरे दस्त आना। इसके बाद मलद्वारमें जलन, दस्त ढीला भी बड़ी तकलीफसे निकलता है; ७। अतिसारके साथ ही साथ पेट फूलना; ८। अँधेरेमें भय, भूतका भय; ९। एकाएक स्मरण शक्तिका घट जाना; १०। रोगी दुबला, मोटा और आलसी; ११। प्रमेह, सड़े जखम।

जब यह देखा, कि—पहलेकी कोई कड़ी बीमारी भोगनेके बाद से रोगी अच्छी तरह एकदम आरोग्य न हो सका; बचोंकी हूप खाँसी या छोटी माताकी बीमारीके बादसे ही, दमा पैदा हो गया है; बहुत ज्यादा शराब आदि पीनेके कारण मन्दाग्नि—डिस्पेप्सिया; गिर जानेके कारण बहुत दिन पहलेकी चोटका दुष्परिणाम, सविराम ज्वरमें बाक, ममरू, पिनाहन, नमकीन मछली, मांस, चर्बी, इत्यादिके बहुत अधिक व्यवहार करनेके कारण कोई नयी बीमारी

का पैदा हो जाना। इस समय आपके रोगीकी सबसे पहली दवा
कार्बो-वेज होगी।

किसी बीमारीकी अन्तिम अवस्थामे, जब जीवनी शक्ति प्र
समाप्त होती जाती है, साँस और समूचा शरीर ठण्डा रहता
पर माथा गरम, नाड़ी लोप या सूतकी तरह चीण, नाडी बं
बीचमे रुक रुक कर चलती है। बहुत ज्यादा पसीना, गले
आवाज बेठी, ये लक्षण दिखाई दें, उस समय किसी ओर
ध्यान न देकर तुरन्त—कार्बो-वेजका प्रयोग करे।

हैजा—हैजाकी शीत आ जानेवाली अवस्थामे—कार्बो
उपयोगी है। आर्सेनिक आदिका प्रयोग करनेके बाद यदि
दिखाई दे, कि फायदा न होकर बीमारी क्रमश बढती
गयी है, और रोगीकी पूर्ण पतन अवस्था आ गयी है, ना
एकदम नहीं मिलती, रोगीमें अब करवट बदलनेकी भी ताक
नहीं है, अकड़न नहीं रहती (रहती भी है, तो बहुत थोड़ी), द
कै बन्द, कभी होशमे रहता है और कभी बेहोश, इसी तरह प
है, कष्टके साथ बहुत धीरे धीरे साँस छोडता है, रोगी सिर्फ पखे
हवाकी इच्छा करता है, हवा न मिलनेपर मानो उसकी साँस रु
जायगी, उस समय तुरन्त कार्बोवेजका प्रयोग करें। इसके अला
जब रोगीकी अगुली, नाक, गाल, जीभ यहाँतक कि साँसतक ठण्ड
रहती है, स्वरभग, बोल नहीं सकता, तो उस समय भी—कार्बो
वेज फायदा करता है, हिमांग अवस्थामे भी यदि दस्त के अधिक हों
और उस समय पेटमे किसी तरहका दर्द न रहे, तो यह—

रिसिनसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करें। इस हिमांग अवस्थामें कैम्फर भी फायदा करता है, पर कैम्फरका हिमाग—दो एक बार दस्त कैके बाद एकदम सारे शरीरमें ठण्डा पसीना होकर नाड़ी छूट जाती है और लगातार दस्त कै होकर क्रमशः जो हिमांग अवस्था आ पहुँचती है, नाड़ी नहीं मिलती, उसमें—कार्बोवेज फायदा करता है।

जीभ—टाइफायड और पीत-ज्वरकी आखिरी हालतमें—कार्बोकी जीभ—सूखी, काली रहती है और ऊपर बताये रोगोंमें—पीली और फटी फटी तथा ठण्डी रहती है।

पेट-फूलना—पेटमें वायु इकट्ठा होकर पेट फूलता है। इससे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा। पेटमें शूलके दर्दकी तरह दर्द और तकलीफ रहती है, यह तकलीफ सोनेपर बढ़ जाती है। यदि अतिसारके साथ पेट फूलनेकी बीमारी रहे—कार्बो-वेज (नक्स-वोमिका), फस्जियन या खट्टे मलके साथ पेट फूलनेका भाव रहे—लाइकोपोडियम और पेटमें बहुत वायु होकर पेट फूलता हो तो—एसाफिटिडा फायदा करता है। अगर ऊपर या नीचेवाली, किसी भी राहसे वायु न निकलता हो तो रैफनस-सैटाइवा फायदा करता है। पर यह याद रखना चाहिये, कि, कार्बोवेज—आँतोंमें बहुत ज्यादा वायु इकट्ठा हो जानेके कारण पेटका अधिकांश हिस्सा फूलता है। लाइकोपोडियममें—पाकस्थली में बहुत अधिक वायु इकट्ठा होनेके कारण पेटका ऊपरी भाग, तथा

है (लाइकोपोडियम अध्याय देखिये) और चायनामें—ऊपरक
और नीचेका दोनो ही भाग अर्थात् समूचा पेट फूलता है। कार्बोमि-
पेटमें वायु होनेके साथ कभी कभी कब्जियत भी रहती है, इ
वायु या डकारमें एक तरहकी बुद या बदबू रहती है। धुद डक
में—स्टेनमकी एक ही मात्रासे कितनी ही वार फायदा होता है
कार्बोमि सहजमें ही डकार नहीं आती, पर डकार आनेपर उपस
बहुत कुछ घट जाते हैं। चायनामें डकार आनेपर कष्ट देनेवा
उपसर्ग और भी बढ जाते हैं। (कार्बोका डकार निचले परिच्छेद
देखिये)।

बदहजमी—जो एकदम नियममें नहीं रहते और शरा
पीना, रातमें जगना, लम्पटता, बहुत अधिक इन्द्रिय-सेवन इत्यादि
की वजहसे अजीर्ण रोग भोगा करते हैं, उनकी बीमारीमें—नक्स
वोमिका और कार्बो दोनो ही फायदा करते हैं। नक्ससे—को
फायदा न होनेपर—कार्बो-वेजका प्रयोग करना चाहिये। कार्बोमि
भी—बहुत दिनोतक रोग भोगता भोगता रोगी अन्तमें बहुत
चिडचिडा हो उठता है, पेटमें गडबडीकी वजहसे सरमें चक्कर आत
है, पहले—मांस, दूध और घीकी बनी चीजें, अन्तमें—साधारण
हलकी खानेकी चीजें भी सहन नहीं होतीं, पेट फूलता है, कब्ज
हो जाता है और बवासीर हो जाता है। कार्बोवेजमें—रोगीके
भीतरी भागमें आर्सेनिककी अपेक्षा भी ज्यादा जलन होती है, पर
उसमें आर्सेनिककी तरह छटपटी, भीतरी दाह इत्यादि लक्षण नहीं

रहते, घबराना तथा सुस्तपनका भाव ही अधिक रहता है। कार्बो के रोगीकी डकारमें, या मुँहमें सड़ी गन्ध, धुन्द गन्ध या तीता स्वाद रहता है और लाइकोपोडियम में—खट्टा स्वाद रहता है। डा० वियर्न कहते हैं—पेटमें बहुत वायु इकट्ठा होना और पेट फूलनेके साथ खट्टी डकार आना, बड़ी तकलीफसे डकार आना, डकार आनेपर तकलीफका कुछ घटना—इस लक्षणमें भी कार्बो फायदा करता है। कार्बोमें भोजनके प्राय एक घण्टा बाद पेट और पाकस्थली मशककी तरह फूल उठती है, छातीमें जलन होती है, खानेकी कोई भी चीज हजम नहीं होती, बहुत हल्की आहार सामग्री भी ऐसा मालूम होता है, मानो भाफमें बदल गयी है। लाइकोपोडियममें—भोजन करते करते या भोजन कर उठनेके साथ ही पेट फूल जाता है।

रक्तस्राव—बहुत ज्यादा रक्तस्राव होनेकी वजहसे कमजोरीमें और पाकस्थली मूत्राशय, फेफड़ा, नाक इत्यादि, चाहे किसी भी जगहसे खून क्यों न आता हो, तथा सांघातिक रक्तहीनता (पर्निशस एनिमिया) वगैरह, टाइफायड इत्यादि कोई भी बीमारी क्यों न हो, यदि उसके साथ ही शीत आ जाने (हिमांग) का भाव रहे, हाथ-पैर ठण्डे हो जाय, मुर्देकी तरह चेहरा दिखाई दे, तो तुरन्त कार्बो-वेज देना चाहिये। चायनाका लक्षण इतना गुरुतर नहीं होता, बहुत ज्यादा खूनकी वजहसे कमजोरीमें—चायना, और बहुत रस आनेकी वजहसे कमजोरीमें—कार्बो-वेज ज्यादा फायदा करता है।

ऐसी जगहपर यह ब्राण्डी प्रभृति सब तरहकी बलकारक दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा और तुरन्त फायदा करता है। दाँतकी जड अलग होकर अगर उससे रक्तस्राव होता हो, तो कार्बो-वेज फायदा करता है (ट्रिलियम देखिये)। कार्बो-वेजमें—कितनी ही बार रक्तका थक्का (clot) नहीं बँधता, इसलिये, चूता हुआ निकलता है। जखमसे सहजमें ही रक्तस्राव—फास्फोरस। कार्बो-वेजका रक्त आक्सिजेन न मिलनेके कारण काला दिखाई देता है।

दमा-खाँसी—छोटी माताके समयकी या बचपनकी हूप खाँसीके बादसे अगर यह बीमारी आरम्भ हुई हो तो—कार्बो वेज फायदा करता है।

खाँसी—गलनलीमें उपदाहकी वजहसे आक्षेपिक धमककी तरह खाँसी, लगातार खाँसनेकी इच्छा, खाँसीके साथ ही साथ कलेजा मानो जकड जाता है। कार्बोकी खाँसी गरमीसे या गरम घरमें घुसनेपर बहुत कुछ घट जाती है। डा० लिपि कहते हैं—इसकी खाँसी कोई ठण्डी चीज खाने पीने या भोजनके बाद ही बढती है।

स्वरभंग—इस बीमारीमें हमेशा कार्बोवेज,फास्फोरस, जेलसिमियम, कास्टिकम, सलफर, इयुपेटोरियम इत्यादि दवाओंका व्यवहार होता है। सूखी खाँसीके साथ सध्याके समय स्वरभग में—कार्बो और फास्फोरस, सवेरेके स्वरभगमे—सलफर और कास्टिकम। कास्टिकम ही स्वरभङ्गकी सबसे प्रधान दवा है। अगर

जाडेके दिनोंमें स्वरभङ्ग बढे तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है। कार्बोका स्वरभङ्ग—साधारणतः बरसातमें बढता है। बढ़नेमें कूढ़के साथ स्वरभङ्गमें—युपेटोरियम पर्फो फायदा करता है।

जखम—कार्बोका जखम गहरा, जखममें बहुत जलन और तकलीफ, तकलीफ और जलन रातमें बढती है तथा घाव धीरे धीरे ऊपरकी ओर फैलता है। आर्सेनिककी जलनमें—बहुत छट-पटी और भीतरी तकलीफ रहती है, कोई भी जखम या कार्बङ्कल अगर बढ़लकर गैंग्रीन हो जाये अर्थात सड़ने लगे तो कार्बोविज फायदा करता है। (लैकेसिस देखिये)।

स्त्री-रोग—ऋतुस्रावमें सडी बदबू आती है। ऋतुस्रावमें या श्वेतप्रदरके स्रावमें योनि-देशकी खाल उघड जाती है, योनिमें जखम हो जाता है, बहुत कुड़कुड़ी पैदा हो जाती है, खुजली होती है और जलन हो जाती है। दाहिनी ओरके डिम्बकोषमें (ovary) दर्द और भार मालूम होना, जरायु-मुख (os uteri) सूजन,—इन लक्षणोंमें कार्बो-वेज लाभ करता है। इसमें ऋतुस्राव जल्दी जल्दी और परिमाणमें भी ज्यादा होता है।

कमजोरी—शरीरकी किसी भी जगहसे रस-रक्त निकल कर अधिक दिनोंतक सन्तानको स्तन पिलानेपर, फेफड़ेकी किसी बीमारीमें बहुत ज्यादा बलगम निकलकर, बहुत दिनोंतक अति-सार भोगनेकी वजहसे या अधिक रति-क्रिया करनेके कारण अथवा बहुत दिनोंतक इस्तमैथुनकी वजहसे अगर लगातार शरीर दुर्बल और जीर्ण-शीर्ण हो पड़े तो—कार्बो-वेज महौषधि है।

सर-दर्द—माथा मानो भारी बोझ, ऐसा मालूम होता है, मानो माथेको कोई एक भारी चीज दबाए हुए है, सर मानो एक कपडेसे कस कर बँधा हुआ है।

केश झड़ना—किसी कडी बीमारीके बाद या प्रसवके बाद सरके केश झड जानेपर (कैल्के, लाइको, चायना, फेरम, साइलि) फायदा करता है।

कानकी बीमारी—बहरा हो जाता है, छोटी माता या आरक्त ज्वरके बाद, कानमें सूखापन पैदा हो जानेपर, पतला बदबूदार पीबका स्राव होनेकी वजहसे, मध्य कानमें पीब पैदा होनेके निमित्त या कानमें बहुत मैल जमनेके कारण कोई यदि बहरा हो जाये तो कार्बो-वेज फायदा करता है।

दाँतकी बीमारी—दाँतके मसूढेमें स्पजकी तरह छेद हो जाता है, उसमें दर्द, मसूढ़ेका मास हट कर (retracted) दाँतकी जड अगर बाहर निकल आये, ऊपर उठा दाँत, चूसने या दाँत साफ करनेके लिये दाँतन करनेपर अगर खून निकलने लगे और क्रमश दाँतकी जड अलग हो जाये, दाँत गिर जाये (उठे दाँत—बेल, नक्स, साइलि) तो कार्बो-वेज उपयोगी है।

सविराम ज्वर—शीतावस्थामें—पैरसे घुटनेतक ठण्डक, हाथके नख नीले, प्यास। उत्तापवाली अवस्थामें अर्थात बोखार चढनेपर—प्यास नहीं रहती, बदनमें भयानक जलन होती है, पसीना बदबूदार होता है या उसमें खट्टी गन्ध रहती है, इस लक्षणमें—

कार्बो-वेज फायदा करता है। जो ज्वर ज्यादा जोरका नहीं होता—पर रोगीको बहुत दिनोंसे भोगा रहा है, अधिक मात्रामें क्विनाइन सेवन करनेपर भी जो बन्द नहीं होता है, उसमें भी कार्बो-वेज फायदा करता है। पीबसे पैदा हुआ (Pyæmia) अगर खून विषैला हो जाये और हेक्टिक ज्वर, पीत ज्वर या टाइफायड ज्वरकी हिमाग अवस्थामें—कार्बो-वेज विशेष फायदा करता है।

हेक्टिक ज्वर—कोई भी जख्म यदि किसी तरह आराम न होकर, बहुत दिनोंतक पीब बहता रहे और उस पीबकी वजहसे खून दूषित होकर हेक्टिक ज्वर होता रहे तो—कार्बो फायदा करता है। (एचिनेशिया)

वृद्धि (aggravation)—मक्खन, चर्बी-मिला मांस, सड़ी मछली खाने; क्विनाइन, सिनकोना और पारेके अपव्यवहारमें, उष्णीय वायुमें।

ह्रास (amelioration)—डकार आनेपर, पंखेकी हवामें और निर्मल वायु लगनेपर।

सम्बन्ध और पारकी दवाएँ—शराबियोंके फेफड़ेके प्रदाहमें—सिङ्कोना और एण्टिम। ठीक परिणाम न दिखा कर फेफड़ेके पक्षाघातमें—एण्टिमके बाद कार्बो और खून निकलनेपर कार्बोके बाद फास्फोरस। सड़ा मांस आदि खानेपर—सिनकोना और ईके-सिन—कार्बोके मददगार हैं। पर क्विनाइनके अपव्यवहारके बाद—कार्बो-वेज और कार्बोके बाद चायना ज्यादा फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैम्फर, काफि, लैके।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—७।

कार्डुयस मेरियैनस।

(CARDUUS MARIANUS)

(यूरोपके एक तरहके पके फलके बीजसे टिंचर तैयार होता है)—यकृत, यकृतकी शिरा और धमनी आदिके (portal system) ऊपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। शिराका फूलना (varicosis) और इसी वजहसे पैदा हुए जखम आदिमें भी इसका व्यवहार होता है। यकृतकी बीमारीकी अन्तिम अवस्था में कितने ही रोगी फूल जाते हैं—कार्डुयस ही उसकी सबसे बढिया दवा है। सम्भवत: एपोसाइनम, एपिस प्रभृति दवाओंकी अपेक्षा भी इससे ज्यादा फायदा होगा।

पेशाबकी बीमारी—किसी भी बीमारीमें पेशाबका रंग धुएँकी तरह (cloudy), गदला या पक्के सोनेकी तरह पीला (चेलिडोनियममें भी यही लक्षण है) होनेपर—कार्डुयसका प्रयोग करना चाहिये। पेशाबका परिमाण कम।

वक्षःस्थलकी बीमारी—छातीके दाहिनी ओरके नीचे वाले पँजरेके भीतर और सामनेकी ओर सुई गडनेकी तरह दर्द,

हिलने-डोलने या चलनेपर यह दर्द बढता है। कभी कभी छातीमें दर्द—कन्धा, पीठ, पेट और कमरमें चला जाता है।

यकृत, पित्त-पथरी और पिलई—लाइकोपोडियम अध्यायमें पथरी रोग देखिये।

खाँसी—कलेजेके पास दर्दके साथ होनेवाली खाँसीमें और यकृतके दोषकी वजहसे खाँसनेपर—कार्डुयस लाभ करता है।

सदृश—ब्रायो, मर्क्युरियस, चेलिडोन, पोडो, फ्लो प्रभृति।

क्रम—ɸ से निम्न-शक्ति। फारमुला—फार्माकोपिया देखिये।

केरिका पेपेया।

(CARICA PAPAYA)

(कच्चे पपीतेके गादसे यह तैयार होती है)—साधारणतः अजीर्ण और पेशाब-सम्बन्धी बीमारियोंमें ही इससे ज्यादा फायदा होता दिखाई देता है। अजीर्ण रोगमें—जब रोगी कुछ नहीं खाता और बहुत कमजोर हो पड़ता है या सुस्त हो जाता है और खानेपर कुछ पचता भी नहीं होता, खानेकी चीज पेटमें जाते ही बीमारी पैदा कर देती है, पेटमें दर्द होता है, जो खाता है, वही कैके साथ निकल जाता है, रोगी धीरे धीरे बहुत दुबला हो जाता है, बिना इच्छाकी डकारें आती हैं, प्यास लगनेपर भी पानी पीनेसे डरता है,

उस समय इसका—⅙, २।३ बूँद मात्रामें प्रत्येक बार भोजनके बाद ही सेवन करनेपर बहुत फायदा होता है। पेशावकी बीमारी में—सवेरे पहली बार पेशाब करनेके समय रोगीको बहुत जोर देना पडता है, तब कहीं पेशाव उतरता है। ऐसा मालूम होता है, मानो भीतर कुछ अडा हुआ है, पेशाबके वेगके साथ मसानेमें दर्द, पेशाव करनेके समय और पेशाव करनेके बाद जलन और जल्दी जल्दी पेशाब लगता है। पेरिनियमसे (मलद्वारके पासके स्थानसे) लिङ्गकी जडतक बहुत भयानक दर्द। ऐसा मालूम होता है, मानो कुछ बडे जोरसे बाहर निकलनेकी चेष्टा कर रहा है। बाएँ अण्डकोषमें दर्द, (इयुवा, बार्वेरिस), दाँतके दर्दमें भी—यह फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation) दाँतका दर्द—ठण्डे पानीसे, वमन, मिचली—भोजनसे, खुजली—बिछावनकी गरमीसे, दर्द आदि—सन्ध्यामें।

क्रम—३x शक्ति। फारमुला—३।

कार्लसबाड साल्ज़ ।

(CARLSBAD SALZ)

(कार्लसबाड झरनेका पानी)—यकृतपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। मोटापन, कब्ज, वात और बहुमूत्रकी बीमारीमें ही यह

पानी काममें आता है। होमियोपैथिक रीतिसे शक्तिकृत होनेपर—यह शरीरके भीतरके सभी यन्त्रोंकी कमजोरी, कब्जियत और सर्दी लग जानेका अभ्यास दूर कर देता है। जब किसी तरहकी पेशाब की बीमारीमें—स्राव बहुत धीरे धीरे और पतली धारमें निकलता है, तलपेटको दबाये बिना पेशाब होता ही नहीं और कब्जकी बीमारीमें—बहुत तकलीफसे मल बाहर निकलता है, पेट दबाये बिना पाखाना ही नहीं होता, मलद्वारमें जलन होती है। बवासीरसे खून निकलता है। पाखाना काला होता है, उस समय इससे ज्यादा फायदा होता है।

सदृश—नैट्रम-सल्फ, नक्स-वोमिका। क्रम—निम्न शक्ति।

कैस्केरिला।

(CASCARILLA)

(भूसी छालसे टिंचर तैयार होता है)—पाचन-यन्त्रपर ही इसकी मुख्य क्रिया होती है। इसका एक विशेष लक्षण है—लगातार वमन करनेकी इच्छा, होमियोपैथीमें बहुतसे आदमी इसे अधिकतर व्यवहार करते हैं जब यह देखें कि—कब्जियतमें मल कड़ा और गांठ गांठ हो रहा है, उसमें आम लिपटी हुई है (ग्रैफाइटिस, कास्टिकमकी तरह), इसके साथ ही पेटमें पेंठनका दर्द, पेटमें जलन, पाखानेके साथ ताजा खून, कमरमें दर्द या कभी पतले

दस्त और कभी ऊपर बताये ढगका कब्ज रहता है, तब इससे फायदा होता है।

क्रम १ म—३ री शक्ति। फारमुला—४,

कैस्टोरियम।

(CASTOREUM)

(बीवर नामक एक प्रकारके जन्तुकी योनिसे इसका संग्रह किया जाता है।) यह स्त्रियोंकी कितनी ही बीमारियाँ, जैसे-हिस्टिरिया और बहुत ही कष्टदायक बाधकका दर्द, बूँद बूँद कर रज-स्राव, रज स्रावका एकदम बन्द हो जाना, इसके साथ ही पेट फूलना, पेटमे वायु, पेटमे दर्द, कमजोर और स्नायु-प्रधान स्त्रियोंका हमेशा ही उत्तेजित भाव, जरा-सेमें ही पसीना हो जाना, दिनौंधी रोगमें आँखामे रोशनी सहन न होना, किसी बीमारीमें हमेशा ही जम्हाई आना, इस तरहकी कितनी ही बीमारियोंमें इसका हमेशा व्यवहार होता है।

सदृश—मस्कस, वैलेरियाना, एम्ब्राग्रिसिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—कोलचिकम।

क्रम—ϕ, ३, ६, ३० शक्ति।

फारमुला—त्रिचूर्ण—७। टिंचर—४।

कालोफाइलम थैलिक्टरायडिस ।

(CAULOPHYLLUM TAHLICTROIDES)

(एक तरहके छोटे पौधेकी जड़से यह दवा तैयार होती है)—साधारणतः जरायु ही इस दवाका प्रधान स्थान है , प्रसवके समय और प्रसवके बाद जबतक सन्तान स्तनका दूध पीती रहती है, तबतक प्रसूतिको अकसर किसी न किसी तरहकी बीमारी लगी ही रहती है। इसमें—कालोफाइलम ज्यादा फायदा करता (कार्बो-एनिमेलिस)। सिमिसिफ्यूगाकी तरह यह भी प्रसवके कुछ दिन पहलेसे ही व्यवहार करनेपर, बड़े आरामसे प्रसव हो जाता है और प्रसवकी क्रिया जल्दी जल्दी ही हुआ करती है। प्रसूताकी कई बीमारीके लिये—बेलेडोना अध्यायमें "सूतिका" देखिये।

चरित्रगत लक्षण —

छोटी छोटी सन्धियोंका वात (स्त्रियोंको ज्यादा होनेपर फायदा करता है।)। २। जगह बदलनेवाला दर्द (पल्स, कैलि बाइक्रोमकी तरह) और रोगग्रस्त सन्धिकी जकड़न। ३। रह रहकर होनेवाला आक्षेपिक प्रसवका दर्द। ४। बहुत थोड़ी देरतक ठहरनेवाला अनियमित प्रसवका दर्द। ५। देरसे प्रसव, जरायुका मुँह कड़ा और इसी कारणसे बहुत देरतक दर्द होनेपर भी प्रसव नहीं होता। ६। बहुत थोड़े समयतक दर्द होकर ही प्रसव हो जाना और बहुत

अधिक रक्तस्राव (हिमेरेज) और प्रसवके बाद जरायुका स्वाभा विक रीतिसे सकुचित न होना, ७। प्रसवके बाद जरायुका शिथिल हो जाना और इसी वजहसे बहुत दिनोंतक प्रसवान्तिक स्राव होते रहना, ८। जरायुकी कमजोरीकी वजहसे प्रत्येक बार गर्भ-स्राव, ६। रक्तप्रदर, इसके साथ ही पेटमें शूलका भयकर दर्द।

बाधकका दर्द—ऋतुस्रावके समय अगर इस बीमारीमें कमरसे तलपेटकेनिचले अशकी अस्थि अर्थात प्यूबिसतक दर्द चला जाये और यह दर्द सविराम अर्थात् रह रहकर हो, तो रज:शूल हो या रक्तप्रदर—कालोफाइलमसे अवश्य ही फायदा होगा। जरायुका सकोचन दूर करनेकी इसमें बहुत बडी ताकत है। मैग्नेशिया-म्यूर मे—दर्दसे पेट मानो खिचा और अकडा रहता है, इसके साथ ही सर-दर्द और गांठ गांठ दस्त हुआ करता है। मैग्नेशिया-फासमें— दर्द गर्म प्रयोगसे और ऋतुस्राव आरम्भ होनेपर घट जाता है।

द्रष्टव्य :—बाधकका दर्द हो, या दर्दके साथ ऋतुस्राव थोडा होता हो, या परिमाणमें बहुत ज्यादा होता हो, स्त्रियोंके ऋतुस्रावके समयके बहुत तरहके दर्दोंमें—कालोफाइलम—ϕ या १x शक्तिका २।१ बूँद, थोडे पानीके साथ एक घण्टेका अन्तर देकर, ५।६ बार सेवन करानेपर तेज दर्द भी तुरन्त घट जाता है। इसकी हम बहुत बार परीक्षा कर चुके है (बाइबर्नम देखिये)।

प्रदर—कालोफाइलम—श्वेतप्रदर और रक्तप्रदर दोनों तरहके प्रदरमे ही फायदा करता है। छोटी छोटी लडकियोंके

गर्भ-स्राव—जरायुकी कमजोरीकी वजहसे जिन्हें अकसर गर्भ-स्राव हो जाया करता है, उनको गर्भस्रावकी सम्भावना हो जानेपर और जरायु तथा तलपेटमें दर्दके साथ कुछ न कुछ रक्तस्राव होते रहनेपर—कालोफाइलमसे अवश्य फायदा होगा। (सेबाइना अध्याय देखिये)

वात—अँगुलीका वात, वह हाथमें हो या पैरमें हो,—कालोफाइलमसे लाभ होगा। कालोफाइलमकी तरह अँगुलीका वात, सूजन और दर्द—सबाइना भी फायदा करता है, पर सैबाइना सिर्फ अँगुलीके और हाथकी कलाईके वातमें फायदेमन्द है। कालोफाइलम—नन्हीं अँगुली और गाँठोंपर वातका हमला होता है। रजःस्रावके साथ अगर अँगूठे और कलाईमें वात हो—कालोफाइलम फायदा करेगा ही। वायोला-ओडोरेटामें—कलाईके वातमें दाहिने हाथकी कलाईपर बीमारीका आक्रमण होता है, अँगूठेपर नहीं होता। रूटा और मिकूमें—दोनों हाथोंकी कलाइयों और दोनों पैरोंकी कलाईपर वातका आक्रमण होता है। शरीरके भिन्न भिन्न अङ्गोंमें वात होनेपर —

दाहिने कन्धेका पेशी-वात (R deltoid)—कास्टिकम, मैग्नेशिया-कार्ब, मैग्नेशिया-फास, स्टैनम, सैंगुनेरिया।

बांये कन्धेका पेशी-वात (L deltoid)—सिमिसि, फेरम, रसटक्स।

पैरके तलवेमें वात (feet)—लीडम, फाइटोलक्का।

प्रसवके दर्दमे—जरायुमुख (os-uteri) बहुत कडा, दर्द क्षीण या आक्षेपिक और तकलीफ देनेवाला, दर्द रह-रहकर और घटने वढनेवाला, अर्थात एक वार हुआ फिर छूट गया, फिर हुआ, फिर छूट गया, इसी तरह वरावर होता है और छूट जाता है और यह दर्द एक वार यहाँ और एक वार वहाँ अर्थात—कभी पेटमें, कभी छातीमें, कभी पुट्ठेमे, कभी कभी पीठमें, इसी तरह लगातार जगह बदलकर घूमता फिरता है। जो हो, यह दर्द, वहुत ही तकलीफ देनेवाला होता है, रोगिनीके लिये वह असह्य हो जाता है और वह तकलीफसे रोने लगती है। इसमें जच्चा इतनी कमजोर हो जाती है, कि वोल नहीं सकती, नवे महीने या प्रसवके कुछ दिन या कुछ हफ्ते पहले, नकली प्रसवका दर्द होनेपर इसकी दो एक मात्रा प्रयोग होनेपर बहुत ज्यादा फायदा होते देखा गया है। अगर दर्द वहुत ही आक्षेपिक हो तो इसकी निम्न-शक्ति—१x, १ घण्टेके अन्तरसे, जवतक फायदा न हो, तबतक कई मात्रा प्रयोग करनी चाहिये।

प्रसवके वादकी वीमारी—प्रसवके बाद अगर जरायु अपने स्वाभाविक आकारमें न आ जाये अथवा बडा होनेका भाव कुछ भी न घटे (Sub-involution of the uterus) तो—कालोफाइलम फायदा करता है। इसके साथ ही रोगिनी बहुत कमजोर हो पडती है; उसके शरीरमें विलकुल ही ताकत नहीं रह जाती।

चर्मपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। कास्टिकमकी क्रिया शरीरके दाहिने अशपर अधिक होती है।

चरित्रगत लक्षण :—

१। दूसरेकी तकलीफ देखकर भीतर तकलीफका अनुभव होना ; २। हमेशा ही दुखित, विमर्ष, और निराश, बहुत साधारण-सी बातमें भी बच्चोंका तरह चिल्लाकर रोना ; ३। पुराना शोक, नींद न आना, रातका जागरण, एकाएक भय, आनन्द, क्रोध, और छिपे हुए चर्म-रोगकी वजहसे किसी बीमारीका पैदा हो जाना ; ४। बच्चे बहुत देरसे चलना सीखते हैं (कैल्कि-फास) ; ५। बार बार पाखानेका वेग, पर पाखाना नहीं होता, खड़े होकर खूब जोर से काँखनेपर कहीं पाखाना होता है ; ६। बच्चोंका बिछावनमें पेशाब कर देना ; ७। छींकने, खाँसने और चलनेके समय अनजानमें पेशाब निकल जाना ; ८। खाँसनेके समय छातीमें दर्द, इसीलिये, खाँसकर बलगम नहीं निकाल सकता, निगल जाता है। खाँसीका ठण्डा पानी पीनेपर घटना ; ९। हूप-खाँसीका तेज़ आक्षेप दूर होनेके बाद बची हुई खाँसी, खाँसनेके समय सिर्फ रातमें बलगम निकलता है ; १०। गलेमें जकड़नके दर्दके साथ गला अकड़ जाना, गवैयेके बक्त स्वरभंगका पड़ना (संध्याके समय घटना—कार्बो-वेज, फास) ; ११। रातमें किसी तरह भी सोनेपर आराम नहीं मिलता, हमेशा ही इधर उधर हिलता-डोलता रहता है ; १२। बहुत कमजोरी, बेहोशकी तरह हो जाता है, और काँपता है ; १३। अक्ष

छोटी छोटी सन्धियोंमें वातका दर्द—पपोसाइनम-प
(best remedies in rheumatic pains of small
all joints)

हाथका वात (hands)—एमोन-फास, एण्टिम-क्रूड,
बेञ्जो, कालोकाइलम, लाइकोपोडियम।

पॅडीमें वात (heels)—कोलचिकम, फाइटोलैका।

घुटनेका वात (knees)—एस्क्लिपियस, कालि
ब्रायोनिया, कैल्केरिया-कार्ब, चेलिडोनियम, सिमिसिफ्यूगा,
फास, आयोडम, कैलि-आयोड, लीडम, सेंग्वाइना, स्टिक्टा, गुये

सुजाककी वजहसे वात और गठिया वातमे—कोपेरा, अ
गुयेकम, आयोडम, मर्क-वाइवस, फाइटोलैका, पल्स,
थूजा, मेडोह्रिनम।

सदृश—एकटिया, वेल, लिलियम, पल्स, सिङ्कोना, थ्र
वाइवर्नम-ओपु, और वाइवर्नम-प्रूनि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ दिन।

क्रम—१x शक्ति। फार्मुला—

/ कास्टिकम।

(CAUSTICUM)

जलाया हुआ पत्थर (caustic lime) और बाई-फास
आफ पोटास मिलाकर यह तैयार किया जाता है और गला

जाती है, बीमारी पक्षाघातमें परिणत होती जाती है, तो—कास्टिकम ही फायदा करता है ; कास्टिकम—दाहिनी ओरके पक्षाघातमें ज्यादा फायदा करता है, और बायें अंगके पक्षाघातमें लैकेसिस; उपयोगी होता है। स्थानिक (किसी खास जगहका) पक्षाघातमें—जैसे मुँहका पक्षाघात, जीभका पक्षाघात, मूत्राशयका पक्षाघात, दोनों पैरोंका पक्षाघात, गलेकी पेशीका पक्षाघात इत्यादिमें भी कास्टिकम फायदा करता है। डा० हियुजेस कहतेहैं—एनाकार्डियम ओरियेण्टलिससे उन्होंने एक बार जीभका पक्षाघात आराम किया था।

आँखकी बीमारी—मोतियाबिन्दकी पहली अवस्थामें जब रोगीको आँखमें धुंधला दिखाई देता है, या कुहरा या बादल की तरह दिखाई पड़ता है, उस समय—कास्टिकमसे फायदा होता है। मोतियाबिन्दमें—साइलिसिया, फास्फोरस, कैल्केरिया-फ्लोर, कोनियम प्रभृति दवाएँ भी फायदा करती हैं। उनके लक्षण देखें। कास्टिकममें—रोगी पलक खोलकर नहीं रख सकता, हमेशा ही बन्द किये रहता है (पलकोंके पक्षाघातका यही लक्षण है)। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—मोतियाबिन्द (Cataract) में जहाँ कास्टिकम फायदा करता होता है, वहाँ रोगी हमेशा आँखपर हाथ रखता है, आँख रगड़ा करता है, क्योंकि उससे आँखका भार हल्का होता है।

कानकी बीमारी—कानसे अच्छी तरह सुन नहीं पड़ता, हमेशा ही कानमें आवाज भां भां, भों भों, हुन हुन, हु हु,

जानेवाले जखमके दागमे फिरसे दर्द होता है और पकता है, १४। रोगी कहता है, कि जल जाने बादसे उसका शरीर एक दिन भी अच्छा नहीं रहता, १५। रजःस्राव बहुत थोडा और बहुत देरसे होता है, रातमे सोते ही स्राव बन्द हो जाता है, १६। बहुत सर्दी लगकर पक्षाघात, दाहिनी ओरका पक्षाघात, शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंका पक्षाघात, टाइफायड, डिफ्थीरिया वगैरह बीमारियोंके बादसे धीरे धीरे पक्षाघातका पैदा हो जाना, १७। वातसे गाँठ अकडकर खिंची रहती है।

कास्टिकम—यह सलफर, सोरिनम, ग्रेफाइटिस, कैल्केरिया-कार्ब इत्यादिकी तरह एक सोरा-विष-नाशक दवा है, और फास्फोरसकी विरोधिनी है। इसीलिये, कास्टिकमके पहले या बाद फास्फोरसका व्यवहार मना है। कास्टिकमका रोगी बहुत डरपोक रहता है, और जरा-सेमें ही उद्विग्न हो जाता है। हमेशा ही मन्द-भाव और दुर्घटनाके सम्बन्धमे सोचा करता है। इसके रोगीमें मूत्रयंत्र या श्वासयंत्रकी कोई न कोई तकलीफ बनी ही रहती है। बच्चा बहुत देरसे चलना सीखता है। कास्टिकमके रोगीमें—अकसर खूनकी कमी और बहुत कमजोरी दिखाई देती है, यहाँतक कि उससे वह बेहोशकी तरह हो जाता है और काँपता। इस तरहकी कपकपी या कमजोरी—जेलसिमियममें है। इन दोनों दवाओंमे ही कमजोरीके साथ मानो आँखकी पलकें बन्द हुई जाती हैं, इसके अलावा पलकोंके गिर जाने या बन्द हो जानेका लक्षण—सिपिया में भी है, पर यदि यह देखनेमें आये कि कमजोरी क्रमशः बढती ही

बाद तब थोड़ा-सा बलगम निकलता है, और खाँसनेकी धमकसे कितनी ही बार पेशाब निकल जाता है। इसकी खाँसी थोड़ा-सा ठण्डा पानी पीनेसे ही दब जाती है, शामको बिछावनकी गरमीसे खाँसी बढ़ती है। रियुमेक्सकी खाँसीमें—गलेमें सुरसुरी होती है, पर उसम दर्द और अकड़नका भाव बिलकुल नहीं रहता।

स्वरभंग—गलेकी आवाज रुकी, इसके साथ ही गलेमें अकड़नका दर्द, रोगी चिल्लाकर या जोरसे बोल नहीं सकता, गलेकी आवाज मानो फँसी रहती है। कास्टिकममें—सबेरे स्वरभग बहुत बढ़ता है। सबेरेके स्वरभगमें (ड्रेसिमें) बहुत सूखापन और गलेकी आवाज भर्रायी रहती है, कुछ खाने पीनेपर या लगातार कुछ देरतक बात-चीत करनेपर यह भाव बहुत कुछ घट जाता है, इसके अलावा—इसमें रोगी समझता है, कि उसके गलेमें बलगम लिपटा हुआ है, इसीलिये, वह उसे बार बार निकाल फेंकनेकी चेष्टा करता है। फासफोरसमें—शामके वक्त स्वरभंग बढ़ता है, इसमें रोगी खाँसनेसे डरता है, क्योंकि उसमें स्वरनलीमें तकलीफ़ बढ़ती है (कार्यविध अध्याय देखिये), श्वासनलीकी कोई भी नयी बीमारी बीतने बाद और पुराना स्वरभग रोग सबेरे बढ़नेपर—कास्टिकम उपयोगी रहनेपर भी यदि उससे फायदा न हो,—सल्फर से फायदा होगा। वक्ता और गायकोंके स्वरभगमें—कास्टिकम और औरम्ट्रिफ दोनों दवायें ही लाभदायक है। डा० जी० हेरिंग कहते हैं—कास्टिकम बोलनेपर स्वरभंग बढ़ता है—फास्फोरसमें बोलनेपर स्वरभङ्ग बढ़ता है।

आवाज होती है। इस लक्षणमे—कास्टिकम फायदा करता है। कास्टिकममे—रोगीको अपने मुँहकी बात अपने ही कानोंमें गूँजने लगती है।

मुंहकी बीमारी—बातकी वजहसे चेहरेका पक्षाघात, रोगी मुँह नहीं फाड सकता, जबडे कडे हो जाते हैं,इस तरह जीभमें ही पक्षाघात हो जाया करता है, इससे खुलासा और स्पष्ट बात नहीं कर सकता। कास्टिकममे—जीभके पक्षाघातकी यही विशेषता है, कि बीचका भाग लाल रगका और किनारे सफेद रहते हैं, मुँह का भीतरी भाग कुछ पीली आभा लिये रहता है। सर्दी लगकर मुँहके एक ओरके या अर्द्धाङ्गके पक्षाघातमे भी—कास्टिकम फायदा करता है।

दाँतकी बीमारी—मसूढे फूल जाते हैं। मसूढे से सहजमे ही खून निकलता है दाँतमे दर्द होता है, दाँत हिलते हैं रोगी दाँत और निरोगी दोनोंमे ही दर्द होता है ठण्ड लगकर दाँतके दर्दमें कास्टिकम लाभदायक है।

गलनलीकी बीमारी और खाँसी—गलेके भीतर दर्द, अकडनका भाव और जलन—कास्टिकमका लक्षण है। पर यह जलन कोई भी चीज पीनेके या खानेके समय नहीं बढ़ती। सलफरमें भी—इसी तरहकी जलन है, पर सलफरसे फायदा न होनेपर—कास्टिकमसे फायदा हो सकता है। कास्टिकमकी खाँसीमें—गलेमें सुरसुरी होती है, गलेमें दर्द होता है, कितनी ही बार खाँसनेके

कब्जियत—कास्टिकममें—नक्सवोमिकाकी तरह बार बार पाखानेका वेग होता है, पर पाखाना नहीं होता। इसमें पाखाना होनेके समय रोगीको बहुत वेग देना पड़ता है, उसमें आँख-मुँह लाल हो जाते हैं, इसमें खड़े होकर पाखाना फिरनेपर सहजमें ही पाखाना हो जाता है; पर बैठनेपर बिल्कुल ही पाखाना नहीं होता। कास्टिकमका पाखाना—ठोस और कभी कभी उस पर सफेद चमकीला आमकी तरह एक प्रकारका पदार्थ लिपटा रहता है। ग्रफाइटिसमें भी—मलके ऊपर इसी तरहका पदार्थ लगा रहता है पर कास्टिकमकी तरह वेग, तकलीफ, खड़े होकर पाखाना फिरना इत्यादि लक्षण इसमें नहीं रहते। बहुतेरे बच्चोंकी यकृतकी बीमारीमें—कास्टिकमके लक्षणवाली कब्जियतके लक्षण स्पष्ट रहते हैं; अर्शकी बीमारी—रोगीको प्राय: कब्जियत रहती है; कास्टिकममें—रोगी सोचता है, मानो मस्सा मलद्वारमें अड़ा हुआ है। इसके अलावा—बवासीरमें अकड़नका दर्द, चभका, फूलना, खुजली, मलद्वारका भीतरी तरफ फूला इत्यादि लक्षण भी दिखाई देते हैं और ज़ोरसे बोलनेपर और चलने-फिरने रहने पर तकलीफ बढ़ती है।

मूत्रयंत्रकी बीमारी—कास्टिकमका रोगी पेशाबका वेग ज़रा देर भी नहीं रोक सकता पेशाब प्राय: अनजानमें निकल जाता है, रोगी पेशाब करते समय एक बात भी नहीं जानता कि अब भी पेशाब बाहर निकल रही है कि नहीं। इसके अलावा इसमें

वात—कास्टिकममें—वात रोगवाली जगह कड़ी और सुन्न हो जाया करती है। ऐसा मालूम होता है,मानो वहाँकी मांस-पेशियाँ एक साथ बँधी हैं। कड़ा और अकड़नका भाव—गलेमें, कमरमें, हाथमें और पैरोंमें अधिक दिखाई देता है, इसके अलावा—घुटना, उरु और पैरोंमें खींच रखने या नोच फेंकनेकी तरह एक प्रकारका दर्द होता है। वातकी वजहसे एकदम पंगु हो जानेपर, डा० नैश कहते हैं, कि—"मैं सब दवाएँ छोड़कर केवल—सल्फर कास्टिकम, रसटक्स' इन तीनों दवाओं पर ही निर्भर कर सकता हूँ, रसटक्सका दर्द—हिलने डोलनेपर घटता है और इसके साथ ही छटपटी बेचैनी रहती है, कास्टिकममें—छटपटी सिर्फ रातके समय बढ़ती है और उसमें हाथ-पैर कड़े और मानो छोटे हो जाते हैं, रसटक्समें ऐसा नहीं होता, <u>गुयेकममें</u>—पेशी-बन्धनी (tendon) छोटी हो जाती है, अङ्गका विकार होता है, पर इसमें कास्टिकमसे फायदा न होनेपर गुयेकमसे उपकार होनेकी आशा है। <u>कोलोसिन्थमें</u>—वात रोगवाली जगह कड़ी और अकड़ जाती है, पर इसका दर्द चूर डालनेकी तरह होता है, कास्टिकममें—<u>मानो टाने और खींचे रहता है</u>, इसीलिये, हाथ-पैर फैला नहीं सकता, पैरकी एँडीकी खाल उधड़ जाती है, <u>रसटक्सका</u> दर्द—फाटनेकी तरह दर्द रहता है। इन अन्तवाली दोनों दवाओंमें सर्दीमें रोग बढ़नेका लक्षण है। बायीं ओरके गृध्रसी-वातमें सुन्न हो जानेका भाव—कास्टिकम।

फायदा होता है। इसमें सामनेकी ओर झुकनेपर दर्द घटता है ऋतुशूलमें—अर्थात ऋतुके पहले या ऋतुके समय ऐसा दर्द होने पर और यह दर्द तथा रजस्राव रातमें बिलकुल न होनेपर—कास्टिकम फायदा करता है। कास्टिकममें—केवल दिनके समय रजस्राव होता है, इसमें बहुत देरसे ऋतु होता है।

सविराम ज्वर—सविराम ज्वरमें उत्तापवाली अवस्था का न रहना अर्थात अगर जाड़ा लगने बाद ही एकदम पसीना हो आये, तो कास्टिकम—फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डी हवामें, पानीमें भीजनेपर, स्नान करनेपर।

ह्रास (amelioration)—आधी रातमें, तर हवामें, गर्म हवामें।

सदृश—श्लेष्मा निगल जानेपर—आर्निका; असम्पूर्ण पक्षाघातमें—जेल्सि, डौफा और सिपिया; सन्ध्याके समय स्वरभंग बढ़नेपर—रियुमेक्स और कार्बो; बहुत दिनोंके स्वरलोपमें—सल्फर। गुनगुनी रसदेम—मर्कुरियस और सल्फरके अपव्यवहार होनेपर कास्टिकम प्रतिविषका काम करता है।

क्रियानाशक (antidote)—एसाफि, कोलो, डल्का, नुयेक्स, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—५० दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति। (हैनिमानिसं—नयी बीमारीमें ऊंची और पुरानीमें निम्न-शक्ति व्यवहार होती है) फास्फोरस—१।

और भी कई लक्षण हैं,जैसे, वार वार पेशावका वेग, इसके साथ ही अनजानमें दो एक बूँद पेशाव निकल जाना। छींकने, खाँसनेके समय पेशाब निकल जाना (नैट-म्यूर, स्किला)। पेशावके दरवाजे पर खुजली, चलते-फिरते बूँद बूँद पेशाव निकलना, निद्रित अवस्था मे अनजानमे विछावनमें पेशाव हो जाना, बच्चोंका विछावनमें पेशाव कर देना (खासकर पहली नींदके ही समय), गरमीके दिनोंमे कम, जाडेके दिनोंमे विछावनमे अधिक पेशाव करना, इत्यादि लक्षणोंमें भी—कास्टिकम फायदा करता है। मूत्राशय ग्रीवा का पक्षाघात ही (paralysis of the neck of the bladder) अगर ऊपर लिखी बीमारियोंका कारण हो तो भी कास्टिकमका प्रयोग होता है। अगर पेशावमे लिथिक एसिड या लिथेट्स बहुत ज्यादा परिमाणमे रहे—कास्टिकम फायदेमन्द है। पेशावकी तली काले या भूरे रगकी, गदला या धूएँकी तरह।

मसा—(Warts) थूजा ही मसाकी प्रधान दवा है। कास्टिकम उससे नीचे दर्जेकी है। थूजा—मसा फटा फटा, कास्टिकम,—ठोस, आकार—छोटा और चिपटा या नोकदार (horney), यह साधारणतः (flat) पलकें, नाककी ठोर, हाथकी अँगुली और नाखके किनारे होते हैं। दूसरी जगहोंके मसोंमें—थूजा फायदा करता है। (किन किन स्थानोंके मसोंमें कौन कौन दवा लाभदायक है, इसके लिये—थूजाका अध्याय देखिये)।

कालिक या ऋतुशूलका दर्द—पेटमें ऐंठन की तरह दर्दमें अगर कोलोसिन्थसे फायदा न हो—कास्टिकमसे

खासकर ज्वर बहुत कुछ सीड्रनके सदृश है और उसमें भी बोखार ठीक घड़ीके काँटेकी तरह समय बाँधकर आता है, पर <u>एरानिया—</u> जाड़ा और बरसातके दिनोंके बोखारमें ही अधिक व्यवहृत होता है। एरानियामें—रोगी गर्मीके दिनोंमें बहुत अच्छा रहता है, ज़रा भी सर्दी पड़ी या बरसात या बादल हुए, अर्थात् सर्दी पड़ते ही ज्वर दिखाई देने लगता है। ज्वरके समय रोगीमें हमेशा सिहरावनका भाव मालूम होता है, इसमें उत्तापवाली अवस्था एकदम पैदा ही नहीं होती, मानो शीतमें वह जम जाती है। सीड्रन—ग्रीष्म-प्रधान देशके और जलभरी भूमिके पासके प्रदेशोंके ज्वरमें, एरानिया—सर्दी और पानी-भरे दोनों प्रकारके प्रदेशोंके ज्वरोंमें ही लाभदायक है (अगर कोई बीमारी बरसातमें बढ़ जाये और जाड़ेके दिनोंमें बढ़ जाये—<u>एमाराम-युरोपियम</u> उसमें फायदा करता है। <u>एरानियामें</u>—प्लीहा भी खूब बढ़ी रहती है।

पहले ही कहा है, कि सिड्रनमें, घड़ी देखकर या ठीक बँधे समयपर किसी रोगका आक्रमण होता है; इसीलिये, सर-दर्द,—यदि किसी ठीक बँधे समयपर बढ़े, गर्भस्राव—तीसरे या चौथे महीनेमें ठीक किसी बँधे समयपर हो, आधकपाली दर्द,—ठीक बँधे समयपर आक्रमण करे, इसी तरह सभी बीमारियाँ, ठीक एक ही समयपर अगर बार बार आक्रमण करें—सिड्रनसे यह आरोग्य होंगी ही। क्विनाइन सेवन के कारण अगर बारीसे आना भी बन्द होता हो—सिड्रनसे यह आराम हो जाता है। प्लीहा और यकृत बढ़े ज्वरमें भी—सिड्रन फायदा करता है।

सिड्रन ।

(CEDRON)

(एक तरहके छोटे गाछके छोटे बीजोंसे मूल अर्क तैयार होता है। फ्रान्सके डा० टेस्टीने इसकी पहले पहल परीक्षा की)—सविराम ज्वरमें इसका व्यवहार प्रसिद्ध है। ज्वर कांटे काटा ठीक ३ बजे आता है,—यही इसकी विशेषता है। कोई भी बीमारी क्यों न हो, ठीक एक ही समय मानो घड़ीके कांटेकी भांति, अगर किसी एक ही बँधे समयपर बीमारी पैदा हो जाये तो—सिड्रन उस बीमारीको भली-भांति आरोग्य कर सकता है। और यही इस दवा का प्रधान चरित्रगत लक्षण है।

सविराम ज्वर—ज्वर दिनके ठीक ३ बजे आता है, इसके अलावा—सवेरेके समय और शामके वक्त भी ज्वर आ सकता है, पर आता ठीक एक ही समय है। (घड़ीके काटा काटा)। यदि ऐसा हो तो सिड्रनसे अवश्य ही फायदा होता रहेगा। सविराम ज्वरमें—शीतावस्थामें—प्यास, नाककी छोर बहुत ठण्डी रहती है, उत्तापावस्थामें—प्यास, उस समय रोगी गरम पानी या कोई दूसरी गरम-चीज पीता है और इससे उसे आराम मालूम होता है। पसीनेवाली अवस्थामें—प्यास, इस अवस्थामें रोगी जोर जोरसे साँस लेता है, उसका कलेजा धड़कता है और बहुत थोड़ी मात्रामें लाल-रंगका पेशाब होता है। पुरानिया-

नामक दवा बहुत कुछ सीड्रनके सदृश है और उसमें भी बोखार ठीक घड़ीके काँटेकी तरह समय बाँधकर आता है, पर एरानिया—जाड़ा और बरसातके दिनोंके बोखारमें ही अधिक व्यवहृत होता है। एरानियामें—रोगी गरमीके दिनोंमें बहुत अच्छा रहता है, जरा भी सर्दी पड़ी या बरसात या बादल हुए, अर्थात् सर्दी पड़ते ही ज्वर दिखाई देने लगता है। ज्वरके समय रोगीमें हमेशा सिह-रनका भाव मालूम होता है, इसमें उत्तापवाली अवस्था एकदम पैदा ही नहीं होती, मानो शीतसे वह जम जाती है। सीड्रन—ग्रीष्म-प्रधान देशके और जलभरी भूमिके पासके प्रदेशोंके ज्वरमें ; एरा-निया—सर्दी और पानी-भरे दोनों प्रकारके प्रदेशोंके ज्वरोंमें ही लाभदायक है (अगर कोई बीमारी बरसातमें बढ़ जाये और जाड़ेके दिनोंमें बढ़ जाये—एमाराम-युरोपियम उसमें फायदा करता है। एरानियामें—प्लीहा भी खूब बढ़ी रहती है।

पहले ही कहा है, कि सिड्रनमें, घड़ी देखकर या ठीक बँधे समयपर किसी रोगका आक्रमण होता है ; इसीलिये, सर-दर्द,—यदि किसी ठीक बँधे समयपर पड़े, रजःस्राव—तीसरे या चौथे महीनेमें ठीक किसी बँधे समयपर हो, पाकस्थलीका दर्द,—ठीक बँधे समयपर आक्रमण करे, इसी तरह सभी बीमारियाँ, ठीक एक ही समयपर अगर बार बार आक्रमण करें—सिड्रनसे यह आरोग्य होती हैं। क्विनाइन-सेवन के कारण अगर कानोंमें भों भों आवाज होती हो—सिड्रनसे यह आराम हो जाता है। प्लीहा और यकृत मिले ज्वरमें भी—सिड्रन फायदा करता है।

सर-दर्द—माथेमे दाहिनी ओर भयानक दर्द ठीक दि
६ बजेके समय, तेज दर्द आरम्भ हो जाता है और प्राय आधी
तक रहता है। दक्षिण अमेरिकाके अधिवासी कहते हैं—वि
साँप काटनेपर—सिड्रन ही उसकी एक मात्र दवा है।

क्रिया-नाशक (antidote)—लेकेसिस।

क्रम—६x—२०० शक्ति। फारमुला—

सेरियम आकजैलेट।

(CERIUM OXALATE)

(सेरियम धातु—आकजेलेट, रासायनिक प्रक्रियासे तै
होता)—यह दवा सिर्फ कै रोकनेके लिये ही ज्यादा काममे आ
है। चाहे किसी कारणसे कै आती हो, खासकर गर्भावस्
वमनमे इससे ज्यादा फायदा होता है। वमनके लक्षणके स
औषधके लक्षणकी समानता रहनेपर भी अगर किसी भी दव
कै होना बन्द न हो, तो मै एक बार इस दवाकी परीक्षा करने
सलाह देता हूं। डा० हेल कहते हैं—खायी हुई चीज अजी
अवस्थामें कै, अर्द्ध-अजीर्ण अवस्थामे खायी हुई चीजकी कै, वमन
साथ कभी कभी खून मिला रहना, कैके समय पेटमे सहन न हो
वाला दर्द, कभी कभी कै हो जाने बाद तकलीफका घट जाना प्रभृ
लक्षणोंमे इसका प्रयोग करनेपर इसमे बहुत फायदा होता है
इसकी १x विचूर्ण शक्ति ज्यादा फायदा करती है। फारमुला—७

कैमोमिला।

(CHAMOMILLA)

(यूरोपकी खेतीकी ज़मीनमें एक तरहके पौधे होते हैं, यह उसीका मूल अर्क है)। वृद्ध, युवा, बच्चे, स्त्री प्रभृति सबकी ही बीमारीमें ज़रूरत पड़नेपर भी यह बच्चोंकी बीमारीमें ज्यादा लाभ करता दिखाई देता है। कैमोमिलाके मानसिक लक्षण बड़े ही विचित्र हैं,—इसका रोगी बहुत ही चिड़चिड़ा और क्रोधी होता है, बहुत साधारण-सी बातपर भी लड़ाई झगड़ा और गाली-गलौज करने लगता है, चिड़चिड़ापन ही कैमोमिलाका चरित्रगत लक्षण है। बच्चा केवल रं रं किया करता है, रोता है और मानो चिढ़ा ही रहता है। पहले तो ऐसा मालूम होता है, मानों कुछ चाहता है, पर कोई चीज़ हाथमें देनेपर, तुरन्त नोचकर फेंक देता है और फिर रोने लगता है। इससे मालूम होता है, कि यह कोई दूसरी ही चीज चाहता है। वृद्ध नैश कहते हैं—"अगर किसी बीमारीमें ये सब लक्षण रहें तो समझना कि यह बच्चा और कुछ नहीं—तुमसे सिर्फ एक मात्रा कैमोमिला चाहता है।" कैमोमिलाका—बच्चा सिर्फ गोदमें लेकर घूमनेसे ज़रा शान्त रहता है। बच्चोंका ज्वर, पेटकी बीमारी या दाँत निकलनेके समय ये सब लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। बच्चोंके अलावा—स्त्री हो या पुरुष, अधान मनुष्योंकी बीमारीमें भी इसके स्नायुगत मिलने

हो मानसिक लक्षण दिखाई देते है। वे बिना किसी विशेष कारण के ही एकाएक चिढ़ उठते है, लोगोंके साथ अभद्रकी तरह विद्वेष-भरी बातें करते हैं, बाप कहना चाहिये पर साला कह बैठते हैं, पर यह भाव बहुत थोड़े समयमें चला जाता है, रोगी समझ जाता है, कि उसने भूल और अनुचित काम किया है, इसके लिये दुःखित होता है, अपनी गलती स्वीकार करता है, पर फिर चिडचिडाने लगता है। कैमोमिला—साधारणत जिन कई बीमारियोंमे व्यवहृत होता है, उनका लक्षणके साथ सक्षेप विवरण नीचे सक्षेपमें लिखा जाता है —

१। रोगी खुली हवा सहन नहीं कर सकता, उससे बीमार हो जाता है। इसका दर्द और तकलीफें—गरमीसे, ठण्डे प्रयोगसे, ठण्डी हवामे किसी तरह भी नहीं घटती वल्कि बढती ही जाती हैं।

२। दर्द—यह वातका हो अथवा दाँत या कानका हो, प्रसवका दर्द हो, वह कम हो या ज्यादा, रोगी सहन नहीं कर सकता, कहता है—"मेरा प्राण गया, मै अब सहन न कर सकूँगा।" इसीलिये, बहुत कातर हो पड़ता है, रोता है, अगर कोई सान्त्वना देता है तो वह उसके लिये असह्य हो जाती है और कैमोमिला की ऊपर लिखी चरित्रगत मानसिक अवस्था प्रकट करता है। नींद आती है, पर सो नहीं सकता।

३। प्रसवका दर्द—बहुत देरतक बना रहता है और दर्द मानो एक जगह ढेला-सा बनकर ऊपरकी ओर चढता है, इसके साथ ही रोना, चिल्लाना, क्रोध करना और बदमिजाजी बहुत

अधिक रहती है। यह दर्द कभी कमरसे आरम्भ होकर कूल्हेमें और उरुमें भी उतर आता है, जरायु-मुखमें कड़ापन दिखाई देता है।

४। माथेके पसीनेसे केश भीज जाते हैं, पसीना गरम (कैल्केरिया और साइलिसियाका पसीना ठण्ढा)।

५। दाँतका दर्द—गरम पानी या गरम चीज मुँहमें रखनेपर तकलीफ बढ़ जाती है। कानमें कटकटानेका दर्द—बच्चा रोया करता है, ठण्डी हवासे तकलीफ बढ़ती है, दूसरी दूसरी तकलीफें—गरम प्रयोगसे बढ़ती हैं। इसके अलावा ठण्ढे प्रयोगसे भी नहीं घटतीं। ठण्डी हवा कानमें घुसनेपर तकलीफ बढ़ती है।

६। किसी भी दर्द और तकलीफके लिये बहुत अधिक मार्फिया इञ्जेक्शन और अफीम सेवन करनेके कारण दूसरी बीमारियोंका पैदा हो जाना।

७। झुनझुनी होनेवाला वात या दूसरी दूसरी सभी बीमारियोंमें दर्दके साथ दर्दवाली जगहपर झुनझुनी पैदा हो जाती है।

८। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय सड़े अण्डेकी तरह बुरी बदबूसे भरे हरे रंगके पतले दस्त आना, मल गरम, मलद्वारकी खाल उघड़ जाती है, मलद्वारमें जलन होता है।

९। वायुशूलका दर्द—पेटमें वायु इकट्ठा होनेकी वजहसे शूलका दर्द, पेट खूब फूलता है, वायु निकलनेपर भी दर्द या पेटका फूलना नहीं घटता।

१०। प्रसवका नकली दर्द—दर्दके साथ ही कैमोमिलाके चरित्रगत मानसिक लक्षणका मौजूद रहना।

११। खाँसी—बहुत सूखी, गलेमे सुरसुरी होती है, रातमे सोनेके समय खाँसीका बढना, शीत ऋतुमे और ठण्डी हवामे पुरानी खाँसीका बढ़ना (रियुमेक्स—गलेमे सुरसुरी होनेके साथ आक्षेपिक खाँसी रहती है, पर इसमे कैमोमिलाके चरित्रगत मानसिक लक्षण वर्त्तमान नहीं रहते)।

१२। सन्तानको दूध पिलानेके समय और दूध पिलाना समाप्त होते ही स्तनसे दूध टपककर निकलता है (कोनियम)।

१३। सवेरे आँखकी दोनो पलकें फूली रहती हैं और आँखमें पपड़ी जमती रहती है।

१४। माताके डराने या रज हो जाने बाद बच्चा स्तनका दूध पीकर अकड़ जाता है (डरकी वजहसे यदि अकडन हो जाये—ओपियम अच्छा रहता है, क्रोधमें—नक्स)।

१५। मेडोह्निम, सलफर वगैरहकी तरह पैरके तलवेमें जलन, इसीलिये, पैर बिछावनके बाहर रखता है।

१६। बेचैनी —रोगी किसी भी दर्दके कारण बहुत बेचैन हो जाता है, छटपटाता है, केवल इधर उधर टहला करता है, (रसटक्स, फेरम और वेरेट्रम)। पेटके दर्दसे बहुत कातर और बेचैन रहता है, चिल्लाता है, रोता है, बच्चा गोदमे घूमनेपर कुछ शान्त रहता है (एकोनाइट, आर्सेनिक, रसटक्समें भी छटपटी है, डा० नैश इन तीनोंको—ट्रियो (trio) कहते हैं) आर्सेनिक और एकोनाइटकी छटपटीके साथ मुँहका भाव मानो भय और चिन्तासे

भरा, रसटक्समें—हिलने-डोलनेमें छटपटी या बेचैनी घटती है, कैमोमिलामें—विरक्तिके साथ बेचैनी रहती है।

बच्चेकी दाँत निकलनेके समयकी बीमारी—

बहुतोंकी ऐसी धारणा है, कि बच्चोंके दाँत निकलनेके समयके पतले दस्त ज्वर प्रभृति सभी बीमारियोंकी केवल कैमोमिला ही एक दवा है। पर वास्तवमें ऐसा नहीं है। कैमोमिलाकी तरह—कैल्केरिया, एकिट-रूड, पोडोफाइलम इत्यादि दवाओंकी भी जरूरत पड़ती है। दाँत निकलनेके समय बच्चोंकी बेचैनी और नींद न आनेकी कैमोमिला अमोघ औषधि है। बच्चोंको बेहोशी आनेपर बच्चा चौंक उठता है और सोनेके समय, मुँह-हाथ-पैर मानो नाच उठते हैं। इन लक्षणोंमें—कैमोमिला ही अव्यर्थ महौषधि है। इन सब लक्षणोंके साथ ऐसा दिखाई देता है, कि प्रायः पेटमें ऐंठन, दर्द और पेटकी बीमारीका दोष रहता है। दाँत निकलनेकी वजहसे ज्वर—यह समस्त विकारमें बदल जानेपर और कैमोमिलासे कोई फायदा न होनेपर, तब बेलेडोना इत्यादिकी जरूरत होती है, उस समय कैमोमिलाके मानसिक लक्षण रहनेपर कैमोमिला ही देना चाहिये।

बच्चोंका अतिसार—कैमोमिलाके दस्त पतले, गरम; रंग हरा और पीला मिला, पाखानेके साथ प्रायः कफ मिला रहता है; इसीलिये, मल-द्वारकी खाल उधड़ आती है। दस्त बहुत बदबूदार, सड़े अण्डेकी तरह गन्ध; थोड़ा-सा मल और थोड़ा-सा पानी।

बच्चेको दाँत निकलनेके समय या किसी दूसरे समय भी सोनेपर बच्चा चौंक उठता है। हमेशा ही क्रोधका भाव, बच्चा किसी तरह भी स्थिर नहीं रहता, सिर्फ रोता है, कोई चीज देनेपर ही फेंक देता है, मा-बापसे किसी तरह भी सन्तुष्ट नहीं रहता—यह मानसिक लक्षण पूरी तरह या थोडा-बहुत भी रहनेपर—कैमोमिला ही निर्दिष्ट है। कैमोमिलाके बाद सलफरसे—बीमारी एकदम आराम हो जाती है। सलफरमें—कैमोमिलाकी तरह मलद्वारकी एकदम खाल उधड जाती है और पेटमें पेठनका दर्द रहता है। अगर दस्तके साथ वेग और कुथन रहे—मर्कुरियस फायदा करता है। मैग्नेशिया-कार्ब और कैमोमिलामें—पाखाना होनेके पहले पेटमें खूब पेठनका दर्द रहता है और गोदमें लेकर घूमनेपर घट जाता है। मैग्नेशिया-कार्व—मलका रंग घोर हरा, उसमें मटरके छिलके की तरह पदार्थ मिला रहता है। कैमोमिलामें—हरा-पीला मिला रहता है। रियुम्में—पाखाना भूरे रंगका, फेन-भरा और बहुत खट्टी बदबू, मैग्नेशियामें—खट्टी गन्ध, हरे रंगके मलके साथ फेन रहता है और पाखाना होनेके पहले पेटमें इतना दर्द रहता है, कि रोगी एकदम घबडा उठता है (मैग्नेशिया—कैमोमिलाकी अपेक्षा अधिक दिनोंतक क्रिया करनेवाली दवा है।) कैमोमिलाके—पतले दस्त सन्ध्याके समय ज्यादा आते हैं।

अकड़न—क्रोधकी वजहसे अकडन, बच्चा बहुत क्रोधी, किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकता, इसके साथ ही मुँह और

माथा गरम और पसीना हुआ करता है। इग्नेशियाकी अकड़नमें—क्रोध और पसीना नहीं रहता। प्रसूतिके क्रोध या भयके कारण सन्तानको अकड़न ; यदि रोगका कारण क्रोध हो—कैमोमिला सभी बीमारियोंमें फायदा करता है।

बाधककी दर्द—ऋतु समयपर होता ; पर पेटमें बहुत दर्द रहता है, इसके साथ ही कैमोमिलाके बहुतसे चरित्रगत लक्षण रहनेपर—कैमोमिलासे फायदा होता है। पल्सेटिलामें—ऋतु देरसे होता है। रक्तका रंग गदला और वह गाढ़ा रहता है। परिमाणमें कम और रह रहकर होता है। यह शान्त-स्वभावकी स्त्रियों के लिये ज्यादा फायदेमन्द है।

दाँतकी बीमारी—गरम पानी या उत्ताप लगानेपर कैमोमिलाकी दाँतकी तकलीफ बढ़ जाती है। दूधके दाँतमें कीड़े लगना—इसमें क्रियोजोट और स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। पर इसके साथ ही अगर कैमोमिलाका चरित्रगत मानसिक लक्षण रहे तो—कैमोमिला ही श्रेष्ठ दवा है।

कानकी बीमारी—कानमें दर्द, कान फटफटाने जैसा दर्द, इसके साथ ही कैमोमिलाका चरित्रगत मानसिक लक्षण रहनेपर—कैमोमिला ही उसकी दवा है। कानके दर्दके साथ अगर दाँतमें दर्द रहे, प्लैण्टेगो-मेजोर फायदा करता है। बेलेडोना, मर्क-रियस, पल्सेटिला भी ज्यादा देरमें फायदा करते हैं। कैमो-मिलाके रोगमें जरा भी गरमी सहन नहीं होती।

कानके टपकके दर्दमे—प्लेण्टेगो—φ, २।४ बूँद कानके भीतर देकर रूईसे कान वन्द कर देना चाहिये तथा जरा-सा आगकी सेंक देनेपर तुरन्त दर्द घट जाता है (सेंका अगर न गया तो भी फायदा होगा)। केवल स्पिरिट दो चार बूँद कानमे डाल देनेपर भी लाभ होता है और दर्द घटता है।

जखम—यदि चोट लगकर जखम हो जाये और उसमें पीव पैदा हो जाये—कैमोमिलाका भीतरी सेवन करनेपर और लगानेपर वहुत फायदा होता है।

वृद्धि—गरमीसे, क्रोधसे, शामके वक्त, आधीरातके पहले, खुली हवामे, साधारणत रातमे और गरमसे ही दर्द वढता है.

ह्रास—गोदमे रहनेपर, उपवाससे, आकाशकी अवस्था गरम रहनेपर। दर्द वहुत वढ जानेपर रोगी बिछावन छोडकर घरमें इधर उधर टहलता है, इससे दर्द वहुत कुछ घटता है।

सदृश—चोटके कारण जखममे—आर्निका, साइलि, हिपरके सदृश। मस्तिष्कके स्नायुरोगमे जिस तरह—बेलेडोना, उदरके स्नायु-विकारमें भी इसी तरह—कैमो। वच्चोकी बीमारीमे वेले-डोनाके वाद कैमोमिला लाभदायक है।

वादकी दवा—एकोन, आर्निका, वेल, ब्रायोनिया, कैकृस, कैल्केरिया, काकुलस, मार्क, नक्स, पल्स, रस, सिपिया, साइलि।

क्रिया-नाशक—एकोन, पल्यू, बोराक्स, कैम्फर, चायना, ककुलस, काफि, कोलोसिन्थ, कोनि, इग्ने, नक्स, पल्स, वेरेट।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—६, १२, ३०—२०० शक्ति (जवानोंकी बीमारीमें—१ म शक्ति जल्द फायदा करता है)। फारमुला—१।

चेलिडोनियम मेजस।

(CHELIDONIUM MAJUS)

(फ्रान्स और जर्मनीके एक पौधेसे टिंचर तैयार होता है)—यकृतके दोषकी वजहसे बीमारी, फेफड़ा, मसाना और पित्तके दोषके कारण पैदा हुई बीमारियोंकी बहुत बढ़िया दवा है। चेलिडोनियममें—प्रायः सभी बीमारियाँ दाहिनी ओर आक्रमण करती हैं, इसीलिये, दाहिनी ओरका माथा, मुँह, कान, आँख, गण्डास्थि इत्यादिकी बहुत तरहकी बीमारियोंमें इससे फायदा होता है। (बीमारी दाहिनी ओर आक्रमण करती है—एपिस, बेल, कास्टि, केलि, लाइको, कार्डो, सैंगुनेरिया प्रभृति)। बीमारी बायीं ओर आक्रमण करती है—सिमिसिफ्युगा, सैफा, लैके, मैगनोलिया, थेरिडि, रैनन-बल्बो, स्पाइजे, अम्बर ग्रासम इत्यादि)। चेलिडोनियमकी बीमारीके लक्षण बहुत कुछ लाइकोपोडियमकी तरह हैं। इसीलिये, बहुत सावधानतासे दवा चुननी चाहिये। यकृतकी बीमारीके लिये—विशेष ध्यान देवें।

प्रधान चरित्रगत लक्षण —

१। ऋतु-परिवर्तनमें बीमारीका फिरसे पैदा हो जाना, २। मध्याह भोजनके बाद प्राय सभी तकलीफें घट जाती हैं; ३। हमेशा बहुत गर्म पतली चीजें पीनेकी इच्छा करता है, ४। सभी रोगोंमें दाहिनी स्कन्धास्थिके कोनेवाली हड्डी (स्कैपुला) के नीचे दर्द, ५। यकृतकी बीमारी, पिलई—शरीरका चमडा, मुँह, पेशाब, आँखका सफेद अंश, नख, सभी पीले (हाइड्रैस्टिस), ६। कब्ज—मल कडा, भेंडकी भींगीकी तरह (ओपि, प्लम्बम), कब्जियत और अतिसार पर्यायक्रमसे, ७। उदरामय—रातमें बढना, मल चमकीला, पतला, रग—भूरा, राखके रगकी तरह, सफेद, चमकीले पीले रगका, अनजानमें निकल जाता है, ८। दाहिनी ओरका निमोनिया, खाँसीमें गलेमें और छातीमें घर घर शब्द, इसके साथ ही यकृतका दोष, ९। आक्षेपिक खाँसी—खाँसते खाँसते श्लेष्माके छोटे छोटे ढेले मुखसे छिटककर निकल पडते हैं, १०। दाहिनी कनपटीमें और आँखमें स्नायुशूल, ११। पित्त-पथरीका दर्द, इसके साथ ही दाहिने कन्धेके नीचे दर्द।

यकृतकी बीमारी—इस बीमारीमें चेलिडोनियम, ब्रायोनिया, नक्स-वोमिका, लाइको, मर्कुरियस, चियोनैन्थस, कार्डुयस-मेरि इत्यादि बहुत-सी दवाएँ बहुत सफलता पूर्वक व्यवहृत होती हैं। चेलिडोनियममें दाहिने कन्धेके नीचे और स्कैपुला हड्डीके नीचे (पर भीतरकी ओर नहीं) बराबर दर्द हुआ करता है। किसी बीमारीमें मुँहका स्वाद तीता, जीभके बीचमें

ाढ़े पीले रंगका मैल ढका रहता है और उसके किनारे लाल रहते हैं ; आँख, मुँह और बदनका चमडा पीला ; मल—राख या मिट्टीके रंगकी तरह या गन्धककी तरह पीला, पेशाब जहाँ लग जाता है, वहीं पीले रंगका दाग पडता है, भूख न लगना, जी मिचलाना, पित्तकी कै, गर्म पतली चीजोंके सिवा और कोई चीज पेटमें नहीं रख सकता, यदि ये ही सब लक्षण रहें, तो यकृत हाथमें न लगनेपर भी और कन्धेके नीचे दर्द न रहनेपर भी, यहाँ चेलिडोनियमका प्रयोग करनेमें कुछ भी सन्देह न करे। चेलिडोनियम—नयी और पुरानी दोनो तरहकी बीमारियोंमें फायदा करता है। पुरानी बीमारीमें—लाइकोपोडियम भी खासा फायदा करता है। जुगलैन्स सिनेरियामें—(Juglans Cinerea)—१—६ ठी शक्ति ; कामला, लिवरके चारों ओर अकडनका दर्द और दाहिने कन्धेके नीचे दर्द रहता है ; पर इसमें बहुत डकार आती है, पेट फूलता है, पेट फूलनेकी मन्दाग्नि (Atonic dyspepsia), हरे या पीले रंगका दस्त, दस्तके साथ पेटमें दर्द, कूथन और मलद्वारमें जलन रहती है। नक्स-वोमिकामें भी—दाहिने कन्धेके नीचे दर्द रहता है, पर उसमें दस्तके लक्षण दूसरी तरहके होते हैं, चेलिडो-नियमम—कब्जियत और भेडकी लेंडीकी तरह मल अथवा घोर पीले रंगका पतला मल निकलता है। चेनोपोडियम (Chenopodium anthel)—३ री शक्ति, दाहिने कन्धेसे पीठकी रीढ़ तक और भीतर छाती तक दर्द। चेलिडोनियममें सिर्फ दाहिनी ओर होती है। इसलिये, दाहिनी ओरके वायुशूलमें,

दाहिनी ओरके पेटमे और मसानेमे वहुत तकलीफ देनेवाला दर्द रहता है, दाहिनी ओरका निमोनिया, दाहिना पैर, उरु, कुल्हा इत्यादिके दर्द वगैरहमे भी—लाइकोपोडियम इत्यादि दवाओंकी अपेक्षा यह ज्यादा फायदा करता। चेलिडोनियममे—कभी कभी दर्द, दाहिने कन्धेके सिवा मेरुदण्डतक फैल जाता है। चिलोन (Chilone)—१८—३० शक्ति। यकृतके बाये अशमें (lobe) में दर्द, दर्द नीचेकी ओर अधिक रहता है। रैनानकियुलस—नामक दवामें दर्द अधिकाश स्थानोमे वार्यी ओर रहता है, इसमें वार्यी ओरके वक्षस्थलतक रोगका आक्रमण हो जाता है। ब्रायोनियामे भी यकृतका दर्द और यकृतके बढनेका लक्षण है, पर इसमें रोगीको कब्ज रहता है और बडे कष्टसे खूब बडा लेंड निकलता है, पतले दस्त आनेपर पेटमे पेठनकी तरह दर्द रहता है। लाइकोपोडियममें—पेटमे वायु इकट्ठा होता है, पेट गडगडाता है और मुँहका स्वाद खट्टा रहता है तथा खट्टी ही कै होती है। चेलिडोनियममे—मुँहका स्वाद तीता। लाइकोपोडियममें—पेट या यकृतके स्थानपर एक तरहका धीमा धीमा दर्द हमेशा बना रहता है, कभी कभी जोरका हो जाता है, चेलिडोनियममें—सभी समय दर्द नहीं रहता, पर जव दर्द होता है, तव खूब जोरसे होता है। दर्दका ढङ्ग मानो छुरी मारनेकी तरह।

श्वासयंत्रकी वीमारी—छोटे छोटे बच्चोंकी कैपिलरी ब्राङ्काइटिस और निमोनियामें—चेलिडोनियम वहुत फायदा करता

है। हूप खाँसी और छोटी माताके साथ या छोटी माताके बाद ब्राङ्काइटिस और निमोनियाकी बीमारीमें भी इससे फायदा होता है। निमोनियाके साथ अगर यकृतका दोष रहे, तो फिर इसके प्रयोगसे सोनेमें सुगन्ध आ जाती है। इससे फायदा हुए बिना रह नहीं सकता। चेलिडोनियमकी—खाँसी खूब ढीली रहती है, गला घरघराता है, पर बलगम सहजमें नहीं निकलता, इसमें रोगीका चेहरा लाल हो जाता है और जोर जोरसे साँस छोड़ता है।

ज्वर—चेलिडोनियम—यकृत और कामला रोग मिले ज्वरकी यह एक महा लाभदायक दवा है। ज्वरमें कभी शीत रहता है,कभी शीत नहीं भी रहता है शरीरकी अपेक्षा मुँहमें उत्ताप ज्यादा रहता है और सोनेपर (शूक्ता इत्यादिकी तरह) रोगीको पसीना होता है। इसमें सवेरे और नींद खुलने बाद ही पसीना होता है, पसीना होने बाद यकृत और कन्धेका दर्द घट जाता है, मुँहका स्वाद तीता होता है और मुँहमें लार जमती है। ज्वर एक-दम नहीं छूट जाता, ज्वर—सविरामका आकार धारणकर लेनेपर चेलिडोनियमके बाद—आर्सेनिक ज्यादा फायदा करता है।

सर-दर्द—माथेमें चुनचुनी और स्नायविक दर्द, दर्द—दाहिनी आँख, दाहिना कान, दाहिनी गण्डास्थि और दाहिने कन्धेतक फैल जाता है। अगर दाहिनी आँखपर दर्द रहे और आँखसे बहुत पानी गिरता है। सामने नजर आना—विद्युतन या चिनगारी उगाहने

उठनेपर और आँख बन्द करनेपर सरमें चक्कर आता है। सामनेकी ओर गिर जानेकी तरह हो जाता है। इसके साथ ही कामला रहता है या पित्तकी कै होती है।

पाकस्थलीकी बीमारी—मिचली, वमन, जीभ मली, मुँहका स्वाद तीता, पित्तकी वजहसे दर्द, इसके साथ ही पाकाशयकी जगहपर दर्द, पाकस्थलीका दर्द पाकस्थलीके भीतरसे होता हुआ पीठमें और दाहिने कन्धेकी हड्डीमें चला जाता है या पाकस्थलीके ऊपरसे यकृतकी ओर परिचालित होता है। चेलिडोनियमका दर्द—कुछ खाने या गरम पानी पीनेपर भी वमन और दर्द घट जाता है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि गरम पानी पी लेनेसे वमन या दर्द घट जाता है।

अतिसार—चेलिडोनियममें दस्त पतले आते हैं, रग-चमकीला पीले रगका या सफेद, कभी कभी एक बार पतला दस्त, एक बार कब्जियत रहती है, ऐसा भी होता दिखाई देता है। इसके साथ ही अकसर पिलई या यकृतका दोष रहता है।

हैनिमैन कहते हैं—चेलिडोनियमके रोगीको दूध पीनेकी अधिक इच्छा रहती है, दूध सहन भी होता है, पेटमें वायु नहीं होता, पेटकी बीमारीमें दूध या कोई गरम पानीय पीना चाहता है।

उदर-शूलका दर्द—चेलिडोनियममें एक तरहका शूल का दर्द होता है। अगर रोगीका पेट खाली रहता है, तो वह दर्द

ढ जाता है और कुछ खा लेनेपर घटता है। (एनाकार्डियम, फास्फ्रस, और पेट्रोलियममें भी पेट खाली रहनेपर दर्द बढता और कुछ खा लेनेपर दर्द बहुत कुछ आराम हो जाता है (कोलो-सेन्थ देखिये)।

पेशाबकी बीमारी—पेशाब पीला, फेनभरा, काला और गदला रहता।

वृद्धि (aggravation)—रोगका लक्षण दाहिने अगमें और प्रातः सवेरे।

ह्रास (amelioration)—भोजनके समय, शामके भोजनके बाद, गरम चीज पीनेपर; रोगवाली जगहको मलनेपर।

सम्बन्ध—यकृतकी बीमारीमें चेलिडोनियमके बाद आर्सेनिक फायदा करता है। ब्रायोनिया, लाइको और सल्फर इसके अनु-पूरक हैं। ब्रायोनियाका अपव्यवहार होनेपर—चेलिडोनियमसे कुछ फायदा हो तो उसके बाद—सल्फर और लाइकोपोडियम द्वारा रोग सम्पूर्ण आरोग्य हो सकता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, कैमो, काफि, एसिड, शराब।

क्रियाकी स्थितिकाल (duration)—७—१४ दिन।

क्रम—२x—३० शक्ति।   पारमुग - १

चिमाफिला अम्बेलाटा।

(CHIMAPHILLA UMBELLATA)

(इयुनाइटेड स्टेट्स और कैनाडाके एक प्रकारके छोटे वृक्षसे टिंचर तैयार होता है)—मसाना और जननेन्द्रियके ऊपर ही इस दवाकी प्रधान क्रिया होती है। रक्तप्रधाना युवती स्त्रियाँ और जिन स्त्रियोंका स्तन बडा होता है, उनकी धातुमे ही यह विशेष फायदा करता है। लिम्फेटिक ग्लैण्ड (लसिका ग्रन्थि), मेसेण्टरिक ग्लैण्ड (उदर-ग्रन्थि) और स्तनकी ग्रन्थियोंके ऊपर इसकी प्रधान किया दिखाई देती है।

स्त्री-रोग—योनिके ऊपरी भागमें सूजन, दर्द और प्रदाह, स्तनका अर्बुद (फाइटोलेक्का, कोनियमकी तरह), स्तनमें बहुत अधिक दूधका इकट्ठा होना, स्तन सूखे और बहुत जल्दी जल्दी छोटे होते जाना।

पेशाब और जननेन्द्रियकी बीमारी—कैन्थरिस देखिये।

इनके अलावा—आँखकी बीमारीमें, रोशनीके चारों ओर इन्द्रधनुषका रंग दिखाई पडना, आँखकी पलकोंमें हमेशा कुटकुटाहट रहना, बायीं आँखमें धक्का देनेकी तरह दर्द, पानी गिरना इत्यादि में और दाँतकी बीमारीमें—कुछ खानेपर तकलीफ बढना, मुँहमें ठण्डा पानी लेनेपर आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणोंमें—इससे फायदा हो सकता है।

वृद्धि—वर्षा या सीड-भरी ऋतुमे, बीमारीके उपसर्ग बाई ओर।
सदृश—ब्रयुवा-उर्सी, पल्सस, मैवाल-सेरूलेटा।
क्रम—$\frac{1}{x}$,—३x शक्ति। फारमुला—३।

चियोनैन्थस वरजिनिका।

(CHIONANTHUS VIRGINICA)

(ताजी छालसे टिंचर तैयार होता है)—पैत्तिक और ऋतुस्राव के समयका सर-दर्द, पित्ति, ऋतु रुक जानेके साथ पित्ति रोग हो जाना और यकृतकी बीमारीमे यह फायदा करता है।

सियानौथस—जिस तरह प्लीहा-रोगमे होमियोपैथिकोंके पास यह एक तरहकी पेटेण्ट दवाके रूपमे व्यवहृत हो रहा है, चियोनैन्थस भी—उसी तरह यकृत रोगमें पेटेण्ट दवाकी तरह व्यवहृत होता है। यकृत और यकृतकी शिराओंपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। अगर यकृत खूब बड़ा हो जाये और उसके आनुसंगिक उपसर्ग—कब्ज, कीचड़की तरह मल, कभी नरम थसथसा, पीला मल, पीले रंगका पेशाब, प्रति-वर्ष गर्मीके दिनोंमे कामला रोग हो जाना, बार-बार कामला रोग हो जाना, यकृतमे दर्द, अरुचि, सभी कामोंकी बातोंमें अनिच्छा रहना प्रभृति लक्षण रहनेपर इससे अवश्य फायदा होगा। पित्त-पथरीमे भी यह फायदा करता है। (डाउयरसायेट कहते हैं—यह सिर्फ पैंक्रियास-ग्रन्थिमें लाभदायक है, दूसरी बीमारीमे नहीं।)

भय—जो बच्चे सोये सोये एकाएक जोरसे चिल्लाकर जाग उठते हैं, ऐसा मालूम होता है, कि डरकर ही ऐसा कर रहे हैं, बाप-माँ कोई भी कारण नहीं खोज निकाल सकते, उनके इस लक्षणमें—क्लोरेल ज्यादा फायदा करता है।

चेचक—बच्चोंकी पनसाहा माताकी बीमारीमें इससे फायदा हुआ करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एमोनिया, मस्कस, डिजिटेलिस।

सदृश—हाइड्रोसि-एसिड, साइक्यू, बेल, कैन्थर, एपिस।

फारमुला—६ ए।

क्लोरम।

(CHLORUM)

(क्लोरिन)—डा० हेरिङ्गने इसकी सबसे पहले परीक्षा की थी। क्लोरम-टिंचरमें एक सौ भागमें एक भाग क्लोरिन-गैस रहता है। श्वास-पथकी राहसे क्लोरिन गैस भीतर लेनेपर श्वास-नली द्वार (ग्लाटिस) में आक्षेप पैदा हो जाता है। हेरिङ्ग कहते हैं—"श्वासपथमें हवा जाती भरपूर है, पर बाहर निकल नहीं सकती।' क्लोरिन-श्वास-रोगके जिस जिस लक्षणमें हमलोग होमियोपैथीमें व्यवहार करते हैं, वह पहले आर्सेनिक एलबम अध्यायमें श्वासयन्त्रके रोगमें लिख दिया गया है, देख लीजिये।

जीभका बहुत सूखापन—इस दवाका एक और भी विशेष लक्षण है। टाइफायड ज्वर या किसी दूसरी कमजोर करने वाली बीमारीमें जीभका बहुत अधिक सूखापन (extreme dryness) देखनेपर इसे सबसे पहले प्रयोग कर देखें। इससे शरीरकी चरम सीमापर पहुँची हुई सुस्ती भी दूर हो जाती है।

गैंग्रीन—(सड़न) इस रोगमें फ्लोरिकका बाहरी और भीतरी प्रयोग करनेपर बहुत बार बहुत फायदा होता है।

स्मृति-शक्ति—एकदम गायब, अपना नामतक भूल जाता है।

क्रम—३—६ शक्ति। फारमुला—५-वीं।

साइक्यूटा विरोसा।

(CICUTA VIROSA)

(जर्मनीके जलाशयोंमें उत्पन्न एक तरहके गुल्मका मूल अर्क)

यह स्नायुमण्डल (nervous system) पर अपनी क्रिया प्रकट कर अनेक विशेष लक्षण पैदा कर देता है, जैसे, हिचकी, दाँती लगना, धनुष्टङ्कार, [illegible] इत्यादि।

परिचायक लक्षण —

१। टंकार या फिट—इसमें भयानक खींचन, प्रत्यङ्गोंका या मस्तक शरीरका उलटना टेढ़ा-मेढ़ा हो जाना। रोगी धनुषकी तरह

पोछेकी ओर टेढा पढ़ जाता है, वेहोश हो जाता है, कोई
देता है या कुछ गडवड़ी मचाता है, तो खींचन वढ जाती
२। प्रसूतिका टकार—दौराके समय कई मिनिटोंके लिये
रुक जाती है, मानो मुर्दा, फिर श्वास चलने लगती है, इस
वार वार फिटका दौरा होता है। प्रसव हो जाने वाद भी
तरहका फिट हुआ करता है। शरीरके ऊपरी अशमें ज्यादा
डन रहती है, ३। बच्चेको दांत निकलनेके समय दांती
जानेकी तरह जबडे अटक जाते हैं, दाँत कडमड करने लगता
४। किसी तरहकी गोटियाँ वेठ जानेके कारण मस्तिष्कमे वि
के लक्षण पैदा हो जाना, ५। एकाएक माथा, पाकस्थली, ह
पैर इत्यादिमे जोरका झटका (shock)। इससे रोगवाली अ
पर झटकाकी तरह लगता है और वह हिल उठती है,
मस्तिष्क या मेरुदण्डमें चोट लगकर मस्तिष्कमे विकारकी वज
कोई पुरानी बीमारीका पैदा हो जाना, जैसे—आक्षेप—
इत्यादि, ७। एकजिमा—मुँहमें, दाढ़ीमे और माथेमे होता
मोटी, पीले रगकी पपडी जमती है, खुजली नहीं रहती,
हैजामे या किसी दूसरी बीमारीमे प्रबल हिचकी।

मेनिञ्जाइटिस या टंकार—माथा, गर्दन, पीठ
और धनुषकी तरह टेढा पड जानेपर और सब तरहकी अकड
खींचन या टकारमे अगमे कितने ही प्रकारके विकार पैदा हो जा
पर इससे फायदा होता दिखाई देता है। मस्तिष्क-झिल्ली प्रदा
(Crebro-spinal meningitis) रोगमे खींचनके साथ य

ीका बीच बीचमें दम बन्द हो जाये और वह बेहोश हो पड़े इससे फायदा होगा। इससे बहुत भयंकर प्रकारकी अकड़न आराम हो जाती है। प्रसूताकी अकड़न, बच्चोंको दाँत निकलने समय टंकार, इसके अलावा क्रिमिके कारण अकड़न—सिनासे यदा न होनेपर—साइक्यूटासे फायदा होता है। टंकारमें कभी थ-पैर ढीले और कभी कड़े होते हैं; जरा भी छू देनेपर, हिलने-लनेपर या गोलमाल अथवा शोर-गुलसे खींचन बढ़ जाती है। नका चरित्रगत लक्षण है—माथा और गर्दन पीछेकी ओर टेढ़ी पड़ ना (इसका भी चरित्रगत लक्षण बेलेडोना अध्यायमें देखिये और नीचे लिखा "आभास" परिच्छेद पढ़िये)।

मस्तिष्क-झिल्लीका प्रदाह—बेसिलर, टियुबर्कुलर, सेरिब्रो-स्पाइनल प्रभृति सब तरहकी बीमारियोंमें—जब रोगीमें श्वास-कष्ट रहता है और कोई चीज निगलने यहाँ तक कि घूँट लेनेमें भी उसे तकलीफ मालूम होती है, उस समय साइक्यूटासे विशेष फायदा होता दिखाई देता है। इसमें रोगीके शरीरमें हाथ-लगानेसे ही उसकी खींचन बढ़ जाती है और कई दिनोंतक बीमारी रोगोंके बाद तब कहीं खींचन आरम्भ होती है। (रोगके आरम्भ र ही अगर खींचन हो—ज़िंकोनेसियम, कूप्रम)। साइक्यूटामें—अकड़नकी वजहसे अगर अंग-प्रत्यंग सीधे रहते हैं तो उन्हें टेढ़ा नहीं किया जा सकता। और अगर टेढ़े रहते हैं तो (straight) सीधे नहीं किये जा सकते। गर्दनमें भी खींचन होती है—इसीलिये,

माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है, पीठमें अकड़न—धनुषकी तरह टेढ़ा पड़ जाता है ।

कानकी बीमारी—सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिञ्जाइटिस अथवा कोई भी मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारीमें कानसे रक्तस्राव होते रहनेपर या एकदम बहरे हो जानेपर—साइक्यूटा फायदा करता है । कोई चीज निगलनेके समय एकाएक कानमें एक आवाज जोरकी होकर अगर बहरा हो जाये तो इससे फायदा होगा ।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमें धड़कनके साथ ऐसा मालूम हो मानो कलेजा थर थर काँप रहा है । ऐसा अनुभव हो मानो हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी ।

हिचकी—हैजाके रोगीको अकसर हिचकी आने लगती है, अगर हिचकी की आवाज खूब जोरकी हो अथवा इसके साथ ही पेटमें जलन, भूख न लगना, खाने-पीने बाद ही मिचली, पेटमें भार इत्यादि लक्षण रहनेपर—साइक्यूटासे फायदा होगा । ऊपर लिखे लक्षणोंमें—ज्वर-विकारकी हिचकीमें भी इससे समान रूपसे ही फायदा होगा । (नक्स-वोमिका अध्याय देखिये)।

चर्म-रोग—माथेका एकजिमा—छोटी छोटी पीबभरी फुन्सियाँ और घाव, ये एक ही बार बहुत-से निकल आते हैं और इतने ज्यादा होते हैं तथा इतनी ज्यादा पपड़ी जमती है, कि देखनेपर —ऐसा मालूम होता है कि मानो माथेमें एक टोपी पहनी हुई है ।

मुँहके एकजिमा रोगमें—ऊपरी ओंठमें और दाढ़ीमें मोटी और

माथा पीछेकी ओर खिंचा रहता है, पीठमें अकड़न—धनुषकी तरह टेढ़ा पड जाता है।

कानकी बीमारी—सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिञ्जाइटिस अथवा कोई भी मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारीमें कानसे रक्तस्राव होते रहनेपर या एकदम बहरे हो जानेपर—साइक्यूटा फायदा करता है। कोई चीज निगलनेके समय एकाएक कानमें एक आवाज जोरकी होकर अगर बहरा हो जाये तो इससे फायदा होगा।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमें धड़कनके साथ ऐसा मालूम हो मानो कलेजा थर थर काँप रहा है। ऐसा अनुभव हो मानो हृत्पिण्डकी गति बन्द हो जायगी।

हिचकी—हैजाके रोगीको अकसर हिचकी आने लगती है, अगर हिचकी की आवाज खूब जोरकी हो अथवा इसके साथ ही पेटमें जलन, भूख न लगना, खाने-पीने बाद ही मिचली, पेटमें भार इत्यादि लक्षण रहनेपर—साइक्यूटासे फायदा होगा। ऊपर लिखे लक्षणोंमें—ज्वर-विकारकी हिचकीमें भी इससे समान रूपसे ही फायदा होगा। (नक्स-वोमिका अध्याय देखिये)।

चर्म-रोग—माथेका एक्जिमा—छोटी छोटी पीबभरी फुन्सियाँ और घाव, ये एक ही बार बहुत-से निकल आते हैं और इतने ज्यादा होते हैं तथा इतनी ज्यादा पपडी जमती है, कि देखनेपर ठीक ऐसा मालूम होता है कि मानो माथेमें एक टोपी पहनी हुई है। तथा मुँहके एक्जिमा रोगमें—ऊपरी ओठमें और दाढ़ीमें मोटी और

पीले रंगकी पपड़ी जमनेपर और वह हमेशा रससे तर रहनेपर—साइक्यूटासे फायदा होना सम्भव है। ऐसे स्थानपर—२०० या इससे भी उच्च शक्ति एक मात्रा देकर राह देखें और बाहर केवल ग्लिसिरिन या ओलिव-आयल लगायें।

आभास—एकदम ज्ञान लोप हो जानेके साथ खींचन, टंकार या अकड़न। यह चाहे किसी भी कारणसे हो और हिस्टिरिया मृगी, अजीर्ण या क्रिमिरोगके कारण पैदा हुई अकड़न, प्रसवके बादकी अकड़न, धनुष्टंकार, खींचन, कोरिया, मुँहसे खून-मिला फेन निकलना और इसके साथ ही आक्षेप इत्यादि जिस किसी बीमारीमें भी हो, यदि उसमें रोगी एकदम बेहोश रहता है,—साइक्यूटा ही उसकी दवा है। साइक्यूटाके साथ नक्सकी क्रियाका बहुत ही निकटका सम्बन्ध है। नक्सम—ज्ञान रहता है। साइक्यूटामें मस्तिष्कका पक्षाघात (the function of the brain is paralyzed) होता है, उसमें ज्ञान एकदम ही लोप हो जाता है।

ज्ञान लोपके साथ अकड़न—एनुमिनियम ; सभी अंग-प्रत्यंगों का भयानक—रूपसे टेढ़ा पड़ जाना—एगारिकस ; आक्षेपके साथ गर्दनका पीछेकी ओर टेढ़ा पड़ जाना—एप्युमिनियम, नक्स-वोमिका, ओपियम।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, थोड़ी भी आवाजसे, शरीर हिलानेपर, तम्बाकूके धुंएमें।

ु है, उनकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है। क्रिमि-
वजहसे पैदा हुआ शूलका दर्द, नाक खुजलाना, चेहरा बदरंग
जाना, आँखके चारों ओर नीला घेरा पड़ जाना प्रभृति
लेक्स-मासके लक्षण हैं। यह पहलीसे ३री शक्तितक व्यवहृत
ा है। सैण्टोनाइन—१x विचूर्ण, सब तरहकी क्रिमिकी ही
है। डा० ग्रुसलरके मतसे नेट्रम फास क्रिमिकी एक अच्छी
है। कूप्रम-आक्साइडेटम नाइग्रा—१x, सब तरहकी क्रिमिकी
षधि है। इससे फीता जैसी क्रिमिमें भी लाभ होता है। यह
—डा० जोफी (Zofy) की ६० वर्षोंकी अनुभव की हुई है।
ोपोडियम—चेनोपोडियम तेल ८।१० बूँद मात्रामें २ घण्टोंका
र देकर, एक दिन सिर्फ ३ मात्रा सेवन करनेपर लम्बी केंचुआकी
इ क्रिमिमें और हुक-वर्ममें ज्यादा फायदा होता है। इससे अक-
क्रिमि बाहर निकल जाती है। (ग्रैनेटम)। सिना-गोल
उण्ड) और थ्रेड (सूतकी तरह) क्रिमिकी दवा है, पिन-वर्म
नहीं। अब किस तरहके धातुके रोगीके लिये और किस तरह
दूसरी दूसरी बीमारीमें सिना फायदा करता है, सो देखिये।
बच्चा बहुत क्रोधी (बहुत कुछ कैमोमिलाकी तरह)। सिर्फ
ुमें रहना चाहता है। अगर कोई बदनपर हाथ रखता है, तो
ो कर अधीर हो जाता है और हाथ-पैर पटकता है (एण्टिम-
में भी यही लक्षण है)। बच्चा रातमें बहुत बेचैन हो जाता है।
े सोते उठकर रोने लगता है, ठीक एपिसकी तरह। पर
िसका मस्तिष्क लक्षण इसमें नहीं है। क्रिमिवाले बच्चोंकी भूख

अस्वाभाविक रहती है अर्थात उनकी भूख मानो किसी तरह मिटती ही नहीं, भोजन करने बाद ही फिर खाना चाहता है। यह देखनेमें आता है—क्रिमि रोगवाले कितने ही बच्चोंको गदला पेशाब होता है अथवा दूधकी तरह सफेद पेशाब होता है और पेशाब सूख जानेपर खड़िया घोले रहनेकी तरह सफेद दाग पड़ता है। सिना—इन सभी लक्षणोंमें फायदा करता है।

अकड़न—बच्चेको दाँत निकलनेके समय अकसर इस तरहकी बीमारी हो जाती है। अकड़न या टङ्कार देखते ही लोग पहलेही बेलेडोना दे बैठते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि दाँत निकलने के समयकी अकड़नमें बेलेडोना फायदा करता है, पर यदि कोई उन्नेद अच्छी तरह ऊपर न निकल आनेके कारण अकड़न हो, तो फ्लुअम, जिङ्कम, स्ट्रैमोनियम इत्यादि दवाओंकी जरूरत पड़ती है। क्रियोजोटम—लड़का रातभर छटपटाता रहता है, पर यदि उसे धीरे धीरे थपथपाया जाता है, तो फिर कुछ स्वस्थ हो जाता है। पेटकी बीमारीकी परावर्त्तित क्रिया (reflex irritation) की वजहसे यह अकड़न होती है। ऐसी अकड़नमें—मास्टिकम फायदा करता है। सिनाकी अकड़नमें—बच्चेको गोदमें लेकर घूमने या हिलाने-डोलानेपर खींचन कुछ घट जाती है और स्थिर रहनेपर खींचन पड़ती है। क्रिमिकी वजहसे अकड़नमें—आर्टिमिसिया, इण्डिगो और सिना। डा० फैरिङ्टन कहते हैं—इससे फायदा न हो तो कौयामिया फायदा करता है। मसूड़े लाल और

मसूढ़ेकी इस पारावर्त्तित क्रियाके कारण पैदा हुई अकड़नमें—<u>डलिकस</u> और बच्चोंको छानेकी तरह थक्का थक्का वमन होनेके साथ अकड़नमें—<u>इथूजा</u> फायदा करता है।

सविराम ज्वर—बच्चोंके बोखारमें—सिनासे फायदा होता है। ज्वरमें—ऊपर लिखा क्रिमिका लक्षण पूरा पूरा या आंशिक भावसे रहनेपर और कोई दूसरी दवा जारी रहनेके बीच बीचमें सिना एक मात्रा प्रयोग कर देनेपर ज्यादा फायदा होता है, कभी कभी तो इससे बोखार एकदम बन्द हो जाता है। सिना का बोखार प्राय तीसरे पहर और नित्य ठीक एक ही समय आता है। अगर शामको यह बोखार आता है तो रातभर रहता है। ज्वरमें बहुत ज्यादा भूख, वमन, खायी हुई चीज या पित्तकी कै, मुँहमें पानी भर आना, पतले दस्त आना या कब्ज, नाकमें अंगुली डालना, आँख रगड़ना, नींद न आना, सोये सोये चौंक उठना, और चिल्लाना, अंगुलीका सिरा और नख खोंटना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। शीत और उत्तापवाली अवस्थामें प्यास नहीं रहती। सिनामें जीभ साफ रहती है, इपिकाकमें भी—जीभ साफका लक्षण है, पर इसमें मिचली या कै होनेका भाव ही ज्यादा रहता है और सिनाके ऊपर बताये हुए लक्षण बिलकुल नहीं रहते।

टाइफायड ज्वर—टाइफायड ज्वरमें बच्चा बिलकुल ही बेहोश रहता है, इसके साथ ही पेट फूलना, उदरामय। प्यास इतनी मालूम नहीं होती, पर पानी देते ही पीने लगता है। इधर

उदर कड़क्ड़ बदलता हुआ सर हिलता है। नाक खुजलाता है, ये सब लक्षण रहनेपर—सिना फायदा करता है। इस रोगमें बच्चा ठहर ठहरकर बहुत छटपटाये और लगातार रें रें करता रहे, यह नहीं वह लेंगे, यह कर बराबर जिद करता रहे, करुण स्वरमें रोता हो और उसके साथ ही ऊपर बताये मानसिक लक्षणोंका समावेश हो तो—सिनासे बहुत ज्यादा फायदा होगा। स्वस्थ शरीरमें यदि सिनाका सेवन किया जाये तो पेटमें क्रिमि हो ही नहीं सकती ; पर क्रिमिके उपसर्गकी तरह कितने ही उपसर्ग पैदा हो जाते हैं। इसी लिये सिनासे क्रिमि रोग भी शान्त हो जाता है।

खाँसी—बच्चा दिन-रात खाँसता है, खाँसते खाँसते मानो बच्चा फड़ा पड़ जाता है। खाँसीके बाद गलेमें घर घर आवाज होती है, इस तरहकी खाँसी। हूप-खाँसीका लक्षण भी सिना-से आराम हो जाता है (पर्स्यूसिनिया देखिये)। बच्चा हिलता-डोलता या बोलता है तो खाँसी बढ़ती है, इसीलिये, चुप-चाप पड़ा रहता है (खाँसीके विस्तृत विवरणके लिये खाँसिया अध्याय देखिये।

वृद्धि (aggravation)—रातमें, पानी पीनेपर, क्रिमिके द्वारा, बोलने और हँसनेपर।

सम्बन्ध—हूप-खाँसी—छूटनेके बाद सिना और क्रिमिमें सिनासे फायदा न होनेपर—सैण्टोनाइन, टियुक्रियम, स्पाइजेलिया और स्टैनम प्रभृति दवायें फायदा करती हैं।

क्षुद्र क्रिमिमें—हरिडगो, फोयासियाका प्रयोग करना चाहिये। एण्टिम-क्रूड, एण्टिम-टार्ट, कैमो, क्रियो, सिलि, स्टैफि, इग्ने] इत्यादि इसके सदृश हैं।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्निका, कैम्फर, चायना, कैप्सि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१४—२०० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—४।

सिङ्कोना या चायना।

(CINCHONA OR CHINA)

(पेरु और बोलिवियाका एक तरहका लम्बा गाछ—इसकी छालसे टिंचर और विचूर्ण क्रमकी दवा तैयार होती है)—ज्वर, बहुत ज्यादा रस-रक्तका क्षय, स्तन-पिलाने और लार बहनेकी वजहसे कमजोरी, उदरामय, प्लीहा, यकृत, पेट फूलना, रक्तस्राव, स्नायुशूल इत्यादि बीमारियोंमें साधारणतः इसका व्यवहार होता है।

काले रगकी देह, बलवान मनुष्य या जो किसी समय खासे बलवान थे, इसके बाद नाना प्रकारके स्राव होनेकी वजहसे धीरे धीरे ज्वर-जीर्ण हो पडे हैं, उनके शरीरमें सिङ्कोना अमृतकी तरह काम करता है, इसका रोगी सभी विषयोंमें उदासीन रहता है।

बात-चीत करनेसे बहुत चिढ़ता है। हमेशा विषादमें भरा रहता है। गैंग्लियोनिक नर्वस सिस्टमके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण :—

१। रक्त, शुक्र, स्तनका दूध और शरीरके दूसरे दूसरे तेजी लानेवाले पदार्थके क्षय हो जानेके कारण कमजोरी। २। स्त्रियोंको ऋतु लोप हो जानेकी उमरमें बहुत ज्यादा रजःस्राव और इसी वजहसे कमजोरी। ३। नाक, मुँह, आँतें, जरायु प्रभृतिसे अधिक दिनोंतक स्थायी रक्तस्राव। ४। शरीरके किसी भी दरवाजेसे रक्तस्राव होने बाद कानमें भों भों आवाज, मूर्च्छाका भाव, दृष्टि क्षीण, शरीर ठण्डा, कभी कभी अकड़न। ५। दर्द—जरा भी छू देनेसे यहाँतक कि हवा लगनेपर भी बढ़ जाता है, पर जोरसे दबानेपर घटता है। ६। सविराम ज्वर, प्रत्येक पारीमें २।३ घण्टा पीछे हटकर आता है। प्रति बार एक या दो सप्ताहके अन्तरसे आता है, ज्वर रातमें नहीं आता, शरीरका जो अङ्ग दबा रहता है उस अङ्गमें, समूचे शरीरमें और सो जानेपर बहुत ज्यादा पसीना होता है। ७। सविराम-ज्वरमें शीत, उत्ताप, पसीना, ये तीनों ही अवस्थायें स्पष्ट दिखाई देती हैं। ८। शूलका दर्द रोज किसी एक ही समयपर होता है। ९। पाकस्थली और आँतोंमें वायु होकर पेट फूलना, पेट गड़गड़ाना। डकार आनेपर भी पेटका फूलना नहीं घटता। १०। बिना किसी तरहके दर्दके पतले दस्त आना। ११। पेटका मलिन, आँखें गड़हेमें धँसी, आँखोंके

ओर नीली आभा, मुर्देकी तरह चेहरा ; १२। अतृप्त रहनेवाली नींद, रात ३ बजनेके समय उपसर्गोंका बढना, इसका रोगी बहुत तडके जागता है।

कमजोरी—बहुत ज्यादा रक्तस्राव या शरीरका कोई तरल पदार्थ बहुत ज्यादा परिमाणमें क्षय हो जानेके कारण पैदा हुई कमजोरीमें, जैसे,—फेफडा, आँत, नाक, जरायु इत्यादि शरीर के किसी भी द्वारसे होनेवाला रक्तस्राव (कार्बो)। उदरामय, श्वेत-प्रदर, बहुत दिनों तक होनेवाला पीवका स्राव, स्वप्नदोष या किसी दूसरी तरहसे शुक्रक्षय इत्यादि कारणोंसे कमजोरी और उसी वजहसे कान भी भीं करना, आँखसे दिखाई न देना, आँखके चारो ओर काला दाग पड जाना, सरमें चक्कर आना, रातके समय पसीना, सामान्य परिश्रमसे ही पसीना होने लगना इत्यादि लक्षणोंमें—चायना विशेष फायदा करता है। ऐलोपैथगण इसे किसी लोहेकी बनी दवा या शराबके साथ मिलाकर टानिकके रूपमें व्यवहार करते हैं।

पेट फूलना और पेट चढ़ा रहना—इन सब बीमारियोंमें—लाइकोपोडियम, चायना, कार्बो-वेज इत्यादि दवा साधारणतः व्यवहृत होती है। चायनामें—पेट बहुत फूल उठता है, रोगी सिर्फ डकार लेनेकी चेष्टा करता है, पर डकार आनेपर भी पेटका फूलना कुछ भी नहीं घटता बल्कि तकलीफ और भी बढ जाती है, रोगीके पेटमें इतना वायु इकट्ठा होता है, कि सांस

छोड़ में भी तकलीफ मालूम होती है, समूचा पेट फूल उठता है (फार्वो अध्याय देखें)।

अजीर्ण—खानेकी चीजें अच्छी तरह नहीं पचतीं जो खाता है, वही वायुमें परिणत हो जाता है, फल बिल्कुल ही सहन नहीं होता, फल खानेपर ही अजीर्ण हो जाता है, पतले दस्त आदि पेटकी गड़बड़ी पैदा हो जाती है। भोजनके बाद रोगीको बहुत कमजोरी और थकानकी तरह मालूम होता है। लाइकोपोडियमकी तरह थोड़ा-सा ही खानेके बाद ही पेट फूल उठता है, थोड़ा-सा ही कुछ खानेपर ही ऐसा मालूम होता है, कि पेटभर भोजन कर लिया है। चायनाका एक और भी विशेष लक्षण है—भोजनके बाद छातीकी बीचकी जगहपर गोलेकी तरह एक पदार्थ मानो खड़ा जाता है। इससे ऐसा मालूम होता है, कि मानो जो कुछ खाया है, वह वहीं अड़ा हुआ है। चायनाका—यह टेम्फर ऊपर चढ़नेका भाव छातीके बीचवाली हड्डी मध्य-वक्षोस्थि—(mid-sternum) में होता है। एबिस-नायग्रामें यह लक्षण खानेपर भी यह छातीके निचले प्रदेशमें अधिक होता है। पल-सेटिलामें भी—चायनाकी तरह ऊपर बताये लक्षण पाये जाते हैं। चायनामें—दस्तोंमें अन्न और अन्नका लक्षण भी है।

अतिसार—मलमें बदबू रहती है, मलका रंग पीला या भूरा, पानीकी तरह पतला, उसके साथ ही अनपचे खाये हुए पदार्थ निकलते रहते हैं, खानेके बाद और रातमें अधिक दस्त आते

गोर नीली आभा, मुर्देकी तरह चेहरा, १२। अतृप्त रहनेवाली नींद, रात ३ बजनेके समय उपसर्गोंका बढ़ना, इसका रोगी बहुत तड़के जागता है।

कमजोरी—बहुत ज्यादा रक्तस्राव या शरीरका कोई तरल पदार्थ बहुत ज्यादा परिमाणमे क्षय हो जानेके कारण पैदा हुई कमजोरीमे, जैसे,—फेफड़ा, आँत, नाक, जरायु इत्यादि शरीर के किसी भी द्वारसे होनेवाला रक्तस्राव (कार्बो)। उदरामय, श्वेत-प्रदर, बहुत दिनों तक होनेवाला पीवका स्राव, स्वप्नदोष या किसी दूसरी तरहसे शुक्रक्षय इत्यादि कारणोंसे कमजोरी और उसी वजहसे कान भों भो करना, आँखसे दिखाई न देना, आँखके चारों ओर काला दाग पड जाना, सरमे चक्कर आना, रातके समय पसीना, सामान्य परिश्रमसे ही पसीना होने लगना इत्यादि लक्षणोंमें—चायना विशेष फायदा करता है। पेलोपैथगण इसे किसी लोहेकी बनी दवा या शराबके साथ मिलाकर टानिकके रूपमे व्यवहार करते हैं।

पेट फूलना और पेट चढ़ा रहना—इन सब बीमारियोंमे—लाइकोपोडियम, चायना, कार्बो-वेज इत्यादि दवा साधारणतः व्यवहृत होती है। चायनामें—पेट बहुत फूल उठता है, रोगी सिर्फ डकार लेनेकी चेष्टा करता है, पर डकार आनेपर भी पेटका फूलना कुछ भी नहीं घटता बल्कि तकलीफ और भी बढ जाती है, रोगीके पेटमें इतना वायु इकट्ठा होता है, कि साँस

छोड़ में भी तकलीफ मालूम होती है, समूचा पेट फूल उठता है (फार्वां अध्याय देखें)।

अजीर्ण—खानेकी चीजें अच्छी तरह नहीं पचतीं जो खाता है, वही वायुमें परिणत हो जाता है, फल बिलकुल ही सहन नहीं होता, फल खानेपर ही अजीर्ण हो जाता है, पतले दस्त आदि पेटकी गड़बड़ी पैदा हो जाती है। भोजनके बाद रोगीको बहुत कमजोरी और थकानकी तरह मालूम होता है। लाइकोपोडियमकी तरह थोड़ा-सा ही खानेके बाद ही पेट फूल उठता है, थोड़ा-सा ही कुछ खानेपर ही ऐसा मालूम होता है, कि पेटभर भोजन कर लिया है। चायनाका एक और भी विशेष लक्षण है—भोजनके बाद छातीकी बीचकी जगहपर गोलेकी तरह एक पदार्थ मानो चढ़ा आता है। इससे ऐसा मालूम होता है, कि मानो जो कुछ खाया है, वह वहीं अड़ा हुआ है। चायनाका—यह ठेलकर ऊपर चढ़नेका भाव छातीके बीचवाली हड्डी मध्य-वक्षोस्थि—(mid-sternum) में होता है। एबिस-नायग्रामें यह लक्षण रहनेपर भी यह छातीके निचले प्रदेशमें अधिक होता है। पल्सेटिलामें भी—चायनाकी तरह ऊपर बताये लक्षण पाये जाते हैं, चायनामें—छातीमें जलन और अम्लका लक्षण भी है।

अतिसार—मलमें बदबू रहती है, मलका रंग पीला या भूरा, पानीकी तरह पतला, उसके साथ ही अनपचे खाये हुए पदार्थ निकलते रहते हैं, खानेके बाद और रातमें अधिक दस्त आते

हैं। नहीं पचे भोजन निकलने (lienteria) की चायना ही एक मात्र दवा है। चायनामे—पेट बहुत फूला रहता है, इससे शरीरका ऊपरी अश, अर्थात—नाक, कान, दाढी अधिक ठण्डी रहती है, रोगी बहुत कमजोर रहता है, दस्तके बाद भूख लगती हैं, पर ज्योंही खाता है, त्योंही पाखाना लग आता है। पेटमे कभी कभी (पाखानेके पहले और बाद दर्द रहता है, कभी कभी दर्द नहीं रहता)। एसिड-फासमे—चायनाकी अपेक्षा बारमे अधिक दस्त आते हैं, पर उसमें चायनाकी तरह कमजोरी नहीं रहती। जो पतले दस्त पेट फूलकर या पेट गड़गड़ाकर आते हैं, पाखाना होनेके पहले पेट गडगडाता है, पेटमे गुड गुड आवाज होती है, पेट बोलता है, गडगड आवाज होती है, पर पेटमे कुछ भी दर्द नहीं रहता, उसमे फास्फोरिक एसिड फायदेमन्द है। एसिड-फास में—रोगी बिलकुल ही कमजोर नहीं होता, और उसके मलका रंग सफेद रहता है।

फेरम मेटालिकम—इसमे भी चायनाकी तरह बिना पची खानेकी चीजें निकलती हैं और एसिड-फासकी तरह पेटमे दर्द नहीं रहता, पर इसमे भोजनके लिये बैठते ही पाखाना लग आता है, चायनाकी तरह भोजन समाप्त करने बाद नहीं। मलमे किसी तरहकी गन्ध नहीं रहती, मल निकलनेके पहले वायु निकलता है।

अर्जेण्ट-नाइट्रिकम—इसमे भी कुछ खाने-पीनेके कुछ बाद ही पाखानेका वेग होता है और पाखानेके समय जोरका वायु निकलता है।

फास्फोरस और एपिस—इन दोनो दवाओंमें ही मल मलद्वार से चू पडता है और अनजानमें निकल जाता है। मानो मलद्वार खुला हुआ ही है। एलोमें भी—अनजानमें वायु निकलनेका लक्षण है, पर उसमें वायु निकलनेके साथ ही साथ या पेशावके वेगके साथ आप ही आप मल निकल जानेका लक्षण ही अधिक है।

एसिड-म्यूर—पेशाव करनेके समय अनजानमें पाखाना होनेका उपक्रम या दस्त हो जाता है, पेशावके लिये वेग देनेपर मल-नाली बाहर निकल आती है।

आर्सेनिक—इसमें भी मलके साथ बिना पचा खाया हुआ पदार्थ निकलता है, पर आर्सेनिकके दस्तके साथ पेटमें जलनकी तरह तकलीफ और प्राय सभी उपसर्ग रात १२ बजनेके बाद बढते हैं और प्यास भी रहती है।

पोडोफाइलम—छोटे छोटे बच्चोंको दस्तके साथ कभी कभी अजीर्ण अवस्थामें खाया हुआ पदार्थ निकलता है। मल बहुत बदबूदार, सबेरेके बक ही दस्त ज्यादा आते हैं और फिर धीरे धीरे परिमाणमें घटकर दिन भर थोडा थोडा पाखाना हुआ करता है।

फोलियेगाइट—इसके लक्षण प्राय चायनाकी तरह हैं, पर इनमें अन्तर यह है, कि बहुत देर पहले यहांतक कि दो तीन दिन पहले भी जो खाया है, वह भी न पचकर निकलता है। ... को जल्दी जल्दी पेटकी बीमारियाँ हुआ करती है, ...

बीमारी लगी ही रहती है, यह उनके लिये ज्यादा फायदेमन्द है, इसका निम्नक्रम—२x से ६ ठी शक्ति तक व्यवहार करना चाहिये।

रक्तस्राव—शरीरके किसी भी स्थानसे क्यों न हो, अगर चमकीले लाल रंगका खून निकलने बाद ही थक्का बँधने लगे, इतना ज्यादा खून निकलता हो, कि रोगी सफेद हो पड़े, समूचा शरीर ठण्डा हो जाये, रोगी सिर्फ हवा चाहता हो, तो ऐसी अवस्थामें—चायना निम्नक्रम (एक बूँद मात्रामें, प्रत्येक आधा या एक घण्टेके अन्तरसे) प्रयोग करनेपर आशासे अधिक लाभ होता है। प्रसव या गर्भस्रावके बाद फूल अटक जाता है, इसलिये उसमें बहुत रक्तस्राव होता है। उसमे पल्सेटिलाके अपेक्षा चायना ज्यादा लाभदायक है। चायनाके प्रयोगसे रक्त आना रुक कर जरायु बलवान हो जाता है और आपसे आप इससे फूल बाहर निकल आता है। यदि ऐसा न हो,—तो दूसरी दूसरी दवाएँ (सिकेलि प्रभृति) व्यवहारकर देखना उचित है। यदि इससे भी फायदा न हो तो हाथसे फूल बाहर निकाल लेना पड़ेगा।

<u>इपिकाक</u>—इसका लक्षण बहुत कुछ चायनाकी तरह है, खून का रंग चमकीला लाल, पर इसके साथ ही इपिकाकका चरित्रगत लक्षण—जी मिचलाना रहनेपर और भी ज्यादा फायदा होता है। क्षय-कासकी पहली अवस्थाके रक्तस्रावमे—ऐसा मालूम होता है, कि इपिकाकसे बहुत फायदा होता है। <u>बेलेडोना</u>—स्रावका रक्त गरम, घोर लाल रंगका और बाहर निकलने बाद ही जम

जाता है, ट्रिलियम—जरायुके रक्तस्रावमें ही व्यवहृत होता है, प्रसव और गर्भस्रावके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्रावमें और स्त्रियोंका मासिक ऋतुस्राव बन्द न होकर बहुत दिनोंतक रक्तस्राव होते रहनेपर इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है; मिलिफोलियमके— रक्तस्रावमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता। सैबाइनामें—थक्का थक्का खून निकलता है, और बेतरह दर्दके साथ खूनका स्राव हुआ करता है। इसमें दर्द तलपेटमें घूमकर कमरकी ओर आ जाता है। चायनामें—ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी और परिमाणमें ज्यादा होता है, रंग काला और थक्का थक्का, रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है; सिकेलि-कोर—दुबली-पतली स्त्रियोंकी बीमारीमें फायदा करता है, इसमें जरा जरा-सा कर रक्तस्राव होता है और रोगिनी का शरीर ठण्डा रहनेपर भी भीतरी जलनके कारण बदनपर कपड़ा नहीं रखना चाहती। इरिजिरन—रक्तस्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है। परन्तु इसमें पेशाबके समय वेग और जलन रहती है। हैमामेलिस—रक्तका रंग कालापन लिये और रक्तस्रावके साथ दर्द रहता है। एकालिफा-इण्डिकामें—सूखी खाँसीके साथ मुँहसे खून निकलता है। आस्टिलेगो—जरायुके रक्तस्रावमें ही इसका प्रयोग होता है, रक्त परिमाणमें ज्यादा नहीं होता; पर बहुत दिनोंतक थोड़ा थोड़ा निकलता रहता है। जरायुका अर्बुद (पालिपस) और इसी वजहसे रक्तस्राव होनेपर-फास्फोरस फायदा करता है (हैमामेलिस अध्यायमें रक्तस्राव देखिये)।

बीमारी लगी ही रहती है, यह उनके लिये ज्यादा फायदेमन्द है, इसका निम्नक्रम—२x से ६ ठी शक्ति तक व्यवहार करना चाहिये।

रक्तस्राव—शरीरके किसी भी स्थानसे क्यों न हो, अगर चमकीले लाल रंगका खून निकलने बाद ही थक्का बँधने लगे, इतना ज्यादा खून निकलता हो, कि रोगी सफेद हो पड़े, समूचा शरीर ठण्डा हो जाये, रोगी सिर्फ हवा चाहता हो, तो ऐसी अवस्थामें—चायना निम्नक्रम (एक बूँद मात्रामें, प्रत्येक आधा या एक घण्टेके अन्तरसे) प्रयोग करनेपर आशासे अधिक लाभ होता है। प्रसव या गर्भस्रावके बाद फूल अटक जाता है, इसलिये उसमें बहुत रक्तस्राव होता है। उसमें पल्सेटिलाके अपेक्षा चायना ज्यादा लाभदायक है। चायनाके प्रयोगसे रक्त जाना रुक कर जरायु बलवान हो जाता है और आपसे आप इससे फूल बाहर निकल आता है। यदि ऐसा न हो,—तो दूसरी दूसरी दवाएँ (सिकेलि प्रभृति) व्यवहारकर देखना उचित है। यदि इससे भी फायदा न हो तो हाथसे फूल बाहर निकाल लेना पड़ेगा।

इपिकाक—इसका लक्षण बहुत कुछ चायनाकी तरह है, खून का रंग चमकीला लाल, पर इसके साथ ही इपिकाकका चरित्रगत लक्षण—जी मिचलाना रहनेपर और भी ज्यादा फायदा होता है। क्षय-कासकी पहली अवस्थाके रक्तस्रावमें—ऐसा मालूम होता है, कि इपिकाकसे बहुत फायदा होता है। बेलेडोना—स्रावका रक्त गरम, घोर लाल रंगका और बाहर निकलने बाद ही जम

जाता है, ट्रिलियम—जरायुके रक्तस्रावमें ही व्यवहृत होता है, प्रसव और गर्भस्रावके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्रावमें और स्त्रियोंका मासिक ऋतुस्राव बन्द न होकर बहुत दिनोंतक रक्तस्राव होते रहनेपर इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है, मिलिफोलियमके—रक्तस्रावमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता। सैबाइनामें—थक्का थक्का खून निकलता है, और बेतरह दर्दके साथ खूनका स्राव हुआ करता है। इसमें दर्द तलपेटमें घूमकर कमरकी ओर आ जाता है। चायनामें—ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी और परिमाणमें ज्यादा होता है, रंग काला और थक्का थक्का, रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है, सिकेलि-कोर—दुबली-पतली स्त्रियोंकी बीमारीमें फायदा करता है, इसमें जरा जरा-सा कर रक्तस्राव होता है और रोगिनी का शरीर ठण्डा रहनेपर भी भीतरी जलनके कारण बदनपर कपड़ा नहीं रखना चाहती। इरिजिरन—रक्तस्राव बहुत ज्यादा परिमाणमें होता है। परन्तु इसमें पेशाबके समय वेग और जलन रहती है। हैमामेलिस—रक्तका रंग कालापन लिये और रक्तस्रावके साथ दर्द रहता है। एकालिफा-इण्डिकामें—सूखी खाँसीके साथ मुँहमें खून निकलता है। आम्ब्रिग्रेगो—जरायुके रक्तस्रावमें ही इसका प्रयोग होता है, रक्त परिमाणमें ज्यादा नहीं होता, पर बहुत दिनोंतक थोड़ा थोड़ा निकलता रहता है। जरायुका अर्बुद (पालिपस) और इसी वजहसे रक्तस्राव होनेपर-फास्फोरस फायदा करता है (हैमामेलिस अध्यायमें रक्तस्राव देखिये)।

सविराम ज्वर—कितने ही कहते हैं, कि किनाइनके सिवा मैलेरिया या सविराम ज्वर आराम ही नहीं होता। वास्तव में किनाइन—मैलेरिया ज्वरकी एक प्रधान दवा होनेपर भी अगर किनाइनके लक्षण न मिलें और उसका प्रयोग कर दिया जाये तो उससे बहुत नुकसान पहुँचेगा। बहुत-से रोगी बहुत ज्यादा किनाइन सेवनकर अन्तमें यक्ष्माके शिकार बन जाते हैं और अन्तमें असमयमें ही कालके गालमें चले जाते हैं। इस बातके बहुतसे प्रमाण मिले हैं, कितने ही होमियोपैथिक चिकित्सकोंका भी मेटीरिया-मेडिकामें पूरा पूरा दखल न रहनेके कारण, वे सविराम ज्वरमें एकाएक किनाइनका प्रयोग कर बैठते हैं। होमियोपैथीमें ज्वर और खाँसीकी चिकित्सामें ही चिकित्सककी विद्या-बुद्धिका परिचय प्राप्त होता है, होमियोपैथीमें जिन्होंने ज्वरमें सफलता प्राप्त की है, उसे होमियोपैथिक चिकित्सक कहा जा सकता है।

चायना—रोगी मोटा-ताज़ा और गन्दा, गन्दी प्रकृतिके मनुष्य या जो किसी समय बहुत ही हृष्ट-पुष्ट और बलवान थे, इसके बाद,—रक्तस्राव, मेह, अतिसार इत्यादि बीमारियाँ भोगते भोगते कमजोर हो गये हैं, ऐसे आदमियोंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदेमन्द है। चायनाका बोखार कभी रातमें नहीं चढ़ता, जिस ज्वरका प्रकोप—प्रत्येक बार २।३ घण्टा पहले समय घटाकर आता है, या ७ दिन १४ दिनका अन्तर देकर फिर आता है। उसमें चायना फायदा करता है। चायना—के ज्वरके समयकी

कोई स्थिरता नहीं रहती, पर अधिकांश स्थानोंमें—दोपहरके समय या तड़के ५ बजे या शामको ५ बजे ही आता है। ज्वरकी पूर्वावस्था में—बहुत प्यास, भूख और सर-दर्द रहता है। शीतावस्था—जाड़ा आरम्भ होनेपर प्यास बिलकुल ही नहीं रहती, रोगी भीतर और बाहर शीत अनुभव करता है, पानी पीनेपर जाड़ा बढ़ जाता है। उत्तापावस्थामें—प्यास नहीं रहती, बहुत उत्ताप शरीर मानो जला जाता है, रोगी बदनपर कपड़ा नहीं रख सकता ; पर कपड़ा उतारते ही फिर सिहरावन मालूम होने लगती है, बहुत सर-दर्द।

पसीनेवाली अवस्था—इस अवस्थामें बहुत प्यास, बदन ढका रहनेपर बहुत पसीना होता है। ज्वर न रहनेकी अर्थात् विज्वरावस्था-बहुत पसीना, प्यास बिलकुल ही नहीं रहती, यकृत और प्लीहामें दर्द रहता है।

सारांश—चायनाके ज्वरमें शीत, ताप पसीना एकके बाद एक हुआ ही करता है और यह अवश्य ही होगा। जहाँ शीत और ताप वाली अवस्थाएँ रहेंगी, वहाँ चायना बिलकुल ही फायदा न करेगा। (चायनामें—शीतावस्थामें प्यास रहनेपर, शीतके ठीक पहले और बाद प्यास होती है)।

चिनिनम-सल्फ और क्विनाइन-सल्फेट—

(Chininum Sulph) दिनके बरसर १०।११ बजे या दिनके ३ बजेसे रातके १० बजेके बीचमें बोखार आता है और प्रत्येक बारीमें ५।३ घण्टा पीछे हटकर आता है। इसमें ज्वरके आनेके पहलेकी

अवस्थामें कोई विशेष लक्षण नहीं प्रकट होते। शीतावस्था, तापावस्था, पसीनेवाली अवस्था और ज्वर छूटनेवाली अर्थात् विज्वरावस्था—सभी समय प्यास रहती है। बोखार न रहनेवाली अवस्था, बहुत थोडी देरतक रहती है। यहांतक कि पसीना बन्द होते न होते, फिर ज्वर आजाता है। इसमें शीत और तापवाली अवस्थामें प्यास जरूर ही रहेगी। किनाइनके प्रयोगके सम्बन्धमें उपदेश—जिस ज्वरमें पसीना न होता हो, उसमें किनाइनका प्रयोग कर देनेपर बहुत नुक्सान हो जानेकी सम्भावना है। किनाइनका ज्वर होनेपर—शुद्ध किनाइन, किनाइन हाइड्रोब्रोम—२॥ ग्रेनकी गोली, रोज २।३ गोलियाँ, ३।४ दिनोंतक विज्वरावस्था अर्थात् बोखार न रहनेपर सेवन करनेसे ज्वर एकदम बन्द हो जाता है। अधिक व्यवहारकी जरूरत ही नहीं पडती। यह नये बोखारमें—२०० से ऊँची शक्ति। पुराने ज्वरमें—१x विचूर्ण, अधिक लाभदायक मालूम होता है।

द्रष्टव्य—किनाइन प्रयोगके साधारण लक्षण ३ हैं—"शीत, ताप और पसीना" अर्थात् शीत या कम्प होकर ज्वर आता है। इसके बाद बोखार चढता है और बदनमें जलन होती है, अन्तमें पसीना होकर बोखार बिलकुल छूट जाता है। इसी तरहसे पारीसे बोखार छूटता और फिर आता है। ये ही ३ लक्षण अगर किसी सविराम ज्वरमें दिखाई दें तो रोगीको खूब कममात्रामें किनाइन प्रयोग करनेसे ही बोखार बन्द हो जायगा और किसी तरहकी हानि भी नहीं पहुँचेगी। जिन सब मनुष्योंके शरीरमें—सोरा, सिफिलिस, साइ-

कोसिस प्रभृति विष-गुप्त भावसे छिपे हुए हैं, उनके सविराम ज्वरमें ये ३ लक्षण कभी स्पष्ट रूपसे न दिखाई देंगे, अतएव, भ्रमवश कोई उस रोगीको किनाइन दे देगा तो उससे बोखार कुछ समय या कुछ दिनोंके लिये बन्द तो हो जायगा—पर धातुगत छिपे हुए विषके साथ मिलकर किनाइन ऐसे कितने ही जटिल रोग पैदा कर देगा, कि उसीसे मृत्यु होगी।

चिनिनम आर्स—(Chinninum Ars) चायना और आर्सेनिक के सम्मिलित लक्षणोंमें इसका प्रयोग होता है। मलेरिया ज्वर, दमा, खाँसी प्रभृति बीमारियाँ बहुत दिनोंतक भोग करनेके कारण यदि रोगी धीरे धीरे कमजोर हो जाये, रक्तहीन और बहुत जीर्ण-शीर्ण हो पड़े तो यह दवा नियमित रूपसे सेवन करनेपर उसकी जान बच जाती है और कमजोर देहमें दिन-दिन नया बल भरता है। होमियोपैथीमें यह एक प्रकारका टानिक या ताकत बढ़ानेवाली दवा है। कोई कोई चिकित्सक यह भी कहते हैं, कि मैलेरिया ज्वर अगर किसी तरह भी आराम न होता हो तो चिनिनम-आर्स और फेरम-आर्स—नित्य २।४ बार पर्यायक्रमसे ५।७ दिनोंतक सेवन करानेपर ज्यादा फायदा होता है। मैलेरिया-ज्वरमें—यकृतमें दर्द और यकृत-फूला रहनेपर—चिनिनम-आर्स ज्यादा फायदा करता है। फेरम-आर्स—इसमें रक्तहीनता, कमजोरी अधिक और यकृत तथा प्लीहा दोनों ही खूब बढ़े रहते हैं। फेरम-आर्सके बोखारमें प्यास नहीं रहती। अगर यकृत और प्लीहा दोनों ही बढ़े हों और बोखार न हो, वहाँ—फेरम-आयोड ज्यादा काम करता है।

चिनिनम-आर्सके ज्वरका प्रधान लक्षण—हमेशा ही सिहरावन का भाव, प्यास बहुत थोडी, बोखार छूटनेके समय कभी पसीना होता है, कभी नहीं होता, ज्वर अकसर दिन रात ही रहता है, और दिनकी अपेक्षा रातमें बोखार ज्यादा होता है। ज्वर पहले कई दिनोंतक रोज आकर अन्तमें शीत-ज्वरकी तरह एक दिन नागा देकर आने लगता है। बोखार आनेके पहले जम्हाई आती है, माथेमें दर्द होता है, हाथ-पैरमें मरोड होता है। क्रम—१x और ३x विचूर्ण, अगर बीमारी बहुत दिनोंकी पुरानी हो जाये—तो २०० या उससे भी अधिक उच्च शक्तिसे ज्यादा फायदा होता है। चिनिनम-आर्स—ज्वर, विज्वर, दोनों तरहकी अवस्थाओमे ही इसका प्रयोग किया जाता है। जो ज्वर एकदम नहीं छूटता, रोगीकी सान्निपातिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। लक्षण मिलनेपर वहाँ ज्वरकी अवस्थामें ही प्रयोग किया जाता है, उससे फायदा भी होता है।

स्पर्शका सहन न होना—किसी भी दर्द-भरी जगह मे थोडासा भी छू देनेपर तकलीफ बढ जाती है। पुराना वात, सन्धि स्थानोंमे सूजन और दर्द—रह रहकर चिलक मार उठता है, यदि कोई पास जाता है तो दर्द बढ़ जानेके डरसे रोगी रोता है, यहाँतक कि हवा लगनेपरसे भी दर्द बढता है। इस तरहके दर्दमें—चायना ज्यादा फायदा करता है। चायनामे शरीरके सभी स्थानोंमे यहाँतक कि केशोंमें भी स्पर्श सहन नहीं होता। इसकी एक यह भी विशेषता है, कि जरा भी छू देनेसे दर्द बढता है, पर

ज़ोरसे दबानेपर दर्द घटता है (प्लम्बममें भी—स्पर्श सहन न होनेका लक्षण है)। कामला रोगमें (Jaundice)—शरीरकी त्वचा, आँख, पेशाब, सभी पीले रंगके होते हैं, इसके साथ ही यकृतमें इतना दर्द रहता है, कि छूनेपर तकलीफ होती है। दाहिनी ओरके पँजरेके नीचे बहुत दर्द और स्पर्शका सहन न होना, इस लक्षणमें चायना ज्यादा फायदा करता है। डियुओडेनल कैटार (Duodenal Catarrh) की वजहसे कामला रोग होनेपर और शराब आदि पीनेकी वजहसे कामला होनेपर—चायना अधिक लाभदायक मालूम होता है।

फेफड़ेकी बीमारी—शराबियोंके फेफड़ेमें पीब पैदा हो जाना, इसी वजहसे क्षय ज्वर (Hectic fever) होनेपर चायना फायदा करता है। फेफड़ेकी किसी बीमारीमें सर्दी न निकलकर अगर भीतर सड़ती रहे और खाँसनेके समय मुँहसे सड़ी गन्ध आये—कैप्सिकम, सैंगुनेरिया वगैरह फायदा करते हैं, चायना से उतना फायदा नहीं होता।

सर-दर्द—माथेमें टपकका दर्द होता है, माथा मानो फटा जाता है। ऐसा मालूम होता है, मानो माथेमें कोई हथौड़ी से मार रहा है। इस तरहका दर्द कनपटीमें ही अधिक होता है, माथेकी खोलमें बराबर दर्द, जरा भी छूले, यहाँतक कि माथेके केश पकड़कर हिला देनेसे ही दर्द बढ़ता है, ऐसा मालूम होता है मानो माथेमें तरंग खेल रही है, रक्तहीनताके कारण पैदा हुई बीमारी

में भी चायना फायदा करता है। चायनाका इस तरहका सर दर्द जरा भी छू देने या केशका एक गुच्छा हिलानेसे ही बढता है, पर उसी जगह जोरसे दबानेपर दर्द घटता है। यही इस दवाकी विशेषता है। चायनामे—यन्त्रणादायक सर दर्द किसी एक बँधे समयपर पैदा होता है। इस ढङ्गका सर-दर्द यदि मैलेरिया ज्वरके बाद हो—तो इससे और भी ज्यादा फायदा होता है।

आँखकी बीमारी—ज्यादा मात्रामे किनाइन सेवन कर आँखके आगे अँधेरा दिखाई देता हो या बिलकुल ही आँखसे दिखाई न दे तो चायना फायदा करेगा, आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ दिखाई देना, रस-रक्त वीर्य प्रभृति शरीरमे तेज पैदा करनेवाले पदार्थोंके क्षयकी वजहसे आँखके सामने अँधेरा छा जाना, बीच बीचमे एकदम दिखाई न देना (Transient blindness), रतौंधी, पलकोंका स्नायुशूल (Neuralgic pain), भवोंके पासकी जगहका स्नायविक दर्द प्रभृतिमें भी चायना फायदा करता है।

कानकी बीमारी—कानके भीतर ऐसी आवाज आना मानो कोई बाजा बज रहा है, कुछ भी सुन नहीं पडता, कानके बाहर दर्द, जरा भी छू देनेपर दर्द बढ़ता है।

दाँतकी बीमारी—दाँतके दर्दमे दाँतमें हाथ लगते ही प्राण निकल जाता है, पर दाँतपर दाँत रखकर जोरसे दबानेपर आराम मालूम होता है।

मुँहकी बीमारी—मुँहसे लार गिरती है, पारद सेवन के कारण इस तरहकी लार गिरनेपर, यद्यपि यह बहुत पुरानी हो—तो भी चायनासे आरोग्य होती है।

क्रिमि—उदरामय या हैजामें, पाखाना अथवा वमनके साथ केचुएकी तरह लम्बी बडी बडी क्रिमि निकलती है, ऐसा होनेपर—निम्न-क्रम (३ री शक्ति) का चायना व्यवहार करनेपर ज्यादा लाभ होता दिखाई देता है। (सिना अध्याय देखिये)।

पित्त-पथरी—कैल्केरिया-कार्बमें, "पथरी" देखिये।

वृद्धि (aggravation)—सामान्य छूनेपर, हवा लगनेपर, एक दिनके अन्तरमें एक दिन (ज्वर, वात, दर्द, जलन, तकलीफ, जो कुछ भी हो १ दिनका नागा देकर १ दिन अगर बढ़ता दिखाई दे—तुरन्त चायनाका प्रयोग करे)। शरीरके ओज-दायक तरल पदार्थोंके क्षयमें—सिङ्कोनाका अपव्यवहार कर, कोई पुरानी बीमारी हो जानेपर—पैरेड्रम-पल्वम।

ह्रास (amelioration)—पेट सोनेपर, जोरसे दबानेपर।

बादकी दवाएँ (follows well)—फेरम, आर्स, बेल, लैके, माक, पल्स, मर्क।

सम्बन्ध—चायनाके बाद या पहले फेरम फायदा करता है। हाइड्रोकेरावनपटकी बीमारियोंमें—कैल्केरिया-कार्बके बाद—चायना बढ़िया काम करता है। सविराम और अवगामी ज्वरमें यह—त्रिनिनम-सल्फ़की प्रतियोगी दवा है।

क्रिया-व्याघातक—डिजिटेलिस और सेलिनियम।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्निका, आर्स, नक्स, सिपि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१४—२१ दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति।

फारमुला—टिंचर—४, विचूर्ण—७।

सिनाबेरिस।

(CINNABARIS)

(रेड सल्फाइड आफ मर्करी, सेंदुर)—पलकोंका स्नायुशूलका दर्द और गर्मी रोगकी वजहसे पैदा हुए जखम प्रभृतिमें यह ज्यादा फायदा करता है।

उपदंश और प्रमेह—चमडी (प्रिप्यूस—लिङ्गाग्रचर्म) फूली, उसपर मसे, मसासे खून निकलना, अण्डकोष वडा, बार्यी कडी। पुराने सूजाकके साथ अण्डकोषके बढनेपर फायदा करता है।

जहाँ उपदश और सूजाक इन दोनोंके विषोंने रोगीके शरीरमें प्रवेश कर उसे जर्जरित कर डाला हो, वहाँ सिनाबेरिससे फायदा होता है। सिफिलिसका जखम अगर लाल रंगका हो, तो—सिनाबेरिस देना चाहिये। जखममें अगर सफेद श्लेष्माकी तरह सफेदी रहे—मर्क-कोर, नाइट्रिक-एसिड प्रभृति।

रक्तस्राव—शायद बहुतसे आदमी जानते होंगे, कि कोई जगह कटकर वहाँसे खून बहने लगे तो चोटवाली जगहमें सेंदुर लगाकर बाँध देनेपर रक्तस्राव बहुत जल्द बन्द हो जाता है। सिनाबेरिसमें खून रोकनेका गुण रहनेकी वजहसे—नाकसे खून निकलनेपर और रक्तामाशय तथा अर्श प्रभृतिसे रक्तस्राव यदि किसी दवासे भी आराम न होता है तो हताश न होकर, सिनाबेरिसकी दो तीन मात्राका प्रयोग कर जरा राह देखें (बवासीरके लिये-माइमेस्स देखिये)।

आँखकी बीमारी—कनीनिकाके प्रदाह और जख़्ममें सिनाबेरिस फायदा करता है। जख़्म उतना गहरा नहीं रहता; पर भयानक दर्द, दर्द आँखके भीतर-बाहरकी चारों ओरकी हड्डीमें और भवें तक चला जाता है और रातमें तकलीफ बहुत बढ़ जाती है। पलकोंके स्नायुशूलके दर्दमें भी इससे फायदा होता है। चक्षुतारका-प्रदाहकी बीमारीमें—इस रोगका लक्षण आँखमें जो गोल आकारकी काली पुतली है, उसका प्रदाह होनेपर रोशनी सहन नहीं होती, पानी गिरता है, कुटकुटाहट और करकराहट होती है, सफेद भाग लाल हो जाता है, पलकें फूल जाती हैं, देखने की शक्ति कम हो जाती है या एकदम गायब हो जाती है, चक्षु-तारकामें दाग पड़ जाता है, इन सब लक्षणोंके साथ ऊपर लिखे लक्षण यदि रहें तो सिनाबेरिस फायदा करता है। (आइरिसमें लिखे गये हैं—यह कैलि-बाइक्रोममें देखिये)।

नाककी बीमारी—नाककी जडमें भार मालूम होना और दर्द, बहुत दिनोंकी पुरानी सर्दी, गोंदकी तरह लसदार (stringy) बलगम इकट्ठा होता है, वह नाकके पिछले छेदसे (through the posterior narls) गलेमें चला आता है।

सदृश—मर्क-सोल, मर्क-आयोड, नाइट्रिक-एसिड, हिपर, बैड्डियेगा, थूजा।

क्रम—३x—३०, २०० शक्ति। फारमुला—७।

सिनामोमम।

(CINNAMOMUM)

(दालचीनी)—कैन्सर रोगमें जब जखममें बहुत दर्द और बदबू रहती है, उसमें तथा शरीरके कितने ही स्थानोंसे रक्तस्राव रोकनेके लिये इसका प्रयोग होता है।

नाकसे रक्तस्राव, आँतोंसे रक्तस्राव, फेफड़ेसे रक्तस्राव, एकाएक गिरकर या कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे ज्यादा परिमाणमें चमकीले लाल रंगका रक्तस्राव, प्रसवके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्राव, सौरी घरमें प्रसूताके किसी भारी चीज उठा लेनेकी वजहसे रक्तस्राव, अतिरज (मेनोरेजिया) प्रभृति नाना प्रकारके रक्तस्रावमें इसका व्यवहार होता है, और इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

सदृश—इपिकाक, ट्रिलियम। क्रिया-नाशक—एकोनाइट।

क्रम—४ से ६ ठी शक्ति। कैन्सरके रोगीको—दालचीनीका काढ़ा नित्य अन्दाजन डेढ़ पाइण्ट पीना चाहिये। जहाँ कोई संक्रामक रोग हो गया हो, वहाँ एक सेर पानीमें ८।१० बूँद दालचीनीका तेल पानीमें डालकर चारों ओर धो देनेपर उस रोगका फैलना रुकता है। फारमुला—९।

सिस्टस कैनाडेन्सिस।

(CISTUS CANADENSIS)

(उद्भिज दवा)—यह एक गहरी क्रिया करनेवाली सोराविष नाशक दवा है। इसकी प्रधान क्रिया गांठोंपर होती है। गांठ फटना, फुन्सी, प्रदाहित, गांठोंकी पुरानी सूजन, गर्दनमें मालारूपसे गांठ, गलेके भीतरकी गांठ फूलना और जख्म; स्तनग्रन्थिका फूलना, स्कर्वीकी तरह दाँतके मसूड़े फूलना और जख्म, मुँहमें और मांसमें दर्द, उपजिह्वा और तालुमूलका फूलना, गलेके भीतर छोटे छोटे जख्मके दाग, मुँहमें लगातार पानी भर आना, श्लेष्मा निकलना, हाथकी फलाङ्गमें चोट या मोच आ जानेके कारण दर्द प्रभृति कई बीमारियोंमें यह सरलता-पूर्वक व्यवहृत होता है।

इसका व्यवहार—सिस्टस-कैनाडेन्सिस—पारा-घटित (mercurio-syphilitic) जख्मों, दर्द-भरे घमौरीकी तरह छोटे छोटे

उद्भेदमे, लिङ्गमुण्डके प्रदाहमे और कडापनमे, और हाथका चमडा फडा, मोटा और सूखा और फटा फटा रहनेपर भीतरी सेवनसे बहुत जल्द फायदा होगा। इसका मूल अर्क—१ ड्राम ४ आउन्स पानीमे मिलाकर किसी सडे घावको धोनेपर उसमसे सडा हुआ स्राव निकलना बन्द हो जाता है।

जिन मनुष्योंको जरा भी सर्दी सहन नहीं होती, ठण्डी हवा लगते ही बीमारी हो जाती है, उनकी धातुमे इसकी क्रिया बहुत जल्द होती है।

सदृश (complement)—कैल्केरिया, कार्बो-एनि, कोनियम।

बादकी दवा (follows well)—बेल, कार्बोवेज, मैग-कार्ब, फास।

क्रिया-नाशक (antidote)—सिपिया, रसटक्स।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—३।

क्लिमेटिस इरेक्टा।

(CLEMATIS ERECTA)

(यूरोपके एक तरहके पौधेका टिंचर)—गर्मी, सूजाक और कण्ठमाला धातुमे ही यह ज्यादा अपनी क्रिया प्रकट करता है। चर्म, लसिका ग्रन्थियाँ और मूत्रयन्त्रके ऊपर ही इसकी प्रधान क्रिया है। १। बहुत औंघाई आना २। सूजाककी बीमारीकी

वजहसे अण्डकोषका प्रदाह, ३। मूत्रनलीकी कितनी ही बीमारियाँ; ४। श्वेत-प्रदर, अर्बुद, स्तन-ग्रन्थिका प्रदाह, घावी प्रभृति कई बीमारियोंमें यह बहुत फायदेमन्द है। इसकी तकलीफें रातमें, गरमीसे और बिछावनकी गरमीसे बढ़ती हैं।

सूजाक—पुराने-प्रमेह-रोगमें पेशाबमें श्लेष्माकी तरह पदार्थ (mucous) रहनेपर और रुक रुककर पेशाब होनेपर या जब बहुत देरतक बैठे रहे बिना पेशाब नहीं होता—इन सब लक्षणों में—क्लिमेटिस फायदा करता है। इसमें पेशाब करनेके समय मूत्रनली (urethra) की नलीसे लिङ्गमुण्डतक बहुत दर्द रहता है, मूत्रनलीका सकोचन (constriction of the passage of urethra) की पहली अवस्थामें—क्लिमेटिस फायदा करता है। पर पूरा पूरा सकोचन अर्थात् सकोचन बढ़कर जब पेशाबका छेद एकदम बन्द हो जाता है, तब इससे फिर फायदा नहीं होता है। इस बीमारीके साथ धातुगत दोष रहनेपर भी कितनी ही बार बीमारी आराम नहीं होती

प्रूनस स्पाइनोसा (Prunus spinosa) ३—६ शक्ति, मूत्रनली का स्ट्रिकचर (मूत्रनलीकी राह किसी तरह सकरी हो जानेपर उसको स्ट्रिकचर कहते हैं) इसकी यह एक उत्तम दवा है। इसके अलावा मूत्राशयका शूल (tenesmus), पेशाब करनेकी निष्फल चेष्टा, मानो हर पेशाब करनेको आता है; पर ऐसा मालूम होता है, मानो पेशाब मूत्र-नलीके मुँहतक आकर फिर पीछे लौट आता है। इसमें बेहद तकलीफ और जलन होती है। इस तकलीफको

घटानेके लिये पट सो जाता है। स्नायुशूल—पेशाव निकलनेके बहुत देर-पहले तक लिङ्गमें टपक होती है।

अण्डकोषका प्रदाह—सूजाकका मवाद आना एका-एक बन्द होकर या सर्दी लगकर अण्डकोषका प्रदाह और सूजन, सूजन प्राय पत्थरकी तरह कडी, शुक्ररज्जुमें दर्द। पलसेटिलाके प्रयोगसे रुका हुआ सूजाकका मवाद फिरसे जारी होकर दर्द और तकलीफ घट सकती है, पर यदि इसके बाद अण्डकोषकी सूजन और कडापन रह जाये तो क्लिमेटिससे आरोग्य होगा। इसमें दाहिने अण्डकोषपर अधिक बीमारीका दौरा होता है।

ऑखकी बीमारी—आँखका प्रदाह, आँखके भीतर लाली, आँखसे पानी गिरना, तकलीफ, जलन, यह जलन इतनी अधिक रहती है कि मालूम होता है, कि आग लग गयी है। आँखके भीतर गरमी और सूखापन। इसीलिये, रोगीको आँख बन्द किये रहना पडता है, ठण्डी हवा सहन नहीं होती, आँखकी पुतलीका सिकुडना, ऐसा मालूम होता है, मानो आँखके सामने घूंघटकी तरह कोई परदा पडा है। बायें चक्षुगोलकमें दर्द।

सर्दी लगकर या गर्मीकी बीमारीके कारण चक्षु-तारका-प्रदाह होनेपर—क्लिमेटिस फायदा करता है। (आँखके काले गोल आकारको तारका कहते हैं—आइरिस और उसके प्रदाहको आइरा-इटिस कहते हैं)। क्लिमेटिसमें—रातके समय आँखकी तकलीफ बहुत बढती है। आँखसे पानी गिरता है, जलन और करकराहट

होती है, रोशनीकी ओर देख नहीं सकता, जरा भी ठण्ड या पानी लगनेपर तकलीफ बहुत बढ़ जाती है, रोगी बेचेन हो पड़ता है (इयुफ्रेशिया अध्याय देखिये)।

द्रष्टव्य :—क्लिमेटिसके सभी रोग-लक्षण—ठण्डे पानीसे, ठण्डी हवामें घटते हैं और गरमीमें बढ़ते हैं, पर इसमें आँखकी बीमारीमें एकदम विपरीत होता है अर्थात सर्दीसे बढ़ते और गरमीसे घटते हैं। यह इसका एक विशेष लक्षण है। आँखमें जलन और फरफराहटका सन्ध्या और रातमें बढ़ना।

चर्म रोग—माथेके पिछले भाग (about the occiput) और गर्दनमें एक तरहके दाने निकलते हैं। ये बहुत खुजलाते हैं, उनसे रस निकलता है और रोगवाली जगहपर जख्म हो जाता है, ये पकते हैं और इसके उपसर्ग आदि बिछावनकी गरमीसे बढ़ते हैं। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—इसके उपसर्ग गीली पोल्टीससे और डा० लिपि कहते हैं—रोगवाली जगह धोनेपर बढ़ते हैं।

एकजिमा—(अर्कौता)—हाथमें एकजिमा और प्रमेहका-स्राव बन्द होकर लिङ्ग और अण्डकोषमें एकजिमा होनेपर—क्लिमेटिस फायदा करता है। इसका एकजिमा—शुक्ल पक्षकी प्रतिपदासे पूर्णिमातक बढ़ता है, रस निकलता है और कृष्णपक्षसे घटने लगता है, सूख जाता है। डा० हियारयेल कहते हैं, कोई पुराना चर्म-रोग, प्रत्येक महीनेके शुक्ल-पक्षमें बढ़नेपर इससे फायदा होगा।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, रस, सिपि, सल्फ।

सम्बन्ध—साइलिसियाके बाद क्रिमेटिस फायदा करता है, सरके पिछले भागके और गर्दनके चर्मरोगमें—पेट्रोलियमके सदृश है।

क्रिया-नाशक (antidote)—ब्रायो, कैम्फर, केमो, पेना-कार्ड, क्रोटोन, रस, रैनान।

क्रियाका स्थितिकाल—१४ से २० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—१।

कोबाल्टम मेटालिकम।

(COBALTUM METALLICUM)

(कोबाल्ट एक तरहका खनिज धातु है)—कमरमें दर्द (Lumbago), इस बीमारीमें—एकोनाइट, सिमिसिफियुगा, रसटक्स, ब्रायोनिया, बार्बेरिस मैकोटीन, रोडोडेण्ड्रन, आर्निका, इस्कुलस, कोलचिकम, कैलिबाई क्रोम, पिक्रिक-एसिड, सलफर, नक्स-वोमिका, जिङ्कम इत्यादि दवाएँ लक्षण भेदसे फायदा करती हैं, पर स्त्री-संसर्गके बाद या स्वप्नदोषके बाद कमरमें दर्द या कोई दूसरी बीमारी अगर बढ जाये और वह दर्द बैठनेपर बढता हो और खडे होने, चलने या सोनेपर घटता हो,—कोबाल्टम अधिक फायदा करता है।

क्रम—३x—६x शक्ति। फारमुला—७।

कोका ।

(COCA)

युरोप और अमेरिकाके ऊँचे पहाड़ोंमें एनियुक्सिलन-कोका नामका एक वृक्ष पैदा होता है। पहाड़पर चढ़ता चढ़ता जब कोई मनुष्य बहुत थक जाता है, उसका कलेजा धड़कने लगता है और वह ज़ोर-ज़ोरसे हाँफता है, उस समय वह उस वृक्षके पत्ते चबा लेता है, उसमें थोड़े ही समयके बीचमें उसका परिश्रमके कारण पैदा हुआ कष्ट दूर हो जाता है और पहलेकी ताकत लौट आती है। इसीलिये कोकाका एक दूसरा नाम पड़ा है, पहाड़ चढ़नेवालोंकी दवा—"Mountaineers remedy"।

आजकल हमारे इस देशके दुश्चरित्र मनुष्य नशा खानेकी इच्छासे जो कोकेन (cocain) व्यवहार करते हैं, वह उस कोका वृक्ष का ही सत है।

कोका—अतिरिक्त औषधके रूपमें सेवन करनेपर हृत्पिण्डकी कमजोरी दूर हो जाती है। बहुत अधिक कलेजा धड़कना (Palpitation) और श्वासकष्ट (Dyspnoea) घटता है। हाजमा बढ़ता है, अजीर्णादि पचनके पेटमें वायु होना घटता है। कोकाका—पेटमें रुका हुआ वायु एक एक बार दोनों ओरसे घटता है, कि ऐसा मालूम होता है, कि असलमें फट आयगी। आनेपिक क्षमा और खून आनेवाली खांसी (हिमाप्टोसिस) रोगमें बहुत अधिक श्वास

कष्ट रहनेपर इससे फायदा होता है। एक तरहका अनिद्रा रोग—रोगीको नींद आती है, बिछावनपर लेटता है, पर स्थिर नहीं रह सकता। जो बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक परिश्रम करते हैं, जिनका मस्तिष्क दुर्बल है, जिन्हें स्नायविक सुस्ती रहती है, उनकी बीमारीमें कोका ज्यादा फायदा करता है।

ह्रास (amelioration)—शराब पीने, खुली हवामें, तेजीसे चलने फिरनेपर।

वृद्धि (aggravation)—ऊपर चढनेपर।

सदृश—आर्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—जेलसिमियम।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—४।

काकसिनेला।

(COCCINELLA)

(Lady bug—गोबरके कीडेका टिंचर)। साधारणतः सब तरहका स्नायुशूलका दर्द (Neuralgia), दाँतका दर्द—जहाँ मुँहमें, दाँतमें और मसूडेमें बहुत ठण्डक मालूम होती हो, मुँहमें बहुत-सी लार मुँह भरकर जमा हो जाती है, वहाँ इस दवासे बहुत फायदा होता है। जलातङ्क (Hydrophobia) रोगमे—रोगी शीशा या कोई चमकीला पदार्थ देखकर डरता है, पागलकी तरह

हो जाता है। दाहिनी आँखके ऊपरी अंशमें, कनपटीमें और माथे के पीछेवाले भागमें दर्द होता है, इसमें यह फायदा करता है।

काकसिनेला—ऊपर बताई गई तरहकी बीमारियोंमें तो यह फायदा करता ही है, पर हूप-खाँसी (कुकुर-खाँसी) या ऐसी ही किसी दूसरी तरहकी आक्षेपिक खाँसीमें, जिसमें खाँसीकी तेजी बढ़ते ही मुँहमें आण्डेकी लारकी तरह बहुत-सी चमकीली लार—डोरेकी तरह लम्बी होकर निकलती है, वहाँ इसके व्यवहारसे बहुत अधिक जल्दी फायदा होता है। आक्षेपिक दमामें भी इसके द्वारा खाँसी और श्वासकष्ट घट जाता है।

हिचकी—हिचकीके साथ पाकस्थलीमें जलन रहनेपर इसका सबसे पहले प्रयोग करे।

दर्द—किसी भी बीमारीमें मसाना और कमरमें दर्द।

दाँत निकलनेके समय स्नायुकी उत्तेजनाकी वजहसे बच्चा अगर बहुत बेचैन हो पड़े और रातमें सो न सके या किसी दूसरी स्नायविक बीमारीमें अनिद्राका भाव ; पर किसी तरह भी स्थिर भावसे सो न सकता हो—तो काकसिनेलाका प्रयोग करे।

सदृश—आर्सेनिक, कैमोमिला, नैफथेलाइन प्रभृति।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—४।

काकुलस इण्डिका ।

(COCCULUS INDICA)

(पूर्व-वंग, मालय द्वीप प्रभृतिकी एक तरहकी लताके सूखे फलसे मूल अर्क तैयार होता है)—मिचली, इसके साथ ही सरमें चक्कर आना, माथा भारी मालूम होना, वाधकका दर्द, पूरा पूरा या थोडा पक्षाघात, कमजोरी इत्यादि कितनी ही बीमारियोंमें इससे अधिक फायदा होता दिखाई देता है। जरायु, आँते, पाकस्थली, मस्तिष्क और स्नायुओंपर यह अपनी क्रिया प्रकट करता है, स्त्रियाँ और बच्चोंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदे-मन्द है।

साधारण रूपसे यह वैसी गर्भवती स्त्रियाँ, जिन्हें बहुत मिचली होती है, सरमें चक्कर आता है, कमरमें दर्द होता है, तथा अवि-वाहिता तथा बाल बच्चा जिन्हें न हुआ रहता है, ऐसी स्त्रियोंको नावमें, जहाज या गाड़ीमें चढनेपर जो बीमारी हो जाती है और जी मिचलाने लगता है, सरमे चक्कर आता है,हमेशा दु:खित, धीरज न धर सकनेवाली व्यभिचारिणी, जरासेमें नाराज हो जानेवाली—तथा जो बात काटदेना बिलकुल ही सहन नहीं कर सकतीं, ऋतु अनियमित और ऋतुके समय कष्ट होता है, उनके लिये यह बहुत ही फायदेकी चीज है।

चरित्रगत लक्षण —

१। गाड़ी या नावपर चढ़ने या चलती गाड़ी, नाव प्रभृति देखते ही जिनका जी मिचलाने लगता है और वमन होता है, २। गर्भावस्थामें मिचली, ३। माथेके पिछले भागमें दर्द (Occipital headache) यह गर्दनसे आरम्भ होकर नीचे मेरुदण्डतक चला आता है, इसके साथ ही मिचली, ४। सरमें बेतरह चक्कर आना, सोये सोये उठ बढ़ने पर ही सरमें चक्कर आ जाता है, ५। समूचे शरीरमें सुस्ती और कमजोरी, बहुत तकलीफसे खड़ा रहता है, जोरसे बोलनेपर भी कमजोरी मालूम होना है। मानसिक उत्तेजना, रातमें जागरण या किसी दूसरे कारणसे नींद न आनेकी वजहसे कोई बीमारी, ७। प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर पेटमें फाटने-फाड़नेकी तरह दर्द ८। बहुत ज्यादा पढ़ने, परिश्रम करने या किसी बहुत ऊँची आशासे निराश हो पड़नेकी वजहसे बीमारी; ६। ऋतुस्रावके समय निम्नाङ्गमें कमजोरीकी वजहसे खड़ा न हुआ जाना; १०। ऋतुस्रावके बदले श्वेतप्रदरका स्राव; ११। दो ऋतुओंके बीचमें मांस धोये हुए पानीकी तरह रक्तस्राव होना; १२। प्रतिवाद सहन नहीं कर सकता। जरासेमें ही बोरी समझ लेता है और चिढ़ जाता है, जल्दी जल्दी बोलता है; १३। अम्बिलिकल हार्निया (नाभि प्रदेशीय अन्त्रवृद्धि)।

मिचली—गाड़ी, नाव इत्यादि किसी सवारीमें चढ़नेपर या कोई आती हुई नाव या जहाज देखनेपर यदि मिचली अथवा वमन बढ़ जाय तो—काकुलस फायदा करता है। यहाँ आनेके दो

दिन पहलेसे काकुलस सेवन करनेपर इन तकलीफोंका फिर डर नहीं रह जाता (डा० पियर्स)। काकुलसमें—खानेकी चीजकी गन्धसे, खाने-पीनेसे, हिलने-डोलनेसे, ठण्डकसे मिचली और वमन बढ जाता है। इसमे पेटमे हमेशा एक तरहकी गडबडी बनी रहती है, मुँहका स्वाद तीता या धातुके जगकी तरह स्वाद या सडी गन्ध आती है। यह गर्भावस्थाकी कै और मिचलीमें बहुत लाभ दिखाता है।

सरमे चक्कर और सर-दर्द—सर-दर्दके साथ मिचली और वमन, सरमें इस तरह चक्कर आना मानो नशा खाया है, लेटे लेटे उठते ही सरमें चक्कर आ जाता है, इसीलिये, रोगी फिर लेट जाता है, माथेका मानो स्तम्भित भाव इत्यादि लक्षणोंमे—काकुलस फायदा करता है। <u>ब्रायोनियामे</u>—बिछावनसे उठ बैठनेपर सरका चक्कर बढ जाता है, पर उसमें प्रभेद यह है, कि—ब्रायोनियामे पहले पेटमें गडबडी होकर वमनका भाव आता है, इनके बाद सर-दर्द होता है और काकुलसमे—सरमे चक्कर और सरके दर्दके साथ ही साथ मिचली पैदा हो जाती है, <u>कोलचिकम</u> मे—खानेकी चीजकी गन्ध नाकमें जाते ही जी मिचलाने लगता है, काकुलसमे भी यह लक्षण है। काकुलसका सर-दर्द खासकर <u>माथेके पिछले भागमें ही ज्यादा होता है</u> और वहाँसे पीठकी रीढमे चला जाता है। दर्द-खाने-पीने, ठण्डी हवामें, दबाने और नींद आनेके बाद बढता है। इसके साथ ही मिचलीका भाव भी रहता

है। जुगलैन्स-सिनेरिया—गर्दनके पिछले भागमें भयानक दर्द, पर इसके साथ ही यकृतकी गड़बड़ी और कामला रोगके लक्षण रह सकते हैं।

बाधकका दर्द—बाधकके दर्दके साथ कमरमें बेतरह दर्द, यह दर्द ही इस बीमारीके साथ इस दवाके चुनावकी पहली सीढ़ी है। ऐसा मालूम होता है, कि कमरमें बिलकुल ही ताकत नहीं है, मानो कमर अकड़ गयी है। इसके साथ ही रोगिनी की कमजोरी इतनी बढ़ी रहती है, कि चलनेके समय हाथ-पैर कांपते हैं, और रोगिनी समझती है, कि उसकी छाती, माथा और पेटमें कुछ भी नहीं है, सब खाली हो रहा है। ऋतु-स्रावका रंग—काला और गाढ़ा, कभी कभी स्राव ज्यादा होता है, परिमाणमें झोंकसे निकलता है, कभी कभी बहुत थोड़ा होता है और बहुत दर्दके साथ देरसे निकलता है, और स्राव प्रत्येक महीने घटता जाता है और अन्तमें ऋतुस्रावके बदले श्वेतप्रदर दिखाई देता है। (ऋतुस्रावके समय बहुत कमजोरी अनुभव करना,ऋतुस्राव के बदले श्वेत-प्रदर—ये दोनों ही लक्षण काकुलसकी तरह ही—विबिरिक-एसिडमें भी हैं)। इस तरहके बाधकके दर्दके साथ, पेटमें भी वायु-संचय होकर पेट फूल उठता है। डकार आनेपर यह पेटका फूलना और दर्द कुछ घटना तो जरूर है, पर फिर पेटमें वायु संचय होकर पहलेकी तरह ही तकलीफ होने लगती है। ईग्नेशिया, पल्सेटिला, सिमिसिफ्यूगा, साइक्लामेनके साथ प्रभेद इस पर काकुलसकी रोगिनी ठण्डी हवा ज्यादा पसन्द करती है।

पक्षाघात—यदि यह रोग कमरमे हो और इसके सा
ही कमजोरी मालूम हो, मानो पैरमे बिलकुल ही ताकत नहीं
पैरका तलवा सुन्न, घुटने मानो टूटे, उरु मानो सुन्नसे—पहले प
हाथ, फिर दूसरा हाथ, सुन्न हो जाता है। इन सभी लक्षणों
रोगकी पहली अवस्थामे—अगर काकुलसका प्रयोग हो तो मालू
होता है, फायदा होगा। इसके साथ ही मिचली, सरमें चक्
इत्यादि लक्षण सब भी रहनेपर, इससे और भी ज्यादा फायद
होता है।

सविराम ज्वर—शीतावस्थामे—पेटमें वायु इकट्ठा हे
कर शूलका दर्द होता है, जो मिचलता है। सभी खाने-पीनेकी
चीजोंसे घृणा मालूम होती है, एक वार जाडा—फिर ताप औ
शीत शरीरके सभी अगोंमे मालूम नहीं होता है, निचले अग ठण्डे
और माथा गरम रहता है। उत्तापावस्थामे—इस अवस्थाम भी
शीत रहता है, साफ साफ ताप नहीं चढता, गरमीसे भी जाडा
नहीं जाता। इसके अलावा—उत्तापमे—ठण्डी या गरम हवा—कुछ
भी सहन नहीं होती। पसीनेवाली अवस्थामे—मुँहमे ठण्डा भाव
रहता है। रोगी बहुत कमजोर हो पडता है।

टाइफायड ज्वर—उठकर वठते ही सरमे चक्कर आ
जाना, जी मिचलाना, बेहोशी, मन और दिमागका जड हो जाना,
साफ साफ बोल न सकना, पेट फूलना, पेटमे शूलका दर्द इत्यादि
कितने ही लक्षण ज्वरके साथ रहते हैं।

सेरिब्रो-स्पाइनल-मनिञ्जाइटिस—गर्दनमें भयानक दर्द, बच्चा विकारकी अज्ञानावस्थामें माथा पीठकी ओर टेढ़ा कर लेता है और जरा भी होश आनेपर सिर्फ गर्दनपर हाथ रखता है।

सोलेनम—३० शक्ति। भयानक सर-दर्द, गर्दन कड़ी, और गर्दनमें दर्द, जरा भी छू देनेमें खींचनका बढ़ना, समूचा शरीर धनुष्टङ्कारकी तरह कड़ा। सारा शरीर काँपता है, ज्ञान लोप हो जाता है और कपकंपनेके साथ बेहोशीका दौरा होता है।

अकड़न—अकड़नके दौरेके समय आँख बन्द होती आती है; परन्तु इस समय भी आँखकी पुतली एक बार इस ओर एक बार दूसरी ओर घूमती रहती है।

मूर्च्छा-वायु—(हिस्टिरिया)—ऋतुकी गड़बड़ीकी वजहसे बीमारी, रोगीको अपने अंग-प्रत्यंग कमजोर और सुन्न हो जानेकी तरह मालूम होते हैं, इसमें खींचनके समय बहुत अधिक श्वास-कष्ट होता है। ऐसा मालूम होता है, कि गला, छाती और पाकस्थली किसीने दबा रखी है। ऋतुका स्राव होना बन्द होकर मानसिक विकार अगर पैदा हो जाये—काकुलस फायदा करता है।

आंत उतरना—नाभिदेशीय अन्त्र-वृद्धि (*Umbilical Hernia*) में इससे फायदा हो सकता है (जनन-यंत्रोंकी पीड़ा अध्याय देखिये)।

ही आने लगे या रातके ३ वजनेके वाद वढे ता—कक्कससे फायदा हुए विना न रहेगा। (कैलि-कार्वके भी खाँसी प्रभृति उपसर्ग सवेरे ३।८ वजेसे वढ जाते है)

पथरी और पेशावकी वीमारी—पेशावमे वहुत ज्यादा परिमाणमे युरेट और युरिक एसिड (मूल-क्षार) रहनेपर इससे फायदा होता है। मूल-पथरीका भयंकर दर्द—मसानेसे मूलाशयमे चला आता है, वार वार पेशावका वेग होता है, पेशाव की राहसे खून निकलता है (Hæmaturia)।

सदृश—खाँसीमें—ड्रोसेरा, कॉस्टिकम्, इपिकाक, कैलि-वाइक्रोम ; सेनेगा—कक्कसके पहले और वाद दोनो ही अवस्थाओंमें यह व्यवहृत होता है। पेशावकी वीमारीमें—कैन्थर, सार्सा, वार्वेरिस, पैरिरा।

वृद्धि (aggravation)—सवेरे, नींद खुलनेपर, परिश्रमसे, वायीं करवट सोने, शय्याके उत्तापसे, वाहरकी हवामे ।

ह्रास (amelioration)—चलने-फिरनेपर ।

क्रम—३० शक्ति। कोई कोई निम्न-शक्तिका विचूर्ण भी व्यवहार करते है ।

काफिया क्रूडा।

(COFFEA CRUDA)

(काफी)—स्नायु-समूहोंपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। बहुत दर्दपर बर्दाश्तका न रहना, एकदम नींद न आना, किसी विषयकी चिन्ता और इसी कारणसे नींद न आना, स्नायुशूलका (न्युरलजिया) सर-दर्द, स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे कलेजा धड़कना, शरीर और मनकी काम करनेकी अद्भुत क्षमता, स्वाद-गन्ध, स्पर्श, देखने और सुननेकी शक्तिकी तेजी वगैरह इसके चरित्रगत लक्षण हैं। लम्बे और पतले धरणके मनुष्य—जो सामने की ओर झुके रहते हैं, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

और भी कई लक्षण :

१। भविष्यके लिये मनमें नाना प्रकारकी चिन्ताएँ और कल्पना और इसी वजहसे नींद न आना, २। एकाएक शोक, दुःख, आनन्द और उसके दुष्परिणाम-स्वरूप किसी बीमारीका पैदा हो जाना, आनन्दके कारण रोना या एक बार हँसना और एक बार रोना ; ३। थोड़ी-सी तकलीफको बहुत बड़ी समझकर निराश हो जाता है और अधैर्य होकर डरने लगता है ; ४। बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रम, चिन्ता या बात-चीत करनेकी वजहसे सर-दर्द। उसमें ऐसा मालूम होता है, मानो माथेके भीतर कोई एक काँटी ठोक रहा है। माथेमें एक तरफ बीमारीका जोर ज्यादा

होता है। ५। खूब जल्दी जल्दी खाता-पीता है; ६। दाँतके दर्दमें मुँहमे खूब ठण्डा या वरफका पानी रखनेपर आराम मालूम होता है, पर वह पानी गरम हो जानेपर फिर दर्द बढ़ जाता है।

दर्द—काफियाका दर्द—कैमोमिलाकी तरह ही बहुत तकलीफ देनेवाला होता है, दर्दकी तकलीफसे रोगी छटपटाने लगता है, रोता है और कभी कभी एकदम निराश हो जाता है, कभी कभी विरक्त होकर चिढ़ उठता है, परन्तु इसी वजहसे कैमोमिला की तरह चिडचिडा स्वभाव, गाली-गलौज करना, बाप कहनेके बदले साला कह देना, इस तरहकी मानसिक उत्तेजनाके लक्षण इसमें नहीं रहते और न एकोनाइटकी तरह मृत्युका ही भय रहता है। काफिया—की मानसिक उत्तेजना प्रदाहसे पैदा हुई रहती है। किसी प्रदाहकी वजहसे पैदा हुई बीमारीमें—डा० हेरिङ्ग काफिया और एकोनाइट पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेका उपदेश देते हैं। जो मनुष्य काफी पान करते है, उनकी बीमारीमें ऊपर लिखे लक्षण रहनेपर—काफियाकी अपेक्षा कैमोमिला ज्यादा फायदा करता है।

सर-दर्द—काफियाका सर-दर्द प्राय माथेमे एक तरफ होता है। (अधकपालीका दर्द), रोगी मनमे सोचता है, कि माथेके भीतर कोई काँटी ठोक रहा है और वह काँटी मस्तिष्कके भीतर जाकर लगती है और उससे मानो मस्तिष्क फटा जाता है। ऐसे सर-दर्दमे—हिस्टीरिया-रोगवाली यदि स्त्री रोगिनी हो,

काफिया और इग्नेशिया समान भावसे फायदा करते हैं। काफियाका सर दर्द—खुली हवामें बढ़ जाता है।

दाँतका दर्द—काफियामें—ठण्डा पानी मुँहमें रखनेपर दाँतका दर्द घट जाता है। <u>कैमोमिलाका</u>—ठण्डा पानी मुँहमें रखनेपर दर्द तो घटता ही नहीं, बल्कि गरम चीज रखनेपर दर्द और भी ज्यादा बढ़ जाता है।

चर्म-रोग—इसके उद्भेद बहुत खुजलाते हैं, खुजलाते-खुजलाते खून निकल आता है और जलन होती है, इसीलिये, रात भर नींद नहीं आती।

बाधकका दर्द—रक्त काला, थक्का थक्का, पेटमें बेतरह दर्द रोगिनी कहती है,—"अब सहन नहीं किया जाता", दर्दकी धमकसे रोगिनी रोती है, छटपटाती है, कभी कभी बुरी बातें भी बोल बैठती है। इन सब लक्षणोंमें पहले काफियासे फायदा न होनेपर, इसके बाद <u>कैमोमिला</u> या कालोफाइलम का प्रयोग करें।

प्रसवका दर्द—एकदम असह्य दर्द, रोगिनी बार बार कहती है, कि "मैं प्रसव न कर सकूँगी", यदि इसके साथ ही काफियाका चरित्रगत सर-दर्दका लक्षण रहे,—काफिया सेवन करानेके साथ ही साथ फायदा होगा। पाठक! आप इस दर्दके समय, प्रसूताको सिर्फ एक प्याला गरम पानी पिलायें, इससे दर्द भी दूर हो जायगा और सहजमें ही प्रसव भी हो जायगा। आपको भी आनन्द होगा।

अनिद्रा—माना आँखोंमें नींद आती ही नहीं, रातभर बिछावनमें छटपटाया या करवट बदला करता है, रातके ३ बजने के बाद नींद खुल जाती है, सोते सोते एकाएक चौंक उठता है या स्वप्न देखकर नींद खुल जाती है मलद्वार कुटकुटाया करता है और इसी वजहसे नींद नहीं आती। किसी भी विषयकी चिन्ता और इसी कारणसे नींद न आना या नींदमें व्याघात पड़ा हो जाना। अनिद्रामें उच्चक्रम—२०० शक्ति अधिक लाभदायक है। (कल्केरिया-कार्ब और प्लैसि-फ्लोरा देखिये)।

कलेजा धड़कना—किसी तरहके आनन्दके समाचार से कलेजा धड़कना, उत्तेजित हो उठना (डिजिटेलिस अध्याय देखिये)।

अतिसार—डा० हेरिङ्ग कहते हैं—अतिसारमें जरा भी दर्द नहीं रहे तो—काफिया फायदा करता है। (एसिड-फास, पोडोफाइलम, रिसिनस प्रभृति दवामें भी यही लक्षण है, उनका अध्याय देखिये)।

आभास—काफी शरीरमें फुर्ती बढ़ाती है। मनुष्यके काम करनेकी शक्ति देती है, काम-काज करनेमें उत्साह बढ़ाता है और बहुत कठोर परिश्रम करनेपर भी शरीर जल्दी थक नहीं जाता। यह स्टिमुलेण्ट और उत्तेजक है, जहाँतक सम्भव हो उतनी गरम काफी (strong black coffee)—नाना प्रकारके विपाक्त द्रव्य (narcotic) सेवन करनेका प्रतिविष है, किसी भी बीमारी

की हिमाग अवस्थामे—गरम काफी पिचकारीके सहारे मलद्वारमें प्रयोग करनेपर शरीरमें गरमी वढती है।'

काफिया टोस्टा—घस हुए दाँतकी बीमारीकी वजहसे मुँह का खायुशूलका दर्द।

वृद्धि (aggravation)—मानसिक आवेगसे, निमल हवामें, नींद लानेवाला दवा आदिक सेवनसे, ऊँची आवाजसे।

ह्रास (amelioration)—गरम घरम, हवानेपर, सोने और मुँहमें ठण्ढा पानी लेनेपर।

वादकी दवा (follows well)—एकोन, वेल, लैके, नक्स, ओपि, सल्फ।

क्रिया-न्याशक (inimical)—कैम्फर, कास्टि, काकुलस, इग्नेशिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, मर्स-एमि, कैमो, चायना, इग्नि, मार्क, नक्स, पल्स, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—४।

कोलचिकम आटमनेल।

(COLCHICUM AUTUMNALE)

(जर्मनी प्रान्त और युरोपके मैदानोंमें एक तरहका पौधा पैदा होता है, इसकी जड़ या उससे टिंचर तैयार होता है)—

अस्थि-आवरक (पेरियोस्टियम), स्नैहिक झिल्ली (साइनोवियेल-मेम्ब्रेन), और गाठोंके मासपैशिक तन्तु इत्यादिपर ही इसकी क्रिया अधिक होती है। इसीलिये, इन सब स्थानोंकी बीमारियोंमें, खास कर पुरानी अवस्थामें, इससे बहुत फायदा होता है। रोगवाली जगह फूलती है, गर्म और लाल हो जाती है। डा० एलेन नये वातके लिये इसकी बहुत प्रशसा करते हैं। पाकस्थली और आँता की श्लैष्मिक झिल्ली तथा मसाना और यकृत प्रभृति ग्रन्थियोंपर इसकी क्रिया दिखाई देती है। रातमें जागरण और बहुत ज्यादा अध्ययनकी वजहसे कोई बीमारी होनेपर कोलचिकम फायदा करता है। (काकुलस देखिये)।

जो सब मनुष्य बहुत हृष्ट-पुष्ट और बलवान होते हैं, उनपर ही इनकी उपयुक्त क्रिया होती है। इसके मानसिक लक्षण—थोडी-सी भी गडबडी, तेज गन्ध, दुर्व्यवहार, तथा दूसरोंका संसर्ग बिलकुल ही सहन नहीं होता। लिखनेके समय शब्द या अक्षर भूल जाता है।

कोलचिकमके रोग-लक्षण हिलने-डोलनेपर और मिचली खानेकी चीजें और रसोईकी गन्धसे बढ जाती है। इस लक्षणपर निर्भर कर बहुत सी कठिन बीमारियाँ भी इससे आराम हो जाती हैं।

कितने ही चरित्रगत लक्षण —

१। दुःख या दूसरोंका अनिष्ट करनेकी वजहसे बीमारी, २। दर्द—काटने, खोदने या खींचने, झटका देनेकी तरह, गरमी

की ऋतुमें दर्द बहुत थोडा और ऊपर (superficial) ही रहता है, बाई ओरसे दाहिनी ओर चला जाता है, ३। पेटमें बहुत अधिक वायु इकट्ठा होकर पेट फूल उठता है, ४। पेटमें और पाकस्थलीमें जलन या कभी कभी बरफकी तरह ठण्डक मालूम होना, ५। शरत ऋतुका आमाशय; ६। पेशाबके साथ स्याहीकी तरह घोर काले रंगका खून जाना, अण्डलाल, चीनी या थक्का थक्का मडा खून; ७, हिलने-डोलनेपर रोगका बढना ८। गाठोंमें—वातका दर्द, रोगवाली जगहपर छुआ न जाना, दर्द, जोडोंको छूनेसे ही चिल्ला उठता है।

हैजा—कोलचिकममें पहली बार कुछ पतले दस्तके साथ टुकड़ा टुकडा मल मिला दस्त आता है। इसके बाद हैजाकी तरह दस्त आने लगता है। पाखानेका रंग—हरा, पीला, लाल और सडे कोहडेका पानी या चावलके धोवनकी तरह कितने ही प्रकार का आता है। हैजा रोगमें—पहले दो चार बार वमन होकर इसके बाद ऊपर लिखे ढङ्गके दस्त आने लगते हैं। इसके बाद क्रमसे दस्त कै की मात्रा और गिनती भी बढती जाती है और अनजानमें ही मल निकल जाया करता है। जब बिना किसी रंगका पानीकी तरह दस्त आता है, तब उसके साथ आमकी तरह सफेद सफेद, टुकडे टुकडे पदार्थ मिले रहते हैं। कोलचिकमकी और भी एक विशेषता है—पहले दो चार बार कै होकर इसके बाद दस्त आरम्भ होता है, दस्तके बाद वमन, वमनके बाद दस्त, ठीक एकके बाद दूसरा होता है, पानीकी तरह पतला होनेपर भी दस्त परिमाणमें

बहुत ज्यादा होता है, उस समय पेटमें दर्द नहीं रहता, पर यदि दस्त,—आम मिला या खून-मिला होता है, तो परिमाणमें थोड़ा होता है और पेटमें बहुत ज्यादा ऐंठनका दर्द हुआ करता है। जरा इधर उधर करनेपर ही कै आने लगती है, इसके साथ ही खाली ओकाई, मिचली रहती है और बहुत देरतक केवल ओकाई आनेपर तब कहीं कै होती है। खानेकी चीजकी गन्ध, रसोईकी गन्ध, या उसका नाम सुनते ही जी मिचलाना इसका एक और भी खास लक्षण है। किसी भी बीमारीमें यदि यह आखिरवाला लक्षण रहे तो कोलचिकमका प्रयोग करनेमें क्षण-भरकी भी देर न करनी चाहिये। कोलचिकममें—मुँहसे बहुत अधिक लार निकलती है, यह लार निगलनेपर जी मिचलाना और वमन बढ़ जाता है। इसके अलावा कभी कभी खाली मिचली या ओकाई न आकर भी सहजमें ही कै होती दिखाई देता है। वमनके बाद पाकस्थलीमें जलन होती है, वमन फीके हल्दीके रंगका होता है और उसका स्वाद तीता रहता है। इसका एक और भी लक्षण है—वमन या दस्त के बाद जलनके साथ रोगीका पेट बरफकी तरह ठण्डा मालूम होता है। दस्त के ज्यादा आते आते रोगीका शरीर क्रमश ठण्डा होकर शीत आ जाता है, पहलेसे ही शरीर ठण्डा नहीं हो जाता। इसमें छटपटी बहुत ज्यादा नहीं रहती, तब गडबडीमें या शरीरमें कुछ अड़नेपर या नाकमें कोई गन्ध जानेपर रोगीको तकलीफ होती है और वह छटपटाने लगता है। कोलचिकममें—शरत् ऋतुमें

रातके समय और शामके वक्त बीमारी बढ़ती है। ऊपर ही कहा है, अगर पानीकी तरह पतले दस्त ज्यादा आयें तो पेटमें दर्द नहीं रहता—यह लक्षण पोडोफाइलम में भी है, पर पोडोफाइलममें—दस्त फिरनेमें बहुत ज्यादा और पेटमें गड़-गड़ाहटकी आवाज होती है, दस्त सवेरेके वक्त ही ज्यादा आते हैं। कोलचिकममें—शामको और रातमें रोगके लक्षण बढ़ते हैं, पोडोफाइलममें—रोग गरमीके दिनोंमें बढ़ता है, कोलचिकमकी—बीमारी शरत् ऋतुमें बढ़ती है। पोडोफाइलममें—बराबर मिचली और ओकाई रहती है, कोलचिकममें—हिलने-डोलनेपर मिचली बढ़ती है और वमन आनेके बाद ही फिर पाखाना लग आता है, पर पाखाना नहीं होता, इसमें पेट फूलना, पेटमें जलन और इसके साथ ही तलपेटमें ठण्डा अनुभव होनेका लक्षण रहता है।

आमाशय—साफ़ शाइकी तरह, पतली सिरीकी भाँति या छोटे छोटे सूतकी तरह सफेद रंगकी चर्बीकी आम, उसमें तरह तरह बूँद रक्त या ज्यादा मात्रामें खून निकलना, मलके साथ मांसकी तरह रक्त अथवा पेटकी बीमारीमें पतला पानीकी तरह मल, इसके साथ ही सफेद दुकड़े आम कोलचिकमसे निकलती है। पाखाना होनेके पहले पेटमें बहुत तेज पेंठनका दर्द होना है, जल्दी जल्दी और बार बार दस्त आते हैं; पर सभी बार पाखाना नहीं होता, पेटमें वायु खूब अधिक इकट्ठा होता है, पाखानेके समय पेटमें गुड़गुड़ाहट आवाज होती है, इसके अलावा, पेटमें दर्द, तृष्णा, ज्वर, काँच निकलना, मिचली, वमनके साथ ही साथ पेटोंमें

तरह हो पडना इत्यादि लक्षण और पाखाना होने वाद मलद्वारमें एक दूसरी तकलीफ देनेवाला दर्द रहता है, पर पेटका दर्द घट जाता है, कोलचिकममे—पाखाना होना समाप्त होनेपर भी वहुत देरतक कुथन वनी रहती है और यह कुथन वन्द होते ही रोगी सो जाता है। कोलोसिन्थ—पाखानेके वाद ही पेटका दर्द आराम हो जाता है, और दवानेपर दर्द घटता है। सलफरमे—वेग, कुथन, वहुत देरतक यहाँतक कि दूसरी वार पाखाना जानेतक मौजूद रहता है।

पाकस्थलीकी वीमारी—पाकस्थलीके पास दवानेपर भयानक दर्द, हमेशा हाउहाउकर डकार लिया करता है, इस डकार मे किसी तरहका स्वाद नहीं रहता। पाकस्थलीमे कभी कभी वरफकी तरह ठण्डक मालूम होती है, पेटमे वायु इकट्ठा होकर पेट फूल उठता है। पेटकी वीमारी न होनेतक पेटका दर्द नहीं घटता।

अकड़न—वच्चोको दाँत निकलनेके समय नाना प्रकारके रगोंके दस्त आनेके साथ अकड़न होनेपर और वच्चा यदि लगातार माथा हिलाता रहता हो तो—कोलचिकमसे फायदा होता है। सिनामे—यदि वच्चा चुपचाप पडा रहता है तो अकडन पैदा हो जाती है, पर छटपटाते रहनेपर अकडन नहीं होती। इथूजामें—अकडनके साथ वडे वडे दहीकी तरह थक्के थक्के वमनके साथ निकलते हैं।

वात और हृत्पिण्डकी बीमारी—कोलचिकम का वातका दर्द इधर उधर घूमता फिरता है अर्थात एक सन्धिमें शुरू होकर दूसरी सन्धिमें चला जाता है, दर्द—सन्ध्यामें और थोड़ा हिलने-डोलनेपर बढ़ता है। दर्द इतना अधिक होता है, कि हाथ लगानेसे ही वहाँ भयानक दर्द होता है, रोगवाली जगह घोर लाल रंगकी दिखाई देती है और फूल उठती है, पर वह सूजन पकती नहीं और उसमें पीब भी नहीं होता। गठिया-वातमें—कोलचिकम फायदा करता है (घुटनेकी सन्धि अर्थात घुटनेके वातमें—कोल-चिकम—३ री से ६ ठी शक्ति सेवन करनेपर और कोलचिकम—φ लगानेपर बहुत जल्द फायदा पहुँचता है।) वात रोगवाली जगहपर गेहूँकी भूसीका सेंक देना और हमेशा रूईसे बाँध रखना आवश्यक है। वातमें पहले अंगूठेपर बीमारीका हमला होता है, इसके बाद वात हो या गठिया वात हो, कभी कभी यह रोगवाली जगहसे हृदयमें चला आता है। इसीको अंगरेजीमें मेटास्टैसिस (Metastasis) कहते हैं। एब्रोटेनम—दवा भी इस Metastatic rheumatism स्थान परिवर्त्तन करनेवाले वातकी एक महौषधि है। जब यह छातीमें चला जाता है, तो हृत्कपाट-रोग (Valvular heart disease) या पेरिकार्डाइटिस रोग उत्पन्न हो जाता है। और कलेजेमें घोरतर दर्द, और हृत्पिण्डके ऊपर डंक मारनेकी तरह दर्द होता है, कलेजा भारी और श्वासमें तकलीफ होती है। कटलकी तरह हृत्पिण्ड ओरसे दबा रहा है या मरोड़ता है, इस लक्षणमें भी कोलचिकम फायदा करता है। कोलचिकममें साधारणतः वातका

पेशाब घोर लाल रंगका होता है और गठिया वातमें बहुत थोड़ा पेशाब हुआ करता है। जो हो, वातमें भी कोलचिकमका प्रिय-लक्षण—रसोईकी गन्धसे मिचली, हिलने-डोलनेपर और शामके वक्त रोगका बढ़ना, ये कई लक्षण याद रखने होंगे। वातमें तेज दर्दकी तकलीफ रहनेपर इसका २x शक्ति विचूर्ण देना चाहिये।

पेशाब—कोलचिकममें—पेशाब काला (dark), स्याही की तरह काला या भूरे रंगका होता है। पेशाबमें—खून, सड़े रंगका ढेला, चीनी या अण्डलाल रहता है। पेशाब बूँद बूँद होता है या एकदम बन्द रहता है। टेरिबिन्थिनामें—पेशाब में खूनके रंगकी लाली रहती है।

जीभका पक्षाघात—जब जीभकी कोई गति मालूम नहीं होती, मुँह फाड़े रहता है और मुँहसे लार बहा करती है, उस समय—कोलचिकम फायदा करता है। बैराइटा-कार्बमें—जीभका क्रमश पक्षाघात हो जाता है (कास्टिकम और म्युरियेटिक एसिड देखिये)।

टाइफायड-ज्वर—इस रोगके साथ जब कोलचिकम के निर्दिष्ट पेटके लक्षण रहते हैं अर्थात पेट-फूलना, पतला पाखाना लगा करना, और उसका अनजानमें निकल जाना, जी मिचलना, वमन, ओकाई, पित्त-वमन, हाथ-पैर ठण्डे, पर शरीर गरम (फास्फोरसमें ये लक्षण हैं) भूरे रंगकी जीभ, विमर्षता, कोई बात पूछनेपर उसका जवाब न देना इत्यादि लक्षण सब वर्त्तमान

रहते हैं। इसके अलावा वेरेट्रमकी तरह कपालमें ठण्डा पसीना, तकियेसे सर न उठा सकना, मरे मनुष्यकी तरह चेहरा, मुँह फाड़े रहना, नाक-कान विशेषकर नाक पतली और नोकीली हो जाना, नाकके भीतर सूखापन, बोली बन्द रहना, छटपटी, पैरमें ऐंठन इत्यादि लक्षण रहते हैं, उस समय कोलचिकम अमोघ दवा है। टाइफायड ज्वरमें—यह बहुत कुछ चायना और आर्सेनिककी तरह की दवा है। टाइफायड-रोग भोग करनेके समय पेशाब बन्द रहने पर इससे फायदा होता है।

चेहरेका स्नायुशूल—स्पाइजेलियाकी तरह बायीं ओर ही इसकी क्रिया अधिक हुआ करती है। इस बीमारीमें (Prosopalgia) जब दर्दके साथ चेहरेकी पेशीमें पक्षाघातकी तरह सुन्न हो जाना पैदा हो जाता है, उस समय—कोलचिकम फायदा करता है (स्पाइजेलिया, एमिल-नाइट्रेट, एकोनाइट)।

वृद्धि (aggravation)—खानेकी चीज और रसोईकी गन्धसे, सन्ध्याके समय, रातमें और सूर्यास्तसे सूर्योदयतकके समयके बीचमें।

बादकी दवा—कार्बो, मर्क, नक्स, पल्स, सिपि।

सम्बन्ध—वातमें ब्रायोनियाके सम्पूरक है। शोथमें—एपिस और आर्सेनिकसे फायदा न होनेपर कोलचिकमसे फायदा होता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—बेल, कैम्फर, काकु, लिडम, नक्स, पल्स, स्पाइजे, थीरो, मधु।

क्रियाकी स्थितिकाल (duration)—१४—२० दिन।

क्रम—१२—३० शक्ति।   फारमुला—१

कालिनसोनिया कैनाडेन्सिस ।

(COLLINSONIA CANADENSIS)

(कैनाडा देशके एक तरहके गुल्मकी जडसे टिंचर तैयार होता है)—स्त्रियोंके तलपेटमे और यकृत सम्बन्धी यन्त्रमे अधिक रक्तसंचय होनेकी वजहसे ववासीर इत्यादिकी बीमारी, कब्जियत, शोथ—विशेषकर हृत्पिण्डकी बामारीसे पैदा हुआ शोथ, बच्चोंकी कब्जियत इत्यादि वामारियोंमे साधारणत' इसका व्यवहार होता है।

ववासीर—इस बीमारीका नाम सुनते ही—इस्क्युलस, कालिन्सोनिया, एलो, नक्स, फास इत्यादि दवाएँ याद आ जाती हैं। अर्शमे—कालिन्सोनियाके साथ इस्क्युलसका बहुत कुछ सादृश्य है और इन दोनोंमे ही ऐसा मालूम होता है, कि मलनाली मे छोटी छोटी काठकी सीकें भरी हुई हैं। कालिन्सोनियामे—अर्शसे बहुत अधिक रक्तस्राव होता है और कब्जियत बनी रहती है, पेटमे वायु इकट्ठा होता है और शूलका दर्द हुआ करता है, कब्जियतसे ऐसा भी होता है, कि तीन तीन चार चार दिनोतक पाखाना नहीं होता और एक दिन तीसरे पहरके वक्त पाखाना होता है, मल गाठ गांठ रहता है। इसका दर्द और तकलीफे रातमे बढती हैं। इस्क्युलसके—अर्शमे खून ज्यादा नहीं जाता, पर कमरमें भयानक दर्द रहता है। कालिन्सोनियामे—कमरमे दर्द नहीं रहता (इस्क्युलस अध्याय देखिये)। जिन स्त्रियोंमे जरायु-भ्रंश

(Prolapsus uteri) की बीमारी है, उनके अर्शमें और कब्जियतमें—कालिन्सोनिया ही फायदा करता है। जरायु बाहर निकल आनेके साथ (Prolapsus recti) काँच निकल आनेमें—पोडोफाइलम उपयोगी है। हृत्पिण्डकी बीमारीमें —हृद्रोग आराम होनेके बाद बवासीर और बवासीर आराम होने बाद हृदयकी बीमारी।

वृद्धि (aggravation)—थोड़ीसी भी मानसिक उत्तेजनासे।

सम्बन्ध—बवासीर और हृत्पिण्डकी बीमारीमें—कैक्टस, डिजिटेलिस और दूसरी दूसरी दवाओंसे फायदा न होनेपर और शूल रोगमें—कोलोसिन्थ, नक्सवोमिकासे फायदा न होनेपर—कालिन्सोनिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—θ, ३x—३० शक्ति। अर्शके साथ हृत्पिण्डकी कोई यान्त्रिक बीमारी रहनेपर—उच्च शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

फारमुला—३।

कोलोसिन्थिस ।

(COLOCYNTHIS)

(इण्डिया एक तरहके गुलरके सूखे फलकी छालने और बीजा निकालकर बाकी गूदेसे टिंचर तैयार होता है, यह फल

बहुत तीता रहता है)। क्रोधी आदमी, जिससे कोई बात पूछने पर रज हो उठता है, बुरा मान जाता है, जिन सब स्त्रियोंको अधिक ऋतुस्राव होता है और आलसिन रहती है, त ा जो सब मनुष्य जल्दी जल्दी मोटे होते जाते है, उनके शरीरमे इसकी क्रिया जल्दी होती है। किसी तरहका भी स्नायविक दर्द, सर-दर्द, पेटमें मरोड या पेठनका दर्द, गृध्रसी या सायटिका वात, कटिवात इत्यादि कितनी ही बीमारियोंमे यह जादूकी तरह काम करता है। जिस समय हवा ठण्डी और धूप तेज रहती है, उसी समय—कोलोसिन्थका प्रयोग होनेपर ओषधकी क्रिया शीघ्र प्रकट होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। बहुत अधिक रज होने बाद किसी बीमारीका पैदा हो जाना, जैसे—दस्त, कै, पेटमे दर्द, ऋतु बन्द हो जाना, फिर, मस्तिष्ककी बीमारी इत्यादि (कैमोमिला), २। एकाएक जल्दी जल्दी बाई ओर माथा घुमानेपर सरमे चक्कर आ जाता है, ३। सायटिका नामक स्नायुशूलके दर्दमें उरु-सन्धिमें पेठनकी तरह दर्द, रोगवाली करवट दबाकर सोता है, ४। तीर या बिजलीकी गतिकी तरह दर्द—नीचे बाये उरुमें, बाये घुटनेमे और बाये घुटनेके पीछेवाले स्थानपर चला जाता है (दाहिनी ओरका सायटिकाका दर्द—दर्द नीचेकी दाहिनी उरु-सन्धिमे और दाहिने पेटमें चला जानेपर—जैकेलियम), ५। रक्तामाशय और अन्न प्रदाह [illegible]) पाखाना होनेके पहले पेटमे भयानक दर्द और रोगी हाथसे पेट दबा रखता है। ६। शूलका दर्द—कोई

बहुत तीता रहता है)। क्रोधी आदमी, जिससे कोई बात पूछने पर रंज हो उठता है, बुरा मान जाता है, जिन सब स्त्रियोंको अधिक ऋतुस्राव होता है और आलसिन रहती है, तथा जो सब मनुष्य जल्दी जल्दी मोटे होते जाते हैं, उनके शरीरमे इसकी किया जल्दी होती है। किसी तरहका भी स्नायविक दर्द, सर-दर्द, पेटमें मरोड या पेठनका दर्द, गृध्रसी या सायटिका वात, कटिवात इत्यादि कितनी ही बीमारियोंमे यह जादूकी तरह काम करता है। जिस समय हवा ठण्डी और धूप तेज रहती है, उसी समय—कोलोसिन्थका प्रयोग होनेपर औषधकी क्रिया शीघ्र प्रकट होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। बहुत अधिक रंज होने बाद किसी बीमारीका पैदा हो जाना, जैसे—दस्त, कै, पेटमे दर्द, ऋतु बन्द हो जाना, फिट, मस्तिष्ककी बीमारी इत्यादि (कैमोमिला), २। एकाएक जल्दी जल्दी बाई ओर माथा घुमानेपर सरमें चक्कर आ जाता है, ३। सायटिका नामक स्नायुशूलके दर्दमें उरु-सन्धिमे पेठनकी तरह दर्द, रोगवाली करवट दबाकर सोता है, ४। तीर या बिजलीकी गतिकी तरह दर्द—नीचे बाये उरुमें, बाये घुटनेमें और बाये घुटनेके पीछेवाले स्थानपर चला जाता है (दाहिनी ओरका सायटिकाका दर्द—दर्द नीचेकी दाहिनी उरु-सन्धिमे और दाहिने पेटमें चला जानेपर—नैफेलियम); ५। रक्तामाशय और अन्त्र प्रदाह (एण्टेराइटिस) पाखाना होनेके पहले पेटमे भयानक दर्द और कूथन, रोगी हाथसे पेट दबा रखता है।। ६। शूलका दर्द—कोई

कड़ी चीजसे या हाथमें पेट दबा रखता है। दबानेपर कुछ आराम मिलता है, ७। मुँह तीता (ऐसे स्थानपर—, ज्यादा फायदा करता है।)

शूलका दर्द—पेटमें बेतरह दर्द, यह दर्द किसी तरहके प्रदाहकी वजहसे नहीं होता, इसमें रोगी सामनेकी ओर झुका रहने पर, दर्दवाली जगह दबा रखनेपर, पैर मोड़कर या पट होकर सोनेपर कुछ घटता है, दर्दके जोरके कारण रोगी अकसर रोता है, छटपटाता है। ऐसे दर्दमें—कोलोसिन्थकी निम्न-शक्तिके प्रयोगसे तुरन्त दर्द घट जाता है (२०० शक्ति और कितनी ही बार मूल अर्कसे भी तुरन्त फायदा होते देखा जाता है)। डिम्बकोष इत्यादिके दर्दमें या किसी बीमारीमें ऊपर बताये लक्षण आदि रहनेपर—कोलोसिन्थके प्रयोगसे तुरन्त दर्द घट जाता है। कोलोसिन्थका शूलका दर्द—(colic)—बहुत कुछ स्नायुशूलके ढगका और उसके साथ ही प्रायः दस्त पैसा लक्षण रहता है। यह दस्त पेटके दर्दकी वजहसे ही हुआ करता है, पेटकी गड़बड़ीकी वजहसे नहीं (आमाशयकी बीमारीमें इस तरहका दर्द अकसर दिखाई देता है।) कोलोसिन्थका दर्द—काटने, मरोड़ या खींचनका दर्द। मैग्नेशिया-फास—नामक दवा—उदर-शूलके दर्दमें कोलोसिन्थके समकक्ष है और बालकोंकी बीमारीमें ये दोनों ही दवाएँ फायदा करता है। मैग्नेशिया-फासका दर्द—गर्म फोमेण्टेशन या गरम पानी बोतलमें भरकर गरम सेंक देनेसे भी फायदा होता है। कोलोसिन्थ और मैग्नेशिया-फास—शरीरके जितने ही स्थानोंमें स्नायुशूल, जैसे

जरायुका शूल, स्नायुशूल, डिम्बकोषका दर्द, सायटिका इत्यादि रोगोंमें समान-भावसे लाभदायक है। कैमोमिला भी बहुत कुछ कोलोसिन्थके सदृश ही है और ये दोनो दवाएँ ही क्रोधकी वजहसे उदर-शूल हो जाये तो व्यवहृत होती हैं। कैमोमिलाके उदर-शूल में पेटमे वायु होता है, पेट फूलता है, बच्चा छटपटाता है, रोता है, तकलीफसे बेचैन हो पडता है, पर कोलोसिन्थका रोगी बच्चा पैर सिकोडकर सोया नहीं रहता, उदर-शूल (colic) में, कैमोमिला और कोलोसिन्थसे अगर फायदा न हो—मैग्नेशिया-फाससे फायदा होता है। स्टैफिसेग्रिया-नामक दवा—पलकोंका फोडा और जिनके दाँत कीडे लग कर काले हो जाते हैं, उन सब बच्चोंके उदर-शूलमें ऊपर बतायी सभी दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। वेरेट्रममें—उदर-शूलके दर्दके साथ कपालमे ठण्डा पसीना होता है। बोविस्टा में—पैर सिकोडे रहने या सामनेकी ओर झुकनेपर दर्द घटनेका लक्षण रहनेपर भी भोजनके बाद उदर-शूल बढता दिखाई देगा। इलिसियम-एनिसिटम—तेज वायुशूलका दर्द, रोज एक ही समय दर्द पैदा होता है, पेट गडगडाता है। डायस्कोरिया—वायु-सचय होनेके कारण पैदा हुए उदर-शूलमें ज्यादा फायदा करता है। इसका दर्द—नाभीकी जगहके नीचेकी ओर, यहाँतक कि पुट्ठेकी जगहपरसे शुरू होकर इसके बाद समूचे पेटमें छिटक जाता है, कभी कभी तो हाथ-पैरतक चला जाता है। अब यह देखिये, कि कोलोसिन्थके साथ डायस्कोरियाका क्या प्रभेद है —

कोलोसिन्थमें—दर्द, पैर या घुटने सिकोडकर सोनेपर या सामनेकी ओर झुकनेपर कुछ कम पडता है। डायस्कोरिया—ठीक उल्टा अर्थात धुकडी लगाकर लेटे रहनेपर दर्द बढता है और पीछेकी ओर झुक जाने या सीधे रहनेपर दर्द कुछ घटता है। इसमें दर्दवाली जगहको दबा रखनेपर दर्द और भी बढता है। स्टैनम—नामका दवा—बच्चोंके उदर-शूलमें बहुत फायदा करती है। इसमें बच्चेका पेट छातीपर रखकर पेटको दबाये हुए टहलनेपर दर्द घटता दिखाई देता है। कोलोसिन्थमें—बच्चोंके पेटके दर्दमें—वे पट होकर सोना चाहते हैं या लेटने हैं, जभी उन्हें चित्त लेटाया जाता है, तभी चिल्लाना आरम्भ करते हैं। उसमें पहले मिचली नहीं रहती, पर जब दर्द बहुत ही बढ जाता है, तब जी मिचलाने लगता है, और कै हुआ करती है। जब पेट खाली होता है—तब सिर्फ ओकाई आया करती है। लगातार बहुत ही तकलीफ देनेवाली ओकाई आना, ओकना, मिचली, वमनकी अपेक्षा बिना कैकी मिचली अधिक इन समस्त लक्षणोंमें कितने ही स्थानोंपर—पल्टिम-डार्ट—३० शक्ति २।१ मात्रा प्रयोग करनेसे फायदा होता है।

स्टैनमका दर्द—धूप ओरसे दबा रखनेपर कुछ घटता है, बच्चा दिन-रात रोता है। इन रोनेके लक्षणके सहारे बच्चोंके उदर-शूलमें—अलापामें बहुत फायदा होता है। पैरके तलवेमें जलन—इस लक्षणको ध्यानमें रखकर कालिक या उदर-शूल हो अथवा कोई दूसरी ही बीमारी हो, बहुत जटिल होनेपर भी—

सलफरसे फायदा हो सकता है। (एनाकार्डियम अध्यायमें—अम्ल-शूलका दर्द देखिये)।

द्रष्टव्य :—मैंने आठ दस अम्लशूलके रोगीको (जिनके पेटमें कालिक—अम्लशूलका दर्द पेट दबा रखनेपर घटता था, रोज तीसरे पहर, सवेरे या भोजनके दो तीन घण्टे बाद दर्द शुरु होकर चार पाँच घण्टोतक बहुत तकलीफ देता था) पहले लक्षणके अनुसार—लाइकोपोडियम, डायस्कोरिया, नक्स, एनाकार्डियम, एबिस, सलफर इत्यादि दवाएँ प्रयोग कीं, पर कोई भी फायदा न हुआ, अन्तमें—स्टैनम ३० शक्तिका प्रयोग करनेसे, उनमें कोई पहले ही सप्ताहमें, कोई २ रे सप्ताहमें, कोई भी ३।४ सप्ताहमें आरोग्य हो गया था। इन सबको रोज सवेरे भोजनके दो एक घण्टा पहले खाली पेट एक बडा गिलास गरम पानी और भोजनके बाद ही कच्चे नारियलका पानी, नहीं तो पानीका साबूदाना, नेबूके रसके साथ पिलाया जाता था।

सभी होमियोपैथ जानते हैं, कि होम्योपैथीमें किसी भी बीमारीकी कोई खास बँधी हुई दवा नहीं है। अतएव, अम्लशूलके दर्दकी भी कोई खास निश्चित दवा नहीं है। रोग और रोगीकी प्रकृति, रोगका घटना-बढना, इत्यादिके ऊपर निर्भरकर, सबको ही दवाका चुनाव करना पडता है। जो हो, यह दर्द सहजमें और समूल आरोग्य नहीं होना चाहता, कुछ दिनोतक दबा रहता है और फिर बीच बीचमें उठकर रोगीको बहुत तकलीफ देता है। मैं आज-

फल जहाँ किसी दवाके सभी लक्षण रोग-लक्षणसे मिला नहीं पाता, शूलका दर्द, किसी भी स्थितिमें रहनेपर नहीं घटता (Colic, no position relieves), ऐसी अवस्थामें—एकोनाइट नेप—१x शक्तिका, २।३ बूँद, २ आउन्स पानीमें मिलाकर, उसका एक एक घण्टा—२।३ घण्टेके अन्तरसे, ४।५ मात्रा देकर ५।७ दिनोंतक प्रयोग करता हूँ। इससे यह दिखाई देता है, कि—सैंकड़े ४०।५० रोगी आराम हो जाते हैं। (एकोनाइट अध्याय देखिये)।

देखनेमें आता है, कि अम्लशूलवाले दर्दके रोगियोंको अकसर कब्जियतकी तकलीफ भोगनी पड़ती है। जिन्हें खुलासा दस्त नहीं आते, उनके शूलका दर्दमें, दर्द काटने, पीसने मरोड़नेकी तरह, खासकर नाभीके पास होता हो, और जहाँ एकोनाइटसे फायदा न हो, वहाँ मैं बेरेट्रम-एल्बम ३x या ६x शक्ति, ऊपर बताये नियमके अनुसार, एक सप्ताहतक प्रयोग करता हूँ। यदि दर्द दबानेसे कुछ घटे, तो—कोलोसिन्थ निम्न-शक्तिका (३x, ६x शक्तिका) और इसके साथ ही—बेरेट्रम ३x, ६x पर्यायक्रमसे, दर्द न घट जानेतक, नित्य ४।५ मात्राएँ देता हूँ। इससे देखा जाता है,कि सैंकड़े ७०।८० रोगियोंकी तकलीफ घट जाती है। दवाका घटना ही रोगीके लिये शुभ और चिकित्सकके लिये आनन्दका विषय है। बेरेट्रम-एल्बमसे—कोठा साफ हो जाता है (कोलोसिन्थ,—शक्तिकृत दवासे अगर फायदा न हो, तो मदर टिंचर,—२।३ बूँद, ८।१० तोलाभर पानीमें मिलाकर, दर्दकी तेज़ीके अनुसार, आधा घण्टेसे

लेकर, ३ घण्टेका अन्तर दे प्रयोग करनेपर, बहुत कडा पेटका दर्द भी, ४।५ खुराक सेवन करनेसे ही आराम हो जाता है। क्रिमिकी वजहसे पैदा हुए उदरशूलके दर्दमे भी यह फायदा करता है। इसके सेवनसे कितनी ही वार मलद्वारसे या मुँहसे क्रिमि निकल जाती है और शूलका दर्द आरोग्य हो जाता है और दूसरे उपसर्ग भी आरोग्य हो जाते हैं। यह मेरा परीक्षित उपाय है।

अम्लशूलवाले रोगियोके लिये, रोज कागजी, पाती या महतावी नेबूका रस और दिनमे २।३ बार (भोजनके एक घण्टा पहले और २ घण्टे वाद) गरम पानीके साथ नेबूका रस पीनेपर बहुत फायदा होता है।

(एक कागजी नीबूको बीचसे दो टुकडे कर उनमें जरासा सेंधा नमक और गोल मिर्चके बुकनी देकर गोहरेकी आँचपर कुछ देर तक रख देनेसे, आगकी गरमीसे नेबू कुछ नरम हो जाता है। उसी नेबूका रस २।३ बार गरम पानीके साथ पीनेपर दर्द घटता है, पाचन शक्ति वढती है और कोठा साफ हो जाता है, पर जिन्हें खट्टी डकार, खट्टी कै या अम्ल होता हो, उनके लिये किसी तरह की खट्टी चीज, या खट्टा फल या खट्टा शरबत आदि पीना या व्यवहार करना उचित नहीं है। अम्लशूलके रोगीका दर्द जबतक न घट जाये, तबतक उसे दूध-भात और पका पपीता इत्यादि खिलाना और कच्चे नारियलका पानी, सागू, अरारूट, वार्ली प्रभृति पतली चीजें पीनेको देना चाहिये। कोई तरकारी या अधिक मीठी चीज खानेको न देनी चाहिये।)

अतिसार और आमाशय—कोलोसिन्थमें— मल-का रंग घोर पीले रंगका, ठीक गन्धककी तरह रंग, उसके साथ फेन मिला रहता है। इसमें पाखानेके साथ—या तो आम, नहीं तो रक्त, अथवा पित्त, कुछ न कुछ मिला ही रहता है। कभी कभी दस्तके साथ केवल खून आता है। पेटकी बीमारीमें,—पानीकी तरह पतला, कुछ हरे रंगका हड़हड़ाकर दस्त आता है (दस्त अगर ज्यादा आता है, तो कभी कभी बिना किसी रंगका दस्त हुआ करता है और पतले दस्तके साथ आम मिली रहती है, पर पेटमें दर्द होता नहीं दिखाई देता है।) कोलोसिन्थमें—सलफर की तरह मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है और यद्यपि पेशाब परि-माणमें खूब थोड़ा होता है, पर बार बार पाखाना लगता है; दस्त में खट्टी या कागज जलनेकी तरह एक तरहकी तेज गन्ध आती है। इनमें दस्त आनेके पहले पेटमें बेतरह ऐंठन और मरोड़का दर्द होता है और पाखानेका वेग भी रहता है। वेग इतना ज्यादा आता है, कि उसे रोगी सम्हाल नहीं सकता। पाखानेके समय पेटमें दर्द, कूथन, मिचली और मलद्वारमें और मूत्रद्वारमें खूब जलन रहती है, पेटका दर्द—पाखाना हो जाने बाद घट जाता है; पर यदि पाखाना हो जाने बाद पेटमें बहुत दर्द आरम्भ हो जाये, तो बहुत ही खतरनाक हो जाता है। पेटकी बीमारीमें—जीभकी नोकमें जलन, तीता स्वाद, बहुत भूख, प्यास, मिचली, ओकाई रहती है। इसके अलावा मिचली न रहनेपर भी खाई हुई चीजकी अथवा हरे रंगकी पित्तकी कै, नींद न आना इत्यादि कितने ही लक्षण भी

कोलोसिन्थके स्मरण रखने चाहिये। कोलोसिन्थमें—रोग लक्षण खाने-पीनेके तुरन्त बाद ही, कोई खट्टी चीज खानेपर और बच्चोंको दाँत निकलनेके समय बढते हैं। आमाशयका पेटका दर्द—कोलोसिन्थसे फायदा न होनेपर—मर्कु रियसकी जरूरत पडती है। मैग्नेशिया-कार्व—यह कोलोसिन्थके सदृश दवा है और बच्चे, युवक, वृद्ध सबके लिये ही समान भावसे लाभदायक है। बच्चोंकी बीमारीमें बच्चा बहुत रोगी (puny and sickly) रहता है। दूध बिलकुल ही सहन नहीं होता। दूध पीता है, तो पाखानेके साथ दूध ही निकलता है, पेटमे बहुत पेठन होती है, बच्चा दोनों पैर पेटकी ओर मोडकर पडा रहता है। मैग्नेशियाके—दस्तकी गन्ध खट्टी, रग हरा, पाखानेके साथ सफेद रगकी गन्ध निकलती है (आमाशयके लिये—मर्क-सोल अध्याय देखिये)।

पेशाव—दूधकी तरह सफेद रगके पेशाबमे—कोलोसिन्थसे फायदा होता है (एसिड-फास और स्टिलिञिया देखिये)।

वात—कोलोसिन्थका प्रिय लक्षण है, "दबानेपर घटना" वात गठिया वात—इस रोगमे भी यह लक्षण रहनेपर कोलोसिन्थ फायदा करता है। इसके अलावा अन्यान्य दवाओसे तकलीफ घट जाने बाद यदि रोगवाली जगह कडी और अकडी रहनेका भाव न जाये—तो कोलोसिन्थसे फायदा होनेकी सम्भावना है।

गृध्रसी वात—(सायटिका) सायटिका-नर्व (चूतड़ और उरूके पीछेका एक मोटा स्नायु) से दर्द आरम्भ होता है और

ह पैरकी पँडीतक चला जाता है। हिलने-डोलनेपर रोगीकी तकलीफ बढ़ जाती है, पैर और कमर सुन्न हो जाती है, मानो पक्षाघात हो गया है। इन सभी लक्षणोंमें—कोलोसिन्थसे विशेष फायदा होगा।

इस बीमारीमें और कमरके वातमें (lumbago) कोलोसिन्थ के अलावा—ब्रायोनिया, रसटक्स, कैल्केरिया-फ्लोर, इस्क्युलस, सिमिसिफ्युगा, नक्स-वोमिका, आर्निका, कैलि-बाइक्रोम, सलफर प्रभृति बहुत-सी दवाएँ हैं। इनसे कभी कभी हमलोगोंको विशेष फायदा हो जाता है। ब्रायोनिया—दर्द हिलने-डोलनेपर बढ़ता है, स्थिर रहनेपर घटता है। रसटक्समें—स्थिर रहनेपर और कुछ देरतक बैठे रहने अथवा लेटे लेटे पहली बार उठनेपर दर्द बेतरह बढ़ जाता है। पर थोड़ा भी चलते-फिरते रहनेपर कुछ घट जाता , इसका दर्द मोच खा जाने या कुचल जानेकी तरह होता है। पुराने कमरके वातमें—रसटक्सके बाद कैल्केरिया-फ्लोरिका फायदा करता है। इण्डिगो (Indigo)—दर्दके बीचमें घुटनेतक—मानो हड्डीके भीतर, खासकर घुटनेके भीतर एक तरहकी अव्यक्त तकलीफ बनी रहती है, घूमने-फिरते रहनेपर दर्द नहीं रहता ; पर बैठे रहनेपर फिर बढ़ जाता है, खाने-पीने और विश्रामके बाद बहुत बढ़ जाता है। इस्क्युलसका—दर्द, ब्रायोनियाकी तरह थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर बढ़ता है, चलने, बैठे बैठे उठनेपर, यहाँतक कि थोड़ा हिलनेपर दर्द बढ़ता है। इसमें दर्द कमरमें और सैक्रो-इलि-

यक-सिम्फिसिसमे बहुत अधिक अनुभव होता है, ववासीर रोग-वाले रोगियोंके कमरके दर्दमे यह ज्यादा फायदा करता है। सिमिसिफ्युगा—इसका भी दर्द ब्रायोनियाकी भाँति हिलने-डोलने पर बढता है, शरीरके मांसभरे स्थानोंके दर्दमे और जरायुकी बीमारीवाली स्त्रियोंके वातमें और कमरके वातमे ज्यादा फायदा करता है। नक्समे—दर्दकी वजहसे रोगी विछावनमे करवट नहीं बदल सकता। यहाँतक कि उठकर वेठता है और तव करवट बदलता है। विछावनसे उठनेके समय यदि कमरका दर्द ज्यादा हो तो नक्स-वोमिका फायदा करता है। आर्निकामे चोट लगनेके बाद ही दर्द पैदा होता है। कैलिबाइक्रोममे--दर्द बरावर बना नहीं रहता, बीच बीचमे होता है, दर्दके समय ऐसा मालूम होता है, मानो तीर विध रहा है। बार्बेरिस—पथरी रोगवाले रोगियोंकी कमरकी बीमारीमे फायदा करता है। इसमे कमरेके भीतर कुछ बुजबुजा रहा है। सलफर—कमर और गुदास्थि (coccyx) मे भयानक दर्द, सीधा होकर चल नहीं सकता, इसके अलावा झुकने पर भी दर्द बहुत बढ जाता है। इसका दर्द विश्रामसे और विछा-वनकी गरमीसे बढ जाता है। आर्सेनिक—दर्द आधी रातके बाद बढता है, रोगवाली जगहपर जलन होती है, गरम सेंक देनेपर घट जाता है। विस्कम-एलवम—३-३० शक्ति, दोनो ओरकी सायटिका और वात इत्यादिकी उत्तम दवा है। विस्कम-एलवम—३, ३० शक्ति, दोनों ओरका गृध्रसी वात, वात इत्यादिकी उत्कृष्ट दवा है।

फाइटोलक्का—ब्रायोनिया और रसटक्सके बीचके लक्षणमें और शरीरके सभी स्थानोंके दर्दमें इसका प्रयोग होता है। नैफेलियम—कमरसे लेकर पैरकी एँडीतक दर्द।

उरु-सन्धिकी बीमारी—यदि बीमारी दाहिनी ओर हो और दाहिनी उरु-सन्धिमें सुई गडनेकी तरह दर्द रहे, रोगीको चलते चलते खडे हो जाना पडे, घुटने सिकोडकर या पैर दबाकर सोना पडे, पैरमें पेठनका दर्द रहे, तो—कोलोसिन्थसे फायदा होगा। (साइलिसिया देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—क्रोध, घृणा या अपने किये हुए अपराधकी वजहसे मनकष्टमें।

उपशम—जोरसे दबानेपर, सामनेकी ओर झुकनेपर।

बादकी दवा (follows well)—बेल, मर्क, कास्टि, कैमो, नक्स, सल्फ।

सम्बन्ध—बहुत कूथनके साथ आमाशय रोगमें,—मर्कके समान है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, कास्टि, कैमो, काफि, ओपि, स्टैफि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—३x, ३० शक्ति। फारमुला—४

कोमोक्लेडिया डेण्टाटा।

(COMMOCLADIA DENTATA)

साधारणतः चर्म और दाहिनी ओरकी आँखपर ही इस दवाकी ज्यादा क्रिया होती है। चर्म-रोगमें जहाँ ऐसा दिखाई दे, कि—उद्भेदका रंग लाल या किसी चर्म रोगमे शरीरका चमडा आरक्त-ज्वर (स्कार्लेटिना) हो जानेपर जिस तरहका लाल हो जाता है, उसी तरहका हो जाये, अथवा शरीरके चमडेपर लाल रंगकी रेखाएँ (stripes) पड जायें, खुजली हो, वहीं इस दवाका प्रयोग होता है। सुना है, कि कुष्ठ (Leprosy) रोगकी भी यह बहुत उत्तम दवा है। एनाकार्डियम-आक्सिडेण्टैलिस—कुष्ठ रोग की एक दवा होनेपर भी, उसमें रोगवाली जगहपर स्पर्श अनुभव करनेकी शक्ति नहीं रहती, सुन्नकी तरह मालूम होता है (anæsthetis variety)।

आँखकी बीमारी—पलकोंका स्नायशूल (स्नायशूलका दर्द) दाहिनी आँखके भीतर दर्द और अँधेरा दिखाई देना, धुँधली दृष्टि (ग्लोकोमा), दाहिनी आँखमे केवल एक रोशनी चमका करती है, ऐसा दिखाई देना इत्यादि कई लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

वक्षस्थलकी बीमारी—बायें स्तनकी गांठका फूलना, और इसी कारणसे दर्द। खाँसनेके समय बायीं ओरकी छातीके

नीचे दर्द मालूम होना और यह दर्द बायीं स्कन्धास्थितक चला जाता है। दाहिनी ओरकी छातीमें दर्द—दर्द हाथमें और नीचे अंगुलीतक हुआ करता है।

उपशम (amelioration)—खुली हवामें और हिलने-डोलनेपर।

वृद्धि (aggravation)—गरमीसे, छूनेपर, रातमें और विश्रामसे।

सदृश—रसटक्स, पनाकार्डियम, इयुकोर्बिया।

क्रम—१ म से ३० शक्ति।		फार्मुला—२।

कान्डियुरेङ्गो।

(CONDURANGO)

(कन्दर गाछ)—पाकस्थलीकी जिन ग्रन्थियोंसे पाचक रस (gastric juice) निकलकर,—मांस, दाल इत्यादि प्रोटीड खाद्यों को पचाता है, उन सभी ग्लैण्डोंपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। मेरुमज्जाका क्षय हो जानेपर, प्रत्यंगोंकी चालक-पेशी सब क्रमशः निष्क्रिय हो जाती है, उसमें चलनेकी शक्तिका लोप हो जाता है, यह लक्षण लोकोमोटर एटेक्सिया नामक बीमारीका लक्षण है। कानडियुरेङ्गोके लक्षणके सदृश है। गति-शक्ति राहित्य नामकी बीमारीमें, जब किसी दूसरी दवासे भाराके अनुसार फायदा नहीं दिखाई देता, डा० डेक कहते हैं—उस समय यह दवा श्रीजाके साथ युक्त

दिनोंतक प्रयोग कर देखनी चाहिये। ओंठके कोने फटे (ग्रैफाइटिस और नैट्रममें भी यही लक्षण है) और फटकर जखम हो जाना—कानडियुरेंगोका चुनावका अन्यतम लक्षण है। सिफिलिस और कैन्सर रोगमें भी इसका व्यवहार होता है;

पाकस्थलीकी बीमारी—पाकस्थलीकी श्लैष्मिक झिल्ली का पुराना प्रदाह, पाकस्थलीके भीतर जखम और जलनका दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीके भीतर हमेशा ही आग जला करती है। अन्ननलीका पथ सकरा हो कर (Stricture of food-pipe) वक्षोस्थिके (वक्षकी बीचकी हड्डीका) पीछे हमेशा ही जलन हुआ करती है और कोई चीज खानेपर ऐसा मालूम होता है मानो उस स्थानपर अड़ी हुई है।

सदृश—एस्टिरियस, हाइड्रैस्टिस, आर्सेनिक, कोनियम, हेलोडर्मा।

क्रम—φ या १x विचूर्ण शक्ति अथवा छालका चूर ५ ग्रेन, भोजनके थोडी देर पहले पानीके साथ सेवन करना चाहिये।

फारमुला—टिंचर—४, विचूर्ण—७।

कोनियम मैकुलेटम।

(CONIUM MACULATUM)

(हेमलाक)—यह एक तरहका जहर है। ऐसा कहा जाता है, कि दार्शनिक पण्डित सुकरातको यही जहर खिलाकर हत्या की

गयी थी। इसकी जहरीली क्रियाके कारण पहले अंग-प्रत्यंग हिलाने की शक्ति गायब हो जाती है और अन्तमें फेफड़ेकी क्रिया बन्द होकर मृत्यु हो जाती है। क्रमश ऊपर चढ़नेवाला पक्षाघात, सरमें चक्कर आना, काँपना, पैरोंका अकड़ जाना, स्मरण-शक्तिकी कमजोरी, सुस्ती, पेशाबसे सम्बन्ध रखनेवाली बीमारी, शुक्रका पतलापन। लसिका-ग्रन्थियोंका (lymphatic glands) फूलना, हृत्पिण्ड का धड़कना, चोट और गिरनेकी वजहसे रोग, स्त्री और पुरुष दोनोंकी ही बुढ़ापेके समयकी बीमारियाँ इत्यादि बहुत-सी बीमारियोंमें इस दवासे फायदा होता दिखाई देता है।

चलनेके समय पैर ठीक जगहपर नहीं पड़ते, दूसरी जगहपर धपसे गिर जाते हैं, शरीर काँपता है, पैरमें ताकत या शक्ति नहीं रहती। ये लक्षण—गति-शक्ति राहित्य (Locomotor-Ataxy) के लक्षण हैं और कोनियमके अन्तर्गत है। अतएव, यह गति-शक्ति राहित्य रोगकी भी दवा है। कोई मनुष्य यदि अच्छी तरह चलता-फिरता रहनेपर एकाएक उसकी स्वाभाविक शक्ति नष्ट हो जाये (sudden loss of strength) तो कोनियम ही उसकी दवा है।

वृद्ध और अविवाहित पुरुष या स्त्री, जो सब मनुष्य किसीके साथ अधिक दिनोंतक रहनेसे डरते हैं,—समाजमें जानेसे डरते हैं, चित्तोन्माद, जिनकी स्मरण-शक्ति बहुत क्षीण रहती है, जिनको कुछ भी याद नहीं रहता, जो जरा जरा सी बातमें उत्तेजित हो जाते और चिढ़ उठते हैं, जिन्हें बातका काट देना बिल्कुल ही सहन नहीं होता, उत्तेजित होते हीं, मानसिक दुर्बल हो उठते हैं, कलह प्रिय,

यथेच्छाचारी, आलसी, किसी विषयको भी ग्रहण नहीं करते, कोई काम-काज करना नहीं चाहते, वे ही कोनियमके रोगी हैं।

चरित्रगत लक्षण :—

१। अकेले रहनेसे भय, इतनेपर भी इसका रोगी किसीसे मिलना-जुलना नहीं चाहता, २। सरमें चक्कर आना—सोनेपर, इधर उधर करवट बदलनेपर, यहाँतक कि जरा-सा सर हिलानेपर भी, आँख फेरनेपर—सरमें चक्कर आ जाता है। इसीलिये, इसका रोगी अपना माथा स्थिर-भावसे रखता है, ३। खाँसी—रातमें सोनेपर छाती और गलेमें कुटकुटाहट होकर खाँसी, ४। पेशाब करनेके समय भीषण कष्ट, पेशाब एक बार होता है,—फिर बन्द हो जाता है, मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थिका बढ़ना या जरायु-सम्बन्धी कोई बीमारी, ५। ऋतुस्राव बन्द होकर या बहुत देरसे और बहुत थोड़ी मात्रामें होता है और थोड़े दिनोंतक रहता है। ६। ऋतुस्रावके १० दिन बाद श्वेत-प्रदरका स्राव ; ७। आँखमें किसी तरहका प्रदाह नहीं, पर रोशनी सहन नहीं कर सकता, आँखसे प्राय पानी गिरा करता है, ८। अण्डकोष और स्तनका प्रदाह, रोगवाली जगह कड़ी ; ६। हस्तमैथुनके दुष्परिणामकी वजहसे ध्वजभग, जरा इधर उधर मन होनेसे ही वीर्य-क्षरण हो जाता है ; १०। प्रेमको मनमें दबा रखनेकी वजहसे बीमारी ; ११। दिन-रात पसीना, सोते ही पसीना, आँख बन्द करनेपर पसीना (सिङ्कोना)।

पक्षाघात—इसके सेवनसे दिमाग सुन्न पड़ जाता है और यह सुन्न हो जानेका भाव पैरसे आरम्भ होकर क्रमशः शरीरमें और इसके बाद मस्तिष्कमें चला जाता है। इसीलिये, जो सब पक्षाघात पैरसे आरम्भ होकर क्रमशः ऊपरी अंगमें चढ़ते हैं; उसमें—कोनियम फायदा करता है।

सरमें चक्कर—मस्तिष्कमें रक्तकी कमीके कारण सरमें चक्कर आना, बगलकी ओर सर घुमानेसे सरका चक्कर बढ़ जाता है। सोये सोये करवट लेनेपर या थोड़ा-सा भी सर हिलानेपर सरमें चक्कर आ जाता है। ये सभी लक्षण जिस बीमारीमें रहेंगे, उसमें कोनियम फायदा करेगा। थेरिडियनमें—ठीक कोनियमकी तरह सरमें चक्कर आनेका लक्षण है। उसमें थोड़ा भी सर हिलाने पर या करवट बदलनेपर सरमें चक्कर आना बढ़ जाता है; परन्तु उसके साथ वमन या मिचली भी रहती है। साइटिसियामें—ऊपर की ओर देखनेपर सरका चक्कर बढ़ जाता है। वृद्धा तथा जिन स्त्रियोंको जरायुकी या डिम्बकोषकी कोई बीमारी हो, उनके सरके चक्करमें—कोनियम विशेष लाभदायक है।

आँखकी बीमारी—कण्ठमाला दोषग्रस्त धातुवाले मनुष्यकी आँखकी बीमारियोंमें—प्रदाह बहुत अधिक नहीं, पर रोशनीकी ओर देख नहीं सकता—इन लक्षणोंमें कोनियम फायदा करता है। इसके अलावा—इसमें आँखकी तकलीफ रातके समय बढ़ती है, थोड़ी भी रोशनी आँखमें सहन नहीं होती, अँधेरेमें

अथवा आँख बँधी रहनेपर थोडा आराम मालूम होता है, रोगी हमेशा आँखें बन्द किये रहता है, पलकोंका थोडा या पूरा पूरा पक्षाघात हो जाता है। (जेलसिमियम, कास्टिकम और सिपिया में भी यही लक्षण है)। जिस स्थानपर आँखोंमें कोई विशेष प्रदाह नहीं रहता, पर आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती, इसलिये, आँख बन्द किये रहता है, पर आँख खोलते ही गरम गरम आँसू बहने लगता है, ऐसी अवस्थामें कोनियम फायदा करता है। ऐसा भी प्रमाण मिलता है, कि आँखोंका मोतियाबिन्द इससे आराम हुआ है। यदि चोट लगना इसका कारण हो तो और भी फायदा करता है।

सूजन, जखम और कैन्सर—गिर जानेकी वजहसे या किसी तरह चोट लगकर, वहाँ सूजन बहुत दिनोंतक रह जाये और उसमें सुई गडनेकी तरह दर्द हो—कोनियम फायदा करता है। चोटकी वजहसे कैन्सर—यह स्तनमें हो, अथवा जरायु या पाकस्थलीमें हो—कोनियमसे फायदा होगा। चोटके कारण या किसी दूसरे कारणसे अर्बुद या किसी तरहकी सूजन होकर अगर वह पत्थरकी तरह कडी हो जाय और वहाँ सुई गडनेकी दर्द हो—कोनियम उसकी प्रधान दवा है। दाहिनी ओरका स्तनका अर्बुद या सूजनमें—कोनियम ज्यादा फायदा करता है। (बाई ओरका साइलिया), इसके अलावा प्रत्येक बार रजस्रावके समय यदि स्तनमें अकड़न हो, स्तनमें दर्द हो तथा स्तन बड़ा हो जाये, तो—कोनियम ज्यादा फायदा करेगा।

वक्षोस्थिमें अर्थात वक्षकी बीचवाली लम्बी हड्डीमें ज़ख़म (Caries) होनेपर—कोनियमका प्रयोग करना चाहिये।

तालुमूल-प्रदाह—तालुमूल या टानसिल खूब बड़ा हो जाता है। भीतर पीब होकर भी यदि टानसिल जल्दी अच्छा न हो जाये, या न फटे इस तरहकी अवस्था हो जाये—कोनियम फायदा करेगा। हिपरमें—टानसिल खूब बड़ा हो जाता है; परन्तु उसमें गलेमें मछलीका काँटा अटक कर गड़नेकी तरह तकलीफ होती है। बैराइटा-कार्ब, बैराइटा-आयोड, आयोडम, काष्टोलेका प्रभृति दवाएं भी इसकी उत्तम औषधियाँ हैं। फेरेरिया-आयोड—यह बैराइटाके ही सदृश है। तालुमूल (टानसिल) फूलनेपर, टानसिलके भीतर, यदि घावकी तरह बीच बीचमें छेद दिखाई दे, तो कोनियम—सबसे ज्यादा फायदा करता है। (लैकेसिस देखिये)।

गाँठोंकी सूजन—गाल—गला फूलना, यह सूजन अगर पत्थरकी तरह कड़ी हो और उसमें टपक मारनेकी तरह दर्द रहे—कोनियमसे फायदा होगा। यदि यह चोट लगकर अथवा कुचलकर हो तो फिर सोचनेकी कोई बात नहीं है—कोनियम ही इसकी एक मात्र दवा है। मेमेरिक ग्लैण्डका बढ़ना, उदरमें अर्बुद, स्तनमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द, इसमें भी कोनियम फायदा करता है।

जननेन्द्रियकी बीमारी—लिङ्गकी कमजोरी, रोगीको स्त्री-सहवासकी इच्छा बहुत होती है, पर ताकत बिलकुल

ही नहीं रहती। स्त्रीको देखने, आलिङ्गन करने, यहाँतक कि मनमें सोचनेपर भी आप ही आप वीर्य निकल जाता है, लिङ्गमें भरपूर कड़ापन भी नहीं आता। यदि बहुत कुछ चेष्टा करनेपर कुछ आता भी है तो आलिङ्गन करनेके समय ही शिथिल हो जाता है और इसके बाद कमजोरी और मानसिक कष्ट पैदा हो जाता है, रोगी को धीरे धीरे एक तरहका मानसिक रोग हो जाता है। स्त्रियोंके बहुत अधिक कामोपचारके कारण अथवा एकदम ही पुरुष सग न होनेके कारण (कौमार्य व्रतकी वजहसे) इस तरहकी मानसिक बीमारी हो जाये, डिम्बकोषकी बीमारी (Ovaritis), डिम्बकोष का बढ़ना, डिम्बकोषका कड़ापन, डिम्बकोषमे दर्द, जरायु-मुख (os) और जरायु-ग्रीवा (cervix) कड़ी, दर्द भरा बाधकका दर्द, पूरा पूरा गर्भ न ठहरना प्रभृतिमें भी लाभदायक है।

पेशाबकी बीमारी—पेशाब रुक रुक कर निकलता है, मानो मूत्राशयका पक्षाघात हो गया है। वृद्धोंकी मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि (पुरुषोंके मूत्राशयकी ग्रीवामे यह ग्रन्थि रहती है) बढ़नेके कारण इसी तरहसे पेशाब निकलता है—इस अवस्था में—कोनियम सबसे ज्यादा फायदा करता है।

स्त्री-रोग—ऋतु ठीक समय पर न होकर देरसे होता है, परिमाणमे बहुत ज्यादा होता है। २।१ दिन रहकर ही बन्द हो जाता है। स्तन—कड़ा हो जाता है, या दर्द होने लगता है या सिकुड़ जाता है, जरायुका तन्तुमय अर्बुद (फाइब्रायड ट्यूमर)

जरायु-ग्रीवा (सरविक्स) कड़ी, डिम्बकोषमें डंक मारनेकी तरह दर्द, काम प्रवृत्तिका लोप प्रभृति बीमारियोंके लक्षणोंमें—कोनियम फायदा करता है। प्रदर—ऋतुके आठ दस दिन बाद ही स्राव आरम्भ हो जाता है। स्राव कभी खून-मिला, कभी दूधकी तरह सफ़ेद, गाढा, बीच बीचमें बन्द हो जाता है और फिर होने लगता है। जिस जगह स्राव लगता है, वहाँकी खाल उधड़ जाती है। ऋतुस्राव आरम्भ होनेके पहले शरीरपर एक तरह का उद्भेद निकलता है।

खाँसी—एक तरहकी सूखी खाँसी (Hacking cough) जिसमें खाँसते खाँसते दम अटक जाता है। रातमें सोनेपर खाँसी बढ़ जाती है, स्वरयन्त्रकी उत्तेजना (Irritation of larynx) मानो स्वरयन्त्रसे खाँसी आती है, गला सूखा, रोगी बलगम न निकाल फेंक सकनेकी वजहसे निगल जाता है ; इन सब लक्षणों में—कोनियम लाभदायक है। हायोसियामसमें—सोनेपर खाँसी बढ़ना और सूखी खाँसी आती है , पर इसमें स्वरयन्त्रमें उत्तेजना नहीं रहती। कोनियममें—कभी कभी दिनमें बिल्कुल ही खाँसी नहीं रहती ; पर शामको और रातमें मानो कहींसे उड़कर खाँसी आ पहुँचती है।

पसीना—रोगीको ज़रा-सी भी तन्द्रा आनेपर या नींद आनेपर पसीना होता है। इस लक्षणपर निर्भर रहकर बहुत-सी कठिन कठिन बीमारियाँ भी इससे आराम होती हैं। (डा० लिलि)

वृद्धि (aggravation)—रातमें, सोनेपर, करवट बदलनेपर, उठ बैठनेपर, ऋतुस्रावके पहले और समय।

बादकी दवा (follows well)—आर्निका, आर्स, बेल, कैल्के, लाइको, नक्स, फास, पल्स, रस, सल्फ।

सम्बन्ध—चोटमें यह आर्निका और रसटक्सके और कैन्सरमें आर्सेनिक और हस्टिरियसके सदृश है, गाँठोंकी सूजनमें—कैल्केरिया और सोरिनमके सदृश है, स्तनका अर्बुद और कर्कट आदि प्राणघातक बीमारियोंमें कोनियमके बाद—सोरिनम बहुत ज्यादा फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—काफि, डलका, पसि-नाई, आइद्रि-स्पिरिडल।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—५० दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति। इसकी उच्च शक्ति, निम्न-शक्तिकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करती है। फारमुला—२

कानूवेलेरिया मेजेलिस।

(CONVALLARIA MAJALIS)

चारों ओरसे पहाड़से घिरे तालाबमें पैदा हुए एक तरहके कमलकी जातिका फूल होता है, इसको लिली आफ दि वैली कहते हैं। हृत्पिण्डके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। विषकी मात्रामें

सेवन करनेपर—हृत्पिण्डकी क्रियामें गडबड़ी, वमन और हिमांग पैदा हो जाता है। थोड़ी सूक्ष्म मात्रामें—नाडीकी बढ़ी हुई तेज गति घट जाती है, पेशावका परिमाण बढ़ जाता है, फेफड़ेकी कमजोरी दूर होकर समूचे श्वासयन्त्रकी क्रिया बढ़ जाती है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—डिजिटेलिस अध्याय देखिये।

पेशावकी बीमारी—मूत्राशयके भीतर एक तरहका दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो मूत्राशय (bladder) फूल उठा है। रोगी बार बार और जल्दी जल्दी पेशाब करता है। पेशाबमें खराब बदबू रहती है, थोड़ा पेशाब। रोगीपर सूजन आ जाती है, सो नहीं सकता।

स्त्री-रोग—जरायुमें तेज दर्द, इसी वजहसे जोर जोरसे कलेजा धड़कना, कलेजेमें धड़कन होती है। योनि और पेशावकी नलीमें सुरसुराहट होती है। खुजलाता है।

सदृश—डिजिटेलिस, क्रेटिगस, लिलियम प्रभृति।

वृद्धि (aggravation)—घरके भीतरकी गरमीसे।

ह्रास (amelioration)—ठण्डी हवामें।

क्रम—१—३ री शक्ति। फारमुला—३, अमेरिकन १

कोपेवा आफिसिनैलिस ।

(COPAIVA OFFICINALIS)

एलोपैथिक चिकित्सामें इसका अधिक व्यवहार होता है। साधारणतः मूत्रयन्त्रकी, मूत्राशयकी और श्वासयंत्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर ही इसकी क्रिया होती है। मूत्रयन्त्र और मूत्रनलीपर क्रिया होनेके कारण इससे सूजाकके नये प्रदाहके लक्षण सब पैदा हो जाते हैं। इसीलिये, प्रमेह रोगकी पहली अवस्थामें—जब पेशाब करनेके समय बहुत जलन, बार बार पेशाब लगना, दर्दके साथ बूँद बूँद पेशाब निकलना, पीवकी तरह सफेद और पतला मवाद आना इत्यादि लक्षण रहते हैं, उस समय और प्रदाह धीरे धीरे मूत्राशयतक जाकर जब पेशाबके साथ गोंदकी तरह लसदार श्लेष्मा और खून निकलता है, पेशाब गदला दिखाई देता है, उस समय भी इससे फायदा होता है। सूजाककी बीमारीमें कोपेवाके लक्षण बहुत कुछ कैन्थरिसकी तरहके हैं।

श्वासयंत्रकी बीमारी—वह ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, थाइसिस—चाहे जो हो, जब—खाँसीके साथ ज्यादा मात्रामें पीव की तरह सफेद रगका बलगम निकलता हो, बलगममें बहुत बदबू, कभी कभी रग हरा, खासनेके पहले गलेमें सुरसुराहट होती हो, उस समय कोपेवाके प्रयोगसे फायदा होगा।

ये दोनों ही अलग अलग बीमारियाँ हैं, एक तरहका चर्म

रोग—जिसमें शरीरपर आमवात या आमवातकी तरह छोटे छोटे दाने तथा, मसूरकी दालकी तरह उद्भेद निकलते हैं, उसमें भी कोपेवा फायदा करता है। बच्चोंका पुराना आमवात।

सदृश—कैन्थर, कैनाबिस, चूचु, एपिस, एरिजिरन प्रभृति।

क्रिया-नाशक (antidote)—बेलेडोना, मर्क-सोल।

क्रम—१ म, ३ री, ६ ठी शक्ति। फारमुला—६ वीं।

कोरैलियम रूब्रम।

(CORALLIUM RUBRUM)

(लाल मूंगा) पाठक ; शायद आपलोगोंने देखा होगा कि पहलेके जमानेकी स्त्रियाँ छोटे छोटे बच्चोंकी कमरमें एक अंजला—देकर करधनीके साथ और गलेमें दो एक लाल मूंगे पहना दिया करती थीं। नतीजा यह होता था, कि तलपेटमें तांबा रहनेकी वजहसे हैजाके आक्रमणसे और छातीपर मूंगा रहनेके कारण घुड़की, हुप-खांसी प्रभृतिके हमलेसे बहुतसे बच्चे बचे रहते थे। दुःखकी बात है, कि आजकलकी गृहणियाँ ये सब बात अब बिल्कुल ही भूल गयी हैं। कोरालियमके चर्म-रोग—पहले लाल, इसके बाद काले रंगके लाल, इसके बाद तांबेके रंगके हो जाते हैं। हाथ और पैरके तलवेमें फफोला।

कोरैलियम—एक तरहकी आक्षेपिक सामयिक खांसीमें और

हूप-खाँसीमें, जहाँ—रह रहकर खाँसीका तेज दौरा होता है, बच्चे का चेहरा नीला हो जाता है, जो खाता पीता है, सभी वमन हो जाता है, वमनके साथ कडा डोरीकी तरह श्लेष्मा निकलता है, नाक मुँह या फुसफुससे रक्त निकलता है उस समय इसका प्रयोग करे। (इस खाँसीके अधिक विवरणके लिये, परालिया और ड्रोसेरा अध्यायमें हुपिङ्ग खाँसी पढिये।)

गर्मीका जखम—कोमल-क्षत उपदंश तथा गर्मीका जखम लाल रंगका और उसमें ऐसा दर्द हो कि छूना सहन नहीं होता—कोरैलियमसे फायदा होगा।

सदृश—ड्रोसेरा, बेलेडोना, मिफाइटिस प्रभृति।

क्रम—२—३० शक्ति। फारमुला—७।

कार्णस सार्सिनेटा।

(CORNUS CIRCINATA)

(एक तरहके छोटे गाछकी छालसे टिंचर तैयार होता है)—

यकृतके पुराने प्रदाहके साथ कामला हो जाना, पित्त-मिले दस्त और आमाशय, इसके साथ ही मलद्वारमें जलन, मुँहका घाव, पुराना मैलेरिया ज्वर, बढ़ी हुई प्लीहा प्रभृति कई रोगोंमें इसका हमेशा व्यवहार होता है। कार्णसका रोगी शारीरिक और

मानसिक बहुत कमजोर रहता है और बराबर सोया रहना चाहता है।

अतिसार—मल पतला, मलका रंग काला, पित्त-मिला, बहुत बदबूदार पाखाना होना, खाना खतम होते ही पाखाना लग आना, मलद्वारमें जलन, रोगीका चेहरा पीला दिखाई देना। सवेरे बिछावनसे उठते ही पाखाना लग आता है।

चर्म-रोग—दूध पीनेवाले बच्चोंके मुँहका जखम, इसके साथ ही मुँहमें पानी-भरे छालोंकी तरह दाने या अकौता, समूचा शरीर गरम हो जाता है, खुजलाता है, जलन होती है।

मुँहका जखम—पैरेग्राफ पहला अध्याय देखिये।

ज्वर—पुराना (Chronic) मैलेरिया ज्वर, रोगीका चेहरा पीला दिखाई देता है, प्लीहा खूब बड़ी, इसके साथ ही पतले दस्त आना, आमाशय रहनेपर भी कार्बोस फायदा करता है। कामला—चेहरा पीला हो जाता है, कभी कभी इसके साथ ज्वर भी रहता है।

कार्बोस-ग्रेफिका—इस नामकी दवा भी पुराने मैलेरिया ज्वर में फायदेमन्द है। इसके लक्षण—ज्वरका आनेके पहले और उत्तापावस्थामें आरम्भ होनेपर रोगीको बहुत नींद आने लगती है, नींदसे कातर हो जाता है, सिहरापन (जाड़ा) मालूम होता है, गरम रहना चाहता है, कमजोर करनेवाला बहुत अधिक पसीना होता है; जिस समय ज्वर नहीं रहता अर्थात विज्वरावस्थामें

बहुत कमजोरी आ जाती है (नक्स-वोमिकामें—शीतावस्था अर्थात जाड़ा बीतकर जब ताप चढ़ना शुरू होता है, उसी समय रोगी सो जाता है। इसमें बोखार चढ़नेके पहले नींद आनेका भाव नहीं है।)

कार्यास-फ्लोरिडाके रोगीमें भी पेटकी गड़बड़ी, बदहजमी, अम्लकी बीमारी, कलेजेमें जलन, बहुत कमजोरी प्रभृति लक्षण रहते हैं (अम्लकी बीमारीकी वजहसे कलेजेमे जलन, दाँत खट्टे हो जाना प्रभृति लक्षणोंमें—एसिड-सल्फ और रोबिनिया बढ़िया दवा है)।

दोनों हाथोंके स्नायुशूलके दर्दमें, इसका लक्षण है—रोगी लगातार हाथ दबाया करता है या किसीको दबानेके लिये कहता है, कलेजा तथा दूसरे दूसरे अंग-प्रत्यंगके दर्दमें ऐसा समझता है, मानो हड्डी टूट गयी है। इसमे भी कार्यास-फ्लोरिडा लाभदायक है।

क्रम—φ—६ शक्ति। फारमुला—३।

क्रैटिगस अक्साइकैन्था।

(CRATÆGUS OXYACANTHA)

(एक तरहके ताजे पके फलसे टिंचर तैयार होता है)—शिकागोके प्रसिद्ध डाक्टर काउपरथायेटके संकेतके अनुसार सन् १९०० ईस्वीमें, १४ परीक्षकोंने इसके मूल अर्कका सेवन किया।

उनमें एक मनुष्यने ५ बूँदसे आरम्भकर १७५ बूँदतक सेवन किया था। आश्चर्यका विषय है, कि उनमेंसे सबने एक ही तरहकी बात बतायी अर्थात सबने यही कहा कि इससे जुलाबकी क्रियाके सिवा और किसी भी तरहका शारीरिक या मानसिक परिवर्त्तन न मालूम हुआ। जो हो, अन्तमें एक चिकित्सकने स्वयं उसकी परीक्षा की और उससे उसके हृत्पिण्डपर रोगका अधिक आक्रमण हुआ। कहना वृथा है, कि उसी समयसे हृत्पिण्डकी प्रायः सभी बीमारियोंमें—क्रेटेगस एक निर्दोष हार्ट टानिकके रूपमें व्यवहार किया जाता है। बहुत अधिक ब्लड प्रेशरमें भी इससे फायदा होता है। एञ्जाइना-पेक्टोरिस, हृत्शूलकी बीमारीकी तो कोई कोई इसे खास दवा कहते हैं (हृत्पिण्डकी वजहसे शोथमें—आर्सि-डेग्लन, डिजि।)

हृत्पिण्डकी बीमारीमें हमलोग जिन जिन लक्षण या उपसर्गोंमें इसका व्यवहार करते हैं। वह डिजिटेलिसके अध्यायमें दिया गया है—देखिये।

क्रम—θ, १५ से १० बूँद तक। फारमुला—२।

क्रोकस सैटाइवा।

(CROCUS SATIVA)

(केशर या जाफरानसे इसका टिंचर तैयार होता है)—इसके प्रधान लक्षण—१। गाढ़ा रसदार, काले रंगका थक्का थक्का रक्त,

खून निकलनेवाली जगहसे खून—काले सूतकी तरह लम्बा होकर झूलता रहता है, २। सर-दर्द—ऋतु बन्द होनेकी उमरके समय, ऋतुके समय, समयपर होनेवाले ऋतुस्रावके तीन दिन पहलेसे और ऋतुके बाद, ३। नाकसे काले रंगका लसदार गोंद की तरह रक्त, सूतकी तरह लम्बा होकर निकलता है, इसके साथ ही कपालमें पसीना, ४। बाधकके दर्दमें—काला, थक्का थक्का, सूत या तारकी तरह (stringy) स्राव, ५। जरायु, पाकस्थली, पेट, हाथ, पैर या शरीरके किसी दूसरे स्थानमें मानो कोई जीवित चीज घूम रही है, इस तरहका अनुभव होना (थूजा, सल्फ), इसके साथ ही मिचली और मूर्च्छाका भाव, ६। हिस्टीरिया और ताण्डव रोग (Chorea) मे—बहुत अधिक आनन्द, नाचता है, गाता है। कभी क्रोध और कभी दुख, ये ही इसके चरित्रगत लक्षण हैं।

रक्तस्राव—नाक-मुँह, जरायु, मूत्रद्वार, मलद्वार इत्यादि किसी भी स्थानसे यदि खून निकलकर जम जाये या खूब काले रंगका गाढा रक्त—सूत या तारकी तरह लम्बा होकर निकला करे—क्रोकससे फायदा होगा। क्रोकसका रक्त थक्का थक्का, जमा और लसदार रहता है और उस रक्तको खींचनेपर सूतकी तरह लम्बा हो जाता है और खून निकलनेके साथ ही जमने लगता है। बाधक, रक्तप्रदर इत्यादि स्त्रियोंकी बहुत-सी बीमारियोंमें ऊपर बताये ढगके रक्तस्रावके साथ पेटमें मानो गोल जिन्दा चीज घूम रही है। क्रोकसका एक यह भी विशेष लक्षण भी साथ ही मौजूद रहे,

तुरन्त क्रोकसका व्यवहार करना चाहिये। स्त्रियोंकी गर्भावस्था
में भ्रूण (fœtus) हिलने डोलनेकी वजहसे बहुत तकलीफ
। रहनेपर क्रोकससे यह तकलीफ आराम हो जाती है। गर्भवती
के अलावा अगर किसी दूसरी स्त्रीके वक्षस्थलमें, आँतमें, पाक-
लीमें, जरायुमें ऐसा अनुभव हो कि एक जन्तु या केचुआ घूम
। है तो यह भी क्रोकससे दूर हो जायगा। रक्तस्रावकी दूसरी
री बातोंके लिये—हैमामेलिस अध्याय पढ़िये।

सर-दर्द—ऋतु बन्द हो जानेकी उमरमें, ऋतुस्राव होने
समय, ऋतुस्रावके पहले, समय और बाद, कभी दाहिने, कभी
ये और कभी आँखके ऊपर भयानक दर्द होता है। रोगवाली
तहपर खून इकट्ठा हो जाता है, टपक हुआ करती है।

आँखकी बीमारी—पलकोंका आयविक दर्द, दर्द
सिमें माथेपर चला जाता है। चक्षुतारा बड़ा हो जाता है
दृष्टिहीनता—रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो वह धूआ या
हरके भीतर बैठा हुआ है, आँखके ऊपर मानो एक घूँघट पड़ा
। आँख मानो श्लेष्मासे भरी है, रोगी लगातार हाथसे निकाल
ानेकी चेष्टा करता रहता है। पढ़नेके समय आँखोंमें जलन
ती है, पानी निकलता है, पलक फड़का करती है। यह—
हिस्टीरिया ताण्डव रोग या किसी दूसरी बीमारीके कारण ही
हो—क्रोकस फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—उपवाससे, सवेरेके समय, रातमें,
अमावस्या और पूर्णिमाके दिन, गर्भावस्थामें, गरम हवामें।

ता (amelioration)—निर्मल वायु सेवन करनेपर, ार भोजनसे, उपवास तोडनेपर।

दकी दवा (follows well)—चायना, नक्स, पल्स, सल्फ।

म्बन्ध (complements)—प्राय सभी रोगोंमें ही क्रोकस नक्स, पल्स, सल्फ।

क्रया-नाशक (antidote)—पकोन, बेल, ओपि।

क्रयाका स्थितिकाल (duration)—८ दिन ;

म—६—२०० शक्ति। अगर शक्तिकृत दवासे फायदा न हो ते स्थानपर मदर-टिंचरसे ज्यादा फायदा होता।

ारमुला—४।

क्रोटेलस होरिडस।

(CROTALUS HORRIDUS)

अमेरिकामे एक तरहका विषैला साँप होता है, यह उसीका है। डा० हेरिङ्गने पहले पहल इस दवाकी परीक्षा की। साँपके ो तैयार हुई नाना प्रकारकी दवाएँ चिकित्सा शास्त्रमे प्रचलित हमलोग भी होमियोपैथीमे—लैकेसिस, कोब्रा, इलैप्स प्रभृति विषसे तैयार हुई दवाएँ बडे आदरसे व्यवहार किया करते हैं। सिस—शरीरके बायीं ओर और इलैप्स, क्रोटेलस—दाहिनी अधिक क्रिया प्रकट करते है क्रोटेलस शरीरके दूसरे दूसरे

यन्त्रोंपर भी क्रिया प्रकट करता है, तथापि यकृतपर इसकी सबसे अधिक क्रिया होती है,

शराबी, जिनकी ग्रन्थियाँ फूल जाया करती हैं, और पृष्ठ-व्रण आदि जिन्हें निकला करते हैं, तथा जिनकी धातु रक्तस्रावी है, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

सभी बीमारियोंकी क्षय (adynamic अवस्था (खासकर अगर रक्तस्राव होनेकी वजहसे हो), सेप्टिक अर्थात सडन—खूनके साथ मिलकर यह आँतोंमें जहरीली क्रिया प्रकटकर—टाइफायड, मेलेरिया और खून बिगडकर बीमारी, और उससे क्रमश एकदम निस्तेज हो जाना, बहुत दिनोंतक शराब पीनेकी वजहसे किसी सांघातिक बीमारीका आक्रमण पीत-ज्वर उसमे समूचा शरीर पीला पड जाना, प्राणघातक कामला (Malignant and hæmatogenous jaundice), सांघातिक यकृतकी बीमारी, काले रंगकी कै और दस्त, जरायुसे बहुत दिनोंतक रक्तस्रावका होना, डिपथीरिया, प्लेग इत्यादि कितनी ही तरहकी प्राणघातक बीमारियोंमें यह लाभदायक है।

यकृतकी बीमारी और कामला—मारात्मक कामला—समूची देह, आँख और पेशाबका रंग पीला हो जाता है। समूचा शरीर फूल उठता है, यकृतमें भयानक दर्द, इतना दर्द कि साँस खींचनेपर भी यकृतमें दर्द होता है। रोगकी ऐसी अवस्थामें क्रोटेलससे फायदा तो होता ही है, इसके अलावा यदि उसके साथ ही रक्तस्राव भी होता हो, तो फिर कोई बात ही नहीं

है। क्रोटेलससे अवश्य ही फायदा होगा। ऐसी अवस्थामें चेलिडोनियम इत्यादिसे भी फायदा न होगा।

वमन—पित्तका वमन, अगर रोगी दाहिनी करवट सोता है, तो हडबडाकर लगातार कै होती रहती है। पाकस्थलीमें जखम होकर रक्त-वमन और पीतज्वरमे काले रगकी कै होनेपर—क्रोटेलस फायदा करता है।

गैंग्रीन—व्रण, फोडे, कार्वङ्कल या किसी दूसरी तरहका ही घाव, जब सडने लगता है या जखमके किनारे कडे पड जाते हैं और काले या नीले रगके हो जाते है, सडने लगते है, रोगी बराबर निस्तेज और दुर्वल होता जाता है, उस समय—क्रोटेलस फायदा करता है। ६ ठीं से ३० वीं शक्ति—१।२।३ दिनके अन्तरसे एक एक मात्रा सेवन करनी चाहिये।

रक्तस्राव—शरीरके सभी स्थानोंके रक्तस्रावमें क्रोटेलस लाभदायक है। आँख, कान, नाक, दाँत, मसूढे, त्वचा, पेशाबकी नली, नखका निचला भाग प्रभृति स्थानोंसे रक्तस्राव होता रहे तो इसकी आवश्यकता होती है। क्रोटेलसमे—रक्त पतला, काला, खून जमता नहीं, थका नहीं बँधता। इलेप्स, रक्तमें थका बँधता है। इसके सभी स्राव काले अर्थात दावातकी स्याहीकी तरह काले रहते हैं। स्त्रियोंको बाधक और दो ऋतुओके बीचमे काले रगका रक्तस्राव होता है।

मस्तिष्क-मेरुमज्जा-प्रदाह—(सेरिब्रो- स्पाइनल मेनिनजाइटिस)—इस बीमारीके साथ विकार, नाकसे कालेरंगका खून गिरना, जीभ लाल और फूली, श्वास-प्रश्वासमें बदबू और बदबूदार खून निकलनेके लक्षणमें—क्रोटेलस महौषध है।

चेचक, छोटी माता—इस रोगके साथ जब शरीरके किसी भी द्वारसे या चेचककी गोटियोंमे खून जाता हो, उस समय क्रोटेलसका प्रयोग कर देखना उचित है। जो हो, इस तरहकी खून निकलनेवाली छोटी माता, चेचक, खासकर चेचककी बीमारी तो बहुत ही प्राणघातक होती है। इनमे प्राय जीवनकी आशा नहीं रह जाती (इस रोगके लिये वेरियोलिनम अध्याय देखिये)।

ज्वर—सांघातिक (malignant) एक प्रकारका मोह-ज्वर (टाइफस), सान्निपातिक ज्वर (टाइफायड), रेमिटेण्ट, पीत-ज्वर प्रभृति किसी भी तरहका ज्वर क्यो न हो, जब उनके अन्यान्य दुर्लक्षणोंके साथ पाकस्थली, मलद्वार, नाक, मुँहसे खूनका स्राव होता रहे, तो क्रोटेलसकी जरूरत पड़ेगी।

पाठक! आप लोगोंको इस तरहकी और कितनी बीमारियों का नाम ले लेकर बताया जाये, सच तो यह है, कि जभी किसी बीमारीके साथ खूनका स्राव होकर रोगीकी अवस्था बिगड़ी दिखाई दे, उसी समय इस दवाको एक बार प्रयोग करें। ऊपर इसके रक्तस्रावकी विशेषता बता दी गयी है। सभी रोगोंमें जब रोगीका स्वास्थ्य एकदम भग्न हो जाये, तब प्रायः क्रोटेलस प्रभृति

विष जातिकी दवाओंकी जरूरत पडती है। लैकेसिसमे—रोगी क्रोटेलसकी तरह या उसकी अपेक्षा भी अधिक बलहीन हो जाता है। डा० हेरिङ्ग कहते है—क्रोटेलसका रोगी—केम्फरकी बनिस्बत भी ज्यादा हिमांग और ठराडा हो जाता है। सारांश यह कि—खून जहरीला होकर जो सब बीमारियाँ होती हैं—उनमें क्रोटेलस फायदेमन्द होता है।

एचिनेशिया—पीब खूनके साथ मिल (पाइमिया) जानेपर खून जहरीला होकर सेप्टिक ज्वर और सूतिका (Puer peral fever), मियादी बोखार, विसर्प, शय्याक्षत, सडे घाव, सडन, एपेण्डिसाइटिस, कार्बङ्कल, मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह, विषैले जन्तु वा कीडे आदिका काटना, विषैले उद्भिद्का विष फैल जाना प्रभृतिमें एचिनेशिया खूब फायदा करता है। इसका खाने और लगाने दोनों तरहका ही प्रयोग होता है। इसके भी सभी स्राव जैसे मल, प्रसवके बादका स्राव, सांस प्रभृति सबमें ही बदबू रहती है। (बैप्टीशिया, सोरिनम, पाइरोजिन, एसिड-कार्बोल, एन्थ्रैक्स प्रभृति दवाओंका स्राव भी बदबूदार होता है।) टाइफायड ज्वरके साथ बहुत अधिक पतले दस्त आना, टीका लगवानेके दोषसे नाना प्रकारके उपसर्ग और सांघातिक डिफ्थीरियामें भी इसका व्यवहार होता है। सूखी तर खुजलीकी भी यह एक बढिया दवा है। पाइमिया-एब्सेस (एक तरहका विषैला बड़ा फोड़ा, यह एक ही बार शरीरके कितने ही स्थानोंमें होता है)—इसमें

इससे इतना ज्यादा फायदा होता है, कि नश्तर लगवानेकी बिलकुल ही जरूरत नहीं पड़ती। एलोपैथिक सर्जन सब देखकर चकित रह जाते हैं। हमलोग एचिनेशियाका मदर टिंचरसे—३x शक्ति ही हमेशा व्यवहार करते हैं। पारा और उपदंशकी वजहसे पैदा हुए चर्म रोगमें और दूसरे दूसरे बहुत तरहके नये और पुराने उपसर्गोंकी यह उत्कृष्ट दवा है। (मर्क्युरियस देखिये)

पाइरोजिनियम—पीब खूनके साथ मिलकर कोई प्राणघातक बीमारी हो जानेपर ऊपर बताये औषधोंकी तरह इस दवासे भी बहुत ज्यादा फायदा होता है। सूतिका-ज्वर, नश्तर लगवानेकी वजहसे ज्वर, दूषित भाफके कारण पैदा हुआ ज्वर, सड़े मास-मछली आदि खानेकी वजहसे ज्वर, डिफ्थीरिया, टाइफायड इत्यादि बहुत तरहके खून खराब होनेवाले ज्वरमें यह लाभ करता दिखाई देता है। पाइरोजिनियममें—आर्निका और बैप्टीशियाकी तरह समूचे शरीरमें दर्द, युपेटोरियमकी तरह हड्डियोंमें दर्द, और रसटक्सकी तरह हिलने डोलनेपर उत्तापमें तथा अनस्थिर भावसे रहनेपर घटना इत्यादि कितने ही लक्षण रहते हैं। फास्फोरसकी तरह पिया हुआ पानी पेटमें जाकर गरम होनेपर वमन, बहुत ही सड़ी बदबू-भरे दस्त, प्रसवके बाद स्राव (एक तरहका पीबकी तरहका पदार्थ), स्राव बन्द होकर सूतिका ज्वर होनेपर, इस दवासे बहुत अधिक फायदा होता है। टाइफायडमें—जब ताप—१०५ डिग्रीतक बढ़ता है और बैप्टीशिया प्रभृति दवाओंका लक्षण

पर भी उनसे फायदा नहीं होता, उस समय कोई कोई कहते हैं, कि पाइरोजिनियमका प्रयोग करनेपर २४ घण्टोंमें आश्चर्य-जनक लाभ दिखाई देता है। इसकी २०० से उच्चशक्ति ही अधिक लाभ करती है। (एसिटैनिलिडियम देखिये)।

वृद्धि (aggravation) सवेरे, सन्ध्यामें, शरीर हिलानेपर, परिश्रमसे, दाहिनी करवट लेटनेपर, वसन्त ऋतुमें।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे।

क्रियानाशक (antidote)—लैकेसिस।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—३—६ शक्ति। फारमुला—८।

क्रोटोन टिग्लियम।

(CROTON TIGLIUM)

(जमाल गोटा—सूखे बीजसे टिंचर तैयार होता है)—यह अतिसार, हैजा, सूखी खुजली तथा और भी कितने ही चर्मरोगोंमें फायदा करता है।—१। पीले रगका पानीकी तरह दस्त,—२। पिचकारीकी तरह वेगसे निकलता है और—३। दस्त, खाने पीने बाद ही बढ जाता है,—ये तीन लक्षण अतिसारमें—क्रोटनके सबसे प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं।

अतिसार—पीले रगका पानीकी तरह पतला मल यदि एकाएक पिचकारीकी तरह बडे वेगसे निकलता हो और यह दस्त कुछ भी खाने-पीनेपर खूब बढ जाता हो, दौडकर पाखाने जाना पडता हो, ऐसा होनेपर—क्रोटन उसकी अचूक दवा है (सवेरे नींद खुलते ही अगर दौडकर पाखाने जाना पडे—सल्फर, सोरिनम, रियुमेक्स)। क्रोटनके इन तीन लक्षणोंके साथ और भी कितनी ही दवाओंका सादृश्य है। प्रयोगके समय उनके प्रभेद और दूसरे दूसरे लक्षणोंपर दृष्टि रखे। पहले—क्रोटनमें पीले रगके पतले दस्त आते है,—यह एपिस, कैल्केरिया-फार्ब, चायना, ग्रेटियोला, नेट्रम-सल्फ और थूजा इत्यादि दवाओंमें भी है; दूसरे—जोरसे और पिचकारीकी तरह वेगसे निकलना—यह जेट्रोफा, ग्रेटियोला और पोडोफाइलम इत्यादि दवाओंमें भी है। तीसरे—कुछ खाने-पीनेपर बढना,—यह अर्जेण्ट-नाइट्रिकम और आर्सेनिकमे भी है, इसके अलावा बहुत ज्यादा परिमाणमे जोरसे पाख़ाना होना,—क्रोटनकी तरह, इलाटिरियम नामक दवामे भी है; पर इलाटिरियममें दस्त—हरे रगका और उसमें बहुत अधिक फेन भरा रहता है; क्रोटनका—दस्त पीले रंगका और फेनहीन होता है। क्रोटनमें—कभी कभी हरे रग का दस्त होता है पर यह हल्के हरे रगका रहता है।

ऊपर लिखे लक्षणोंके सिवा—क्रोटनके और भी दो एक लक्षण हमेशा याद रखे, पहले—पेटमें एकाएक एक तरहका मरोड़ (gripings) दर्द पैदा हो जाता है। इसमें जोरसे पाख़ाना लगता

है, रोगीको दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है, पाखाना हो जाने बाद उसको आराम मालूम होता है। आँतोंके भीतर (पेटकी नस-नाड़ियोंको—आँत कहते हैं) कलकल, गड़गड़ (gurgling and washing) की तरह एक तरहकी आवाज होती है, ऐसा मालूम होता है, मानो आँतें पानीसे भर रही हैं, पानीके सिवा उसमें और कुछ भी नहीं है।

हैजा—इस बीमारीमें भी अतिसारके ये सभी लक्षण ग्रहण करने होंगे। नीचे देखिये कि क्रोटोनके साथ अन्यान्य दवाओं में क्या प्रभेद है —

इलाटिरियम—दस्तका परिमाण खूब ज्यादा, पानीकी तरह पतला, रंग—फीका हरा, उसमें फेन मिला, फेन इतना अधिक रहता है, कि मलद्वारमें लगा रहता है। दस्त बड़े जोरसे निकलता है और दस्त होनेके पहले पेटमें पेठन या छुरीसे काटनेकी तरह दर्द रहा करता है। इसकी एक दूसरी विशेषता यह है, कि रोगीको हमेशा जम्हाई आया करती है और उसे बहुत जाड़ा मालूम होता है, तथा उसे ज्वर मालूम होता है। इसमें वमनका भाव ज्यादा नहीं रहता।

क्रोटोन—इलाटिरियमकी तरह पानीकी भाँति दस्त, वह परिमाणमें बहुत अधिक और बड़े वेगसे निकलता है। पर क्रोटोनके दस्तका रंग गहरा पीला या हलका पीला, कभी कभी पीले रंगके साथ हरा रंग भी मिला रहता है। पर ठीक हरा नहीं होता।

पाखाना होनेके पहले पेटमें दर्द नहीं रहता (कभी कभी पेटमें शूलकी तरह दर्द रहता है, पर गरम पानी पीनेपर यह बन्द हो जाता है), खाने-पीने बाद दस्त-कै बढ जाती है (इलाटिरियम में—ऐसा नहीं होता और उसमें वमन भी नहीं होता)। क्योंकि हैजामें—क्रोटोन ज्यादा फायदा करता है। क्रोटोनमें—वमन है। वमन कुछ थोड़ा पीला या सफेद, या गुलगुल भरा और अजीर्ण पदार्थ मिला रहता है। इसमें मिचली भी रहती है।

ग्रैटियोला—३x—३, इसका लक्षण बहुत कुछ क्रोटोनकी तरह ही है। अगर गरमीके दिनोंमें बहुत ज्यादा पानी पीनेके कारण बीमारी पैदा हुई हो—ग्रैटियोला, क्रोटोनकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। ग्रैटियोलाके दस्तका रंग पीला, पानीकी तरह पतला, परिमाणमें बहुत ज्यादा और बड़े वेगसे निकलता है, पेटमें प्राय दर्द नहीं रहता और ऐसा मालूम होता है, कि पेटके भीतर मानो ठण्डक है।

जैट्रोफा—३x, ३; दस्तका परिमाण एक एक बार एक एक गमला, इसमें परिमाणमें जितना ज्यादा दस्त आता है, उतना शायद और किसी भी दवामें आता नहीं दिखाई देता। दस्त चावल के धोवनकी तरह, भातके फेनकी तरह सफेद या पीला, उसके ऊपर—होमियोपैथिक ग्लोब्यूल्स, साबूदाना या फलोंकी तरह एक तरहका पदार्थ तैरता रहता है; वमन—चावलके धोए पानी या अण्डेकी स्तरकी तरह, तेज प्यास। परन्तु पानी पीतेही जी मिचलाया करता है, पैरकी पोटलीमें ऐंठन होती है और यहां एक

ढेलेकी तरह वन जाता है। शरीर ठण्डा हो जाता है। इसमें दस्त के प्राय एक साथ ही होते हैं, कै बहुत सरलता-पूर्वक हो जाती है, और रोगी बहुत कमजोर हो पडता है। जैट्रोफा—हैजाकी पहली अवस्थामें और हिमाग होनेके पहले काममे आता है। हिमाङ्ग होनेपर फिर इसकी जरूरत नहीं पडती, अतिसार हो या हैज़ा, इस दवाका प्रयोग करनेके लिये एक दूसरे विशेष लक्षणपर भी खयाल रखे—दस्त आनेके पहले पेटके भीतर गडगड, कलकल, भक भक आवाज होती है (एक पानी भरे बोतल से पानी गिरानेपर जिस तरहकी आवाज होती है, ठीक उसी तरह की आवाज होती है), पेटकी आवाज रुकते ही पाखाना लग आता है और हडहडाकर दस्त आते हैं। रोगी कुछ देरतक राह देखता है, फिर दस्त आते हैं और फिर पहलेकी तरह ही दस्त आते हैं, पेटमें दर्द नहीं रहता। थूजामें—पाखाना होनेके पहले गडगड भक-भककर आवाज होती है (बोतलका मुँह—bung-hole—इसमें उसी तरहकी आवाज होती है, बोतलके मुँहसे पानी ढालनेके आवाजकी तरह आवाज नहीं होती है)। इसमें इस ढगकी आवाज मल निकलनेके समय मलद्वारके मुँहपर होती है, जेट्रोफा की तरह पेटके भीतर नहीं।

युफोर्बिया-कोरोलेटा—३, ६,—इसके अधिकांश लक्षण ही जेट्रोफाकी तरह रहते हैं, पर इसमे समूचा शरीर ठण्डे पसीनेसे भर जाता है (वेरेट्रममे—कपालमें ही ठण्डा पसीना अधिक होता है)।

चर्म-रोग—जिनके पेटमें गडबडी घनी रहती है, उनके चर्म-रोगमें क्रोटोन फायदा करता है। इरिथिमा (Erythema) नामक चर्म-रोगमें——क्रोटोन विशेष फायदा करता है। क्रोटोन में—पहले छालेकी तरह दाने निकलते हैं, इसके बाद वे पकते हैं और पीब हो जाता है। डा० डियारवरन कहते हैं—इसकी जलन और खुजली पानीसे धोने या ठण्डी हवा लगनेपर बढती है। क्रोटोन—मुँहके, लिङ्गके और अण्डकोषके एकजिमामें कितनी ही बार बहुत फायदा करता है, रोगवाली जगहपर बहुत खुजलाहट होती है। क्रोटोनके—चर्म-रोगमें—बहुत खुजली रहती है, पर दर्द इतना रहता है, कि खुजला नहीं सकता ; जरा हाथ फेरनेसे भी दर्द बढ जाता है, समूचे शरीरपर बदौरे निकल आते हैं।

खाँसी—तकियेपर सर रखते ही आक्षेपिक खाँसी आना, खाँसते खाँसते दम अटक जानेकी तरह हो जाता है। जल्दी जल्दी उठ बैठना है और कमरेमें घूमता है, कुर्सीपर बैठा बैठा सोता है।

पेशाबकी बीमारी—रातके पेशाबमें फेन रहता है। रंग नारंगीकी तरह, पेशाब रख छोड़नेपर गदला हो जाता है। उसके ऊपर चर्बीके टुकड़ोंकी तरह सफेद पदार्थ तैरता है, दिनके समयका पेशाब मैला और उसमें जो तली जमती है, वह सफेद बुकनीकी तरह होती है।

वृद्धि (aggravation)—गरमीके दिनोंमें, फल और मिष्टान्न भोजनसे, दस्त और कै—खाने-पीने बाद।

ह्रास (amelioration)—नींद लगनेपर।

बादकी दवा (follows well)—रसटक्स।

सम्बन्ध—क्योंकि पुराने अतिसारमे यह कैलि-ब्रोम और फास्फोरसके समान है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एनाकार्ड, एण्टिम-टार्ट, क्रिमे रस, रैनान-बल्वो।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—६, २०० शक्ति। फारमुला—G टिं—४, विचूर्ण—७, A टिं०—६ वी, विचूर्ण—८।

क्यूबेबा आफिसिनेलिस।

(CUBEBA OFFICINALIS)

(कवाबचीनी)—मूत्र-पथकी श्लैष्मिक-झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और सूजाक, मूत्रनली-प्रदाह, मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थि-प्रदाह, रक्तमूत्र (हिमाचूरिया), मसानेका प्रदाह (सिस्टाइटिस) वगैरह कई बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है। मूत्रनली-प्रदाहकी बीमारीमें—पेशाव हो जाने बाद काटने-तोड़नेकी तरह दर्द, पेशावके साथ श्लेष्मा निकलना और सूजाककी बीमारी में—जब पहली अवस्थाका प्रदाहका भाग घटकर सिर्फ पेशावके अन्तिम भागमे जलन रहती है (सार्स), गाढ़ा पीले रंगका पीबकी

तरह स्राव निकलता है, उस समय इससे ज्यादा फायदा होता है। हाइड्रैस्टिस, पल्सेटिला प्रभृति दवाओंमें भी ये लक्षण रहनेपर शायद क्यूबेवासे ही ज्यादा फायदा होगा।

मैंने प्रमेह रोगकी दूसरी अवस्थामें इन लक्षणोंमें—हाइड्रैस्टिस २x,—३x शक्तिका दो तीन सप्ताह व्यवहार कराकर बहुतसे रोगियोंको आरोग्य किया है। हाइड्रैस्टिसके स्रावका रंग पीला रहता है। क्यूबेबा—सूजाक रोगकी ग्लीटवाली अवस्थामें अर्थात जिस समय मवाद ज्यादा नहीं आता, सिर्फ मूत्रद्वारपर पीब लगा रहता है। उस समय फायदा करता है।

सदृश—कैन्थर, कैनाबिस, कैप्सिकम।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—४।

कूप्रम मेटालिकम।

(CUPRUM METALLICUM)

(ताँबा-धातु)—पचानेवाले यन्त्र, यकृत, मस्ताना, सेरिब्रो-स्पाइनल सिस्टम, न्यूमोगैस्ट्रिक-नर्व, रक्तसंचालन करनेवाले यन्त्रोंपर इसकी क्रिया प्रकट होती है। इसीलिये यह गैस्ट्रो-एण्टराइटिस, (पाकाशय अंत्रादिका प्रदाह) कामला, अलबुमेन-मिला पेशाब, अकड़न, ऐंठन, टङ्कार, वमन और थर्मोमोटोर-पैरालिसिस इत्यादि बीमारियाँ उत्पन्न करता है। जो सब आदमी ताँबेकी

खानमें काम करते हैं, इसी वजहसे मालूम होता है कि उन्हें हैजाकी बीमारी नहीं होती। जिस समय हैजा फैला हो, उस समय खाली पेट न रहने, एक ४ इंच लम्बा और ४ इंच चौडा शुद्ध ताम्बेका पत्तर, नाभीपर लगाये रखने और ऊनी मोजेमें गन्धकका चूर डालकर मोजा पहननेपर और बीच बीचमें कूप्रम ३० शक्ति सेवन करनेपर भयानक हैजाकी बीमारीसे भी छुटकारा मिल सकता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। चर्म-रोगमें पैरकी पोटली और पेटमें ज्यादा ऐंठन रहना, २। चर्म-रोगमें—उद्भेद बैठकर अकडन, वमन, आक्षेप, मस्तिष्कमें विकारके लक्षण आदि, ३। टकारमें—मुँहका नीला हो जाना, अंगूठा भीतरकी ओर मुडा रहता है। ४। थोडी देरतक ठहरनेवाली अकडन—हाथ-पैरकी अंगुलियोंसे खींचन आरम्भ होकर समूचे शरीरमें फैल जाती है। गर्भावस्थामें अकडन, प्रसवके समय आक्षेप या खींचन, ५। जीभका पक्षाघात और इसी वजहसे साफ साफ बोल न सकना, ६। पानी पीनेके समय तरल पदार्थोंका गडगड करते हुए नीचे उतरना, ७। खाँसनेके समय बोतलसे पानी ढालनेकी तरह गडगड आवाज, ठण्डा पानी पीनेपर खाँसीका घटना, ८। हूपिंङ्ग खाँसी—खाँसी का दौरा बहुत देरतक बना रहता है, सांस रुक जानेकी तरह हो जाता है, चेहरा नीला हो जाता है, अंग-प्रत्यंग कडे और अकडे रहते हैं, रोगी बोल नहीं सकता, बेहोशकी तरह पडा रहता है,

होशमें आनेपर ही कै होने लगती है, ९। नकली प्रसवका दर्द, १०। मृगी घुटनेसे सुरसुरी (Aura) आरम्भ होकर ऊपर चढती है। सोयी हुई अवस्थामें फिट (ब्यूफो), ११। मुँहमें किसी धातु का, ताँबेका या मीठा स्वाद, मुँहसे लार गिरना।

खाँसी—साधारण खाँसी नहीं—हूपिङ्ग खाँसी या आक्षेपिक खाँसी (Hacking cough), खाँसी बहुत देरतक बनी रहती है, रोगीकी साँस मानो रुक जाती है, बोलनेकी शक्ति नहीं रहती, इसके साथ ही चेहरा नीला और शरीर काठकी तरह कड़ा हो जाता है, रोगी हाथ-पैर खींचा करता है। कभी कभी बेहोशकी तरह हो जाता है) वमन होता है, इस तरहकी खाँसीमें—कुप्रम फायदा करता है। बेलेडोना—इसकी खाँसी इस तरहकी आक्षेपिक होनेपर भी खाँसनेके समय चेहरा लाल रङ्गका हो जाता है, नीला नहीं होता (बरालिया अध्याय देखिये)।

हूपिङ्गकफ—वक्षका बहुत अधिक सङ्कोचन भाव, खूब जल्दी जल्दी खाँसी आती है, वमन हो जाता है, खाँसनेके समय गलेमें साँय साँय घर घर आवाज होती है; पर बलगम नहीं निकलता। इसमें हूपिङ्गकफके बाद आर्सेनिककी ज़रूरत होती है, पर अवश्य रातमें रोग बढ़ जाता है, शरीरमें दाह, प्यास इत्यादि आर्सेनिकके लक्षण रहना ही चाहिये। इसमें—छातीमें सर्दी भरी रहनेका भाव और खाँसनेके समय चेहरा नीला हो जाता है। ऐसे लक्षणों में—कुप्रम लाभदायक है।

टंकार—बच्चोंकी इस बीमारीमें जब यह देखें, कि बच्चा अकडनके समय हाथकी अगुली, खासकर अगूठा मुट्ठीमें दवा लेता है (हेलिबोरस) और खींचता है और उसी समय चेहरा नीला हो जाता है। कुछ पीनेपर गलेमें कलकल, गडगड शब्द होता है, उस समय—कूप्रम फायदा है। डा० ह्यिुजेस—कहते हैं—क्रिमि की वजहसे अकडन, मूत्रविकारके कारण अकडन, नयी प्रसूताकी अकडन, कोई भी अकडन क्यों न हो, यदि खींचन हाथ या पैरके अगूठेसे आरम्भ हो, तो कूप्रम—अव्यर्थ दवा है। यह देखनेमे आता है, कि अकडनका नाम सुनते ही बहुतसे चिकित्सक पहले बेलेडोनाका प्रयोग करते है, इस बेलेडोना और कूप्रमके अलावा—ओपियम, इग्नेशिया, साइक्यूटा, ग्लोनोयिन, कैमोमिला इत्यादि दवाएँ भी लाभकारी है। हमेशा उनके लक्षणोपर ध्यान रखें।

बेलेडोना—चेहरा लाल हो जाता है, (नीला-कूप्रम), शरीरमें पसीना, आँखें मानो तनीं हुई और मिटमिटाया करती है, माथा आगकी तरह गरम और ज्वर ज्यादा बना रहता है। अकडनकी पहली अवस्थामे इस दवाका व्यवहार होता है।

ओपियम—मस्तिष्कमे रक्तसचय, मुँह घोर नीला और फूला फूला, अकडनका दौरा होनेके समय -खूब जोरसे चिल्ला उठता है, समूचा शरीर कडा हो जाता है, अँगुलियाँ सब अलग अलग हुई रहती है। यदि प्रसूता किसी कारणसे डर जाये और उसके बाद ही सन्तानको अकडन हो जाये तो इससे फायदा होता है।

इग्नेशिया—कमजोर और रोगी बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अकड़न और एकाएक डर कर या पिता-माताकी किसी प्रकारकी ताडनाके कारण यदि अकड़न पैदा हो जाये तो यह फायदा करता है, भय, शोक, दुःख इत्यादिके कारण अकड़न।

हेलिबोरस—मुँह हिलाता है, दाँत दबाता है, लेटा लेटा माथा इधर उधर करता है।

ग्लोनोयिन—मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय होनेकी वजहसे अकड़न ओपियमकी भाँति इसमें भी बीरा होनेके समय अँगुलियाँ सब अलग अलग हो जाती हैं, कूप्रममें—मुट्ठी बाँधता है।

हायोसियामस—दूसरी-दूसरी दवाओंकी अपेक्षा इसकी अकड़नमें एक विशेषता है। पहले एक हाथमें खींचन, इसके बाद दूसरे हाथमें खींचन, इसी तरह एकके बाद दूसरी खींचन हुआ करती है, हाथ काँपता है, हाथ टेढ़ा पड़ जाता है, मुँहसे फेन निकलता है, मसूड़ा, हाथ और मुँहमें अँगुली डालता है, घड़े कष्टसे खाता है, बीरा होनेके बाद सो जाता है। (एसिड हाइड्रो, कैमो, माइक्यू देखिये)।

छोटी माता, चेचक इत्यादिकी बैठ जानेकी वजहसे बीमारी—छोटी माता इत्यादिकी गोटियाँ या उद्भेद बैठकर या थोड़ा भी निकलकर अगर गायब हो जाये और अकड़न तथा विकारका लक्षण इत्यादि प्रकट हो जाये—कूप्रम लाभदायक है। (जिङ्क भी इसकी दवा है)। कूप्रमके—विकारमें, नींद टूटते ही

दिमागी लक्षण घढते हैं, हाथ-पैर कोनाकोनी भावसे (angular) टेढे हो जाते हैं, चेहरा नीला हो जाता है। रोगी बीच बीचमें चिल्ला उठता है, चिल्लानेके बाद ही अकडनकी तरह बेहोशी आती है। उद्भेद बैठकर या मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह अथवा टकार होनेपर—कुप्रम अधिक फायदा करता है।

स्ट्रैमोनियम—ठीक कुप्रमकी तरह उद्भेद न निकल सकनेके कारण विकार हो जाता है। इसमें शरीर गरम रहता है और रोगी इस करवट, उस करवट छटपटाया करता है, तन्द्रा आते ही डर जाता है और रो उठता है। अपने बन्धु बान्धव या रिश्तेदारोंको पहचान नहीं सकता। इसमें चेहरा लाल रंगका हो जाता है (कुप्रममें—नीला), स्ट्रैमोनियममें—कभी कभी बेलेडोनाकी तरह तेज विकार भी दिखाई देता है। रोगी दाँत काटता है, नींद खुलने बाद, जोर जोरसे प्रलाप बकता है, जरा भी होश आनेपर डर जाता है। अकडन होनेपर आँखकी पुतली चक्कर खाती है, मुँहसे फेन निकलता है, अकडन बन्द होते ही सो जाता है और दाँत कडमडाता है।

जिङ्कम—रोगी बहुत कमजोर रहता है, इसलिये उद्भेद सब पूरी तरह बाहर नहीं हो पाते, सिर्फ २।१ निकलते हैं। रोगी हिमांग और बेहोशकी तरह पडा रहता है, केवल दाँत कडमडाया करता है, सोया सोया चौंक उठता है, आँखें घुमाता है, बच्चा केवल दोनों पैर हिलाता है।

पर्टिस-दर्द—छोटी माता, चेचक वगैरह बैठ जानेके कारण श्वासमें कष्ट, खाँसी, इसके साथ ही गला घरघर करना, इसमें इससे बहुत जल्द फायदा होता है।

कण्ठनलीका आक्षेप—बहुत कर बच्चोंको ही यह भयङ्कर बीमारी हुआ करती है। इसमें कण्ठनली (glottis) एकाएक बन्द होकर शरीर नीला हो जाता है और बहुत जल्दी जल्दी बेहोशीका दौरा हुआ करता है, अजीर्ण या बच्चोंको दाँत निकलनेके समय थाइमस ग्रन्थिका (यह छातीकी बीचकी हड्डीके पीछे और कण्ठनलीके नीचे रहती है) बढ़ना और उसके परावर्त्तित उपदाह (reflex irritation) से ही शायद यह बीमारी होती है। थाइमस-ग्रन्थिका बढ़ना, यदि बीमारीका कारण हो—आयोडम ज्यादा फायदा करता है, दाँत निकलनेमें देर होनेपर—कैल्केरिया-फास उपयोगी है। जो हो, क्लोरिन, ब्रोमियम ही इस बीमारीकी सच्ची दवा है (क्लोरिन गैसके धुएँको नाकसे साँसके ग्रहण करनेपर सुना है, कि साथ साथ फायदा होता है)—कूप्रम—क्लोरिन और ब्रोमियमकी अपेक्षा यह बहुत नीचे दर्जेकी है।

प्रसवके बादका दर्द—जिन स्त्रियोंको बहुतसी सन्तान प्रसव हो चुकी हो (multipara), उनके दर्दमें यह दवा अर्थात् कूप्रमको—अमेरिकाके बहुतसे चिकित्सक पेटेण्ट दवाके रूपमें प्रयोग करते हैं (आर्निका और सिकेलि अध्याय देखिये)।

हैजा—चावलके धोवनकी तरह या सडे कोहडेके पानीकी तरह लगातार दस्त आना, वमन, शरीरमें दाह, लगातार तेज प्यास, हृत्पिण्डका क्षीण हो जाना, नाडीका लोप हो जाना—ये सभी कूप्रमके लक्षण है। ऐंठन आरम्भ होनेपर ही कूप्रमकी जरूरत पडती है ; पर उसके साथ ही नीचे लिखे लक्षण रहने चाहियें :—

शरीर बरफकी तरह ठण्डा, शरीरकी त्वचा नीले रगकी, सभी पेशियोंमे ऐंठन, पैरकी पोटली तथा कूल्हेमे ऐंठन होकर वहाँकी मांस-पेशियोंका मानो ढेलेकी तरह हो जाना, पेटमे बेतरह दर्द, श्वासकष्ट, खींच खींचकर सास लेना। वेरेट्रममें भी—पैरमे ऐंठन है। यदि ऐसा देखनेमे आये कि वेरेट्रम्से फायदा न होकर क्रमश छाती और पीठमे ऐंठन होनी आरम्भ हो गयी है, वम्नका होना घटकर फिर वमन होना आरम्भ हो गया है, उस समय—निश्चय ही कूप्रमका प्रयोग करना होगा। इसके अलावा यदि ऐसा दिखाई दे, कि—कूप्रमसे ऐंठन तो घटती है, परन्तु दस्त-कैमे कमी नहीं होती, उस समय कूप्रम और वेरेट्रम पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेपर

ज्यादा फायदा होगा (हरेक दस्तके बाद एक मात्रा वेरेट्रम और बीचमें कूप्रम)।—कूप्रममे—फ्लेक्सर पेशीमे (सकोचनी पेशी) ऐंठन होती है, इसीलिये, अगूठेको मुट्ठीमें बांध लेता है। ऊपर लिखे लक्षणोंके अलावा—मूत्रविकारकी वजहसे आक्षेप और हैजाकी अन्तिम अवस्थाकी हिचकीमे भी कूप्रमसे फायदा होता है। हिचकीके साथ आक्षेप, वमन, मिचली, ओकाई, बार बार डकार आना, पेट

बहुत गडगडाना और, हिचकीके बाद वमन होनेपर—कुप्रम ही फायदा करेगा। कूप्रममें पानी पीनेपर गलेमें कलकल गडगड आवाज होती है और थोडी देरके लिये वमन घट जाता है।

पेठनके सम्बन्धमें द्रष्टव्य—साधारण दद्रकी पेठनमें कूप्रमकी इतनी जरूरत नहीं पडती। डा० डनहम कहते हैं,—बहुत ज्यादा दस्त कै में—वेरेट्रम; बरफकी तरह शरीर बहुत ठण्डा हो जाने पर—कैम्फर और बहुत अधिक पेठनमें—कूप्रम। कूप्रमके सिवा पेठनकी—सिकेलि कोर नामकी एक और भी विशेष आवश्यक दवा है। सिकेलिकी पेठनमें—हाथकी अँगुलियाँ अलग अलग हो जाती हैं, इसमें एक्सटेन्सर पेशीमें (extensor muscle) में पेठन होती है और कूप्रमकी पेठन फ्लेक्सर-पेशीमें (flexor muscle) होती है। इसीलिये, रोगी अँगूठेको मुट्ठीमें दबाता है। कूप्रममें फ्लेक्सर पेशीमें पेठन और सिकेलिमें एक्सटेन्सर पेशीमें पेठन होती है। अर्थात अँगुलियाँ अलग अलग हो जानेका लक्षण रहनेपर भी जहाँ कूप्रमका लक्षण रहनेपर भी कूप्रमसे फायदा नहीं होता या थोड़ा फायदा होता है, वहाँ कूप्रमके बाद सिकेलिके प्रयोगसे बहुत फायदा दिखाई देता है। सिकेलिमें दस्त ज्यादा,—कूप्रममें—वमन ज्यादा होता है। सिकेलिका रोगी क्षणभरके लिये भी शरीरपर कपड़ा नहीं रखने देता, नंगा पड़ा रहता है।

कूप्रम-आर्स (Cuprum Ars.)—जहाँ कुछ आर्सेनिकका लक्षण—अर्थात् अकड़न, दस्त और वमनमें दर्द, छटपटी, प्यास

पेटमें भयानक दर्द, अन्ननली और मूत्रनलीमें जलन, नाडीका दब जाना या नाडीका लोप हो जाना और कूप्रमकी—पे ठन और हृत्पिण्डकी क्षीणता इत्यादि लक्षणोंका इकट्ठा रहना दिखाई देता है, वहाँ कूप्रम और आर्सेनिकका पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी अपेक्षा—कूप्रम-आर्स—६x विचूर्ण सेवन करानेपर ज्यादा फायदा होता है। बच्चोंको पानीके साथ देना चाहिये। ३०, २०० शक्ति व्यवहारमें आती है।

वृद्धि (aggravation)—अमावास्याको, रातमें, वमनके बाद, चर्म-रोग रुक जानेपर।

ह्रास (amelioration)—ठण्डा पानी पीने और पसीना निकलनेपर।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, पपिस, बेल, जिङ्क, कास्टि, पल्स।

सम्बन्ध—हूपिङ्ग खाँसी और हैजामें, कूप्रमके बाद—वेरेट्रम। उद्भेद बैठ जानेके बाद यदि अकडन पैदा हो जाये तो कूप्रमके बाद पपिस या जिङ्कम फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—बेल, कैम्फर, साइलि, चायना, काकु, कोनि, हिपर, इपि, मार्क, नक्स, पल्स, वेरेट।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०-५० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७।

कूप्रम सल्फ्युरिकम ।

(CUPRUM SULPHURICUM)

(तृतिया) हैजाके बाद किसी किसी रोगीको भयानक उदर
ूल हो जाता है (colic) इससे उनको बहुत तकलीफ भोगनी
ड़ती है। यदि इस उदरशूलके साथ पेट फूलना, पेटका कड़ापन,
ी मिचलाना इत्यादि लक्षण वर्तमान रहें—कूप्रम-सल्फसे फायदा
ोता है। दूसरी दवाकी जरूरत ही नहीं होती है।

माथेकी चाँदीमें आगकी तरह जलन—खांसी
ागातार आक्षेपिक खाँसी, खाँसीका रातमें बढ़ना—इसमें कूप्रम-
ल्फसे फायदा होता है।

धातुगत-उपदंश—इस रोगमें, डा० धार्लिन कहते हैं,
कि उन्होंने मर्क्युरियस इत्यादि दवाओंसे चिकित्सा करनेकी अपेक्षा
स दवाके द्वारा उपदंश रोगमें ज्यादा फायदा होते देखा है।

इथियोप्स एण्टिमोनेलिस—१x से—६x शक्ति, यह पूर्वपुरुषों
े आये हुए उपदंशकी बहुत ही फायदेमन्द दवा है। ऐसा देखा
ाता है, कि बहुतसे बच्चोंको पैदा होनेके बादसे ही पैरमें घाव
ोना आरम्भ हो जाता है, यह पूर्व-पुरुषोंसे आयी हुई बीमारीके
िवा और कुछ नहीं है। इसमें इथियोप्स (Aethiops) फायदा
रता है। (गूजा भी इसकी एक उत्कृष्ट दवा है, इसका अध्याय
ेखिये)।

आर्सेनिक मेटालिकम—(Arsenic Metallicum)—धातुगत उपदंशको फिरसे जगाकर यह तुरन्त बीमारीको आराम कर देता है। इसके सेवनसे पहले तो बीमारी कुछ बढती दिखाई देती है, पर पाँच सात दिनोंके भीतर ही रोग धीरे धीरे घट कर प्राय दो एक सप्ताहके भीतर ही एकदम पूरी तरह आराम हो जाता है। (इसका अध्याय देखिये)।

सिनावेरिस—गर्मी और सूजाक दोनो ही मिले रहनेपर यह फायदा करता है (इसका अध्याय देखिये)। कैल्केरिया-फ्लोर—नामकी दवा भी पूर्व-पुरुषोंसे आये हुए उपदंशकी अच्छा दवा है।

मर्कुरियस-कॉम-कैलि—मर्कुरियस अध्याय देखिये।

गर्भावस्थामें वमन—गर्भावस्थामें अधिकाश गर्भवतियोंको कुछ न कुछ वमन हुआ करता है। इसमे—पल्सेटिला, क्रियोजोट, नक्स-वोमिका, कार्बोलिक-एसिड, सिम्फोरिक-कार्पस, इत्यादि दवाओंसे फायदा होता है। यदि इन सब दवाओसे फायदा न हो,—कूप्रम-सल्फसे फायदा होगा। (सेरियम-आकजैलेट देखिये)।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७।

कुरारि ।

(CURARE)

(यह एक तरहका बहुत तेज विष है, अमेरिकाके शिकारी शिकार करनेके लिये, जिस विषका व्यवहार करते हैं, कुरारि उसी विषसे तैयार होता है)—यह चालक-पेशी (motor) में पक्षाघात पैदा कर देता है, इससे चलनेकी शक्ति लोप हो जाती है। शरीरमें प्रत्यंगोंको हिलानेकी शक्ति नहीं रहती, पर चेतना शक्ति (sensation) ठीक ही रहता है, यह सुप्त नहीं हो जाता। इसके पक्षाघातका प्रधान लक्षण है,—पहले सरमें चक्कर आना, पैरकी ताकत का घटते जाना, इसके बाद पूरा पूरा पक्षाघात हो जाता है। इसके अलावा—पैरका काँपना, चलनेके समय पैरका दूसरी जगह गिरना, कमजोरी और हाथ भारी तथा कमजोरी मालूम होना, हाथकी अंगुलियोंका हिला न सकना, पियानो बजानेवालोंके हाथ और अंगुलियोंकी कमजोरी, मुँह अथवा जीभका पक्षाघात, मुँह और जीभका टेढ़ा पड़ जाना प्रभृति लक्षण इसमें पाये जाते हैं।

सिस्टिसस-लेबर्नम—एक तरहके वृक्षके ताजे पत्ते और फूलोंसे इसका टिंचर तैयार होता है। हाथमें दर्द, हाथका हिला न सकना और सिर्फ हाथका पक्षाघातकी तरह सुप्त हो जाना लक्षणमें इससे फायदा अधिक होता है। सिस्टिन (Cystin)—

यह कुरारिके सदृश ही दवा है और चालक पेशीका पक्षाघात (motor paralysis) पैदा करता है। क्रम—३—६ शक्ति।

पूतिनस्य-रोगमें—नाकके भीतर सडी बदबू-भरी सर्दी, पीबका दबाव और स्नायविक दुर्बलता, कैटेलेप्सि (इस बीमारीमें मानसिक और शारीरिक यान्त्रिक क्रिया कुछ देरके लिये बन्द रहती है), जबडे अटक जाना, दाँती लगना, धनुष्टंकार, कुष्ठ प्रभृति बीमारियोंमें भी—कुरारि फायदा करता है।

सदृश—नक्स, क्रोटेलस।

वृद्धि (aggravation)—अग हिलाने, चलने, शीतसे, रातके दो बजे, दाहिनी करवट लेटनेसे।

ह्रास (amelioration)—स्थिर भावसे सोनेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—स्ट्रिकनिन।

क्रम—६—३०, २००। फारमुला—विचूर्ण—७।

साइक्लैमेन युरोपियम।

(CYCLAMEN EUROPŒUM)

(एक तरहके गाछकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है)—रोमके अधिवासियोंमें बहुत दिनोंसे एक किम्वदन्ती प्रचलित है अर्थात अगर कोई गर्भवती स्त्री इस गाछको छू लेती है, तो उसका गर्भपात

हो जाता है। महात्मा-हैनिमैनने इस गाछकी जडका मूल अर्क तैयार कर पहले उसकी परीक्षा की, श्लेष्मा-प्रधान धातु, (बलगमी देह), रक्तहीन देह (anæmic), हरित् रोगसे ग्रस्त स्त्री, और जिनका ऋतुस्राव नियमित समयपर नहीं होता, ऋतुके समय सरमें दर्द होता है, सरमें चक्कर आता है, आँखोंके आगे धुँधला दिखाई देता है प्रभृति कितने ही उपसर्ग पैदा होकर रोगिनीको बहुत तकलीफ देते हैं, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। पाचन-यन्त्र, गर्भाशय और जननेन्द्रियके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

पाचन-यंत्र और जरायु-सम्बन्धी रोगोंमें पल्सेटिलाके लक्षणके साथ साइक्लैमेनके लक्षणमें बहुत अधिक समानता दिखाई देती है, पर इनमें अन्तर यह है, कि—पल्सेटिलाका रोगी—खुली हवा पसन्द करता है। उससे उसे आराम मालूम होता है। साइक्लैमेनमें—उससे उपसर्ग और भी बढ़ जाते हैं। साइक्लैमेनमें—प्यास रहती है—पल्सेटिलामें—प्यास नहीं रहती, साइक्लैमेनका रोगी—मनःकष्टकी वजहसे रोता है; पर यह लुक-छिपकर मन ही मन रोता है, किसीको सुनने नहीं देता। इसके साथ ही प्राय ऋतुस्राव बन्द रहता है। सरमें चक्कर आता है, माथा दर्द करता है। ऐसा मालूम होता है, मानो सामनेकी सब चीजें चक्कर खा रही हैं, अजीर्ण, पेटमें वायु इकट्ठा होना, रातमें पेटमें दर्द होना, अकेले एकान्त कमरेमें रहनेकी इच्छा प्रभृति कितने ही आनुसंगिक उपसर्ग इसके साथ ही बने रहते हैं। इसके अलावा साइक्लैमेनके रोगी

का मस्तिष्कका लक्षण और कमजोरी इतनी अधिक रहती है, कि किसी विषयको स्थिर-चित्तसे सोचनेकी उसमें शक्ति ही नहीं रहती। रातमे उसे बहुत तकलीफसे नींद आती है। नींद खुलनेपर सबेरे मन और शरीर इतना भारी रहता है, ऐसा अस्वस्थ मालूम होता है, कि उसे ऐसा अनुभव होता है, कि वह किसी तरह भी दिनके काम-काज नहीं कर सकेगा, पर अगर एक बार काम आरम्भ कर देता है, तो दिन भर परिश्रम करता है, विशेष थकता नहीं है।

अजीर्ण-रोग—भूख तो अधिक लगती ही नहीं, पर जो कुछ लगती भी है, उसमें थोडा-सा भी कुछ खा लेनेपर पेट फूल उठता है (लाइकोपोडियमकी तरह), इसके बाद कोई खाने पीनेकी चीज देखनेसे ही जी मिचलाने लगता है। रोटी, मक्खन, घी और चर्बीसे इतनी घृणा होती है, कि उनका नाम भी नहीं लेने देता, घी या घीकी पकी कोई चीज पचा भी नहीं सकता, मुँहका स्वाद और लार बहुत नमकीन, रोगी जो कुछ भी खाता है, समझता है, कि वह नमकसे भरा हुरा हुआ है। डा० लिपि कहते हैं—लेमोनेड के सिवा और जो कुछ खाता-पीता है, उसीसे जी मिचलाने लगता है।

रजःस्राव—बहुत जल्दी जल्दी ऋतुस्राव होता है, जल्दी जल्दी और परिमाणमे भी बहुत ज्यादा होता है। इसके साथ ही प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, कमरसे प्यूबिस (तलपेटके नीचेकी हड्डी) तक चला जाता है। रक्त गदला, काला और थक्का थक्का।

सर-दर्द—कभी कभी एक ओरकी कनपटीमें और अधिक कर बायीं ओरकी कनपटीमें ही यह दर्द होता है। सर-दर्दके समय आँखके सामने आगकी चिनगारियाँ उड़ती दिखाई देती हैं या आँखसे कुछ दिखाई ही नहीं देता। इस समय सरपर ठण्डा पानी डालनेसे कुछ आराम मालूम होता है।

सदृश—पल्स, फेरम, चायना।

ह्रास (amelioration)—घरके भीतर, गरमीसे।

वृद्धि (aggravation)—खुली हवामें, ठण्डे पानीसे, ऋतुके समय।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—१।

साइप्रिपिडियम प्यूबेसेन्स।

(CYPRIPEDIUM PUBESENS)

होमियोपैथिक चिकित्सामें, स्नायु-सम्बन्धी कितनी ही बीमारियोंमें कभी कभी इसकी जरूरत पड़ती है और हिस्टिरिया, नर्तन-रोग (कोरिया), स्नायुशूल (न्युरैलजिया) प्रभृति कई स्नायविक बीमारियोंकी यह दवा होनेपर भी, बच्चोंको दांत निकलने और आंतोंकी उत्तेजना (intestinal irritation) की वजहसे अकड़न प्रभृति मस्तिष्कके लक्षण यदि प्रकट हों तो इससे ज्यादा फायदा होता है। ज्यादा खिलौ-नेसे, मगर बच्चोंको रातमें जगाते रहें और अन्तमें मस्तिष्कमें

जल-सचय (हाइड्रोकेफेलस) का लक्षण पैदा हो जाये तो इससे ज्यादा फायदा होगा। (एपिस अध्याय देखिये)। गठिया वातकी बीमारी होनेपर कमजोरी और रसटक्सके लक्षणकी तरहके चर्म-रोग हो जानेपर भी इसका व्यवहार होता है।

किसी किसी बच्चेका ऐसा स्वभाव रहता है, कि वे दिनके समय खूब हँसते है, खेलते हैं, पर रात होते ही रोना चिल्लाना आरम्भ कर देते है, आप भी नहीं सोते और घरके आदमियोंको भी नहीं सोने देते—साइप्रिपिडियम उनकी भी बहुत बढ़िया दवा है। (जैलापा देखिये)।

स्त्रियोकी जननेन्द्रिय और मूत्रयन्त्रकी किसी स्नायविक बीमारी में नींद न आना, बेचैनी, मानसिक-गडबडी प्रभृति रहे तो भी यह फायदा करता है।

सदृश—कैलि-ब्रोम, पल्सा, वैलेरियाना, इग्नेशिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—रसटक्स।

क्रम—φ—६, ३० शक्ति। फारमुला—३।

डिजिटेलिस परपुरिया।

(DIGITALIS PURPUREA)

(यूरोपके एक तरहके छोटे पौधेके पत्तेसे टिंचर तैयार होता है)—हृत्पिण्ड, मसाना, यकृत, सयुक्त शिरा, जननेन्द्रिय और

स्तिष्कके ऊपर इसकी खासकर क्रिया होती है। हृत्पिण्डकी
ब तरहकी बीमारियोंमें इसके द्वारा नाड़ी अनियमित हो जाती
, रुक रुककर चलती है और क्षीण हो पड़ती है। अतएव, हृत्पिण्ड
ी किसी भी बीमारीमें—थोड़ा हो या अधिक, अगर नाड़ीके ये
ऊपर बताये लक्षण मौजूद रहें तो हृत्पिण्डकी या हृत्पिण्डकी
ीमारीके साथ कोई दूसरी बीमारी रहनेपर, वह भी बहुत जल्द
आराम हो जायगी। डिजिटेलिसका कभी मात्रामें अधिक और
ार बार प्रयोग न करना चाहिये। इसमे नुक्सान होगा, पर हृद्-
कपाट (वैल्व) की बीमारीमें अगर रक्तका भरना ठीक ठीक न
होता हो तो कभी कभी अधिक मात्रामें इसका व्यवहार करना
आवश्यक हो जाता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। हृत्पिण्डके कपाटकी कोई बीमारी न रहनेपर भी
हृत्पिण्डकी कमजोरी; २। जरा हिलने-डोलनेसे ही ऐसा मालूम
होता है, मानो अभी हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द हो जायगी; ३।
स्त्री-सहवासके बाद जनेन्द्रियकी बहुत अधिक कमजोरी और
शिथिल हो जाना, स्वप्नदोष; ४। वक्षस्थलकी कमजोरी, इसीलिये
बोला न जाना; ५। पित्तकी क्रियामें विकारके कारण मलका
रंग सफेद या राख (खड़ियाकी तरह सफेद—पोडो, चेलि,—
भाग सफेद—सिङ्कोना, कैल्केरिया); ६। नाड़ी भारी, धीमी, कम-
जोर और असमान; प्रत्येक ३ रा, ५ वाँ अथवा ७ वाँ स्पन्दन
कमजोर हो जाना; ७। आँख, ओंठ, पलक, कानकी शिरायें सब

फूलीं, ८। जीभ, ओठ, पलक, शरीरका चमड़ा सभी नीले रंग॰ का ; ६। हृत्पिण्डकी बीमारी या ब्राइट्स डिजीजसे पैदा हुआ शोथ या उदरी, पेशाव वहुत थोडा, गाढ़ा और गरम, १०। आवमजूल, सूजाक, वैलानाइटिस—प्रिप्यूस (लिङ्ग-चर्म) या लिङ्ग शोथकी तरह फूला।

हृत्पिण्डकी बीमारी—डिजिटेलिसकी हृत्पिण्ड पर क्रिया अधिक होती है। यह हृत्पिण्डकी बीमारीकी एक वल्कारक दवा है। डिजिटेलिसका प्रयोग करते समय नीचे लिखे लक्षणोंपर हमेशा नजर रखे —

नाड़ीकी गति बहुत धीमी, धीरे धीरे चलते चलते, बीचमें बहुत तेज हो जाती है और फिर धीरे धीरे चलने लगती है, रोगी यदि जरा भी हिलता डोलता है, तो हृदयकी धड़कन जोर जोरसे होने लगती है। नाडीका ३ रा, ५ वाँ या ७ वाँ आघात रुककर होता है (intermittent and slow pulse) हृत्पिण्डकी बीमारीमें रोगीके कलेजेमें डक मारनेकी तरह दर्द होता है, बाई करवट सोनेपर हृत्कम्प (कलेजा काँपने लगना—कैक्टस), हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे पैदा हुए शोथ रोगमें और हृत्पिण्डमें पानी इकट्ठा हो जानेपर डिजिटेलिसकी चरित्रगत नाडीके लक्षणके साथ अगर रोगीमें साँसकी तकलीफ अधिक रहे और इसी वजहसे सो न सकता हो इत्यादि लक्षण रहनेपर—डिजिटेलिससे फायदा होता है। छोटी माता और चेचक निकलनेकी बीमारीके बाद शोथ

रोगमें डिजिटेलिससे उपकार होता है। इसमें रोगीकी मानसिक अवस्था बहुत खराब हो जाती है, वह हमेशा डरता रहता है, दुखित रहता है, निराश और मानो मन मरेकी तरह रहता है। रातमें सो नहीं सकता, खून नीला हो जाता है, इसीलिये ओंठ और मुँहका रंग बैंगनी हो जाता है।

नाड़ीकी असम गति, प्रत्येक ३ रे या ४ थे स्पन्दनका लोप हो जाना—एपिस, नाड़ी धोर गति, क्षीण, मध्यलोपी ३ रे, ५ वें या ७ वे आघातमें लोप हो जाती है—डिजिटेलिस, नाड़ी मध्य-लोपी—स्पाइजिलिया, मध्यलोपी नाड़ीके साथ ही साथ कलेजा धड़कना—सिकेलि,कोनियम, डिजिटेलिस, कैलि-कार्ब, नैट्रम-म्यूर, नाड़ीकी गति क्षणभरमें तेज, दूसरे ही क्षण कोमल और कलेजा धड़कना—कैलि-कार्ब ; दूना स्पन्दन (डायक्रोटिक)—साइक्लामेन।

एडोनिस वार्नेलिस—एक तरहके पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है। यह भी हृत्पिण्डकी बीमारीकी एक उत्कृष्ट दवा है। हृत्कमलोंके रक्तका (regurgitation of mitral and aortic valve), हृदयको ढकनेवाले परदेका दर्द (pericarditis), हृत्स्पन्दन (palpitation), श्वासमें कष्ट और हृदयकी बीमारीके कारण पैदा हुआ दमा या हँफनी इत्यादि बीमारियोंमें यह फायदा करता है। इसके सेवनसे हृत्पिण्डकी सङ्कोचन शक्ति बढ़ती है, शरीरका तेज बढ़ता है, हृत्पिण्डकी कमजोरी दूर हो जाती है, क्षीण और धीमी नाड़ीकी गति स्वाभाविक अवस्थामें आ जाती है; पेशाबका परिमाण बढ़ता है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे पैदा



ड्रप्‌ शोथमें, हृदयमें पानी इकट्ठा होनेपर और उदरी रोगकी भी यह बढ़िया दवा है। मात्रा—मूल अर्क—५ से १० बूँद। एडोनिन चौथाईसे आधा ग्रेन या १x विचूर्ण शक्ति, २ से ५ ग्रेनतक नित्य सेवन करना चाहिये।

क्रैटिगस-आकजाया कैन्था—यदि इसे हृत्पिण्डकी बीमारीकी एक श्रेष्ठ महौषधि भी कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। बहुत दिनोंकी किसी हृत्पिण्डकी बीमारीमें और एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया लोप हो जानेकी सम्भावना heart-failure) होनेपर इसकी जैसी महोपकारी दवा कोई दूसरी बहुत कम दिखाई देती है। डिजिटेलिसमें जो जहरीला गुण है, वह इसमें नहीं है। बार बार डिजिटेलिसका प्रयोग होनेपर बहुत कुछ हानि होनेकी सम्भावना बहुत अधिक है, पर इससे फायदाके सिवा हानि होनेकी सम्भावना न नहीं। एकाएक हृत्पिण्डकी क्रिया लोप (Collapse), हृत्कपाटके मुँहका वकार (Valvular disease), हृत्पिण्डकी क्रिया लोप हो जानेकी तैयारी heart-failure), कलेजा धड़कना, नाड़ीकी गति तेज, हृत्पिण्डका बढ़ना (hypertrophy of the heart), वात श्लेष्मा ज्वरमें—हृत्पिण्डका सुस्त पड़ जाना, हृत्पिण्डके विकारके कारण शोथ इत्यादि बीमारियोंमें और मेद-वृद्धि, हृत्प्रदेशमें दर्द, हृत्पिण्ड प्रसारित, पहली आवाज धीमी, नाड़ी उत्तेजित, अनियमित और सविराम, हृत्शूलका दर्द (Angina pectoris) इत्यादि रोगोंकी यह एक बहुमूल्य दवा

है। मूल अर्क—१ से १० बूँद रोगकी तेजीके अनुसार—आधेसे ही तीन घण्टोंका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये (इसका अध्याय देखिये)।

स्ट्रोफैन्थस (Strophanthus)—यह एक तरहके पके फलके सूखे बीजका मूल अर्क है। यह भी हृत्पिण्डकी नाना प्रकारकी दुरारोग्य बीमारियोंमें लाभदायक है। हृत्पिण्डकी क्रिया बहुत क्षीण पर तेज, नाड़ी क्षीण ; परन्तु स्वाभाविक, इसके साथ ही श्वासमें कष्ट, धमनीकी स्थूलता (Arterio-sclerosis), इसके अलावा—(Hepatic cirrhosis, Fatty degeneration, Bicuspid or Mitral regurgitation) स्नायविक और हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियोंका हृत्स्पन्दन, हृत्पिण्डमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, शोथ, सूजन इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियोंमें और हृत्पिण्डके रोगकी वजहसे पैदा होनेवाली अन्य बीमारियोंमें लाभदायक है। It increases the systole and diminishes the rapidity इससे हृत्संकोचनकी क्रिया बढ़ जाती है और उसकी तेजी घट जाती है। क्रम—θ—६x, नयी बीमारीमें—θ, ५ से १० बूँद नित्य ३ बार सेवन करना चाहिये।

आइबेरिस (Iberis)-पके फलके बीजसे टिंचर तैयार होता है—क्रम θ। हृत्पिण्डके स्थानपर बेधने फाड़नेकी तरह दर्द, जरा हिलने डोलने या हँसने, खाँसनेसे ही कलेजेकी धड़कन बढ़ जाती है, उससे मानो साँस रुक जाना चाहती है, कलेजा इतनी जोरसे धड़कता है कि ऊपरसे ही दिखाई देता है। (Tachycardia)

नाडीकी गति सविराम और नाडी मोटी हो जाती है। रोगीको हृत्पिण्डवाली जगह बहुत भारी और दबावकी तरह मालूम होती है। हृत्पिण्डके कपाटका अस्वाभाविक रूपसे बढ जाना (Dilatation of the heart), सोये सोये रातके २ बजे कलेजेमें धडकन होकर जाग पडता है इत्यादि लक्षणवाली बीमारीमे फायदा करता है।

कानवैलेरिया (Convallaria)—हृत्पेशीका बढ़ना (हाइपरट्राफी) और हृत्प्रकोष्ठ या हृत्कपाटका प्रसारण (डाइलेटेशन) की यह भी एक बहुत फायदेमन्द दवा है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ,उदरी, श्वासकष्ट, श्वास-कृच्छ्र, सो न सकना प्रभृतिमे इससे बहुत फायदा होता है। क्रम—१ म और ३ री शक्ति, हार्ट-फेल होनेकी सम्भावना होनेपर भी हृत्पिण्डकी किसी भी कडी बीमारीमे—मूल अर्क १०।१५ बूँद मात्रामे, रोगकी तेजीके अनुसार प्रत्येक २।३ घण्टेका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये। व्यायामके समय कलेजा धडकना, बहुत अधिक धूमपानकी वजहसे कलेजा धडकना, हृत्शूलका दर्द (Angina pectoris) प्रभृति हृत्पिण्डकी बीमारीमे नाडीकी गति बहुत तेज और अनियमित, जरा भी हिलने-डोलनेपर कलेजा धडकना, एण्डोकार्डाइटिस, हृत्पिण्डके चलते चलते बन्द हो जानेपर, पर फिर एकाएक चलना आरम्भ होता है, इन सब बीमारियो और लक्षणोंमे—कानवैलेरिया फायदा करता है।

नेरियम-ओडोरम (Nerium Odorum)—हृत्कपाटके विकार की वजहसे किसी बीमारीमे बेतरह श्वासकष्ट, कलेजा धडकना

इत्यादि उपसर्ग रहनेपर तुरन्त फायदा होनेके लिये, इसका मदर टिंचर ५ से १५ की बूँद मात्रामें—चीनी, दूधकी चीनी या रोटीके साथ मिलाकर सेवन करने दे। दवा सेवन करनेके आध घण्टा पहले और बाद कोई पतला जलीय पीने न दे। स्ट्रिकनियाकी तरह मेरु-मज्जाके ऊपर (on spinal cord) इसकी क्रिया प्रकट होती है। शरीरके ऊपरी अशमें इससे अधिक आक्षेप (spasm) होता है।

फैसियोलस (Phaseolus)—+—१२ शक्ति ; बहुत ही साघातिक ढगकी कलेजेकी धड़कन, ऐसा मालूम होता है, कि मृत्यु होगी ; इसमें यह दवा सेवन करनेके साथ ही साथ फायदा होता है। (इसका अध्याय देखिये)।

एमिल नाइट्रेट—थोड़ी भी उत्तेजना होनेपर कलेजा धड़कने लगना, हृद्वृद्धिके कारण भी मानो कलेजा दबा रखता है, हृत्पिण्ड में दर्द, हाथ-पैर ठण्डे।

एपोसाइनम (Apocynum-can)—हृत्पिण्डकी बीमारीमें और शोथ रोगमें फायदा करता है। हृत्पिण्डकी बीमारीमें—इसकी सभी क्रिया प्राय डिजिटेलिसकी तरह होती है, पर यह डिजि-टेलिसकी तरह नुकसान करनेवाला नहीं है बल्कि यह कैटिगसकी तरह निर्दोष है। डा० हेल कहते हैं—हृत्पिण्डकी यांत्रिक बीमारी की वजहसे जब हृत्पिण्डमें शोथ हो जाता है, पानी इकट्ठा होता है, उस समय इससे रस-स्राव (effusion) आराम होकर हृत्पिण्डको पूरी पूरी ताकत लौट आनेमें सहायता मिलती है।

(दूसरे दूसरे लक्षणोंके लिये हेलिबोरस अध्यायमे शोथ देखिये)। हृत्कपाटकी बीमारीमे—माइट्रैल (द्विकपाट) और (त्रि-कपाट) ट्राइकस्पिड रिगर्जिटेशनमें अर्थात हृत्कपाट ढीला हो जानेके कारण जब हृत्पिण्डमे लगातार रक्तस्रोत बहा करता है, उस समय भी इससे वहुत कुछ फायदा होता है।

<u>एस्पारागस</u> (Asparagus)—६ ठीं, शक्ति, (मूत्रग्रन्थि) प्रदाह और मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थिकी बीमारीमें पेशाबके साथ पीव और श्लेष्मा निकलना, पेशावमें वहुत कडवी और तेजगन्ध, जलन, मूत्र नलीके मुँहपर डक मारनेकी तरह दर्द, बार बार जल्दी जल्दी पेशाब लगना, इन सब लक्षणोंके साथ हृत्पिण्डके चारो ओर दर्द और बेतरह कलेजा धडकना लक्षण रहनेपर, यह हृत्पिण्डकी बीमारीकी सभी दवाओंको अपेक्षा ज्यादा फायदेमन्द है। वृद्धोंकी हृत्पिण्डकी कमजोरीके साथ वमन, कन्धेमें दर्द और कलेजेमे भार मालूम होनेपर और इसके साथ ही पेशावमें बदबू रहने और पेशाव थोडा होनेपर इससे फायदा होता है। एस्पारागस सेवन करनेपर पेशावका परिमाण बढ जाता है। पेशावका परिमाण बढ़ानेके लिये एस्पैरागसके वृक्षकी छाल पानीमें सिझाकर पीनेपर, गाछसे तैयार की हुई दवाको अपेक्षा ज्यादा फायदा होता है। इसकी ३० और २०० प्रभृति ऊँची शक्तियाँ भी व्यवहृत होती हैं। यह—कलेजेमें जल इकट्ठा होना (Hydrothorax) और बाई स्कन्धास्थिके नीचेके दर्दमें भी फायदा करता है।

थिया—इसका अध्याय देखिये।

वीर्य-पात—डिजिटेलिस—३x विचूर्णका सेवन करने पर स्वप्नदोषमें बहुत फायदा होता है। नित्य या एक दिनका अन्तर देकर एक मात्रा सवेरे सेवन करनी चाहिये। तीसरे पहर सेवन करनेपर नींदमें गड़बड़ी पैदा हो जा सकती है। (डा० वेयर), डिजिटेलिससे फायदा न होनेपर—डिजिटेलिस—३x शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

कामला—यकृत खूब बड़ा और कड़ा, उसमें बहुत तेज अकड़नका दर्द, नाड़ीकी गति धीमी और रुक रुककर, थोड़ा पेशाब, सफेद या भूरे रंगका दस्त इत्यादि लक्षणोंके साथ अगर यकृतकी बीमारीके साथ कामला हो जाये—डिजिटेलिस फायदा करता है। पर अगर पित्त रुकर कामला हुआ हो तो इससे कोई भी फायदा नहीं हो सकता है। पर जहाँ यकृत रक्तसे पित्तका रंग निकाल नहीं सकता, वहीं डिजिटेलिससे फायदा होगा।

सविराम-ज्वर—एक बार जाड़ा, एक बार ताप, हाथ-पैर ठण्डे, रातके समय पसीना या एक हाथ और एक पैर गरम, इसके साथ शोथ, पैर फूले, नाड़ीका रुक रुककर चलना इत्यादि लक्षणोंमें—डिजिटेलिस फायदा करता है।

वमन—जीभ साफ इसके साथ ही वमन, यह—इपिकाक, सिना और डिजिटेलिसमें है। इनमें प्रभेद यह है, कि क्रिमिकी वजहसे वमन होनेपर—सिना फायदा करता है। पाकस्थलीकी गड़बड़ीकी वजहसे होनेपर—इपिकाक और हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे वमन होनेपर—डिजिटेलिस फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—रातमें और सवेरे, नींद खुलनेपर, सीधे होकर बेठनेपर, हिलने-डोलनेपर, भोजनके वाद, ठण्डी हवामें, ठराडी चीज खानेपर, ठराडी पतली चीजें पीनेपर, गाने-बजानेसे।

ह्रास (amelioration)—खाली पेट, निर्मल हवामें।

बादकी दवा (follows well)—बेल, ब्रायो, कैमो, नक्स, वेरेट, फास, पल्स, सिपि, सल्फ, लाइको।

सम्बन्ध—सिङ्कोनाके पहले या वाद इसका व्यवहार होनेपर इसकी क्रिया नष्ट हो जाती है और मानसिक उद्वेगको बढा देता है। नाइट्रि-स्पिरिट-डलसिसके बाद सेवन करनेपर डिजिटिलिस की क्रिया बढ जाती है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एपिस, कैम्फर, कैल्के, कोलचि, नक्स, नाइट्रिक एसिड, ओपि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—१।

डायस्कोरिया-विलोसा।

(DIOSCOREA VILLOSA)

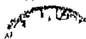
(एक तरहके लत्तरकी ताजी जड़से इसका मूल अर्क तैयार होता है);—१। भयानक तकलीफ देनेवाला उदर-शूलका दर्द, दर्द

तलपेट या पुट्ठे से आरम्भ होकर समूचे पेटमें फैल जाता है ,—२। वायु या पित्त-शूलका दर्द, ३। अतिसार, ४। स्वप्नदोष, इन चार बीमारियोंमें ही इसका अत्यन्त सफलता पूर्वक व्यवहार होता है।

उदर-शूलका दर्द—कोलोसिन्थकी तरह यह भी उदर-शूलके दर्दमें फायदा करता है। कोलोसिन्थका दर्द दबानेपर कुछ घटता है। डायस्कोरियाका दर्द—तलपेटसे आरम्भ होकर शरीरके सभी स्थानोंमें फैल जा सकता है ; पीछेकी ओर झुकने या सीधे होकर बैठनेपर अथवा लेटनेपर कुछ घटता है। (कोलोसिन्थ अध्याय देखिये)।

डायस्कोरियामें—दर्द एकाएक अपनी जगह बदलकर दूसरी जगहपर और कभी कभी बहुत दूर यहाँतक कि हाथ-पैरकी अँगुलीतक चला जाता है। पेट गड़गड़ करता है, वायु निकलता है। तलपेटमें ऐंठन और मरोड़का दर्द होता है, पाकस्थली और आँतोंमें काटने फाड़नेकी तरह भयानक (रह रहकर) दर्द होता है। शूलका दर्द—चलने-फिरनेपर जरा घटता है, पेटका दर्द—छातीमें, पीठमें और हाथतक अनुभव होता है।

पित्त-पथरीका-दर्द—यकृतके स्थानसे यह दर्द आरम्भ होकर ऊपर दाहिने स्तनतक और कभी कभी दूसरी जगहतक भी फैल जाता है। (योरिक)।



डायस्कोरिया—पित्त-पथरी (Gall-stone), मूत्रग्रन्थिका शूल (Nephritic colic), ऋतु-शूल (Menstrual colic), बाधक का दर्द, पेट फूलनेके साथ पेटमे शूलका दर्द, वायु शूल, पाकाशयका शूल (Gastralgia)—बवासीर—जिसमे मलद्वारमे बहुत दर्द रहता है, लगातार पाखाना लगता है और रोगवाली जगह लाल और चेरीके फलके झव्वेकी तरह दिखाई देती है, शूलके दर्दके साथ सवेरेके वक्त पतले दस्त आना प्रभृति कितनी ही बीमारियोंकी भी यह एक लाभदायक दवा है।

अँगुलवेढ़ा—इस भयानक तकलीफ देनेवाली बीमारीको जल्द आराम पहुँचानेके लिये आजतक किसी दवाका आविष्कार नहीं हुआ, रोगीको बहुत दिनोंतक तकलीफ भोगनी पडती है। अँगुलवेढा हुआ है, यह मालूम होते ही पकनेकी राह न देखकर उसे—एलोपैथ चिकित्सक कच्ची अवस्थामे ही काट देते हैं। नमक मिले पानीमें अँगुलीको हमेशा डुबोये रखना चाहिये। साधारणत नीचे लिखी दवाएँ इस बीमारीमे व्यवहृत होती हैं।

<u>आइरिस-वार्स</u>—इसका अध्याय देखिये।

डायस्कोरिया—रोगकी पहली अवस्थामे जब रोगीकी अँगुलीमे काटने, कुछ बेधने प्रभृतिकी तरह दर्द होता है, उस समय इसका मूल अर्क लगाने और निम्न-शक्तिका भीतरी सेवन करनेपर तकलीफ बहुत कुछ घट जाती है और रोग भी जल्दी आराम हो जाता है। पहली अवस्थाके बाद भी इसका व्यवहार होनेपर रोगके आरोग्य होनेमें सहायता पहुँचाता है।

एसिड-फ्लोरिक—अगर अँगूठा और तर्जनी अगुलीमें बीमारी हो तो यह फायदा करता है। रोगवाली जगहमें टपकका तेज दर्द होता है। इतनी तकलीफ होती है, कि रोगी क्षण भर भी स्थिर नहीं रह सकता, छटपटाया करता है, तकलीफ—ठण्डे प्रयोगसे घटती है। (इसका अध्याय देखिये)।

हिपर-सल्फर और साइलिसिया—हिपरमें बहुत ही तकलीफ देनेवाला सुई गड़ने या चिलक मारनेकी तरह दर्द होता है, इतना दर्द रहता है, कि दर्दवाली जगहपर हाथ नहीं लगाया जाता। दर्द—गरम प्रयोगसे घटता है। पीब पैदा हो जानेकी सम्भावना होनेपर साइलिसिया—३x, ६x विचूर्ण शक्ति सेवन करनेपर जल्दी जल्दी पीब पैदा हो जाता है और पीब पैदा हो जानेपर इसका उच्चक्रम—३०—२०० शक्ति, सेवन करनेपर, पीब खोलकर जख्म बहुत जल्दी सूख जाता है (हिपर और साइलिसिया अध्याय देखिये)।

गृध्रसी वात—दाहिनी ओरका सायटिका, थोड़ा भी हिलने-डोलनेपर या पैड़ रहनेपर दर्द बहुत बढ़ जाता है, स्थिर होकर सोनेपर घटता है। (कोलोसिन्थ देखिये)।

स्त्री-रोग—गधर, तकलीफ देनेवाला रजःस्राव, जरायुमें रह रहकर तेज दर्द होता है, दर्द शरीरके दूसरे स्थानमें चला जाता है।

स्वप्नदोष—इस बीमारीमें—नक्स-वोमिका, लाइकोपोडियम, सेलिनियम, फोनियम, कैलेडियम, जेलसिमियम, एसिड-फास, डिजिटेलिस, फास्फोरस इत्यादि दवाओंकी तरह—डायस्कोरिया भी फायदा करता है। डायस्कोरियामें—एक रातमें दो तीन वार स्वप्नदोष होता है और दूसरे दिन रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है। घुटने इतने कमजोर हो जाते हैं—मानो उसमें जरा भी बल नहीं रहता और वहाँ दर्द होता है। इस बीमारी—घुटनेका यह लक्षण रहनेपर दूसरी सभी दवाओंकी अपेक्षा डायस्कोरिया ही ज्यादा फायदेमन्द है। स्वप्नदोषमें (Seminal emission from sexual atony) डा० फेरिङ्गटन पहले डायस्कोरियाका—१२ वीं, इसके बाद ३० वीं शक्ति व्यवहार करते हैं (डिजिटेलिस अध्याय देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—सोनेपर, बैठनेपर, झुकनेपर।

ह्रास (amelioration)—शरीर हिलाने, पीछेकी ओर देह टेढ़ी करने और टहलनेपर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—ф—६x शक्ति। फारमुला—३।

डिफ्थेरिनम ।

(DIPHTHERINUM)

यह डिफ्थीरिया-विषसे तैयार की हुई एक नोसोड्स दवा है। येलोपैथ चिकित्सकगण डिफ्थीरियाकी बीमारीमें जिस तरह एण्टि-टाक्सिन इञ्जेक्सन दिया करते हैं, उसी तरह हमलोग भी कितने ही शक्तिकृत नोसोड्स दवाएँ—एण्टि-टाक्सिनके रूपमें भीतर सेवन कराकर कितने ही स्थानोंमें आशासे अधिक फायदा उठाते हैं। डिफ्थीरियाकी प्रधान दवा—मर्क्युरियस-सियानेटस, फाइटोलैक्का, कैलि-बाइक्रोम, लैक-कैनाइनम, एसिड-कार्बोलिक, एसिड-म्यूर, एसिड-नाइट्रिक, एपिस, कैलि-क्लोर, लैकेसिस प्रभृति बहुत तरहकी दवाओंके बीचमें लक्षणके अनुसार कोई एक या कितनी ही व्यवहार करते हैं, पर जब उनसे फायदा नहीं होता और बीमारी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है, तो—तुरन्त डिफ्थेरिनम—उच्चक्रमकी एक मात्रा प्रदान कर, दो एक दिन बाद देख सकते हैं।

गलेके भीतर अच्छी तरह परीक्षा करनेपर और दूसरे दूसरे लक्षणोंसे जब यह स्थिर हो जाता है, कि बीमारी असली डिफ्थीरिया ही है, तो बहाम्बर डा० एलेन पहले ही डिफ्थेरिनम—२०० यों या एम, सी० एम० शक्तिकी एक मात्रा दे देनेका उपदेश देते हैं। वे कहते हैं—इससे ही बीमारीकी तेजी घट जाती और ऐसा भी

हो सकता है, कि किसी दूसरी दवाकी जरूरत ही न पडे। रोगी थोडे ही समयमें धीरे धीरे आरोग्य हो जायगा। इस दवाकी ३० वीं शक्तिसे नीचे व्यवहार करनेपर लाभके बदले हानिकी सम्भावना ही अधिक है और कभी इसका दुबारा प्रयोग न करना चाहिये। डिपथेरिनमका प्रधान लक्षण है —बीमारी पहलेसे ही प्राणघातक रूप धारण करती है, सर्वाइकल ग्लैण्ड (गलेकी ग्रन्थि) फूल जाती है, जीभ फूल जाती है, जीभ लाल हो जाती है और जीभ ज्यादा मैली नहीं रहती, नाक, मुँह और थूक, बलगम इत्यादि स्राव और श्वास प्रश्वासमें भयानक सडी बदबू रहती है, तालुमूल और उसके अगल बगलकी जगहें फूल जाती हैं और काली दिखाई देती हैं, झिल्ली मोटी और काले रंगकी रहती है। रोग आरम्भ होते ही नाकसे खून निकलता है और बहुत कमजोरी दिखाई देती है, शरीरका ताप स्वाभाविककी अपेक्षा भी घट जाता है, नाडी तेज और क्षीण हो जाती है, रोगी अर्द्ध-चेतन-अवस्थामे पडा रहता है, कोई भी पीनेकी चीज सहजमें ही पी लेता है, पर पीनेपर या तो कै हो जाती है, या नाकसे बाहर निकल जाती है।

लैरिञ्जियल डिपथेरिया—और डिफ्थेरिया आरोग्य हो जाने बाद अगर पक्षाघात हो जाता है, तो भी इससे फायदा होता है।

डिपथेरिनम—यह डिपथीरिया रोगकी प्रतिषेधक दवा है। डा० एलेनने एक जगहपर कहा है—उन्होंने २५ वर्षों में प्रतिषेधक

(preventive), दवाके रूपमें जिन सब रोगियोंको डिस्थेरिनम सेवन कराया है, उनमेंसे किसीको भी डिफ्थीरिया नहीं हुआ।

क्रम—२०० से ऊँची शक्ति।

डलिकस प्रुरियेन्स।

(DOLICHOS PRURIENS)

(सेमके थोयेकी तरहके बीज कोषके ऊपरसे केशकी तरह रोंये निकालकर मूल धर्क तैयार होता है)—यकृतके ऊपर क्रिया प्रकट करनेके कारण—इसमें कामला, कब्जियत, सफेद रंगके दस्त, प्रभृति कितने ही लक्षण उत्पन्न होते हैं।

कामला, आँखके सफेद अंशका पीला पड़ जाना, इनके साथ ही सफेद रंगके दस्त, दाँत निकलनेके समय या गर्भावस्थामें बहुत अधिक कब्जियत, इसके साथ ही सफेद रंगका दस्त, रातमें सोने पर खाँसीका भ.कार रूपमें पड़ जाना, बाहरसे शरीरपर किसी तरहके उद्भेद नहीं दिखाई देते; पर समूचे शरीरमें बहुत अधिक खुजली होती है, निगलनेके समय गलेमें दर्द, मसूड़े फूले और दर्द-भरे, इस तरहकी कई बीमारियोंमें—डलिकसका व्यवहार करने पर बहुत अल्प फायदा होता दिखाई देता है।

वृद्धि (aggravation)—रातमें, खजलानेपर, दाहिनी ओर

सदृश—रसटक्स, बेल, हिपर, एसिड-नाइट्रि, चेलिडोन, पोडो, सलफर।

क्रम—६ ठी शक्ति। फारमुला—१।

ड्रोसेरा रोटण्डिफोलिया।

(DROSERA ROTUNDIFOLIA)

(युरोप, अमेरिका, घैवेरिया प्रभृति स्थानोंमें एक तरहका पौधा होता है। उसीसे टिंचर तैयार होता है)—यह दवा साधारणतः खाँसी, हूपिङ्ग खाँसी और कई दूसरी दूसरी श्वासनलीकी बीमारियोंमे ही अधिक व्यवहृत होती है। महात्मा हैनिमैनने ही इसकी पहले पहल परीक्षा की।

चरित्रगत लक्षण।—

१। हूपिङ्ग खाँसी—एकके बाद दूसरी खाँसीका दौरा, सवेरे ६।७ बजेके समय नींद खुलनेपर जबतक कुछ बलगमकी कै नहीं हो जाती, तबतक खाँसी नहीं घटती (कक्कस-कैक्टाई), दिनके समय—क्षण क्षण भरपर खाँसी आती है। रातमें हूपिङ्ग खाँसी (कोरैल-रुब्र), नाकसे खूनका स्राव, २। ढोलकी आवाजकी तरह ढब ढब या कुत्तेकी बोलीकी तरह खाँसी (बार्बेस्कम); आधी रातके बाद, छोटी माताके समय और छोटी माताके बाद खाँसी—इसके साथ ही दस्त और कै; ३। प्रक्रियेपर

सदृश—रसटक्स, बेल, हिपर, एसिड-नाइट्रि, चेलिडोन, पोडो, सलफर।

क्रम—६ ठी शक्ति। फारमुला—४।

ड्रोसेरा रोटण्डिफोलिया।

(DROSERA ROTUNDIFOLIA)

(युरोप, अमेरिका, बैवेरिया प्रभृति स्थानोंमें एक तरहका पौधा होता है। उसीसे टिंचर तैयार होता है)—यह दवा साधारणतः खाँसी, हूपिङ्ग खाँसी और कई दूसरी दूसरी श्वासनलीकी बीमारियोंमें ही अधिक व्यवहृत होती है। महात्मा हैनिमैनने ही, इसकी पहले पहल परीक्षा की।

चरित्रगत लक्षण —

१। हूपिङ्ग खाँसी—एकके बाद दूसरी खाँसीका दौरा, सवेरे ६।७ बजेके समय नींद खुलनेपर जबतक कुछ बलगमकी कै नहीं हो जाती, तबतक खाँसी नहीं घटती (ककस-कैक्टाई), दिनके समय—क्षण क्षण भरपर खाँसी आती है। रातमें हूपिङ्ग खाँसी (कोरैल-रूब्र), नाकसे खूनका स्राव, २। ढोलकी आवाजकी तरह ढब ढब या कुत्तेकी बोलीकी तरह खाँसी (वार्बेस्कम), आधी रातके बाद, छोटी माताके समय और छोटी माताके बाद

सर रखनेसे ही बच्चा खाँसने लगता है, ४। युवकोंके थाइ-सिस या यक्ष्माकी बीमारीमें—रातमें खाँसीका बढना, बलगममें खून या पीब; ५। गलेमें मानो पर या कुछ है, इसीलिये गलेमें सुरसुरी होती है और खाँसी आती है।

खाँसी—हूपिङ्ग खाँसी या हूपिङ्ग खाँसीकी तरह ही आक्षेपिक खाँसी, खाँसी—खूब जल्दी जल्दी आती है, यहाँतक कि रोगीको साँस लेनेका भी अवसर नहीं मिलता, प्राय किसी बँधे समयका अन्तर देकर खाँसीका वेग पैदा हो जाता है, ३।४ घण्टेका ...खाँसी, रातमें सोनेके लिये तकियेपर माथा ... हो जाती है, आधी रातके बादमें ही ... आवाज कुत्तेकी तरह, खाँसनेके समय ... दोनों तरफ हाथसे दबा रखता है। ... नहीं निकलता तो कै हो आती है, ... पाखाना भी हो जाता है। ज्यादा ... ड्रोसेराके प्रयोगके विशेष लक्षण हैं। ... भी खाँसी आती है। ऐसा मालूम ... बलगम जमा हुआ है। रोगी उसे ... खाँसा करता है, ऐसा मालूम होता है। अगले पृष्ठमें "द्रष्टव्य" ... बीमारियोंमें नैप्थालाइनके प्रयोग करनेपर कितनी

ही बार बहुत फायदा दिखाई देता है। ड्रोसेराके लक्षणवाली खाँसी में फायदा न होनेपर—मिनियैन्थिसका प्रयोग करें।

डा० एडमण्डने—हृपिङ्ग खाँसीमें बेलेडोना और ड्रोसेरा पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेका उपदेश दिया है। इससे प्राय १ सप्ताहमें ही फायदा हो जाता है। दूसरी दूसरी दवाओंके लिये—पराालिया देखिये (बेल ३x, ड्रोसेरा १x दें)।

नेप्थालाइनम—तेज आक्षेपिक खाँसी, खाँसी बहुत देरतक बनी रहती है।

कोरालियम—स्नायविक या हृपिङ्ग खाँसी, रोगी मिनिट मिनिट पर खाँसता है। (इसीलिये, अगरेजोंमें इसे "Minute gun Cough कहते हैं।) इसकी खाँसी दिनमें बहुत जल्दी जल्दी आती है और प्रत्येक बार रोगी सिर्फ दो एक बार खाक खाककर खाँसता है , पर रातमे भयकर आक्षेपिक खाँसी आरम्भ हो जाती है, खाँसते खाँसते दम घुट आता है, साँस छोडनेके समय गलेमें एक तरहकी कों कों आवाज होती है। चेहरा नीला पड जाता है और खाँसी रुकनेपर बच्चा मुर्देकी तरह निर्जीव हो पड़ता है।

मिफाइटिस—(एक प्रकारके जन्तुके मलद्वारकी ग्रन्थिको अल्कोहलमें गलाकर टिंचर तैयार होता है)—क्रम—१x ३x शक्ति। हृपिङ्ग खाँसीमे—इसकी भी खाँसी रातमें और सोने पर बढ जाती है, खाँसीके अन्तमें स्पष्ट हूप आवाज सुन पडती है, खांसते खाँसते दम घुटनेकी तरह हो जाता है. श्वास लेने और छोडनेमें तकलीफ और कभी कभी अकडन पैदा हो जाती है।

भोजनके बहुत देर बाद भी खाँसी आकर खायी हुई चीज कै हो जाती है, मिफाइटिसका प्रयोग करनेपर बहुत बार ऐसा दिखाई देता है, कि पहले तो खाँसी कुछ बढ़ जाती है, पर यह वृद्धि ज्यादा दिनोंतक नहीं रहती। दवाका सेवन करना बन्द करनेपर २।४ दिनोंमें ही धीरे धीरे असली खाँसी भी घट जाती है। (पराटिया अध्याय देखिये)।

एम्ब्राग्रिसिया—हूपिङ्ग खाँसीकी तरह आक्षेपिक खाँसी, इसका प्रधान लक्षण है, खाँसनेके बाद बहुत ही खराब डकार आना (एसिड-सल्फ, आर्निका, सैंगुनेरिया, वेरेट्रम-एल्बममें भी यही लक्षण है)। एम्ब्राकी—खाँसीके अन्तमें कौं कौं आवाज नहीं रहती, गलेकी आवाज बैठ जाती है (कौं कौं आवाज रहने-पर—सिना)। आर्स, साइमेक्स, लैकेसिस, एड्रास्टिपुरा, पराटिया—इनका अध्याय पढ़िये।

द्रष्टव्य :—हैनिमैन कहते हैं—जहाँ हूपिं खाँसीमें ड्रोसेराकी जरूरत दिखाई दे, वहाँ इसकी ३० शक्तिकी एक मात्रा, सिर्फ एक बार प्रयोगकर देना ही काफी होता है। पहली मात्राके प्रयोग के ७।८ दिनके बीचमें ही रोगी स्वस्थ हो जायगा। पहली मात्राके प्रयोगके थोड़े ही दिन बाद—कभी भी दूसरी मात्राका प्रयोग न करना चाहिये, इससे केवल पहली मात्राकी क्रिया ही न बढ़ेगी बल्कि असली बीमारीमें भी नुकसान पहुँचेगा, पर आजकलके किसी किसी चिकित्सकका कथन है, कि—इसकी १x शक्तिका जल्दी जल्दी प्रयोग करनेपर फायदा होता है। मैंने भी कई रोगियोंको—

३x शक्ति देकर बहुत जल्द फायदा होते देखा है, ३० शक्तिसे कोई भी फायदा नहीं हुआ। (टिंचर पर्टुसिन तथा फ्लुरो फार्मका आगे लिखा अंश देखिये)।

लैरिञ्जियल थाइसिस—स्वरभग, रोगी बहुत धीरे धीरे बोलता है। बलगम सख्त ढेलेकी तरह, छातीमें बेहद दर्द—मानो छातीमें जखम हो गया है, बंधे समयके अन्तरसे एक एक बार अत्यन्त आक्षेपिक खाँसी आती है, सन्ध्यामें एक बार और आधी रातके बाद एक बार बेतरह खाँसी बढ जाती है—यह लक्षण ड्रोसेरामें विशेष करके देखे जाते हैं।

उदरामय और आमाशय—ऊपर लिखी ड्रोसेरा की खाँसीके साथ किसी किसीको यदि अतिसार और रक्तामाशयकी बीमारी रहे,—ड्रोसेरासे वह आरोग्य हो जायगी।

डा० बोरिक कहते हैं—**फ्लुरो फार्म** नामकी दवा, दो पर्सेंट जलीय साल्यूशन (दवा—२ बूँद, पानी ९८ बूँद) इसकी दो चार बूँद मात्रामें खाँसीका प्रकोप घट जानेपर सेवन करना चाहिये। यह हूप खाँसीकी एक स्पेसिफिक दवा है।

सम्बन्ध—नक्स-वोमिका, सल्फर और सैम्बुकसके बाद ड्रोसेरा और ड्रोसेराके बाद कैल्केरिया, पल्स और सलफर फायदा करता है। साधारण खाँसीमें ड्रोसेराके बाद, अन्तरके समय सल्फर, वेरेट्रम, और यक्ष्माकी खाँसीमें—ड्रोसेराके बाद कोनियम ज्यादा फायदा करता है।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, सिना, कोनियम, पल्स, सलफर, वेरेट्रम।

सदृश—कोरैल-रुव, कूप्रम, ड्राइफोलियम, इपि।

वृद्धि (aggravation)—आधी रातके बाद, सोने, बिछावनसे शरीर गरम होने, पीने, गाना गाने, हँसनेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—२—३० शक्ति। फारमुला—४।

डियुबोइसिया।

(DUBOISIA)

यह दवा साधारणतः स्नायुमण्डल, आँख, श्वासयन्त्रके ऊपरी भागपर ज्यादा क्रिया करती है। स्नायुमण्डलपर क्रिया रहनेके कारण यहाँ ऐसा दिखाई दे, कि रोगीके अंग-प्रत्यंगोंमें ताकत नहीं है, चलनेमें झटका खाता है, पैर मानो शून्यमें गिरते हैं, काँपते हैं या पैर सुन्न जैसे हो रहे हैं, आँख मूँदकर खड़े रहनेपर गिर जाता है (ये सभी प्रायः लोकोमोटोर-एटैक्सिस अर्थात् गति-शक्ति-राहित्य रोगके लक्षण हैं), जहाँ ये लक्षण देखें वहीं इसका प्रयोग करें, फायदा होगा। आँखकी बीमारीमें—एट्रोपियाकी अपेक्षा भी यह ज्यादा फायदा करता है। इसीलिये, ब्लेफराइटिस प्रभृति आँखकी

बीमारीमें जहाँ एट्रोपियाकी जरूरत होती है, वहाँ इसका ' से ,' ग्रेनकी मात्रामें हाइपोडर्मिक इन्जेक्शन दिया जाता है। शक्ति-कृत औषधका सेवन करनेपर—नयी या पुरानी दोनों ही प्रकारकी आँख उठनेकी बीमारी, (conjunctivitis), रेटिनामें खूनकी अधिकता, आँखके सामने अँधेरा दिखाई देना चक्षुतारकाका फैल जाना (dilated), आँखके ऊपरी भागमें और भवोंके बीचके दर्दमें लाभ करता है। श्वासयन्त्रके ऊपरी अंशमें इसकी क्रिया होनेके कारण—स्वरयन्त्रका सूखापन, गला भारी, सूखी खाँसीके साथ साँसमें तकलीफ, प्रभृति उपसर्ग दूर हो जाते हैं। फेरिञ्जाइटिसकी बीमारीमें—काले रंगका और गोंदकी तरह बलगम निकलनेपर इससे फायदा होगा।

क्रिया-नाशक (antidote)—मार्फिया, पाइलोकार्पिन।

क्रम—३ शक्ति। फारमुला—४।

डल्कामारा।

(DULCAMARA)

(एक तरहके पौधेका मूल अर्क)—सर्दी लगकर जो सब बीमारियाँ होती हैं या ज्यादा सर्दी पड़नेपर जो सब रोग बढ़ जाते हैं, उनमें ही यह फायदा करता है। इसीलिये, बरसात और गर्मीकी ऋतुके आखिरी भागमें जब दिनमें तो गरमी पड़ती है

और रातमें सरदी रहती है, उस समय—एकोनाइटकी तरह डलकामारा भी फायदा करता है। पर एकोनाइट—सूखी सरदीके कारण पैदा हुई बीमारीमें और डलकामारा-तर—सीडवाली ठराड या सर्दी लग जानेके कारण पैदा हुई बीमारीमें फायदा करता है। (नैट्-सल्फ)।

यह श्लेष्मा-प्रधान, कण्ठमाला-ग्रस्त और टारपिड अर्थात जिनमें चलने या हिलने-डोलनेकी शक्ति नहीं रहती, ऐसे धातुके मनुष्योंकी तथा जो हमेशा बेचैन और उत्तेजित रहते हैं। सर्दी सहन नहीं कर सकते, उनके लिये फायदेमन्द है।

चरित्रगत लक्षण —

१। तर या सीड़भरी अथवा ठण्डी जगहमें रहने या काम करनेके कारण किसी बीमारीका पैदा हो जाना; २। मानसिक गड़बड़ी—किसी विषयमें भी ठीक बात नहीं बोल सकता, ३। सर्दी लगकर, उद्भेद बैठकर या पसीना बन्द होकर—शोथ, ४। अवस्था प्राप्त बालक-बालिकाओंके सर्द पानीमें खाली पैर घूमनेके कारण सर्दी लग जानेकी वजहसे पेशाब बन्द हो जाना, पेशाब दूधकी तरह सफेद; ५। गरमीके बाद सर्दी पड़नेके कारण या बरसातकी ऋतुमें या भींगी, सीड़-भरी जगहमें रहनेकी वजहसे उदरामय; ६। समूचे शरीरमें आमवात, खुजलाता है; पर खुजलानेके बाद बहुत जलन, सेकने या गर्मीसे बढ़ना, सर्दीसे घटना; ७। मुँहमें, कपालमें, माथेमें, दोनों कनपटीमें उद्भेद, उसमें भूरी पीले रंगकी परदी जमती है। खजलानेपर खून निकल आता है।

८। ऋतुके पहले घमौरीकी तरह शरीरपर एक तरहके दाने (rash) निकलना।

सर्दी-खाँसी—सर्दी लगकर, पानीमें भींजकर या गर्मीके बाद एकाएक सर्दी लगकर सर्दी-खाँसी होनेपर—डलकामारा उपयोगी है।

पक्षाघात—सर्दी लगकर साधारण हाथ-पैर और कमरमें दर्द होकर धीरे धीरे वात, पक्षाघात तककी बीमारी हो जा सकती है। सर्दी लगकर पक्षाघात होनेपर—डल्कामारा, रसटक्स, और कास्टिकम—ये तीन दवाएँ फायदा करती हैं, पर उनमे प्रभेद यह है, कि डल्कामारा—रोगकी पहली अवस्थामें और रसटक्स—नयी अवस्था बीतकर बीमारी कुछ पुरानी पड जानेपर और कास्टिक—सबके अन्तमें जब बीमारी पुराना आकार धारण करती है, तब फायदा करता है। सन्यास (एपोप्लेक्सी) रोग होने बाद पक्षाघात होनेपर कास्टिकम फायदा करता है। सर्दीसे रोग बढ़ने और सर्दी लगकर बीमारी पैदा होनेका लक्षण—बैराइटा-कार्ब्में भी है। टानसिलका प्रदाह, गलेमें जखम, जीभ और मसूढे अकड़े, जीभका पक्षाघात इत्यादि बीमारियोंमें डलकामाराकी तरह बैराइटा-कार्ब भी फायदा करता है। इसीलिये बैराइटाके बाद डल्कामारा और डलकामाराके बाद बैराइटासे बहुत फायदा होता है। अगर शीतके दिनोंमें, सर्दी लगकर बीमारी बढ़ गयी हो तो—नैट्रम-सल्फ भी लाभ करता है।

इसके अलावा—रज, स्तनका दूध और प्रसवके बादका क्लेद-स्राव (Lochia) बन्द, वात-मिला प्लुरासिस, वक्षशोथ (Hydrothorax), दमा, अतिसार, आमाशयकी बीमारी—बरसात या गर्मीमें सर्दी पड़नेके कारण बढ़ जाना, गर्दन और कमरकी दर्द-भरी अकड़न, पेटकी गड़बड़ीसे आमवात—गरमीसे बढ़ना, सर्दीसे घटना, (यही डलकामाराका विषम लक्षण है)। सर्दी या बरसातमें पकजिमाका आरम्भ होना और गरमीमें लोप हो जाना, पुराना आमवात—सर्दी पड़ते ही आरम्भ हो जाता है और जाडेभर रहता है—पारा या मर्करी खानेके बाद मुँहसे लार बहना इत्यादिमें भी इसका व्यवहार होता है।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डी हवामें, सर्दी और बरसातमें, पानीमें भींजनेपर, रातमें, विश्रामसे।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, कुप्रम, इपि, कैलि-कार्ब, मर्क।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—१।

इलेप्स कारैलिनस।

(ELAPS CORALLINUS)

(ब्रेज़िल देशके एक विषैले साँपके विषसे तैयार होता है। क्रोटेलस अध्याय देखिये)—शरीरके किसी भी द्वारसे निकलेकाले

स्याहीकी तरह काले रंगका न जमनेवाला रक्त-स्राव देखते ही पह इस दवाको स्मरण करें। इसका सभी, यहाँतक कि कानका मै भी काला होता है। ठण्ड सहन नहीं होती।

यक्ष्मा रोगीका शरीरको क्षय करनेवाला अतिसार, वमन, ज मिचलना, पाकस्थलीमें अम्ल इकट्ठा होना, भूख लगनेपर कुछ खानेसे सरमें दर्द होने लगना, पाकस्थलीमे एकाएक दर्द होने लगना, अन्न-नलीका आक्षेप और कोई चीज खाने पीनेपर अन्न नलीमें कुछ देरतक अडे रहने बाद एकाएक पाकस्थलीमे उतर आना प्रभृति इसके विशेष लक्षण है। इलैप्सका एक प्रधान लक्षण है—फल या ठण्डी कोई चीज़ खाना-पीना रोगीको बिलकुल ही सहन नहीं होता, ठण्डी चीज खाते-पीते ही ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमे बरफ जमा हुआ है। इलैप्स—शरीरके दाहिनी ओर ज्यादा क्रिया करता है, और ऊपर लिखी बीमारियोंके सिवा नीचे लिखी और भी दो एक बीमारीमे इसका सामयिक रूपसे व्यवहार होता है।

कानकी बीमारी—एकाएक रातमे कान बन्द हो जाता है, दर्द या तकलीफ नहीं रहती, कुछ सुन नहीं पाता, कानमें साँ साँ आवाज होती है। कान कटकट किया करता है, कानका पुराना स्राव, कानसे सुन नहीं पडता, बाये कानसे पीव निकलता है।

नाककी बीमारी—बहुत दिनोंका पुराना बदबूदार नाकका स्राव, स्रावका रंग हरा-पीला मिला, नाकके भीतर हरे

रंगकी पपड़ी जमती है। सूखी पपड़ीसे नाकको राह रुक जाती है, इसके अलावा नाकसे खून गिरता है। नाककी जड़में दर्द और चारों ओर उद्भेद निकलते हैं, लक्षण इस दवाके अन्तर्गत है। रोगीको जरा भी ठण्ड लगनेपर सर्दी हो जाती है।

फेफड़ेकी बीमारी—तेज खाँसीके बाद फेफड़ेसे उसी तरहका काले रंगका खून निकलनेके अलावा—यक्ष्मा, निमोनिया, प्रभृति किसी भी बीमारीमें दाहिने फेफड़ेके ऊपरी अंशपर यदि बीमारीका हमला हो और प्रत्येक बार खाँसी आनेपर छातीमें फाड़ डालनेकी तरह दर्द हो तो—इलैप्स फायदा करता है।

ऊपर लिखी बीमारियोंके अलावा—शरीरके दाहिनी ओरका पक्षाघात और बगलमें बार बार यदि गाँठ निकलकर पका करती हो—इलैप्ससे फायदा होगा।

सदृश—क्रोटेलस, कार्बो, पल्सेटिला, आर्सेनिक, लैकेसिस।
क्रम—६—३०; २०० शक्ति।
फारमुला—८।

इलाटिरियम।

(ELATERIUM)

(जंगली कोहड़ा) पेटकी बीमारियाँ, ज्वर, जैसे पैदा हुए हैजेके लिये इसके साथ कामरा और हैजामें इसका बहुत दिनोंसे अत्यन्त सफलता-पूर्वक प्रयोग होता आ रहा है।

बहुत ज्यादा परिमाणमें पतले दस्त और वमन, एक तरहका शोथ (dropsy), देरी देरी, वरसाती पानीमें भींजना और तर सीड-भरी ऋतुमें बीमारी पैदा होना प्रभृति इसके विशेष लक्षण हैं।

अतिसार या हैजा—दस्तका रंग हलका हरा, परिमाणमें खूब अधिक, पानीकी तरह पतला और उसके साथ ही फेन मिला रहता है। पाखाना बडे जोरसे निकलता है, पाखाना होनेके पहले पेटमें बहुत दर्द। इस बीमारीके साथ सिहरावनका भाव, जम्हाई आना, अँगडाई लेना प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं। (क्रोटोनका अध्याय देखिये)

इलाटिरियमके साथ दो एक दवाका प्रभेद —

वेरेट्रम एल्बम—इसमें चावलके धोवनकी तरह या सडे कोहडेकी तरह चूरचूर मलका लक्षण रहनेपर भी इलाटिरियमकी तरह हलके हरे रंगका दस्त भी हुआ करता है, पर उसमें फेन नहीं रहता है, पाखाना होनेके पहले दोनोंमें ही पेटमें दर्द दोनों ही दवामें है, वमन होनेके समय पेट भीतरकी ओर भयानक रूपसे खिंचा रहता है।

आइरिस-वार्स—पाखाना पीला और हरा मिले हुए रङ्गका, मलमें पित्त या तेलकी तरह पदार्थ मिला रहता है, इसके साथ ही मिचली, खट्टी कै, पित्तकी कै और पेटसे लेकर गलेतक जलन रहती है, इलाटिरियममें—यह सब कुछ नहीं रहता।

पोडोफाइलम—मलका रङ्ग पीला या हल्का पीला, सड़ी दुर्गन्ध, इसमें पाखाना—इलाटिरियमकी तरह परिमाणमें बहुत अधिक और वेगसे निकलता है, पेटमें दर्द नहीं रहता। इसका एक और भी लक्षण है—आधी रातके बादसे सवेरे तक बहुत ज्यादा परिमाणमें दस्त आते हैं, इसके बाद यद्यपि दिन भर दस्त हुआ करते हैं, परन्तु परिमाण घटता ही जाता है, दस्तमें बहुत बदबू रहती है।

सल्फर—रातके अन्तिम भागमें आरम्भ होकर दिनके दश बजेतक दस्त आते हैं, इसके बाद बन्द हो जाते हैं। पोडोफाइलममें दिन भर दस्त आते हैं।

सविराम ज्वर—ज्वरके साथ ऊपर लिखे लक्षणोंके दस्तके साथ हैजाकी तरह दस्त आते हैं और शीत तथा कम्प भी रहता है। यह शीत और कम्प रुक जानेपर ही शरीरपर पित्ती निकल आती है (एपिस, इग्नेशिया, रसटक्समें सविराम ज्वरमें पित्ती निकलती है, परन्तु यह अलग अलग वक्तोंपर निकलती है।) इलाटिरियममें शीतावस्थामें माथा तथा हाथ पैरमें दर्द होता है बहुत अँगड़ाई आती है, जम्हाई आती है और आँख नाकसे पानी गिरता है, तथा कमर और मांसमें बहुत दर्द होता है। उत्तापावस्थामें—प्यास, सरमें दर्द, पेटमें दर्द, समूचे शरीरमें दर्द, वमन मिचली और फेनकी तरह दस्त आया करते हैं। पसीनेवाली अवस्थामें—कोई भी उपसर्ग नहीं रहता, बोखार छूट जानेपर पित्ती निकलती है और खुजलाया करती है।

वात—हाथ पैरकी अँगुलियोंमें, अँगूठे, घुटने प्रभृतिमें तेज दर्द, अँगूठेमें गठिया वातकी तरह दर्द, वातका दर्द निचले अङ्गमें फैलता है, उरु-सन्धिमें दर्द—इसके साथ ही अतिसार।

आमवात—सविराम, मैलेरिया ज्वर आदि छूटकर अगर एकाएक पित्ती निकल आये तो इलाटिरियम फायदा करता है। इस बीमारीकी—रसटक्स वगैरह और भी कितनी दवाएं हैं, पर बीमारी पुरानी पड जानेपर नेट्रम-म्यूर और कैल्केरिया अधिक फायदा करते हैं एपिस अध्याय देखिये)।

सदृश—कोलो, क्रोटन, वेरेट, सिकेलि, एपिस, इग्नो, रस।

क्रम—६x, ३० शक्ति। फारमुला—१

एपिजिया रेपेन्स।

(EPIGEA REPENS)

(एक तरहके गाछके कच्चे पत्तेसे टिंचर तैयार होता है। इसमें आरब्यूटिन और फ्रूसिक एसिड नामका एक तरहका सांघातिक उद्भिज-विष रहता है)—मसाना, मूत्राशय, मूत्रनली प्रभृतिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। पुराना मूत्राशय प्रदाह, मूत्रकृच्छ्रता, पेशावके साथ पीब, श्लेष्मा, रक्त और यूरिक-एसिड निकलना, मूत्रपथरी, पेशावकी तलीमें महीन बालूके कण की तरह पदार्थ इकट्ठा होना, मसानेके भीतरवाली श्लैष्मिक-

झिल्लीका प्रदाह (Pyelitis), इच्छा न रहनेपर भी पेशाब निकल जाना प्रभृति कई बीमारीकी यह एक उत्तम दवा है। रोगकी प्रबल अवस्थामें शक्तिकृत दवाकी अपेक्षा इसका मूल अर्क ५-१० बूँद मात्रामें नित्य चार पाँच बार तीन घण्टेका अन्तर देकर सेवन करने से जल्दी फायदा होता है। यह सरके दर्दमें भी लाभदायक है। (नैद्रम-म्यूर अध्याय देखिये)।

सदृश—चिमाफिला, पैरिरा, इयुवा प्रभृति।

क्रम—ϕ, १५—३५ शक्ति। फारमुला—३।

इकुइज़िटम हाइमेल।

(EQUISETUM HYEMALE)

(एक प्रकारके गाछको कच्ची अवस्थामें कुचलकर मूल अर्क प्रस्तुत होता है)। मूत्राशयपर इसकी प्रधान क्रिया होती है और यह कई एक साधारणतः पेशाब सम्बन्धी रोगोंमें इसका अधिक प्रयोग होता है। पेशाबके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा रहता है। इकुइजिटम—इसमें माइग्निशियाके उपादान मिलते हैं। (१) मूत्राशयमें एक प्रकारका दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो मूत्राशय पेशाबसे भरा, पेशाब होनेपर भी यह भाव दूर नहीं होता; (२) हमेशा पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब हो जानेपर भीषण दर्द (३) साफ पानीकी तरह अधिक परिमाणमें पेशाब

हो जानेपर भी पेशावकी इच्छा और वेग दूर नहीं होता. (४) पेशाव करनेके समय मूत्रनलीमें फाटने फाडनेकी तरह तेज दर्द और जलन (५) अभ्यासके कारण रातमें विछावनमें पेशाव कर देना; (६) वृद्धा स्त्रियोंके मूत्राशयका पक्षाघात, (७) गर्भावस्थामें प्रसवके बाद पेशाव न होना यह इकुइजिटमका चरित्रगत लक्षण है।

पेशावकी बीमारी—कैन्थेरिस अध्याय देखिये।

वृद्धि (aggravation)—दाहिनी ओर, दवावसे, छूनेपर, वैठने पर।

ह्रास (amelioration)—सोनेपर, सन्ध्यामें।

सदृश—एपिस, कैन्थर, चिमाफिला, लिनेरिया।

क्रम—/, ६, ३० शक्ति। फारमुला—२

इरेक्थाइटिस हिरासिफोलिया।

(ERECHTHITES HIERACIFOLIA)

(एक प्रकारके गाछका मूल अर्क) रक्तस्रावको दूर करना ही इसका प्रधान क्रिया है। इसका खून उज्वल चमकीले लाल रंगका होता है, वह नाक तथा मुँह, पाकस्थली, फेफडे, मलद्वार, पेशावकी राह, जरायु प्रभृति शरीरके किसी भी द्वारसे निकले, इसका प्रयोग हो सकता है और इससे उपकार भी होता है।

आमाशय या और भी कोई बीमारी हो, मलद्वारसे खून निकलनेके साथ ही साथ रोगीको ज्वर भी आता हो तो एकोनाइटके साथ और पेटमें बहुत ज्यादा ऐंठनका दर्द रहनेपर कोलोसिन्थ या इपिकाकके साथ कोई कोई पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेका उपदेश देते हैं। इसका रोगी अपना शरीर कभी कभी आगकी तरह गरम या कभी खूब ठण्डा अनुभव करता है।

सदृश—इरेजिरन, मिलिफोलियम, हैमामेलिस।

क्रम—१,—१x शक्ति।   फारमुला—३।

इयुपेटोरियम परफोलियेटम।

(EUPATORIUM PERFOLIATUM)

(युनाइटेड स्टेट्स और कैनाडाके एक तरहके पौधेसे मूल अर्क तैयार होता है)—मैलेरिया, इन्फ्लुएञ्जा या किसी दूसरी तरहके ज्वर या बीमारीमें शरीरमें हड्डी टूट जानेकी तरह दर्द होना, सर-दर्द, कमरमें ऐंठन, पित्तकी कै होना इत्यादि इस दवाके विशेष लक्षण हैं।

१। सारे शरीरमें कुचल जाने या टूट जानेकी तरह दर्द ; २। छाती, पीठ, माथा, हाथ-पैर, हाथकी कलाईकी हड्डीमें इस तरहका दर्द मानो हड्डी स्थानसे खिसक गयी है ; ३। सविराम-ज्वरमें—एक दिन दिनके ७ बजे, दूसरे दिन दोपहरके समय जाड़ा देकर बोखार

ाता है, जाडा घटते ही पित्तकी कै होने लगती पानी-पीनेपर ाडा भी बढ जाता है और कै होने लगती है, जाडा लगनेके हले और समय हड्डियोंमें दर्द बढ जाता है ; ४। जाडा लगनेके हले, जाडेके समय और बोखारके समय तेज़ प्यास ; ५। जाडा ागनेके पहले प्यास रहनेपर भी रोगी कपकपी और बोखार ानेके डरसे ज्यादा पानी नहीं पीता, उत्तापावस्थामें सर-दर्द ढ़ जाता है, ६। पुरानी खाँसी, हेक्कि ज्वरके साथ छातीमें अलग सर्दी और दर्द, हाथसे छाती दबा रखता है, ७। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक चला जाता है।

सविराम ज्वर—ज्वरका समय सवेरे ७ बजे या ७ बजेसे ९ बजेके भीतर अथवा एक दिन ७ बजेसे ९ बजेके भीतर, दूसरे दिन १२ बजनेके समय। यह आखिरी दिनका बोखार पहले दिनकी बनिस्वत कम होता है, ज्वर आनेके अर्थात शीतावस्थाके पहले—पानी पीनेका बहुत अधिक आग्रह रहता है (शीतावस्थाके पहले प्यास—कैप्सिकममें भी है, उसमें पानी पीनेपर जाडा बढता है, वमन नहीं होता), यह पानी पीना देखकर ही रोगी समझ सकता है, कि इस वार उसको बोखार आयगा। इसके वाद जितना ही पानी पीता है, उतना ही शीत और कम्प बढता है। इस समय बहुत प्यास,जी भरकर पानी पी नहीं सकता, कारण इससे ठण्ड बढ जायगी। इस समय शरीरमें फूटन, जम्हाई आना, कमरमें दर्दऔर हड्डी के भीतर खासकर हाथ-पैर और कमरकी हड्डीके भीतर भयानक दर्द

मालूम होता है, शरीरमें इस तरहकी पेंठन और दर्द होता है, कि मानो हड्डी टूट गयी। शीत और उत्तापावस्थाके बीचके समयमें तीता स्वाद और पित्तकी कै होती है और यह जितना ही पानी पीता है, उतना ही वमन होता है। उत्तापावस्थामें—प्यास कुछ घट जाती है, पर सर-दर्द इतना अधिक होता है, कि सर नहीं उठा सकता, इस समय पानी पीनेपर भी जाडा मालूम होता है, समूचा शरीर यहांतक कि हड्डीके भीतरतक अकड़नका दर्द होता है। पसीनेवाली अवस्थामें—पसीना थोड़ा ही होता है या बिलकुल ही नहीं होता। इसका एक दूसरा प्रधान लक्षण है—यदि जाड़ा अधिक मालूम होता है, तो पसीना कम होता है, और पसीना होनेके बाद बदन का दर्द घट जाता है हड्डीका दर्द—यह शीतावस्थामें अधिक रहता है, उत्तापावस्थामें—कुछ घट जाता है। पसीनेवाली अवस्थामें—हड्डीमें दर्द खूब कम होता है, यहांतक कि एकदम ही नहीं रहता, पर सरका दर्द बिलकुल ही नहीं घटता बल्कि बढ़ जाता है। सविराम ज्वरमें—इयुपेटोरियम-पर्फोके साथ दूसरी दूसरी दवाओं का प्रभेद —

नैट्रम-म्यूर—ज्वरका समय ११ बजे। शीत, उत्ताप और पसीना—सभी समय प्यास, इसमें इयुपेटोरियमकी तरह शरीरमें दर्द नहीं रहता, पसीना होते ही सरका दर्द घट जाता है। (इयुपेटोरियममें ऐसा नहीं होता)।

इग्नेशिया—इसमें केवल शीतावस्थामें प्यास, उत्ताप पसीना आदि किसी भी अवस्थामें प्यास नहीं रहती। यह प्यास ही—

इग्नेशियाके निर्वाचनका प्रधान लक्षण है। इयुपेटोरियममें—शीतके पहलेसे ही प्यास रहती है।

इयुपेटोरियम-पर्प्युरियम—ताजी सोरसे इसका मूल अर्क तैयार होता है ज्वर अक़सर एक दिन नागा देकर आता है। शीतावस्थाके पहले-हाथ-पैरकी हड्डीके भीतर खूब दर्द रहता है। शीतावस्थामें—प्यास बिलकुल नहीं रहती, शीत कमरके ऊपर पीठसे आरम्भ होता है, शीत घट जानेपर मिचली होती है (इयुपेटोरियम-पर्फोमि—इस समय पित्तकी कै होती है)— उत्तापावस्थामें—खूब प्यास और हड्डीके भीतर दर्द (इयुपेटोरियम-पर्फोमि—इस समय प्यास कम रहती है)। पसीनेवाली-अवस्थामें— हिलने डोलनेपर जाड़ा मालूम होता है। ज्वर छूटे रहनेवाली अवस्थामें, सरमें चक्कर आता है, बोखार एकदम नहीं छूट जाता। इसका एक और भी विशेष लक्षण है —ज्वरके साथ पेशाबमें जलन और तकलीफ तथा पेशाबमें श्लेष्माकी तरह निकलता है। स्त्रियोंकी बीमारीमें यदि पेशाबके साथ जलन और तकलीफ और श्लेष्मा निकलता है, तो सबके पहले इयुपेटोरियम-पर्प्युरियमका प्रयोग करना चाहिये। केन्थरिस और कैप्सिकममें भी पेशाबके समय जलनका लक्षण है, परन्तु उनका लक्षण अलग ही है। कैप्सिकममें—शीत दोनों कन्धोंके बीचसे आरम्भ होता है और शीतके समय शरीर बरफकी तरह ठण्डा हो जाता है। इयुपेटोरियममें—शरीर ज्यादा ठण्डा नहीं होता।

इन्फ्लुएंजा—यदि ऊपर लिखे इयुपेटोरियमप-पर्फोलि इस बीमारीमें भी रहें तो यह बहुत फायदा करता है।

द्रष्टव्य :—इन्फ्लुएंजा रोगमें—जब नाकसे लगातार पानीकी तरह सर्दी टपका करती है और उसके साथ ही और थोड़ा थोड़ा बोखार रहता है, उस समय दूसरी दूसरी ओंकी अपेक्षा—<u>एरालिया-रेसिमोसा</u> (Aralia Racemosa) की दवा बहुत फायदा करती है। साधारणतः नयी सर्दीमें भी लिखे लक्षणोंमें यह ज्यादा फायदा करता है। एरालियामें— तरहकी दम घुटा देनेवाली आक्षेपिक खाँसी आती है, छातीमें साँय आवाज होती है, साँस खींचनेपर जोरसे खाँसी आने ी है, यह रातके समय, पहली नींदके बाद बढ़ती है, बहुत देरतक ने बाद थोड़ा-सा श्लेष्मा निकलनेपर यह खाँसी घट जाती नहीं तो नहीं घटती। एक तरहकी सर्दी—जिसमें नाक, आँख च्चे पानीकी तरह बलगम निकलकर पीछे वह गाढ़ा हो जाता ौर अन्तमें दमाकी तरह खिंचाव होता है, एरालिया—उसकी महौषधि है। (इसका अध्याय देखिये)।

खाँसी—लेरिञ्जाइटिस या किसी दूसरे तरहकी खाँसी, साथ ही गला जकड़ जाना और गलेमें जकड़नकी तरह बहुत यह दर्द धीरे धीरे स्वरयन्त्रसे उतरकर नीचे टेटुआ और मनुकी वायुनलीमें चला आता है। खाँसनेपर माथेमें और मि चोट लगती है, इसीलिये, रोगी हाथसे छाती दबा रखता

, खाँसनेपर कभी बहुत थोडा बलगम निकलता है या कभी कभी बिलकुल ही नहीं निकलता, चित सोनेपर खाँसी बहुत बढ जाती है। खाँसीके साथ सारे शरीरमे दर्द।

आभास—इयुपेटोरियम-पर्फोलियममें—कमर हाथ और पैरमें बहुत अकडनका दर्द और ऐंठन रहती है, इस दर्दको ध्यानमें रखकर उसका प्रयोग करनेपर—ब्राङ्काइटिस, खाँसी, सर्दी, इन्फ्लुएंजा और श्वासयन्त्रकी और भी कितनी ही बीमारियाँ बहुत जल्द आरोग्य हो जाती हैं।

वृद्धि (aggravation)—चित सोनेपर, शरीर हिलानेपर, शरीरका ओढना उतारनेपर।

ह्रास (amelioration)—माथा नीचेकी ओर लटकाकर सोनेपर, घरके भीतर, उठनेपर।

बादकी दवा (follows well)—नैट्र-म्यूर, ट्यिुबक्यु, सिपि।

सम्बन्ध—इसके प्रयोगके बाद नैट्रम और सिपिया बहुत लाभ करते हैं।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—२x—२०० शक्ति। फारमुला—२।

इयुफोर्बियम ।

(EUPHORBIUM)

मोरक्को देशके एक तरहके गुल्मकी गोंदकी तरह रसको चूर कर टिंचर तैयार होता है)—इसमें क्रोटोन और जैट्रोफाकी तरह बहुत ज्यादा परिमाणमें दस्त, कै और आतिसारिक हैजाके लक्षणकी तरह लक्षण प्रकट होते हैं, पर इसमें हैजाके लक्षणके सिवा—मस्तिष्ककी उत्तेजना, उन्माद, विकारमें अट-सट बकना प्रभृति और भी कितने ही मस्तिष्कके लक्षण उत्पन्न होते हैं। इसीलिये, पक्वाशय आमाशय-प्रदाह (गेस्ट्रो-एण्टेराइटिस), विसूचिका प्रभृति बीमारियोंमें जहाँ—जट्रोफा, इयुफोर्बिया-कोरोलेटा प्रभृति दवाओंके लक्षणके साथ कोई मस्तिष्कका लक्षण भी मौजूद रहता हो,—वहाँ इयुफोर्बियमका प्रयोग होना उचित है। उरु-सन्धियों (हिप-ज्वायण्ट) और गुह्यास्थि (Coccyx) में दर्द ; पैन्सरका दर्द, हड्डीके भीतर जलन करनेवाला दर्द, इन्फ्लुएञ्जाकी बीमारीमें छींक, आँख-नाकसे पानी गिरना, सूखी खाँसी, श्वास रोगमें—दिन रात आक्षेपिक खाँसी, गालमें होनेवाला विसर्प, गैंग्रीन (सड़न), एकजिमाकी बीमारीमें पीब-भरे दाने, बहुत दिनोंका और धीमी गतिवाला, गुह्यरोग प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें भी इससे फायदा दिखाई देता है।

इयुफोर्बिया-कोरोलेटा—क्रोटन अध्याय देखिये। क्रिमिके लक्षणों की तरह मलद्वारमे असह्य खुजली, इसकी वजहसे सो नहीं सकता, छटपटाता और चिल्लाता है। क्रम—३x

इयुफोर्बिया-लैथाइरिस—(पके फलके सूखे बीजसे विचूर्ण तैयार होता है)—यद्यपि इसका बहुत-सी बीमारियोंमें प्रयोग होता है, तथापि विकार (डिलिरियम), अभिभूत भाव और एकदम बेहोशकी तरह पडा रहना (कोमा), आँखकी पलकें फूल कर आँख बन्द हो जाना, इरिथिमा नामका एक तरहका चर्म-रोग (इरिथिमाका लक्षण है—त्वचामे सामान्य प्रदाह पैदा होकर क्रमसे शरीरपर नाना प्रकारके लाल रगके दाग निकलते हैं, यह पहले मुँहमें आरम्भ होकर, क्रमशः रोयेंदार जगहोंमें ७ से ६ दिनोंके बीचमें समूचे शरीरमे फैल जाता है, फूलता है और जलन होती है।) बहुत ज्यादा मात्रामें पेशाब होना, अण्डकोषका प्रदाह और जखम, उसमें बेतरह खुजली और जलन, पहले—हैकिङ्ग-कफ (खुसखुसी खाँसी) की तरह होकर इसके बाद हूपिङ्ग खाँसीमें यह बदल जाती है, खाँसते खाँसते वमन या दस्त हो जाता है। बोखारके बढनेके साथ ही साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पसीना होना। हृत्पिण्डकी बीमारीमें—हृत्पिण्डका क्षीण पड जाना, हृत्पिण्डके भीतर मानो कोई चिडिया फडफडा रही है, इस तरहका अनुभव होना, नाडीकी गति मिनिटमें १२० या १२५ बार, अनियमित स्थूल नाडी प्रभृति कई लक्षणोंमें और बीमारियोंमें इससे बहुत फायदा होता दिखाई देता है (फारमुला—७)।

सदृश—क्रोटन, जैट्रो, फोलवि।
क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, ओपियम।
क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—२।

इयुफ्रेशिया आफिसिनेलिस।

(EUPHRASIA OFFICINALIS)

(यूरोपके एक तरहके पौधेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है) आँख और नाककी श्लैष्मिक झिल्लीका प्रदाह, आँखसे खाल उधेड़ने और जलन करनेवाला आँसू निकलना, छींकी मात्राके साथ नाक और आँखसे पानी गिरना, नयी सर्दी इत्यादि इस दवाके विशेष लक्षण हैं।

१। हूप-खाँसीमें, साँसनेके समय आँखसे लगातार पानी गिरना और सिर्फ दिनके समय खाँसी आना; २। अनियमित और बहुत तकलीफ देनेवाला ऋतुस्राव—यह स्राव सिर्फ एक घण्टेतक होता रहता या बहुत देरसे ऋतु होकर, बहुत थोड़ा स्राव होता है और अकसर एक दिन ही रहता है, ३। सबेरे बिछावनसे उठने बाद रोगी बहुत खाँसता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें बलगम निकलता है। ये ही तीन इयुफ्रेशियाके चरित्रगत लक्षण हैं।

आँखकी बीमारी और आँख उठना—आँखके भीतर लाल हो जाना, आँखोंका प्रदाह, आँखकी पलकोंका फूल

जाना, आँखके भीतर जखम, आँखकी पुतलीके ऊपर गोंदकी तरह पपडी जमना, आँखसे जो स्राव निकलता है, वह जहाँ लगता है, वहींकी मानो खाल उधड जाती है। आँखमें दीपक या सूर्यकी रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं होती (Blefiitis), क्योंकि उससे तकलीफ बहुत बढ जाती है, आँखका स्राव लगकर गालपर दाग पड जाता है। पीवकी तरह स्राव, स्वच्छत्वचामें (cornea) लगा रहता है। इसीलिये रोगी अच्छी तरह देख नहीं पाता इत्यादि लक्षण इयुफ्रेशियामें खासकर पाये जाते है। चोट वगैरह लगनेके बाद आँखमें प्रदाह हो जानेपर—आर्निका ही ठीक दवा है; पर जबतक चोटका दाग या चोटकी तकलीफ रहेगी, उतनी ही देरतक आर्निका फायदा करेगा, इसके बाद यदि ऊपर बताये इयुफ्रेशियाके लक्षण रह जायं तो—इयुफ्रेशिया ही फायदा करेगा। पलकोंपर फुन्सी होनेपर इयुफ्रेशियाकी जरूरत पडती है। हिपर-सलफरमें—आँखके चारो ओर जखम और छोटी छोटी फुन्सियाँ होती है, आँखमें ठण्डा पानी सहन नहीं होता। मर्कुरियस-सोल—आँख उठनेकी एक महोषधि है और इयुफ्रेशिया की सदृश दवा है, पर होता यह है, कि मर्कुरियस-सोलका स्राव पतला रहता है और इयुफ्रेशियाका—स्राव गाढा, आर्सेनिक और रसटक्स नामक दवामें भी आँखोंसे पानी गिरनेका लक्षण है, रसटक्समें—आँखका पानी जहाँ लगता है, वहीं खाल उधड जाती है और पीवकी तरह एक तरहका गाढा स्राव निकलता है, रसटक्सकी क्रिया दाहिनी ओरकी आँखपर ही ज्यादा होती है, इयु-

फ्रेशिया—दोनों आँखोंकी बीमारीमें ही फायदेमन्द है। आर्सेनिक का स्राव—खाल उधेड़नेवाला रहता है और उजली त्वचा (कनीनिका) पर छाले पड़ जाते हैं, इसमें आँखमें बहुत अधिक जलन होती है और आर्सेनिकका विशेष लक्षण—आधी रातके बाद रोग लक्षणोंका बढ़ना—इस रोगमें भी यह लक्षण रहना चाहिये। (पल्सेटिला-सिपा अध्याय देखिये)। इयुफ्रेशियाके भीतरी सेवन करनेके समय इसका लोशन बनाकर (चुआये हुए पानीमें १ आउन्स, मदर-टिंचर—१० बूँद) आँखमें डालनेपर और भी जल्दी फायदा होता है और तकलीफ घट जाती है। (आगे "द्रष्टव्य" की जगह देखिये)।

ऊपर लिखी दवाओंके सिवा यदि किसीको बहुत ज्यादा गरमीसे एकाएक आँखोंमें प्रदाह पैदा हो जाये—ब्रोमियम; बरसाती ठण्डसे प्रदाह होनेपर—रसटक्स; गरमीके बाद सर्दी लगकर बीमारी होनेपर—डलकामारा फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—सन्ध्यामें, सोनेके समय, घरमें, गरमीमें, शीतमें, नींदके बाद।

ह्रास (amelioration)—शय्यासे उठनेपर।

बादकी दवा (follows well) कैल्के, मार्क, नक्स, पल्स, रस, सल्फ।

सम्बन्ध—आँखकी बीमारीमें यह पल्सके सदृश और सिपाके ठीक विपरीत है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कास्टिकम, कैम्फर, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७ दिन।

क्रम—६ x—३० शक्ति। फारमुला—२

द्रष्टव्य :—आँख उठनेपर आँखमें बहुत दर्द और तकलीफ होती है, आँख करकराती है, जलन होती है, पलक हिलानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो भीतर काँचके टुकडे पडे हैं जो गड रहे हैं, लगातार पानी निकला करता है, पपडी जमती है, रोगी रोशनी की ओर देख नहीं सकता, सो नहीं सकता और आँखका सफेद अंश लाल हो जाता है। काच पोकाके रंगका बढिया-मैंजेण्टा रंग— अन्दाज ४।५ ग्रेन, १ आउन्स डिस्टिल्ड वाटर या गुलाब-जलमें मिलाकर, यही लोशन २।४ बूँद, दिन रातमें ६।७ बार आँखमें डालनेपर, २।१ दिनमें ही प्रदाह और लाली घटकर आँख स्वाभाविक अवस्था में आ जाती है। यदि चोट लगने या किसी दूसरी वजहसे बीमारी हो और बीमारी बहुत दिनोंकी होकर पुरानी पड जाये, तो भी इससे फायदा होगा। मैंजेण्टा लोशन पहली बार प्रयोग करनेके बाद ही, प्राय: ५ मिनिटोंके अन्दर ही सब तकलीफें घटकर आँख ठण्डी पड जाती है, रोगी बिना किसी तकलीफके रातमें सो सकता है, आँखकी तकलीफ और प्रदाह इतने कम समयमें दूर करनेकी इसके मुकाबलेकी आजतक किसी भी दवाका आविष्कार नहीं हुआ। मेरी तो ऐसी ही धारणा है—मैंजेण्टामें किसी तरह

का विष नहीं रहता, इसीलिये, उससे आँखमें किसी तरहकी हानि पहुँचनेकी सम्भावना नहीं है।

यदि आँखसे लगातार पानी गिरता हो और रातमें आँख सट जाती हो, तो मिट्टीके एक किसोरेको साफकर उसमें हल्दीका एक टुकड़ा और एक टुकड़ा खड़िया अलग अलग रगड़कर चूर निकालकर, दोनोंको मिलाकर रातमें सोनेके पहले अंगुलीकी नोकसे आँखकी नीचेवाली और ऊपरवाली पलकमें चारों ओर दबाकर लगा देनेपर एक दिनमें ही खासा फायदा दिखाई देता है और दो तीन दिनोंमें ही पानी गिरना बन्द हो जाता है।

फेल-टौरी।

(FELL-TAURI)

(साँढके ताजे पित्तसे इसका विचूर्ण तैयार होता है)—हाजमे की गड़बड़ी, अतिसार, गर्दनमें दर्द—इन तीन बीमारियोंमें इससे फायदा होता है। पाकस्थली और तलपेटमें (in epigastric region) खूब जोरसे गड़गड़ आवाज होती है, आँतकी प्रबल क्रिमिकी तरहकी क्रिया (violent peristaltic movements) इसी वजहसे पतले दस्त आना, डकार आना और भोजनके बाद ही नींद आने लगना इस दवाके विशेष लक्षण हैं।

क्रम—विचूर्ण, निम्न-शक्ति। फारमुला १।

फेरम आयोडेटम।

(FERRUM IODATUM)

(आयोडाइड आफ आयरन—विचूर्णके आकारमें तैयार होता है)—थोडा-सा भी खानेपर पेट भर उठता है, मानो न जाने कितना खा लिया है, खायी हुई चीज ऊपरकी ओर गलेतक चढ आती है, उससे ऐसा मालूम होता है, मानो पाकस्थलीमें कुछ भी नहीं जाता, सामनेकी ओर झुकनेमें तकलीफ होती है, पेशाब में सफेद और गाढी तली जमती है। जरायुका पीछेकी ओर टेढा पड जाना (retroversion), सिझाये हुए माडकी तरह एक तरहका सफेद प्रदरका स्राव, पाखाना होनेके समय डोरी या तार की तरह एक प्रकारका लम्बा स्राव योनिसे निकलना, योनिके ऊपरी भागमें खुजली, अकडनका दर्द और सूजन, जरायुकी स्थान-च्युति, हमेशा ऐसा ही मालूम हुआ करता है, कि तलपेटका कोई पदार्थ योनिद्वारसे बाहर निकला आता है। मासिक ऋतुस्राव बन्द प्रभृति कई लक्षणोंमें इसके व्यवहारसे फायदा होता है।

कालोफाइलम, फेरम, हेलोनियस, सिपिया, सलफर प्रभृति कई दवाएँ इसके सदृश हैं। यक्ष्मा रोगमें जब ऐसा मालूम हो कि फेफडेमें पीब हुआ है और कण्ठमाला धातुमें भी इसका व्यवहार होता है।

प्लीहा और यकृत—सिनकोना और फेरम मेटालिकम अध्यायमें सविराम ज्वर देखिये।

क्रम—२x विचूर्ण। फारमुला—७।

फेरम मेटालिकम।

(FERRUM METALLICUM)

(शुद्ध लोहेसे इसका विचूर्ण तैयार होता है)—कमज़ोर और रक्तहीन धातुवाले मनुष्य और थोडी उमरके बालकोंपर इसकी क्रिया बहुत जल्द होती है। रक्त और रक्त पैदा करनेवाले यन्त्रोंपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है।

<u>चरित्रगत लक्षण</u>—१। थोडी भी गडबडी या आवाज सहन नहीं होती, बेचैन और उत्तेजित हो जाता है, २। बहुत कमजोर और रक्तहीन—इतने पर भी मुँहका रंग घोर लाल रंगका, ३। रक्तहीनताके कारण ओंठ, चेहरेका रंग सफेद और उतरा हुआ दिखाई देता है, पर थोड़े भी दर्द या मानसिक उद्वेग पैदा हो जाने पर चमकीला लाल हो जाता है; ४। शरीरके साधारण लाल रंगवाले अङ्ग, जैसे ओंठ, जीभ, मुँहका भीतरी भाग, सभी सफेद दिखाई देते हैं; ५। जल्दी जल्दी मासिक ऋतुस्राव होता है, स्राव परिमाणमें अधिक और बहुत ज्यादा दिनोंतक हुआ करता है। उस समय चेहरा लाल हो जाता है, कानोंमें एक तरहकी

भो भो आवाज होती है, रजःस्राव २।३ दिन बन्द रहकर फिर होने लगता है, रोगी कमजोर हो पडता है, खूनका रंग सफेदी लिये, उजला पानीकी तरह, ६। मिचली हुए विना ही जब डकार आती है, तो मुँहभर खायी हुई चीज चली आती है, ७। खाने-पीनेकी सभी चीजोंसे अरुचि,—इसके साथ ही वहुत अधिक भूख या भूखका न लगना ८। आधी रातके बाद और भोजन के समय वमन, भोजन करते करते उठ जाना और सभी खायी हुई चीजकी कै कर देना। कै हो जाने बाद फिर खाने बैठता है, ९। आँतोंकी क्रिया न होनेके कारण कब्जियत, मल कडा, सख्त, कमरमें दर्द, बच्चोंकी काँच वाहर निकल पडती है। रातमे मल-द्वारमें खुजली होती है, १०—अतिसार—जो खाता है, वही अजीर्ण अवस्थामें मलकी राहसे निकल जाता है, सवेरे और खा लेनेपर पतले दस्तोंका बढना, पेटमे दर्द नहीं रहता, भूख उत्तम लगती है, ११। किनाइनके अपव्यवहारकी वजहसे या शरीरमे तेज भरनेवाले पदार्थोंके क्षयके कारण अथवा सविराम ज्वर बन्द होने बाद—शोथ, फूल उठना ; १२। प्रत्येक २।३ सप्ताहका अन्तर देकर दो, तीन अथवा चार दिनोंतक रहनेवाला सर-दर्द इत्यादि।

रक्तहीनता—की बीमारीमे मुँहका रङ्ग उजला, भूरा हो जाता है या कुछ भी मानसिक उत्तेजना या दर्द होनेपर चेहरा लाल हो उठता है, मस्तिष्कमे रक्तकी अधिकताकी वजहसे माथेकी शिरायें सब फूलकर मोटी हो जाती हैं, माथेमे हथौडीसे मारनेकी तरह

या टपकका दर्द हुआ करता है (ऐसा दर्द—बेलेडोना, नेट्र-म्यूर, ब्रोयोनिया और चायनामें भी है) फेरमका सर-दर्द पहले किसी एक ओर की कनपटीमें या माथेके किसी एक तरफ आरम्भ होता है, इसके बाद समूचे माथेमें फैल जाता है । दर्द—एकाएक हिलने-डोलने, किसीके कुछ आवाज करने या दवा देनेके लिये छूनेपर बढ़ जाता है । मुँहके भीतरी भागका भी रङ्ग उजला, ऊपरी भागकी तरह लाल नहीं रहता । फेरमके रोगीका शरीर—बाहरसे देखने पर अच्छा हृष्ट-पुष्ट दिखाई देता है, किन्तु भीतरसे रक्तहीन, थोड़े ही परिश्रमसे थकावट अनुभव करता है । स्त्री होनेपर ऋतु बहुत जल्दी जल्दी होता है, ऋतुस्राव परिमाणमें अधिक और बहुत दिनोंतक होता रहता है, इस रक्त निकलनेकी वजहसे रोगीके कानमें भों भों आवाज होती है,रक्तस्रावका रङ्ग पानीकी तरह, सफेद, हाथ-पैर और मुँह फूले फूले, ये लक्षण रक्तहीनताके लक्षण हैं और फेरम—इसकी बढ़िया दवा है । बहुत दुबलापन और कमजोरी के साथ बेचैनी—इसका एक विशेष लक्षण है । रोगी किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकता, धीरे धीरे चलता है, टहलता है, इससे उसे आराम मालूम होता है ।

रक्तस्राव—फेफड़ा, नाक, मूत्रनली, गर्भाशय इत्यादि किसी भी स्थानसे खून क्यों न जाता हो, कौनजेसन अर्थात् रक्तकी अधिकता होकर शरीरके सभी द्वारोंसे रक्तस्राव हो सकता है ; यदि खूब पतला, चमकीला लाल और उसमें काले रङ्गके जमे जमे

खून मिले थक्के रहें और रोगी बहुत कमजोर हो पडे, चेहरा उजला हो जाय (फेरममें रक्तस्रावके समय चेहरा लाल दिखाई पडता है) श्वास जल्दी जल्दी और जोरसे चलती है (इपिकाक) नाड़ी तेज चलती है, ऐसा होनेपर—फेरमसे उपकार होगा।

रक्त-वमन—इस बीमारीमे ऊपर लिखे ढङ्गसे खून निकलनेके साथ सूखी खाँसी और कलेजेमे अकड़नका दर्द रहने पर—फेरम-मेट लाभदायक होता है। (जिरेनियम अध्याय देखिये)

यक्ष्मा—अगर जवानीके आरम्भें यह बीमारी होनेपर और इसके साथ ही नाक, मुँहसे ऊपर लिखे ढगका रक्तस्राव होने पर और इसके साथ ही कष्टदायक खाँसी, सहजमें ही बलगम नहीं निकलता, कुछ गरम वस्तु पीनेपर खाँसी बहुत बढ जाती है, छातीमें अकडनका दर्द होता है, माथेके पिछले भागमे दर्द—लक्षण रहनेपर फेरम लाभदायक है।

कलेजा धड़कना— रोगी रक्तहीन और कमजोर हो जाये, तो अकसर कलेजेमे धडकन हुआ करती है। फेरममें—हिलने-डोलनेपर कलेजेकी धडकन बढती है। इसके रोगीकी नाडी खूब मोटी (full), पर कोमल रहा करती है।

अतिसार—जो कुछ खाता है,दस्तके साथ अजीर्ण अवस्था में सब खाया हुआ पदार्थ निकल जाता है (यह लक्षण चायना और ओलियेण्डरमें है)। खाना या कुछ पीना आरम्भ करते ही, साथ ही साथ या तुरन्त ही पाखाना लग आता है या पाखाना हो जाता

है—यह लक्षण रहनेपर—फेरम फायदा करता है। चायनामें—भोजनके बाद और अर्जेण्ट-नाइट्रिकममें—भोजनके समय ही पाखाना लग आनेका लक्षण है, पर अर्जेण्टमें—अजीर्ण खाया हुआ पदार्थ नहीं निकलता। चायनामें पेटमें वायु पैदा हो जाता है। चायना और फेरम—दोनोंके ही उदरामयमें पेटमें अधिक दर्द नहीं रहता (painless), यह भी देखनेमें आता है, कि कितनी ही बार चायनाके बाद—फेरम और फेरमके बाद—चायना प्रयोग करनेपर बहुत फायदा होता है। फेरममें—उदरामयके साथ रोगीमें अस्वाभाविक भूख रहती है, सभी खानेकी चीजें तीती मालूम होती हैं।

पुराना अतिसार—पेटमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता, पानीकी तरह पतले दस्त बड़े वेगसे आते हैं, दस्त ज्यादा रातमें ही होते हैं, इसके साथ ही हाथ पैर और प्रत्यंग सब ठण्डे रहते हैं, तथा बहुत कमजोरी मालूम होती है। यक्ष्मा रोगीके अतिसारमें जब रोगी जो कुछ खाता है, वही अजीर्ण अवस्थामें निकल जाता है, खाना ही वृथा हो जाता है, उस समय—फेरम फायदा करता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समयके अतिसारमें पेटमें किसी तरहका दर्द न रहनेपर और दूध पीनेके बाद ही दस्त या कै होनेपर (immediately after nursing) फेरम फायदा करता है।

वमन—रोगी खाता खाना उठ जाता है और जो कुछ खाया है, सभी के कर देता है और फिर खाने बैठता है। भोजन

करते ही (मिचली न रहनेपर भी इसमे डकारके साथ मुँह-भर खायी हुई चीज आ जाती है, भूख कभी ज्यादा कभी एकदम नहीं रहती, कभी कभी खट्टे स्वादकी कै होती है। रातके १२ बजनेके बाद बिना पची अवस्थामें खायी हुई चीजकी कै इत्यादि लक्षणमें भी—फेरम लाभदायक है। खाने-पीने बाद ही पेट भारी हो जाता है, गर्म चीजें खा-पी नहीं सकता।

बिछावनमें पेशाब—बालक अकसर रोज रातमें बिछावनमें पेशाब कर देता है। रातके अलावा अगर दिनमें भी चलने-फिरनेके समय—कपडेमें पेशाब कर दे, तो फेरम फायदा करता है।

भूख—कभी राक्षसी भूख और कभी एकदम भूख ही नहीं लगती, कभी कभी भोजनपर रुचि भी नहीं रहती। इसके रोगीको मास बिल्कुल ही सहन नहीं होता, खाते ही कै हो जाती है। चाय पीनेपर बीमारी बढ जाती है।

ऋतुस्राव—ऋतु समयके बहुत पहले, यहाँतक कि १६।२० दिन पहलेसे होता है और बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव निकला करता है, रोगिनी बहुत कमजोर हो पडती है, कानमें भों भों आवाज होती है, ऋतुस्रावके समय चेहरेका रंग लाल दिखाई देता है, ऋतुस्राव होता होता एकाएक २।३ दिन बन्द रहकर फिर होने लगता है। इत्यादि लक्षणोंमें—फेरम लाभ करता है।

सर-दर्द—ऊपर रक्तहीनताके विषयमें इसके लक्षण देखिये।

दर्द—कमरका वात (Lumbago) प्रभृति कई तरहके दर्द रातके समय बहुत बढ जाते हैं। सोये रहनेपर और भी बढता है और धीरे धीरे चलते रहनेपर दर्द कुछ घटता है, इस लक्षणपर निर्भरकर, यह दर्द और उसके साथ कोई दूसरी बीमारी रहनेपर भी फेरमसे आरोग्य होगी। फेरमका दर्द ऐसा रहता है, कि स्पर्श सहन नहीं होता, रोगी रोगवाली जगह छूने नहीं देता। गर्दन और पीठमें धीमा धीमा दर्द होता है। ज्वरमें एक सन्धिके बाद दूसरी सन्धिपर रोगका दौरा होता है। खाँसनेपर माथेके पिछले भागमें दर्द होता है।

वात—बाएँ कन्धेकी पेशीका और बायें कन्धेकी सन्धिका (L.shoulder joints) सुन्न करदेनेवाला वातका दर्द—कोहनी या बाये कन्धेकी पेशीतक फैल जानेपर और इसी वजहसे रोगी यदि हाथ पैरकी अंगुली न हिला सके—फेरमसे फायदा होगा।

सविराम ज्वर—बहुत ज्यादा क्विनाइन सेवन करनेके कारण यदि बीमारी क्रमश जटिल होती जाये तो—फेरमकी जरूरत है। शीतावस्थामें—चेहरा तमतमाया और लाल ; उत्तापावस्थामें—कनपटीकी शिरायें फूली और माथेमें हथौड़ी-से मारनेकी तरह टपकका दर्द, प्लीहाका बढना, हाथ-पैर फूले फूले इत्यादि लक्षण अगर किसी सविराम ज्वरमें रहे—फेरम फायदा करेगा।

बहुत दिनोतक इलाजकर और बहुत दर्दकी दवाएँ व्यवहार कर अगर सविराम ज्वर किसी तरह बन्द न हो और इसके साथ ही अगर—प्लीहा और यकृत बढा रहे—फेरम-आर्स फायदा करता है। इसमें कब्जियत नहीं रहती और शीत, उत्ताप तथा पसीना किसी भी अवस्थामें प्यास नहीं रहती, प्लीहाके बढनेके साथ ज्वर न रहनेपर—फेरम-आयोड लाभ करता है।

द्रष्टव्य :—ऊपर लिखे फेरम आयोड और फेरम-मेटालिकम इन दोनो दवाओके सिवा फेरमकी और भी कितनी ही श्रेणियाँ है, परन्तु इलाजके समय उनकी बहुत ही कम जरूरत पडा करती है, केवल जिन दो एक बीमारियोंमे उनकी सामयिक रूपसे जरूरत पडती है, नीचे उनका सक्षेपमे वर्णन दिया जाता है, फेरम-फास—नामकी दवाको डा० सुसलरने बायोकेमिकके अन्तर्गत ले लिया है। इसलिये, उसका वर्णन अलग ही अध्यायमें लिखा गया है।

फेरम-आर्सेनिकम—प्लीहा, यकृत और सविराम ज्वरमें इसका व्यवहार होता है, सिनकोना और उस फेरम-मेटालिकम अध्यायमें सविराम ज्वरके अन्तिम परिच्छेद सब पढे।

फेरम-एसेटिकम—कमजोर, रोगी बालक-बालिकाएँ जो बहुत जल्दी जल्दी बढते हैं, थोडे ही परिश्रमसे थक जाते हैं, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। इसके भी लक्षण प्राय फेरम-मेटालिकमके सदृश ही हैं। नाकसे खून गिरना, भोजन

के बाद खायी हुई चीजोंकी कै होना, पैरकी शिराओंका फूलना, हरे रंगका पीबकी तरह बलगम निकलना, लगातार खाँसी, इस तरहकी कई बीमारियोंमें लाभ करता है।

फेरम ब्रोमैटम—जरायु बाहर निकल पड़ता है, गोंद की तरह लसदार श्वेतप्रदरका स्राव, स्राव जहाँ लगता है, वहाँकी खाल उधड़ जाती है। पेशाब करनेके समय जलन, कुथनके साथ आम और खून निकलना, स्पर्माटोरिया।

फेरम-सियानेटम—छातीमें जलन, पाकस्थलीमें दर्द और जलनके साथ जी मिचलाना, पेट फूलना, कब्जियत प्रभृति पर्यायक्रमसे कब्ज और उदरामय, मृगी-रोग (epilepsy)

फेरम-म्यूरियेटिकम—खून-मिली खाँसीकी बीमारी में—काले रंगका थक्का थक्का खून निकलना, यौवनमें स्त्रियोंको बहुत अधिक पेशाब होना। मासिक रजःस्राव एकदम बन्द, रक्त-हीनता (एनिमिया), इस बीमारीमें—२x शक्ति। १ बूँद मात्रामें भोजनके बाद सेवन करना चाहिये। इसके अलावा यह खूनका पेशाब, आक्षेपिक खाँसी, ब्राङ्काइटिस, नाकसे गाढ़ा जमा हुआ खूनका स्राव प्रभृतिमें फायदा करता है। आमाशयकी बीमारी—यह बीमारी कुछ पुरानी पड़ जानेपर इससे ज्यादा फायदा होता है। (जैपारो देखिये)।

फेरम-सल्फ—(Ferrum Sulphuricum)—हिन्दी में इसे हीराकस या कसीस कहते हैं। अंगरेजी दूसरा नाम

Green sulphate of iron है। कसीसको भँगरैयाके रसके साथ शोधकर दवाके काममें लाया जाता है। होमियोपैथीके मत से शक्तिकृत होनेपर—इसके द्वारा अम्लकी बीमारी और डकारके साथ पानी मिली खायी हुई चीज मुँहमें आ जाना रोग इससे दूर होता है।

आपलोगोंने शायद देखा होगा कि नीली आभा लिये कसीस कुछ दिनोंतक कागज या शीशीमें रख देनेपर उनके दानोंका बहुत सा अंश सफेद हो जाता है। डा० काली-महोदय कहते हैं—इस सादे अंशकी सरसों बराबर बुकनी दो आउन्स पानी भरी शीशीमें डाल, प्राय आध घण्टेतक हिलानेपर जब वह एकदम गल जाता है, तो कुछ देरतक रखकर फिर शीशी हिलाना आरम्भ करते हैं, इससे शीशीका पानी कुछ लाल हो जाता है, उसी पानीको उन्होंने नित्य २।१ ड्रामकी मात्रामें दिनमे तीन बार खिलाकर बहुत से पुराने ज्वर और प्लीहा यकृत बढे रोगीको आरोग्य किया है।

फेरम-टार्टरिकम—छातीमें जलन होती है, पाकस्थलीके प्रवेश-द्वारके मुँहपर (Cardiac orifice) गरमी मालूम होती है।

फेरम-पिक्रेटम—कानमें टिकटिक आवाज, कम सुनना, बहरे हो जाना, रातमें लगातार पेशाब करना, पेशाब बन्द, वृद्धों की मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका बढना। पैरमें जूतेके गड्ढे हो जाने की यह बहुत बढिया दवा है। गांठोंमें काला दाग पडता है।

ये सभी दवाएँ कमजोरी और रक्तहीनतामें २ री से ६ ठी शक्ति—पूरी मात्रामें और रक्त-प्रधान धातुमें और रक्तस्रावके

लिये व्यवहार करना हो तो बहुत ही सूक्ष्म मात्रामें प्रयोग करना उचित है (डा० बोरिक)।

वृद्धि—(aggravation)—रातमें, विश्रामसे, विशेषकर चुप-चाप पड़े रहने पर।

ह्रास (amelioration)—धीरे धीरे चलनेके समय और निर्मल वायु सेवन करनेपर।

बादकी दवा (follows well)—एकोन, आर्नि, बेल, मार्क-फास, पल्स।

सम्बन्ध—उपदंश रोगमें इसका व्यवहार मना है, नयी तथा पुरानी सभी बीमारियोंमें—फेरमके बाद—चायना बहुत फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, आर्नि, बेल, हिप, पल्स, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—७।

फेरम-फासफोरिकम ।

(FERRUM PHOSPHORICUM)

(फासफेट आफ आयरन—विचूर्ण)—बायोकेमिक चिकित्सा में एकोनाइटकी तरह सब तरहके प्रदाहोंमें और ज्वरकी पहली

अवस्थामे भी इसका व्यवहार होता है। प्रादाहित स्थानमें रस सञ्चय (exudation) आरम्भ होनेपर इससे फिर उतना फायदा नहीं पहुँचता। रक्तहीन, कमजोर, सफेद और जिन्हें एकाएक प्रादाहिक रोग सब उत्पन्न हो जाते हैं, उनके लिये यह बहुत ही लाभदायक है। हैमामेलिसकी तरह यह भी रक्त-सञ्चालन-यन्त्रपर अपनी क्रिया प्रकट करता है।

प्रादाहिक रोग—सब तरहके प्रादाहिक रोग, जैसे-वात गठिया वात, निमोनिया, सर्दी लग जाना, खाँसी, फोडा, यकृतका प्रदाह, वक्ष और माथेमे रक्तका अधिक हो जाना, सारांश यह कि प्रदाहकी पहली अवस्थामे और किसी जगहपर जबतक रक्त इकट्ठा रहता है, रस-सञ्चय (exudation) आरम्भ नहीं होता, तबतक इससे फायदा होता है। मुँह आँखें लाल रंगकी, माथेमे रक्तकी अधिकता, ज्वर, नाडी—कोमल, तेज, और पूर्ण, त्वचा गर्म और सूखी, प्यास, पसीना, पसीना होनेपर भी बीमारी कुछ नहीं घटती, दर्द, प्रदाह वाली जगह लाल रंगकी इत्यादि लक्षणोंमे—फेरम-फासका व्यवहार होना चाहिये। (एकोनाइट देखिये)।

हमलोग ऊपर लिखे लक्षणोंमे—एकोनाइट, बेलेडोनाको ही अधिक लाभदायक समझते हैं। ज्वरमें जब एकोनाइटका—चरित्र-गत लक्षण—छटपटी, मृत्युभय इत्यादि नहीं रहता, इसके अलावा जेलसिमियमका बहुत ही अभिभूत भाव कमजोरी और निस्तेज भाव भी नहीं रहता, उस समय इन दोनों दवाओंके मध्यवर्ती लक्षणमें—फेरम-फास ज्यादा फायदा करता है। इसीलिये, श्लैष्मिक

झिल्लीके (mucous-membrane) स्रावमें खूनका छींटा और बलगमके साथ खूनका छींटा रहनेपर—फेरम-फाससे ज्यादा फायदा होता है। श्वासयन्त्रकी सभी बीमारियोंमें—यह एकोनाइट तथा ब्रायोनियाके मिले हुए लक्षणोंमें लाभदायक है। फेरम-फासके रक्तस्रावमें—रक्त लाल रंगका और पतला रहता है, उसमें थक्के बिलकुल ही नहीं रहते।

पेशावकी बीमारी—बच्चोंका बोखार, इसके साथ ही पेशाब होना बन्द, मूत्राशयका नया प्रदाह या उत्तेजना (irritation) की वजहसे हमेशा ही पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब हो जानेपर दर्द घट जाता है, खूनका पेशाब। डा० सुसलर तथा दूसरे दूसरे चिकित्सक कहते हैं, कि—पेशाबको रोकनेवाली पेशीकी कमजोरी की वजहसे पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना और रोज बिछावनमें पेशाब कर देनेकी बीमारीमें कभी कभी इससे बहुत फायदा दिखाई देता है।

स्त्री-रोग—बायें डिम्बकोषका स्नायविक दर्द (L. Ovarian neuralgia) और बाधक, इसके साथ ही सर-दर्द, लगातार पेशाबका वेग होना, कमरकी हड्डीमें दर्द प्रभृतिमें इससे विशेष उपकार होता है।

ज्वर—सभी चिकित्सक स्वीकार करते हैं, कि दूसरी दूसरी दवाओंकी तुलनामें, चिकित्सा-जगतमें एकोनाइटकी बहुत ही कम जरूरत पड़ती है। इसका कारण—अबतक रोगी एकोनाइट

के लक्षणमे रहता है—तबतक तो गृहस्थ चिकित्सकको बुलाते ही नहीं हैं। हमलोग जब रोगी देखनेके लिये जाते हैं, तब अकसर एकोनाइटकी अवस्था बीत जाती है, रोगकी चाहे कितनी भी पहली अवस्थामे हमलोग क्यो न बुलाये जाये, ठीक ठीक एकोनाइटकी अवस्था नहीं रहती, ऐसे स्थानपर क्या करना उचित है? एकोनाइटके ठीक बादकी दवा है—"फेरम-फास (Ferrum Phos follows directly after Aconite), इसलिये, वहाँ फेरम-फासका प्रयोग करना चाहिये?" फेरम-फास प्रयोगका लक्षण ऊपर और एकोनाइटके अध्यायमे वर्णन किया गया है।

कट जाना—शरीरका कोई स्थान कट जानेपर उस कटी जगहपर फेरम-फास—२x विचूर्ण, भरकर बाँध देनेसे रक्तस्राव बन्द हो जाता है और चोटवाली जगह पकती भी नहीं है।

कानमें पीब—३x विचूर्ण कानमे डालनेसे पीब बन्द होता है।

अतिसार और आमाशय—पानीकी तरह दस्त और कै, इसी तरह लगातार दस्त कै होकर आँख-मुँह बैठ जाते हैं, आँखे ऊपरकी ओर उलट जाती हैं और इसी अवस्थामें रोगी पडा रहता है, इसके साथ ही प्यास, ज्वर-भाव, चौंक उठना इत्यादि लक्षण रहनेपर और आमाशयके दस्तके साथ खूनका छींटा रहनेपर या थोडा-सा केवल रक्तका दस्त होनेपर और आमाशयका शूल न रहनेप [illegible] होता है।

हैजा—जब बच्चा अध-मुँदी आँखोंसे बेहोशकी तरह पडा रहता है और उसके साथ प्यास नहीं रहती है, उस समय फेरम-फास फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—गर्म पतली चीजें पीनेपर, माँस खानेपर, चाय पीनेपर, शरीर हिलानेपर, रातके अन्तिम भागमें ४ से ६ के बीचमें।

ह्रास (amelioration)—सर्दी लगनेपर, ठण्डी चीजें पीनेपर, धीरे धीरे अंग हिलानेपर।

सदृश—एकोन, जेल्स, कास्टि, कैलि-सल्फ, पल्स, एण्टिम-टार्ट।

क्रम—३x, ६x, १२ विचूर्ण—३० शक्ति। फार्मुला—७।

फ़िकस रिलिजियोसा।

(FICUS RELIGIOSA)

(हमलोगोंके देशके पीपलकी मूलसे प्रस्तुत होता है)—यह प्रायः सब तरहके रक्तस्रावकी दवा है। (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

इस दवाको कोई कोई फिकस-विनोसा या इन्केकौरिया अर्थात पाकड़का गूलर कहते हैं। पाकड़में भी रक्त रोकनेका गुण है।

क्रम—१ म शक्ति।

फिलिक्स-मास ।

(FILIX MAS)

(ताजी सोरसे मूल अर्क तैयार होता है)—एलोपैथ और होमियोपैथ दोनों ही मतके चिकित्सक क्रिमिके लिये और खास-कर फीताकी तरहकी क्रिमिके लिये (Tape-worms) इसका अधिक प्रयोग करते हैं। क्रिमिके सिवा—कब्जियत, पेट फूलना, क्रिमि शूलका दर्द, पेटमे खोंचा मारनेकी तरह दर्द, अतिसार, वमन, नाक खुजलाना, विना तकलीफकी हिचकी प्रभृतिमें भी इसका व्यवहार होता है।

क्रिमि—सिना अध्याय देखिये।

क्रम—१x—३ री शक्ति। फारमुला—३

फियुकस वेसिक्यूलोसस ।

(FUCUS VESICULOSUS)

(सामुद्रिक सँवारसे मूल अर्क तैयार होता है)। भयानक कब्जियत, मोटा होते जाना और गलगण्ड रोगमें बहुतसे चिकि-त्सक इसका अब व्यवहार करते हैं। अगर बहुत चर्बी बढ कर शरीर बहुत मोटा हो जाये तो उस मोटाईको घटानेकी यह बेजोड

दवा है । अमेरिकामें यह मेद-रोगको (Obesity) पेटेण्ट दवाके रूपमें बेची जाती है । फैलोड्रापिस, फाइटोलैक्का देखिये ।

क्रम—३—३० शक्ति । मदर टिंचर एक चायके चम्मचकी मात्रामें दिनमें २।३ बार सेवन करनेसे जल्दी फायदा होता है ।

फारमुला—३ ।

गैम्बोजिया ।

(GAMBOGIA)

(चायना, कोचीन प्रभृति स्थानोंमें एक तरहका छोटे आकार का वृक्ष पैदा होता है उसको गोंदको स्पिरिटमें गलाकर मूल अर्क तैयार होता है)—इसका दूसरा नाम गमि-गाटी है । एलोपैथीमें इसका व्यवहार जुलाबके लिये होता है, पर होमियोपैथीमें यह—उदरामय, हैजा इत्यादि पेटकी बीमारियोंमें ही अधिक व्यवहृत होता है । गैम्बोजियाके लक्षणके साथ क्रोटोन, ग्रैटियोला, इला-टिरियम, चायना, पोडोफाइलम इत्यादि बहुतसी दवाओंके लक्षणोंमें कुछ न कुछ सादृश्य है । क्रोटोनके अध्यायमें इनके बहुतसे प्रभेद बताये गये हैं । गैम्बोजियाका दस्त—क्रोटोनकी तरह बड़े वेगसे और जोर से एकदम निकलता है, पर इसमें क्रोटोनकी तरह पीले रंगके दस्त का लक्षण रहनेपर भी स्वाभाविक सहज प्रकारके दस्त भी आया करते हैं । एकाएक पाखाना लग आता है और खूब जोरसे हड़-

हडाकर पित्तके दस्त होकर पेट हलका हो जाता है। गैम्बोजिया का और भी एक लक्षण है—रोगीको पहले दस्तके लिये कुछ जोर देना पडता है, वेग देने बाद एकाएक खूब जोरसे एकदम सब मल निकल जाता है, रोगीको इससे बहुत आराम मालूम होता है, कभी कभी पाखाना होने बाद मलद्वारमें जलन हुआ करती है, दस्तके बाद पेटमें दर्द, पेट फूलना, गरमीके दिनोंमें और नयी तथा पुरानी बच्चोंको अतिसारकी बीमारीमें यह फायदा करता है। दस्त—पीला-हरा, गहरा हरा, आम-मिला, अजीर्ण, बदबूदार, मलद्वारकी खाल उधड जाती है।

क्रिया-नाशक—कैम्फर, काफि, कोलोसि, कैलि-कार्ब, ओपि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ से ७ दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—४।

जेलसिमियम सेम्परविरेन्स।

(GELSIMIUM SEMPERVIRENS)

(दक्षिणी युनाइटेड स्टेट्सके एक तरहके छोटे गाछकी ताजी जडसे मूल-अर्क तैयार होता है)—समूचे स्नायुमण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। सुस्ती, कमजोरी और कम्प इसके प्रधान चरित्रगत लक्षण है, जेलसिमियम—पर्यायनिवारक और दर्दको दूर करनेवाला, बलकारक और क्रिमिका दोष नष्ट करनेवाला है।

बाहरी प्रयोगमें—नाना प्रकारके स्नायुशूलमें ज्यादा फायदा करता है। पञ्जरेके शूलका दर्द, पेशीका शूल, डिम्बकोषका शूल, दाँतमें जखमकी वजहसे दाँतका दर्द (aching of the teeth, due to caries of the teeth) और पञ्चम-स्नायुकी शूल-व्याधि इत्यादि रोगोंमें इससे ज्यादा फायदा होता है। अगर किनाइन सेवन कर बहरापन आ जाये—जेलसिमियम फायदा करता है। इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है—जिस तरह ग्रैफाइटिसमें ३ "एफ" (F) अर्थात Fur Fatty & Flabby अर्थात गोरा, मेद-पूर्ण और थुलथुला, उसी तरह जेलसिमियममें ३ "डि" (D) अर्थात Dullness, Dizziness & Drowsiness सुस्ती, चकचौंधी और अँधारा देखनेपर—तुरन्त जेलसिमियमको स्मरण करना चाहिये। जेलसिमियमके रोगीको प्यास नहीं रहती।

१। एकाएक आनन्द, भय, उत्तेजक समाचार प्रभृतिसे किसी बीमारीका पैदा हो जाना। २। साहस एकदम न रहना; ३। गिर्जा, मन्दिर, नाट्यशाला, सभा प्रभृति किसी जगहपर अगर जाना हो तो दस्त लग जाते हैं, समाजमें और भीड़में जानेसे ही डर मालूम होता है; ४। हाथ, पैर, जीभ और समूचे शरीरकी कमजोरीके कारण कपकपी होने लगना; ५। एकदम अकेलेमें रहने की इच्छा, किसीको भी पास रखना या किसीसे बात करना नहीं चाहता; ६। सर-दर्द आरम्भ होनेके पहले आँखके आगे अँधेरा दिखाई देना; बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्दका घटना, भपकपालीका सर-दर्द, दाहिनी ओर दर्द होना;

७। पेशियाँ सब अपने अधीन प्राय न रहनेके कारण कोई काम नहीं कर सकता, ८। समझता है, कि जरा भी हिलने-डोलनेपर उसके हृत्पिण्डकी क्रिया उसी समय बन्द हो जायगी (डिजि-टेलिसमे ठीक इसके विपरीत रहता है), ९। पलकें बहुत भारी, इसीलिये, आँख खोलकर नहीं रख सकता, १०। प्यास नहीं रहती, चुपचाप सोया रहना चाहता है; ११। माथेकी चाँदीमे स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द, १२। शरीर काँप उठता है। शरीरमे सिहरावन मालूम होता है, ये सब जेलसिमियमके साधारण चरित्रगत लक्षण हैं।

मानसिक लक्षण—बहुत अधिक निस्तेजता, बराबर चुप होकर पडा रहता है या सोया रहना चाहता है, अकेला रहना पसन्द करता है, एकदम हिलना नहीं चाहता, यदि कोई पास रहता है अथवा बदनपर हाथ लगाता है, तो चिढ़ उठता है। "रोगी किसी विषयमे मन नहीं लगा सकता।"—यही जेलसिमि-यमकी मानसिक निस्तेजता और स्नायविक दुर्वलताका लक्षण है, परन्तु इसके अलावा उसमे कभी कभी मानसिक उत्तेजनाका भाव भी दिखाई देता है, पर यह गौण-लक्षण है अर्थात समझ रखना चाहिये, कि यह लक्षण प्रतिक्रियासे उत्पन्न होता है। इसकी मुख्य-क्रिया मस्तिष्क और अनुभव शक्तिपर होती है। देखनेकी शक्तिका घटना, आँखकी पुतली फैली, दो देखना, नशा खाये रहनेकी तरह भाव, औंघाईका भाव, सरमे चक्कर इत्यादि लक्षणोंके द्वारा ही यह स्पष्ट मालूम होता है। बच्चेकी बीमारीमे या किसी

कारणके न रहनेपर भी हमलोगोंको यह दिखाई देता है, कि बच्चा चौंककर जिसकी गोदमें रहता है, उसीसे चिपककर उसे पकड़ रखता है और चिल्लाकर रो उठता है। ठीक ऐसा मालूम होता है, मानो गिर जानेके डरसे ऐसा कर रहा है—यह भी जेलसिमियमकी क्रियाके अन्तर्गत है। बोरापस—चौंक उठना, रोना, और प्रसूतिको पकड़ रखना प्रभृति लक्षण हैं, पर यह याद रखना होगा, कि, बोरैक्समें—जबतक बच्चा गोदमें रहता है, तबतक अच्छा रहता है, बच्चेको सुलाने या सीढ़ीसे उतरनेके समय या एक गोदसे दूसरी गोदमें देनेके समय ही इस तरह रोता है और पकड़ रखता है, जेलसिमियममें ऐसा नहीं करता। बेलेडोनामें भी इसी तरह रोने और चौंक पड़नेका लक्षण है। भूलसे दे देनेपर, उससे कोई फायदा न होगा।

कम्पन—पहले परिच्छेदमें ही कहा है, कि इसकी क्रिया सभी स्नायुमण्डलपर होती है। प्राथमिक क्रियामें—शरीरमें सुस्ती और समूचे शरीरमें शिथिलताका भाव पैदा करता है, मांसपेशियाँ सुस्त हो जाती हैं, इसीलिये, रोगी इच्छानुसार हाथ पैर नहीं हिला सकता; ये लक्षण एकाएक ही नहीं पैदा हो जाते, धीरे धीरे सामने आते हैं। रोगी सबसे पहले—कमजोरी, थकान, निस्तेज भाव अनुभव करता है, हमेशा सोये रहना चाहता है और बेहोशकी तरह चुपचाप पड़ा रहता है, नाड़ीकी गति भी एकदम धीमी रहती है, पर जरा भी हिलने डोलनेपर उसकी गति तेज हो जाती है, चलनेकी चेष्टा करनेपर—पैर काँपते हैं, हाथ उठाने

या जीभ बाहर निकालनेके समय इसी तरह काँपती है, यह काँपना स्नायुकी कमजोरीका प्रधान लक्षण है। कोई रोगी कम्प ज्वरको तरह थर थर काँपा करता है, पर सच तो यह है, कि रोगीको ज्वर या कम्प कुछ भी नहीं रहता। जो हो, यदि पहलेसे ही सावधान नहीं हो जाया जाता तो यह कमजोरी क्रमशः पक्षाघातमें परिणत हो जाती है। आँखकी पलकें झूल पडती है, आँख खोल नहीं सकता,—मानो आँख बन्द हुई जाती है (सिपिया, कास्टिकम), अगुलीसे अपनी इच्छाके अनुसार काम नहीं कर पाता, चलनेपर पैर इच्छानुसार रख नहीं सकता है, रोगीको सम्पूर्ण ज्ञान रहता है। वह समझ सकता है कि उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग इच्छानुसार कार्य नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा हमेशा ही औंघाईका भाव, शरीरमें स्नायविक दर्द,—यह दर्द मानो कुछ वेधनेकी तरह एकाएक पैदा हो जाता है, इससे रोगी चौंक उठता है, हाथ-पैरमें ऐंठन होती है, ये सब लक्षण भी जेलसिमियमके अन्तर्गत हैं। टकारके साथ कम्पन। जीभका काँपना—बहुत कमजोरीका लक्षण, रोगकी पहली अवस्थामें ही होनेपर—जेलसिमियम अन्तमें होनेपर—लैकेसिस फायदा करता है।

सर-दर्द—ऊपर ही कहा है, कि जेलसिमियमका एक प्रधान लक्षण है—कमजोरी और कम्पन। यदि इसके साथ ही सरदर्द रहे, तो सबके पहले जेलसिमियमका प्रयोग करें।

सर-दर्द—सरका दर्द, यदि सर कुछ ऊँचाकर सोनेपर या सर-दबानेपर कुछ आराम मालूम हो और थोडा भी मानसिक

परिश्रम करनेपर, धूमपानसे, धूपमें या सर-नीचाकर सोनेपर बढ़ जाता है, ऐसा होनेपर—जेलसिमियम फायदा करता है (ग्लोनोयिन, लैकेसिस, लाइसिन, नैट्रम-कार्ब औषधोंमें भी इस तरहकी वृद्धिका लक्षण है।) माथेमें रक्तकी अधिकताके कारण पैदा हुआ एक तरहका सर-दर्द, वह माथेके पिछले भागसे (occiput) आरम्भ होकर समूचे माथेमें फैल जाता है। अन्तमें आँखपर जाकर ठहर जाता है, छूनेसे दर्द बढता है। दर्द—कन्धा और मेरुदण्डमें चला जाता है -यह भी जेलसिमियमका लक्षण है। जेलसिमियम का—और भी एक विशेष लक्षण है—बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्द एकदम घट जाता है (लैक-डिफ्लोरेटम—में -पेशाब बहुत ज्यादा परिमाणमें होनेपर सर-दर्द कुछ घट जाता है), जेलसिमियमका—सर-दर्द गरमीसे और गरम प्रयोगसे बढ जाता है। सर-दर्द आरम्भ होनेके पहले देखनेकी ताकत घट जाती है और सर-दर्द बढनेके साथ ही साथ देखनेकी ताकत फिरसे पैदा हो जाती है, यह लक्षण सिर्फ जेलसिमियममें है। सैंगुनेरिया आइरिस और लैक-डिफ्लोरेटममें—सर-दर्दके साथ ही साथ मिचली और वमनका भाव रहता है। ऋतुस्राव बन्द होकर स्त्रियोंको टपकता भयानक सर-दर्द होता है—ग्लोनोयिन खूब फायदा करता है। जेलसिमियममें—अधिक परिमाणमें पेशाब होनेपर सर-दर्द घट जाता है।

अतिसार—दुःख, भय या किसी तरहका बुरा समाचार सुनकर एकाएक मानसिक कष्ट होकर यदि पतले दस्त आने

लगे—तो जेलसिमियम फायदा करता है। इसके अलावा—जेल-सिमियमका एक आश्चर्य-जनक लक्षण यह है, कि रोगी अगर किसी जगह जानेकी बात सोचता है या किसी जगह जानेके लिये कपडे-लत्ते पहनता है, तो इसके बाद ही उसे पाखाना लग आता है।

स्वर-बद्ध—चिल्लाकर बोल नहीं सकता, धीरे धीरे, फुसफुसाकर बोलता है। गलेकी आवाज बैठ जाती है।

सर्दी-खाँसी—नयी सर्दी, नाकसे खाल उधेडनेवाला कच्चा पानी निकलना, जल्दी जल्दी छींक, तालुमूल प्रदाहित, गलेमें अकडनका दर्द, कोई चीज निगलनेमें कष्ट इत्यादि—जेलसिमियमके लक्षण हैं। जेलसिमियममें—खाँसी बहुत सूखी रहती है, खुक खुक कर खाँसी आती है, पर बलगम नहीं निकलता, दाहिनी नाक का भीतरी भाग लाल हो जाता है, नाकसे जो स्राव निकलता है, वह गरम होता है, रोगीको सिहरावन मालूम होता है।

जेलसियमके रोगीको जरा-सी भी सर्दीमें सर्दी लग जाती है, नाकसे पानीकी तरह नयी सर्दीका पानी निकलता है, माथेमें दर्द और माथा भारी और सारे शरीरमें दर्द होता है। गरमीके बाद जरा बर्सात या बादल होनेपर या हवा कुछ ठण्डी होनेपर अर्थात थोडा भी ऋतु-परिवर्त्तन होनेपर ही रोगीको मालूम होता है, कि यह बीमार हो गया, गलेमें दर्द होता है, दर्द कानतक चला जाता है। कानसे अच्छी तरह सुन नहीं पडता, सरमें दर्द होता है,

बहुत कमजोर हो पड़ता है, रोगी हमेशा मुँहसे कहता है — "बहुत ठण्ड लगकर वह बीमार हो गया है।"

पक्षाघात—लैरिङ्क्स (स्वरयन्त्रका) पक्षाघात—इसीलिये, चुपचाप फुसफुसाकर बात करता है। गलनलीका पक्षाघात-इसीलिये, कोई चीज निगलनेमें तकलीफ होती है। डिफ्थीरिया या आरक्त ज्वर (स्कार्लेटिना) की बीमारी आरम्भ हो जाने बाद पक्षाघात। डिफ्थरिया आराम हो जाने बाद अन्न-नली-मुखका पक्षाघात—इसीलिये, कोई चीज निगल नहीं सकता, आँखकी ऊपरी पलकका पक्षाघात—पलक झूल पड़ती है। मलद्वार-अवरोधक पेशीका (sphincter ani) पक्षाघात—मल अनजानमें निकल जाता है, रोगीको कुछ भी मालूम नहीं होता कि मल निकल रहा है, पेटमें जरा भी दर्द नहीं रहता। मूत्राशयकी (bladder) ग्रीवाका पक्षाघात, इसी कारणसे पेशाब निकलना बन्द हो जाता है, मूत्राशय फूल उठता है, कभी कभी मूत्राशयका आंशिक पक्षाघात हो जाता है, इससे पेशाब रुक रुककर निकलता है (flow intermittent), पेशाब होना खतम होनेपर भी रोगी ऐसा समझता है, कि कुछ पेशाब भीतर रह गया। जीभके पक्षाघातमें—बोली साफ साफ नहीं निकलती, जीभ भारी और सुन्न मालूम होती है। इसके अलावा—यदि मस्तिष्क, मेरुदण्ड अथवा पेरिफेरिक स्नायुका कोई भी विकार न हो, सिर्फ रोगीका चेहरा लाल रंगका और कण्ठस्वर भारी हो, तो जेलसिमियम

फायदा करता है। हृत्पिण्डमें और कलेजेके नीचेवाले भागमें जकड़ जानेकी तरह दर्द।

स्त्री-जननेन्द्रियके रोग—ऋतुके समय प्रसवके दर्दकी तरह दर्द इस लक्षणमें जेलसिमियमसे फायदा न होनेपर—कालोफाइलमसे फायदा होता है। जरायुका मुँह सामनेकी ओर घूम जाना (Antiversion), दबा रखनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही जेलसिमियमका सर दर्दका लक्षण रहनेके साथ ही साथ यदि जरायुमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द हो और यह दर्द कमर और कूल्हेमें फैल जाये तो—जेलसिमियम फायदा करता है।

प्रसवका दर्द—धात्रीसे परीक्षा करवानेपर अगर ऐसा मालूम हो, कि जरायुमुख (Os-uteri) बहुत कड़ा और मोटा हो गया है और वहाँ किसी तरहका भी वेग (spasm) नहीं है, इसीलिये, बहुत देरतक प्रसवका दर्द होनेपर भी जरायुका मुँह खुलनेमें देर हो रही है, दर्द नीचेकी ओर न जाकर ऊपरकी ओर धक्का देता है, तो ऐसी अवस्थामें कई मात्रा जेलसिमियमके प्रयोगसे बहुत फायदा होता है। इसके अलावा यदि परीक्षामें जरायुका सूजनका भाव, मोटा और थुलथुला (thick and flabby) और बहुत नरम मालूम हो, अथवा जरायु-देहमें सिकुड़नेकी शक्ति न रहे, तथा इसीलिये थैली न निकलती हो और जरायुमुखपर अड़ी हुई हो तो ऐसे स्थानपर—जेलसिमियम फायदा करता है। बेलेडोनामें—बहुत तकलीफ देनेवाला दर्द और जरायुका मुँह कड़ा रहता है, पर

वहाँ वेग रहता है। बेलेडोनाका प्रधान लक्षण—दर्द एकाएक बहुत ही जोरका पैदा होता है और एकाएक ही आराम हो जाता है। यहाँ भी यह लक्षण रहना चाहिये।

प्रसूतिका टंकार—ऊपर लिखे कितने ही लक्षणोंके साथ अगर प्रसूती अज्ञान और आच्छन्नकी तरह पड़ी रहे तो पहली अवस्थामें जेलसिमियम फायदा करता है। (बेलेडोना अध्याय देखिये)।

कानकी बीमारी—एकाएक किसीके कानमें ताला लग जाय और कुछ भी न सुन पड़े, इसके बाद "दम" से होकर यह भाव चला जाये, कानमें सों सा आवाज हो, गलेसे कान-तक दर्द, सर्दीके कारण और क्विनाइन सेवनकी वजहसे बहरापन।

ध्वजभग—हस्तमैथुन या स्वप्नदोषके कारण पुं-जननेन्द्रिय शिथिल होकर अगर ध्वजभगका कोई लक्षण प्रकट हो पड़े, जेलसिमियममें फायदा होगा। इसमें किसी तरहका सपना आये बिना ही स्वप्नदोष हो जाता है; जेलसिमियममें—लिङ्गमें ठण्डापन आता है, सेलिनियम और कोनियममें—नाना प्रकारके कामोद्दीपक सपने दिखाई देते हैं और लिङ्गमें उत्तेजना रहती है। (डिग्यूलन देखिये)।

नाड़ी—जेलसिमियमकी नाड़ीकी गति धीमी रहती है (डिजिटेलिस, सेलिनियम, एपोसाइनमकी तरह नाड़ी क्षीण, नरम

और भरी , स्थिरभावसे रहनेपर धीमी, पर हिलने-डलनेपर तेज हो जाती है, बुढापेकी धीमी और क्षीण नाडी।

छोटी माता—छोटी माताका पूर्व लक्षण—जब तेज बोखार, आँखसे पानी गिरना, छींक, खाँसी, सर्दी, सूखी घरघर करनेवाली खाँसी, आँखमें पपडी जमना, चेहरा तमतमाया, लाल इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और इसके साथ ही जेलसिमियमका चरित्रगत लक्षण—आच्छन्नता, चौंक उठनेका भाव इत्यादि लक्षण वर्तमान रहते हैं, उस समय जेलसिमियमका प्रयोग करनेपर बोखार घटकर छोटी माताकी गोटियाँ बाहर निकल पडती है और सब उपसर्ग भी दूर हो जाते हैं। क्रम—१x शक्ति। आगे अनुभवका परिणाम विषय देखिये।

पल्सेटिला—छोटी माताका बोखार घटकर जब वमन, सर्दी, खाँसी ज्यादा परिमाणमे रहती है। नाकसे पीले या सफेद रंगका गाढ़ा बलगम निकलता है, खाँसी दिनमें ढीली और रातमें सूखी रहती है और कानमे पीब, कानमे कुटकुटाहट या अतिसार इत्यादि उपसर्ग रहते है, उस समय इससे बहुत फायदा होता है। ज्वरकी प्रबल अवस्थामें—पलसेटिलाका व्यवहार मना है। सलफर, एण्टिम-टार्ट और हिपर इसके द्वारा छोटी माताके बोखारके बाद छातीमें श्लेष्माका लक्षण रहनेपर फायदा करता है। उनका लक्षण देखिये।

एकोनाइट, बेलेडोना इत्यादि दवाएँ भी छोटी-माताके बोखारमें दी जाती है और बोखारकी पहली अवस्थाकी दवाएँ हैं

पर एकोनाइटकी छटपटी, कातरता, बेचैनी, पसीना न होना और बेलेडोनाका बहुत झोंकके बोखारके साथ बीच बीचमें पसीना, सर-दर्द इत्यादि लक्षण रहने चाहिये ।

ज्वर—बच्चे और बालकोंके स्वल्पविराम ज्वरमें यह दवा सेवन करनेपर जिस तरह फायदा होता है, उसी तरह कम उमर की, मृच्छांगायुग्रस्ता स्त्रियोंके लिये और स्नायविक धातुवाले मनुष्योंके लिये भी यह फायदेमन्द है। जेलसिमियम—सविराम, अविराम, स्वल्पविराम, एकज्वर, प्लीहा-यकृत-संयुक्त ज्वर, सर्दी इत्यादि प्रायः सभी ज्वरोंमें फायदा करता है।

अनुभवका नतीजा—बच्चोंके सभी तरहके बोखारमें जब उनका आँख मुँह तमतमाया, पलकें भारी, पैरका तलवा ठण्डा, माथा और मुँह गरम रहता है ; बच्चा कभी बेहोशकी तरह पड़ा रहता है, कभी उत्तेजित होकर रोता है, नाकसे पानीकी तरह सर्दी टपका करती है, खुसखुसी खाँसी आती है, छींक आती है, अतिसार या कब्जियत रहती है—ये कई लक्षण दिखाई देनेपर मै पहले जेलसिमियम १x और आर्स-आयोड ३x या ६, पर्यायक्रम से ३ घण्टेका अन्तर देकर दिनमें ४।५ मात्रा प्रयोग करता हूँ, इससे ऐसा होता है, कि ७।१ दिनमें ही बोखार छूटकर बच्चा आरोग्य हो जाता है, दूसरी दवाकी प्रायः जरूरत ही नहीं होती (छोटी मात्रामें भी यही दिया जाता है)।

बच्चोंको दाँत निकलनेके समय—ज्वर, बेहोशी, कभी कभी आँखकी पुतलीका बडा हो जाना और जेलसिमियमके दूसरे दूसरे प्रधान लक्षणोंके सिवा अगर यह दिखाई दे, कि परीक्षाके लिये यदि कोई मसूढ़ेमें हाथ लगाता है, तो बच्चा बहुत जोरसे चिल्ला उठता है, क्रोधित हो उठता है, अगर यह लक्षण रहे—तो जेल-सिमियम उसकी अव्यर्थ दवा है।

रेमिटेण्ट और टाइफायड ज्वर—टाइफायड ज्वर की पहली अवस्थामें जब शरीरमें दर्द, कमजोरी, चेहरा तमतमाया, लाल रंगका, औंघानेकी तरहका भाव इत्यादि लक्षण सब रहें, उस समय—जेलसिमियमका प्रयोग किया जा सकता है। अगर बोखार धीमा हो और जेलसिमियमके चरित्रगत लक्षण रहें, तो जेलसिमियमपर ही निर्भर रहा जा सकता है। पर जब असली टाइफायड रोग है, यह ठीक ठीक मालूम हो जाये और इसके साथ ही साथ टाइफायडके बुरे लक्षण सब धीरे धीरे प्रकट होने लगें, उस समय फिर वृथा ही जेलसिमियमका प्रयोग न कर—बेप्टीशिया, आर्निका, रसटक्स इत्यादि दवाओंसे मदद लेनी चाहिये, जेलसिमियमके साथ बैप्टीशियाके लक्षणोंकी बहुत कुछ समानता दिखाई देती है। कारण—शरीरमें दर्द, कमजोरी, आच्छन्न भाव, प्रायः तीसरे पहर बोखारका बढ़ना, स्नायविक उत्तेजना,—यह ऊपर लिखी दोनो ही दवाओंमें है। इसीलिये, जेलसिमियमके बाद प्रायः बैप्टीशियाकी जरूरत पडती है। जेलसिमियममें—अधिक समय रोगी चुपचाप, आच्छन्नकी तरह पडा रहता है, बेप्टीशिया

में—रोगी छटपटाता और प्रलाप बकता है। जेलसिमियममें—हलका अतिसार या कब्जियत रहती है, बेप्टीशियामें—पेटकी गड़बड़ी ही ज्यादा दिखाई देती है और पाखाना, पेशाब, पसीना, सबमें ही बहुत बदबू रहती है। बेप्टीशियाका—मस्तिष्क-लक्षण बहुत प्रबल होता है, रोगी किसी बातका उत्तर देता देता ही सो जाता है। जेलसिमियममें बेप्टीशिया और बेलेडोनाके आंशिक लक्षण रहते हैं।

सविराम ज्वर—ज्वर दिनके १० बजे या दिनके ८॥ बजनेके समय तीसरे पहर आता है। ज्वरकी <u>पूर्वावस्थामें</u>—प्यास ज्यादा नहीं रहती और प्यास रहनेपर भी पानी नहीं पी सकता, निगलनेमें तकलीफ होती है। <u>शीतावस्था</u>—प्यास नहीं रहती, जरा-सा भी शीत पड़नेपर नींद आने लगती है (पल्सि)। <u>उत्तापावस्था</u>—प्यास नहीं रहती। ताप मुँह और मस्तकमें ही अधिक होता है। गात्रदाह—इस अवस्थामें रोगी आच्छन्न भावसे पड़ा रहता है या सोया करता है, और नहीं खोल सकता, उठ बैठनेपर सरमें चक्कर आ जाता है और लुढ़क पड़ता है। उत्ताप बहुत देरतक स्थायी रहता है। <u>पसीनेवाली अवस्थामें</u>—बहुत पसीना, इससे सभी उपसर्ग घट जाते हैं (शीत और योरपाशोंम पसीना थोड़ा थोड़ा होता है)। बीमार छूटनेपर रोगीको बहुत कमजोरी मालूम होती है, जीभ प्रायः साफ रहती है, (कभी-कभी के पीछेका भाग मलत्र और किनारे लाल दिखाई देते हैं), मुँहका स्वाद तीता।

विना किसी उपसर्गवाले नये सविराम ज्वरमें और वसन्त ऋतुके आरम्भमें और किनाइनसे रुके हुए ज्वरमें—जेलसिमियम फायदा करता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डकी क्रिया बहुत क्षीण, रोगी समझता है कि उसके हृत्पिण्डकी गति रुककर वह अभी मर जायगा। नाडी बहुत कोमल और क्षीण रहती है। स्नायविक या स्नायुप्रधान रोगी या हिस्टीरिया-ग्रस्त (मूर्च्छावायु-ग्रस्त) स्त्रियोंका कलेजा धड़कना और हृत्पिण्डमें दबाव मालूम होना, बीमारी—शोककी वजहसे पैदा हुई हो तो और भी ज्यादा फायदा करता है। इसके साथ ही अगर रोगिनी मनमें ऐसा समझती हो, कि गलेके भीतर कोई थक्का या ढेला अडा हुआ है, तो उससे अधिक फायदा होता है।

वृद्धि (aggravation)—शरीर हिलानेपर, तर सीडभरी ऋतुमें, मानसिक उत्तेजनासे, बुरी खबरसे, धूमपान करनेपर, बीमारीके विषयमें सोचनेपर।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, ठण्डी हवामें, उत्तेजक दवाओंका सेवन करनेपर।

बादकी दवा (follows well)—बेप्टी, केक्टस, इपि।

सम्बन्ध—टाइफायड-ज्वरमें—यह बैप्टीशियाके, किनाइनसे रुके हुए ज्वरमें—इपिकाकके, पक्षाघातमें—कास्टिकमके और अर्जेण्टम-नाइट्रिकमके और जिह्वाके कम्पनमें—लैकेसिस, लाइकोपोडियम और आर्सेनिकके तुल्य है।

क्रिया-नाशक (antidote)—काफी, चायना, डिजि।
क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।
क्रम—१x—२०० शक्ति।　　फारमुला—२।

ग्लोनोयिनम।

(GLONOINUM)

(१ भाग नाइट्रो—ग्लिसरिन, ९ भाग अल्कोहलमें गलाकर,—१x शक्ति तैयार होती है)—मेडुला-आबलाङ्गेटा, न्युमोगैस्ट्रिक-नर्व और मस्तिष्ककी शिरा, धमनी प्रभृतिपर इसकी प्रधान क्रिया है। यह बढ़े हुए ब्लड-प्रेशर (High blood-pressure) घटानेकी बहुत बढ़िया दवा है। सर-दर्द, सर्दी या गरमी, लगनेके कारण माथेमें रक्तकी अधिकता, सर्दी-गर्मी, माथेमें रक्तकी अधिकताके कारण खींचन, एकाएक बेहोशी और बेहोशी आ जाना, मस्तिष्ककी बीमारीकी वजहसे वमन इत्यादि बीमारियोंमें यह विशेष लाभदायक है। स्नायविक और रक्त-प्रधान धातुमें यह अच्छी क्रिया प्रकट करता है।

एक जगहपर डा० हेरिंगने कहा है—कि, यदि किसी व्यक्तिका सूक्ष्म-मात्रामें अर्थात होमियोपैथीमें विश्वास न रहे, तो जीभके ऊपर—१x शक्तिकी एक बूँद ग्लोनोयिन डाल दो, देखोगे—तुरन्त माथेमें दपदपा कर दर्द पैदा कर देगा और तुम्हारे सामने ही या

आदमी बेहोश हो पड़ेगा। सलफोनैल—मूल विचूर्ण औषध—१० से ३० ग्रेन मात्रामें गरम पानीके साथ सेवन करानेपर रोगी २ घण्टोंमें बेहोश होकर सो जायगा—यह Hypnotic दवा है।

डा० बेरिज कहते हैं—एक युवक एकाएक पागलकी तरह हो गया। उन्होंने उसकी जीभपर ग्लोनोयिनकी शीशीका काग ३।४ बार छुला दिया, उससे उसका वह उग्रताका भाव घट गया और वह सो गया। दूसरे दिन वह बिलकुल ही चंगा हो गया।

चरित्रगत लक्षण —

१। बहुत ही तकलीफ देनेवाला सर-दर्द, माथा और कनपटीमें टपक होती है, माथेमें किसी तरहकी गरमी, धूप, कपड़ा और टोपी सहन नहीं होती, २। ऋतुस्वावके बदलेमें सर-दर्द, ३। Sun-headache—दिनमें बढ़ना और सन्ध्या होनेके साथ ही साथ सर-दर्दका बढ़ना और घटना, ४। हरेक चीजका आधा उजला light और आधा अन्धेरा dark दिखाई देता है। ५। कलेजेमें बहुत धड़कन होती है प्रत्येक स्पन्दन अपने कानमें सुनता है, ६। शरीरके भीतर और बाहर एक प्रकारका स्पन्दन (pulsation) अनुभव करता है, ७। टपकका दर्द, ८। रक्त-सचयकी वजहसे बच्चोंको बुखार हो जाता है।

सर-दर्द—माथेमें भयानक टपकका तकलीफ देनेवाला दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो माथा चूर चूर हो जायगा, इस ढंगका सर-दर्द गर्दनके पिछले भागसे आरम्भ होकर क्रमशः सामने

की ओर अर्थात कपालकी ओर फैला करता है। बहुत ही तेजीसे खून एकाएक माथेकी ओर बढ़कर, उस रक्तसंचालन क्रियामें एकाएक किसी तरहका व्याघात पैदा हो जानेपर प्रायः इस तरह का सर-दर्द हुआ करता है। इस तरहका सर-दर्द रोगी केवल मुँहसे ही नहीं कहता, माथेमें हाथ लगानेपर भी स्पष्ट मालूम होता है, कि इस तरह टपक हो रही है, इसके अलावा—माथेपर हाथ फेरनेपर भी सहजमें ही समझमें आता है, कि माथेके ऊपरवाली या गर्दनकी शिराएँ (blood-vessels) मानो फूल गयी है। रोगीका चेहरा घोर लाल रंगका दिखाई देता है। बेलेडोनामें भी—माथेमें टपकका दर्द और टपककी तकलीफका लक्षण है, पर ग्लोनोयिनका सर-दर्द—बेलेडोनाकी अपेक्षा भी ज्यादा होता है। ग्लोनोयिनका दर्द एकाएक पैदा होकर प्रचण्ड भाव धारण कर लेता है; परन्तु पर यह दर्द खूब जल्दी घट भी जाता है। बेलेडोनाका इतना जल्दी नहीं घटता। ग्लोनोयिन—रक्तकी अधिकता (Congestion) की अवस्थाकी पहली अवस्थामें और बेलेडोना—कुछ बढ़ी हुई अवस्थामें फायदा करता है। माथा पीछेकी ओर टेढ़ा करनेपर बेलेडोनामें—दर्द घटता है। ग्लोनोयिनमें—उससे दर्द और भी बढ़ जाता है। बेलेडोनामें—माथे पेंच कसवानेपर और माथेपर कुछ दबाना न रखनेपर रोगीको तकलीफ होती है, ग्लोनोयिनमें—ठीक विपरीत अर्थात माथेमें आवरण रखनेपर उससे तकलीफ बढ़ जाती है, रोगी सर खुला रखनेकी इच्छा प्रकट करता है। बेलेडोनामें—सोये रहनेपर सर-दर्द बहुत बढ़

जाता है, ग्लोनोयिनमें—कभी कभी चुपचाप सोये रहनेपर दर्द कुछ घटता है। इसके बाद बेलेडोनाकी तरह बढ भी जाता है। ग्लोनोयिनमें—रोगी बहुत सावधानतासे सर हिलाता-डुलाता है, कारण जरा भी झटका लगनेपर सरका दर्द बढ जाता है। ग्लोनोयिनमें—माथेमें टपकके दर्दके साथ नाडीकी गतिकी लयमें मानो माथेमें एक तरंग बहती है, ऐसा मालूम होता है। ग्लोनोयिन में—बेलेडोनाकी अपेक्षा हृत्पिण्डकी क्रियामें ज्यादा गडबडी रहती है। मेलिलोटस नामकी दवा भी बेलेडोना और ग्लोनोयिनके समकक्षकी ही है, पर मेलिलोटसके रोगीके चेहरे की लाली उन दोनों दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा होती है। मेलिलोटसमें—नाकसे रक्तस्राव होनेपर सर-दर्द घट जाता है। बाल-श्लेष्म ज्वरमें—नाकसे खून गिरनेपर भी अगर उससे सर-दर्द न घटे—एसिड-फास और कुछ घट जानेपर—रसटक्स फायदा करता है। ग्लोनोयिन—अधकपालीके सर-दर्दकी भी बढिया दवा है। रजोलोप या बहुत अधिक रजःस्राव होनेके कारण सर-दर्द होनेपर—ग्लोनोयिन फायदा करता है। जिन्हें गरमीके दिन आनेसे ही सर-दर्द आरम्भ हो जाता है। गरमीभर तकलीफ भोगनी पडती है, गरमी बिलकुल ही सहन नहीं होती, आगकी गरमी और गैसकी गरमी भी सही नहीं जाती, परिश्रम एकदम सहन नहीं होता, ग्लोनोयिन उनका परम बन्धु है। सर-दर्द—माथेमें दाहिनी तरफ—दिनके ८।९ बजेसे आरम्भ होकर रातके २।३ बजेतक रहनेपर—बेलेडोना से अवश्य ही फायदा होगा।

स्त्री-रोग—देरसे ऋतु होता हो या ऋतु बन्द होकर माथेमें रक्तकी अधिकता हो जानेकी वजहसे सर-दर्द। औरतोंको प्रायः ४५ से ५० वर्षकी अवस्थाके बीचमें ऋतु बन्द हो जाता है। इस समय बहुत अधिक रक्तस्राव (मेट्रोरेजिया), खून बदबूदार, चमकीले लाल रगके रक्तके साथ थक्के और इसके साथ ही टपकका सर-दर्द, शरीरमें आगकी धाँहकी तरह गरमी अनुभव होना प्रभृति लक्षण रहनेपर और गर्भावस्थामें धनुष्टंकार आदि आक्षेपिक रोगों में ग्लोनोयिन फायदा करता है।

मनिञ्जाइटिस—मस्तिष्क झिल्ली का प्रदाह, इसी वजहसे चिल्ला उठना या चिल्लाकर रोना (cephalic cry), यह एपिसमें ही अधिक होता है। ग्लोनोयिनमें भी—यह लक्षण है। यदि इस लक्षणके साथ माथेमें टपकका दर्द और इसके साथ ही, धमन होता रहे, तो एपिसकी अपेक्षा ग्लोनोयिन ज्यादा फायदा करता है। क्रोध या लू लग जानेकी वजहसे मस्तिष्कमें रक्त-सञ्चय होनेके कारण मस्तिष्क-झिल्लीका प्रदाह (Meningitis) होनेपर, ग्लोनोयिन और बेलेडोनाकी अपेक्षा—एकोनाइट ज्यादा फायदा करता है; पर अगर टियुबरक्युलर मेनिञ्जाइटिस हो जाये तो एकोनाइटसे बिल्कुल ही फायदा नहीं होता। ग्लोनोयिन म—माथा गरम, हाथ-पैर ठण्डे, पेटके आरम्भमें ही खींचन होती है। माथेपर पानी डालनेसे आराम मालूम होता है।

सर्दी-गर्मी—गर्मी लगकर बीमारी—यह मेज धूप लग कर हो, मेज गरमीकी वजहसे हो—या आगकी गरमीसे काम

करनेकी वजहसे हो—यदि मस्तिष्कपर रोगका आक्रमण हो जाये, नाडी क्रमश कमज़ोर होती जाये, आँखकी पलक स्थिर हो जाये, गिरे नहीं, श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती हो, बहुत मिचली, वमन, कलेजा धडकता हो इत्यादि लक्षण हो तो ऐसा होनेपर—ग्लोनोयिन फायदा करता है। ग्लोनोयिनमें—रोगीके पेटमें एक तरहका दर्द, अतिसार और बेहद अरुचि रहती है (मस्तिष्कपर दौरा होकर वमन—यह बेलेडोना, एपिस-मेल और एथोमार्कियामें भी है)। राहमें चलते-चलते यदि एकाएक कोई बेहोश हो पडे या अज्ञानकी तरह हो जाये, ज्ञान रहनेपर भी यह न समझ सके कि वह कहाँ है—यही कहे भी, अपना मकान और राह भूल जाये, तो उसकी—ग्लोनोयिन ही दवा है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—ग्लोनोयिनमें कलेजा धडकने का भाव बहुत अधिक है, रोगी उसे छातीके सिवा समूचा शरीर यहाँतक कि अँगुलीकी नोकतक अनुभव करता है। हृच्छूल (Angina pectoris) की बीमारीमें—खूनका वेग हृत्पिण्डकी ओर जानेके कारण एक तरहका तकलीफ देनेवाला स्पन्दन मालूम होता है, जैसे मानो कोई चिडिया फडफडा रही है, इसके बाद ही जोर जोरसे स्पन्दन हुआ करता है, रोगी समझता है, कि अभी उसका हृत्पिण्ड फट जायगा। श्वास लेने और छोडनेमें बहुत तकलीफ होती है, कलेजेमें दर्द—कलेजेसे आरम्भ होकर क्रमश शरीरमें चारो ओर फैल जाता है, अन्तमें यह हाथतक चला

आता है, इस समय हाथमें कुछ भी ताकत नहीं रहती, High blood pressure को घटानेकी भी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

टंकार—भयानक प्रकारकी (epileptic form) अकड़न, इसके साथ ही मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता, प्रसवके समय अथवा प्रसवके बाद बहुत-सी स्त्रियोंको आक्षेप मिली अकड़न पैदा हो जाती है। इस समय यदि यह देखनेमें आये कि चेहरा खूनकी तरह लाल हो रहा है, फूला फूला है, नाड़ी मोटी और कड़ी है, मुँहमें फेन भरा है, बेहोश हो रही है, हाथका अँगूठा कभी मुट्ठीमें लेती है—कभी अँगुली अलग अलग हो जाती है, पेशाबमें अण्डलाल है, यदि ये लक्षण रहें तो—ग्लोनोयिन फायदा करता है। ऐसी अकड़नमें—बेलेडोना, स्ट्रैमोनियम, हायोसियामस, वेरेट्रम, इग्नेशिया, ओपियम इत्यादि दवाओंकी भी जरूरत पड़ती है। एकाएक शोक, दुःख, मनस्ताप, इत्यादि कारणोंसे पैदा हुई अकड़नमें—इग्नेशिया या ओपियम (ग्लोनोयिन—भी इन कारणोंमें है)। <u>वेरेट्रम एल्बम</u>में—चेहरा नीला, अंग ठण्डे और कपालपे ठण्डा पसीना होता रहता है। <u>हायोसियामसमें</u>—मुँहमें फेन रहता है और रोगी पागल या अज्ञानकी तरह दिखाई देता है। बेलेडोनामें—चेहरा लाल, आँखोंमें लाल डोरा भाव, माथा गरम और गलेकी पेशी-का आक्षेप इत्यादि लक्षण रहते हैं। <u>क्यूप्रम</u>—होंठ और मुँह नीला हो जाता है और आक्षेपसे (spasm) समस्त अँगुलियाँ मुट्ठी बन्धकर टेढ़ी हो पड़ती हैं। <u>एकोनाइट</u>—गलेके पास या

यूपमें रहनेके कारण अथवा दाँत निकलनेके समय खींचन—मेनिञ्जाइटिस।

पीबका स्राव—बहुत दिन हुए किसीके शरीरमें चोट लगकर कोई जगह फट गई थी; पर वह कटी जगहका दाग जहाँ था, वहीं फिर दर्द या तकलीफ होने लगे, पककर पीब निकलने लगे, उसमें ग्लोनोयिनका व्यवहार करे, फायदा होगा।

द्रष्टव्य :—हृत्शूल (Angina pectoris), दमा, हार्ट-फेल प्रभृतिमें कितनी ही बार तुरन्त फायदा होनेके लिये इसकी स्थूल-मात्रा (Non-homeopathic) व्यवहृत होती है। (physiological dose 1/100 of a drop १०० बूँद पानीमें—१ बूँद मदर टिंचर देकर उसकी एक बूँद)। जब किसी बीमारीमें सूतकी तरह नाड़ी, नाड़ीकी गड़बड़ी, चेहरा मलिन, मस्तिष्कमें खूनकी कमी, शरीर एकदम ठण्डा, हृत्पिण्डकी अवस्था खराब, मूर्च्छा प्रभृति देखे, उस समय इसे ऊपर लिखी मात्रामें व्यवहार करें (हार्ट-फेलियोरके लिये क्रैटिगस देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—सूर्यकी गरमीसे, गैसकी रोशनीसे, माथा नीचा करनेपर, सीढ़ीमें चढ़नेपर।

ह्रास (amelioration)—स्थिर-भावसे रहनेपर, जाड़ेमें, पर माथेमें पानी ढालनेपर बढ़ना।

क्रिया नाशक (antidote)—एकोन, केम्फर, काफि, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ दिन।

फार्मुला—जर्मनी—६ वीं, अमेरिकन—६ष।
क्रम—३०-२०० शक्ति।

नेफेलियम उलि।

(GNAPHALIUM ULI)

(एक तरहके पौधेका टिंचर)—मुँह और निम्नाङ्गके स्नायु-शूलके दर्दमें यह फायदेमन्द है। सायटिक—सायटिका स्नायु जहाँ तक गयी है, वहाँतक अर्थात कमरसे उरुके पिछले भाग होता हुआ परकी पँडीतक भयानक दर्द,—यदि इस दर्दके साथ सुन्न हो जाने का भाव रहे या एक बार दर्द, एक बार सुन्न, इस तरह होता रहे, तो इस सायटिकाकी यह अव्यर्थ दवा है पैरके अँगूठेमें वातकी तरह दर्द तथा स्त्रियोंको थोड़ा रजःस्राव और तलपेट भारी मालूम होना और दर्दके साथ वाधकके दर्दमें भी—नेफेलियम फायदा करता है। (सायटिकाकी दूसरी दूसरी दवाओंके लिये कोलोसिन्थ अध्याय देखिये)। पुराना कमरका दर्द (Lumbago) और स्थिरतामें घटनेपर भी इससे फायदा होगा।

पेटके भीतर गुड़गुड़ गुड़गुड़ शब्द, पेटमें कितनी ही जगहोंपर शूलका दर्द और बच्चोंके हैजाकी पहली अवस्थाके दस्त-कैमें यह फायदेमन्द है।

सदृश—कैमोमिला, पल्सेटिला, जैन्थाक्सीलम।
क्रम—३—३० शक्ति। फार्मुला—३।

ग्रैनेटम ।

(GRANATUM)

(इस देशके अनारके गाछकी सोरसे मूल अर्क तयार होता है)—फीता-क्रिमि (tape-worm) निकाल देनेके लिये यह छाल बहुत दिनोंसे आयुर्वेदीय चिकित्सामे व्यवहृत होती आ रही है। हमारा कथन यह है, कि होमियोपैथीके मतसे सूक्ष्म-मात्रामें व्यवहृत होनेपर इससे केवल फीता-क्रिमि ही नहीं—सभी तरहकी क्रिमिमें शायद इससे फायदा होगा। कारण—मुँहमे पानी भर आना, जी मिचलाना, गड़हेमें धँसी आँखे, आँखकी पुतली बड़ी हो जाना, लगातार सरमें चक्कर आना, क्षीण-दृष्टि, राक्षसी-भूख, बदहजमी, बहुत ज्यादा परिमाणमे खाने पीनेपर भी दिनों-दिन शरीरका सूखते जाना, पेटमे दर्द, नाभीकी जगहपर दर्द और खजन, मलद्वारका कुटकुटाना, नाक खुजलाना, अँगुली और नखका खोंटना, चेहरा सफेद या पीला हो जाना, अकड़न प्रभृति क्रिमिके सभी लक्षण इसकी परीक्षामें पाये जाते है। ग्रैनेटम—सिना, फीयासिया, टियुक्रियम, प्रभृतिके सदृश दवा है और ज्यादा फायदाकी चीज है (क्रिमिकी ओर और दवाओंके लिये सिना अध्याय देखिये)।

अनारकी जडकी छालको पानीमें सिझाकर एक चायके चम्मच की मात्रामें खाली पेटसे कई दिन सेवन करनेपर क्रिमि-रोगमें

फायदा होता है। इसका रोगी—अभिमानी, कृपण, कलह-प्रिय और अपनी बीमारीके सम्बन्धमें हमेशा सतर्क रहता है।

क्रम—/, १x—३ री शक्ति। फारमुला—१।

ग्रैफाइटिस ।

(GRAPHITES)

(ब्लैक लेड, चिमूर्णके आकारमें तैयार होता है)—यह एक प्रधान सोरा-दोष-नाशक (एण्टि-सोरिक) दवा है। गोरा रंग, देखनेमें बलवान, जिन्हें अकसर कब्ज रहता है और जो चर्म-रोग की तकलीफ पाया करते हैं स्त्री-रहनेपर वह अकसर मोटी-ताजी, मास थुलथुल, हमेशा दुःखित और उदास रहती है, हमेशा ही मनमें अमंगलकी आशङ्का बनी रहती है, इसीलिये, हमेशा ही उद्विग्न, केवल मृत्युके विषयमें सोचता है। किसी एक विषयपर मन नहीं लगा सकता, कुछ भी याद नहीं रहता, मन भूल जाता है, चिड़चिड़ापन मालूम होता है, सहजमें ही सर्दी लग जाती है, गाने-बजानेसे रुलाई आने लगती है, एक तरहका मुद्रा-दोष,—किसी कामसें लगे रहनेपर हाथ-पैर हिलाती है, पुरुषके सहवासकी अनिच्छा, ऋतु विलम्बसे होता है, उनकी बीमारीमें—ग्रैफाइटिस उपयोगी। ग्रैफाइटिस धातुका ३ "एफ" (F) हमेशा याद रखना चाहिये, जैसे,—Fair, Fatty Flabby, स्त्रियोंके यौवन

कालकी जिन सब बीमारियोंमे—<u>पलसेटिला</u>, ऋतु बन्द होनेकी उमरकी (४५ वर्षसे) स्त्रियोंकी बीमारीमे—ग्रैफाइटिस उपयोगी है।

<u>चरित्रगत लक्षण</u> —

१। चर्म-रोग—फटा फटा या अकौताके घावका तरह, उसमें लसदार रस निकलना, पलकोंमे एकजिमा—पलक लाल रगकी, पलकोंके किनारे मछलीके चोयटेकी तरह पदार्थ जमे या पपडी पडे, २। बहुत अधिक रतिक्रिया या शुक्र क्षयकी वजहसे जननेन्द्रियकी कमजोरी, ३। माथेपर किसी गोलाकार सीमा-बद्ध स्थानमे जलन, ४। शरीरका चमडा देखनेसे ही रोगीकी तरह, प्रत्येक चोटवाली जगह पक जाती है, पीब हो जाता है। पुराने जखमका चिन्ह भी फिरसे पकने लगता है, ५। हाथ-पैरकी अँगुलियोंके नखका विकार, नख सिकुडसे जाते है, घाव होते है, मोटे और कडे हो जाते है, ६। स्तनका फोडा आराम होने बाद कडापन का भाव और जखमका दाग रहता है, फिर उसमे प्रदाह पैदा हो जाता है, इसी तरह बार बार होकर अन्तमे जखम कैन्सरमे परिणात हो जाते हैं, स्तनसे दूध नहीं निकलता, ७। ऋतुके पहले और बाद प्रदरका स्राव, खाल उधेड देनेवाला स्राव दिन-रात निकलता है (ऋतुके पहले स्राव—सिपि, बाद—क्रियोजोट), ८ कब्जियत—मल खूब कडा, गांठ गांठ, बडा (खूब बडा—सलफर) उसमे आम लिपटी हुई, बडी तकलीफसे निकलती है, पाखाना होने बाद मलद्वारमे जखमकी तरह अकडनका दर्द मालूम होता, ९। स्त्री और पुरुष दोनोंको ही रतिक्रियाकी इच्छा न होना, १०।

चेहरेका विसर्प, उसमें जलन और डक मारनेकी तरह दर्द, दर्दकी गति दाहिनी ओरसे आरम्भ होकर बायीं ओर जाती है।

चर्म-रोग—शरीरके प्राय सभी स्थानोंमें और खासकर माथेमें, मुँहमें, कानके पिछले भागमें, कानके ऊपर, पलकोंमें और जननेन्द्रियमें—फुन्सीकी तरह या फटे घावकी तरहके किसी उद्भेद से मधुकी तरह गाढा लसदार रस निकलनेपर यह उसकी अव्यर्थ महोषधि है। हमलोग बहुत छोटे छोटे बच्चोंके माथेमें और कानमें एक तरहका चर्म-रोग (Eczema) देखते है, उसमे ग्रैफाइटिससे फायदा होनेपर भी लक्षण भेदके अनुसार और भी कितनी ही दवाओंकी जरूरत पडती है। एकजिमाके ऊपर मछलीके चोंयटेकी तरह पदार्थ द्वारा ढका रहनेपर और कानमें एकजिमा होकर क्रमसे रस लगकर माथा सट जानेपर—ग्रैफाइटिस फायदा करता है।

ग्रैफाइटिस शरीरके सभी स्थानोंके एकजिमामें फायदेमन्द होनेपर भी हाथकी पीठके एकजिमामें (dorsal region of the forearm and hands) ज्यादा लाभदायक होता है, रोगवाली जगहका चमड़ा मोटा होता जाता है, फटता है, कितनी ही की अँगुलियाँ और नख मोटे हो जाते हैं, कुरूप दिखाई देते हैं, जिनके शरीरका चमड़ा फटता है, वे अगर ग्रैफाइटिस का बाहरी प्रयोग कर तो भी बहुत फायदा होगा। वेसोलिन—१ आउन्स, ग्रैफाइटिस—विचूर्ण (मूल) ८ ग्रेन, मिलानेपर मरहम तैयार होता है।

आर्कटियम-लैप्पा—एकजिमाके घावसे बहुत बदबू निकलती है, हमेशा रसमे भींजा रहता है और भूरी या सफद रंगकी पपड़ी जमती है। इसके साथ ही किसी जगहकी गांठ फूलना और वह पककर पीव निकलता रहनेपर यह और भी फायदा करता है। यह एक अति उत्तम खून साफ करनेवाली दवा है। (आर्निका अध्याय देखिये)।

नैट्रम-म्यूर—हजामतके घाव, दाढीका एकजिमा, सन्धियोंके गासेमे, हाथ-पैरोंके गासेमे और घुटनेके गासेमे एकजिमा, रस गिरता है और बहुत खुजलाता है।

पेट्रोलियम—ग्रैफाइटिसके लक्षणकी तरह इसमे कानमे और कानके पिछले भागमे और माथेमे उद्भेद (eruption)—अधिक निकलता है, पर विशेषता यह है, कि इसके उद्भेद जाड़के दिनोंमे बढते है और गरमीमे आपसे आप घट जाते है। (सलोमे भी यह लक्षण है)।

नक्स-जुगलेन्स—ग्रैफाइटिसकी तरह इसमें भी कानके पिछले भागमें ज्यादा उद्भेद निकलते है, इसके अलावा माथेमे लाल रंगके उद्भेद, उसमे बहुत खुजली, हाथमे, बगलमे खुजलीकी तरहके दानोंमे भी यह फायदा करता है।

विनका माइनर—इसका उद्भेद बहुत ही बदबूदार हुआ करता है और यह उद्भेद कानके पिछले भागमे, मुँहमे और माथेमे बहुत ज्यादा निकलते है। इसमे घावके ऊपरी अंशमें पपड़ी जमती है

और उसके बहुत नीचे पीव रहता है, घाव प्राय: सड़ना आरम्भ हो जाता है, उसमें कीड़े निलबिलाते हैं, (मोलियैगडर), बच्चोंके माथेमें और मुँहमें दुधिया फोड़े नामके एक तरहके उद्भेद निकलते हैं।

स्टैफिसैग्रिया—एकजिमासे हमेशा ही रस निकला करता है, इसमें बहुत बदबू रहती है, जहाँ लगता है वहाँके केश उड़ जाते हैं। इसमें माथेके पिछले भागमें (occiput) अधिक उद्भेद निकलते हैं, पाराके बहुत अधिक व्यवहार और रोगी बालक बालिकाओंके धातुमें यह ज्यादा फायदेमन्द है।

बायोला-ट्राइकलर—बच्चोंका एकजिमा, रस निकलता है, केश झड़ जाते हैं, यदि इसके साथ ही बच्चेके पेशाबमें बहुत कड़वी और तेज गन्ध रहे (बिल्लीके पेशाबकी तरह बदबू) ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता हो, अथवा पेशाब बिल्कुल ही बन्द रहता हो, इसमें इससे फायदा होगा। इसके उद्भेदोंके और सभी लक्षण—बिनका माइनरकी तरह है।

एक तरहका चर्मरोग—जिसमें अँगुलियोंके गामे फटते हैं, स्तनकी घुंडी फटती है, योनिके दोनों किनारे जहाँ मिले हैं वहाँ और मलद्वार इत्यादि स्थानोंका फटना, उस फटी जगहसे गाढ़ा लसदार रस निकला करता है। ऐसे चर्मरोगमें एक मात्रा ग्रैफाइटिस प्रयोग कर देनेसे ही आरोग्य हो जाते हैं।

शरीरकी दूसरी दूसरी जगहोंके एकजिमामें बराबर जिन जिन दवाओंकी हमलोगोंको जरूरत पड़ती है, उनकी एक सूची नीचे दी जाती है —

कानके पीछे ग्रैफा, कैलि-बाइ, लाइको, मेजेरि, नेट्र-म्यूर, ओलियैण्डर, पेट्रोलि, स्टैफि। सामने कपालमें और केशोंके भीतर—हाइड्रैस्टिस, गर्दनमें-क्लिमे, नेट्रम-म्यूर दोनों हाथमें—क्लिमे, कैन्थर, ग्रैफा, मेजेरि, नेट्र-म्यूर, पेट्रोलि, घटना और घुटनेके पीछे नेट्र म्यू, सिपि, अण्डकोषमें क्रोटन, हाइड्रैस, नेट-म्यूर, पेट्रोलि, आर्टिका-युरेन। हाथ-पैरके तलवेमें व्यूफोराना।

सभी प्रकारके चर्म-रोगोंमें भीतरी दवा सेवन करनेके समय—विशुद्ध ग्लिसरिन या जैतूनका तेल (ओलिव-आयल) का बाहरी प्रयोग किया जा सकता है। इससे चर्म-रोग कोमल रहता है और खुजली घट जाती है।

अकौता—सल्फर अध्याय देखिये।

कानकी बीमारी—कर्ण-पटह (tympanum) में [illegible] हुआ, केवल कर्णनलीके भीतर सर्दीका श्लेष्मा इकट्ठा [illegible] (**catarrh** of the, eustachian tube)। कोई चीज भीतर फड़फड़ आवाज होती है या सों सों इसमें—ग्रैफाइटिस फायदा करता है।

बहरापन—ऊपर लिखे चिह्न हैं। कानमें बहरापन अर्थात् कानसे सुन न पड़ना बहुत हो जाय. कानके भीतरके स्नायु रह रह कर दर्द करता है और भी एक तरहका बहरापन है. जिसमें न कुछ सुनाई देनेके समय (सनसनाहट [illegible] आवाज हुआ करती है) ऐसी अच्छी तरह सुन सकता है, यहाँतक कि बहुत धीमे आवाजसे बोलनेपर भी सुन पड़ता है. पर गाड़ी पर चढ़नेपर फिर उस तरह सुन नहीं पड़ता, बहुत जोरसे बोलनेपर थोड़ासा सुनता है, इस बहरेमें—मैग्नेशिया [illegible] कुछ [illegible] दिनों तक व्यवहार करनेपर फायदा हो सकता है। ([illegible] अध्याय देखिये)—कानके भीतर [illegible] नर्व—C[illegible].

ईनेप्स (Elaps) इसमें पहले ऐसी [illegible] कान नहीं सुन सकता है. इसके बाद एकाएक कानमें एकदम बहुत हो जाता है कुछ भी सुन नहीं पाता; कानके भीतर [illegible] और [illegible] तरह एक प्रकारकी आवाज हुआ करती है. कानमें कुछ भी [illegible] नहीं रहता।

[illegible]—ऐसा मालूम होता है मानो [illegible] कानने [illegible] बन्द कर रखा है. इसीलिये सुन नहीं पाता। कभी [illegible] यहाँतक कि [illegible] भी [illegible] नहीं होती।

आँखकी बीमारी—[illegible] [illegible] बोलनेमें दर्द [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

करता है। यदि आँखकी बीमारीमें नीचे लिखे लक्षण दिखाई दे तो ग्रैफाइटिस एक अव्यर्थ दवा है।

स्वच्छत्वचा (कनीनिका—cornea) या आँखके बीचकी जगहपर छालेकी तरह जखम, प्रदाह, आँखसे पानी गिरता है, जलन होती है, खाल उधेड देनेवाला (excoriating)। पतला पीवकी तरह पदार्थ आँखसे निकलना, पलकोंके किनारे मोटे और भरेसे हो जाते हैं, उसमें पपडी जम जाती है या चोयटेकी तरह पदार्थसे वह ढका रहता है। आँखके कोने फटकर कभी कभी खून भी निकलता है, आँखकी पलक मोटी होकर, भीतर या बाहरकी ओर उलट पडती है। इन ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ किसी भी तरहकी आँखकी बीमारीके साथ ग्रैफाइटिसका चरित्रगत चर्म-रोग रहे—ग्रैफाइटिस दोनो तरहकी बीमारी ही आरोग्य करने की ताकत रखता है।

<u>हिपर-सलफर</u>—इसमें ग्रैफाइटिसके बहुतसे सदृश लक्षण पाये जाते हैं, इसके अलावा आँखके भीतर और बाहर बहुत ज्यादा टपकका दर्द और तकलीफ रहती है। उसमे हाथतक नहीं लगाया जाता। अंजनी (stye) पककर पीव निकलता है इत्यादि इस दवाके लक्षण है।

<u>कैल्केरिया-कार्ब</u>—कण्ठमाला धातु, आँख पलके मोटी और यदि आँखका सफेद अश गदला पड जाय तो यह फायदा करता है। रातमे आँख सट जाती है, दिनमे पपडी जमती है।

सलफर—आँखकी पलकोंके किनारे लाल (रक्तहीन, सफेद—ग्रैफा), आँख फूलती है, कुटकुटाती है और जलन होती है। सवेरे जलन ज्यादा होती है। पानी गिरता है।

आर्सेनिक—आँखसे जब स्राव निकलता है, उस समय उसमें जलन होती है और जिस जगह यह स्राव लगता है, वहाँकी खाल सी उधड जाती है, आँखकी पलक फूल जाती है, आँखें बन्द हो जाती हैं।

इयुफ्रेशिया—इसकी आँखके स्रावसे गालतक खाल उधड जाती है,पर स्राव पीवकी तरह गाढा होता है (पतला—ग्रैफाइटिस)।

पल्सिम-क्रूड—सिर्फ आँखके कोनेमें (canthus) प्रदाह, (सब पलकके किनारे—ग्रैफाइटिस)। आँखके भीतरकी ओर और पलकोंमें रस-भरे दाने।

पल्सेटिला—रातमें बहुत ज्यादा परिमाणमें पपडी निकलती है, सवेरे आँख सट जाती है, पलकपर छोटी छोटी फुन्सियाँ होती हैं (granulations), गुहौरी होनेपर भी यह फायदा करता है।

धूजा-आक्सिडेण्ट—सवेरे सभी तकलीफोंका बढना, पर इसी समय ठण्डे पानीसे आँख धोनेपर तकलीफ बहुत कुछ घट जाती है।

स्त्री-जननेन्द्रिय-सम्बन्धी कुछ बीमारियाँ :—

महात्मा हनिमैन सब बीमारियोंमें ही रोगकी अपेक्षा रोगी के धातुगत लक्षणोंपर सबसे पहले लक्ष्य करने कहते हैं और उससे फायदा भी अधिक होता है पहले ही कहा है, कि ग्रैफा-

इटिसका ३ "F—एफ" Fair, fatty and flabby, रोगिनी का शरीर खूबसूरत रहता है, अच्छी मोटी ताजी और उसका मास मूलता थुलथुला रहता है, अर्थात थुलथुला—यहाँ मोटी ताजीका अर्थ बलवान नहीं है—वह देखनेमे मोटी-ताजी तो रहती है, पर उसका शरीर रक्तशून्य रहता है, शरीरमें ताकत बिलकुल ही नहीं रहती, अकसर कब्जियत, चर्म-रोग, सर्दी-खाँसी इत्यादि बीमारियोंसे तकलीफ पाया करती है। इस ढङ्गकी धातुके साथ ग्रैफाइटिसका रोग-लक्षण मिलनेपर तुरन्त उसे प्रदान करें, फलाफल दिखाई देगा।

रजःस्राव—या तो ऋतु रुका होता है या देरसे ऋतु होता है, ठीक बँधे समयपर नहीं होता, ऋतुस्राव बहुत थोडी मात्रामें होता है, उसका रग उजला, पानीकी तरह, पलसेटिलाके लक्षण बहुत कुछ अकसर ग्रैफाइटिसकी तरह रहते है, इसमें भ ऋतु परिमाणमें थोडा होता है, ऋतु देरसे होता है, रोगिनी एकदम रक्तहीन, देखनेमें मोटी-ताजी, रज स्रावका रग उतना लाल नहीं रहता—बल्कि पानीकी तरह, हमेशा सिहरावनका भाव इत्यादि लक्षण रहते है, पर इनमे प्रभेद यह है कि पलसेटिलाका रोगी जरा-से मे ही रो देता है, ग्रैफाइटिसकी तरह भावी अमगल की आशङ्का नहीं करता। ग्रैफाइटिसमे मुँहमे फुन्सयोंकी तरह एक तरहके उद्भेद रहते है, पल्सेटिलामे वे नहीं रहते,—ग्रफाइ-टिसमें—कब्जियत, पल्सेटिलामें—अकसर—अतिसार, अजीर्ण आदि पेटकी गडबडी लगी रहती है।

श्वेत-प्रदर—स्राव दूधकी तरह सफेद, बहुत बदबूदार बहुत ज्यादा परिमाणमें स्राव होता । जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड जाती है। ऋतुस्रावके बदले श्वेतप्रदरका स्राव। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—इसमें प्रदर, ऋतुके पहले और बाद होता है। बायीं ओरके डिम्बकोषमें सूजन, कड़ापन और स्पर्श बिलकुल ही सहन नहीं होता, यहाँतक कि हाथ लग जानेपर भी दर्द मालूम होता है, जरायुका बाहर निकलना (prolapsus of the uterus) इत्यादि लक्षण भी—ग्रैफाइटिसमें हैं। ग्रैफाइटिसके सभी स्राव बदबूदार होते हैं, यदि इस तरहके बदबूदार प्रदरके स्रावके साथ ऐसा मालूम हो कि मानो जरायु योनिपथकी ओर चला आ रहाहै, पेट बहुत भारी रहता है, पेटमें रह रहकर खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है, यह दर्द कूल्हेतक चला जाता है, तलपेट जकड़ जाता है इत्यादि लक्षण रहनेपर और रोगिनी यदि ऊपर बतायी ग्रैफाइटिसके धातुवाली हो तो फिर कोई बात ही नहीं है—एकमात्र ग्रैफाइटिससे ही यह बीमारी आराम होगी।

<u>कोरोसिस</u>—रोगिनीका चेहरा हरा धापता है, हरित्पाण्डुरोग की रोगिनी हमेशा ही उदास रहती है और अमगल्की आशंका करती है, हमेशा उसको सिहरावन मालूम होता रहता है हृत्पिण्ड में बहुत दर्द, माथेमें मानो रक्त चढ़ता है, इससे उसका चेहरा लाल हो जाता है, इसीलिये, वह समझती है, कि मानो हृत्पिण्ड की कोई बीमारी हो गयी, रातमें समूचे शरीरके भीतर टपक-सी होती है, ऋतु बहुत देरसे होता है, लाल रक्तकण (red corpu-

है, पेशावमें कुछ लाल तली जमती है, पेशावकी गन्ध खट्टी रहती है।

सविराम ज्वर—सवेरे ५ बजे, ६ बजे अथवा ७ बजे और सन्ध्या ४ से ८ बजेके बीचमें, कम्प देकर बोखार आता है। शीतावस्था—प्यास नहीं रहती, शीतके समय पैर बरफकी तरह ठण्ढा रहता है और रोगीके शरीरमें एक बार शीत और एक बार जलन अनुभव होती है। उत्तापावस्थामें—बहुत उत्ताप, उत्तापकी वजहसे रातमें बहुत छटपटाता है, नींद नहीं आती, हाथ-पैरमें जलन होती है, सरमें दर्द और गर्दनमें भी दर्द रहता है। पसीनेवाली अवस्थामें—खूब पसीना, जरा भी हिलनेसे पसीना—यह पसीना—तो बदबूदार होता है अथवा उसमें खट्टी गन्ध रहती है, पैरमें इतना पसीना होता है, कि पैरकी खाल उघड़ जाती है, कभी कभी पसीना बिलकुल ही नहीं रहता है। ज्वर-छूटनेकी अवस्थामें—भूख नहीं रहती या बेतरह भूख रहती है, पेट वायुसे फूल उठता है, कब्ज, पेशाब मठाकी तरह होता है, उसमें तली सफेद (कितनी ही बार कम्पके बाद ही पसीना होता है, उत्ताप होता ही नहीं)।

द्रष्टव्य :—ग्रेफाइटिसके बार बारके प्रयोगसे रोग बढ़ जाता है। इसलिये, इसकी एक मात्राका प्रयोग कर नतीजेकी राह देखनी चाहिये। इसकी निम्न-शक्तिकी अपेक्षा उच्च शक्ति ज्यादा फायदा करती है।



वृद्धि (aggravation)—रातमे, ऋतुके समय, ऋतुके बाद, उत्तापसे, नहाने और वायु सेवन करनेपर।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे, भोजनके बाद और गर्म दूध पीनेपर।

सम्बन्ध—ऋतुस्रावमे—लाइको और पल्सके बाद यह बढ़िया काम करता है। युवतियोंके मेह-रोगमे—कैल्केरियाके बाद, चर्म-रोगमे—सलफरके बाद, मोटाई घटानेके लिये—कैल्केरिया-कार्बके बाद और प्रदर रोगमे—सिपियाके बाद यह खूब फायदा करता है। इसमें लोहेका अश है—इसीलिये, प्राय सभी बीमारियोंमे—ग्रैफाइटिसके बाद फेरम लाभदायक है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, आर्स, चायना, शराब।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—६x—२०० शक्ति।

मलद्वार और स्तनके जखमकी बीमारीमें—ग्रैफाइटिस ३x चर्णसे मरहम बनाकर व्यवहार करनेपर फायदा करता है।

फारमुला—७।

ग्रैटियोला आफिसिनैलिस।

(GRATIOLA OFFICINALIS)

(एक तरहकी छोटी जातिके गाछका टिंचर)—यह विशेषकर अतिसार और पेटकी बीमारियोंके काममे ही आता है। ग्रैटियोला

स्थूल मात्रामें सेवन करनेसे—तेज वमन, बहुत अधिक परिमाणमें जोरसे दस्त और पेशाबका परिमाण बढ जाता है। यह वमन लानेवाला, दस्तावर और पेशाब लानेवाला है। बहुत ज्यादा ठण्डा पानी पीना—अगर बीमारीका कारण हो तो सबके पहले इसको स्मरण करना चाहिये। मलका रंग हरा, पाखानेके साथ फेन, इसके साथ ही पेट फूलना, पाखानेके बाद मलद्वारमें जलन, बहुत टूटकर दस्त आना, पेटमें दर्द न रहना प्रभृति इसके लक्षण हैं। मलद्वारमें छोटी छोटी किमि रहती हैं, मलद्वारमें जलन रहती है। जी मिचलाया करता है।

ऋतुस्राव—स्त्रियोंको असमयमें ही ऋतुस्राव आरम्भ होकर अधिक परिमाणमें स्राव और अगर यह स्राव ज्यादा दिनों तक होता रहे तो इससे फायदा होता है। नींद न आनेकी बीमारी की भी यह बढिया दवा है। दाहिने स्तनमें तेज दर्द।

अतिसार—इसके लक्षणके लिये क्रोटोन अध्याय देखिये

क्रम—३x, २—३० शक्ति। फारमुला—१।

ग्रिण्डेलिया रोबस्टा।

(GRINDELIA ROBUSTA)

अमेरिकाके एक तरहकी लताके वृक्षसे टिंचर तैयार होता है; डा० ग्रिण्डेल बोटैनिस्टके नामके अनुसार इसका नाम—

ग्रिण्डेलिया रखा गया है । ग्रिण्डेलिया वक्षस्थलकी कई बीमारियोंकी महोषधि है । न्यूमोगैस्ट्रिक-नर्वके बीचमे क्रिया कर यह श्वास पेशीमे पक्षाघात पैदा कर देता है ।

ब्राङ्कियल-एजमा, कार्डियक-एजमा, क्रानिक-ब्राङ्काइटिस, ब्राङ्को निमोनिया प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें—अत्यन्त श्वासकष्ट (difficult breathing) विछावनपर सो न सकना, खाँसी, बहुत ज्यादा मात्रामें लसदार बलगम निकलना और तब इस कष्टका घटना ये लक्षण सब रहनेपर इससे ज्यादा फायदा होगा । हूपिङ्ग खाँसीमे—जब ज्यादा मात्रामे बलगम निकलता है, उस समय इससे फायदा होता है । हृत्पिण्डकी बीमारीमे रोगीको सोये सोये अगर साँस रुक जानेकी तैयारी हो जाती है, इसी कारणसे कलेजा धडक उठता है साँस छोडनेके लिये रोगी व्याकुल हो पडता है, प्लीहा खूब बडी, प्लीहामें तेज दर्द होता है, यह दर्द उरुतक उतर आता है और इसी कारणसे रोगी बेचैन हो पडता है ।

सदृश—लैकेसिस, सैंगुनेरिया ।

क्रम—ϕ—१२ शक्ति । फारमुला—जर्मन—४, अमेरिकन—२

गुयेकम ।

(GUAIACUM)

(यह रालसे बनता है)—यह एक सोरा-विषनाशक दवा है। फाइब्रस टीशूके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है , गर्मीकी बीमारी

की दूसरी अवस्थाके उपसर्गमें और वातकी धातुमें यह अधिक क्रिया प्रकट करता है। नये वातमें और उसके प्रदाहकी तकलीफमें इससे ज्यादा फायदा होता है।

गठिया वात—हाथमें वात, कन्धेमें वात, सायेटिका, कमरमें दर्द, (लम्बेगो), पँडीकी गाँठोंमें दर्द,—यह समूचे पैरतक फैल जाता है, माथेमें और गर्दनके पिछले भागमें वातका दर्द, माथेकी खोलमें दर्द, नया वात, घुटने फूलना, घुटनेके प्रदाहका दर्द, थोडा भी दबानेपर दर्दका बढना, रोगवाली जगहपर तापका सहन न होना इत्यादि नये प्रदाहके लक्षणोंमें इसकी निम्न-शक्तिका भीतरी सेवन करनेपर प्रदाह बहुत जल्द घट जाता है। घुटनेमें चोट लगकर जानु-सन्धिका प्रदाह (साइनोवाइटिस) हो जाने पर भी इससे फायदा होता है। गर्मी या पाराके सेवनसे उत्पन्न वात रोगमें भी अगर इस ढङ्गका लक्षण रहे—गुयेकम फायदा करता है। गुयेकममें पेशी बन्धनी (टेण्डन) सङ्कुचित होकर छोटी हो जाती है, इससे अगमें विकार पैदा हो जाता है, रोगी इच्छा-नुसार चल फिर नहीं सकता। पुराने वातमें प्राय यह अन्तवाला लक्षण दिखाई देता है। इसके अलावा—पुराने वातमें गाठोंमें छोटे छोटे पत्थरके चूरकी तरह एक पदार्थ (concretion) पैदा होता है (कास्टिकम अध्याय देखिये)—गुयेकम इसकी भी बढ़िया दवा है।

टानसिल-प्रदाह और गलक्षत—टानसिल प्रदाहकी पहली अवस्थामें यह फायदेमन्द है। कितनों ही को गर्मीकी बीमारी

की दूसरी अवस्थामें—मुँहके भीतर, गलेमें और तालुमें जखम हो जाता है, जखम क्रमश रोगवाली जगहमें छेद कर डालता है, इसमें गुयेकम निम्न-शक्ति (१म से ३ य क्रम) फायदा करता है और अरम-मेट, मर्क-कोर, हिपर, एसिड-नाइट्रिक प्रभृतिकी अपेक्षा भी यह ज्यादा फायदा करेगा।

श्वास-यंत्रकी बीमारी—अत्यन्त कष्टदायक सूखी खाँसी, दम बन्द हो जानेकी तरह हो जाता है और वक्षावरक झिल्ली प्रदाहकी या प्लूराइटिसकी तरह कलेजेमें सुई गडनेकी तरह दर्द होता है।

स्त्री-रोग—वात रोगिनी स्त्रीका डिम्बकोष-प्रदाह (ओवे-राइटिस), वाधकका दर्द, अनियमित ऋतुस्राव इत्यादि।

पेशावकी बीमारी—लगातार वेग, पेशावमें बहुत बदबू, पेशावके बाद मूत्राशयके मुँहपर सुई गडनेकी तरह दर्द।

गुयेको—३x, साँपका विष दूर करनेवाली दवा है। मेरुदण्डपर विष-क्रिया कर जीभ और ओठमें पक्षाघात उत्पन्न कर देता है, रोगी कुछ निगल नहीं सकता।

द्रष्टव्य:—गुयेकमसे वात धातुके रोगियोंके (Arthritic diathesis) कानकी बीमारी, दाँतकी बीमारी, पेशावकी बीमारी; आँखकी बीमारी प्रभृति अधिकांश बीमारियोंमें ही फायदा दिखाई देता है। अतएव, इस ढगके रोगियोंकी किसी भी बीमारी

मे चुनी हुई किसी दवासे भी फायदा न होनेपर, अन्तमें एक बार—गुयेकमकी परीक्षा करनेका मेरा अनुरोध है।

वृद्धि (aggravation)—हिलने-डोलनेपर, गर्म प्रयोगसे, वर्सात और शीतमें, सवेरे ४ बजे और तीसरे पहर ६ बजे।

सदृश—रसटक्स, कास्टि, मेजेरियम, मार्क, रोडो, एसिड-नाइट्रिक।

क्रम—ϕ, १ म—२ री शक्ति। फारमुला—६ प।

हैमामेलिस वरजिनिका।

(HAMAMELIS VIRGINICA)

(युनाइटेड स्टेट्स और कैनाडाके जगलमें एक तरहका गुल्म उत्पन्न होता है, उसकी डालकी ताजी छालकी सोरसे इसका टिंचर तैयार होता है)—शिरासे रक्तस्राव, शिरामें रक्तकी अधिकता, बवासीर इत्यादिसे रक्तस्राव, रक्तस्राव-सम्बन्धी सभी बीमारियोंमें और रोगवाली जगहमें कुचलनेकी तरह दर्द (आर्निका-की तरह) इस दवाका विशेष लक्षण है। शिराओंके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

रक्तस्राव—शरीरके किसी भी स्थानमें रक्तस्राव होता है। यदि उस खूनका रग कुछ काला और थक्का थक्का होता है तो

इससे फायदा होता है। हैमामेलिसकी क्रिया—शिराओंपर होती है, शिराओंका रक्त शुद्ध नहीं रहता, इसीलिये, वह देखनेमें काला दिखाई देता है। यदि ऐसा दिखाई दे, कि रक्तका रंग कुछ कालिमा लिये है, गाढा है और जिस जगहसे यह रक्तस्राव होता है, वहाँ चोट लगनेकी तरह दर्द होता है और खींचनका भाव है, रक्तस्राव होनेपर भी रोगीके मनमें भय या किसी तरहका उद्वेग नहीं है, इसके साथ ही माथेमें हथौडीसे मारनेकी तरह दर्द प्रभृति लक्षण आदि रहें, तो शरीरकी किसी भी जगहसे रक्तस्राव क्यों न हो, हैमामेलिससे निश्चय ही उपकार होगा (कितने ही स्थानोंपर मूल अर्क—१ बूँद मात्रामें जल्दी जल्दी सेवन करनेपर जल्द रक्तस्राव बन्द हो जाता है, ऊपर लिखे लक्षणोंका आंशिक लक्षण रहनेपर भी इससे अच्छा फायदा होता दिखाई देता है।)—

आँखसे रक्तस्राव—वह खाँसीकी धमकके कारण हो या चोट लगनेके कारण हो, आर्निकाकी अपेक्षा भी हैमामेलिस ज्यादा फायदा करता है। गाडीका झटका लगकर या बहुत दूरतक रास्ता चलनेके कारण जरायुसे रक्तस्राव होनेपर हैमामेलिससे रक्त बन्द हो जायगा।

साधारणतः हमलोग रक्तस्रावके लिये—बेलेडोना, मिलिफोलियम, सेबाइना, प्लेटिना, सिकेलि, कार्बो, चायना, ट्रिलियम, आस्टिलेगो, इरिजिरन, सिनामोनाम, एकालिफा इण्डिका, इपिकाक इत्यादि दवाएँ व्यवहार करते हैं। उनके लक्षणका प्रभेद नीचे देखिये —

ऋतुस्राव :—

वेलेडोना—इसमें जिस किसी भी स्थानमें रक्तस्राव हुआ करे अगर रोगिनीको वह जगह गर्म मालूम हो, खून चमकीले लाल रगका और बाहर निकलते ही जम जाये। ऋतुस्रावका-रक्त गर्म, रह रहकर दर्द होनेके साथ थका थका स्राव।

सैवाइना—यह ज्यादा कर जरायुसे होनेवाले रक्तस्रावमें ही व्यवहृत होता है। रक्त परिमाणमें अधिक, चमकीला, तरल, लाल रगके रक्तके साथ थका थका जमा-खून निकलता है, इसमें दर्द रहता है। यह दर्द कमरसे आरम्भ होकर तलपेटकी ओर फैल जाता है। प्रसव या गर्भस्रावके बाद रज'स्राव।

सिकेलि-कोर—यह भी जरायुके रक्तस्रावमें ही व्यवहृत होता है और दुबली शीर्ण रोगिनी स्त्रियोकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है। इसमें बराबर थोडा थोडाकर रक्तस्राव हुआ करता है, रक्तमें थके नहीं रहते, रोगिनी बदनपर कपडा नहीं रखना चाहती। रक्तका रग काला, गदला और बदबूदार। प्रसव या गर्भस्रावके बाद रक्तस्रावके निमित्त इसका अध्याय देखिये।

ट्रिलियम (Trillium)—३x-६x, जरायुके रक्तस्रावमें ही ज्यादा फायदा करता है। अगर गर्भ-स्राव या प्रसवके बाद ज्यादा रक्तस्राव होता रहे, तो इससे विशेष लाभ होता है। ऋतुस्राव में—बहुत दिनोंतक रज' जारी रहता है, किसी तरह भी बन्द

नहीं होता, इस लक्षणमे बहुत-सी रोगिनियोंको सेवन कराकर हमलोगोंको फायदा दिखायी दिया है।

आस्टिलेलो (Ustilago)—३x-६x, जरायुके रक्तस्रावम थोडा थोडाकर रक्त मानो जाता ही रहता है, दो एक दिन बन्द रहने बाद फिर रक्त दिखाई देने लगता है, इस लक्षणमे और रक्त प्रदर तथा गर्भस्रावके बाद बहुत दिनोंतक थोडा थोडा रक्तस्राव होता रहे तो इससे फायदा होगा। जरायुका अपने स्थानसे हट जाना, डिम्बकोषका प्रदाह, जरायुका अर्बुद (Polypus), जरायुम बतौडी (Tumour) इत्यादि रोगोंमे भी इस दवाका प्रयोग होता है। मृत-वत्सा—अर्थात जिन्हें अकसर गर्भ-स्राव होता है, उनके लिये भी यह दवा अमृतकी तरह फायदेमन्द है, पर कुछ दिनोंतक थोरजके साथ इसे सेवन करना आवश्यक है (इसका अध्याय देखिये)।

जेन्थकजाइलम (Xanthoxylum)—१x, ऋतु-स्राव ३।४ महीनोतक बन्द रहकर या असमयमे ही प्रकाशित हो जाता है। इस समय पेटमे भयानक दर्द होता है। रोगिनी कहती है—हमे नशा खिलाकर बेहोशकर दो, नहीं तो जान निकल जायगी। स्राव परिमाणमे बहुत अधिक और अनेक दिनोतक स्थायी रहता है। बाधकका दर्द— इसमे भी उसी तरहका दर्द होता है, बाधक—यह दवा नियमित रूपसे सेवन करनेपर ऋतु स्वाभाविक होकर, उसके दोष बहुत जल्दी दूर हो जाते हैं।

सिनामोनम—(Cinnamonum)—१—३, पैर फिसल जाने या कोई भारी चीज उठानेकी वजहसे या कांखनेके समय जरायुसे रक्तस्राव अथवा प्रसव या गर्भ-स्रावके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्राव होनेपर फायदा करता है (शुद्ध दालचीनीका तेल १।२ बूँद मात्रामें दूधके साथ ३ घण्टेका अन्तर देकर सेवन करनेपर भी जल्दी फायदा होता है)।

चायना—(China)—बहुत अधिक रक्तस्राव, रोगी उससे एकदम हिमांगकी तरह हो जाता है। प्रसवके बाद फूल अटककर रक्तस्राव होनेपर—चायना १०-१५ मिनिटके अन्तरसे बार बार प्रयोग करना उचित है। फूल अटका रहनेके कारण कितने ही स्थानोंपर रक्तस्राव बन्द नहीं होता, इसीलिये, यह कहना आवश्यक है, कि—ऐसे स्थानपर हाथ डालकर जल्द फूल निकाल लेना ही उचित है। जरायुके रक्तस्रावमें—रक्त थक्का थक्का, पेटमे खूब दर्द, ऋतु जल्दी जल्दी होता है, स्राव परिमाणमें बहुत अधिक और उसके साथ ही दर्द, तलपेटमे दर्द और तलपेट भारी रहता है।

एसारम युरोपम—(Asarum Europum)—३-६ शक्ति। ऋतु खूब जल्दी जल्दी होता है, बहुत दिनोंतक रहता है, स्रावका रंग काला, इसके साथ ही कमरमे बहुत अधिक दर्द, लसदार पीले रंगका प्रदर-स्राव।

एसेटिक-एसिड (विनिगर या सिर्का)—इसके अध्यायमे पहले ही कहा जा चुका है, कि विनिगरमें रूई या कपड़ा

मिजाकर दवा रखनेपर प्राय. सब तरहका रक्तस्राव बन्द हो जाता है,—

एक आठ महीनेकी गर्भवती स्त्रीको एकाएक एक दिन नाक और मुँहसे प्रबल वेगसे रक्तस्राव होना आरम्भ हुआ, मुँह बन्द करनेपर नाकसे, नाक बन्द करनेपर मुँहसे खून निकला करता था, रक्तका रग चमकीला लाल, खून कुछ पतला कुछ थक्का थक्का,— रक्तस्रावमें किसी भी प्रकारका दर्द या कष्ट न था। चिकित्साके लिये जब मैं बुलाया गया तो मैंने पहले रोगिनीको मिलिफोलियम, इसके बाद हैमामेलिस प्रभृति २।३ दवाओंका भीतरी और बाहरी प्रयोग किया पर कोई भी फायदा न हुआ, तब अन्तमें विनिगरमें रुई भिगोकर नाकके भीतर भर रखने और बीच बीचमें जोरसे भीतर विनिगर सुडक लेनेका प्रबन्ध किया। आनन्दका विषय है, कि इससे थोडी ही देरमें रक्तस्राव बन्द हो गया। इसके साथ ही इतना और किया गया था कि रोगिनीको शान्त भावसे स्थिर सुला दिया गया था, उसकी गर्दन और माथेपर लगातार ठण्डा पानी और बरफ दिलवाये जानेकी व्यवस्था कर दी थी।

सैंगुई सोर्बा (Sangui sorba)—२x शक्ति, बहुत दिना तक और अगर बहुत ज्यादा परिमाणमें ऋतुस्राव होता रहे और इसके साथ ही माथेमें अथवा शरीरके किसी दूसरे स्थानमें रक्तकी अधिकता हो जाये तो इससे फायदा होगा। इसकी रोगिनीका स्वभाव चिडचिडा रहता है और वह अभिमानिनी रहती है।

रोजमेरिनस (Rosmarinus),—१x—६ शक्ति, रक्तस्रावके पहले जरायुमें तेज दर्द और समयके बहुत पहले ही ऋतुस्राव हो जाता है।

जनोसिया-अशोका—इसका अध्याय देखिये।

वाइपेरा (Vipera)—नाना प्रकारके रक्तस्रावमें और जरायु के रक्तस्रावमें इससे फायदा होता है। शिरा-प्रदाह और शिराओंके—सूजनकी यह बहुत बढ़िया दवा है।

प्लेटिना—इसका अध्याय देखिये। वहाँ इसका अलग वर्णन किया गया है।

सभी स्थानोंका रक्तःस्राव :—

मिलिफोलियम—सब स्थानोंका स्राव, रक्त चमकीले लाल रंगका, रक्तस्रावके साथ जरा भी दर्द नहीं रहता।

कार्बो-वेज—शरीरके किसी भी स्थानसे खून निकलता है, रक्त बराबर, बिना दम लिये, जरा जराकर निकला ही करता है। इससे क्रमशः रोगी कमजोर हो पड़ता है और चाहता है कि कोई बराबर पंखेसे हवा करता रहे, नहीं तो उसकी साँस घुट जाना चाहती है, नाकसे लगातार रक्तस्राव, कभी कभी २।१ दिन तक लगातार निकला करता है। इसका खून जमा हुआ नहीं, बल्कि पतला और गदला रहता है,

इरिजिरन (Erigeron)—१x—३x, इसकी क्रिया बहुत कुछ—सैबाइनाकी तरह होती है, पर रक्तस्रावके साथ मलद्वारमें

या मूत्रद्वारमें उपदाह (irritation), वेग, कूथन इत्यादि इसके कई चरित्रगत लक्षण रहने चाहियें। पेशाव करनेके समय तक़लीफ़, पेशाव बन्द, बच्चोंकी मूत्रकृच्छ्रता।

इरेक्थाइटिस—इसका अध्याय देखिये।

एकालिफा-इण्डिका—मुँहकी राहसे फेफडेसे रक्त निकलना, या रक्तोत्कास (Hæmoptysis), रक्त वमन, खाँसते खाँसते खून निकल आना, यक्ष्मा, रक्त-पित्त, सवेरे लाल रंगका और सन्ध्यामें थोडा कालिमा-लिये, थक्के मिला रक्तस्राव, स्वरभंग इत्यादि लक्षणोंमें यह फायदेमन्द है। (इसका अध्याय पढिये)।

केक्टस—कलेजेमें बहुत धडकन होनेके साथ खून निकलना, ज्वरका न रहना।

फिकस-रिलिजियोसा (Ficus religiosa)—इससे बहुत तरहका रक्तस्राव आराम होता है। जरायु और मूत्राशयसे रक्तस्राव, चमकीले लाल रंगके खूनकी कै, इसके साथ मिचली, पेटमें दर्द और बेचैनी मालूम होना, कष्टदायक श्वास-प्रश्वास, खाँसनेके समय खून निकला और रक्त-वमन, नाडीकी कमज़ोरी, माथेमें जलन, सरमें चक्कर आना, सर दर्द इत्यादिमें इसका व्यवहार होता है।

लाइकोपस—हिमाप्टिसिस या थाइसिसमें गलेमें सुरसुरी होकर खाँसीका पैदा होना, इसके साथ ही खून निकलना, हृत्पिण्डकी गति खूब तेज हो जाती है।

इपिकाक—मिचलीके साथ अधिक परिमाणमें लाल रंगका रक्तस्राव होते रहनेपर इसका सबके पहले व्यवहार करना चाहिये।

गर्भ-स्राव—गर्भस्राव होकर बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव, इसके साथ ही पेटमें बहुत अधिक पेठनका दर्द रहनेपर इसका भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रयोग होता है। अर्थात हैमामेलिस लोशनसे एक टुकडा कपडा या लिण्ट भिगोकर पेटके ऊपर प्रयोग करनेसे तुरन्त रक्तस्राव और दर्द घट जाता है (लोशन बनानेका तरीका—हैमामेलिस—φ, २० बूँद, पानी आधा छटाक)।

रक्त-वमन (Hæmatemesis)—पाकस्थलीसे मुँहकी राहसे यदि रक्तस्राव हो तो हैमामेलिस और मिलिफोलियम दोनो ही फायदा करते है। (एकालिफा अध्यायमें जिरेनियम देखिये)। भोजनके बाद पेटमे पेठन होती हे और बहुत जी मिचलाया करता है।

रजःस्राव बन्द होनेके कारण खूनकी कै— रजोरोधकी वजहसे किसीकी पाकस्थलीसे खून आनेपर—अस्टिलेगो और मिलिफोलियमकी तरह हैमामेलिस भी फायदा करता है। खाँसीके साथ खून निकलनेपर—फास्फोरस।

सिनिसियो (Senecio)—φ—१x, ऋतु बन्द होकर खाँसी मुँहसे खून आना, बलगमके साथ खूनके छींटे, ऐसा मालूम होता है, मानो यक्ष्मा ही हो गया इत्यादि लक्षणोंकी यह एक महान लाभदायक दवा है। इसके द्वारा ऋतुका अनियमित रूपसे होना, बाधकका दर्द, ऋतुरोध दोष आदि भी दूर हो जाते है।

हेक्ला लावा ।

(HECLA LAVA)

(हेक्ला नामके ज्वालामुखीसे निकले हुए भस्मसे विचूर्ण तैयार होता है)—हड्डी, दाँत और मसूढ़ोंपर इसकी प्रधान क्रिया होती है ।

दाँतकी बीमारी—दाँतके मसूढेमें जखम, मसूढेमें फोडा, नासूर (Pyorrhœa) दाँतमें कीडे लगकर दाँतका क्षय हो जाना या दाँतकी जडकी हड्डीमें जखम होना (Carious teeth) मुँहमें स्नायुशूलका दर्द, मसूढेके चारों ओर सूजनके साथ दाँतमें शूलका दर्द, दाँत उखडवा डालने बाद कुछ अंश रह जाना और इसकी वजहसे तकलीफ देनेवाले उपसर्ग, बच्चोंको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी प्रभृतिमें हेक्ला-लावा दूसरी दूसरी सभी दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। इसका टूथ-पाउडर भी व्यवहृत होता है ।

हड्डीकी बीमारी—हड्डीका प्रदाह (Ostetitis), अस्थि आवरक पर्देका प्रदाह, अस्थिका अर्बुद (Osteo sarcoma), प्रभृति हड्डियोंकी सांघातिक बीमारीमें और गर्मी रोगसे उत्पन्न (Syphilitic) नाककी हड्डीका जखम और बच्चोंका रेकाइटिस (Rachitis) नाककी हड्डीकी बीमारीमें भी फायदा करता है।

गर्दनकी गांठ (Cervical gland) फूली, बडी और कडी हो जानेपर इससे फायदा होगा। नीचे पैरकी सामनेवाली हड्डीका वढना तथा बेकार हो जाना

सदृश—साइलि, मार्क फास्, कैलि-आयो, कैल्के-आयोड प्रभृति।

क्रम—१४—६ शक्ति। फारमुला—

हेलिबोरस नाइजर।

(HELLEBORUS NIGER)

(दक्षिण युरोपके पहाडी प्रदेशोंके एक तरहके पौधेकी सूखी जडसे टिंचर तैयार होता है)। छातीका दर्द, मस्तिष्क, अन्त्रावरक-झिल्ली, रसस्रावी-झिल्ली प्रभृतिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। इनमें पानी इकट्ठा होता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। रोगके लक्षण तीसरे पहर ४ से ८ बजेतक बढते हैं (लाइको-पोडियमकी तरह), २। अज्ञान भावसे पडे रहना या नींदमें ओंठ और बिछावनकी चादर तथा कपडे नोचना ; ३। ओंठ और मसूढा—ठीक इस तरह हिलते हैं, मानो कुछ चबा रहा है ४। एकदम बेहोशीकी अवस्थामें ओंठ और बिछावन आदि नोचना (ज्ञानके साथ होनेपर—एरम-ट्राइफाइलम), ५। बहुत तेज प्यास, मुँहके पास पानीका बरतन रखनेपर आग्रहसे मुँह फाडता

है। ६। पेशावमे काफीके चूरकी तरह तली जमती है, ७। आँखकी पुतली फैली, कुछ भी देख-सुन नहीं पाता, ८। प्राय एक ओरके हाथ-पैर बराबर हिलाता है, दूसरी ओरके हाथ-पैर स्थिर भावसे पक्षाघातकी तरह पडे रहते हैं। दाहिना हाथ और दाहिना पैर हिलाता है (ब्रायोनिया), एक ओरका हाथ-पैर हिलाता है, (एपोसाइनम), ९। सामने कपालकी त्वचा सिकुडी और ठण्डा पसीना; १०। माथा तकियेपर कभी इस ओर और कभी उस ओर हिलाया करता है, हाइड्रोकेफालस, मस्तिष्कमे जलसचय, बच्चा बीच बीचमे चिल्ला उठता है। ११। मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह), १२। शोथ, १३। पेशाव—या तो एकदम बन्द अथवा बहुत ही थोडा होता है।

ये कई हेलिवोरसके प्रकृति-सिद्ध लक्षण है। इन लक्षणोंपर निर्भरकर हेलिवोरसका यथा समय प्रयोगकर बहुत-से सकटम पडे रोगीकी भी जान बच सकती है।

सान्निपातिक ज्वर—ज्वर तीसरे पहर बढता है, ४ बजनेके समयसे ८ बजेके बीचमे, अग-प्रत्यग भारी और सुन्न होने लगते है, माथेमे भयकर दर्द, नाककी ठोरसे ओठतक स्याही पुती है, मुँह और साँसमे बहुत बदबू, कोई भी पतली चीज पीनेके समय गलेमे गडगड आवाज होती है। विकारमे रोगी—बिछावन और कपडे नोचता है, दाँत कडकडाता है, कुछ चबानेकी तरह दोनो ... हिलाता है। एकदम बेहोशकी तरह पडा रहता है। कोई ... या उत्तर नहीं देता, प्यासका कोई भी चिन्ह प्रकट

नहीं होता। पर मुँहसे पानीका कोई पात्र लगते ही मुँह फाड़ देता है और बड़े आग्रहसे पानी पीता है। ये सभी—हेलिबोरसके लक्षण हैं।

फास्फोरिक-एसिड—इसके लक्षण बहुत कुछ हेलिबोरसके सदृश ही है, इसमें भी रोगी-बेसुध, चुप गुमसुम पड़ा रहता है; पर प्रभेद यह है, कि, यद्यपि रोगी बेहोशकी तरह पड़ा रहता है, पर एक बार पुकारनेमें ही जवाब देता है और उस समय ऐसा मालूम होता है, कि अच्छी तरह ज्ञानमें है। हेलिबोरसमें—रोगी एकदम बेहोश-सा रहता है, लगातार पुकारनेपर भी जवाब नहीं देता, "नाककी ठोरसे ओठतक स्याही पुती रहनेका भाव"—ये लक्षण फास्फोरिक एसिडमें नहीं रहते, केवल हेलि

ओपियम—विकारमें रोगी एकदम
उल्टी, गला घरघराया करता है और जोर
करता है, (हेलिबोरसमें इस तरह जोर जोरसे
रोगीका मुँह खूब लाल या नीले रंगका दिखाई
बोरसमें मुँह सफेद या उतरा हुआ, कभी कभी
और शरीरमें ठण्डा पसीना रहता है। ओपि
धीमी, हेलिबोरसमें—नाड़ी बहुत क्षीण, यहाँतक कि
बार खोजे नहीं मिलती। विकारमें चेहरा खूब गहरा
ही ओपियमका लक्षण है।

आर्निका—रोगी अज्ञान, हेलिबोरसकी तरह बहुत
भी उत्तर नहीं मिलता, अनजानमें पाखाना-पेशाब होता रहता है

है। ६। पेशावमें काफीके चूरकी तरह तली जमती है, ७। आँखकी पुतली फैली, कुछ भी देख-सुन नहीं पाता, ८। प्राय एक ओरके हाथ-पैर बराबर हिलाता है, दूसरी ओरके हाथ-पैर स्थिर भावमें पक्षाघातकी तरह पड़े रहते हैं। दाहिना हाथ और दाहिना पैर हिलाता है (ब्रायोनिया), एक ओरका हाथ-पैर हिलाता है, (एपोसाइनम), ९। सामने कपालकी त्वचा सिकुड़ी और ठण्डा पसीना; १०। माथा तकियेपर कभी इस ओर और कभी उस ओर हिलाया करता है, हाइड्रोकेफालस, मस्तिष्कमें जलसंचय, बच्चा बीच बीचमें चिल्ला उठता है। ११। मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह), १२। शोथ, १३। पेशाव—या तो एकदम बन्द अथवा बहुत ही थोडा होता है।

ये कई हेलिबोरसके प्रकृति-सिद्ध लक्षण हैं। इन लक्षणोंपर निर्भरकर हेलिबोरसका यथा समय प्रयोगकर बहुत-से सकटमें पड़े रोगीकी भी जान बच सकती है।

सान्निपातिक ज्वर—ज्वर तीसरे पहर बढ़ता है, ४ बजनेके समयसे ८ बजेके बीचमें, अग-प्रत्यग भारी और सुन्न होने लगते है, माथेमें भयकर दर्द, नाककी ठोरसे ओठतक स्याही पुती है, मुँह और साँसमें बहुत बदबू, कोई भी पतली चीज पीनेके समय गलेमें गडगड़ आवाज होती है। विकारमें रोगी—बिछावन, और कपडे नोचता है, दाँत कडकडाता है, कुछ चबानेकी तरह दोनों ओठ हिलाता है। एकदम बेहोशकी तरह पड़ा रहता है। कोई भी आवाज या उत्तर नहीं देता, प्यासका कोई भी चिन्ह प्रकट

नहीं होता। पर मुँहसे पानीका कोई पात्र लगते ही मुँह फाड देता है और बडे आग्रहसे पानी पीता है। ये सभी—हेलिबोरसके लक्षण है।

फास्फोरिक-एसिड—इसके लक्षण बहुत कुछ हेलिबोरसके सदृश ही है, इसमे भी रोगी-बेसुध, चुप गुमसुम पडा रहता है, पर प्रभेद यह है, कि, यद्यपि रोगी बेहोशकी तरह पडा रहता है, पर २।४ वार पुकारनेसे ही जवाब देता है और उस समय ऐसा मालूम होता है, कि अच्छी तरह ज्ञानमे है। हेलिवोरसमे—रोगी एकदम बेहोश-सा रहता है, लगातार पुकारनेपर भी जवाव नहीं देता, "नाककी ठोरसे ओठतक स्याही पुती रहनेका भाव"—ये लक्षण फास्फोरिक एसिडमे नहीं रहते, केवल हेलिवोरसमे है।

ओपियम—विकारमे रोगी एकदम अज्ञान रहता है, आँखे उल्टी, गला घरघराया करता है और जोर जोरसे साँस छोडा करता है, (हेलिबोरसमे इस तरह जोर जोरसे साँस नहीं छोडता) रोगीका मुँह खूब लाल या नीले रगका दिखाई देता है। हेलिबोरसमे मुँह सफेद या उतरा हुआ, कभी कभी नीली आभा लिये और शरीरमे ठण्डा पसीना रहता है। ओपियममे—नाडी-भरी और धीमी, हेलिबोरसमे—नाडी बहुत क्षीण, यहाँतक कि कितनी ही बार खोजे नहीं मिलती। विकारमे चेहरा खूब गहरा लाल होना ही ओपियमका लक्षण है।

आर्निका—रोगी अज्ञान, हेलिबोरसकी तरह बहुत पुकारनेपर भी उत्तर नहीं मिलता, अनजानमे पाखाना-पेशाब होता रहता है



(फास्फोरिक एसिडमें सिर्फ दस्त अनजानमें होते हैं)। एसिड-हाइड्रो—फेफड़ा और मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता या उनके पक्षाघातका उपक्रम होनेपर भी यह दवा फायदा करती है। इसमें भी पानी पीनेके समय गलेमें घरघराहटका शब्द होनेका लक्षण है,विकार यदि पूरी तरह हो जाये,—हेलिबोरस अधिक फायदा करता है।

मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह—रोगी अज्ञान-बेहोश अर्द्ध-चैतन्यकी तरह पडा रहता है, कुछ भी देख या सुन नहीं सकता, ऊपर बतायी हुई प्यास, आग्रहके साथ पानी पीना, आँख फैली, कपाल सिकुडा, कुछ चिबानेकी तरह मसूढेका हिलाना या दोनों भवोंको इधर उधर हिलाना, एक ओरका हाथ-पैर
ओरके हाथ-पेर स्थिर भावसे प atom
मायेकी ओर हाथ उठाता है, बन्द
बहुत थोडा होता है, बन्द
होता भी है, तो बहुत
भी कालिमा लिये और
है। रोगी तकियेपर
है; बेचैनी—केवल
एपिसमें भी है, पर
लिये विशेष लक्षणके
बोरसका प्रयोग न किया
तो रोगीकी मृत्यु तक

इटिस रोगमें—हेलिबोरसकी तरह एपिस दवा भी काम करती है, पर यह खयाल रखे कि—एपिसकी खींचनमें (spasm) अगुलियाँ अलग अलग हुई रहती हैं और हेलिबोरसमें अंगूठा मुट्ठीमें मुड़ा रहता है।

हाइड्रोकेफालस —इस बीमारीमें जब मस्तिष्कमें पानी इकट्ठा होता है (during the stage of effusion), रोगी अज्ञान रहता है, उसे किसी तरह जगाया नहीं जा सकता, लगातार माथा इधर उधर हिलाया करता है, चिल्लाया करता है, आँख के पास रोशनी रखनेपर पुतली (pupil) स्थिर रहती है, कुछ चबानेकी तरह जबड़े हिलते हैं, एक ओरका हाथ-पैर हिलता है, दूसरी ओरके हाथ-पैर स्थिर पड़े रहते हैं, कभी कभी पेशाब बन्द, प्रबल खींचन (Convulsion) प्रभृति लक्षण रहते हैं, उस समय हेलिबोरस फायदा करता है। दाँत निकलनेके समय या किसी तरहका उद्भेद निकलना बन्द होकर बीमारी होनेपर, यह और भी ज्यादा फायदा करता है। (एपिस देखिये)।

मस्तिष्ककी क्रिया-लोप—चोट लगकर मस्तिष्ककी क्रिया लोप होनेपर—आर्निका, आर्निकासे फायदा न होनेपर—हेलिबोरसका प्रयोग करना चाहिये।

शोथ—हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथ (dropsy) रोगमें—डिजिटेलिस, एपोसाइनम और हेलिबोरस—ये तीन दवाएँ फायदा करती हैं।

हेलिबोरस—शोथ और उदरी रोगमे पेशाब काला या गदला, बहुत थोडा होता है, उसे रख छोडनेपर उसपर धुएँकी तरह एक पदार्थ तैरता है, तली—काफीके चूरकी तरह, दस्त आम मिले, इन सब लक्षणोंमे—हेलिबोरस फायदा करता है।

एपोसाइनम—(Apocynum)—यह भी प्राय डिजिटेलिस के सदृशका ही दवा है और निर्दोष हृदय-वलकारक है। प्राय सब तरहके शोथोंमें यह फायदा करता है। इसमे—मस्तिष्कमें बहुत गडबडी रहती है। माथा भारी, नाडी बहुत क्षीण, कब्ज, पेशाब बहुत थोडा, पर पेशाबमें किसी तरहकी तकलीफ नहीं रहती, कितनी ही बार अनजानमें पेशाव हो जाता है, छाती और पीठमे दवाव मालूम होना, कुछ खानेपर साँस छोडनेमें तकलीफ होती है, जोरसे साँस खींच रखता है, छातीमे दर्द और हृत्पिण्ड मे एक तरहकी तकलीफ होती है, नाडी सविराम या बहुत कमजोर रहती है, या एकदम ही नहीं मिलती, हृत्पिण्डकी परीक्षा करनेपर पहले अच्छी तरह लब-डब शब्द सुन पडता है, पर जरा बाद ही एक तरहकी फडफड आवाज होती है, इसके बाद हृत्पिण्ड की आवाज इतनी धीमी होती जाती है, कि फिर सुन नहीं पडती, मिचली और प्यास बनी रहती है। भोजनके बाद पेट फूल उठता है, रोगीको प्राय अतिसार रहता है। अतिसार न रहनेपर भी पतले दस्त आते हैं, पेटमें वायु होता है। बेरी-बेरी रोगकी सूजनमें भी अगर हृत्पिण्डपर बीमारीका हमला हो, तो इससे खासा

फायदा होता है। लिवरकी बीमारीकी वजहसे पैदा हुए शोथ और सूजनमें और युवती स्त्रियोंका ऋतुस्राव बन्द होकर हाथ-पैर फूलने या उदरी हो जानेपर भी—एपोसाइनम फायदेमन्द है, परन्तु एलबुमिनुरिया रोगमें इससे कोई फायदा नहीं होता। स्कार्लेटिना—रोगके बाद शोथ-रोग होनेपर इससे एकदम आरोग्य हो जाता है। इण्टार्म-टिसियल-नेफ्राइटिसकी बीमारी इससे आराम नहीं होती, पर उसकी वजहसे पैदा हुआ शोथ इससे आरोग्य हो सकता है। तथा मसानेका कोई अंश बहुत दिनोंतक स्वाभाविक अवस्थामें रह जा सकता है। डा० हेल कहते हैं—इस दवाको व्यवहार करनेकी भी एक विशेषता है, जहाँ बीमारी नयी और स्वयं स्वाधीन रूपसे उत्पन्न होती है, वहाँ पहले उच्च शक्तिसे आरम्भकर, क्रमशः निम्न शक्ति और जहाँ बीमारी पुरानी, और किसी रोगसे उत्पन्न (Secondary) रहती है, वहाँ—ϕ। डा० हियुजेस कहते हैं—ϕ, प्रति मात्रा १ से ५ बूँद प्रयोग करनेपर बहुत जल्द फायदा होता है। किसी भी मस्तिष्ककी बीमारीमें और शोथ-रोगमें—पेशाब रुक जानेपर इससे फायदा होगा।

डिजिटेलिस—इस दवाका प्रयोग करनेके पहले हृत्पिण्ड और नाडीकी गतिको अच्छी तरह जान लेना आवश्यक है। इसमें नाडी और हृत्पिण्ड बहुत ही कमजोर हो जाते हैं, नाडीका प्रतिघात (beat) मिनिटमें ३०।४० बार तक और ३रा, ५ वाँ, ७ वाँ आघात लोप हो जाता है। हृत्पिण्ड और नाडीकी इस तरहकी

अवस्था न रहनेपर डिजिटेलिसके प्रयोगसे ज्यादा फायदा न होगा। साधारण शोथ और उदरीमें केवल रोगीके पेशाब पर लक्ष्य रख कर बहुतसी जगहोंमें विशेष फायदा पाया जाता है। हेलिबोरसमें पेशाब घोर लाल रंगका या काले रंगका और किसी बर्तनमें रखने पर उसमें लाल काफीके चूरकी तरह तली जमती है (काले रंगका पेशाब—कोलचिकम, नैट्रम-म्यूर, डिजिटेलिस और कार्बोलिक-एसिड , गदला काले रंगका पेशाब—एपिस, एमोन-बेञ्जो, एसिड-बेञ्जो, आर्निका, आर्सेनिक, कार्बो-वेज और ओपियम , गदला और फेन-भरा पेशाब—लैकेसिस)।

सविराम ज्वर—सविराम ज्वरमें एकाएक शीत आ जाना और नाडी दब जानेका लक्षण रहनेपर—हाइड्रोसियानिक-एसिड, कैम्फर, वेरेट्रम, कार्बो, लैकेसिस, सिकेलि, हायोसिया-मस, डिजिटेलिस इत्यादिकी तरह—हेलिबोरस भी फायदा करता है।

हेलिबोरस—हिमांग, शरीर बरफकी तरह ठण्डा, कपालमें ठण्ड और ठण्डा पसीना, नाडी बहुत क्षीण, अकडन या आक्षेप, वह गिरने की वजहसे हो या किसी दूसरे कारणसे हो, यह फायदा करता है, ज्वरमें नाकके भीतरका रंग काला हो जाता है, श्वास-प्रश्वासमें बदबू निकलती है, नाडी क्षीण हो जाती है, अज्ञान अवस्थामें ओठ, नाक और कपडे खूँटता है (ज्ञान रहनेपर एरम-ट्राइ), पानी पीने का आग्रह नहीं रहता, पर पानी देनेपर पीता है।

एसिड-हाइड्रो—शरीर पत्थरकी तरह ठण्डा, नाडी क्षीण या लोप, मूर्च्छा, खींचन, ऐसा मालूम होता है, मानो किसीनें हृत्पिण्ड दबा रखा है, इसीलिये, साँस छोडनेमें तकलीफ, पीठ और जबडे अकडे और कडे होते जाना। हेलिबोरसमें—रोगी लेटा रहनेपर अच्छी तरह साँस छोड सकता है (लैकेसिस और आर्सेनिकमें—विपरीत अर्थात सो नहीं सकता, सोनेसे ही साँस लेनेमें तकलीफ होती है।)

आर्सेनिक—मुँह और जीभ ठण्डी, शरीरका कोई कोई स्थान नीली आभा लिये दिखाई देता है, रोगीपर गर्मी पहुँचानेसे उसे कुछ आराम मिलता है, इसके अलावा आर्सेनिकके विशेष लक्षण —जैसे, प्यास, छटपटी, अन्तर्दाह, कष्टसे साँस लेना प्रभृतिपर भी यहाँ ध्यान रखना चाहिये।

कैम्फर—शरीर बरफकी तरह ठण्डा, परन्तु रोगी अपने भीतर गरमी अनुभव करता है, शरीरपर कपडा नहीं रखना चाहता, शरीर नीला दिखाई देता है, साँस गरम रहती है, हाथ-पैरोंमें पेठन रहती है, इसमें रोगीमें ज्ञान रहनेपर भी गलेका स्वर बैठ जाता है और वह धीरे धीरे अज्ञान होता जाता है।

वेरेट्रम-एल्बम—बहुत प्यास, मुँह, गला और जीभ—शरीरके अन्यान्य अङ्ग-प्रत्यगकी अपेक्षा ज्यादा ठण्डे, हृत्पिण्ड बहुत कमज़ोर, गरमीसे कुछ ज्यादा आराम नहीं मालूम होता, कपालमें ठण्डा पसीना,—इसके अलावा,—ज्वरके साथ ही दस्त, कै इत्यादि लक्षण रहनेपर इससे और भी फायदा होगा।

लैकेसिस—दोनो पैर ठण्डे, इसके साथ ही कलेजा भारी और दबाव मालूम होना, शरीर यदि गर्म होना आरम्भ हो, तो कलेजेकी तकलीफ घट जाती है।

हायोसियामस—विकारके लक्षणमें बिछावनकी चादर खींचता है, जोर जोरसे बकता है, शरीरकी अवस्था जितनी ही सुस्त होती है, उतना ही आच्छन्नकी तरह हो पड़ता है। हेलिबोरसमें भी रोगी बेहोशकी अवस्थामें बिछावन, कपड़ा, ओठ, नाक खूँटता है।

"हेलिबोरसका चरित्रगत विशेष लक्षण यह है, कि रोगीके शरीरपर उसके मनका अधिकार नहीं रहता, रोगीको अपने कार्यपर खूब मनोयोग लगाना पड़ता है, नहीं तो पेशियाँ ठीक ठीक काम नहीं करतीं—इसके चरित्रगत मानसिक लक्षण मिलनेपर मियादी बोखारमें भी इसका प्रयोग होता है, नाड़ी कमजोर, शरीर ठण्डा और ठण्डा पसीना रहता है।"

वृद्धि (aggravation)—तीसरे पहर ४ बजनेके बीचमें, खुला शरीर रहने पर, शरीर हिलानेपर।

ह्रास (amelioration)—शरीर ढकनेपर, सोनेपर—श्वास कष्टका घटना और स्थिर होकर सोनेपर—सर-दर्दका घटना, अनमने होनेपर तकलीफका घटना।

बादकी दवा (follows well)—बेल, चायना, नक्स, फास, सल्फ, ज्वाइको, जिङ्क।

सम्बन्ध—मस्तिष्क या मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह रोगमें—एपिस, आर्स, बेल, ब्रायो, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, चायना।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)२०—३० दिन।

क्रम—६x—३० शक्ति। मस्तिष्ककी बीमारीमें निम्न-शक्ति।

फारमुला—८।

हेलोनियस डिओइका।

HELONIAS DIOICA)

(युनाइटेड स्टेट्सकी सभी ढालू जमीनपर एक तरहका गाछ पैदा होता है, उसकी जडसे टिंचर तैयार होता है), हेलोनियस—दुर्बल, कमजोर और स्वास्थ्यहीन स्त्रियोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंकी महोषधि है। यह साधारणतः दो तरहकी औरतोंके लिये ज्यादा फायदेमन्द है —१। जो स्त्रियाँ कोई काम नहीं करतीं और विलासकी गोदमें पडी अपना स्वास्थ्य नष्ट कर देती हैं २। जो अपने खाने-पीने सोनेका ध्यान छोड, दिन रात परिश्रम कर एकदम क्लिष्ट और अकर्मण्य हो जाती हैं, उनके लिये यह सजीवनी सुधाकी तरह फायदा करता है। इसकी प्रधान क्रिया मसाना और जरायु पर होती है। मानसिक लक्षण —अनमनी रहनेपर अच्छी रहती है, बहुत बेचैन, क्रोधी, सभी कार्योंमें दोष देखती है, बात काटना पसन्द नहीं करती।

स्त्री-रोग—जो स्त्रियाँ हमेशा ही उदास और दुःखित रहती हैं, जिनको अपना तलपेट हमेशा ही भारी मालूम होता

है, मानो गर्भ रह गया है या पेटमे कुछ पैदा हो गया है। दर्द होता है, उनकी बीमारीमें पहले इसका प्रयोग करना चाहिये।

जरायु पुष्ट न रहनेके कारण बाहर निकल आना, प्रसवके बाद जरायुका बाहर निकलना, और अपनी जगहसे हट जाना, जरायुकी कमजोरीकी वजहसे ऋतुके समय बहुत अधिक रक्तस्राव (मनोरेजिया), जरा हिलने-डोलनेसे ही रक्तस्रावका बढ जाना, जरायु-ग्रीवा या जरायु-मुखमें जखमकी वजहसे रक्त-प्रदर, ऋतुके पहले और समय, छातीमें और स्तनकी घुडीमें जखम हो जाने की तरह दर्द , बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार श्वेतप्रदरका स्राव, स्राव जहाँ लगता है, उसी जगहकी खाल उधड जाती है, योनि-देशमें बेतरह खुजलाहट, और छालेकी तरह उद्भेद प्रभृति कई बीमारियोंमें हेलोनियसके प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है। हेलो-नियसकी बीमारीके लक्षणके साथ—लिलियम, सिपिया, सलफर, प्लेट्रिस प्रभृति कई दवाओंके लक्षणोंका बहुत कुछ सादृश्य है, इसलिये इसका प्रभेद देखे ।

पेशावकी बीमारी—डायबिटिस-इन्सिपिडस (इसमें चीनी या शर्करा बिलकुल ही नहीं रहती)—अधिक परिमाणमें और जल्दी जल्दी पेशाव इसके साथ ही मूत्राम्ल (urea) निक-लना, डायबिटिस—मिलिटस (मधुमेह)—इसके साथ ही बहुत प्यास, शीर्णता और बेचैनी। दाहिने मसानेमें बराबर दर्द बना रहना।

डा० हेल कहते हैं—एक परीक्षकके पेशावमें फासफेट और ावमेंएलकैलाइन रियैक्शन था, हेलोनियसके सेवनके वाद ऐसा लूम हुआ कि—क्षार रहनेवाला पेशाव—अम्ल-धर्माक्रान्त (acid) गया है। उसमें फास्फेट विलकुल ही नहीं है। अगर वहुत ड़े परिमाणमें गदला पेशाव होता हो—हेलोनियस फायदा रता है। गर्भवती स्त्रियोंके पेशावमें या साधारण पेशावमें भी लवुमेन रहनेपर इससे फायदा होगा।

सदृश—एलेट्रिस, सिमिसिफ्यूगा, सिङ्कोना, फेरम, लिलियम, सिड-फास, सिपिया, टेरिबिन्थ।

क्रम—φ, ३०—२०० शक्ति, शीघ्र फायदा प्राप्त होनेके लिये—, प्रयोग करना चाहिये। फारमुला—३।

हिपर सलफ्यूरिस कैल्केरियम।

(HEPAR SULPHURIS CALCAREUM)

(कैलिसियम सल्फाइड चूर्ण और गन्धक—इन दोनों द्रव्योंके रासायनिक संयोगसे यह दवा तैयार होती है।)—यह ग्रन्थि, (gland), चर्म, लार निकालनेवाली ग्रन्थि, शोषण और क्षरण करनेवाले यन्त्र इत्यादिपर अपनी क्रिया प्रकट करता है। पाराके अपव्यवहारके वाद यदि इसका प्रयोग होता है, तो ज्यादा फायदा होता है। कण्ठमाला धातुग्रस्त तथा जिनकी गांठे फूल जाया

करती हैं तथा जिन्हें कोई चर्मरोग रहता है, ऐसे मनुष्योंके लिये यह ज्यादा लाभदायक है। किसी स्थानमें पीव पैदा हो जानेपर—हिपर उसे पकाकर पीव निकाल देता है, इसके बाद फिर दुबारा पीव उत्पन्न होनेके पहले भी इसका व्यवहार होनेपर फोडे आदि बैठ जाते हैं। सर्दी सहन न होना, दर्द,—स्पर्श सहन न होना, उसमे बहुत अधिक अकडनका दर्द, अम्ल और खट्टी चीजें खानेकी इच्छा, चिडचिडा और क्रोधी स्वभाव, सब काम बहुत तेजीसे करना इत्यादि इसके चरित्रगत लक्षण हैं।

नीचे लिखे लक्षणोंको हिपरका प्रधान चरित्रगत लक्षण समझना चाहिये —

१। खूब छाँट छाँटकर खानेपर भी पेटकी गडबडी हो जाती है।

२। जरा ठण्डी हवा शरीरमें लगनेसे ही बीमार हो जाता है खाँसी आती है, इसलिये हमेशा कपडेसे बदन ढके रहना चाहता है।

३। खट्टी गन्ध और सफेदी लिये बच्चोंका अतिसार, बदबूदार पतले दस्त आना।

४। जखमसे जो स्राव निकलता है, उसमें सडी गन्ध।

५। हमेशा पसीना हुआ करता है, पर उससे भी रोग नहीं घटता।

६। गलेमें दर्द, मानो मछलीका अनुभव होना (गलेके बाहरकी ओ. ओरसे आरम्भ—लैकेसिस ,

वजहसे घूट नहीं ले सकता—मर्कुरियस, घूट लेनेपर बढना—इग्नेशिया)।

७। काली खाँसी और ब्राङ्काइटिसमें सर्दीसे गला घरघराता है।

८। दमामें गला सां सो घर घर करता है, साँस रुक जानेकी तरह हो जाता है, सर झुकाकर वैठा रहता है।

९। पेशाव बहुत धीरे धीरे निकलता है, बूँद बूँदकर गिरता है, पेशाव निकलनेके पहले, कुछ देरतक वैठे रहना पडता है, मूत्राशयकी कमजोरी, पेशावका वेग समाप्त होनेपर भी ऐसा मालूम होता है, कुछ पेशाव और भी भीतर रह गया।

१०। सूखी पछिया हवा लगनेकी वजहसे खाँसी।

स्पर्शका सहन न होना—किसी तरहके प्रदाहमें रोगवाली जगहको छूनेतक नहीं देता, चिल्ला उठता है। फोडा, सूजन, वातका दर्द इत्यादिमें गर्म और ठण्डा, किसी तरहका भी प्रयोग नहीं करने देता।

ठण्डी हवा लगना सहन नहीं होता—किसी भी बीमारीमें रोगी दरवाजे, खिडकियाँ सब बन्दकर बहुत सावधानतासे रहता है, क्योंकि जरा भी खुले रहनेपर वह समझता है, कि इस स्थानसे हवा आकर उसकी बीमारी बढा देगी, किसी भी बीमारीमें यह लक्षण दिखाई दे तो तुरन्त—हिपर-सलफरको याद करें।

फोड़ा—इस बीमारीमें हमलोग हमेशा तीन दवाओंको अधिक व्यवहार किया करते हैं—बेलेडोना, मर्कुरियस और हिपर। बेलेडोना—प्रदाहकी पहली अवस्थामें अर्थात जबतक प्रदाहवाली जगह लाल, उसमें अकड़नका असह्य दर्द और तकलीफ रहती है, तबतक इसका व्यवहार होता है। मर्कुरियस-सोल या वाइवस—पीव पैदा होनेके पहले इसका प्रयोग करनेपर पीव पैदा नहीं होता और जब पीव पैदा होता है, परिमाण बढ़ाकर खूब पका देता है। इसलिये, इससे फोड़ा फट जाता है (साइलिसिया, देखिये, सभी तरहके फोड़ोंमें—माइरिस्टिका—३x।)

हिपर-सलफर—इसकी किया दो तरहकी होती है, फोड़ा, बाघी इत्यादिमें जब दर्द बहुत अधिक रहता है और टपकका दर्द रहता है, हाथतक लगाने नहीं देता, पीव पैदा होनेका उपक्रम होता है, उस समय इसकी २०० वीं या और भी ऊँची शक्तिका प्रयोग करनेपर बीमारी प्रायः आरोग्य हो जाती है, इसके अलावा जब ऐसा दिखाई देता है,—पीव पैदा हो गया है और वह पीव बहुत नीचेकी ओर है। वहाँ हिपरकी निम्न शक्ति, यहाँतक कि २x, ६x विचूर्ण शक्तिके प्रयोगसे वह पीव ऊपर चढ आता है, उससे फोड़ा आदि शीघ्र फट जाता है (पल्सेटिला देखिये), इसीलिये कितने ही इसे होमियोपैथिक नश्तरकी छुरी (Lancet) कहते हैं। अब हिपर और मर्कुरियसमें क्या प्रभेद है, सो देखिये—मर्कुरियसमें—हिपरकी तरह उतना स्पर्श सहन होनेकी तरह दर्द

नहीं होता, इसके अलावा पीव निकलना आरम्भ होनेपर, जिस तरह हिपर उपयोगी है, मर्कुरियस उस तरह लाभदायक नहीं है, हिपरमें पीवको परिचालित करनेकी शक्ति है, पर मर्कुरियसमें वह शक्ति नहीं है। केल्केरिया-हाइपोफासससे पीव-भरा बडा फोडा भी बैठ जाता है।

लाइकोपोडियम—छोटा हो या खूब बडा, चमडेके नीचेके सभी स्थानोंके फोडेमें पीव होना चाहता है या पीव हो गया है, ऐसी अवस्थामें इसके प्रयोगसे प्राय: पीव सोख जाता है और बीमारी आरोग्य हो जाती है। जहाँ ऐसा दिखाई दे, कि रोगवाली जगहको सेंकने अथवा गर्म पुल्टिस लगानेपर तकलीफ बढ जाती है, वहाँ—लाइकोपोडियम और जहाँ घट जाये—हिपर,—यह प्रभेद याद रखना ही यथेष्ट होगा।

साइलिसिया—जखम फट जानेके बाद या नश्तर लगाने बाद ही इसकी अधिक जरूरत पडती है, साइलिसियाके प्रयोगसे पीवका परिमाण घटकर जखम जल्दी सूख जाता है। होमियोपैथी की सभी दवाओंमें ही रोगीकी धातुपर लक्ष्य रखनेकी जरुरत है। साइलिसियाका रोगी—कमजोर, रक्तहीन, चेहरा सफेद, पेशियाँ ढीली, मनका तेज बहुत घटा, हाथ-पैर पतले पतले, पेट मोटा, माथा बडा दिखाई देता है और बहुत पसीना होता है (इसका अध्याय देखिये)।

बाघी—पारा या उपदंशसे उत्पन्न या साधारण बाघीमें भी यदि हिपरके दर्दका लक्षण रहे अर्थात रोगी उसमें हाथतक न

लगाने दे, यह लक्षण वर्तमान रहे, तो—हिपरके प्रयोगसे वह बाघी अक्सर बैठ जाती है, यहाँतक यदि पीव पैदा होनेका लक्षण भी रहे तो भी फायदा करता है। मर्कुरियसमे—हिपरकी तरह इतनी स्पर्श-असहिष्णुता नहीं रहती,रोगवाली जगहपर हाथ लगाने देता है। पीव पैदा होनेके पहले—मर्कुरियसके प्रयोगसे कितनी ही बार बाघी बैठ जाती है, पीव होनेपर और भी जल्दी जल्दी पका देता है, पर इतना याद रखें, कि उपदंशकी वजहसे पैदा हुई बाघीमें—हिपर और पाराके धातुवाले रोगके लिये—मर्कुरियस अधिक फायदा करता है। उपदंश और पारा दोनो ही विषसे दूषित धातुमें—एसिड नाइट्रिक फायदा करता है। साइलिसियाका प्रयोग करनेपर भी कितनी ही जगह ऐसा दिखाई देता है, कि पीव या रस बढ जाया करता है। इसीलिये, जखम भी जल्दी सूखना नहीं चाहता, ऐसे स्थानपर—हिपर अधिक फायदा करता है। साइ-लिसियासे कोई फायदा नहीं होता।

क्रूप (काली खाँसी)—इस बीमारीमे हमलोगोंको पहले तीन दवाओंकी जरूरत पडती है—एकोनाइट, स्पंजिया और हीपर-सलफर।

एकोनाइट—रोगकी पहली अवस्थामे फायदा करता है। पहली अवस्थामें—बाखार, छटपटी, बेचैनी, प्यास इत्यादि एकोनाइटके चरित्रगत लक्षणोंके साथ बच्चा यदि सोया सोया एकाएक नींद खुलकर धडफडाकर उठ बैठे, साँस रुक जानेकी तरह हो जाये

और छटपटाता रहे, इस तरह कुछ देरतक छटपटाता रहकर फिर सो जाये और इसी तरह फिर जाग पड़े, ये लक्षण सन्ध्यासे लेकर रातके पहले भाग तक बढ़े—एकोनाइटका लक्षण है और रातके १२ बजनेके बाद या रातके अन्तिम भागमें बढ़नेपर हिपर निर्दिष्ट है। एकोनाइट—बोखार न छूटनेतक बार बार इसका प्रयोग करते रहें। एकोनाइटके रोगीकी त्वचा सूखी और गरम, हिपर की—त्वचा तर (moist) रहती है।

स्पञ्जिया—बहुत जोरसे साँस खींचता है, साँस लेने और छोड़नेमें आरीसे लकड़ी चीरनेकी तरह आवाज आती है। खाँसी सूखी और घ घ आवाज, इसके रोग-लक्षण आधी रातके बाद बढ़ते हैं। कोई कोई कहता है—ज्वर अधिक रहनेपर स्पंजियाके साथ एकोनाइट पर्यायक्रमसे और जल्दी जल्दी प्रति २ घण्टेके अन्तरसे व्यवहार करनेपर और भी जल्दी फायदा दिखाई देता है।

हिपर-सल्फर—इससे आधी रातके बाद और रातके अन्तिम भागमें, सबेरेकी ओर और ठण्डी हवामें रोग बढ़ जाया करता है। हिपरकी खाँसी कभी सूखी, कभी घ घ, कभी खूब ढीली, गला घर घर किया करता है या साँय साँय करता है; पर यह याद रखें, कि काली खाँसी (क्रूप) में एकोनाइट और, स्पञ्जिया, पहले व्यवहार करनेके बाद खाँसी जब कुछ ढीली और घरघराहट की आवाज आने लगे, तब हिपरसे ज्यादा फायदा दिखाई देगा। हिपरमें सर्दी इतनी ढीली रहती है; कि ऐसा मालूम होता

है, कि खाँसनेपर बलगम निकल जायगा पर वह सहजमें नहीं निकलता, खाँसते खाँसते जी मिचलाने लगता है, पसीना होता है। यदि क्रूपमें इन ऊपर लिखी दवाओंसे कोई फायदा न हो, तो अन्तमें ब्रोमियम, आयोडम इत्यादि दवाओंका सहारा लेना पडेगा (आयोडम अध्याय देखिये)। हिपरमें बोखार रहनेपर शरीर का ताप (temperature) अधिक नहीं रहता।

द्रष्टव्य :—क्रूपकी पहली अवस्थामें ऊँचा बोखार, छट-पटी, चमडा सूखा, साँसमें खिंचाव, पसली उठना, गलेमें साँय साँय आवाज, छातीमें सर्दीका बैठ जाना (tight cough) प्रभृति कितने ही लक्षण यदि रहें, पहले—एकोनाइट २०० शक्ति एक मात्राका प्रयोग करें, इससे ज्वर तथा एकोनाइटके चरित्रगत दूसरे दूसरे उपसर्ग दब जायँगे, इसके बाद स्पञ्जिया २०० शक्ति एक मात्राका प्रयोग करें, इससे बलगम ढीला पड जायगा, इसके बाद हिपर २०० शक्तिका प्रयोग करे, बस इतने ही से बीमारी आराम हो जायगी। यदि सर्दी एकदम ढीली पड जानेके पहले भूलसे कभी हिपरका प्रयोग कर बैठे और मालूम हो कि अभी भी बलगम कुछ न कुछ जमा हुआ है (more or less tight), तो बलगम एकदम ढीला न हो जानेतक फिर २।१ मात्रा स्पञ्जिया—२०० वीं शक्ति देने बाद, फिर एक मात्रा हिपर—२०० शक्तिका प्रयोग करें, इसी से रोगी एकदम आरोग्य हो जायगा। (त्वचा सूखी और गर्म रहनेपर हीपर फायदा नहीं करता)। रोगका दुबारा आक्रमण

रोकनेके लिये अन्तमें उच्च शक्तिकी १ मात्रा—फास्फोरसका प्रयोग कर सकते हैं (चुनी हुई दवाकी २ छोटी गोलियाँ, २ ड्राम डिस्टिल्ड वाटरमें मिलाकर समूचा अंश खाली पेटमें एक बार सेवन करा, कुछ दिनोंतक राह देखनी चाहिये। इससे बहुत फायदा होगा)।

ब्राङ्काइटिस, ब्राङ्को-निमोनिया और कैपिलरी ब्राङ्काइटिस—इन सब बीमारियोंमें और बलगम घरघराता रहे तो एण्टिमटार्ट और हिपर सलफर इन दोनों दवाओंकी ही जरूरत पड़ती है। हिपरमें बलगम ढीला रहनेपर भी बहुत देरतक खाँसने पर थोड़ा-सा निकलता है, खाँसता खाँसता रोगी थक जाता है, ओकाईका भाव रहता है और पसीना होता है। हिपरमें जरासी ठण्डी हवा लगनेपर भी बीमारी बढ़ जाती है। डा० लिपि कहते हैं—कोई ठण्डी चीज पीनेपर ही खाँसी बढ़ती है (एण्टिम-टार्ट अध्याय देखिये)।

फेफड़ेकी दूसरी दूसरी बीमारियाँ—पीवकी तरह बलगम, अगर कास-रोगमें निकलता हो,—हिपर, स्किला (Scila) और यर्बा-सैण्टा (Yerba santa)—इन तीन दवाओंकी ज्यादा जरूरत पड़ती है। क्रूप्स निमोनियाकी अन्तिम अवस्थामें हिपर फायदा करता है। निमोनियामें ठीक ठीक सरलता पूर्वक धीरे धीरे रोग आरोग्य अर्थात resolution न होकर पीव (sup puration) हो जाये और हिपरके लक्षण वाली खाँसी रहे तो—

हिपर फायदेमन्द होता है। यक्ष्माकी खाँसीमें—हिपरके प्रयोगसे फुसफुसकी गुटिकाएँ नष्ट हो जाती हैं, Tubercular absorption होता है पर इसमें भी अवश्य ही ऊपर बतायी हिपरकी निर्दिष्ट खाँसी और रोग-लक्षणका बढना रहना चाहिये। एमोन-कार्ब—छातीमें सर्दी भरी रहना, श्वासकष्ट, खाँसता है पर कुछ भी निकलता नहीं है, इसके साथ ही बोखार रहता है।

दमा—यदि कभी ऐसा दिखाई दे, कि दमाका कोई रोगी बरसातमें अच्छा रहता है तथा सर्दी और गर्मीके दिनोंमें दमाका दौरा और तकलीफें बढ़ जाती हैं, उसे हिपर दें—फायदा होगा।

तालुमूल प्रदाह—पुराने प्रदाहमें मर्कुरियससे फायदा न होनेपर—हिपरका प्रयोग करना चाहिये।

स्वरनली-प्रदाह या तालुमूल प्रदाह रोगमें, स्वरनलीपर छोटे छोटे दाने जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं। उससे रस निकलता है फूलना और गलेमें श्लेष्मा इकट्ठा होता है, पर खाँसनेपर सहजमें ही बलगम नहीं निकलता—इन सब लक्षणोंमें हिपर-फायदा करता है। हिपरमें—टानसिल बहुत फूलता है और रोगी के गलेमें काटा गडनेकी तरह दर्द अनुभव होता है।

आँखकी बीमारी—पारा सेवन करनेके कारण आइ-राइटिस (चक्षुके काले रगके ताराको आइरिस और उसके प्रदाहको आइराइटिस कहते हैं, कैलि-बाइ-क्रोम अध्याय देखिये।) रोगमें आँखके भीतर पीब, आँखोंका प्रदाह, बेहद दर्द और उसमें स्पर्शका

एकदम सहन न होना, यहाँतक कि हाथ लगानेपर भी वह तकलीफसे अधीर हो जाता है। ये लक्षण रहें तो—हिपर, उपयोगी है। पीबका भाग अधिक और यन्त्रणा अगर कम हो,—कैल्केरिया-सल्फसे फायदा होगा। रातमें आँखसे पानी गिरता है, आँखें सट जाती हैं।

आँख-उठना—हिपरमें पलकोंका प्रदाह और सूजन रहती है, इसके अलावा पल्कपर अञ्जनी और उसमें पीब होनेपर—हिपर फायदेमन्द है। आँखकी किसी बीमारीमें हिपरका प्रयोग करते समय अगर ऐसा दिखाई दे, कि आँखमें पानी लगनेपर यहाँतक कि ठण्डी हवा भी लगनेपर आँखकी तकलीफ बढ़ जाती है, तो—हिपरसे ज्यादा फायदा होगा। मर्क्युरियसमें—सर्दीसे घटता है (इयुफ्रेशिया अध्याय देखिये)।

ज्वरमें छाले—इस बीमारीमें रसटक्स, आर्सेनिक, नैट्रम-म्यूर और हिपर लाभदायक हैं। इनमें जिस दवाके लक्षण अधिक मिलेंगे, उनसे ही ज्यादा फायदा होगा।

अतिसार—पेटकी बीमारीमें दस्त पतले, उसका रंग सफेद और खट्टी गन्ध—ये कई हिपरके चरित्रगत लक्षण हैं, इसके अलावा—हरे रङ्गके दस्तमें, दस्तके साथ अजीर्ण खाये हुए पदार्थ निकलना और बदबूदार दस्त हो—हिपर ही दवा है। खट्टी गन्धका दस्त जिसका हमलोग बोल चालमें अम्लका पैखाना करते हैं, उसमें हिपर-सलफरके अलावा—मैग्नेशिया-कार्ब, रियुम

कैल्केरिया-कार्ब दवाएँ भी फायदा करती हैं। दस्तका रङ्ग खूब हरा, उसमें उड़दके छिलकेकी तरह एक पदार्थ तैरता रहता है। पेटमें दर्द होता है, पाखानेके समय वेग और कूथन—इस लक्षणके साथ अगर दस्तमें खट्टी गन्ध आये—मैगनेशिया-कार्ब ज्यादा फायदा करता है। दस्तका रङ्ग भूरा, दस्तके साथ बहुत फेन, कूथन, दस्तके समय बच्चा रोया करता है और दस्तकी गन्ध इतनी खट्टी रहती है, कि बच्चेको धो-पोछ देनेपर भी उसके शरीरकी गन्ध नहीं जाती—इन सब लक्षणोंमें—रियुम—(Rheum) फायदा करता है। कैल्केरिया-कार्बमें भी हिपरकी तरह दस्त साफ कर देनेपर भी खट्टी गन्ध दूर नहीं होती, बच्चेके शरीरमें भी खट्टी गन्ध पायी जाती है। हिपरका दस्त—फीका हरे या सफेद रङ्गका और पेटमें दर्द, ऊपर बतायी दूसरी दूसरी दवाओंकी अपेक्षा बहुत कम रहता है, मलके साथ फेन भी नहीं रहता, हिपरमें सड़ी गन्ध या धुन्द डकार आती है। (आर्नि, स्टैनम, सल्फ)।

अजीर्ण-रोग—पाचन-शक्तिका घट जाना, कोई भी चीज अच्छी तरह हजम नहीं होती, खूब सावधानतासे खानेपर भी पेट खराब हो जाता है, रोगीके मुँहका स्वाद हमेशा खट्टा रहता है, पेटमें मरोड़का दर्द रहता है, यद्यपि कुछ खा लेनेपर यह दर्द घटता है, पर पेट भारी हो जाता है, उससे तकलीफ होती है, रोगीको कभी कभी कब्ज भी रहता है।

कानकी बीमारी—कानमें पीब होनेके पहले अगर बहुत दर्द रहे,—हिपर फायदा करता है। इसके अलावा पहली

अवस्थामें—बेलेडोना, कैमोमिला, पल्सेटिला, मर्कुरियस इत्यादि दवाओंका प्रयोग करनेपर भी यदि फायदा न हो तो हिपरकी जरूरत पड़ती है। टेलूरियममें—पहले कानमें दर्द होने बाद बहुत पीब गिरा करता है, यह पीब गिरना अगर बहुत दिनोंतक रह जाता है, तो उसमें बहुत सड़ी गन्ध आती है।

चर्म-रोग—सन्धि-स्थान और चमड़ेके गासेमें रस-भरे दाने, उसमें बहुत बदबू और खुजलाहट, यह खुजली सवेरे बढ़ने पर—हिपर, शरीरमें जरा-सी खरोंच लगनेपर भी—पक जाती है और पीब निकलता है।

जखम—पारा सेवनकी वजहसे जिनके शरीरका रक्तदूषित हो गया है, उनके जखममें या जिनका जखम शीघ्र आरोग्य नहीं होता, लेकिन जखम गहरा नहीं है, बदबू, पीब और खून निकलता है और जखममें इतना दर्द रहता कि बर्दाश्त किया नहीं जा सकता उसमें—हिपर लाभदायक है। पारा उपदंश मिश्र-विष दुष्टधातुमें हिपरकी अपेक्षा—नाइट्रिक-एसिड अधिक फायदेमन्द है। फोड़ेके चारों ओर छोटी २ फुन्सियाँ होती है और बड़े जखममें परिणत हो जाता है।

आमवात—सविराम ज्वरकी शीतावस्थामें या शीतावस्थाके पहले आमवात निकलती है और जहाँ ताप चढ़ा कि सब गायब हो जाती है (एपिस अध्याय देखिये)। कामला—इसके साथ ही बहुत खुजली।

ग्रैंग्रीन—असली सडनकी बीमारी होनेपर लैकेसिस फायदा करता है , पर यदि असली ग्रैंग्रीन न होकर जखमसे नीला या कालिमा लिये रगका पीब निकलता हो और उसमे हिपरका चरित्रगत दर्द रहे, तो हपरसे—फायदा होगा ।

वृद्धि (aggravation)—रोगी करवट सोनेपर, ठण्डी हवा मे, देह खुली रहनेपर, रोगवाली जगहको छूनेपर, पाराके अपव्यवहारसे, ठण्डी चीज खाने-पीनेपर ।

ह्रास (amelioration)—गर्म या गर्म कपडेसे ढक लेनेपर ।

बादको दवा (follows well)—एब्रोटेनम, एकोन, बेल, ब्रायो, आयोड, मर्क, नक्स, रस, सिपि, सल्फ, एसि-नाइट्रि, स्पजि, साइलि ।

सम्बन्ध (complements)—चोट लगनेपर—कैलेण्डुला, और सोरा दोषके कारण पैदा हुए चर्म-रोगमे—सलफरके समान है। कविराजी मकरध्वज या और किसी प्रकारकी धातु घटित दवा सेवन करनेपर—हिपर निम्नक्रम ६ ठीं शक्ति प्रतिविष का काम करती है ।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसे-एसि, आर्स, बेल, कैमो, साइलि ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन ।

क्रम—३x—२०० वीं० शक्ति । फारमुला—७ (विचूर्ण) ।

हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिस।

(HYDRASTIS CANADENSIS)

(इयुनाइटेड स्टेट्सके एक प्रकारके पौधेके ताजे मूलसे टिंचर तैयार होता है)—सम्भवत डा० हेल्ने इस दवाका पहले पहल होमियोपैथीमें प्रचार किया। हाइड्रैस्टिसका बाहरी और भीतरी दोनों ही प्रयोग होता है। श्लैष्मिक-झिल्लीपर इसकी क्रिया अधिक होती है। नाक, गला, पाकस्थली, आँत, जरायु, मूत्र-नली प्रभृतिकी श्लैष्मिक-झिल्लीसे पहले—सादा, पतला, स्वच्छ और लसदार गोंदकी तरह स्राव होता है, इसके बाद—पीला या हरा, गाढा, कभी कभी खून मिला लसदार स्राव भी निकलता है डा० हेलने इस दवाके बाहरी और भीतरी प्रयोग द्वारा सब तरह का नाकका स्राव (Coryza), मुँहका जखम, नाकका जखम, पारा या उपदंशके कारण गलेका जखम, श्वेत-प्रदर या किसी दूसरी तरहका जरायुका स्राव, कानका स्राव, आँखोंका प्रदाह इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियाँ आरोग्य की हैं। शरीरके भीतर की बडी बडी गाठों (glands) पर इसकी क्रिया होनेके कारण यह यकृत पर भी अपनी क्रिया प्रकट करता है। यकृतकी क्रियाका न होना (Torpid liver), और इसी वजहसे फीके रंगका दस्त और कामला रोग हो जानेका लक्षण इसमें दिखाई देता है। हाइ-ड्रैस्टिस पुराने आमवातका महौषध है, नये आमवातमें भी फायदा करता है।

श्लैष्मिक-झिल्लीके नये प्रवाहमें और जब तक ज्वर रहता है, तबतक इसका व्यवहार निषिद्ध है।

शराब और अन्य नशा सेवन करनेवाले मनुष्य, जिनका स्वास्थ्य भग हो गया है, जिनकी पाकस्थली और यकृतकी क्रियामें विकारके साथ कैन्सर प्रभृतिकी बीमारी रहती है, उनके लिये और कण्ठमाला तथा सुखण्डी रोगवाले (emaciated) बच्चोंके लिये यह ज्यादा फायदामन्द है।

हाइड्रैस्टिसका रोगी—बहुत कमजोर, हमेशा अपनी बीमारी के विषयमें कहा करता है। कब्जियत, अजीर्ण, कलेजा धड़कना, सर्दी, खाँसी, जखम—ये सब मानो उसे लगे ही रहते हैं। टाइफायड ज्वर आदिके बाद भूख न लगना, कब्जियत, बहुत अधिक पसीना इत्यादि भी इसके अन्तर्गत हैं, यह एक तरहकी बल्कारक ओषधि है। यकृतकी क्रिया न होना, थोड़ा सफेद मल।

कब्जियत—डा० हियुजेम्स कहते हैं, इसका मूल अर्क—२।१ बूँद की मात्रामें नित्य सवेरे पानीके साथ सेवन करनेपर कोठा साफ हो जाता है। कभी कब्जियत, कभी पतले दस्त। बच्चे और वृद्धोंका कब्ज, अभ्यासकी वजहसे जुलाब लेने बाद कब्ज, बवासीरके रोगियोंका कब्ज, गर्भावस्थामें और प्रसव के बाद कब्ज, दमा रोगीका कब्ज और कब्जके साथ ही खट्टी डकारें आना और सर दर्द वगैरहमें भी हाइड्रैस्टिस फायदा करता है (एसिड-गैलिक अध्याय देखिये)। इसमें कभी

आमकी तरह लसदार पाखाना होता है, कभी कडी गांठकी तरह मलपर गोंदकी तरह पदार्थ लिपटा रहता है (कास्टिकम—३० शक्ति, ३ गोलियां, रोज सबेरे ८।१० दिनोंतक सेवन करनेपर कितने ही स्थानोंमें कोठा साफ हो जाता है)। बच्चोंकी कब्जमें—हाइड्रैस्टिसकी उच्च शक्ति फायदा करती है। (ओपियम देखिये)।

आमवात—हाइड्रैस्टिस ϕ से ३x शक्ति, नित्य २।३ मात्रा व्यवहार करनेपर पुराने और नये वातमें विशेष फायदा होता है। कच्ची हल्दीसे १x, २x, ३x शक्ति तैयार कर आमवातमें व्यवहार करनेपर—इसके द्वारा हाइड्रैस्टिसकी अपेक्षा भी जल्दी फायदा होगा। सरसोंके तेलमें "अलतेकी पूरी" घोलकर उसी तेलको बदनपर लगानेसे आमवातकी खुजलाहट बहुत कुछ घट जाती है (आर्टिका यूरेन्स देखिये)।

जखम—नाककी हड्डीका जखम, उससे बहुत जल्द हड्डीमें छेद हो जानेकी सम्भावना, नाकसे गाढा गोंदकी तरह लसदार स्राव निकलता है, जखमको छूनेसे ही खून निकलता है, (अरम-मेट देखिये)। मुँहका जखम, पारा या क्लोरेट आफ पोटासके अपव्यवहारकी वजहसे मुँहका जखम, बच्चा और स्तन पिलानेवाली माताके मुँहका जखम, कैंकर (Canker) इत्यादिमें इसके द्वारा विशेष उपकार होता है। अमेरिकाके चिकित्सकोंका कथन है—हाइड्रैस्टिस पाकस्थली और जरायुका कैन्सर (Cancer) की बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है। इसके सेवनसे क्रमशः स्वास्थ्य

की उन्नति होती है। जरायु और वक्षस्थलके कैन्सरके सम्बन्धमें डा० हियुजेस कहते हैं—"कैन्सरका दर्द हाइड्रैस्टिस दूर कर देता है, स्रावको सुधार देता है, उसकी बदबूको दूर कर देता है और स्वास्थ्यकी भरपूर उन्नति कर देता है। जिन मनुष्यों अथवा बच्चोंकी कब्जियतकी धातु है, उनके मलनालीका जखम, मलद्वारका फटना (Fissure of the anus), काँच निकलना (Prolapsus of the rectum) और पाकाशय-प्रदाह, या पाकस्थलीका जखम, पाकस्थलीका कैन्सर, जिन पुराने जखमोंसे सहजमें ही रक्तस्राव होता है और बहुत बदबू रहती है, वे सब जखम और शय्याक्षत (Bed-sore) मार्श्वमें एकजिमा इत्यादिकी बीमारियोंकी भी यह एक बहुत बढ़िया दवा है।

अजीर्ण—रोगीका पेट मानो फूला रहता है, कभी कभी पेट भूल पड़ता है। बदबूदार या खट्टी डकार आती है, कभी कभी कब्जियत, कभी पतले दस्त, दस्त आम-मिले और धसधसे, जुलाब लेनेपर कब्जियत और भी बढ़ जाती है, भगन्दर।

स्त्री-रोग—जो स्त्रियाँ बहुत कमजोर हैं। चेहरा उतरा सफेद रहता है। आँख गड़हेमें धसीं, जिन्हें यकृतकी बीमारी रहती है या जिन्हें कब्ज, अम्ल, अजीर्ण, बवासीर इत्यादि बीमारियाँ लगी रहती हैं, उनके श्वेत-प्रदरके स्रावमें, अगर स्राव बहुत अधिक होता है और उसका रंग पीला और लसदार होता है, तो—हाइड्रैस्टिससे फायदा होगा। प्रदरके स्रावके साथ—प्रुराइटिस (योनिमें खुजली), जरायु और जरायु-ग्रीवामें जखम, जखमसे

रक्तस्राव, जरायुमें अर्बुद, (Uterine- fibroid tumour) और जरायुकी पुरानी विवृद्धि इत्यादि बीमारियाँ रहनेपर भी यह फायदा करता है।

प्रमेह—सूजाककी पुरानी अवस्थामें (ग्लीट) जब मवाद ज्यादा नहीं आता, रग पीला, लसदार रहता है, उस समय इसकी २x—३x शक्ति, कुछ ज्यादा दिनोंतक व्यवहार करनेपर विशेष लाभ होता है। कितने ही पिचकारी द्वारा इस दवाका प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं, पर हमलोग इसके पक्षपाती नहीं हैं।

पैरकी अँगुलियोंके गट्ठे—कडे जूतेके दवावसे हो या किसी तरहके धातु-दोषके कारण ही हो, बहुतोंके पैरमें गट्ठे (Corn) हो जाते हैं। उसमें बहुत दर्द रहता है, छुरीसे काट देनेपर भी १०।१५ दिनोंतक कुछ अच्छा रहता है, पर फिर दर्द होने लगता है, इसमें—हाइड्रैस्टिस—ϕ एक भाग, वैसोलिन ७ भाग, एक साथ मिलाकर एक मरहम तैयार कर दिनमें २।१ बार और सोनेके समय लगा देनेपर बहुत फायदा होता है। बीच बीचमें सल्फर, नाइट्रिक-एसिड प्रभृति भी धातुके अनुसार व्यवहार करें। कमसे कम दो तीन महीने नरम झामेसे रोज २।१ बार गट्ठेको घस देना चाहिये। फेरम-पिक्रिक—३० के सेवनसे जल्दी फायदा होता है।

एनाकार्डियम-आक्सिडेंटेलिस—पैरके गट्ठेमें जखम, पैरका तलवा फटा इत्यादिमें फायदा करता है। चेहरेका विसर्प प्रभृतिमें भी यह लाभदायक है।

कामला—यकृतका अच्छी तरह क्रिया न करना (torpid), यकृतमे एक तरहका दर्द और कामला रोगमें—आँख, चर्म्म, पेशाब प्रभृति पीले होनेपर इससे जल्दी फायदा होता है।

वृद्धि—(aggravation)—रातमें, उत्तापसे, धोनेपर, शरीर हिलानेपर।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे, दबानेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—सलफर।

क्रम—ϕ—३० शक्ति (अजीर्ण रोगमे निम्न और नाकके स्राव में उच्च शक्ति)। फारमुला—३

हाइड्रोकोटाइल एशियाटिका।

(HYDROCOTYLE ASIATICA)

(एक तरहकी छोटी लताकी तरहके गाछसे मूल अर्क तैयार होता है)—हमारे इस देशमें इसे ब्राह्मी साग कहते हैं। मानसिक और शारीरिक दुर्बलता तथा सभी पेशियोंमें चोट लगनेकी तरह दर्द, इस दवाका प्रधान लक्षण है। ब्राह्मीका रस—कुष्ट, गर्मी, नासूर और चर्म-रोगमे बाहरी प्रयोग करनेपर फायदा होगा। मुँहका जखम, पोडा नारगा प्रभृतिमे भी लाभदायक है।

फीलपाया (Elephantiasis) और कुष्ठरोग (Leprosy) को आराम करनेके लिये इस दवाका विशेष व्यवहार होता है।

केसी तरहके भी चर्म-रोगमें, त्वचाका ऊपरी अंश (बहिस्त्वक
pidermis) जितना ही ज्यादा भरा और मोटा होगा, इसमें
ी उतना ही ज्यादा फायदा होगा। सूखी खुजली, पुराना एकजिमा,
ँहासे प्रभृति कितने ही चर्मरोगोंमें इससे बहुत फायदा दिखाई
ता है। ल्यूपस रोगमे (Lupus—इस रोगमें नाकमें, मुँहमें,
लकोंमें और ओठमें घाव हो जाता है)—हाइड्रो-कोटाइल फायदा
रेगा।

कुष्ठ-व्याधि—(Leprosy)—जहाँ पहले त्वचापर लाल
ग होकर फूल पडती है, इसके बाद जखम होकर चमडा गिर जाना
ाहता है, वहाँ—हाइड्रोकोटाइल और जहाँ चमडा सुन्न हो जाता
, छूनेकी शक्ति लोप हो जाती है (Anæsthetic variety
f leprosy) वहाँ—एनाकार्डियम-आक्सिडेण्टैलिस ज्यादा
ायदा करता है। ऊपर लिखी कोई दवा भीतरी सेवन करनेके
मय इसका मूल अर्क—२० बूँद, ग्लिसरिन १ आउन्स, इसी
िसाबमें मरहम बनाकर रोगकी जगहपर २।१ बार लगानेसे
ीमारीमें कुछ जल्दी फायदा होना सम्भव है। इसी बीमारीमें कम
। कम ४।६ महीने दवाका व्यवहार करना होगा।

स्कूकम-चक—(Shookum-chuk)—१x—३x विचूर्ण,
।३ मास व्यवहार करनेपर उससे कितनोंका ही कुष्ठ-रोग आरोग्य
आ है।

पाइपर-मेथिस्टिकम (Piper Methysticum)—१—६
। शक्ति। कुष्ठरोगमें पहले चर्मके किसी अंशमें पपडीकी

एक पर्दा पडता है, इसके बाद वह पर्दा निकल जाता है और वहाँ एक सफेद दाग हो जाता है और फिर घाव हो जाता है, पूर्व कालके ऋषिगण जो सोमरस पान करते थे, वह यही चीज है।

होयाङ्ग-नान (Hoang-nan)—निम्न-शक्ति, कुष्ठरोगका जखम और चर्म-रोग इससे बहुत जल्द आरोग्य हो जाते हैं। इससे कैन्सरकी बदबू और रक्तस्राव भी आराम होता है।

फीलपाया—(गोद) इस रोगमे कुछ अधिक विनोतक दवाका सेवन नियमित रूपसे करना पडता है। डा० पियर्स कहते हैं—एक मनुष्यके बायें पैरमें फीलपाया हो गया, वह पैर दूसरे निरोग पैरकी अपेक्षा प्राय ६ इञ्च अधिक मोटा हो गया। हाइड्रो कोटाइल सेवन करनेपर, उससे विशेष लाभ हुआ था। इसमें बहुतसे स्थानोंमे कुटकुटी होती है, पैर बहुत खुजलाते हैं।

क्रम—ϕ—३री शक्ति। फारमुला—४।

हायोसियामस नाइजर।

(HYOSCYAMUS NIGER)

(युरोपकी सडकोंके बगलमे एक तरहका पौधा पैदा होता है, उस वृक्षसे मूल अर्क तैयार होता है)—मस्तिष्क और स्नायुमण्डल पर इसकी मुख्य क्रिया होती है और रक्तसचालक यन्त्रोपर इसकी गौण क्रिया। फलह प्रिय, बहुत अधिक बोलता है, ईर्षालु,

रोगीके मनमें हमेशा एक तरहका सन्देह बना रहता है—मानो कोई विष खिला देगा। जिस जगहपर रहता है, उसी जगहको—ऐसा समझता है, कि यह उसका घर नहीं है। ये ही इसके मानसिक लक्षण हैं।

चरित्रगत लक्षण —

१। विकारसे कभी कभी बेचैन हो पड़ता है, बिछावनसे उछल पड़ता है और भागनेकी चेष्टा करता है, कभी बिछावन नोचता है। कभी बिछावनपर हाथ पटकता है, बुदबुदाकर बकता है, दाँतपर मैल (sordes) जमती है। जीभ सूखी, अनजानमें पाखाना-पेशाब, २। बिना मतलबकी बातें कहता है और बहुत जोरसे हँसता है, ३। शरीरपर कोई भी कपड़ा नहीं रखना चाहता, कपड़ा रखनेपर उतार कर फेंक देता है और बराबर नङ्गा पड़ा रहता है, बुरे गाना गाता है, ४। गुह्याङ्गका कपड़ा खोल डालता है, हमेशा लिङ्गपर हाथ रखता है, ५। अज्ञानकी तरह रहकर, जो पास नहीं है या जो कभी पास नहीं आये, सोचता है, कि वे ही दिखाई दे रहे हैं, ६। अकेले रहने, विष खिलाने, वेच डालने, खाने-पीने और जो लेने कहा जाता है, उसे लेनेसे भय,—कारण उसे ऐसा सन्देह होता है, कि उसके साथ कोई षडयन्त्र रचा जा रहा है, ७। ईर्षालु, राग या प्रेमसे वञ्चित होनेके दुष्परिणामस्वरूप कोई बीमारी हो जाना, ८। रातमें सोनेपर अत्यन्त आक्षेपिक सूखी खाँसी, उठ बैठनेपर उस खाँसीका घटना, ९। प्रसवके बाद मूत्राशयका पक्षाघात, पेशाब बन्द या पेशाब...

रोकनेकी शक्तिका न रहना, पेशाब करनेकी इच्छा बिलकुल नहीं रहती, १०। व्यवसायके सम्बन्धमें या किसी दूसरे ही वि मे उत्तेजित हो जानेके कारण नींद न आना, ११। ऋतुके स हाथ-पैरका काँपना, १२। उन्मत्तता—क्रोध करता है, धमक है, दाँतसे काटता है, मारता है और हत्या करना चाहता है।

हायोसियामस—ज्वर और विकार रोगका महौषध है। टाइफायड, सविराम, खसड़ा, इन्फ्लुएञ्जा, निमोनिया या चेच साथ जो ज्वर-विकार हो जाता है, उसमे ज्यादा फायदा क है। विकारमें यह बेलेडोना और स्ट्रैमोनियमके बीचके लक्षण व्यवहृत होता है।

टाइफायड ज्वर—इस मियादी बोखारकी विकारवाली अव में और विकारमे मस्तिष्कका लक्षण प्रकट होनेपर—बैप्टीशि ओपियम, रसटक्स, आर्निका, लेकेसिस, बेलेडोना, स्ट्रैमोनि और हायोसियामस इत्यादि दवाएँ साधारणतः लक्षण-भे प्रयोग की जाती हैं। विकारमें—बेलेडोना, स्ट्रैमोनियम और ह सियामस—इन तीन दवाओंका बहुत ही निकटका सम्बन्ध इसलिये, उनका प्रभेद सीख रखना चाहिये —

बेलेडोना—इसका विकार पहलेसे ही बहुत ही प्रचण्ड प्र का होता है, रोगीकी आँखें और मुँह खूब लाल हो जाते हैं यह विकारमे खूब जोर जोरसे बकता है, और इसके साथ ही उठकर बैठता है, भागनेकी चेष्टा करता है, उस समय रोगी शरीरकी ताकत खूब दिखाता है, इसमे मस्तिष्कमे बहुत अ

रक्तसंचय (Congestion) होता है। रोगीमें औंघाईका भाव रहता है, पर वह सो नहीं सकता, आँख बन्द करते ही डरता और चिल्ला उठता है।

हायोसियामस—इसमें विकारमें प्रलाप बकना अधिक रहनेपर भी बेलेडोनाकी तरह एक भावकी प्रचण्डता पहलेसे ही नहीं होती। पहले बहुत कुछ प्रचण्ड भाव रहकर इसके बाद क्रमशः आच्छन्न भाव आ जाता है या एक बार प्रचण्ड भाव अर्थात नोचना, दाँत काटने चाहना, बिछावनमें उठकर भागनेकी चेष्टा करना और फिर बेहोशकी तरह होकर कुछ बुदबुदाकर बकते रहनेकी तरह हो जाता है। हायोसियामसमें—बुदबुदाकर बकना, बिछावन नोचना, अघोर भावसे मूर्खकी तरह पड़े रहनेका भाव ही अधिक है और बेलेडोनामें उद्धत भाव अधिक दिखाई देता है। हायोसियामसका एक दूसरा लक्षण यह भी है—रोगी बहुत जल्द बेहोश या आच्छन्न की तरह हो जाता है, इस आच्छन्न भावके साथ दोनों आँखें खुली रहती हैं और टकटकी लगाकर इधर उधर देखा करता है, लोग समझते हैं, कि वह कुछ देख रहा है, पर वास्तवमें ऐसा नहीं है, सामने धूआँ या कुहरेकी तरह कुछ देखता है और उसे हाथमें पकड़ना चाहता है। इसीलिये, धीरे धीरे दोनों हाथ उठाता है और फिर उतारता है, बिछावन खूटता है और लगातार कुछ बुदबुदाकर बका करता है, बोलता है और मूर्खोंकी तरह हँसता है, फिर बहुत देरतक चुपचाप पड़ा रहता है, उस समय किसी तरहका प्रलाप या बुदबुदाकर बकना इत्यादि कुछ नहीं रहता,

रोगीका निचला जबड़ा अटक जाता है, दाँतपर मैल (sordes) जमती है, ज्ञान लोप हो जाता है और अनजानमें पाखाना-पेशाब होता रहता है। याद रखे कि हायोसियामसमें—विकार और टाइफायडके लक्षण आदि बहुत जल्दी जल्दी आ पहुँचते हैं और बहुत जल्द बेहोशी आ जाती है, जीभ मोटी और भारी हो जाती है, इसीलिये, जीभ हिला नहीं सकता, बहुत पुकारनेपर कुछ अधूरा-सा जवाब देता है, ठीक ठीक जवाब शायद ही कभी पाया जाता है।

स्ट्रैमोनियम—रोगी अकेला अँधेरेमें रहनेसे डरता है। इसीलिये, हमेशा रोशनी और अपने पास आदमी रहनेकी इच्छा प्रकट करता है। (यह लक्षण बेलेडोनाके विपरीत है)। विकारमें रोगी गीत गाता है, हँसता है, गाली देता है और कभी कभी भक्ति-भावमें प्रार्थना करता है, बिछावनसे भागनेकी चेष्टा करता है। रोगी तकियेसे सर उठाकर मानो कुछ देखता है और फिर तुरन्त तकियेपर सर रख लेता है, कभी कभी शरीरमें बहुत अधिक पसीना होता है पर उससे बीमारी कुछ भी नहीं घटती।

लैकेसिस—इसमें भी हायोसियामसकी तरह—नीचेका जबड़ा अटकता है और फड़कता रहता है, लैकेसिसमें—कमजोरी, कम्पन, और सुस्ती बहुत अधिक रहती है और नींद आते ही प्रलाप आदिके लक्षण बहुत बढ़ जाते हैं।

ओपियम—इसमें अज्ञानता और अघोरका भाव अधिक रहता है, यहाँतक कि और किसी भी दवामें इतना अघोर भाव नहीं है।

रोगी आँख बन्दकर, आँखे ऊपर उलटकर पड़ा रहता है। मक्खी बेठनेपर भी पलक नहीं हिलती, आँखपर मानो पर्दा पड गया है। निश्वासके साथ नाक बोलती है, ठीक मानो सो रहा है, हायोसियामसमें भी नाक बोलने और बेहोशीके भावका लक्षण है, पर ओपियमकी तुलानमें यह कुछ नहीं है (अन्यान्य लक्षणोंके लिये बेलेडोना अध्याय देखिये), विकार अवस्थामें कभी कभी लगातार बकता रहता है, आँखे खुली रहती है।

आँख नाक खोटना—टाइफायड ज्वरमें प्रायः ऐसा दिखाई देता है, कि मस्तिष्ककी उत्तेजनाकी वजहसे बिछावन नोचता है, नाक मुँह, आँख ओंठ सभी खोटता है, खोंट खोंटकर खून निकाल डालता है। <u>एरम-ट्राइफाइलममें</u>—नाक खोटता है, नाकसे खून निकलता है, नाकमें घाव हो जाता है, <u>कोनियममें</u> नाक खूटता है, हाथकी अँगुली खोंटता है। खोंट खोटकर खून निकाल देता है, घाव हो जाता है। <u>सिनामें</u>—नाक खुजलाता है। दाँत कडमड करता है, नाक, ओंठ, हाथकी अँगुली खोंटता है। <u>हायोसियामसमें</u>—विकारमें बिछावन, कपडा, बदनपर जो कुछ ओढाया रहता है, सभी नोचता है, हाथसे शून्यमें कुछ पकडना चाहता है। <u>नैफ्थालाइन</u>—लगातार नाक खोंटता है (इसके अध्यायमें क्रिमि देखिये)।

छोटी माता या चेचकके साथ विकार—दाने-गोटियाँ आदि बैठकर या अच्छी तरह उद्भेद न निकलकर अगर

विकार पैदा हो जाये और इसमे हायोसियामसके चरित्रगत लक्षण—बिछावन नोचना, अज्ञान-भावसे रहना, एकाएक चिल्ला उठना, पेशीका स्पन्दन, अनजानमे पाखाना-पेशाब हो जाना इत्यादि लक्षण रहनेपर हायोसियामस लाभदायक है।—हायोसियामसमे रोगी इस तरह मुँह हिलाता है,मानो ठीक कुछ खा या चबा रहा है।

गलनलीकी बीमारी—गलनलीके सकोचनकी वजह से (constriction of the throat) किसी चीजको, खास कर पतली चीजको निगल न सकना (बेल, प्लम्बम, स्ट्रैमो)। निगलनेकी चेष्टा करते ही अकडन पैदा हो जाती है।

उदरकी बीमारी—नाभीके पास श्वास लेनेके समय धक्का देनेकी तरह दर्द, उदर-पेशीमे चोट लगनेकी तरह दर्द (ब्रायो) पेट फूलना और पेटमे पेसा दर्द कि स्पर्श सहन न हो (बेल)।, तलपेटमें काटने-फाडनेकी तरह दर्द प्रभृतिमे हायोसियामसका प्रयोग होता है।

खाँसी—सोनेपर खाँसीका बढना, उठ बैठनेपर घटना। खाँसी सूखी, कुछ भी बलगम नहीं निकलता, अलिजिह्वा बढकर कभी कभी इस तरह बहुत सूखी खाँसी आती है, यदि यह खांसी रातमे बढती है, सोनेपर और भी बढती है और उठ बैठनेपर कुछ कम पड जाती है। ऐसा होनेपर—हायोसियामससे विशेष लाभ होता है। रियुमेक्समे—इसकी खाँसी भी इसी तरह सूखी रहती है ; पर इसमें गलेके भीतर सुरसुरी होकर खाँसी आती है और

दिनरात समान-भावसे खाँसी आया करती है। यक्ष्मा खाँसी और हृपिण्ड खाँसीकी अन्तिम अवस्थामें कितनी ही बार ऐसी ही खाँसी दिखाई देती है। मेन्था-पिपरेटा—इसमें भी इसी तरह गलेमें सुर-सुरी होकर खाँसी आती है, पर वह कुछ मृदु प्रकारकी होती है। फ्रान्सके डाक्टर डिमुरेसका कथन है कि—चोटमें जिस तरह आर्निका, प्रदाहमें जिस तरह एकोनाइट, सूखी खाँसीमें भी इसी तरह—मेन्था-पिपरेटा है। इसके द्वारा क्षय रोगकी खाँसी भी घट जाती है। ड्रोसेराकी खाँसी—तकियेपर सर रखनेसे ही बढ़ती है, खाँसी—रातमें, कुछ खाने-पीनेपर, बोलने और गानेपर बढ़ती है। खाँसी सोनेपर यदि कम हो—मैग्नेशिया-म्यूर उपयोगी है (खाँसीके विस्तृत विवरणके लिये परालिया अध्याय देखिये)। हायोसियामसमें एक तरहकी खाँसी आती है, वह खाने-पीनेपर, बोलनेपर और गानेपर बढ़ती है। निमोनियामें प्रलाप और मोहके साथ सूखी खाँसी, छातीमें घरघर आवाज।

हिचकी—निकारमें रोगी बेहोश, उसके साथ ही हिचकी, हिचकीमें पैरसे माथेतक काँप या हिल उठता है, पेटमें कोई नश्तर लगवाने बाद हिचकी होनेपर—हायोसियामस फायदा करता है (नक्स-वोमिका अध्याय देखिये)।

अनिद्रा—बच्चोंको नींद न आना, जरा नींद आनेपर ही सिहर उठता है। हाथ-पैर काँपकर चिल्ला उठता है। अथवा डर

कर आग पडता है। स्नायविक मनुष्योंका नींद न आना, सारी रात छटपटाया करता है, श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ होती है, सोया सोया एकाएक उछल पडता है। जहाँ नींद न आनेके किसी वास्तविक कारणका पता नहीं लगता वहाँ—हायोसियामस फायदा करता है (कैल्केरिया-कार्ब देखिये)।

उन्मत्तता—सूतिकोन्माद (Puerperal mania)—इस बीमारीमें हायोसियामस फायदा करता है। प्रेमसे निराश होकर यदि किसीको उन्माद हो जाये और इसके साथ ही यदि उसका मानसिक लक्षण—बहुत सन्देह, किसीको भी, यहाँतक कि अपने लडके लडकियों, रिश्तेदारों पर भी विश्वास नहीं करता हो, समझता हो, कि सब विष खिला देंगे, इसीलिये कुछ खाना नहीं चाहता हो। दवा तो खाता ही नहीं, रोगी कभी बहुत क्रोधमें, कभी नम्र, कभी कभी सिर्फ बुदबुदाकर बका करता है, ये लक्षण रहते हैं, ऐसा होनेपर—हायोसियामस दवा फायदा करती है। पागलोंके लिये हायोसियामस उग्रवीर्य दवा है। हायोसियामस व्यवहार करनेपर उनकी उग्रता घटकर रोगी शान्त भाव धारण कर लेता है। कामोन्मादमें—हायोसियामससे फायदा न होनेपर—फास्फोरसकी परीक्षा करे। (ग्लोनोयिन देखिये)।

टंकार—अकडन या टंकारमें यदि बेहोशीके साथ पेशियाँ फडकती रहें, तो हायोसियामससे फायदा होगा। इसमें आँखसे लेकर पैरकी अँगुली तक फडका करती हैं। इसके अलावा—चेहरे

की भाव-भगी, मुँह विचकाना, सिहरना और चौंक उठना, शरीर के एक ओरकी पेशीका फडकना, मुँहमें फेन भर आना इत्यादि लक्षणोंमें भी हायोसियामस फायदा करता है। हायोसियामसमें Clonic spasm, अर्थात थोडी देरतक पेशीका सकोचन होता है। नक्स-वोमिका और स्ट्रिकनियामें—(Tonic spasm) अर्थात बहुत देरतक पेशीका सकोचन होता है। हायोसियामसमें—पहले एक हाथ, इसके बाद दूसरा हाथ हिल उठता है। स्पन्दनमें हाथ-पैर हिलाना—कोना-कोनी भावसे (angular) होनेपर साइक्यूटा फायदा करता है। इग्नेशिया, स्ट्रैमोनियम इत्यादि दवाओंकी भी अकडनमें जरूरत पडती हैं। साइक्यूटाका फिट—हायोसियामसकी अपेक्षा प्रचण्ड होता है। रोगी अपने समूचे शरीरमें एक बिजलीकी तरह गति अनुभव करता है और टकटकी लगाकर देखता रहता है। श्वास लेनेमें तकलीफ होती है और दौराके पहले और बाद काँपता है, मृगी रोगकी तरह खींचन होनेपर भी हायोसियामस फायदा करता है। इग्नेशियाके फिटमें पलकें और मुँहकी पेशीमें ज्यादा स्पन्दन होता है और रोगी कडा या अकडा होकर पडा रहता है, इसमें शरीरकी किसी एक खास पेशीमें ही अधिक स्पन्दन दिखाई देता है।

बच्चोंकी अकडन, टकार, खींचन (Convulsion) प्रसवके बादकी खींचन, डरकर बच्चोंकी अकडन या खींचन और किसी भी बीमारीमें मृगी-रोगकी तरह फिट या खींचन (Epileptic form of spasms) होनेपर—हायोसियामससे विशेष फायदा होता है

(यदि शक्तिकृत दवाओंसे शीघ्र फायदा न हो तो खास जगहपर इसके मूल अर्कका व्यवहार करना उचित है)।

जलातङ्क रोग—(हाइड्रोफोबिया)—अगर पागल कुत्ता काटनेके कारण यह बीमारी हो,—हायोसियामस फायदा करेगा (स्ट्रैमोनियम देखिये)।

पुं०-जननेन्द्रिय—गुह्य-स्थान खोल रखता है, कामुकता, ध्वजभग।

पेशावकी बीमारी—पेशावके वाद पेशाव बन्द होने पर—हायोसियामस लाभदायक है। ओपियम, कास्टिकम तथा आर्सेनिक भी इस बीमारीकी दवाएँ हैं। मूत्राशय (bladder) का पक्षाघात, क्रमश अनजानमें पेशाब या पेशाब बन्द रखनेपर भी यह फायदा करता है। बार बार वेग—थोडा पेशाव।

मूलनाश-विकार—(युरिमिया)—हैजाके युरिमिया-विकार अवस्थामे जब रोगी एकदम बदहवास नगा होकर पडा रहता है, बीच बीचमें लिङ्गपर हाथ रखता है अथवा लिङ्ग पकडकर खींचता है। अनजानमें पाखाना फिरता है (मलमें प्राय कोई गन्ध नहीं रहती और पेटमें दर्द नहीं रहता)। आँखकी पुतली और आँख लाल हो जाती है, टकटकी लगाकर देखा करता है। पलकें नहीं गिरने देता, दाँतपर पीले रगका श्लेष्माकी तरह मैल जमा रहता है। प्यास लगती है तो पानीके सिवा और कुछ नहीं पीना चाहता, जीभ खासी साफ रहती है , पर सूखी और चमड़ेकी

तरह दिखाई देती है, पेट गडगडाता है, मुँहसे फेन निकलता है, हिचकी आती है, मूत्राशयमें पेशाब इकट्ठा रहनेपर भी पेशाब नहीं उतरता। या बहुत थोडा पेशाब होता है अथवा अनजानमें बिछावनमें पेशाब हो जाता है, उस समय इसकी उच्च शक्तिका (२०० वाँ क्रम) एक मात्रा प्रयोगकर ५।७ घण्टेतक ठहर जानेपर क्रमशः भरपूर पेशाब होकर विकारका भाव घट जाता है और धीरे धीरे रोगी आरोग्यकी अवस्थापर आ पहुँचता है। हैजामें जबतक ज्यादा मात्रामें पेशाब न हो जाये तबतक, रोगीको अगर अम्ल न हो,— कच्चे डाबका पानी और ठण्डा पानी, बरफके टुकडे, बरफका पानी, फरूई भिगोया हुआ पानी, १ आ० दूधकी चीनी, आधसेर पानीमें डालकर वह पानी एक तोला तालकी मिसरी—एक पाव गरम पानीमें डालकर, वह पानी ठण्डा होनेपर थोड़ा थोडा पीनेको देनेके सिवा और कुछ भी खाने-पीनेको न देना चाहिये। यदि आँख लाल न हो और रोगी सहनकर सके तो माथेपर हमेशा आइस-बैग, न हो तो ठण्डे पानीकी पट्टी या रेक्टिफायड स्पिरिट— १ ड्राम, ४ आउन्स पानीमें मिलाकर इसी पानीकी पट्टी लगाना और माथेपर हमेशा हवा करनी चाहिये (कैन्थरिस देखिये)।

पक्षिपियस-कार्नियुटि—(कैन्थरिस अध्याय देखिये)।

पक्षाघात—सन्यास (Apoplexy) की बीमारी होनेके बाद यह बीमारी होनेपर—आर्निका, लैकेसिस, बेलेडोना, नक्स, रसटक्स इत्यादि दवाएँ फायदा करती हैं। सन्यासके बाद

फिट होनेपर—बेलेडोना, ओपियम, हायोसियामस फायदा करता है। ऐपोप्लेक्सी (सन्यास) होकर अगर बुद्धिहीन मूर्खकी तरह हो जाये—हेलिबोरस फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—रातमें, रजःस्रावके समय, ठण्डी हवामें, रोगवाले अंशको छूनेपर, सोनेपर, चरित्रमें अविश्वास रहनेपर।

ह्रास (amelioration)—उठ बैठनेपर।

बादकी दवा (follows well)—बेल, पल्स, स्ट्रैमो, वेरेट।

सम्बन्ध—यह बेल, कैमो और वेरेट्रमके सदृश है। कामोन्माद की बीमारीमें—हायोसियामससे फायदा न होनेपर—फास्फोरस शराबियोंके रक्तोत्कासमें—ओपियम और नक्सके तुल्य।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसे-एसि, बेल, एसि-नाइट्रि चायना, कैमो।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६—१४ दिन।

क्रम—(potency)—६—२०० शक्ति। फारमुला—१

हाइपेरिकम परफोलिएटम।

(HYPERICUM PERFOLIATUM)

(युरोप और अमेरिकाके एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार होता है)—चोटकी वजहसे पैदा हुई किसी बीमारीमें और चोटके

कारण पैदा हुए धनुष्टकारमें, खींचन, अकडन इत्यादि होनेपर इससे विशेष फायदा होता है। चोटकी वजहसे स्नायुमें चोट आ जानेपर इससे वहुत जल्द फायदा होता है। मानसिक लक्षण .— लिखनेके समय भूल करता है, अक्षर छूट जाते हैं। रातके ४ वजेके बाद असम्बद्ध बातें बकता है, भूत प्रेत देखता है, डरकी वजहसे बीमारी, क्या कहने जाता था, यह भूल जाता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। कोई जगह कट जाये, कुचल जाये या कुछ गडकर बहुत दिनोतक दर्द, बना रहे और जखम (मोच खानेकी वजहसे—आर्नि, हैमा), २। सुई आलपिन, काटी वगैरह पैरमे गडकर या चूहा काटकर—धनुष्टकार, दाँती लगना, जबडे अटक जाना; ३। शरीरका कोई अश कटकर, टूटकर दो टुकडोंमें बट जानेपर वह टूटा हुआ अश मिला देता है, ४। हाथ-पैरकी अगुली, नख, हाथ-पैरके तलवेमें चोट लगकर स्नायु कुचल जायें और वहाँ असह्य दर्द हो, ५। चोट या शौक (shock) लगनेके बाद अकडन, खींचन, ६। चोट लगनेके बाद धनुष्टकारकी बीमारी, ७। गर्दनमे चोट लगनेके बाद सर-दर्द, ८। गिरकर मेरुदण्डमें चोट लग जानेके बाद ऐसा दर्द कि स्पर्श सहन न होना, काकुलस (शाक लगना)।

चोट—शरीरके किसी स्थानमें चोट लगनेपर यदि उस स्थानके स्नायु (nerves) मे चोट आ जाये, तो—हाइपेरिकम

और किसी स्थानकी मांस-पेशीमें चोट आ जानेपर—आर्निका फायदा करता है। चोट लगकर शरीरका कोई भी स्थान आहत होनेपर इन दोनों दवाओंके अलावा—आर्निका, रूटा, लिडम, कैलेण्डुला, हैमामेलिस इत्यादि दवाओंकी जरूरत रहती है, उनका विषय नीचे लिखा जाता है —

चोट लगकर यदि कोई जगह कुचल जाये, छिल जाये, तो—आर्निका ही उसकी दवा है, कभी कभी आर्निकासे पूरा पूरा फायदा नहीं होता,—वहाँ—लिडमका प्रयोग करना चाहिये। लिडममें—चोटकी वजहसे जो काला दाग पड जाता है, वह तक लोप हो जाता है। कोई भी जगह कुचल जानेपर आर्निकाकी तरह—हैमामेलिस और रूटा भी फायदा करता है। चोट लगकर अगर चोटवाली जगह कट जाये—कैलेण्डुला सबसे ज्यादा फायदा करता है। पर यदि किसी जगहमे काटी गड जाये, या कांटी, सुई काटा, पीन, काँच इत्यादि कुछ गड जाये, तो—लिडमसे ही फायदा होगा। केलेण्डुलासे कोई भी फायदा न होगा। अगुली या शरीरका कोई स्थान कुचल जानेपर—हाइपेरिकम महौषध है। इससे केवल दर्द ही नहीं घटता, बलिक जखम भी जल्द ही आरोग्य हो जाता है। अगुली दबकर अगर कट जाये, अगर वहाँ जखम हो तथा धनुष्टङ्कार होनेकी तैयारी हो जाये, तथा पैरके तलवेमें, हाथमे या अगुलोकी किसी जगहपर चोट लगकर दाँती लग जाये और धनुष्टङ्कार हो पडे—तो हाइपेरिकम इसकी प्रधान

दवा है। चूहा काटनेका ज़ख्म होनेपर इसका भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रकारका व्यवहार होता है। नश्तर लगवानेके और दहल-जाने (shock) के दुष्परिणाममें—हाइपेरिकम ज्यादा फायदा करता है।

चोट लगकर धनुष्टङ्कार होनेपर हाइपेरिकमकी तरह—स्टैफिसेग्रिया, वेरेट्र-विरिडि, साइनयूटा, पङ्क्सटियुरा इत्यादि दवाएं भी विशेष लाभदायक हैं। चोटवाली जगहपर भयानक यन्त्रणा रहनेपर—हाइपेरिकम और वेरेट्रम-विरिडि। कोई धारदार अस्त्रसे कट जानेपर—स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। साइनयूटा और पङ्क्सटियुरा—चोटवाली जगह पककर पीव हो जाये और एकाएक पीव बन्द होकर धनुष्टङ्कार (Tetanus) होनेपर जरूरत पड़ती है।

गट्ठे (Corn)—पैरकी अँगुलीके गट्ठेके दर्दमें—हाइपेरिकम लाभ करता है (हाइड्रैस्टिस देखिये)। फेरम-पिक्रिक इसकी उत्कृष्ट दवा है।

सदृश—केलेण्डुला, आर्नि, रूटा, स्टैफि, सिम्फाई। केलेण्डुलाके प्रयोगसे अगर ज़ख्म आराम न हो तो हाइपेरिकमसे फायदा होगा।

वृद्धि (aggravation)—दर्द अकड़नका भाव, अतिसार, स्नायविक खाँसी, दमाकी तरह खींचन इत्यादि उपसर्ग अन्धड़ होनेके पहले और बरसात और सीड़वाली ऋतुमें।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैमो, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—φ—३० शक्ति, बहुत दिन पहलेकी चोटमे—उच्च शक्ति का प्रयोग करना चाहिये।

फारमुला—३।

इग्नेशिया एमेरा।

IGNATIA AMARA)

(फिलिपाइन टापू, कोचीन, चीन प्रभृति स्थानोंके एक तरहके गाछके बीजसे टिंचर या विचूर्ण तैयार होता है)—इसकी प्रधान क्रिया मस्तिष्क या स्नायुमण्डलपर होती है। इग्नेशियाके मानसिक लक्षण बहुत बदलनेवाले होते है, रोगी अभी प्रसन्न था, क्षण भर बाद ही दुःखित हो उठता है। कभी लडका जैसा खेलता है, मनका कष्ट चुपचाप सहन करता है अपने मनकी तकलीफ सहजमें ही किसीको कहता नहीं है। आर्सेनिक, एकोनाइट, कैमोमिला इत्यादि दवाओंके मानसिक लक्षणोपर जिस तरह सबके पहले ध्यान देनेकी जरूरत पडती है, इग्नेशियामे भी उसी तरह मानसिक लक्षणोपर सबके पहले नजर रखनी पडती है। नीचे लिखे लक्षण इग्नेशियाके मानसिक और विशेष लक्षण हैं।

१। रोगी कभी रोता है, कभी हँसता है, २। बहुत उदास दुःखित और शोकसे भरा इसलिये लम्बी साँस लिया करता है,

३। कोई गहरा दुःख या शोक चुपचाप सहन करता है, किसीसे कहता नहीं, मन ही मन रोता है, लम्बी साँस छोड़ता है ; ४। शोक या दुःख दबा रखनेके कारण नाना प्रकारकी बीमारियाँ ५। अकेला एकान्त स्थानमें रहकर दुःख भोग करनेकी इच्छा करता है , ६। तम्बाकूका धुँआ या सुँघनी सहन नहीं होती , उनसे माथेमे दर्द होता या सरका दर्द बढ़ जाता , ७। सविराम ज्वरमें शीतावस्थामें गर्म प्रयोगसे रोगीको आराम मालूम होता है, केवल शीतावस्थामें प्यास, उत्ताप या अन्य किसी भी अवस्था मे जरा भी प्यास नहीं रहती , ८। ठीक एक ही समय ज्वरका आक्रमण , ९। बहुत सर दर्द, ऐसा मालूम होता है मानो कोई माथेके एक तरफसे दूसरी तरफ तक काँटी ठोंक रहा है, जिधर इस तरहका दर्द रहता है, उसी तरफ दबाकर सोनेपर उसी ढङ्गका-सा दर्द घटता है , १०। प्रेममें निराश हो जाने की वजहसे तकलीफ और कोई बीमारी , ११। बच्चोंको धमकाने के बाद खींचन अकड़न इत्यादि ।

इग्नेशियाके अद्भुत लक्षण :—

भरपूर खा लेनेपर भी पेट खाली, गाने बजानेकी आवाजसे, कानके भीतरका सों सों गुनगुन शब्द दूर होता है, चबानेपर दाँत का दर्द घटता है, चलनेसे बवासीरकी तकलीफ घटती है, शोकमें हँसना, ध्वजभङ्गमें प्रबल रमणेच्छा, ज्वरकी शीतावस्थामें ठण्डी चीजे पीना, उत्तापमे प्यासका न रहना, खाँसनेसे खाँसीका

बढ़ना, गठनमें पुरुष पर स्वभाव स्त्रीके—ये कई लक्षण इग्नेशिया चुनावके अन्यतम उपाय है।

हिस्टिरिया या मूर्च्छावायु:—इस बीमारी में इग्नेशिया, सिक्रा, मस्कस, एसाफिटडा, नक्स मस्केटा, वैलेरियाना, जिङ्क-वैलेरियाना, प्लैटिना प्रभृति कई दवाएँ भी लक्षणके अनुसार लाभ करती है।

इग्नेशिया—शोक, दुःख या भयकी वजहसे किसीको ऐसी बीमारी होनेपर रोगकी नयी अवस्थामे यह फायदा करता है। बीमारी पुरानी हो जानेपर या बहुत दिनोंकी हो जानेपर इससे कोई ज्यादा फायदा न होगा, इग्नेशिया व्यवहार करनेके समय यह पहले जानना जरूरी है कि उसे जरायु सम्बन्धी कोई बीमारी है या नहीं। मन अत्यन्त परिवर्त्तन-शील, फिटके समय रोगिनी एक बार हँसती है, एक बार रोती है, इसके अलावा—पेशियाँ फडकती (twitching) रहती हैं, कलेजा धडकता है (Palpitation), अभी आनन्दित थी—क्षणभर बाद ही दुःखित हो पडी, फिटके समय सिहरावनका भाव रहता है और छटपटाया करती हैं। जो चुपचाप शोक या सन्ताप सहन किया करती है और इसी वजह कमजोर होकर अन्तमें उन्हें हिस्टिरियाकी बीमारी हो जाती हैं, उनके लिये इग्नेशिया परम बन्धु औषध है।

मस्कस—एकापक मूर्च्छित हो पडता है, कलेजेमें अकडन (spasm)। यह इतनी अधिक होती है—कि मालूम होता है कि इसीसे मृत्यु होगी। चेहरा नीला हो जाता है और मुँहसे फेन

निकलने लगता है, जरा-सी बातमें ही रोगी दूसरोंको कड़वी बातें कहने लगता है। इग्नेशियामें भी—चेहरा नीला होना, अँगूठा मुट्ठीमें बाँध लेना और एकाएक मूर्च्छित हो जाना इत्यादि लक्षण रहते हैं।

एसाफिटिडा—ग्लोबस-हिस्टिरिया,—पेटमें भयानक रूपसे वायु इकट्ठा होता है। वह वायु एक गोलेकी तरह बनकर ऊपर चढ़ आता है, इसके साथ ही पेट फूलनेका भाव रहता है। कलेजा जकड़ जाता है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, हिस्टिरियामें इस तरह पेट फूलनेके साथ लहसुनके गन्धकी डकारें आती हैं, कभी कभी पतले दस्त आते हैं, दस्तमें बहुत बदबू, खायी हुई चीजें और पानीयकी कै होती है, उसमें कभी कभी मलकी गन्ध मिलती है। हिस्टेरो—एपिलेप्सिमें भी यह फायदा करता है (टेरेण्टुला इस्पैनिया देखिये)।

पोथस-फिटडा—(Pothus Fœtida)—हिस्टेरो-एपिलेप्सि और ग्लोबस हिस्टिरिया। थिरिडियन—सर-दर्दके साथ हिस्टिरिया।

नक्स-मस्केटा—थोड़ा भी खा लेनेपर भी जिनका पेट फूलता है, मुँह बहुत सूखता रहता है, पर प्यास नहीं रहती, हमेशा औंघाईका भाव रहता है, उनकी बीमारीमें यह फायदा करता है।

स्टिक्टा—रक्त-क्षय होनेके बाद फिट—हिस्टेरिकल-कोरिया।

वैलेरियाना (Valeriana)—ϕ—१x, रोगिनी वायु और स्नायु-प्रधान धातुकी रहती है। हिस्टिरिया—बदलनेवाला मिजाज,

एक बार उद्धत क्रोधित और उग्र मूर्ति, क्षणभर बाद ही नम्र और विनीत, अभी हँस रही थी, क्षणभर बाद ही रोने लगती है, रोगिनी समझती है, कि वह शून्यमें उड रही है। किसी भी स्नायविक बीमारीमें इससे रोगीकी देहकी प्रतिक्रिया शक्ति जागरित होती है।

जिङ्क वैलेरियाना (Zinc Valeriana)—रोगिनीके दोनों पैर खासकर, एक पैर बराबर हिला करता है, मानो किसी तरह भी उसे स्थिर नहीं रख सकती। हिस्टिरियाकी रोगिनीमें अगर यह लक्षण दिखाई दें, तो इसे तुरन्त स्मरण करना चाहिये। हिस्टिरियाके कारण—हृत्पिण्डमें दर्द, हृत्शूल, (एनजाइना-पेक्टोरिस), मृगी (whithout aura), भयानक हिचकी, स्नायुशूलका दर्द, चेहरेमें स्नायुशूलका दर्द प्रभृतिमें भी यह फायदा करता है।

एकुइलेजिया (Aquilegia)—१ म, ३ री शक्ति। यह नयी दवा युवती स्त्रियोंका वाधकका दर्द, हिस्टिरिया और अनिद्रामें व्यवहार कर देखें। फिटके पहले इसमें गोलेकी तरह एक पदार्थ पेटसे ऊपर फलेजेकी तरफ ठेलकर चढता है।

ग्लोबस हिस्टिरिकस—वायु रोगमें खासकर मूर्च्छा-वायु रोगमें और स्नायविक रोगमें अथवा किसी दूसरी बीमारीमें अगर पाकस्थलीसे कोई एक चीज धक्का देकर ऊपर चढे और गलेके पास अटक जाय, कुछ पीने या घूँट लेनेपर ऐसा मालूम हो, कि यह [illegible] ऊपरकी ओर चढ आता है [illegible]।

गलनलीकी बीमारी—गलेमें कुछ अटक जानेकी तरह एक प्रकारका लक्षण ऊपरवाले परिच्छेदमें बताया गया है, उसके अलावा गलेमें मछलीका काँटा गडते रहनेकी तरह दर्द रहनेपर भी इग्नेशियाका प्रयोग होता है। रोगी जितनी ही बार घूँट लेता है या कुछ खाता है, उतनी ही बार उसे मालूम होता है कि गलेमें काँटा गडा हुआ है, वास्तवमें यह काँटा या कोई दूसरी चीज नहीं है। इग्नेशियाके सेवनसे ही यह आरोग्य होता है। इसमें कोई पतली चीज पीनेपर गलेमें अडती है, पर कोई कडी चीज सहजमें ही खाता है।

शोक-दुःखकी वजहसे बीमारी—शोक दुःखसे पैदा हुई नयी बीमारीमें जिस तरह—इग्नेशिया है, रोग उसी तरह पुराना और बहुत दिनोंतक स्थायी रहनेपर-एसिड-फास फायदा करता है।—एसिड-फासमें रोगी बहुत कमजोर रहता है, जरासेमें ही पसीना निकलने लगता है, माथा बहुत भारी मालूम होता है, दिनों-दिन भूख घटती जाती है।

मलद्वारकी बीमारी और स्थानच्युति—बार बार पाखाना लगना (यह लक्षण नक्समें भी है), बार बार पाखाना लगनेकी इच्छाके साथ पाखाना न होकर अगर सिर्फ काँच निकल पडे, काँच निकलनेकी वजहसे, रोगी काँखनेसे डरे, झुककर कोई भारी चीज उठानेसे भी डरता हो, क्योंकि उससे भी काँच बाहर निकल सकती है। इस तरह यह लक्षण अगर रहे तो इग्नेशिया फायदा करता है। इग्नेशियामें—पाखाना होने बाद मलद्वारमें

बहुत देरतक अकडनका दर्द और बहुत तकलीफ देनेवाला एक तरहका फूटनका दर्द रहता है, ये लक्षण अकसर बवासीरमे ही रहते है।

काँच निकलना—इस बीमारीमें पोडोफाइलम, एलो, इग्नेशिया प्रभृति कई दवाये फायदा करती है, उनमे इग्नेशियामें—कोई बीमारी न रहनेपर भी पतले दस्तके साथ काँच निकल आती है, काँखने और कोई भारी चीज उठानेपर भी काँच निकलती है।

अर्श—पाखाना न होकर रेक्टमका प्रोलेपस्स अर्थात काँच निकलना या सरलान्त्र निकलना इग्नेशियाका लक्षण है, नक्स-वोमिका और इग्नेशिया दोनोंमे ही बार बार पाखानेका वेग होता है। पाखाना हो जाने बाद बहुत देरतक मलद्वारमे दर्द, अकडनका भाव, फूटनकी तरह दर्द और मलद्वारका सकोचन भाव इग्ने-शियामे विशेष रूपसे दिखाई देता है। इस्क्यूलसमे, इस तरहका दर्द रहनेपर भी उसमे काँच निकलनेका लक्षण नहीं है। इसके अलावा कमरमे दर्द रहता है। खूनी बवासीरमे—नीचेसे ऊपरकी ओर खोचा मारने और टपककी तरह दर्द, ढीलापन, पाखाना होने पर भी तकलीफका बढना, ये ही इग्नेशियाके प्रयोगके लक्षण हैं। (साइमेक्स अध्याय देखिये)।

क्रिमि—छोटी छोटी क्रिमि मलद्वारमे सुडसुड़ाया करती है और बहुत खुजलाहट होती है। छोटे छोटे बच्चोंको यह बीमारी

होनेपर—ट्रियुक्रियम और स्पाइजेलियाकी अपेक्षा भी—इग्नेशिया अधिक फायदा करता है (सिना अध्याय देखिये)।

अतिसार—एकाएक पाखाना लग आता है, जल्दी जल्दी दौड़कर पाखाना जाता है, पाखानेके बाद कूथन रहती है, पर पेट मे किसी तरहका दर्द नहीं रहता, पेट गडगडाया करता है, वायु निकलता है, कभी कब्जियत और कभी पतले दस्त आते हैं। इन सब लक्षणोंमें—इग्नेशिया फायदा करता है।

हिचकी—खाने पीनेके बाद और तम्बाकूकी गन्धसे हिचकी बढ जानेपर—इग्नेशिया फायदा करता है (नक्सवोमिका अध्याय देखिये)।

सविराम ज्वर—सविराम, मलेरिया ज्वरमें इग्नेशिया का व्यवहार करते समय केवल एक लक्षण अर्थात प्यासके ऊपर हमेशा ध्यान रखे । इग्नेशियामें—केवल शीतावस्थामे प्यास, उत्ताप या अन्य किसी भी अवस्थामें प्यासका निशान भी नहीं रहता, शीतावस्थामें—उत्तापसे रोगीको आराम मालूम होता है, परन्तु उत्तापावस्थामें—उत्ताप बिल्कुल ही सहन नहीं कर सकता। उसमे कष्ट बहुत बढ जाता है—कैप्सिकममें—शीतावस्थामें प्यास रहती है, पर उसमें शीत और उत्ताप दोनों ही अवस्थाओंमे गर्मीसे आराम मालूम होता है

खाँसी—गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, इस ढङ्गकी खाँसी स्नायविक हो या जरायु, डिम्बकोष प्रभृतिकी कोई बीमारी अथवा,

क्रिमिकी वजहसे हो (Remote affection , रोगीको ऐसा मालूम होता है मानो—परकी तरह कोई पदार्थ उसके गलेमें लगा हुआ है, इसी वजहसे लगातार खाँसता है, गला सुरसुराया करता है। इग्नेशियाकी खाँसी—रातमें सोने पर बहुत बढती है, रोगी जितना ही खाँसता है , गलेकी सुरसुरी और खाँसी भी उतनी ही बढती है। किसी तरह भी खाँसी बन्द नहीं होती, अन्तमे प्राणपणसे चेष्टा कर खाँसीको दवा रखना चाहता है, पतली सर्दी के साथ दिन रात सूखी आक्षेपिक खाँसी रहती है।

सर-दर्द—हिस्टिरिया या मूर्च्छा-वायु-ग्रस्त स्त्रियोंका अधकपालीका सर-दर्द और जिनका शोक, दु खकी वजहसे स्वास्थ्य नष्ट हो गया है, उनके सर-दर्दमे—इग्नेशिया फायदा करता है, इसमें जिस ओर सर-दर्द रहता , उसी ओर दबाकर सोनेपर आराम मालूम होता है, बहुत भूख लगती है, खूब खाता है, भोजनके बाद सर-दर्द घट जाता है। सर-दर्दका लक्षण—माथेके किसी भी अशमें तेज दर्द, मानो कोई धारदार अस्त्र या कांटी घुसा रहा है और भी एक तरहका दर्द—बोलने, किसी विषयमें मन लगाने, अथवा कुछ सुनने पर सर-दर्द, माथा भारी हो जाता है, सामनेकी ओर झुकनेपर कुछ आराम मालूम होता है।

कटि स्नायुशूलका दर्द—रातमें और सोनेपर दर्द बढता है। दर्द बहुत ही तकलीफ देनेवाला, पर रह रहकर होता है, १ घण्टेसे ज्यादा नहीं ठहरता। दर्द आरम्भ होनेके पहले

जाड़ा, प्यास या कम्प होता है। दर्दके समय किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकता, घरमें जमीनपर टहलने लगता है।

वृद्धि (aggravation)—तम्बाकू, काफी, शराब पीनेसे, तेज गन्धसे, मानसिक चचलतासे, या शोकसे, शीतमें, सवेरे, नींद खुलनेपर।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, जोरसे दबानेपर, कड़ी चीज खानेपर, चलने-फिरनेपर।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, केल्के, चायना, लाइको, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसे-एसि, आर्नि, काकु, कैमो, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६ दिन

क्रम—६—२०० शक्ति।

फारमुला—विचूर्ण—७, टिंचर—४।

आयोडम।

(IODIUM)

(आयोडिन—१ भाग, ९९ भाग अलकोहलमें मिलाकर इसकी २x शक्ति तैयार होती है)। आयोडममें—ग्लैण्ड और शरीरके समस्त तन्तु और पसीना वगैरह सूखता जाता है। कण्ठमाला

धातु, काले केश और काली आँखे, इस तरहके मनुष्योंपर इसकी क्रिया बहुत जल्द होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। सद्य-प्रसूतिकी अवस्थाकी तरह सुस्ती, प्रसवके बाद कमजोरी, रोगिनी इतनी क्षीण और कमजोर हो पड़ती है, कि बोलने मे भी पसीना हो जाता है और सरमे चक्कर आने लगता है, २। सीढी होकर ऊपर चढनेके समय बहुत कमजोरी मालूम होती है, हाँफने लगती है (ऋतुके समय कार्वो-एनि, काकुलस), ३। उत्तम भूख, बहुत ज्यादा खाता है—पर दिनोंदिन मानो शरीरका माँस सूखता ही जाता है, वृद्ध मनुष्योंकी तरह दिखाई देता है, ४। सुखण्डी रोगमे खूब खाता है, खानेके लिये झगडता है, पर कुछ भी पचा नहीं सकता, बहुत-सा अधकचरा दस्त हो जाता है, ५। सवेरेसे लेकर राततक खाली डकार आती है (empty eructation), मानो जो कुछ खाया है, सभी भाफ हो गया है, ६। वक्ष मध्योस्थि (स्टर्नम) के पीछे, फेफडेके नीचे, कुटकुटी होकर, उससे खाँसी आती है, ७। जरायुका कैन्सर, प्रत्येक बार पाखाना जानेके समय जरायुसे खून निकलता है, पेटके भीतर काटने-फाडनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही कमर और पीठमे दर्द, ८। थाइरायड ग्रन्थि, स्तन, डिम्बकोष, जरायु, अण्डकोष (testes), मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि प्रभृति ग्रन्थियोंका बढना, स्तन खूब माँस-भरे और थुलथुले, ९। ऐसा मालूम होता है मानो हृत्पिण्ड कोई जोरसे दबाता है, या लोहेकी तरह कडे हाथसे

जोरसे मुट्ठीमे पकडता है, १०। घुँडी रोगमे (क्रूपमें)—बच्चोंकी छातीमे और स्वरनलीके मध्यमे दर्द, गलेमें साँय साँय आवाज, बच्चे गलनलीपर हाथ रखा करते हैं, चेहरा सफेद हो जाता है, गलेकी आवाज बैठ जाती है, नकली झिल्ली पैदा करनेवाली काली खाँसी (membranous croup), ११। पीले रंगका प्रदरका स्राव, यह स्राव जहाँ लगता है, वहीं दाग पड जाता है, यहाँतक कि स्रावसे कपडे तक जल जाते हैं।

क्रूप-खाँसी—बच्चोंकी काली खाँसीमें—स्पञ्जिया, हिपर, एकोनाइट इत्यादि दवाओंका प्रयोगकर अगर कोई फायदा न हो,—ब्रोमियम, आयोडियम आदि दवाओंसे फायदा होता है। आयोडममें—खाँसीकी आवाज घ घ, या कुत्तेकी आवाजकी तरह खाँसी, एकदम सूखी, साँस लेनेमें तकलीफ होती है और रह रहकर सियारकी तरह साँस लेता है, गलेमें परदा पैदा हो जाता है, स्वरयन्त्रमें (लैरिङ्क्स) अकडन हो जाती है, इसलिये, साँस तरंग लेनेकी तरह होती है। बच्चेकी गलेकी आवाज कभी कभी एकदम बन्द हो जाती है, साँस लेनेमें कष्टके कारण अपना गला दबा रखता है। (हिपर अध्याय देखिये)। घोर काले रंगके केश और आँखवाले बच्चोंके लिये—आयोडम और गोर सुन्दर बच्चोंके लिये—ब्रोमियम फायदा करता है। डा० एलेन कहते हैं—उन्होंने आयोडमकी निम्न शक्तिसे बहुत-से झिल्लीवाले क्रूप-रोग आरोग्य किये हैं।

ब्रोमियम (Bromium)—काली खाँसीमें यह दवा व्यवहार करनेके समय हमेशा दो प्रधान लक्षणोंपर नजर रखनी चाहिये। एक तो यह कि—गलेका ऊपरी अश मानो कण्ठनलीकी ओर दबाता आ रहा है। दूसरा लक्षण—कोई चीज निगलनेके समय एकाएक दम रुक जानेकी तरह हो जाता है। ब्रोमियम—की बीमारीकी पहली अवस्थामे ज्यादा जरूरत नहीं पडती, जब रोगीको बोखार नहीं रहता, बहुत कमजोरी, बहुत तकलीफ देनेवाली और आक्षेपिक खाँसी, खाँसते खाँसते दम रुक जानेकी तरह हो जाता है। पजरा खिंचता है और कभी कभी गलेमें घरघर आवाज होती है, श्लेष्मा ढीला रहा करता है, पर निकलता कुछ भी नहीं है, ऐसी अवस्था इसके व्यवहारका उपयुक्त समय है। यह आयोडमके बाद उत्तम क्रिया प्रकट करता है। (जिन बच्चोंको अकसर काली खाँसी हो जाया करती है—उन्हें महीनेमे एक बार—बैसिलिनम—उच्च शक्ति दे)।

आक्षेपिक क्रूपमे—ब्रोमियमका दम रुक जानेका भाव (किसी तरहकी भी पतली चीज पीनेपर घट जाता है डा० लिलियेन्थल कहते हैं—गरम पानी पीनेमे यह घट जाता है)। इसमें खाँसी खूब जल्दी जल्दी यहाँतक कि प्रत्येक बार साँस लेनेके समय आती है।

आक्षेपिक दमा—जिसमें श्वासनली रुक जानेकी तरह हो जाता है, उसमें ब्रोमियम फायदा करता है। रोगी मल्लाह

तथा दमाके जो सब रोगी—समुद्रमें रहनेपर अच्छे रहते हैं, जमीनमें उपसर्ग बढ़ते हैं, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। इसकी ६ ठीं शक्तिसे ज्यादा फायदा मिलता है।

हूप-खाँसी—यह कुकुर-खाँसी आराम होनेमें अकसर कुछ ज्यादा दिन लगते हैं। किसी गृहस्थके एक बच्चेको होनेपर यदि वह बच्चा घरमें रहे, तो उस घरमें दूसरे दूसरे लड़के रहनेपर, उनको भी यह बीमारी हो जायगी। हपिङ्ग खाँसीमें—बहुत ही आक्षेपिक खाँसी रहती है। दम बन्द हो जानेका भाव, खाँसीकी धमकसे वमन और ऊपर लिखे और और लक्षण रहनेपर—ब्रोमियमका प्रयोग करें, पर धीरजके साथ कमसे कम १०।१२ दिनोंतक इसका प्रयोग करना चाहिये। (ड्रोसेरा देखिये)।

गाँठोंका फूलना—आयोडम, कर्णमूलीय-ग्रन्थि, स्तनग्रन्थि, अण्डकोष प्रभृति सब तरहकी ग्रन्थियोंकी सूजनमें और मध्यान्त्र त्वक ग्रन्थि (मेसेण्टरिक ग्लैण्ड) और डिम्बकोषके अर्बुदकी सूजनमें फायदा करता है। आयोडममें—गाँठोंकी सूजन बहुत कड़ी होती है और गाँठें बहुत बड़ी हो जाती हैं, पर उनमें दर्द बिलकुल ही नहीं रहता। किसी भी ग्रन्थिकी सूजनमें यदि दर्द बिलकुल न रहे तो उस ग्रन्थिको—आयोडम पूरी तरह आरोग्य कर सकता है।

सावधानता—डा० पलेन कहते हैं, कि गलगण्ड घेघा—(to the goitre) की बीमारीमें, गाँठके ऊपर कभी भी, टिंचर

आयोडिनका प्रयोग न करना चाहिये, क्योंकि बाहरी प्रयोग
जिस तरह एक ओर ग्रन्थि घटती जाती है, दूसरी ओर सम्भव
उतना ही फेफड़ा खराब हो जानेकी सम्भावना होती जाती है
थाइसिस हो जाता है।

प्लीहा और यकृत—प्लीहाका प्रदाह, इसके साथ ही
मुँहसे लार निकलना, नया और पुराना यकृतका प्रदाह, यकृत
कड़ा, दर्द-भरा और फूला, लिवर-सिरोसिस, कामला प्रभृति
बीमारियोंमें—आयोडम फायदा करता है।

अतिसार—आयोडममें—दस्तका रंग सफेद, देखनेमें
बहुत कुछ गदलेकी तरह, अतिसारके साथ ही बहुत भूख, बहुत
दिनोंतक पेटकी बीमारी भोगते भोगते रोगीके कमजोर हो जानेपर
या नाना प्रकारकी बीमारियाँ भोगनेपर, अथवा सुखण्डी आदि
बीमारीकी वजहसे बहुत कमजोर हो जानेपर और इसके साथ ही
पतले दस्त आनेपर—आयोडम बहुत फायदा करता है। इसके
साथ ही प्लीहाका बढ़ना और यकृतपर भी रोग हो जानेपर आयो-
डमसे और भी ज्यादा फायदा होगा।

यक्ष्मा-रोग—यक्ष्मा तथा किसी दूसरी तरहकी खाँसी
में अगर ऐसा दिखाई दे, कि खाँसी बहुत सूखी है, गला और
छाती घरघराती है, रोगी गरमीमें बिलकुल ही नहीं रह सकता,
खून-मिला बलगम निकलता है, सीढ़ी चढ़नेमें बहुत तकलीफ
होती है, तो—आयोडम विशेष फायदा करता है। जो सब रोगी

पहले खूब ताकतवर थे, खून निकलकर अब कमजोर हो पड़े है, बहुत भूख, खानेको न मिलने या देर होनेपर कष्ट बहुत बढ जाता है, उनकी बीमारीमें—आयोडम परम बन्धुकी तरह काम करता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हाइपरट्राफी आफ दि हार्ट (हृत्पेशीका बढना), इसके साथ ही यदि कलेजेमें धडकन भी खूब ज्यादा रहे और जरा-सी भी मेहनत करनेपर कलेजेकी धडकन बढ जाये, बीच बीचमें ऐसा मालूम हो, कि कोई कलेजा दबा रखता है, बोल नहीं सकता है, इत्यादि लक्षण रहे—तो—आयोडम लाभ करता है।

सर्दीका स्राव—नाकसे पतला, पानीकी तरह गरम सर्दीका स्राव होता है (आर्सेनिक)। उसमे नाकके भीतर दर्द और घावकी तरह हो जाता है। इस तरहके सर्दीके स्रावके साथ—ज्वर, आँखसे पानी गिरना, छींक, रातमें नाक बन्द हो जाना, खुली हवामें रहनेपर बहुत सर्द निकलना, नाककी जड और कपालमें दर्द प्रभृति लक्षणोंमे—आयोडम फायदा करता है ।

तालुमूल-प्रदाह—इस बीमारीकेनये प्रदाहमें आयोडम फायदा करता है। पर पुरानी अवस्थामें (क्रानिक टानसिलाइटिस)—आयोडम मिली अन्यान्य दवाएँ, जिस तरह—बैराइटा-आयोड, मर्कुरियस-आयोड प्रभृति दवाएँ ज्यादा फायदा करती हैं।

कानकी बीमारी—यूस्टेकियन-टियुब (कर्णनाली) में पुराना पीब। मध्यकर्णकी गाठें, कानमें गरजकी आवाज होना

इत्यादि किसी कारणकी वजहसे बहरा हो जानेपर—आयोडम फायदा करता है।

मुहसे लार बहना—पारा सेवन कर मुँहसे अगर बहुत ज्यादा लार बहती हो, गर्भावस्थामें लार बहती हो और यकृत प्लीहा और प्लोम-ग्रन्थिकी बीमारीके निमित्त मुँहसे लार बहती रहनेपर—आयोडमसे विशेष फायदा होता है।

हाइड्रोकेफालस—टियुबर्क्युलर-मेनिञ्जाइटिस या हाइड्रोकेफालस रोगकी यह महोषधि है। (एपिस अध्याय देखिये)।

कामला—लिवर-सिरोसिस या पाराके अपव्यवहारकी वजहसे यह बीमारी होनेपर आयोडम फायदा करेगा।

वात—हृत्पिण्डका वात, कण्ठमाला धातुवाले व्यक्तिकी गाठोपर रोगका हमला होना, सूजाक-मिला वात और साइनोवाइटिस वगैरह बीमारियोंमें—आयोडम लाभदायक है।

वृद्धि (aggravation —परिश्रमसे, उत्तापसे, गर्मजलीय वायुमें, छूनेपर, मलनेपर

ह्रास (amelioration)—भोजनके समय, भोजनके बाद, ठण्डी हवामे

सम्बन्ध—पर्दा वाली क्रूपमें,—ब्रोमियम, क्लोरिन, एसे-एसि, कैलि-कार्ब, स्पजि, हिपर, मार्क, एकोन इसके समतुल्य हैं। गलगण्ड रोग मे—"पूर्णिमाके बाद कृष्ण पक्षमे—आयोडम का सेवन बहुत फायदा होता है" (डा० लिपि)।

क्रिया-नाशक (antidote)—एण्टि-टार्ट, एपिस, आर्स, एकोन, बेल, चायना, काफि, फेरम, हिपर, ओपि, स्पञ्जि, फास, सल्फ, थूजा, ग्रेफा, कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—ट्राइट्रेशन—७। टिंचर ६—ठी।

इपिकाकुआन्हा।

(IPECACUANHA)

ब्रेजिल्के जंगलका एक तरहका गुल्म, इसकी सूखी सोरसे टिंचर तैयार होता है)—१। बेतरह मिचली और ओकाई, २। वमन होनेपर भी मिचलीकी शान्ति नहीं होती, ३। जीभ निर्मल, ये तीन इसके सर्व प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं।

चरित्रगत लक्षण —

१। जिन सब बीमारियोंमें लगातार मिचली, सर झुकानेपर ही जो मिचलाने लगना, ओकाई उठना, २। जी मिचलानेके साथ बहुत अधिक परिमाणमें लार बहना। सफेद या खूब ज्यादा परिमाणमें श्लेष्मा वमन हो जाता है, पर वमनकी शान्ति नहीं होती, ३। पेट फूलनेके साथ नाभीके चारों ओर मानो मरोड़ होता है, इस तरह शूलका दर्द, ४। दस्तका रंग वृक्षके पत्ते या

घासकी तरह हरा, उसमें फेन या थूककी तरह पदार्थ या सफेद आम मिली, कभी कभी दस्तके साथ लसदार काले रंगका रक्त, ५। भोजनके दोषसे बीमारी, अजीर्ण खायी हुई चीजका वमन, इसके साथ ही पेटमें दर्द, ६। दिनके समय, गरमीके बाद रातमें सर्दी, ऐसे समयका और शरत् ऋतुका आमाशय (कोलचि, मार्क), ७। हैजाकी पहली अवस्थामें जहाँ वमन और मिचलीका लक्षण बहुत प्रबल रहता है, ८। दमा—छातीमें साँय साँय आवाज, ९। हूपिङ्ग खाँसी या किसी दूसरे प्रकारकी आक्षेपिक खाँसीमें खाये हुए पदार्थका वमन, श्लेष्माका वमन और ओकाई आना, १०। छातीमें श्लेष्मा बैठकर या खाँसीमें श्वास ग्रहण करनेके समय श्वासोपनलीमें घरघर साँय साँय शब्द, ११। शीत ग्रीष्म दोनों ही असह्य, १२। शरीरके सभी स्थानोंसे चमकीले लाल रंगका रक्तस्राव, जरायुसे थक्का थक्का रक्तस्राव, इसी समय जोर जोरसे साँस छोड़ता है और हाँफा करता है, १३। ज्वरकी शीतावस्था थोड़ी देरतक और उत्तापावस्था बहुत देरतक रहती है, प्यास भी रहती है, पीठमें, छातीमें, माथेमें और कमरमें दर्द, ज्वर छूटनेके समय पसीना, १४। सविराम ज्वर—अकसर पहले अनियमित भावसे होता है, इसके साथ ही मिचली और पाकस्थलीमें गड़बड़ी रहती है, १५। ज्वरमें किसी भी दवाके असली ठीक लक्षण नहीं मिलते, किनाइनसे दवा हुआ बोखार, १६। कम्प ज्वरमें कपकपी पैदा होनेके पहले प्रयोग होता है (इससे या तो बोखार एकदम बन्द हो जाता है अथवा दवाके चुनावकी राह

साफ हो जाती है), १७। नाभी की जड़में शूलका दर्द, दर्द बाय से दाहिनी ओर चला जाता है।

मिचली—पहले ही कहा है, कि यह इपिकाकका सबसे प्रधान चरित्रगत लक्षण है। वमनकी अपेक्षा मिचली—इपिकाकमें बहुत ज्यादा रहती है, वमनके पहले या बाद बराबर समान भावसे जी मिचलाया करता है। यह मिचलीका भाव—सर्दी, खाँसी, ज्वर, रक्तस्राव, अतिसार इत्यादि जो कोई भी बीमारीके साथ क्यों न रहे, उसमें इपिकाकका जबर्दस्ती प्रयोग करें।

अनियमित भोजनकी वजहसे बीमारी—

भोजनकी गड़बड़ीसे—खायी हुई चीज अच्छी तरह न पचकर—पेट में दर्द, दस्त कै, अजीर्ण इत्यादि बीमारी (gastric complaints) होनेपर हमलोग साधारणतः नक्स-वोमिका, इपिकाक, पल्सेटिला इन तीन दवाओंमेंसे किसी एकका व्यवहार किया करते हैं। चर्बी-मिली घीकी पकी चीज, बहुत मिठाई इत्यादि गुरुपाक चीजें खाकर बीमारी होनेपर—इपिकाक और पल्सेटिला, दोनों ही दवाएं व्यवहृत होती हैं, इनमें अगर खायी हुई बिना पची चीज वमन न होकर पेटमें जमी रहे—पलसेटिला और यदि वमन होकर निकल जाये, तो—इपिकाक (निम्न-शक्ति—3x—३) इसको याद रखनेसे ही काम हो जायगा। पलसेटिलामें—वमन होता है, पर मिचली इपिकाककी तरह इतनी अधिक नहीं रहती। पलसेटिलाकी जीभ—खड़िया-कूड़की तरह सफेद, या एक तरहकी गहरी मैली

लेप चढी रहती है। इपिकाककी जीभ—बिलकुल साफ किन्तु पतली मैल चढी। साफ जीभके साथ वमन—इपिकाक, सिना और डिजिटेलिस, इन तीन दवाओमे पाया जाता है। पर यह याद रखें, कि जीभ साफ रहे और क्रिमिकी वजहसे वमन होने पर—सिना और परिष्कार जीभके साथ हृत्पिण्डकी बीमारी रहने पर—डिजिटेलिस उपयोगी है। किसी भी दवासे यदि वमन होना न बन्द हो—सेरियम-आकजैलेट दे। (इसका अध्याय देखिये)। इपिकाकमें पेटमे ऐंठनका बहुत अधिक दर्द रहता है।

एपोमार्फिया—(Apomorphia)—हाइड्रोक्लोरिक एसिडके साथ मार्फिया। यदि कोई किसी तरहका विष खा ले और उसे वमन करानेकी जरूरत हो तो एक ग्रेन $\frac{1}{10}$ से $\frac{1}{16}$ अंश ($\frac{1}{10}$ to $\frac{1}{16}$ of a grain), हाइपोडर्मिक इञ्जेक्शन दें। पर यदि कोई अफीम खा ले तो कभी इसका व्यवहार न करें, क्योंकि—मार्फिया स्वयं ही अफीमका सार है। इसकी क्रिया मस्तिष्कके ऊपर होती है और एपोमार्फियाकी क्रिया भी मस्तिष्कके ऊपर होती है, वमन—इसकी पारावर्त्तित क्रिया (reflex action) मात्र है, इसलिये, अफीमके नशाके ऊपर मार्फियाकी कुछ भी क्रिया न होगी। एपोमार्फिया—स्वस्थ शरीरमें इञ्जेक्शन करनेके पहले, किसी तरहकी मिचली न होकर तेज वमन होता है। अतएव, यही इसका विशेष लक्षण है। खायी हुई चीजकी वमन, गर्भावस्थामे वमन और जरायुका अपनी जगहसे हट जाना, या अर्बुद होनेके कारण अगर

के होती रहे तो इससे फायदा होगा। लगातार मिचली, के करने की प्रबल इच्छा, के होना, कुछ पीते ही के हो जाना, समूचे शरीर मे गरमी मालूम होना, ये कई इसके चरित्रगत लक्षण है। इसलिये, ऊपर लिखी किसी भी दवासे फायदा न होनेपर इससे फायदा होगा।

एपोमार्फिया—समुद्रमें भ्रमणकी वजहसे वमन होनेकी बढ़िया दवा है। डा० ब्लेकमैन कहते हैं—कोई भी मनुष्य समुद्र-यात्रा करनेके २ दिन पहलेसे इसको—३ री—६ ठीं शक्ति सेवन करे तो समुद्रमे वमन होनेकी आशका दूर हो जाती है।

अतिसार—इपिकाकका दस्त घास अथवा कुचले हुए पत्तेकी तरह हरा रहता है, फेन-मिला और लारकी तरह चमकीला या आम-मिला, आमाशयका दस्त होनेपर उसमें काले रगका खून दस्तमे रहता है, कभी भात या घोले गुड़की तरह रगका और उसके साथ फेन रहता है। छोटे बच्चोंके अतिसार और हैजामे इपिकाक उपयोगी है। इपिकाक—पेटमें अकड़नका दर्द खूब रहता है। इसमे काला या फीके पीले रगका पाखाना होता है, वमन या मिचलीके साथ अतिसार रहनेपर और शरतकालके अतिसारमें यह अधिक फायदेमन्द है।

अकड़न—खाने-पीनेकी गड़बड़ीके कारण या पेटकी बीमारीके साथ या किसी प्रकारका उद्वेग बैठकर बच्चोंके दाँत निकलनेके समयकी अकड़नमें इपिकाक बहुत बार फायदा करता है।

खाँसी—एक तरहकी दम रुकनेवाली खाँसी, (Spasmodic cough) या सर्दी लगकर खाँसी, जिसमे बच्चा खाँसता खाँसता अकड जाता है और चेहरा नीला हो पडता है। छातीमें श्लेष्मा जमा रहता है और गला साँय साँय या घर घर किया करता है, बहुत तेज आक्षेपिक खाँसी, खाँसते खाँसते वमन हो जाता है, उसके साथ ढेला ढेला श्लेष्मा निकलता है, कभी कभी ज्वर रहता है, कभी ज्वर नहीं भी रहता, कभी कलेजेमें इतना अधिक श्लेष्मा इकट्ठा होता है, कि श्वासकष्ट हो जाता है, छाती भारी हो जाती है, आँख-मुँह-नीला हो जाता है,—इन सब लक्षणोंमें—इपिकाक फायदा करता है। श्वासयन्त्रपर इपिकाककी बहुत सुन्दर क्रिया होती है, इसीलिये, दमा, निमोनिया, घुँडी इत्यादि सभी बीमारियोंमें लक्षणके अनुसार इसका व्यवहार करनेपर विशेष फायदा होता है।

<u>एण्टिम-टार्ट</u>—कलेजेमें बहुत अधिक श्लेष्मा इकट्ठा होना, खाँसनेके समय गला घर घर करता है, जब खाँसता है—उस समय ऐसा मालूम होता है, कि जरा खाँसनेपर सहजमें ही बलगम निकल जायगा, पर अधिक खाँसनेपर भी कुछ नहीं निकलता। एण्टिममें—इपिकाककी अपेक्षा खाँसी बारमें कम होती है, पर कलेजेमें श्लेष्मा जमा रहनेका भाव अधिक रहता है, एण्टिममें—रोगी आच्छन्न भावसे आँख बन्दकर चुपचाप पडा रहता है। इपिकाकमें ऐसा नहीं होता। <u>एण्टिममें</u>—यद्यपि आच्छन्न भाव है,

पर कितनी ही बार इससे फायदा नहीं होता, उस समय सलफरकी जरूरत पडती है। सलफरमें—बाएँ फेफडेपर ही रोगका हमला अधिक होता है।

फास्फोरस—निमोनियामें फेफडेका प्रदाह भाग अधिक रहने पर फासस्फोरसकी जरूरत पडती है, यहाँ इपिकाकसे फायदा नहीं होता।

टेरिबिन्थ—आच्छन्न भाव, यह लक्षण टेरिबिन्थिनामें—एण्टिम की अपेक्षा बहुत अधिक है। फेफडेमें बलगम बहुत अधिक इकट्ठा होता है, रोगी खाँसकर निकाल बाहर नहीं कर सकता और आच्छन्न भावसे पडा रहता है। इसमें पेट बहुत फूलता रहता है और पेशाब भी परिमाणमें बहुत थोडा होता है, उसके साथ ही खून रहता है।

एमोन-कार्ब—कष्टकर श्वास-प्रश्वास, कलेजा धडकना, शीत-ऋतुकी सर्दी।

हूपिङ्ग-खाँसी—इस खाँसीमें खाँसते खाँसते बच्चा कडा हो जाता है, उसका रङ्ग नीला हो जाता है और बहुत अकड जाता है, ऐसा होनेपर और खाँसी आने बाद बलगमकी कै होकर अगर खाँसी कुछ घटे तो इपिकाक फायदा करता है। हूपिङ्ग खाँसीमें—नाक-मुँहसे रक्तस्राव होना भी इपिकाकका लक्षण है। (पर्टालिया अध्याय देखिये)।

क्यूप्रम मेट—इसमें इपिकाककी अपेक्षा खाँसीकी अकड़न (spasm) बहुत ज्यादा होती है। लगातार खाँसी, एक बारका दौरा सम्हालते ही फिर खाँसी आरम्भ हो जाती है। बच्चा कड़ा पड़ जाता है और नीला हो जाता है और टङ्कारकी तरह खींचन होती है, उसमें अंगूठा मुट्ठीमें कस जाता है, यहाँ इपिकाकके साथ यही प्रभेद है, कि इपिकाकमें हाथ-पैर कड़े होनेपर भी अँगुलियाँ अलग अलग हुई रहती है, परन्तु क्यूप्रममें मुट्ठी बँध जाती है। क्यूप्रममें पानी पीनेपर खाँसी कुछ घटती है, पर इपिकाकमें ऐसा नहीं होता।

सिना—छोटे छोटे बच्चोंकी हूपिङ्ग-खाँसीमें यह इपिकाकसे ज्यादा फायदा करता है, बच्चे दाँत कड़कड़ाया करते हैं और खाँसने के समय गलेमें घर घर आवाज होती है। बेलेडोना, कोरालियम रूब्रम, ड्रोसेरा, मिफाइटिस, पर्टियुसिन इत्यादि दवाएँ हूपिङ्ग-खाँसीमें बहुत फायदा दिखाती हैं। उनका लक्षण देखे, मैगनेशिया-फास—३x, ६x, १२x, शक्ति का प्रयोग करनेसे इस बीमारीमें कभी कभी अधिक फायदा होता है। लेकिन धैर्यके साथ ३ दिनोंतक ---- व्यवहार करना चाहिये।

भाव,

कलेजेमें साँय बहुत वाद या

सो नहीं

बाद आर्सेनिकसे खूब फायदा होता है। मोटे स्थूलकाय मनुष्य (वृद्ध हो या युव हो) और जो थोडी भी गरमी या पानी बादल में बीमार हो पडते, उनकी बीमारीमे यह ज्यादा फायदा करता है (कैनाबिस अध्याय देखिये)।

सर-दर्द—स्नायविक या अजीर्णकी वजहसे सर दर्द, माथेमे दर्द, माथेकी खोलके भीतरसे दाँतमे और जीभकी जडमें और आँखोंतक यह दर्द चला जाता है, इसके साथ ही साथ मिचली रहती है। यहाँ सिर्फ इतना ही याद रखें कि किसी भी तरहका सर-दर्द क्यों न हो, यदि उसके साथ मिचली रहे, तो सम्भवत इपिकाकसे फायदा होगा।

ज्वर—स्वल्पविराम, सविराम, अविराम, मैलेरिया प्रभृति सभी प्रकारके ज्वरोंमे इपिकाक फायदा करता है। कम्प-ज्वरमें—किसी खास दवाका कोई लक्षण न रहे तो इपिकाकके प्रयोगसे, या तो ज्वर एकदम बन्द हो जाता है, नहीं तो लक्षण सब स्पष्ट प्रकट हो जाते है, उससे चिकित्सकोंको दवाके चुनावमें सुविधा होती है।

सर्दी ज्वर—गाढी सर्दीसे नाक भरी रहती है, खूब जोरसे छिंकने पर कहीं बलगम निकलता है, कभी कभी नाकसे खून गिरता है, ब्राङ्काटिस इत्यादि बीमारीमें इन सब लक्षणोंके साथ ज्वर और मिचली रहनेपर इपिकाकसे ज्यादा फायदा होता है।

आर्सेनिक—यह भी सर्दी ज्वरकी सुन्दर दवा है, पर इसका स्राव पानीकी तरह पतला और गरम होता है, इपिकाकके बाद आर्सेनिकके प्रयोगसे बहुत फायदा होता है।

यूफ्रेशिया—और एलियम-सिपा नाकसे पानीकी तरह सर्दी निकलना और इसके साथ ही बोखार रहनेपर फायदा करता है, विशेष लक्षण उनके अध्यायमें देखिये। फास्फोरस—नाक और आँखसे पानी गिरना घटकर गलेमें दर्दके साथ गलेके भीतर सुर-सुरी होकर अगर खाँसी आये तो इससे आशासे अधिक लाभ होता है। बच्चोंकी सर्दी खाँसीमें—बेलेडोना, एण्टिम-टार्ट, कैमो-मिला, कैल्केरिया, फास्फोरस, सलफर और इपिकाक फायदा करते हैं।

सविराम ज्वर—ज्वरके साथ ही मिचली, यह लक्षण किसी ज्वरमें रहनेपर पहले इपिकाकको याद करें। इपिकाकमें शीतावस्था—बहुत थोडी देरतक रहती है और उत्तापावस्था ज्यादा देरतक ठहरती है, ज्वर एकदम छूटा नहा दिखाई देता, ज्वर आरम्भ होनेके पहले रोगीको जम्हाई आती है और अगडाई लिया करता है, प्यास शीतावस्थामें कुछ ज्यादा नहीं रहती, परन्तु उत्तापावस्थामें—तेज प्यास, इसके अलावा ज्वरके साथ पेटकी गडबडी, ब्राङ्काइटिस, रक्तस्राव, एक न एक गड़बडी लगी रहती है। ज्वर अकसर पसीना होकर छूटता है, रोगी ज्वरके समय चुपचाप पडा रहता है। ज्वर आनेका समय दिनके ९ से ११ बजेतक

(जाडा लगकर), दिनके बार बजे (बिना जाडेका), प्यास नहीं रहती।

इयुपेटोरियम-पर्फो—ज्वर एक दिन ७ बजेसे ६ बजे, दूसरे दिन १०।११ बजेके भीतर, एक दिन अधिक, एक दिन कम, इसमें हड्डीके भीतर और कमरमे भयानक दर्द और पित्तकी कै हुआ करती है, पसीना होकर ज्वरके सभी उपसर्ग धीरे धीरे घट जाते हैं।

नैट्रम-म्यूर—ज्वरका समय प्राय १०, ११ बजे, बहुत सर-दर्द, इसमे पसीना होनेपर प्राय सभी तकलीफें घट जाती हैं।

द्रष्टव्य :—कितनी ही बार क्रिनाइनसे रुका हुआ बोखार—इपिकाक ३० शक्ति, २।४ मात्राके सेवनसे ही ज्वर बन्द होते देखा जाता है। डाक्टर जार, कम्प ज्वरके आरम्भमें इपिकाक ३० शक्ति, २।१ मात्रा प्रयोगका उपदेश देते हैं और कहते हैं, कि इससे उन्हें विशेष फायदा दिखाई देता है। किसी भी दवाके साथ रोग लक्षणोंका विशेष सादृश्य न रहे, तो पहले इपिकाक देकर चिकित्सा आरम्भ करनेपर उससे ही प्राय रोग आराम हो जाता है अथवा दवाके चुनावके लिये लक्षण इतने स्पष्ट हो पडते हैं, कि उनके द्वारा चिकित्सक सहजमे ही दवाका चुनाव कर सकता है। बहुत ज्यादा किनाइन सेवन कर अगर रोगीका कान भों भों करे तो इसमे अच्छी फायदा होता है।

रक्तस्राव—शरीरके किसी भी स्थानसे हो एकाएक नाक, मुँह, फेफडा, मलद्वार, मूत्रद्वार, पाकस्थली और जरायु

इत्यादिसे होनेपर—सैवाइना, सिकेलि, ट्रिलियम प्रभृति दवाएँ अधिक फायदा करती हैं, पर अगर रक्तस्रावके साथ मिचली और श्वास-कष्ट रहे, तो सब दवाओंकी अपेक्षा इपिकाक ही ज्यादा लाभदायक है। आर्निका, एकोनाइट एसिड सल्फ, एसिड-नाइट्रिक, वेलेडोना, चायना, क्रोकस, क्रोटेलस, फास्फोरस, फेरम-मेट, हैमामेलिस, लैकेसिस, प्लैटिना, पलसेटिला इत्यादि दवाएं भ रक्तस्राव रोकनेकी महौषधियाँ हैं, उनका लक्षण उनके स्थानपर देखिये।

वृद्धि (aggravation)—छूनेसे, जाड़ेके दिनोंमें, सूखी हवा , उत्तापसे, वमनके वाद, खाँसनेपर, गुरुपाक द्रव्य भोजन करनेपर, भोजनके बाद, किनाइनके अपव्यवहारसे।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे, आँख बन्द करनेपर, ठण्डा पानी पीनेपर, दवानेसे।

सदृश—एण्टिम-क्रूड, कुप्रम-मेट।

बादकी दवा (follows well)—एण्टिम-टार्ट, एपिस, आर्स, बेल, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के, कूप्रम, पोडो, फास, सल्फ, वेरेट, कैमो, चायना।

क्रिया-नाशक —आर्नि, आर्स, चायना, नक्स, टैबाक।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७, १० दिन।

क्रम—३x—१००० शक्ति। फारमुला—४।

आइरिस वार्सिकलर ।

(IRIS VERSICOLOR)

(युनाइटेड स्टेटसकी जलभरी भूमिमें एक प्रकारका गाछ पैदा होता है उसकी सोरसे टिंचर तैयार होता है) मुँह, पाकस्थली, आँतें और क्लोम ग्रन्थिके स्थानपर आग जलनेकी तरह जलन होती है, मुँहसे लगातार लार बहा करती है, गाढा गोंदकी तरह लसदार पदार्थका वमन, पानीकी तरह पाखाना होना और पेटमें गड गड शब्द हुआ करता है । जो कुछ खाता है, सब अम्लमें परिणत हो जाता है । अधकपारीका सर-दर्द, अम्ल, पित्त या मीठी के, (periodicity)—अर्थात अतिसार, रक्तामाशय प्रत्येक शरत और वसन्त ऋतुके समय और पेटका दर्द और अम्लशूलका दर्द, रोज रातमें २।३ बजे पैदा होता होता है । चलने-फिरनेवाला दर्द, दाहिनी ओरसे बायीं ओर दौडता है, ये सब कितने ही आइरिस वार्सके—चरित्रगत लक्षण हैं ।

अँगुलबेढ़ा—स्वर्गीय डाक्टर पी, सी, मजुमदार महाशय कहते हैं, कि बाहरी मदर टिंचरके प्रयोगसे अगुलबेढ़ाकी तेज तकलीफ घटती है । (डायस्कोरिया देखिये) ।

अतिसार या कालेरिन—शरद, वसन्त या गरमीके दिनोंमें अतिसार या कालेरा होनेपर और जिस कालेरामें अधिक संख्यामें के होती है, उसमें आइरिस वार्स लाभ करता है ।

आइरिसका दस्त—पानीकी तरह पतला, पीला या हरा मिला हुआ रङ्गका, मलके साथ पित्त या तेलकी तरह पदार्थ, विना रङ्गका (water colour) दस्त, पाखानेके समय मलद्वारमें जलन और दर्द इत्यादि। कै, वमन, अम्ल या पित्त अथवा श्लेष्मामय, लार मिला हुआ जो कुछ भी हो, इस तरह के होनेपर समूची अन्ननली अर्थात पेटसे गलेतक आगकी लौ जलती रहती है, रोगी कहता है, कि हमारा सब जल गया है, केके वाद दांत और मुँह खट्टे हो जाते हैं, इसमें कभी कभी मीठे स्वादकी कै होती है और कभी कै तार की तरह लम्बी होकर झूलती है। रोगीके मुँहसे लगातार लार निकलती है। आइरिसके कालेरामें—रोगी बिलकुल ठण्डा नहीं हो जाता लेकिन कभी कभी नाडी छूट जाती है। कालेरा या अति-सारमें—क्रोटन, इलाटिरियम, जैट्रोफा, पोडोफाइलम, पल्सेटिला, आर्स, वेरेट्रम, कूप्रम, सिकेलि इत्यादि दवाकी अधिक जरूरत होती है। उनका लक्षण यथास्थान पढे। आइरिसमें—क्लोम-ग्रन्थिके स्थानपर भयानक जलन रहती है।

अधकपारीका सर-दर्द—स्पाइजेलिया, सैंगुनेरिया, नक्स-वोमिका, सिपिया, नैट्र-म्यूर, साइलिसियाकी तरह—आइरिस भी लाभदायक है। स्नायविक या अजीर्ण दोषकी वजहसे सर-दर्दमें आइरिस लाभदायक है। सर-दर्द आरम्भ होनेके पहले आँखके सामने काला या सादा सादा पदार्थ उड़ता हुआ दिखाई पडता है। आइरिसमें—दाहिनी ओरकी सामनेकी कनपटी अधिक आक्रान्त

होती है। इसके साथ प्राय कै या मिचली रहती है और मध्याके समय, विश्रामसे, ठण्डी हवामें, खाँसनेपर सर दर्द बढ जाता है, रोगीको कभी कभी कब्जियत रहती है।

स्टामेटाइटिस या पाकस्थलीका प्रदाह—मुँहके भीतर जखम या जखम न रहकर भी प्रदाह होनेकी वजहसे मुँह और गलेके भीतर आगसे जल जानेकी तरह जलन रहनेपर आइरिस फायदा करता है।

यकृतकी बीमारी—यकृतमें भयानक दर्द, कामला, पित्त-शूलका दर्द, पित्तकी कै, इन सब उपसर्गोके साथ पेटसे मुँहतक आगसे जल जानेकी तरह जलन और सर-दर्द रहनेपर आइरिस फायदा करता है।

आइरिस-टेनाक्स—३०, २०० शक्ति। दाहिनी ओरके तल-पेटमें पुट्ठेके कुछ ऊपर छोटी और बडी आँत जहाँ मिली है वहाँ बडी आँतकी जडवाली पहली अढाई इञ्च जगहको अन्त्रपुच्छ (caecum) कहते हैं। सीकममें—प्राय तीन इञ्च एक केंचएकी तरह पूँछ है, उसको अन्ध अन्त्रपुच्छ (अपेण्डिक्स Appendix) और किसी कारणसे उक्त अपेनडिक्समें प्रदाह होनेपर, उसे अपेण्डि-साइटिस (Appendicitis) कहते हैं, आइरिस-टेनाक्स इस रोगकी प्रधान दवा है। अपेण्डिक्सके स्थानपर (Ileo-caecal-region) भयानक दर्द, कब्जियत, पित्तकी कै, बहुत सुस्ती, कमजोरी, सवेरे और तीसरे पहर दिनके २ बजे बहुत इसीलिये सोये रहनेकी इच्छा प्रभृति इसके प्रधान

है। ब्रायोनिया, बेलेडोना, लैकेसिस, क्रोटेलस, एचिनेशिया, लैक-डिफ्लोर,प्लम्बम, सैबाल प्रभृति भी इस बीमारीकी दवाएं हैं।

नींद—रात १ बजे नींद आती है, ५ बजे सवेरे सर-दर्द होकर खुल जाती है।

सदृश—इपिकाक, आइरिस-टेन, कैन्थर, कैलि-बाई, जेल्स, नैट्र-म्यूर, पल्टि-फ्लूड, आर्स।

क्रिया-नाशक((antidote)—नक्स।

क्रम—६x—३०। फारमुला—३।

जैबोरैण्डी।

(JABORANDI)

(ब्रैजिलकी एक प्रकारकी लताकी तरहके गाछके सूखे पत्ते के डण्ठलसे टिंचर तैयार होता है)। यह लार और पसीना निकालनेवाली ग्रन्थियोंपर क्रिया प्रकटकर उन ग्रन्थियोंमें उपदाह पैदा करता है। इससे लगातार लार बहा करती है और बहुत देरतक पसीना हुआ करता है। इसमें नाकसे श्लेष्मा और आँखसे बड़े वेगसे पानी गिरता है। वायुपथ, टेटुआ और गलकोषसे बलगम निकलता है। यह स्राव या बलगम निकलना बन्द होनेपर मुँह और गला सूख जाता है। तेज प्यास लगती है। इसके द्वारा शरीरमें रक्तकी सञ्चालन-क्रिया बढ़ती है , पर ताप घटता जाता है।

साधारणत: नीचे लिखी बीमारियोंमे जैबोरेण्डी विशेष रूपसे फायदा करता है :—

किसी भी नई बीमारीके आराम होनेपर और कोई पुरानी बीमारी भोगनेके समय, जैसे थाइसिस वगैरह बीमारियोंमे बहुत पसीना, प्रसूताके मुँहमे पानी भर आना, फेफडा और फुसफुस-वेस्टमे जल इकट्ठा होना, हृत्पिण्ड या मसानेकी बीमारीकी वजह से शोथ या डायबिटिस इनसिपिडस, तलपेटमे और मूत्रनलीमे दर्द, बार बार पेशाबका वेग और पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व (specific gravity) घटना, ऋतुस्रावका बहुत थोड़ा होना या ऋतु बन्द, झोंकसे होनेवाले पतले दस्त, वमन, आँखकी कई बीमारियाँ, जैसे—ऐस्थेनोपिया (asthenopia of cataract) इत्यादि। खल्वाट रोग मे इसके बाहरी प्रयोगसे फायदा होता है।

जैबोरेण्डीका दूसरा नाम पाइलोकार्पस—इसकी उग्रवीर्य दवा पाइलोकार्पिन—३x ३ री शक्ति, हैजाकी पतनावस्थामें बहुत पसीना निकलनेकी महौषधि है।

सदृश—बहुत पसीना निकलनेमे—पमिल-नाई।

क्रम—ϕ,—६x शक्ति। फारमुला—४।

जैकारागडा कैरोबा।

(JACARANDA CAROBA)

(सूखे पत्तेसे टिंचर तैयार होता है)। यह पुरुषोंकी कई बीमारियोंमे अधिक व्यवहृत होता है। सूजाककी वजहसे पैदा हुए वातमें और दाहिने घुटनेके वातमे भी यह फायदा करता है। उपदंश रोगमे, सूजाकमे (प्रमेह)—यन्त्रणादायक लिङ्गोद्गम् (chordee), वैलानोरिया (इस बीमारीमें—लिङ्गमुण्डमे और उसके आवरणके भीतर पीव पैदा होता है, मर्कुरियस-सोल भी इसकी अच्छी दवा है, इसमें कोई भीतरी दवा सेवन करते समय कैलेण्डुला आयण्टमेण्ट लगानेपर और भी जल्दी फायदा होता है)। प्रीपूसको (लिङ्गाग्र चर्मकी) सूजन—इसी कारणसे प्रीपूस लिङ्गके ऊपर खींचकर नहीं लाया जा सकता (फाइमोसिस), गर्मी रोगका जखम (सैंकर), लिङ्गके ऊपर जगह जगह लाल रङ्गके जखम (उसको अङ्गरेजीमे Chancroids कहते हैं—फोरालियम रूब्रम इसकी अच्छी दवा है)। लिङ्गके ऊपर मसेकी तरह उद्भेद, वह बहुत खुजलाता है। सूख जानेपर लाल रङ्गका चिन्ह रहता है इत्यादि कई बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है। मूत्रनलीका प्रदाह और मूत्रनलीकी राहसे पीले रंगका स्राव निकलनेकी यह बढ़िया दवा है।

जैकारण्डा—गुयालैण्डाई (Jacaranda-Gualandai)—गर्मी रोगका जख्म तथा अन्यान्य उपसर्गोंमें तथा गर्मीकी बीमारी की वजहसे आँखोंमें जख्म और गलक्षत-रोगमें अधिक फायदा करता है।

सदृश—कोराल-रूब, मर्क-सोल, मर्क-कोर, थूजा।

क्रम—φ—६x शक्ति। फारमुला—जर्मनी ४, अमेरिकन—३।

जैलापा।

(JALAPA)

(सूखी सोरसे टिंचर तैयार होता है)—इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है—बच्चा दिन-रात रोता है या दिनके समय तो अच्छा और चुप रहता है, पर रातमें चिल्ला चिल्लाकर रोता है (साइप्रिपिडियम देखिये), बच्चोंको अतिसार होनेपर यदि बच्चा इसी तरह रोता हो, तो फिर कोई बात ही नहीं—जैलापा ही उसकी एक ही दवा है। जैलापाके दस्तमें खट्टी गन्ध रहती है, बच्चोंके अतिसारमें—इस तरहकी खट्टी गन्धके [illegible] के पेटमें ऐंठनका दर्द और रोनेका लक्षण रहे—तो जैलापा और भी ज्यादा फायदा करता है।

सदृश—कैम्फर, कैमो, रियम।

क्रिया-नाशक (antidote)—[illegible], इत्यादि।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला

जैट्रोफा करकस ।

(JATROPHA CURCAS)

(एक तरहके पके फलके बीजका मूल अर्क। इस बीजसे क्रोटन तेल तैयार होता है, इसे जमालगोटा कहते हैं)—जैट्रोफा—साधारणत अतिसार और हैजामें ही अधिक व्यवहृत होता है। इनके अलावा—पाकस्थलीकी बीमारीमें—ऊपरी पेटका खिंचा रहना, खींच रखने और ऐंठनकी तरहका दर्द, हिचकी—हिचकी के बाद वमन, कुछ पीते ही कै और मिचलीका बढ़ना, कोखकी जगहपर दर्द, यकृतके स्थानपर दर्द, दाहिनी स्कन्धास्थिसे कँधेतक दर्द, पेशीमें, पैरकी पोटलीमें, पैर और पैरके तलवेमें ऐंठन, समूचा शरीर ठण्डा हो जाना प्रभृति कितने ही लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है।

अतिसार और हैजा—क्रोटोन अध्याय देखिये।

सदृश—कैम्फर, वेरट, गैम्बोज, क्रोटोन।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—४।

कैलि बाइक्रोमिकम ।

(KALI BICHROMICUM)

(वज़नमें १ अश बायक्रोमेट-आफ-पोटास, ९९ अश चुआये हुए पानीमें गलाकर टिंचर तैयार होता है)—मोटे-ताजे मांसल मनुष्य, बच्चा मोटा, गर्दन कोतह (sluggish), गोरे रंगका और बियर नामक शराब पीनेवालोंके लिये यह दवा ज्यादा फायदे-मन्द है ।

चरित्रगत लक्षण —

१ । वायुनली, नाक, जरायु, मूत्रनलीका जखम आदि, जिस किसी स्थानसे हो, जो श्लेष्माका स्राव निकलता है, वह रबर या गाढे गोंदकी तरह और खींचनेपर सूतकी तरह लम्बा हो जाता है , २ । गर्मीके दिनोंमें कोई भी बीमारीका पैदा होना, खुली हवामें रहनेपर ही सर्दी लग जाती है , ३ । वात और रक्तामाशय, एकके बाद एक होता है (एब्रोटेनम) , ४ । रोज एक ही समय स्नायुशूलका दर्द आरम्भ होता है , ५ । शरीरके किसी एक छोटेसे स्थानमें दर्द, उसे अगुलीकी नोकसे छिपा लिया जा सकता है , ६ । जगह बदलनेवाला, दर्द—थोडे समयमें ही एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है (कैलि-सल्फ, लैक-कैनाइनम, पल्स) , ७ । दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक चला जाता है (बेल, मैग फास,इग्ने) ; ८ । नाककी जडमें दर्द (कपालमें और नाककी जडमें

दर्द—स्टिक्टा), ६। नाकसे गाढ़ा गोंदकी तरह, डोरी जैसा, सूखा, जमा, हरे रंगका पतला श्लेष्मा निकलता है, सर्दीका स्राव होना रुकते ही माथेके पीछेसे लेकर ललाटतक भयानक दर्द होता है, १०, नाककी सेप्टम हड्डीमें जखम—उससे—खून मिला, कड़ा लम्बा, जमा श्लेष्मा निकलता है, ११। मुँह या गलेके भीतर उपदंशका गहरा जखम, १२। काण्डकटरोंके टिकिट पञ्च करनेकी तरह गोल आकारका जखम, १३। उपजिह्वा फूलकर थैलीकी तरह हो जाती है, या चिपटी हो जाती है, पर उतनी लाल नहीं होती, १४। क्रूप-रूपमें गला जकड़ जाता, घरघर खाँसी, १५। खूब मोटे व्यक्तियोंकी रतिक्रियासे अनिच्छा, १६। पाकाशयका जखम (round ulcer), भोजनके बाद पेट फूलना, १७। हैजामें मूत्राशयमें पेशाबका इकट्ठा न होना, १८। पुराना आमाशय, १९। मनुष्योंमें प्रेम नहीं करता, ताच्छिल्यका भाव।

कैलि बाइक्रोमकी बीमारी—किसी एक बँधे समयपर पैदा होती है। कितनी ही बीमारियाँ—सवेरे, कितनी ही सन्ध्यामें, वात प्रभृति बीमारियाँ—वसन्त ऋतुमें, आमाशय—हर बरस वसन्त ऋतुमें या ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमें होता है।

ब्राङ्काइटिस (वायुनली-भुज-प्रदाह)—खाँसीका शब्द घन, बलगमसे श्वासनली भरी रहनेपर भी सहजमें बलगम नहीं निकलता, रोगीमें श्वासकी तरह खिंचाव पैदा हो जाता है, पर भोजन करते ही खाँसी बढ़ जाती है (हायोसियामस) और वक्षमें

शरीर ढकनेपर गरम हो जाने बाद खाँसी कुछ घट जाती है, कभी कभी लेट जानेपर भी खाँसी कम पड़ जाती है। खाँसीके साथ कभी कभी गाँठें भी फूल जाती हैं।

कैलिबाइक्रोम—साधारण खाँसीमें भी फायदा करता है, ऊपर ही कहा है, कि इसकी खाँसी क्रूपकी खाँसी तरह घ घ होती है और सहजमें बलगम नहीं निकलता। इसमें जो बलगम निकलता है, वह सूतकी तरह लम्बा होकर झूला करता है, हाथसे खींचकर फेंक देना पडता है, खाँसी सवेरे ३ से ४ बजेके भीतर बढती है। बिछावनसे उठने बाद, पर एमोन-कार्बमें—सवेरे ३।४ बजे के बीचमें खाँसी बढती है, कलेजेमें बहुत बलगम जमा रहता है, खांसी सूखी और उसके साथ ही स्वरभग, छातीमें दबाव मालूम होना और जकड जानेकी तरह भाव रहता है। कैलि-बाइ-क्रोम और एमोन-कार्बम—सर्दीका रग नीली आभा लिये और थका थका, एग्रा-ग्रिसिया—नामक दवामें भी थका थका नीली आभा लिये बलगम निकलनेका लक्षण पाया जाता है। कैलि-बाइ-क्रोमकी खाँसीमें, गलेमें सुरसुरी होती है और हरेक बार साँस लेनेके समय खाँसी आती है।

एमोनियाकम-गम—(Ammoniacum Gum)—बहुत कमजोर शरीर और वृद्ध मनुष्योंकी पुरानी ब्राङ्काइटिसकी बीमारीमें यह दवा ज्यादा फायदा करती है। हमें ऐसा मालूम होता है, कि थोडे ही चिकित्सकोंने इस दवाकी क्रियापर ध्यान दिया होगा।

पुरानी प्रादाहिक ब्राङ्काइटिसकी बीमारीमें—पीवकी तरह बहुत ज्यादा परिमाणमें फेफडेमें बलगम इकट्ठा होता है, परन्तु खाँसनेपर थोडा ही बलगम निकलता है, ठण्डी हवा सहन नहीं होती, जरा भी सर्दी लगी कि खाँसी बढ गयी, श्लेष्मा—गाढा गोंदकी तरह और कड़ा, एकाएक देखनेपर कैलि-बाइक्रोमकी ही तरह मालूम होता है (कैलि-ब्राइक्रोममें—बलगम गोंदकी तरह होनेपर भी पीवकी तरह बलगम उसमें नहीं रहता), हृत्पिण्डकी गति बहुत तेज, रोगीका गला सूख जाता है। श्वास-प्रश्वासमें बहुत तकलीफ होती है, सो नहीं सकता। दमामें—खाँसी कभी ढीली, कभी गाढ़ी गोंदकी तरह, बार बार बलगम निकाल फेंकनेकी चेष्टा करता है, पर सहजमें बलगम निकलता नहीं है। खाँसनेमें मानो कलेजा फट जाता है, वृद्धोंके गलेमें जोरसे घर घर आवाज होती है, ये ही—एमोनियाके विशेष लक्षण हैं। क्रम—३—विचूर्ण।

लैरिञ्जाइटिस और फालिक्यूलर फैरिञ्जाइटिस—गलेके भीतर जीभकी जडके अगल बगल दो नलियाँ हैं—वायुनली और अन्ननली। जीभकी जड और वायुनलीका ऊपरी भाग इनके बीचके भागको—लैरिङ्क्स (स्वरयन्त्र) और जीभकी जड [illegible] तरहके आकारवाला स्थान, जहाँसे भोजन-सामग्री या [illegible] जानेके लिये, पहले जा कर गिरता है, उस स्थान [illegible] (गलकोष) कहते हैं। इस लैरिङ्क्स और फैरिङ्क्सके [illegible] फैरिञ्जाइटिस कहते हैं। इसके अलावा उपजिह्वाके पास

पोस्ताके दानेकी तरह छोटे छोटे दानोंकी भाँति एक तरहकी ग्रन्थि रहती है, उसका नाम—फालिकल्स (गह्वर), फालिक्युलर फैरिंजाइटिस अर्थात जिसके सम्बन्धमें यहाँ कहा जाता है, उसकी ग्रन्थि पर ही बीमारीका हमला होता है। फेरिंजाइटिसका प्रधान लक्षण है—"खाँसी" और गलेमें दर्द, धीरे धीरे बोलता है, गलेके भीतर जखम रहता है। लेरिंजाइटिसमें—ज्वर, गलेमें दर्द, खाँसी, स्वरभग, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट प्रभृति कितने ही लक्षण रहते हैं। इन सब बीमारियोंमें गलेके भीतर फूलकर लाल रंगका जखम और उससे लार बहना और गोंदकी तरह, तारकी तरह, सूतकी तरह लम्बा होकर बलगम निकलना इत्यादि लक्षणोंमें कैलि-बाइक्रोमका प्रयोग होता है। खाँसनेपर वक्षोस्थिमें दर्द, वह पीछेकी ओर चला जाता है और दोनों कन्धोंके बीच अनुभव होता है। लैरिंजाइटिस या फेरिंजाइटिसकी खाँसीमें—मेन्था-पिपरेटा फायदा करता है।

दमा—जरा-सी सर्दी पडनेपर ही—वह बरसात हो या शीत ऋतुमें—दमाका दौरा और खाँसी बढ जाती है। दमाका दौरा यदि सबेरे ३।४ बजेके बीचमें बढे और उसके साथ ही कैलि-बाइ-क्रोमका निर्दिष्ट लक्षण गोंदकी तरह या सूतकी तरह श्लेष्मा निकला करता हो, तो—कैलि-बाइक्रोम ज्यादा फायदा करता है। रोगी रातमें सो नहीं सकता, सामने ... झुक जाना पडता है, क्योंकि उससे कुछ आराम ... आर्सेनिकमें भी—कैलि-बाइक्रोमके अनेक

केवल लसदार गोंद या सूतकी तरह श्लेष्मा नहीं निकलता है। दमामें, आर्सेनिकके बाद,—कैलि-बाइक्रोमसे बहुत फायदा होता है। हायोसियामसमें—एक तरहकी आक्षेपिक खाँसी होती है, वह रातमें और सोनेपर बढ़ती है, इसी वजहसे रोगी दिन-रात सर झुकाकर बैठा रहता है। एमोन-कार्बमें—सवेरे ३।४ बजेके वक्त खाँसी बढती है।

अजीर्ण—शराबियोंके अजीर्ण रोगमें कैलि बाइक्रोम ज्यादा फायदा करता है। इसमें वमन होता है, वमन कभी पित्त-मिला, तीता, कभी कभी खट्टा और उसके साथ ही बलगम मिला रहता है। आइरिसमें भी—इसी तरहकी कै होती है, पर उसमें पेटसे गलेतक जलन रहती है। कैलि-बाइक्रोमका वमन लारकी तरह चमकीला रहता है और वह सूत या तारकी तरह लम्बा होकर झूलता रहता है। पाकस्थलीमें जखम होकर वमन
पेटमें कुछ भी न रहनेपर—कैलि-बाइक्रोम ज्यादा फायदा है। कैलि-बाइक्रोममें—जीभकी जडमें पीले रंगकी लेप चढी रहती है (मर्कुरियस और नैट्रम-फासकी तरह)। रोगीको पाकस्थलीमें हमेशा भार और यन्त्रणा मालूम होती है,कुछ खा लेने बाद ही पेटमें दर्द और पेट फूला करता है—नक्स-मस्केटाका लक्षण, भोजनके प्राय: ३।४ घण्टेके बाद पेटमें दर्द—नक्स-वोमिका, एनाकार्डियममें-पेटका दर्द बहुत कुछ नक्सकी तरह होनेपर भी उसमें कुछ खाने ... घट जाती है, खाली पेट रहनेपर बल्कि तकलीफ

बढती है। कैलि-वाइक्रोममें—कितनी ही बार पेट फूलनेके साथ कब्जियत रहती है।

सर-दर्द—माथेके किसी एक छोटेसे स्थानमें भयकर तकलीफ देनेवाला दर्द बना रहता है। कैलि-वाइक्रोममें—सर-दर्द की एक अचरज भरी विशेषता यह है, कि सर-दर्द आरम्भ होनेके पहले रोगीकी आँखसे कुछ भी दिखाई नहीं देता है, इसके बाद ज्यों ज्यो सर-दर्द बढता जाता है त्यों त्यों दृष्टिशक्ति बढती जाती है। साइलिसियामें—पहले सर-दर्द होता है, इसके बाद दिखाई नहीं देता, ठीक विपरीत लक्षण। कैलि वाइक्रोममें—दर्द प्रत्येक बार जगह बदलता रहता है, पल्सेटिलामें भी यही लक्षण है, कैलि-वाइक्रोमका—सर दर्द बेलेडोनाकी तरह पैदा होता है, एकाएक ही छोड जाता है।

दर्द—कैलि-वाइक्रोमका दर्द शरीरके किसी एक खास जगह बहुत दर्द देरतक नहीं बना रहता, प्रत्येक बार जगह बदलता है, अर्थात एक बार यहाँ एक बार वहाँ, इस तरह घूमा करता है (सल्फर, पल्स)। शरीरकी किसी एक छोटी-सी जगहपर दर्द एक अगुलीकी नोकसे यह जगह ढँक ली जा सकती है। कैलि-वाइक्रोमके दर्दकी भी एक विशेषता है, "टानने, खींच रखने अथवा फाड डालनेकी तरह दर्द (drawing and tearing pains)", इस तरह खींचने और टाननेवाला दर्द—इसमें समूचे शरीरमें अर्थात—पेशी, हड्डी, सीवन, गर्दन, गला, पीठ इत्यादि

के सभी स्थानोंमें हो सकता है। इसका रोग लक्षण तीसरे पहर बढता है और हिलने डोलनेपर दर्द घटता है।

जगह बदलने वाले दर्दमें नीचे लिखी और भी कई दवाओंका प्रयोग होता है। इनपर नजर रखें :—

मैङ्गेनम-एसेटिकम—(Manganum aceticum)—६—२०० शक्ति, दर्द एक ओरकी गांठसे दूसरी ओरकी गांठमें जाता है, पेटमें खींच रखनेकी तरह दर्द— (छुम्बम)।

लैक-कैनाइनम—(Lac-caninum)—३०—२०० शक्ति। आज एक ओरकी गाठमें या किसी दूसरी जगह दर्द होता है, कल वह दर्द घटकर दूसरी तरफ बढता है। इसके दर्दके जाने आनेकी भी एक विशेषता है, दर्द टेढे आकारमें (cross-wise) चलता है, अर्थात आज यदि दाहिने हाथके ऊपर दर्द होता है तो कल बायें हाथके नीचे दर्द होगा, दूसरे दिन किसी एक ओरके नीचे दर्द होनेपर उसके बादवाले दिन—ठीक ऊपर दर्द होगा।

पलसेटिला—इसका दर्द एक जगहसे दूसरी जगह जाता है और पहले जिस स्थानपर दर्द होता है, उस स्थानपर कुछ समय या कुछ दिनोंतक दर्द स्थायी बना रहता है। (कैलि-बाइक्रोममें—दर्द थोडे समयतक स्थायी होता है)।

कैलि-सल्फ—हाथ, पैर, कमर, गाँठ, सभी स्थानोंमें दर्द होता है, दर्द गरमीमें और सन्ध्याके समय बढ़ता है, एक जगहसे दूसरी

जगह घूमता फिरता है। इसके लक्षण बहुत कुछ—पल्सेटिलाकी तरह हैं।

वात—वातका दर्द हमेशा स्थान बदलता रहता है और सरदीसे बढ़ जाता है, इसमें हाथ, पैर, केहुनी, घुटने, अँगूठे, पैरकी एँडी इत्यादि सभी स्थानोंके जोडोंपर वातका हमला होता है। पुराना वात एकाएक शरीरके एक स्थानपर आक्रमण रहता है, परन्तु जल्दी ही वह जगह छोडकर दूसरी जगह चला जाता है। जो सब मनुष्य हर बरस वसन्त ऋतुमें इस बीमारीसे बीमार पडते हैं, उनके लिये कैलि-बाइक्रोम विशेष लाभदायक है। डा० लिपि कहते हैं—कैलि-बाइक्रोमका वात और पाकाशयके लक्षण उलट-पुलटकर प्रकाशित होते हैं, अर्थात वातके उपसर्ग घटनेपर पाकाशयके लक्षण (दस्त, कै इत्यादि) और पाकाशयके लक्षण घट जानेपर वातका दर्द फिर पैदा हो जाता है। डा० फेरिंगटन कहते हैं—सूजाकसे उत्पन्न वातमे कैलि बाइक्रोम फायदा करता है। गरमी रोगसे पैदा हुआ अंग-प्रत्यंगका वातकी तरह दर्द और पेरियोस्टाइटिसकी बीमारीमें—कैलिबाइक्रोम विशेष फायदा करता है।

मेरुपुच्छकी (coccyx) का स्नायुशूल—दर्द बैठनेपर बढ़ जाता है, बायीं ओरका साइटिका—हिलने-डोलने, पैर मोडकर बैठने, घुटने टेककर बैठनेपर दर्द घटता है और खडे होने, बैठने, सोने और दबानेसे बढता है।

आँखकी बीमारी—सवेरे सोकर उठने बाद पीले रङ्गके गाढे पीवकी तरह पपडीसे आँख जुडी रहती है। पलके आँखकी फूली फूली दिखाई देती है। कोई रोग अगर धीरे धीरे बढे तो उतना कष्टदायक नहीं होता। कैलिबाइक्रोममे आँखका दर्द इसलिये धीरे धीरे बढता है और यही वजह है कि रोशनीका सहन न होना, आँखके शार्ङ्गत्वकके (शार्ङ्गत्वक किसको कहते है, यह नीचे दृष्टव्यमे पढिये) जखममें बीमारी धीरे धीरे बढना, उसके साथ ही रोशनीसे भय, आँखमे लाली, पीली आभा लिये पीव, पपडी जमना इत्यादि लक्षण रहनेपर—कैलिबाइक्रोम फायदा करता है। आइराइटिस (चक्षतारका प्रदाह) बीमारीमें जब प्रदाह का अंश घट जाता है, या बहुत कम रहता है, रोशनीसे भय नहीं रहता, उस समय भी यह फायदा करता है। छोटी माताके बाद यदि ऐसा दिखाई दे, कि आँखको स्वच्छ त्वचामे (कार्नियामे) छोटी छोटी फुन्सियाँ या छालेकी तरह दाने निकलते है, पल्से-टिला उस समय इसकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। <u>पल्सेटिला</u> के लक्षण सब हलके होते है। कैलिबाइक्रोममें—आँखमें जखम, पीव, आँख सड जानेके सिवा कानसे भी बदबूदार पीव निकलता है और बहुत दर्द इत्यादि लक्षण भी रहते है। इसके अलावा कानके छेदके चारों ओर फूल उठता है, गाँठोका प्रदाह होकर गाँठे फूल उठती है। अब पल्सेटिलाके साथ यही प्रभेद है, कि रोग-लक्षण <u>हलके होनेपर</u> पल्सेटिला और जब, आँख मुँह इत्यादिमें जखम होता है और जखमसे निकला हुआ स्राव सूतकी तरह लम्बा या

गोंदकी तरह लसदार होकर निकलता है, उस समय कैलि बाइक्रोम फायदा करता है।

द्रष्टव्य :—आँखकी बीमारीकी दवाका वर्णन करते समय इस पुस्तकके किसी स्थानमें शार्ङ्गचक, स्वच्छत्वचा, कार्निया, और कितने ही स्थानोंमें—चक्षुतारा, उपतारा, आइरिस, प्यूपिल इत्यादि नाना प्रकारके हिन्दी, अंगरेजी शब्द इच्छानुसार व्यवहृत होते आ रहे हैं, इसीलिये उनका विषय सक्षेपमें नीचे बताया जाता है —

बाहरसे अच्छी तरह देखनेपर यह दिखाई देता है, कि आँखके गोलाकार समूचे काले अंशके ठीक बीचमें और एक छोटा गोलाकार (hollow) अंश है। उसको—आँखकी पुतली) अंगरेजीमें प्यूपिल कहते हैं। इस प्यूपिलके चारों ओर जो गोल आकारका काला अंश है, उसको उपतारा, तारा और अंगरेजी में (Iris) आइरिस कहते (स्तनके अग्रभागके साथ इसकी तुलना होती है। जैसे—स्तनकी घुंडी—प्यूपिल, घुंडीके चारों ओरका समूचा गोल आकार काला अंश—आइरिस, यह प्यूपिल और आइरिस अर्थात समूचे काले अंशके ऊपर एक साफ आवरण रहता है, आवरणका नाम शार्ङ्गत्वक, स्वच्छत्वक और अंगरेजी नाम कार्निया (cornea) है। कार्नियाके किनारे आँखके ऊपर वाले समूचे मोटे सफेद अंशको—श्वेतपटल, अङ्गरेजीमें (Sclera) कहते हैं। स्क्लेरा, कार्निया अर्थात आँखका सफेद,

काला सभी अश एक दूसरे वहुत पतले चमकीले पर्देसे ढका है, यह पर्दा पलको तक फैला है। इसे—योजकत्वक, अङ्गरेजीमें कौनजङ्क्टाइवा (conjunctiva) कहते हैं। इस मेटिरिया मेडिकामे जहाँ कौनजङ्कटिवाइटिस वीमारीका उल्लेख है, वहाँ उक्त योजकत्वकका प्रदाह समझना चाहिये। अतएव, इस पुस्तकमे जहाँ जो कुछ भी लिखा क्यों न हो, अव मालूम होता है, सहजमे ही सबकी समझमे आ जायगा।

कानकी वीमारी—कानमे पीव होकर वहुत दर्द और तकलीफ, यह दर्द कानसे आरम्भ होकर क्रमश माथा और माथेसे गर्दन तक चला जाता है और गर्दनकी गाँठ फूल उठती है, इसमे जिस ओरके कानमे वीमारी होती है, उसी ओर पैरोटिड ग्लैण्ड आक्रान्त हुआ करती है।

नाककी वीमारी—सप्त ढेलेकी तरह श्लेष्मा नाकसे निकलना—कैलि-बाइक्रोमका लक्षण है, सवेरे हरे रङ्गका लसदार गोंदकी तरह कडा बलगम निकलनेपर नाकमे बराबर खरोंट जमनेपर—कैलि-बाइक्रोम फायदा करता है।

नाकका जखम—सूतकी तरह लम्बी या गोंदकी तरह लसदार सर्दी नाकसे निकलना, नाकमे चौडी पपडी, कैलि-बाइक्रोमका लक्षण है। कैलि-बाइक्रोममे—पहले पानीकी तरह नयी सर्दी होती है और इसके बाद वह गाढ़ी और क्रमसे बहुत कडी हो जाती है और थक्के बन जाते है तथा नाकमें पपडी जमकर जखम हो

जाता है, इसके अलावा कैलि-वाइक्रोममें—सेप्टम अस्थि (नाककी भेदक अस्थिमें) जखम होता है पर वह जखम लगातार बढ़कर उस भेदक अस्थिको एकदम नष्ट कर देता है। उपदंशकी वजहसे नाककी इस ढङ्गकी बीमारीमें—कैलि-वाइक्रोम विशेष फायदा करता है (आरम-मेट अध्याय देखिये)।

पारा या उपदंशकी बीमारीकी वजहसे नाकके जखममें—अरम-मेटैलिकम, केलि-वाइकोम, नाइट्रिक-एसिड,मर्कुरियस, लैकेसिस इत्यादि दवायें फायदा करती हैं, नाककी हड्डीके ऊपर जखम होनेपर-अरम मेटैलिकम और मांस भरे स्थानोंके जखममें—कैलि-वाइकोम अधिक फायदा करता है। कैलि-वाइक्रोममे—पहले फुन्सी निकलती है, इसके बाद वह गहरी हो जाती है और वहाँ (कागडेकृरका टिकट पंच करनेकी तरह गोलाकार) छेद होता है और वह छेद क्रमशः बढकर अगल बगलके स्थानोंको ध्वसकर देता है। नाककी पुरानी सर्दीमे (catarrh)—स्राव गोंदकी तरह होनेपर और प्रमेह विष दूषित धातुवालेकी नाकके जखममें स्राव पीला या हरे रंगका अगर होता है तो—कैलि-वाइक्रोम फायदा करता है। (आरम-म्यूर—नाककी हड्डीके जखमकी अच्छी दवा है)।

जीभकी बीमारी—गरमीकी बीमारीकी वजहसे जीभमे जखम, एपिथेलिओमा प्रभृति। कैलि-वाइक्रोममें—जीभके पीछे और गलेके भीतर मानो एक गुच्छा केश फसा है, ऐसा अनुभव होता है। कुछ खाने-पीनेपर भी यह भाव दूर नहीं होता। जीभमें बहुत दर्द और ओंठके ऊपर भी जखम रहता है।

व्रत—कैलि-बाइक्रोमके जखमका आकार गोल रहता है, यह क्रमशः गहरा होकर नीचेकी ओर फैलता है। मर्कुरियसके जखमके किनारे उबड खाबड और असम रहते हैं। जखम छिछला (superficial) रहता है। वह क्रमश बगलकी ओर फैलता है।

अतिसार—रोगीके मलद्वारमे छोटी खूँटी (plug) की तरह कुछ अडा हुआ-सा अनुभव होता है। यह लक्षण—लैकेसिस मे भी है। लैकेसिसका दस्त—घास-पातकी राखके गोलेकी तरह काला और बहुत बदबूदार रहता है। कैलि-बाइक्रोममे—भूरे रगका फेन भरा पानीकी तरह पतले दस्तके साथ मलद्वारमे जलन और पाखाना हो जाने बाद आमाशयकी तरह कूथन और वेग रहता है। इसमे दस्त प्रात कालमे ही अधिक होता है। कैलि-बाइ-क्रोम—अतिसारकी अपेक्षा आमाशयमे अधिक व्यवहृत होता है। शरद् और ग्रीष्म ऋतुके पहले जिनको अकसर आमाशय रोग हो जाता है, उनके लिये यह बहुत फायदेमन्द है। इसका मल अकसर चाशनीकी तरह या माँडकी तरह थक्का थक्का और खून मिला रहता है, साथ ही कूथन भी रहती है। जीभ चमकीली, लाल रगकी और फटी फटी, ज्वर या प्यास नहीं रहती।

गर्मी और उपदंशकी बीमारी—पहले एक छेदकी तरह गोल आकारका जखम होकर धीरे धीरे वह बढ़ता है और उस से गोंदकी तरह रस निकला करता है। उपदंश रोगवाले रोगियोंकी नाकके या गलेके जखमकी—कैलि-बाइक्रोम अमूल्य दवा है, क्रोमिक-एसिडमे भी यह लक्षण है।

चर्म-रोग—चर्म-रोग जो शीत कालमें बढते हैं, उनमें—पेट्रोलियम, पल्सेटिला फायदा करते हैं, उसी तरह चर्म-रोग शीत-कालमें घट जानेपर कैलि-बाइक्रोम फायदा करता है।

कब्जियत—पुरानी या बँधे समयका अन्तर देकर पैदा होनेवाली कब्जियत (साधारणतः प्रायः प्रत्येक ३ महीनेका अन्तर देकर रोगी कष्ट भोगता है)। मल—कडा और सूखा बडे कष्टसे निकलता है। पाखाना होने बाद मलद्वारमें बहुत जलन होती है। कैलि बाइक्रोममें ऊपर लिखे लक्षणोंके अलावा मलद्वारमें कभी कभी जख्मकी तरह भयानक दर्द हुआ करता है। जरा चलने फिरनेसे ही यह दर्द बढता है, रोगी समझता है कि एक खील मलद्वारमें लगी हुई है, कभी कभी दर्द इतना अधिक होता है, कि बैठ नहीं सकता।

हैजा—इयुरिमिया, मूत्राशयमें पेशाब इकट्ठा नहीं होता।

वृद्धि (aggravation)—गरमी और गरम ऋतुमें।

सम्बन्ध—क्रूपमें—ब्रोमियम, आयोडम और हिपर, उपदंशवाले रोगोंमें—कैलि-आयोड, एसिड-नाइट्रिक, फाइटोलैक्का, तेजीसे जगह बदलनेवाले दर्दमें—कैलि-सल्फ, लैक-कैनाइनम, पल्स, एकाएक पैदा होनेवाले दर्दमें—एसिड-क्रोमिक, बेलेडोना, मैग-फास, नाकसे गाढा गोंदकी तरह श्लेष्मा निकलनेपर—ग्रैफाइटिस, हाइड्रेस्ट, आइरिस प्रभृति—कैलि बाइक्रोमके समकक्ष हैं, कैल्केरियाके बाद यह लाभ नहीं करता।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, लैके, पल्स।
क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।
क्रम—६—२०० शक्ति (दमामे निम्न-शक्ति)
फारमुला—टिंचर—x बी, विचूर्ण—७।

कैलि ब्रोमेटम।

(KALI BROMATUM)

(ब्रोमाइड आफ पोटास—एक भाग, ९९ भाग डिस्टिल्ड वाटरमे गलाकर—२x क्रम, डाइल्यूट अलकोहलमे—३x क्रम; इसके वादसे अलकोहलमे तैयार होता है। इसका ट्राइट्यूरेशन भी व्यवहृत होता है। मस्तिष्क और स्नायुमण्डलके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। युवककी अपेक्षा बच्चोकी बीमारीमे इसकी क्रिया जल्दी प्रकट होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। स्नायु प्रधान चचल मनुष्य, स्थिर होकर वेठ नहीं सकते, हाथ ओर हाथकी अँगुलियाँ हमेशा हिला करती है, दोनो हाथ बराबर हिला करते है। (पैर हिलते है—जिङ्क), २। बच्चे सोते सोते भूतके डरसे चिल्ला उठते हैं, दाँत कडकडाते हैं, ३। याददाश्तका घट जाना, वात करता करता भूल जाता है, कि क्या कह रहा था, (एनाकार्ड), ४। धन-सम्पति, मान-मर्यादा, व्यापार नष्ट

हो जाने बाद या दुःखकी वजहसे बेचैनी और नींद न आना, ५। भय, क्रोध या बहुत अधिक आनन्दकी वजहसे और प्रसवके समय दाँत निकलनेके समय हुपिङ्ग खाँसी इत्यादिमें अकडन (spasm), ६। वंश-परम्परासे आया हुआ, उपदंशसे उत्पन्न यक्ष्मा-रोग, ऋतुके दो एक दिन पहले और शुक्र पक्षके पहले—मृगी रोग, ७। तोतलाकर बोलना, धीरे और बडे कष्टसे बोलता है, ८। शिशु हैजामें मस्तिष्कमें जल-सञ्चय होनेके पहले मस्तिष्कका उपदाह, हाइड्रोकेफालस (मस्तिष्कमें जल-सञ्चय-रोग) की पहली अवस्था; ९। बच्चोंको हर रोज सवेरे ६ बजनेके समय शूलका दर्द होता है (तीसरे पहर ४ बजे—कोलोसिन्थ, लाइको), १०। उन्मत्तता, ११। समस्त शरीरमें ऐसा अनुभव होता है, मानो कुछ गड रहा है, १२। गर्भावस्थामें लगातार आनेवाली भयंकर सूखी खाँसी, गर्भस्रावकी तैयारी हो जाती है, १३। बहुत बेचैनी, किसी तरह भी एक जगह नहीं रह सकता, हमेशा किसी काममे लगे रहना चाहिये।

बकवादीपन—इस बीमारीके साथ रोगीको नींद बिलकुल नहीं आती, सपनेमें भूत, प्रेत देखता है, दाँतपर दाँत रगडता है, गो गों करता है। समझता है, कोई उसे विष खिला देगा (हायोसियामस, ग्लोनोइन)।

मस्तिष्ककी दुर्बलता—हमेशा उदास, मन मारे रहता है, स्मरण शक्ति लोप, बहुत ज्यादा, इन्द्रिय सेवन, शुक्र-क्षयकी वजहसे यह दर्द होनेपर—कैलिब्रोम लाभदायक है। बहुत ज्यादा

परिश्रम करने, नाना प्रकारके विषयोंकी चिन्ता करनेपर (वकील, बैरिस्टर, विषयी मनुष्योंके बहुत देरतक सोचनेपर), मस्तिष्ककी दुर्बलता अर्थात माथेका दर्द, हाथ-पैरका काँपना इत्यादि।

कालेरा—कालेरामे क्रमागत पाखाना और कै होनेसे रोगी अत्यन्त दुर्बल हो पडता है। बदन ठण्डा, हाथकी कलाई बरफकी तरह ठण्डी और शीतल, सो नहीं सकता, लगातार छटपटाता है, विकारके सब लक्षण दिखाई पडते हैं, उसमे यह दवा विशेष उपकारी है। इसमें पेशीका अनवरत कम्पन, हरे रंगका बदबूदार पाखाना होना, बहुत प्यास, वमन इत्यादि रहता है। युरिमियाकी वजहसे ज्वर-विकारमें कभी कभी बेहोशकी तरह भाव, श्वासमें कष्ट, पेशाब बन्द इत्यादि लक्षण रहनेपर भी यह फायदा करता है।

हाइड्रोकेफालस—लगातार दस्त कै होकर या बार बार अतिसार भोगनेके कारण यह बीमारी होनेपर—कैलि-ब्रोम फायदा करता है (कैल्केरिया-कार्ब देखिये)। मस्तिष्कका प्रदाह, आँखकी पुतली फैली, हाथ-पैर ठण्डे।

मस्तिष्ककी रक्त-शून्यता—हाथ-पैर हमेशा ठण्डे रहते हैं, आच्छन्न भाव या एकदम बेहोश (complete coma), पुतली फैली (pupil dilated) रहती है।

स्वप्नदोष या धातुदौर्बल्य—जहा काम-प्रवृत्ति क्रमश घटती जाती है, लिङ्गमे कडापन आये बिना ही वीर्य-स्खलन हो जाता है और स्वप्नदोषके साथ हाथ-पैरमे सुनसुनी, कमजोरी

और उदासी आ पडती है, वहाँ कैलि-ब्रोम दूसरी दूसरी दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है ।

बहुत ज्यादा स्त्री-संसर्ग अथवा हस्तमैथुन आदिकी वजहसे धातुदौर्वल्य, दु:खित होना, स्मरण-शक्तिका घट जाना, हाथ-पैर और अन्यान्य अगोंका सुन्न पड जाना इत्यादि उपसर्ग यदि प्रकट हो तो इससे फायदा होगा। (सैलिक्स-नाइग्रा देखिये।)

स्नायु-दौर्वल्य—पहले ही कहा है, कि स्नायुमण्डलपर ब्रोमाइडकी प्रधान क्रिया होती है। ब्रोमाइड—पेरिफेरैल नर्वका उपदाह पैदा करता है, इसलिये, दाँत निकलनेकी वजहसे पैदा हुए परावर्तित उपदाहके कारण—अकडन, खींचन, कानवल्शन इत्यादिमें इससे ज्यादा फायदा होता है।

मस्तिष्क-क्लान्ति—लिखना-पढना या व्यवसायकी उन्नति इत्यादि कारणसे, बहुत ज्यादा मानसिक परिश्रमके कारण, जल्दी जल्दी मस्तिष्क नष्ट हो जाता है, रोगी क्रमश: चिडचिडा हो जाता है, जरा-सी बातमे रो देता है, सर दर्द होता है, कलेजा धडकता है, पीठमे कीडे चलनेकी तरह सुरसुरी होती है, स्मरण-शक्ति घट जाती है, शरीर और पैरमे बल नहीं रहता, भूख मन्द हो जाती है, नींद नहीं आती इत्यादि कितने ही लक्षण और स्नायु-दौर्वल्यके अन्यान्य लक्षण सब प्रकट होते हैं। इसीको ब्रेन-फेग या मस्तिष्क शून्यताकी बीमारी कहते हैं। इस बीमारीमें रोगीको माया सुन्नकी तरह मालूम होता है। वह सोचता है, कि उसका

ज्ञान लोप हो गया है, स्मरण शक्ति घट जाती है, बात करते करते भूल जाता है, लिखनेमें वर्ण-विन्यासमें भूल करता है—इन सब लक्षणोंमे—कैलि-ब्रोम फायदा करता है।

एकजिमा और व्रण—मुँह और शरीरपर व्रण और एकजिमाके साथ छोटे छोटे फोडे जो पकते है और जिनके भीतर पीव पैदा हो जाता है।

मुँहासे अर्थात जवानीमें बहुतोंके चेहरेपर एक तरहका व्रण या फोडा निकलता है, उसको मुँहासा कहते हैं—कैलिब्रोम उसकी दवा है।

स्त्री-रोग—(ओवेरी) डिम्बकोप या ब्राड लिगामेण्ट (जरायु-वन्धनी), सिस्टिक-टियुमर (कोमल-अर्बुद), डिम्बकोप का स्नायुशूल, इसके साथ ही रोगिनीको बहुत स्नायविक सुस्ती रहती है।

नींदमें डर जाना—(Night terrors)—बच्चा सोया सोया एकाएक चिल्लाकर रो उठता है, थरथर काँपा करता है, उस समय मानो कुछ भी ज्ञान नहीं रहता, अपनी बगलमे ही क्या हो रहा है, यह समझमे नहीं आता। (हायोसियामस, लैकेसिस)।

मृगी (Epilepsy) एब्सिन्थियम अध्याय देखिये।

खाँसी—गर्भावस्थामे प्रत्यावृत क्रियाकी वजहसे खाँसी में (reflex cough) और रातके समय हूप-कफकी तरह

एक तरहकी सूखी कष्टकर आक्षेपिक धमककी तरह खाँसी होने पर—कैलि-ब्रोम फायदा करता है ।

हिचकी—लगातार हिचकी, किसी तरह हिचकी नहीं रुकती (नक्स-वोमिका देखिये)।

पेशाबकी बीमारी—बहुमूत्र, प्यासके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब, पेशाबके साथ, चीनी और फास्फेट निकलना, पेशाबका वेग रोक नहीं सकता, लगातार रोगी कमजोर और रक्तहीन हो पडता है ।

इसके आलावा—कैलि-ब्रोम,—नयी उन्मत्तता, प्रसवके बाद उन्माद होना, नींद न आना, गति-शक्ति-राहित्य, पक्षाघात, शुक्रक्षय, ध्वजभग, प्रसवके बाद जरायुका स्वाभाविक अवस्थामें नहीं आ जाना, मलद्वार-अवरोधक पेशीका पक्षाघात इत्यादि बीमारीमें भी इसका व्यवहार होता है ।

वृद्धि (aggravation)—गरमीके दिनोंमें, रातमें २ बजनेके समय और बच्चोंका अम्लशूल—रोज रातके ५ बजे , कैलि-ब्रोम—सोने बाद खाँसी और माथा झुकानेपर सरका चक्कर बढता है ।

ह्रास (amelioration)—काममें अन्यमनस्क रहनेपर, ठण्डी हवामें ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, हेलोनि, नक्स, जिङ्क ।

क्रम—मूल विचूर्ण ५ ग्रेन, ३x-६ और २०० शक्ति ।

फारमुला—टिंचर—५ वी, विचूर्ण—७ ।

कैलि कार्बोनिकम ।

(KALI CARBONICUM)

(कार्बोनेट आफ पोटास)—मोटे—थुलथुले मनुष्य और जिनके शरीरकी मांस-पेशी ढीली रहती है, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। शरीरमें रस-रक्तका सचय होना या जीवनी शक्ति घट जानेकी वजहसे—रक्तहीनता (anæmia), २। सुई गडने या तीर विधनेकी तरह दर्द, रोगवाले अशको दवाकर सोनेपर या विश्रामसे यह दर्द बढ जाता है (घटना—ब्रायोनिया), दर्दकी तकलीफ गरम सेंकके प्रयोगसे घटना, ३। आँखकी पलक (ऊपरी) और भौंके वीचमें थैलीकी तरह सूजन, ४। स्त्री-सहवास, स्वप्नदोष, गर्भ-स्राव, छोटी माता प्रभृतिके वाद दृष्टि-शक्तिकी कमजोरी, ५। दर्दकी जगहपर स्पर्श सहन नहीं होता—जरा छूनेसे ही दर्द आरम्भ हो जाता है (दर्द पैरके तलवेमें अधिक होता है), ६। ठण्डी हवा और शीत सहन नहीं होता, गरमीमें आराम मालूम होता है, प्रत्येक ऋतु-परिवर्त्तनमें शरीर अस्वस्थ हो पडता है, पाकस्थली खूब फूल उठती है, उस समय पेटको छूनेसे तकलीफ होती है, जो खाता-पीता है, ऐसा मालूम होता है, कि यह सब वायुमें परिणत हो जाता है, डकार आनेपर घटना

८। सवेरे मुँह धोनेके समय नाकसे खून गिरना (फ्मोन-कार्ब, आर्निका) ९। कुछ खानेसे ही, ठण्डा या गरम कुछ भी दाँतमें लगनेपर दर्द होने लगता है १०। अकेला नहीं रह सकता, एक साथी चाहता है (अकेला रहना चाहता है—इग्ने, नक्स), ११। खाँसी—सामयिक और सूखी, आक्षेपिक खाँसी—ओकाई आती है, खायी हुई चीजकी कै हो जाती है, सवेरे ३।४ बजेनेके समय बढना, १२। ऋतुके समय और पहले कमरमे बेतरह दर्द, १३। दमाका कष्ट—उठ बैठनेपर या झुकनेपर घटना, रातके दोसे चार बजेतक बढना, १४। निगलनेके समय गलेमें काँटा गडनेकी तरह दर्द (हिपर, एसिड नाइट्रिककी तरह), १५। कब्जियत—मल बडा लेंड, पाखाना होनेके दो एक घण्टा पहलेसे ही शूलका दर्द, मलद्वारमे मानो काँटा गडता है, १६। सविराम ज्वर—दिनके ९बजेसे १२ बजे और सन्ध्या ५ बजेसे ६ बजेतक आक्रमण करता है, १७। सवेरे रोगका बढना, १८। निमोनिया या फेफडेकी किसी दूसरी बीमारीमें फेफडेमें जखम होनेपर—हैनिमैन कहते हैं—कैलि-कार्बके बिना रोगी शायद ही आराम होता है, २०। ऋतुकी गडबडी और प्रसव या गर्भस्रावके बादकी कई बीमारियाँ।

धातुगत पृथक लक्षण—कैल्केरिया-कार्बके रोगीको बरसातमे और कैलि-कार्बके रोगीकी बीमारी जाडेके दिनोंमे बढ़ती है; कैल्केरिया-कार्बका रोगी—शीत होनेपर भी सूखी जगहमें रहना

पसन्द करता है और अच्छा रहता है , कैलि-कार्बका रोगी—जगह गीली सीड-भरी रहनेपर भी, यदि हवा गर्म रहे तो उस जगहको पसन्द करता है। अच्छा रहता है। कैलि-कार्ब—एक एण्टि-सोरिक दवा है।

डंक मारनेकी तरह दर्द—ब्रायोनिया और कैलि-कार्ब ये दोनो ही एक तरहके लक्षणोंमे निर्दिष्ट है। ब्रायोनियामें सिर्फ रसस्रावी झिल्लियोंमे (फेफडेका ढकनेवाला पर्दा—प्लुरा (फुस्फुसवेस्ट), अन्त्र-आवरक पर्दा (पेरिटोनियम), मस्तिष्क-आवरक पर्दा (ऐरेकनायड) इत्यादि इसी जातिकी झिल्लियाँ है) और कैलि-कार्बमें—शरीरके सभी स्थान, 'यहाँतक कि दांत तकमें इसी तरहका दर्द होता है। ब्रायोनियामे—दर्द हिलने डोलनेपर बढता है। पर दबाकर सोनेपर घटनेपर भी—कितनी ही वार ब्रायोनियासे फायदा होता है)। कैलि-कार्ब—ब्रायोनियाका अनुपूरक है अर्थात कैलि-कार्ब—यदि ब्रायोनियाके वाद व्यवहृत होता है, तो उसकी क्रियामे सहायता पहुँचाता है।

श्वासयंत्रकी बीमारी और खाँसी—निमोनिया इत्यादि बीमारीमें दाहिनी ओरके फेफडेके नीचेका भाग आक्रान्त होनेपर और उसमें ऊपर लिखे ढङ्गका सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर—हिलने-डोलने और साँस लेने छोडनेके साथ कोई भी सम्बन्ध न रख—कैलि-कार्बका प्रदान करें। कैलि-कार्बमें—दर्द छातीसे आरम्भ होकर पीठतक चला जाता है ; निमोनिया हो या

प्लरो निमोनिया हो, सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर यदि ब्रायो-नियासे फायदा न हो,—कैलि-कार्बसे अवश्य ही फायदा होगा। (कैलि-कार्बका दर्द—स्थिर होकर बैठे रहनेपर बढता है और हिलने-डोलनेपर घटता है , यह ब्रायोनियाके ठीक विपरीत है)। इसके अलावा ऊपर यह कह देनेपर भी ऐसा न समझ लें, कि कैलि-कार्ब केवल दाहिनी ओरकी बीमारीमे फायदा करता है, सुई गडनेकी तरह दर्द (stitch pain),—यह निमोनियामे—छाती में बायीं ओर होनेपर भी समान भावसे लाभ करता है।

और भी देखिये—कैलि-कार्बकी तरह मर्कुरियस-सोलमे भी दाहिनी ओरकी छातीके निचले अंशमे दर्द रहता है , पर मर्कुरियस मे पसीना होकर भी बीमारी किसी तरह नहीं घटती—यही प्रधान लक्षण है (दाहिनी ओरकी छातीके ऊपरी भागके दर्दमे—कैल्के-रिया-आर्स , बायीं ओरकी छातीके ऊपरी भागके दर्दमे—यह स्कैपुला-अस्थि तक फैल जानेपर भी—मार्टस-काम्युनिस, पिक्स-लिकिडा, थेरिडियन, सल्फर और माइरिका , बायीं ओरके फेफडेके नीचेवाले भागके दर्दमें—नैट्रम-सल्फ और स्तनकी जगहके दर्दमे—एकटिया-रेसिमोसा लक्षण-भेदसे फायदा करते हैं)। कैलि-कार्बमें—खाँसी, दमा और हृद्पिण्डकी अन्यान्य बीमारियाँ सबेरे ३।४ बजनेके समय बढती हैं, इसमें अक्सर पीबकी तरह बलगम निकलता है, निमोनियाकी अन्तिम अवस्थामें खाँसनेपर बलगम पीबकी तरह, खाँसनेपर गला घर घर करता है, सुई गडनेकी तरह दर्द होता है, उस समय कैलि-कार्ब ही ज्यादा फायदा करता

पसन्द करता है और अच्छा रहता है , कैलि-कार्बका रोगी—जगह गीली सीड-भरी रहनेपर भी, यदि हवा गर्म रहे तो उस जगहको पसन्द करता है। अच्छा रहता है। कैलि-कार्ब—एक एण्टि-सोरिक दवा है।

डंक मारनेकी तरह दर्द—ब्रायोनिया और कैलि-कार्ब ये दोनो ही एक तरहके लक्षणोंमे निर्दिष्ट है। ब्रायोनियामे सिर्फ रसस्रावी झिल्लियोंमे (फेफडेका ढकनेवाला पर्दा—प्लुरा (फुस्फुसवेस्ट), अन्न-आवरक पर्दा (पेरिटोनियम), मस्तिष्क-आवरक पर्दा (ऐरेकनायड) इत्यादि इसी जातिकी झिल्लियाँ है) और कैलि-कार्बमे—शरीरके सभी स्थान, 'यहाँतक कि दांत तकमे इसी तरहका दर्द होता है। ब्रायोनियामे—दर्द हिलने डोलनेपर बढता है। पर दबाकर सोनेपर बढनेपर भी—कितनी ही बार ब्रायोनियासे फायदा होता है)। कैलि-कार्ब—ब्रायोनियाका अनुपूरक है अर्थात कैलि-कार्ब—यदि ब्रायोनियाके बाद व्यवहृत होता है, तो उसकी क्रियामे सहायता पहुँचाता है।

श्वासयंत्रकी बीमारी और खाँसी—निमोनिया इत्यादि बीमारीमे दाहिनी ओरके फेफडेके नीचेका भाग आक्रान्त होनेपर और उसमें ऊपर लिखे ढङ्गका सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर—हिलने-डोलने और साँस लेने छोडनेके साथ कोई भी सम्बन्ध न रख—कैलि-कार्बका प्रदान करें। कैलि-कार्बमें—दर्द छातीसे आरम्भ होकर पीठतक चला जाता है , निमोनिया हो या

प्लरो निमोनिया हो, सुई गडनेकी तरह दर्द रहनेपर यदि ब्रायो-नियासे फायदा न हो,—कैलि-कार्वसे अवश्य ही फायदा होगा। (कैलि-कार्बका दर्द—स्थिर होकर बैठे रहनेपर बढ़ता है और हिलने-डोलनेपर घटता है, यह ब्रायोनियाके ठीक विपरीत है)। इसके अलावा ऊपर यह कह देनेपर भी ऐसा न समझ लें, कि कैलि-कार्ब केवल दाहिनी ओरकी बीमारीमे फायदा करता है, सुई गडनेकी तरह दर्द (stitch pain),—यह निमोनियामे—छाती मे बायीं ओर होनेपर भी समान भावमे लाभ करता है।

<u>और भी देखिये</u>—कैलि-कार्बकी तरह मर्कुरियस-सोलमे भी दाहिनी ओरकी छातीके निचले अशमे दर्द रहता है, पर <u>मर्कुरियस</u> मे पसीना होकर भी बीमारी किसी तरह नहीं घटती—यही प्रधान लक्षण है (दाहिनी ओरकी छातीके ऊपरी भागके दर्दमे—फैल्के-रिया-आर्स, बायीं ओरकी छातीके ऊपरी भागके दर्दमे—यह स्कैपुला-अस्थि तक फैल जानेपर भी—मार्टस-काम्युनिस, पिक्स-लिक्विडा, थेरिडियन, सल्फर और माइरिका, बायीं ओरके फेफडेके नीचेवाले भागके दर्दमे—नैट्रम-सल्फ और स्तनकी जगहके दर्दमे—एकटिया-रेसिमोसा लक्षण-भेदसे फायदा करते हैं)। कैलि-कार्वमें—खाँसी, दमा और हृद्‌पिण्डकी अन्यान्य बीमारियाँ सवेरे ३।४ बजनेके समय बढ़ती है, इसमें अकसर पीवकी तरह बलगम निकलता है, निमोनियाकी अन्तिम अवस्थामें खाँसनेपर बलगम पीवकी तरह, खाँसनेपर गला घर घर करता है, सुई गडनेकी तरह दर्द होता है, उस समय कैलि-कार्व ही ज्यादा फायदा करता

है, पर इसके अलावा लक्षण मिलनेपर पहली अवस्थामे जब—श्वास कष्ट, सुई गडनेकी तरह दर्द, स्थिर होकर रह न सकना, रोगवाली जगहको दबाकर सो न सकना इत्यादि लक्षण रहते है, उस समय भी कैलि कार्ब फायदा करता है (सवेरे ४।५ बजेसे प्रात काल ७।८ बजेतक खाँसीका बहुत बढना, हॅफनीकी तरह खिंचाव होता है—पेमोन-कार्ब—३०)।

रक्तहीनता—कैलि-कार्बकी क्रिया—रक्तपर विशेष होती है। रोगी रक्तशून्य, शरीरका चमडा सफेद और बदरंग, बहुत कमजोर, आँख-मुँह फूले फूले दिखाई देते है, युवती स्त्रियोको पहली बार ऋतुके समय प्राय इसी तरहकी खूनकी कमी और कमजोरी दिखाई देती है और इस रक्तस्वल्पता के कारण वे क्रमश' फूल जाती है, इस तरहकी सूजन आँख-मुँहमे ही ज्यादा होती है। आँख मुँह फूलना और रक्तहीनतामे कैली-कार्बकी तरह—फास्फोरस और एपिस भी फायदा करता है, कैलि-कार्बमे—रक्तहीनताके कारण अच्छी तरह ऋतुस्राव नहीं होता। बहुत दिनोंतक मैलेरिया-ज्वर भोगकर अगर रक्तहीनता पैदा हो जाये—नैट्रम-म्यूर—उच्च शक्ति फायदा करता है।

—और फूल पडती है,

प्यास नहीं रहती

फूलती है, पर

इसमें आँखकी

कैलीकी तरह

हो ७

दर्द रहता है और निचला अंग एकदम सुन्न हो पड़ता है, इसी सुन्नपनके कारण रोगी धीरे धीरे बैठ नहीं सकता, एकाएक धप्पसे बैठ जाता है, चलनेके समय पैर काँपते हैं और पसीना होता है और या तो बैठ जाता है अथवा सो जाता है। फेरम-मेट्टालिकममें भी—रोगी रक्त-शून्य और कमजोर रहता है, पर इसमें आँखमें सूजन नहीं रहती। फास्फोरसमें—रक्तहीनताके साथ रोगीमें बेचैनीका भाव दिखाई देता है अर्थात रोगी लगातार यहाँ वहाँ किया करता है, इसमें समूचा चेहरा फूला फूला हो जाता है। आँखमें नीचे या ऊपर—एपिस और कैलि-कार्बकी तरह नहीं।

कमजोरी—ऊपर लिखी दवाओंके सिवा साधारण कमजोरी की और भी कई दवाएँ है, जैसे—रस-रक्त आदिके क्षयकी वजहसे होनेवाली कमजोरीमें—चायना, कैलिकार्ब, शुक्र-क्षयकी वजहसे कमजोरीमें चायना, एसिड-फास, ऋतुकी अनियमितताके कारण कमजोरीमें—पल्सेटिला, नैट्रम-म्यूर। इसमें भयानक दुर्बलता रहती है, रोगीमें भूख खासी रहती है, खाता भी खूब है, पर इतने पर भी क्षीण हो पड़ता है। सामान्य परिश्रमसे ही हाँफने लगता है और कलेजा धड़कने लगता है। नैट्रममें—रोगीके मनमें तेजी बिलकुल ही नहीं रहती, पल्सेटिलाकी तरह जरा-सी बातमें रो देता है, नैट्रममें—कैलि-कार्बकी तरह आँख नहीं फूलती, साराश यह कि—बहुत कमजोरी और रक्तहीनताके साथ कमरमें दर्द, जरा-सेमें ही पसीना होनेका लक्षण रहनेपर—डा० फेरिङ्गटन ऐसी अवस्थामें पहले ही कैलि-कार्बका

प्रयोग करनेका उपदेश देते हैं। साधारण कमजोरीमें—एलफाल्फा, एलफैल्फो-टानिक, एवेना-सैट—इत्यादि।

गलनलीकी बीमारी—हिपर-सलफर, नाइट्रिक-एसिड, अर्जेण्ट-नाइट्रिकम, डलिकस इत्यादि दवाओंकी तरह कैलि-कार्बम भी गलेमे मछलीका काटा गडनेकी तरह दर्दका लक्षण है। भोजन-सामग्री अकसर वायुनलीमे घुस जाती है और विषम हो जाता है। मुँहका स्वाद तीता, मुँहमे लार रहनेपर भी सूखापन।

नाकसे रक्तस्राव—सवेरे प्राय दिनके नौ बजनेके समय नाकसे खून निकलने लगता है, मुँह धोनेके समय भी खून निकलता है।

डर जाना—एकाएक डर जाना और डर कर चिल्ला उठना, सामान्य कारणसे भी डर जाना, चौंक उठना, ये स्नायु-दुर्बलताके परिचायक और कैलि-कार्बके विशेष लक्षण है।

पेट फूलना—रोगी जो कुछ खाता है, वह मानो सभी वायुमे परिणत हो जाता है, थोडा भी खानेपर पेटमे भार हो जाता है और पेटमे वायु इकट्ठा हो जाया करता है, पेट गरम मालूम होता है और फूल उठता है, कभी कभी पेटमे अकडनकी तरह दर्द होता है, जरा छूनेपर ही दर्द मालूम होता है, पेट इतना फलता है, कि मालूम होता है, कि फट जायगा। कार्बो-वेज, लाइकोपोडियम, चायना, एसाफिटिडा, रैफेनस-सैटाइवा, इत्यादि दवाओंमें भी इसी तरह पेट फूलना और पेटमें वायु जमा होनेका

लक्षण है, पर कैलि-कार्ब—वृद्ध, रक्तहीन और स्वास्थ्य-भग हुए मनुष्योंकी वीमारीमे ही ज्यादा फायदेमन्द है। (लाइकोपोडियम अध्याय देखिये)।

अतिसार—पेटमे किसी तरहका दर्द नहीं रहता, मलका रग फीका पीला, नयेकी अपेक्षा पुराने अतिसार और जहाँ बहुत दिनोतक मन्दाग्नि रोग या यकृतकी कोई बीमारी भोगनेके कारण रोगीको अतिसार रोग हो गया है, वहाँ कैलि-कार्ब फायदा करता है। मौंके नीचे फूले रहनेसे और भी ज्यादा फायदेमन्द होता है।

नाड़ी—कैलि-कार्बकी नाडीकी गति कुछ देरतक तेज, फिर धीमी, हृत्पिण्डका स्पन्दन भी इसी ढङ्गका होता है।

पेशावकी बीमारी—पेशावके साथ युरेटका निकलना और इसी वजहसे कमजोरीमे कैलि-कार्बकी तरह—कास्टिकम भी फायदा करता है। कैलि-कार्बमें लगातार पेशावका एक वेग रहता है (प्राय रातमे इस तरहका वेग कुछ अधिक होता है), जो हो, वेग रहनेपर भी मसानेकी शक्ति घट जानेके कारण रोगी को बहुत देरतक बैठे रहना पडता है और अन्तमें बहुत धीरे धीरे पेशाब निकला करता है। पेशावके बाद भी बूँद बूँद पेशाब चुआ करता है, पेशाब आगकी तरह गरम होता।

ऋतु-स्राव—ऋतुस्राव बहुत देरसे होता है, ऋतु खूब जल्दी जल्दी और परिमाणमें ज्यादा होनेपर भी कैलि-कार्ब फायदा

करता है। ऋतुस्राव बन्द—जिन्हें अजीर्णकी बीमारी रहती है, पेट फूलता है और पाकस्थलीमे बहुत दर्द होता है, पलकें फूलती हैं, जरासे में ही सर्दी लग जाती है, सर्दी सहन नहीं होती, ऋतुके पहले पेटमे शूलका भयानक दर्द होता है, उनको इस ढङ्गकी बीमारीमें यह अन्यान्य दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है।

गर्भ-स्राव—गर्भस्राव हो जानेकी सम्भावना हो जाने पर अन्यान्य उपसर्गों मे यदि कमरका दर्द हो सबसे अधिक तकलीफ देनेवाला लक्षण हो, ऐसा मालूम हो मानो कमर टूटती जा रही है, तो कैलि-कार्बसे ही फायदा होगा। प्रसवके बाद या गर्भ-स्रावके बाद जरायुका प्रदाह (Puerperal metritis), प्रसवके बादका स्राव बन्द, जरायुमे तेज दर्द, इसके साथ ही बोखार रहे या न रहे—कैलि-कार्ब फायदा करता है।

कमरका दर्द—एक तरहका दर्द होता है, वह पहले कमरसे आरम्भ होती है, इसके बाद—कूल्हा, कूल्हेंसे उरुके पिछले भागमें चला जाता है, रोगी एकदम चल नहीं सकता, बैठ जाता है, बिछावनपर सो भी नहीं सकता, तकलीफ होतो है।

सायेटिका और हिप-डिजीजमें भी—कैलि-कार्ब फायदा करता है। जिनको यह बीमारी कुछ ठण्डी हवा लगकर अथवा शीतमें या ठण्डमे और रातके ३ बजे या सवेरे बढती हैं, उनके लिये यह बहुत ज्यादे फायदेमन्द है।

ठण्डेमें रोग-वृद्धि—रोगी सामान्य शीत या सर्द हवा सहन नहीं कर सकता, जरा-सी सर्दी लगनेपर ही बीमार हो

जाता है या बीमारी बढ जाती है (हिपर, कैल्केरिया-कार्ब वगैरह कई दवाएँ भी इस लक्षणमें व्यवहृत होती हैं)।—कैलि-कार्ब—इन लक्षणोंकी तरह सर्दी लगनेसे पैदा हुई बीमारीमें यद्यपि व्यवहृत होता है, पर यह सर्दी लगनेकी प्रतिषेधक दवा है और बीच बीचमें सेवन करते रहनेपर रोगीकी धातु इस तरह बदल जाती हैं, कि कोई विशेष कारण हुए बिना सहजमें सर्दी नहीं रुकती। इसकी प्राय सभी बीमारियोंके उपसर्ग—सवेरे ३ बजेसे ४ बजे और ठण्डी ऋतुमें बढते हैं—बरसातमें इतने नहीं बढते (बरसातमें बढ़ना—नैट्रम-सल्फ, डलका, हिपर)।

वृद्धि (aggravation)—रातके ३ बजेसे ५ बजे, विश्रामसे दाहिनी करवट सोनेपर, रोगवाली करवट दबाकर सोनेपर, सामनेकी ओर झुकनेपर, खाँसनेपर, सवेरे, सध्याके बाद सोनेपर, ठण्डी हवामें, गर्म पानीय पीनेपर, दबानेपर।

ह्रास (amelioration)—दिनके समय टहलनेपर, निर्मल हवामें, उत्तापसे, ठण्डा पानी पीनेपर और उदरका दर्द दबानेपर।

सम्बन्ध—हनिमैन कहते हैं—नेट्रम-म्यूरियेटिकसे अगर रुका हुआ रजस्राव फिरसे न होने लगे—कैलि-कार्ब दो चार मात्रासे ही फायदा होता है। घरघराहटवाली खाँसीमें—कैलि-सल्फ, फास और स्टैनमके बाद यह फायदा करता है।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, कार्बो, एसिड-फ्लोर, लाइको, एसि-नाइ, फास, पल्स, सिपि, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, काफि, डालका।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—६—१००० शक्ति।

फारमुला—जलीय क्रम—५ प, विचूर्ण—७।

कैलि-क्लोरिकम।

(KALI CHLORICUM)

(पोटासियम-क्लोरेट)—जर्मनीके सुप्रसिद्ध डा० मार्टिनने इस दवाकी सबसे पहले परीक्षा की थी। इसके द्वारा हृत्पिण्डकी क्रियाका घटना, हृत्पिण्डका पक्षाघात और जल्दी जल्दी शारीरिक ताप घट जाता है। साधारणत मुँहके जखममे कुल्ला (gargle) करनेके लिये ही इस दवाका अधिक व्यवहार होता है। गर्भावस्थामे रक्तका विषैला हो जाना (Toxœmia) होकर जो बीमारी होती है, उसकी यह वढिया दवा है।

जखम—स्टोमाटाइटिस नामक मुँहके प्रदाहमें और जखममें इस दवासे कुल्ला करनेपर प्रदाह घटकर बीमारी बहुत जल्द आरोग्यकी ओर अग्रसर हो जाती है। इसके साथ ही इसकी ३ री शक्ति भीतरी सेवन करनेपर और भी ज्यादा फायदा होता है।

पाकस्थलीका जखम, आँतका जखम, दाँतके मसूढेका जखम, पारा सेवन करनेकी वजहसे मुँह और जीभका जखम, सांघातिक

रक्तामाशय—इसी वजहसे आँतोंमें जखम, बच्चा और स्तन पिलाने वाली प्रसूताके मुँहका जखम, बहुत अधिक बलक्षय, कमजोरी और गला तथा मुँहके भीतर सडन (ग्रैंग्रीन), बच्चोंके मुँहका सडनेवाला जखम (ग्रैंग्रीन), फाक्रम-आरिस प्रभृति कई साघातिक और प्राणनाशक बीमारियोंमें भी इससे बहुत कुछ फायदा होना सम्भव है। किसी भी तरहका घाव क्यों न हो, जखमसे जब भयानक सडी बदबू आती है, लोग पास नहीं बैठ सकते, वही इसके व्यवहारका उपयुक्त समय है।

एलब्रुमिनुरिया—पेशाबमें एलबुमेनका अंश अधिक, पेशाब खूब कम होता है, या एकदम बन्द रहता है, गर्भावस्थामें यह ज्यादा फायदा करता है।

आमाशय—मलका परिमाण बहुत थोडा—उसके साथ रक्त, पेटमें असह्य दर्द, कुथनके साथ कमजोरी।

इसके अलावा—हिमाचुरिया, फालिक्युलर फेरिंजाइटिस, फैटी-डिजेनेरेशन, प्रदाहयुक्त नखशूल प्रभृति बीमारियोंमें भी इसका व्यवहार होता है।

हाइड्रैस्टिस नामक दवा भी नाना प्रकारके जखमोंकी महौषधि है। उसका अध्याय पढिये।

कुल्ला करनेके लिये—शुद्ध क्लोरेट आफ पोटास—१५—२० ग्रेन, कुछ गर्म पानीमें १ आउन्स, इस मात्रामें मिलाकर लेनेसे यथेष्ट फायदा होता है।

क्रम—१x, ३, ६ शक्ति।

फारमुला—जलीय क्रम—५ वी, विचूर्ण—७।

कैलि-साइट्रिकम।

(KALI CITRICUM)

यह दवा सिर्फ कोरगड घटित मूत्रपिण्ड-प्रदाह (ब्राइटस-डिजिज) और नेफ्राइटिस या मसानेका प्रदाहमें व्यवहृत होती है। ३ री शक्ति, १ ग्रेन मात्रामें कुछ गर्म पानीके साथ रोज सवेरे तबतक सेवन करना चाहिये, जबतक फायदा न हो।

फारमुला—७।

कैलि-सियानेटम।

(KALI CYANATUM)

(सियानाइड आफ पोटास)—जीभका जखम और कैन्सर, उसके किनारे खूब कडे रहते हैं। मुँहका स्नायुशूल—भयानक दर्द। सामने कनपटीमें, आँखमें और मसूढेकी हड्डीमें तेज दर्द, दर्द वेग एक ही बँधे समयपर पैदा होता है, इसका दर्द और तकलीफ इतनी अधिक होती है, कि रोगी चिल्लाकर रोता है और कभी

कभी बेहोश हो जाता है। एक तरहकी खाँसी—जिसमें रोगी सो नहीं सकता, इसके व्यवहार करनेसे फायदा होगा। किसी किसीका कहना है, कि यह पानीमें गलाकर चारों ओर छिड़क देनेपर चेचक रोगका फैलना घटता है

कैलि-फेरोसियानेटम—यह सिपियाकी तरह जरायु का नीचेकी ओर खिंचाव,पीला या सफेद गाढा प्रदर और हृत्पिण्ड मे तेज दर्द—इन कई बीमारियोंमे व्यवहृत होता है।

वृद्धि (aggravation)—सन्ध्याके ४ बजेसे, सबेरे—४ बजेतक।

क्रम—३ री शक्ति। फारमुला—७।

कैलिहाइपोफासफोरिकम।

(KALI HYPOPHOSPHORICUM)

पुराना ब्राङ्काइटिस (Chronic Bronchitis) की बीमारीमें बलगम—बहुत गाढ़ा, कड़ा, बहुत बदबू, बहुत थोड़ा बलगम निकलना, इन सभी लक्षणोंमे व्यवहृत होनेपर सम्भवतः इससे बहुत जल्द फायदा होगा।

पुराने ब्राङ्काइटिसमें—साधारणतः—एमोनियेकम, एण्टिमोनियम-सल्फ, बेल्समम, कैल्केरिया-सल्फ, कैप्सिकम, कार्बो-एनिमेलिस, प्रिण्डेलिया, क्रियोजोट, होपर लोबेलिया, नाइट्रिक-

एसिड, सैंगुनेरिया, सिलिका, स्टैनम, सलफर प्रभृति दवाएँ व्यवहृत होती हैं। इनके लक्षण इनके अध्यायमें देखिये।

क्रम—३ री से लेकर ६ ठी शक्ति।

फारमुला—टिंचर—५ प, विचूर्ण—७।

कैलि हाइड्रियोडिकम या कैलि आयोडेटम।

(KALI HYDRIODICUM OR KALI IODATUM)

(आयोडाइड आफ पोटास)—उपदश और पाराके अपव्यवहारसे पैदा हुई बीमारियोंमे लाभदायक है। यह खाल उधेड देने वाली नयी सर्दी, उसके साथ ही कपालमे भयानक दर्द, थोडी-सी भी सर्दी लग जानेपर सर्दी हो जाना, नाकसे पानी गिरना, आँख-मुहका फूल जाना, गलेमे दर्द, घाव, ये सब पारेके और उपदश-धातुवाले व्यक्तियोको अकसर ही हुआ करते हैं,—कैलि-हाइड्रो इनका परम बन्धु है। पाराके अपव्यवहारकी वजहसे मुँहका घाव, गलेमे, मसूढ़ेमे घाव, जरासेमें ही मसूढे से खून निकलने लगना इत्यादि लक्षणोंमें—कैलि-हाइड्रो ज्यादा फायदा करता है। उपदश की दूसरी और तीसरी अवस्थामें खासकर जब अर्बुद हो जाता है और पेशी बन्धनी (tendon), पेशी आवरणींका पतला परदा (fascia) मोटा और कडा हो जाता है, उस समय इससे ज्यादा फायदा होता है। श्वासयत्र और मसाना प्रभृति स्थानोंकी श्लैष्मिक

झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है, ग्रन्थियोंके ऊपर भी—हिपर, मर्कुरियसकी तरह क्रिया प्रकट करता है।

नयी-सर्दी—पारा-विषसे दूषित धातु, इस तरहकी धातुवाले मनुष्यको थोड़ी-सी भी सर्दी लग जानेपर ही नाकसे पानी गिरने लगता है, आँख-मुँह फूला फूला दिखाई देता है, आँखसे पानी गिरता है, कभी जाड़ा और कभी गरमी मालूम होती है, मुँह और गलेमें घाव, ये सब कैलि-हाइड्रोके लक्षण हैं।

श्वासयंत्रकी बीमारी—श्वासयन्त्रके ऊपर भी इस दवाकी क्रिया दिखाई देती है। बहुत सर्दी लगकर खाँसी हो जाने पर और यह खाँसी बहुत दिनोंतक बनी रहनेपर और यदि निमोनिया आराम हो जाने बाद किसी तरह भी खाँसी के न छूटनेपर, यहाँतक कि यदि यक्ष्माका लक्षण भी दिखाई दे, तो—कैलि-हाइड्रो फायदा करता है। खाँसीमें—श्लेष्मा फलेजेके निचले अशसे निकलता है, खाँसनेके समय दोनों कन्धोंके बीचमें दर्द मालूम होता है, खाँसनेपर जो बलगम निकलता है, वह गाढ़ा और परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है, रोगी बहुत कमजोर हो पड़ता है। बहुत ज्यादा परिमाणमें गाढ़ा बलगम निकल्नेमें—कैलि-हाइड्रोकी तरह सँगुनेरिया और स्टैनम भी लाभदायक है। पर उनमें प्रभेद यह है कि—सँगुनेरियाके बलगममें बहुत बदबू रहती है, यहाँतक कि उससे रोगीको स्वय ही घृणा होने लगती है, स्टैनमका बलगम—का स्वाद मीठा होता है और कैली-हाइड्रोका

बलगम—नमकीन होता है। कैलि-हाइड्रो और स्टैनमके बलगमका रग हरी आभा लिये रहता है, कितनी ही बार कैलि-हाइड्रोका बलगम—थूक या साबुनके फेनकी तरह बुलबुलेदार होता है। गाढ़ा और हरे रगका बलगम पानेपर—डा० नैश पहले ही—कैलि-हाइड्रोका प्रयोग करनेका उपदेश देते है। पलसेटिलामे भी—गाढ़ा और हरे रगका बलगम होता है, पर उसका स्वाद तीता—सिपियामे—कैलि हाइड्रोकी तरह नमकीन स्वादवाला बलगम निकलता है। पीनस रोगमें स्वरयन्त्र और कण्ठस्वर नकियाकर बोलनेकी तरह हो जाता है।

दमा—जिस रोगीको बहुत श्वासकष्ट रहता है, जरा चलने-फिरनेसे ही हाँफने लगता है, खाँसी बहुत कुछ सूखी रहती है, साबुनके फेनकी तरह बलगम निकलता है,—उसके लिये—कैलि-आयोड लाभदायक होता है।

द्रष्टव्य :—फेफडेमे पानी इकट्ठा होना (Hydrothorax), वायु इकट्ठा होना (Emphysema), पुराना निमोनिया, उसमें खोंचा मारने और काटने, फाडनेकी तरह दर्द रहता है, फेनकी तरह बलगम निकलता है इत्यादि लक्षण रहनेपर और प्लुरामें पानी इकट्ठा होना, इसके साथ ही श्वासकष्ट और लगातार आक्षेपिक खाँसी, यक्ष्मा रोगमे लार निकलना और कमजोर करनेवाला रातका पसीना और जिस बीमारीमें आयोडमके लक्षणके साथ प्रभेद करनेमें गडबडी मचती हो, वहाँ कैलि-आयोड देकर धीरजके साथ अपेक्षा करें।

निमोनिया—निमोनियाके बाद जो खाँसी आती है, उसमें नहीं, बल्कि असली निमोनियामें—कैलि-हाइड्रो फायदा करता है। फेफड़ेमें रस जमा होकर यदि फेफड़ा कड़ा होना आरम्भ हो जाये अर्थात हेपाटाइजेशन (hepatization) वाली अवस्थामें इस दवाकी जरूरत पड़ती है। ब्रायोनिया, फास्फोरस इत्यादि दवाके ठीक ठीक लक्षण न मिलनेपर—ऐसे स्थानमें डा० फैरिङ्गटन कैलि-हाइड्रो देनेका उपदेश देते हैं। ब्राङ्काइटिस, निमोनिया प्रभृति फेफड़ेकी बीमारियोंकी वजहसे मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता, आँख लाल रंगकी, विकार, मस्तिष्कमें जल-सञ्चय, श्वास-प्रश्वास जल्दी जल्दी, आँखकी पुतली फैली, तन्द्राच्छन्न या अज्ञान होकर लगातार सर हिलाते रहना इत्यादि लक्षणोंकी और मेनिञ्जाइटिसकी यह श्रेष्ठ दवा है।

ऊपर लिखे कितने ही लक्षण अर्थात मस्तिष्कमें रक्तकी अधिकता, आँखें लाल, आँखकी पुतली फैली इत्यादि लक्षण—बेलेडोनामें भी हैं, पर बेलेडोनामें फेफड़ेकी यकृद्भाव प्राप्ति नहीं है, इसलिये ऐसी अवस्थामें भूलसे बेलेडोनाका प्रयोग करनेपर और मस्तिष्कका जलसञ्चय (effusion) आराम न होनेपर, रोगीकी मृत्यु ही हो जाती है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डकी बीमारीमें ऐसा मालूम होता है, कि किसीने हृत्पिण्डको दबा रखा है। इसलिये, मानो साँस रुक जाती है और रोगी एकाएक नींदसे जाग उठता है—इसमें—कैलि-हाइड्रो फायदा करता है।

वात—घुटने फूलना और उसमे दर्द, यह दर्द रातमे बिछावनपर पडे रहनेसे बहुत बढ जाता है। गृध्रसी वात रोगमे (scitica)—रातमे बिछावनमे सोये रहनेपर और विश्राम करने पर दर्दकी तकलीफ अगर बढ जाये—कैलि-हाइड्रो फायदा करता है।

गर्मी या उपदंशकी बीमारी—सेकेण्डरी और टार्सियरी उपदशकी बीमारीमे यह ज्यादा फायदा करता है। हाथमें चबाने या बेधनेकी तरह दर्द, नाक और सामनेकी ओर कपालकी हड्डीमे टपककी तरह दर्द, नाकमें घाव, नाककी खाल उधड जाना, नाकमे पपडी जमना, नाकसे पीला या हरे रगका स्राव निकलना और टार्सियरी-उपदशमे—माथेमे घाव, सरमे दर्द, माथेमें बतौडी (Nodes) की तरह होकर फूल उठना, माथेमे पेठनकी तरह उपदशके कारण सरके केशका रग बदल जाना इत्यादि लक्षणोंमे कैलि-हाइड्रो फायदा करता है।

अर्बुद—यह पेरिस्टिरियम अर्थात अस्थि-आवक पर्दा (tumour) के ऊपर होनेपर कोई कोई कहता है—कैलि-हाइड्रो ही उसकी पहली दवा है।

दर्द—बाएँ उरु-शिरामे तेज दर्द, रोगी लँगडाकर चलता है।

कई दूसरी बीमारियाँ—पाराके अपव्यवहारकी वजह

से होनेवाली या उपदंशसे पैदा हुई सभी बीमारियोंमें इसका व्यवहार किया जा सकता है।

दाहिने घुटने और सायटिका स्नायुका दर्द, रातके समय बढ़ना और रोगवाली जगह दबानेपर दर्द, स्पाइनल-मेनिञ्जाइटिस, माथेके ऊपर कड़ी सूजन (वातके कारण भी एक तरहकी बतौड़ी या सूजन होती है), मसानेकी बीमारी, आँखके कोरायड और आइरिस (Choroid & Iris चक्षुताराका) प्रदाह, एसच्यूलर केरेटाइटिस इत्यादि बीमारियोंकी—कैलि-हाइड्रो उत्तम दवाई है।

पारेके अपव्यवहारमें, कैलि-हाइड्रोके अलावा—हिपर, नाइट्रिक एसिड, एसाफिटिडा, अरम-मेट, मेजेरियम, स्टिलिञ्जिया, स्टैफिसेग्रिया प्रभृति बहुत सी दवाओंका प्रयोग होता है —

हिपर—यह पाराका दोष नष्ट करता है (antidote), शरीरमें, और मुँहमें घाव, हड्डीमें दर्द, अजीर्ण दोष, मानसिक उद्वेग प्रभृति रहता है।

अरम-मेटालिकम—पाराके अपव्यवहारकी वजहसे हड्डीका जखम, खासकर, तालु और नाककी हड्डीपर रोगका हमला होनेपर और उसमें बहुत दर्द रहनेपर फायदा करता है—आयोडम—जब ग्रन्थियोंपर आक्रमण होता है।

स्टैफिसेग्रिया—जब शरीर बहुत जीर्ण-शीर्ण होता जाता है और गाल, गला, जीभमें घाव और हड्डीमें दर्द होता है। अकसर जीभ और गलेमें घाव हो जाता है।

एसिड-नाइट्रिक—गर्मी-रोगवाले मनुष्योंका पारेके अपव्यवहार

की वजहसे गौण जखम, (Secondary uleer) अस्थि-वेष्टनी (periosteum) पर बीमारीका दौरा होकर हाडमें दर्द, रातमें दर्दका बढना।

मेजेरियम—पारा सेवन करनेकी वजहसे आँख और मुँहमें स्नायु-शूलका दर्द।

स्टिलिञ्जिया—वातकी बतौडी, (Nodes) होना आरम्भ होने पर फायदा करता है।

एसाफिटिडा—हड्डीके भीतर तीर बिंधनेकी तरह दर्द, पेरियोस्टियममें दर्द और सूजन, जखम धीरे धीरे हड्डीपर आक्रमण करता है, पतला बदबूदार पीव निकलता है, अस्थिक्षत (Caries of bones)। इसमें रोगवाली जगहपर भयानक टपकका दर्द रहता है, रातमें वह बढ जाता है, स्पर्श बिलकुल सहन नहीं होता, छूने नहीं देता।

वृद्धि (aggravation)—दाहिनी ओर रोगवाली करवट सोनेपर, शीतमें, रातके ३—४ बजे, गर्म चीजें पीनेपर छूनेपर, चबानेपर।

ह्रास (amelioration)—चलनेपर, निर्मल वायुमें और गर्मी लगनेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—एमोन-म्यूर, आर्स, चायना, मर्क, रस, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति, गौण उपदंशमें उच्च शक्ति।
फारमुला—जर्मनी—६ वी, अमेरिकन—५ वी, विचूर्ण—७।

कैलि-म्यूरियेटिकम।

(KALI MURIATICUM)

(पोटासियम क्लोराइड)—यह भी डा० शुसलरकी एक वायोकेमिक दवा है। एकोनाइट, बेलेडोना, फेरम-फास प्रभृति दवाएँ प्रदाहकी पहली अवस्थाकी दवाएँ हैं। उनकी अवस्था बीतकर जब दूसरी अवस्थामें एक्जुडेशन अर्थात रस-जमना आरम्भ हो जाता है, उस समय इस तरहकी दवा अर्थात—कैलि-म्यूर प्रभृति दवाओंकी जरूरत पडती है। बहरा होनेकी पहली अवस्थामें अर्थात चर्बी, गरम मसाले मिले पदार्थ आदि खानेके कारण अजीर्णकी बीमारी हो जानेपर इससे ज्यादा फायदा होता है।

इस दवाको हमेशा जिन बीमारियोंमें व्यवहारकर हमलोगोंको फायदा दिखाई देता है, उनमेंसे कुछका विवरण नीचे लिखा जाता है —

सब तरहकी ग्रन्थियोंकी सूजन, पहली अवस्थाके प्रदाहके बाद, प्रादाहित स्थानमें रस इकट्ठा होकर सूजन, कर्णमूल और स्तनकी सूजन, उपदंश, बाघी, पीव, बल्गम, प्रमेह, श्वेत-प्रदर प्रभृति सभी तरहका स्राव गाढ़ा, सफेद रंगका और लसदार।

आगमे जलकर छाले, विसर्पके छाले, प्लीहा और यकृत बढे हुए, तालुमूलका फूलना । आँखके प्रदाहमे—आँख लाल रगकी, जलन, तकलीफ इत्यादि और नये उपसर्ग गायब होकर, सफेद रगकी पपडी जमना और पीवका स्राव होना । यकृतकी क्रियाकी गडवडी की वजहसे कामला । कब्जियत—दस्तका रग उजला, पित्त नहीं रहता । जीभकी जडमे सफेद या खाकी रगका मैल जमना इत्यादि इसके चरित्रगत लक्षण है ।

कैलि-म्यूर ओर भी कितनी ही बीमारियोंमे फायदा करता है—

१ । मुँह और जीभपर सफेद रगका घाव, जीभ फटी, मुँहके भीतर दर्द , २ । फैरिन-जाइटिसमे—गलेके भीतर छोटे छोटे दाने के रूपमे सफेद रगकी फुन्सियाँ , ३ । मलद्वारमे छोटी छोटी क्रिमि, इसी वजहसे मलद्वारका कुरकुर करना, ४ । पेरिटोनाइटिस,टाइफि-लाइटिस प्रभृति बीमारियोंकी दूसरी अवस्थामे पेटमे दर्द और सूजन , ५ । प्रमेहकी दूसरी अवस्था—स्रावका रग सफेद, गाढा, परिमाणमे थोडा , ६ । आमाशयमे—पेटमे बहुत दर्द, वेग और कुथन, वार वार जल्दी दस्त आना , घरमे आम और खून मिला रहता है, तथा लसदार बना रहता है ; स्त्री-रोग—रज स्राव एक-दम बन्द या देरसे होता है, अथवा खूब जल्दी जल्दी, यहाँतक कि तीन सप्ताहके बाद ही ऋतुस्राव हो जाता है, खून थक्का थक्का रहता है, रग अलकतरेकी तरह काला और गहरा , श्वेत-प्रदर—इसमे किसी तरहकी तकलीफ नहीं रहती , रग मठा या दूधकी तरह सफेद ; ८ । सूतिका-ज्वर , ६ । ब्राङ्काइटिस, प्लुरिसि,

निमोनिया प्रभृति बीमारियोंकी दूसरी अवस्थामें जब बलगम लसदार और गोंदकी तरह निकलता है १०। स्कन्ध-सन्धिमें दर्द—इसके दबानेपर कुछ ज्यादा मालूम नहीं होता , पर हाथ उठानेपर, हड्डीके भीतर भयानक दर्द (फाइटोलेक्का और सिफिलिनममें—स्कन्ध-सन्धिमें और उर्द्धबाहुकी पेशीके जोडकी जगहपर भीतर दर्द रहता है) , ११। लिखते लिखते कुछ देर बाद हाथ अकड जाते हैं , १२। पुराना वातका दर्द—हिलने-डोलनेपर दर्द बढता है , १३। चर्म-रोगके साथ या कोई चर्म-रोग आरोग्य होनेपर मृगी ; १४। थूजा और साइलिसियाकी तरह गो-बीजका टीका दिल्वानेके दोषसे नाना प्रकारके उपसर्ग इत्यादि इस तरहकी कितनी ही बीमारियोंमें इसको व्यवहारकर हमलोगोंको बहुत अधिक फायदा दिखाई देता है।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—७।

कैलि-नाइट्रिकम।

(KALI NITRICUM)

(पोटैसियम नाइट्रेट)—फेफडा, मेरुदण्ड, हृत्पिण्ड, मसाना, और खूनपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

दाहिनी नाकके भीतर रक्त-अर्बुद (polypus) अतिसार,

रक्तामाशय, मूत्रकृच्छ्रता, बिना चीनीका बहुमूत्र, दमा, नया वात प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें इसका हमेशा व्यवहार होता है।

पेशाबकी बीमारी—पोटास-नाइट्रेट मसानेकी राहसे बहुत जल्द शरीरसे पेशाबके साथ निकल जाता है, इससे मूत्र-यन्त्र और मूत्रपथमें उत्तेजना पैदा होती है, इस उत्तेजनाके कारणसे ही बहुत अधिक परिमाणमें रक्तस्राव होता है, पेशाबमें म्यूकस अर्थात श्लेष्मा आदि ज्यादा मात्रामें रहनेपर, पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व १०३० से १०४० तक हो जाता है, सूजाकका प्रदाह मूत्रनलीके पीछेकी ओर जाकर मूत्राशयमें भी अगर प्रदाह हो जाये तो इससे फायदा होता है। एलबुमिनूरिया तथा मूत्रकृच्छ्र रोगमें लाभदायक है।

आमाशय—विशेष लक्षणके लिये मर्क्युरियस सोल अध्याय देखिये। आमाशयकी पहली अवस्थामें—एकोनाइट इत्यादिके प्रयोगसे जब पेटका काटने-फाडनेकी तरहका दर्द दूर नहीं होता, बहुत वेग, कुथन, प्यास और हाथ-पैर ठण्डे रहते हैं, उस समय कैलि-नाइट्रिकसे फायदा होगा। अतिसारमें-मल पतला और खून-मिला रहता है। कब्जियतमें—कड़ा मल खूब वेग देने पर कहीं निकलता है।

दमा-खाँसी—जिस बीमारीमें बहुत श्वास-कष्ट हो, पर बलगम सहजमें ही निकल जाता हो, इसके साथ ही कलेजेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द या मानो कलेजेमें जलन होती है, आक्षेपिक

खाँसी और गलेमें फाँ फाँ आवाज होती है, ये कई लक्षण रहते हैं, वहाँ—कैलि-नाइट्रिकका प्रयोग करना चाहिये।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृद्रोगकी वजहसे श्वास-कष्ट, हाँफा करता है, इसके साथ ही समूचा शरीर जल्दी जल्दी फूल उठता है, गला जकड जाता है, सवेरे कलेजेमें दर्दके साथ सूखी खाँसी रहती है, बलगमके साथ खून निकलता है।

ऋतुस्राव—स्रावका रंग देखनेमें दावातकी स्याहीकी तरह काला (सैबाइना देखिये)।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर।

क्रम—३ री ६ ठी शक्ति।

फारमुला—टिंचर—५ प, विचूर्ण ७।

कैलि पर्मैङ्गनिकम ।

(KALI PERMANGANICUM)

(इसका दूसरा नाम है—पोटास-पर्मैङ्गनेट)—यह गला नाक और स्वरयंत्रमें बहुत अधिक उत्तेजना, डिफ्थीरियामें, बाधक में और साँप या कोई दूसरा विषैला जन्तु काटने तथा पीब, प्रसव के बादका क्लेद (lochia) प्रभृति किसी भी स्रावमें बहुत बदबू रहनेपर और उसके रक्तके साथ मिलकर सेप्टिक अवस्था प्राप्त

होनेपर एलोपेथिक इञ्जेक्शनमें व्यवहृत होता है। प्रसवके बाद बहुत दिनोंतक रक्तस्राव और यह रक्त बहुत ही बदबूदार होनेपर इसको निम्न-शक्तिके भीतरी सेवनसे बहुत फायदा होगा। डिफ्थीरियामें अगर मुँहसे सड़ी गन्ध निकलती हो तो पहले ही इसका प्रयोग करना चाहिये।

नाकसे खून निकलना, गलेके भीतर सूजन और दर्द, खखारने पर गलेसे जो बलगम आदि निकलता है उसके साथ रक्त, नाकके भीतर दर्द, जीभमें घाव, उपजिह्वा फूली, साँसमें बदबू प्रभृति की यह उत्कृष्ट दवा है।

कैलि-पर्मैङ्गन—बाहरी और भीतरी दोनों ही तरहका इसका प्रयोग होता है, बाहरी प्रयोगके लिये—पोटास-पर्मैङ्गन—१ ड्राम, १ कार्ट (प्राय १ सेर) पानीमें मिला ले (पोटास-पर्मैङ्गन देखने में ठीक मैजेण्टा रंगके चूरकी तरह और पानीमें डालनेपर ठीक मेजेण्टाकी तरह ही लाल रगका हो जाता है), इसके द्वारा कैन्सर का सड़ा जखम, ओजिना (नकसीर) या किसी तरहके स्रावकी बदबू बहुत जल्द दूर होती है, जखम साफ हो जाता है। प्रसवके बाद और प्रमेह रोगमें भी कितने ही चिकित्सक इसको पिचकारी दिलानेकी व्यवस्था करते हैं।

क्रम—भीतरी सेवनके लिये—२x शक्ति पानीके साथ खानी चाहिये।

फारमुला—५ बी।

कैलि फास्फोरिकम ।

(KALI PHOSPHORICUM)

(पोटासियम फास्फेट)—यह एक बायोमिक दवा होनेपर भी डा० एलेनके निर्देशके अनुसार सदृश विधानके अनुसार कुछ दिन इसकी परीक्षा हुई थी ।

किसी रोगमें, जब—कैलिकार्बकी चरित्रगत शारीरिक और मानसिक दुर्बलताके साथ ठण्डी हवा बिल्कुल ही सहन नहीं होती, जरासेमें ही सर्दी लग जाती है और फास्फोरसका चरित्रगत लक्षण—रोगी, लम्बा, दुबला, हमेशा ही क्षिप्र, स्नायविक रोगग्रस्त रहता है , जहाँ—सर्दी और बरसात दोनों ही ऋतु सहन नहीं होती, वहाँ कैलि फास फायदा करता है । इसका पेशाब और दूसरे-दूसरे स्राव कमला नीबू के रंगके या सुनहरे होते हैं । बेरी बेरी रोगमें भी यह फायदा करता है ।

चरित्रगत लक्षण —

१ । उन्मत्तता और नाना प्रकारके मानसिक विकार, सूतिकावस्थाका उन्माद , २ । नाना प्रकारकी स्नायविक और मस्तिष्ककी बीमारी, स्नायविक दुर्बलता, कमजोरी, सरमें चक्कर आना, याद्दाश्तका घट जाना, माथा खाली मालूम होना, कमजोरी , ३ । टाइफायड ज्वरमें ऊँचा ताप बहुत पसीना, नाडी रुक जाती है, हृत्पिण्डकी क्रियाका घटना , ४ । जीभपर भूरे रंगका मैल सचय

होता है, जीभ सूखी, दाँतपर कीट जमना, ५। किसी भी बीमारीमें काले रंगका रक्तस्राव, ६। किसी एक जगहका या समूचे शरीरका पक्षाघात, ७। गले-सड़े जखम, मुँहका जखम बहुत बदबूदार श्वास प्रश्वास, अतिसार या आमाशयमें बहुत ही सड़ा बदबूदार दस्त, ८। भय अनिद्रा, नींदमें उठकर टहलना या बोलना, अट-सट बकना, ९। बच्चा डरकर जाग उठता है और रोता है, १०। हिस्टीरिया, मृगी, ११। चुप रहनेपर दर्द बढ़ जाता है और हाथ फेरनेपर घटता है, १२। बहुत ज्यादा परिमाणमें बदबूदार ऋतुस्राव।

कैलि फास—नर्वट्रानिक दवा है, यह दूसरी दूसरी बीमारियोंमें व्यवहृत होनेपर भी साधारणत स्नायु अर्थात् स्नायु विकारके कारण सभी बीमारियोंमें और मस्तिष्ककी बीमारीमें ही ज्यादा फायदा करता है। डा० लिलियेन्थल कहते हैं—कमजोर जीवनी शक्तिको धीरे-धीरे बलप्रदान करनेकी इसमें असीम शक्ति है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—किसी भी बीमारीकी चरम अवस्थामें, जब रोगीमें कुछ भी जीवनी शक्ति नहीं रह जाती, धीरे धीरे बोली जकड़ती जाती है, पक्षाघात धीरे-धीरे हृत्पिण्डकी ओर बढ़ता जाता है, उस समय सबके पहले कैलि फासका प्रयोग करना चाहिये। गलक्षोभ प्रदाह इत्यादि कण्ठ और स्वरनलीकी बीमारीकी भी यह महौषधि है। हैजाकी सभी प्रकारकी अवस्थामें और टाइफायड, टाइफस प्रभृति ज्वरकी विकार अवस्थामें डा० सुसलरकी यही प्रधान दवा

है । वे हैजाकी पहली अवस्थामें—फेरम फासके साथ , पेंठनमें—मैग्नेशिया फासके साथ और विकारकी अवस्थामें—कभी-कभी फेरम फासके साथ व्यवहार करनेका उपदेश देते हैं । हैजामें—बार बार दस्त कै, पहले पित्त मिला, इसके बाद चावलके घोवन-को तरह दस्त या पहलेसे ही हैजाकी तरह दस्त, मलमें बहुत सड़ी बदबू, पेटमें कभी दर्द रहता है, कभी नहीं रहता है, छटपटी कभी कभी चुपचाप पड़ा रहता है, इत्यादि लक्षणवाले औदरामयिक (अतिसार जातिके) हैजामें इसका व्यवहार करनेपर ज्यादा फायदा होता है, पसीना होकर नाडी छूट जानेका लक्षण होनेपर या नाडी छूट जानेपर भी इससे फायदा होता है ।

क्रम—६x—२००x और ३०—२०० शक्ति । उन्मत्ततामें—३x से २००x शक्ति, कुछ अधिक दिनोंतक व्यवहार करनेपर फायदा होता है ।

फारमुला—विचूर्ण ७ ।

कैलि सल्फ्युरिकम ।

(KALI SULPHURICUM)

(पोटास सल्फ)—यह भी डा० सुसलरकी एक बायोकेमिक दवा है, और पल्सेटिलाके सदृश है । पर पल्सेटिलाकी अपेक्षा इस-की क्रिया गभीर होती है, इसी कारणसे पल्सेटिलाके पहले और

बाद इसका व्यवहार होनेपर इससे बहुत फायदा होता है, बायो-केमिक—फेरम फास जिस तरह प्रदाहकी पहली अवस्थामें, कैलि-म्यूर, जिस तरह प्रदाहकी दूसरी अवस्थामे, कैलि सल्फ—उसी तरह प्रदाहकी तीसरी अवस्थामे व्यवहृत होता है। कैलि-सल्फके सभी स्राव—पीले अथवा हरे, गोंदकी तरह लसदार, चमकीले या पानीकी तरह होते हैं, इसी लिये जब—किसी बीमारीमे जीभका रग पीला रहता है, ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, थाइसिस वगैरह फेफडेकी किसी बीमारीमे बलगमका रग पीला, बलगम—पतला, लसदार, चमकीला रहता है, नाकमे सर्दी, श्वेत प्रदर, प्रमेह इत्यादिका स्राव—पीला होता है, आँखका स्राव या पपडी—पीली अथवा हरी जमती है, विसर्प वगैरह किसी भी बीमारीमे जो छाला होता है, उसके भीतर पीले रगका रस या पीव भरा रहता है, उस समय—कैलि सल्फका अवश्य प्रयोग करना चाहिये, छोटी माता, चेचक, आरक्त ज्वर प्रभृतिकी बीमारियाँ या दाने एकाएक बैठकर यदि कोई दुर्लक्षण पैदा हो जाये—कैलि-सल्फसे वे उद्भेद फिर बाहर निकल आते हैं। छोटी माता, चेचक, प्रभृति बीमारियोंमें जब चर्मके अन्दरसे भूसी (सूखा चमडा) निकलता है, बदनकी त्वचा, सूखी और रुखडी रहती है, ज्वरमे—चमडा रूखा, खुरखुरा, और पसीनेका लेश भी नहीं रहता, उस समय इसका व्यवहार करनेपर पसीना होकर चमडा चिकना हो जाता है और ज्वर भी घट जाता है।

स्त्रियोंको ऋतु देरसे हो और ऋतुस्राव कम होता हो तो इसके प्रयोगसे ऋतु स्वाभाविक और स्रावका परिमाण भी बढ जाता है।

कैलि सल्फकी सभी बीमारियाँ—तीसरे पहरसे बढकर आधी रातके बाद घट जाती है। इसी लिये किसी ज्वरमें यदि ये लक्षण रहें तो इससे वह ज्वर बन्द हो जायगा। (डा० काउपरथायेट कहते है—रातमें बढना)।

किसी भी बीमारीमें—हाथ पैर तथा आँखमें जलन रहनेपर,—कैलि सल्फसे फायदा होगा। इसके रोग लक्षण—तीसरे पहर, ४ बजेका बादसे, गरम घरमें—बढते हैं और ठण्डी खुली हवामें—घट जाते है

कैलि सल्फ्युरेटम (Kali Sulphuratum)—६ ठी शक्ति, यह दवा पाकस्थलीके पुराने प्रदाहके साथ हिचकी, जो मिचलाना और वमन रहनेपर व्यवहृत होती है (याद रहे कि कैली सल्फ्युरिक और कैलि सल्फ्युरेटम ये दोनो अलग अलग दवाएँ है)।

क्रम—३ x—१२ x, ३० x और ३०—२०० शक्ति।

चर्म रोगमें—कैलि सल्फका बाहरी व्यवहार होता है।

फारमुला—७।

कैलमिया लैटिफोलिया ।

(KALMIA LATIFOLIA)

(कण्टुकी, ओहिया प्रभृति पहाड़ोंके एक तरहके गुल्मके पत्तेसे टिंचर तैयार होता है)—वात, हृत्पिण्डकी बीमारी, स्नायुशूलका दर्द ऊपरसे नीचेकी ओर परिचालित होना, सुन्नपन (numbness) पैदा करनेवाला दर्द, पेट फूलनेके साथ अविराम ज्वर, हृत्पिण्डकी बीमारीमें स्पाइजेलियाके बाद इसका व्यवहार होता है । वात रोगके बाद हृत्पिण्डकी बीमारी इत्यादि कई इसके विशेष लक्षण हैं । कैलमिया—हृत्पिण्ड, शिरा धमनी प्रभृति रक्त सचालन करनेवाले यन्त्रोपर बाईं ओर और स्नायुशूलके दर्दमें साधारणत दाहिनी ओर अधिक क्रिया प्रकट करता है ।

प्रधान चरित्रगत लक्षण —

१ । नीचेकी ओर आनेवाला, खोचा मारने, तीर विधने और दबा रखनेकी तरह दर्द (ऊपरकी ओर चढनेवाला दर्द—कैक्टस, लिडम), रोगवाली जगह सुन्न (कैमो, प्लैटी, एकोन), २ । दाहिने चक्षुगह्वरमें तेज खोंचा मारनेकी तरह दर्द (बाईं आँखमें—स्पाइजे), दर्द—सूर्योदयके समय आरम्भ होता है, मध्याह्नमें चढ़ता है, सन्ध्यामें घटता है (नैट्रम म्यूर), ३ । एकाएक जगह बदलनेवाला वातका दर्द, दर्द एक जोड़से दूसरे जोड़में जाता है, सन्धियाँ गर्म और लाल रंगकी हो जाती हैं, फूल उठती हैं, उनमें

बहुत दर्द रहता है, ४। नीचेकी ओर देखनेपर ही सरमें चक्कर आ जाता है (स्पाइजे), ५। नाडीकी गति बहुत ही धीमी और कोमल, अक्सर हाथमें मालूम ही नहीं होती, नाडीका स्पन्दन मिनिटमें—३०। ४०, ६। श्वास कृच्छ्रताके साथ हृत्पिण्डका तेज स्पन्दन, (Tachycardia), ७। हाथ पैरका अगला भाग ठण्डा मानो बरफकी तरह।

वात—कैलमियाका वात इत्यादिका दर्द ऊपरसे नीचे चला जाता है, जहाँ ऐसा दिखाई दे, कि—वात उर्द्धाङ्गसे आरम्भ होकर क्रमश नीचेकी ओर उतरता है, वहीं—कैलमिया फायदा करता है (कैक्टसमें भी यही लक्षण है)। लिडममें—वातका दर्द नीचेकी ओर पहले आरम्भ होकर क्रमश ऊपरकी ओर चढता है। कैलमियाका दर्द—तेजीसे जगह बदला करता है (पल्सेटिला, सलफर कैलिबाइक्रोममें भी यह लक्षण है), पर यह जान रख कि यदि इस स्थानको बदलनेवाले दर्दके साथ हृत्पिण्डकी कोई बीमारी मोजूद रहे या हृत्पिण्डमें बीमारी हो जाये तो कैलमिया ही एक-मात्र दवा है। हृद्रोगमें—हृत्पिण्डमे बहुत ही कष्टदायक दर्द रहता है, यहाँतक कि उसमें ऐसा मालूम होता है कि मानो साँस रुक जाना चाहती है। यह दर्द कभी छातीसे पेटकी ओर अर्थात् नीचेकी ओर उतरता है। डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—कैलमियामें भी लिडमकी तरह दर्द, नीचेसे ऊपर (from below up-ward) की ओर परिचालित होता है; पर डा० नैश कहते हैं—

दर्द कैन्टसकी तरह नीचेकी ओर उतरता है। जो हो, हम लोगोंको यह समझ रखना चाहिये, कि कैलिमया—दोनों तरहके ही दर्दमें फायदा करता है। कैलिमयाका दर्द अकसर वाएँ हाथके ऊपरसे नीचेकी ओर दौडता है। एस्टिरियस रूब्रम—नामक दवामें—दर्द वाये हाथसे पीछेकी ओर अंगुलीतक उतरता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—डा० हेरिङ्ग कहते हैं, इस रोगमें स्पाइजेलियाके बाद—केलिमयाका प्रयोग करनेसे बहुत फायदा होता है। कैलिमयामें—हृद्-रोगके साथ वाएँ हाथमें झुनझुनीका दर्द रहता है (रसटक्स और एकोनाइटमें भी यह लक्षण है) पलसेटिलामें—हृद्-रोगके साथ हाथकी कोहनी सुन्न हो जाती है। फाइटोलैकामें—हृद्रोगके साथ दाहिने हाथमें झुनझुनी का दर्द रहता है। वात रोगके बाद हृत्कपाटकी (mitral insufficiency) बीमारी होनेपर या किसी बाहरी दवाका प्रयोग कर वात रोग आरोग्य होनेके बाद हृत्पिण्डकी बीमारी (vavular disease) होनेपर अथवा एक बार वात और एक बार हृत्पिण्डकी बीमारी होनेपर—कैलिमयासे फायदा होता है। कैलिमयाकी नाडी बहुत क्षीण और उसकी गति बहुत धीमी रहती है, यहाँतक कि स्पन्दन मिनटमें कुल ३०।४० बार तथा अनियमित होता है। कितनी ही बार तो हाथमें लगती ही नहीं, इसके साथ ही रोगीका चेहरा बदरंग और दोनों पैर ठण्डे रहते हैं।

एनजाइना—पेक्टोरिस (हृत्शूलका दर्द)—हृत्पिण्डकी यान्त्रिक बीमारी, हृत्पिण्डकी विवृद्धि (hypertrophy) प्रभृति रोगोंमें नाड़ीकी गति बहुत धीमी और नाड़ीके चारों ओर दर्द और श्वासकष्ट आदि रहनेपर—कैल्मियाका प्रयोग करना चाहिये। डा० डनहम कहते हैं—केचुएकी गतिकी तरह धमनीका सकोचन और प्रसारण, अर्थात् बहुत धीमी, क्षीण नाड़ी ही कैल्मियाका चरित्रगत लक्षण है।

आँख और मुहका स्नायुशूलका दर्द—

दाहिनी ओरके ऊपरी चक्षुगह्वरके एक तरहके स्नायुशूलके दर्दमें (supra orbital neuralgia) और दाहिने ओरके चेहरेके स्नायुशूलके दर्दमें (दर्दका कारण साधारणत सर्दी लगना)—कैल्मिया फायदा करता है (पल्सेटिला देखिये)। स्नायुशूलके दर्दके साथ जलन, यह लक्षण—कैल्मिया और क्रियोजोटमें है। बायीं ओरके ऊपरी चक्षुगह्वरके स्नायविक दर्दमें और यदि आँख-में जल जानेकी तरह जलन रहे तो—सिड्रन लाभ करता है, पर सिड्रनका प्रिय लक्षण है—रोज ठीक एक ही समय दर्दका पैदा हो जाना। स्पाइजेलिया—बायीं ओरके प्राय सब तरहके स्नायविक वेदनामें फायदा करता है। इसमें जितना ही दिन चढता रहता है, उतना ही दर्द भी बढता है और जितना ही दिन उतरता जाता है दर्द भी उतना ही क्रमश घटना आरम्भ होता है (कैल्मियामें भी यही लक्षण है) सिमिसिफ्युगामें—दर्द गर्दनसे

आरम्भ होकर कनपटीके सामने आ जाता है और दाहिनी या बायीं आंखके ऊपर ठहरता है। इसका दर्द रातमें बढ़ता है।

द्रष्टव्यः—इन्फ्लामेटरी या प्रादाहिक और न्युरेलजिक या स्नायुशूलके दर्दका पार्थक्य—जहाँ दर्दवाली जगह फूलती है, लाल हो जाती है, बहुत जलन और दर्द रहता है, रोगवाली जगहपर हाथ नहीं लगाया जाता,हाथ लगाते ही तकलीफ बढ़ती है,इस दर्दको—प्रादाहिक, और जहाँ बाहरकी ओर इस तरहका प्रदाहका कार्यक्रम बिलकुल नहीं रहता, पर भीतर असह्य जलन और तकलीफ रहती है, दर्दवाली जगह दबाने या मलनेपर बल्कि दर्द कुछ घटता है, उसको—स्नायुशूलका दर्द कहते हैं। कैल्मियामें ऊपर लिखे दोनों तरहके ही लक्षण दिखाई देते हैं। उसमें दर्द तेजीसे जगह बदला करता है। ऊरुसे लेकर घुटनेतक, घुटनेसे पैरके तलवे और गांठोंमें और हृत्पिण्डका दर्द बाएँ हाथमें चला जाता है। इसमें शरीरके सभी बृहत् अंशोंपर बीमारीका दौरा होता है, गर्दनमें दर्द होता है, गर्दन हिला नहीं सकता।

गर्भावस्थामें—पलनुमिनुरिया और पाकाशय शूलका दर्द, एकाएक आरम्भ हो जानेपर कैल्मिया फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—रातके पहले पहरमें, सोते ही, सूर्योदयके समय, दो पहरमें, उत्तापसे, मानसिक परिश्रमसे, नीचेकी ओर दृष्टिमें, आँख और सर दर्द—निर्मल वायुमें।

सदृश—हृत्पिण्डकी बीमारीमें स्पाइजिलिया के बाद—कैल्मिया।

ह्रास (amelioration)—सूर्यास्तके समय, शीतमें, चित्त होकर सोनेपर, खड़े होनेपर, भोजनके बाद ।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, लिथिया, लाइको, नैट्रम-म्यूर, पल्स, स्पाइजे ।

क्रिया नाशक (antidote)—एकोन, बेल, स्पाइजे ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—७—१४ दिन ।

क्रम—३x—३० शक्ति ।

फारमुला—३ ।

क्रियोजोटम ।

(KREOSOTUM)

अल्कतरा (Beech-wood tar)—श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। दुबली, शीर्ण, लम्बे शरीरवाली स्त्रीपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१ । सामान्य ज़ख़ममें ही बहुत ज्यादा रक्तस्राव (लैके, फास), रक्तस्रावी धातु, नाकसे रक्तस्राव, हिमाप्टोसिस्, हिमाचुरिया, दाँत उखड़वाने बाद रक्तका चूते रहना (हैमा) २। सड़नेवाले ज़ख़म (गैंग्रीन), कैंसर (कर्कट) और यक्ष्मा रोगमें सड़ा बदबूदार स्राव

जीवनी शक्तिका घट जाना, ३। ऋतुके पहले और समय कानमें गुन गुन सों सों, भिन-भिन आवाज आजाती है, वहरा हो जाता है, ४। कष्टसे दाँत निकलता है, दाँत निकलते ही क्षय होना आरम्भ हो जाता है, दाँतका मसूढा नीली आभा लिये लाल, नरम, जखमसे भरा, मसूढेमें प्रदाह, खून निकलता है, ५। गर्भावस्थामें वमन। मुँहमें मीठा पानी भर आना, पाकस्थलीकी सांघातिक बीमारी, लगातार सडी बदबू भरे दस्त, ६। ऋतुके पहले और समय भयानक तकलीफ देनेवाले सर दर्द, ७। रमणके पहले और समय भयानक यन्त्रणादायक सर दर्द, ७। रमणके बाद, रक्तस्राव, ऋतु खूब जल्दी जल्दी होता है, परिमाणमें बहुत अधिक होता है, सोनेपर स्राव—बैठने और खडे होनेपर स्राव बन्द हो जाता है, ऋतुस्राव कभी एकदम बन्द हो जाता है और फिर आरम्भ होता है, ८। पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना, इतना ज्यादा वेग हो जाता है कि बिछावनसे उठनेमें जितनी देर होती है, उतनी भी सहन नहीं होती, पेशाब पानीकी तरह, परिमाणमें अधिक, ९। पेशाबके साथ और बाद तेज दर्द और जलन, १०। पीले रंगका बदबूदार श्वेत प्रदरका स्राव—जहाँ लगता है, वहीं दाग पड जाता है, जलन होती है, १२। बदबूदार प्रसवके बादका स्राव—एक बार बन्द होता है, फिर होता है, १२। योनिदेशमें खुजली, जखमकी तरह हो जाता है। १३। कानके चारों ओर रसभरे दाने।

मलिन चेहरा, दुबली पतली असमान देह, बहुत बढनेवाली,

जो स्त्रियाँ अपनी उमरकी अपेक्षा बहुत ज्यादा लम्बी होती हैं, जिनकी त्वचा सिकुड़ी रहती है, जो वृद्धकी तरह दिखाई देती हैं, जिनकी ग्रन्थियाँ फूला करती हैं, अकौता, खुजली प्रभृति चर्मरोग होनेवाली धातु, तेजीसे दुबली होते जाना, हमेशा बेचैन। शरीरमें आगकी तरह जलन अनुभव होना, स्त्रियोंके ऋतु बन्द होनेकी उमरमें, कोई न कोई बीमारी हो जाती है, प्रभृति रोगिनियोंपर इसकी बढ़िया क्रिया होती है।

स्त्रियोंकी कितनी ही बीमारियाँ—

ऋतुस्राव—क्रियोजोटमें—ऋतुस्राव रह रहकर होता है, अर्थात्—एक बार होता है, फिर रुक जाता है, फिर हुआ करता है। स्राव सोनेपर बढ़ता है, उठ बैठने या चलनेपर घटता है, सहवासके समय दर्द मालूम होता है (सिपियामें भी यह लक्षण बहुत कुछ क्रियोजोटकी तरह है), क्रियोजोटमें—ऋतुस्राव परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है और बहुत जल्दी जल्दी होता है, ऋतुके समय कमरमें बेतरह जकड़ जानेकी भाँति दर्द, कान भों भों करता है, ऋतुस्राव बन्द होनेपर श्वेत प्रदर दिखाई देता है, डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—जरायु सम्बन्धी सभी उपसर्ग और तकलीफें ऋतुस्रावके बाद बढ़ती हैं।

प्रदरका स्राव—स्रावका रंग पीला, कपड़ेमें पीला दाग पड़ता है, बहुत सड़ी बदबू रहती है, स्राव बदनमें लगनेपर खुजलाता है और जलन होने लगती है। खुजलानेपर खुजली नहीं

घटती—बल्कि ज्यादा फूल उठती है। बहुत दिनोंतक स्थायी रक्तस्रावमे भी इससे फायदा होता है। प्रदरके साथ रक्तस्राव हो या ऋतुस्रावके साथ अधिक रक्तस्राव हो, यदि एक बार बन्द हो और फिर दिखाई दे—क्रियोजोटसे फायदा होगा। पीले रंगका प्रदरका स्राव—सिपिया और म्यूरेक्समे भी है। पर बदबू, खाल उधड़ जाना, जलन इत्यादि लक्षण इसमे नहीं है।

प्रसवके बादका क्लेदस्राव—प्रसवके बाद पीबकी तरह एक तरहका स्राव बार बार होता है और बन्द होता है, उसमे बहुत बदबू रहती है,—यह लक्षण—क्रियोजोटका अयर्थ लक्षण है।

जरायुका जखम और कैन्सर—जरायुकी इस बीमारीमे जरायुग्रीवा (cervix) कड़ी और फूली रहती है, उसमें बेतरह दर्द रहता है, इतना दर्द कि हाथ लगाने या सहवासके समय रोगिनी काँप उठती है, योनि-प्रदेशमे आगसे जल जानेकी तरह भयानक जलन, छोटे छोटे थक्के मिले काले रंगका गाढा बदबूदार खून निकलता है। रक्तस्राव रह रहकर होता है, अर्थात् एक बार स्राव आरम्भ होता है और एक बार बन्द हो जाता है। जरायु-ग्रीवामें जखम और जरायुमे फूलकोबीकी तरह एक तरहका पदार्थ उत्पन्न होता है, उसमें भयानक जलन रहती है, बदबूदार खाल उधेड़नेवाला स्राव निकलता है। दूसरे दूसरे जखमोंमें भी—जखम गैंग्रीन अर्थात् सड़नेवाले जखममे परिणत हो

जानेकी सम्भावना होनेपर या वृद्धोंके सड़नेवाले जखममे सडी बदबू और जलन रहनेपर—क्रियोजोट लाभ करता है।

बहुमूत्र—रातमें बार बार पेशाब लगता है, प्रत्येक बार बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है। पेशाब खूब जल्दी जल्दी होता है, एकाएक इतना पेशाब होता है, कि उठनेमें देर सहन नहीं होती (hurry call), बालक या युवक बिछावनमें पेशाब कर देते हैं, ऐसा समझते हैं, कि ठीक पेशाबकी जगहपर ही वह पेशाब कर रहे हैं, पर नींद खुलनेपर देखते हैं कि सभी सपना है।

बच्चोंकी बीमारी—बडे कष्टसे बच्चोंके दाँत निकलते हैं, दाँत काले और मसूढे अस्वस्थ रहते हैं। मसूढेमें दर्द होता है, मसूढे फूलते हैं। (कीडे लग जानेकी तरह दाँत),मसूढेका रग घोर लाल या नीला, बच्चा बहुत बेचैन हो जाता है और रोता है, उपसर्ग आदि सवेरे ६ बजेसे सन्ध्यातक बढ जाते हैं। दाँत निकलनेके समय पहले दाँतके ऊपर एक काला दाग पडता है। जल्द ही समूचे दाँत काले पड जाते है, और टुकडे टुकडे होकर टूटने आरम्भ हो जाते है, क्रमश समूचे दाँत नष्ट हो जाते हैं। मसूढा—स्पजकी तरह होकर फूल जाता है, जरा छूनेसे ही खून निकलता है। क्रियोजोट—मूल अर्क, बाहरी व्यवहारसे कितनी ही बार दाँतकी तकलीफ घट जाती है (प्लैण्टैगो और स्टैफिसेग्रिया अध्याय देखिये)। दाँत उखडवाने बादसे ही काले रगका खून निकलता है।

यक्ष्मा-खाँसी—क्रियाजोटसे यक्ष्मा रोगके कीड़े (Tubercle bacilli) नहीं मरते, पर ऐसा न होनेपर भी इसके सेवनसे कफका परिमाण घट जाता है, बलगम निकलना घट जाता है, पसीना होना बन्द होता है, शरीरमें धीरे धीरे बल पैदा होने लगता है। रोगी इसका परिणाम जितना ही अधिक सहन कर सकेगा, उतना ही अधिक फायदा होगा। ५, १०, १५, २० से ३० बूँदतक—१x, रोज ३ बार सेवन कर सकता है।

बच्चोंका अतिसार और हैजा—कष्टकर दाँत निकलनेके साथ बच्चोंको यह बीमारी होनेपर और हमेशा दस्त कै होनेपर और उस दस्तमें बदबू या सड़ी और खराब गन्ध रहनेपर—क्रियोजोट फायदा करता है। टाइफायड ज्वरकी अन्तिम अवस्थामें—बहुत कमजोरी और बहुत बदबूदार। पाखानेके साथ रक्त रहनेपर इससे फायदा होगा।

वमन—क्रियोजोटमें खानेकी चीज हजम नहीं होती, पेटमें भी नहीं रहती, अजीर्ण खायी हुई चीज कै हो जाती है, इसमें भोजनके बहुत देर बाद (several hours after the meal) वमन होता है। गर्भावस्थाके वमनमें भी—क्रियोजोट फायदा करता है (गर्भावस्थामें वमन और मिचली—पसाराम), लगातार वमन, मिचली, मुँहमें पानी भर आना, समूचे खाद्य-पदार्थसे घृणा—सिम्फोरि-कार्पस—२०० शक्ति, कुकुरबिटा (Cucurbita)-ϕ, गर्भावस्थाके सब तरहके वमनमें डा० पलेन और पाकाशयकी

गड़बड़ीके लक्षणवाले वमनमें डा० लिलियेन्थल—पेट्रोलियमकी प्रशंसा करते हैं। कैलि-सैलि-साइलिकम (Kali Sali-cylicum) ६-३० शक्ति, गर्भावस्थाके वमनमें किसी दूसरी दवामें फायदा न होनेपर इनकी परीक्षा करें। तेज प्यास लगनेपर पानी पीनेके १०। १५ मिनिट बाद, वमन होनेपर—फास्फोरस, पानी पीते ही वमन होनेपर,—आर्सेनिक, भोजनके बाद ही कलेजेमें दर्द और जलनके साथ वमन होनेपर—विसमथ फायदा करता है। बच्चोंकी अविराम मिचलीमें और मन्दाग्निके रोगीके पेटमें कोई स्थायी चीज हजम न होकर वमन होनेपर—क्रियोजोट फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डी हवामें, ठण्डे पानीमें, बदन धोनेपर, लेटनेवाली अवस्थामें, रजःस्रावके बाद, प्रसवके स्रावके समय, रमणके बाद।

ह्रास (amelioration)—प्रदरकी बीमारी—बैठनेपर, रज-स्राव—बैठने, टहलने और उत्तापसे, स्वरभंग—छींकके बाद; सभी उपसर्ग—खुली हवामें।

Kreosote—is followed well by Ars, Phos, Sulph, in Cancer and diseases of malignant tendency (Dr—Nash) अर्थात क्रियोजोटके बाद कर्कट रोग तथा मारात्मक रोगोंमें आर्स, फास और सल्फरकी उत्तम क्रिया होती है।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, कैल्के, एसिड-नाई, सिपि, सल्फ।

क्रिया नाशक (antidote)—एकोन, नक्स, कार्बोके साथ विपरीत सम्बन्ध ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१५—२० दिन ।

क्रम—६x—१००० शक्ति । फारमुला—६ वी ।

लैक कैनाइनम ।

(LAC CANINUM)

(कुतियाका दूध)—नाक और गलेमें जखम, डिफ्थीरिया, गर्मी-रोग, वात, डेल्टायड पेशीका वात इत्यादि बीमारियोंमें फायदा करता है ।

चरित्रगत लक्षण —

१ । दर्द एक जगहसे दूसरी जगहपर चला जाता है , २ । दर्द या बीमारी आडा-आडी भावसे जाती है । अर्थात—आज दाहिनी ओर, तो कल बायीं ओर जाती है, आज दाहिनी ओरके पैरमें दर्द, कल बाईं ओरके पैरमें दर्द, इसी तरह आडा-आडी (cross-wise) भावसे, एक ओरका दर्द दूसरी ओर चला जाता है (Erratic pains, alternating sides)—मैंगेनममें—कोना-कोनी भावसे एक सन्धिसे दूसरी सन्धिपर चला जाता है ।

मानसिक लक्षण —

स्नायविक (नर्वस), बहुत गलती करता है, अगर कोई चीज

खरीदता है, तो उसे घर ले जानेकी याद नहीं रहती, छोडकर चला जाता है। लिखनेमें भूल करता है—एक विषय लिखना रहता है, तो दूसरा ही लिखता है, शब्दका आखिरी अंश लिखने मे भूल करता है। निराश—समझता है, कि उसकी बीमारी आराम होनेवाली नहीं है, जरा-सी बातमे ही रंज हो जाता है, कल्पित साप काटना इत्यादि।

नाकका जखम—जखममे बहुत ही सडी गन्ध, पपडी जमती है। आज दाहिनी नाकमें अधिक, कल बायीं नाकमे अधिक, इसी तरह पर्यायक्रमसे होता है।

डिप्थीरिया—एक दिन एक ओर, दूसरे दिन दूसरी ओर, एक दिन बायीं ओर, दूसरे दिवस दाहिनी ओर, फिर बायीं ओर, इसी तरह दर्द और झिल्ली बराबर पैदा होती है और बीमारीका दौरा होता है। लैकेसिसमें—पहले बायीं ओरकी झिल्लीपर आक्रमण होता है और लाइकोपोडियममें—पहले दाहिनी ओर आक्रान्त होता है, इसके बाद दूसरी ओर परिचालित होता है (डिफ्थिरिनम देखिये)।

गलेके भीतरकी बीमारी—छूनेपर दर्द, कोई चीज निगलनेपर कानतक दर्द होता है, ऋतुके समय खाँसी और गलेमें दर्द, ऋतुके साथ गलेमें घाव, ऋतु बन्द होनेपर आरोग्य होता है, गलेमें लगातार फुटफुटाहट हुआ करती है और खाँसी आती है। टानसिलाइटिस—पहले एक ओर, इसके बाद दूसरी ओर प्रदाह

हो जाता है और दर्द होता है, रोगी कोई भी चीज खा नहीं सकता, कभी कभी पी हुई चीज नाककी राहसे निकल जाती है।

स्त्री रोग—ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी और परिमाणमें अधिक तथा झोंकसे निकलता है (flow in gushes), ऋतु-स्रावके पहले स्तनमें बहुत दर्द, ऋतुस्राव आरम्भ होनेपर दर्द घट जाता है, स्तनकी घुडीमें प्रदाह और दर्द (mastitis), जरा भी झटका लगनेपर मानो जान निकल जाती है, जिन प्रसूताओंके बच्चे मर जाते हैं, उनके और जिनकी सन्तान बहुत दिनोंसे स्तन पी रही है, उनके स्तनका दूध सुखा देनेकी—लैक कैनाइनम एक बहुत बढिया दवा है। सूखे हुए स्तनके दूधको फिरसे पैदा करनेके लिये—लैक डिफ्लोर उपयोगी है (पयस देखिये)।

वात—वातका दर्द शरीरके एक स्थानसे दूसरे स्थानपर चला जाता है—कैलि बाइक्रोम और पल्सेटिला फायदा करता है; परन्तु लैक कैनाइनमक तरह आज दाहिनी ओरके ऊपरी भागमें, कल बायीं ओरके नीचले भागमें इसी पर्याय अर्थात alternating sides का दर्द इसमें नहीं

वृद्धि—(aggravation) एक

सध्यामें, रातमें बायीं ओरसे

ह्रास—(amel

पैर मोडकर

मात्रासे खासा फायदा दिखाई देता है। दूसरी मात्राके प्रयोगकी अकसर जरूरत नहीं पडती।

क्रम—६—२०० शक्ति।

लैक डिफ्लोरेटम

(LAC DEFLORATUM)

(मक्खन निकाला दूध अर्थात मट्ठेसे डाइल्यूशन तैयार किया जाता है)—पोषणकी कमीके कारण कमजोरी, सर दर्द और उसके साथ ही बहुत पेशाब होना, भयानक कब्जियत, बहुत अधिक कमजोरीके कारण स्त्रियोंका जरायु बाहर निकल पडता है। इस तरहकी कई बीमारियोंमें यह फायदेके लिये प्रसिद्ध है।

सर-दर्द—सबेरे बिछावनसे उठनेके ठीक बाद ही दर्द, सामने कपालसे आरम्भ होकर गर्दनतक चला जाता है, बहुत टपक होती है, उसके साथ ही मिचली, वमन, आँखके आगे अँधेरा दिखाई देना, कब्जियत प्रभृति उपसर्ग रहते हैं, दर्दके समय खूब पेशाब होता है, रोशनी, गडबडी और हिलने डोलनेपर दर्द बढता है, ऋतुके समय सर दर्द, खूब जोरसे दबानेपर सर-दर्द कुछ घट जाता है (जेलसिमियम देखिये)।

कब्जियत—भयानक कब्जियत, मल कडा और लम्बा

लेंड, बडे कष्टसे और बहुत वेग देनेपर कहीं निकलता है, मलद्वार फट जाता है।

कब्जके सम्बन्धमें इस दवामें डा० नैशने अपनी पुस्तकमें एक जगहपर कहा है—एक स्त्री रोज १०।१२ बार एनिमा (डूस) लेती थी , परन्तु इतनेपर भी ४।५ हफ्तोंतक पाखाना न होता था। इस तरह १५ बरस बीत गये। दुःखका विषय है कि उन्होंने स्पष्ट कुछ भी नहीं लिखा है कि क्या इस दवासे फायदा हुआ था।

सैनिक्युला—बहुतसे चिकित्सक कब्जियतमें भी इस दवाकी बहुत प्रशंसा करते हैं। कब्जियतमें जब सरलांत्रमें अधिक परिमाणमें मल रुका रहता है, बहुत वेग देना पडता है, बहुत वेगके कारण पेरिनियममें दर्द पैदा हो जाता है, बहुत कष्टसे थोडा थोडा चूरकी तरह निकलता है, मलमें बहुत बदबू रहती है, ऐसी अवस्थामें इसका व्यवहार होता है। एसिड गैलिकम और ओपियम अध्याय देखिये। क्रम ३० शक्ति।

लैक-डिफ्लोर—६ से २०० शक्ति व्यवहृत होता

फरमुला—७।

लैकेसिस।

(LACHESIS)

(अमेरिकाके एक तरहके सर्प-विषसे निचूर्ण शक्ति तैयार होती है) इसकी मुख्य क्रिया—स्नायु-मण्डलीपर,—गौण क्रिया—

र्म और श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर होती है। डा० हेरिङ्गने स्वय ही
त्र विषकी परीक्षा की थी। जो मनुष्य हमेशा ही उदास और दुःखित
हते हैं, हरित्पाण्डु रोगग्रस्त स्त्री, पित्तकी धातु, मोटे आदमीकी
पेक्षा जो कमजोर, दुबले पतले हैं, रोग भोग भोगकर जिनकी
रीरिक और मानसिक अवस्थामे परिवर्तन हो गया है, वैसे
नुष्यके शरीरमे और शरीरके ऊपरी अशमे तथा बाएँ भागमे
धिक क्रिया प्रकट करता है।

चरित्रगत लक्षण—

१। बायीं ओर रोगकी उत्पत्ति। २। दिन हो या रात हो,—
द आते ही या नींद खुलते ही मानसिक लक्षण और रोग-
क्षणोंका बढना, ३। रोगवाली जगहपर स्पर्श बिलकुल सहन
हीं होता, यहाँतक कि छूने भी नहीं देता, कपडेका भारतक
हन नहीं कर सकता, ४। किसीपर भी विश्वास नहीं करता,
ते तथा रिश्तेदारोंपर भी सन्देह करता है, समझता है, कि
विष खिला देंगे, ५। डिप्थिरियामे—रोगवाली जगह गहरी
ले रगकी या पीली आभा लिये दिखायी देती है, गलेमें वस्त्र
दि लपेटे रहनेपर ऐसा मालूम होता है, कि साँस रुक
एगी। ६। वात-श्लेष्मा ज्वरमे—आँख पीली; जीभ काँपती
और बाहर निकालनेपर दाँतमें लगती है, स्त्रियोंको ऋतु बन्द
के समय होनेवाली प्राय सभी बीमारियाँ, ७। अर्श, रक्त-
व, शरीरमे आगकी तरह अनुभव होना और गरम पसीना,
: माथेकी चाँदीमे जलन करनेवाला दर्द, बायीं ओरके डिम्ब-

कोषमें बहुत दर्द, जरायु प्रदेशमें तेज दर्द, थोडासा भी रक्तस्राव होने पर यह दर्द घट जाता है और स्राव बन्द होते ही फिर दर्द पैदा हो जाता है, ८। डिम्बकोषमें दर्दके साथ जलन, ऋतु ठीक नियमित समयपर ही हुआ करता है, पर परिमाणमें थोडा होता है और एकाद दिन होकर ही बन्द हो जाता है, ९। काले रंगका पेशाब, खून थक्का नहीं बांधता, १०। विषव्रण, कार्बङ्कल, जखम—इसका रंग नीली आभा लिये, छोटेसे ही जखमसे बहुत अधिक रक्तस्राव, ११। बायें हाथमें कनकनी उठनेकी तरह दर्द, पैरकी हड्डीमें कनकनीका दर्द, १२। धर्म सम्बन्धी प्रलाप बकना, रोगीको रातके समय, सर्दीमें और दिनमें बदनमें जल, १३। शोक, दुःख, भय, चिढ, ईर्षा और प्रेमसे निराश होकर बीमारीका उत्पन्न हो जाता, १४। स्त्रियोंको प्राय ४५ वर्षकी उमरमें अर्थात् ऋतु बन्द होनेके समयसे ही एक दिनके लिये भी स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता, १५। बहुत गर्म या अत्यन्त शीत पडनेपर ही शरीरका कमजोर पड जाना, १६ बहुत बकवादीपन, लगातार पागलकी तरह बका करता है। एक विषयपर बोलता बोलता दूसरा विषय आरम्भ कर देता है, १७। सामान्य कोई चीज भी नाकको जडके पास लानेपर ही, साँस बन्द हो जाती है, पखेसे हवा करने कहता है, पर बहुत धीरे धीरे और बहुत दूरसे, १८। भयानक शारीरिक और मानसिक क्लान्ति, समूचा शरीर काँपता है; १९। मूत्रनलीके भीतर मानो एक गोला घूमता फिरता है, इस तरहका अनुभव होता है, २०। शरत् ऋतुका किलाइनमें

रुका हुआ ज्वर, यह वसन्त ऋतुमें फिर पैदा हो जाता है-२१। टाइफायड, टाइफस ज्वरमें—अज्ञान अभिभूत भाव, बुदबुदा कर प्रलाप करता है, या जोर जोरसे एक ही बात लगातार बका करता है, आँखें बैठ जाती हैं, चेहरा बदरंग हो जाता है, चेहरा बिगड़ जाता है, नीचेका जबड़ा झूल पड़ता है, जीभ सूखी और काली हो जाती है, काँपती है, दाँतके बाहर निकाल नहीं सकता, आँखका सफेद अंश, क्रमसे नारंगीके रंगकी तरह या पीला हो जाता है, ठण्डा पसीना निकलता है, पसीनेसे पीला दाग पड़ता है।

लैकेसिस "मेटिरिया-मेडिका" मे एक श्रेष्ठ दवा है। कितनी ही जटिल और कड़ी बीमारियोंमें समझ-बूझकर इसका यदि प्रयोग किया जाता है तो बहुत अधिक फायदा होता है।

खाँसी—सामान्य खाँसीसे लेकर ब्राङ्कइटिस, दमा, निमोनियाँ, इत्यादि सब तरहकी खाँसीमें ही लैकेसिससे फायदा होता है। एक तरहकी खकखकी सूखी खाँसी होती है, जिसमें नाक या मुँहके पास जोरसे हवा लगने या धुआँ ले जानेपर या गलेमें कपड़ा रखनेपर यदि रोगीका दम रुक जानेका भाव हो जाये, तो इससे फायदा होगा। दमामें—सोये सोये एकाएक खिंचाव बढ़कर रोगीको कातर कर डालता है, उस समय रोगी छातीपर या बदनपर कपड़ा नहीं रख सकता, खाँसते खाँसते जब थोड़ी-सी पतली सर्दी निकल जाती है, तब यह भाव दूर होता है, गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी आती है, खाँसी मानो छातीसे आती है,

सहजमें बलगम नहीं निकलता—मानो लिपटा रहता है, उसके साथ ही दम रुक जानेका भाव और गलेमें दर्द इत्यादि लक्षण रहते हैं,—ये ही लैकेसिसके निर्दिष्ट लक्षण हैं। खाँसनेमें तकलीफ, सूखी खाँसी, बलगमका गलेमें लिपटा रहना। ये लक्षण लैकेसिके अलावा—ब्रायोनिया, मस्कस, हायोसियामस प्रभृतिमें भी है। पपिसमें दम बन्द होनेके भावका लक्षण है, पर उसमें गलेमें दर्द और कपडा रखनेपर तकलीफ होना—ये लक्षण नहीं हैं। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी (tikling cough) का लक्षण बेलेडोनामें भी है, उसमें भी खाँसी गलेके ऊपरकी ओरसे आती है, कास्टिकममें—गलेमें सुरसुरी होकर आनेवाली खाँसीके साथ एकदम स्वरभंग रहता है, रियुमेक्सकी—सुरसुरीवाली खाँसी बोलनेसे या कुछ ठण्ढी हवा निश्वास-पथसे प्रवेश करनेपर ही बढ जाती है, इसीलिये रोगी कपडेसे मुँह बन्द कर लेता है, एलियम सिपामें—खाँसी ठुसठुसी, इससे आँख मुँहसे पानी गिरता है। क्रूपकी खाँसीमें—गलनली रुक जानेका भाव रहनेपर—लैकेसिस, कैलि-बाइक्रोमके बाद भी फायदा करता है। एरालिया देखिये)।

तालुमूल-प्रदाह और टानसिलाइटिस—

लैकेसिसका विशेषत्व यह है, कि पहले शरीरकी बायीं ओरसे कोई भी बीमारी आरम्भ होती है, तालुमूलका प्रदाह यदि बायीं ओर हो या बायीं ओरसे आरम्भ होकर फिर दाहिनी ओर चला जाये, तो इससे फायदा होगा (टानसिलका प्रदाह होनेपर, उपजिह्वाके

दोनों ओर या एक तरफ सुपारीकी तरह होकर फूल जाता है। लाल हो जाता है, गलेमें लसदार बलगम जमा रहता है)। लाइकोपोडियममें—प्रदाह दाहिनी ओरसे बायीं ओर चला जाता है, लैकेसिसमें—टानसिलका रंग लाल होनेपर भी उसके भीतर कुछ नीली आभा दिखाई देती है, कभी कभी तो एकदम नीला हो जाता है। गलेमें गोलेकी तरह न जाने क्या एक पदार्थ रहता है, घूट लेनेपर भी यह गोला हटता नहीं है, कभी कभी तो एकाएक गलनली बन्द हो जानेका भाव हो जाता है, गलेके बाहर दर्द रहता है, उसमें हाथ लगानेसे भी तकलीफ होती है। लैकेसिसमें—रोगी-कड़ी-चीज निगल सकता है, पर कोई पतली चीज नहीं पी सकता, टानसिल पकता है, पकनेपर कुछ भी खा नहीं सकता, नाक मुँहसे निकल आता है (पतली चीज निगलनेमें कष्ट और कड़ी चीज सहजमें निगल सकता है—इग्नेशिया), इग्नेशिया भी—डिफ्थीरिया, टानसिलाइटिस, गलेका घाव इत्यादि बीमारियोंकी महोषधि है। पर रोगी मूर्च्छा-वायुग्रस्त (hysteric) होनेपर लैकेसिसकी अपेक्षा—इग्नेशियामें ज्यादा फायदा होता है। इग्नेशियामें—घूट लेनेपर तकलीफ और गलेका दर्द घटता है। यह लक्षण—सैबाडिला नामक दवामें भी है। बेप्टीशिया—यह इग्नेशिया और लैकेसिसके विपरीत है अर्थात कड़ी चीज निगलनेमें कष्ट रहता है, पर पतली चीजें सहजमें ही पान कर सकता है। टानसिलाइटिस अर्थात तालुमूल-प्रदाह रोगमें—अगर फाइटोलेका का भीतरी सेवन किया जाये तो अन्य सभी दवाओंकी बनिस्बत

जल्दी फायदा होता है। (फाइटोलैक्का देखिये)—वेराट्रा-आयोड—पुराने तालुमूल-प्रदाहमे फायदा करता है।

ग्रैंग्रीन—जखमके चारो ओरका रग नीला या काला। (क्रोटेलस)।

कार्वङ्कल—(विष-व्रण)—कार्वङ्कलमे भयानक दर्द और जलन रहती है। जव कार्वङ्कलके जखममें सड़न (ग्रैंग्रीन) हो जाने की सम्भावना रहती है या असली सडन ही हो जाती है, उस समय एक लेकेसिस ही महौषध है। कार्वङ्कलमे वहुत जलन रहने पर, लैकेसिसकी तरह—आर्सेनिक, एन्थ्रासिनम, टैरेण्टुला इत्यादि भी लक्षणके अनुसार प्रयोग करना चाहिये। आर्सेनिकमे—आधी रातके समय, जलन और यन्त्रणाका बढना। टैरेण्टुलामे—वहुत जलन, लेकिन उसके साथ ज्वर, अतिसार, अत्यन्त दुर्बलता रहती है। लैकेसिस—नींद आने या नींदके खुलने वगैरहपर लक्षण वढ़ जाते है। कैनसर हो या कार्वङ्कल हो, जव उनका रग कुछ नीला दिखाई दे और जल्दी पीव न पैदा हो, उस समय लैकेसिस पीव पैदा कर रोगीको शीघ्र ही आरोग्य पथपर ला देता है। (एन्थ्रासिनम देखिये)।

कर्कट रोग या कैन्सर—जखम दूषित होनेपर, केवल कैनसर ही क्यो सव प्रकारके दूषित जखमोंमें लैकेसिस उपयोगी है, तो भी इसके साथ इसका विशेष लक्षण है—नींद आने

पर या नींद खुलनेपर रोगका बढ़ना, स्पर्श सहन न होना वगैरह लक्षण रहनेपर फायदा होता है।

पारेका जखम या सिफिलिस—पारा या उपदंश की वजहसे पैरकी हड्डीमें जखम, जखमके चारो किनारे नीली आभा लिये, रातमें तकलीफका बढना, गलेमें जखम, जखमके स्थान पर इतना दर्द जो छूने नहीं देता या सेकेण्डरी सिफिलिस, सैंकर गैंग्रीनमें परिणत होनेपर—लैकेसिस लाभदायक है।

मुंहका जखम—दाँतका मसूढा और दाँतकी जडमें जखम, दाँत नष्ट हो जाते हैं। मुँहमें सडी दुर्गन्ध।

पेशाब—काला, गदला या एलबुमेन मिला हुआ। अण्डेके सादे चमकीले अंश हीको एलबुमेन समझ रखेंगे। (Albumen—An organic element of the blood &c, found almost pure in the white of an egg) एलबुमेनुरिया रोगमें प्राय एक प्रकारका पेशाब दिखाई देता है। उसके साथ शोथ (Dropsy) या रक्तका पेशाब रहनेपर भी लैकेसिस लाभदायक है। वातश्लेष्मा या दूसरे किसी प्रकारके ज्वरमें यदि काले रंगका पेशाब हो या क्षरित खून सडकर पेशाबके द्वारसे निकले, तो उसमें लैकेसिस उपयोगी है। कोटेल्समें—इसी प्रकारका रक्तका पेशाब होता है। हेलिबोरसमें—पेशाबके साथ खूनके छींटे रहते हैं।

ऋतुस्राव—स्त्रियोंको प्राय ४५ बरसकी उम्रमें ऋतुस्राव बन्द होता है। इस समय यदि ज्यादा रक्तस्राव हो, और

उसके साथ बदनमें बहुत जलन, समूचे शरीरमे गरमी मालूम हो और माथेमे बहुत दर्द या जलन रहे, तो उसमें लैकेसिस उपकारी है। लैकेसिसमें—प्राय ऋतुके रक्तका रङ्ग काला, गहरा, गाढा और थक्का थक्का, उसमे अत्यन्त दुर्गन्ध रहती है।

जरायुका दर्द—जरायु प्रदेशमे अत्यन्त दर्द, कभी कभी इतना दर्द होता है कि वह छुआ नहीं जा सकता, कपडा भी छू जाने से कष्ट होता है। इस तरहका दर्द सामान्य रजःस्राव होनेपर भी कम हो जाता है। लेकिन ऋतुस्राव बन्द होनेपर फिर बढ जाता है।

डिम्बकोपका दर्द—बायीं ओरके डिम्बकोषमे प्रदाह। यह प्रदाह बाई ओरसे आरम्भ होकर दाहिनी ओर चला जाता है, इस लक्षणमें लैकेसिस उपयोगी है। प्राय बाई ओरके डिम्बकोषकी सभी बीमारियोंमें जैसे कि ट्यूमर, कैन्सर, डिम्बकोप पककर पीब, स्नायुशूल, सूजन, कडा भाव, जो कुछ भी हो, उसमे लैकेसिस लाभदायक है। आर्सेनिक—दाहिनी ओरका डिम्बकोप आक्रान्त होता है। खूनका रङ्ग बहुत कुछ लैकेसिसकी भाँति, दाहिनी ओरके डिम्बकोपके प्रदाहमे एपिस भी विशेष लाभदायक है। एपिसमें बाई ओरके पंजरेके नीचेकी जगहपर एक प्रकारका दर्द होता है और डिम्बकोपमे इतना दर्द रहता है कि रोगिनी खाँसनेसे डरती है। ग्रैफाइटिस—बायीं ओरका डिम्बकोप आक्रान्त होता है। रक्तस्राव होनेपर लैकेसिसकी तरह ही तकलीफ घटती है। इसमें रक्तस्राव परिमाणमें थोडा होता है और थोडी देर ठहरता है।

अतिसार—लैकेसिसके रोगीको प्रायः कब्जियत रहती है, लेकिन फिर बहुत दिनोंतक पेटकी बीमारी भोगकर रोगी जब दुर्बल हो पड़ता है और पाखानामें सड़ी दुर्गन्ध रहनेपर कभी कभी आश्चर्यजनक लाभ होता है। गर्मीके दिनोंका अतिसार, ऋतु बन्दके समयके अतिसारमें, शराबियोंके अतिसारमें,—लैकेसिस लाभदायक है।

आमाशय—पीले रङ्गका पाखाना उसके साथ ही पीब, काले रङ्गका खून, पाखानेका बाद कुन्थन, हमेशा ही पाखानेकी इच्छा रहना, पर पाखाना न होना, मलद्वारमें दर्द, बवासीर, मसाका निकलना, नींद टूटनेपर ही पाखानेका वेग इत्यादि लक्षणोंमें—लैकेसिसका प्रयोग होता है।

बदहजमी—नशा करनेवाले, शराब पीनेवाले और जिन्होंने बहुत ज्यादा किनाइन सेवन की है या जिनके शरीरमें पारेका विष घुसा हुआ है, उनकी अजीर्णकी बीमारीमें—लैकेसिस फायदा करता है। खाकर उठते ही पेट फूल उठता है, पेटमें एक तरहका दर्द होता है—यह दर्द भोजनके समय बन्द हो जाता है, पर कुछ देर बाद ही फिर बढ़ जाता है, रोगीको किसी तरहकी खट्टी चीज सहन नहीं होती। "भोजन करनेपर, पेटके दर्दका घटना" यह लक्षण—एनाकार्डियममें है पर उसमें पेट खाली हुए बिना दर्द नहीं बढ़ता; पर लैकेसिसमें—भोजनके कुछ देर बाद ही दर्द पैदा हो जाता है।

अंत-प्रदाह—दस्त, कै, लगातार पाखाना लगा रहना, पेटमें जलन, दस्तमे वहुत सडी गन्ध, पेटमे पे ठनका दर्द, उसमे हाथ लगनेसे भी तकलीफ होती है। कपडेका भारतक सहन नहीं होता, पेट फूलना, साँस लेने और छोडनेमे तकलीफ, नाडी क्षीण इत्यादि का लक्षण रहनेपर—लैकेसिसका प्रयोग होता है। लैकेसिसमे वमन होता है, हिलने डोलनेपर ही कै होना बढ जाता है और चुपचाप बैठे रहनेपर घट जाता है। नींद आते ही या नींद खुलते ही रोग लक्षणोंका बढना लैकेसिसका यह लक्षण सभी बीमारियोंमे याद रखना चाहिये।

विसर्प—फैलनेवाला त्वचाका प्रदाह या विसर्प—इस बीमारीमे हमलोग प्राय—एपिस, बेलेडोना, रसटक्स, लेकेसिस प्रभृति दवाये व्यवहार करते हैं। तेज बोखार—प्यास, प्रचण्ड प्रलाप, सर-दर्द, माथा गरम होना, पैर ठण्डे, ये सब लक्षण—बेलेडोनाके हैं। पर यह याद रखें कि—बेलेडोना रोगकी पहली अवस्थामे जबतक तेज लक्षण सब बने रहते हैं, तबतक फायदा करता है। रोगकी तेजी घटनेपर जब प्रलाप तथा अन्यान्य दूसरे दूसरे लक्षण सब हल्के पड जाते हैं, वही लेकेसिस प्रयोगका उपयुक्त समय है। एपिसमें—रोगवाली जगह फूल उठती है और विसर्पका रङ्ग गुलाबी दिखाई देता है। लैकेसिसमे—काला या नीला होता है, एपिसमें अगर बोखार रहता है तो वह तीसरे पहर ३ बजे बढता है और उसके साथ प्यास या पसीना बिलकुल नहीं

रहता। रसटक्समें—विसर्पका रङ्ग लाल और रोगवाली जगहपर छालेकी तरह उद्भेद होते हैं। बहुत जलन होती है और डक मारनेकी तरह दर्द होता है। एपिसमें डक मारनेकी तरह दर्दका लक्षण रहनेपर भी उसमें पहले डक मारने जैसा दर्द होने बाद जलन आरम्भ होती है। एपिसमें—छाले नहीं निकलते, इसके अलावा—एपिसकी बीमारी अकसर पहले दाहिनी आँखके निम्न भागमें आरम्भ होकर इसके बाद दाहिनी ओर चली जाती है।

आँखकी बीमारी—कुछ भी दिखाई नहीं देता या धुएँकी तरह थोडा-सा दिखाई देता है। आँखके सामने छोटे छोटे काले कीडेकी तरह कुछ उडता दिखाई देता है, अभी अच्छी तरह देख रहा था, एकाएक मानो देखनेकी ताकत गायब हो गयी। हृद्रोग—(Heart disease) या सर-दर्दकी वजहसे दृष्टि-शक्ति का घटना या लोप होनेपर भी लैकेसिस फायदा करता है।

सर-दर्द—सूर्यकी गर्मी लगकर अगर सर-दर्द हो जाये या जरा-सी धूप लगकर यदि माथेमें दर्द हो पडे तो लैकेसिस फायदा करता है। ग्लोनोयिन भी—सूर्यके तापसे सर-दर्द और सर्दी-गर्मी आदि बीमारियोंमें भी फायदा करता है, पर उसमें अन्तर यह है, कि बीमारीकी प्रचण्ड अवस्थामें—ग्लोनोयिन और तेजी घटकर साधारण-सी गर्मीसे ही सर-दर्द हो जाना—इत्यादि लक्षण अगर अधिक दिनोंतक रह जायें—लैकेसिससे लाभ होता है। सर्दीका स्राव बन्द होकर सर-दर्द होनेपर—लैकेसिस ही एकमात्र

महोषध है। सर्दी, छींकके साथ सर-दर्द और यह सर-दर्द यदि नाकतक चला जाये, तो लैकेसिससे फायदा होगा। इसमें बायीं कनपटीमे और माथेकी बायीं ओर रोगका दौरा अधिक होता है और गर्मीके प्रयोगसे दर्द घटता है। (ग्लोनोयिन देखिये)।

एक तरहका माथेका स्नायुशूलका दर्द—यह सर्दी लगकर या किसी दूसरे ही कारणसे हो, पहले गर्दनमें दर्द होता है, सबेर नींद खुलते ही रोगीकी गर्दन या माथेके पिछले भागमे एक तरहका दर्द अनुभव होता है, क्रमश यह दर्द बढता है। अन्तमे ऐसा हो जाता है, कि तकियेपर माथा रखने यहाँतक कि वहाँ हाथतक लगाने नहीं देता, दर्द तीसरे पहर घटता है, पर फिर सबेरे पहलेकी तरह बढ जाता है।

मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह और स्नायुशूल—पहले ब्रह्मतालुसे दर्द आरम्भ होकर क्रमश समूचे माथेमे फैल जाता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डमे दबा रखनेकी तरह दर्द, मानो दम रुक जायगा, यह लक्षण नींद आते ही या नींद खुलनेके बाद ही बढ जाता है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे उदरी, शोथ इत्यादि बीमारियाँ होनेपर—लैकेसिस फायदा करता है। एपिसमे भी—लैकेसिसके लक्षणोंकी बहुत कुछ समानता दिखाई देती है और हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे उदरी, शोथ इत्यादिमें भी इसका व्यवहार होता है, पर एपिसका दर्द—कलेजेमे बिंधने-फोडेकी तरह और रोगी एक बार [illegible] मनमे सोचता

है, कि दूसरी बार फिर साँस ले नहीं सकूँगा, यह लेकेसिसमें नहीं है। आर्सेनिक, डिजिटेलिस, (स्पोंजिया), कैलि-कार्ब इत्यादि दवाएँ भी हृत्पिण्डकी बीमारीमें फायदा करते हैं, उनका अध्याय देखिये।

हृत्पिण्डकी दूसरी दूसरी बीमारियाँ—हृत्शूल, हृत्पिण्डका बढना (Hypertrophy), क्रानिक-एण्डोकार्डिटिस और हृत्पिण्डका प्राय सब तरहकी साधारण बीमारियोंमें, बहुत कलेजा धड़कना और हृत्पिण्डमें दबाव मालूम होना, उससे श्वास-रोधकी तैयारी, हृत्पिण्डमें दर्द, दर्दका—बाएँ बाहुके भीतरतक चला जाना प्रभृति लक्षण रहनेपर लैकेसिस फायदा करता है; स्नायविक कलेजेकी धड़कन (nervous affections of the heart with palpitation) इतने जोर जोरसे कलेजा धडकता है, कि ऐसा मालूम होता है कि अभी श्वास-बन्द होकर मृत्यु हो जायगी। यह भी लैकेसिसका लक्षण है।

बवासीर—बवासीरका मसा—वह भीतरी मसा हो या बाहरी, बहुत अधिक टपकका दर्द, खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो बवासीरकी जगहपर कांटा गड रहा है और मानो कोई चीज मलद्वारके पास अडी हुई है, इसीलिये, रोगी लगातार काँखा करता है, पाखाना फिरनेके समय इतनी तकलीफ होती है, कि उठकर खडा हो जाता है, मलद्वार मानो बन्द हुआ जाता है। लैकेसिसके मलमें बहुत बदबू रहती है। नक्स-वोमिका और

भी—ववासीरकी बीमारीमे ज्यादा लाभदायक हैं। नक्समे—प
का वेग और चेष्टा लगातार बनी रहती है। पर पाखाना खु
नहीं होता। लाइकोपोडियममे—मलद्वारमे सकोचका भाव
रहता है, इसी वजहसे थोडा-सा पाखाना होकर ,फिर नहीं
या एकदम ही नहीं होता। इसमे तकलीफ बहुत अधिक रहत
यह (भीतरी या बाहरी मसा) दोनोंमे ही समान भावसे प
करता है।

यकृत—शराबियोकी यकृतकी बीमारीमें लैकेसिस फ
करता है। यकृतकी खराबीकी वजहसे कामला, लिवरका
(liver-abscess) इत्यादि बीमारियोमे दाहिनी ओर भ
दर्द—इसीलिये, कपडेतक नहीं रख सकता। लाइकोपोडियम
यकृतमें बराबर दर्द रहता है, मुँहका स्वाद बहुत ही बेस्वाद
है। रोगी भोजनके बाद बहुत कष्ट अनुभव करता है। पेट
चराया करता है। इसीलिये, बाध्य हो, पेटसे कपडा हटा
है, पेटमें अकडनका दर्द—लैकेसिसमे अधिक और वह प्राय
समय ही रहता है , लाइकोपोडियममे—दर्द—केवल भोजनके
अधिक होता है।

चर्म—पुराने जखमके चिन्ह फिरसे लाल हो जा
पकते हैं, फटते हैं, रक्त निकलता है।

ज्वर—लैकेसिस, वात-श्लेष्मा (Typhoid) और स
पाम (Intermittent) दोनोंही प्रकारके ज्वरोंमे ही लक्षण वि
भावसे फायदा करता है।

टाइफायड-ज्वर—इसमे निम्न लिखित लक्षण रहनेपर लैकेसिसको स्मरण करें।

रोगी धीरे धीरे आस्ते आस्ते बुदबुदाया करता है, बहुत कमजोरी और निस्तेज भाव, हाथ पैर ठण्डे, हाथ पैरोंका फड़कना, रोगी कुछ देरतक बकता है और बकने बाद फिर कुछ देरतक चुपचाप बैठ रहता है (यह बकना बेलोडोनाकी तरह उग्र नहीं है)। जीभ बाहर निकालनेके समय काँपती है या दाँतमें अड जाती है, जीभपर मैल (मैल इकट्ठा होना) काले रंगका, इस काले लेपसे ही समझमें आ जाता है, कि रोगी साघातिक रोग-विषसे जर्जरित हो गया है। जीभका लेप कभी लाल, कभी जीभपर छाले, और जख्म हो जाता है, कभी जीभ फटकर खून निकलने लगता है, जीभ सूखी रहती है। पक्षाघातकी तरह हो जाती है। "निकम्मे बकना और बकनेके बाद कमजोरीकी वजहसे कुछ देरतक चुप पड़े रहना"—यह लैकेसिसका एक विशेष लक्षण है। टाइफायड ज्वरकी अन्तिम अवस्थामें प्राय लैकेसिसकी जरूरत पडती है, किन्तु जहाँपर लैकेसिसकी जरूरत पडती है वहाँपर पाखानेमें बदबू रहनी चाहिये। अन्तिम अवस्थामें रोगी जब मुर्देकी तरह पड़ा रहता है, होशमें नहीं रहता, दाँती लग जाती है, जबडे फूल जाते हैं, उस समय लैकेसिस अमृतकी तरह काम करता है। सान्निपातिक ज्वरमें लैकेसिसके सिवा हायोसियामस, ओपियम, बैप्टीशिया, आर्निका, लाइकोपोडियम इत्यादि दवाओंकी भी जरूरत पडती है।

सान्निपातिक ज्वरमे—मस्तिष्कमें पक्षाघातका लक्षणादि मालूम होते ही—लैकेसिस और हायोसियामसको याद करें। हायोसियामस का—रोगी बहुत ही दुबला रहता है। नीचेवाला जबडा अटक जाता है, हाथ पैर काँपा करते है (लेकेसिसमे ये सब लक्षण है), इनके अलावा—अनजानमें पाखाना हो जाना, नाकसे जोरकी आवाज होनेके साथ साँस निकलना, (ओपियमकी तरह) मस्तिष्कमे रक्त-सचय इत्यादि हायोसियामसके लक्षण है, लेकिन हायोसियामस-का एक विशेष लक्षण है—रोगीके शरीरकी कोई कोई माँसपेशी एकाएक तन जाती है (Twitching)। यह लक्षण और किसी दवामे नहीं है। (ओपियमका—रोगी वेहोश पडा रहता है,) पुकारने पर कोई जवाब नहीं देता, चेहरेका रङ्ग लाल दिखाई देता है, नाक बोलनके साथ साथ जोर जोरसे साँस निकलती है। जवडे अटक जाते है, मस्तिष्कका रक्त सचय या मस्तिष्कका पक्षाघात होता है (रोगी एकदम वेहोश और अज्ञानसा पडा रहे और उसके साथ यदि जवडा अटक जाय तव समझे कि मस्तिष्कका पक्षाघात आरम्भ हो गया है)। लैकेसिसमे—ओपियमके कितने ही लक्षण रहनेपर भी यह समझना होगा कि लैकेसिसमें मस्तिष्कमे टायफायड विष इकट्ठा हो जानेकी वजहसे रोगी विकारमे वका करता है, और ओपियममे—मस्तिष्कमे वहुत अधिक रक्त सचय होनेकी वजहसे विकारमें ज्ञानशून्य अवस्थामें पडा रहता है। आर्निकामे—वेहोश, जवडा अटक जाना, टकटकी लगी दृष्टि। अनजानमें पाखाना पेशाव हो जाना, मस्तिष्कमें रक्तसचय प्रभृति कितने ही लक्षण हायोसिया-

मस और कितने ही ओपियमके लक्षण रहनेपर भी, इसमें—रोग
को पूछनेपर वह कहता है कि मैं अच्छा हूँ और शरीरमें ज
जगह काली लकीरों-सा दाग पड जाता है (ecchymosi
यह लक्षण और किसी दूसरी दवामें नहीं है।

बैप्टीशिया—इसके सभी स्राव, जैसे पेशाव, पाखाना, पसी
श्वास प्रश्वास, बलगम इत्यादि सबमें ही अत्यन्त दुर्गन्ध रहती
पर रोगके पहले दूसरे सप्ताहमें बैप्टीशियाके अन्यान्य लक्षणोंके स
ऊपर बताये हुए ढङ्गका दुर्गन्ध स्राव हो तो—बैप्टीशिया। और रो
तीन चार हफ्तोंतक रोग भोगता भोगता अब बहुत कमजोर
जाता है, उस समय लैकेसिस फायदा करता है। जीभका काँपन
जीभ बाहर निकालनेपर दाँतमें अड जाया करती है, मलद्वार
राहसे काले रङ्गका रक्तस्राव, नीचेका जवडा अटक जाना प्रभृ
लक्षण—बैप्टीशियामें नहीं रहते। लाइकोपोडियम—यह वा
श्लेष्मा ज्वरमें, लेकेसिसके बाद इसकी जरूरत पडती है, बेहो
की तरह पडा रहना, नीचेका जवडा अटक जाना, गलेका उ
जोरसे घर घर करना, टकटकी लगाकर देखना इत्यादि कितने
लक्षण लाइकोपोडियममें है, लाइकोपोडियमके—रोगीकी नाक
(alsae nasi) दीवारें दोनो हिला करती है, जीभ एकवार बा
निकालता है, एक बार भीतर खींचता है। एपिस, एसिड फा
एसिड-म्यूर, स्ट्रैमोनियम, बेलोडोना, एगारिकस इत्यादि दव
विकारावस्थाकी दवायें हैं। उनका अध्याय देखिये।

अकडन, (Stiff-neck) टाइफायड, निमोनिया, डिपथिरिया गलेका जखम, प्रभृति कई बीमारियोंमे इसका व्यवहार होता है। जो कुछ भी हो,—लैकेनैन्थिस ऊपरी लिखी हुई कई एक बीमारियोंमें व्यवहृत होनेपर भी मैने स्वय अपनी चिकित्सा कालमें कई एक बीमारियोंमे व्यवहार कर लाभ देखा है। नीचे उसका वर्णन किया जाता है।

गर्दनमें वात, गर्दनमे अकड़न—पीठ और गर्दन, दर्दके साथ गर्दनमे अकडन, सर और गर्दन दाहिनी ओर खिंची हुई है, किसी प्रकारका गलेका जखम रोग या डिफ्थिरिया बीमारीके साथ यह लक्षण मिलनेपर—लेकनेन्थिसका प्रयोग करें, लाभ होगा।

थाइसिस—(यक्ष्मा-खाँसी)—इस बीमारीके प्रथम आक्रमण अवस्थाके प्रधान लक्षण—लगातार बोखार बना रहना, शरीर का सूख जाना, लगातार कष्टदायक खाँसी, रातमें पसीना, इन कई उपसर्गोंमे अगर ऐसा देखाई दे, कि रोगीका "खाँसी" का उपसर्ग ही बहुत प्रवल है, खाँसीकी वजहसे सो नहीं सकता, छातीमे दर्द, समूचे शरीरमें दर्द, होनेपर लैकनैन्थिस—φ २।३ बूँद आधी छटाक पानीके साथ ३।४ घण्टेका अन्तर देकर रोज ४।५ बार प्रयोग करें देखेंगे—४।५ दिनके अन्दर ही खाँसी और साथके २।१ कई उपसर्ग भी घट जायेंगे।

एनिसाम स्टेलटाम—३x—६x, खून निकलनेके

साथ यक्ष्मा रोगमें—फलेजेकी तीसरी पँजरेकी हड्डीके पास दर्द,—दर्द—दाहिनी ओर अधिक, कभी कभी बायीं ओर भी रहता है, इस दर्दके साथ ही बार बार खाँसी और पीबकी तरह श्लेष्मा निकलनेपर फायदा करता है।

द्रष्टव्यः—इस बीमारीके लिये कितनी ही उत्तम दवाएँ क्यों न दी जायें, रोगी अकसर बचता नहीं है, मृत्यु ही होती है। एक बार मैं एक मृतप्राय यक्ष्माके रोगीको एक महात्मा सन्यासी-के उपदेशसे दूध पिलाकर उसकी बीमारी आराम कर सका था। उसको रोज ५।६ बार एक पावके अन्दाज स्तनका दूध पिलाया जाता था। रोगी प्राय दो महीनोंमें आरोग्य हुआ था। इसके पहले मैं और किसी यक्ष्मा रोगीको आरोग्य होते न देख सका था। औषध—पहले ४।५ दिन इस नियमसे लेकेनैनथिस—ϕ, उसके बाद एक सप्ताहतक—उसकी ३ री शक्ति। इसके बाद अन्तवाले कई दिन—आर्सेनिक आयोड—३x विचूर्ण, २।३ मात्रा स्टैनम—३० शक्तिका दिया था।

अब पाठकोंसे यह अनुरोध है कि—अगर आपको कोई यक्ष्माका रोगी मिले तो अन्यान्य पथ्योंके साथ रोज जितना मिल सके, उतना किसी प्रसूतासे रोगीके लिये स्तनके दूधका प्रबन्ध करें और फलाफल मुझे लिखें। सेवन करनेवाली दवा लक्षणके अनुसार स्वय ही चुनें।

जलन—ज्वरके साथ या बिना ज्वरके ही, तलहत्थी-

मे, पैरके तलवेमें जल जानेकी तरह जलन रहनेपर और जलनप्र
प्रधान दवा सलफर प्रभृतिसे फायदा न होनेपर—लेकनैन्थिस दे

पेट गड़गड़ाना—हमेशा पेट गडगडाया करता है
मानो कोई एक चीज पेटमें घूमती फिरती है (एलो, लाइको
पेटमें गरमी मालूम होना, पेट मानो वायुसे भरा है, पाखाना होने
समय भी बहुत ज्यादा वायु निकलती है। बार बार वेग होता है
पर पाखाना नहीं होता। निमोनियाके साथ पेट फूलना।

क्रम—१ म से ६ ठी शक्ति। थाइसिस रोगमें—मूल अर्क
(unit doses), सप्ताहमें दो या एक बार (बोरिक)।

फारमुला—३।

लैक्टुका विरोसा।

(LACTUCA VIROSA)

(एक तरहके छोटे गाछसे टिंचर तैयार होता है)—
स्त्रियोंके यंत्रणादायक प्रमेह रोगमें और पुरुषोंके प्रमेहमें—रोगीके
बैठे रहनेपर ऐसा मालूम होता है मानो मूत्रनलीसे बूँद बूँद
पेशाब [illegible] है और स्त्रियोंके [illegible] ट्युमर (डिम्ब-
कोपका [illegible] बहुत दर्द [illegible] रहनेपर बहुत
[illegible] आदि

पिक खाँसी, हूपिङ्ग खाँसी, कलेजेमें दवा रखनेकी तरह दर्द, शरीरके दूसरे दूसरे स्थानोंमें भी इसी तरहका दर्द, रोगी दर्द घटानेके लिये लगातार जम्हाई लेता है, मेरुदण्डमें दर्द, यह चूतड़की हड्डीके नीचेतक फैल जाता है, शरीर शोला या परकी तरह हलका मालूम होता है प्रभृति बीमारीके लक्षणोंकी भी यह बढ़िया दवा है।

क्रम—ϕ, १म, ३० वीं शक्ति। फरमुला—१।

लैपिस एलबा।

(LAPIS ALBA)

(सिलिको फ्लोराइड—आफ कैलसियम)—यह गांठोंका फूलना और गलगण्ड (*goitre*) रोगका महौषध है। कैन्सरकी बीमारीमें जखम होनेके पहले इसका प्रयोग होनेपर फायदा होता है। रोगी ग्रन्थियोंके चारो ओर जो सब तन्तु रहते हैं, उन-पर भी बीमारीका दौरा होनेपर फायदा होता है। बच्चोंकी सुखण्डी आदि बीमारीमें शरीरकी चर्बी क्षय हो जाती है, इसके साथ ही यदि आयोडमकी भूख और राक्षसी भूख रहती है, तो—लैपिस-दूसरी दूसरी दवाओंकी अपेक्षा जल्दी फायदा करती है (ब्रोमेनम देखिये), कण्ठमाला धातुके मनुष्योंके लिये यह लाभ-दायक है। छाती, पाकस्थली, जरायुमें काँटे बिंधनेका तरह

दर्दके साथ जलन इस लक्षणमें लैपिस लाभदायक है। जरायुके कैन्सरमें—और फाइब्रायड टियुमरमें बहुत जलन और रक्तस्रावमें भी इसका व्यवहार होता है, स्तनके पासकी जगहपर लगातार दर्द—लैपिस प्रयोग करना चाहिये (रेडियम ब्रोम—जरायुके कैन्सरमें फायदा करता है)।

द्रष्टव्य—एक २४।२५ वर्षकी स्त्रीके जरायुके कैन्सरकी बीमारी—कलकत्ता चित्तरंजन अस्पतालमें ३।४ महीनेतक रेडियम ट्रीटमेण्ट करवानेपर भी बीमारी आराम न हुई। मैंने उसे रेडियम ३० और लैपिस ३० पर्याय दिनसे प्राय १०।१२ दिन व्यवहार कराया, पर कोई फायदा न हुआ। सिर्फ दर्द कुछ घट गया। रोगिनीकी मृत्यु हुई (कैन्सर अकसर आराम नहीं होता, मारात्मक होता है)।

सन् १९१० इस्वीके फरवरी महीनेमें बोरिक एण्ड टैफेलकी "Jottings" नामकी पत्रिकाके चौथे पृष्ठमें लिखा है—Cancer can be cured by medicine and in an article in the September "*Homoeopathic Recorder*", A D H Grimmer describes specifically nine cases which were cured or much improved by—Cadmium, used not lower than 30 कोई कैन्सरका रोगी मिलनेपर, मैं भी उसकी— कैडिमियम सल्फ या कैडमियम ब्रोम—३० शक्तिके द्वारा चिकित्सा आरम्भ करूँगा।

कण्ठमालाकी बीमारीमें—फोडा, जखम, गाँठे कडी और फूली, गलेकी गाँठे फूलीं, गर्दन, गलेमें, छोटी छोटी गाठे, उसमें दर्द प्रभृति और माँसार्बुद (Sarcoma), पेटका अर्बुद (Lipoma) कैन्सर (Carcinoma) प्रभृति बीमारीमें यह व्यवहार कर देखें।

सदृश—बैडियागा, आर्स-आयोड, कैल्केरिया-आयोड, कोनि-यम, कैलि-आयोड।

क्रम—१ म—६ ठी शक्ति। फारमुला—७।

लैथाइरस सैटाइवस।

(LATHYRUS SATIVUS)

(हमारे देशमे उत्पन्न खेसारीके दालकी तरह एक तरहके शस्यसे इसका मूल अर्क तैयार होता है) निम्नाङ्गका पक्षाघात, गति-शक्ति राहित्य (लोको-मोटर-एटैक्सी), बेरी-बेरी प्रभृति कई बीमारियोंमे भी इससे फायदा होता है।

पक्षाघात—पेरोप्लिजिया—अर्थात् अर्द्धाङ्गका पक्षा-घात—(निम्न या ऊर्द्ध), यह एकाएक पैदा हो जाता है। वात-से पैदा हुआ पक्षाघात (rheumatic origin), पैरका आंशिक पक्षाघात, चलनेमे पैर काँपते हैं, झटका खाता है, पैर कडे पड जाते हैं, रोगी सोया सोया हाथ पैर फैलाता और सिकोड सकता है, पर बैठकर न तो हाथ पैर फैला सकता है और न

सिकोड सकता है, पाछा (glutol muscles) और निम्नाङ्ग पतला पड जाता है।

लाकोमोटोर एटैक्सि—अथवा गतिशक्ति राहित्यम चलनेके समय शरीर ढलमलाया करता है, पैरसे पैर जुड जाते है, चोट लगती है, आँख बन्द कर खडे होनेको कहनेपर शरीर काँपता है, ढलमलाया करता है, गिर जानेका उपक्रम हो जाता है। कोई चीज उठाने या रखनेके समय हाथ काँपता है, स्थिर होकर खडे रहनेपर भी काँपा करता है, गिर जानेकी सम्भावना रहती है, बैठनेके समय सामनेकी ओर झुककर और कुवडा होकर बैठता है, सर उठाकर सीधे भावसे बैठ नहीं सकता।

लेथाइरसका एक और भी विशेष लक्षण है—घुटना और पैरकी एँडी कडी हो जाती तथा अकड जाती है। जमीनसे पैरका अगूठा उठा और पैरकी एडी जमीनमे लगा नहीं सकता। बच्चों-का पक्षाघात।

पैर फूलना—पैर लटकाकर कुर्सीपर या बेंचपर बैठकर काम करनेसे ही पैर फूल जाते है।

बेरी-बेरी—इन्फ्लुएजा, चेचक, प्लेग, हैजा, बेरी बेरी प्रभृति कई बीमारियाँ बहुव्यापक रूपसे प्रकट होकर कभी कभी कोई कोई जगह एकदम जन-शून्य बना देती है। उस वर्ष जब कलकत्ते मे भयानक रूपसे बेरी-बेरीका प्रादुर्भाव हुआ था, उस समय किसीने कहा कि कलका छाँटा चावल, मिलावटी सरसोंका तेल और वेजि-

टेब्ल प्रोडक्ट (नकली उद्भिज घृत) से बनी हुई चीज खानेसे ही यह रोग पैदा होता है, किसी किसीका यह भी कहना है, कि बहुत पानी बरसनेसे ही यह रोग पैदा होता है और यही इसका प्रधान कारण है, पर उस रोगका मूल कारण कुछ स्थिर न कर सकनेपर,उस समय पलोपैथ चिकित्सक महान गडबडीमें जा पडे थे, उनके बडे प्रिय इंजेक्शनके प्रयोगसे भी कुछ विशेष लाभ न हुआ था। होमियोपैथीमें कारण जाने बिना भी केवल लक्षणोंपर निर्भर कर सब तरहकी बीमारियोंका इलाज किया जा सकता है। इसी कारण से उस मारात्मक पपिडेमिक रोगकी चिकित्सामें होमियोपैथोको खासी सफलता मिली थी। मैंने पपिस, आर्सेनिक, कैलि-फास, पपोसाइनम, क्रेटिगस, डिजिटेलिस, नैट्रम-सल्फ, लैथाइरस—इन कई दवाओंके सहारे चिकित्साकर बहुतसे बेरी-बेरीके रोगी आरोग्य किये हैं। बेरी-बेरी रोगका प्रधान लक्षण है—पैर-फूलना, कलेजा धडकना, अगर सूजनके साथ हृत्पिण्डपर भी बीमारीका दौरा हो—पपोसाइनम—ϕ और २०० और यदि हृत्पिण्डमें कोई गडबडी न हो,केवल सूजन ही एक प्रधान उपसर्ग हो, तो—पपिस और लेथाइरस प्रभृतिका प्रयोग करना चाहिये। हृत्पिण्डका कष्ट अगर पपोसाइनमसे न घटे—क्रैटिगस—ϕ, मात्रा—५ से १० बूँद, रोग कुछ पुराना हो जानेपर कितनी ही बार—आर्सेनिकके प्रयोग से भी दो चार रोगी आरोग्य हुए थे, (कितने ही रोगी सिर्फ कैलि-फाससे आराम हुए थे)।

१५०, न० गणेश मुहल्ला प्रतापभवन काशी और कालीघाट

ॐ कृष्णकाली देवीके मन्दिरसे पूज्यपाद स्वर्गीय आनन्द ऋषिने,— हरितकी, आमला, सोंठ, पीपल, दूब, तुलसी, मरिच, दूध, घी, शहद, हलदी, हींग प्रभृति बतहु-सी देशी दवाओंकी होमियोपैथिक ढङ्गकी जो नवीन चिकित्सा अविष्कारकी है, उससे हड ५ और ६ टा क्रमसे बेरी बेरी रोगमें उस समय बहुत लाभ दिखाई दिया था। दुखकी बात है कि वे एकाएक ४ थी मार्च १९२७ मे स्वर्ग सिधार गये। अब उनकी आविष्कार की हुई दवायें भी ठीक ठीक तैयार नहीं होतीं और उन दवाओंकी सदृश चिकित्सा नामक छोटीसी पुस्तक जिसका अङ्गरेजी सस्करण छपा था, अब फिर दुबारा नहीं छपती।

क्रम—३४—६ ठी शक्ति। फारमुला—४।

लैक्ट्रोडेक्टस हैसेल्टी।

(LACTRODECTUS HASSELTI)

(एक तरहके काले रगके मकडेसे यह दवा तैयार होती है)— बहुत दिनोंकी खून जहरीला हो जानेकी बीमारीमें यह फायदेमन्द है। पाइमिया, सेप्टिसिमिया प्रभृतिमें तेज दर्द रहनेपर, इससे दर्द दूर होता है। अगर किसी जखमके चारो ओर बहुत सूजन रहे, तो वह भी घट जाती है। एचिनेसिया, पाइरोजिनियम प्रभृति भी इस बामारीकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं, उनके स्थानपर देखिये। प्रत्यगोंके

पक्षाघात, पेशियोंका पतला पड जाना, स्मरण शक्तिका घटना (एनाकार्ड), कानमें गरजनेकी आवाज प्रभृतिमें भी इससे फायदा होता है। किसी बीमारीमें हमारी पोलिक्रेस्ट्स अर्थात साधारण व्यवहारमें प्रचलित दवाओंसे अगर कोई फायदा न हो तो उसके बाद इसका व्यवहार कर देखे।

लैक्ट्रोडेक्टस-मैक्टैनस—एनजाइना पेक्टोरिस, हृत्पिण्डमें तेज दर्द और सांस रुकनेका भाव होना, श्वासकष्ट और लैक्ट्रोडेक्टस-कैलिपो—लिम्फैनजाइटिसकी बढ़िया दवा है।

क्रम—६ ठी शक्ति। फारमुला—७।

लोरोसिरेसस

(LAUROCERASUS)

(पर्शिया और एशिया माइनरके एक तरहके गाछके कच्चे पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है। इसमें हाइड्रोसियानिक एसिडका अंश है)—वक्षस्थल और हृत्पिण्डकी कमजोरी और जहाँ प्रतिक्रियाका अभाव, बलहीनता, निस्तेज भाव बहुत अधिक, समूचा शरीर ठण्डा, शरीरमें भी ठण्डकका भाव दूर नहीं होता, वहाँ इसके व्यवहारसे विशेष फायदा होता है।

हैजा—इस बीमारीकी अन्तिम अवस्थामें जब दस्त के

वन्द, शरीर ठण्डा, बहुत श्वास कष्ट, नाडी लोप, पेशाव वन्द, निगलनेमें कष्ट प्रभृति लक्षण रहते हैं, उस समय इससे बहुत फायदा दिखाई देता है।

वक्षस्थल और हृत्पिण्डकी वीमारी—रोगी जरा भी चलता-फिरता है, थोडा भी परिश्रम करता है या नीचेसे ऊपर चढते ही कलेजा धडकता है। हृत्पिण्डमें दर्द अनुभव होता है और हाँफा करता है, मानो साँस वन्द हो जाती है। इसीलिये, छातीपर हाथ रखता है। थाइसिस (Phthisis), कानजम्पशन (Consumption) या बहुत दिनोंकी खाँसीकी वीमारीमें अथवा वात-श्लेष्मा, निमोनिया प्रभृति वीमारियोंमें बहुत ज्यादा वलगम निकलनेपर और उसमें खूनके छींटे मिले रहनेपर— लोरोसिरेससे बहुत फायदा होता है। इसमे दाहिनी ओरकी अपेक्षा वार्यी ओरके फेफडेपर वीमारीका अधिक हमला होता है। हृत्कपाटकी वीमारीके साथ खाँसी (Cough with valvular disease), हृत्पिण्डको मुट्ठीमें कसकर पकडने या जकड रखनेकी तरह दर्द, नाडी बहुत क्षीण, कलेजा धडकना (small feeble pulse, clutching at heart, palpitation, cyanosis), हृत्पिण्डकी वीमारीमें अगर रोगी विछावनसे उठ बैठता है, तो उसका शरीर और मुँह नीला हो जाता है। श्वासमें तकलीफ होती है। प्रतिक्रियाकी कमी (lack of reaction), ठीक ठीक दवाका प्रयोग करनेपर भी फायदा नहीं होता, तो लोरोसिरेससके सिवा

और भी कई दवाओंकी जरूरत होता है, जैसा—सोराविष-ग्रस्त-व्यक्तियोंमें प्रतिक्रियाकी कमी—सलफर और सोरिनम, प्रमेह-विष-दुष्ट धातुके मनुष्यकी प्रतिक्रियाके अभावमें—मेडोह्निम, मोटे थुलथुले मनुष्यमें प्रतिक्रियाकी कमी—कैप्सिकम; रोगी मोहमें घिरा और निश्चेष्ट भावसे रहनेपर—ओपियम, स्नायु-सम्बन्धी बीमारियाँ (nervous disease) में चुनी हुई दवासे फायदा न होनेपर—वैलेरियाना, जिङ्क-वैलेरियाना और एम्ब्रा-ग्रिसिया, हिमाङ्ग (Collapse), अग-प्रत्यग बरफकी तरह ठण्डे, साँसतक ठण्डी हो जानेपर—कार्बो-वेज और स्नायविक प्रतिक्रियाकी कमीमें चुनी हुई दवासे फायदा न होनेपर—सोरिनमका प्रयोग करना चाहिये।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, काफि, इपि, ओपि, नक्स-मस्केटा।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४—८ दिन।

क्रम—४—३०—शक्ति।	फारमुला—२।

लेसिथिन।

(LECITHIN)

अण्डेका पीला अश (yolk of egg) से यह तैयार होता है। इसके द्वारा रक्तकी पोषण-क्रिया बढ जाती है और अगर बहुत

दिर्नांतक कोई बीमारी भोगता भोगता कोई रक्तहीन हो जाता है (in anæmia) तो इससे विशेष फायदा होगा।

द्रष्टव्य :—हमारे पाठकोंमें सम्भवत बहुतेरे जानते होंगे कि एनिमियाकी प्रधान दवा—लोहा है (iron), और अण्डेका पीला अश भी लोहा है, सफेद अश—एलवुमेन, अतएव अगर किसीको रक्तहीनताकी बीमारी हो जाये और वे दवा सेवन करनेके साथ ही अगर एक मुर्गीका अण्डा नित्य व्यवहार करे तो शीघ्र ही उनके स्वास्थ्यकी उन्नति हो जायगी

अण्डा बनानेका नियम —

एक या दो मुर्गीके अण्डेका पीला अश लेकर उसमे २।३ ड्राम चीनी अच्छी तरह मिलाकर एक काँचके गिलासके भीतर रखकर, उसमे २ ड्राम १ न० ब्राण्डी या ४ ड्राम पोर्ट-वाइन मिलाकर उसी गिलासमें १ पावसे लेकर आध सेरतक कुछ हलका गरम दूध डालकर अच्छी तरह हिलानेसे ही अण्डा तैयार हो जाता है, उसे रोज सवेरे एक बार पी लेना ही यथेष्ट है।

उक्त एनिमिया रोगके अलावा—लिसिथिन, स्वास्थ्य-भग, तन्दुरुस्तीका बिगडना, मास-पेशीका क्षय, पेशावमें चीनी, एलवुमेन और फास्फेट और खासकर फास्फेटका परिमाण अधिक रहना प्रभृतिमें भी व्यवहृत होता है।

ध्वजभग और मानसिक तथा शारीरिक दुर्बलताकी भी यह बढिया दवा है (ऐगनस अध्याय देखिये)।

सदृश—फेरम।
क्रम—ϕ—३० वीं शक्ति।

लीडम पैलस्टर।

(LEDUM PALUSTRE)

(फ्रान्स, एशिया प्रभृतिकी एक लतासे मूल अर्क तैयार होता है)—यह वातकी धातु, जिनको अकसर गठिया वात या वातकी बीमारी हो जाया करती है, बहुत ज्यादा शराब पीनेके कारण स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, उनकी बीमारीमें यह बहुत लाभदायक है।

चरित्रगत लक्षण :—

१। वात या गठिया-वात—निम्नाङ्ग (जैसे, पैर) से आरम्भ होकर क्रमश ऊपरकी ओर चढता है (नीचे उतरनेपर—कैल्मिया), गांठमें पत्थर-चूर (gouty stone) पैदा होना, बायाँ कन्धा और दाहिनी उरु-सन्धि आक्रान्त होना, रोगवाला अंश पतला हो जाता है, २। रोगीका शरीर हमेशा ही ठण्डा और शीत अनुभव करता है, शरीरका ताप (vital heat) घटता जाता है, रोगवाली जगहको हाथ लगाकर देखनेपर भी ठण्डी मालूम होती है। ३। ठण्डे बरफके पानीमें वात वाला पैर डुबा रखनेपर तकलीफ घटती है, रातमें बिछावनकी गरमीसे, बिछावनकी चादरके छूनेसे,

हिलने-डोलनेपर तकलीफका बढना, ४। आँखकी पलकोंमें चोट लगकर काला दाग पड जाना, ५। पैरका तलवा बहुत खुजलाता है (रस, पल्स), ६। पैर और पैरकी एँडी जरामें ही मोच आ जाती है, ७। धारदार अस्त्र या काटी आदि किसी जगहमें गडकर जखम हो जाता है, ८। किसी भी जगहकी हड्डीमें चोट आकर बहुत दिनोंतक उसका न जुटना, काली या नीली जगहका हरा हो जाना, ९। चूहा, बर्रे, मच्छड इत्यादिका काटना।

वात—इसका व्यवहार नये और पुराने—दोनो तरहके ही वातमें होता है, नये वात-रोगमें—गाठवाली जगह फूलती है। रोगवाली जगह गरम हो जाती है, परन्तु उतनी लाल रंगकी नहीं होता, बल्कि सफेद ही दिखाई देती है। लिडममें—तकलीफ रातमें, बिछावनकी गरमीसे, सन्ध्यासे आधी राततक और गरम प्रयोगसे बढ़ती है और ठण्डे प्रयोगसे घटती है। दर्दकी प्रकृति मानो खोंचा मारने और टपककी तरह और जरा भी हिलने डोलनेपर बढ जाती हैं। जो मनुष्य बहुत दिनोंसे शराब पी रहे हैं, उनके वात-रोगमें यह ज्यादा फायदा करता है। इसका दर्द निम्नाङ्गसे ऊपरी अगमे चला जाता है, एक गाठसे दूसरी गाठपर जाता है, एक बगलसे दूसरी बगलमें जाता है, दर्द—जगह बदला करता है। घुटनेके साइनोवाइटिस और वातमें लिडम फायदा करता है।

मर्कुरियस वाइवस—रोगी दर्दवाली जगह खोल रखना

चाहता है, इससे रातमे तकलीफ बढ जाती है (लिडममें भी यह लक्षण है, पर इसमे "मर्कुरियसकी तरह बहुत ज्यादा पसीना और उससे बीमारीका घटना" लक्षण इसमे नहीं रहता।)

रसटक्स—इसमे गरमीसे घटना और सर्दीसे बढना और पहली बार हिलने डोलने और चुपचाप पडे रहनेपर दर्द बढनेका लक्षण है। रसटक्समे—बर्सात या ठण्डी हवामे और सर्दीसे बीमारी बढ जाती है, जरा भी ठण्डी हवा लगनेपर रोगवाली जगहमे कनकनी होती है, कमरका वात (Lumbago)—में रसटक्स फायदा करता है।

केल्मिया—लिडमके ठीक विपरीत अर्थात् दर्द—ऊपरसे नीचेकी ओर उतरता है (जैसे घुटनेसे पैरके तलवेकी ओर उतरनेपर), इसमे ज्वर और सूजन नहीं रहती।

स्टिलिञ्जिया—पेरियास्टियमका पुराना वात, कमर और अग प्रत्यगका वात, कण्ठमाला और उपदशकी वजहसे वात। वातगुटी (Nodes) और पैरके ऊपर उपदशके जखम।

रोडोडेण्ड्रन—रसटक्सकी तरह वरसात और जाडेके दिनोंमें अर्थात् थोडी-सी सर्दी पडते ही तकलीफ और दर्द बढ जाती है। दस पाँच दिनोतक कुछ नहीं मालूम होता—इसके बाद एकाएक ठण्ड लगकर या पैरका अगूठा फूल्कर अगर वात रोग दिखाई दे तो इससे फायदा होता है।

एनाकार्डियम—ओरियेण्टेलिस—गर्दनमे वात, दर्द, अकडन (Stiff-neck) दर्दके कारण गर्दन नहीं हिला सकता।

पलसेटिलामें—धीरे धीरे गर्दन हिलानेपर दर्द घटता है। कोनियममें जोरसे गर्दन हिलानेपर दर्द घटा करता है, एनाकार्डियम—यह एक दूसरी तरहके दर्दमें फायदेमन्द है, इसमें रोगी समझता है, कि उसके शरीरके चारो ओर मानो पट्टी बँधी है (sensation of a band around the body)। पीठकी रीढके भीतर मानो एक खील घुसी हुई है (plug), हिलने-डोलनेपर वहाँ दर्द मालूम होता है। घुटने कडे और ऐसा मालूम होता है, मानो पक्षाघात हो गया है और घुटनेमें मानो एक पट्टी कसकर बँधी हुई है। इसीलिये, रोगी बहुत तकलीफसे चलता है, कभी कभी पैरकी एँडीसे लेकर घुटनेतक खिचाव और खींचनका दर्द (drawing pain) या काँटी गडनेकी तरह एक प्रकारका दर्द होता है।

पुराना वात—इसमें भी लिडमकी नयी बीमारीके उपसर्गकी तरह जोडोका फूलना और बिछावनकी गरमीसे रोग लक्षण बढता है। दर्द और सूजन पैरकी गाँठसे आरम्भ होकर क्रमश ऊपरकी ओर जाती है, पैरकी गाँठे फूलती है, अँगुलीमे दर्द होता है। लिडममे पैरके तलवेमे बहुत दर्द रहता है, एपिटमक्रूड, लाइकोपोडियम, साइलिसिया इत्यादि दवाओंमे भी इस प्रकारका लक्षण है। पर ऐसा दिखाई देता है, कि लिडममे—रोगीका समूचा शरीर ठण्डा रहता है, ताप बिलकुल ही नहीं रहता (lack of vital heat)। साइलिसियामे भी कभी कभी इसी

तरह शरीर ठण्डा रहनेका भाव दिखाई देता है और दर्द आदि सभी लक्षण लिडमकी तरह रहते हैं पर इनमें प्रभेद यह है कि साइलिसियाका—रोगी दर्दवाली जगह ढँककर रखता है, क्योंकि गरमीसे बीमारी घटती है और लिडममें—पैर ठण्डे पानीमें डूबो रखनेपर रोगीको आराम मालूम होता है, पैरकी एँडीमें दर्द—लिडम, फाइटोलैका, कास्टिकम इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती हैं।

चोटकी वजहसे दर्द—चोटकी वजहसे सब तरहके दर्दमें लिडम, आर्निकाकी तरह लाभदायक है। आर्निकाका प्रयोगकर जब दर्द कुछ घट जाये और फिर फायदा न होता हो, तो लिडमसे बीमारी एकदम आराम हो जाती है। चोट आदिके कारण अगर काला दाग (Ecchymosis) रह जाये—लिडम महौषध है।

और भी कई दवाओंकी कहाँ और किस अवस्थामें जरूरत होती है, यह नीचे देखिये —

१। सींक, काँटी या सुई आदि गडना—लिडम।

२। चूहा, बर्रे, भौंरा, और मच्छड काटनेपर—लिडम।

३। बिच्छू काटना—स्पिरिट कैम्फर और लाइकर एमोनिया, (बराबरकी मात्रामें नौसादर और चूना एक साथ मिलाकर एक शीशीमें काग लगाकर रख देने पर ही एमोनिया तैयार हो जाता है) इनको फटी हुई जगहपर लगायें। इसके अलावा बिच्छू काटनेपर, अगर वह बिच्छू किसी भी अवस्थामें जीवित पकड

लिया जा सके, तो उसे पकडकर एक बडी शीशीमें छोड दें, वह बिच्छू जितना ही शीशीमें चक्कर लगायेगा, उतना ही उसके शरीर और मुँहसे एक तरहका तरल रस निकलेगा। वह इस शीशीसे निकालकर काटी हुई जगहपर लगायें, इससे प्राय साथ ही साथ जलन और तकलीफ बन्द हो जायगी। यदि बिच्छू मार डाला गया हो, तो उस मरे हुए बिच्छूको कुचलकर काटी हुई जगहपर लेपकी तरह लगा देनेसे, बहुत ही थोडे समयमें तकलीफ दूर होकर रोगी सो जायगा। अगर काटी हुई जगह ज्यादा फूल जाये तो २।१ मात्रा—एपिस (एक शीशीमें दो एक बडे जहरीले बिच्छू डाल दे और उसमें थोडा स्पिरिट डालकर काग लगा दे। ८ दिन बाद उसमेंसे बिच्छूको निकालकर फेंक दे और काटी हुई जगहपर स्पिरिट लगाये, इससे ८।१० मिनटोंमें ही तकलीफ घट जायगी। यह चीज सबको ही घरमें तैयार कर रखनी चाहिये)।

४। चूहा काटना—चोटवाली जगहपर नील (indigo) का चूरण लगायें। इससे मकडे इत्यादिका भी विष नष्ट होता है।

५। शरीरके किसी स्नायुमें चोट—हाइपेरिकम।

६। अस्थि-आवरणकी (periosteum)—चोटमें—रूटा।

७। अस्थिभग (Fructures)—कैल्केरिया-फास, सिम्फाइटम।

८। आँखकी पुतलीमें चोट—सिम्फाइटम, आर्टिमिसिया।

९। चोट लग कट कर जाना या जखम होना—कैलेण्डुला या गेंदेके पत्तेका रस।

१०। कुचल जाना (Bruises)—आर्निका, एसिड-सल्फ, हैमामेलिस, लिडम।

११। मोच खा जाना (Sprains)—कैल्केरिया, नक्स, रसटक्स।

रक्तस्राव—जरायुमे अर्बुद (Polypus) होकर रक्तस्राव होनेपर फास्फोरस और विङ्का-माइनरकी तरह—लिडम भी फायदा करता है। शराबियो और वात रोगियोंके मुँहसे खून निकलनेपर (Haemoptosis), अगर उस रक्तका रग घोर लाल हो और उसके साथ ही फेन रहे—लिडम लाभदायक है।

खुजली—पैरके तलवे और पँडीमे भयानक खुजली, खुजलानेपर और बिछावनकी गरमीसे और भी खुजली बढती है।

इसके अलावा आँखकी बामारीमे—पेटनकी तरह दर्द, आँखोका प्रदाह, आँखमें चोट, वात रोगियोंकी आँखका मोतियाबिन्दु, श्वासयन्त्रकी बीमारीमे—खाँसीके साथ खून निकलना, श्वासकष्ट, वातके साथ खून मिली खाँसी, हूपिङ्ग खाँसीमें आक्षेप और दो बार झोंक झोंकसे साँस लेना इत्यादिमे फायदा होता है।

वृद्धि—(aggravation)—हिलने, डोलनेपर—रातमे, शराब पीनेपर, कपडेसे शरीर ढक रखनेपर, उत्तापसे।

घटना (amelioration)—शीतमें, ठण्डे पानीमें पैर डुबाये रखनेपर, माथा खोल रखनेपर, विश्रामसे और स्थिर होकर रहनेपर।

बादकी दवा (follows well)—एकोन, बेल, ब्रायो, चेलि, नक्स, पल्स, रस, सल्फ, एसि-सल्फ।

क्रिया व्याघातक (inimical)—कैन्सर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२५ दिन।

क्रम—६, ३० शक्ति। फारमुला—२।

लेम्ना माइनर।

(LEMNA MINOR)

(साग सब्जीसे तैयार होती है)—नाक, नाककी हड्डी और नाककी श्लैष्मिक झिल्लीपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। नाकके भीतर अर्बुद, नाककी हड्डी फूलना, नाकसे अधिक परिमाणमें पीव मिला श्लेष्मा निकलना, नाकसे सड़ी गन्ध निकलना, नाकके भीतरकी श्लैष्मिक झिल्लीकी अधिक सूजनके कारण श्वास-पथ बन्द हो जाना प्रभृतिमें यह लाभदायक है।

आरम, सैंगुनेरिया-नाइट्रेट, एसाफिटिडा प्रभृति दवाओंसे फायदा न होनेपर इसकी परीक्षा करें।

क्रम—३ री से ३० वीं शक्ति। फारमुला—३।

लेप्टैण्ड्रा वरजिनिका।

(LEPTANDRA VIRGINICA)

(युनाइटेड स्टेट्सके एक तरहके गुल्मकी जड़से मूल अर्क तैयार होता है)—यकृतमें विकार, यकृतमें दर्द, ज्यादा परिमाणमें—काला अलकतरेकी तरह बदबूदार मल, किसी बीमारीमें अगर मलका इस ढङ्गका लक्षण दिखाई दे, तो सबके पहले लेप्टैण्ड्राका प्रयोग करना चाहिये। (मलका रंग कीचड़के रंगकी तरह होनेपर भी इससे फायदा होगा)।

चरित्रगत लक्षण —

१। यकृतका विकार और अलकतरेकी तरह काला, गोंदकी तरह लसदार मल, २। पित्त धातु, पित्त विकारकी वजहसे सरदर्द, कब्जियत, मुँहका स्वाद तीता, ३। कामला, इसके साथ ही कीचड़के रंगकी तरह मल, ४। पैत्तिक ज्वर, यकृतकी पुरानी सब तरहकी बीमारी और रक्तसंचय, ५। पेटमें पेठनका दर्द, पर कुंथनका न रहना।

आमाशय हो या उदरामय हो अथवा सविराम, अविराम, वात-श्लेष्मा इत्यादि किसी भी तरहका ज्वर क्यों न हो, इसके साथ अलकतराकी तरह काला (black like tar) पाखाना होनेपर—लेप्टैण्ड्राका प्रयोग करनेमें जरा भी न हिचकें। मर्करियसमें काला अलकतरेकी तरह बदबूदार दस्त भी कभी कभी हुआ

करता है, परन्तु उसमे दस्तके साथ और बाद बहुत कूथन और वेग रहता है। लेप्टैण्ड्रामें वैसा वेग और कूथन नहीं रहती, बल्कि लेप्टैण्ड्रामें—यकृतके स्थानमे दर्द और पेटमें पेठनका दर्द रहता है, कीचडके रगकी तरह दस्त और इसके साथ ही कामला—यह लेप्टैण्ड्रामे अधिक पाया जाता है।

हिलियैन्थस (Hilianthus)—इसमें भी ठीक लेप्टैण्ड्राकी तरह काले रगका दस्त होता है,पर जो बहुत दिनोसे सविराम ज्वर भोग रहे हों, जिनका पेट प्लीहासे भरा हो, उनकी बीमारीमे यह अधिक फायदेमन्द है। पाकस्थलीकी किसी भी बीमारीमें—वमन, मिचली, उत्तापसे उपसर्गोका बढना, वमनसे घटना, काले रगके दस्त (black stools), मुँहका सूखापन प्रभृति लक्षण रहनेपर—हिलियैन्थस दें।

यकृतकी बीमारी—पित्तकोप और यकृतके स्थानपर अकडनका दर्द, दर्द पीठतक चला जाता है, थोडा थोडा पेठनका दर्द बराबर बना रहता है, यकृतमे बहुत अधिक रक्तसचय, इसीलिये यकृतके स्थानमे और पेटमें जलन, पित्त-वमन, जीभमे काला या नीले रगका लेप चढा रहना, काले रगका दस्त, दस्तके बाद पेटमे पेठनका दर्द, नाभीकी जगहपर शूलका दर्द, काले रगका पेशाब, बायें कन्धे और हाथमें दर्द इत्यादि लक्षण—लेप्टैण्ड्रामें निर्दिष्ट है।

बवासीर—खूनी बवासीरमे भी इससे फायदा होता है (साइमेक्स देखिये)।

सदृश—चेलिडो, मार्क, डिजि । डा० नैशको एक बार पाण्डु रोग हो गया, उनको कभी काले रगके और कभी सफेद रगके दस्त आते थे । पहले—आरम-नैट-म्यूरसे फायदा न होनेके कारण, बादमें लेप्टैण्ड्रा सेवन कर वे आरोग्य हो गये ।

क्रम—२ x—३ री शक्ति । फारमुला—३ ।

लियाट्रिस स्पाइकेटा ।

(LIATRIS SPICATA)

(साग-सब्जीसे) स्थानिक शोथ, सारे शरीरका शोथ, समूचा शरीर फूला—वह हृत्पिण्डकी बीमारी, यकृतकी बीमारी या मसानेकी बीमारी—किसी भी कारणसे हो, इस दवाका व्यवहार करनेपर क्रमशः पेशाबकी मात्रा बढकर इस शोथ रोगमें ज्यादा फायदा होगा । (एपिस, आर्स, एपोसाइनम देखिये ।

क्रम—φ, १ से २ ड्रामकी मात्रामें, पानीके साथ रोज २।३ बार सेवन करना चाहिये ।

लिलियम टिग्रिनम ।

(LILIUM TIGRINUM)

(चीन, जापानके एक तरहके पौधेसे टिंचर तैयार होता है) डिम्बकोष, जरायु और हृत्पिण्डपर इसकी प्रधान क्रिया होती है ।

इसका मानसिक लक्षण—पल्सेटिलाकी तरह रोना, रोगी हमेशा ही जल्दबाजी दिखाया करता है, सोचता है, कि वह पागल हो जायगा, विश्वास—उसकी बीमारी दुरारोग्य है, उसके भीतर कोई ऐसी बीमारी हुई है, जो आराम होनेकी नहीं है इत्यादि।

चरित्रगत लक्षण—

१। जरायुकी स्थानच्युति (नाभीका हट जाना), मूत्राशय और मल-नाली (especially rectum) पर दबाव होता है। २। जरायु और डिम्बकोषकी सूजन, ऐसा मालूम होता है मानो जरायु नीचेकी ओर उतरता जाता है। ३। उदासीन—इतनेपर भी स्थिर होकर बैठा रहता है और बेचैन—इतनेपर भी चलना नहीं चाहता, ४। पुराना जरायु-प्रदाह, प्रसवके बाद जरायुका आकार स्वाभाविक अवस्थामें नहीं आता, श्वेत-प्रदर, डिम्बकोषका प्रदाह, डिम्बकोषका स्नायुशूलका दर्द ; ५। डिम्बकोषकी किसी भी बीमारीके साथ हृत्पिण्डकी कई बीमारियाँ और उपसर्ग, हृत्पिण्डमें मानो कुछ धडधड करता है, कलेजा धडकना। ऐसा अनुभव होता है, मानो कोई हृत्पिण्ड दबा रहा है या मुट्ठीमें पकडता और फिर छोड देता है, समूचे शरीरमें स्पन्दन अनुभव होना, शरीर भारी मालूम होता है। मानो फूल गया है, ७। हृत्पिण्डकी तेज़ गति, मिनिटमें १५० से १७० या १७५ बार, ८। लगातार पाखाना पेशाबका वेग ; ६। किसी भी एक छोटे-से स्थानमें दर्द।

स्त्री-रोग—स्त्रियोंकी बीमारीमें—सिपिया और लिलियम, इन दोनों दवाओंकी लक्षणावली प्रायः एक तरहकी होती है। रोगिनी ऐसा अनुभव करती है, कि उसके तलपेटके भीतरके सभी पदार्थ योनि द्वारसे बाहर निकल पड़ेंगे। इसी लिये पैरपर पैर रखकर दबाकर बैठती है। जरायुकी स्थान च्युति या नाभी टलना (displacement of the uterus)—इस बीमारीमें लिलियम एक महान उपकारिणी औषध है। पेटमें प्रसवके दर्दकी तरह वेग और तलपेट तथा समूचे पेटका, यहाँतक कि छाती और कन्धेके भीतरके पदार्थ भी मानो नीचे की ओर योनि-पथसे धक्का देकर बाहर निकल आवेंगे और जरायु, मूत्राशय और मलद्वारमें, खासकर मलद्वारमे दबाव होना, लगातार पाखानेका वेग। ये लक्षण सब किसी भी बीमारीमें या बीमारीके साथ रहनेपर—लिलियमका प्रयोग करना चाहिये। सिपियामें—भी ठीक ऊपर लिखे लक्षण पाये जाते हैं, पर स्मरण रखें कि रोगकी नयी अवस्थामें जब पेटके भीतर असह्य और तेज दर्द रहता है, उस समय लिलियम और रोग पुराना होनेपर जब तकलीफ कुछ घट जाती है, उस समय—सिपियाका प्रयोग करना चाहिये। लिलियममें पेशाब करनेके समय जलन और बार बार पेशाबका वेग रहता है। यह लक्षण सिपियामें नहीं है। पेशाबमें जलन—कैन्थरिसमें है। पर इसमें लिलियमके अन्यान्य लक्षण नहीं हैं। लिलियममें—कभी कभी मलद्वारमें जलन रहती है। इस तरहकी जलन—मर्क्युरियस, नक्स-वोमिका, कैप्सिकम, नाइट्रिक एसिड—इत्यादि दवाओंमें

भी है, पर दूसरे दूसरे विषयोंमें उनके लक्षणोंमें बहुत अन्तर दिखाई देता है। लक्षण मिलनेपर, लिलियम—जरायुका बाहर निकलना (prolapsus-uteri) और antiversion, retroflexion, retroversion, पुराना मूत्रपिण्ड प्रदाह सब-इनवोल्यूशन, श्वेतप्रदर इत्यादि सभी बीमारियोंमें लाभदायक है। लिलियममें रोगी सामान्य कारणसे भी क्रोध और असन्तुष्ट भाव प्रकाश करता है। उसमें दाहिनी ओरके डिम्बकोपपर रोगका आक्रमण अधिकहोता है और प्रतिक्षिप्त क्रियामें (reflex action) हृत्पिण्डमें उपदाह पैदा हो जाता है। इसीलिये कलेजा धडका करता है। दाहिने डिम्बकोप और कूल्हेके दर्दमें भी यह फायदा करता है।

रजःस्राव—लिलियममें चलने फिरनेसे ऋतुस्राव होता है, सोये या बैठे रहनेपर स्राव बन्द हो जाता है। क्रियोजोटमें—केवल सोये रहनेपर अर्थात् रातमें ऋतुस्राव निकला करता है और चलने फिरने या बैठे रहनेपर स्राव बन्द हो जाता है। क्रियोजोटमें—स्राव बदबूदार और खूनका रंग काला होता है, कास्टिकममें—ऋतुस्राव रातमें बन्द रहता है, सिर्फ दिनमें निकलता है, मैग्नेशिया-कार्बमें रातमें नींदवाली अवस्थामें और सोये रहनेपर स्राव अधिक होता है, पर उठकर टहलने और तीसरे पहर स्राव बन्द हो जाता है; बोविस्टामें—सवेरे और रातमें ज्यादा रजःस्राव हुआ करता है। लिलियममें—स्राव बहुत थोड़ा, रंग काला और वह बदबूदार रहता है।

हृत्पिण्डको बीमारी—अगर जरायुकी किसी बीमारीके साथ हृत्पिण्डमें डङ्क मारनेकी तरह दर्द, कलेजा धडकना, ऐसा मालूम होना कि कलेजेको कोई एक बार मुट्ठीमें पकडता और फिर छोड देता है, यह लक्षण रहनेपर—लिलियमका प्रयोग करना चाहिये। ऐसी अवस्थामें कैक्टससे भ्रम होनेकी विशेष सम्भावना है, पर कैक्टसमें—हृत्पिण्ड मानो लोहेकी पट्टीसे बँधा रहता है, और जरायुकी किसी तरहकी गडबडी या बीमारी नहीं रहती, लिलियममें—जरायुकी किसी न किसी प्रकारकी बीमारी लगी ही रहती है।

अतिसार—जरायुकी किसी बीमारीके साथ स्त्रियोंको सबेरे पतले दस्त आना, उसमें पीले रगका पित्त मिला दस्त होनेपर लिलियम फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—स्थिर भावसे रहनेपर, करवट दबाकर सोनेपर, खडे होनेपर, रातके समय, सबेरे छूनेपर, एकाएक हिलनेपर।

ह्रास (amelioration)—कार्यमें अन्यमनस्क होनेपर, खुली हवामें, रगडनेपर।

सदृश—सिमिसि, हेलोनि, पल्स, सिपि, वेल, म्यूरेक्स, रसाइजे, प्लैटि, कैक्टस, आयोड।

क्रिया-नाशक (antidote)—हेलोनि, नक्स, पल्स, प्लाटी।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१४—२० दिन।

क्रम—३ x ३ शक्ति। इसके ऊँचे क्रमसे रोग बढता है, इसीलिये ३० क्रमसे नीचेका क्रम ही व्यवहार करना चाहिये।

फार्मुला—जर्मनी—१, अमेरिकन—३।

लोबेलिया इन्फ्लाटा।

(LOBELIA INFLATA)

(तम्बाकूके वृक्षकी तरहके एक वृक्षका टिंचर)—इसमें इपिकाककी तरह बहुत अधिक मिचलीके साथ श्वासयन्त्र और श्वासनलीके नाना प्रकारके आक्षेपिक रोग और कोलचिकमकी तरह खाद्य पदार्थकी गन्ध और खानेकी चीज देखकर रोग-लक्षण तथा मिचली बढ जाती है, यह दवा एलोपैथीमें श्वासयन्त्रकी बीमारीमें व्यवहृत होती है।

१। आक्षेपिक दमा, खाँसी, हूपिङ्ग खाँसी, इसके साथ ही साँस रुक जानेकी तरह हो जाना, श्वासकष्ट, २। पाचन शक्तिकी गडबडीके कारण बहुत अधिक मिचली और वमन, ३। गर्भावस्थामें वमन, किसी पुरानी बीमारीमें बीच-बीचमें झोंकसे वमन, चेहरेपर पसीना हो जाता है। एकाएक बहुत ज्यादा पसीना, ४। पाकाशयिक लक्षणके साथ सर-दर्द ; ५। बहुत अधिक पसीना, कमजोरी, और मिचली रहनेपर भी उत्तम भूख, ६।-कमला नेबूके रंगकी तरह पेशाब—उस-

में लाल रंगकी तली जमती है, ७। कलेजेके बीच सिकुडनका भाव जैसा दर्द, इसीसे श्वासमें तकलीफ, ऐसा अनुभव होता है मानों कलेजेपर कोई भारी चीज दबायी हुई है; ८। हृदपिण्डके ऊपरी भागमें (at base) खूब भीतरकी ओर दर्द (स्तनके नीचे at apex—लिलियम), ९। सैक्रमास्थिमें—(कूल्हेकी हड्डीमें) स्पर्श सहन न होने देनेवाला दर्द, तकिया या कपडेका छू जाना भी तकलीफ देने लगता है, इसीलिये, रोगी सामनेकी ओर झुककर बैठा रहता है।

ब्राङ्काइटिस, काली खाँसी (क्रूप), हॅफनी और श्वासकष्ट प्रभृति फेफडेकी कितनीही बीमारियोंमें—रोगीको कलेजेमें बहुत भार मालूम होता है। ऐसा मालूम होता है, मानो खूनका दौरान बन्द होकर सब खून उसके कलेजेमें इकट्ठा हो गया है, साँस रुक जाना चाहती है, हाँफने लगता है, जरा भी हिलने डोलनेपर यह तकलीफ बहुत बढ जाया करती है। (डा० एलेन कहते हैं—इस कष्टके कारण रोगीको बाध्य होकर हिलना डोलना पडता है, इससे तकलीफ घटती है) इसके अलावा रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें किसी चीजका ढेला अडा हुआ है, इसीलिये साँस छोडनेमें तकलीफ होती है। इसके साथ ही मिचली और ओकाई भी रहती है।

बहुत ज्यादा तम्बाकू या मादक द्रव्य अथवा शराब आदि पीकर अजीर्णकी बीमारी होनेपर—लोबेलिया फायदा करता है। गर्भावस्थाके वमन और मिचलीमें भी यह फायदा करता है।

त्रिकास्थिमें (कुल्हेकी हड्डी) दर्द, ज़रा छूनेसे ही दर्द है, इसीलिये, रोगी सामनेकी ओर झुककर बैठता है।

हमलोगोंकी देशी तम्बाकूसे (Indian tobacco) हुई लोबेलिया दवाकी और भी कई श्रेणियाँ हैं। ये किन बीमारियोंमें तथा किन किन लक्षणोंमें व्यवहृत होती हैं, यह देखिये —

१। <u>लोबेलिया-इरिनस</u>—(Lobelia Erinus)—३री यह कैन्सर, मुँहका पपियेलियोमा, पेटके भीतरका इसके साथ ही पेटमें पंचसे पेठनकी तरह एक दर्द, मुँह और चमडेका सूखापन प्रभृतिमें फायदा करता है।

२। <u>लोबेलिया—पर्प्युरेसेन्स</u> (Lobelia Purpurascen री शक्ति। यह स्नायुकी बहुत अधिक कमजोरी, श्वास-पेशी जीभका पक्षाघात, श्वास-प्रश्वास धीमा और मानो ऊपरको चढ़ता है। हृत्पिण्डमें जोरसे घात-प्रतिघात—रोगी ऐसा समझता है, मानो ढोल बज रहा है, मिचलीके साथ सरमें आना और सर-दर्द, पलकें भारी, इसीलिये आँख खोलकर न सकता।

३। <u>लोबेलिया-सेरुलिया</u>—(Lobelia-cerulia)— लक्षण—बहुत ही तकलीफ देनेवाले, इन्फ्लुएन्ज़ा, जिसमें तालु (soft palate), मुँह, गला और नाकके भीतरी रोगका आक्रमण होना, छींक, सर-दर्द और आँखोंमें दर्द, बाईं ओर छोटी पसलियोंके नीचे दर्द, कष्टकर श्वास-

प्लोहामे वृद्ध, पेट फूलने बाद पतले दस्त आना, पतले दस्तके साथ कूथन ।

वृद्धि (aggravation)—तीसरे पहर, जरा, हिलने-डोलने से ही, सर्दीमें, ठण्डे पानीसे नहाने या शरीर धोनेपर, तम्बाकू खानेपर।

ह्रास (amelioration)—हृत्रोगकी तकलीफ तेजीसे चलने पर, सन्ध्याके समय, गरमीसे ।

क्रिया-नाशक (antidote)—इपिकाक ।

क्रम—ϕ—३० शक्ति । फारमुला—३ ।

लाइकोपोडियम क्लैवेटम ।

(LYCOPODIUM CLAVATUM)

(पहाडी संवार, महात्मा हैनिमैनने इसकी पहले पहल परीक्षा की थी)—लाइकोपोडियम एक सोरा विष-नाशक दवा है और बच्चे तथा वृद्धोंको बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है । श्लेष्मा-प्रधान-धातु और जिनमें यकृतका दोष रहता है, जिनके पेशाबमें लिथिक-एसिड निकलता है, जीर्णा-शीर्णापर तेज बुद्धिवाले मनुष्य, दुबला बच्चा, उसके शरीरकी त्वचा मानो सूखी और माथा बडा, रोगी रोग भोगनेके समय बडा ही उद्धत और चिडचिडा हो जाता है । अपनेको श्रेष्ठ समझता है, मृत्यु-सम्बन्धी सपने

देखता है, ऐसी धातुवाले मनुष्योंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है। शरीरमें दाहिनी ओर लाइकोपोडियमकी क्रिया अधिक प्रकट होती है, इसीलिये, कोई भी बीमारी क्यों न हो, जैसे—श्वासयन्त्रकी बीमारी, यकृतकी बीमारी, मसानेके रोग, जरायुके रोग, यदि दाहिनी ओर रोगका हमला हो, तो तुरन्त लाइकोपोडियमका प्रयोग करें। यह एक दीर्घ-क्रिय (deep-acting) दवा है। इसीलिये, एक मात्राका प्रयोग कर बहुत दिनोंतक फलाफलकी राह देखें। इसके रोग-लक्षण तीसरे पहर ४ बजेसे ८ बजे तक, तथा गरमीसे बढ़ते हैं और सर्दीमें या सर्द प्रयोगसे घटते हैं।

चरित्रगत लक्षण —

१। तीसरे पहर ४ बजेसे ७ बजेके बीचमें रोग-लक्षणोंका बढना (किसी भी बीमारीमें, इस समयके बीचमें रोगके उपसर्ग चढनेपर—लाइकोपोडियम फायदा करता है)। (हेलिबारसमें—ठीक इसी समय (४ बजेसे ८ बजेके बीचमें) सर्दी और सर-दर्दके लक्षण बढ़ते हैं और कोलोसिन्थमें—शूलका दर्द बढ़ता है) २। अम्ल-पित्त और अजीर्ण-रोगमें—पेटमें वायु-इकट्ठा होना, पेट फूलना, पेट गडगड़ाना, अम्लकी वजहसे छातीमें जलन, मुँहमें खट्टा पानी भर आना, खट्टी कै, खट्टी डकार, भोजनके बाद तन्द्रा और आलस्य, कब्जियत (इस लक्षणमे कितनी ही बार लाइकोपोडियम—३ री शक्तिसे बहुत फायदा होता है), ३। बहुत भूख या भूख ही न लगना, दो एक ग्रास पेटमें जाते ही पेट फूलने

लगना, पेट भर जाना, ४। शरीरका ऊपरी अश दुवला, पर निचला अश फूला, ५। पेशावमें लाल रगकी तली जमती है (ईटकी सुरखीकी तरह), कपडेमें पेशाव लग जानेपर, पीला-लाल मिले रगके दाग लगते हैं, ६। पेशावके पहले वच्चेका रोना (वोरैक्स), ७। नाककी दोनो दीवारोंका (alae-nasi) एक बार फूलना—एक वार घटना, रातमें नाकका सट जाना; ८। दिन-रात सूखी खाँसी, इसके साथ ही शरीरका क्षय होना और कम-जोरी, ९। दिन भर ही रोता है, किसी तरह भी धीरज नहीं धर सकता, कोई अगर आशीर्वाद और धन्यवाद देता है, तो भी रोता है। १०। वहुत ज्यादा हस्त-मैथुन या शुक्रनाश करनेकी वजहसे ध्वजभग, ११। सगमके समय या वादमें जलन, योनि सूखी, १२। प्रत्येक वार पखाना होनेके समय जननेन्द्रियसे रक्त-स्राव, १३। वच्चोंकी दाहिनी ओरकी आँत उतरना, १४। निमोनियाका दाहिनी ओरका आक्रमण।

मानसिक लक्षण —

हमेशा ही दुःखित, धर्मके सम्बन्धमें वकवाद करता है, या चुपचाप एकान्तमें वैठा रहता है, लिखनेमें भूल करता है। वर्ण-विन्यास या शब्दमें भूल होती है, शब्दका मतलव भी याद नहीं रहता, *किसी भी कामके करनेकी इच्छा न होना।* कहीं भूल न जाये, इस डरसे कोई काम नहीं करता, पर काम आरम्भ करते ही यह भय दूर हो जाता है। कितनी ही वार जरा-सेमें ही डर जाता

है और चौंक उठता है। काल्पनिक मनुष्यकी तरह देखता है और डरता है, भूत-प्रेत इत्यादिका भय।

सर्दी-खाँसी—छातीके भीतर बलगम भरा,वक्ष परीक्षा-यन्त्र द्वारा फेफडोंकी परीक्षा करनेपर "कोयलकी कुहुककी तरह" एक तरहकी आवाज (Quing sound) सुन पडती है। गला घरघराता है और साँस लेने तथा छोडनेमें तकलीफ होती है। छोटे बच्चोंकी नाककी सर्दीमें नाक भरी और उसके साथ ही नाक बन्द रहनेपर इससे फायदा होता है।

कपिलरी-ब्राङ्काइटिस—(कैशिकानलियोंका प्रदाह)—इस बीमारीमें जब दाहिनी ओरके फेफडेपर बीमारीका अधिक दौरा होता है और वक्षकी परीक्षा करनेपर बलगमका घरघर शब्द (moist rales) प्राप्त होता है, बहुत ज्यादा परिमाणमें पीले रंगका बलगम निकलता है। इसके साथ ही बोखार रहता है और वह बोखार तीसरे पहर ४ बजेसे ८ बजेके बीचमें बढता है, उस समय—लाइकोपोडियमसे फायदा होता है।

एक तरहकी सूखी खाँसी—जिसमें रोगी दिन-रात खाँसता है। खाँसते खाँसते पेटमें दर्द हो जाता है। खाँसनेपर गलेमें सुरसुरी होती है, कभी कभी कुछ भी बलगम नहीं निकल सकता, कभी दिन-रात बहुत ज्यादा परिमाणमें, पीले रंगका या हरी आभा लिये पीवकी तरह या खूनके छींटे मिला बलगम निकलता है, सन्ध्याके बाद ही खाँसी ज्यादा आती है अथवा ठण्डी

चीज पीनेसे ही खाँसी बढ जाती है, कभी खाँसी एक दिन ज्यादा और एक दिन कम रहती है—इसमें भी लाइकोपोडियम फायदा करता है। दमामें भी यह फायदा करता है, इसमें दमाके साथ पेट फूलनेका भाव रहता है और तीसरे पहर ४ से ८ बजेके भीतर ही दमाका जोर बढता है।

निमोनिया—इस बीमारीकी पहली अवस्था (इस अवस्थामें फेफडेमें सिर्फ खून इकट्ठा होता है—एनजार्जमेंएट स्टेज) उत्तीर्ण होकर २ री अवस्थामें (इस अवस्थामें फेफडेमें हवा रहनेके सभी गडहे एक तरहके लसदार गाढे रससे भर जाते हैं, फेफडा कडा पड जाता है, फेफडेके भीतर हवा नहीं रहती, इसीलिये, स्टैथास्कोपसे वक्षकी परीक्षा करनेपर फेफडोंमें हवाके जाने आनेकी आवाज नहीं मिलती—हेपाटाइजेशन स्टेज), रोगीकी अवस्था क्रमश खराब होती जाती है, इस अवस्थामें इसके प्रयोगसे—<u>ह्रासकी अवस्था</u> (यह रोगकी ३ री अवस्था है, इस अवस्था में ऊपर कही, २ री अवस्थाका कुछ रस सोख लिया जाता है और कुछ खाँसीके साथ निकल जाता है—रेजोल्यूशन स्टेज) आरम्भ होकर, रोगीको जल्द ही आरोग्य पथपर ला देता है। लाइकोपोडियमका और भी एक विशेष लक्षण—रोगी अगर चित सोता है, तो प्रत्येक बार सास लेनेके समय नाकके दोनों बगल फूल उठते हैं (fan-like motion of the wings of the nose)—यह लक्षण—ब्रोमियम, चेलिडोनियम, फास्फोरस और स्पजियामें भी

है। किसी रोगोमें अगर ऐसा दिखाई दे कि नाकके इस लक्षणके साथ सर्दी ढीली और घरघराहट है और बलगम भी भरपूर निकलता है। पर साँस लेने और छोडनेके समयकी तकलीफ बिलकुल ही नहीं घटती, रोग भी कुछ नहीं घटता, अथवा रोगी खांस कर बलगम बिलकुल ही नहीं निकल सकता, बलगमका आशोषण (absorption) भी नहीं होता, मृत्युकी ही आशका अधिक है, किसी दवासे कोई लाभ नहीं होता, उस समय ३० या २०० शक्ति की २।१ मात्रा लाइकोपोडियमका प्रयोगकर २।१ दिन राह देखें, आशासे भी अधिक फायदा दिखाई देगा। लाइकोपोडियममें—कभी कभी बलगमका स्वाद नमकीन रहता है और कभी कभी बदबू भी रहती है। याद रखें इसकी बीमारीके बढनेका समय—दिनके ४ बजेसे रातके ८ बजेतक है। और भी एक उपदेश—फेफडेमें अगर पीब हो जाये अथवा पीब हो जानेका उपक्रम हो, जब यक्ष्मा हो जानेकी सम्भावना हो पडे, हेक्टिक या धीमे बोखारका लक्षण दिखाई देने लगे, उस समय लाइकोपोडियमके प्रयोगसे जल्द ही रोग घट जाता है, टियुबर्क्युलोसिसकी आशंका दूर हो जाती है।

मन्दाग्नि रोग—खट्टी डकार आती है, पेटमे जलन होती है, पेट फूलता है, सूजन, पेट छूनेपर दर्द होता है। पुरानी बीमारीमें खानेकी चीजें सहजमे ही नहीं पचतीं, पतली चीजें पीनेके सिवा और किसी तरहकी भी भोजन-सामग्रीसे पेटमे दर्द होता है, पेट फूलता है और कभी कभी वमन भी हो जाता है। इसमें खुलासा डकार (incomplete eruction) नहीं आती, केवल

गलेतक चढती है, गलेमें जलन होती है, मुँहमे पानी भर आता है पेटमें जलन होती है (आंइरिसकी जलन—वमनके वाद)।

अतिसार—पतले मलके साथ कडा मल-मिला, पेटमे बिल्कुल दर्द नहीं रहता, तीसरे पहर ३ बजेसे ८ बजेतक दस्तका ज्यादा आना।

भूख—अच्छी लगती है, खानेके लिये बेठता है, परन्तु २।४ ग्रास खाते ही पेट फूल उठता है, भूख बन्द हो जाती है, रोगी मनमे समझता है कि उसने गलेतक पेट भर लिया है। मनमें डरता है कि थोडासा और खाते ही वमन हो जायगा, जल्दी जल्दी पत्तल छोडकर उठ जाता है।

पेट फूलना—पेटमें वायु अधिक एकत्र होकर पेट फूलनेपर, हमलोग हमेशा—लाइकोपोडियम, कार्बोवेज, और चायना—येतीन दवाएँ पहले व्यवहार करते हैं। ऊपरका पेट अधिक फूलना (flatulance tends upwards, more in the stomach) कब्जियत, पेटमे वायु जमकर पेट भुट भाट करना, पेट गुडगुड़ाना, पेटमे भीतर गों गों शब्द होना इत्यादि लक्षणोंमे—लाइकोपोडियम फायदा करता है। कार्बोवेजमें—नीचेका पेट—अधिक फूलता है, इसमे अनपचके दस्त आते हैं, डकार आनेपर या वायु निकलनेपर उसमे बहुत बदबू आती है, वायु निकलनेपर पेटका फूलना कुछ घटता है। लाइकोपोडियममें—पाखाना हो जाने बाद पेटका फूलना कुछ घटता है , कार्बोवेजमे—

मुँहका स्वाद तीता रहता है और लाइकोपोडियममे —डकार आनेपर मुँहका स्वाद खट्टा हो जाता है। चायनामे—ऊपरी और नीचेका अर्थात् समूचा ही पेट फूलता है, इसमें डकार आनेपर, वायु निकलनेपर, या बहुत ज्यादा परिमाणमे पतले दस्त आनेपर भी पेटका फूलना नहीं घटता बल्कि उपसर्ग और भी बढ जाते हैं, केलिकार्बमे—पेट फूलनेसे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो पेट फट जायगा, इसके अलावा—उसके पेटमें इतना दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता। रोगी जो कुछ खाता पीता है, मानो सभी वायुमें परिणत हो जाता है। कैलिकार्व—वृद्ध, रक्त-हीन तथा दुबले रोगियोंके लिये ज्यादा फायदेमन्द है।

मिक्रोमेरिया कैलीफोर्निया प्लैण्टस (Micromeria,—California plants)— पेट फूलना और पेटमें शूलके दर्दके लिये चाय पीनेकी तरह इसका नित्य व्यवहार होता है। पेट फूलना, पेटमें भयानक दर्द और मिचलीमें इसका मूल अर्क सेवन करनेपर तुरन्त फायदा होता है। यह बाजारमें नहीं मिलता।

एसाफिटिडा—३, ६ शक्ति, पेट फूलनेके साथ मुँहमें पानी भर आना, पाकस्थलीके ऊपरी अशमें हृत्पिडका स्पन्दन होता है और एक तरह धक धक करता है। साघातिक प्रकारका पाकस्थलीमें शूलका दर्द—रक्तोदर मध्यस्थपेशीके पास जलन और काटने फाडनेकी तरह दर्द रहता है, पेटमें वायु गडगडाकर ऊँची आवाज होती है और अन्तमें जोरसे और बडी आवाजके साथ और कष्टसे डकार आती है।

फोड़ा—हिपर अध्याय देखिये।

बवासीरकी बीमारी—जिनमें यकृतका दोष है, उनके अर्शसे बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव होनेपर और मल-द्वारमें बहुत अधिक तकलीफ आदि रहनेपर इससे फायदा होता है।

यकृतकी बीमारी—यकृत प्रदेशमें लगातार धीमा धीमा दर्द, पेटके बायीं ओर वायु जमा होकर भुटभाट किया करता है, मुँह खट्टा हो जाता है। भोजनके बाद ही पेटमें भार हो जाता है या तेज भूखमें दो एक ग्रास भोजन करनेसे ही मानो पेट भर जाता है और पेट अकड़ने लगता है। लाइकोपोडियममें—कभी कभी भोजनके बाद ही फिर भूख लग आती है और कभी कभी ऐसा भी होता है, कि भोजनके ठीक बाद ही पेटमें दर्द होने लगता है (पक्सि-नाइग्रा), लाइकोपोडियममें—कब्जियतका लक्षण प्रधान रहनेपर भी कभी कभी पतले दस्त भी हुआ करते हैं। चेलिडोनियम, ब्रायोनिया, मर्कुरियस इत्यादि दवाएँ भी यकृत की बीमारीकी महोषधियाँ हैं। चेलिडोनियममें—पेशाब पीला, मुँहका स्वाद तीता, पेटमें बहुत दर्द, कन्धेके दाहिनी ओर दर्द इत्यादि लक्षण निर्दिष्ट हैं, ब्रायोनियामें यकृतमें बहुत दर्द, उसका मल कड़ा, कभी कभी बकरीकी मींगीकी तरह, कभी पीले रंगका और पतला होता है। मर्कुरियसमें—यकृतमें अकड़नका दर्द रहता है, मलका रंग राखकी तरह या पीला हरा रंग रहता है, इसके साथ ही बहुत कुथन शूल और वेग रहता है।

पेशावकी बीमारी—मूत्रकृच्छ्रता (Dysuria), खास कर बच्चोंकी इस बीमारीमे—लाइकोपोडियम ज्यादा फायदा करता है।

पेशाव रुकना—पेशाव होता होता रुक जाता है अथवा रुक रुक कर पेशाव होता है। पेशाव बहुत जोरसे लगता है, पर पेशाव निकलता नहीं है, बहुत देरतक बैठना पडता है।

पथरीकी बीमारी—मूत्र-पथरीमे (Renal calculi) दाहिनी ओरके मसानेकी ओरसे दर्द आरम्भ होकर,यह दर्द मूत्रद्वारतक चला जाता है या और भी नीचे यहाँतक कि पैरतक जानेपर भी लाइकोपोडियम फायदा करता है। इसके अलावा ऊपर बताये लक्षणोंमे दर्द अगर बायीं ओर पैदा हो, तो भी यह फायदा करता है। बार्बेरिस—सब तरहकी पथरीकी बीमारीमे ही समान भावसे लाभदायक है। यह पित्त-पथरी हो या मूत्र-पथरी, तकलीफ घटानेके लिये इसके समान दूसरी दवा नहीं है—बहुत-से आदमी ऐसा ही कहा करते है, पर डा० फैरिङ्गटन—मूत्र-पथरीका दर्द दूर करनेकी सबसे बढिया दवा कैन्थरिसको ही मानते है (कैन्थरिस अध्याय पढिये)। आयुर्वेदिक चिकित्सक इस रोगमे कुलथी को भिगोकर उसका पानी पीनेकी व्यवस्था दिया करते है। लाइकोपोडियममे पथरीके कारण कभी कभी मूत्रद्वारसे रक्तस्राव होता है।

द्रष्टव्य :—जो अकसर पथरीकी बीमारीकी धीमी धीमी तकलीफ भोगा करते है, उन्हें प्रतिमास एक खुराक लाइकोपोडि-

–१००० शक्तिकी २ गोलियाँ, आध आउन्स चुआये हुए पानी
लाकर सेवन करना चाहिये। इसमें वे बहुत दिनोंतक अच्छे
, (दाहिनो ओरके मसानेसे दर्द आरम्भ होनेपर यह और भी
ा फायदा करता है)।

कार्डयस-मेरिनस (carduus-marinus)--φ,पित्त-पथरी (gall
ne) की वजहसे भयानक शूलके दर्दमें फायदेमन्द है। नियमित रूपसे
कासेवन करनेपर,नयी पथरी पैदा ही नहीं हो सकती,बहुतसे अभागे
ष्य इसके सेवनसे जीवनमें शान्ति प्राप्त कर सके हैं। कार्डुयस--
तके सिवा कामलाकी भी एक उत्कृष्ट दवा है। यकृतकी साधा-
बीमारीमें जब ब्रायोनिया, मर्कुरियस, चेलिडोनियम इत्यादि
ाओंसे फायदा नहीं होता है, उस समय—यकृतके स्थानमें अक-
का दर्द, यकृतके बाये लोबमें बहुत दर्द, मुँहका स्वाद बेस्वाद
तीता, जी मिचलाना, पित्त पैदा होना इत्यादिके लक्षण रहने
: और यकृतमें सिरोसिसकी वजहसे शोथ होनेपर इससे फायदा
ता है। इसके अलावा कामला रोगमे ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ
गाव घोर पीला, पित्त-मिला पाखाना, खट्टा या तीता हरे
का वमन इत्यादि लक्षण रहनेपर भी इससे फायदा होता है,
त्रमें एक बार कब्ज एक बार अतिसार—ऐसा भी लक्षण दिखाई
ता है। ७ वें पँजरेके स्थानमें दर्द, दर्द ऊपर वक्षमें चला जाता है,
ागिनी दाहिनी करवट दबाकर सो नहीं सकती। इत्यादि कार्डु-
सके खास लक्षण हैं, (युरोपके एक तरहके गाछके पके फलसे
सका मूल अर्क तैयार होता है)।

पित्त-पथरी—(Siliary calculi) की तकलीफ दूर करने के लिये, मैं कुछ दूसरी दवाओंके सम्बन्धमें भी कुछ कहना चाहता हूँ , नीचे लिखा परिच्छेद ध्यानसे पढिये —

मेन्था-पिपरिटा—(Mentha Piperita)—यह दवा साधारण पिपरमिण्ट है। डा० हैन्सन कहते हैं —बहुत अधिक वायु-सचयके कारण पित्त-शूलमें (gall-stone-colic)—इसके द्वारा एक अत्यन्त आश्चर्यमय लाभ दिखाई देता है। एक चिकित्सकका कथन है, कि—"एक स्त्रीको भयानक तकलीफ देनेवाला पित्त-शूलका दर्द पैदा हुआ। उन्होंने कैल्केरिया, बार्बेरिस, कार्डुयस प्रभृति दवाएँ दीं, पर कोई फायदा न हुआ, अन्तमें डा० हान्सेनके कथनानुसार—उन्होने मेन्था-पिपरिटा—६x, शक्तिका प्रयोग किया। उससे प्राय ५ मिनिटोंमें उसकी सभी तकलीफें एकदम घट गयीं।" मैं भी कितने ही स्थानोंपर इसकी अद्भुत क्रियासे मोहित हो गया था। परीक्षा करें। (कैल्केरिया-कार्ब देखें)।

ध्वजभंग और वीर्यपात—एगनस और टर्नेरा अध्याय देखिये।

कलेजा धड़कना—भोजनके कुछ देर बाद ही कलेजा धडकने लगता है या कलेजेकी धडकन बढ जानेपर—लाइकोपोडियम फायदा करता है। हृत्पिण्डका बढना, हृत्कपाटकी बीमारी या स्नायविक दुर्बलताकी वजहसे कलेजा धडकना (palpitation), इसके साथ ही यदि नाडी कमजोर और अनियमित रहे—लाइ-

कोपस फायदा करता है (इसका अध्याय और डिजेटिलिस अध्यायकी अन्यान्य दवाएँ देखिये)।

कमरका वात—प्रत्येक बार हिलने-डोलनेपर अगर रोगीके कमरका दर्द बढ जाये—ब्रायोनिया, यदि ब्रायोनियासे फायदा न हो तो—लाइकोपोडियम।

रक्तस्राव—पाखानेके समय जननेन्द्रियसे रक्तस्राव होता है।

जखम—निम्नाङ्गमे और खासकर घुटनेके नीचे जखम, जखमसे जरा-सेमें ही रक्त निकल आता है, रस निकलता है, सहजमे आराम नहीं होता।

शोथ—यकृत रोगवाले रोगियोंके शोथ रोगमें—लाइकोपोडियम फायदा करता है। किसी भी शोथ रोगमें अगर पैरसे सूजन अधिक रहे और उस सूजनमे अगर घाव हो तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है। लाइकोपोडियमके रोगीके ऊपरी अगमें—जैसे, हाथ, छाती, गला इत्यादि सूखे रहते है और निम्नार्द्ध—जैसे पेट, चूतड, पैर इत्यादि खूब भारी रहते हैं और बहुत फूले फूले दिखाई देते है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी वजहसे शोथमें भी यह—आर्सेनिक तथा दूसरी दूसरी दवाओंकी अपेक्षा समयपर ज्यादा फायदा होता है, हृद्वेष्ट और फुसफुस वेष्टका शोथ लाइकोपोडियम फायदा करता है।

कब्ज—पाखानेका वेग होता है, पर प्रत्येक बार पाखाना होता नहीं है। नक्स वोमिकामें भी यह लक्षण है, पर इनमें प्रभेद यह

है, कि नक्समें—(पेरियास्टैलिक क्रिया) आँतोंके भीतर एक प्रकार की गति होती है। आँतोंकी केचुएकी तरहकी गति, यही घटकर ऐसा होता है और लाइकोपोडियममें मलद्वारके सकोचनके कारण ऐसा होता है। ओपियमकी—कब्जियतमें पाखानेकी इच्छा या वेग बिल्कुल ही नहीं रहता और उसका मल, काला, कडा और गांठ गांठ होता है, एल्यूमिनामे—(rectum) मलांत्रकी क्रिया नहीं होती। पतला-मल भी बहुत चेष्टा करनेपर निकलता है, पाखाना अक्सर लगता ही नहीं, मल कभी बकरीकी मींगीकी तरह कडा, गांठ गाठ और कभी पतला होता है। ब्रायोनियामे—श्लैष्मिक-झिल्लीकी (mucous membrane) के सूखेपनकी वजहसे कब्जियत, इसमें मल खूब सूखा और बडा लेंड रहता है, एनाकार्डियम—उसमें ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारमें कोई एक चीज भरी हुई है, इसीलिये, लगातार काँखना पडता है, यहाँतक कि पतला दस्त भी काँखनेपर नहीं निकलता है, इसके अलावा—सिपिया, साइलिसिया, वेरेट्रम भी कब्जियतमें फायदा करते है (कास्टिकम—३० शक्ति, फायदा न होनेतक ३ गोलियाँ रोज सवेरे एक वार सेवन करनेपर बहुतोंकी कब्जियतमें फायदा हो जाता है), एसिड गैलिक और मार्क-डलसिस देखिये।

केशकी बीमारी—कच्ची उमरमे ही केश पक जाते हैं, माथेके बीचमे (खोपडीमें) टाक रहती है, परन्तु दूसरी ओर केश बढते हैं और घने हो जाते है, प्रसवके बाद सरके केश उड जाते हैं, पेटकी कोई बीमारी होकर क्रमश खलवाट हो जाता है।

ज्वर—यह वात-श्लेष्मा और सविराम ज्वरमें ज्यादा फायदा करता है।

वात-श्लेष्मा ज्वर—लाइकोपोडियम—लैकेसिसके बाद ज्यादा फायदा करता है। इस ज्वरके पहले दो सप्ताहतक ज्यादा जरूरत नहीं होती, जब रोगी एकदम अज्ञान अवस्थामें पड़ा रहता है, विकारमें बड़बड़ाया करता है, गला घर घर करता है, आँख स्थिर रहती हैं और टकटकी लगाकर देखा करता है, बिछावन नोचता है, कब्ज रहती है, पेट फूल उठता है, कोई एक अंग रहरहकर काँप उठता है, जीभ फूलकर मोटी हो जाती है, जीभ एक बार बाहर और फिर भीतर इसी तरह किया करता है, उस समय लाइकोपोडियमसे असाधारण फायदा दिखाई देता है।

सविराम ज्वर—ज्वरका समय तीसरे पहर प्राय ४ से ८ बजेतक। इसके अलावा—ज्वर ६ से ७ बजेके भीतर आकर रातभर रहने बाद सवेरे छूट जानेपर भी उससे फायदा होता है। शीतावस्था—प्यास नहीं रहती, बहुत शीत, रोगी काँपा करता है, हाथ पैर बहुत ठण्डे हो जाते हैं, जाड़ा लगता है। शीत पीठकी ओरसे आरम्भ होता है, (लाइकोपोडियममें—ज्वर आनेका समय—तीसरे पहर ४ बजेसे ८ बजेके बीचमें रहनेपर भी सवेरे आठ बजे या ६ बजेके समय ज्वर आना भी इसके अन्तर्गत है)। उत्तापावस्था—आधसे एक घण्टातक, जाड़ा और

कपकपीके बाद भयानक उत्ताप, इस अवस्थामें रोगी सो जाता है, प्यास लगती है और खट्टी कै होती है जल्दी जल्दी पेशाब होता है, पेशाबके बाद कमर इत्यादिका दर्द घट जाता है। पसीनेवाली अवस्था—उत्तापावस्थाके बाद ही पसीनेवाली अवस्था आ जाती है और पसीनेवाली अवस्थाके बाद तेज प्यास होती है, कभी कभी एक बार शीत और एक बार पसीना होता है, उत्तापावस्था पैदा ही नहीं होती। एक दिनका नागा देकर अगर ठीक एक ही समय बोखार आये तो भी इससे फायदा होगा।

एजाडिरेक्टा-इण्डिका—यह दवा देशी नीमकी छालसे तैयार होती है, नीम चर्म्मरोगमें और ज्वरमें व्यवहारके लिये प्रसिद्ध है, किनाइनसे अटके हुए ज्वरमें इससे ज्यादा फायदा होता है। आँख, मुँह, हाथ-पैरमें जलनके साथ रोज तीसरे पहर ज्वर आता है, ज्वर ज्यादा प्रबल नहीं—धीमा बोखार, मुँह हाथ-पैर गरम हो जाते हैं और चमकीले दिखाई देते हैं, थोडा जाडा लगता है, शरीरके ऊपरी अंशमें ज्यादा पसीना होता है। ये सब इसके प्रधान लक्षण हैं, इसके अलावा—ज्वरके साथ शरीरके कितने ही स्थानोंमें वातका दर्द, और वक्षोस्थि (स्टर्नम), पंजरे, गर्दन, पीठ और कन्धेमें दर्द रहनेपर भी इससे फायदा होता है। क्रम—ϕ, १x—३ री शक्ति।

लाइकोपोडियम—और भी कई बीमारियोंमें फायदा करता है—

रतौंधी रोगमे—रातमें कुछ भी दिखाई नहीं देता ; उसके साथ ही आँखोंसे कुछ दूरीपर कितना ही काली रेखाएँ या कुछ है, ऐसा दिखाई देता है। नयी सर्दी—इसके साथ ही बायीं नाक फूली और भीतर नाक सटी रहती है, नाक सटना या नाकका बन्द रहना, रातमें ही अधिक होता है। दाँत—पीले रंगके हो जाते है और सब बड़े मालूम होते है, मसूढ़े फूलते है, दाँतुन या कुछ छूनेपर रक्तस्राव होता है। अम्लकी बीमारीमे खट्टी डकार आती है, पाकस्थलीमे जलन होती है, मुँहमे खट्टा पानी भर आता आता है। पाकस्थलीके मुँहपर आँतोंके सम्मिलन स्थानपर—अर्बुद, इसी कारणसे खून की है, बहुत पेट फूलना, स्ट्रैङ्गुलेटेड हर्निया, दाहिनी ओरकी आँत उतरना इत्यादि।

वृद्धि (aggravation)—शब्दसे, शरीर हिलनेपर, दाहिने अंगमें, तीसरे पहर ४ से ८।९ बजेके बीचमें, गर्म प्रयोगसे।

घटना (amelioration)—गरम खाने पीनेसे, आधी रातके बाद, शीतमे, कपड़ा उतारनेपर, बिछावनकी गरमीसे।

सम्बन्ध—कैल्के-कार्ब, लैके, सल्फके बाद खासकर कैल्केरियाके बाद यह बहुत फायदा करता है। यह एक दीर्घक्रिया दवा है, इसलिये एक बार फायदा होनेपर कभी दूसरी खुराकका प्रयोग न करें। लाइकोपोडियम—आयोडमकी अनुपूरक दवा है, किसी भी बीमारीमें आयोडमसे कुछ फायदा होनेपर—उसके बाद—लाइकोपोडियम।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, कैम्फर, कास्टि, कैमो, ग्रैफा, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—३—१००० शक्ति। फारमुला-टिंचर—४, विचूर्ण ७।

लाइकोपस वर्जिनिकस।

(LYCOPUS VIRGINICUS)

(साग सब्जीसे तैयार), यह ब्लड प्रेशर और हृत्पिण्डकी बीमारीमें फायदा करता है। हृत्पिण्डमें दर्द, असम, दुर्बल और सविराम नाडी, नाडीकी चाल तेज, जोर जोरसे कलेजा धडकना, इससे ब्लड प्रेशर घट जाता है और नाडीका स्पन्दन कम होता है, हृत्पिण्डके रोगकी वजहसे हिमाप्टिसिस (मुँहसे खून जाना)।

क्रम—१ म से ३० और २०० शक्ति। फारमुला—३।

मैग्नेशिया कार्बोनिकम।

(MAGNESIA CARBONICUM)

(कार्बोनेट आफ मैग्नेशिया, रासायनिक प्रक्रियासे तैयार होता है)—यह बच्चे, युवक सबके लिये ही समान भावसे लाभ-

दायक है। स्नायविक और चिड़चिड़ी प्रकृतिके मनुष्य और जो बच्चे बहुत ही दुबले पतले रहते है, जिनके पेटमें कुछ भी सहन नहीं होता, दूध पीनेसे ही पेटमे मरोड होता है, पेटमें दर्द होता है, मलके साथ अनपचका जमा हुआ दूध निकलता है, उनके लिये यह अधिक उपयोगी है। इसकी एक तरहकी दर्दकी तकलीफ—झोंककी हवामे, ठण्डमे, ऋतु-परिवर्त्तनसे, स्थिर बैठे रहनेपर और सामान्य छू देनेपर भी बढ़ जाती है। उठकर टहलनेपर घटती है। बच्चोकी बीमारीमे इसका बार बार प्रयोग हो सकता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। समूचे शरीरमें थकानसी मालूम होना, हाथ-पैरमे दर्द, बहुत पेठन होती है और रोगी बेचैन हो जाता है, २। पाकस्थली और आँतोंके आक्षेपकी वजहसे श्लैष्मिक झिल्लीका स्राव निकलना, ३। छातीमें जलन, खट्टी डकार, खट्टी उद्गार, मुँहका स्वाद खट्टा, खट्टी कै, खट्टी गन्धका पसीना, ४। बच्चोंके दस्त कै खट्टे ; ५। खट्टी गन्ध भरा हरे रगका फेन मिला मल, ६। नींद भरपूर न आना, उठनेके समय बहुत थकावट मालूम होना, ७। सरकी चाँदीमें इतना दर्द मानो कोई केश उखाड रहा है, ८। उदरामय आदि लक्षण हरेक तीसरे सप्ताह बढते हैं, ९। प्रत्येक चार ऋतुके समय गलेमें घाव और दर्द होता है (लैक-कैनाइनम) ऋतु आरम्भ होते ही घट जाता है, १०। जिन स्त्रियोकी तन्दु-रुस्ती बिगड जाती है, उनमें स्वाभाविक दुर्बलता ; ११। रातमें रजस्राव, १२। मनखुन्न अनुभव होना इत्यादि।

बच्चोंका अतिसार—मैग्नेशियामें मलका रंग हरा हरा और फेन-फेन रहता है, उसके ऊपर अण्डेकी सफेदी या चरबीकी तरह एक प्रकारका पदार्थ दिखाई देता है, कभी कभी हरे रंगका दस्त होता है, इसके ऊपर उडदकी छालकी तरह एक तरह-का पदार्थ तैरता रहता है। दस्त होनेके पहले पेटमें शूलके दर्दकी तरह भयानक दर्द, बहुत वेग और कूथन दिखाई देती है, रोगी कमजोर हो पडता है, मलकी गन्ध खट्टी, रोगीके शरीरतकमें खट्टी गन्ध रहती है। दूध पीनेवाले बच्चोंके दस्तमें बिना पचा हुआ दूध निकलता है। मैग्नेशियाका पेटका दर्द बहुत कुछ कोलोसिन्थकी तरह होता है। दस्तमे खट्टी गन्ध—रियूममें सबसे सबसे अधिक रहती है। यहाँतक कि दस्त आने बाद रोगीको अच्छी तरह धो पोछ देनेपर भी वह गन्ध दूर नहीं होती। रियूमकी खट्टी गन्धसे भरे मलका रङ्ग—भूरा (brown), मैग्नेशियाका मल ताला-बकी काईकी तरह घोर हरा, उसमें उडदके छिलकेकी तरह या सेंवार-की तरह एक प्रकारका पदार्थ तैरता रहता है। कैमोमिलामें भी—हरे रङ्गका पाखाना होता है, और पाखानेके समय पेटमें बहुत दर्द होता है। कैमोमिलाके दस्त पानीकी तरह पतले होते हैं, तार-की तरह एक प्रकारका पदार्थ मिला रहता है। मर्कुरियसमें—, पाखानाके समय बहुत वेग और कूथन रहती है, पर मैग्नेशिया-में उतनी नहीं रहती। मर्कुरियसमे हरे रङ्गका आँव मिला दस्त ही ज्यादा होता है, खट्टी गन्ध लिये पाखाना कैल्केरिया कार्बमें भी है, उसकी धातु तथा अन्यान्य लक्षण सदा याद रखें (परखडा

अध्यायमें—कोलोस्थ्म देखिये)। एसिड सैलिक २x, ३x शक्ति—मलका रङ्ग हरा, प्राय मैग-कार्बके मलकी तरह, पर इसके पाखानेमे बदबूदार सड़ी गन्ध रहती है, मैग्नेशियामें—खट्टी गन्ध रहती है।

दाँतकी बीमारी—गर्भवती स्त्रियोंका दाँतका दर्द रातमे बढ़नेपर—मैग्नेशियाकी उच्च शक्ति बहुत लाभदायक है, मर्कुरियसमें—दाँतका दर्द रातमे बिछावनकी गरमीसे बढ़ता है और मैग्नेशियामे—इस प्रकारसे बढ़नेपर चलने फिरनेपर, घूमनेपर और मुँहमे ठण्डा पानी रखनेपर कुछ लाभ होता है। चुपचाप बैठे रहनेपर दर्दका बढ़ना। कैमोमिला मैग्नेशियाकी अनुपूरक दवा है। डा०—फैरिंगटन कहते है—एक महीनेकी एक गर्भवती स्त्रीको दाँतमें बहुत तेज दर्द था। उन्होंने उसे मैग्नेशिया और बहुतसी दवायें दीं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिरमे डाक्टर लिपिके परामर्शके अनुसार—रैटानियाका प्रयोग किया, उससे उसकी बीमारी आराम हो गयी। रैटानियाका दर्द रातमे बढ़ता है, दर्दकी धमकसे रोगी चारो ओर घूमता है और छटपटाता है। अकल दाँत उठनेसे दाँतके दर्दमें—चीरेन्थस। गण्डास्थिमें दर्द (molar bone) और सूजन, टपकका दर्द, ठण्डेमे आराम रहनेपर और रातमे बढ़नेपर मैग्नेशिया लाभदायक है।

अम्ल और अजीर्णकी बीमारी—पेटमें बहुत वायु जमता है, डकार आती है, डकार खट्टी, छातीमें जलन, मुँह हमेशा ही खट्टा रहता है। आटा, मैदा आलू, गोभी, स्टार्च चीजें खानेपर

बिलकुल ही सहन नहीं होती, दूध भी मुँहमें अच्छा नहीं लगता, खानेपर सहन नहीं होता, वायुका बढना, खट्टी डकार आती है। पेटमे शूल बिधनेकी तरह दर्द, रोगीको हमेशा ही भीतर गरमी मालूम होती है, लेकिन शरीरमे ठण्डी हवा लगानेका साहस नहीं करता।

डाक्टर फैरिंगटन कहते हैं—पूरी उम्रवाले मनुष्योंके लिये जहांपर मैग्नेशिया व्यवहार करनेकी जरूरत होती है, वहाँ अम्ल, लिवर सम्बन्धीय कोई न कोई बीमारी अवश्य ही रहेगी और जहाँपर इसकी बच्चोंके लिये जरूरत रहती है—जहाँपर बच्चेकी पेट की खराबी, बदहजमी, क्रमश कमजोरी, दुबलापन, कृशता, बीमारीकी हालत सुखण्डीकी ओर अग्रसर होगी।

स्त्री-व्याधि—ऋतुस्राव गाढा, खूनका रङ्ग गहरा काला, ऐसा कि अलकतराकी तरह काला दीखता है। ऋतु कभी कम—कभी अधिक, जब थोडा होता है तब देरकर होता है—जब अधिक होता है त[illegible] जल्दी होता है, पर इसमें ऋतु अधिककर बहुत [illegible] आरम्भ होनेपर प्राय बहुत दिनोंतक [illegible] है [illegible] रातमें सोये रहनेपर [illegible] आनेके [illegible] होता होता है। [illegible] है घूमनेपर [illegible] ऋतु आरम्भ [illegible]

होनेके पहले प्रसवकी तरह दर्द, कमरमें दर्द, शूलका दर्द, कमजोरी, सिहरावनका भाव रहता है। श्वेत प्रदर—स्राव-श्लेष्माकी तरह।

वात—दाहिने कन्धेके सन्धिवातमें—मैग्नेशिया लाभदायक है। दाहिनी डालटायेड पेशी (कन्धेकी मांशपेशी) के वातमें—सैंगुनेरिया, मैग्नेशिया-कार्ब, बायें ओरकी डालटेयड पेशीके वातमें—नक्स-मस्केटा, दोनों डालटेयड पेशियोंमें फेरम-मेट उपयोगी है। मैग्नेशियामें—रातमें, स्थिर होकर रहनेपर दर्दका बढना, चलने और घूमने फिरनेपर दर्द घट जाता है। बहुत जगहपर ऐसा हुआ है कि इस तरहका दर्द—मैग्नेशिया-कार्बसे न घटनेपर मैग्नेशिया फास फायदा करता है।

दर्द—मैग्नेशियामें माथा, मुँह, दाँत, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें सब जगहका दर्द,—ठण्डेमें चुपचाप बैठे रहनेपर या सोनेपर बढना, इसलिये रोगी लगातार छटपटाता है, ऊपर नीचे करता है, सोये रहनेपर उठकर घूमने लगता है, टहलता है। इसका दर्द स्नायुशूलके ढङ्गका और बिजलीकी लहरकी तरह होता है।

श्वासयंत्रकी बीमारी—गला कुट कुटाकर खाँसी होती है, इसके साथ नमकीन स्वादका खून मिला बलगम निकलता है। छातीमें दर्द, हिलने डोलनेसे बढता है, श्वासमें तकलीफ होती है, हाँफता है।

चर्मरोग—हाथ या अङ्गुलियोंमें फोडेकी तरह उद्भेद, खुजलाहट, चमडेके नीचे गुटि— —र उसमें दर्द।

ज्वर—सध्यामे, ठण्डमे, रातमे बोखार, शरीरमे खट्टी गन्ध, पसीना।

उपशम (amelioration)—गरम हवामें लेकिन बिछावनकी गरमीसे रोगका बढना, दन्तशूल, मुँहमें ठण्डा पानी रखनेसे, थोडी देरका उदरशूल दबानेपर घटना।

सदृश—कैमोमिलाके बाद इसका व्यवहार करनेसे लाभ होता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, मर्क, नक्स, पल्स, रियुम, कैमो।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०-५० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७॥

मैग्नेशिया-म्यूरियेटिका।

(MAGNESIA MURIATICA)

(क्लोराइड आफ मैग्नेशिया—रासायनिक प्रक्रियासे प्रस्तुत)—स्त्रियोंकी बीमारीमे खासकर जिन्हें हिस्टिरिया रोग है, जिन्हें जरायुकी कोई न कोई बीमारी लगी ही रहती है, जो बहुत दिनोंसे अजीर्ण और पित्त-सम्बन्धी रोग भोग रहे हैं, उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है।

चरित्रगत लक्षण—

१। बच्चोंको कष्टकर दाँत निकलनेके समय दूध सहन नहीं होना, दूधके ही दस्त आते हैं, पेटमें पेठन होती है, २। बहुत कब्जियत, मल भेंडकी मींगीकी तरह या बडा, कडा, गोलेकी तरह, सूखा, निकलनेके समय चूर चूर होकर निकलता है, ३। यकृतकी बीमारीके साथ कब्जियत, यकृत बडा और कडा, यकृतमें दर्द, यह चलने या छुकर छूनेके समय भी दर्द मालूम होता है, ४। डकारमें सडे अण्डे या पेयाजकी गन्ध आती है (श्वासमें पेयाजकी तरह गन्ध—सिनापिस), ५। मुँहसे बराबर फेनकी तरह थूक निकलता है, ६। माथेमें पसीना होता है (कैल्के, साइलि); ७। सभी तरहकी आवाजें और गडबडी सहन नहीं होतीं, ८। दाँतका दर्द, कोई खानेकी चीज दाँतमें लगते ही दर्द बढ जाता है, ९। चोर डाकुओंके सपने, स्वप्न उसे सत्यकी तरह मालूम होता है, १०। शिशु यकृत (Infantile Liver), ११। प्रत्येक बार ऋतुके समय उत्तेजना, (excitement), रक्त काला और थक्का थक्का, इसके साथ ही आक्षेपिक दर्द, १२। परिश्रमके बाद या प्रत्येक बार दस्तके बाद श्वेत-प्रदरका स्राव।

कब्जियत—मैग्नेशिया-कार्ब दवा जिस तरह अम्ल और अतिसारके लिये लाभदायक है, मैग्नेशिया-म्यूर—दवा उसी तरह कब्ज और कोठेके कडापनमें फायदा करती है। मैग्नेशिया-म्यूरका मल कडा और बडे बडे गोलेकी तरह, बहुत सूखा,

मलद्वारसे निकलनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो चूर होकर निकलता है। इसके अलावा टुकडा, कडा, गाठ गांठ, भेडकी तरह-मींगी मल भी दिखाई देता है। उसपर श्लेष्माकी तरह एक सफेद पदार्थ लिपटा रहता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय अगर कब्ज हो जाये तो इससे फायदा होता है। (कब्जमें २०० या और भी ऊँची शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।)

यकृत—यकृतका बढना, यकृतमे दर्द और सूजन, इतना दर्द कि छूनेपर या दाहिने दबाकर सोनेपर तकलीफ होती है। यकृतमे दर्द—यकृतकी जगहसे लेकर पीठकी रीढतक और पाकस्थली के ऊपरी अशतक चला जाता है, कुछ खाते ही दर्द बढ जाता है, कामला हो जाता है, जीभपर पीले रगका मैल और उसपर दाँतका दाग पडता है, दोनों पैर फूलते है, इसके साथ ही कलेजेमें धड-कन और श्वासमे कष्ट, कलेजा धडकना—चलते फिरते रहनेपर आराम मालूम होता है और स्थिर रहनेपर बढ जाता है। मर्कुरि-यसमे—जीभपर इसी तरह दाँतका दाग पडता है, पर उसमे कब्जियत नहीं रहती। लक्षण मिलनेपर मर्कुरियस—नयी बीमारी मे और मैग्नेशिया—पुरानी बीमारीमे ज्यादा फायदा करता है। टिलिया—नामक दवामे—बायीं करवट सोनेपर यकृतका दर्द बढ जाता है, दाहिनी करवट सोनेपर आराम मालूम होता है। ब्रायोनियामे—यकृतकी जगहपर सूजन दिखाई देती है, जलन होती है। सुई गडने की तरह दर्द होता है, समूचे पेटमे दर्द मालूम

होता है, दर्द—दवाने, खाँसने या साँस खींचनेपर बढता है। दुवले-पतले बच्चोंकी यकृतकी वीमारीकी—मैग्नेशिया उत्कृष्ट दवा है। जिन बच्चोंके माथेमें या आँखमें घाव होते हैं, बच्चा बहुत दुवला पतला रहता है, उनकी वीमारीमें यह बहुत ज्यादा फायदा करता है।

बच्चोंका अतिसार—दूध पीनेके दोषसे बच्चोंको अगर अजीर्णके दस्त आयें और पेटमें दर्द हो,—मैग्नेशिया-म्यूर फायदा करता है। अगर कष्टकर दाँत निकलनेके समय यह बीमारी हो तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है। बच्चा बहुत अधिक रोगी रैकाइटिक (rachitic), मीठी चीजें पसन्द करता है।

पेशावकी बीमारी—पेशाव बहुत थोडे परिमाण होता है, खुलासा नहीं होता, पेशावमें एलबुमेन रहता है (कितनी ही बार पीले रंगका पेशाव होता है), पेशाव करनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो कुछ पेशाव—मूत्राशयमें रह गया। यह पेशाव किसी तरह नहीं निकलता। रोगी उसे निकालनेके लिये लगातार पेट दवाया करता है, उसके साथ ही पैर फूलते हैं।

मैग्नेशिया-सल्फ—(Mag-sulph)—पैलोपैथिकमें यह उत्ताप नष्ट करनेवाले जुलावके रूपमें व्यवहृत होता है। बहुत अधिक परिमाणमें पेशावके साथ बार बार प्यास और अधिक परिमाणमें पानी पीना—इस दवाका प्रधान लक्षण है। इसीलिये, बहुमूत्रमें और अतिसारमें या ज्वरमें—अगर प्यास ज्यादा रहे तो पहले ही इसका व्यवहार करें। क्रम—३x—६x।

सर-दर्द—मैग्नेशियामें—दोनों हाथोंसे माथा खूब जोरसे दवा रखनेपर, या गरम कपडेसे सर लपेट लेनेपर या सो जानेपर सर-दर्द घटता है।

मूर्च्छा-वायु—पेटमे वायु इकट्ठा होता है, पेटसे गोलेकी तरह एक चीज ऊपरकी ओर गलेतक चढती है, पेटभर खा लेनेपर मिचली पैदा हो जाती है और कुछ देरतक डकार आने बाद शरीर काँपकर वेहोशीका दौरा हो जाता है। जरायुमें दर्द, श्वेत प्रदर, अलकतराकी तरह घोर काले रगका ऋतुस्राव, कलेजा धडकना, श्वासमे कष्ट, कलेजेकी धड़कन इधर उधर टहलनेपर घटना, कब्जियत इत्यादि लक्षण अगर किसी हिस्टीरियाकी रोगिनीमें दिखाई दें—मैग्नेशिया-म्यूरसे बहुत फायदा होगा।

स्त्री-रोग—जरायुका कडापन (Fibroid and scirrhus) इसके साथ ही काले रगका रक्तस्राव और वाधकका दर्द, यह दर्द कमरमे होता है और ऊरुतक उतर आता है। ऋतुस्राव आरम्भ होनेके पहले रोगीमे बहुत अधिक स्नायविक और मानसिक उत्तेजना होती है और ऋतु जल्दी हो या देरीसे, किसी भी तरह क्यों न हो—स्राव परिमाणमें खूब ज्यादा ही होता है। रक्त गाढा और काला—इसके साथ ही कब्जियत रहती है। श्वेत-प्रदर—स्राव गाढ़ा और प्रत्येक बार पाखाना जानेके समय ज्यादा स्राव होता है।

वृद्धि (aggravation)—दाहिनी करवट सोने, मानसिक परिश्रमसे, गर्म घरमे और बैठनेपर।

ह्रास (amelioration)—जोरसे दवाने, निर्मल वायुमें, डकार आनेपर, शरीर हिलानेपर।

वादको दवा (follows well)—बेल, लाइको, नैट-म्यूर, नक्स, पल्स, सिपि।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैम्फर, कैमो, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७।

मैग्नेशिया फास्फोरिकम।

(MAGNESIA PHOSPHORICUM)

(फास्फेट आफ मैग्नेशिया)—माननीय डा० शुसलरकी सभी बायोकेमिक दवाओंमें हमलोग होमियोपैथीमें इस दवाको बड़े ही आदरसे व्यवहार करते हैं। इसकी क्रिया भी कितनी ही बार जादूकी तरह दिखाई देती है तथा आश्चर्यमें आ जाना पड़ता है। सभी तरहके स्नायविक (neuralgic) दर्दको तुरन्त दूर करनेमें होमियोपैथीमें इसकी बराबरी करनेवाली बहुत कम दवाएँ ही दिखाई देती हैं, जहाँ मैग्नेशिया म्यूर या मैग्नेशिया कार्बके प्रकृतिगत दर्दके साथ छटपटी, और दर्दको घटानेके लिये बिछावनसे उठकर टहलना—ये दोनों लक्षण नहीं रहते, वहीं इसकी जरूरत पड़ती है। इसका दर्द और तकलीफें—

गर्म प्रयोगसे, दवानेसे और खुली हवामे चलनेपर घटते है, दर्दकी प्रकृति काटने, खोंचा मारने, तीर वेधने, सुई गडानेकी तरह रहती है, दर्द सविराम अर्थात् रुक रुक कर होता है। दर्द एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही छूट जाता है, एकाएक जगह बदलता है। शरीरके बायीं ओरकी अपेक्षा दाहिनी ओर दर्द अधिक होता है। (दर्द दाहिनी ओर आक्रमण करता है—ब्रायो, चेलि, वेल, लाइको, कैलि-कार्ब, पोडो)। कमजोर, दुवले, स्नायविक और काले रगके मनुष्योपर इसकी विशेष क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। ठण्डी हवा लगने, शरीरसे कपडे उतारने, रोगवाली जगह छूने, ठण्डे पानीमे शरीर धोने या नहाने और इधर उधर हिलने-डोलनेसे बहुत भय, २। पाकस्थली, पेट और तलपेटमें मरोडका (cramping) या स्नायुशूलका दर्द, ३। बच्चोंके पेटमे पे ठन-का दर्द, पैर सिकोड रखता है और रोता है, ४। सर-दर्द—गर्दनमे आरम्भ होकर माथेके ऊपर जाता है, सवेरे १० बजे—११ बजे और तीसरे पहर ४ बजे—५ बजेसे बढना, ५। मुँह या दाहिनी भौंका स्नायुशूलका दर्द, जीभ साफ रहनेके साथ पाकस्थलीमे आक्षेपिक दर्द, ६। ऋतुशूलका दर्द, ७। स्नायविक उत्तेजनाकी वजहसे रातमें विछावनमे पेशाव कर देना, ८। गर्भावस्थामे प्रसूताके, लेखकोंके, वेहाला और पियानो बजानेवालोंके प्रत्यग आदिमें पे ठनका दर्द।

उदरशूलका दर्द—दर्दकी धमकसे रोगी सामनेकी ओर झुका रहता है। रोगवाली जगहको दबाने, रगड़ने, सेंकने और डकार आनेपर अथवा वायु निकलनेपर दर्दका कुछ घट जाना (कोलोसिन्थमें ये लक्षण रहनेपर भी उसमें डकार या वायु निकलनेपर दर्द किसी तरह नहीं घटता)। पाकस्थलीमें दर्द—दर्द पीठतक चला जाता है, प्रत्येक बार दर्दके बाद पेशाब होता है, पेशाब परिमाणमें भी ज्यादा होता है। दाहिने हाथकी और दाहिने कन्धेकी पेशीके वातमें यह ज्यादा लाभ करता है।

सभी स्थानोंके स्नायविक दर्द—यह माथा, मुँह, दाँत, पाकस्थली, आँत प्रभृति, जहाँ कहीं भी हो, यदि दर्दकी प्रकृति—खींच रखने, टान रखने, तोड डालने, डंक मारने, बिलकमारने इत्यादिकी तरह होती है, दर्द रह रह रहकर होता है, दर्द एकाएक पैदा होता है और ज्यादा देरतक नहीं ठहरता, ये लक्षण रहनेपर इससे अवश्य ही फायदा होगा।

नाना प्रकारके आक्षेपिक दर्द—जैसे—बाधकका दर्द, पेठन, दाँती लगना, शूलका दर्द, अकड़न, पेट फूलनेके साथ शूलका दर्द, कलेजा धड़कना। आमाशयका दर्द, गृध्रसी वात, मृगी, धनुष्टङ्कार, गलनलीका आक्षेप इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियोंमें डा० शुसलर इसे प्रयोग करनेका उपदेश देते हैं। इसका भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रयोग होता है (बाहरी प्रयोगके लिये—२८, ३८)।

क्रम—३x से २००x विचूर्ण, प्रत्येक वार २।३ ग्रेन मा में बहुत गर्म पानीके साथ दर्द आराम होने या न घटनेतक प्रत्येक १०।१५ मिनिटके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये।

फारमुला—विचूर्ण—६।

मैगनोलिया ग्रैण्डिफ्लारा।

(MAGNOLIA GRANDIFLORA)

(पिटर मैगनल नामक एक फ्रांसीसी वोटैनिस्टके नाम अनुसार इसका नामकरण हुआ है।) वात और हृत्पिण्ड बीमारीमें व्यवहारके लिये यह प्रसिद्ध है। कैलि-बाइक्रोम प्रभृ दवाओंकी तरह इसका दर्द—जगह बदला करता है, अ बीमारीके उपसर्ग बर्सात और तर ऋतुमें बढ़ते हैं। इस बीमारीका दौरा शरीरके बायें अशपर ही अधिक होता है। ना प्रकारके वात, गठिया वात और हृत्पिण्डकी बीमारीमें य फायदा करता है।

मैग्नोलियामें—कोलचिकमकी तरह वातका दर्द कभी कभ हृत्पिण्डमें चला जाता है। पेरिकार्डाइटिस (हृत्पिण्डके बाह आवरणका प्रदाह), एनजाइना पेक्टोरिस (हृत्शूलका दर्द वैल्व्यूलर-डिजिज (हृत्कपाटकी बीमारी) और हृत्पिण्ड कितने ही स्थानोंमें पेठन और खोंचा मारनेकी तरह दर्द, कलेजे

तेज धड़कन, श्वास बन्द हो जानेके लक्षण इत्यादिमें मैग्नोलिया-का व्यवहार करनेपर खासा फायदा होता है (डिजिटेलिस अध्यायमें अन्यान्य दवाएँ देखिये)।

इसके अलावा—स्त्रियोंकी बीमारीमें बायें डिम्बाशयमें रक्त-सञ्चय और दर्द, गाढ़ा सफेद रंगका प्रदर, पेशाबमें कूथन, दो ऋतुओंके बीचके समयमें बीच बीचमें रज:स्राव, दिनमें बहुत सूखी खाँसी प्रभृतिमें यह फायदा करता है।

क्रम—φ—१x शक्ति, फारमुला—३।

मैंगेनम एसेटिकम
(MANGANUM ACETICUM)
और
मैंगेनम कार्बोनिकम।
(Manganum Carbonicum)

(ब्लैक-आक्साइड-आफ-मैंगेनिस)—महात्मा हैनिमैनने ही पहले-पहल इसकी परीक्षा की थी। साधारणत:—धनिमिया, गल्कोष और टेटुआ सम्बन्धी बीमारियाँ और निम्नाङ्गके पक्षाघातमें यह व्यवहृत होता है। इसके रोग-लक्षण—रातके समय, शीतमें और ठण्डे-पानीके समय बढ़ते हैं।

रक्तहीनता—(एनिमिया)—अगर किसी स्त्रीको ऋतु बहुत जल्दी जल्दी हो, पर दो एक दिनसे ज्यादा न ठहरे, वहाँ रक्तहीनतामे, इसका फेरमके बदले व्यवहार किया जा सकता है।

खाँसी और गला-जकड़ जाना—सन्ध्यासे लेकर जबतक रोगी सो नहीं जाता, तबतक खाँसीका बढना, रातमें सोनेपर अकसर खाँसी नहीं रहती, तब बातचीत करनेपर या जोरसे पाठ करनेपर खाँसी बढ़ना, गला सूखा और गलेमें दर्द रहता है। लैरिञ्जियल-थाइसिसमे गला जकड जाना और गलेमें अकडनके दर्दके साथ खाँसीमें इससे सामयिक लाभ होता दिखाई देता है (palliative)। कमजोर, रक्तहीन व्यक्तियोंकी अथवा किसी दूसरी ही सर्दी-खाँसी, गला फस जाना, स्वर-लोप प्रभृति बीमारीमें गलेमें बलगम इकट्ठा हो जाता है। रोगी खाँस खाँसकर उसे निकाल डालनेकी बार बार चेष्टा करता है। इसके साथ ही गलेमे दर्द, मैंगेनममें—दिनमें दोपहरके समय थोडा-सा गोंदकी तरह लसदार कडा बलगम निकलता है। उससे गलेकी आवाज बहुत कुछ साफ हो जाती है। डा० हियुजेस कहते हैं—जो स्वरयन्त्रका बहुत अधिक व्यवहार करते हैं। उनके लेरिञ्जो-ट्रिकियाइटिसकी यह प्रधान दवा है।

वात—पैरकी एँडी इत्यादिके दर्दके लिये और वातके लिये एपिडिम-क्रूड अध्याय देखिये। मैंगेनमका दर्द कोनाकोनी (cross-wise), एक जोडसे दूसरे जोडपर जाता है। जगह

बदलता है। दाँतका दर्द, स्थान-परिवर्तन-शील दर्द साधारणत मैगेनम, पलसेटिला, कैलि-वाई-क्रोम, लैक-कैनाइनम, कैलि-सल्फ, कोलचिकम, लिडम, कैलमिया, रोडोडेण्ड्रन,—प्रभृति दवाओंमे हैं। शरीरके किस स्थानमे वात होनेपर किस दवाकी जरूरत पडती है, उसकी एक संक्षिप्त सूची नीचे दी जाती है —

पैरकी पँडीमे और टिबिया अस्थिका दर्द—एण्टिम-क्रूड-अध्याय देखिये, दाहिने उरुमे दर्द—सिपिया, वाएँ उरुमे—एकोनाइट, सभी जोडोंमें दर्द—पल्स, कन्धा, उरु, घुटना और पँडीमें—वेरेट्रम-विरिडि—कियो, दाहिने पैरमे—लेके, बाये पैरमे—इलैप्स, कमरमे—रसटक्स, मैकरोटिन, पीठमें—सिमिसि, पंजरेमें—रैनान-व्यु, आर्नि, हाथमे खासकर डेल्टायड पेशीके जोडकी जगहपर—फाइटोलैक्का, डेल्टायड पेशीमें—अरम, कैल्केरिया, फेरम, कोलाफाई, लेक-कैनाई, वाये हाथमें—एक्टिपि, गुयेकम, फेरम, दाहिने कन्धे और हाथमे—फाइटो, सैंगु, फेरम, वाएँ कन्धेमें—नक्स-मस्केटा, हाथकी कलाईमे—एक्टिया-स्पाइके, कोलोफाई, वायोला, अँगुलीके जोडोंमे दर्द, सूजन—फाइटो, लम्बी अस्थिकी आवरक झिल्लीमे—मेजेरियम, स्टिलिजिया, दर्द पहले दाहिनी ओर, फिर वायीं ओरकी स्कन्ध-सन्धिमें चला जाता है—एमोन-म्यूर, लैक-कैनाइ, दोनों कन्धोंमे—मैग-कार्व, मैग-म्यूर, एसिड-नाई; वाये कन्धेमें—फ्रेकाइटिस, वाये कन्धेसे दाहिने कन्धेमे—मेडोहिनम; पीठकी रीढसे अन्तिम कूल्हेकी हड्डीतक—रूटा, घुटनेमें—लिडम, स्टिक्टा; घुटना और नीचेके जोडमे—

थूजा, मांस-भरी जगहोंपर—सिमिसिफियु, फास, बायीं औरकी छातीमे—स्पाइजेलिया, छातीमे, पीठमे और शरीरके सभी स्थानों की बड़ी बड़ी पेशियोमे—आर्नि, मर्कुरियस, नक्स-बोम, रसटक्स।

पक्षाघात—निम्नाङ्गके पक्षाघातमें मैंगेनम लाभदायक है। एक मसल मशहूर है, कि जो मैंगेनिस लेकर काम बहुत दिनों तक करते हैं, उनके पैरकी शक्ति क्रमश घटती जाती है, पेशियोंका क्षय होता है, लगडा कर चलनेकी तरह चलता है, और अन्तमें बीमारी पक्षाघातमे (Paraplegia) मे परिणत हो जाती है।

चर्मरोग—रज स्राव बन्द होकर या रक्त बन्द होनेके समय अथवा मासिक ऋतुस्रावके समयपर कोई चर्मरोग (एक्जिमा) अगर हो जाये और किसी दूसरी दवासे फायदा न हो, तो वहाँ मैंगेनमसे फायदा होगा।

सहुल—ऐमोन कार्ब, आर्स, कोनि, फेरम, लाइको, प्लैटिना, पल्स, थूजा।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

विष-क्रिया-नाशक—काफिया।

क्रम—३ री शक्ति। फारमुला—७।

मेलिलोटस ऐल्बा ।

(MELILOTUS ALBA)

(एक तरहके छोटी जातिके गाछके फूलसे मूल अर्क बनता है)—इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है—किसी जगहपर रक्त-सञ्चय (congestion) होकर अगर रक्तस्राव हो तो यह घट जाता है , इसके द्वारा शरीरके सभी अगोंमे रक्तकी अधिकता हो सकती है, और रक्तस्रावके पहले चेहरा लाल हो उठता है । माथे-मे टपकका दर्द, इसकी प्रधान दवाएँ है—बेलेडोना, मेलिलोटस, नेट्रम-म्यूर, ग्लोनोयिन प्रभृति । यदि माथेका इस तरहका दर्द नाकसे खून गिरनेपर, घट जाये तो मेलिलोटस ही उसकी प्रधान दवा है । (ग्लोनियन अध्यायमे—सर-दर्द देखिये) । मेलिलोटस—नासा ज्वरकी और नासा रोगकी—एक उत्कृष्ट दवा है । इसको सेवन करनेपर नासा रोगको कटवानेकी प्राय जरूरत नहीं पड़ती (सैंगुनेरिया—नाइट्रेट देखिये ।)

क्रम—१x—३० शक्ति । फारमुला—३ ।

मिनियैन्थिस ट्राइफोलियाटा ।

(MENYANTHES TRIFOLIATA)

(उत्तर अमेरिका, युरोप और एशियाकी जलीय भूमिमें एक तरहका गुल्म पैदा होता है, उसीसे टिंचर तैयार होता है।)— स्नायविक सर-दर्द, ज्वर, कलेजेमें दर्द प्रभृति दो एक बीमारीके इलाजमें इसकी जरूरत पडती है। डा० टेस्टिङ्ग कहते हैं—ड्रोसेरा-के लक्षणके साथ इसका बहुत कुछ सादृश्य है। इसीलिये, ड्रोसेराके लक्षणोंवाली बीमारीमें अगर ड्रोसेरासे फायदा नहीं हो, तो अन्तमें—मिनियैन्थिसको प्रयोग कर देखना उचित है।

सर-दर्द—माथा भारी, माथेमें दबाव मालूम होना, सीढी चढने उतरने अथवा ज्यादा इधर उधर करनेसे सरका दर्द बढता है। सर-दर्द गर्दनसे आरम्भ होकर क्रमश समूचे माथेमें चला जाता है, हाथसे खूब जोरसे दबानेपर दर्द कुछ घटता है, पर छोड देनेपर फिर बढ जाता है। (गरमीसे घटना—साइलि, कसकर बांधनेपर—अर्जेण्ट)।

वक्षस्थलकी बीमारी—कलेजेकी दोनों बगलमें दबा रखनेकी तरह दर्द, उसके भीतर मानो सुई गडती है। सांस लेने-पर बहुत दर्द बढता है।

सविराम ज्वर—ज्वरमें इसका प्रधान लक्षण है,—हाथ और पैरकी अगुलियोंका बरफकी तरह ठण्डा हो जाना, यह

ठराडा भाव कोहनी और घुटनेतक जाता है। नाककी नोक ठराडी, हाथके नख नीले हो जाना, शीत और उत्तापावस्थाम प्यास, हाथ-पैरमे ठराडकके भावके साथ ही कलेजा धडकना प्रभृति कई लक्षणोंमे इसका प्रयोग होता है।

वृद्धि (aggravation)—विश्रामसे, ऊपर चढनेपर।

ह्रास (amelioration)—दबानेसे, सर झुकानेपर।

क्रिया नाशक (antidote)—केम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१४—२० दिन।

क्रम—मदर टिंचर और निम्न शक्तिसे ज्यादा फायदा होता है।

फारमुला—१।

मर्करी।

(MERCURY)

मर्करी अर्थात् पारा, यह पारा आजकल वैद्य, कविराज, एलोपैथ तथा और और मतके चिकित्सक, सभी अपनी अपनी दवाओंमें इसका व्यवहार कर रहे हैं। हमलोग होमियोपैथीमें रासायनिक क्रियासे तैयार कर भिन्न भिन्न नामोंके अनुसार जो सब दवाएँ सूक्ष्म मात्रामें व्यवहार करते हैं, उनमे कितनी ही आगे लिखी जाती है —

मर्क्युरियस कोरोसाइवस ।

(MERCURIUS CORROSIVUS)

(रस-कपूर, अंगरेजी नाम कोरोसिव-सब्लिमेट)—यह स्त्री-की अपेक्षा पुरुषकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है। श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर अपनी क्रिया प्रकट कर यह वहाँ प्रदाह पैदा कर देता है और मर्कुरियस सोलकी अपेक्षा रोगके लक्षण बहुत जल्द बढ़ा देता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। गर्मीकी बीमारीके जखम, जखम, ब्राइट्स डिजिज, २। रक्तमाशय, गर्मीके दिनोंके पतले दस्त, और आँतोंसे सम्बन्ध रखने-वाली कोई बीमारीका होना तथा मईके महीनेसे लेकर नवेम्बरके महीनेतककी कोई बीमारी, ३। पाखाना फिरनेके समय पेटमें शूलका भयकर दर्द होता है, साथ ही वेग और कृथन भी रहती है—यह पाखाना हो जानेपर भी बहुत देरतक बना रहता है, ४। लगातार थोड़ा थोड़ाकर पाखाना होता है, पाखाना—गरम, खून मिला, कभी कभी केवल खून, आम मिला, बदबूदार, ५। मूत्रनलीमें कृथनका वेग, मूत्रनलीमें जलन, पेशाब गरम, परिमाण थोड़ा, बहुत तकलीफके साथ बूंद बूंद पेशाब निकलना, खूनका पेशाब ˚ द्वितीय अवस्था,—हरे रंगका स्राव, बहुत

˚ या रक्तमाशयका नाम

सुनते ही पहले ही ध्यान इसी दवा की ओर जाता है। वास्तवमें इस बीमारीकी मर्कुरियस-कोरोसाइवस एक बहुत ही लाभदायक दवा है। आमाशयमें—खूनकी मात्रा और कुन्थन, शूल या मरोड जितना ही अधिक रहेगा, इससे उतना ही ज्यादा फायदा भी होगा। मल—खून मिला या केवल खून, कभी आम मिला, मलका रंग या तो पीला, अथवा हरा रहता है, बहुत बदबू रहती है, यह परिमाणमें बहुत थोड़ा होता है (१।२ चम्मच) और पाखाना बार बार तथा जल्दी जल्दी होता है। पेटमें भयानक दर्द, यह दर्द दस्तके पहले, दस्तके समय और दस्त होजाने बाद भी होता है। दस्तका वेग और कुथन और पेटका दर्द प्रायः सभी समय रहता है। इसके अलावा—पेट फूलना, तलपेटमें दर्द, नाडीकी कमजोरी, मुँहमें घाव, बदनमें अकडनका दर्द। थोडा बोखार इत्यादि लक्षण भी वर्त्तमान रहते हैं। इन लक्षणोंके साथ यदि पेशाबमें वेग, बूंद बूंद पेशाब और पेशाब करनेके समय कुछ न कुछ जलन रहती है। ऐसी अवस्थामें इसका प्रयोग कर देखेंगे कि जादूके तरह मलकी बीमारी आराम होगी। रोगकी पहली अवस्थामें एकोनाइटका प्रयोग करनेके बाद—मर्कुरियसके प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है। (एकोनाइट अध्याय देखिये) हैजा रोगमें—सफेद कोहडेकी तरह दस्त, इसके साथ ही केवल खून या खून मिले दस्त और उसके साथ वेग और कुथन रहनेपर—मर्कुरियस कोर अव्यर्थ दवा है। (ऐसे स्थानपर—३ री ६ ठी निम्न शक्तिका बार बार प्रयोग करना चाहिये)।

यहाँ एक बात और भी याद रखनी होगी, कि—आँतके निचले अशपर मर्कुरियसकी क्रिया अधिक होती है, इसीलिये, यह साधारणत' नये आमाशयमे (in acute dysentry) और मर्कुरियस डलसिस क्रिया आँतके ऊपरी अशपर अधिक होती है। इसीलिये, वह अतिसारमे ज्यादा फायदा करता है। मर्कुरियस डलसिसके अतिसारमे मलके साथ हरे रगकी आम रहती है, पर कुथन और शूलका दर्द अक्सर नहीं होता। बच्चोंके अतिसारमे—मर्कुरियस डलसिसकी ज्यादा जरूरत पडती है, यहाँतक कि प्राय एक तिहाई अश रोग केवल इसके द्वारा ही आरोग्य होते हैं।

नक्स-वोमिका—इसमे दस्तका परिमाण बहुत थोडा होता है, और पेटमे दर्द, कुथन, बार बार पाखानेका वेग, बहुत ही अधिक होता है, परन्तु ये लक्षण पाखाना होनेके पहले और पाखाना होनेके समय ही अधिक दिखाई देते है। पाखाना होने बाद थोडी देरके लिये, किसी तरहका भी दर्द नहीं रहता, रोगीको कुछ आराम मालूम होता है (मर्कुरियसमे—पाखाना हो जाने बाद भी दर्द रहता है)।

कैप्सिकम—यह भी आमाशयकी एक प्रशंसनीय दवा है। इसमे आम, रक्त, बार बार थोडा थोडा दस्त और कुथन, खूब अधिक मरोडका दर्द रहता है, पर इसमे जो रक्त निकलता है, वह काले रगका होता है। पाखानेका रग—हरा और फेन मिला, कुछ पीनेपर दस्त लग आता है, पानी पीनेपर सिहरावन मालूम

होता है और रोगीको मलद्वारमे मिर्चा लग जानेकी तरह जलन अनुभव होती है। पाखाना हो जाने बाद कमरमे खींच रखनेकी तरह दर्द होता है।

ड्राम्बिडियम—सवेरेके अतिसार, रक्तातिसार, और रक्तामाशयकी यह एक उत्कृष्ट दवा है। (इसका अध्याय देखिये)।

अण्डलाल मिला पेशाब—गर्भवती स्त्रियोंके पेशाब मे एल्बुमेन रहनेपर—मर्क-कोर फायदा करता है (डा० केण्ट)।

प्रमेह—सूजाकका मवाद हरा या पीबकी तरह, पेशाबके पहले, बाद और पेशाबके समय बहुत जलन, पेशाबका बहुत अधिक वेग और कूथन रहती है, इसके अलावा—लिङ्गमणिमे सूजन, रातमे तकलीफोंका बढना और कभी कभी इसमें रक्तस्राव भी दिखाई देता है। केन्थरिस, कैप्सिकम, कैनाबिस वगैरहके साथ इसका अन्तर उनके अध्यायमे देखिये।

द्रष्टव्य:—कैनाबिस अध्यायमे कहा जा चुका है, कि प्रवाह घटकर स्राव गाढा और हरा जब होने लगे और उसके साथ ही जलन रहे, प्राय मर्कुरियस कोर सी, एम, शक्तिके सेवनसे बीमारी आराम हो जाया करती है, पर यहाँ यह बताया जाता है, कि अगर स्राव हरा होकर पीबकी तरह गाढा और गहरे पीले रंगका होता है और इसके साथ ही मूत्रनलीका प्रदाह, पेशाबमे जलन, दर्द, पेशाब होने बाद भी ऐसा मालूम होता है मानो मूत्रनली भरी हुई है, बैठने या खडे होनेपर बार बार पेशाबका वेग और दर्द (सोनेपर कम) इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। ऐसा

होनेपर—डिजिटिलिससे वह बीमारी आराम होगी। यहाँ डिजिटिलिसकी चरित्रगत नाडीकी अवस्था आदि कुछ भी देखनेकी आवश्यकता नहीं है। कभी कभी इस अवस्थामे लिङ्गाग्र-चर्म (prepuce—चमडी) से रस (serum) पैदा होकर लिङ्गका अगला भाग फूल जाता है और कडा हो जाता है और रातमे लिङ्गमे बहुत ही तकलीफ देनेवाला कडापन (Chordee) पैदा हो जाया करता है—कैन्थरिस, कैनाबिस, मर्कुरियस-कोर, डिजिटिलिसकी अपेक्षा—सलफरसे ज्यादा फायदा होगा।

चमड़ी—सूजाक रोगके साथ उल्टी चमडीकी बीमारी होनेपर, यह चाहे जिस तरह (चमडी या उलटी चमडी—Phimosis or Para-phimosis) हो, उसमे मर्कुरियस फायदा करता है। यदि चमडीकी जगह फूली और नीली आभा लिये दिखाई दे या लाल रगकी रहे, तो मर्कुरियस-सोलकी अपेक्षा मर्कुरियस-कोर ही ज्यादा फायदा करेगा। उल्टी चमडीकी बीमारीकी, पहली अवस्थामें—कोलोसिन्थ, प्रमेहसे पैदा हुई बीमारी होनेपर—पेट्रोसेलिनियम फायदा करता है। लिङ्गाग्र-चर्म फूला, दर्द, पीब-भरी चमडीकी बीमारी—जैकारान्डा—ϕ, सर्वोत्कृष्ट दवा है।

उपदंश—स्त्री या पुरुष, जिनका जखम जल्दी जल्दी बढ़ता है, भयानक जलन रहती है। उपदशसे उत्पन्न नाकका जखम, या नाककी हड्डीका फूलना और दर्द।

आँखकी बीमारी—गर्मी-रोगवाले मनुष्योंकी आँखका

उपतारा-प्रदाह (Iritis) और पलुमिनुरिया रोगवाले रोगीकी आँखके भीतरी पर्देके प्रदाहकी (रेटिनाइटिस)—अगर मर्कुरियस कोरको एक अद्वितीय ओषधि कहा जाये तो भी अत्युक्ति नहीं है। जिन्होंने पारा बहुत अधिक सेवन किया है, उनके उपतारा प्रदाहमें या आइराइटिसकी बीमारीमें—कैलि-हाइड्रो ज्यादा फायदा करता है, स्वच्छत्वक (कार्नियामें) जखम होनेपर भी इससे ज्यादा फायदा होता है (आइराइटिसकी बीमारीमें—एसाफिटिडा, नाइट्रिक-एसिड, क्लिमेटिस प्रभृति दवाएँ फायदा करती है), कनीनिकाके जखममें भी मर्कुरियस कोर फायदा करता है, छोटे छोटे सौरी घरके बच्चोंकी आँख उठने और पीब होनेमें (Opthalmic neonatorum) की बीमारीमें—पलसेटिला ज्यादा फायदा करता है। पलसेटिलासे फायदा न होनेपर—अर्जेण्ट-नाइट्रिकम उच्च शक्तिका प्रयोग करना चाहिये। यदि इन सब दवाओंसे फायदा न होकर क्रमश कनीनिका (cornea) में जखम हो जाये और अर्जेण्टसे फायदा न हो, तो अन्तमें—मर्कुरियस-कोर देना ही चाहिये। मर्कुरियस-सोल या मर्कुरियस-बाइ-वसमें—आँखके भीतर और बाहर दोनों ओर ही प्रदाह हुआ करता है, इसमें आँखकी दोनों पलकें मोटी हो जाती है; आँखसे पतला पीब या एक तरहका लाल उधेडनेवाला स्राव निकला करता है। वह जहाँ लगता है, वहाँ एक तरहकी छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती है और दाग पड जाता है। मर्कुरियसमें—रातमें बिछावनकी गरमीसे तकलीफ बढ जाया करती है, आँखकी

बीमारीके साथ अगर कोई ग्रन्थि भी फूली रहे,—मर्कुरियस-बिन-आयोड फायदा करता है। आँखके साधारण प्रदाहमें—रोशनीका सहन न होना, बेहद तकलीफ, आँखसे पानी गिरना, आँखके चारों ओरकी हड्डीमें दर्द, आँखका घोर लाल हो जाना इत्यादि लक्षण रहनेपर,—मर्कुरियस-कोरसे तुरन्त फायदा होता है (इयुफ्रेशिया अध्याय देखिये)।

नाककी बीमारी—गरमी रोगवाले रोगियोंके नाककी भीतरी भेदक अस्थिमें (septum bone) जखम होकर अगर छेद हो जाये और उसमें बेहद जलन और दर्द रहे,—मर्कुरियस कोर फायदा करेगा। आरम म्यूर—भी इसकी दवा है (आरम अध्याय देखिये।) अगर किसी भी दवासे फायदा न हो तो—एचिनेसिया—ϕ, का भीतरी और बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

गलनलीकी बीमारी—उपजिह्वा फूलकर मोटी हो जाती है, बडी और लाल रंगकी होती है, तालुकी जड फूलती है, उसमें बहुत जलन होती है, कोई चीज निगलनेकी चेष्टा करनेपर वह बाहर निकल पडती है—इत्यादि लक्षणोंमें मर्कुरियस कोर फायदा करता है। गलेके भीतर जखम होकर अगर वह जल्दी जल्दी बढता जाये और उसके साथ ही जलन रहे तो इससे फायदा होगा। (हिपर, मर्क-सियानेटस देखिये)।

लैरिञ्जाइटिस—इस बीमारीमें स्वरभंग, गलेमें जलन, डंक मारनेकी तरह दर्द, कोई चीज निगलनेके समय गलकोष

और पपिग्लाटिसमें छुरीसे काटनेकी तरह दर्द हो तो—मर्कुरियस-कोरसे फायदा होगा।

मूत्राशय-प्रदाह—पेशावमें भयानक कुथन और जलन, पेशावमें—रक्त, श्लेष्मा और पीव, कितनी ही बार पेशाव बन्द हो जाता है या बहुत कष्टसे बूँद बूँद पेशाब निकलता है, इसके साथ ही मूत्राशय और मूत्राशयग्रीवाके स्थानपर भयानक जलन।

गर्भवती स्त्रियोंके पेशाबमें—अण्डलाल रहनेपर और इसी वजहसे मसानेका प्रदाह (नेफ्राइटिस) होनेपर, इससे फायदा होगा।

मूत्रनाश—डा० कालीका कथन है कि हैजाकी बीमारी में मूत्रनलीमें पेशाब न इकट्ठा होनेपर और उसके साथ ही पेटमें दर्द रहनेपर—मर्कुरियस कोर—३० शक्ति एक मात्रा प्रयोगसे आशासे अधिक फायदा होता है।

सदृश—मर्क-बिन-आयोड, मर्क-आयोड, हिपर, कैलि-कार्ब, फाइटोलैका।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—६० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। ६ ठमे निम्न क्रममें इसका व्यवहार उचित नहीं है।

फारमूला—बिचूर्ण—७।

मर्कुरियस-प्रोटो-आयोड ।

(MERCURIUS PROTO-IOD)

मर्कुरियस-बिन-आयोडेटस

(MERCURIUS BIN IODATUS)

मर्कुरियस सियानेटस

(MERCURIUS CYANATUS)

इन तीनो दवाओंमे मर्कुरियस आयोड शरीरके दाहिने अशमें और मर्कुरियस बिन-आयोड—शरीरकी बायीं ओर अपनी क्रिया प्रकट करता है। दोनो ही दवाएँ साधारण फालिक्युलर फैरिआइटिससे लेकर डिफ्थीरिया और असली उपदशकी बीमारीमें भी प्रयोग होती हैं। मर्कुरियस-सियानेटस—डिफ्थीरिया और गलेके जखमकी प्रधान दवा है और उसीमे इसका अधिक व्यवहार होता है।

डिफ्थीरिया—यह एक तरहकी कडी और प्राणघातक बीमारी है, गलेके भीतर (उपजिह्वाके पास) एक तरहका जखम होता है, उसपर एक तरहका पतला सफेद सफेद पर्दा (membrane) पैदा होता है, अगर यह बीमारी जल्द आराम नहीं होती तो यह जखम क्रमश गलेके भीतर तथा नाक और फेफडेतक चला जाता है, इसके साथ ही बोखार, गलेमें दर्द, खाने पीनेपर और

साँसमे भयानक कष्ट, ऊँची साँय साँय आवाज, खाँसी, मुँहसे लार वहना और बदबू निकलना, सुस्ती, बहुत कमजोरी इत्यादि कितने ही आनुसगिक लक्षण प्रकट होते हैं। ये ही डिफ्थीरिया रोगके लक्षण है। किसी रोगीमे ये लक्षण देखनेपर समझ लेना चाहिये कि उसकी बीमारी कडी है, और वहुत सावधानीसे इलाज कराना चाहिये। इस बीमारीमें रोगीकी साँस रुककर कितने ही रोगी मर जाते हैं, इसीलिये येलोपैथिक चिकित्सक प्राय वायुनली काट देने (tracheotomy) की सलाह देते है। बच्चोको ही ज्यादाकर यह बीमारी होती है। डिफ्थीरियामे— मर्कुरियस-सोल, मर्कुरियस-कोर, प्रभृति दवाओंसे कोई भी फायदा नहीं होता, मर्कुरियस-आयोड, बिन-आयोड या सियाने-टस प्रभृति दवाओंकी जरूरत पडती है (डिफथेरिनम अध्याय देखिये।)

मर्कु रियस आयोड—इसमे जखम, सूजन, दर्द प्रदाह प्रभृति उपसर्ग पहले तालुमूलकी दाहिनी ओर प्रकट होते है, गरदनकी गाँठ फूलती है। गलेके भीतर बहुत लसदार गोंदकी तरह श्लेष्मा या एक तरहका पदार्थ इकट्ठा होता है, कोई चीज पीने या खानेमे बहुत तकलीफ होती है और घूंट लेनेमे तो सबसे ज्यादा कष्ट होता है, रोगके उपसर्गके साथ बोखार रहता है, इस दवाके लक्षण सब अपेक्षाकृत हल्के होते हैं।

मर्कुरियस बिन आयोड—इसमे जखम, सूजन, प्रभृति उपसर्ग सब पहले तालुमूलकी बायीं ओर प्रकट होते हैं और

मर्कुरियस आयोडके प्राय सभी लक्षण वर्त्तमान रहते है, पर इसका बोखार, प्रदाहका लक्षण और दूसरे दूसरे सभी उपसर्ग मर्कुरियस आयोडकी अपेक्षा तेज रहते है। इन दोनों ही दवाओंमे जीभकी जडमे सफेद पीले रंगका मैल और जीभकी नोक लाल रंगकी और साफ रहती है।

मर्कुरियस-सायानेटस—यह दवा डिप्थिरियाकी प्रधान और श्रेष्ठ दवा है। अगर बीमारी एकाएक आक्रमण कर देखते देखते भयकर भाव धारण कर लेती है, रोगी बहुत जल्द कमजोर हो पडता है, उसका शरीर ठण्डा होता जाता है, नाडीकी गति बहुत तेज (मिनिटमे १३०—१३५) सविराम और रुक रुक चलती है,मुँहसे बहुत सड़ी बदबू निकलती है, जखम नाकतक चला जाता है, जीभ कभी कभी काली हो जाता है (यह लक्षण बहुत ही भयानक लक्षण है),तो सबके पहले इसकी व्यवस्था करना उचित है। इसका एपिसके बाद प्रयोग करनेपर ज्यादा फायदा होता है और डिप्थिरियाके सिवा गलेके भीतरके एक तरहके जखममे लाभ-दायक है। साधारणत इसकी ६ ठीं शक्ति ही अधिक लाभ करती है।

एपिसमे—प्राय बोखार नहीं रहता, परन्तु नाडोकी गति—मर्कुरियस-सियानेटसकी तरह तेज और क्षीण रहती है। गलेके भीतर खूब फूलता है, चमकीला दिखाई देता है। उपजिह्वा और गलेके भीतरके सभी अश थैलीकी तरह फूल उठते है (देखनेपर

(ऐसा मालूम होता है, मानो भीतर पानी भरा है), कोई भी चीज खाना-पीना या घूँट भी नहीं ले सकता। इसका प्रदाह पहले दाहिनी ओर होता है (दोनों ओर भी हो सकता है)।

<u>आर्सेनिक</u>—रोगकी बढी हुई और कठिन अवस्थामे फायदा करता है। इसमें भी एपिसकी तरह सूजन रहती है, रोगी बहुत छटपटाया करता है, उपसर्ग आदि रातमे और दो पहरके बाद बढते है, मुँहमे भयानक बदबू रहती है।

<u>बेप्टीशिया</u>—रोगीकी सान्निपातिक अवस्था प्राप्त हो जानेपर और श्लेष्मा, मल, मूत्र, पसीना, लार इत्यादि सभी स्रावोंमें बदबू रहनेपर प्रयोग होना चाहिये।

<u>कार्बो-वेज</u>—नाकसे रक्तका स्राव होता है, रोगी एकदम रक्तहीन हो जाता है। शीत आ जाता है, पंखेसे हवा करनेके लिये कहता है।

<u>फाइटोलैका</u>—इसका अध्याय देखिये।

<u>कैलि-बाइक्रोम</u>—रोगी बहुत कमजोर, हाथ-पैर ठण्डे, इसमें स्वरयन्त्रपर पहले रोगका आक्रमण हो जाता है, स्राव गोंदकी तरह लसदार और गाढा।

<u>नैजा या कोब्रा</u>—रोग-विषसे शरीर नीला रंग धारण करता है, हृत्पिण्डकी क्रिया बन्द होनेकी तैयारी हो जाती है, नाडी सूतकी तरह क्षीण हो जाती है या मिलती ही नहीं है।

उपदंश या गर्मी रोग—मर्क्युरियस-सोल अध्यायमें

"उपदश" परिच्छेद एक वार पढे , मर्कुरियस-विन-आयोड पुराते उपदंशकी और पारद-दोषकी उत्तम दवा है। उपदशकी बीमारीके जखममे रोगवाली जगहपर छेद होकर रोग साघातिक होनेपर—मर्कुरियस-सियनेटस फायदा करता है। (थूजा अध्याय देखिये)।

क्रम—मर्कु रियस-आयोड और विन-आयोड—३x—६ ठी शक्ति मर्कु रियस-सियानेटस—६—३० शक्ति।

फार्मुला—विचूर्ण—७।

नीचे मर्कु रियस-सोल, सल्फ और ब्रोमेटसका विषय वर्णन किया गया है।

मर्कुरियस सोल्युबिलिस और वाइवस।

(MERCURIUS SOLUBILIS AND VIVUS)

मर्कु रियस सोलका दूसरा नाम—प्रिसिपिटेड-आक्साइड आफ मर्करी , मर्कु रियस-वाइवसका दूसरा नाम—क्विक-सिलवर ,

अगर कोई मर्कु रियस कहता है—मर्कु रियस-साल्युबिलिस ही मालूम होता है। मर्कु रियस सोल और वाइवसकी क्रिया प्राय एक ही प्रकारकी होती है (अगरेजी पुस्तकमे मर्कु रियस सोलकी अपेक्षा मर्कु रियस-वाइवसका उल्लेख अधिक रहता है)।

मर्कु रियस—एण्टि-सोरिक, (सोरा विष-नाशक), एण्टि-

साइकोटिक (प्रमेह-विष-नाशक) और एण्टि-सिफिलिटिक (उपदंश-विष-नाशक) है। श्लैष्मिक झिल्लियाँ, ग्रन्थियाँ, हड्डी और शरीरके कितने ही यन्त्रोंके ऊपर इसकी क्रिया अधिक होती है। इसमें रोगी ज्यादा सर्दी या गरमी सहन नहीं कर सकता, ठण्डी हवा एकदम सहन नहीं होती, थोड़ा-सा भी परिश्रम करनेपर अधिक पसीना होता है, इससे रोगी कमजोर हो पड़ता है। मर्करीके द्वारा—लाल रक्तकणमें विकार, अण्डलाल और फाइब्रिन नष्ट हो जाता है और खूनका दबाव पैदा करनेवाली शक्ति घट जाती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। रोग-लक्षण रातमें, बिछावनकी गरमीसे, बरसातमें, जाड़ेके दिनोंमें, पसीनेसे बढ़ते हैं, २। दाँतका दर्द रातके समय बढ़ता है, मसूढ़े फूलते हैं, उनसे खून निकलता है, दाँतकी जड़में घाव हो जाता है, दाँत हिलते हैं, दाँतसे मसूढ़ा अलग हो जाता है, ३। जीभमें घाव, गलेके भीतर घाव, तालुमूलमें घाव, कर्णमूलकी ग्रन्थिका फूलना, गलेमें गाँठ होना, पुट्ठेकी गाँठ फूलना, ४। मुँहसे लगातार लसदार साबुनके फेनकी तरह, खराब सड़ी गन्ध, कभी लारमें धातुके जगका स्वाद रहना या ऐसी ही स्वादवाली लार बहना, मुँहका स्वाद नमकीन, जीभमें बहुत ज्यादा परिमाणमें रस रहनेपर भी तेज प्यास, ५। आमाशय और रक्तामाशयमें बहुत कूथन, शूलका दर्द और वेग, ६

अतिसारमें पित्त-मिले दस्त, हरे दस्त, पीले रंगके पानीकी तरह दस्त, इसके साथ ही पेटमे बहुत दर्द, ७। अकौतामें बहुत खुजलाहट, ८। छोटी छोटी क्रिमिका मलद्वारमें सुरसुर करना, ९। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, सूखी खाँसी, दिनमे किसी भी समय दो बार खाँसीका बढना, १०। कामला, ११। प्रमेह रोगमें—शुक्रस्राव कुछ हरे रंगका दिखाई देता है। चमडी (Phimosis) बाघी, श्वेत-प्रदर, १२। मुँह गोल और जीभमें जखम, इसके साथ ही बहुत ज्यादा लार निकलना, १३। जीभ मोटी, बडी और थुलथुली, उसपर दाँतके दाग पडते हैं, १४। डिफ्थीरिया, तालुमूल-प्रदाह, उपजिह्वाका फूलना और बडी हो जाना, १५। लगातार पेशाबका वेग और जिस परिमाणमे पानी पीता है, उसकी अपेक्षा पेशाब परिमाणमें अधिक होता है, १६। रातमे वीर्य-स्खलन, उससे कपडेमें खूनका दाग पडता है, १७। कामला—बच्चोंकी आँख, पेशाब और नख पीला (हाइड्रैस्टिस), १८। श्वेत-प्रदरका स्राव रातमें बढना, स्राव शरीरमें लगनेपर खुजलाता है, योनिकी खाल उधड जाती है, योनिमें अकडनका दर्द होता है. १९। ऋतुके समय स्तनमे दर्द होता है, रजःस्रावके बदले स्तनमे दूधका सचय, २०। दाहिनी ओरके खण्डके नीचे निमोनिया होता है ; २१। तेजीसे और जल्दी जल्दी बातें करता है, २२। मुँहका स्वाद मीठा, साधारणतः ताँबेका ही स्वाद ज्यादा रहता है, मानो मुँहमें पैसा रखा था इत्यादि।

रातमें और बिछावनको गरमीसे रोग बढ़ना—

रातके समय रोग बढनेका लक्षण, कितनी ही दवाओंमें है, पर रातके समय और विछावनकी गरमीसे रोग बढना बहुत कम दवाओं-का ही लक्षण है। मर्क्युरियसमें—बिछावनकी गरमीसे और रातमें रोग बढता तो है, पर बिछावनपर आराम करनेसे घटता भी है। आर्सेनिक—बिछावनपर आराम करनेमे बीमारी बढती है, पर बिछ्वनकी गरमीसे घटती है। रसटक्सम चुपचाप सोये रहनेपर बढती है।

जीभ—मर्कुरियसकी जीभ मोटी, फूली, थुलथुली रहती है, उसपर दाँतका दाग पडता है (imprint of teeth)

दाँतकी बीमारी—मसूढा फूलता है, खून निकलता है, ठण्डा पानी सहन नहीं होता, मसूढेमे घाव हो जाता है, मसूढेसे दाँत अलग हो जाता है (gums recede from the teeth) दाँत काले रङ्गका और अलग हो जाता है, अन्तमें गिर जाता है, क्षय दाँत जरामे छूनेपर ही खून गिरता है, मुँहमे बदबू रहती है (दाँतकी दूसरी बीमारीके लिये—स्टैफिसेग्रिया और हेक्ला-लावा देखिये)

दन्तशूलका दर्द—तकलीफ रातमे बढती है, कनकनी और टपक होती है, नोच फेंकनेकी तरह दर्द हुआ करता है, मुँहसे लगातार लार बहा करती है, बदबू आती है। (प्लैण्टेगो अध्याय देखिये)।

दाँतके अस्थि-आवरणके पदार्थके प्रदाहमे (Dental peri-

ostitis) पकता है, पीव होता है, जड अलग हो जाती है, दाँत बडे और लम्बे दिखाई देते हैं। मसूढोमे फोडा होनेपर—मर्कुरियसके प्रयोगसे शीघ्र पक और फटकर बीमारी आराम हो जाती है। हिपर, साइलिसिया प्रभृति भी इसकी उत्तम दवाएँ हैं।

द्रष्टव्यः—किसी भी दाँतकी बीमारीमे जब दाँतका ऊपरी अश क्षय हो जाता है, पर उसकी जड ठीक रहती है, उस समय मर्क-सोल देना चाहिये। पर जब जडका क्षय हो जाता है, पर ऊपरी भाग ठीक रहता है, उस समय—मेजेरियमसे फायदा होता है।

मुंह और जीभका जखम—मुँह या जीभके छाले उसके साथ ही अगर मुँहसे बराबर लार बहती हो, तो—मर्कुरियस फायदा करता है। बच्चोके मुँह और जीभके जखमकी—बोरैक्स एक उत्कृष्ट दवा है। म्युरियेटिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, सल्फ्युरिक एसिड, सैलिसाइलिक एसिड इत्यादि दवाएँ भी ऐसे जखमोंमे फायदा करती है, उनका प्रभेद निरूपण कर दवाका प्रयोग करना पडेगा। मर्कुरियसका जखम गहरा नहीं होता (superficial) पर बहुत जल्दी जल्दी चारों ओर फैल जाता है। कैलि-बाइक्रोमका जखम—टिफ़टमे पञ्च करनेकी तरह गोल आकारका रहता है।

तालुमूल प्रदाह—तालुमूल या टानसिल फूलनेपर पीव होनेपर उच्च शक्तिका मर्कुरियस सोल एक मात्रा

ostitis) पकता है, पीब होता है, जड अलग हो जाती है, दाँत वडे और लम्बे दिखाई देते हैं। मसूढोंमें फोडा होनेपर—मर्कुरियसके प्रयोगसे शीघ्र पक और फटकर बीमारी आराम हो जाती है। हिपर, साइलिसिया प्रभृति भी इसकी उत्तम दवाएँ हैं।

द्रष्टव्यः—किसी भी दाँतकी बीमारीमें जब दाँतका ऊपरी अंश क्षय हो जाता है, पर उसकी जड ठीक रहती है, उस समय मर्क-सोल देना चाहिये। पर जब जडका क्षय हो जाता है, पर ऊपरी भाग ठीक रहता है, उस समय—मेजेरियमसे फायदा होता है।

मुंह और जीभका जखम—मुँह या जीभके छाले, उसके साथ ही अगर मुँहसे बराबर लार बहती हो, तो—मर्कुरियस फायदा करता है। बच्चोंके मुँह और जीभके जखमकी—बोरेक्स एक उत्कृष्ट दवा है। म्युरियेटिक एसिड, नाइट्रिक एसिड, सल्फ्युरिक एसिड, सैलिसाइलिक एसिड इत्यादि दवाएँ भी ऐसे जखमोंमें फायदा करती हैं, उनका प्रभेद निरूपण कर दवाका प्रयोग करना पडेगा। मर्कुरियसका जखम गहरा नहीं होता (superficial) पर बहुत जल्दी जल्दी चारों ओर फैल जाता है। कैलि-बाइक्रोमका जखम—टिकटमें पञ्च करनेकी तरह गोल आकारका रहता है।

तालुमूल प्रदाह—तालुमूल या टानसिल फूलनेपर या उसमें पीब होनेपर उच्च शक्तिका मर्कुरियस सोल एक मात्रा

देकर धीरजसे राह देखनेपर बहुत फायदा होता है। (फाइ-टोलैका इसकी बढिया दवा है)।

नाककी सर्दी—नाकसे पानीकी तरह पतली सर्दी निकलती है, नाक बहुत खुजलाती है और जलन होती है, नाक मानो बन्द हुई जाती है, सध्यासे नाक और नाककी जडकी तकलीफ बढती है, इन सब लक्षणोंमें—मर्कुरियस सोल फायदा करता है। इसका—सर्दीका बलगम जब पककर पीला या पीला मिला हरे रगका गाढा स्राव निकलता है, उस समय मर्कुरियस उपयोगी होता है। पल्सेटिलामें भी—गाढा और पका बलगम नाकसे निकलता है, पर उसमें जलन या तकलीफ बिलकुल ही नहीं रहती, नक्स-वोमिका और ऐमोन-कार्बमें—पानीकी तरह सर्दीका स्राव निकलता है। इन दोनोंमें नाक बन्द रहती है अर्थात् नाक चिपकी-सी रहती है, यह लक्षण रहता है।

कानकी बीमारी—कान पकना (Otorrhoea), कानमें पीब, इस बीमारीमें मर्कुरियस-सोल, पल्सेटिला, एसिड-नाइट्रिक, प्लेंटेगो, कैल्के-सल्फ, साइलिसिया, हिपर, टेलुरियम, इत्यादि दवाओंकी जरूरत पडती है। कानमें तेज दर्दके पीबका स्राव होनेपर—मर्कुरियस फायदा दूषित धातुके मनुष्योंकी बीमारीमें—नाइट्रिक-करता है। कानका प्रदाह, कानके बाहर गरमी ... रातके समय तकलीफोंका बढना,

कानसे पीला या पीलापन मिले हरे रङ्गका गाढा पीव निकलना, ग्रन्थियोंका फूलना इत्यादि लक्षणोंमे—मर्कुरियस फायदा करता है। सर्दीकी वजहसे कानके प्रदाहमें—पल्सेटिला—भी फायदा करता है। पल्सेटिलामे—कानमें ताला बन्द रहनेकी तरह हो जाता है और कानमे सों सों आवाज हुआ करती है। कानकी बीमारीके साथ अगर दाँतोंमे दर्द रहे—प्लेण्टेगो-मेजोर, भीतरी और बाहरी प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है। यदि ज्यादा दिनोंतक पीव बहता रहे, अकसर कर्णपटहकी आवरक झिल्लीमें छेद हो जाता है, उस समय बीमारी प्राय दुरारोग्य हो जाती है। ऐसी दशामे—टेलुरियमका प्रयोग कर देखना उचित है। टेलुरियमकी क्रिया कुछ देरसे होती है, इसलिये, कुछ अधिक दिनोंतक व्यवहार करना आवश्यक है।

(एक टोटका दवा—कानके भीतर कद्दूके पत्तेका रस २।१ बूँद गरम कर दिनमें २।३ बार दो-चार दिन डालनेपर अकसर कान पकनेकी बीमारी आराम हो जाती है और तकलीफ घट जाती है।)

मेनिञ्जाइटिस—(मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह)—कानसे पीव गिरना बन्द होकर, कितनी ही बार यह बीमारी हो जाती है। इसमें मर्कुरियस फायदा करता है (स्ट्रैमोनियम), रोगीकी गर्दन एक ओर खिंची रहती है।

आँखकी बीमारी—आँख किसी तरहसे सर्दी लगकर अगर

इयुफ्रेशियाकी तरह मर्कुरियस भी फायदा करता है। आँखकी दोनों पलकोंके भीतरकी ओर लाल हो जाता है और आँखसे लगातार पानी गिरा करता है, आँखमें जलन और करकराहट होती है, रोशनीकी ओर देख नहीं सकता। इयुफ्रेशियामें—आँख-से जो स्राव निकलता है, वह बहुत गाढा रहता है, मर्कुरियस सोल्का स्राव पतला होता है। बत्तीकी रोशनी, प्रदीप इत्यादिकी ओर यदि कोई देख न सके—बेलेडोना, सूर्यकी रोशनीकी ओर देख न सके—एकोनाइट, कण्ठमाला और उपदंश विष-दूषित धातुके मनुष्योंकी आँखकी बीमारीमें—मर्कुरियस सबसे ज्यादा फायदा करता है (इयुफ्रेशिया अध्याय पढ़िये)।

यकृतकी बीमारी—मर्कुरियसकी विष-क्रियासे यकृत-का प्रदाह और पित्त निकलनेकी क्रिया घटती है, इसीलिये आँतों-का प्रदाह अथवा यकृत और पित्तनली (कामन-बाइल-डक्ट्की) का मुख रुककर पित्तकोषसे ठीक ठीक मात्रामें पित्त न निकलकर पित्तके विकारकी वजहसे जो सब बीमारियाँ होती हैं और यकृत-का प्रदाह, यकृत कडा और बडा होना, यकृतमें दर्द, रोगी दाहिनी करवट दबाकर सो नहीं सकता, रातमें तकलीफोंका बढना, शोथ, कामला प्रभृति जो सब उपसर्ग प्रकट होते हैं—उनमें मर्कुरियस सोलसे कितनी ही बार बहुत फायदा होता है।

पेरिटोनाइटिस (अन्त्रावरणका प्रदाह) और

(उपाङ्ग-प्रदाह) बीमारीमें भी यह फायदा करता है।

स्तनका दूध—ऋतुके समय स्तन और स्तन-वृन्त फूलते है, ऋतु न होकर उसके बदले स्तनमें वेहद दूध पैदा हो जाता है (स्तनमें वहुत ज्यादा दूध होनेपर—लैक-कैना-इनम, स्तनका दूध एकाएक वन्द होनेपर—लैक-डिफ्लोर)।

अतिसार—पेटकी वीमारीमें मर्कुरियसमें नाना प्रकारके रङ्गके दस्त आते हैं—हरे, काले, पीले, मटमैले, राखके रङ्गकी तरह, पित्त-मिले, फेन भरे, कुचले अण्डेकी तरह, सॅवारकी तरह, आम-मिले, आमके साथ खून मिला, पीवकी तरह, अलकतरेकी तरह काले इत्यादि नाना प्रकारके आमयुक्त पित्तमय दस्त भी अतिसारमें दिखाई देते है। मर्कुरियस—आमाशय की वीमारीमें अधिक व्यवहृत होता है। मर्कुरियसमें जब आम मिले दस्त आते हैं, उस समय मात्रामें वहुत थोडे और जल्दी जल्दी आते हैं और जव पीले रङ्गके दस्त आते है, तव परिमाणमें अधिक और वडे जोरसे निकलते हैं, मलद्वारमें गरमी मालूम होती है। मर्कुरियसमें—पाखानाके पहले पेटमें भयानक मरोडका दर्द रहता है, एकाएक पाखाना लग आता है और इस तरहका वेग वहुत जल्दी जल्दी लगता है। इसके साथ मिचली, जाडा, कपकपी इत्यादि लक्षण भी दिखाई देते है। पाखानाके समय—पेटमें भयानक दर्द, कुथन और शूलका दर्द रहता है, मल-द्वारमें जलन होती है, दर्दसे रोगी रो पडता है, यह कुथन और शूलका दर्द दस्त हो जानेपर भी वन्द नहीं होता वल्कि और भी

तकलीफ बढ जाती है और लगातार पाखाना लगा करता है। पेटका दर्द कभी कभी कमरतक चला जाता है। मलनाली बाहर निकल पडती है और हिचकी आती है। मर्क्युरियसमें—रातके—समय, पानी बरसनेपर और ठण्डी हवामें बीमारी बढती है और चुपचाप सोये रहनेपर पेटका दर्द कुछ घटा रहता है। जरा चलने-फिरनेपर ही पाखाना लगता है। शिशु अतिसारमें—मर्क्युरियस डलसिस ज्यादा फायदा करता है। इससे प्राय आधे रोगी आरोग्य हो जाते हैं।

आमाशय—ऊपर लिखे दस्तके लक्षणोंके साथ अगर पाखानाके साथ सफेद आमका भाग अधिक रहे, मर्क्युरियस सोल या वाइवस और रक्तका भाग अधिक दिखाई देनेपर—मर्क्युरियस कोर ज्यादा फायदा करता है। पुराने आमाशय रोगमें अधिक परिमाणमें थक्का थक्का आम निकलनेपर—चेलसम—पेरूवियेनम और रक्त निकलनेपर—ट्राम्बिडियमसे अधिक फायदा होता है।

नक्सवोमिका—बार बार दस्त लगता है। इसलिये, रोगीको दौड दौड कर पाखाना जाना पडता है। इसमें प्रत्येक बार ही दस्त नहीं होता, केवल निष्फल वेग। पाखानेके पहले और समयपर मर्क्युरियसकी तरह कुथन और शूलका दर्द बहुत अधिक रहता है, परन्तु पाखाना होनेके बाद थोडी देरके लिये रोगीको थोडा आराम मिलता है। उस समय सब तकलीफें बन्द रहती हैं। कोलचिकममें—मर्क्युरियसकी तरह पाखानेके समय और बाद बहुत

कुथन और शूलका दर्द बहुत ज्यादा रहता है पर पाखाना होनेके कुछ देर बाद ही वह घट जाता है। कोलचिकमके रोगीका पेट बहुत अधिक फूला करता है। इसके अलावा—खाई हुई चीज और तरकारीकी गन्धसे वमन या मिचली पैदा हो जाती है और चलने फिरनेपर मिचली इसका चरित्रगत लक्षण भी वर्तमान रहता है। मर्कुरियसमें वैसा नहीं रहता। कोलचिकममें—दस्त पानीकी तरह पतला, कभी कभी एकदम नलके पानीकी तरह बिना किसी रंगका दस्त होता है। ताजा रक्त, आमके साथ रक्त, परिमाणमें अधिक और जल्दी जल्दी पाखाना लगता रहता है—यह कोलचिकमका निर्दिष्ट लक्षण है।

एलो—यह नये और पुराने दोनों तरहके आमाशयोंमें ही फायदा करता है। एलोमें—रक्त, आम, कुथन, शूलका दर्द, मर्कुरियसके सभी लक्षण रहनेपर भी आमका भाग उसमें सबसे अधिक रहता है, दस्त भी अकसर अनजानमें हुआ करते हैं। (एलो—३० शक्ति व्यवहार करें)।

केलि-नाइट्र—लसदार आमके साथ रक्त, लगातार पाखाने का वेग, अमाशयकी बीमारीमें—बहुत कमजोरी, इसके साथ ही क्षीण और तीव्र नाडी और हाथ-पैर ठण्डे रहनेपर इसका प्रयोग होता है।

कोलोसिन्थ—इसका प्रधान लक्षण है—पेटमें पेठन, मरोडका दर्द, बहुत ज्यादा कुथन, वेग इत्यादि आमाशयके सभी लक्षण इसमें हैं। और आँतोंकी उत्तेजना की वजहसे यह लक्षण अधिक होते हैं

इस लिये अगर किसी तरह यह उत्तेजना दवा दी जाये तो आमाशयकी बीमारी घट जायगी और दस्तकी गिनती भी कम हो जायगी। इस हिसावसे—कोलोसिन्थ आमाशयकी एक प्रधान दवा है, कितने ही आमाशयका नाम सुनते ही पहले मर्कुरियस सोलका प्रयोग कर बैठते हैं। इससे बहुत जगह तो फायदा ही नहीं होता। मेरी रायमे ऐसे स्थानोंपर यदि पहली अवस्थामें एकोनाइट—१x शक्ति या कोलोसिन्थ—निम्न शक्ति १x, २x, ३x, व्यवहार करे तो सम्भवत: उससे अधिक फायदा होगा। आमाशयका रोगी—सूखी इसबगोल—१ भरी, मिश्रीका चूर १ भरी, एक साथ मिलाकर पानीमें घोलकर खाये और भूना हुआ बेल, आरारोट, बार्ली वगैरह पथ्य हलका लेकर रहें तो ज्यादा फायदा होगा। पेटमें कोलोसिन्थ लिनामेण्ट मालिशकर कपडेसे बाँध देना चाहिये।

चैपारो एमारगोसा—एक तरहके गाछकी छालसे इसका मूल अर्क तैयार होता है। डाक्टर बोरिकने लिखा है—पुराना अतिसार, यकृतके ऊपर दर्द, मलके समय दर्द, पर आम बहुत मिली रहना, रक्तामाशय। इसकी क्रिया बलवर्द्धक और दस्तको घटानेवाली होती है। रोगी बहुत दिनोंसे पुराना अतिसार या रक्त आमाशय भोग रहा है, आमाशयमें आमका भाग अधिक रहता है पर पेटमें दर्द थोडा, यकृतमें दर्द, इस तरहका कोई रोगी मिले और अगर किसी दूसरी दवासे फायदा न हो तो इस दवाकी एक बार परीक्षा करें, मात्रा—५ से १० बूँद दिनमें ३।४ बार सेवन करना चाहिये, ३x शक्ति भी फायदा करती है। (इनोथेरा देखिये)।

फोड़ा—इस बीमारीमे मर्कुरियस, हिपर और साइलिसिया इत्यादि दवाओकी हमेशा जरूरत पडा करती है, फोडेकी पहली अवस्थामे—वेलेडोना, पीव पैदा होनेपर—मर्कुरियस, मर्कुरियस—निम्न शक्ति ३x, ६x विचूर्णके प्रयोगसे अकसर फोडा पक जाता है, पर उच्च शक्ति—३०, २०० वीं इत्यादिका प्रयोग करनेपर, कितनी ही वार फोडा पके विना ही वैठ जाता है। मर्कुरियसमे—फोडेमे अधिक दर्द नहीं रहता।

शरीरकी त्वचापर पारेका घाव निकलना—

इस रोगके साथ एकजिमा, अकौता इत्यादि मिला रहे या न रहे, पर जहाँ असली रोगके चुनावमे सन्देह हो जाता है, वहाँ—मर्कुरियस सल्फ (Mercurius sulph) ३० वीं शक्ति, एक मात्राका प्रयोगकर, १०।१५ दिनोंतक राह देखनेपर, विशेष फायदा दिखाई देगा। १ मात्रासे फायदा न होनेपर, दूसरी मात्राका प्रयोग करना होगा। एकदम आरोग्यके लिये, इसके वाद प्राय अन्तमे २।१ मात्रा—हिपरकी जरूरत हुआ करती है (मर्कुरियस सल्फ परिच्छेद देखिये।)

मर्क—आयोड काम-काली (Merc Iod cum kali)—गात्रचर्म्मपर पाराके असली उद्भेद निकलना, वह चकत्ता हो या फुन्सीके रूपमे हों, थोडा हो या अधिक हो, इससे अवश्य फायदा होगा। (साधारण पुस्तकोंमे इस दवाका उल्लेख नहीं पाया जाता है, क्रम—६—३० शक्ति)।

मर्कुरियस-ब्रोमेटस (Mercurius Bromatus)—गौण उपदंशकी वजहसे अगर चर्मपर उद्भेद निकले तो इससे फायदा होगा। क्रम—३० शक्ति।

द्रष्टव्य:—सिफिलिस अर्थात गर्मी रोगकी वजहसे खून खराब हो जाना। किसी तरहके चर्म-रोगमें और रक्त विकारके कारण अन्यान्य सभी बीमारियोंमें, जब किसी भी दवासे फायदा न हो तो दो एक महीने धीरजके साथ पचिनेसिया—ϕ या १x शक्ति, रोज २।१ मात्रा व्यवहार करायें। देखेंगे कि या तो इससे रोगी आरोग्य ही हो जायगा या रोगके उपसर्ग बहुत घट जायगे। इसकी मैंने बहुत बार परीक्षा की है (उपदंशसे उत्पन्न बच्चोंके चर्मरोगके लिये—थूजा अध्याय देखिये), रोगीको मछली, मास खानेको न दें। अरवा चावलका भात, घी, दूध, फल-मूल,साग-सब्जी इत्यादि सात्विक भावका आहार करनेका उपदेश दें (कमसे कम ३ बरस)।

वाघी—इसका इलाज भी प्राय फोडेके इलाजकी तरह ही होता है, दूसरी दूसरी ग्रन्थियो (gland) के प्रदाहमें भी, उसी नियमसे इलाज करना पडेगा।

उपदंश या गर्मीकी बीमारी—जननेन्द्रिय (खास-कर लिङ्गाग्र चर्मपर) का जखम, इस बामारीका प्रधान लक्षण है। इस तरहके जखमोंको अगरेजीमें—सैंकर(Chancer) कहते हैं। सैंकर लक्षणभेदसे दो तरहके होते हैं—विषाक्त स्त्री-पुरुषके संसर्ग-

से २।३ दिनोमे ही जखम होकर उसमें पीव और वाघीमें पीव होनेपर, उसको कोमल क्षत—उपदंश कहते है (साफ्ट-सैंकर) और दूपित सगमके १४।१५ दिन वादसे १॥ महीनेके भीतर जखम होनेपर और वह जखम न पककर उससे केवल रस निकलता रहनेपर, और वाघीमें भी सहजमे पीव न होनेपर, जखममे बहुत तकलीफ होनेपर, उसको—कठिन क्षत उपदंश कहते (हार्ड-सैंकर) है। इसमें जखमका चारो ओरका किनारा और निचला भाग खूब कडा रहता है, हाथसे दवानेपर स्पष्ट मालूम होता है। कठिन क्षतसे—शरीरका समूचा रक्त दूपित हो जाता है। कठिन क्षत उपदंश रोगवाले मनुष्यके साथ सगम, दूपित जखमसे रस लग जाना, रोगीका कपडा, गमछा, जूठी चीजें, हुक्का, छुरा इत्यादि व्यवहार प्रभृति कारणोंसे यह विप स्वस्थ शरीरमे चला जाता है, पिता माताके दोपसे सन्तानको भी यह बीमारी हो जाया करती हैं। कोमल क्षतमे—शरीरका समूचा रक्त दूपित नहीं होता, इसमें प्राय पुट्ठेकी गाँठ फूलती है अर्थात बाघी पैदा हो जाती है। कोमल-क्षत उपदशमे जवतक जखम और वाघी वनी रहती है, तवतक उसको प्राथमिक अवस्था या प्राइमरी स्टेज (primary stage) माना जाता है। प्राइमरी सैंकरमे—जखम यदि छिछला हो, और जखमके भीतर सफेद सफेद चर्वीकी तरह पदार्थ जमा रहे—मर्कुरियस-सोल ३x फायदा करता है, इसके साथ ही अगर गलेमें जखम हो, तो भी—मर्कुरियस-सोल 'फायदा करता है, कोमल-क्षतमें अर्थात् साफ्ट-सैंकरमें कोई बाहरी

लगानेकी दवा, मरहम, प्रलेप इत्यादि (भीतरी दवा सेवन करनेके समय) लगाया जा सकता है। पर कठिन क्षत या हार्ड शैंकरमें—इस तरहकी किसी भी लगानेकी दवाकी जरूरत नहीं पडती, केवल मर्कुरियस-आयोड या बिन-आयोड कुछ दिनोंतक-सेवन करनेसे प्राय कितनी ही बार बीमारी आराम हो जाया करती है। अगर जखम बहुत प्रबल होकर लिङ्गका आधा या चौथाई भाग ध्वस हो जाये—तो मर्कुरियस-कोर फायदा करेगा। सिफिलिस-की पहली अवस्था बीत जानेके प्राय' तीन चार महीने बाद, रोग-की दूसरी और उसके प्राय' २ महीने बाद बीमारीकी तीसरी अवस्था मानी जाती है। द्वितीयावस्था (दूसरी अवस्था) में—बोखार, कमजोरी, गलेमें जखम, चर्म्मरोग, चक्षुतारा-प्रदाह, हड्डियोंमें दर्द इत्यादि लक्षण सब प्रकट होते हैं, इस समय शरीरका समूचा खून दूषित हो जाता है। इस अवस्थामें मर्कुरियस-सोल-की अपेक्षा—मर्कुरियस-आयोड ज्यादा फायदेमन्द मालूम होता है। तीसरी अवस्थामें—केलि-आयोडाइड, मूल औषध—की मात्रा-में, ५ ग्रेनसे ३० वीं शक्तितक फायदा करती है, कानडियुरैङ्गो (Condurango)—ϕ—१x—३ शक्ति उपदंशसे पैदा हुए नाना प्रकारके उपसर्गोंमें और कैन्सर रोगमें फायदा करता है। गर्मीकी बीमारीमें कमसे कम २ बरसतक दवाका व्यवहार करना चाहिये। सिफिलिनम, हिपर, एसिड-नाइट्रिक, आरम-मेट, नैट्रम-म्यूर, नैट्रम-सल्फ, लैकेसिस, आर्सेनिक, गुयेकम, स्टिलिंजिया, कैलि-बाइक्रोम इत्यादि भी इस बीमारीकी अच्छी दवाएँ हैं।

मसाना या मूलग्रन्थिका प्रदाह—पीठ और कमरके ऊपर दोनो बगलमे अर्थात् जहाँ ममाना है, वहाँ तेज दर्द (कभी कभी दर्द—मूत्राशय, अण्डकोष और उरुतक चला जाता है), हिलने डोलने, चित्त होकर सोनेपर कमरमे भयानक यत्रणा, वार वार पेशाव करनेकी इच्छा, पेशाव थोडा होना या पेशाव वन्द, पेशावके समय कुथन, वेग, पेशावमें, खून, पीव, श्लेष्मा निकलना, वमन, कपकपी होकर बोखार प्रभृति कितने ही इस वीमारीके विशेप लक्षण है और इसमें मर्कुरियस वाइवस या मर्कुरियस-कोर दोनों ही फायदा करते है। मर्कुरियसकी जीभ मोटी, फूली और थुलथुली दिखाई देती है, मुँहसे लार गिरती है, बीमारीके उपसर्ग सव रातमे वढते है। पेशावके साथ या पेशावके वाद सूत-की तरह पदार्थ निकलना (साइलिसिया), पेशाव करनेके समय जलन।

हड्डीकी बीमारी—पाराका विष फैल जानेपर शरीरके क्षय हुए तन्तु (उपादान) को फिरसे तैयार कर लेनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है। इसलिये, अगर शरीरका कोई स्थान कट जाता है, तो वह जल्दी आरोग्य नहीं होता, हड्डी टूट जानेपर उसमें जोड नहीं लगता। पारा (मर्करी) द्वारा पहले परियोस्टियम (अस्थि-आवरक पर्दा) मे प्रदाह पैदा होता है। इसके बाद वह अस्थिपर आक्रमण कर उसे ध्वस करता हैं। शरीरकी चिपटी हड्डी (flat bones) की अपेक्षा लम्बे हाड (long bones) पर इसमें रोगका हमला ज्यादा होता है—सिफिलिसके ठीक विपरीत,

सिफिलिसमें माथेकी खोल, जघास्थि, कण्ठास्थि, वक्ष-मध्योस्थि, प्रभृतिपर रोगका आक्रमण होता है। पारदसे उपतारा पर कभी बीमारी नहीं होती।

पुं०-जननेन्द्रियकी बीमारी—"बच्चा लिङ्ग पकड़-पकड़कर खींचता है"—अगर बच्चेकी किसी भी बीमारीमे यह लक्षण रहे—मर्कुरियसका प्रयोग करें।

ज्वर—पसीनेवाली अवस्थामे या ज्वरके साथ पसीना रहता है, पर उससे बोखार बिलकुल नहीं घटता, बल्कि बीमारी और भी ज्यादा बढ जाती है—यह मर्कुरियसका एक प्रधान लक्षण है। वेलेडोनामे—बोखारमे पसीना होता है, और उसमे शरीर की जो जगह ढँकी रहती है, वहाँ अधिक पसीना होता है (वेलेडोना अध्याय देखिये)। ज्वरके साथ पसीना रहनेपर, पहले वेलेडोनाकी व्यवस्था करें, उससे फायदा न हो तो मर्कुरियसका प्रयोग करना उचित है। मर्कुरियसमे—नाकसे पानीकी तरह पतली सर्दी निकलना, ज्वरके साथ सिहरावनका भाव, सन्ध्याके बादसे ही यह सिहरावनका भाव बढना, पर्यायक्रमसे शीत और ताप, रातमें स्पष्ट ज्वर होना इत्यादि लक्षण रहते हैं। शरीरके किसी स्थानकी ग्रन्थि प्रदाहित होकर खासकर गाल, गला इत्यादिकी गाँठे फूलकर उसके साथ ही बोखार आनेपर और उस ज्वरके साथ ही ऊपर बताया पसीनेका लक्षण रहनेपर—मर्कुरियस ज्यादा फायदा करता है। फोडा होकर बोखार और उसके साथ ही—पर्यायक्रमसे शीत और उत्तापका लक्षण रहनेपर,

समझना चाहिये कि फोडेमें पीव होना आरम्भ हो गया है। ऐसे स्थानपर—मर्कुरियस २०० शक्ति या और भी उच्च शक्तिकी एक मात्रा प्रयोगकर जरा धीरजसे दो एक दिन ठहर जानेपर देखेंगे, कि बहुत ज्यादा पसीना होकर ज्वर छूट गया है और इसके साथ पीव भी सोखकर फोडा आराम हो गया है। मर्कुरियसमें—ज्वरमें पसीना होकर या पसीनेवाली अवस्थामें रोग लक्षण बढनेका निर्देश रहनेपर भी फोडा या स्फोटकमें पसीना होकर रोग घट जाता है। यही इसका एक विशेष लक्षण है। बडे फोडेका पीव दूर करनेके लिये—कैल्केरिया-हाइपोफास बढिया दवा है। बहुतसे बडे-बडे फोडे—(पाइमिया-एबसेस)—एचिनेशिया।

द्रष्टव्य :—जिस ज्वरमें पसीना होता है, उसमें प्राय बेलेडोना और मर्क-सोल फायदा करता है, यदि फ़ायदा न हो तो इसके बाद—हिपरका प्रयोग करना चाहिये।

आन्त्रिक ज्वरमें (टायफायड)—अगर कामला और मुँहमें जखमका लक्षण न रहे, तो मर्कुरियसका व्यवहार मना है। सर्दी लगकर अगर बोखार आ जाये तो भी इससे फायदा होता है।

इसके अलावा और भी कई बीमारियोंमें, जैसे—डिम्बकोषका प्रदाह या योनिमें फोडा या जखम होकर उसमें पीव होना, एकशिरा, अण्डकोषका फूलना, अण्डकोषका कुछ न कुछ कडा हो जाना, उसमें धीरे धीरे पीव पैदा हो जानेकी तैयारी, श्वेत-

प्रदर—उसमें हरे रंगका स्राव निकलना, क्रानिक-लैरिञ्जाइटिस, ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, (साधारणतः दाहिनी ओर होता है और उसके साथ ही यकृतका दोष भी लगा रहता है, दाहिनी ओर सोनेपर खाँसीका बढ़ना, बायीं ओर सोनेपर खाँसीका घटना), क्रानिक प्लुरिसि,—इसमें छातीमें बहुत अधिक डक मारनेकी तरह दर्द, थाइसिस—इसके साथ ही रातमें पसीना, हड्डीका घात—उसमें स्पर्श-सहन न होने-योग्य दर्द—तकलीफ प्रभृति बहुत-सी बीमारियोंके उपसर्ग और तकलीफें रातमें बढ़नेपर और बीमारीके अन्य उपसर्गोंके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पसीना और उससे किसी भी रोग-लक्षणका न घटना—ये लक्षण रहनेपर—एक बार मर्कुरियस-सोल या वाइवसकी परीक्षा कर देखे ।

<u>मर्कुरियस सल्फरिकस</u> (Mercurius sulphuricus)—यह एक तरहके चर्मरोग, अतिसार और पेशाबकी बीमारीमें काममें आता है। चर्म-रोगके लक्षण "शरीरकी त्वचापर पाराके उद्भेद निकलना" अग्रमें बता दिये गये है। उदरामय—सवेरेके वक्त पतले दस्त आना, पीले रंगका गरम मल बड़े वेगसे निकलता है, कभी कभी चावलके धोवनकी तरह सफेद पानीके दस्त आते हैं, दस्त परिमाणमें बहुत ज्यादा होते हैं। हैजामें इसी ढंगके दस्त आते हैं। पेशाब—परिमाणमें बहुत थोड़ा, पेशाब होनेके समय आगसे जल जानेकी तरह जलन। इसके अलावा वक्षकी किसी भी बीमारीमें बहुत अधिक श्वासकष्ट, रोगी उठकर बैठा रहता है, तेजीसे श्वास-प्रश्वास चलता है, छातीमें पानी जमना

प्रभृति रोग-लक्षणोंमें भी यह फायदा करता है। अगर प्रमेह और उपदंश विष एक साथ मिलकर कोई बीमारी हो जाये तो इसे प्रयोग कर देवे। पीले रंगका तेज वमन, कुछ खानेपर तुरन्त कै हो जाती है।

मर्क्युरियस पिरेनिस (Mercurius perenis)—गला और मुँहका बहुत सूखना, बहुत औंघाईका भाव और क्लान्ति, इस दवाका विशेष लक्षण है (नक्स-मस्केटा)। अग्रखण्डकी जगहपर ट्यिुमर और वहाँ स्पर्शका सहन न होना, दर्द,—यह लक्षण इसके अन्तर्गत है।

मर्क्युरियस-सोलकी वृद्धि—रातके समय, भींजी, तर, सीड भरी ऋतुमें, शरद् ऋतुमें, दिनमें गरम—रातमें शीत ऐसे समयमें, दाहिनी करवट सोनेपर, पसीना होनेपर, पाखाना होनेके पहले, पेशाबके समय और बाद, रोशनीसे।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे, सगमके बाद, काममें लगे रहनेपर।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, कैल्के, कार्बो, चायना, हिपर, लैके, लाइको, मियुरियेटिक और नाइट्रिक-एसिड, रस, सल्फ, थूजा।

क्रिया-नाशक (antidote)—बेल, ब्रायो, कार्बो, कैल्के, क्यूप्रम, कोनि, क्रिमे, डल्का, हिप, आयोड, कैलि-आयोड, कैलि-बाइक्रोम, मेजेरि, एसिड-नाइट्र, नक्स-मस्क, ओपि, पोडो, फाइटो, स्टैफि, सिपि, स्पाइजे, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—६० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। अमाशयमें—३x शक्ति अधिक फायदा करती है। फारमुला—७।

मर्कुरियस डलसिस।

(MERCURIUS DULCIS)

कलोमेलका (क्लोराइड आफ मर्करी, एक तरहके पारदका) लैटिन नाम है—मर्कुरियस डलसिस, हैजा रोगकी पहली और दूसरी अवस्थामें—इस दवाका सेवन करनेपर, पित्तके निकलनेकी क्रियामें मदद पहुँचती है और यह बहुत जल्द रोगीको आरोग्य-पथकी ओर ले आता है। और भी हिमांग अवस्था अर्थात् शीत आ जानेपर, जब हृत्पिण्ड और शिराओंमें खून जमकर रक्त-सञ्चालनकी क्रियाको बन्द कर देता है, कलाईमें नाडी नहीं मिलती, रोगी बहुत हाँफा करता है, श्वास लेने और छोडनेमें बहुत तकलीफ होती है, मृत्युकाल बहुत पास आ जाता है, उस समय लक्षणोंपर ध्यान देकर अगर समयपर इसका प्रयोग किया जाता है तो बहुत-से सकटमें पडे रोगीको फिरसे जीवन प्राप्त हो जाता है।

हैजा रोगमें—कैलोमेलका प्रयोग करनेके लिये नीचे लिखे लक्षण स्मरण रखें—

मुर्देकी तरह वदरंग चेहरा, तेज प्यास, वहुत ज्यादा परिमाणमें दस्त, कै, पेटमें पेठनका दर्द, पेट भरा, नाभीकी जगहपर और छातीमें जलन, पहले वहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह दस्त, ७।८ घण्टेमें ही दस्तकी मात्रा घटकर खून मिली आम, इसके साथ ही कृथन या हरे रंगके दस्त इत्यादि, पेशाव पहले वहुत ज्यादा होता है, इसके वाद धीरे धीरे घटता जाता है, इन सव लक्षणोंमें मर्क्युरियस डल्सिस—३x चूर्ण एक या दो ग्रेन मात्रामें प्रति वार व्यवहार करना चाहिये। स्वर्गीय डा० जी० मानुक एम० वी० सी० एम० हैजाकी पहली अवस्थामें—चावलके धोवनकी तरह वहुत ज्यादा परिमाणमें दस्त कै होते रहनेपर, दूसरी कोई दवा देनेके पहले—कैलोमेल ३x चूर्णसे लेकर ६ ठी शक्ति ५।७ वार प्रयोग करनेका उपदेश देते हैं। उनके मतमें इससे पित्त निकलनेकी क्रिया वढकर मल पित्त मिला होकर दूसरे दूसरे उपसर्ग भी घट जाते हैं। अगर ५।७ मात्रा कैलोमेलका प्रयोग कर कर देनेपर भी कोई लाभ न हो, तव लक्षणके अनुसार दूसरी दवाओंका प्रयोग करना होगा। कलकत्तेके प्रधान चिकित्सक डा० वो० न्यूनन एम० वी०, सि० एम०, महोदय भी इसी मतके पक्षपाती थे।

<u>क्रोटेलस</u>—खून-मिले दस्तवाला हैजा (Haemorrhagic variety) में इसकी जरूरत पडती है। जहाँ हैजाकी पहली अवस्थासे ही मलके साथ खून निकलकर या वीच वीचमें खूनके दस्त दिखाई दे, मसूढा, मुँह और नाकसे खूनका स्राव होता हो, वहाँ

इस दवासे फायदा होता है। एकाएक शीत आ जाना, शरीर नीला पड जाना, ऐंठन, दस्त कै, श्वास-प्रश्वासमें तकलीफ, बहुत ही क्षीण नाडी, पेशाब बन्द, ज्वर, अभी मृत्यु हो जानेकी तरह अवस्था इत्यादिमें क्रोटेलस फायदा करता है। इसका अध्याय देखिये।

अतिसार—मलका रंग घासकी तरह हरा, मलद्वारकी खाल उधड जाती है। केलोमेलमें—मर्कुरियस-सोलकी तरह रोगीकी किसी न किसी जगहकी गांठ फूली रहती है। मुँहमें जखम, मुँहसे बदबूदार लार निकलना प्रभृति कितने ही लक्षण रह सकते हैं। पर दस्तके साथ मर्कुरियसका वेग या कूथन अथवा शूलका दर्द बिलकुल ही नहीं रहता। रहता भी है तो बहुत थोडा, ये ही मर्कुरियस-सोलके साथ मर्कुरियस-डलसिसका प्रभेद और निर्वाचन करनेका सहज उपाय है। बच्चोंके अतिसारमें—मलका रंग हरा, मलद्वारकी खाल उधड जाना, थोड़ी-सी कूथन रहनेपर पहले मर्कुरियस डलसिसको स्मरण करें।

कब्ज—इसका १x विचूर्ण शक्ति २।३ ग्रेन मात्रामें, पानी-के साथ, प्रति घण्टा कई मात्राएँ सेवन करनेपर जुलाबकी क्रिया होती है (एसिड गैलिक अध्याय पढ़िये)।

कानकी बीमारी—बहुत दिनोंतक पीब निकलनेकी वजहसे बहरापनमें केलोमेल या मर्कुरियस-डलसिस फायदा करता है।

मुंहकी बीमारी—मुँहमे बहुत बदबू, बदबूदार लार बहना, मसूढा और गलेमें घाव ।

क्रिया-नाशक (antidote)—हिपर ।

क्रम—३x—६x शक्ति । फारमुला—७ ।

मेजेरियम ।

(MEZERIUM)

(उत्तर और सेण्ट्रल युरोपके एक तरहके झूपी गाछकी छालसे टिंचर तैयार होता है)—यह साधारणत: गर्मीकी बीमारीमें, पारा सेवन करनेके बाद कितने ही उपसर्ग और बीमारीमे, तथा कण्ठमाला धातुकी बीमारीमें, अस्थि और अस्थि आवरणके पर्देकी कई बीमारियोंमें और स्नायुशूल, दाँतकी बीमारी, चर्मरोग, उसमें बहुत खुजली, पाकस्थलीका जखम, प्रमेह, ग्लीट, प्रभृतिमे व्यवहृत होता है ।

<u>चरित्रगत लक्षण</u>—

१ । गो-बीजका टीका लगवानेके बाद शरीरमे एकजिमा या किसी दूसरी तरहका उद्भेद निकलना , उसमें खुजली , २ । एकजिमा , बेतरह खुजली, छूने और बिछावनकी गरमीसे खुजलीका बढ़ना , ३ । दाँतकी बीमारीमें (in carious teeth) दाँतकी जड़

क्षय हो जाती है। माथा ठीक रहता है (जड ठीक रहकर ऊपरी अश क्षय हो जानेपर—मर्कुरियस), ४। माथेमें पकजिमा। चकत्तेकी तरह बहुत मोटी पपटी जमती है, उसके भीतर सफेद रगका गाढा पीव माथेके केशमें सट जाता है, ५। जखमके चारों ओर छालेकी तरह उद्भेद् निकलते हैं, बहुत खुजलाते हैं और उनमें जलन होती है, ६। ओंठ फूटे और जलन, जीभ, गला और अन्ननलीमे जलन, ७। लम्बी हड्डीका प्रदाह और सूजन, ८। पारा और उपदशसे उत्पन्न हड्डीकी बीमारी या लम्बी हड्डीके गात्रावरणमें दर्द—रातमें, बिछावनकी गरमीसे, सामान्य छू देनेसे ही और बरसातकी ऋतुमें बढना, बच्चा मुँह खजलाता खुजलाता नोच डालता है और खून निकाल डालता है, १०। किसी चर्मरोगका उद्भेद् निकलना बन्द होकर पुरानी कानकी बीमारी, अतिसार।

अस्थिकी बीमारी—गर्मी रोगकी वजहसे या किसी दूसरे कारणसे माथेकी खोल और माथेके पिछले भागमे या किसी दूसरे स्थानपरके अस्थि-गात्रावरणमें (शरीरके सभी स्थानोंकी हड्डीपर सफेद रगका एक पतला परदा रहता है। इस पर्देसे हड्डी ढकी रहती है—उसी पर्देका) भयानक अत्यन्त दर्द और तकलीफ-में—मेजेरियम फायदा करता है। इसका दर्द रातमें और गरमीमे बहुत बढ जाता है। माथेका दर्द—कभी कभी माथेसे आँखके निचले भागमें, दाँतमें, जबडेमें यहांतक कि कन्धेतक उतर आता है। इसका दर्द असह्य होनेपर भी रोगी ग्लोनोयिन या बेलेडोना

कीतरह उत्तेजित नहीं होता, कैमोमिलाकी तरह क्रोधित या उद्धत भी नहीं होता, मैग्नेशिया फास या मैग्नेशिया कार्वकी तरह विछावनसे उठकर घरमें टहलने नहीं लगता, पल्सेटिलाकी तरह रोता नहीं है। इग्नेशियाकी तरह चिकित्सकपर चिकित्साका दोषारोपण नहीं करता, केवल चुपचाप पडा रहता है, कोई कुछ पूछता है, तो "हाँ" या "ना" इतना ही उत्तर देता है। आँखके ऊपर भौंकी हड्डी और आँखके नीचेकी हड्डी, टिविया प्रभृति लम्बी अस्थियोंके अस्थिगात्रावरणमें, दाहिने कन्धेमें, दाहिनी बगलमें, उरु और पैरकी हड्डीमें और पैरके तलवोंकी हड्डीके तेज दर्दमें—मेजेरियम फायदा करता है। इसमें चलते चलते एकाएक दाहिने कूल्हेके नीचे मुड जानेकी तरह दर्द होता है। अगुलीकी नोकमें पक्षाघात होता है, इसीलिये कोई चीज मुट्ठीमें नहीं पकड सकता।

स्नायु-शूल—(न्युरेलजिया)—आँखकी दोनो पलकें और चक्षुगह्वरकी हड्डीका स्नायुशूल—मेजिरियम फ़ायदा करता है। यदि पारा सेवन कर किसीको यह बीमारी हो तो इससे ज्यादा फायदा होता है। डा० फैरिङ्गटन कहते हैं—पारदका विष जब स्नायुओंपर आक्रमण करता है, तब स्नायुशूलका दर्द आरम्भ होता है, उस समय मेजेरियम प्रतिविषका काम करता है। दाँत या मुँहमें स्नायुशूल, मुँहमें हमेशा लार इकट्ठा होती है।

जखम—गर्मीकी बीमारीमें गलकोष, स्वरयन्त्र और अन्ननलीमें जखम हो जानेपर, जखममें बहुत दर्द और जलन रहनेपर और

यदि वह जलन मुँहसे ठण्डी हवा खींचनेपर कुछ घटती है—मेजेरियमसे फायदा होगा। नाकके सडे जखममे (Ozœna) जलन और स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द होनेपर और नाक और मुँहकी हड्डीमें दर्दके साथ जलन, ठण्डी हवा मुँहसे खींच लेनेपर वह जलन और तकलीफ कुछ घट जाती है।

पाकस्थलीके जखममें—मेजेरियम फायदा करता है, इसके द्वारा पाकस्थलीकी बहुतसी बीमारियाँ आराम हो जाती हैं, आरोग्य न हो जानेपर भी कमसे कम उपसर्ग तो घट ही जाते हैं। पाकस्थलीमें हमेशा ही एक तरहकी गडबडी और बेचैनी मालूम हुआ करती है, दर्द और जलन कुछ खा लेनेपर कुछ देरके लिये घट जाती है। इसीलिये रोगी वार वार कुछ खाना चाहता है। येही मेजेरियमके प्रयोगके लक्षण है (कभी भी कुछ खानेसे बढना)।

अतिसार—खट्टी गन्ध, अजीर्ण खाद्य या छोटे छोटे सफेद टुकडे मिला पतला मल। कितनी ही वार पेटमें दर्द नहीं रहता है। पाखाना हो जाने बाद सिहरावन मालूम होता है। जिन बच्चोंके माथेमें एकजिमा रहता है, उनके उदरामयमें यह ज्यादा फायदा करता है। पाखानेके पहले और समय मलद्वारमें क्रिमिकी तरह सुरसुरी मालूम होती है।

कब्जियत—प्रसवके बाद और यकृतके दोषके साथ कब्जियत।

ग्लीट—पानीकी तरह प्रमेहका स्राव, परिश्रम करनेपर स्राव बढ जाता है, मूत्रनलीमें जलन और जखमकी तरह दर्द रहता है। (प्रमेहकी अन्तिम अवस्थामें जब स्राव बहुत थोडा रहता है, तब उसको—ग्लीट कहते हैं)।

चर्म-रोग—दाद, उसमे बहुत खुजली और जलन, एकजिमामे मोटी, पीली, सफेद रगकी पपडी जमती है, उसके भीतर गाढा, मोटा, पीले रङ्गका पीव रहता है, माथेमें इसी तरहके उद्भेद ज्यादा निकलते हैं। किसी चर्म-रोगमें बहुत खुजली, रातमें और बिछावनकी गरमीसे खुजलीका बहुत अधिक बढना, खुज-लानेपर बहुत जलन—ये] लक्षण रहनेपर—मेजेरियमसे फायदा होगा।

निद्रा—रातमे सोता है और बिचली रातमें किसी जीवित पदार्थका स्वप्न देखता है या स्वप्नमें कोई छाती और गला दबा रखता है, उससे दम रुक जानेका भाव हो जाता है। जल्दी जल्दी बिछावनसे उठ बैठता है, नींद खुलनेके बाद तकलीफ बढ जाती है। यह अन्तवाला लक्षण—लैकेसिसमे भी है।

सदृश—आर्स, बेल, ब्रायो, कैल-कार्ब, इग्ने, लाइको, मर्क, एसि-नाई, नक्स, पल्स, फाइटो, रस, सल्फ, जिङ्क।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोनाइट, ब्रायोनिया, कैलि-कार्ब, कैलि-आयोड, मर्क्युरियस, नक्स, खट्टी चीजें, जिसमें गोंद या लेईकी तरह पदार्थ रहता है, ऐसी पतली चीजोंका पीना, दूध।

मेजिरियम—मर्क, एसिड-नाइट्रिक और फास्फोरसका प्रतिविष है।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, कास्टि, इग्ने, लाइको, मर्क, नक्स, फास, पल्सेटिला।

वृद्धि (aggravation)—शीतसे, तरीसे, एकाएक वायु-परिवर्त्तनसे, उत्तापसे, गर्म भोजनसे, छूने और सोनेपर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—६० दिन।

क्रम—६—३० और २०० शक्ति। फारमुला—२

मिलिफोलियम।

(MILLEFOLIUM)

(उत्तर अमेरिका और युरोपके एक प्रकारके पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है)—यह रक्तस्राव रोकनेवाली एक श्रेष्ठ दवा है।

रक्तस्राव—फेफडा, पाकाशय, मूत्रद्वार, नाक, जरायु इत्यादि शरीरके किसी भी स्थानसे हो, उनका रग चमकीला लाल होनेपर इससे फायदा होगा। इसके रक्तस्रावमें दर्द का लेश भी नहीं रहता (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

ऋतुस्राव बन्द होनेकी वजहसे बीमारी—अगर किसी वजहसे ऋतुस्राव बन्द होकर पाकस्थलीसे खून

निकले—मिलिफोलियम फायदा करेगा। हैमामेलिसमे भी य
लक्षण है। मासिक ऋतुस्राव वन्द होकर शरीरके कितने ह
स्थानोसे रक्तस्राव हो सकता है। मुँहसे रक्त निकलनेपर-
फास्फोरस और पल्सेटिला फायदा करते है। ये सब दवा
व्यवहार करनेके समय रोगीकी धातुपर पहले ही लक्ष्य रखे
बलगमके साथ खून निकलनेपर—सिनिसियोका प्रयोग कर
चाहिये।

रक्तपित्त और रक्तोत्कास—इस बीमारीमे मुँह
रक्त निकलनेके साथ बोखार, छटपटी, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों
साथ अगर चमकीले लाल रगका खून निकले—पहली अवस्थ
एकोनाइट देना चाहिये, पर यदि ऊपर लिखे एकोनाइटके चरि
गत लक्षण न रहे और केवल बहुत ज्यादा परिमाणमे चमकी
लाल रगका खून निकले तो—मिलिफोलियम फायदा करेगा
कलेजा धडकना और हृत्पिण्डकी तेज धडकनके साथ ख
निकलना—कैक्टस फायदा करता है (एकालिफा अध्यायमें जि
नियम देखिये।)

आभास—साधारणत यह ऋतुके समयके आँतोंके शू
गर्भावस्थामे खूनके दस्त, खूनी ववासीर, वहुव्यापक रक्तमाशय
बीमारी, नाकसे रक्तस्राव, आँखसे नाककी जडतक दर्द अ
अधकपालीके सर-दर्दमें फायदा करता है।

सम्बन्ध (complements)—नाक, मुँह, पाकाशय, मसा

जरायु और फेफड़ेसे रक्तस्राव और दोनो पैरोंका फूलनामें—इरेक्थाइटिसके समान हैं। रक्तस्रावके अधिकारमे यह आर्निका और एकोनाइटके बाद फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—आरम-म्यूर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२—३ दिन।

क्रम—१x—३—शक्ति।   फारमुला—१।

मिचेला रिपेन्स।

(MITCHELLA REPENS)

(पत्तियोंके खाने योग्य मटरकी जातिके एक तरहके छोटे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है)—मूत्रग्रन्थि और स्त्री-जननेन्द्रिय-पर इसकी प्रधान क्रिया है। ऋतु विलम्बसे होना—बाधकका दर्द, बहुत ज्यादा रजःस्राव, स्वल्परज, रजोलोप, जरायु रोगवाली स्त्रियोंकी मूत्रकृच्छ्रता प्रभृति कई बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है।

जरायुकी बीमारी—जरायुमें दर्द, उपदाह (इरिटेशन), जरायुमें रक्तसंचय, जरायुका रंग घोर लाल और फूला, मूत्राशय-ग्रीवामें प्रदाहकी वजहसे बार बार पेशाबका वेग, योनिमें उत्ताप और जलन, जरायुसे रक्तस्राव (uterine hemorrhage),

चमकीले लाल रंगका अधिक परिमाणमें रक्तस्राव प्रभृति इस दवा-के प्रधान लक्षण है। (चौबिस्वा अध्याय देखिये)।

प्रसवका दर्द—प्रसव होनेके ३ महीने पहलेसे ही कभी कभी एक एक बार नकली प्रसवका दर्द या नकली दर्द, (false pain)होता है, मिचेला उसकी उत्कृष्ट दवा है।

सदृश—एपिस, इयुपेट, पर्प्यु रियम, कोलोफाइलम, हेलो-नियस, हाइड्रोकोट, इयुवा—उर्सि, सिपि।

क्रम—ϕ—१x शक्ति। फारमुला—३।

मार्फिनम।

(MORPHINUM)

(यह अफीमका उपक्षार है—an alkaloid of opium)—वेलेडोनाके साथ एट्रोपिनका जो सम्बन्ध है, अफीमके साथ मार्फि-नमका भी ठीक वैसा ही सम्बन्ध है। किसी तरहकी तकलीफ या दर्दसे रोगी जिस समय बहुत छटपटाया करता है तो एलोपैथगण इस मार्फियाका—हाइपोडर्मिक इंजेक्शन दिया करते हैं। इससे १०।१५ मिटोंमें ही रोगी सो जाता है। हमलोग नीचे लिखे लक्षणों-मे इसका व्यवहार किया करते हैं। उससे फायदा भी होता है।

१। जरा सर हिलानेपर ही सरमें चक्कर आ जाता है, माथा भारी और गरम मालूम होता है। २। अन्धेरा दिखाई देना, दुर्ब

भी दिखाई नहीं देता, चारों ओर अन्धकार देखता है, ३। रोना—लगातार रोता है, किसीके साथ कुछ बातचीत, यहाँ-तक कि चिकित्सकको अपनी बीमारीका हाल बतानेमें भी रो देता है, ४। एकाएक मूर्च्छा, ऐसा मालूम होता है कि मृत्यु आ गयी है; ५। पैर इतने अस्थिर रहते हैं, कि ऐसा मालूम होता है, कि कोई दबा रखे तो अच्छा, पैरके भीतर मानो अनगिनती कीड़े रग रहे हैं, ६। हाथ पैर काँपते हैं और उनमें अकड़न होती है, ७। बहुत निद्रालु, भरपूर नींद नहीं आती, आधी नींद और आधा जागरण—इसी अवस्थामें पड़ा-पड़ा सोया सोया चौंक उठता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एवेना, एट्रोपिन, वेल, इपि।

सदृश—एपोमार्फि, ओपि, कैमो, काफि, मस्कस।

क्रम—३x—६x विचूर्ण। फारमुला—७।

मस्कस ।

(MOSCHUS)

(मृगनाभी)—मूर्च्छा, कलेजेमें धड़कन, हिस्टिरिया प्रभृति बीमारियोंमें या उन बामारियोंके साथ पेटमें वायु इकट्ठा होना, पेट-फूलना, कम्पन, हिचकी, ठण्डी हवाका सहन न होना, ठण्डेमें उपसर्गोंका बढ़ना इत्यादि इसके चरित्रगत लक्षण हैं।

सरमें चक्कर—जरा हिलने-डोलनेसे ही—यहाँतक कि पलक बन्द करते ही, सरमें चक्कर आ जाता है, शरीरके बाहर शीत पर भीतर उत्ताप रहता है। स्नायविक हिचकी, अरुचि, पेटमें वायु इकट्ठा होकर पेट-फूलना, स्नायविक हृत्स्पन्दन (Palpitation) इत्यादि लक्षणोंमें यह ज्यादा फायदा करता है।

हृत्स्पन्दन—स्नायविक दुर्बलतासे उत्पन्न कलेजेकी धडकन, मानो उसमें कलेजा काँपा करता है। नाडी कमजोर, साँस छोडनेमें तकलीफ, रोगी मन ही मन सोचता है, कि उसकी मृत्यु निश्चित है। इन सब लक्षणोंमें—मस्कस फायदा करता है।

हिस्टिरिया—(मूर्च्छा-वायु)—इस बीमारीका नाम सुनते ही हमलोगोंको पहले इग्नेशियाकी याद आती है। वास्तव में—इग्नेशिया इसकी एक महौषधि होनेपर भी—मस्कस, नक्स-मस्केटा, एसाफिटिडा, वैलेरियाना, जिङ्क-वैलेरियाना इत्यादि और भी कितनी ही दवाएँ इस बीमारीमें फायदा करती हैं। मस्कसमें—एकाएक वक्षस्थलमें ऐंठनकी तरह या गलनलीमें खिंचनेकी तरह एक प्रकारका दर्द होता है, रोगिनीकी मानो साँस बन्द हो जाना चाहती है या दम रुक जाता है, कलेजा धडकने लगता है और बेहोशीकी तरह हो जाती है।

इग्नेशियाकी तरह मस्कसमें भी रोगीका मिजाज बदलनेवाला दिखाई देता है। रोगिनी एक बार चिल्लाकर रोती है, कुछ देर बाद ही खिलखिलाकर हँसने लगती है। सरमें दर्द, सरमें चक्कर,

ी मिचलना, देखनेकी शक्तिका घट जाना, मस्तिष्कमें रक्तसंचा-
लनके कारण उत्तेजित भाव, विकार-ग्रस्त रोगीकी तरह या नशा-
ख़ोरोंकी तरह नाना प्रकारकी असम्बद्ध बातें बकती है, गालियाँ
देती है और अज्ञान हो पडती है इत्यादि—मस्कसके लक्षण हैं।
हिस्टिरियामें—और भी मस्कसके कितने ही लक्षण हैं, उन्हें याद
रखें। जैसे —हाथ-पैर ठण्डे, चेहरा उतरा हुआ सफेद, रक्तहीन,
कमजोर, शरीरका काँपना, बहुत कलेजा धडकना, सारे शरीरमे
दर्द, पेट फूलना, बहुत ज्यादा पेशाब, बहुत ही तकलीफ देनेवाली
खाँसी, छातीमें मरोड-सा दर्द, दिनमें औंघाई और रातमें नींद न
आना, इसके अलावा रोगिनी बराबर यही कहा करती है, कि
उसकी मृत्यु होगी। ये मानसिक लक्षण हमेशा ही मौजूद रहते
हैं (दूसरी दूसरी दवाओंसे प्रभेद इग्नेशिया अध्यायमें देखिये)।

ग्लोबस-हिस्टिरिया—गलेमें एक गोलेकी तरह पदार्थ
चढता है, गलनलीमें दवा रखनेकी तरह एक तरहका दर्द और
श्वास रुक जानेकी तरह हो जाता है।

अनियमित ऋतुकी वजहसे हिस्टिरिया—ऋतु या तो जल्दी
जल्दी और परिमाणमें अधिक होता है या कम अथवा बन्द ही रहता
है, सगमकी इच्छा बहुत अधिक रहती है, इसी वजहसे हिस्टि-
रिया होनेपर भी—मस्कस फायदा करता है।

(हिस्टिरियाके फिटका एक घराऊ नुस्खा—रीठा गरम पानीमें
फुलाकर इसका फेन निकाल फिटके समय रोगिनीको सुघानेपर

या इसको नस्य देनेपर कितनी ही बार खींचन और बेहोशी बन्द हो जाती है)।

सर-दर्द—स्नायविक और हिस्टिरिया-ग्रस्त स्त्रियोंका सर-दर्द, सर्दीमें और सर्द हवामें अच्छी रहती है, गरमीसे या गरम घरमें रहनेपर तकलीफ बढ़ जाती है।

खाँसी—आक्षेपिक और कष्टकर हॅफनी, खाँसी, विशेषकर हिस्टिरिया-ग्रस्त मनुष्योंको हॅफनी, रोगका एकाएक आक्रमण होता है, हाँफा करती है, मानो साँस रुक जायगी, छातीमें बलगम भरा रहता है, गला घरघराया करता है, फेफड़ेका पक्षाघात होनेका लक्षण पैदा होता है। कलेजेमें बहुत ज्यादा परिमाणमें सर्दी रहती है, परन्तु रोगी उसे निकाल नहीं सकता। हूपिङ्ग-खाँसीमें—खाँसते खाँसते दम अटक जानेकी तरह हो जाता है, गला घरघराया करता है। मस्कसमें—एकाएक स्वरभंग और टेटुआ सकुचित होकर श्वास लेने और छोड़नेमें भी तकलीफ होती है।

बहुमूत्र—साफ पानीकी तरह बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है और इसके साथ ही बहुत प्यास रहती है। बहु-मूत्र रोगमें (Diabetes)—लगातार पेशाब लगता है, भयानक प्यास, रोगी कमजोर हो पड़ता है, रमणेच्छा लोप हो जाती है, पेशाबमें चीनी मिली रहती है, प्रबल कामेच्छा और लिङ्गमें कड़ापन आये बिना ही अनजानमें वीर्य निकल जाता है, पर लिङ्गमें कड़ापन रहनेके साथ लिङ्गमें जलन रहनेपर—मस्कसमे फायदा होगा।

ध्वजभगके साथ बहुमूत्र, असमयमें ही बुढापा, स्त्री-सगमके बाद वमन, मिचली—ये सब मस्कसके लक्षण हैं।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, काफिया।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१ दिन।

क्रम—६x शक्ति। आक्षेप और गुल्म वायुमें—निम्नशक्ति और हिस्टिरियामें—३० शक्ति लाभदायक है।

फारमुला—विचूर्ण—७। टिंचर—८।

म्युरेक्स परपुरिया।

(MUREX PURPUREA)

(भूमध्य सागरके एक तरहके घोंघाकी गर्दनके, रगीन अशसे यह दवा तैयार होती है)। साधारणत स्त्रियोंकी बीमारीके लिये ही हमलोग इसका व्यवहार करते हैं। म्युरेक्सके प्रधान चरित्रगत लक्षण तीन है—१। जरायुके बाहर निकल पडनेका ज्ञान २। जरायुकी दाहिनी ओरका नया दर्द, वह समूचे शरीरमे घूमता फिरता है और बाएँ वक्षमे चला जाता है ,—३। प्रबल कामेच्छा, स्नायु प्रधान और अभिमानिनी स्त्रियोंपर ही इसकी विशेष क्रिया होती है। मानसिक लक्षण—हमेशा ही दु खित, उद्वेगपूर्ण और डरी हुई।

जरायुका बाहर निकलना—(प्रोलैप्सस इयुटराई) जरायुमे दवाव और ऐसा अनुभव होता कि वह बाहर निकल पडेगा। इसके साथ ही जरायुमे दर्द रहता। यह दर्द कलेजेतक चला जाता है। सिपियामे—यह लक्षण बहुत कुछ दिखाई देता है। पर सिपियामे प्रवल कामेच्छा नही रहती, ऋतुस्राव सिपियाकी अपेक्षा म्युरेक्समे परिमाणमे अधिक होता है। डा० डनहम कहते है—म्युरेक्सका ऋतु बहुत देरसे होता है और कुछ दिनोंतक लगातार स्राव होकर एक दिन बन्द हो जाता है, पर १२ घण्टोतक बन्द रहकर फिर होने लगता है। म्युरेक्समे—जरायु बाहर निकल पडनेकी आशका इतनी अधिक रहती है कि, रोगिनी जभी बैठती है, तभी दोनो उरुको एक साथ जोरसे दवाकर बैठती है। इसके अलावा वैठनेपर जरायु-ग्रीवाका स्पन्दन और दर्द भी बढ जाता है (लिलियम अध्याय देखिये)।

कामोत्तेजना—रोगिनीको जरा भी छू देनेसे काम-प्रवृत्ति जाग उठती है, यह कभी इतनी अधिक हो जाती है, कि इससे उसका ज्ञान और बुद्धि लोप हो जाती है (प्लाटिना अध्याय देखिये)।

प्रदर—ऋतु बन्द होनेके बाद, हरे-पीले रगका या खून मिला श्वेतप्रदरका स्राव होता है।

पेशावकी बीमारी—रातमे सोया रहता है, पर एकाएक पेशाव लग आता है, बिछावनसे जल्दी जल्दी उठ

बैठता है, पेशाव परिमाणमें अधिक होता है, पेशावमें बदबू रहती है। रातमें बहुत बार पेशाव होता है।

इसके अलावा—गर्भावस्थामें गांठोंमें दर्द, मस्तिष्की जडताकी वजहसे अकर्मण्य हो जाना, कपालमें बराबर दर्द, सध्याके समय मनकी चचलता, किसीके साथ बात करनेसे अनिच्छा प्रभृति उपसर्गों और लक्षणोंमें भी यह फायदा करता है।

सदृश—सिपिया, लिलियम, क्रियोजोट प्रभृति।

क्रम—३ री शक्ति। फारमुला—८।

माइगेल लासियोडोरा।

(MYGALE LASIODORA)

(Cuban spider, एक तरहका मकडा)—कोरिया (तायडव रोग) और सूजाक या गर्मीकी बीमारीमें—इन दोनोंमें इसका सफलतापूर्वक व्यवहार होता है।

प्रमेह—(Gonorrhœa)—मूत्रनलीमें डक मारनेकी तरह दर्द, जलन, पेशाव करनेके समय जलन, गर्म पेशाव और बहुत ही यन्त्रणादायक लिङ्गका कडापन (कार्डि), बहुत दिनोंतक स्थायी प्रमेह—ये कई उपसर्ग प्रमेह रोगके लक्षण हैं और इनमें—माइगेल फायदा करता है।

ताण्डव-रोग—सब अंग प्रत्यङ्गोंका बराबर फड़कते रहना, हाथ या हाथ और पैर दोनों आपसे आप फड़कते हैं। किसी तरह भी स्थिर नहीं रख सकता। चलनेके समय पैर ठीक जगहपर नहीं पड़ते।

सदृश—ज़िज़िया, टैरेण्टुला, एगरिकस।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—४।

माइरिका सेरिफेरा।

(MYRICA CERIFERA)

(ऐटलाण्टिक महासागरके किनारे ७।८ फुट ऊँचा एक तरह-का गुल्म पैदा होता है। उसके सोरकी छालसे टिंचर तैयार होता है)—होमियोपैथीमें यह दवा सिर्फ दो तीन बीमारियोंमे ही काम-मे लायी जाती है।

१। सब तरहका श्लेष्मा और सर्दीका स्राव (Catarrhal discharge), बहुत दिनोंकी बीमारी। बीमारीने पुराना रूप धारण किया हो।

२। कामला, इसके साथ ही सवेरे सर-दर्द। फैरिङ्गटन—कहते हैं—इसमे यकृतमें विकारकी वजहसे, ठीक-ठीक पित्त न पैदा होकर बीमारी पैदा हो जाती है, पित्त आबद्ध होकर बीमारी नहीं होती, अर्थात् functional रोग organic रोग नहीं।

आँख पीली, जीभपर पीला मैल, हाथ पैरका पेंठना, गदला पेशाब, हमेशा औंघाईका भाव,—ये ही माइरिकाके लक्षण हैं। डिजिटेलिसके लक्षण बहुत कुछ माइरिकाकी ही तरह हैं, पर डिजिटेलिसमें जो कामला होता है, वह Organic अर्थात् यान्त्रिक रोग रहता है।

क्रम—१—३ शक्ति। फारमुला—२।

नैजा ट्रिपुडियेन्स या कोबरा।

(NAJA TRIPUDIANS OR COBRA)

(काले साँपका विष)—यह निदान अवस्थाकी दवा है। शरीरके किसी भी स्थानकी बीमारी क्यों न हो, जब अन्तमें हृत्पिण्डपर आक्रमण हो जाता है, उस समय इसकी अतुलनीय शक्ति दिखाई देती है। बार बार कलेजा धड़कना (Palpitation) या किसी दूसरे प्रकारके हृद्रोगकी वजहसे हृत्पिण्डकी बहुत अधिक कमजोरी हो जानेपर, अथवा हृत्कपाटकी किसी बीमारीमें (Valvular disease) हृत्पिण्ड बढ़ा रहनेपर, (Hypertrophy of the heart) इसका अद्भुत फायदा दिखाई देता है। डिफ्थीरिया रोगमें हृत्पिण्डकी क्रिया लोप और पक्षाघातका उपक्रम हो जानेपर भी इसकी बेजोड़ ताकत दिखाई देती है, लैकेसिसकी तरह बायें डिम्बकोषमें दर्द, श्वासरोगमें—श्वासकष्ट,

सोनेपर बढना और उठ बैठनेपर घटना, आरमकी तरह रोग में आत्महत्या करनेकी इच्छा और स्पाइजेलिया, नैट्रम-म्यूर, जेल सिमियम, ग्लोनोयिन, सैंगुनेरियाकी तरह सवेरेसे सर-दर्द आरम्भ होकर दोपहरमें चरम सीमापर बढकर पहुँच जाना और फि धीरे धीरे सूर्यास्त तक घटना इत्यादि और भी कितने ही लक्षण इस विपज औषध-लक्षणके अन्तर्गत है।

डा० हेरिङ्ग कहते हैं—इसकी प्राथमिक क्रियामें—श्वासपथ स्नायु, न्युमोगैस्ट्रिक नाडी मण्डल और ग्लोसो-फैरिंजियल स्नायु पर रोगका आक्रमण होता है। लेकेसिसकी क्रियाके साथ नैज की क्रियाकी बहुत कुछ समानता दिखाई देती है, दोनो ह दवाओसे नींदके बाद रोग बढते हैं और गलेमें कुछ कसकर बाँ न रख सकनेका लक्षण है।

चरित्रगत लक्षण —

१। हृत्पिण्डका सामान्य प्रकारका बढना, २। हृत्पिण्डकी बीमारीके साथ खाँसी, श्वासकृच्छ्रता, ३। रोगीकी हृत्पिण्डके सम्बन्धमें लगातार चिन्ता; दुःखित और अप्रसन्नकी तरह रहना ४। स्नायविक स्पन्दन, उससे ऐसा मालूम होता है, मानो श्वास बन्द हुई जाती है, बात नहीं कर सकता, ५। हृत्प्रदेशमें दर्द, वह गर्दन, पीठ, कन्धा और बाहु तक चला जाता है, ६। डिप्थीरियामें हृत्पिण्डकी क्रिया लोप हो जानेका उपक्रम, ७। नाडीका वेग (force) समान नहीं रहता, परन्तु गति (rhythm) समान रहती है। ८। हृत्पिण्डकी जगहपर सुई गडनेकी तरह दर्द।

हैजा—इस मारात्मक रोगकी अन्तिम अवस्थामें जब ऊर्द्ध श्वास हो जाया करती है, उस समय नैजा अमृतकी तरह काम करता है। इस अवस्थामें हृत्पिण्ड सहज भावसे चले या खूब जोरसे धडधड आवाजके साथ चले, इस सर्प-विषका प्रयोग करनेसे कभी न चूकें। हृत्पिण्डमें खून इकट्ठा होकर (embolism) और खून अड जानेपर भी यह ज्यादा फायदा करता है। कामला— यह भी प्राय लैकेसिसके समकक्षकी ही दवा है, पर नैजामें मृत्यु भय रहता है, लैकेसिसमें मृत्यु-भय नहीं रहता।

हृत्पिण्डकी बीमारी—गठिया वात आराम हो जाने बाद हृत्पिण्डकी कोई बीमारी (Organic disease), कलेजेमें बहुत अधिक धडकन होती है, चलने फिरनेमें बहुत अधिक तकलीफ होती है, हृत्शूलका दर्द, साँस बन्द हो जाती है, मुँहसे बोलीतक नहीं निकलती। अगर हृत्पिण्डकी कोई यान्त्रिक बीमारी न हो और लगातार स्नायविक कलेजेकी धडकन (persistent nervous palpitation), बनी रहती है, जरा भी परिश्रम करनेपर कलेजा धडकने लगता है, बोलीतक बन्द हो जाती है। बायें डिम्बकोषमें स्नायुशूलका दर्द, इसके साथ ही कलेजा धडकना और हृत्पिण्डमें दर्द, डिप्थीरियाकी बीमारी आराम हो जाने बाद हृत्पिण्डमें पक्षाघात होनेका उपक्रम होना, चेहरा नीला हो जाता है। श्वास-प्रश्वासमें कष्टके कारण घबडाता है, नाडी रुक रुककर चलती है और कमजोर हो जाती है। विद्यालयके छात्र-छात्रियोंकी हृत्पिण्डकी बीमारीमें नैजा फायदा करता है।

दमा—हृत्पिण्डकी बीमारीके साथ दमा, भयानक श्वास-कष्ट, लेट नहीं सकता, श्वास लेनेके लिये सीधा होकर बैठा रहता है। सो नहीं सकता, सोते ही दम बन्द हो जानेकी तरह हो जाता है।

डिप्थिरिया—लैकेसिसके लक्षणकी तरह साघातिक प्रकारकी बीमारी हो जाती है। गला और मुख-गह्वर (fauces) का रग कालिमा लिये लालकी तरह दिखाई देता है, मुँहसे बदबू निकलती है, और गलनलीके भीतर कोई चीज अडनेपर साँस रुकनेकी तरह हो जाता है। डिप्थीरियाके बाद हृत्पिण्डके पक्षाघातकी वजहसे अगर रोगीका रग नीला पड जाता है, साँस लेनेके लिये घबडाया करता है और इसके साथ ही नाडीकी गति क्षीण और सविराम हो जाती है, तो इससे फायदा होगा।

क्रम—६—३० शक्ति।

फारमुला—जर्मनी—४, अमेरिकन—८।

नैफ्थालिन।

(NAPHTHALIN)

(अलकतरेसे रासायनिक प्रक्रिया द्वारा चिचूर्णके आकारमे तैयार होता है)—जिन बीमारियों और लक्षणोंमे इसका व्यवहार होता है। उसकी सूची नीचे लिखी जाती है।

ज्वर—कोई बोखार एकाएक आता है, इसके साथ ही बहुत सर-दर्द और अरुचि रहती है। सान्निपातिक ज्वरमें—ज्वरका ताप बहुत अधिक होनेपर, इसका प्रयोग करनेसे ताप घट जाता है। (पाइरोजिन, एसिटैनिलिडियम)।

ऑखकी बीमारी—मोतियाबिन्दु (Soft cataract), कनीनिकाका गदलापन (Opacity), रेटिनाका पैच (deposit in patches upon ratina), क्षीण-दृष्टि (Amblyopia) प्रभृतिमे यह लाभ करता है।

पेशावकी बीमारी—एकाएक पेशावका भयानक वेग, काले रंगका पेशाब, पेशावमें भयानक झाल या सडी गन्ध (unbearable offensive odour of decomposing ammoniacle urine), मूत्राशयमें दर्द, लिङ्गके निचले अंशमें कटने-फटनेकी तरह दर्द, मूत्रद्वारका लाल हो जाना, फूलना, लिङ्गके अगले भागकी त्वचा (prepucee) का फूलना, उल्टी चमडी (Paraphimosis) प्रमेहकी ग्लीट (gleet) वाली अवस्था।

खाँसी—हेमन्त ऋतुमें सर्दी-खाँसी, नाकसे पानीकी तरह पतली सर्दीका निकलना, छींक प्रभृति। थाइसिसकी बीमारीमें—बहुत ही कष्टदायक खाँसी, खाँसीके कारण रातमें सो नहीं सकता, तन्द्रा आते ही खाँसी, इसके साथ ही बहुत ही पसीना, अतिसार, मलमें बहुत बदबू, दमा, आक्षेपिक खाँसी, प्रचण्ड खाँसीके कारण रोगी माथा पकडकर चुपचाप बैठा रहा करता है। जो हो, उप-

रोक्त कई प्रकारकी खाँसी इस दवाके अन्तर्गत होनेपर भी—नैप्थालाइन—हूपिङ्ग-खाँसीकी एक महौषध है, जो रोगी बहुत देरतक खाँसता रहता है, खाँसते खाँसते बेदम हो जाता है, बार बार कितनी ही बार खाँसता है, एक एक बार इतनी जल्दी जल्दी खाँसी आती है, कि साँस लेनेका भी अवसर नहीं मिलता,—वहाँ पहले ही इस दवाका स्मरण करें। (काकसिनेला, कक्कस, और पर्टालिया अध्याय देखिये)। हूपिङ्ग खाँसीमें जरूरत होनेपर नैप्थैलिनके बाद—ड्रोसेरा, उसके बाद सिनाका प्रयोग करना चाहिये।

क्रिमि—क्रिमि रहे या न रहे, जहाँ रोगी बराबर नाक खुजलाया करता है,—नाक खोटता है, नाकपर हाथ रखता है, वहाँ यह सिना वगैरहसे ज्यादा फायदा करता है।

क्रम—३x—६x शक्ति। फारमुला—७।

नेट्रम कार्बोनिकम।

(NATRUM CARBONICUM)

(कार्बोनेट आफ सोडा, यह विचूर्णके आकारमें तैयार होता है)—ग्रीष्म ऋतुमें उत्तापकी वजहसे कमजोरी, सूर्यके उत्तापकी वजहसे सर-दर्द, सर्दी-गर्मी, रोगी मन-मरा और बहुत दुःखित,

रक्तहीन, सफेद, थोडा भी मानसिक परिश्रम करनेपर या धूपमें या रोशनीमें काम करनेपर बीमारी बढ जाती है। सरमें चक्कर आता है और दर्द होता है, हमेशा ही दुःखित उदास रहता है, समाजको त्याग देता है, सगीतकी बीमारी, उपसर्गोंका बढना, पैरकी गाठमें कमजोरी, जरासेमें ही पैंडीमें मोच आ जाती है। भोजनसे बीमारीके उपसर्गका घटना इत्यादि इसके चरित्रगत लक्षण है। इस दवाका चिकित्सा-क्षेत्रमें बहुत ही थोडा व्यवहार होता है।

मानसिक परिश्रमसे रोगका बढ़ना—रोगी किसी भी विषयको सोच नहीं सकता, जरा सोचने या मानसिक परिश्रम करनेसे ही सरमें चक्कर आता है या दर्द होता है अथवा एकदम मूर्खकी तरह हो पडता है। आजकल ऐसे लक्षण बहुतसे रोगियोंमें दिखाई देते है। कोई बीमारी या बीमारीके साथ ये लक्षण रहनेपर—नैट्रम-कार्ब अव्यर्थ महौषधि है। सरका दर्द सूर्यके उत्तापसे बढ जानेपर—नैट्रम-कार्ब, लैकेसिस, ग्लोनोयिन और ब्राइमिन फायदा करते है।

कब्जियत, उदरामय और अजीर्ण—पेटमें वायु-सचय, भोजनके बाद पेट फूलना, पेटमें ये ठनका दर्द या पेट कडा होते जाना, बदबूदार वायु निकलना इत्यादि कई इसके चरित्रगत लक्षण हैं। ठीक कब्जियत नहीं, अर्थात पतला पाखाना भी बडे कष्टसे निकता है—यह भी इसका एक चरित्रगत विशेष लक्षण है।

अतिसारमे—दस्त पतला, चमकीला, गन्ध खट्टी, खाने पीनेके बाद बढ़ना, दूध पीनेपर और भी बढना, पेटमे दर्द होता है और जलन हुआ करती है। रोगीको साग-सब्जी और श्वेतसारमय पदार्थ बिलकुल ही सहन नहीं होता, बराबर मुँहमे पानी भर आता है, जी मिचलाया करता है, खट्टी डकार आती है, कभी कब्जियत और कभी अतिसार रहता है, इस तरह अजीर्णकी बीमारीमे भी—नेट्रम-कार्ब फायदा करता है। सवेरेके वक्त ओकाई—और खाली मिचलीमे—नक्सकी तरह नेट्रम-कार्ब भी फायदा करता है।

पैरके जोड़ोंकी कमजोरी—बहुतसे कहते हैं कि वे पैरकी सन्धियोंकी कमजोरीसे कारण चल नहीं सकते। इनके लिये नेट्रम-कार्ब विशेष लाभदायक है। कोई पैरके जोड या सन्धिस्थानोंकी कमजोरीकी वजहसे अथवा पैरके तलवेमे दर्दके कारण यदि चल न सके या थोडी दूर चलनेपर पैरके जोडोंमे दर्द हो, तो इससे ज्यादा फायदा होगा, नेट्रम कार्बमे—पैरके तलवेमे सूजन होती है। पेट्रिम-क्रूडमे—केवल पैरके तलवेमे दर्द होता है।

सर्दी-खाँसी—नयी सर्दी, नाकसे कच्चे पानीकी तरह पानी निकलता है, उसके साथ ही भयानक छींक, जरा भी हवा लगनेपर या शरीरका कपडा खोलनेपर ही छींक बढ जाती है। इसका एक और भी लक्षण है—दिनके समय खूब बलगम निकलता है, पर रातमे नाक बन्द हो जाती है, जब नाकम किसीकी भी चीजकी गन्ध और स्वाद नहीं मिलता, वहाँ इसमे ज्यादा

फायदा होता है। किसी श्वासयन्त्रकी बीमारीमें खाँसीके साथ दाहिनी ओरकी छातीमें जलन और नमकीन स्वाद, हरे रंगका बल्गम निकलनेपर इससे फायदा होगा।

जखम—राह चलकर पैरके तलवेमें या पँडीमें जखम होनेपर नैट्रम-कार्ब, पर पैरकी गाँठपर जखम होनेपर—लाइको पोडियम (अगर रास्ता न चलनेपर भी ऐसा हो जाये तो भी इस से फायदा होगा), हाथकी सन्धियोंके जखममें—सिपिया फायदा करेगा।

आँखका जखम—स्वच्छ-त्वचाके (cornea) जखम में किसी तरहकी रोशनीका सहन न होना और उसमें बेधने-छेदनेकी तरह तकलीफ रहनेपर—नैट्रम-कार्बसे फायदा होगा।

चर्म-रोग—हाथकी तलहत्थीके पिछले भागमें एकजिमा (Eczema) नामक चर्म्म-रोगमें और किसी चर्म्म-रोगमें चमडा फटा फटा रहनेपर—नैट्रम-कार्ब फायदा करेगा।

हृत्पिण्डकी बीमारी—कलेजेमें बहुत धडकन, सीढीमें ऊपर चढने और रातमें और बाई ओर दबाकर सोनेपर कलेजेकी धडकन बढती है (नैट्रम-म्यूर, फास), बहुत कमजोरी, समूचा शरीर भारी मालूम होता है।

वृद्धि (aggravation)—धूपसे, गैसकी रोशनीमें, परिश्रमसे, ठण्डी हवामें, दिनके १० बजेसे—११ बजेके बीचमें। एक दिनके अन्तरसे, पूर्णिमामें, दूध पीनेपर।

ह्रास (amelioration)—भोजनके बाद, दबानेसे, मलने-पर।

सम्बन्ध—जरायु आदिका नीचेकी ओर खिंचनेपर इसके बाद सिपिया लाभ करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, नाइट्रि-स्पिरिट-डल।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—६, ३० शक्ति। फारमुला—७—विचूर्ण, टिंचर ४ प।

नैट्रम म्युरियेटिकम।

(NATRUM MURIATICUM)

(रोजके खानेके नमकसे यह विचूर्ण तैयार होता है)—यह माननीय डा० सुसलरकी बारह टीशु दवाओंमें एक प्रधान दवा है। शरीरका रस, रक्त, शुक्र इत्यादि ओजवाले पदार्थ क्षय होकर या मानसिक गडबडीकी वजहसे, जब कोई मनुष्य रक्तहीन (anaemic) और धातु-विकार ग्रस्त (cachectic) हो पड़ता है, इसे एक बार स्मरण करना होगा।

चरित्रगत लक्षण—

१। श्लेष्मा प्रधान धातुवाले मनुष्य—जरा भी सर्दी लग जाने-पर ही सर्दी हो जाती है, २। उत्तम भूख और भोजन करनेपर भी शरीरका मास क्षय होता जाता है, गर्मीके दिनोंका अतिसार-

भोगनेके कारण बच्चोंकी गर्दन और गला पतला पडता जाता है, ३। उत्तेजित भाव, बच्चेको प्यार करनेपर भी रुज हो जाता है, सामान्य कारणसे भी चिल्लाकर रो उठता है, ४। अवस्था-प्राप्त मनुष्य—उदास, रोते रहते हैं, समझानेपर दुःखका वेग और भी बढ जाता है, ५। स्नायु-दौर्बल्यकी वजहसे हाथसे चीजें आदि गिर जाती हैं, ६। तीते पदार्थ, नमक या नमकीन पदार्थ खानेकी बहुत इच्छा, रोटी अच्छी न लगना, ७। भूख उत्तम, पर खानेकी इच्छा न होना, ८। प्रचण्ड सर-दर्द, मानो माथेमें हथौडीसे मार रहा है। बायीं ओरका सर-दर्द, वह सूर्योदयसे सूर्यास्ततक बढता है, ९। स्त्रियोंको ऋतुस्रावके समय, ऋतुस्रावके पहले या बाद सर-दर्द, इसके साथ ही मस्तिष्कमें गर्मी मालूम होना और वमन होना या जी मिचलाना, सबेरे नींद खुलनेपर सर-दर्द, १०। ज्वर-में पसीना होनेपर भी धीरे धीरे सर-दर्दका घटना; ११। खाँसने-पर आँखसे सोतेकी तरह वेगसे पानी गिरना, आँखमें लाल उधेडनेवाला आँसू निकलना, १२। ऐसा अनुभव होना कि जीभ-पर केश अडा है, १३। बहुत सुस्ती और कलेजा धडकना, सोनेपर बढना (लेके), हृत्पिण्डका स्पन्दन, इनमें समग्र शरीर काँपता है, (स्पाइजे); १४। भोजनके बाद ही कलेजेमें जलन; १५। कब्जियत, ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार संकुचित हो रहा है, मल सूखा और कडा, बडे कष्टसे निकलता है, चूर चूर हो जाता है, गून गिरता है, १६। रोगीकी समझमें नहीं आता है, कि मलद्वारसे वायु निकलता है, या मल निकल रहा है (फ्लो,

आयोड, एसिड-म्यूर, ओलियेण्डर, पोडो) ; १७ । चलने, छींकने खाँसनेमें, अनजानमें पेशाब निकलना (कास्टि, सिला), १८ । स्त्री-सहवासके बाद स्वप्नदोष, बहुत अधिक कामेच्छा, पर इन्द्रियकी दुर्बलता, ध्वजभग . १६ । अम्ल, रोटी, बहुत ज्यादा नमक खाना, किनाइनका सेवन करना, कास्टिकसे जलाना, बहुत दिनोंका शोक, ताप, क्रोध इत्यादि कारणोंसे पैदा हुई बीमारी, २० । हाथके पीछेवाले भागमें मसे , २१ । घरमें चोर घुसा है ऐसे सपने देखता है, और जागकर चारों ओर खोजता है २२ । निद्रित अवस्थामें शय्यासे उठकर घूमता है। २३ । नख अलग हो जाते हैं, नखके नीचेका चमडा फटता है , २४ । मलद्वार और घुटनेके गासोंमें हार्पिस (भैंसिया दाद) नामका चर्मरोग ,२५ । ओठके पास मोतीकी तरह बोखार के दाने निकलना और ओठमें घाव, ओठ फटे और ओठ सूखे, २६ । समूचे शरीरमें नया या पुराना आम वात , २७ । १० बजेसे ११ बजेके भीतर सविराम ज्वरका आक्रमण २८ । योनिके ऊपर-के केश झड जाना (ज्वरमें—लाइको), , २६ । योनिके भीतर सूखेपनकी वजहसे रतिक्रियामें गडबडी , ३० । हरी आभा लिये प्रदरका स्राव , ३१ । हँसने, खाँसने और चलनेपर, अनजानमें पेशाब निकलना ।

साधारणत—दिनके १० बजेसे ११ बजेके भीतर रोगके उपसर्गोंका बढना, भविष्यकी चिन्तामें हताश, पोषणकी कमीसे शरीर सूख जाता है और गर्दन पतली पड जाती है, कब्जियत,

स्त्रियोंको रजःस्राव थोडा होना, शरीरका चमडा तेलहा या मानो चर्बी लगा। ये कई इसके—प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं।

रक्तहीनता—स्त्रियोंकी ऋतुकी गडबडी और बहुत ज्यादा शुक्रक्षय, शरीरके किसी ओजवाले पदार्थके क्षयके कारण अगर रक्तहीनता पैदा हो जाये—नेट्रम-म्यूरसे विशेष फायदा होगा। रोगी जब बहुत कमजोर और जीर्ण-शीर्ण हो पडता है, चमडा सफेद और सूखा हो जाता है, थोडा भी शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेसे थकावट मालूम होती है। थोडी भी मेहनतसे ही कलेजा धडकने लगता है, उस समय—नेट्रम-म्यूर ज्यादा फायदा करता है, किसी भी पुरानी बीमारीमें—नेट्रमका निर्वाचन करनेके समय रोगीके मानसिक लक्षणोंपर ज्यादा नजर रखेंगे।

नेट्रमका मानसिक लक्षण—रोगीको सान्त्वना देनेसे वह और भी चिढ उठता है या रो देता है, इस समय कलेजा और भी ज्यादा धडकने लगता है और नाडीकी गति रुक रुककर चलने लगती है, पर यह हृत्पिण्डकी किसी बीमारीकी वजहसे नहीं होता। पल्सेटिलामें भी रोगीको सान्त्वना देनेसे वह शान्त होता है, पर नेट्रमका—रोगी चिड़चिडा और पल्सेटिलाका अभिमानी होता है। रक्तहीनताकी बीमारीमें—फेरम नामको दवासे ज्यादा फायदा होता है। फेरममें—रोगीका मुँह बाहरसे देखनेपर कुछ हरी आभा लिये या काले रंगकी तरह हो जाता है, पर मुँहके भीतर सफेद दिखाई

देता है। फेरमके निर्वाचनमे रोगीका एक विशेष लक्षण यह है, कि जरा भी किसी तरहका दर्द या मनके आवेगसे ही रोगीका मुँह सफेद या लाल रगका हो जाता है। इसके अलावा—मस्तिष्कमें रक्त सचालनके कारण माथेमे हथौडीसे ठोकनेकी तरह दर्द होता है और माथेमे टपकका दर्द हुआ करता है। डा० नैश कहते हैं कि कि रक्तहीनताकी बीमारीमे उन्होंने फेरम, पल्सेटिला, कैल्केरिया-फास, चायना प्रभृति सभी दवाओंकी अपेक्षा—नैट्रम-म्यूरसे ज्यादा रोगी आरोग्य किये है। शरीरके ओज-सम्बन्धी पदार्थ निकल जानेकी वजहसे रक्तहीनतामे—कैलि-कार्ब, चायना, ऋतुकी गडबडीके कारण रक्तहीनतामें—पल्सेटिला, वीर्य-स्खलनके कारण रक्तहीनतामें—चायना और एसिड-फास उपयोगी है, पर धातुगत लक्षण मिल जानेपर ऊपर लिखे सभी लक्षणोंकी अपेक्षा, रक्तहीनतामे नैट्रम म्यूर ज्यादा फायदा करता है।

कानकी बीमारी—कानमे भों भों, झिन झिन, टु टु आवाज, चिबानेके समय कडाक-से आवाज हो उठती है। कानमे पीब, टपकका दर्द, सुई गडनेकी तरह दर्द।

सर-दर्द—पुराना-सर-दर्द, अधकपारीका सर-दर्द और शिरःशूलका—नैट्रम-म्यूर एक प्रधान महौषध है। कनपटीमें और माथेमे—ब्रह्मतालुमे भयानक दर्द और टपक होती हैं। कितनी ही बार सबेरे नींद खुलने बादसे ही माथेमें टपकका दर्द आरम्भ हो जाता है, इसके साथ ही प्यास रहती है, रोगी तकलीफसे पागलकी तरह हो उठता है। नैट्रममें—सामनेकी कनपटीमे भयानक

दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो कपाल फट जायगा, कोई मानो हथौड़ीसे मार रहा है। माथेके ब्रह्मतालुके दर्दसे माथा भारी मालूम होता है, दबानेपर तकलीफ घटती है। बेलेडोनामे—इस तरह प्रचण्ड भारका टपकका सर-दर्दका लक्षण रहनेपर भी उनमे प्रभेद यह है, कि बेलेडोनाका सर-दर्द माथेमे रक्तका विकार होनेकी वजहसे होता है। उसमे रोगीकी आँख, मुँह लाल और चमकीले दिखाई देते हैं और नैद्रमके रोगीमें उसके बदले चेहरा सफेद और रक्तहीन दिखाई देता है। सिपियाका सर-दर्द, माथेके निचले भागसे आरम्भ होकर क्रमशः माथेके ऊपर बढ जाता है और इसके साथ वमन या मिचली रहती है, अधकपारीके सर-दर्द मे भी सिपिया फायदा करता है। नैद्रममे—सर-दर्दके साथ रोगी की दृष्टि धुधली होती जाती है, स्त्रियोको ऋतुके बाद सर-दर्द बढनेपर—नैद्रम-म्यूर सबसे अधिक लाभदायक है। स्कूलके बालक बालिकाओंके सर-दर्दमे—नैद्रम-म्यूर और कैल्केरिया-फास फायदा करता है। सूर्यकिरणके साथ ही साथ सर-दर्दका घटे बढ़े, दो पहरके समय बहुत बढ जाये और जितना ही धूप बढ़े, उतना ही टपकका सर-दर्द बढता जाये, दोपहरके समय बहुत ही अधिक बढ जाता हो और ज्यों ज्यों दिन उतरता जाये, उतना ही सर-दर्द घटता जाये, यह लक्षण—स्पाइजेलिया, जेलसिमियम, ग्लोनोयिन और नैद्रम-म्यूरमे है। बहुत-सी स्त्रियोको ऋतुकालके पहले सर-दर्द आरम्भ होता है, और जबतक ऋतुस्राव हुआ करता है, उतने दिनोंतक सर-दर्द रहता है, वमन होता है, बीच बीचमें

भयानक यन्त्रणादायक अधकपारीके सर-दर्दमे—अर्जेण्टम-नाइ-ट्रिकम फायदा करता है। इसमे कभी माथेमें एक तरफ और कभी दोनों ओर ही दर्द होता है। माथेमे कसकर कपडा बाँध देनेपर दर्द कुछ घटता है।

एपिजया रिपेन्स—(Epigea-Repens)—दिन-रात लगातार परिश्रमकर अगर शरीर क्लान्त हो पडे और इसी वजहसे सर-दर्द हो तो—इसका मूल-अर्क ५।१० बूँद मात्रामें २।१ बार सेवन करनेसे ही फायदा होता है।

आँखकी बीमारी—आँखमें बहुत जलन, वेधने-तोडने की तरह दर्द। इतनी करकराती है, कि ऐसा मालूम होता है, मानो उसमें बालू गिर गयी है। आँखसे बहुत अधिक पानी गिरता है, यह पानी जहाँ लगता है, उसी जगहकी खाल उधड जाती है, आँख मानो बन्द-सी हुई रहती है, आँख खोलनेमें तक-लीफ होती है। स्वच्छत्वचाके (cornea) जखममें और कण्ठ-माला धातुवालोंकी आँख उठनेमें (Ophthalmia)—नैट्रमसे विशेष फायदा होगा। नैट्रममें—आँख और मुँहका कोना फटा फटा दिखाई देता है। इसके रोग-लक्षण सवेरे बढ जाते हैं। अर्जेण्ट—नाइट्रिकम, ग्रैफाइटिस, आर्सेनिक इत्यादि दवाएँ भी—कण्ठ-मालाके कारण आँख उठनेमें फायदेमन्द होती हैं। ग्रैफाइ-टिस, एण्टिम-क्रूड, कास्टिकम इत्यादि दवाओंमें भी ओठका कोना फटनेका लक्षण है। आँखमें मोतिया-बिन्दु होने

पर—फास्फोरसकी तरह नैट्रम-म्यूर भी फायदा करता है। फास्फोरससे—मोतिया-बिन्दुका बढना रुक जाता है। (केल्केरिया-फ्लोर देखिये)।

चर्म-रोग और आमवात—एकजिमामे रस ओर पीब निकलता है, पपडी जमती है, उसमें केश सट जाते हैं। सविराम-ज्वरके साथ आमवात, उसमें खुजली रहनेपर—नैट्रम फायदा करता है (पपिस अध्याय देखिये)। हाथकी कोहनीके नीचे, घुटनेके नीचे और अण्डकोषके एकजिमामे यह ज्यादा फायदा करता है। नैट्रममें पानी लगनेपर खुजली बहुत बढ जाती है।

अगुलीकी त्वचा सूखी और फटी, इसी वजहसे सिलाईका काम वगेरह नहीं हो सकता। हजामतके कारण खुजली, दाढीमें एकजिमा (माइक्यूहा)।

कब्जियत—नैट्रमकी कब्जियतमें मल बहुत सूखा रहता है, सहजमें नहीं निकलता है, रोगीको इतना जोर लगाना पडता है कि मलद्वार फटकर खून निकलने लगता है। येमोन-म्यूर और नैट्रम-म्यूरकी कब्जियतमें मल टूट टूटकर निकलता है। नैट्रममें—बडे-बडे लेंडकी तरह पाखाना होता है, मलद्वारकी क्रिया-हीनताकी वजहसे कब्जमें—एल्यूमिना, वेरेट्रम और साइलिसिया फायदा करते हैं। नैट्रममें—कब्जियत रहनेपर रोगीके मनकी अवस्था बहुत ही खराब रहती है, माथेमें बहुत दर्द होता है। मुँहका स्वाद खराब हो जाता है, कब्ज न रहनेपर मन खूब अच्छा रहता है।

भूख—बहुत भूख, रोगी हमेशा खाँय खाँय किया करता है, मानो किसी तरह भूख बन्द ही नहीं होती। नैट्रमकी एक विशेषता यह है कि—रोगी बहुत ज्यादा खाता है, तब भी शरीरकी उन्नति बिलकुल ही नहीं होती। आयोडममें भी यह लक्षण है पर प्रभेद यह है, कि नैट्रमके रोगीको भोजनके बाद ही बहुत थकान-सी आ जाती है, सो जानेकी इच्छा करता है, पेट भारी हो जाता है। उससे मानो शरीर अस्वस्थ हो पडता है और आयोडमके रोगीका जब पेट भर जाता है तभी उसे आराम मालूम होता है। नैट्रममें—रोगी नमक और नमकीन पदार्थ और तीते पदार्थ खाना पसन्द करता है। फल-मूल और रोटी बिलकुल ही सहन नहीं होती।

ओठके कोने फटना—निचले ओठके बीचका स्थान फटना, नैट्रमकी यह विशेषता होनेपर भी, इसमें मुँहका कोना भी जखमसे भरा और फटा-फटा रहा करता है। नाइट्रिक-एसिडम भी—यह लक्षण है। नाइट्रिकमें—मलद्वारमें भी जखम और फटा फटा घाव रहता है और खून निकलता है। सविराम ज्वरमें—ओठ पर ज्वरके दाने (Fever-blister) होनेपर पहले ही—नैट्रम-म्यूर-का स्मरण करें, नैट्रममें जीभ भी फटी फटी और उसपर मान-चित्रकी तरह लकीरें भरी रहती हैं।

प्रमेह—पेशाबके बाद मूत्रनलीमें टनक और काटने फाड़नेकी तरह दर्द (पेशाबके पहले या समय नहीं), यह लक्षण—

ग्लीट (gleet) वाली अवस्थामें अर्थात् प्रमेह रोगकी पुरानी अवस्थामें ही अकसर दिखाई देते हैं। इसके साथ ही प्रमेहका मवाद पानीकी तरह पतला होनेपर या पीले रंगका स्राव होनेपर—नेट्रमसे खासा फायदा होगा। नये प्रमेहमें—नैट्रम फायदा नहीं करता।

पेशावकी बीमारी—बहुत ज्यादा परिमाणमें फीके रंगका पेशाव होता है, बहुमूत्र, छींक या खाँसीके साथ चलने-फिरने में अनजानमें पेशाव निकलता है। पेशावके समय अगर पास कोई आदमी रहता है तो जल्दी पेशाव नहीं होता, बहुत देरतक बैठे रहना पडता है।

स्वप्नदोष—निद्रितावस्थामें स्वप्नदोष, स्त्री-सहवासके बाद स्वप्नदोष, सहवासके समय लिङ्गमें कडापन न होना, ध्वजभंग, स्वप्नदोषके कारण कमरमें दर्द इत्यादिमें—नैट्रम फायदा करता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डके भीतर मानो कोई चिडिया फडफडा रही है। हृत्पिण्डका आघात समान नहीं होता, और मध्यलोपी अर्थात चलते चलते हृदयकी गति बीच बीचमें रुक जाती है, रोगीको अपना हृत्पिण्ड बहुत कमज़ोर अनुभव होता है, सोनेपर खासकर बायीं करवट दबाकर सोनेपर कलेजेकी धडकन और कमज़ोरी मानो और भी बढ जाती है, हाथ-पैर सुन्न और ठण्डे हो जाते हैं, हृत्पिण्ड कभी कभी बहुत जोरसे धक्का देता है, उससे मानो समूचा शरीर काँप उठता है, जरा हिलने-

डोलनेसे ही बढता है—ये ही नेट्रमके लक्षण है। स्पाइजेलियां
यह लक्षण है। कमजोर और रक्तहीन मनुष्य, जो मानसिक श
सन्तापसे विकल हो रहे हैं या रस, रक्त या शुक्र आदिके च
कारण बहुत कमजोर हो पडे है, उनकी इस तरहकी हृत्पिण
वीमारीमें—नैट्रम फायदा करेगा (स्मरण रखे, कि हरित्पा
(क्लोरोसिस) रोगिनीके इस लक्षणमे नैट्रमसे कोई भी फायद
होगा—डिजिटिलिसका अध्याय देखिये)।

हाथ-पैर ठण्डे—हैनिमैन कहते है, कि नैट्रममें हाथ
इतने ठण्डे रहते है, कि वे आगसे भी गरम नहीं किये जा सक
डा० हियुजेस कहते है—इसमें समूचा शरीर या निचला आधा
बहुत ही भयकर रूपसे ठण्डा होता है।

कमरका वात और पक्षाघात—कमरके नी
तकिया देकर सोनेपर कमरका दर्द घटता है, ज्वर और डिप्
रियाकी वीमारी आरम्भ होनेके वाद निम्नाङ्गके पक्षाघातमें नै
फायदा करता है।

स्त्री-व्याधि—स्त्रियोंकी वीमारीमें नैट्रम-म्यूर बहु
कुछ—सिपिया और पल्सेटिलाके समान है। कितनी
दशाओंमें रोग-लक्षणके साथ ओषध-लक्षणका सादृश
रहनेपर भी महात्मा हैनिमैन रोगीके मानसिक लक्षणोंपर औ
रोगीकी धातुपर सबसे पहले ध्यान देनेका उपदेश देते हैं। नैट्रमक
रोगी—हमेशा-मनमरा—उदास, दुःखित और जरा-सी बातमें र

हो उठता है, समझानेपर भी शान्त नहीं होता। जिन स्त्रियोंके लिये नेट्रम उपयोगी होता है—ये अकसर जीर्ण-शीर्ण, सूखी, कमजोर और रक्तहीन रहती हैं, उनका कलेजा हमेशा धड़का करता है, उसके साथ जरायुकी कोई न कोई बीमारी रहती है, बाधक,—ऋतुस्राव बहुत थोड़े परिमाणमें होता है, इसके अलावा—जरायुका बाहर निकलना (Prolapsus), जरायुमें दर्द, कमरमें दर्द, हर रोज सबेरे उमेठनेवाला प्रदर, योनिद्वारमें टनकका दर्द, पेशाबमें जलन और पेशाबके बाद टनक, भयंकर सर-दर्द, योनिदेशमें खुजली, इस खुजलीका पानी लगनेपर बढ़ना, स्वामीके साथ सहवासमें कष्ट इत्यादि लक्षण वर्त्तमान रहते हैं।

पल्सेटिलाकी रोगिनीका स्वभाव बहुत शान्त रहता है। इसमें रोगिनी हमेशा बहुत ही उदास रहती है। यहाँतक कि कोई भी बात बोलनेके समय रो देती है, पर पल्सेटिलाकी रोगिनीको सान्त्वना देनेपर शान्त हो जाती है और नेट्रममें—रोगिनीको सान्त्वना देनेपर वह और भी कोपित हो जाती है।

स्वामी सहवासमें कष्ट—इस रोगमें नेट्रमके अलावा—क्रियोजोट, सिपिया, बेलेडोना, फेरम और पपिस भी उपयोगी हैं। डिम्बकोष-में डंक मारनेकी तरह दर्दके साथ खाँसी, सहवासमें कष्ट—फेरम और पपिसमें है। स्वामी सहवास करनेपर ही रक्तस्राव होता है, इसीलिये तकलीफ मालूम होती है—क्रियोजोट निर्दिष्ट है। सिपिया और बेलेडोनामें—योनि-पथ सूखा रहता है, इसीलिये स्वामी-सहवासमें कष्ट होता है। नेट्रममें ऋतुस्राव बहुत थोड़े

परिमाणमें और देरसे होता है, कभी-कभी एकदम बन्द रहता है, और कभी कभी स्राव बहुत थोडे परिमाणमें होता है, पर २।१ दिन बाद बहुत ज्यादा परिमाणमें निकला करता है और बहुत दिनोंतक होता रहता है, इसके साथ ही अतिसार या सर-दर्द। पहली वार अधिक उमरमें रज स्वला होती है।

अतिसार—मल पतला पानीकी तरह, काला, कभी कभी खून मिला, कभी हसके अण्डेके सफेद अंशकी तरह, कभी कभी तो मलका कोई चिन्ह हो नहीं रहता, कभी-कभी तो बडे वेगसे निकलता है। इसके अलावा कभी-कभी अतिसार और कब्जियत पर्यायक्रमसे भी दिखाई देती है। पाखानेके पहले—पेट बहुत गडगडाता है और वायु निकलनेके समय मल निकल पडता है (एलो)। रोगीका मिजाज बहुत चिडचिडा और क्रोधित हो उठता है, मुँहका भाव सूखा और चमकीला दिखाई देता है, इसके साथ ही मुँह और ओंठमें घाव, ओठ फूले फूले। अतिसारके साथ बहुत भूख इत्यादि लक्षण भी रहते हैं। इसके अलावा रोगीका गला और गर्दन बहुत पतली पड जाती है, मासहीन हो जाती है। बच्चोंका पुराना अतिसार और ग्रहणी रोगमें ऊपर लिखे लक्षण रहनेपर—नेट्रम-म्यूर ज्यादा फायदा करेगा।

द्रष्टव्यः—जिस अतिसारमें रोगी बारबार पानी पीता है, प्यास तेज रहती है, उसमें नेट्रम दें, फायदा होगा।

सुखण्डी या मांसक्षय—बच्चोंकी इस बीमारीमें

नैट्रम-म्यूर, सार्सा-पैरिला, पेब्रोटेनम, आयोडम इत्यादि दवाएँ फायदा करती हैं। नैट्रम-म्युरमें—गला और गर्दन ज्यादा पतली पड जाती है। शरीर भी दुबला हो जाता है, पर इसमें गर्दन ही ज्यादा पतला पडती है, वहाँका चमडा मानो सूख जाता है, और सलवटे पडने लगती है, इसके साथ ही बच्चोंको हमेशा प्यास बनी रहती है। बच्चोंकी अकडन, पब्रोटेनममे दोनों पैर ही अधिक पतले पडते हैं, सार्सा-पैरिलामे—नैट्रमकी तरह गर्दनमें अधिक पतलापन रहता है, पर नैट्रममें बच्चोंको भूख खूब लगती है और भरपूर खाने-पीनेपर भी शरीर पुष्ट नहीं होता। सार्सापैरिलामें—यह लक्षण नहीं रहता। आयोडममें—भूख खूब रहती है, पर प्रभेद यह है कि, आयोडममें भोजनके बाद रोगीको आराम मालूम होता है। नैट्रममें—भोजनके बाद रोगीका आलस्य बढ जाता है।

सर्दी-खाँसी—बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह कच्ची सर्दी नाकसे निकलनेके साथ बराबर छींक होना, सर्दीका स्राव—कभी पतला, कभी सूखा, जरा ठण्डी हवा लगनेसे ही सर्दी हो जाती है, सर्दीका स्राव जहाँ लगता है, वहींकी खाल उधड जाती है। नैट्रमकी सर्दीकी एक विशेषता और भी है—अर्थात्—

रोगीको किसी चीजकी गन्ध नहीं मिलती, खाँसनेपर गलेमें सुरसुरी होती है और स्वरभग हो जाता है। इसके साथ ही माथेमें भयङ्कर सर-दर्द रहता है।

प्लीहाका बढ़ना—मैलेरिया बोखार भोगनेकी वजह

से बहुत दिनोका स्वास्थ्यका विकार, इसके साथ ही प्लीहा और यकृतका वढना और कडा हो जाना—यह लक्षण रहनेपर नैट्रम-म्यूर फायदा करता है। नैट्रम प्रयोग करनेके समय इसका चरित्र-गत ज्वर आदि लक्षणके साथ, विशेष लक्षणोंके प्रति हमेशा नजर रखनी चाहिये। प्लीहा अगर वढ जाये, नैट्रमकी तरह—आर्सेनिक, सियानोथस, चिनिनम-सल्फ, चिनिनम-आर्स, चायना, परानिया, फेरम-आर्स, फेरम आयोड, आयोडम, लैकेसिस, नक्स-वोमिका इत्यादि दवाएँ फायदा करती हैं। उनके लक्षणोंको देख और चुनावकर दवा देनी होगी।

<u>सियानोथस</u>—यह एक तरहके लता-गुल्मके फलसे तैयार होता है। १८७० ईस्वीमें डा० जे० सी० बार्नेटने इसकी पहले-पहल परीक्षा की। बहुतसे मनुष्य इस दवाको प्लीहा रोगकी एक तरहकी पेटेण्ट दवा समझते हैं। वास्तवमे प्लीहा खूब वडी, कडी और उसमें डक मारनेकी तरह दर्द और प्लीहाकी जगहपर तेज दर्द रहनेपर इसका भीतरी और बाहरी दोनो ही प्रयोग करना चाहिये। इससे प्लीहा बहुत जल्द स्वाभाविक अवस्थामे आ जाती है। सियानोथसमें—प्लीहामे दर्दके सिवा इसमें समूचे बाएँ पार्श्वमें भी दर्द होता है, इसके अलावा कभी-कभी यकृतमें भी दर्द मालूम होता है, रोगी वायीं करवट दवाकर सो नहीं सकता, कब्जियत रहती है, श्वासमे कष्ट होता है, प्लीहामें दर्द न रहनेपर पुरानी प्लीहाकी वृद्धिमें भी इससे फायदा होता है, क्रम—φ।

यकृतकी वृद्धि और दर्दके लिये—<u>चियोनैन्थस</u> देखिये।

इयुकैलिप्टस—१८ शक्ति। डा० पलेन कहते हैं—यह सविराम, अविराम और टाइफायड (सान्निपातिक ज्वरमे) व्यवहृत होता है। पर उन्होंने इसके किसी विशेप लक्षणका वर्णन नहीं किया है। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—जो ज्वर कीटाणुओंसे उत्पन्न होता है, बहुत ही गडबड और जटिल रहता है, रोगी अच्छा होनेपर भी एकदम आरोग्य नहीं होता, बार-बार बीमार पडता है और बहुत दिनोंतक बोमार रहता है, ज्वरके साथ प्लीहा बढ़ी रहती है, रोगीके शरीरमे वातकी तरह दर्द होता है। इतना दर्द रहता है कि हाथ नहीं लगाया जाता, प्लीहा खूब बडी और कडी रहती है। प्लीहा हाथ लगानेपर फटी फटी मालूम होती है, उसमें यह फायदा करता है। इयुकैलिप्टसमे—रोगी बहुत कमजोर हो पडता है, हमेशा माथेमें दर्द रहता है, सरमे चक्कर आता है, सारे शरीरमें पेठन होती है और दर्द होता है, मरोडकी तरह दर्द होता है—रातमें यह दर्द बहुत बढ जाता है, अतिसार और पेटकी गड़बडी आ जाती है, और मलमें बहुत सडी बदबू रहती है। सियानोथसमे—प्लीहामे बहुत अधिक दर्द होता है, पर प्लीहा टुकडे टुकडे फाटी की तरह नहीं रहती। कब्जियत रहती है।

सविराम-ज्वर—ज्वरका समय दिनके १०।११ बजे, कभी कभी तीसरे पहर भी—ज्वर आता है। क्विनाइनसे रुके हुए बोखारमें—इपिकाक, आर्सेनिक, चायना, इयुपेटोरियम-पार्फोलियेटम प्रभृतिकी तरह नैट्रम-म्यूर भी एक कीमती दवा है। नैट्रमसे—

ज्वर आनेके पहले माथेमें हथौडीसे मारनेकी तरह दर्द और प्या
रहती है। यह प्यास देखते ही रोगी समझ सकता है, कि
उसे बोखार आयगा। इसके बाद जाडा लगकर कपकपी पैदा
जाती है (कपकपी हाथ या पैरसे आरम्भ होती है)। कप
प्राय एक घण्टेतक स्थायी रहती है। इस समय भी रोगीको ब
अधिक प्यास रहती है। भयकर सर-दर्द, इसी लिये रोगी अज्ञ
की तरह पडा रहता है और किसी तरह समझ नहीं पाता
वह कहाँ है। शीतावस्थामें—थोडी मात्रामें और वार वार प
पीता है, पिया हुआ पानी वमन हो जाता है, वमन पान
तरह (इयुपेटोरियममें—पित्तकी कै होती है और उससे स
शरीरमें और खासकर हड्डोके भीतर बहुत दर्द रहता है। नेट्रममें
हाथ पैर और मसानेमे दर्द होता है)। उत्तापावस्थामें—भया
प्यास (इयुपेटोरियममे इस अवस्थामें प्यास घट जाती
असह्य सर-दर्द, मानो सर फट जायगा, रोगीकी आँखोंके
अँधेरा दिखाई देता है। सर-दर्द—पसीना होनेपर थोडी
निवृत्ति होती है। (इयुपेटोरियममें—पसीनेवाली अवस्थामें
सर-दर्द और भी बढ जाता है)। पसीनेवाली अवस्थामें—
प्यास रहती है—सारांश यह कि—ज्वरकी पूर्वावस्थामें,
जाडा ताप या पसीना, सभी अवस्थाओंमे नेट्रममें प्यास रहती
पसीनेवाली अवस्थामें—सर और शरीरका दर्द घट जाता
बोखार छूटनेपर—रोगीमें बहुत कमजोरी आ जाती है और इ

लिये एकदम गुम-सुम पड़ा रहता है। इसमें भी यकृत और प्लीहा-की वृद्धि हो जाती है और उनमें सुई गड़नेकी तरह दर्द होता है; पेशाव गदला होता है, ओंठके कोने फटे और ओंठपर वोखारके मोतीकी तरह दाने निकलते हैं। ज्वर न रहनेके समय—बहुत अधिक परिमाणमें पतले दस्त आते हैं, नाडीकी गति अनियमित रहती है, कमरमें दर्द, यकृतमें सुई गड़नेकी तरह दर्द, मुँहमें स्नायु-शूलका दर्द प्रभृति और भी कितने ही लक्षण इसमें दिखाई देते हैं।

आभास—११ बजे दिनके समय जाड़ा लगकर वोखार और उसके साथ ही प्यास, जाड़ा, ताप और पसीनेवाली अवस्था-में तेज प्यास, उत्तापावस्थामें—भयानक सर-दर्द, पसीना होनेपर घटना, इन कई लक्षणवाले वोखारोंमें—और गर्दनका पतला-पन, मुँहमें मानो तेल लगा हो, इस तरहका चमकीला भाव, नम-कीन और तीती चीजें खानेकी इच्छा, ये कई पुराने अतिसार या ग्रहणी रोगमें—नैट्रमके विशेष लक्षण हैं।

वृद्धि (aggravation)—दिनके १० बजेसे—११ बजेके बीचमें, धूप या आगके उत्तापसे, सोने बाद, परिश्रम करनेपर, पूर्णिमाके समय, रोटी अम्ल इत्यादि खानेपर।

ह्रास (amelioration)—निर्मल वायुमें, ठण्डे पानीसे नहानेपर, खाली पेटवाली अवस्थामें, दाहिनी करवट सोनेपर, मलनेपर, सर-दर्द होनेपर, सोनेपर।

सम्बन्ध—एपिसके पहले या बाद यह फायदा करता है। जिस रोगकी नयी अवस्थामें—इग्नेशिया, उसी बीमारीकी पुरानी अवस्थामें—नैट्रम-म्यूर ज्यादा फायदा करता है। इसमें सिपिया, और थूजाका प्रयोग करना चाहिये। ज्वरके प्रकोपके समय नैट्रम का कभी व्यवहार न करना चाहिये। नैट्रम—म्युरियेटिकके अप-व्यवहारके कारण—सरमें चक्कर, सर-दर्द प्रभृति अगर उत्पन्न हो जाये—नक्स-वोमिका प्रयोगसे वह दूर हो जाता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, फास, नाइट्रि-स्पिरि, डल, सिपि, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—३०—१००० शक्ति। अधिकांश चिकित्सक इसकी उच्च शक्तिके ही पक्षपाती हैं।

फारमुला—विचूर्ण—७ ,—टिंचर—५ प।

नैट्रमनाइट्रिकम।

(NATRUM NITRICUM)

(नाइट्रेट आफ सोडियम—साधारणत एक तरहके प्रदाह और रक्तस्रावके लिये ही इसका व्यवहार होता है। प्रदाहकी प्रधान दवा एकोनाइट, फेरम-फास, बेलोडोना प्रभृति हैं, नैट्रम-नाइट्रिकम—इन सभी दवाओंकी अपेक्षा यह और भी जल्दी फायदा

करता है । नाकसे रक्तस्रावकी यह एक प्रकारकी पेटेण्ट दवा है। इसके अलावा—हिमाप्टिसिस (रक्तोत्कास), हिमाचुरिया (पेशावके साथ खून जाना), खून निकलनेवाली चेचक प्रभृति रोगोंकी भी यह महोपधि है।

क्रम—२x—३x शक्ति । फारमुला—७ ।

नैट्रम फास्फोरिकम ।

(NATRUM PHOSPHORICUM)

(फास्फेट आफ सोडा)—बच्चे और अम्ल-रोगके रोगियोंकी बीमारीमें यह दवा ज्यादा फायदा करती है। अम्लकी बीमारीमें—खट्टी डकार, खट्टी कै, मुँहका स्वाद खट्टा, भोजनके बाद पेटमें या किसी दूसरी जगहपर दर्द, मुँहमें पानी भर आना, पेट फूलना इत्यादि लक्षणोंमें यह लाभदायक है। छोटे बच्चोंको खट्टी-गन्ध भरे पतले दस्त, हरे रंगका दस्त, दूधकी कै, दहीकी तरह थक्का थक्का वमन, इसके साथ ही ज्वर, पेटमें दर्द इत्यादि लक्षणोंमें भी इससे खासा फायदा होता है। सोया सोया दाँत कडमडाता है अर्थात क्रिमिके लक्षणमें तथा युवकोंके स्वप्नदोषकी बीमारीमें इससे फायदा होता है। वात-रोगमें—डा० शुसलरकी यह एक प्रधान दवा है।

हैजा—डा० शुसलरके मतसे शीत आ जानेवाली अवस्था में और विकारावस्थामें—कैलि-फास, नैट्रम-फास और फेरम-

फास—ये ही तीन प्रधान दवाएँ हैं। नैट्रम-फासमें पेशाब बन्द नहीं होता और मूत्रविकार होनेकी आशंका नहीं रहती। सब तरहके बच्चोंके हैजाकी ये ही तीन महौषधियाँ हैं। रोग लक्षणके अनुसार—३x शक्ति एक साथ या पर्यायक्रमसे बार बार सेवन करानी चाहिये। युरिमियामें फेरम-फासके साथ प्रयोग करना चाहिये।

वृद्धि (aggravation)—चलनेपर, वमनके बाद और अन्धड़ पानीके दिनोंमें।

सदृश—कैल्के, कार्बो, लाइको, नक्स, सल्फ, साइलि, नैट्रम-म्यूर।

क्रम—६x—३० शक्ति। फार्मुला—७।

नैट्रमसलफरिकम।

(NATRUM SULPHURICUM)

(सलफेट आफ सोडा, द्राइटुरेशनके आकारमें तैयार होता है)—नैट्रम-फास जिस तरह अम्ल-रोगमें लाभदायक है, नैट्रम-सल्फ उसी तरह पित्तकी बीमारीमें फायदा करता है। पित्तकी कै, पित्तका दस्त, यकृतकी बीमारी, कामला, पित्तज्वर, गठिया-वात, बहुमूत्र, पथरी इत्यादि बीमारीमें लक्षण भेदसे व्यवहार करनेपर इससे और भी फायदा होता है। प्रमेह-विषसे दूषित धातु और

जलीय धातुमे अर्थात वर्सात या भींजी मिट्टीमे रहनेपर जिनकी बीमारी बढ़ती है (hydrogenoid constitution), उनके लिये यह ज्यादा फायदेमन्द है। जहाँपर कुछ लक्षण नैट्रम-म्यूर और सलफरके मिले रहते हैं, वहाँपर नैट्रम-सल्फका प्रयोग करना चाहिये।

चरित्रगत लक्षण —

१। गरमीके बाद पानी बरसनेपर अस्वस्थ मालूम होना, समुद्रकी हवा सेवन और जलाशयके किनारे जो साग-सब्जियाँ पैदा होती हैं, उनका खाना सहन नहीं होता, २। प्रत्येक वसन्त-ऋतुमे चर्म-रोगका पैदा हो जाना, ३। चोट लगकर या गिरकर मस्तिष्ककी पुरानी बीमारी, ४। पलकोंपर बतौडी—छोटे छोटे छालोंकी तरह दिखाई देती है (थूजा), आँखसे जो पीव निकलता है, उसका रग हरा, सूजाक-रोगके रोगियोंकी आँखोंमें रोशनी सहन नहीं होती, ५। ऋतुके समय नाकसे खून गिरता है (ऋतुके बदले गिरनेपर—पल्स, ब्रायो), ६। जीभकी जडमें भूरे रगका या धुमैला हरा-मिला रगका मैल इकट्ठा होना, ७। प्रमेहका स्राव—पीला हरा दोनों ही मिले रगका, बिना किसी तरहके दर्दका, गाढ़ा (पल्स), ८। पित्तकी कै और दस्त, ९। सूजाक रोगवाले रोगीका निमोनिया—बायें फेफडेका निचला भाग रोग-ग्रस्त, कलेजेमे भयकर दर्दके कारण खाँसनेके समय दोनों हाथोंसे कलेजा दबाकर बिछावनपर उठ बैठता है, १०। स्पाइनल मेनिआइटिस; ११। अतिसार—एकाएक पाखाना लग

आता है, बडे जोरसे और टूटकर दस्त आते हैं , १२। चीनी-मिला बहुमूत्र , १३। यकृतकी बीमारी और कामला।

अतिसार—मलका रंग घोर पीला और पतला, कभी-कभी हरा, पित्त मिला और गाढ़ा। एकाएक वेग पैदा हो जाता है, खूब वायु निकलनेके साथ बहुत टूटकर दस्त आते हैं , कुछ खानेपर या ठण्डे पदार्थ खाने-पीनेपर बीमारीका बढ़ना। इसका रोगी बराबर बरफ और बरफका पानी पीना चाहता है। पर कुछ खाते ही उपसर्ग बढ़ जाते हैं। पेटमे वायु इकट्ठा होता है और पेट फूल उठता है, पेटमें शूलके दर्दकी तरह दर्द होता है, पेट गड-गडाया करता है, पेट बोलता है, पर पेटमे आवाज, दाहिनी ओर तलपेटके नीचे ही अधिक रहती है, इसके साथ ही पित्त वमन, जी मिचलाना, सर-दर्द , मुँहका स्वाद तीता, सवेरेके समयका उद-रामय इत्यादि लक्षण रहनेपर—नैट्रम-सल्फ और भी फायदा करता है। सवेरेके समयके उदरामयमें—नैट्रम-सल्फके रोगीको नींद खुलनेके कुछ देर बाद दस्त आरम्भ होते हैं, सलफरकी तरह बहुत तडके या रातके अन्तिम भागमें नहीं आते।

हैजा—नैट्रम-सल्फ इस रोगकी प्रतिषेधक दवा है। जिस समय हैजा फैला हुआ हो, उस समय रोज सवेरे—३x शक्ति १ मात्रा सेवन करना चाहिये, रोगकी पहली अवस्थामें ३।४ मात्राका सेवन करनेसे ही प्रायः प्रकोप घट जाता है। हमेशा वमन का वेग, मुँह तीता, जीभ कुछ हरे रंगकी—यही इसका लक्षण है।

मन्दाग्नि—अम्लकी बीमारी, पेटमें वायु जमना, पेट ...लना, कलेजेमें जलन होना, नैट्रम-सल्फमें पित्तकी गडबडी ...कर या बरसातके दिनोंमें पेटमें वायु जमकर बीमारी होती है।

नैट्रम-कार्ब—दूधके दोपसे या दूध सहन न होकर बीमारी, ...लेजेमे धडकन होती है (Palpitation)।

नैट्रम-म्यूर—पेट हमेशा खाली मालूम होता है, प्यास, ...ोगी दिनोंदिन सूखता जाता है।

नैट्रम-फास—दूध दही या छानेकी तरह होकर वमन होता ...है, पेट फूलता है।

वायु-पित्तकी बीमारी—जी मिचलाना, पेट फूलना, पित्तकी या खट्टी कै, तीता वमन, नमकीन स्वादवाला वमन, इसके साथ ही सर-दर्द, सरमें चक्कर आना, आँख और हाथ पैरमें जलन, खट्टी डकार, यकृतमें दर्द, पेटमें वायु इकट्ठा होना, शूलका दर्द, कामला, पीले रंगकी आँख इत्यादि नैट्रम सल्फके चुने हुए लक्षण है।

दाँतकी बीमारी—दाँतका दर्द गर्म प्रयोग और गर्म पानी मुँहमें लेनेपर बढता है और ठण्डी हवा तथा ठण्डा पानी मुँहमे रखने और तम्बाकू खानेपर दर्द कुछ घटता है (हेरिङ्ग)।

कानकी बीमारी—कानमें तेज सुई गडनेकी तरह दर्द, गीली मिट्टीमें सोनेपर या तर जलीय ऋतुमें बढता।

चर्म-रोग—पीले रंगका पानीकी त॰ ...

कलेजेमें दर्दके साथ खाँसी—खाँसीके साथ कलेजेमे भयानक दर्द, यह लक्षण—ब्रायोनिया और नैट्रम-सल्फमे है। ये दोनों दवाएँ ही पित्तकी धातुवाले मनुष्यके लिये उपयोगी हैं। ब्रायोनियाकी खांसी सूखी, नैट्रम-सल्फकी खाँसी ढीली। ब्रायोनियामें—दाहिनी ओर कलेजेमे दर्द अधिक, नैट्रम-सल्फमे बायीं ओर, दर्द अधिक होता है। दाहिनी ओर कलेजेके निचले भागके दर्दमे भी नैट्रम-सल्फ फायदा करता है। बरसात और भीजी सीडभरी ऋतुमे नैट्रम-सल्फके सभी रोगोंके लक्षण बढते है, इन दोनों ही दवाओका दर्द दबानेपर घट जाया करता है, इसीलिये रोगी खाँसनेके समय हाथसे कलेजा दबा रखता है। नैट्रम-सल्फमे—सवेरे ३।४ बजेसे खाँसी बहुत बढ जाती है, दमाकी खाँसी रातमे और सोनेपर बढती है।

यकृत—रोगी बहुत दिनोतक अतिसार, आमाशय रोग भोगकर अन्तमें यकृतमे दोष पैदा हो जाये तथा यकृतमे अकडनकी तरह दर्द हो, तो नैट्रम-सल्फ फायदा करता है। यकृतकी बीमारीमे जहाँ नैट्रम-सल्फकी जरूरत होती है वहाँ यह दिखायी देगा कि रोगी बायीं करवट दबाकर सो नहीं सकता, सोनेपर तकलीफ बहुत बढ जाती है, इसके साथ ही मिचली, वमन, कुछ न कुछ पित्त-वमन, मुँहमें खट्टा या तीता स्वाद और कामला प्रभृति कितने ही आनुसंगिक उपसर्ग भी रहते हैं।

दर्द—छातीका, कमरका, तथा पीठ और गर्दनके दर्दमे—

नैट्रम-सल्फ फायदा करता है। निम्नाङ्गका दर्द विशेषकर घुटना अकड़ जाता है, अम्लकी वीमारीके साथ दाँत और गृध्रसी वातका दर्द अगर किसी भी अवस्थामें न घटे तो नेंट्रम-सल्फका प्रयोग करना चाहिये।

पेशावकी वीमारी—पेशावमे कोई विशेप दोप नहीं पाया जाता, पर युरिक एसिडका परिमाण वहुत अधिक रहता है, सीसीमें तली (sediment) जमती है, रोगीको अम्लकी वीमारी और वात रहता है।

सूजाक—पुराना प्रमेह, स्राव गाढा और हरी आभा लिये या पीले रगका, जलन और दर्द कुछ भी नहीं रहता, इस तरहके प्रमेहमें जव रोगीको किसी दवासे स्थायी लाभ नहीं होता, उस समय—नैट्रम-सल्फकी एक वार धीरजके साथ परीक्षा करनी चाहिये (हाइड्रेस्टिस देखिये)।

ज्वर—मैलेरिया ज्वर, सर्दी ज्वर, पित्त-ज्वर, सविराम-ज्वर, अविराम ज्वर इत्यादि किसी भी तरहका कोई वोखार क्या न हो, यदि वोखारके साथ या वोखार आरम्भ होनेपर, हाथ, मुख, आँख और वदनमें जलन हो और वोखार या वोखारके उपसर्ग दो पहरके वाद या संध्यामें वढ जायें, मुँहका स्वाद तीता हो, तो नैट्रम-सल्फ फायदा करता है।

जीभ—किसी वीमारीमें जीभ मैली, भूरी हरी या खाकी हरे रगकी मैली रहनेपर, वह वीमारी इससे आरोग्य होगी।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, ठण्डी चीज खानेपर, तर घरमें रहनेपर, अधड-पानीके दिनोंमें, प्रत्येक बरसातकी ऋतुके आरम्भमे, परिश्रमसे, मछली और सिघाडा खानेपर।

ह्रास (amelioration)—दबानेपर, सोने या सूखी हवा लगनेपर।

सम्बन्ध—नैट्रम-म्यूर और सल्फके साथ इसका समगुण सम्बन्ध है। रस-प्रधान धातुमे—सिफिलिस और साइकोसिस अर्थात् गर्मी और प्रमेह विष प्रवेश कर जानेपर—थूजा और मर्कके साथ और तर ऋतुमे रोग बढ जानेके लक्षणमे डलकामारा-के साथ इसका सादृश्य दिखाई देता है। डल्कामे—गर्मीका समय सर्दीमे बदल जानेपर वृद्धि, नैट्रम-सल्फकी वृद्धि केवल—तर ऋतुमे होती है।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०-४० दिन।
क्रम—(potency))—६x—२०० शक्ति।
फारमुला—विचूर्ण—७। टिंचर—५ प।

नाइट्रि-स्पिरिटस-डल्सिस।

(NITRI-SPIRITUS-DULOIS)

ोमियो[illegible] अपेक्षा—एलोपैथीमे यह दवा अधिक व्यवहृत है। शायद होमियोपैथ-शिरोमणि डा० महेन्द्रलाल सरकारने

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, ठण्डी चीज खानेपर, तर घरमें रहनेपर, अधड-पानीके दिनोंमें, प्रत्येक बरसातकी ऋतुके आरम्भमें, परिश्रमसे, मछली और सिघाडा खानेपर।

ह्रास (amelioration)—दबानेपर, सोने या सूखी हवा लगनेपर।

सम्बन्ध—नैट्रम-म्यूर और सल्फके साथ इसका समगुण सम्बन्ध है। रस-प्रधान धातुमें—सिफिलिस और साइकोसिस अर्थात् गर्मी और प्रमेह विष प्रवेश कर जानेपर—थूजा और मर्फके साथ और तर ऋतुमें रोग बढ जानेके लक्षणमें डलकामारा-के साथ इसका सादृश्य दिखाई देता है। डल्कामें—गर्मीका समय सर्दीमें बदल जानेपर वृद्धि, नैट्रम-सल्फकी वृद्धि केवल—तर ऋतुमें होती है।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०-४० दिन।
—(potency))—६x—२०० शक्ति।
ा—त्रिचूर्ण—७। टिंचर—५ प।

नाइट्रि-स्पिरिटस-डल्सिस।

(NITRI-SPIRITUS-DULCIS)

होमियोपैथीकी अपेक्षा—एलोपैथीमें यह दवा अधिक व्यवहृत ता है। शायद होमियोपैथ-शिरोमणि डा० महेन्द्रलाल सरकारने

हो उनकी अंगरेजी "हैजा-चिकित्सा" पुस्तकमें सबके पहले इसको लिखा है। उन्होने उस पुस्तकके दूसरे संस्करणके १३४ पृष्ठमें लिखा है—जब मूत्र-विकारमें निर्दिष्ट होमियोपेथिक दवासे फायदा न हो, उस समय इसकी ५ बूंद मात्रामें, १०।१५ मिनिटके अन्तरसे कुछ गरम पानीके साथ सेवन करनेपर विशेष लाभ हो सकता है। किसी ज्वर-रोगमें (in low fevers) या किसी दूसरी बीमारी में जब रोगीकी चेतना लोप (Sensorial apathy) हो जाती है, रोगीको बडे कष्टसे जरा-सा जगाया जा सकता है, उस समय एक बडे गिलास-भर पानीमें कई बूंद मूल नाइट्रि-स्पिरिट मिलाकर २।१ चायका चम्मच मात्रामें २।३ घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये। ओपियम, एसिड-फास, हेलिवोरस प्रभृति कई दवाओं के साथ इसका प्रभेद निरूपण करें। श्वासयन्त्रकी बीमारीमें कई कदम चलते ही अगर साँस तेज हो जाये तो इससे फायदा होता है। वक्षमध्योस्थिके नीचे तकलीफ देनेवाला सकोचनकी तरह दर्द हो, इसके द्वारा डिजिटिलिसकी क्रिया बढती है।

फारमुला—६ ए।

नूफर लूटियम।

(NUPHER LUTEUM)

(ताजी जडसे मूल अर्क तैयार होता है)—१। सवेरेके वक्त का अतिसार, २। पतले दस्त आनेवाला टाइफायड ज्वर, ।

ध्वजभग, इन तीन बीमारियोंमें ही इस दवाकी ज्यादा जरूरत पडती है।

अतिसार—विना दर्दका, विना किसी तकलीफके पानी की तरह पतले दस्त, सवेरे ४ बजेसे ७ बजेतक बढना—यह इस दवाका विशेष लक्षण है, मलमें बहुत बदबू रहती है। टाइफायड ज्वरके साथ अतिसारमें इस ढङ्गका लक्षण रहनेपर इससे बोखार में भी बहुत फायदा होता है। सवेरेके वक्तका अतिसार—सलफर, नैट्रम-सल्फ, एलो, ब्रायोनिया, पोडोफाइलम, रियुमेक्स प्रभृतिमें भी निर्दिष्ट है। उनका अध्याय देखकर प्रभेद स्थिर करें।

पुरुषत्वहीनता—कामोद्दीपक बातें अथवा बहुत थोडी उत्तेजनासे ही वीर्य निकल जाता है।

क्रम—१ म, ३ री, ६ ठी शक्ति। फारमुला—३।

नक्समस्केटा।

(NUX MOSCH

(सूखे जायफलको चूरकर इसका

यह स्नायविक, मूर्च्छा ।

बीमारीमें ज्यादा उपयोगी

चरित्रगत लक्षण—

१। वृद्धोंकी

२। सब बीमारियोंमें औंघाईका भाव, आच्छन्न भाव (एण्टिम-टार्ट, ओपियम)। मूर्च्छित हो जानेवाला, थोडे-से दर्दमें भी बेहोशी आ जाती है, ३। हमेशा ही नींद आती रहना; ४। मानसिक गडबडी, किसी विषयको सोच ही नहीं सकता, उदास-भाव, ५। विस्मृति—बोलने या लिखनेमें अनुपयुक्त शब्दका प्रयोग करता है, खूब जानी बूझी राह भी भूल जाता है, ६। हँसते हँसते रोना, रोते रोते हँसना, ७। मुँह जीभ बहुत सूखी, रुईकी तरह लार निकलती है, पर इतनेपर भी प्यासका लेश तक नहीं रहता (मर्कुरियस सोलमें—जीभमें बहुत अधिक रस रहता है, लार गिरती है, इतनेपर भी तेज प्यास रहती है), ८। शरीरकी जो करवट दबाकर सोता है, उसमें कुचल जानेकी तरह दर्द, ९। प्रत्येक बार भोजनके बाद पेट फूल जाता है, १०। जरा बेशी खानेसे ही सरमें दर्द होता है। इसलिये, बहुत थोडा खाता है, ११। गरमीके दिनोंमें, ठण्डी चीजें पीनेपर, शरद ऋतुकी बीमारीमें, गरम दूध पीनेपर, दाँत निकलनेके समय और गर्भवाली अवस्थामें अतिसार, इसके साथ ही औंघाईका भाव या बेहोशीकी तरह हो जाना, १२। एकाएक गला फस जाना, १३। बिछावनपर लेटनेसे, शरीर गरम होनेपर और गरमीसे खाँसीका बढना, १४। ऋतु-स्रावका खून काला और गाढा, ऋतु-स्रावके बदले श्वेत-प्रदरका स्राव (काकुलस); १५। शीत और वर्षा—दोनों ही ऋतुएँ सहन नहीं होतीं, १६। हृत्पिण्डकी कमजोरी।

अतिसार—गर्भावस्थामें अतिसार और दूध पीनेकी गडबडीसे बच्चोंकी बीमारी होनेपर—इस दवासे बहुत फायदा होता है। दस्त—पतला, पीला, खून-मिला, केवल ताजा रक्त, बदहजमीके दस्त, बहुत बदबूदार दस्त होनेके पहले पेटमें बहुत दर्द रहता है और पाखानेके समय लागातार काँखता है, ऐसा समझता है, कि और भी पाखाना होगा। बच्चोंकी पेटकी बीमारी के साथ हमेशा तन्द्रामें घिरे रहनेका भाव और रातमें अतिसार बढ़ जानेपर—नक्स-मस्केटा फायदा करता है।

पेटका दर्द—कुछ खाने-पीने बाद ही पेटमें एक तरह दर्द होता है। यह दर्द गरम सेंक देने या चित होकर सोनेपर कुछ घटता है।

मूर्च्छा-वायु—इस बीमारीमें—इग्नेशिया, मस्कस इत्यादि जो सब उत्तम दवाएँ हैं, उनकी ही तरह नक्स-मस्केटा भी एक उत्तम दवा है। इग्नेशियाकी तरह इसमें भी रोगी का बदलनेवाला मिजाज दिखाई देता है। किसी एक विषय को लेकर ही रोगी जोरसे हँसता है, पर यह हँसी तुरन्त ही विषादमें परिणत हो जाती है और रोगी चिल्लाकर रोता है, न जाने उसका मन कैसा हो जाता है, बहुत सुस्ती, रोगी केवल सोना चाहता है। कभी अज्ञान भावसे पडा रहता है, उस समय उसके मनमें किसी तरहका भी भाव नहीं रहता, दौरा होनेके समय माथा—सामनेकी ओर लटक पडता है। दाँती लग जाती है, जबडे कडे हो जाते हैं, कलेजा धडकता है, कलेजेपर भार-

ा हो जाता है, ऐसा मालूम होता है, कि किसीने कलेजा
बा रखा है। खींचन (spasm), कभी ज्यादा और कभी थोड़ी
रतक रहती है, बेहोशीका दौरा बहुत जल्दी जल्दी होता है,
सके अलावा रोगी अज्ञान अघोर अवस्थामें पड़ा रहता है।
रीरकी त्वचा सूखी और ठण्डी, पसीना बिलकुल ही नहीं होता।
मुँह सूख जाता है, पेटमें वायु इकट्ठा होता है और पेट फूल उठता
है। माथा मानो एक भारी बोझ-सा हो जाता है—ये सब भी
नक्स मस्केटाके लक्षण हैं। दूसरी दूसरी दवाओंके साथ प्रभेद—
एग्नेशिया और मस्कस अध्यायमें देखिये। हिस्टीरियाके सिवा
गर्भावस्थामें प्रसूताकी मूर्च्छा, इसके साथ ही दाँतमें दर्द, जी
मिचलाना और वमन, इसमें भी नक्स-मस्केटा फायदा करता है।

वातश्लेष्मा ज्वर—(टायफायड ज्वर)—इस ज्वर-की विकारावस्थामें जब रोगी अज्ञान और सुस्तकी तरह पड़ा रहता है, उस समय—एसिड फास, एपिटम-टार्ट, एपिस, नक्स-मस, इत्यादि कितनी ही दवाएँ एकके बाद दूसरी याद आती है। नक्स मस्केटामें ऐसे कितने ही विशेष लक्षण हैं—जिन्हें देखकर हमलोग सहजमें ही उसे छाँट ले सकते है, जैसे—मुँह, जीभ बहुत सूखी, पर प्यास एकदम नहीं रहती, बदन ठण्डा और पसीनेसे रहित, पेट बहुत फूलता है, उससे रोगीको बहुत तकलीफ होती है और कलेजेमें बहुत दबाव मालूम होता है, ये लक्षण दूसरी दवाओंमें नहीं दिखाई देते।

विकारमें तन्द्राका भाव—मानो नींदका घोर किसी तरह जाता नहीं—इस लक्षणके साथ अगर अतिसार रहे तो भी नक्स मस्केटा फायदा करता है, हैजाके विकार-ज्वरमें भी ऊपर बताये लक्षणमें—नक्स-मस्केटा फायदा करता है। ओपियम—बहुत कुछ नक्स-मस्केटाके बादकी दवा है। ओपियममें रक्तकी अधिकताकी वजहसे विकार और नक्स-मस्केटामें—स्नायु-सुन्न होकर विकार हो जाता है। ओपियममें—अज्ञान भावके साथ दोनो आँखें शिवनेत्रकी तरह हो जाती हैं और बेहोशकी तरह पड़े रहनेके समय नाक बोला करती है और रोगी इस तरह बेहोशकी तरह रहता है, कि चिकोटी काटनेपर भी उसे मालूम नहीं होता और बोलता नहीं है। एसिड-फासमें भी—रोगी अघोर अज्ञान भावसे पड़ा रहता है, पर पुकारनेपर आवाज देता है, अतिसार रहता है, पेट गड़गड़ाया करता है, इसमें बहुत कम पेट फूलता है, एपिसमें भी—मस्तिष्कपर दौरा होता है और औंघाईका भाव या बेहोशीका भाव रहता है। पर उसमें रोगी कुछ देरतक बेहोशकी तरह निस्तब्ध भावसे पड़ा रहकर एकाएक चिल्लाकर रो उठता है। एण्टिममें—रोगीके आच्छन्न भावके साथ पसीना, वमन और वक्षस्थलमें श्लेष्मा भरा रहता है (लिनेरिया देखिये)।

ऋतुस्राव—ऋतुबन्द और इसके साथ ही हमेशा औंघाईका भाव, मूर्च्छा, सारा शरीर ठण्डा, ऋतुस्राव बहुत देरसे

होता है, और स्राव भी बहुत ज्यादा होता है (obstinate uterine hœmorrhage), रोगिनी बार बार मूर्च्छित हो पड़ती है । स्राव काले रंगका होता है ।

सम्बन्ध—पाराका धूआँ, तारपीन और शराबका दुष्परिणाम इससे नष्ट होता है ।

क्रिया नाशक (antidote)—कैम्फर, जेल्सि, लोरो, नक्स, ओपि, वैलेरि, जिङ्क ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६० दिन ।

क्रम—६—२०० शक्ति ।

फारमुला—टिंचर ४, विचूर्ण—७ ।

नक्स-वोमिका ।

(NUX-VOMICA)

(कोचला—बीजका खूब महीन चूर्ण बनाकर ट्राइटुरेशन या टिंचर तैयार होता है)—रोजकी खानेकी सामग्रियोंमे जिस तरह नमक रहता है, होमियोपैथिक फर्माकोपियामे उसी तरह—नक्स-वोमिका है । इस दवाके द्वारा मानव-शरीरकी प्राय' एक तिहाई बीमारी आराम हो जाया करती है । पाठक ! आप यदि हमसे यह पूछे कि होमियोमे कौनसी दवा प्रधान है ? तो हम निस्संकोच-

भावसे यही उत्तर देंगे—"एकोनाइट और नक्स-वोमिका।" एकोनाइट—वच्छनाग विष, यह नयी और प्रादाहिक वीमारीकी प्रबल अवस्थामें पहले व्यवहृत होता है। डा० वोरिक कहते हैं—"If you do not know what is to give—give Nux-vomica" अर्थात् अगर आपको नहीं मालूम है, कि क्या देना चाहिये, तो नक्स-वोमिका दें।" वास्तवमें होमियोपैथिक चिकित्सा जगतमें इसका महान आदर है।

नक्स-वोमिका—थोड़ी मात्रामें सेवन करनेपर भूख, वल और रमण शक्ति बढ़ती है और अधिक मात्रामें सेवनसे इससे स्ट्रिकनियाकी तरह धनुष्टङ्कार रोगके लक्षण सब पैदा हो जाते हैं।

नक्स-वोमिककी धातु—पित्त या रक्त प्रधान, क्रोधी, रोगी जरा-सी बातमें ही चिढ उठता है, चिडचिड़ा, खूब सतर्क, ईर्षालु, कलह-प्रिय, स्नायु-प्रधान, दुबला-पतला, शराब पीनेवाला, आलसी अथवा जो बैठे बैठे अपने दिन काटते हैं, जो अकसर बलकारक और उत्तेजक दवाओंका व्यवहार करते हैं, जो गृहस्थीकी नाना प्रकारकी चिन्ताओंमें ग्रस्त रहते हैं, अध्ययनशील, बवासीर और कब्जियतकी वीमारी जिनको अकसर लगी रहती है, ऐसे धातुग्रस्त मनुष्योंकी वीमारीमें—नक्स-वोमिका उपयोगी होता है।

रोगकी उत्पत्ति—बहुत दिनोंतक बहुत ज्यादा मसालेदार चीजें, गुरुपाक पदार्थ आदि खाना, स्थूल मात्रामें बहुत दिनोंतक किसी दवाका सेवन और शराब, गाँजा, चरस, अफीम, तम्बाकू,

इत्यादि नशीली चीजें सेवन कर कोई बीमारी पैदा हो जानेपर,—पहले ही नक्स-वोमिकाको स्मरण करें।

रोग-वृद्धि—सवेरे, मानसिक आवेगसे, नींदमें किसी तरहकी गडबडी हो जानेपर, नींदका बँधा समय बीत जानेपर, भोजनके बाद ही तुरन्त (immediately after eating), इसके रोगीको कभी कभी थोडी देरतक खुली हवामें टहलनेपर [illegible] सर्दी लग जाती है और घरके भीतर गरम रहनेपर आराम [illegible] है और कभी कभी इसके ठीक विपरीत होता है, अर्थात्—[illegible] के कष्टदायक उपसर्ग सर्दीमें और खुली हवामें [illegible] ऐसा भी दिखाई देता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। कब्जियत, बार-बार पाखानेकी [illegible] खुलासा नहीं होता, २। बार बार [illegible] जरा-जरा थोडा-थोडा पेशाब [illegible]। सवेरे, भोजनके बाद और [illegible] मालूम होता है कि कै हो जानेसे [illegible]। कै कर देनेकी चेष्टा [illegible]। मानो आँत उतर पडेगी [illegible] पाखाना लगना, [illegible] दस्त आना, [illegible] जल्दी जल्दी [illegible]

विनोतक बना रहता है, ६। बदबूदार श्वेत प्रदर, कपडेमें पोल दाग पडता है, इसके साथ ही जरायुमे दर्द, ८। बलगममें सब गन्ध, भोजनकी सामग्री और पीनेकी चीज सबमें ही सडी गन आती है, १०। मुँहमे खट्टा और तीता पानी भर आया करता है ११। कमर और पीठमे दर्द, करवट बदलनेपर इस दर्दका ब जाना, १२। दिनमें नाकसे पतली सर्दीका स्राव बहना, पर रातं नाक बन्द, १३। बहुत ही कष्ट देनेवाली सूखी खाँसी, इससे तल पेटमे दर्द, १४। शरीरमें बहुत ताप, शरीर मानो जल उठता है इतने पर भी शरीरका वस्त्र उतारनेपर जाडा मालूम होता है १५। भोजनके २।३ घण्टे बाद पेटमें अम्लका दर्द इत्यादि।

कब्जियत—कोठा अगर साफ नहीं रहता तो नान प्रकारकी बीमारियाँ पैदा हो जाया करती है। कब्जमे जहाँ नक्स वोमिकाकी जरूरत होती है, वहाँ रोगीको बराबर पाखाना जानेकी इच्छा बनी रहती है, कोठा बिलकुल ही साफ नहीं होता, वह प्रत्येक बार मनमें यही सोचता है, कि यदि थोडासा और भी पाखाना होता तो अच्छा होता। ब्रायोनिया—की कब्जियतमे पाखाना बिलकुल लगता ही नहीं है। लाइकोपोडियम—बहुत कुछ नक्सकी तरह ही है। उसमे पाखाना जानेकी इच्छा होती है, पर पाखाना होता नहीं है। पेटमें खूब वायु होता है, भोजनके बाद पेट भारी हो जाता है पेटमे दर्द होता है। रैफेनस सैटाइवामें—पेटमें बहुत वायु जमता है, और यह वायु ऊपर या नीचे, किसी ओरसे भी

नहीं निकलता। कार्बोवेज—पाखाना लगता है, पर होता नहीं है, पेटमें वायु होने और पेट फूलनेका भाव बहुत अधिक रहता है, वायु निकल जानेपर पेटका फूलना घटता है। ओपियममें—कब्ज-के साथ छोटे-छोटे काले रंगके गुठले मलके निकलते हैं, आँत, खासकर मलद्वारका भाव एकदम सुन्नकी तरह रहता है, पाखाना लगता ही नहीं, ऊपरी पेटमें वायु होता है, उससे तकलीफ होती है और पेटमें दर्द होता है। जो हमेशा जुलाब लिया करते हैं, उनके लिये—नक्स फायदेमन्द है।

आमाशय—इस बीमारीमें—नक्स-वोमिका, मर्कुरियस, कोलोसिन्थ, नाइट्रिक-एसिड, एलो, सल्फर इत्यादि दवाओंकी अधिक जरूरत होती है। नक्स-वोमिकामें—पाखानेका परिमाण बहुत थोड़ा रहता है, और मलके साथ कभी कभी खून मिली आम, कभी केवल सफेद आम, कभी केवल चमकीले खूनके दस्त आया करते हैं, पाखानेके पहले और पाखानेके समय पेटमें बहुत अधिक दर्द होता है, पर पाखाना हो जाने बाद यह दर्द कुछ देरके लिये घट जाता है। मर्कुरियसमें—पाखाना हो जाने बाद भी पेटका दर्द नहीं जाता। एलोमें—आम और खूनकी मात्रा ज्यादा रहती है। पाखानेके पहले पेटमें खूब अधिक दर्द रहता है, पाखाना हो जाने बाद यह दर्द कभी रहता है और कभी नहीं भी रहता है। पाखाना गरम और वायु निकलनेके साथ निकलता है। आमरक्तकी बीमारीमें (in Dysentry)—रक्तका भाग और कुन्थन तथा शूलका दर्द बहुत अधिक रहता है। मलद्वारमें जलन, खाने

पीनेके बाद उपसर्गो का बढ़ना—ये सब लक्षण रहनेपर, रोगकी नया और पुरानी, दोनो ही अवस्थामे—ड्राम्बिडियम फायदा करता है, इसका अध्याय देखिये। हिपर-सल्फर—और सल्फर बीमारीकी पुरानी अवस्थाकी उत्तम दवाएँ है। कोलोसिन्थमे—पेटमे बहुत अधिक ऐठनका दर्द होता है, खाने-पीने बाद बढता है, प्राय आध घण्टेका अन्तर देकर दस्त आते है।

अतिसार—भोजनमे दोष, रातमे जागरण, अमिताचार इत्यादि कारणोसे अगर पतले दस्त आने लगें और अतिसारमें बार-बार पाखानेके वेगके साथ, थोडा-थोडा पाखाना हो, और सवेरेके वक्त पाखाना ज्यादा हो,—नक्स-वोमिका फायदेमन्द है। अतिसारके साथ वमन या मिचली रहनेपर यह और भी फायदा करता है।

बार-बार पाखाना लगना, पाखाना खुलासा नहीं होता, रोगीको बार-बार पाखाने जाना पडता है, ये सब लक्षण, नक्सकी भाँति, एनाकार्डियममें भी—दिखाई देते है, पर इनमे प्रभेद यह है, कि, नक्स-वोमिकामें इस ढङ्गका वेग पेटमें अनुभव होता है, वेग बराबर बना रहता है, आँतोको खाली करनेके लिये रोगी बराबर काँखता रहता है, बहुत देरतक बैठा रहता है। पाखाना हो आने बाद भी यह वेग दूर नहीं होता, पाखानेसे उठ आता है, पर फिर जाता है। एनाकार्डियममें—बार-बार पाखानेका वेग पर पाखाना खुलासा नहीं होता, यह लक्षण रहनेपर भी, उसमें जो वेग रहता

है, वह मलद्वारके पास ही ज्यादा अनुभवमें आता है। पाखानेके लिये बैठते ही पाखानेका वेग चला जाता है, रोगीको अच्छा मालूम होता है, नक्समें—वेग सभी समय रहता है, कभी भी अपनेको स्वस्थ नहीं समझता।

बदहजमी और अम्लकी बीमारी—रोगी जो कुछ खाता है, उसका अच्छी तरह पाचन नहीं होता और पेटमें दर्द होता है। यह दर्द मरोड या पेठनकी तरह होता है। तकलीफसे रोगी बेचैन हो पडता है, इसके साथ ही कब्ज और थोडा-थोडा दस्त होता है, पाकस्थलीमें बहुत अधिक उत्तेजना रहती है, कुछ खाते ही पेटमें मरोड होकर तुरन्त वमन हो जाता है, वमन प्रायः खट्टा, कभी-कभी तीता, लगातार तकलीफ देनेवाली ओकाई आया करती है। रोगी कभी कभी गलेमें अंगुली डालकर कै कर देता है, पेटमें वायु-सञ्चय होता है और मुँहमें पानी भर आता है। नक्समें—गरम पानी पीनेपर बल्कि उसे कुछ आराम मालूम होता हैं। रातमें जागरण, बहुत ज्यादा भोजन, शराब पीना, नशीले पदार्थोंका सेवन इत्यादि कारणोंसे बीमारी पैदा होनेपर—नक्स-वोमिकासे तुरन्त फायदा होगा। बिस्मथमें—कोई पानीय पीनेपर तुरन्त कै हो जाती है, इसके साथ ही पेटमें जलन रहती है। आर्सेनिकमें—पेटमें जलन और कुछ पीते ही वमन होता है, पर इसमें रोगीमें बहुत प्यास और छटपटी इत्यादि दूसरे दूसरे लक्षण सब रहते हैं। कितनी ही बार ऐसा दिखाई देता है, कि इस बीमारीमें—

नक्ससे पूरा पूरा फायदा न होनेपर, इसके वाद—कार्वोविज
फायदा होता है। नक्स-वोमिकामे—कभी कभी अतिसा
कभी कभी कब्ज ऐसा दिखाई देता है। (इपिकाक और पल्से
टिला देखिये)।

हिचकी—हैजामे हो या स्नायविक हो, अथवा अजीर्ण
कारण हो, या वक्षोदर मध्यस्थ पेशीके सिकुडनेकी वजहसे
(वक्षोदर मध्यस्थ पेशी एक मोटा परदा है। यह वक्ष (chest
और पेटके (abdomen) बीचमे रहकर, यह वक्ष और पेट
दो भागोंमे विभक्त किये हुए है, डायफ्राम इस तरह बीचमें रहने
के कारण, वक्षके भीतरके यन्त्र, पेटके भीतरवाले यन्त्र वक्षके भीत
के किसी यन्त्रको छू नहीं सकते। इसी डायफ्रामके ऊपर फेफड़
हृत्पिण्ड तथा नीचेकी ओर यकृत, पाकस्थली, प्लीहा प्रभृति रह
हैं), हिचकी आती देखते ही हमलोग कितनी ही वार पहले
नक्स-वोमिकाका प्रयोग कर बैठते है। नक्ससे फायदा न होनेप
दूसरी दूसरी दवाओंकी खोज पडती है। हैजामें हिचकी प
प्राणघातक उपसर्ग है। इससे नाडी वहुत जल्द छूट जा
है और वहुतसे रोगी मर भी जाते हैं। हैजामें—पाकस्थलीक
उत्तेजनाकी वजहसे ही अकसर हिचकी आया करती है। वहुत-स
हिचकियाँ एकत्र होने और उसके साथ ही समूचा शरीर कां
उठनेपर उसे प्राणघातक अवस्था समझनी चाहिये। हैजामें शी
आ जाने वाद, प्रतिक्रिया आरम्भ होनेके पहले अगर थोड
हिचकी हो तो उसे शुभ-लक्षण समझना चाहिये। समझन

चाहिये कि इससे खूनके दौरानकी क्रिया आरम्भ हो गयी है कूप्रम और कूप्रम-आर्स ही—हैजाकी हिचकीको दूर करनेकी श्रेष्ठ दवाएँ है।

नक्स-वोमिका—बहुत ज्यादा खाने-पीनेकी वजहसे हिचकी, खट्टी या धुन्द डकारके साथ हिचकी, पेट फूलना, एलोपैथिक दवाएँ सेवन करने बाद हिचकी, ठण्डा पानी पीनेपर हिचकीका बढ जाना।

एमोन-म्यूर—इसका अध्याय देखिये। हिचकीमे इसके द्वारा कितनी ही वार बहुत ज्यादा फायदा होता है।

पल्सेटिला—खट्टी डकारके साथ हिचकी, कोई ठण्डी चीज पीते ही हिचकीका बढ जाना।

कार्बोवेज—हिलने डोलनेपर हिचकीका बढ जाना, पेट फूलता है, हिचकीके बाद आँखे उलट जाती है और रोगी पडा रहता है।

लाइकोपोडियम—पेट फूलनेके साथ हिचकी, पेटमे बहुत वायु इकट्ठा होता है।

फास्फोरस—कुछ खाने अर्थात् कुछ पेटमे जानेपर ही हिचकी, पेटमे भयानक कनकनी।

वेरेट्रम-एल्वम—हिचकीके साथ ही तलपेटमे दर्द और उदर-पेशीका आक्षेप। इसके पसीनेका लक्षण इस स्थानपर याद रखना चाहिये।

वेलेडोना—हिचकीके समय सारे शरीरका काँपना, बार बार

रह रहकर हिचकी, एक हिचकीके बादसे बादवाली हिचकीके समयतक मानो कानमें ताला बन्द हो जाता है, वमनेच्छा।

रैटानहिया—तेज़ हिचकी (violent Hiccough)।

इग्नेशिया—पानी पीने या कुछ खानेपर ही हिचकी, तीत डकारके साथ हिचकी, नाभीके चारों ओर खोंचा मारनेकी तरह दर्द।

कैलि-ब्रोम—लगातार हिचकी, रुकती ही नहीं (एसिड-सल्फ)।

एगनस—हिचकीके साथ वमन और मिचली, रोगी चिडचिडा।

साइक्यूटा—जोरकी आवाजके साथ हिचकी, लगातार हिचकी, हिचकी रुकती नहीं है, बीच बीचमे यद्यपि थोडी घटती है, फिर आने लगती है। पाँच सात दिन एक भावसे लगातार आया करती है। सोये सोये हिचकी आती है, कभी कभी रोगी बेहोश की तरह पडा रहता है। अगर क्रिमिका दोष रहे तो यह और भी ज्यादा फायदा करता है (सिना, सैण्टो, स्पाइजेलिया, टियुक्रियम)। इसकी ३० शक्तिकी ७।८ छोटी गोलियाँ, २।४ आउन्स पानीमे मिलाकर २।१ चायकी चम्मचकी मात्रामे २ घण्टेका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये। कमसे कम ४८ घण्टोतक दवा न बदलनी चाहिये। अगर ३० शक्तिसे फायदा न हो तो अन्तमे—२०० शक्ति की २।१ मात्रा प्रयोग कर देखना उचित है। हिचकीमे कोई भी दवा जल्दी न बदलनी चाहिये। दो एक दिन धीरज रखना चाहिये। साइक्यूटामे पाकस्थलीमें जलन और दर्द रहता और ढेलाकी तरह हो जाता है।

स्टैफिसेग्रिया—लगातार हिचकी, इसके साथ ही मिचली, प्यास नहीं रहती।

एमिल नाइट्रेट—खानेकी किसी दवासे फायदा न होनेपर रूमालमें ढालकर या नाकके पास शीशी रखकर इसे सूँघना चाहिये।

थाइयनेम-ग्रूनिफोलियम—न रुकनेवाली हिचकी, किसी भी दवासे अगर स्थायी फायदा न दिखाई दे, या बिलकुल ही फायदा न हो, क्रम—ϕ,—फी प्रति मात्रामें १ से ४।५ बूँदतक बार बार प्रयोग करना चाहिये।

एसिड-हाइड्रो—बेहोश हो जाना, बार बार छोटी साँस लेने और छोड़नेके साथ हिचकी।

मस्कस—सामयिक हिचकी विना किसी तकलीफके हिचकी,—फिलिपस-मास।

जिनसेङ्ग—ϕ, सब तरहकी हिचकीकी महोपधि है। मात्रा ४।५ बूँद, थोड़े पानीके साथ आधा घण्टाका अन्तर देकर सेवन करना चाहिये।

कसेरूका रस प्रत्येक बार एक तोला, हैजाकी हिचकीमें फायदा करता है।

एसिड-एसेटिक—(सिर्का अम्ल या विनिगर)—इसके द्वारा भी हिचकी दूर होती है। शुद्ध सिर्काका अम्ल (विनिगर, ८।१० बूँद मात्रामें पानीके साथ २।४ बार सेवन करनेपर कितनी

ही वार हिचकी बन्द हो जाती है, हिचकीके साथ वदवूदार डकार आनेपर यह और भी ज्यादा फायदा करता है।

जिङ्कम-आर्सेनिक—इत्यादि भी हिचकी की दवाएं हैं। डा० हुसलर—मैग्नेशिया-फास ६x—१२x विचूर्ण, गर्म पानीके साथ वार वार १०।१५ मिनिटके अन्तरसे प्रयोग करनेका उपदेश देते हैं। अगर किसी तरह भी हिचकी न वन्द हो तो समझ ले कि पेटमे क्रिमि है, ऐसी अवस्थामें क्रिमिकी दवाका अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

कालिक या शूलका दर्द—पेटमे वायु इकट्ठा होकर वह ऊपर या नीचेकी ओर धक्का मारता है, इसी वजहसे अगर पेटमें दर्द और वहुत अधिक श्वासकष्ट हो और पाखाना पेशाव लगनेपर भी पाखाना पेशाब न हो, तो—नक्ससे फायदा होगा। अर्शका रक्तस्राव वन्द होकर, शूलका दर्द या माथेके भीतर कोई वीमारी होनेपर—नक्स-वोमिका ही उसकी उपयुक्त दवा है (नक्स—φ, ३।४ बूँद मात्रामे कभी प्रयोग कर देखें।)

आरजिमोन-मेक्सिकेना—यह दवा न्यू रेमिडिजके अन्तर्गत है। कालिकके दर्दमे—पाकस्थलीके ऊपरकी ओर और आँतमे अर्थात—ऊपर और नीचेके—समूचे पेटमे भयानक पे ठन या शूलका आक्षेपिक दर्दके साथ डकार, मिचली, नीचेसे वायु निकलना, भूख न लगना प्रभृति लक्षण हो तो इसका व्यवहार करें। क्रम—३ री, ६ ठी शक्ति।

मूत्र-पथरी—रेनल कालिक (Renal colic)—इस बीमारीमें तकलीफको दूर करनेके लिये वार्बेरिस, कैन्थरिस, लाइकोपोडियम इत्यादि दवाएँ रहनेपर भी दाहिनी ओरके मसानेकी जगहसे दर्द पैदा होकर अगर यह दर्द पैरतक उतर जाये और इसके साथ ही कमरमें दर्द रहे तो—नक्स-वोमिका ही फायदा करता है। वार्बेरिस—मूत्र-शूल और पित्तशूल, दोनों तरहकी बीमारियोंमें ही लाभदायक है, दर्द रह रहकर और एकाएक पैदा होता है और एकाएक ही आराम हो जाता है,—इस लक्षणमे—बेलेडोना फ़ायदा करता है। मूत्र-पथरीमें, कैन्थरिस, वार्बेरिसकी तरह—नक्स भी दर्दके समय व्यवहृत होता है और इससे कितनी ही जगह पथरी निकलकर दर्द घट जाता है (मैन्यापिप देखिये)।

बवासीर—लगातार पाखाना जानेकी इच्छा और वेग, पर पाखाना खुलासा नहीं होता। इन लक्षणोंके साथ बवासीरमें मलद्वारसे खून निकलना, मलद्वारमें बहुत कुटकुटी और खुजली रहनेपर—नक्स-वोमिका फायदा करता है। कालिन्सोनिया, इस्क्युलस, एलो, एसिड म्यूर, फास, हैमामेलिस, सलफर इत्यादि भी अर्शकी दवाएँ हैं, उनका अध्याय पढ लें। इस बीमारीमें नक्ससे कुछ फायदा होकर, अगर फिर फायदा होना बन्द हो जाये तो पूरी तरह आरोग्यके लिये अकसर सलफरकी जरूरत पडती है। (ग्रैफाइटिस और साइलेसिया देखिये)। रक्तस्रावी अर्शमें रोगीको—

रोज ३।४ इलिस मछली भूनकर खानेसे रक्तस्रावमे फायदा होत है। उसमे फास्फोरस रहनेके कारण खून बन्द होता है आयापानका रस खून बन्द करनेकी बढ़िया दवा है।

यकृत—यकृत बडा और कडा, उसमे बहुत दर्द, कभी कभी शूलके दर्दकी तरह एक तरहका दर्द होता है और उसके साथ ही ज्वर रहता है। नशाखोर, व्यभिचारी और जो अकसर जुलाब लिया करते हैं और गुरुपाक चीज खाते हैं,उनकी बीमारीमे—नक्स फायदा करता है।

कामला—शराबियोके कामला रोगमे—नक्स फायदा करता है। बहुत ज्यादा किनाइन सेवन कर यदि कामला हो तो पहले नक्स वोमिकाको स्मरण करें। चेलिडोनियम, कार्डुयस इत्यादि भी इस रोगकी दवाएँ हैं।

अन्त्रवृद्धि—(हार्निया)—अम्बिलिकेल और इगुइनल (umbilical and inguinal) दोनो तरहकी आँत उतरनेमें नक्स-वोमिकाका प्रयोग किया जा सकता है, दाहिनी ओरके इग्विनल हार्नियामें—लाइकोपोडियम फायदा करता है। अम्बिलिकल हार्नियामे—नक्ससे फायदा न होनेपर,—काकुलससे फायदा होता है।

अन्त्रवृद्धि—इनकारसिरेटेड (इसमे आँत बाहर निकल पडती है, लौटकर अपने ठिकाने जा नहीं पाती या अगर लौट भी जाती है, तो फिर गिर पडती है)—नक्स, ओपि, प्लम्बम उसकी दवाएँ हैं।

हर्निया—स्ट्रैंगुलेटेड (रुकी हुई आँत अपनी जगहपर लायी नहीं जा सकती)—लाइको, प्लम्बम, टैबेक (प्लम्बम देखिये)।

हर्निया—इंगुइनैल (पुट्ठे की जगहकी आँत उतरना)—काकुलस, नक्स, सल्फ, एसिड-सल्फ, लाइको प्रभृतिसे फायदा होता है।

किसी किसीका कथन है, कि—खूब ऊँची शक्तिका ओपियम सेवन करनेपर इंगिनल और स्ट्रैंगुलेटेड दोनों तरहकी ही अन्त्र-वृद्धि आरोग्य हो जाती है।

द्रष्टव्य—केवल दवा सेवनसे यह बीमारी आराम होते मैंने कभी नहीं देखा, पर सभी मैटेरिया मेडिकाओंमें ये दवाएँ लिखी है, इसलिये मैंने भी लिख दी है। हर्नियाका खयाल होते ही दवा सेवन करनेके साथ ही साथ ट्रस (trus) का व्यवहार करना आरम्भ करा देना चाहिये। रोगकी पहली ही अवस्थामें सावधान हो जानेपर दो एक रोगी आरोग्य भी हो जाते हैं।

बाधकका दर्द अतिरजः—बाधकमें—ऋतु बँधे समयके पहले हो जाता है और स्राव मात्रामें बहुत थोड़ा होता है। इस समय तलपेटमें भयानक दर्द होता है। कभी कभी ऋतु ठीक समयपर होता है और स्राव भी बहुत अधिक होता है, इस समय रोगिनीके सारे शरीरमें गरमी अनुभव होती है।

पेशाबकी बीमारी—खूनका पेशाब—बहुत ज्यादा खाना-पीना, रातमें जागरण, शराब आदि पीनेके बाद बीमारी।

बार बार पेशाबका वेग, मूत्राशय खाली करनेके लिये बार बार काँखना पड़ता है। पेशाब खुलासा नहीं होता। मूत्राशयकी ग्रीवाके स्थानपर स्नायुशूल और मूत्रकृच्छ्र, बार बार तकलीफ देनेवाला पेशाबका वेग, पेशाब बूँद बूँदकर निकलता है, पेशाबके द्वारपर जलन होती है। मूत्राशय ग्रीवाके स्थानका आक्षेपिक सकोचन (spasm)—इसलिये पेशाब बन्द, सन्तानका प्रसव होनेके पहले मूत्राशयका पक्षाघात—पेशाब सामान्य परिमाणमें, थोड़ा होता है या एकदम बन्द रहता है।

रक्तोत्कास—इसे कोई-कोई रक्त-पित्तकी बीमारी भी कहते है। रातमें जागरण, शराब पीना, व्यभिचार इत्यादिके बाद मुँहसे खून निकलनेपर—नक्सवोमिका फायदा करता है (एकालिफा अध्याय देखिये)।

प्रमेह—नक्स-वोमिका का प्रमेहका स्राव पतला रहता है, सूजाकका मवाद बन्द होकर, पेशाबकी नलीके भीतर और लिङ्गकी जड़में दर्द रहनेपर और इसके साथ ही नक्सका चरित्रगत लक्षण—बार बार पाखाना-पेशाबका वेग और थोड़े थोड़े परिमाणमें पाखाना पेशाब होते रहनेपर—नक्स-वोमिका फायदा करता है।

सर-दर्द—माथेके पिछले भागकी ओर दर्द (Occipital headache), एक ओरकी कनपटीमें दर्द, यह दर्द आँखके ऊपर विशेषकर बायीं आँखके ऊपर ही अधिक होता है और सूर्योदयसे आरम्भ होकर सूर्यास्तके समय बन्द होता है। इसके साथ ही

अम्लके लक्षण भी रहनेपर—नक्स-वोमिका और भी ज्यादा फायदा करता है। अधकपारीके सर-दर्दमें-सैंगुनेरिया, स्पाइजेलिया, आइरिस, वेलेडोना, नैट्रम इत्यादिकी तरह—नक्स-वोमिका भी फायदा करता है।

दाँतका दर्द—सर्दी लगकर वीमारीका उत्पन्न हो जाना, दर्द-यन्त्रणा—ठण्डी हवामें, ठण्डा पानी दाँतमें लगनेपर और भोजनके वाद ही तुरन्त वढ जाता है और गर्म प्रयोगसे घटता है।

सर्दी-खाँसी—पेट गरम होकर खाँसी अर्थात पेटकी कोई गडवडी होकर खाँसी होनेपर—नक्स फायदा करता है। स्नायविक खाँसीमें भी—नक्स फायदा करता है। सर्दीकी पहली अवस्थामें जब सर्दीके साथ छींक, नाकका जकड जाना, नाकसे कुछ न निकलना, अथच आँखसे पानी गिरता है। कण्ठनली सूखी रहती है, उस समय—नक्स फायदा करता है। मर्क्युरियस-सोल मे—नाकसे पानीकी तरह नयी-सर्दी निकलती है और नाक और गलेके भीतर वहुत अधिक अकडनका दर्द रहता है। (पल्सेटिला-सिपा देखिये)।

छोटे छोटे वच्चोंकी नाक वन्द हो जानेके साथ छींक, नाकसे गर्म पानीकी तरह सर्दी निकलनेके साथ सूखी खाँसी, नींद न आना इत्यादि लक्षण रहते हैं, वहाँ कैमोमिला फायदा करता है। नक्समें—नाक सूखी रहती है। स्टिक्टामें—लगातार सूखी खाँसी आती है, इसमें भी नाक वन्द रहती है और सर्दी सूख

जाती है, पकी गाढ़ी सर्दीके स्रावमें—पल्सेटिला, कैलि-सल्फ फायदा करता है।

ज्वर—पारीका बोखार, जाडा बोखार, कम्पज्वर, दो बार आनेवाला द्वौकालीन ज्वर, मैलेरिया, प्लीहा और यकृत सम्बन्धी ज्वरमें, यहाँतक कि सामान्य ज्वरमे भी—नक्स-वोमिका से फायदा होता है। नीचे लिखे लक्षण अगर किसी ज्वरमें रहें—नक्स-वोमिकासे फायदा होगा। नक्स-वोमिकाका ज्वर आनेका कोई बँधा समय नहीं रहता, दिनमे सभी समय बोखार आ सकता है, जो ज्वर रोज कुछ आगे बढकर आता है, जो ज्वर पीछे हटकर आता है (Postponing fever), जो ज्वर नित्य एक ही समय आता है, सब तरहके ज्वरोंमे ही नक्स-वोमिका फायदा करता है। नक्समें—रातके अन्तिम भागसे, सवेरे ८।९ बजेके भीतर ही ज्वर आनेका निर्दिष्ट समय है। ज्वर आनेके पहले हाथ-पैरमें बहुत ऐंठन होती है। शीतावस्था—इस अवस्थामें बहुत अधिक शीत और कम्प, सेंकने या गर्म कपडेसे भी जाडा नहीं घटता, शरीर नीला रंग धारण करता है, इस अवस्थामे प्यास बिलकुल ही नहीं रहती, जम्हाई आती है। हाथ-पैरमें भी बेतरह ऐंठन होती है, रोगी तकलीफसे बेचैन हो पडता है, कुछ देरतक यही अवस्था रहकर फिर उत्तापकी अवस्था आती है। उत्तापावस्थामें—यह अवस्था बहुत देरतक स्थायी रहती है, साथ ही बहुत तेज प्यास रहती है, रोगीको बहुत तकलीफ

होती है, समूचा शरीर मानो जला जाता है, पर नक्सका एक विशेष लक्षण यह है, कि—इतना उत्ताप रहता है, पर शरीरका कपडा जरा भी उतार नहीं सकता, उतारते ही इतना जाडा मालूम होता है, कि तकलीफ होती है, रोगी किसी तरह शरीरका कपडा उतार नहीं सकता, सरमें भयकर दर्द होता है, भूल वकता है, आखे लाल हो जाती हैं, पेटपर हाथ रखनेसे ठण्डा मालूम होता है। पर भीतर मानो आग जला करती है। कितनी ही बार शीतके बाद ही रोगी सो जाता दिखाई देता है।

पसीनेवाली अवस्था—इस अवस्थामे प्यास रहती है। प्यास थोडी देरतक रहती है। पसीना भी थोडा ही होता है। इस समय हाथ-पैरोंमे पेठन और शरीरका दर्द घट जाता है, इस दशामे भी रोगीके शरीरमे हवा लगनेपर या जरा हिलने-डोलनेपर सर्दी मालूम होती है। बोखार छूटनेपर—अकसर पित्तकी के होती है, माथा भारी हो जाता है, सरमें चक्कर आता है। हाथ-पैरमें दर्द होता है। यकृत और प्लीहामें दर्द होता है, सूखी खाँसी आती है, पर इस अवस्थामे भी शीत नहीं छोडता। सारांश यह कि नक्स-वोमिकामे—सभी समय रोगीको जाडा मालूम होता है, यह जाडेका भाव, जरा भी हिलने डोलने या बदनका कपडा उतारनेपर बढ जाता है। रोगी सभी अवस्थाओंमे जाडेसे सिकुडकर चुपचाप सोया रहता है। इसके साथ ही भीतर एक तरहका शीत पर वाहर तेज उत्ताप रहता है। इससे ऐसा

मालूम होता है, मानो शरीर जला जाता है। किसी भी ज्वरं ये लक्षण रहनेपर—नक्स उसे अवश्य आरोग्य कर दे सकेगा (पहले ३० शक्ति दें)।

वृद्धि (aggravation)—मानसिक परिश्रमसे, सवे भोजनके बाद, क्रोध आ जानेपर, शीतसे, रजःस्रावके अन्तमे सर्दीका स्राव बन्द होनेपर।

ह्रास (amelioration)—विश्रामसे, सन्ध्याके समय,उत्ताप से और गरम आहारसे।

सम्बन्ध—प्राय सभी रोगोंमे सलफरके साथ नकसका अनु पूरक सम्बन्ध है। जिङ्कमके पहले या बाद इसका व्यवहार नहीं होता। आर्स, इपि, फास, सिपि और सलफरके बाद—नक्स और नक्सके बाद—ब्रायो, कोवाल्ट, पल्स और सल्फ खासा फायदा करता है। नक्सके बाद—पल्सेटिलाकी अपेक्षा सिपियासे ज्यादा लाभ होता है। पुरानी बीमारीका इलाज करनेके समय—नक्स, सोनेके समय या सोनेके क्रमसे कम दो घण्टे पहले सेवन करना चाहिये। क्योंकि शरीर और मन स्थिर रहनेपर इसकी क्रिया अधिक होती है।

बादकी दवा (follows well)—आर्स बेल, ब्रायो, कार्बो, कोलचि, लाइको, फास, पल्स, रस, सिपि, सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—एकोन, आर्स, बेल, कैमो, काकु, कैम्फर, काफि, ओपि, पल्स, थूजा।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन ।

क्रम—१x—२०० शक्ति। फारमुला—टिंचर ४, विचूर्ण—७ ।

ओसिमम कैनम ।

(OCIMUM CANUM)

(ताजे तुलसीके पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है)—यद्यपि इस दवाका दूसरी दूसरी बीमारियोंमें प्रयोग होता है, तथापि—पेशाबमें यूरिक-एसिड, पेशाबमें लाल रंगके पदार्थकी बालूकी तरह तली जमना, स्तन और पुट्ठे की गाँठ फूलना, मूत्र-पथरी—दाहिनी ओरके मसानेमें दर्द, वमन, दमा, सर्दी-खाँसी, बदबूदार लोचियाका स्राव प्रभृति कई बीमारियोंमें इससे बहुत फायदा दिखाई देता है।

पेशाबमें अम्ल या यूरिक एसिडका भाग खूब अधिक, पेशाब गदला, गाढा, पेशाबमें पीब, रक्त, ईंटके चूरकी तरह लाल रंगकी या पीले रंगकी तली, कस्तूरीकी गन्ध, मूत्रनलीमें दर्द, पाखानेमें दर्द इत्यादि कई उपसर्ग अगर किसी रोगीमें दिखाई दें तो इसका प्रयोग करें—फायदा होगा। यह बार्बेरिस, पैरिरा और आर्टिकाके सदृश है।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—३।

इनैन्थि क्रोकेटा ।

(ŒNANTHE CROCATA)

(गाछमें कली आनेके समय जड उखाडकर मूल अर्क तैयार होता है)—स्त्रियोंको ऋतुके समय या गर्भावस्थामे मृगीकी तरह खींचन होना—इस दवाका प्रधान चरित्रगत लक्षण है और इसी वजहसे यह पियोरपेरेल एक्लामसियाकी एक प्रधान दवा मानी जाती है। इयुरिमिक कान्वलशनकी भी यह एक उत्कृष्ट दवा है। इसमे रोगिनी एकाएक बेहोश हो पडती है, पेटका रग काला या नीला हो जाता है। आँखें स्थिर रहती है, आँखकी पुतली—(pupil) बडी हो जाती है, मुँहकी पेशी फडका करती है, मुँहसे फेन निकलता है, दाँती लग जाती है, खींचनके समय पीछेकी ओर टेढी पड जाती है (बेलेडोना अध्यायमें सूतिकाके अन्तर्गत—पियोरपैरैल एक्लैम्सियाके लक्षण देखिये।)

सदृश—साइक्यूटा, कैलि-ब्रोम।

क्रम—३ री, ६ठी शक्ति। फारमुला—३।

इनोथेरा बायेनिस ।

(ŒNOTHERA BIENNIS)

—(ताजे गाछसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—यह दवा मै साधारणत सिर्फ पेटकी बीमारीमे खासकर पुराने अतिसारमें

ग्रहणी, सूतिका इत्यादिमें ज्यादा व्यवहार करता हूँ और इससे फायदा भी दिखाई देता है। बहुत दिनोंतक अतिसार भोगने बाद बच्चेके मस्तिष्कमें पानी इकट्ठा हो जानेकी तैयारी (हाइड्रो केफालस) होनेपर और बच्चा बराबर गुमसुम बदहवासकी तरह पड़े रहनेके लक्षणमें इससे ज्यादा फायदा होगा। बच्चोंके हैजामें यदि किसी दवासे फायदा न हो, तो इसका प्रयोग करें। गर्मीके दिनोंके अतिसारकी भी यह एक बढ़िया दवा है। प्रसवके बाद प्रसूताका अतिसार, रक्तहीनता, कमजोरी, क्षीणता, किसी भी दवासे आराम न होनेपर धीरजके साथ इसका प्रयोग करें। इसमें पेट विशेषकर नाभीके नीचे बहुत अधिक मरोड़का दर्द होता है।

क्रम—६—१x शक्ति।   फारमुला—३।

ओलियैण्डर।

(OLEANDER)

(कनेरके गाछके पत्तेसे इसका टिंचर तैयार होता है)—यह एक सुस्ती लानेवाली दवा है। इसके सेवनसे—भोजनके बाद ही पेट खाली मालूम होना, स्तन-पिलानेवाली धायकी भयानक कमजोरी, कमजोरीके कारण चलनेकी ताकत न रहना, बिना दर्दका किसी अंग-प्रत्यंगका पक्षाघात और एक तरहका चर्म-रोग इससे आरोग्य होता है। उदरामयमें—अगर मलके साथ कुछ अजीर्ण

पदार्थ निकले तो—ओलियेण्डर उसका महौषध है और पलो आर्स, चायना, फेरम प्रभृतिकी सदृश दवा है।

अतिसार—मल पानीकी तरह पतला—उसके साथ कुछ अजीर्ण खाद्य-पदार्थ—यही इसका प्रधान लक्षण है। रोगीने बहुत दिन पहले भी जो कुछ खाया है, वह भी हजम न होकर दस्तके साथ कुछ निकल जाता है और वायु निकलनेके साथ अन-जानमे मल निकल जाता है। रोगीको जितनी बार वायु निकलता है, प्राय उतनी ही बार कुछ न कुछ दस्त निकलता है। यह अन्तिम लक्षण—पलोम भी है, पर इन दोनोंमे प्रभेद यह है, कि यदि उस तरहकी बीमारी बच्चोंको होती है और उनकी लगोटीमे प्राय मल लगा है, तो—ओलियैण्डर ही इसकी प्रधान दवा है। (चायना और पसिड-फास अध्याय देखिये)।

चर्म-रोग—माथा और कानके पीछे एक तरहका उद्भेद निकलता है। उससे लगातार रस निकलता है, बहुत खुजलाहट होती है, रस निकल्ता है, कोडे पड जाते है। अण्डकोषमे, उरुमे और गर्दनमें खाल उधेडनेवाले घाव (दूसरी दूसरी दवाओंके लिये ग्रैफाइटिस अध्याय देखिये), इसके चर्ममे बहुत ही स्पर्श-असहनीय दर्द रहता है, जरा भी रगड लगनेपर बहुत तेज दर्द मालूम होता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, सल्फ।

क्रम—३—२०० शक्ति। फारमुला—२।

ओलियम जेकोरिस ।

(OLEUM JACORIS)

काड नामक मछलीके यकृतसे यह दवा तैयार होती है, इसमें आयोडिन भी मिला रहता है। इसीलिये, जो बीमारी आयोडिनसे आरोग्य होती है, जैसे—गांठे, सर्दी, खाँसी, शरीरके पोषण क्रियाकी कमी, यकृत, आँत, पाचन-यन्त्रका विकार, रक्तके लाल कणका घट जाना, इससे ठीक वैसी ही बीमारियाँ आरोग्य होती है। इसके अलावा—जो सब बीमारियाँ आयोडिनसे आराम नहीं होतीं, वे इससे आराम होती है, क्योंकि तेलका भी एक अलग ही भेषज-गुण रहता है। कण्ठमाला, दुबलापन, बच्चोंकी सुखण्डी, कमजोरीके साथ माथा और हाथ गरम हो जाना, रातमे ज्वरका भाव, बेचैनी, यकृतमे दर्द, बच्चोका दूध न पीना, शरीरका पीला पड जाना, तलहत्थीमे जलन, खाँसी छातीकी कई बीमारियाँ, हड्डीकी बीमारी, पुराना अतिसार, घुटने और कोहनीमे ऐठन, फराडरा और पेशीका कडापन प्रभृतिमें इससे बहुत फायदा होता है।

गांठोकी बीमारी—कण्ठमाला धातुवाले मनुष्योंकी गाठें, गर्दन, गाल, गला, कान, पुट्ठे प्रभृतिमे गाठें हुआ करती है, इसमें—ओलियम-जैकोरिस फायदा करता है। —

हड्डीका जखम और सूजन—बडी हड्डियोंके जखम मे और गाठोंके चारो ओरका फोडा और नासूर होनेपर इससे

फायदा होता है। हड्डीकी सूजन, हाडका कोमल होना, हड्डीके पासके फोडे, क्षय-ज्वर प्रभृतिमे भी यह फायदा करता है। इसके द्वारा स्वास्थ्यकी बहुत उन्नति होती है। नेक्रोसिस और वेर्टिब्रेल केरीज (कशेरुका अस्थिके फोडामे) यह कोई भी लाभ नहीं दिखाता।

सर्दी-खाँसी—जरा-सी ठण्ड लग जानेपर भी जिन्हें सर्दी हो जाती है, प्राय नयी सर्दी होता है, नाकसे हमेशा पानी गिरा करता है, किसी तरह भी सर्दी नहीं छोडती, उन्हें—इसकी १x शक्ति कुछ अधिक दिनोतक व्यवहार करना चाहिये। इससे उनका धातु परिवर्त्तित होकर वे एकदम आरोग्य हो जायँगे।

अतिसार—यह नयेकी अपेक्षा पुराने अतिसारमे ज्यादा फायदा करता है। यहाँ भी—१x से ६ ठी शक्तितक प्रयोग करना चाहिये।

वक्षस्थलकी बीमारी—गला फँस जाना, रातमें सूखी आक्षेपिक खाँसी, छातीमें सुई गडनेकी तरह दर्द, कलेजा धडकना प्रभृतिमें इसका व्यवहार होता है।

ज्वर—हेक्टिक ज्वर, रातमे पसीना, थाइसिस, रोगीको सध्याके समय हमेशा सिहरावन मालूम होना।

दाद—दादमे लगाना चाहिये। जो बच्चे बहुत रोगी रहते हैं, बढते नहीं, बौने होते हैं, उनके शरीरमें मूल काड लिवर दो घण्टोंतक रोज मालिश करनेपर जल्द ही उनका स्वास्थ्य उत्तम

हो जायगा (सुखण्डी रोगमें भी शुद्ध सरसोंका तेल या काडलिवर इसी तरह मालिश करें और बच्चेको आध घण्टेतक धूपमें रखेंगे)।

क्रम—१x—३ शक्ति। फारमुला—८।

ओलियम सैण्टल।

(OLEUM SANTAL)

(चन्दनका तेल)—पेशाव, मूत्रयत्र और मूत्रनलीके ऊपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है और प्रमेहकी बीमारीमें ही इसका अधिक व्यवहार होता है। हैकिङ्ग कफ—(एक तरहकी तेज आक्षेपिक खाँसी)—शुद्ध चन्दनका तेल २।३ बूँदकी मात्रामें चीनी या बताशेके साथ सेवन करनेपर थोड़े ही समयमें फायदा मालूम होगा।

सूजाककी बीमारी—तकलीफ देनेवाला लिङ्गका कड़ापन (कार्डी), प्रिपूस (लिङ्गाग्र चर्म) का फूलना, सूजाकका मवाद—पीले रंगका, गाढ़ा और पीबकी तरह। पेरिनियमके बीचमें दर्द, सूजाककी ग्लीटवाली अवस्थामें अधिक परिमाणमें पीले रंगका स्राव निकलना इत्यादि इस दवाके लक्षण हैं।

पेशावकी बीमारी—पेशावकी छेदवाली जगह लाल हो जाती है, हमेशा आगसे जलनेकी तरह उसमें जलन होती है,

पेशाव—पतली धारमें और धीरे धीरे निकलता है और ऐसा मालूम होता है, मानो कोई पदार्थ मूत्रनलीमे दवाव डाल रहा है, खडे होनेपर तकलीफ बढ़ती है, मसानेके पास एक तरहका दर्द रहता है।

माला—२ से १० बूंद तेल, चीनी या बताशेके साथ सेवन करना चाहिये।

फारमुला—६ वी।

ओपियम।

(OPIUM)

(अफीम, एशियामें यह बहुत ज्यादा होती है, कच्चे फल या ढेडीको जरा जराकर चीरनेसे दूधकी तरह रस निकलता है, उसी रसको गाढाकर टिंचर तैयार किया जाता है)। अफीमकी क्रिया—मादक, दर्द दूर करनेवाली, नींद लानेवाली, मस्तिष्कमें उत्तेजना पैदा करनेवाली, पसीना पैदा करनेवाली और आक्षेप-नाशिनी तथा पर्यायको दूर करनेवाली है)।

चरित्रगत लक्षण —

१। जीवनी शक्तिकी प्रतिक्रियाका अभाव, चुनी हुई दवा भी कोई क्रिया नहीं करती, २। ” सुप्त हो जाना, आंशिक

या सम्पूर्ण पक्षाघात, मस्तिष्कका पक्षाघात, जीभका पक्षाघात, ३। सभी बीमारियोंमें गहरी नींद, कोई दर्द नहीं रहता, रोगी किसी विषयकी शिकायत नहीं करता, कुछ भी नहीं मांगता, ४। बहुत निद्रालु, पर नींद नहीं आती, ५। अधमुँदी आँखें, काक-निद्रा, साँसके साथ नाक बोलना, ६। प्रसूति जब डर जाती है और डरी हुई अवस्थामें सन्तानको स्तन पिलानेके कारण अकड़न, ७। विकारमें लगातार बका करता है, आँखका आधा भाग खुला रहता है, चेहरा लाल रंगका तमतमाया या आँखें चमकीली, अधमुँदी, चेहरा मलिन, एकदम अज्ञान (deep coma), अभिभूत भाव, ८। निद्रितावस्थामें बिछावनकी चादर नोचता है (जाग्रत अवस्थामें—बेल, हायोसि), ९। आक्षेपके पहले चिल्लाना, १०। मूत्राशय पेशाबसे भरे रहनेपर भी पेशाब न उतरना, ११। पेटमें दर्द, तलपेटमें दबाव मालूम होनेके साथ ही पेशाब और पाखाना बन्द, यहाँतक कि वायुतक नहीं निकलता, १२। पाचन यन्त्रकी क्रियाका न होना, पेरिस्टेलिक क्रियाका लोप हो जाना, आँतें मानो रुकी हुई हों, १३। कब्ज, मल गाढ़, और काला, १४। चर्मके उद्भेद एकाएक पश्चाद्गामी हो जाते हैं और मस्तिष्कपर आक्रमण करता है, अकड़न (जिङ्कम), १५। सुखण्डी, बच्चा वृद्धोंकी तरह दिखाई देता है (एब्रोटेनम), १६। सेरिब्रल हेमोरेज, १७। प्रसूतिका टङ्कार या खींचनके साथ बेहोशी, १८। पेट बहुत फूलनेके साथ शूलका दर्द।

कब्ज—पाखाना लगता है अथवा वेग एकदम ही नहीं

रहता। यह लक्षण—ब्रायोनिया और एल्यूमिनामें भी है। ओपियममें—पेटमें बहुत ज्यादा परिमाणमें मल जमा रहता है , पर पाखाने जानेकी इच्छातक नहीं होती, पिचकारी दिये बिना मल निकलता नहीं है, मलद्वार मानो सुन्न, मल बहुत कडा, काला और गांठ गांठ, देखनेमे छोटे छोटे गोल गेंदकी तरह। ओपियमका कब्ज—आँत और मलद्वारकी क्रिया लोप हो जानेकी वजहसे होता है, (from inactivity of bowels), भूरा और काले रंगका गांठ मल, ओपियमकी तरह—प्लम्बम नामक दवाका भी यही लक्षण है , पर प्लम्बमकी कब्जियत—मलद्वारके सकोचनके कारण होती है (कब्जियतमें—ओपियम—३० शक्ति, दिनमे ३।४ मात्रा, पेटमें दर्द न पैदा हो जानेतक प्रयोग करना चाहिये)।

अतिसार—ओपियम कब्जियतकी बढिया दवा होनेपर भी कभी कभी अतिसारमें भी इसका प्रयोग होता है , टाइफायड ज्वरमें—जब रोगी एकदम बेहोश, अधखुली आँखें और गलेमे घर-घर आवाज़ हुआ करती है, बाक बोलती है, उस समय इन सभी लक्षणोंके साथ अतिसार, अनजानमें दस्त हो जाना और बच्चोंके हैजेमें—बहुत कमजोरी या हिमांग अवस्थाके साथ बहुत बदबूदार मल अनजानमें निकला करता है, तो ऐसी अवस्थामें ओपियम फायदा करता है। इसके बच्चोंका जब दस्त बन्द होकर एकदम पैदा हो जाता है, पलकें स्थिर, [illegible] और पलकें नहीं गिरतीं, [illegible]

वातश्लेष्मा ज्वर—(टाइफायड ज्वर—Typhoid fever)—ज्वरमें रोगी अज्ञान और अचैतन्यकी तरह, अधखुली आँखोसे पडा रहता है, आँखोकी पलकें स्थिर, आँखसे पानी गिरता है, रोगीको जोरसे चिल्लाकर पुकारने या हिला देनेपर भी जवाव नहीं देता , एकदम अज्ञान भावके साथ रोगीकी नाक बोलती है और गला घर घर करता है, पेट फूलता है, पाखाना-पेशाव वन्द रहता है, कभी कभी अनजानमे मल-मूत्र निकल जाता है, चेहरा लाल और फूला फूला दिखाई देता है, आँख भी लाल हो जाती है, टाइफायडकी विकार अवस्थामे ऊपर लिखे लक्षणोंमे—ओपियमके प्रयोगसे हाथोहाथ फायदा दिखाई देगा। इसके अलावा प्रथम अवस्थामे ऊपर लिखे विकारका अज्ञान भाव आदि चले जानेपर जव प्रतिक्रिया आरम्भ होती है, तो विपरीत लक्षण सव जेसे—टकटकी लगाकर देखना, माथा और हाथ पैर आदिका स्पन्दन, कम्पन, नींद न आना, जरा-सी आवाजसे ही चौंक उठना, श्रवण-शक्तिका तेज हो जाना, छटपटी इत्यादि उत्तेजनाका भाव रहनेपर भी ओपियम फायदा करता है। एसिड-फास, आर्निका, हायोसियामस, स्ट्रैमोनियम, नक्स-मस्केटा, वैप्टीशिया इत्यादि दवाएँ भी टाइफायडके विकारकी महोषधियाँ हैं, उनका अध्याय देखिये। रोगके साथ निमोनिया रहनेपर फेफडे का पक्षाघात होता है, घलगम नहीं निकलता है।

...स रोगमें रोगिनीकी अज्ञानावस्था पैदा हो ... ...न ... P... ...hing

stupor) उस समय ओपियमका प्रयोग करना उचित है। (वेलेडोना अध्याय देखिये)।

(श्रीयुत ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महोदयकी सूतिका ज्वरकी एक टोटका दवा—एक छिपकीलीकी पूछकी नोकका कुछ अंश एक टुकड़ा पके केलेमें रख सिर्फ एक दिन ही सवेरे खिला देनेसे फायदा हो जायगा।)

प्रसूतावस्थामें खींचन—दो बारकी खींचन या अकड़न होनेके बीचके समयमें प्रसूति एकदम बेहोश रहती है (कोमा) अकड़न होनेके पहले जोरसे चिल्ला उठती है, चेहरा बैंगनी रङ्गका हो जाता है और गरम पसीना होता है। अगर किसी तरहके डरकी वजहसे भी यह बीमारी हो जाये तो यह अधिक फायदा करता है।

हैजा—यद्यपि हैजामें दस्त-कै बन्द होकर बच्चा बेहोशकी तरह पड़ा रहे और ओपियमके चरित्रगत लक्षण—जैसे पुकारनेपर जवाब न देना, आँखोंकी पलकोंका न गिरना, किसी तरहकी प्रतिक्रियाका न दिखाई देना, अधखुली आँखें, नाक बोलना, गला घरघराना इत्यादि लक्षण रहें, तो—ओपियमसे बहुत फायदा होता है। याद रखें—इस अवस्थामें अगर फिर दस्त कै होने लगे, तो समझना होगा कि प्रतिक्रिया आरम्भ हो गयी है और रोगीके आरोग्यका सूत्रपात हुआ है, शरीरमें कुछ भी जीवनी शक्ति (vitality) न रहनेपर और किसी भी दवासे कोई फायदा न होनेपर, अन्तमें एक बार ओपियमका प्रयोग करना उचित है। फेरम-फास

मे—लगातार पाखाना-पेशाव होने वाद वेहोश हो जाना और इसके साथ ही चेहरा लाल हो जाना, आँखकी पुतली (pupil) फैली, लगातार सर हिलाना इत्यादि लक्षण पाये जाते है।

फेफड़ेकी वीमारी—निमोनिया वगैरह वीमारीमे गला घरघर करता है, छातीमे सर्दी भरी, खाँसता है, पर वलगम नहीं निकालकर फेंक सकता। फेफडेमे पक्षाघात होनेकी सूचना, श्वास-प्रश्वास मानो ऊपर ही ऊपर चलते हैं। कभी कभी जोरकी लम्वी साँस छोडता है, हाँफा करता है, सो नहीं सकता।

नींद न आना—चलतू भाषामें इसको हलकी नींद कहते है। विछावनपर पडा पडा वहुत देरतक जागता है। आँखोंमे मानो नींद ही नहीं आती, सोता है—पर जरा-सी भी किसी प्रकार की आवाज होनेपर नींद खुल जाती है। इसके वाद, वहुत देरतक जागने वाद कहीं नींद आती है। इस तरहकी अनिद्रामें ओपियम फायदा करता है। आच्छन्न भावमे पड़ा पडा डरावने दृश्य देखा करता है। गों गों करता है।

डर जानेके कारण वीमारियाँ—गर्भके अन्तिम दिनोंमे डरकर गर्भस्रावका उपक्रम हो और डरकर ऋतुस्राव या पेशाव वन्द हो जाये—ओपियमको स्मरण करें।

द्रष्टव्य—वहुतोंकी यह धारणा है, कि अफीम सव तरह के दर्दोंका महौषध है (pain destroyer)। यद्यपि यह दर्दकी दवा है, पर किसीको भी किसी नयी वीमारीमें दर्द वगैरह दूर

करनेके लिये अफीम व्यवहार करनेका उपदेश देना अनुचित है। अफीमसे एक ओर जिस तरह दर्द घटता है, उसी तरह कितने ही नये नये उपसर्गोंकी भी सृष्टि होती है। परिणाम यह होता है, कि—रोग और रोगी दोनोंका ही नुक्सान होता है। बीमारी कड़ी हो जानेपर और भी दुरारोग्य हो जाती है। पर यदि यह दिखाई दे कि कोई बीमारी दुरारोग्य है—जैसे कैन्सर वगैरह, उसकी प्राय दवा ही नहीं है, तो तुरन्त तकलीफ घटानेके लिये और अतिसारमें बहुत अधिक दस्त और बहुमूत्रमें पेशाब घटानेके लिये, इसका सामयिक प्रयोग किया जा सकता है। मात्रा मूड—१ ग्रेन।

वृद्धि (aggravation)—नींदके समय, नींदके बाद, वायु निकलनेपर, उत्तापसे, शराब पीनेपर, भयके कारण।

उपशम—वमनसे, पानी पीनेपर, टहलनेपर और काफी पीनेपर।

सम्बन्ध—एकोन, एण्टिम-टार्ट, बेल, ब्रायो, नक्स, बाद या उसके पहले यह लाभ करता है। अफीम खानेवाले किसी मनुष्य के अतिसार या किसी भी बीमारीमें उच्च शक्ति।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसे-एसि, बेल, कैमो, साइक्यू, काफि, कूप्रम, जेल्सि, इपि, मर्क, एसि-म्यूर, नक्स, पल्स, वेरेट, जिङ्क।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४ दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—टिंचर—४, विचूर्ण ७।

ओस्मियम ।

(OSMIUM)

(धातव पदार्थ विचूर्णके आकारमें तैयार होता है)—यद्यपि इस दवाका दूसरी दूसरी बीमारियोंमें व्यवहार होता है, पर यह श्वासयन्त्रकी उत्तेजना, श्लेष्मा, द्रेकियामें दर्द और आँखकी कई बीमारियोंमें और मसानेकी बीमारीमें ही ज्यादा व्यवहृत होती है ।

श्वासयंत्रकी बीमारी—भयानक आक्षेपिक खाँसी, खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो गला छिल जायगा, गलेमें कुटकुटी होती है, खाँसी आती है । गलेमें दर्द होता है, बोलनेपर भी स्वरयन्त्रमें दर्द होता है । गला फँस जाता है, स्वर-भग हो जाता है, नया गलकोष-प्रदाह, गलेसे सख्त डोरीकी तरह बलगम निकलता है । सूखी घ घ खाँसी, ऐसा मालूम होता है, मानो किसी हाँडीके भीतरसे आवाज आ रही है । खाँसीके साथ छींक, वक्षमध्योस्थिमें दर्द ।

आँखकी बीमारी—आँखमें भयानक दर्द और आँखसे पानी गिरना, बत्तीकी रोशनीके चारों ओर हरा रग या इन्द्रधनुष की तरह रग दिखाई देना । ग्लोकोमा (धुन्द), कॉंजेंटिवाइटिस (आँखोंका प्रदाह), क्षीण दृष्टि, आँखोंमें जलन और करकराहट ।

पेशाबकी बीमारी—पेशाबमें एलबुमेन, बहुत ही तेज गन्ध, रग भूरा, परिमाणमें थोड़ा, लाल रगके पदार्थकी तली जमना।

चर्म-रोग—एकजिमा, सूखी खुजली, घमौरी, बहुत खुजलाती है। बगलमें पसीना होता है, उसमें लहसुनकी गन्ध आती है,

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—७।

ओक्सिडेण्ड्रन आर्बोरियम।

(OXYDRENDRON ARBOREUM)

(एक तरहके गाछके पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है)—यह नयी दवा केवल शोथ (Dropsy) रोगमें ही व्यवहृत होती है। जल उदरी (Ascites) और साधारणत सभी अंग-प्रत्यंगोंका शोथ और सूजनमें (Anasarca) यह फायदा करता है। शोथ-रोगमें—थोड़ा पेशाब, पेशाब बन्द और श्वास-प्रश्वासमें कष्ट रहनेपर यह और भी फायदा करता है।

क्रम—मदर-टिंचर, २।३ बूंद मात्रामें पानीके साथ दिनमें ४।५ बार सेवन करना चाहिये। फारमुला—३।

पियोनिया आफिसिनेलिस।

(PŒONIA OFFICINALIS)

(ताजी जड़से मूल अर्क तैयार होता है)—कूल्हेकी हड्डीके निचले अंशके एक तरहके जखमोंमें और अर्श, मलद्वारमें फटे घाव,

जखम, पेरिनियमका जखम, भगन्दर (Fistula in ano) प्रभृ
बीमारियोंमें इसका व्यवहार होनेपर भी ज्यादा फायदा होता है
इसका मदर-टिंचर या मूल अर्क अथवा लिनिमेण्ट—जखम
लगाया जाता है। विशेष लक्षणोंके लिये,—एसिड नाइट्रिक अ
ग्रैफाइटिस अध्यायमें भगन्दर और बवासीर देखिये।

पियोनिया—बायीं छातीमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द अ
कलाई, अँगूठा और घुटना, पैरके अँगूठेके दर्दकी भी यह दवा
कलेजेका दर्द हृत्पिण्डके भीतरसे पीठमें चला जाता है।

क्रम—निम्न-शक्ति। फारमुला—

पैलेडियम।

(PALLADIUM)

(धातव पदार्थ, पहले पहल डा० हेरिङ्गने इसकी परी
की)—स्त्रियोंकी बीमारीमें ही यह दवा व्यवहृत होती है, पै
डियमके मानसिक लक्षण बहुत कुछ प्लैटिनाके सदृश हैं। इस
रोगिनी—१। अत्यन्त अभिमानिनी रहती है, २। जरासेमें
मिजाज गरम हो जाता है और 'कड़वी बातें कहती है', ३। क
अगर अच्छा कहता है तो खूब प्रसन्न हो जाती है, पर जरा
खराब कहा कि बिगड़ जाती है और चिढ़ उठती है; ४। जरासे
ही रो देती है, यही इसका चरित्रगत लक्षण है।

स्त्री-रोग—इसमें दाहिनी ओरके डिम्बाशयपर बीमारीका हमला अधिक होता है। डिम्बकोषका (ovary) का स्नायु शूल, तीर वेधनेकी तरह एक प्रकारका दर्द—डिम्बकोषकी जगह-परसे नीचे दाहिने उरुमें एक तरहका दर्द, कभी कभी यह ऊपर छातीकी ओर चला जाता है, दाहिना डिम्बकोष फूलता है, और वहाँ अकडन या बहुत अधिक दर्द होता है। पेशाब करनेके समय भयानक कष्ट, उसके साथ ही ऐसी धारणा होती है कि जरायु बाहर निकल पडेगा। सोये रहनेपर दर्द कुछ घटा रहता है। जरायुका अपनी जगहसे हट जाना और इसके साथ ही पीठ और उरुमें दर्द, तेजीसे चलने, स्तन पिलानेपर रजःस्राव होता है। अगर अमावस्याके दिन ऋतु होता है, तो पूर्णिमातक प्राय १५ दिन पूरी तरह होता है। (अमावस्या, पूर्णिमाको—कोकस)।

श्वेत-प्रदर—माँडकी तरह साफ स्राव, ऋतुके पहले और बादमें बढना। इसके अलावा—टैस्पोरो पैराइटेल न्युरेलजिया, कन्धेमें दर्द, तलपेटमें दर्द, दाहिने पुट्ठेका फूलना प्रभृतिमें भी यह फायदा करता है।

क्रम—६—१२ शक्ति। फारमुला—७।

पैरिरा ब्रावा ।

(PAREIRA BRAVA)

(सूखी जड़से मूल अर्क तैयार होता है)—साधारणतः पेशाव-सम्बन्धी बीमारियोंमें ही इसका व्यवहार होता है। इसके द्वारा मूत्र-पथरीका दर्द—पेशावमें तकलीफ, मूत्राशयका प्रदाह, मूत्राशय मुख-शायी ग्रन्थिके उपसर्ग आदि घटते हैं। विशेष लक्षणोंके लिये कैन्थरिस अध्यायमें पथरीकी बीमारी अंश पढ़िये।

क्रम—φ और १x—३x शक्ति। फारमुला—४।

पैरिस क्वेयाड्रिफोलिया ।

(PARIS QUADRIFOLIA)

(ताजे गाछसे मूल अर्क तैयार होता है), नीचे लिखी कई बीमारियोंके लक्षणके साथ दवाका लक्षण मिलाकर व्यवहार करने पर इससे आशातीत लाभ होता है।

१। उन्माद-रोगमें—अगर किसीको उन्माद होकर लगातार बकता रहे तो इससे फायदा होगा। २। सर-दर्द—खोपड़ीकी चाँदीमें बहुत दर्द, यहाँतक कि केश नहीं झाड़ सकता, आक्सि-

पिटैल—सर-दर्द—गर्दनके निचले अंशसे आरम्भ होकर माथेके ऊपर जाता है, रोगी समझता है, माथा खूब फूल गया है। ३। चेहरेका स्नायुशूल—आँखकी बीमारी—भवें आक्रान्त होती हैं, आँखमे दर्द, दर्दका लक्षण—ऐसा मालूम होता है, मानो कोई डोरीसे बाँधकर चक्षुगोलक (eye-ball) भीतरकी ओर खींच रहा है। ४। श्वास-यन्त्रकी बीमारी—नाककी जडमें भार मालूम होना और नाक बन्द, दर्दके बिना ही गला फँसना, खाँसी—मानो श्वासनलीमें गन्धकका धुआँ घुस गया है, गलेमें लसदार हरे रंग-का बलगम लिपटा रहता है—इसलिये, हमेशा गला खखारकर साफ करता है, ५। स्नायुशूल—(Neuralgia)—बायीं ओर-की छातीके पंजरेमे दर्द आरम्भ होकर बायें हाथके भीतर चला जाता है, हाथ कडा हो जाता है, अँगूठा मुट्ठीमे बँध जाता है। ६। मेरुदण्डका स्नायुशूल—६ ठीं कटि-कशेरूकाके चारो ओर दर्द, ७। गुदास्थि (coccyx) की हड्डीका स्नायुशूल—बैठनेपर मानो सूई गडती है, टपक होती है, ८। अँगूठा हमेशा ही सुन्न मालूम होता है इत्यादि ऊपरी अंशका सुन्न हो जाना, ६। भोजन के बाद हिचकी, डकार, १०। पाकस्थली पत्थरकी तरह भारी मालूम होती है, डकार आनेपर घटना।

क्रिया-नाशक (antidote)—काफिया।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, लिडम, नक्स, लाइको, पल्स, फास, रस, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२—४ दिन।

क्रम—३ री शक्ति। फार्मुला—१।

पैसिफ्लोरा इनकारनेटा।

(PASSIFLORA INCARNATA)

(देशी झुमका फूलके वृक्षके पत्तेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—इसकी प्रधान क्रिया नर्व-सेण्टर अर्थात स्नायु-केन्द्रके ऊपर होती है और यह अकडन-नाशक दवा है। इसलिये, यह मूर्च्छा-वायु रोग (हिस्टिरिया) की खींचन, प्रसवके बाद अकडन (Puerperal convulsion) या खींचन, धनुष्टङ्कारकी तरह अकडन, बच्चोंको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी, अकडन प्रभृति कई आक्षेपवाली बीमारियोंमें और क्रिमिका ज्वर और बच्चोंके हैजामें—उद्वेग, बेचैनी, पेठन प्रभृतिमें इससे बहुत फायदा दिखाई देता है। दमाकी बीमारीकी कष्टदायक खींचनमें—पैसिफ्लोरा—φ, १०।१५ से ३० बूँद तक की मात्रामें, प्रति १०।१५ मिनिटका अन्तर देकर कई मात्राएँ प्रयोग करनेपर बहुत थोडे समयमें ही अकडन का खिचाव और तकलीफें घट जाती है। बच्चे और वृद्धोंकी नींद न आनेकी भी यह एक बढिया दवा है। पेट फूलना, खट्टी डकार, भयानक सर-दर्दके साथ आँखमें दर्द इत्यादिमें भी यह

फायदा करता है। (अनिद्रामें—φ, २५।२० बूँद सेवन करना चाहिये)।

क्रम—φ—५।१० बूँदसे १ ड्रामतक प्रति मात्रामें कभी कभी जरूरत पडती है। शक्तिकृत दवाका भी प्रयोग होता है।

फारमुला—३।

पेट्रोलियम।

(PETROLEUM)

(Coal oil तेल १ भाग, ९९ भाग अलकोहलमें गलाकर—२x शक्ति तैयार की जाती है),—शीतके समय रोगका बढना, फेफडा या पाचन-यन्त्रकी बीमारी बहुत दिनोंतक धीरे धीरे भोगना, पुराना अतिसार और कई चर्म-रोग इत्यादि बीमारियोंमें व्यवहार के लिये यह दवा प्रसिद्ध है। श्लैष्मिक-झिल्ली और चर्मपर इसकी प्रधान क्रिया होती है

<u>मानसिक लक्षण</u> —

जरा-में ही चिढ उठना, विकार या ज्वरके समय उसे भ्रम होता है, कि एक दूसरा रोगी मनुष्य भी बहुत-सी जगह घेरकर उसकी बगलमें पडा है। सूतिका-ज्वरमें—प्रसूति सोचती है, कि—उसे एक नहीं बल्कि दो बच्चे हैं, वह एक साथ दो की

देखरेख न कर सकेगी। कितनी ही भ्रममे कहती है, कि उसके चार हाथ, चार पैर और सभी प्रत्यंग दूने (double) हैं। इस तरहका दो देखनेका मानसिक लक्षण किसी भी बीमारीमे रहते पर तुरन्त इसका प्रयोग करें।

चरित्रगत लक्षण —

१। गाड़ीमे, रेलगाडीमे, या जहाजमे चढनेके कारण बीमारी का पैदा होना (काकु, सैनिक्यु), २। बीमारी जल्दी होती है— और जल्द ही दूर हो जाती है (बेल, मैग-फास, यह—प्लाटिना और स्टैनमके विपरीत है), ३। उठनेसे ही सरमे चक्कर आ जाता है (ब्रायो), माथेके पिछले भागमें दर्द और खूब भारी मालूम होना, ४। गर्भावस्थामे वमन इत्यादि उपसर्ग, उदर-शूल, ५। पेटमे खाली मालूम होना, पेट खाली रहनेपर शूलका दर्द, थोडी-सी चोट लग जानेपर भी उस जगहपर घाव हो जाता है, पकता है, ७। हाथका चमडा फटना, सोराइसिस, रुखडा, अगुलीकी नोक फटी, दर्द, शीत-ऋतुमें चर्म-रोगका वढना, ८। हाथ-पैरका तलहत्थी और तलवा गरम और उसमें जलन, ९। स्त्री और पु०-जननेन्द्रियमे पसीना, १०। उपदंशकी गौण अवस्था।

चर्म्म-रोग—पेट्रोलियम एक सोरा-विष-नाशक दवा है। चर्मरोगमे इसका लक्षण ग्रैफाइटिसकी तरह है। इसका एक विशेष लक्षण यह है कि शीत ऋतुमे चर्म्मरोगके नाना प्रकारके उपसर्ग उत्पन्न होते और बढ़ते हैं, पर गरमीका दिन आते ही आपसे आप बन्द हो जाते हैं, इसके उद्भेद—माथेमें, कानकी बगल-

मे, अण्डकोषमे, योनि और हाथ पैरमे, सभी स्थानोंमें हो सकते है। पेट्रोलियमके चर्म्मरोगमें (Eozema)—पहले गरम चकत्ते चकत्ते दाने निकलते हैं, इसके बाद वे थरके चकत्तेका आकार धारण करते है। इसके अलावा इसमे पहले जल जानेकी तरह एक प्रकारके उद्भेद निकलते है, इसके बाद उस जगहपर जखम हो जाता है, पीव निकलता है और पपडी जमती है। जाडेके दिनोंमे हाथ-पैर फटते हैं, उस फटे स्थानसे रस निकलता है, खुजलाता और जलन होती है। हिपरकी तरह सामान्य खरोंट या जखमसे रस, रक्त, पीव निकलना प्रभृति लक्षण भी—पेट्रोलियममें है। एक तरहके एकजिमामे—मोटी पपडी जमती है,खुजलानेपर खूब खून निकलता है। यदि यह जाडा और बर्सात-मे बढता है और गरमीके दिनोंमे धीरे धीरे घट जाता है, तो—डलकामारासे फायदा होगा।

एकजिमा—सूजाकके रोगी या उपदंशका विष-दोष—लिङ्ग प्रदेशमे और अण्डकोषमें रसभरे दाने निकलते हैं, उसमें बहुत खुजली रहती है। कानके भीतर एकजिमा रहता है, उसमे पीव या रस जो निकलता है, उसमे बहुत बदबू रहती है, कानमें मैल, कानके भीतर गरजकी तरह आवाज। कानके पीछे एकजिमा, उससे रस निकलता है (कभी-कभी सूखा भी रहता है)। पपडी जमती है और फटता है। सोराइसिस (विचर्चिका)—हाथमे एकजिमा, अंगुलियोंकी नोक फटी, घाव हो आता है। उससे रस बहता है (ग्रैफाइटिस देखिये)।

दाद—पुट्ठेकी जगहपर दाद होनेपर पेट्रोलियम—३० शक्तिके सेवनसे और उसका लिनिमेण्ट तैयार कर लगानेपर और भी जल्दी फायदा होता है। (केशोंमें दाद और सारे शरीरकी दादमें—टेलूरियम)।

गर्भावस्थाकी बीमारी—गर्भावस्था मे प्रसूतियोंकी प्राय सब तरहकी पेटकी बीमारियोंमें और मिचली, वमन, मुँहसे लार निकलना, प्रभृतिमें पेट्रोलियम फायदा करता है (applicable to all gastric troubles of pregnant woman मिचलीके साथ वमन या केवल वमन, सवेरे वमन आरम्भ होता है और दिनभर रहता है। (सेरियम)।

आँखकी बीमारी—पलकोंका प्रदाह (Blepharitis) पपंडी जमती है, पलकें सट जाती हैं। आँखके नासूर (Lachrymal fistula) मे पेट्रोलियम फायदा करता है। (एसिड-फ्लोरिक)।

पेशाबकी बीमारी—मूत्राशयकी कमजोरीकी वजहसे रातमे बिछावनमें अनजानमें पेशाब कर देता है, पेशाबके बाद अनजानमें बूँद-बूँद पेशाब निकला करता है, पेशाबके साथ श्लेष्मा रहता है। (तेलकी तरह पदार्थ—हिपर)।

अतिसार—मलमे बहुत बदबू, पानीकी तरह पतला, पाखानेके साथ अजीर्ण भोजन निकलता है। पेट्रोलियममें—सलफरकी तरह सवेरे या प्रातःकालसे ही दस्त आरम्भ होते हैं, पर-

तलफरमें जिस तरह दिनके १० बजेके बीचमें ही दस्त बन्द हो जाते हैं, इसमें वैसा न होकर पोडोफाइलमकी तरह दिन भर कुछ-न-कुछ चला करता है। पोडोफाइलमका दस्त भी बहुत बदबूदार रहता है, पर पोडोफाइलममें—पेटमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता और क्रमश दस्तका परिमाण घटता जाता है और सन्ध्या होते होते बन्द हो जाता है। उदरामय और आमाशयके दस्त दिन भर होकर अगर रातमें बन्द हो जायें—पेट्रोलियम फायदा करेगा। इसमें भी वमन और सूखी मिचली रहती है, बच्चोंके आमाशयमें—पेट्रोलियम और इपिकाकका पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर फायदा होता है। ऐसे स्थानपर ६ ठीं शक्तिसे ही ज्यादा फायदा होगा। पेट्रोलियममें—डकारमें कोवीकी गन्ध रहती है। कभी कभी पैदा होनेवाला पुराना उदरामय।

वात—पुराने वातमें गाँठोंमें दर्द रहनेपर पेट्रोलियम फायदा करता है। वातमें अगर घुटने कड़े पड़ जायं और वहाँ खोंचा मारनेकी तरह दर्द रहे तो इससे बहुत फायदा होता है। कमरका वात अगर सवेरे बढ़ जाये—पेट्रोलियम फायदा करता है। रूटामें भी यह लक्षण है। कास्टिकमकी तरह इसमें भी उठने-बैठनेपर गाँठोंमें कड़कड़ आवाज होती है।

खाँसी—एकजिमाके साथ सर्दी खाँसी रहनेपर—पेट्रोलियम फायदा करता है। पेट्रोलियमकी खाँसी सूखी रहती है, रातमें बिछावनपर लेटते ही खाँसी आरम्भ होती है, बच्चोंकी ऐसी खाँसीमें—पेट्रोलियम फायदा करता है।

अम्ल-शूलका दर्द—चेलिडोनियम, एनाकार्डियम और ग्रैफाइटिसकी तरह इसमें भी अम्लशूलका दर्द भोजन करने बाद घट जाता है। पेट्रोलियमका दर्द, पेट खाली रहनेपर बढता है। दर्द पाकस्थलीसे ऊपर कलेजेतक चला जाता है, रोगी तकलीफसे छटपटाया करता है, दर्दके साथ मिचली भी रहती है। कुछ खानेपर बहुत थोडे समयके लिये तकलीफ घटती है, (एनाकार्डियम और कोलोसिन्थ अध्याय देखिये)।

बादकी दवा (follows well)—ब्रायो, कैल्के, लाइको, नक्स, पल्स, सिपि, सल्फ, एसि-नाइट्रि, साइलि।

सम्बन्ध—चर्मरोगमें ग्रैफाइटिसके साथ, वातमें कास्टिकमके साथ और मिचलीमें काकुलसके साथ सदृश सम्बन्ध हैं।

क्रिया-नाशक (antidote)—काकुलस, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—६x—३० शक्ति।

फारमुला—विचूर्ण—७, टिंचर—६वी।

पेट्रोसेलिनम सैटिवम।

(PETROSELINUM SATIVUM)

(ताजे गाछसे टिंचर तैयार होता है)—प्रमेह रोगकी अन्तिम (gleet) अवस्थामें और जब मूत्रनलीका पुराना प्रदाह होकर

रायके मुँहतक चला जाता है, उस समय इससे ज्यादा
दा होता है। एकाएक पेशावका वेग होता है और उठते न
मानो पेशाव आपसे आप हो जाता है। यही इसका प्रधान
गत लक्षण है। एलोमे—जिस तरह रोगीको एकाएक दस्त
आते हैं। पेट्रोसेलिनममें भी ठीक उसी तरह एकाएक पेशाव
ाता है (अन्यान्य लक्षणोंके लिये कैन्थरिस अध्याय देखिये)।
लिनममे—भयानक जलन, पेरिनियम (मलद्वार और
यके मध्यका स्थान) से लेकर समूची मूत्रनलीमे जलन और
हता है। कभी कभी दूधकी तरह सादा पेशाव होता है।
लीका मुँह बलगमसे वन्द रहता है, स्रावका रग पीला, समूची
लीमे सुरसुरी होती है, उसमे लगातार पेशावका वेग
है।

द्वश—कैनाबिस, कैन्थरिस, मर्कुरियस।
क्रम—३x—२०० शक्ति।

फारमुला—१।

फैसियोलस नाना।

(PHASEOLUS NANA)

क तरहके गाछके गूदेसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—
डकी बीमारीका यह महौषध है। बहुमूत्र, वक्षस्थलकी कई

बीमारियाँ और सर-दर्दमें भी इससे कितनी ही वार बहुत फायदा होता है।

वक्षस्थलकी बीमारी—कलेजा धडकना, नाडीका तेजीसे स्पन्दन, श्वास-प्रश्वास धीमा, दीर्घ-श्वास, हृद्पिण्डके चारों ओर दर्द, वक्षावरक झिल्ली और पेरिकार्डियममें पानी इकट्ठा हो जाना। इस तरहकी कई बीमारियोंमें और लक्षणोंमें इसका व्यवहार होनेपर कितनी ही वार बहुत फायदा होता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—बहुत जोर जोरसे कलेजा धडकना,—क्रैटिगसकी तरह साथ ही साथ इससे फायदा दिखाई देता है (डिजिटलिस देखिये)। हृद्रोगकी अन्तिम अवस्थामें नाडी नहीं मिलती।

आँखकी बीमारी—आँखकी पुतली फैली, रोशनीका सहन न होना, आँखमें दर्द।

सर-दर्द—केवल सामनेकी कनपटीमें और चक्षुगह्वरमें दर्द, जरा भी हिलने-डोलनेपर या मानसिक चिन्तासे दर्द बढता है।

बहुमूत्र—बहुमूत्र या बहुमूत्रकी तरह परिमाणमें और बारमें बहुत अधिक होता है।

सदृश—क्रैटिगस, लैकेसिस।

क्रम—φ, १ म, ३री, ६ठी और १२ वीं शक्ति।

फारमुला—४।

फेलाण्ड्रियम ऐक्वेटिकम।

(PHELLANDRIUM AQUATICUM)

(सूखे फलमें मूल अर्क तैयार होता है)—श्वास-यन्त्रपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है। थाइसिस, ब्राङ्काइटिस, फेफड़ेकी वायु-स्फीति (Emphysema) प्रभृति बीमारियोंमें जब बहुत ही सड़ी गन्ध-भरा बलगम निकलता है और थाइसिसमें फेफड़ेका बिचला भाग (middle lobes) पर बीमारीका दौरा होता है। उस समय इससे बहुत कुछ फायदा होता है। खून-मिली खाँसी या रक्तोत्कास (हिमाप्टोसिस), क्षय-ज्वर, इसके साथ ही कमजोर करनेवाला पसीना और इसके साथ ही शरीरका क्षय करनेवाला अतिसार (ग्रहणी-रोग), इन तीन बीमारियोंकी भी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

स्तनकी बीमारी—स्तनकी दुग्धवहानलीमें (milk-ducts) स्तन-पिलानेके समय बहुत दर्द, यह समूचे शरीरमें फैल जाता है और स्तनकी घुण्डीमें बहुत दर्द रहता है। फेलाण्ड्रियमका एक लक्षण और भी है—बच्चेको स्तन पिलानेके समय बहुत अधिक दूध निकल जाता है। लैक-कैनाइनममें—स्तनमें इतना दूध भरा रहता है, कि उससे प्रसूताको तकलीफ होती है, स्तन ऊपरकी ओर उठाकर बैठे रहना पड़ता है।

आँखकी बीमारी—आँखसे बहुत अधिक पानी गिरता

है, रोशनी सहन नहीं होती, सरमे दर्द होता है, आँखके स्नायुमें भी दर्द होता है।

फेफड़ेकी बीमारी—परालिया अध्यायमे खाँसी देखिये।

क्रम—φ—६ ठी शक्ति। थाइसिसमें—६ ठी और निम्न शक्ति।

फारमुला—४।

फास्फोरस।

(PHOSPHORUS)

दिमाग, फेफड़ा, यकृत, हृत्पिण्ड, मसाना, श्लैष्मिक झिल्ली, अस्थि, स्नायु इत्यादिके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया है। जो स्त्री या पुरुष देखनेमे बहुत सुन्दर हैं, दुबले हैं, लम्बे और कुछ आगे झुके रहते हैं, केश भूरे, जिनकी पलकें पतलीं और स्वभाव कोमल रहता है, जरा-सी बातमे भी मनमें कष्ट होता है, बुद्धि तेज रहती है, ऐसी धातुके मनुष्योंके लिये—फास्फोरस फायदेमन्द है।

फास्फोरसके रोगीके शरीरके किसी न किसी स्थानसे अकसर रक्तस्राव होता है। रोगी खूब कमजोर रहता है, रोगके लक्षण—मीठी चीजें खाने, हाथ-पैर पानीमें भींजे रहने, बायीं करवट दबा कर सोने, बरसात और शीत दोनो ही ऋतुओंमे और कोई कोई रोग-लक्षण गरमीके दिनोंमे भी बढते हैं।

सभी बीमारियोंमें धातुगत लक्षणको ध्यानमें रखकर, काम करनेपर चिकित्सक द्वारा कभी कभी इतना अधिक फायदा दिखाई देता है, कि सभी चिकित्सकोंको आश्चर्य-चकित रह जाना पडता है। इस विषयके उदाहरणके रूपमे पहले अपने ही सम्बन्धमें कुछ कहता हूँ —

एक बार मुझे सिस्टिक ट्यिुमर रोग हो गया। ट्यिुमर ठीक वार्य कन्धेको स्कन्धास्थिके नीचे पैदा हुआ। पहले वह एक सुपारी की तरह हुआ, पर दो मास बाद ही वह एक बडे बेलके आकारका बन गया। यह जल्दी जल्दी बढने भी लगा। इसी वजहसे मैं कई उच्च पदवीधारी एलौपैथिक चिकित्सकोंके पास गया। उन सबने ही कटवा देनेकी राय दी। कलकत्ता मेडिकल कालेजमें भी दिखाया गया। उसके हाउस-सर्जनने एक महीना बाद नश्तर लगवानेका समय निर्द्धारित किया। एक दिन भगवानकी दयासे मेसर्स राली-ब्रादर्सके आफिसके गनी (gunny) डिपार्टमेण्टके बडे बाबू श्रीयुत सत्यचरण मित्र महोदयने, बात ही बातमे मेरी बीमारी और नश्तर लेनेकी तैयारी की बात सुनकर, तुरन्त यह विचार त्याग देनेके लिये और अपना धर्म अर्थात होमियो-पैथिक चिकित्सामे कुछ दिन रहनेको कहते हुए, उपदेशके रूपमे एक कहानी कही। उसका मतलब यही था, कि अपने धर्ममें मृत्यु भी भली है—और दूसरेका धर्म ग्रहणकर यदि अमरत्व भी प्राप्त हो तो वह ठीक नहीं। इससे मेरे मनकी गति कुछ परिवर्त्तित हुई। मै उसी दिन कलकत्ता-निवासी दुर्गाचरण रोडके डा० डी०

एन० बैनर्जी एम० बी०, एक होमियोपैथिक डाकृरके पास जा पहुँचा और उनसे अपनी बीमारीका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा। सब सुनकर उन्होंने कहा, कि तुम फास्फोरसके रोगी हो और कैल्केरिया—टियुमरकी दवा है। अतएव, तुम्हारी धातुके लिये, कैल्केरिया-फास ही इस बीमारीकी दवा है। मैंने दूसरे ही दिन, एक माला २०० शक्तिकी ली। उसके सेवनसे १ सप्ताहके बाद यह दिखाई दिया कि, टियुमर आधा घट गया है, १५ दिन बाद उस दवाकी एक मात्रा और भी ली, उससे बहुत थोडी सूजन बच रही। अन्तमें उन डाकृर महोदयकी व्यवस्थाके अनुसार—सलफर २०० शक्ति एक मात्रा सेवन करनेपर, उसके ८।१० दिन बाद ही टियुमर एकदम गायब हो गया। कहना वृथा है, कि उसी समयसे होमियोपैथीपर मेरी श्रद्धा और भी बढ गयी और कालेजके शस्त्र-चिकित्सककी धारदार छुरीसे मैं बच गया। इसके लिये, मैंने उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। यहाँ इस विषयका वर्णन कर वृथा ही समय नष्ट करनेका उद्देश्य यह है, कि आपलोग किसी बीमारीका इलाज करते समय, रोगीकी धातुको सबके पहले समझनेकी चेष्टा करें, नहीं तो अधिक कर असफलता ही प्राप्त होगी। हमलोग महात्मा हैनिमैनका मत माननेवाले (followers) के सिवा और कुछ नहीं है।

इसके अलावा होमियोपैथी सीखनेके लिये, रोगीकी धातु और चरित्रगत लक्षणकी तरह कितने ही विशेष लक्षणका बडे यत्नसे अभ्यास करना उचित है। उनसे भी चिकित्सामें बहुत बडी सहा-

यता प्राप्त होती है। मेटीरिया मेडिकामें दवाका वर्णन करते समय इसीलिये, उसका स्थान सबके पहले दिया जाता है। इस पुस्तकमें भी आरम्भसे लेकर अन्ततक उक्त विषयकी आलोचना की गयी है। समूचा विषय पढ़े।

फास्फोरसका चरित्रगत लक्षण :—

१। यक्ष्माकास, ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, २। गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी, खाँसी सूखी और उसका सन्ध्याके समय बढ़ना, कलेजा, पीठ और गर्दन अकड़ जाती है। खाँसते खाँसते समूचा शरीर काँप उठता है, ३। गलेमें दर्द, इसी वजहसे बोलनेमें तकलीफ, ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कुछ अड़ा हुआ है या एक पोटली भरी हुई है, ४। कब्जियत—मल लम्बा, सँकरा और कड़ा, ५। बिना दर्दका उदरामय, अतिसारमें मल पानीकी तरह पतला,उसपर मेढकके अण्डे या साबूदानेकी तरह कोई पदार्थ तैरता रहता है, ६। छोटेसे जखमसे भी बहुत अधिक रक्तस्राव होता है, ७। भोजनके बाद औंघाई, ८। पेटके भीतर खाली खाली भाव ९। पीनेकी चीज पेटके भीतर जा कर गरम होनेपर वमन, १०। हस्त मैथुनकी वजहसे ध्वजभंग, अदम्य रति-क्रिया की इच्छा, ११। कुछ खाते ही हिचकी आने लगना।

विषकी मात्रामें फास्फोरसका सेवन करनेपर—पाकस्थलीका प्रदाह (Gastritis), छोटी और बड़ी आँतका प्रदाह (Entero-colitis), रक्तामाशय (Dysentery), रक्तस्राव (Hemorrhage), मूत्रग्रन्थि-प्रदाह (Inflammation of Kidneys) यकृतका

प्रदाह (Hepatitis), फेफड़ेका सब तरहका प्रदाह और प्लुरो-निमोनिया, निमोनिया, मेरुमज्जाका प्रदाह (Myelitis)—इसकी वजहसे पक्षाघात, हाड़—विशेषकर मसूढ़ा और पैरकी लम्बी हड्डीका (tibia) ध्वस होना, रक्तमे विकार होकर कामला (Hœmatogenus jaundice) प्रभृति बीमारियाँ उत्पन्न होती है, इसलिये लक्षण मिलनेपर—सदृशविधानके अनुसार—फास्फोरस इन सभी बीमारियोंकी महोषधि है।

खाँसी—सध्यासे आरम्भ होकर आधी राततक अधिक आती है,रातमे सोनेपर और बायीं करवट तथा चित्त होकर सोनेपर खाँसी बहुत बढ जाती है, खाँसता खाँसता रोगी थक जाता है, कलेजेमे दर्द होता है और कलेजा धडकता है। इसके अलावा—इसकी खाँसी बाहरकी हवामें बोलनेपर, हँसनेपर या पुस्तक पढनेपर और किसी आनेवालेके पास आनेपर बढती है। आप यदि रोगीसे पूछेंगे, कि कैसे हो? तो आपकी बातका उत्तर देनेके पहले एक बार वह अवश्य खाँस देगा। फास्फोरसमे जो बलगम निकलता है, उसका स्वाद नमकीन रहता है, बलगममे कभी कभी खूनका छींटा रहता है, पीले रगका पीबकी तरह बलगम निकलता है, फास्फोरसमे सध्याकी खाँसी सूखी रहती है। कुछ भी बलगम नहीं निकलता। पर सबेरे जो खाँसी आती है, वह ढीली रहती है और उसमे बलगम निकलता है। गला फँसना—धीरे धीरे फुसफुसाकर बोलता है—सबेरे स्वरभग रहता है।

क्रूप—(काली खाँसी)। एकोनाइट, स्पंजिया, हिपर इत्यादि पहली अवस्थाओंकी दवाओंके प्रयोगके बाद अगर फास्फोरसका प्रयोग किया जाता है, तो दुबारा बीमारी होनेकी सम्भावना नहीं रहती। (बैसिलिनम, कैल्केरिया)।

ब्राङ्काइटिस—(वायुनली-भुज-प्रदाह)—खाँसी सूखी, लगातार ही खुसखुसाकर खाँसी आया करती है, खाँसीकी धमकसे समूचा शरीर काँप उठता है, श्वास-प्रश्वासमें भयानक तकलीफ होती है, रोगी हाँफा करता है। छातीके ऊपरी भागमें जकड-सा जाता है और वक्षोस्थिके बीचके भागमें मानो कुछ गडा करता है। खाँसीसे बहुत तकलीफ होती है, इसीलिये रोगी गोंगियाकर खाँसी दबा रखता है। बलगम नाना प्रकारका निकलता है—चमकीला, लाल, खून मिला, लोहेकी जंगकी तरह, पीबकी तरह, यक्ष्मा-धातुवाले रोगीकी बीमारीमें भी—फास्फोरस फायदा करता है। ब्राँकाइटिस या कैपिलरी ब्राँकाइटिस (वायुनली और कैशिकनलीके प्रदाहकी बीमारीमें) अगर परीक्षा करनेपर समूची छातीमें बलगमकी आवाज (rales) पायी जाये, और बहुत अधिक आक्षेपिक खाँसी हो, रोगी खाँसता खाँसता कै कर दे, तो इपिकाक या एण्टिम-टार्ट—का प्रयोग होता है। इपिकाकमें—खाँसी ढीली होकर बलगम निकल जाता है। एण्टिम टार्टमें—बच्चा खाँसता रहता है, बल्गम नहीं निकाल सकता, पर छातीमें बलगम भरा रहता है, गला घरघर करता है, खाँसी

बादमें कम होती है, रोगी गुम-सुम पडा रहता है, उस समय—जबतक खाँसी न बढ जाये तबतक एण्टिम-टार्ट—निम्न शक्तिका बार बार प्रयोग करना चाहिये। ब्राङ्काइटिसके बाद जब फेफडेका प्रदाह क्रमश फैलकर निमोनिया हो जाता है, खाँसी बहुत जोर-जोरसे आया करती है, वक्षस्थलके दर्दसे रोगी अधैर्य हो पडता है। आच्छन्न भावके पहले छटपटी पैदा हो जाती है, शरीरमें दाह होता है, उस समय, ऐसी अवस्थामे इपिकाक एण्टिम प्रभृति दवाओंसे कोई फायदा नहीं होता, अकसर फास्फोरसकी ही जरूरत पडती है। दाहिनी ओरके फेफडेके निचले आधे भागपर अगर बीमारीका दौरा हो,—तो फास्फोरससे बहुत जल्द फायदा दिखाई देगा। फास्फोरसका—रोगी बायीं करवट दबाकर सो नहीं सकता, बायीं ओरके फेफडेपर रोगका आक्रमण होनेपर—सलफर फायदा करता है। सलफरमें गात्रदाह—खासकर हाथ-पैर आदिकी जलन बहुत अधिक रहती है और रोगी हमेशा ही ठण्डक खोजा करता है। (मै कठिन रोगोंमे—कितनी ही बार एण्टिम २x का प्रयोग करता हूँ)।

निमोनिया—(फेफडेका प्रदाह)—ब्राङ्को निमोनिया या कैटेरल निमोनियामें—फासस्फोरसकी असाधारण शक्ति रहती है। प्लुरो—निमोनियामे—ब्रायोनिया फायदा करता है। हेपाटाइजेशनवाली अवस्थामें (इस अवस्थामें फेफडा कडा पड जाता है) पहले अर्थात् कानजेस्टिव (रक्ताधिक्य) वाली अवस्थामें इसका

प्रयोग करनेपर रोग-वृद्धि न होकर रोग शीघ्र ही आरोग्य हो जाता है। हेपाटाइजेशन स्टेजके बाद भी इसका प्रयोग करनेपर, बहुत जल्दी रेजोल्यूशन (जिसे ठीक ठीक स्वाभाविक नियमसे आरोग्य होना कहते हैं) आरम्भ होकर बीमारी आराम हो जाया करती है। सान्निपातिक ज्वर और विकारके साथ निमोनिया होनेपर भी—फास्फोरस फायदा करता है। पहले ही कहा है कि फास्फोरसमें—दाहिनी ओरके फेफड़ेपर बीमारीका हमला होता है और पल्सिममें—दोनों ओरके फेफड़ोंमें—ही बीमारी होती है। पल्सिममें बलगमकी आवाज (rales) खूब जोरकी, फास्फोरसमें उतने जोरकी नहीं होती। फास्फोरसमें—रोगी बायीं करवट दबाकर नहीं सो सकता, पल्सिममें—श्वासकष्ट और दाहिनी ओरके पंजरेमें सुई गड़नेकी तरह दर्द अधिक रहता है और कपालमें पसीना होता है। फास्फोरसमें—ज्वर-विकारमें प्रलाप बकना, श्वासकष्टकी वजहसे लम्बी साँसें लेना इत्यादि लक्षण ज्यादा रहते हैं। फास्फोरसके प्रयोगसे भी अगर बीमारी नियमितरूपसे आरोग्य न हो और पीबकी तरह बलगम निकलता हो तथा बायें फेफड़ेपर बीमारीका आक्रमण अधिक हो—सल्फरसे फायदा होगा, पर अगर यह पीबकी तरह बलगम बहुत बदबूदार हो—सैंगुनेरिया या कैप्सिकम फायदा करता है। प्लुरो निमोनियाकी—कैलि कार्ब भी खराब दवा नहीं है, छातीमें बहुत अधिक सुई गड़नेकी तरह दर्द, दाहिनी करवट सो नहीं सकता, खाँसनेके समय गलेमें, घरघराहट, पलकें फूलीं फूलीं और पानीसे भरीं, बलगमके साथ छोटे

छोटे पीवके ढेले निकलना, रातमें २।३ बजेसे खाँसी इत्यादि रोग लक्षणोंका बढना—प्रभृति केलि-कार्वके लक्षण, छोटी माताके बाद निमोनिया या जिनको यकृतकी गडबड़ी है, उनकी और बच्चोंकी निमोनियामें—चेलिडोनियम फायदा करता है। इन्फ्लुएँजाके बाद अगर निमोनिया हो जाये और केलिकार्वकी तरह बीमारीके लक्षण रातके अन्तिम भागमें बढ़ें—एमोन-कार्व फायदा करता है। केलि-कार्व वृद्धोंकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है।

क्षयकास—(Phthisis)—जो स्त्री या पुरुष फास्फोरसकी धातुके अन्तर्गत हैं, उनकी इस बीमारीमें फास्फोरस ज्यादा फायदा करता है (अगर किसीको यह बीमारी होती है, तो शरीर जल्दी जल्दी दुबला होता जाता है, क्षीण हो पडता है और जीवनकी आशा नहीं रहती), आयोडम भी—इस रोगमें फास्फोरसकी समकक्षकी दवा है, आयोडममें—रोगी बहुत जल्द दुबला होता जाता है और अच्छी भूख और खान-पान रहनेपर भी दिनोंदिन दुबला ही होता जाता है। आयोडम धातुके रोगीकी—गर्दन, गाल, गला इत्यादि स्थानोंकी ग्रन्थियाँ फूला करती हैं, फास्फोरसमें ऐसा नहीं होता।

स्वरभंग—चिल्लाकर बोल नहीं सकता, रोगी खांसता है और सध्यामें उसका स्वरभग बढ जाता है, खाँसने या बोलने-पर स्वरभग और भी बढ़ता है। सलफरमें—सवेरे और कार्बोवेजमें सध्यामें स्वरभंग बढता है। गवैये और वक्ताओंके स्वरभगमें—एरम ट्राइफाइलम, सेलिनियम, आर्जेण्ट नाइट्रिकम इत्यादि दवाएँ फायदा करती हैं।

टियुवर्क्युलोसिस—यक्ष्मा-रोगमे, जिन मनुष्योंके पूर्व-पुरुषोंमें यक्ष्मा-कासका इतिहास पाया जाता है, उनको उस बीमारीमें—फास्फोरस विशेष फायदा करता है। बीमारी पहले सर्दी खाँसीके रूपमे दिखाई देती है,इसके बाद क्रमसे सूखी खाँसी-का बढना, स्वरभग, बायीं करवट सोनेका शक्तिकी न रहना, बायें फेफडेके नीचेवाले भागमें दर्द, सध्यामे ज्वरका बढना, पसीना, रातमे कलेजा भारी हो जाना, रोगी सो नहीं सकता है, भूख बिल-कुल ही सहन नहीं कर सकता—ये सब लक्षण अगर आ जायें (ये यक्ष्माके लक्षण हैं)—फास्फोरस ज्यादा फायदा करता है। फेफडेमे गह्वर अर्थात् cavity होनेपर भी—फास्फोरससे फायदा होता है। निमोनियामें यथारीति प्राकृतिक नियमसे आरोग्य (resolution) न होकर पीब पैदा हो जाये और टियुवरक्युलो-सिसका सन्देह होने लगे तथा फास्फोरसके समूचे विशेष और चरित्रगत लक्षण न मिलनेपर तथा बहुत दुर्बल मनुष्य जिनमे जीवनी शक्ति (vitality) कुछ भी नहीं रहती, उनमे विशेष सोचे-विचारे बिना कभी भी फास्फोरस और सलफर इन दोनों दवाओं-का प्रयोग न करो, यदि बिना समझे बूझे प्रयोग कर दिया गया हो तो जानेंगे कि आप जिस बीमारीको आराम करना चाहते थे, वही बीमारी ठीक इसके बाद उत्पन्न होगी। वक्षस्थलके ऊपरी भागके तीन पजरोंके बीचकी जगहके दर्दमें—फास्फोरस फायदा करता है। (पिक्स-लिक्विडामें भी यह लक्षण है)। टियुवरक्यु-

लोसिसके कारण मेसेण्टरिक ग्लैण्ड (मध्यान्त्रकी ग्रन्थि) आक्रान्त होकर अगर अतिसार हो जाये—सलफर फायदा करता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—फैटि-डेजिनरेशन आफ दि हार्ट (हृद्पिण्डमें मेद-वृद्धि) नामकी बीमारीमें और कलेजेकी साधारण धडकनमें (general palpitation)—फास्फोरस फायदा करता है। एकाएक कलेजेमें खूनका दौरान बढकर अगर कलेजा धडकने लगे—फास्फोरस फायदा करता है। (डिजिटेलिस अध्याय देखिये)।

खून मिली खाँसी और रक्तस्राव—मुँहकी राहसे अगर फेफडेसे खून आये तो फास्फोरस फायदा करता है। स्त्रियोंका ऋतु बन्द होकर खाँसीके साथ मुँहसे खून निकलनेपर फास्फोरसकी तरह सिनिसियो और पल्सेटिला फायदा करते हैं। पाकस्थलीमें जखम, रक्तकी अधिकता या कैन्सर होकर खूनकी कै होनेपर, फास्फोरसके सिवा—हैमामेलिस, मिलिफोलियम इत्यादि दवाओंकी भी जरूरत पड़ती है। फास्फोरसमें ठण्डा पानी पीनेपर रक्तस्राव घटता है, इसका रक्त कुछ पतला, कुछ जमे थक्के और काफीके गोलेकी तरह होता है। ऋतु बन्द होकर नाक या मूत्रद्वारसे रक्तस्राव होनेपर और यक्ष्माकासकी पहली अवस्थाके रक्तस्रावमें फास्फोरस सभी दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है, किसी साधारणसे जखमसे बहुत ज्यादा रक्तस्राव होनेपर और दाँत उखडवाने बाद लगातार रक्तस्राव

होते रहनेपर फास्फोरस लाभदायक है, इसका खून बहुत पतला यहाँतक कि जमता भी नहीं।

जखमसे रक्तस्राव—किसी तरहके एक छोटे-से जखमसे भी अथवा शरीरका कोई स्थान थोड़ा-सा भी छिल जानेपर बहुत अधिक रक्तस्राव होता है, कभी कभी इतना अधिक रक्तस्राव होता है, कि उससे रोगीकी मृत्युतक हो जा सकती है, इन सब लक्षणोंमें—फास्फोरस फायदा करता है। इसमें शरीरका रक्त इतना अधिक खराब हो जाता है, कि खून निकलनेपर जमने नहीं लगता है। बहुत ज्यादा रक्तस्राव होनेके कारण फास्फोरसके रोगीको नश्तर लगानेसे भी चिकित्सक डरते हैं। (खून निकल कर जमता नहीं है—क्रोटेलस, इसके रक्तका रंग काला रहता है)।

अस्थिका जखम—नीचेके जबडेकी हड्डीका नेक्रोसिस, अर्थात जिस हड्डीपर दाँत रहता है, उस हड्डीका सड जाना, दाँतका नासूर, नाककी हड्डीका जखम (Caries) प्रभृति बीमारियोंमें—फास्फोरस फायदा करता है।

अतिसार—मल पानीकी तरह पतला, मांस-धोये पानी की तरह फीका लाल, हरा, खून-मिला, तेलहा, अजीर्ण पदार्थ मिला, आम-युक्त, चर्बीकी तरह अथवा चर्बीकी तरह सफेद स्राव, या सिझाये साबूदानेकी तरह चूर चूर पदार्थ मलके ऊपर तैरता रहता है, पाखानेमें बहुत बदबू। फास्फोरसके—रोगीको बायीं कर-

घट सोनेपर पाखानेका वेग पैदा हो जाता है। पुराना अतिसार—गरमीके दिनोंमें और सवेरे बढता है। पेटमें प्राय' किसी तरहका दर्द नहीं रहता, इसमें भी कभी कभी दस्त पलोकी तरह अनजान मे हो जाता है, मलद्वारमे दरार-सी पडी रहती है। हमेशा मल चूता रहता है, मानो मलद्वार खुला हुआ हो, यह अन्तिम लक्षण पपिसमे भी है। पपिस—कमजोर बच्चोंकेपुराने अतिसारमें फायदा करता है। बवासीरके रोगीको अगर प्रत्येक वार पाखाना फिरते समय रक्तस्राव हो तो—फास्फोरस फायदा करता है।

वमन—ठण्डा पानी पीनेकी बहुत अधिक इच्छा और प्यास, पर पानी पीनेके कुछ ही देर बाद (अन्दाजन १०।१५ मिनिट बाद अर्थात पाकस्थलीमें पानी घुसकर गरम होनेपर)—वमन होकर निकल जाता है। फास्फोरसमे—नाना प्रकारके वमन होतेहै। ऊपर लिखे ढगका वमन—हैजा या किसी दूसरी बीमारीमें होनेपर भी फास्फोरसका सबके, पहले प्रयोग करना चाहिये, कोई चीज खानेपर ऐसा, मालूम होता है, कि वह पाकस्थलीमे जाकर तुरन्त फिर गलेकी ओर धक्का देकर चढती है। यह भी फास्फोरसका अन्यतम लक्षण है।

पाकस्थलीकी बीमारी—साधारणत गरमीके दिनोंमे प्राय सबको ही पाकस्थलीकी कुछ न कुछ बीमारी हो जाती है। तेज गरमीके कारण प्यास बढ जाती है। बहुत ज्यादा पानी पीनेमें आता है; परन्तु फास्फोरसका रोगी इससे ठीक उलटा ही रहता

है, उसको प्यास बिलकुल ही नहीं रहती—पानी भी नहीं पीता, पानी पीनेपर बल्कि उसे खराब मालूम होता है।

यकृतकी बीमारी—यकृतमें पहले रस इकट्ठा होकर वह बड़ा हो जाता है। इसके बाद वह अगर सूख जाये, छोटा और सकुचित हो जाये—फास्फोरस फायदा करता है। सिरोसिसमें भी—यह लक्षण है। पहले सामान्य ज्वर, फिर यकृत बढ़ा हुआ, अन्तमें यकृतमें फोड़ा (Liver abscess), क्षय ज्वर, रातमें पसीना प्रभृति होनेपर—फास्फोरस फायदा करता है।

यकृत-प्रदाह—यकृतका प्रदाह पककर पीब हो जाये और उसके साथ ही ऊपर लिखे लक्षण अर्थात क्षय-ज्वर, यकृतमें दर्द, बहुत पसीना इत्यादि उपसर्ग यदि प्रकट हों, तो फास्फोरस उत्तम दवा है।

कामला—रक्तके जो सब उपादानोंसे पित्त तैयार हुआ करता है, उनका निकलना बन्द होकर अगर वे रक्तके साथ मिल जायें तो उसी विषकी क्रिया द्वारा यह बीमारी उत्पन्न होती है। यकृतकी बीमारीकी अन्तिम अवस्थामें—यकृत अगर सिकुड़ जाये तो उसे लिवर-सिरोसिस (Liver Cirrhosis) कहते हैं, इस बीमारीकी अन्तिम अवस्थामें—शोथ, उदरी, कामला प्रभृति पैदा होकर अकसर बीमारी दुरारोग्य हो जाती है। बच्चोंका यकृत रोग—उदरी होनेके पहले अच्छी चिकित्साके द्वारा आरोग्य हो सकता है लेकिन शोथ और कामला बढ़कर दुरारोग्य हो जाता है,

फास्फोरसमे—यकृतकी बीमारीमे, मलका रंग—भूरा या राखकी तरह हो जाता है। उसमे पित्तका चिन्ह तक नहीं रहता और यकृतमे बहुत ही अधिक अकड़नका दर्द रहता है।

स्त्री-रोग—परिमाणमें अधिक और अधिक दिनोंतक स्थायी अगर मासके धोवनकी तरह ऋतुस्राव होता रहे अथवा ऋतुस्राव एकदम बन्द हो जाये,अथवा ऋतुस्राव बन्द होकर नाक और मुँहसे या पेशावकी राहसे खूनका स्राव हो,—फास्फोरस फायदा करता है। वे युवती स्त्रियाँ जो जल्दी जल्दी बढ़ती जाती है, उनके रजो-रोध (Amenorrhœa) मे और स्तन-पिलानेवाली धायके अतिरज या जरायुके रक्तस्रावमे (Menorrhagia or Merorrhagea) मे यह फायदा करता है। फास्फोरसका ऋतु खूब जल्दी जल्दी और परिमाणमे अधिक होता है। रोगिनी उससे बहुत कमजोर हो पडती है।

टाइफायड ज्वर—इस ज्वरके साथ खाँसी, ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, अतिसार (अतिसारमे—पाखानेका रंग पीला या हरा, रक्तका छींटा मिला अथवा मांस धोये पानीकी तरह), यकृतमे अकड़नका दर्द, प्लीहामे दर्द, तेज प्यास, पीनेका पानी पेटमे जानेके १०।१५ मिनिट बाद वमन इत्यादि लक्षण रहनेपर और सान्निपातिक ज्वरके साथ निमोनिया, यह अगर रसटक्ससे न घटे—फास्फोरसका प्रयोग करना चाहिये। टाइफायड-निमोनियामें—कभी कभी अतिसारके बदले कब्जियत और पेटका फूलना

रहता है। इसके अलावा कभी कभी बहुत पसीना और पसीना होकर रोगका किसी तरह भी न घटना इत्यादि लक्षण भी रहते है। यह अन्तवाला लक्षण—मर्कुरियसमें भी है, पर टायफायड ज्वरमे पसीना देखकर कभी भी मर्कुरिसका प्रयोग न कर बैठे, पर यदि मर्कुरियसके विशेष लक्षण, जैसे, यकृतमें दर्द, कामला, सफेद्-मैल चढी जीभ, उसमे दाँत लगकर दाँतका दाग पडना, जीभ रसीली रहनेपर भी प्यास, आमाशय इत्यादि लक्षण रहें, तो—मर्कुरियसका प्रयोग कर सकते है। टायफायड-निमोनियाकी प्रबल अवस्थामे—जब फेफडेका पक्षाघात हो जाता है, रोगी बेहोशकी तरह पडा रहता है, गला घरघराया करता है, खूब पसीना होता है, नाडी छूट जाती है, (ये सभी हिमाग अवस्था अर्थात शीत आ जानेके लक्षण है), बहुत छटपटी होती है, उस समय फास्फोरससे फायदा होता है। कार्बो-वेज—दवा भी हिमांग (collapse) अवस्थाकी दवा है। कार्बो-वेजमे—रोगी लगातार पखेकी हवाकी इच्छा करता है (वेरेट्रममे—शीत आ जानेपर भी कपालमें ठण्डा पसीना अधिक होता है।)

आँखकी बीमारी—रेटिना और चाक्षुपी नाडीकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमे—फास्फोरस लाभदायक है। देखनेकी शक्ति घटना, नाना प्रकारके रग दिखाई देना, रोशनीके चारों ओर सूर्य या चन्द्रमण्डल (halo) देखना, बिजलीकी आभा देखना, बत्तीकी रोशनी—दूनी, तिगुनी या चौगुनी दिखाई देना, केश या काले काले कीडेकी तरह कोई पदार्थ आँखके

सामने उडता मालूम होना, गदली या कुहरेसे ढँकी दृष्टि इत्यादि लक्षणोंमें फास्फोरस उपयोगी है। आँखके मोतियाबिन्दमें—लेन्स फाइवर नष्ट हो जानेके पहले अगर फास्फोरसका प्रयोग हो जाये तो मोतियाबिन्द आरोग्य होता है। इसके अलावा समयपर इसका प्रयोग होनेसे मोतियाबिन्दका बढना भी बन्द हो सकता है। डा० पलेन कहते हैं—अगर रोगीकी धातु फास्फोरसकी है तो उसकी इस बीमारीमें—फास्फोरस अमोघ ओषधि है। फास्फोरसमें—अगर पलक फूलती है, तो आँखके चारो ओर ही फूल जाता है (ओस्मियम देखिये)।

नाककी बीमारी—नाकके भीतर अर्बुद (Polypus), जरामें ही रक्तस्राव हो जाता है। बहुत ज्यादा खून निकलता है। श्वास खींचनेके समय नाकके दोनो पार्श्व फूल उठते हैं (fan-like motion) लाइकोपोडियमकी तरह लक्षणमें—फास्फोरस उपयोगी होता है।

कानकी बीमारी—कर्ण-पटहके विकारकी वजहसे बहरा हो जाना, रोगीकी अपनी ही आवाज उसके कानमें प्रतिध्वनित होती है, यह फास्फोरसका एक विशेष लक्षण है। जोरसे बोलनेपर मनुष्यकी आवाज सुन नहीं सकता, पर गाने-बजानेकी आवाज़ साफ सुनता है।

ब्राइट्स डिजिज—(कोरण्ड-घटित मूत्र-ग्रन्थि-प्रदाह)—इस बीमारीमें पेशाबमें बहुत ज्यादा मात्रामें अण्डलाल या एल्बुमेन

निकलता है (डा० रिचार्ड ब्राइटने पहले पहल इस रोगका आविष्कार किया, उन्हींके नामके अनुसार इसका नाम ब्राइट्स डिजिज़ पड़ा)। एलबुमेनके साथ खूनका पेशाव और इसके साथ ही शरीरमें लाल रक्तकणों (red corpuscles) का घटना, और श्वेत कण (white corpuscles) समूहोंकी वृद्धि होते रहनेपर—फास्फोरस फायदा करता है। पुराने एलबुमिनुरिया रोगमें (ब्राइट्स-डिजिजका अन्य नाम—एलबुमिनूरिया)—प्लम्बम मेटालिकम एक महान उपकारी दवा है।

ध्वजभंग और स्नायु-दौर्बल्य—बहुत अधिक स्त्री-सहवासके कारण शुक्रक्षय, स्वप्नदोष, मैथुन, अनजानमें वीर्य निकल जाना इत्यादि कारणोंसे स्नायविक दुर्बलता होनेपर—एसिड-फास फायदा करता है। फास्फोरसमें कामेच्छा खूब प्रबल, पर लिङ्गमें कड़ापन भरपूर नहीं होता। रोगी कमजोर होता जाता है, ध्वजभग हो पड़ता है।

निद्रा—"जैसे जागते, वैसे सोते" रातमें कितनी ही बार जाग भी उठता है, पर लेटते ही सो जाता है।

द्रष्टव्यः—किसी भी पुरानी बीमारीमें फास्फोरसके प्रयोगकी आवश्यकता मालूम होनेपर फास्फोरसका प्रयोग करनेके कई घण्टे पहले—एक मात्रा उच्च शक्तिका नक्सवोमिका देनेपर अच्छा लाभ होता है। खासकर एलोपैथिकके पाससे रोगी आनेपर इसके देनेकी और भी जरूरत रहती है।

वृद्धि (aggravation)—सन्ध्यामें, आधी रातके पहले, अन्
पानीके समय, बायीं करवट सोनेपर, चित्त होकर सोनेपर (अ
सार और श्वास-रोगमें), उत्तापसे।

ह्रास (amelioration)—ठण्डी हवा लगनेपर, ठण्डा प
पीनेपर, दाहिनी करवट सोनेपर।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, ब्रायो, का
बेज, चायना, कैल्के, लाइको, नक्स, पल्स।

सम्बन्ध—आर्सके साथ फासका अनुपूरक सम्बन्ध
कास्टिमके पहले या बाद इसका प्रयोग नहीं होता। सिनके
या कैल्केरियाके बाद फास्फोरस अच्छा फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—काफि, कैल्के, मेजेरि, नव
सिपि, टेरिबिन्थ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन।

क्रम—६x—२०० शक्ति। फारमुला—

फाइजस्टिग्मा वेनेनोसा।

(PHYSOSTIGMA ...)

(नील और कैलाबार ...
लता होती है, उसकी ...
यह स्ट्रिकनियाकी तरह

लहरकी क्रिया उत्पादन कर मारे शरीरका पक्षाघात, हृत्पिण्डके नाडी-मण्डलका (गैंगलिया) पक्षाघात और फेफडेमें पक्षाघात उत्पन्न करता है, उससे ही मृत्यु होती है, पर चैतन्य और स्पर्श अनुभव करनेकी शक्ति प्राय मृत्युके पूर्वकालतक रहती है, आँखकी पुतली सकुचित हो जाती है, चक्षुताराकी पेशीका सकुचित होना, (प्युपिल और आइरिस किसको कहते है—यह कैलियाड-ब्रोम अध्यायमे देखिये), आँखोंकी पलकें फडका करती है और बार बार पलक गिर जाया करती है। इन्वालेण्टरी (अनैच्छिक) पेशियोंकी एक तरहकी अवस्था होती है, उसमें मूत्राशय, पाकस्थली, आँत प्रभृतिसे लगातार स्राव निकला करता है। आँतोंसे आँत लिपटकर गाँठ पड जाती है। सभी स्राव—खासकर आँखसे पानी गिरना और लारका स्राव बढता है।

स्पाइनल इरिटेशन—(मेरुदण्डकी उत्तेजना)—इस बीमारीका लक्षण है—पीठमें, दोनों कन्धोंके बीचमे, गर्दन और कमरमें दर्द होता है, हिलने-डोलनेपर दर्द बढता है, मेरुदण्डको दबानेपर फोडेकी तरह दर्द होता है, गर्म सेंकसे भी दर्द बढता है। कभी कभी मेरुदण्डकी हड्डीमे खूब भीतरकी ओर भी दर्द होता है। इस तरहके दर्दके साथ हमेशा ही एक तरहका स्नायुशूलकी तरहका दर्द बना रहता है, यह शरीरमें दूसरी जगह भी फैल जाता है, उठने-बैठने, चलने फिरने और सिलाई करनेमे तकलीफ होती है। शीघ्र ही यह दर्द बढ जाता है, इसके साथ ही कोरियाकी तरह स्पन्दन, हिचकी, डकार, जी मिचलाना, कलेजा

धडकना, श्वासकष्ट, आक्षेपिक खाँसी, बार बार पेशाव, प्रत्यगोंका सुन्न हो जाना, चिडचिडा मिजाज, नींद न आना, कानमें आवाज, हाथ-पैर ठण्डे होना, इत्यादि कितने ही उपसर्ग प्रकट हो जाते हैं। स्पाइनल इरिटेशन—गर्दनकी जगहपर ठहरता है—छातीमें और माथेमें दर्द, पीठमें रहनेपर इण्टरकैस्टोल (उपपर्शुका) का स्नायुशूल (न्युरलजिया), पाकाशयका-शूल, मिचली वमन प्रभृति और कमरमें रहनेपर तलपेट और निम्नाङ्गकी कितनी ही बीमारियाँ पैदा हो जाया करती है, इस बीमारीमें साधारणत नक्स, वेलेडोना, काकुलस, रसटक्स, टैरेण्टुला, फास, फाइजस्टिग्म, प्रभृति कई दवाएँ व्यवहृत होती हैं। नक्समें एकाएक एक दिन रोगीको सवेरे ही ऐसा मालूम होता है, कि उसके शरीरमे बिलकुल ही ताकत नहीं है। हाथ-पैर सुन्न, घुटने कडे और अकडे, कमरमे मानो खूब कसकर कपडा बँधा हुआ है, कमर मानो एक पेटीसे बँधी हुई है, मेरुदण्ड और प्रत्यगों-मे इस तरहकी सुरसुरी होती है, मानो कीडा रेंग रहा है। फास्फोरसका लक्षण—बहुत कुछ नक्सकी तरह है, पर फास्फोरसकी बीमारीकी गति सम्पूर्ण पक्षाघातकी ओर रहती है और नक्समें—रोग आंशिक पक्षाघातकी ओर अग्रसर होता है। फाइजस्टिग्मामें—मेरुदण्डके प्रत्येक स्नायुमे उपदाह होता है। मेरुदण्डकी हड्डियोंके बीचमे दबानेपर रोगी बेचैन हो पडता है। इसमे मस्तिष्क झिल्लीमे उपदाहकी वजहसे पेशियाँ कडी पडती जाती हैं, अन्तमे बीमारी धनुष्टङ्कारमें परिणत हो जाती है। इसके अलावा—मेरुदण्डमें जलन, धुकधकी, हाथ-पैर तथा अन्यान्य

का सुप्त होते जाना, हाथमें पेठन, नींद्के समय एकाएक पैरमें झटका देकर खींचनेकी तरह फडक उठना, कमरमें न प्रभृति फाइजस्टिग्माके लक्षण है।

स्पाइनल पेरालिसिस—(मेरुदण्डीय पक्षाघात)—ीमारीमें स्ट्रिकनियाके लक्षणके साथ फाइजस्टिग्माकी बहुत समानता है। गलेके भीतर सकोचन, (constriction), स्थली और आँतोंमें खींचन (spasms), मलद्वारमें वेग और र, पैर और मेरुदण्डका कडापन और अकडनका भाव और ारामें खिचाव—इत्यादि लक्षण—स्ट्रिकनिया और फाइ-ग्मा दोनोंमें ही है। इसके अलावा बहुत कमजोरी और हाथ-कपकपीकी वजहसे चल न सकना, पेशियोंका इच्छानुसार न करना प्रभृति लक्षण—फाइजस्टिग्माकी तरह जेलसिमियम कोनियममें भी है। पर स्ट्रिकनियाके साथ प्रभेद यह है, कि, होनेपर—स्ट्रिकनियामें—श्वासयन्त्रकी पेशीमें धनुष्टङ्कारकी डनकी वजहसे साँस बन्द होकर मृत्यु होती है, और फाइ-ग्मामें—श्वासयन्त्रके पक्षाघातके कारण मृत्यु हो जाया ी है। स्ट्रिकनियामें—आँखकी पुतली फैली, फाइजस्टिग्मामें—चित रहा करती है।

फाइजसटिग्मा—निम्न शक्ति व्यवहार करनेपर ताण्डव और लिसिस एजिटेन्स (सकम्प पक्षाघात) की बीमारी आरोग्य ा है।

आँखकी बीमारी—दूरकी चीज बिलकुल ही नहीं दिखाई देती, आँखके खूब पास आये बिना पासकी चीज भी नजर नहीं पड़ती (short sight), इसमें भी फाइजस्टिग्मा फायदा करता है। दूरकी चीज दिखाई देती है, पासकी चीज दिखायी नहीं देती, (long sight), इसके अलावा, इसमें और भी एक तरहकी आँखकी बीमारी होती है, जिसमें रोगीको नाना प्रकारके रग दिखाई देते है, इसमे भी फाइजस्टिग्मा फायदा करता है। आँखकी किसी बीमारीमें आँखकी पुतलीका सकोचन (Constriction of pupil) देखनेपर पहले इसे ही स्मरण करें। यह आँख में डालनेके काममे भी आता है। मूल औषध—२ ग्रेन, १ आउन्स डिस्टिलड वाटर मिलाकर दिनमें ३।४ बार प्रयोग करना चाहिये।

अन्तिम वक्तव्य—फाइजस्टिग्मा—पक्षाघात, चोटकी वजहसे धनुष्टङ्कार, ताण्डव, लोकोमोटोर पेटैक्सी, (गति शक्ति राहित्य) पागलोंका सार्वाङ्गिक पक्षाघात, सकम्प पक्षाघात, (पैरालिसिस-एजिटैन्स), मेरुदण्डमें रक्तसचय (स्पाइनल कार्ड कानजेशन), घोड़ोंकी धनुष्टङ्कारकी बीमारी—और मायोपिया, दूर-दृष्टि (लाङ्ग साइट), शार्ट साइट (short sight) स्टैफाइलोमा, ग्लोकोमा, चोट लगकर चक्षुताराका बाहर निकल पड़ना, कनीनिकाका गदलापन, जखम वगैरह आँखकी कई बीमारियोंमें इसके प्रयोग से खासा फायदा होता है।

वृद्धि (aggravation)—सवेरे, ज्यादा परिश्रमसे, मानसिक चिन्तामें।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, टहलनेपर, आँख बन्द करनेपर, स्थिर रहनेपर, गरम घरमें, कैम्फर सू घनेपर ।

सदृश—पेट्रोपिन, एगरिकस, नक्स, जेलस, ओपि, स्ट्रैमो, टैवेकम ।

क्रम—३—६ शक्ति । फारमुला—७ ।

फाइटोलैक्का डिकेण्डा ।

(PHYTOLACCA DECANDRA)

(एक तरहके गुल्मकी ताजी जडसे टिंचर तैयार होता है)—ग्लैण्ड और ग्रन्थिकी बीमारी, नया वात, पुराना वात, पारा या उपदंशकी वजहसे पैदा हुआ वात और हड्डीमें दर्द, डिप्थीरिया, तालुमूह प्रदाह, गलक्षत इत्यादि बीमारियोंमें इसका हमेशा व्यवहार होता है । इसमें शरीरके दाहिनी ओर रोगका आक्रमण अधिक होता है। दर्द और तकलीफ रातमें और बरसातमें अधिक बढती है । यह ब्रायोनिया और रसटक्सके मध्यवर्ती लक्षणोंमें व्यवहृत होता है । धनुष्टङ्कार, पीछेकी ओर टेढा पड जाना, शरीरका वजन घटते जाना, दाँत निकालनेमें व्याघात इत्यादिमें भी यह फायदा करता है ।

चरित्रगत लक्षण —

१ । ब्रायोनिया और रसटक्सके मध्यवर्ती लक्षणोंमें और उन

दोनों दवाओंसे फायदा न होनेपर—फाइटोलैकासे आरोग्य होता है, २। जगह बदलनेवाला दर्द, ठण्ड लगकर उपपर्शुका—पंजेमें दर्द, नया वात, गाँठ फूलना, ३। तीर विंधनेकी तरह दर्द, बिजलीको लहरकी तरह एक जगहसे दूसरी जगहपर चला जाता है (पल्स, लैक-कैनाई) दर्द—हिलने-डोलनेपर और रातमें बढता है, ४। जीवनसे एकदम अनास्था, समझता है, कि मैं अवश्य ही मर जाऊँगा, ५। बिछावनसे उठते ही सरमें चक्कर आ जाता है मूर्च्छाकी तरह हो जाता है (ब्रायो), ६। माथा और कमरमें बेतरह दर्द, समूचे शरीरमें कुचलनेकी तरह दर्द, हिलने-डोलनेकी इच्छा रहती है, पर उससे दर्द और भी बढता है, ७। दाँत निक-लनेके समय बच्चा लगातार कोई चीज या अपना मसूढा काटता है ८। गलेमें जखम, टानसिलाइटिस (तालुमूल-प्रदाह), डिप्थीरिया ६। ठुनका या स्तनका प्रदाह, स्तनमें फोडा, स्तन कडे, स्तनमें दर्द भरी गाँठें, नासूर, १०। स्तन फूला हुआ, न पकता है, न बैठता है, ११। पैरोटिड और सब मैक्सिलरी ग्रन्थियाँ सख्त ; १२ हाथ और कन्धेकी सन्धिकी जगहकी हड्डीके भीतर दर्द।

मुंह और गलेका जखम:—फाइटोलैका इस रोग का महौषध है। पहले गलेके भीतर प्रदाह होकर, दोनों बगलके तालुमूल फूलकर लाल हो जाते हैं और वहाँ सफेद लेप (patch) पडता है। जीभमें बहुत दर्द होता है, किसी चीजके खाने-पीनेमें बहुत तकलीफ होती है, मुँहसे लार निकलती है, गलेके भीतरका

यह दर्द क्रमश कानतक फैल जाता है। और अगर यह सफेद लेप जल्दी उतर नहीं जाता तो यह प्रदाह क्रमश डिपिथरियामें बदल जाता है। डिपिथरिया रोगमें—गलेके भीतर जलन, गला और समूचे शरीरमें अकडनकी तरह तेज दर्द इत्यादि लक्षण रहनेपर—फाइटोलैक्काका भीतरी सेवन करने और बाहर लगानेसे ज्यादा फायदा होता है। फाइटोलैक्कामें—रोगी बहुत कमजोर हो पडता है। आँख-मुँह बैठ जाते है और आँखमें काला दाग पडता है। गालके (inside of the cheek) और जीभकी नोकके जखम-में भी—फाइटोलैका फायदा करता है।

डिफ्थीरिया (Diphtheria)—आजकल अगर किसीको यह बीमारी हो जाती है, तो—एलोपैथगण अकसर ट्रेकियोटोमा (वायुनली काट देना) की सलाह देते हैं, इससे यह देखनेमें आता है, कि उनके अभिभावक डरकर अन्तमें रोगीको होमियोपैथोंके हाथ चिकित्साके लिये सौंप देते है और इससे रोगी भी आरोग्य हो जाया करते हैं। इस बीमारीमें—फाइटोलैक्का, रसटक्स, बैप्टीशिया, एपिस, नेजा, आर्सेनिक, लैकेसिस, मोर्टेल्स, मर्कुरियस, खासकर मर्कुरियस—सियानेटस नामकी दवा तथा और भी कई दवाएँ है, जो समयपर लक्षण मिलाकर प्रयोग कर सकनेसे केवल दवा खानेसे ही बीमारी आराम हो जाया करती है। बच्चोंको यह बीमारी ज्यादा होती है। (डिफ्थेरिनम देखिये)।

फाइटोलैक्का—डिफ्थीरियाकी पहली अवस्थामें, ज्वर—शी

भाव, कमरमे दर्द, भयानक कमजोरी, गलेके भीतर मानो लाव पैदा हो जाना, गलेमें बहुत जलन, गरम चीजका एकदम खा सकना प्रभृति लक्षण रहते हैं। उस समय फायदा करता है।

मर्क्युरियस-सियानेटस—नाड़ीकी गति बहुत तेज, मिनिट १३०।१३५ बार स्पन्दन (पपिसमे भी नाड़ीकी गति तेज और मिनिटमें स्पन्दन इसी तरह—१३०।१३५ बार होता है। इस उपजिह्वा और समूचा गला फूल उठता है। ज्वर—या तो बहुत थोडा होता है, अथवा बिलकुल ही होता ही नहीं), पहले टॅटुए में सफेद पर्दाकी तरह पैदा हो जाता है, इसके बाद वह फैलकर तालु और तालुमूलको ढक लेता है, गांठ फूल उठती है। इस समय झिल्लीका रङ्ग कालिमा लिये हो जाता है, इससे ऐसा मालूम होता कि सडनकी बीमारी हो जायगी। इस समय रोगी इतना कमजोर हो जाता है, कि उठनेपर ही चक्कर आ जाता है, श्वास प्रश्वासमे बहुत सडी बदबू रहती है, जीभका रङ्ग भूरा हो जाता है, अगर बीमारी प्राण-घातक अवस्थापर जा पहुँचती है, तो जीभका रग काला हो जाता है (जीभ काली होना बहुत भयानक बात है), अन्तमें नाकसे रक्तस्राव होता है। जो हो, अगर बीमारी इस अवस्थामे जा पहुँचे तो समझना होगा कि बीमारी खूब कडी है, पर इतनेपर भी हताश होनेकी जरूरत नहीं है। ऐसी सङ्कटमयी अवस्थामे भी इस दवाके द्वारा बहुतसे रोगी आरोग्य हुए हैं। मर्क्युरियस-सियानेटस—लैरिङ्क्सकी डिफ्थिरिया

मे भी समान लाभदायक है । इसकी ६ ठी शक्तिसे ज्यादा फायदा होता है । (मर्कुरियस-सियानेटस पढिये) ।

तालुमूल-प्रदाह—इस बीमारीका नया प्रदाह प्राय १४।१२ दिनोंमें घट जाता है और रोग आराम हो जानेपर देखा जाता है,कि टानसिल कुछ बडा है । जिनको बार बार यह बीमारी हो जाया करती है, उनकी बीमारी अकसर पुराना आकार धारण कर लेती है । पुराना आकार धारण करनेपर रोगीको साँस छोडने मे तकलीफ होती है, साँसमें आवाज होती है, मुँह फाडकर मुँहके भीतर देखनेपर टानसिल एक बडी सुपारीकी तरह दिखाई देता है । फाइटोलैका—इस तरहकी पुरानी बीमारीमे भी फायदा करता है , टानसिल कडा, बडा और उसका रङ्ग कालापन लिये लाल या नीला होनेपर इससे और भी ज्यादा फायदा होता है । फालिक्युलर-टानसिलाइटिसकी पहली अवस्थामें और जिन आदमियोंको बार बार यह बीमारी हुआ करती है, उनके लिये—फाइटोलैका उत्तम दवा है ।

पेमिगडाला-पेमारा (Amygdala Amara)—३ री—६ ठी शक्ति, यह दवा नयी है, पर जब यह देखें कि गलेके भीतर भयानक दर्द, कोई चीज सहजमें निगल नहीं पाता, तालुमूल और उपजिह्वा चमकीली लाल हो रही है, उस समय इसका व्यवहार करें ।

स्तन-प्रदाह—स्तन पहले फूल उठते हैं, गरम और कडे हो जाते हैं, उनमें भयानक तकलीफ रहती है । इस

पहली अवस्थामे—ब्रायोनियाकी निम्न-शक्तिके प्रयोगसे अकसर प्रदाह घट जाता है। स्तनमे दूधका बढना, स्तन कडा, रोगवाली जगह थोडी लाल, बहुत तकलीफ देनेवाला खोचा मारनेकी तरह दर्द, ज्वर—ये सब—ब्रायोनियाके लक्षण हैं। ब्रायोनियाका प्रदाह न घटनेपर या पहलेसे ही चकत्तेकी तरह सूजन, भयकर दर्द और पकनेका उपक्रम होनेपर,—फाइटोलेका फायदा करता है। स्तनमे नासूर होनेपर और उससे गुलावी पानी या पानीकी तरह बदबूदार पीव निकलनेपर या वह घाव किसी तरह आराम न होनेपर—साइलिसिया, कैल्केरिया-सल्फ, हिपर इत्यादि सभी दवाओंकी अपेक्षा—फाइटोलैका अधिक फायदा करता है। स्तनमें गुमडा या फोडा, उसमे बगलकी गांठ फूलती है और बहुत दर्द होता है, दर्द समूचे शरीरमे फैलता है।

वात—सायटिका नामक वात रोगमे और पुराने वातमें फाइटोलैका फ़ायदा करता है। पैरकी एँडीके वातमे यदि पैर, माथेकी अपेक्षा ऊँचा कर रखनेपर तकलीफ घटती हो तो, ऐसा होनेपर यह सब दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। नया वात—इसमे लम्बी अस्थियाँ और अराडकोषके अगले भागपर अधिक बीमारी होती है। गर्मी और प्रमेह रोगवाले मनुष्योंके वातमे गाठ फूलती है और लाल हो जाती है, बहुत तकलीफ रहती है, बीमारी सवेरे और बरसातमें बढती है। दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतर दर्द, हाथ उठा नहीं सकता।

दर्द—समूचे शरीरमें, खासकर कमर और माथेमें बहुत दर्द, पेठन और अकडनका दर्द, इसीलिये, रोगी हमेशा इधर उधर करवट बदलता रहता है और कराहता है। रसटक्समें—दर्दकी वजहसे रोगी इधर उधर करवट बदलता है और इससे उसे कुछ आराम मिलता है, पर फाइटोलैकामें ऐसा नहीं होता, बल्कि उससे दर्द और भी बढ जाता है। दर्द बिजलीकी ल्हरकी तरह जगह बदलता रहता है।

हैजा—बच्चोंके हैजामें फाइटोलैकाका एक विशेष लक्षण यह है, कि बच्चा अपना मसूढा आप दाँतसे काटता है और जो कुछ सामने पाता है, उसे ही काटता है। बच्चोंको दाँत निकलनेके समय ये लक्षण स्पष्ट दिखाई देते है। बच्चोंका हैजा, अतिसार दाँत निकलनेके समयकी अतिसारकी बीमारी, इत्यादि बच्चोंकी किसी भी बीमारीके साथ ऊपरका लक्षण रहनेपर—फाइटोलैका ज्यादा फायदा करता है। पोडोफाइलममें भी—इसी तरह मसूढेको काटनेका लक्षण है, पर पोडोफाइलमका दस्त बहुत बदबूदार और परिमाणमें मानो एक गमला रहता है, पेटमें किसी तरहका दर्द नहीं रहता, रङ्ग कुछ पीला या सफेद रहता है, पेट खूब गडगडाता है, फाइटोलैकामें—ऐसा लक्षण बिलकुल ही नहीं है, इसके दस्तका रग भूरा और वह पतला रहता है।

मोटापन-स्थूलकायत्व—बहुत ज्यादा चर्वी बढ जाने पर शरीर बेतरह स्थूल हो जाता है। शरीर स्थूल होकर जिन्दगी

पहली अवस्थामें—ब्रायोनियाकी निम्न-शक्तिके प्रयोगसे अकसर प्रदाह घट जाता है। स्तनमें दूधका घटना, स्तन कडा, रोगवाली जगह थोडी लाल, बहुत तकलीफ देनेवाला खोंचा मारनेकी तरह दर्द, ज्वर—ये सब—ब्रायोनियाके लक्षण हैं। ब्रायोनियाका प्रदाह न घटनेपर या पहलेसे ही चकत्तेकी तरह सूजन, भयकर दर्द और पकनेका उपक्रम होनेपर,—फाइटोलेका फायदा करता है। स्तनमें नासूर होनेपर और उससे गुलाबी पानी या पानीकी तरह बदबूदार पीव निकलनेपर या वह घाव किसी तरह आराम न होनेपर—साइलिसिया, कैल्केरिया-सल्फ, हिपर इत्यादि सभी दवाओंकी अपेक्षा—फाइटोलैका अधिक फायदा करता है। स्तनमे गुमडा या फोडा, उसमे बगलकी गांठ फूलती है और बहुत दर्द होता है, दर्द समूचे शरीरमें फैलता है।

वात—सायटिका नामक वात रोगमे और पुराने वातमे फाइटोलैका फायदा करता है। पैरकी एँडीके वातमे यदि पैर, माथेकी अपेक्षा ऊँचा कर रखनेपर तकलीफ घटती हो तो, ऐसा होनेपर यह सब दवाओंकी अपेक्षा ज्यादा फायदा करता है। नया वात—इसमे लम्बी अस्थियाँ और अण्डकोषके अगले भागपर अधिक बीमारी होती है। गर्मी और प्रमेह रोगवाले मनुष्योंके वातमे गांठ फूलती है और लाल हो जाती है, बहुत तकलीफ रहती है, बीमारी सवेरे और बरसातमे बढती है। दाहिने कन्धेकी हड्डीके भीतर दर्द, हाथ उठा नहीं सकता।

क्रम—ϕ, १x—३ री शक्ति।

फारमुला—जर्मन—१, अमेरिकन—३।

प्लाटिनम मेटालिकम।

(PLATINUM METALLICUM)

(प्लाटिनम धातु, इससे विचूर्णके आकारमे दवा तैयार होती है)—यह स्त्रियोंकी बीमारीकी एक बहुमूल्य दवा है। जरायु, डिम्बकोष, मस्तिष्क, स्नायु इत्यादिके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

मानसिक लक्षण—अत्यन्त अहंकारी, सबको ही नीच और अपनेको बहुत माननीय समझती है। रोगिनी घरके चारों ओर घूमती है और सोचती है कि और सब मनुष्य उसकी अपेक्षा सब तरहसे शक्तिहीन हैं और वह स्वयं अधिक बलवती है। मिजाज—इग्नेशिया, क्रोकस, और नक्स-मस्केटाकी तरह बदलनेवाला होता है, मृत्युभय—एकोनाइटकी तरह प्लाटिनामें भी दिखाई देता है, किसी भी बीमारीके साथ प्लाटिनाके प्रथमोक्त दोनों मानसिक लक्षण रहनेपर इससे जल्दी और अधिक फायदा मिलेगा।

स्त्री-रोग—ऋतुस्राव परिमाणमें बहुत अधिक, रंग गदला या घोर लाल और गाढा, कभी कुछ पतला और कुछ थका

देखिये)। तम्बाकू खानेके कारण पैदा हुआ चेहरेका स्नायुशूल और दाँतके दर्दमें भी यह फायदा करता है।

चेनोपोडि-ग्लासि-पेपिस (Chenopodı-glaucı-appis)—६ से ३० शक्ति, दाँतमे दर्द—दाँतसे कानमे, कनपटीमे, गण्डास्थिके भीतर तक चला जाता है। इसका भी लक्षण प्राय: प्लैण्टेगोके सदृश है।

चिरियैनथस—(Cherıanthus) एक तरहके छोटे पौधेसे टिंचर बनता है, अक्ल दाँत निकलने समय असह्य दर्दमे दूसरी दूसरी दवाओंकी अपेक्षा इसका मूल अर्क—बाहरी प्रयोगसे और भीतरी सेवन करनेपर बहुत कुछ फायदा होता है। कान-पकना, कानमे पीव या बहरापन हो जाने की भी यह एक अच्छी दवा है।

कब्ज और बवासरी—हमेशा ही पाखाना होनेकी इच्छा, बार बार पाखाने जाता है, पर तकलीफके कारण होता नहीं। मलद्वारमें मिर्चा लग जानेकी तरह जलन, प्रदाह और दर्द, बहुत ही तकलीफ देनेवाला बवासीर, रोगी खडा नहीं रह सकता, किसी अवस्थामे भी उसे आराम नहीं मिलता। इस तरह के रोगीके मलद्वारमे—प्लैण्टेगो,—ϕ, रूई या परमे लगाकर लगानेसे निम्न शक्ति २।३ घण्टेके अन्तरसे एक एक मात्रा सेवन करनेपर सम्भवत दूसरी दवाओंकी अपेक्षा इससे जल्दी फायदा होगा। इस उपायसे तकलीफ बहुत दूर हो जाती है। (इस्कियुलस—ϕ, वेसोलिनके साथ बवासीरमे लगायें) साइमेक्स देखिये।

पेशाबकी बीमारी—बहुमूत्र, परिमाणमें और बारमे बहुत अधिक, रातमे पेशाबका बढ़ना, इसके साथ ही प्यास।

बहुत-सी रक्तस्रावी प्रकृतिकी रोगिनीका कमजोर बिगड़ा स्वास्थ्य ठीक ठिकाने ला सका हूँ। इस तरहकी व्यवस्था हनिमैनकी प्रक्रिया न होनेपर भी आशा है, पाठक दो एक रोगिनीपर प्रयोग कर देखेंगे, अद्भुत लाभ दिखाई देगा, अभिज्ञता कोई दूसरी ही चीज होती है। प्लाटिनामें—सिपियाकी तरह नीचेकी ओर धक्का देनेवाला दर्द (bearing down pains) रहता है। कोई युवती स्त्री अगर एक जगहसे दूसरी जगह जाये और यदि उसका पहलेका स्वास्थ्य नष्ट हो जाये और नियमित मासिक रज स्राव—एकदम बन्द हो जाये, तो प्लाटिना ही उसकी पहली दवा है।

डिम्बकोषकी (Ovary) बीमारीमें—डिम्बकोषमें प्रदाह होकर उसमें अगर पीब हो जाये, तो अकसर लैकेसिससे आरोग्य होता है। पर लैकेसिससे आरोग्य न होनेपर भी और उस रोगके साथ प्लाटिनाके मानसिक लक्षण वर्तमान रहनेपर—प्लाटिनासे फायदा होता है। प्लाटिनाके और भी कितने ही मानसिक लक्षण हैं। जैसे—उदासीनता, जीवन भार मालूम होना इत्यादि लक्षण भी हैं, इसके अलावा ये लक्षण—सिपिया और आरम-मेटालिकममें भी पाये जाते हैं। सिपियामें—रज स्राव थोड़ा, प्लाटिनामें—रज-स्राव अधिक, प्लाटिना और सिपिया दोनों ही दवाओंमें जरायुमें खोंचा मारनेकी तरह दर्द रहता है। प्लाटिनामें—योनिमें दर्द, जलन और प्रसवके दर्दकी तरह वेग रहता है।

पुं-जननेन्द्रिय—हस्तमैथुनसे पैदा हुई बीमारी, क्षण-स्थाई सगम।

थक्का, इस तरहके ऋतुस्रावके साथ इसके उपरोक्त मानसिक लक्षण वर्त्तमान रहनेपर—प्लाटिनमसे तुरन्त फायदा मिलता है।

अभिज्ञताका परिणाम—हैमामेलिस अध्याय पढने से मालूम होगा कि वहाँ रक्तस्राव रोकनेकी बहुत-सी दवाओंके लक्षण बताये गये हैं। पर इस प्लाटिनाका कोई भी उल्लेख वह नहीं है। इसका उद्देश्य है—अलग ही इसका वर्णन करना।

जिन स्त्रियोको मासिक ऋतुस्राव बहुत जल्दी जल्दी होता है और परिमाणमे भी ज्यादा होता है, रज बहुत दिनोतक—यहाँ तक कि २०।२५ दिनोंतक बना रहता है, स्राव कभी बहुत अधिक कभी कुछ कम, कभी कभी बहुत दर्दके साथ यहाँतक कि उस समय अकडनतक पैदा हो जाती है, कभी दर्द बहुत थोडा होता है, ऋतुके समय इतना दर्द रहता है, कि योनिके ऊपरी भागमे हाथतक नहीं लगाया जाता, रंग कभी घोर चमकीला लाल, कभी कभी उजला, रक्त—कभी थक्का मिला, साधारणत पहले दिन—काला, गाढा, थका थक्का, दूसरे दिन थक्के नहीं रहते, रोगिनी प्रत्येक महीने क्रमश रक्तहीन और सफेद होती जाती है। ऐसे स्थानपर मैं प्लाटिनाके ऊपर बताये दोनों चरित्रगत लक्षण न मिलनेपर भी, इसकी ६ या ३० शक्तिका प्रयोग करता हूँ और इससे आश्चर्य-जनक फायदा दिखाई देता है। इसके अलावा—प्लाटिना ६ ठी शक्ति प्रति सप्ताह १ दिन १ मात्रा और ऋतुस्रावके समय नित्य १ मात्रा, इस नियमसे ३।४ महीनोंतक दवाका व्यवहार करा,

तथा चलनेपर घटते हैं। दर्द-धीरे धीरे बढ़ता और धीरे धीरे ही घटता है।

क्रियानाशक (antidote)—बेल, नाइट्रि-स्पिरिट-डल, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३५—४० दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति। फारमुला—विचूर्ण—७।

प्लम्बम मेटालिकम।

(PLUMBUM METALLICUM)

(सीसा नामक धातुसे विचूर्णके आकारमें यह दवा तैयार होती है।) रक्त, पाचन-यन्त्र, स्नायु-मण्डल (नर्वस सिस्टम) पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। इसके द्वारा रक्तके लाल कणका अंश घट जाता है, उससे रक्तहीनता (anaemia), कामला (इक्टारस) और चेहरा सफेद हो जाता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। सम्पूर्ण अथवा आंशिक पक्षाघात; बहुत कमजोरी और रक्तहीनता, बहुत जल्दी जल्दी दुबले होते जाना (Emaciation), २। पुराना पक्षाघात जिस अंशपर होता है, वह क्रमशः पतला पड़ता जाता है और खींच रखनेकी तरह दर्द होता है, ३। प्रसारणी पेशी अर्थात जिस पेशीके सहारे, हमलोग

कब्जियत—लगातार पाखानेकी चेष्टा, मल थोडा, कडा और सूखा, भयानक कब्ज, किसी तरह भी दस्त नहीं होता, ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वारपर कुछ एक भारी बोझा रखा हुआ है, वह किसी तरह नहीं निकलता। गर्भावस्थाकी कब्जियतमें—प्लाटिना फायदा करता है। (एसिड-गौलिक देखिये)।

कामोन्माद—योनिदेश और तलपेटमे सुरसुरी होती है, इससे कामोद्रेक हो जाता है। यह इच्छा कभी कभी इतनी वलवती हो जाती है कि सामने जिसे पाती है, उसे ही आलिंगन करना चाहती है, मलद्वारसे योनिके भीतर कितने ही समय छोटी छोटी क्रिमियाँ प्रवेश कर इस तरह सुरसुराया करती है, इससे कामेच्छा प्रवल हो जाती है। इसमें—कैलिडियम फायदा करता है। सौरी घरकी स्त्रियोंका कामोन्माद और कुमारी स्त्रियोंकी इस बीमारीमे—प्लाटिना लाभदायक है। जरायु फूलकर कडा और जरायुका वाहर निकलना (Prolapsus-uteri)—प्लाटिनासे आरोग्य होता है, इसके साथ ही कमर और पुट्ठेकी जगहपर स्पर्श सहन न होनेवाला दर्द रहनेपर—प्लाटिनासे और भी ज्यादा फायदा होता है। स्वामी सहवासमे दर्द, योनिदेशमे स्पर्शका विलकुल ही सहन न होना, यहाँतक कि उसमें हाथतक नहीं लगाया जाता, सहवासके समय अज्ञान हो पडती है। ये सब प्लाटिनाके लक्षण हैं।

वृद्धि (aggravation)—प्लाटिनाके सभी दर्द और उपसर्ग रातमे, विश्रामसे, वैठनेपर, खडे होनेपर बढ़ते हैं और हिलने-डोलने

दण्डकी हड्डीने तलपेटको भीतरकी ओर खींच रखा है, उदर-गह्वर खाली हो जाता है। इस तरहका दर्द स्नायु-पथकी राहसे शरीरके सभी स्थानोंमें चला जा सकता है, अगर यह नीचेकी ओर उतरता है, तो पेटमें पेठन होती है, माथेमें चला जाता है, तो रोगी विकारकी तरह बकता है। प्लम्बमके शूलके दर्दके साथ कब्जियत रहती है, जरायुके रोगके साथ कभी कभी इस तरहका शूलका दर्द होता है। प्लम्बमके शूलके दर्दके साथ कभी कभी मलका वमन (stercoraceous vomiting) होता है। कोलोसिन्थमें—पेटका दर्द जोरसे दबाने या सामनेकी ओर झुक कर बैठनेसे कुछ घटता है, इसमें पित्तकी कै होती है, कभी कभी कब्जियत रहती है। डायसकोरियामें—शूलका दर्द पुट्ठेकी जगहसे आरम्भ होकर समूचे तलपेटमें फैल जाता हैं, पीछेकी ओर झुकने या चित होकर सोनेपर यह दर्द कुछ घटता है। प्लम्बमका दर्द—किसी तरह नहीं घटता। मैग्नेशिया-फासमें—गरम पानी पीनेपर, गरम सेंक या किसी तरहसे गरमी पहुँचानेपर दर्द घट जाता है। टाइफिलाइटिस और एपेण्डिसाइटिस अर्थात अन्यान्य प्रदाह वाल-रोगमें भी प्लम्बमसे फायदा होता है। वायु रुककर भी इसमें पेटमें शूलका दर्द होता है।

सीसक-शूलका दर्द—रोगकी आक्रमणवाली अवस्थामें, इसका प्राथमिक लक्षण है—पेटमें पेठनकी तरह भयानक दर्द होता है, मानो नस-नाडियाँ कटी जाती हैं, पेटका मांस पीठकी

फैला सकते है, उसका पक्षाघात , ४। स्मरण शक्तिका लोप हो जाना या कमजोरी, सभी बात याद न रख सकना , ५। चेहरा मलिन, राखके रगकी तरह, पीला, आँख बैठ जाना, गाल दबे, चेहरेपर दु ख और भीतरी कष्टका चिन्ह , ६। पेटमे एक तरहका दर्द—यह शरीरके अन्य सभी स्थानोंमें चला जाता है , ७।-शूल का दर्द (कालिक)—उसमे तलपेटकी माँस-पेशी और नाडियाँ मानो भीतरकी ओर खिंचती हैं , ८। कब्ज,—मल बकरीकी मींगीकी तरह, मल-त्यागनेके समय ऐसा मालूम होता है, मानो एक चौडासा तरह पदार्थ उसके पेटमें घूम रहा है , ९। शूलका दर्द आरम्भ होनेपर ऋतुस्राव बन्द हो जाता है और बन्द होनेपर ऋतुस्राव आरम्भ हो जाता है , १०। गति शक्ति राहित्य (लोकोमोटर ऐटैक्सी) और शरीरमे जगह जगहकी मास-पेशियाँ सूख जाती हैं , ११। इण्टाससेप्सन—पेटमे दर्दके साथ मलकी कै होना, १२। फिमोरल, अम्बिलिकल, इ ग्विनल और स्ट्रैङ्गुलेटेड हर्निया, १३। दाँतके मसूढेमे नीले रगका दाग, खासकर यक्ष्मा और टायफायड ज्वरमे , १४। वात, पक्षाघात इत्यादिमे रोगवाली जगह क्रमश सूखती जाती है , १५। गर्भिणीको ऐसा मालूम होता है, मानो जरायुमे भ्रूणको पूरी जगह नहीं मिलती।

शूलका दर्द—उदर-शूलका भयानक यन्त्रणादायक दर्द, पेट फाटता है और मरोडता है, पेटके दर्दके समय तलपेट भीतरकी ओर खिंच जाता है। देखनेपर ऐसा मालम होता है, मानो मेरु-

दण्डकी हड्डीने तलपेटको भीतरकी ओर खींच रखा है, उदर-गह्वर खाली हो जाता है। इस तरहका दर्द स्नायु-पथकी राहसे शरीरके सभी स्थानोंमें चला जा सकता है, अगर यह नीचेकी ओर उतरता है, तो पेटमें पेठन होती है, माथेमें चला जाता है, तो रोगी विकारकी तरह बकता है। प्लम्बमके शूलके दर्दके साथ कब्जियत रहती है, जरायुके रोगके साथ कभी कभी इस तरहका शूलका दर्द होता है। प्लम्बमके शूलके दर्दके साथ कभी कभी मलका वमन (stercoraceous vomiting) होता है। कोलोसिन्थमें—पेटका दर्द जोरसे दबाने या सामनेकी ओर झुक कर बेठनेसे कुछ घटता है, इसमें पित्तकी कै होती है, कभी कभी कब्जियत रहती है। डायसकोरियामें—शूलका दर्द पुट्ठेकी जगहसे आरम्भ होकर समूचे तलपेटमें फैल जाता है, पीछेकी ओर झुकने या चित होकर सोनेपर यह दर्द कुछ घटता है। प्लम्बमका दर्द—किसी तरह नहीं घटता। मैगनेशिया-फासमें—गरम पानी पीनेपर, गरम सेंक या किसी तरहसे गरमी पहुँचानेपर दर्द घट जाता है। टाइफिलाइटिस और एपेण्डिसाइटिस अर्थात अन्यान्य प्रदाह वाल-रोगमें भी प्लम्बमसे फायदा होता है। वायु रुक कर भी इसमें पेटमें शूलका दर्द होता है।

सोसक-शूलका दर्द—रोगकी आक्रमणवाली अवस्थामें, इसका प्राथमिक लक्षण है—पेटमें पेठनकी तरह भयानक दर्द होता है, मानो नस-नाड़ियाँ कटी जाती हैं, पेटका माँस पीठकी

हार्निया और इण्टस-सेपसन—आँत उतरनेमें, किसी किस्मका कथन है, कि स्ट्रेङ्गुलेटेड-हर्नियाकी (इसमें जो आँत उतरती है, वह रुक जाती है। प्राय किसी तरह भी किसी ओर हटायी नहीं जाती) यह बढ़िया दवा है। इण्टस-सेप्सन (नाड़ीके भीतर नाडीका प्रवेश कर जाना)—इस बीमारीमें, जब नाभीकी जगहपर शूलका भयानक दर्द होता है, मल—मलद्वारसे न निकलकर मुँहसे वमन होता है। ऐसा मालूम होता है, कि मलद्वार ऊपरकी ओर खिंचा हुआ है, दाहिनी ओरके पुट्ठेके ऊपरी अशमे तलपेट फूला रहता है, उस समय प्लम्बम दें (नक्सवोमिका अध्याय देखें)। इन दोनों बीमारियोंसे बहुत-से रोगी मरते है, कुछ भी असुविधा मालूम होते ही अस्पतालमें भेजें।

प्लम्बम-आयोड—३x—६ शक्ति, यह नाना प्रकारके पक्षाघातमें, Pellagra नामक एक तरहके चर्म्म-रोगमे (इटलीके उत्तरी भागमें यह ज्यादा होता है) और स्तनकी ग्रन्थि प्रदाहित होनेकी पहली अवस्थामें जब बहुत अधिक दर्द रहता है, उस समय इसके प्रयोगसे फायदा होता है।

वृद्धि (aggravation)—दाहिनी करवट सोनेपर,—प्रत्यग आदिका दर्द, खाँसी और पेट फूलना, और बायीं करवट सोनेपर, कलेजा धड़कना।

ह्रास (amelioration)—रगड़नेपर, जोरसे दबानेपर, विश्रामसे।

सम्बन्ध—शूलके दर्दमें—प्लम्बि, प्लैटि और ओपियम, नाभीके सिकुडनेमें—पोडो और रुकी हुई अन्तवृद्धिमें नक्सके साथ—कुम्बमका सादृश्य है।

क्रिया-नाशक (antidote)—प्लम्बिना, एपिटम कूड, आर्स, बेल, काकु, कास्टि, हिपर, हायो, केलि-ब्रोम, क्रियो, नक्स, नक्स-मस्के, ओपि, पेट्रो, प्लैटि, एसिड-सल्फ, स्ट्रैमो, जिङ्क।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०-३० दिन।

क्रम—(potency)—३०—२०० शक्ति।

फारमुला—७।

पोडोफाइलम पेल्टेटम।

(PODOPHYLUM PELTATUM)

(एक तरहके गुल्मकी ताजी जड़से यह दवा तैयार की जाती है)—अतिसार, हैजा, यकृत, मलद्वार, बडी आँत इत्यादिकी बीमारीमें और पित्त-प्रधान धातुवाले मनुष्य, जिनकी पाचन क्रिया ठीक ठीक नहीं होती, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है।

पोडोफाइलम—जुलाबकी मात्रामें सेवन करनेपर बहुत ज्यादा मात्रामें झाकसे दस्त आते हैं। इसकी विष-क्रियाके कारण आँतो-

का प्रदाह और आंतमे जखम हो जाता है। इसमे डियोडिनम (पक्काशय) और मलनली (Rectum) ही अधिक आक्रान्त होती है और मलनली बाहर निकल पडती है। इसके अलावा—आमाशयके लक्षण सब भी प्रकट हो जाते हैं, यकृतमें रक्तकी अधिकता (congestion) होता है, पित्तदोषसे अधिक मात्रामें पीव निकलता है और उदर-प्राचीर कमजोर हो पडता है। पोडोफाइलमके वृत्तका सत—पोडोफाइलिनसे बहुतोंने जुलाबकी दवा तैयार की है। किसी किसीका कहना है कि—काटार्स-लिटिल लिवर-पिलका (जुलाबकी गोली) प्रधान उपादान—पोडोफाइलिन और ऐलो है।

चरित्रगत लक्षण —

१। मल बहुत बदबूदार, विना किसी तरहके दर्दके पाखाना होता है, और परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है, पतले, झोंकके दस्त, मल गरम, मलद्वारमे गरमी मालूम होती है, २। प्रत्येक बार मानो एक एक गमला दस्त होता है, शरीर सिकुडा-सा जाता है, पर इसके बाद ही मानो पेट भर जाता है, और पाखाना होनेके पहले पेट जोरसे गडगडाता है, ३। बच्चोंको दांत निकलनेके समयका अतिसार, ४। विना किसी दर्दका आमाशय, ५। बच्चा अधखुली आंखोंसे पडा पडा कराहा करता है, माथा हिलाता है, माथा इधर उधर किया करता है, ६। प्रसवके बाद जरायुका बाहर निकलना, जरायु और मलनलीका बाहर निकलना, ७। ज्वरमें अट-सट बकना।

अतिसार, हैजा और बच्चोंका हैजा—बच्चोंको दाँत निकलनेके समय पेटकी गडबडी, अतिसार, युवक और वृद्धोंका अतिसार और दूसरे दूसरे सब तरहके अतिसारोंमें ही यह समान भावसे लाभ करता है। पतला मल परिमाणमें बहुत अधिक, मलमे बहुत बदबू—इतनी बदबू कि ऐसा मालूम होता है, कि पेटकी नस-नाडियाँ सडकर बाहर निकल रही हैं। सवेरे (४ बजेसे ६ बजेके बीचमे), गरमीके दिनोंमें, बच्चोंके दाँत निकलनेके समय और खाने पीने बाद अतिसार बढ जाता है। दस्तका रंग—पीला या पीलेके साथ हरा रग-मिला, मटरके शोरवेकी तरह, मल—पानीकी तरह पतला, गरम, कभी कभी आम मिला या हड हड, रोगीको एक एक बार एक एक गमला दस्त होता है, और पाखाना हो जाने बाद मानो शरीर एकदम सूख जाता है, पाखाना होनेके समय कभी कभी काँच या मलनाली बाहर निकल पडती है। औदरामयिक हैजा या अतिसारके साथ अधमुँदी आँखे, सर हिलना, कराहना, काँखना, ओकाई, पैरका तलवा, पैरकी पोटली और उसमे ऐठन इत्यादि आनुसगिक लक्षण भी रहते हैं। अगर आमाशयकी तरह दस्त होता है तो दस्त परिमाणमें खूब कम होता है। पोडोफाइलमका—एक और भी विशेष लक्षण है—रोगीको लगातार जम्हाई आती है और अगडाई लेता है। बच्चोंके दाँत निकलनेके समयके अतिसारमें बच्चोंको नाना प्रकारके रगके दस्त

आते है , बच्चेका शरीर ठण्डा, पर मार्थेमें पसीना रहता है, माथा हिलाता है, कराहता और रोता है, लगातार मसूढ़ोंको दाँतसे काटता है। इस तरह मसूढा काटनेका लक्षण, पोडोफाइलमके अलावा—फाइटोलेक्का नामक दवामें भी है (फाइटोलेक्का अध्याय देखिये)। पोडोफाइलमका दस्त सवेरेसे आरम्भ होकर प्राय दिनभर रहता है, फिर भी सवेरे जितना अधिक दस्त होता है तीसरे पहर उतना अधिक नहीं होता, बलिक दस्तका परिमाण घटता जाता है, दस्त होनेके पहले पेट फूल उठता है, पेट गड गडाता है , इसमे पेटमे दर्दका लेश भी नहीं रहता (कभी-कभी पाखाना होनेके पहले भयानक शूलका दर्द और पाखाना होने बा कूल्हेकी हड्डी अर्थात् त्रिकास्थिमे दर्द होता है)। रातके अन्ति भागमें या सवेरेके वक्तसे दस्त आरम्भ होकर दिनके प्राय १ बजेतक होकर बन्द हो जानेपर—सलफर फायदा करता है सलफरमें—रोगीको सवेरे पाखाना लगकर नींद खुलती है औ इतने जोरसे पाखाना लगता है कि क्षणभरकी भी देर सहन न होती, दौडकर जाना पडता है (यहाँ पोडोफाइलमसे प्रभेद य है, कि पोडोफाइलमका रोगी—मानो घोडेकी दुलकी चालकी तर चलकर पाखाने जाता है और सलफरका रोगी घुडदौडकी तर दौडकर पाखाने जाता है)। पोडोफाइलम और नैट्रम-सल्फम- नींद खुलनेके बहुत देर बाद दस्त लगता है। बच्चोंका हैजा, है या अतिसारमें ऊपर लिखे ढँगके दस्तके लक्षण रहनेपर—पोडो

फाइलमके प्रयोगसे विशेष लाभ होता है, इस ढँगके लक्षणमें—पोडोफाइलमकी उच्च शक्ति (३० वीं या २०० क्रम) एक मात्रा प्रयोग कर धीरजसे राह देखनेपर विशेष लाभ होता है। मैंने एक बार अपने एक दोस्त डाक्टरसे पूछा—कि बच्चोंकी बदहज़मी-में फोकसे दस्त होनेपर आप कौन सी दवा व्यवहार करते हैं; उसके उत्तरमें उन्होंने कहा—"मैंने पोडोफाइलमको पेटेण्ट बना लिया है!" वास्तवमें परिमाणमें अधिक, बहुत बदबूदार और विना दर्दके यदि फोंकसे दस्त हो, तो उसमें पोडोफाइलमकी एक मात्रासे कभी कभी इतना फायदा होता है, कि देखकर चकित हो जाना पडता है। पोडोफाइलमके सदृश—एपिस, क्रोटोना, ग्रेटियोला, चायना, जेट्रोफा, नैट्रम-सल्फ, सलफर, थूजा प्रभृति और भी कितनी ही दवाएँ हैं। उनका प्रभेद उनके स्थानपर देखेंगे।

जो सब जगहें हमेशा ही गन्दी रहती हैं, जिस स्थानपर एक ही जगह बहुतसे आदमी रहते हैं और गन्दा पानी पीते हैं, उस स्थानके मनुष्यके अतिसार और आमाशयमें—पोडोफाइलम फायदा करता है। दक्षिण देशके बहुव्यापक रक्तामाशय और खूनी पेचिश-में कूथन, शूलका दर्द, माँस-धोये पानीकी तरह दस्त, मलद्वारमें जलन, मलके साथ खून, अजीर्ण, खायी चीजें निकलना, बहुत कमजोरी—ये सब लक्षण रहनेपर—पोडोफाइलम फायदा करता है।

पोडोफाइलमके दस्तका रंग, परिमाण प्रभृति कितनी ही बार

बदल जाते हैं, मलके साथ फेन रहता है, कभी कभी सोनेके समय और वायु निकलनेके समय अनजानमें दस्त हो जाते हैं। डा० हेरिङ्ग कहते हैं "पुराने उदरामयमें पोडोफाइलमका लक्षण रहनेपर भी उससे अगर फायदा न हो, तो—कैलि-बाई-क्रोमसे फायदा होगा।" (रिसिनस देखिये)।

कॉंच निकलना या सरलांत्र निकल पड़ना—

कब्ज, अतिसार, आमाशय या बवासीर, किसी भी बीमारीके साथ अगर काँच बाहर निकल पडती हो, तो—पोडोफाइलम फायदा करेगा। इसमें सरलांत्र इतना कमजोर हो पडता है कि थोडे भी वेगसे—यहाँतक कि चलने-फिरनेके समय भी काँच निकल पडती है,पोडोफाइलममें—अक़सर पहले काँच निकलती है,इसके बाद मल निकलता है, मल निकलनेके बाद काँच नहीं निकलती (रूटा देखिये)।

वमन—पोडोफाइलममें—जी मिचलाना, वमनकी अपेक्षा ओकाई और सूखी मिचली अधिक (ये लक्षण सिकेलिमें भी हैं), वमनमें खायी हुई चीज और पित्त रहता है। वमन गरम होता है, इपिकाकमें—पोडोफाइलमकी अपेक्षा वमन ज्यादा होता है। पोडोफाइलममें—कभी कभी खट्टी कै होती है, मुँहमें बदबू रहती है, कलेजेमें जलन होती है, रोगी खट्टी चीज या खट्टी पीने-चीज पीना चाहता है। कभी खूब अधिक प्यास रहती है, कभी ही नहीं रहती, बच्चा दूधकी कै करता है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बच्चोको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी— इस समय बच्चेको प्राय नाना प्रकारके रगके दस्त होते देखे जाते हैं। किसी-किसी बच्चोंको इस समय अकड़न होती है (इस बीमारीका कारण रिफ्लेक्स इरिटेशन ही है और reflex irritation दाँत या उदरसे होता है)। इसमे—पोडोफाइलम फायदा करता है। इसके अलावा दाँत निकलनेके समय किसी किसी बच्चेको बोखार होता है, दाँत कडमडाता है। लगातार मसूढ़ेको दबाता है, सर हिलाता है, गो-गो करता है, हमेशा रेंरियाया करता है। इसमें भी—पोडोफाइलम फायदा करता है, पर सिनामें भी—इस तरहके कितने ही सदृश लक्षण पाये जाते हैं। इसीलिये, उसके साथ प्रभेद निर्णयकर दवाका प्रयोग करना होगा।

सविराम ज्वर— ज्वर अकसर सवेरे ७ बजेके समय आता है, ज्वर आनेके पहले—खाली मिचली, ओकाई, और कमरमे दर्द रहता है। शीतावस्था—प्यास नहीं रहती, हाथ-पैरोंके जोड़ोंमे बहुत ऐंठनका दर्द रहता है, रोगी इस समय अट्र-सट्ट बकता है (यह विकारको बकवाद नहीं है, बातिक ज्वरकी तरह बकवाद है। रोगी कहता है, कि इस तरह बकने या बात करनेपर वह अच्छा रहता है)। उत्तापावस्थामें—बहुत तेज प्यास और सर-दर्द, शीत और कम्प रहते रहते ही उत्तापावस्था आ जाती है, अर्थात बदन गरम हो उठता है। आप देखेंगे कि—रोगी उस समय भी काँप रहा है, जबतक ज्वरकी चरम-वृद्धि नहीं हो जाती तबतक

रोगी लगातार बका करता है, इसके बाद जब बोखार खूब बढ जाता है, तब सो जाता है। निद्रितावस्थामें—बहुत पसीना होता है, और नींद खुलनेपर रोगी वह बकनेकी बात भूल जाता है। पसीनेवाली अवस्था—बहुत ज्यादा पसीना होता है, उससे शरीरके कपडे-लत्ते सभी भींज जाते हैं। पसीना होनेके बाद सरका दर्द घटता है।

सविराम और अविराम ज्वरमें—यकृतमें रक्तकी अधिकता (Congestion), पित्तकी कै और पतले दस्त आनेपर—पोडोफाइलम फायदा करता है।

स्त्री-रोग—शरीरके बायेंकी अपेक्षा दाहिनी ओर पोडोफाइलमकी क्रिया अधिक होती है। इसीलिये—जरायुके स्थानसे हटनेके साथ दाहिनी ओरके डिम्बकोषमे दर्द, दाहिनी ओरके डिम्बकोषका नया और पुराना प्रदाह और दाहिने डिम्बकोषके अर्बुद (Right ovarian tumour) प्रभृतिमें पोडोफाइलमसे विशेष फायदा होता है। प्रसवके बाद जरायुका बाहर निकलना, गर्भावस्थामें मलनालीका निकलना (काँच निकलना), बवासीर, कोई भारी चीज उठानेके कारण जरायुका हटना प्रभृतिमें भी—पोडोफाइलम फायदा करता है।

यकृतकी बीमारी—यकृतकी क्रिया अच्छी तरह न होनेपर, यकृतमे दर्द होता है और दाहिनी ओरके पजरे और पेटपर हाथ रगडनेपर उसमें कुछ आराम मालूम होता है। इन

लक्षणोंमे—पोडोफाइलम फायदा करता है। अगर आँख, मुँह, सब शरीर कामलाकी तरह पीले हो जायें तथा पित्त-पथरी रोगमे भी इससे फायदा होता है (ऐसे स्थानपर ६ ठी शक्तिका प्रयोग करें)।

जीभ—जीभपर दाँतका दाग पडना (imprint of the teeth), यह—मर्कुरियस, पोडोफाइलम, आर्सेनिक, रसटक्स, और स्ट्रैमोनियममे है। पर यह मर्कुरियसमे सबसे अधिक है।

वृद्धि (aggravation)—सबेरे, खाने-पीनेपर, परिश्रमके बाद, सबेरे ७ बजे, खट्टे रसवाले फल या दूध पीनेपर, गरमीमे और दाँत निकलनेके समय।

ह्रास (amelioration)—रोगवाली जगह रगडनेपर, पट होकर सोनेपर।

सम्बन्ध—पोडोफाइलमसे पाराका दुष्परिणाम नष्ट होता है, आमाशय रोगमे—इपिकाक और नक्सके बाद और यकृत रोगमें कैल्केरिया और सलफरके बाद यह फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—कोलोसिन्थ, लेप्ट्रेण्ड्रा, लैक्टिक एसिड, नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—३।

प्रूनस स्पाइनोसा ।

(PRUNUS SPINOSA)

(फूलकी कलीसे टिंचर तैयार होता है)--यह नीचे लिखी हुई बीमारियोंमे लाभदायक है —

आँखकी बीमारी—आँखके भीतर भयानक दर्द, ऐसा मालूम होता है, मानो किसीने आँख कुचल दी, दाहिने चक्षुगोलक में उखाड फेंकनेकी तरह दर्द,बिजलीकी लहरकी तरह दर्द मस्तिष्कके भीतर होकर माथेके पिछले भागमे चला जाता है। आइरिडो-कोरयडाइटिस (आँखका तारा और कोरायड गह्वरका प्रदाह)।

मलद्वारकी बीमारी—मलद्वारमे दर्दके साथ कडा गाँठ गाँठ मल। ढेरका ढेर श्लेष्माके साथ अतिसार रोगके बाद मलद्वारमे भयानक जलन।

पेशावकी बीमारी—क्लिमेटिस अध्यायमे प्रमेह देखिये।

दाँतकी बीमारी—ऐसा मालूम होता है, मानो दाँत चिमटेसे कोई उखाड रहा है। कोई गरम चीज लेते ही तकलीफ बढ जाती है।

क्रम—३—६ शक्ति। फारमुला—२।

सोरिनम ।

(PSORINUM)

(खुजलीके पीवसे यह दवा बनती है, नोजोड्स जातिकी दवा है)। सोरासे पैदा हुई सभी बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है। सोरिनम—एक सोरा-विष-नाशक दवा है। सलफरके प्रयोग-से कोई फायदा न होनेपर—सोरिनमसे फायदा होता है, बहुत दिनोंकी किसी पुरानी बीमारीमें जब चुनी हुई किसी दवासे फायदा नहीं होता या दवाकी कोई स्थायी क्रिया नहीं होती तो सलफरका लक्षण रहनेपर भी सलफरके प्रयोगसे कोई लाभ नहीं होता, उस समय सोरिनमसे फायदा हुआ करता है (सलफरके रोगीको गरमी और सोरिनमके रोगीको सर्दी सहन नहीं होती)।

चरित्रगत लक्षण —

१। किसी कठिन बीमारीमें पूरी पूरी प्रतिक्रिया नहीं होती ; अच्छी तरह भूख नहीं लगती , २। नयी बीमारीके बाद बिना किसी विशेष कारणके ही शरीर सुधर नहीं पाता , ३। बच्चा रक्त-हीन, मैला, रोगी, दिन रातमें जरा भी नहीं सोता। सिर्फ रोता है, रें रें किया करता है, या दिनके समय तो अच्छी तरह खेलता है, पर रातमें बहुत ही तंग करता है। छटपटाता है और चिल्ला-चिल्लाकर रोता है , ४। ठण्डी या शीतल हवा सहन नहीं होती, यहाँतक कि गरमीके दिनोंमें अपना शरीर ढक रखता है , ऋतु-परिवर्त्तनके समय अकसर बीमारी बढ़ जाया करती है , ५। निकला हुआ स्राव बहुत बदबूदार, पाखाना, पेशाब, कानका पीब,

डकार, स्त्रियोंका ऋतु और प्रदरका स्राव, पसीना इत्यादि सब तरहके ही स्राव बहुत कड़वी गन्धसे भरे (सड़ी गन्ध, बदबू, मलकी गन्ध, इनकी अपेक्षा भी बुरी गन्ध, स्नानके बाद भी शरीरकी गन्ध नहीं जाती। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—इसके स्रावमें सड़े मांसकी की तरह गन्ध रहती है), ६। बेहद भूख यहाँतक कि रातमें उठकर भी कुछ खाना पड़ता है, ७। चर्म-रोग—इसके दाने सहजमें ही पक जाते हैं, कभी-कभी सूखे, त्वचा देखनेमें गन्दी—मानो जीवनमें कभी नहाया ही न हो, कोई कोई जगह चकत्ते ऊँचे नीचे या चिकने मानो तेल लगा है, सल्फर या जिङ्क आयण्टमेण्ट लगानेके कारण कोई नयी बीमारीका पैदा हो जाना, ८। एकजिमा या खुजली इत्यादिके दाने बैठकर खाँसीकी उत्पत्ति, बहुत दिनोंकी पुरानी खाँसी, सवेरे टहलनेके समय और सन्ध्यामें सोनेपर खासीका बढ़ना, बलगम—हरा, पीला, नमकीन स्वाद, पीवकी तरह खाँसकर बलगम निकालनेके पहले बहुत देरतक खाँसना, ६। बहुत खुजलानेके कारण नींद न आना, १०। किसी विपत्तिके आनेकी या चोर डाकुओंके डरावने सपने, ११। नयी बीमारी आराम होने बाद, बहुत अधिक पसीना होना और उससे सभी तकलीफोंका घट जाना, १२। बहुत दिनोंका पुराना प्रमेह, आराम ही नहीं होना चाहता, चुनी हुई दवा भी विफल हो जाती है, १३। कमरके दर्दके साथ कब्जमें जब सलफरसे फायदा नहीं होता, १४। उदरामय—एकाएक पाखाना लग जाता है (एलो, सलफरकी तरह), मलमें बुरी दुर्गन्ध, रात १ से ४ बजेतक बढ़ना, १५।

सडे अण्डेकी तरह बदबूदार डकार, १६। माथा सूखी भूसीकी तरह पदार्थसे ढका या रसभरे बदबूदार उद्भेद, उससे गोंदकी तरह बदबूदार पीब या रस गिरता है (ग्रैफा, मेजेरि)।

सोरिनमके सभी लक्षण प्राय सलफरकी तरह है, पर इनमें प्रभेद यह है, कि—सोरिनम स्वय ही सोरा (Psora) विष है और सलफरके सदृश दवा है, सलफरका रोगी नहाना बिलकुल ही नहीं चाहता, कारण—या तो उसे पानी अच्छा नहीं लगता अथवा पानीमें रहनेपर रोग पैदा हो जाता है, सलफरके निकले हुए स्रावमें बहुत बदबू रहनेपर भी सोरिनमकी तुलनामें वह कुछ नहीं है। सोरिनमका रोगी सर्दी बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। सलफरके रोगीको ठण्डी हवा अच्छी लगती है। ठण्डा सहन होता है, केवल ठण्डी जगह रहना चाहता है।

सोरिनम—नीच श्रेणीके (children of the lower classes) लडके बच्चे जो मैले-कुचैले, बदबूभरे स्थानोंमें पाले गये हैं, और जिन बच्चोंके गाल, गले और गर्दनकी गाठे अकसर फूला करती हैं, कण्ठमाला धातुग्रस्त, हमेशाके रोगी और पीडित, जिनकी आकृति देखनेमें बेढगी है, आँखोंमें प्रदाह रहता है, कानसे बदबूदार पीब निकलता है, नाकसे सर्दी बहती है, राक्षसी भूख रहनेपर भी शरीरमें मांस नहीं चढता। पेट बडा और ऊँचा रहता है। डकार आया करती है, वायु छूटा करता है, निकला हुआ

वायु बदबूदार सड़े अण्डेकी तरह बदबूदार रहता है, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है।

अतिसार—मलका रंग काला, और उसमें बहुत बदबू; हैजाकी बीमारीमें अक्सर इतने बदबूदार दस्त आते हों और रोगीकी धातु सोरिनमकी हो, तो इसके प्रयोगसे एक मात्रामें फायदा होकर रोगीकी जान बच जाती है।

चर्म्म-रोग—शरीरकी त्वचा देखनेमें बहुत ही गन्दी और शरीरमें इतनी गन्ध कि नहानेपर भी इसकी गन्ध नहीं जाती, शरीर जरा भी गर्म रहनेपर खुजलाने लगता है और उसमें बेतरह खुजलाहट रहती है, शरीर इतना खुजलाता है, कि खुजलाकर नोच डाता है। सोरिनममें—त्वचापर नाना प्रकारके उद्भेद निकलते है, त्वचा बहुत गन्दी रहती है। देखनेपर ऐसा मालूम होता है कि कभी स्नान ही नहीं किया है, शरीरसे सफेद खाल निकलती है। यह गरमीमें अच्छा रहता है, और सर्दीमें बढ़ता है।

किसी तरहके उद्भेद (eruption) दबकर या लगानेकी दवासे कोई चर्म-रोग आराम होनेपर—बोखार, हैजा, अतिसार, खाँसी दमा इत्यादि बीमारी होनेपर अगर वह किसी दूसरी दवासे आरोग्य न हो तो—सोरिनम या सलफर फायदा करते हैं (इनका प्रभेद ऊपर बताया जा चुका है)। कण्ठमाला धातुकी किसी भी बीमारीके साथ चर्म्मरोग रहनेपर—सोरिनमसे फायदा होता है।

वृद्धि (aggravation)—सन्ध्याके समय, आधी रातके पहले, खुली हवामे।

ह्रास (amelioration)—सवेरे, सोनेपर, घरके भीतर।

सम्बन्ध—सोरिनम—सलफर और ट्यिुवर्क्युलिनमका अनुपूरक है। गर्भावस्थाके वमनमे—लैक्टिक एसिडके बाद और डिम्ब-कोषमे चोटकी वजहमे बीमारीमें—आर्निकाके बाद—सोरिनम खूब फायदा करता है। स्तनके कैन्सरमें—सोरिनमके बाद सल-फर फायदा करता है।

क्रियानाशक—(antidote) काफि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—२०० और उससे भी ऊँचा।

फारमुला—६ वी।

पल्सेटिला नैगरीकैन्स।

(PULSATILLA NIGRICANS)

(मध्य और उत्तर अमेरिकाके एक तरहके गाछसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—आंख, कान, नाक, पाकस्थली, आँत, जरायु, शिरा, श्लेष्मिक झिल्ली तथा स्त्री-पुरुष दोनोंकी ही जननेन्द्रिय और मूत्रयन्त्र इत्यादिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

नम्र, धीर और अभिमानी, सहजमे ही हँसते या रोते है, चिकित्सक-को अपनी तकलीफकी बात कहते कहते रो देते है, अस्थिर मति, जरा-सी बातमे ही सकल्पच्युत हो जाते है, बदलनेवाला मनो-भाव, इस तरहके मनुष्योकी बीमारीमे यह ज्यादा फायदा करता है। प्राय हरेक बीमारीमे जहाँ रोगकी नयी अवस्थामे—पल्सेटिला, फायदा करता है, उस बीमारीकी पुरानी अवस्थामे—साइलिसिया खूब उपयोगी है।

चरित्रगत लक्षण —

१। रोगी हमेशा ही खुली हवामे रहता है और इससे उसे आराम मिलता है, २। सध्याके समय, चर्बी, तेल, घीकी बनी गरिष्ठ चीज खानेपर गरमीसे, बायीं करवट सोनेपर रोग लक्षणो-का बढना, ३। बीमारीके उपसर्गोके साथ प्यासका न रहना, ४। रोगके लक्षण हमेशा बदलते रहनेवाले, किसी भी दो बारकी बीमारीका लक्षण एक तरहका न होना, ५। लगातार बदलने-वाला दर्द, ६। पहली रातमे नींद नही आती, पर रातके अन्तिम भागमे खाली नींद आती है, ७। मुँह बेस्वाद, ८। कानका दर्द, दाँतमे दर्द—ठण्डा पानी मुँहमे रखनेपर आराम मालूम होना, ९। घी और चर्बी मिली चीजें खाकर अतिसार, वमन इत्यादि बीमा-रियोंका पैदा हो जाना, १०। अतिसार, प्रत्येक बारके मलका रग बदला हुआ रहता है, रातमे अतिसारका बढना, ११ बाधक-का दर्द, अनियमित रज स्राव, विलम्बसे रज स्राव होना, श्वेत प्रदर; १२। प्रमेहका स्राव बन्द होकर अण्डकोष, शुक्रज्जु

इत्यादिकी सूजन और दर्द; १३। नाकसे पकी गाढी सर्दीका स्राव निकलना और नाकम किसी चीजकी गन्धका न मिलना; १४। विना प्यासवाला सविराम ज्वर—तीसरे पहर और सध्यासे १२ बजेतक दर्द बढना।

अतिसार—घीकी पकी चीजें, पीठी, खीर, रबडी इत्यादि गुरूपाक चीजें खाकर पेटकी बीमारी, अतिसार, आमाशय प्रभृति बीमारियाँ होनेपर पल्सेटिला फायदा करता है। अतिसारमें मलका रग हमेशा बदलनेवाला, अर्थात् अभी एक तरहका दस्त हुआ, दूसरी वार दूसरी ही तरहका दस्त आता है, उसका रग, परिमाण, प्रभृति किसी भी विषयमे सामञ्जस्य नहीं रहता (No two stools alike), पल्सेटिलाका—पाखानेका रग, ठीक पीला भी नहीं, ठीक हरा भी नहीं रहता अर्थात् बीचका एक तरहका रग रहता है, कभी कभी मलके साथ हरी आम रहती है, कभी केवल हरे रगका मल निकलता है, मानो—पित्त। पाखाना होनेके पहले पेट गडगडाता है, पेटमें पेठन होती है, कमरमे दर्द होता है। इसमे दिनकी अपेक्षा रातमे दस्त ज्यादा आते हैं (हैनिमैन कहते हैं—इस ढगके लक्षणके साथ रातके समयके अतिसारमे पल्सेटिलाके मुकाबलेकी और कोई भी दवा दिखाई नहीं देती)। भोजनके दोषसे अगर रातके अन्तिम भागमे दस्त होना आरम्भ हो जाये—पल्सेटिलासे ज्यादा फायदा होता है। इसमे कभी कभी कब्जियत और कभी कभी अतिसार इस ढगका दिखाई देता है, स्त्रियोंके

ऋतुस्रावके समय या ऋतुस्रावके बाद अतिसार होनेपर—पल्सेटिला ही प्रधान दवा है।

द्रष्टव्यः—किसीको खाने-पीनेकी गडबडीसे अगर रातके पहले भागमे ही पतले दस्त आने लगें—पल्स, रातके अन्तिम भागमें हो तो—नक्सवोमिका फायदा करता है।

अजीर्णकी बीमारी—घी की पकी चीजें, आँटा, खीर, रबडी, मलाई, मिठाई इत्यादि बहुत तरहकी जल्द न पचनेवाली चीजें खाकर यह बीमारी या अतिसार होनेपर पल्सेटिला फायदा करता है—यह पहले ही बताया जा चुका है। अजीर्णका मतलब है, कि खायी हुई चीजका अच्छी तरह पाचन न होना, और दस्त, कै, पेटमें दर्द इत्यादि लक्षण प्रकट होना इसमे पल्सेटिलाकी तरह—नक्स-वोमिका, इपिकाक, चायना, आर्सेनिक इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती है (इपिकाक अध्याय देखिये)। रातमे जागना, शराब पीना, नाना प्रकारकी भारी चीजें खाना-पीना इत्यादि कारणोंसे बीमारी होनेपर पल्सेटिलाकी अपेक्षा—नक्स-वोमिका ज्यादा फायदा करता है। नक्स-वोमिकामे—अतिसारके बदले कब्ज या थोडा थोडाकर दस्त आनेका लक्षण है। पल्सेटिलामें—कलेजेके पास कोई पदार्थ मानो धक्का देकर चढा आता है, इन दोनो ही दवाओंमे कलेजेमें जलनका लक्षण है। नक्स-वोमिकामे—मुँहमे पानी भर आता है और पतले दस्तोंके साथ पेटमे असह्य दर्द रहता है; ऐसी अवस्थामें—नक्स-वोमिकाका निम्न क्रम, यहाँतक कि १×

शक्ति तकका प्रयोग किया जा सकता है। पल्सेटिलामें—रोगी खट्टी पीनेकी चीजें,—जैसे, लिमोनेड इत्यादि पीनेका आग्रह प्रकट करता है, अनपची खानेकी चीज वमन हो जानेपर—इपिकाक, पर वमन न होकर पेटमें जमा रहनेपर—पल्सेटिला फायदा करता है। यह एक बार इपिकाकवाले अध्यायमें बताया जा चुका है, भोजनके बहुत देर बाद वमन होनेपर—क्रियोजोट फायदा करता है। पल्सेटिलामें—बहुत देर पहले जो खाया था, वह भी वमनके साथ के हो जाता है। यह लक्षण भी है, इसके अलावा—वमनमें श्लेष्मा और पित्त भी निकलता है, पेटमें अकड़नका दर्द रहता है, पेटमें वायु इकट्ठा होता है, पेट फूल उठता है, ये सब लक्षण रातमें भोजनके बाद या सवेरे नींद खुलनेपर बढते हैं, छातीमें जलन, मुँहमें पानी भर आना, डकारमें खायी हुई चीजका स्वाद, मुँहमें पित्तका स्वाद, पेट गडगडाकर वायु निकलना प्रभृति उपसर्ग—पल्सेटिलामें है (यहाँ जरा याद रखें कि पल्सेटिलामें—डकार, कलेजेमें जलन, पेट फूलना प्रभृति उपसर्ग, भोजनके प्राय १ घण्टा बाद प्रकट होते हैं और दूसरी बार न खा लेनेतक इसी तरहकी तकलीफ हुआ करती है, इसीलिये रोगी बीच बीचमें कुछ खा लेनेकी इच्छा करता है, इसका रोगी खट्टी चीज खाना पसन्द करता है); पल्सेटिलाकी जीभ—मोटी—उसपर सफेद रंगका लेप (*coating*) या फटी फटी की तरह दिखाई देती है, जीभ सूखी रहती है, पर प्यास नहीं रहती है, पेटमें शूलका दर्द होता है, दर्द गर्मीसे नहीं घटता। चायनामें—पाचन-शक्ति घटती है,

हलकी चीजें भी अच्छी तरह हजम नहीं होतीं, हमेशा पेस
मालूम होता है, कि पेट वायुसे भरा हुआ है, पेट फूल उठता है
डकार आनेपर भी पेटके फूलनेकी तकलीफ नहीं घटती, इस
समय कुछ खाने पीनेपर खाना पीना या पेटकी गडबडी वगैरह
और भी बढ जाती है। पल्सेटिलाकी तरह चायनामे भी—पेस
लक्षण है कि कलेजेके पास धक्का देकर कुछ चढता आता है, इस
तरहका लक्षण रहता है, एबिस नाइग्रामे—पेटके भीतर मानो
गोलेकी तरह कोई एक पदार्थ धक्का देकर चढा आता है;
पल्सेटिलामें—पेटसे कुछ ठेलकर ऊपर चढता है अथवा खायी हुई
चीज पाकस्थलीमे न पहुँचकर गलेके निकट अटक जानेका भाव
ही अधिक रहता है।

श्वेत-प्रदर—स्राव दूधकी मलाईकी तरह गाढा, उसमे
जलन होती है, इसके साथ ही कमरमे दर्द, रक्तमिला स्राव, योनि
फूल उठती है।

बाधकका दर्द—हनिमैन कहते है—पल्सेटिलाका
मासिक ऋतुस्राव, ठीक महीना खतम होनेपर न होकर बहुत देर-
से होता है, और परिमाणमे भी बहुत थोडा होता है (इसमे
स्राव दिनमे ज्यादा और रातमे बहुत थोडा होता है), जरायुमे दर्द,
प्रसवके दर्दकी तरह वेग, मरोडकी तरह भयानक दर्द, जरायुमे
अकडन, कमरमे दर्द, सर-दर्द इत्यादि कितने ही आनुसगिक लक्षण
रहते हैं। ऋतुस्राव रह रहकर होता है, अर्थात् अभी हुआ, अभी

बन्द हुआ, फिर हुआ ; दर्द उसी तरहका ठीक रह रहकर होता है, रोगिनी खुली हवामें रहना चाहती है, पर इससे सर्दी मालूम होती है। पल्सेटिलाका ऋतुस्राव काले रंगका और थक्का थक्का, कभी कभी पानीकी तरह बिना किसी रंगका होता है ; बाधकके दर्दमें—पल्सेटिलाकी तरह—कैमोमिला, काकुलस, मैग्नेशिया फास, सिमिसिफ्यूगा इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती हैं। काकुलसका रक्त काला, इसके अलावा इसमें पल्सेटिलाकी तरह कमरका दर्द, और जरायुमें आक्षेपिक दर्द इत्यादि भी रहता है। काकुलसमें—कमरमें बहुत अधिक दर्द, रोगिनी जब चलती है, तो हाथ पैर काँपते हैं, इसमें मिचली, वमन, ओकाई, शून्यभाव इत्यादि लक्षण भी रहते हैं और दर्द रातमें ज्यादा होता है तथा पेट फूल उठता है। कैमोमिलाका—ऋतुस्राव काले रंगका, उसमें रोगीके मानसिक लक्षण दूसरे ही ढगके रहते हैं, दर्दकी धमकसे वह छटपटाया करती है, लोगोंको गाली देती है, रंज होती है और जरासी बातमें चिढ उठती है। मैग्नेशिया-म्यूरमें—दर्द बहुत अधिक रहता है। इसमें जरायु फूलकर कडा हो जाता है। मैग्नेशिया-फासमें पेटको दबानेपर और गरम सेंक देनेपर या और किसी ढगसे गरमी पहुँचानेपर दर्द घट जाता है। सिमिसिफ्यूगा—इसमें रक्तस्राव कभी थोड़ा, कभी कभी अधिक, पेटका दर्द एक ओरसे दूसरी ओर तीरकी तरह चला जाता है। वाइपेरा (Vipera)—ऋतु बन्द होनेकी उमरमें जरायुसे अधिक परिमाणमें रक्तस्राव और नाकसे रक्तस्राव होता है।

प्रसवका दर्द—पल्सेटिलाका दर्द नियमित भावसे न होकर कभी कम कभी ज्यादा होता है, कभी एकदम बिलकुल ही नहीं होता—ऐसा ही हुआ करता है। दर्दका जोर न रहनेके कारण जरायुका मुँह भी नहीं खुलता, सन्तान भी आगे नहीं बढती। प्रसवके बाद फूल अटक जाता है।

द्रष्टव्यः—गर्भवतियोंको दसवें महीने पल्सेटिला सेवन कराया जाये तो जरायुकी ताकत बढती है, प्रसवका दर्द स्वाभाविक होता है और प्रसव भी सरलतापूर्वक हो जाता है। जिन प्रसूताओंको आठवें महीने ही असम्पूर्ण प्रसव होता है, वे इस समयके कुछ पहलेसे अगर पल्सेटिला सेवन करें तो वह अस्वाभाविक अवस्था बदलकर ठीक ठीक दसवें महीने स्वाभाविक अवस्थामे सन्तानका प्रसव हो सकता है।

प्रसवके बादका दर्द—इस दर्दमें—आर्निका, सिकेलि, वाइबर्नम-ओपुलस, और वाइबर्नम-प्रुनिफोलियम, जेन्थक्जाइलम, कैमोमिला इत्यादि दवाएँ उपयोगी हैं। अगर रोगिनीकी धातु पल्सेटिलाकी हो तो अवश्य ही पल्सेटिलाका प्रयोग करना होगा (सिकेलि देखिये)।

फूल अटकना—प्रसवके बाद अगर फूल अड जाये और न निकले,—तो पल्सेटिलासे फूल निकल जाता है और बहुत अधिक रक्तस्राव होना भी रुक जाता है।

सूतिका-स्तम्भ—यह प्रसवके बाद सूतिका-गृहकी

बीमारी है। सूतिकास्तम्भ (phlegmasia-alba) का लक्षण है पहले बदनमें दर्द होता है, पेशाब घट जाता है, थोड़ी देर बाद पैरकी कोई जगह फूल उठती है, यह सूजन ऊपर और नीचे फैलकर समूचा अंग-प्रत्यंग फूल उठता है, रोगिनीका चेहरा मलिन मोमकी तरह सफेद दिखाई देता है। इस बीमारीमें—फूली हुई जगहमें थोड़ा दर्द रहनेपर—पल्सेटिला और अधिक दर्द रहनेपर—हैमामेलिसका भीतरी और बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

सूतिका-रोग—एसिड-कार्बोलिक, पाइरोजेन, सिकेलि, सल्फर, ओपियम, केलि-म्यूर प्रभृति दवाएँ और बेलेडोना अध्याय देखिये।

अनुकल्प-रजः—जवानी आ जानेपर समयपर ऋतु न होकर या ऋतुस्राव बन्द होकर, मुँह या नाकसे खून निकलनेपर—पल्सेटिला फायदा करता है। इसके अलावा—सिनिसियो, हैमामेलिस, ब्रायोनिया, मिलिफोलियम, फास्फोरस इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती है। (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

अण्डकोष-प्रदाह—चोट लगकर हो, या ठण्ड लगकर हो। अथवा प्रमेहकी वजहसे हो—अण्डकोषका फूलना, अण्डकोषका बड़ा होना, प्रदाहवाली जगह लाल और रेतोरज्जु (spermatic-cord) फूलकर मोटी हो जाती है, भयानक दर्द, इतना दर्द कि, उसमें हाथ नहीं लगाया जाता, इसके साथ ही कमरमें दर्द, सिहरावनका भाव, जी मिचलाना, सेंकने और गरमी पहुँचानेपर तकलीफका न घटना

बल्कि बढ जाना। इन सब लक्षणोंमें—पल्सेटिलाका निम्न क्रम जल्दी जल्दी प्रयोग करनेपर—ज्यादा फायदा होता है। प्रमेहका स्राव रुककर अण्डकोषमें प्रदाह होनेपर पल्सेटिलाके प्रयोगसे रुका हुआ स्राव फिरसे जारी हो जाता है और तकलीफ घट जाती है (उस बीमारीमें रोगीको ज्यादा हिलने-डोलने न देना चाहिये और अण्डकोषको बांध रखने कहें), क्लिमेटिस, और हैमामेलिस भी इस बीमारीकी लाभदायक दवाएँ हैं। कोष-वृद्धि और कोष प्रदाह, बहुत दिनोंका पुराना होनेपर और अण्डकोष कडा और अण्ड-कोषकी शिराओंमें भयानक दर्द रहनेपर, रोडोड्रेण्डन फायदा करता है। चमडी-रोग होनेपर और अण्डकोषकी बीमारीके साथ दूसरी दूसरी जगहोंकी ग्रन्थियाँ फूली रहनेपर—मर्कुरियस-सोल उपयोगी है। मर्कुरियस और हैमामेलिसमें प्रमेहका स्राव एकदम बन्द नहीं रहता। क्लिमेटिसमें—स्राव एकदम बन्द होकर कोष-प्रदाह हो जाता है और फूली हुई जगह पत्थरकी तरह कडी हो जाती है। आरम, स्पजिया, कोनियम इत्यादि भी इसकी उत्तम दवाएँ हैं। बाई ओरके अण्डकोषकी सूजनमें—आरम-मेटालिकम फायदा करता है। शुक्र-रज्जुके (स्पर्मेटिक कार्ड) एक तरहके स्नायुशूलके दर्दमें—एसिड-आकजैलिक फायदा करता है, पल्से-टिला भी—अण्डकोषके स्नायुशूलके दर्दमें फायदा करता है, पर इसका दर्द गरम प्रयोगसे घटता नहीं बल्कि बढता है।

प्रमेह—इस बीमारीकी पुरानी अवस्थामें (gleet stage) पीला या हरे रंगका पीबकी तरह गाढा स्राव निकलते

रहनेपर और इसके साथ ही पुट्ठे की जगहपर या पेटमें दर्द रहनेपर पल्सेटिला फायदा करता है, पल्सेटिलाके प्रयोगके बाद अगर दर्द बहुत बढ जाये तो उसे बहुत जल्दी जल्दी न देकर, उसका अन्तर और भी बढा देना चाहिये या २।१ दिन दवा खिलाना बन्द रखकर फिर प्रयोग करनेपर ज्यादा फायदा होगा, दवा बहुत जल्द न बदलेंगे ।

द्रष्टव्य:—इसका व्यवहार प्रमेहकी पहली अवस्थामें होता है। पहली अवस्थामें अगर कोई रोगी आ जाये तो पल्सेटिला—३ x शक्ति, १ बूँद मात्रामें, दिनमें ४ बार, ३।४ दिनोंतक देकर, फिर कैन्थरिस 6x, २।३ दिन, इस नियमसे, इसके बाद—हाइड्रैस्टिस—३x या १२x शक्ति, १५।२० दिन सेवन कराना चाहिये पल्सेटिला प्रयोग करनेके बाद बहुत जलन, दर्द, लिङ्ग फूला और दर्द रहनेपर, कैन्थरिसके बदले—कैनाबिस इण्डिका दे सकते हैं। आर्निका लोशन द्वारा—(१ आउन्स डिस्टिल्ड-वाटरमें—आर्निका-मदर—१०।१५ बूँद) दिनमें २।३ बार लिङ्ग धुलवा दें।

कानकी बीमारी—पल्सेटिलाके कर्णशूल या कर्णप्रदाहमें कानमें टपक, खोंचा मारनेकी तरह दर्द रहता है, कानमें जो पीब होता है, वह बहुत गाढा पीला या कुछ हरे रंगका रहता है। साइलिसियाका पीब पतला पानीकी तरह और उसमें बहुत बदबू रहती है। कान पकनेकी पुरानी बीमारीमें अगर स्राव पतला निकलता हो और वह स्राव जहाँ लगे, उस स्थानकी अगर खाल

उधड जाये—तो टेलूरियम फायदा करता है। टेलूरियम भी—बदबूदार पीव मिली पुरानी कान पकनेकी बीमारीकी बढिया दवा है। कानमे पीव होनेपर—बहुतोका कानमें सींक, पर इत्यादि डालनेका अभ्यास रहता है, उससे क्षणभरके लिये आराम मिलनेपर भी पीव गिरना तथा प्रदाह और भी बढ़ता ही जाता है। उस समय किसी भी दवासे जल्दी आराम नहीं होना चाहता ; ऐसे स्थानपर रोगीको वह अभ्यास त्याग देनेकी सलाह देकर आर्निकाका भीतरी सेवन और कानके भीतर विशुद्ध ग्लिसरिन डालनेपर जल्द ही फायदा होना सम्भव है, पुरानी कान पकनेकी बीमारीमे—बौरेक्स से फायदा होता है।

सर्दी-खॉसी—जबतक पानीकी तरह पतली सर्दी नाकसे निकला करती है, तबतक लक्षणके अनुसार—मर्कुरियस एलियम—सिपा, आर्सेनिक, कैलि-हाइड्रो इत्यादि दवाएं फायदा करती हैं। जब सर्दीका स्राव—खूब गाढा, अर्थात् खूब पकी सर्दी (पीली या पिला-हरा मिले रगकी) नाकसे निकलना आरम्भ होता है, उस समय पल्सेटिलाकी जरूरत पडती है।

ऑखकी बीमारी—छोटे-छोटे बच्चोके और सौरी घरके बच्चोंके पीबभरे आँखके प्रदाहमे पल्सेटिला फायदा करता है। पल्सेटिलासे फायदा न होनेपर—अर्जेण्ट-नाइट्रिकम—उच्च शक्ति (२०० वीं), भीतरी प्रयोगसे प्राय बीमारी आरम्भ होते जाया करती है और किसी दवाकी जरूरत ही नहीं पडती।

अगर आँख सट जाये तो स्तनके दूधसे आँख साफ करनी चाहिये।

सर्दी लगकर हो, या छोटी माताके बाद हो, आँखोंके प्रदाहकी बीमारीमें—अगर गाढा पीवकी तरह स्राव आँखसे निकलता हो और आँखके भीतर लाली या आँखोंमें विशेष प्रदाह न रहकर सवेरे पलकें सट जायें—तो पल्सेटिलासे ज्यादा फायदा होता है, आँख-की पलकोंमें छोटी-छोटी फुन्सी हो, उसमे यह अधिक लाभदायक है, आँखका नासूर या अजनी रोगकी भी यह एक बढिया दवा है। पल्सेटिलामे आँखोंका प्रदाह रहनेपर वह ठण्डे प्रयोगसे और खुली हवामें घटता है। इसकी गुहौरी प्राय आँखकी निचली पलकपर ही होती है। बहुतसे आदमी कहते है—पल्सेटिला गुहौरीकी प्रति-षेधक दवा है, पर डा० पियर्स कहते है—स्टैफिसेग्रिया इसमें अधिक फायदा करता है।

आँखमें स्नायविक दर्द—अगर दर्द दाहिनी ओर हो और ऊपरी पलकमें अर्थात् दाहिनी भौं की जगहपर हो तथा दर्द बायीं ओर होनेपर यह चक्षु-गह्वर अर्थात बायीं आँखके नीचेवाली हड्डीमें दर्द होता है। इसके साथ ही बायीं नाकमें अधिक परिमाणमें गाढी पकी सर्दी (बलगम) निकला करता है (कैलमिया अध्याय देखिये)।

स्राव—पल्सेटिलाके सभी स्राव परिमाणमें अधिक होते है। ये गाढे, पीले रगके पीबकी तरह रहते है और उनकी प्रकृति—मृदु, स्रावसे किसी जगहकी खाल उधड नहीं जाती।

ज्वर—सर्दीका बोखार, पित्तज्वर और सविराम ज्वरमें—पल्सेटिला फायदा करता है। बोखार आने या बढनेका समय,—तीसरे पहर और संध्याके ४।५ बजे, अगर सध्यामें ज्वर आता है तो अकसर उसके साथ आँख और हाथ-पैरमें जलन रहती है, रोगी बाहरकी हवामें रहना चाहता है। कभी कभी तीसरे पहर थोडा जाडा और थोडी प्यासके साथ भी ज्वर आता है और रात-भर रहकर सवेरे छूट जाता है। ज्वरके समय हाथ-पैर और आँखोंमे जलन होती है, प्यास बिलकुल नहीं रहती, रोगी खुली हवामें रहना चाहता है, उसमे उसे आराम मालूम होता है। सविराम ज्वरमें—तीसरे पहर बोखार आनेपर उसमे शीत और प्यास रहती है। पर शीत और उत्तापावस्थामे—प्यास नहीं रहती।

सविराम ज्वर—ज्वर आनेकी पूर्ववाली अवस्था—अतिसार, वमन पिपासा और औंघाई, अगर सध्यामे ज्वर आता है, तो शीत भाव और प्यास रहती है, पर अगर सवेरे बोखार आता है, तो प्यास बिलकुल ही नहीं रहती। शीतावस्था—समूचे शरीरमे जाडा, शरीरमे दर्द, हाथ पैर-बरफकी तरह ठण्डे हो जाते है, प्यास बिलकुल ही नहीं रहती। उत्तापावस्था—शरीरका कोई अश गरम, कोई अश ठण्डा, प्यासका न रहना, शरीरमें दाह, बेचैनी, हाथ-पैर-मुँह और आँखमें भयानक जलन, रोगी छटपटाया करता है, ओंठ सूख जाते हैं, पर प्यास बिलकुल ही नहीं रहती (प्यासके सम्बन्धमें डा० डनहम और स्वय हैनिमैनका

मत—शीतके बाद और ठीक उत्तापावस्थाके पहले और शीत और उत्तापके सन्धिस्थानमें—जब रोगी भीतर उत्ताप अनुभव करता है, पर बाहरके मनुष्यको शरीरपर हाथ रखनेपर कुछ भी गर्मी नहीं मालूम होती, उस समय—पल्सेटिलामें प्यास होती है, अतएव, इस प्यासको देखकर यह न समझ लें, कि यह प्यास-युक्त ज्वर है—पल्सेटिला प्यासयुक्त ज्वरमें फायदा नहीं करता)। पसीनेवाली अवस्थामें—प्राय पसीना नहीं होता, और अगर होता भी है तो वह माथेमें या मुँहमें। ज्वर छूटनेकी अवस्थामें—प्लीहाके स्थानपर दर्द, सिहरावनका भाव, खाँसी, सर-दर्द, मुँह तीता, भूख न लगना, अतिसार, वमन, मिचली इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

निद्रा—पल्सेटिलाकी रोगिनीको सन्ध्याके समय बहुत नींद आती है, पर बिछावनपर सोनेपर—नींद नहीं आती—छटपटाया करती है। बहुत गर्मी मालूम होती है, बदनका कपडा फेंक देती है, हाथ-पैर ठण्डे रखनेके लिये कपडेके बाहर रहती है, जब सोती है तब चित्त होकर सोती है, दोनों हाथ माथेपर रखती है।

फोड़ा—फोडा, बाघी इत्यादि पके हैं, पीब हुआ है पर फटता नहीं है, ऐसे स्थानमें फोडेके ऊपर पल्सेटिला—मदर-टिंचर कई बार रुईसे लगा देना चाहिये या १ आउन्स ग्लिसरिनमें २० बूँद टिंचर मिलाकर वह ग्लिसरिन लगानेपर अथवा १ आ० पानीमें २० बूँद मदर टिंचर मिलाकर उस पानीकी पट्टी लगातार फोडेके

ऊपर रखनेपर और उसके साथ ही माइरिस्टिका—३५, हीपर ३८ प्रभृति किसी एक दवाका लक्षणके अनुसार भीतरी सेवन करनेपर जल्दी जल्दी फोडा फट जाता है, इसकी मैंने बहुत बार परीक्षा की है। (आर्निका लाइकोपोडियम देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—सध्यामें, रातमें, बायीं करवट सोनेपर, बिना दर्दवाली करवट सोनेपर, घी या तेलकी बनी चीज, बरफ और मीठी चीज खानेपर, धूपमें, ऋतु-परिवर्त्तनसे और पानीमें भींजनेपर।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, ठण्डी जगहमें, चित्त सोनेपर, दर्दवाली करवट सोनेपर, ठण्डी चीज पीनेपर, धीरे-धीरे अग हिलानेपर।

सम्बन्ध—पल्सके बाद या पहले—कैलिस्यूर फायदा करता है। कैलि-बाई, लाइको, सिपि, सल्फके बाद—पल्स लाभ करता है। चाय पीनेकी वजहसे रोग और एनिमिया और क्लोरोसिस रोगवाले मनुष्योंके अधिक परिमाणमें किनाइन, आयरन और टानिक इत्यादि सेवन करनेपर यदि कोई खाँसी पैदा हो जाये तो इससे फायदा होता है। (यह किनाइन और आयरनकी विष-नाशक दवा है)। किसी पुरानी बीमारीके इलाजके लिये भी यह एक लाभदायक दवा है।

क्रिया नाशक (antidote)—एसाफिट, काफि, कैमो, इग्ने, नक्स, स्टैनम।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन ।
क्रम—६—२०० शक्ति ।
फारमुला—जर्मनी—१ ; अमेरिकन—३ ।

कासिया ।

(QUASSIA)

क्रिमि—इसके लिये सिना अध्याय देखिये । पानीमें औंटाकर कासिया काढा मलद्वारकी राहसे पिचकारी द्वारा प्रयोग करनेपर क्रिमि निकल जाती है । यह बाजारमें पसारियोंकी दूकानमें बिकता है । होमियोपेथिक शक्तिकृत दवासे—पाचन यन्त्रपर कासिया बलवर्द्धककी तरह क्रिया प्रकट करता है । आँखपर क्रिया प्रकटकर दृष्टिका गदलापन (dimness) और मोतियाबिन्द (Cataract) प्रभृति रोग पैदा करता है ।

पाकस्थलीकी बीमारी—मन्दाग्नि (Dyspepsia), पेटमें वायु होता है, अम्ल होता है, छातीमें जलन होती है, पेटमें अम्लका दर्द होता है, खायी हुई चीज की कै हो जाती है ।

पेशावकी बीमारी—लगातार पेशाब करनेकी इच्छा बनी रहना, पेशाब लगनेपर फिर देर सहन नहीं होती, दिन-रात खूब ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है, बच्चा बिछावनसे उठते ही पेशाब कर देता है ।

क्रम—१म—२य शक्ति । फारमुला—४ ।

रेडियम-ब्रोम ।

(RADIUM BROM)

१,८००,००० शक्तिकी रेडियम-किरण, सुगर आफ मिल्कपर डालकर इसका विचूर्ण क्रम तैयार होता है, यह साधारणत आज-कल—वात, गठिया वात, जडुल, मोल्स, लाल मुँहासे, प्रभृति कई चर्मरोग, जखम, कैन्सर, रक्तके स्रावका घटना, हमेशा ही शरीरमें पे ठनका दर्द प्रभृति कई बीमारियोंमे इसका व्यवहार होता है। इसका मानसिक लक्षण—रोगी अकेला और अन्धकारमे रहनेसे डरता है। हमेशा अपने पास आदमी रखना चाहता है, विपत्तिकी आशका करता है, जरामे ही उत्तेजित हो जाता है।

लक्षण मिलनेपर नीचे लिखी बीमारियोंमें इसका व्यवहारकर देखें—

१। सर-दर्द—सरमें चक्कर, माथेके पिछले भागमे दर्द, कमरके दर्दके साथ गर्दन और माथेकी चाँदीमे दर्द, कनपटीमे दर्द, २। आँखकी बीमारी—दाहिनी आँखमे तेज दर्द, दोनो आँखोंमें ही दर्द ३। मुँहकी बीमारी—मुँह सूखा, मुँहमे धातुका स्वाद, जीभकी नोकमे काँटी गडनेकी तरह दर्द, ४। उदरकी बीमारी—पेटमे दर्द पेटमें पे ठन, गडगडाकर वायु, वायुसे भरा, मेगजनिस-प्यायेण्टके ऊपरी अशमें दर्द, सिगमायड फ्लेक्सरमे जाकर वह ठहर जाता है। एक बार पतले दस्त, एक बार कब्ज; ५। मलद्वारकी

बीमारी,—बवासीर, मलद्वारमें खुजली, ६। पेशाबकी बीमारी—पेशाबमें क्लोराइडका अंश अधिक रहता है। अण्डलाल, ग्रैनुलर और हायालिन—कास्ट्स, ७। स्त्री-रोग—योनिकी खुजली, कमरके दर्दके साथ देरसे और अनियमित ऋतुस्राव, ऋतुस्रावके समय जननेन्द्रियकी हड्डी और तलपेटमें भयानक दर्द, ८। खाँसी, सूखी आक्षेपिक खांसी, गला सूखा, गलेमें दर्द, गलेमें सुरसुरी होकर लगातार खाँसी। ६। गर्दन, पीठमें पेठनका दर्द, सर्विकेल वर्टेब्रा (गर्दनके पिछले भागमें) दर्द, सर नहीं झुका सकता, खडे होने या सीधे होकर वैठनेपर घटता है, कूल्हा और कमरमें दर्द—लगातार हिलते-डोलते रहनेपर घटना, १०। वात—सभी प्रत्यग और गाँठोंमें दर्द, कन्धा, हाथ, ओर अगुलीमें दर्द, रातमें बढता है, पैरकी मास-पेशी और उरुमें दर्द, नेफ्राइटिस (मसानेका प्रदाह) की बीमारीके साथ वात, कमरमें वात इत्यादि।

कैन्सर—थाइसिसकी ही तरह यह भी एक दुरारोग्य रोग है। इसकी प्राय दवा ही नहीं है। आजकल एलोपैथगण—कैन्सरमें रेडियोकी किरण देकर इलाज करते हैं, उससे सामयिक लाभ हो जाता है, पर पूरा पूरा फायदा नहीं होता। रोग घटकर फिर बढ जाता है। होमियोपैथगण! आपलोग इस बीमारीमें शक्तिकृत दवा सेवन कराकर देखें। (लैपिस-एल्बा देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—नींदसे जागनेपर।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, लगातार हिलने-

डोलनेपर, गरम पानीसे नहानेपर, सोने और दबानेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—रस-वेन, टेल्यूरियम।

क्रम—१२ वीं और ३० वीं शक्ति।

रैनानक्युलस बल्बोसस।

(RANANCULUS BULBOSUS)

(न्यू इंग्लैण्डके एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार किया जाता है)—वक्षस्थलके पजरोंमे दर्द, दाहिने या बायें, दोनों ओरके ही पजरेमें (intercostal region) और स्तनके नीचे डक मारनेकी तरह दर्द, अकडनका दर्द—इसीलिये साँस छोडनेमें कष्ट, छूनेपर भी तकलीफ, वह—प्लुरोडाइनिया, इण्टरोकोस्टैल न्यूरैलजिया (पसलियोंका स्नायुशूल,) वात, या डायफ्राम (वक्षोदर मध्यस्थ-पेशी) का प्रदाह, चाहे किसी भी कारणसे क्यों न हो, उसमें रैनानक्युलस बल्बोसस फायदा करता है। यह दाहिनेकी अपेक्षा बायीं ओरके वक्षके पजरेकी हड्डीके बीचके स्थानोंका वात (Intercostal rheumatism of left side) हो और जिन्हें बरसात या शीत दोनों ही ऋतुओंमें छातीमें काँटा गडनेकी तरह दर्द होता है, उनके लिये उपयोगी है। यक्ष्मा-रोगमें पीब मिले बलगमके साथ—तीसरे कर्टिलेजके दर्दमें—इलियम-पर्निसिटम अधिक फायदा करता है।

रेनान-क्युलस-स्क्लेरेटस (Ranan-culas-scleratus)—किसी चर्मरोगमे छालेकी तरह वडे-वडे दाने निकलते हैं,उसमेंसे रस गिरता है और अन्तमें घाव हो जाता है। फलेजेकी बीचकी हड्डी वक्षोस्थिके पीछे (behind xiphoid cartilage) मे जखमकी तरह दर्द और जलन रहती है।

रैनान वल्वोसस—पेटमें दर्द रहता है। यह दवानेपर वढता है। आक्षेपिक हिचकीमें भी यह उपयोगी होता है।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, रोगवाला अश हिलानेपर, सन्ध्यामें और सवेरे, जल-वायुके परिवर्त्तनसे, इसके सभी उपसर्ग, शीत और वर्षा ऋतुमे और ऋतु-परिवर्त्तन होकर शीत या वरसात होनेपर वढते हैं।

वादकी दवा (follows well)—ब्रायो, इग्ने, कैलि-कार्ब, नक्स, रस, सिपि।

क्रिया-नाशक (antidote)—एनाकार्ड, क्लिमे, ब्रायो, कैम्फर, क्रोटोन, पल्स, रसटक्स प्रभृति।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—३x—६x शक्ति। फारमुला—१।

रैफेनस सैटाइवस नाइजर ।

(RAPHANUS SATIVUS NIGER)

(मूलीकी तरहके एक प्रकारके मूलका टिंचर)—यह दवा नये तथा पुराने दोनो प्रकारके अतिसारोंमे ही ज्यादा फायदा करती है । इसका प्रधान लक्षण है—पेटमें वायु इकट्ठा होना, पेटके भीतर गडगड करना, पेट फूलना, ढबढब हो जाना, पर ऊपर या नीचे किसी ओरसे भी वायुका न निकलना। पहले मलका रग पीला रहता है, इसके बाद वह धीरे-धीरे पीला होता-होता हरा हो जाता है । मलमें फेन रहता है, बडे वेगसे मल निकलता है , पर उसके साथ जरा भी वायु नहीं निकलता है ।

आँखकी बीमारी—आँखकी पलक हमेशा ही फडका करती है, कभी कभी यह इतना अधिक हो जाता है, कि इसी वजहसे रोगी कोई भी चीज अच्छी तरह देख नहीं सकता, आँखकी पुतली आँखके भीतर गोलाकार घूमती है ।

दाँतकी बीमारी—दाँतका स्नायुशूलका दर्द, गर्भ होनेके पहले दो एक महीनोंमे अगर गर्भवतीको दाँतका दर्द हो—रैफेनस फायदा करता है (मैंग-कार्व देखिये)।

क्रम—३—६ शक्ति ।　　　　फारमुला—३ ।

रैटानहिया ।

(RATANHIA)

भगन्दर, मलद्वारके फटे घाव (Fissure of ano), वहाँ दर्द और तकलीफ तथा स्तनकी घुण्डीमें फटे घाव—इन तीन बीमारियोंमें यह ज्यादा फायदा करता है । अगर गर्भवतीके दाँतोंमे दर्द हो और जोरकी हिचकी आती हो, तो वह भी इससे आराम हो जाती है ।

भगन्दर—इस रोगके लिये, एसिड-नाइट्रिक, इस्क्युलस और ग्रैफाइटिसका अध्याय देखिये । बदबूदार और पानीकी तरह पतले दस्त, पाखानाके पहले, बाद और पाखानेके समय जलन, मलद्वारसे रस निकलना, ठण्डा पानी प्रयोग करनेपर तकलीफका घटना, छोटी-छोटी क्रिमि प्रभृति इसके लक्षण हैं ।

हिचकी—नक्स-वोमिका अध्याय देखिये ।

सदृश—पियोनिया, क्रोटोन—मलद्वारका स्नायुशूल , इग्निफस—बवासीरके रक्तस्रावमें और बहुत अधिक जलनमें ।

क्रम—३ री—६ ठी शक्ति । रैटानहियाका मरहम मलद्वारमें लगानेपर मलद्वारकी बहुत तरहकी बीमारियाँ आरोग्य हो जाती हैं । मसूढ़ा और दाँतसे अगर बराबर खून निकलता हो तो उसमे भी इससे फायदा होता है ।

फारमुला—४ ।

रियुम।

(RHEUM)

(चीन देशके एक तरहके गाछकी सूखी जडसे टिंचर तैयार होता है)—१। बच्चोंका खट्टी गन्धभरा अतिसार, २। बच्चेके समूचे शरीरमे खट्टी गन्ध, यही दोनो इसके प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं।

अतिसार—दस्तका रग भूरा, फेनभरा और उसमें खट्टी गन्ध—ये तीन रियुमके चरित्रगत अतिसारके लक्षण हैं। पाखाना होनेके पहले पेटमे मरोड़का बहुत तेज दर्द होता है, साथ ही कूथन भी रहती है, दस्तकी गन्ध खट्टी, यह लक्षण रियुमके सिवा—मैग्नेशिया-कार्ब, हिपर, नैट्रम-फास और कैल्केरिया कार्ब इन चार दवाओंमे है। मैग्नेशियाका दस्त—हरे रगका होता है, कैल्केरिया-कार्ब और हिपरमे—दस्त सफेद रगका और रियुममे—भूरे रगका पाखाना होता है, जो हो, रियुममे—ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ दस्त इतना खट्टा होता है कि बच्चेको धो-पोंछ देनेपर भी शरीरकी खट्टी गन्ध दूर नहीं होती (कोलोसिन्थ देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—रातमे और सवेरे नींद खुलनेपर।

सम्बन्ध—दूध पीना सहन न होनेपर और बच्चेके शरीरमे खट्टी गन्ध रहनेपर—मैग्नेशिया कार्बके बाद इसका व्यवहार होता है। इपिकाकके बाद—रियुमकी क्रिया बहुत उत्तम होती है।

बादकी दवा (follows well)—बेल, रस, फास, पल्स।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, कैमो, कोलोसिन्थ, मार्क, नक्स, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२—३ दिन।

क्रम—६—३० शक्ति।

फारमुला—४ (सूखी जडसे—७)

रोडोडेण्ड्रन क्राइसेन्थेमम।

(RHODODENDRON CHRYSANTHEMUM)

(साइबिरियाके एक तरहके गाछकी डाल, पत्ते और फूलको सूखाकर इसका मूल अर्क बनता है)—जर्मनीके विख्यात डा० सिडेल्ने इसकी पहले पहल परीक्षा की थी, वात और गठिया वातकी यह एक महान उपकारी दवा है। किसी किसीका यह भी कहना है, कि यह वातकी प्रतिषेधक दवा है। इसका रोगी सर्दीमें, बरसातमें और अधड पानीके दिनोंमें तथा इनकी सूचना होते ही अपनेको बीमार सोचने लगता है, वज्रपातकी आवाजसे डरता है।

वात—सम्मुख बाहु, हाथ, हाथकी अंगुलियाँ, पैर, पैरका तलवा प्रभृति शरीरके किसी भी एक प्रत्यंगके छोटेसे स्थानमें पहले एकाएक वातका दर्द होता है। यह दर्द क्रमशः अस्थि-आव-

रण और हड्डीतक अनुभवमें आता है, दर्द—रह रहकर होता है अर्थात एक स्थानमे बहुत दिनोंतक नहीं रहता, रोगवाली जगहपर कुछ समय या कुछ दिनोंतक रहकर आपसे आप आरोग्य हो जाता है ; फिर दर्द होता है,—फिर छूट जाता है—इसी तरह हुआ करता है, रोडोडेण्ड्रनका एक और भी विशेष लक्षण यह है कि—अधड-पानी या आकाशमे गडबडीके लक्षण होते ही अर्थात आकाशमें मेघ उठते ही या ठण्डी हवा चलनेपर अथवा बिजली चमकनेपर रोगीको खराब, बीमारी-सा अनुभव होता है। दर्द आरम्भ होनेके समय शरीरका ताप घटता है और हिमाङ्गकी तरह हो जाता है, दर्द विश्रामसे बढ़ता है और हिलने डोलनेपर और गर्म-प्रयोगसे घटता है। छोटी-छोटी सन्धियोंके पुराने वातमे और गठिया वात-में भी यह फायदा करता है, कितनी ही बार गठिया वातमे पहले पैरके अंगूठेकी गाँठपर बीमारीका हमला होता है।

छोटी पसलियोंके (short ribs) नीचे, पेटकी बायीं ओरके पुराने दर्दमें, कुछ खा लेनेपर ही दर्द घट जाता है। इस लक्षणमे—रोडोडेण्ड्रन फायदा करता है। तेजीसे चलनेपर प्लीहाके भीतर सुई गडनेकी तरह दर्द होता है।

रसटक्स—रोडोडेण्ड्रनकी तरह इसका भी दर्द और तकलीफे—हिलने-डोलनेपर, सर्दीमे, ठण्डी जलीय हवामें, और बरसातकी ऋतुमें बढती हैं, पर इनमें प्रभेद यह है, कि, रोडो-डेण्ड्रनमे—हिलने-डोलनेके साथ ही साथ दर्द भी रहता है और रस-टक्समें—हिलने-डोलनेपर पहले एक बार दर्द बढकर फिर घटता

है। रोडोडेण्ड्रन—बादल या तूफान आरम्भ होनेके पहलेसे ही दर्द पैदा हो जाता है और अधड-पानी घट जानेपर दर्द बन्द हो जाता है। रसटक्समें—जितने दिन सर्दी, बरसात या तर हवा रहती है, तबतक बीमारीकी वृद्धि रह सकती है। रोडोडेण्ड्रनमें—शुक्र या शनिवारको बीमारी पैदा होकर वह सोम, मंगलतक रहती है।

अण्डकोषकी बीमारी—एपिडिडाइमिस (अण्ड-कोषके ऊपर केचुएकी तरह शुक्र उत्पन्न करनेवाली नाडीका प्रदाह) आर्काइटिस (एकशिरा), अण्डकोष फूला और कडा, खींचने और झटका देनेकी तरह तेज दर्द,—यह दर्द पेटतक चला जाता है। दर्दकी प्रकृति—रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो कोई जोरसे दबाकर अण्डकोषको चूर रहा है, पीस रहा है, दर्दकी धमकसे साँस रुक जानेकी तरह हो जाता है (पल्सेटिला देखिये), नयी सूजाककी बीमारीके बाद अगर अण्डकोष फूल जाये, तो इससे फायदा होता है। हाइड्रोसील (आबमजूल—अण्ड-वृद्धि) की भी यह एक बढिया दवा है। (साइलि)।

अतिसार—यदि सर्दी या बरसातमें अतिसार हो तो यह फायदा करता है।

आबमजूल—अण्डवृद्धि (Hydrocele)—रोगमें अण्डकोषमें पानी इकट्ठा होना। इस बीमारीमें अकसर नश्तर लगानेकी जरूरत पडती है। एम्पिलाप्सिस (Ampelopsis)—

नामक औषधका—ϕ से ३ री शक्ति कुछ दिनोतक व्यवहार करनेपर मेरी चिकित्सासे ही २।३ रोगी आरोग्य हुए हैं, परीक्षा करें।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, स्थिर रहनेपर, विश्रामसे, अन्धडसे, जोरसे हवा चलनेपर, अधड़-पानीके साथ विजली चमकनेपर, तर जलीय हवामें, रातमें, सवेरे, पानीमे भींजनेपर, तर हवामें वढना—पेमोन-कार्व, डलका, नैट-सल्फ, रस।

ह्रास (amelioration)—गरम कपडेसे माथा ढकनेपर, उत्तापसे, भोजनके समय और भोजनके कुछ वादतक पसीना होनेपर।

क्रिया-नाशक (antidote)—ब्रायो, कैम्फर, क्रिमे, रस।

वादकी दवा (follows well)—आर्नि, आर्स, कैल्के, कोनि, लाइको, कार्व, नक्स, पल्स, सिपि, साइलि, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३५—४० दिन।

क्रम—१x—३० शक्ति। फारमुला—४।

रस एरोमेटिका।

(RHUS AROMATICA)

(एक तरहके गाछकी सोरसे यह दवा तैयार होती है)—यह वहुमूत्रकी वीमारीमें फायदेके लिये प्रसिद्ध है। यदि उस वीमारीके साथ योनिमें बहुत अधिक खुजली (Pruritus of vulva) का

उपसर्ग भी शामिल रहे, तो सबके पहले इसका ही प्रयोग करना चाहिये। मूत्राशयकी निष्क्रियताके कारण अनजानमें पेशाब होना भी इसका लक्षण है।

पेशाब—फीके रगका, अण्डलाल मिला, रोगी पेशावका वेग रोक नहीं सकता, लगातार बँद-बूँदकर पेशाब हुआ करता है।

बहुमूलकी बीमारी—तेज प्यास, वार और परिमाण दोनोंमे ही पेशाब अधिक होता है, पर उसका आपेक्षिक गुरुत्व कम रहता है। बच्चोंको पेशाब होनेके पहले और समय भयानक दर्द होता है, इसी वजहसे बच्चा रोता है।

बालक-बालिका या अवस्था-प्राप्त मनुष्योंको अगर सोये-सोये अनजानमे बिछावनमे पेशाब हो जाये, बिछावन भींज जाये,—उसे कुछ भी मालूम न हो, नींदमे भी किसी तरहकी वाधा न पडे, शान्तिसे—निर्विघ्न सोता रहे, तो उसमे भी—रस-परोमेटिक फायदा करता है।

चियोनैन्थस ग्लैब्रा—φ, पेशाब गाढा और लाल, पेशावका आपेक्षिक गुरुत्व खूब अधिक, हमेशा ही पेशाव करनेकी इच्छा, पेशाबमे—पित्त और चीनी रहती है, पेशावका रग काला रहता है। मुँहमें लार रहनेपर भी मुँह बहुत सूखा रहता है, पानी पीने-पर भी यह सूखापन दूर नहीं होता, इसमे यकृत बढा और पित्तका दौरान घट जाता है।

क्रम—φ—१x (मात्रा १० बूँदसे १ ड्राम)।

फारमुला—३।

रस-ग्लैबरा ।

(RHUS GLABRA)

(ताजी छालसे टिंचर तैयार होता है)—नाकसे रक्तस्राव, माथेके पिछले भागमे दर्द, वदबूदार वायु निकलना, मुँहमे घाव, दूध पीनेवाले बच्चोंके मुँहमे घाव (scurvy), बहुत कमजोरी और बहुत अधिक पसीना प्रभृतिके लिये इसका व्यवहार होता है । निकले हुए वायु और मलमे बहुत ही सडी वदबू रहनेपर इस से वह वदबू दूर हो जाती है । जखमका सडना बन्द करनेकी भी यह एक बेजोड दवा है ।

रस-ग्लैवरा—पारदकी प्रतिविष दवा (antidote) है गर्मीकी बीमारीमें पाराका अपव्यवहार होनेपर इसके द्वारा इलाजसे बहुत फायदा होता है । मसूढा, मुँह वगैरहका जखम नरम रखने के लिये, इसका—ϕ, लगाया जाता है ।

क्रम—निम्न शक्ति ।

फारमुला—३ ।

रस टाक्सिकोडेण्ड्रन।

(RHUS TOXICODENDRON)

(उत्तर अमेरिकाके मैदान और जगलोंमें और चहारदीवारीमें एक तरहका झाडीकी तरह गाछ होता है, उसके पत्तेसे टिंचर तैयार होता है)। मांसपेशी, चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली तथा स्नायु-मण्डलपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। यह शान्त स्वभाववाले मनुष्योंकी बीमारीमें ज्यादा उपयोगी है।

चरित्रगत लक्षण —

१। फाइब्रस टिशू तथा शरीरके वायेंकी अपेक्षा दाहिने अगपर अधिक आक्रमण होता है, २। वात, सन्धिवात, सायटिका (गृध्रसी) वार्यी ओरका (कोलोसिन्थ), वाये हाथका पेठनकी तरह दर्द, स्नायुशूल, कमरमें दर्द, ३। हिलने डोलनेपर दर्दका घटना,—चुपचाप पडे रहनेपर बढना, सबेरे सोने या बैठे रहकर, उठनेपर, पहले दर्द बहुत बढ जाता है और कुछ देरतक चलने फिरनेपर—घट जाता है, ४। मोच आ जानेकी तरह, पेशी या पेशी-बन्धन अपने स्थानसे टूट कर हट जानेकी तरह या छुरीसे हड्डी खरोंच लेनेकी तरह दर्द होता है। रोगवाली जगहको छूनेपर जख्मकी तरह दर्द मालूम होता है; ५। बहुत बेचैनी,—यह बेचैनी दिनमें कम पर रातमें ज्यादा होती है। एक करवट रहनेपर तकलीफ होती है—इसीलिये करवट बदलता रहता है; ६। रातमें भय—

मानो कोई विष खिलाकर मार डालेगा, बिछावनपर न रह सकना, ७। रोजके कठोर परिश्रम, बहुत थक जाने या तैरने अथवा डाँड चलानेके सपने देखना, ८। ओठके कोनेमें घाव, मुँह और ओठके चारो ओर ज्वरके मोतिया दाने (नैट-म्यूर), ६। सविराम ज्वरमें जाडा मालूम होनेके पहले और समय तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी, खाँसीमे खूनकी गन्ध, १०। टाइफायड ज्वरकी पहली अवस्थामें अतिसार, अनजानमें दस्त होना, खूनके दस्त, इसके साथ ही बहुत कमजोरी, ११। मुँह, गला, जीभ सभी सूखे, साथ ही बहुत प्यास, १२। पानीमें भींजने या गीली मिट्टीमें सोनेकी वजहसे पक्षाघात, रोगवाली जगहका सुन्न हो जाना, १३। छाले-भरे नारंगा या विसर्प, १४। शरीरपर रसभरी फुन्सियाँ, वहाँ खुजलानेपर दर्द; १५। शरीरमें जगह-जगहपर आमवातकी तरह सूजन, उसमें बहुत खुजली, जीभ जखमसे भरी, लाल, सूखी, फटी फटी, जीभपर दाँतका या तिकोनिया दाग इत्यादि।

बेचैनी और छटपटी—एकोनाइट, आर्सेनिक और रसटक्स—इन तीन दवाओंमें बेचैनी और छटपटी दिखायी देती है, किसी भी बीमारीमें छटपटी रहनेपर, उसमें, इन तीन दवाओंमेंसे किसका प्रयोग करना होगा, उनका लक्षण अलग-अलग जान रखना आवश्यक है—एकोनाइट—बेचैनीके साथ रोगका एकाएक बढ़ जाना, उसके साथ ही भयानक प्यास, उद्वेग और मृत्युभय रहता है और रोगी तकलीफमें छटपटाया करता है।

निकमे—आधी रातके वाद रोग और छटपटी वढती है। प्यास—पर थोडा-थोडा पानी पीता है, किसी किसी तीमें कुछ खाने-पीने वाद वीमारीके उपसर्ग वढते हैं, रोगी कमजोर हो पडता है, सिर्फ इधर उधर करवट वदला है, पर उससे तकलीफ विलकुल ही नहीं घटती। रसटक्समें कारण छटपटाता है और इससे दर्द घटता है, वल्कि स्थिर रहनेपर तकलीफ वढती है। इसलिये रोगी छटपटाया है।

सर्दी लगकर या पानीमें भींजकर वीमारी—

सर्दी, वदनमें दर्द, वात इत्यादि कोई भी बीमारी सर्दी लगकर सटक्ससे फायदा होता है। डल्कामारा, नक्स मस्केटा, लरू इत्यादि दवाएँ भी सर्दीमें रोगका वढना और पैदा लक्षणमें प्रयोग की जाती है।

इन्फ्लुएंजा—

इस वीमारीमें शरीरमें वहुत दर्द और रमें ऐंठन रहती है। इयुपेटोरियम, कास्टिकम, रसटक्स, या, इन चार दवाओंमें—शरीरमें अकडन और ऐंठनका ता है, और खाँसी तथा कलेजेमें दर्द भी होता है, ऐसी में जिस दवाके लक्षण अधिक मिलें उसका ही प्रयोग करना। उसीसे ज्यादा फायदा होगा।

शरीरका दर्द—

ज्वर, छोटी माता, इन्फ्लुएँजा, चेचक, ाना, भारी चीज उठाना, घात, सर्दी लगना, पानीमें गरमीके वाद एकाएक सर्दी लगा लेना, पसीना वन्द हो-

कर बदनमे दर्द इत्यादि किसी भी कारणसे हो—शरीरमे दर्दकी—इसमे सन्देह नहीं कि रसटक्स एक कीमती दवा है, पर इतनेपर भी इनकी और भी कितनी ही तरहकी दवाएं हैं। और उनका दर्द भी अलग-अलग प्रकारका है, इसीलिये उनके लक्षण यहाँ सक्षेपमे लिखे जाते हैं। आर्निका—चोटकी वजहसे दर्द, टाइफायड ज्वरमे शरीरमे कुचल जानेकी तरह दर्द, रोगी जिस चीजपर सोता है, वही कडी मालूम होती है, इसीलिये करवट बदला करता है। फाइटोलैका—समूचे शरीरमे अकडनका दर्द, इसीलिये हिल-डोल नहीं सकता। रूटा—जिस करवट सोता है उसी ओर दर्द, मानो कुचल गया है। रसटक्स—पहली बार हिलने-डोलनेके समय दर्द, पर हिलने-डोलने बाद वह घट जाता है (रोडोडेण्ड्रन देखिये)। वेप्टिसिया—नरम बिछावनपर सोनेपर भी शरीरमे दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो वह काठपर सोया हुआ है, समूचे शरीरमें अकडनकी तरह दर्द। चायना—हड्डी, अस्थि-आवरक, गांठ, चमडा, यहाँतक कि केशोंतकमे दर्द होता है, बहुत स्पर्श-द्वेष, हाथसे छूने नहीं देता।

जबड़ेका बात—किसी चीजके चबानेपर ऐसा मालूम होता है, मानो मसूढा टूट जायगा, कडाकसे आवाज हो जाती है, यह एक अद्भुत लक्षण है—रोगी बराबर जम्हाई लेता है। इतनी जम्हाई आती है और यह तबतक आती रहती है जबतक मसूढामें टूट जानेका लक्षण नहीं पैदा हो जाता। अगर मसूढे दाँतसे

अलग हो जायं तो उसमें भी रसटक्स लाभदायक है। मुँहमें बहुत लार जमती है, कभी-कभी उसमें खून भी मिला रहता है।

कटिवात—कोलोसिन्थ अध्याय देखिये।

अतिसार—ज्वर-विकारके साथ अतिसार, मल बहुत बदबूदार, रंग भूरा, कभी-कभी खून मिला लाल, आम मिला मल; अनजानमें निकल जाता है, पाखाना होनेके समय पेटमें बहुत दर्द होता है, यह दर्द उरुतक चला जाता है।

चर्म्म-रोग—आमवात या आमवातकी तरह दाने, पनसाहा माताकी तरह गोटियाँ, लाल रंगके उद्भेद या छाले, ये धीरे धीरे जल जानेकी तरह हो जाते हैं, उसमें पीब पैदा होता है और पपड़ी जमती है (नीचे—सम्बन्धकी जगहपर—रस विनेनेटा देखिये)। रातमें पैरमें बहुत खुजलाहट होती है। दाद—क्रमशः चमड़ा मोटा और कड़ा पड़ता जाता है।

आंवला—रसटक्स, एपिस, एसिड-नाइट्रिक, कास्टिकम प्रभृति दवाएँ इस बीमारीमें लाभदायक हैं, रसटक्समें—प्रत्येक दानेकी जड़ लाल रङ्गकी रहती है, खुजलाती है और उसमें जलन होती है। एसिड-नाइट्रिकमें—उद्भेद छालेकी तरह होते हैं, उनमें जलन और बेधनेकी तरह दर्द रहता है। एपिसके—उद्भेदमें जलनके साथ डंक मारनेकी तरह दर्द रहता है।

इरिसिपिलस—विसर्पमें छालेकी तरह उद्भेद, उसमें बहुत जलन, तकलीफ और खुजली, रोगकी गति बायीं ओरसे दाहिनी ओर (एपिसके विपरीत) रहती है।

आँखकी बीमारी—आँखसे बहुत ज्यादा परिमाणमें गरम पानी गिरता है, जहाँ यह पानी लगता है, उस स्थानकी खाल उधड जाती है, बहुत पपडी जमती है। पपडी पीवकी तरह गाढ़ी होती है। आँख खोलनेपर आँखसे बहुत अधिक परिमाणमें पानी गिरता है—यह सवेरे ही अधिक होता है, आँख सट जाती है और पलक बन्द हो जाती है। इसमें आँखके भीतर बहुत दर्द रहता है और आँख करकराया करती है, पलक फूल उठती है, रोशनी सहन नहीं होती।

<u>एपिस</u>—इसमे भी आँखमें बहुत अधिक तकलीफ रहती है। आँख सट जाती है, तकलीफ रातके समय बहुत बढती है। एपिसकी—तकलीफ ठण्डे पानीके प्रयोगसे और रसटक्समें—तकलीफ गरम पानीके प्रयोगसे घटती है। एपिसमे—पलक थैलीकी तरह फूल उठती है, रसटक्समे—यह नहीं होता, इसमे आँखकी सूजन और लाली दिखाई देती है (निचली पलक फूलना—एपिस, ऊपरी पलक फूलना—कैलि-कार्ब)।

हृत्पिण्डकी बीमारी—वातकी वजहसे हृत्पिण्डकी बीमारी, हृत्पिण्डका बढना (हाइपरट्राफी), कलेजा धडकना, स्थिर होकर चुपचाप बैठे रहनेपर कलेजेकी धडकन बहुत बढ जाती है। हृत्पिण्डकी जगहपर डक मारनेकी तरह दर्द होता है, दर्द बायें बाहुकी राहमे नीचेकी ओर परिचालित होता है।

जीभ—जीभकी नोक लाल रगकी, एक तरहकी तिको-

नियाकी तरह लाल दाग—यह लक्षण अतिसार, आमाशय, निमो-
निया, टाइफाइड ज्वर, सविराम और अविराम ज्वर इत्यादि चाहे
जिस बीमारीमें रहे तो—रसटक्स फायदा करता है।

पृष्ठ-व्रण—कार्बङ्कल—पहली अवस्थामें रोगवाली जगह
देखनेमें लाल रहती है, उसमें बहुत दर्द और तकलीफ रहती है।
यह अगर रसटक्ससे आरोग्य न हो तो—आर्स, न्यूकेस
प्रभृतिका प्रयोग करना चाहिये। पन्थ्रासिनम अध्याय देखिये।

चेचक—गोटियाँ देखनेमें काली, गोटियोंके भीतर रक्त,
और साथ ही खून मिला पाखाना होना। मसूरिका या छोटी
माता—गोटियाँ बैठ जाती हैं।

स्त्री-रोग—बहुत ज्यादा वेग या कुन्थनके कारण अथवा
कोई भारी चीज उठानेके कारण जरायुका बाहर निकल आना, पैर
हमेशा पानीमें भींजा रहनेके कारण रजःबन्द हो जाना, सीडभरी
जगहमें रहनेकी वजहसे या वातके कारण बाधक। डा० मिण्टन
कहते हैं—सर्दी लगकर या पानीमें भींजकर अर्थात सर्दीसे—
स्त्रियोंको जरायुकी कोई भी बीमारी क्यों न हो जाये—रसटक्स
फायदा करता है। ऋतुस्रावका रंग फीका, खाल उधड़ जाती है,
योनिमें दर्द होता है।

टाइफाइड-ज्वर-विकार—इस प्राणघातक बोखार-
में दूसरी दूसरी दवाओंमें—रसटक्स भी एक मूल्यवान दवा है।
रसटक्समें—विकारमें प्रलाप खूब अधिक नहीं रहता है, इसमें

रोगी लगातार बिछावनमे करवट बदला करता है, एक बार सोता है, फिर उठ बैठता है, लगातार बीमारी बढनेके साथ ही साथ बेहोशीका भाव आता जाता है, सवालका अगर जवाब भी देता है तो अनिच्छा-पूर्वक, बुदबुदाकर प्रलाप करता है, चेहरा लाल हो जाता है , त्वचा सूखी, गरम और अपेक्षा-कृत लाल रंगकी दिखाई देती है। माथेमें बहुत दर्द रहता है, नाकसे काले रंगका खून गिरता है। उससे माथेका दर्द कुछ घटा मालूम होता है। टाइफाइडका विष—क्रमश —फेफड़ेपर आक्रमण करता है, सूखी खाँसी आया करती है, खाँसी रातमे अधिक आती है, सवेरेके वक्त खाँसी, कुछ ढीली रहती है, श्वासमे बहुत तकलीफ होती है, लोहेकी जंगकी तरह बलगम निकलता है। जीभ फटी-फटी सूखी और भूरे रंगकी दिखाई देती है, पर जीभका अगला भागमे तिकोनिया—त्रिभुजकी तरह दाग रहता है और अगला भाग लाल रंगका दिखाई देता है, जीभपर दाँतके दाग पडते है, (यह लक्षण मर्कुरियसमे भी है , पर उससे टाइफाइड ज्वरमें कोई भी फायदा नहीं होता)। रसटक्समें—ज्वरके साथ अकसर पतले दस्त आते हैं, मलमें बहुत बदबू रहती है और वह अनजानमे निकलता है, रोगीको नींद नहीं आती, भ्रम देखा करता है, शरीरपर एक तरहका लाल दाग दिखाई देता है, एक तरहका फुन्सियोंकी तरह दाना निकलता है, पेट फूलता है, दाहिनी ओरके पुट्ठेके ऊपरी भागमे पेटके नीचे और प्लीहामें बहुत दर्द रहता है। टाइफायड ज्वरमें—जबतक निमोनियाका लक्षण दब नहीं जाता और अति-

सार नहीं घटता, तबतक केवल—फास्फोरसपर निर्भर रहा जा सकता है। बेप्टिसिया, आर्निका, एसिड-फास, एसिड-म्यूर इत्यादिके साथ इसका प्रभेद निर्णय करें। रसटक्स—बेचैनीवाले ढग (restless type) की दवा है।

ऐसा दिखाई देता है, कि—ज्वरमें रोगीकी प्राय दो तरहकी अवस्थाएं रहती हैं—कोई छटपटाता है (restless type)। और कोई चुपचाप पडा रहता है (non-restless type), छटपटानेपर—आर्सेनिक, रसटक्स, आर्निका, बेप्टिसिया, न छटपटानेपर—जेलसियम, एसिड-म्यूर, ब्रायोनिया, कार्बो-वेज, एसिड-फास, आर्निका, फास्फोरस प्रभृति कई दवाओंकी पहले जरूरत होती है, इन दवाओंके लक्षण उनके अध्यायमें लिखे गये है।

टाइफायड ज्वर (मियादी बोखार) मे रसटक्सका व्यवहार करते समय साधारणत निम्नलिखित लक्षणोंपर ध्यान रखें—

१। हलके प्रलापके साथ छटपटी, २। अगर बकवासीका भाव वढ जाये, सभी बातोंका उत्तर न दे, अथवा चिढकर अनिच्छापूर्वक उत्तर देता है, ३। सारे शरीरमें वातकी तरह दर्द, ४। जीभकी नोकपर लाल तिकोनिया दाग, ५। ओठपर और दाँतमें लाल रगका मैला, ६। त्वचा सूखी और कुछ लाल आभा लिये दिखाई देती है, कभी कभी खट्टी गन्ध लिये बहुत अधिक पसीना होता है, ७। शरीरपर हलके उद्भेद (इसीको मोतीझरा कहते हैं), ८। पेट फूलना, दाहिने पुट्ठेपर तलपेटमें दर्द, प्लीहाका बढना;

रोगकी बढी हुई अवस्थामें—९। पेट फूलना, अतिसार, बार बार थोडा थोडा दस्त, आम या खून मिले दस्त, माँसके धोवनकी तरह या खून-मिला पानीकी तरह दस्त, अनजानमे बदबूदार दस्त, रातमें दस्तका ज्यादा होना, पेटमे दर्द, कूथन, मलमे कभी गन्ध और कभी बिलकुल ही गन्धका न रहना, मलका रग कभी हरा, पेटमे दर्द नहीं रहता ; १०। जरायु या नाकसे रक्तस्राव होकर उपसर्गो-का कुछ कुछ घट जाना , ११। खाँसी, छातीमे दर्द, बलगमके साथ कभी-कभी खूनके छींटे, परीक्षा करनेपर छातीमे श्लेष्माकी घर-घराहट (rales) , निमोनिया होनेपर कलेजेके दाहिनी ओर दौरा होना इत्यादि।

सविराम-ज्वर—ज्वर आनेका समय सवेरे—दस बजे और सध्यामें ५ बजेसे ६ बजेके बीचमें, सध्याके बाद ज्वर आता है तो प्राय रातभर रहता है। ज्वरकी पूर्वावस्था—बदनमे दर्द, हाथ-पैरोंमे पेठन होती है, जम्हाई आती है, आँखोंमे जलन, लगा-तार तग करनेवाली सूखी खाँसी, शीतावस्था—पहले पैर ठण्डे होकर शीत और कम्प पैदा हो जाता है। बहुत शीत—ऐसा मालूम होता है, मानो वह बरफमे पडा है, कुछ खा-पी लेता है तो शीत और भी बढ जाता है, रोगी इस अवस्थामें छटपटाया करता है, इसके अलावा सूखी खाँसी, बदनमे दर्द, प्यास वगैरहके लक्षण भी तैयार रहते है, कभी-कभी इस अवस्थामे बहुत अधिक पसीना होता है। उत्तापावस्था—इस अवस्थामें बहुत अधिक खाँसी, और प्यास नहीं रहती, शरीरमें भयकर उत्ताप, रोगी बहुत छटपटाता

है, शरीरमें आमवातकी तरह एक तरहके उद्भेद निकलते हैं, पसीनेवाली अवस्था—बहुत पसीना, इस अवस्थामें आमवातकी खुजली आराम हो जाती है, रोगी सो जाता है, शरीरका दर्द कुछ भी नहीं घटता। ज्वर छूटनेकी अवस्थामें—बहुत छटपटाता है, स्थिर होकर बैठ या सो नहीं सकता।

हैजा—हैजाके मूल-विकारसे पैदा हुए ज्वरमें—भूल बकनेके साथ पेटका दोष, माँसके धोवनकी तरह दस्त, बदबूदार दस्त, बेचैनी, कभी कभी प्रलाप बकता है, काटनेके लिये दौड़ता है, रोता है, कभी कभी अज्ञान हो जाता है, जीभ सूखी, आँखकी पुतली छोटी हो जाती है, ये सब लक्षण रहनेपर—रसटक्स; और बढ़ी हुई अवस्थामें—इन लक्षणोंके साथ आँखें फूली रहनेपर रसटक्स और हायोसियामस—३० शक्ति, जल्दी जल्दी प्रयोग करनेपर उससे ज्यादा फायदा होगा।

वृद्धि (aggravation)—विश्रामसे, विचली रातमें, अवड-पानीके पहले, पानीमें भींजनेपर, बरसातमें।

ह्रास (amelioration)—शरीर हिलानेपर करवट बदलने-पर, गर्म ऋतुमें।

सम्बन्ध—हृत्पिण्डकी बीमारीमें—आर्नि, एको, ऑलिक, ज्वरमें—क्राम, आर्स, एसिड-म्यूर, कार्बो, बेप्टी, ब्रायो, वातके दर्दमें—आर्स, सल्फ, रूटा, लिडम, लाइको, पल्स, कैलमिया, कौलचि, सिङ्को, बेल, स्पाइजेलिया के साथ तुलनीय। रसटक्सके बाद या पहले एपिसका प्रयोग मना है, पर रसटक्सके बाद

फास्फोरससे बहुत फायदा होता है। एकजिमा रोगमें—बहुत खुजली—जलन, जुलपित्ती निकलना या छालेकी तरह उद्भेद, उसपर पपडी जम जाती है और पीब होता है। इस लक्षणमें रस-टक्ससे फायदा न होनेपर—रस-विनेनेटा (Rhus venenata) का भीतरी और बाहरी प्रयोग करनेपर असाधारण लाभ होता है। यह आवलोंमें भी फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एनाकार्ड, एकोन, एमोन-कार्ब, वेल, ब्रायो, कैम्फर, काफि, क्रिमे, क्रोटोन, ग्रेफा, गुयेकम, लैके, रैनान-वाल्बो, सल्फ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—१—७ दिन।

क्रम—३—२०० शक्ति।

साधारणत इसकी—३० शक्ति ही ज्यादा फायदा करती है, कितने ही स्थानोंपर ३री शक्तिसे भी ज्यादा फायदा होता है।

फारमुला—३ (जर्मनी)।

रिसिनस काम्युनिस।

(RICINUS COMMUNIS)

(एरेण्ड वृक्षके पके बीजसे टिंचर तैयार होता है)—हैजा रोगकी यह एक बहुत ही लाभदायक दवा है। अतिसार, रक्तशूल, और आमाशयमें इसका बहुत कम व्यवहार होता है। डा० बोरिक

कहते हैं—यह अतिसार, आमाशय और बहुतसे पुराने अतिसार (obstinate chronic diarrhœa) की बढ़िया दवा है। इसके सेवनसे प्रसूताके स्तनका दूध बढ़ जाता है।

हैजा—औदरामयिक जातिका (Diarrhœaic variety) के हैजाकी बहुत फायदेमन्द दवा है। पहले पेटकी बीमारी-की तरह दस्त अर्थात थोडा थोडा बदहजमीकी तरह दस्त कई घण्टे या २।३ दिन पहलेसे आरम्भ होकर क्रमश वह बढ जाता है और अन्तमें यह बीमारी ठीक ठीक हैजामें परिणत हो जाती है। अर्थात्—चावलके धोवनकी तरह दस्त, सडे कोहडेकी तरह टुकडे-टुकडे मिला दस्त, कै, हाथ-पैरमें पेठन, प्यास, शीत आ जाना, पेशाव बन्द इत्यादि लक्षण प्रकट होनेपर और उसके साथ ही पेटमें दर्द जरा भी न रहनेपर—रिसिनससे जरूर ही फायदा होगा। रिसिनसमें—मछली या माँसके धोवनकी तरह भी खून-मिले दस्त आते हैं। जो हो, रिसिनसका चरित्रगत प्रधान लक्षण—पेटमें किसी तरहका दर्द न रहना, यह लक्षण रहनेपर—रिसिनस अमोघ औषध है।

रिसिनसके बहुतसे लक्षण प्राय वेरेट्रमकी तरह हैं, पर प्रभेद यह है, कि वेरेट्रममें—बीमारी देखते-देखते एकाएक बढ जाती है और रिसिनसमें—दस्त, वमन, पेठन, सभी उपसर्ग धीरे धीरे बढते हैं और एकके बाद दूसरा उपसर्ग पर्याय क्रमसे आता है, वेरेट्रम—पेटमें असह्य दर्द रहता है, रिसिनसमें—दर्दका लेश भी

नहीं रहता। हिमांग अवस्थामे बहुत ज्यादा परिमाणमें अर्थात् परिमाणमे अधिक और गिनतीमें अधिक दस्त होनेपर रिसिनससे फायदा नहीं होता, उस समय प्राय —कार्वोविजकी जरूरत पडती है। इस अवस्थामें अगर पेटमें दर्द न रहे—रिसिनस और कार्वो प्रर्याय क्रमसे व्यवहार करनेपर ज्यादा फायदा होगा (कार्वो-वेज अध्याय देखिये)।

इस देशमे अकसर आक्षेपिक जातीय (spasmodic, अकडन-वाला), पक्षाघातिक (paralytic) जातिका और औदरामयिक (diarrhœaic) जातिका—इन तीन प्रकारोका हैजा ही अधिक होता देखा जाता है, कैम्फर और वेरेट्रममे पहलेवाली दोनों जातियोंके हैजाकी प्रधान दवाएँ वता दी जा चुकी है। अब अन्तिम अर्थात् औदरामयिक (diarrhoeaic) जातिकी प्रधान दवाओंकी एक सूची रखें—एकोन, एसिड-फास, इपिकाक, पोडो, आइरिस, क्रोटोन, नक्स, कोलचिकम, आर्सेनिक, रिसिनस, इलाटिरियम, जैट्रोफा, कैलि-फास, मर्क-कोर, सलफर—इन सबकी औदरामयिक जातिके हैजामें हमेशा जरूरत पडा करती है।

अतिसार—दुरारोग्य, विना दर्दके पुराने अतिसारमें और कितनी ही वार आमाशयमें भी (diarrhoea, dysentery, obstinate chronic diarrhoea) रिसिनस फायदा करता है।

क्रम—३x—३० शक्ति। फारमुला—४।

रोबिनिया स्यूडेकेसिया ।

(ROBINIA PSEUDACACIA)

(युनाइटेड-स्टेट्सके एक तरहके गाछके डालकी छालसे टिंचर तैयार होता है)—डा० सुसलरकी टिशू-रेमिडिजके अन्तर्गत अम्लकी बीमारीके लिये, जिस तरह—नैट्रम-फास है, साधारण होमियोपैथिक दवाओंमे उसी तरह—रोबिनिया है । यह अम्लकी बीमारीकी (acid dyspepsia) की एक प्रधान दवा है । पाकस्थलीमें हमेशा ही भार मालूम होना, मुँहमे खट्टा पानी भर आना, खट्टी चीजोंकी के, डकार या वमन जो कुछ होता है, वही बहुत खट्टा । यहाँतक कि उनसे दाँततक खट्टे हो जाते हैं, श्वास-प्रश्वासमें भी खट्टी गन्ध निकलती है इत्यादि इस दवाके प्रधान लक्षण हैं । पाकस्थलीमें अम्ल होनेकी वजहसे जो सब सरदर्द होता है, रोबिनिया उसमे भी फायदा करता है, उसमें अम्लकी वजहसे पेटमे जलन होती है, पेटमे एक तरहका खोंचा मारनेकी तरह दर्द होता है, यह दर्द और जलन छाती और दोनो कन्धोंकी बीचमें चली जाती है । (एसिड-स्लफ) ।

इसका एक लक्षण और भी है—भोजनके बाद पेटमे हमेशा ही एक तरहका पेठन या दबा रखनेकी तरह दर्द होता है । इसी वजहसे रोगी दिनमें एक बारसे ज्यादा खाना नहीं चाहता । पाकस्थलीका कैन्सर—की बीमारीमे—रोबिनियासे फायदा होता है ।

सदृश—कैल्केरिया, आइरिस, मैग-कार्ब, पल्सेटिला, रियुम, (एसिड-सल्फ)।

क्रम—φ,—६ शक्ति। फारमुला—२।

रूटा ग्रैवियोलेन्स।

(RUTA GRAVEOLENS)

(दक्षिण अमेरिकाके वहुतसे वागीचोंमे इसका गाछ लगाया जाता है, उसी गाछसे इसका टिंचर तैयार होता है)—शरीरके किसी भी अशमे या सारे शरीरमे चोट लगने अथवा जखमकी तरह दर्द रहनेपर और किसी भी वातमे और गृध्रसी (साइटिका) की वामारीके दर्दमे—गीली या ठण्डी कोई चीजका प्रयोग होना अथवा वरसात या शीतमे वढनेपर, हिलने-डोलनेपर घटना—ये कई लक्षण रहनेपर—रूटा फायदा करता है। अस्थि-आवरक झिल्ली (पेरियास्टियम) के ऊपर इसको प्रधान क्रिया होती है।

काँच निकलना—नरम मल निकलनेके साथ काँच निकले (Prolapsus of the rectum) या जोरसे काँखनेके कारण काँच निकल पडती हो, मलाँत्र (काँच) निकल पडनेपर वह भीतर नहीं जाती।

आँखकी वीमारी—दिन-रात वहुत ज्यादा लिखने-

पढने या सिलाईका काम कर देखनेकी शक्ति अगर घट जाये, आँखमें जलन हो, दर्द इत्यादि रहे, तो यह फायदा करता है।

पेशावकी बीमारी—रातमें बिछावनमें अनजानमें पेशाव हो जाता है, दिनके समयमें भी लगातार पेशाव करनेकी इच्छा रहती है, पेशाव लगनेपर क्षण भर भी रुक नहीं सकता। इसका एक और भी विशेष लक्षण है—पेशाव लगनेपर यदि तुरन्त पेशाव न हो, मूत्राशय पक्षाघातकी तरह हो जाता है, उस समय बहुत चेष्टा करनेपर भी एक बूँद पेशाव नहीं उतरता।

शरीरके किसी भी स्थानमें मोच आ जानेके बाद घात, हाथकी कलाई, पैरकी एड़ी, पीठ—कड़ी और अकड़ी, चोट या मोच आ जानेके बाद घुटनेका प्रदाह, (साइनोवाइटिस) होनेपर रूटासे फायदा होता है।

बेलिस-पिरेनिस—ϕ, मोच और कुचल जाना (sprains bruises) का दर्द होनेपर—यह आर्निकासे भी ज्यादा फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—सर्दीमें और बरसातमें।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे और हिलने-डोलनेपर।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, कास्टि, लाइको एसिड-फास, पल्स, सिपि, सल्फ, एसिड-सल्फ।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—१।

रियुमेक्स क्रिस्पस ।

(RUMEX CRISPUS)

(ताजी जडसे मूल अर्क तैयार होता है)—खाँसी, अतिसार और चर्म-रोग—साधारणतः इन तीन बीमारियोंमें इसकी जरूरत पडती है ।

खाँसी—लगातार कष्ट देनेवाली सूखी खाँसी, गलेमें सुरसुरी या कुटकुटी होकर खाँसी, घर या हवा बदलनेपर, सन्ध्यामें, सोनेके बाद, गलेमें हाथ लगानेपर, बाई करवट सोनेपर (फास) मुँहमें ठण्डी हवा घुसनेपर खाँसीका बढ़ना, गला फस जाना—सन्ध्यामे और ठण्डेसे बढ जाता है, खाँसते खाँसते आप ही आप पेशाब निकल जाता है (कास्टि, सिल)। खाँसनेके समय गलेमें अकडनकी तरह दर्द मालूम होना—प्रभृति रियुमेक्सके विशेष लक्षण हैं (फासफोरस, एलियम और लैकेसिस अध्यायमें खाँसी देखिये ।)

अतिसार—सवेरे ५ से १० बजेके बीचमें अतिसारका बढना (एलो, नैट-सल्फ, सलफर, पोडो), एकाएक मलमें वेग पैदा हो जाना, जल्दी जल्दी बिछावनसे उठ पडना, अधिक परिमाणमें बदबूदार पतले दस्त होना, पेटमें दर्दका न रहना ।

चर्म्म-रोग—शरीरमें जगह जगह बहुत खुजली होती है, दाने निकलते हैं, ये दाने खुजलीकी तरह या छालेकी तरह होते हैं, कपडा उतारनेपर और ठण्डी हवा लगनेपर खुजली बढ़ जाती है ।

सदृश—बेल, फास्टि, ड्रोसेरा, फास, सैंगु, सल्फ।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डमें या ठण्डी हवामें, सोनेपर।

ह्रास (amelioration)—गरमीसे, मुँहपर कपड़ा ढक रखनेपर।

क्रम—२ री शक्ति। फारमुला—जर्मनी १, अमेरिकन—३।

सैबाडिला।

(SABADILLA)

(बीजकी गिरीसे टिंचर तैयार होता है)—नाककी श्लैष्मिक-झिल्ली और अश्रुस्रावी ग्रन्थि (Lachrymal gland) पर अपनी क्रिया प्रकट करनेके कारण, इससे नाक या आँखसे बहुत ज्यादा पानीकी तरह स्राव या पानी निकलता है। रोज आक्षेपिक छींक, अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें भ्रान्त विश्वास।

क्रिमि और क्रिमोकी वजहसे पैदा हुए उपसर्गोंमे और बच्चोंके पेटमें हमेशा ही दर्द होनेके साथ अतिसार रहनेपर इससे ज्यादा फायदा होता है, यह सविराम ज्वरमें भी फायदा करता है।

मानसिक लक्षण—वायुसे पेट फूल उठता है, रोगिनी समझती है, कि उसको गर्भ रह गया है, ऐसा मालूम होता है, कि

उसके गलेके भीतर दुरारोग्य जखम हो गया है, इससे ही उसकी मृत्यु होगी। समझती है, कि उसे कोई कडी वीमारी हो गयी है। रोगी—स्नायविक, डरपोक रहता है और जरा सी बातमें चौंक पडता है।

सर-दर्दकी वीमारी—सरमें चक्कर आना, समझता है, कि सभी चीजें, एकके बाद एक चक्केकी तरह घूम रही हैं, किसी चीजकी भी गन्ध सहन नहीं होती।

आँखकी वीमारी—पलकें लाल हो जाती है, जलन होती है, आँखसे लगातार पानी गिरता है, खाँसता और जम्हाई लेता है और ऊपरकी ओर देखनेपर आँखमें पानी भर आता है।

नाककी वीमारी—नाकसे सोतेकी तरह पानी गिरता है, इसके साथ ही आक्षेपिक खाँसी, सामने कपालमें बहुत दर्द।

गलनलीकी वीमारी—गलेका पुराना जखम, ठण्डी हवा सहन नहीं होती, घूँट लेनेपर गलेमें दर्द होता है, ऐसा मालूम होता है, मानो गलेके भीतर एक थक्का या एक टुकडा मांस पडा है, इसीलिये, लगातार घूँट लेता है, गरम खानेकी चीज या पान-सामग्रीसे ये लक्षण घटते हैं।

चर्म्म-रोग—शरीरका चमडा पार्चमेण्ट कागजकी तरह सूखा, शरीरपर काँटेकी तरह उद्भेद पैदा होना, नख मोटा हो जाता है, मलद्वारमें बहुत कुटकुटी और खुजलाहट होती है।

शरीरमें जगह जगहपर लाल रंगके विन्दु और रेखायें उत्पन्न हो जाती हैं।

सविराम ज्वर—तीसरे पहर या सध्यामें ज्वर आता है, ज्वर—ठीक एक ही समय आरम्भ होता है (सिड्रन, एरा-नियाकी तरह), तीसरे पहर ३ वजेसे ५ बजे और रातके ६ बजेसे १० बजेके बीचमें ज्वर आनेका ही इसमें विशेप लक्षण है। शीता-वस्था—प्यास नहीं रहती, इस अवस्थामें बहुत ही कष्टकर खाँसी आती है (रसटक्समें—शीतके पहले और समय खाँसी), शीत घटना आरम्भ होनेपर प्यास लगती है, सैंबाडिलामें—शीतावस्था अधिक प्रवल, पर उत्तापावस्था अधिक प्रकट नहीं होती। उत्ता-पावस्थामें—गरम पानी पीनेकी इच्छा, जम्हाई आती है, अगडाई लेता है, मुँह और माथा ज्यादा गरम हो जाता है, जलन होती है, पर हाथ पेर ठण्डे रहते हैं, रातके अन्तिम भागमें, सवेरे और पैरके तल्वेमे ज्यादा पसीना होता है, इसी अवस्थामें रोगी सो जाता है। बोखार छूटनेपर—जाडा मालूम होता है, खट्टी डकार आती है, पित्तकी के होती है (नक्स, पल्स देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डमें, ठण्डा पानी पीनेपर, पूर्णिमामें।

ह्रास (amelioration)—गरम चीजें पीनेपर, कपडेसे ढके रहनेपर।

क्रियानाशक (antidote)—पल्स, लाइको, कैके, कोनि।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—४।

सैबाल सेरुलेटा ।

(SABAL SERRULATA)

(पके फलसे टिंचर तैयार होता है)—साधारण कमजोरी, इन्द्रिय शक्तिकी कमजोरी, एपिडिडाइमिटिस , मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका बढना, पेशाव करनेमें भयानक तकलीफ और अत्यन्त यन्त्रणा, डिम्बकोष (ovary) का बढना और दर्द । ये कई इसके विशेष लक्षण हैं । स्त्रियोंके स्तन, जरायु प्रभृतिके ऊपर भी इसकी क्रिया दिखाई देती है , स्तन सिकुड जाते हैं, बढते नहीं ।

पुरुषोंके मूत्राशय (ब्लाडर) की ग्रीवाके पास जहाँ मूत्रनली (युरेथ्रा) आरम्भ हुई है, वहाँ देखनेमें ठीक अखरोटके तरहकी प्रास्टेट (मूत्राशय-मुख-शायी) नामकी एक ग्रन्थि उस ग्रीवाको घेरे हुए हैं, उस ग्रन्थिके पासके किसी यन्त्रके प्रदाहसे जैसे—युरेथ्राइटिस, मूत्राशयकी पथरी, स्ट्रिकचर, प्रमेह, वात और कोई उत्तेजक दवा इत्यादिका सेवन इत्यादि कारणोंसे उस मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह होता है। इसीको प्रोस्टेटाइटिस कहते हैं । प्रोस्टैटाइटिस (मूत्राशय-मुखशायी ग्रन्थिका प्रदाह) होनेपर जननेन्द्रियकी जडकी ओर और मलद्वारके पास टपक होती है । पेशावका लगातार कष्ट देनेवाला वेग, बहुत देरतक काँखने और वेग देनेके बाद थोडी थोडी मात्रामें बूँद बूँद पेशाव निकलना, कभी कभी पेशाव न होना, शीत भाव, ज्वर, इस तरहके कई उपसर्ग (प्राथमिक प्रदाहके लक्षण) प्रकट होते हैं और इससे—बेलेडोना,

र्फुरियस, कैन्थर, हिपर, नाइट्रिक-एसिड प्रभृति कई दवाओंका
ायोग होनेपर भी, यदि उनसे फायदा न हो, या प्राथमिक प्रदाहके
ाद जब सिर्फ ग्लैण्ड बड़ी हो जाती है, उस समय—
सैवालसे विशेष उपकार होता है। वुड्ढोंको ६० वर्षकी
उमरमें अपने आप-ही प्रास्टेट ग्लैण्ड बढ़ जाती है। पेशाब
करनेमें कष्ट, जलन-यन्त्रणा, एकाएक चक्कर खाकर पेशाव निक-
लना, पेशाबकी नलीमें मानो कुछ अड़ता है या अटका हुआ है,
ऐसा अनुभव होना इत्यादि कितने ही लक्षण दिखाई देते हैं।
सैवाल-सेरुलेटा—इसकी प्राय: एक प्रकारकी पेटेण्ट दवा है।
मदर-टिंचर—२।३ बूँद मात्रामें दिनमें ३।४ बार सेवन करना
चाहिये। रोगकी तेजीके अनुसार ३० बूँदतक प्रति मात्रामें कभी-
कभी व्यवहार होता है।

काक्लिरिया (Cochlearia)—३x प्रमेह या किसी दूसरी
बीमारीमें ग्लैन्स-पेनिसमें (लिङ्ग-मुण्डमें) जलन, काटने-फाड़नेकी
तरह दर्द और पेशाबके पहले, समय और बाद जलन रहनेपर
फायदा करता है।

फारमुला—२।

सैबाइना ।

(SABINA)

(एक तरहके झोंगड जैसे गाछके पत्तेसे मूल अर्क तैयार होता है)—जरायु, डिम्बाशय इत्यादिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। गर्भ-स्राव प्रवण, गठिया-वातका धातु, रक्तप्रधान धातु, सहजमें ही चिढ़ उठता है, और रजस्राव-प्रवण धातुवाली स्त्रियोंकी बीमारीमें यह ज्यादा लाभदायक है। इसमें मस्तिष्क, फेफडा और मसानेमें भी रक्तसंचय होता है।

चरित्रगत लक्षण—

१। रक्तस्रावके साथ सेक्रम अस्थि (कुल्हेकी हड्डी) से लेकर प्यूबिस (जननेन्द्रियकी जड) तक या कमरसे लेकर जननेन्द्रिय-तक खींच रखनेकी तरह दर्द, इस ढंगके दर्दके साथ जरायुसे रक्तस्राव, रक्त कुछ पतला लाल रंगका और कुछ काला थक्का-थक्का ; ३। तीसरे महीने गर्भ-स्राव, ४। ऋतु बन्द होकर सड़ी गन्धभरा श्वेत-प्रदरका स्राव, ५। मासिक निर्दिष्ट ऋतु-कालके बीचमें रज:स्राव, इसके साथ ही कामोत्तेजना, ६। ऋतु खूब जल्दी जल्दी और परिमाणमें अधिक होता है, ७। जिन्हें बहुत थोडी उमरमें ही ऋतु-दर्शन हो गया है अथवा जिन्हें बहुत बार गर्भस्राव हुआ है, उनकी ऋतु बन्द होनेकी उमरमें बहुत ज्यादा रजस्राव ; ६। गर्भस्राव या असमयमें प्रसवके बाद डिम्बकोष या जरायुका प्रदाह।

ऋतुस्राव—ऋतु सम्बन्धी गडबडीमें रज स्रावके बाद, प्रसवके बाद या गर्भस्रावके बाद या गर्भस्रावका उपक्रम होनेपर बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव अगर होता हो—सैबाइना फायदा करता है। सैबाइनामें रक्त—रह रहकर निकलता है। अर्थात् अभी थोडासा रक्तस्राव हुआ और रुक गया, कुछ देर बाद फिर थोडा-सा रक्तस्राव होता है, हिलने-डोलनेपर रक्तस्रावका बढना, स्रावका रग गदला या काला थका थका अथवा कुछ पतला और कुछ काले रगका थक्का थक्का, इस तरहके रक्तस्रावके साथ तलपेटकी अस्थि (pubis) तक दर्द रहनेपर (कितनी ही बार केवल कमर या तलपेटमें दर्द रहनेपर भी) सैबाइना फायदा करता है। फेरममें—कुछ लाल रगका, कुछ जमे थक्के खून, इसके सिवा कुछ पानीकी तरह बिना किसी रगका भी रक्त रहता है, गदला और थका रक्त—साइक्लेमेन और केलि नाइटरमें है। गर्भस्रावके साथ कमरमें दर्द आरम्भ होकर योनिदेश या उरुतक अगर चला जाये और उसके साथ ही ऊपर बताये ढगका बहुत ज्यादा परिमाणमें रक्तस्राव होता रहे—तो सेबाइनासे बहुत ज्यादा फायदा होता है, बिना दर्दका बहुत ज्यादा परिमाणमें लाल रगका रक्तस्राव अगर बहुत दिनोतक स्थायी हो, तो इस रगके लक्षणमें कितनी ही जगह सैबाइना ३x, ३० शक्तिसे फायदा होता देखा जाता है। हैमामेलिस और ट्रिलियम देखिये।

गर्भ-स्राव—समयपर हो या असमयपर हो, प्रसव

या गर्भस्रावके बाद अधिक परिमाणमे रक्तस्राव होते रहनेपर और उस रक्तका रग चमकीला लाल रगका होनेपर, रक्त कुछ पतला— और कुछ जमा जमा थक्का और इसके साथ ही कमर और पेटमे दर्द रहनेपर—सैवाइना फायदा करता है। सैवाइनामे प्राय पहले ३ महीनेमे, ४ से ४॥ महीनेमे गर्भस्राव होता है (६ महीनेके बाद जिनको गर्भस्राव होता है, उनके लिये—सिकेलि, वाइवर्नम प्रभृति दवाएँ ज्यादा फायदा करती हैं)।

द्रष्टव्य—जिन प्रसूताओंको मृतवत्सा दोषकी वजहसे प्राय ही गर्भस्राव हो जाता है, उन्हें कोमल अपामार्ग गाछकी एक समूची सोर कमरमे बाँध रखनी चाहिये। सुना है, इससे गर्भस्राव की आशका दूर हो जाती है।

फूल अटकना—जरायुकी कमजोरीके कारण फूल अटक जानेपर या प्रत्येक बार दर्दके समय पतले स्रावके साथ ही साथ थक्का थक्का रक्त निकलनेपर—सैवाइना फायदा करता है। इसके द्वारा (moles) और फूलका टूटा हुआ अश भी निकल जाता है।

वात—प्रमेह या श्वेत प्रदरका स्राव बन्द होकर वात या डिम्बकोषकी कोई बीमारी होनेपर—सैवाइना फायदा करता है। अँगूठा और हाथकी कलाईमे वात होनेपर और उसके साथ ही उस प्रकारका रक्तस्राव और पुराना सन्धिवात और गठिया-वात, इसके साथ ही वात-गुटी (nodes) रहनेपर सैवाइना

फायदा करता है। इसका दर्द और तकलीफ ठण्डे प्रयोगसे घटती और गर्मीसे बढती है।

वृद्धि (aggravation)—रोग वाली जगह छूनेपर, सन्ध्यामे, रातमे, और सबेरे, गर्म घरमे, शरीर हिलानेपर, गरम से कसे या गरमीके प्रयोगसे।

ह्रास (amelioration)—स्थिर भावसे सोनेपर, ठण्डी और खुली हवामे, टहलनेपर।

बादकी दवा (follows well) आर्स, बेल, पल्स, रस, स्पाइजे, सल्फ।

सम्बन्ध—काण्डाइलोमेटा और साइकोसिससे पैदा हुई बीमारीमें थूजाके बाद—सैबाइना विशेष लाभ करता है।

क्रियानाशक (antidote)—पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति। फारमुला—३।

सेलिक्स नाइग्रा

(SALIX NIGRA)

(ताजी कलीसे तैयार होता है)। पु-जननेन्द्रिय पर इसकी प्रधान क्रिया होती है। सूजाक (Gonorrhœa) और शुक्रमेह

(Spermatorrhœa) इन दोनों बीमारियोंमे ही इसका अधि
व्यवहार होता है।

सूजाक—इस बीमारीकी नयी और पहली अवस्थ
हमलोग साधारणत' कैन्थरिस, कैनाबिस, मर्कुरियस, टेरिबि
वगैरह कई दवाओंका प्रयोग करते हैं। सूजाकका प्रधान उप
पेशावमें अल जानेकी तरह जलनका रहना, थोडा पेशाव, पेशाव
राहसे कभी खून निकलना, पतला या गाढा धातुका स्राव, वि
मुण्डका फूलना, दर्द, पेशावकी नलीमें दर्द, सुरसुरी, तकलीफ
वाला लिङ्गका कडापन (Chorde) प्रभृति इनमे आखीरवा
लक्षण—बहुत अधिक लिङ्गोद्गम (लिङ्गका कडापन) यह कैनावि
और कैन्थरिस दोनोंमे ही अधिक निर्दिष्ट है। यदि इन दोनोंसे
लक्षण न घटे—तो सैलिक्स नाइग्राका प्रयोग करें। सैलिक्स नाइग्र
शुक्रमेहकी बीमारीकी (पेशाव पाखानेके समय काँखने पर धं
निकल जाना) बढ़िया दवा है। अगर इस बीमारीका कारण हस
मैथुन (masturbation) हो तो सैलिक्स नाइग्रासे और
ज्यादा फायदा होता है। इसके अलावा अगर किसीकी शक्ति
घट जाये पर स्त्री-संसर्गकी इच्छा बहुत प्रबल रहे, तो इसके प्रये
से प्रबल अच्छा ह्रास होगा। कमरमें दर्द, इसी कारणसे जल्दी च
न सकना और अण्डकोषका दर्द भी इससे घटता है।

स्त्री-रोग—ऋतुके पहले और ऋतुके समय स्नायवि
दर्द, डिम्बकोषका दर्द, ऋतुस्रावके समय तकलीफ प्रभृतिमें
इससे फायदा होता है।

मुंह और आंखकी बीमारी—मुँह खासकर नाक की ठोरका लाल होना और फूलना, आँख लाल (blood shot) छूने और आँख हिलाने पर दर्द ।

सदृश—स्पर्मेटोरिया अर्थात शुक्रस्खलन—ट्रिब्युलस, टिरेन्ड्रिस और टर्नेरा देखिये ।

क्रम—१x शक्ति, १० से ३० बूद । फारमूला—३

सेम्बुकस नाइग्रा

(SAMBUCUS NIGRA)

(ताजे पत्ते और फूलसे मूल अर्क तैयार होता है)—यह दमा, बच्चोंका गला घरघराना और सर्दी खाँसीकी एक बढ़िया दवा है ।

दमा और खांसी—रातके समय रोगका बढना, अच्छी तरह सोये-सोये एकाएक बेहोशी आ जाना—बच्चा खाँसते खाँसते मानो लोट पड़ता है । साँस रुक जाना चाहती है, साँस लेनेके लिये घबराता है । ऐसा मालूम होता है, मानो अभी मर जायगा । जो हो, कुछ देर तक इस तरह करने बाद फिर सो जाता है, और फिर कुछ देर बाद उसी तरहकी तकलीफ देनेवाली खाँसी आने लगती है । दमाका खिंचाव और खुसखुसी खाँसीमें इसकी ३० शक्ति दो चार दिन तक व्यवहार करने पर बीमारी दब

जायगी और इस दद्रुका फायदा होते देखा गया है। बच्चोंकी नाक चिपक जाती है,इसीलिये साँस लेने छोड़ने और स्तन-दुग्ध खींचनेमें तकलीफ होती है। सर्दीमें नाक बन्द होकर मुहसे साँस लेने-छोड़ने-का लक्षण—एमोन कार्वकी तरह सैम्बुकसमें भी है। दमाके तेज खिचावके लिये एकोनाइट नैप—१x, कैनाबिस इण्डिका ϕ, लोबेलिया—ϕ, ब्लैटा-ओरियेण्ट—ϕ, एरालिया ये ही पांच श्रेष्ठ दवाएं है।

लैरिञ्जिसमस-स्ट्रिडिउलस—(कण्ठकी नली मुख की अकड़न, फाल्स-क्रूप)—इस बीमारीमें दम रुक जानेका भाव इत्यादि उपसर्ग आधी रातके बाद और तकियेसे सर उतारते ही बढ़ जाते हैं, हूपिङ्ग खाँसीकी तरह आक्षेपिक खाँसी, यह आधी रातके बाद और सर नीचा कर सोते ही बढ़ती है। (आर्सेनिक देखिये)

पसीना—नींद खुलते ही पसीना, नींदके समय शरीर सूखा, इस लक्षणमें सैम्बुकसका ही प्रयोग होता है। थूजामें नींद आते ही पसीना और जागने पर शरीर पहलेकी ही तरह सूखा रहता है, कोनियममें—दोनों आंखें बन्द करते ही पसीना आने लगता है। किसी बीमारीमें पसीनेका सिर्फ यही लक्षण देखकर दवाका प्रयोग करनेसे कितनी ही जटिल व्याधियाँ भी तुरन्त आरोग्य हो जाती है।

शोथ—मसानेके नये प्रदाहसे पैदा हुए बार बार पेशाब

का वेग होनेके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें पेशाब होता है और पेशाबमें बहुत गाढ़ी तली जमती है।

सैम्बुकस-कैनाडेन्सिस—यह शोथ रोगकी एक महौषधि है। इसका मूल अर्क चौथाईसे लेकर १ चायके चम्मच की मात्रामें दिनमें तीन बार सेवन कराना चाहिये।

वृद्धि (aggravation)—विश्रामके समय, निद्रितावस्थामें, रातके ७ बजेसे१ बजेके बीचमें, ठण्डी हवा लगने पर, भय, हर्ष, विषाद आदि मानसिक उद्वेगसे।

ह्रास (amelioration)—शय्यामें उठ बैठने, शरीर हिलाने और दबानेपर।

सम्बन्ध—इससे आर्सका दुष्परिणाम दूर होता है और डर जाने बाद अगर कोई तकलीफ पैदा हो जाये तो ओपियमके बाद सैम्बुकस ज्यादा फायदा करता है।

बादको दवा (follows well)—बेल, ड्रोसेरा, नक्स, रास, सिपि।

क्रिया-नाशक (antidote)—आर्स, कैम्फर।

क्रियाका स्थिति काल (duration)—१ दिन।

क्रम—φ,—३० शक्ति। फरमूला—१

सैंगुनेरिया कैनाडेन्सिस।

(SANGUINARIA CANADENSIS)

(ताजी सोरसे इसका मूल अर्क तैयार होता है)—य
शरीरकी दाहिनी ओरकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता है।

चरित्रगत लक्षण —

१। दाहिनी ओरका सर-दर्द, २। जी मिचलानेके साथ स
दर्द, फेफडेकी कई बीमारियाँ और खाँसी, ३। स्त्रियोंका ऋतु ब
होनेके समयकी कई बीमारियाँ, ४। नाक कान और जरायुक
अर्बुद, ५। वात इत्यादि।

सर-दर्द—सूर्योदयके बादसे ही सर-दर्द आरम्भ होक
दिनके दो पहरतक बहुत बढा रहता है, फिर दिनके ३ बजें
धीरे धीरे घटना आरम्भ होता है और शामको एकदम आराम ह
जाता है। रोगी तीसरे पहर सोता है, सोकर उठने बाद देखत
है, कि उसका सर-दर्द बिलकुल ही आराम हो गया है। कितन
ही बार बहुत अधिक मात्रामे पेशाब होकर भी यह सर-द
घटता है। सर-दर्द—माथेके पिछले भागमें (occiput) स
आरम्भ होकर माथेके ऊपरसे होता हुआ क्रमश. आँखके ऊप
आकर रहता है। सर-दर्दकी वजहसे रोगी रोशनीकी ओर देख
नहीं सकता, माथेमें टपक होती है, जी मिचलाया करता है औ
चमन हो जाता है। इसमे सोये रहनेपर सर-दर्द कुछ घटता है

सगुनेरियामें—दाहिनी ओरकी कनपटी तथा दाहिनी आँखके ऊपरकी ओरके इस तरहके सर-दर्दमें स्पाइजेलिया फायदा करता है।

वात—दाहिने हाथके ऊपरी भागमें (deltoid) वातके दर्दमें सैंगुनेरिया,—दाहिने कन्धेके दर्दमें—मैग्नेशिया-कार्ब ,—बायें कन्धेके दर्दमें—फेरम मेटालिकम फायदा करता है।

जी-मिचलाना—जी मिचलानेके साथ मुँहसे लगातार थूक या लार निकलती है, पित्तकी या खट्टी कै होती है, वमन या मिचली घटती नहीं है, पर कोई चीज खा लेनेपर घट जाती है। पाकस्थलीके जख्मके साथ पेटमें जलन करनेवाला दर्द। गर्भावस्थामें मिचली और वमनके साथ मुँहसे लगातार थूक या लारकी तरह पदार्थ निकलनेपर—सैंगुनेरिया अव्यर्थ दवा है। चीनी या शक्कर तीती मालूम होती है, कष्टके साथ किमिका वमन होता है।

खाँसी—रातमें एक तरहकी भयकर खाँसी आती है, इससे रोगी सो नहीं सकता। आराम प्राप्त करनेके लिये वह बैठता है, पर इससे भी खाँसी नहीं घटती, केवल डकार आने या नीचेसे वायु निकलनेपर कुछ घटती है (gastric origin) श्वासनलीका मुँह फूला, श्वास-कृच्छ्रता, साँसमें काठ चीरनेकी तरह आवाज, गला जकड़ जाना, सूखी खाँसी, ये सभी उपसर्ग सोनेपर बढ़ जाते हैं, इसीलिये रोगी रातभर बैठा रहता है। इसमें

भी सैंगुनेरिया फायदा करता है। अतिसारके साथ खाँसी और हृपिंङ्ग खाँसी और स्त्रियोंका रज-रोध या देरसे रज स्राव और ऋतुस्राव होना बन्द होनेकी उमरमें बहुत रज स्रावकी बीमारीके साथ खाँसी रहनेपर इससे फायदा होगा। अजीर्ण रोगके साथ अगर दमा हो तो भी यह फायदा करता है।

ऊपर बताये लक्षणोंकी खाँसीके सिवा—कई प्रकारकी ब्राङ्काइटिस या निमोनियाके बाद कितनी ही बार ऐसा देखा जाता है, कि प्रबल खाँसीके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमें सडी गन्धभरा पतला बलगम निकलता है, श्वास-प्रश्वासोंमें मुँहसे सडी गन्ध आती है, उस गन्धसे दूसरोंकी बात तो दूर रही, रोगीको स्वय भी घृणा होती है, कोई चीज खा-पी नहीं सकता, उसके साथ कुछ-न-कुछ ज्वर भी रहता है, साधारण मनुष्य समझते हैं, कि क्षय (थाइसिस) हो गया है, कलेजेमें जलन होती है, पेटसे छातीतक एक तरहकी गरम हवा चढती है,—इसमें सैंगुनेरिया कैनाडेन्सिस १x—६x शक्तिसे ज्यादा फायदा होता है। कैप्सिकम नामक दवामें भी इस तरहकी सडी गन्धभरा बलगम निकलता है।

वृद्धि (aggravation)—रोगवाली जगह हिलाने, करवट बदलने, रातमें, उच्छ्वाससे।

ह्रास (amelioration)—स्थिर भावसे सोये रहनेपर, जोरसे दबानेपर, बायीं करवट सोनेपर, नींदके अन्तमें, निर्मल हवामें।

सम्बन्ध—सर-दर्दमें—बेल, आइरिस, मिलिलोटके साथ, रज लोपके समयकी बीमारीमें—लाइको और सलफरके साथ,

ब्राङ्काइटिस या निमोनियामें—कैलि-फास, सल्फ और वेरेट्रम-विरिडिके साथ सैंगुनेरियाका घनिष्ट सम्बन्ध है। यह अफीमके नशाका प्रतिविष है और बेलेडोनाके बाद इसकी बहुत ही उत्तम क्रिया होती है।

क्रम—३०—२००, कितने ही स्थानोंमे निम्नक्रम—१,—३ री शक्ति।

फारमुला—जर्मनो ४। अमेरिकन—३।

सैंगुनेरिया नाइट्रिका।

(SANGUINARINA NITRICA)

नयी और पुरानी सर्दी, नया फेरिंजाइटिस, गल्नलीमें और स्टर्नमके पीछे दर्द, इन्फ्लुएंजा, माथे और आँखमे दर्द, आँखसे पानी गिरना, नाकका चिपक जाना इत्यादि कई बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है।

पालिपस—नाकका पालिपस (रक्त-अर्बुद) टार्बिनेटस-का बढना—सैंगुनेरिया नाइट्रेट इस रोगकी बढिया दवा है। बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह बलगम निकलना, नाकके भीतर जलन या नाक सूखी, बहुत थोडा बलगम निकलना, नाकके भीतर पपडी जमती है, उसको निकालने पर खून निकलता

है, छींक, नाकके भीतर जखमकी तरह दर्द, पानीकी तरह सर्दी निकलनेके साथ, नाककी जडमें दवाव मालूम होना प्रभृति लक्षणो में यह फायदा करता है। ५।७ मिनटोंके अन्तरसे छींकें, दाहिनी नाकसे लगातार पानी गिरता है।

स्वर यन्त्रमें जलन और जखमकी तरह दर्द, गला फँसना, स्टर्नम अस्थि (वक्षोस्थि) अर्थात् छातीकी हड्डीके पीछे जहाँ वायु नली दो भागोंमें बँट गयी है, वहाँ भयानक दर्दके साथ आक्षेपिक खाँसी, खाँसनेपर दर्दका बहुत बढ जाना, गाढ़ा, पीला या खून मिला बलगम निकलना, दाहिनी ओरके तालुमूलमें दर्द, निगलनेमे कष्ट, ये लक्षण भी इस दवाके अन्तर्गत हैं। सवेरे शय्यासे उठकर जरा इधर उधर घूमनेपर ही खाँसी आने लगती है।

सदृश—परम, ट्राइफाइलम, सोरिनम, कैलिबाइ-क्रोम।

क्रम—३x—६x शक्ति। इसका विचूर्ण और भीतरी प्रयोग होता है, नाकके पालिपसमें—१x शक्तिका २० ग्रेन, १ आउन्स ग्लिसरिनमें मिलाकर लगाना चाहिये।

सारासिनिया पर्पुरिया

(SARRACENIA PURPUREA)

(एक तरहके छोटे गाछसे इसका टिंचर तैयार होता है)—हड्डीमें दर्द, हृत्पिण्डकी क्रिया अनियमित, माथेमें रक्तकी अधिकता,

पाकस्थलीकी गडबडी प्रभृति वीमारियोंमे इसका व्यवहार होने पर भी, यह चेचक रोगमे भी अत्यन्त आदरके साथ व्यवहृत होता है।

अस्थिका दर्द—घुटनेके हाडमें और उरु-सन्धि मे (Knee & hip joint), चोट लगनेकी तरह दर्द, आखके चारो ओर की हड्डीमें दर्द, प्रत्यङ्गोकी कमजोरी प्रभृति इस दवाके प्रधान लक्षण हैं।

पाकस्थलीकी बीमारी—पेटमें दर्दके साथ बहुत ज्यादा परिमाणमे वमन होता है—यह इस दवाका प्रधान लक्षण है। रोगीको हमेशा ही भूख लगी रहती है, यहा तक कि खाकर उठने पर भी उसी समय खाना पडता है और भूख लगी ही रहती है, खानेके बाद नींद आती है। (आयोडमकी भूखकी तरह)।

चेचककी बीमारी—इससे फायदा देखकर यदि सारसिनियाको इस बीमारीकी एक पेटेण्ट दवा भी कहा जाये तो कोई अत्युक्ति न होगी। आरम्भसे लेकर अन्ततक, चेचक रोगकी सभी अवस्थाओंमें इसका प्रयोग किया जा सकता है। पहली अवस्थामें इसका प्रयोग होनेपर गोटियां सब बाहर निकल पडती हैं, गोटियाँ पकती नहीं हैं, शरीर पर गड्हे नहीं पडते, तकलीफ और दर्द घटता है, और थोडे ही दिनोंमे रोगी आरोग्य हो जाता है। डा० बोरिक कहते हैं—"Sarracenia, aborts the disease, arrests pustulation" कुछ देर बाद इसका प्रयोग होनेपर भी

निकले, पहले ही सर्सापैरिला, उच्च शक्ति (२०० वाँ) दो एक मात्राका प्रयोग करें। गर्मीके दिनोंके छोटे-छोटे फोडे जब आर्निका या आर्कटियमसे न दबें, उस समय सार्सापैरिलासे फायदा होगा। हाथ-पैर फटे, शरीरकी त्वचा सिकुडकर उसमे सलवट पडना, नसोंका सिकुडकर छोटा हो जाना। नसमे घाव, जलन, अण्ड-कोषमे, लिंगके मुँहपर और लिंगके अगले भागकी त्वचामे बहुत खुजली प्रभृतिकी भी यह उत्कृष्ट दवा है। रातमें, सोनेके समय और सवेरे सारे शरीरमे खुजली होती है।

सुखण्डी—पेट्रोलेनम अध्याय देखिये।

बादकी दवा (follows well)—बेल, हिपर, मर्क, फास, सल्फ।

क्रियानाशक (antidote)—बेल, मार्क, सिपि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३५ दिन।

फारमुला—४।

सिला मारिटिमा।

(SCILLA MARITIMA)

इसका दूसरा नाम—स्कुइला (Squilla) भी है, समुद्री पेयाजसे इसका मूल अर्क तैयार होता है। सर्दी खाँसीके सिवा

य और किसी प्रकारकी बीमारीमें इसकी उतनी ज्यादा जरूरत हीं पडती।

खाँसी—खाँसनेके समय छींक, २। खाँसीके समय आँखसे पानी गिरना, ३। खाँसीकी धमकसे धोतीमें पेशाब कर ना। ये तीन इस दवाके प्रधान चरित्रगत लक्षण हैं। सिलाकी खाँसी—अलग, घरघराहटके साथ, इसमें सवेरेके वक्त जो खाँसी आती है, वह घरघराहटके साथ होती है, पर ढीली (loose) खाँसी होनेपर भी रोगी खाँसता खाँसता बहुत ही थक जाता है। सन्ध्याके समयकी खाँसी सूखी (dry) होनेपर भी रोगी उससे बहुत सुस्त हो जाता है। सिला—प्लुरिसि रोगमें भी फायदा करता है।

सदृश—बार्वेस्कम, सेनेगा,, सलफर, ड्रोसेरा, मार्टस-कम्यु-निस।

क्रम—३—३०—सौ, मम, शक्ति। फारमुला—३।

सिकेलि कोर्नुटम।

(SECALE CORNUTUM)

(एलोपैथिक चिकित्सामें यह आर्गोटिनके नामसे विख्यात है)—कमजोर, दुबली पतली स्त्रियोंकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है।

चरित्रगत लक्षण '—

१। जरायुसे रक्तस्राव, जरायु और दाहिने डिम्बकोषमे रक्त-सचयकी वजहसे दर्द, २। ऋतु अनियमित, रग काला, रक्त पतला और अधिक परिमाणमे निकलता है। ३। एक ऋतुकालसे लेकर दूसरे ऋतुकालतक प्राय लगातार पानीकी तरह रक्त निकलना, ४। प्रत्येक तीसरे महीने गर्भस्राव, ५। प्रसवका दर्द धीमा,दबता हुआ, दर्दका जोर न रहनेकी वजहसे सन्तान होनेमे देर होती है, ६। प्रसवके बादका स्राव (lochia) बदबूदार, ७। प्रसवके बादका दर्द बहुत ही कष्टकर, ८। रज स्राव बन्द होकर जरायुका प्रदाह, ९। रक्तस्रावके साथ ही साथ हाथ-पैर ठण्डे, ठण्डा पसीना, नाडी क्षीण, हाथ-पैरमे ऐठन, १०। हैजा या बच्चोंके हैजामे—दस्त, कै, बहुत प्यास, आँख मुँहका धस जाना, नाडी तेज या नाड़ीका लोप हो जाना, मलमे बुरी सडी गन्ध, पेटमे दर्द थोडा रहना या बिलकुल ही न रहना, ११। ऐठन, उसमे अगुलियाँ अलग अलग हो पडती है (मुट्ठी बाँधना—कूप्रम, कूप्रम-से फायदा न होनेपर—सिकेलि), १२। हाथ, पैर और शरीर ठण्डा, दस्त कै और पेशाब बन्द, शरीरमे दाह, बेचैनी, शरीरपर क्षणभर भी कपडा न रख सकना, नगे पडे रहना, १३। स्त्रियोंको ऋतुके समयका हैजा; १४। न जाने जी कैसा करता है, १५। समूचे शरीरमें जलन, ऐसा मालूम होता है, मानो शरीरपर आगकी चिनगारियाँ गिर गयी है; १६। अतिसारमें—भूरे रगके पानीकी तरह सडी दुर्गन्धभरे दस्त बडे वेगसे आते हैं, पेटमें

नहीं रहता, अनजानमें दस्त, मलद्वारके मुँहमें दरार-सी हुई ती है। (फिसर, फास), १७। मूत्राशयमें पेशाव रोकनेकी शक्ति न रहना, १८। गैंग्रीन ; १९। प्रसवके बाद स्तनका दूध लोप जाना।

सिकेलिकी धातु—रोगिनीका शरीर देखनेमें बहुत दुबला लूम होता है, मानो हड्डी हड्डी हो गयी है, आँख और गाल मानो देमें धस गये हैं, मिजाज बहुत चिड़चिड़ा, शरीर म्लान, उजला (रक्तशून्य, हाथ-पैरोंमें हमेशा ही झुनझुनी और चुनचुनाहट ा करती है, लगातार खट्टी चीजें पीनेकी इच्छा बनी रहती है, वाभाविक भूख, शरीरमें हमेशा जलन हुआ करती है, शरीरपर डा बिलकुल ही रखना नहीं चाहती। हमेशा हवा खाते रहनेकी ा रहती है, शरीरकी त्वचा ठण्डी पर भीतर जलन, बीच-गमें यानी कलेजा जकड़ जाता है, जी घबड़ाने लगता है, थोड़ेमें बेहोशी आ जाती है, मोटी ताजी स्त्रियोंके लिये यह उतना फदायक नहीं होता (पैरमें भीषण जलन—सैनिस्युला)।

प्रसवका दर्द—अधिक मात्रामें आर्गटका सेवन करनेपर ायुका सकोचन जोर जोरसे होता है, इसीलिये, एलोपैथीमें ायुका रक्तस्राव बन्द करनेके वास्ते और प्रसवकी क्रिया जल्द कि लिये इसका प्रयोग होता है। ऐसे व्यवहारका नतीजा ो कभी बिलकुल ही उलटा होता है अर्थात् उससे दर्द बढ़कर ा इतने जोरसे निकलता है, कि उससे जरायुतक बाहर निकल ता है, इसके अलावा जरायुके जोर जोरसे सकोचनके कारण

हृत्पिण्ड प्रदेशतक दवाव पडकर रोगिनीका जीवन सकटमे पड जा सकता है। इन सब कारणोंसे पुराने ज्ञानी एलोपैथ चिकित्सकगण, इस इच्छासे अब इसका व्यवहार नहीं करते, वे प्रसवके बाद अधिक रक्तस्राव होना रोकनेके लिये ही इसका व्यवहार करते हैं। जरायु-मुख जबतक पूरी तरह न खुल जाये, तबतक कभी आर्गटका व्यवहार न करना चाहिये। प्रसवमे देर होनेपर—होमियोपैथिक मात्रामे—इसकी उच्च शक्ति २०० या उससे भी अधिक शक्तिका प्रयोग करनेपर कितनी ही बार बहुत अधिक फायदा होता है। डा० नैश कहते हैं—मै प्राय ४० वर्षोंसे होमियोपैथिक चिकित्सा कर रहा हूँ, परन्तु कभी भी स्थूलमात्रामें दवाका व्यवहार न करना पड़ा। सिकेलिका प्रसवका दर्द बहुत ही क्षीण और धीरे धीरे होता है, कभी कभी दर्द एकदम गायब हो जाता है, या कम पड जाता है। इसमें जोरका दर्द बिलकुल ही नहीं होता, जरायु कोमल,थुलथुला, दर्द कमरकी ओरसे उठकर पेटमे आकर स्थायी हो जाता है। प्रसवका दर्द बहुत देरसे हो रहा है, पर उससे न तो जरायुका मुँह ही खुलता है और न सन्तान ही आगे बढ़ती है—ये सभी सिकेलि प्रयोगके खास लक्षण हैं। सिकेलिका प्रयोग करनेपर फूल सहजमें ही निकल आता है, यह प्रसवके बादके दर्दकी भी एक बढिया दवा है। (अगर यहाँ शक्तिकृत दवासे फायदा न हो तो—φ, १ से ४।५ बूँद मात्रामें प्रत्येक आधा या एक घण्टेका अन्तर देकर देना चाहिये पर इसे प्रत्येक सवि-

राम दर्दके बाद प्रयोग करना चाहिये । कालोफाइलम—१x शक्ति भी फायदा करती है ।)

अभिज्ञताका परिणाम—प्रसवके बादका दर्द—यह दर्द सन्तान प्रसव हो जानेके बाद होता है, दर्द रह रहकर होता है । प्रसवके बाद फूलका टूटा हुआ अंश, खूनके थक्के या कोई दूसरा पदार्थ भी अगर जरायुमें रह जाये तो प्रकृति उसे निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करती है । उसमे ठीक प्रसवका दर्द या प्रसवके दर्दकी अपेक्षा भी एक तरहका असह्य दर्द होता है, उस दर्दकी धमकसे प्रसूता रो देती है । इसमे सिकेलि मूल अर्क—मदर-टिंचर उक्त नियमसे व्यवहारकर मैं कभी भी विफल नहीं हुआ हूँ । आर्निका, वाइवर्नम प्रभृति इसकी और भी बहुत-सी दवाएँ हैं, पर सम्भवत: सिकेलि मदर-टिंचरके मुकाबलेकी प्राय: कोई भी दवा ही नहीं मिलती । प्रसवके बाद या गर्भस्रावके बाद बहुत ज्यादा रक्तस्राव होते रहनेपर—मदर-टिंचर प्रति मात्रा ५ से १५ बूँदतक प्रति २ घण्टे-का अन्तर देकर देना चाहिये ।

सावधानता—डा० एलेन कहते हैं—प्रसवके दर्दके समय या जरायुका रक्तस्राव रोकनेके लिये सिकेलि बहुत सोच-विचारकर और सावधानतासे व्यवहार करना पडता है , क्योंकि यदि प्रसूता-को एल्बूमिनुरियाकी बीमारी अर्थात् पेशाबमें ज्यादा मात्रामें एल्बु-मेन रहे, तो अकडन या खींचन (एक्लैम्सिया) होकर जीवनका संशय हो जायगा । इस अवस्थामें आर्गट अर्थात् सिकेलिका यदि

अधिक मात्रामे और बार बार प्रयोग होता है, तो पियोरपरल मेट्राइटिस अर्थात् जरायु-प्रदाह रोग पैदा हो जाता है।

एक दूसरा उपदेश—जल्दी प्रसवके लिये विना समझे-बूझे एकाएक सिकेलिका प्रयोग न करे, धात्रीसे परीक्षा कराने बाद अगर यह मालूम हो कि जरायुका मुँह खुल गया है पर दर्दका जोर न रहनेके कारण सन्तानका प्रसव नहीं होता, उस समय सिकेलि—२०० शक्तिकी २।१ पुडिया आध घण्टेके अन्तरसे प्रयोग करनेपर दर्दका जोर बढ़ जायगा और प्रसव भी तुरन्त हो जायगा। अगर जरायुका मुँह न खुला हो तो इसका प्रयोग मना है, इससे नुक्सान हो सकता है।

प्रसवके बादका क्लेद-स्राव—यदि इस स्रावका रंग हरा हो, पीवकी तरह हो, और उसमें बहुत बदबू हो या यह क्लेद-स्राव बन्द होकर जरायुमें दर्द, जरायुका आवरण प्रदाह, इत्यादि होकर ज्वर आता हो (इसको सूतिका-ज्वर कहते हैं, लक्षण—बेलेडोना अध्यायमे देखिये), अथवा प्रसवके समयका अटका हुआ रक्त या फूल इत्यादि न निकलकर यदि भीतर सड जाये और पीव-ज्वर हो जाये, इसके साथ ही शरीर ठण्डा, बदन-पर वस्त्र रखनेमें तकलीफ, पेशाब बन्द इत्यादि लक्षण रहें, तो—सिकेलि फायदा करता है।

जरायुसे रक्तस्राव—सिकेलिका रक्तस्राव पैसिव (passive) अर्थात् शरीरसे दूषित रक्तस्राव होता है, इसीलिये, देखा जाता है, कि इसका रक्त—काला, गदला और बहुत बदबू-

दार होता है। एक ऋतुकालसे बादवाले ऋतुकालतक लगातार रक्तस्राव हुआ करता है, स्राव कभी थोडा कभी कभी अधिक भी होता है, रक्तस्रावकी वजहसे रोगिनी क्रमश कमजोर हो पडती है, बेहोशकी तरह हो जाती है, सारा शरीर काँपा करता है, हाथ-पैरोंमे पे ठन होती है, शरीरमे सुरसुरी और झुनझुनी हुआ करती है, बदन ठगडा पर भीतर जलन हुआ करती है, बदनपर कपडा बिलकुल ही नहीं रख सकती। पल्सेटिला, सैवाइना, इपिकाक इत्यादि और भी कई रक्तस्रावकी दवाएँ हैं। इनका प्रभेद निर्णय करनेके लिये उनके अध्याय पढे और एक वार हैमामेलिस अध्याय भी देखें।

हैजा—इस प्राणघातक बीमारीकी पहली अवस्थामे इस दवाकी उतनी जरूरत नहीं पडती, रोग जब बढ जाये, लगातार दस्त कै होकर शिराओंमें रक्त जमकर पे ठन पैदा हो जाये, और कूप्रमके लक्षणके पे ठनमे कूप्रमसे कोई फायदा न हो, उसी समय इसकी जरूरत पडती है। हैजाका सिकेलिका लक्षण—मलका रग चावलके धोवनकी तरह या एकदम विना किसी रगका कलके पानीकी तरह, बदनमे बहुत जलन, शरीर बरफकी तरह ठण्डा, पर बदनपर क्षणभरके लिये भी वस्त्र नहीं रख सकता आँखें धँस जाती हैं, शरीर सिकुड जाता है, अदम्य पिपासा—लगातार जल्दी जल्दी ठण्डा पानी पीना चाहता है, वमन होता है, सिकेलिमे—वमनकी अपेक्षा ओकाई और मिचली ज्यादा रहती है। दस्त, के का परिमाण अधिक रहता है और वह खूब जोरसे निक-

लता है, पर पेटमे दर्द उतना ज्यादा नहीं रहता, नाडी पहले सूतकी तरह क्षीण होकर क्रमश एकदम लोप हो जाती है। हैजाकी इस अवस्थामें सिकेलिकी समकक्षकी—वेरेट्रम, आर्सेनिक, कूप्रम, विस्मथ इत्यादि और भी कई दवाएं हैं, उनका प्रभेद जान रखना उचित है—

वेरेट्रम-एल्बम—इसका दस्त चावलके धोवन या सडे कोहडेकी तरह टुकडे टुकडे और परिमाणमे सिकेलिकी तरह बहुत अधिक होता है (सिकेलिमें कितनी ही बार वर्णहीन कलके पानीकी तरह दस्त होता है, वेरेट्रममें ऐसा नहीं होता), दस्त, के दोनों ही परिमाणमे बहुत अधिक होते हैं, पर वेरेट्रममे वमनकी अपेक्षा दस्तका भाग ही अधिक रहता है, दस्तके बाद बहुत ही अधिक कमजोरी रहती है, कपालमें ठण्डा पसीना होता है (सिकेलिमें कपालमे ठण्डा पसीना नहीं होता), दस्तके साथ ही पेटमें बहुत दर्द, पेटमे कनकनी और पेटमे मरोडका दर्द रहता है, दस्त कैके साथ प्यास, और छटपटी क्रमश बढ़ जाती है, वेरेट्रममे—ऐंठन और नाडी लोप हो जाती है। वेरेट्रम और सिकेलिमें सहजमे ही वमन होता है।

१। जहाँ दस्त, के दोनों ही अधिक और बदनका चमडा सिकुड जाता है, ऐंठन होती है, वहाँ—वेरेट्रम, २। जहाँ वमन बहुत होता है, दस्त कम होता है, ऐंठन अधिक होती है (ऐंठनमें मुट्ठी बाँध लेता है)—वहाँ कूप्रम, ३। जहाँ दस्त और ऐंठन

अधिक रहती है, वहाँ सिकेलि, पेठनमें सिकेलिमें हाथ पेरकी अगुलियाँ अलग अलग हो पडती है।

आर्सेनिक—यह भी हिमांग अवस्थाकी दवा है और हैजाकी बढी हुई अवस्थामें फायदा करता है। इसमें तेज प्यास और छटपटी रहती है, शरीरपर कपडा रखता है, कितनी ही बार ऐसा भी दिखाई देता है, कि कुछ देरके लिये रोगी अपने शरीरपर बिलकुल ही वस्त्र नहीं रखता, पर उस समय यदि कोई उसे कुछ ओढा देता है, तो ओढे रहता है, अगर ताकत रहती है तो स्वय ही खींचकर कपडा ओढ लेता है (सिकेलिमें क्षणभरके लिये भी शरीरपर कपडा नहीं रखता)। आर्सेनिकमें—गरम प्रयोगसे रोग कुछ घटता है, इसीलिये शरीरमें ठण्डा पानी लगनेपर या शरीरसे कपडा हट जानेपर बहुत तकलीफ होती है, और इसीलिये वह शरीरपर वस्त्र खींच लेता है, प्यास लगनेपर जल्दी जल्दी पानी पीना चाहता है, पर पीता थोडा थोडा पानी है, पानी पीते ही कै हो जाती है, पेटका दर्द और सभी उपसर्ग बढ जाते हैं, आर्सेनिकमें—पेठन कम और वमनके साथ ओकाई, मिचली बहुत अधिक रहती है।

कुप्रम—इसमें दस्त कम और वमन अधिक रहता है। दस्त केके साथ पेटका दर्द और पेठन बहुत अधिक रहती है। इसकी पेठनमें—रोगीका अगूठा मुट्ठीमें चला जाता है (सिकेलिमें अगुली अलग अलग हो पडती है, अगर फाँक फाँक नहीं रहती, तो भी फायदा होता है), बहुत प्यास, पानी पीनेपर थोडी देरके

लिये घट जाया करता है। वमनके पहले पेटका दर्द बढ़ जाता है।

विस्मथ—दस्तके साथ पेटमे दर्दका नाम भी नहीं रहता, इसमे ओकाई और मिचली बहुत अधिक रहती है, पानी पीनेपर पाकस्थलीमे पानी पहुँचनेके साथ ही तुरन्त वमन हो जाता है, पर कुछ खानेपर खायी हुई चीज बल्कि पेटमे कुछ भी नहीं रहती, पेठन बिलकुल नहीं रहती और रोगीका शरीर ठण्डा नहीं पडता, शरीर भरपूर गरम रहता है, आर्सेनिकमे—हिमाग हो जाता है।

एण्टिम-टार्ट—यह दवा भी हैजामे उपयोगी है (एण्टिम अध्याय देखिये।

सम्बन्ध—डा० हेरिङ्ग कहते है—क्षीण प्रसवके दर्दमे या प्रसवके बादके रक्तस्रावमे आर्गटकी अपेक्षा सिनामोनम (cinamonum) ϕ,—३x शक्ति श्रेष्ठ है। यह प्रसवका वेग बढ़ना और बहुत ज्यादा रक्तस्राव होना रोकता है, आर्गट किसी भी अवस्थामें विषमय क्रम उत्पन्न कर सकता है। मारात्मक विसूचिकामें, सिकेलि कोलचिकमके सदृश है, आर्सेनिक भी इसके सदृश है, पर सिकेलिमे—उत्तापसे रोग बढता है और आर्सेनिकमे उत्तापसे रोग घट जाता है। सिकेलिके बाद—सिङ्कोना लाभदायक दवा है।

क्रिया नाशक (antidote)—कैम्फर, ओपि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—ϕ,—२०० शक्ति। फारमुला—२।

सेलिनियम ।

(SELENIUM)

(एक तरहका धातु, विचूर्णके आकारमें दवा तैयार होती है)
लेरिङ्क्स और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। साधारण दुर्बलता ही इसका विशेष लक्षण है। इसका रोगी थोडा भी शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेपर भी कमजोर और क्लान्त हो पडता है, इसीलिये टायफाइड आदि किसी भी तरहकी बलक्षय करनेवाली बीमारीके बाद इसका व्यवहार होनेपर शीघ्र ही शरीरमें बल ला देता हैं। रोगीको धूप या गरमी बिलकुल ही सहन नहीं होती, इसीलिये, गरमीके दिनोंकी कमजोरी और दूसरे दूसरे उपसर्ग बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं। डा० हेरिङ्ग कहते हैं—इसका रोगी—क्या गरमी, क्या जाड़ा, क्या बरसात, किसी भी समय भी झोंककी हवा या अँधड पानी सहन नहीं कर सकता। सेलिनियम—बुढापेकी बीमारीमें और गोरे रोगीके लिये ज्यादा फायदेमन्द है।

नीचे लिखी कई बीमारियोंमें सेलिनियमके व्यवहारसे बहुत फायदा होता है —

केश झड़ना—कंघीसे केश झाडनेके समय माथेके केश झड जाते हैं। माथेकी चाँदीमें खल्वाट पड जाता है, वहाँकी त्वचा चमकने लगती हैं। ज्वर या किसी भी कमजोर करनेवाली

बीमारीको भोगनेके वाद अगर सरके केश झडते हो तो इससे फायदा होगा। भौं, दाढ़ी और विटप देशके केश झड जाते हैं।

सर-दर्द—स्नायविक या स्नायविक सर-दर्दमें, वायें आँखके ऊपरी भागमें अधिक दर्द होता है। धूपसे, तेज गन्धसे, चाय पीनेपर, किसी तरहको खट्टी चीज पीनेपर, सरका दर्द वढ जाता है। शराबियोका शरावका नशा छूट जानेपर सर-दर्द होता है, मिजाज खराव हो जाता है, इसीलिये, टानिकके रूपमें खुराक उतारनेके लिये, वे फिर थोडी-सी शराव पीना चाहते हैं। माथा ऊँचा करनेपर और खडे होनेपर सरमे चक्कर आ जाता है।

शुक्रपतन—नींदमे, सपनेमे, चलने-फिरने या पेशाव-पाखानेके वाद, अनजानमे थोड़ा थोडा वीर्य निकला करता है, रोगी इससे क्रमश कमजोर हो पडता है, अग-प्रत्यंग धीरे धीरे क्षीण हो जाते है, आँख मुँह धस जाते हैं, अन्तमे ध्वजभग हो जाता है, वीर्य पतला पड जाता है, उसमे किसी तरहकी गन्ध नहीं रहती, लिङ्गमे वहुत धीरे धीरे और वहुत कम कडापन आता है।

स्वर-यंत्रका पक्षाघात—गाने या वक्तृता देनेके वाद गला फस जाता है (अर्जेण्टम, कास्टिकम), गाना या वक्तृता आरम्भ करनेके पहले ही समझता है, कि मानो गलेमे गोंदकी तरह वहुत-सा श्लेष्मा अडा हुआ है, इसीलिये वार-वार गला खखारकर साफ करता है और उसे निकाल फेंकनेकी चेष्टा करता है।

लैरिञ्जियल थाइसिस—गलेका स्वर रुक जाता है, खाँसीके साथ खून निकलता है। सवेरेके बाद भयकर आक्षेपिक खाँसी आती है।

सम्बन्ध—आर्जेण्टमेट, कास्टिकम, फास, स्टैनम।

बादकी दवा (follows well)—कैल्केरिया, मर्कुरियस, नक्स, सिपि।

क्रियानाशक—(antidote) इग्ने, पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४० दिन।

क्रम—३—६ शक्ति। फार्मुला—७।

सिनिसियो आरियस।

(SENECIO AUREUS)

(खिली हुई अवस्थामें, एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार होता है)—इसके उग्र वीर्य औषधका नाम है—सिनिसिन। स्त्री जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। मूत्र यन्त्र आदिपर भी इसकी क्रिया प्रकट होती है।

पेशाबकी बीमारी—प्रोस्टेट-ग्रन्थिका बढना, इसी वजहसे पेशाब करनेके समय भयानक यन्त्रणा और कष्ट (सैबाल-सिरूलेटा), गुर्देमें दर्दके साथ बार-बार पेशाब, मूत्रनलीमें

उत्तेजना और प्रदाहकी वजहसे—थोड़ा पेशाब, पेशाबमें रक्त, श्लेष्मा, वेग, कूथन, बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा, रेनैल कालिक (दर्द-गुर्दा), स्पर्मेटिक कार्डमें (शुक्र-रज्जुमें) दर्द, यह अण्डकोषतक फैल जाता है। क्रानिक सिस्टाइटिस (मसानेका पुराना प्रदाह)।

खाँसी—ऋतु बन्द होकर खाँसी, खाँसीके साथ रक्त (हैमामेलिस, मिलिफोलियम और फास्फोरस अध्याय देखिये)। इसमें जब ऋतुस्राव बन्द हो जाता है, तभी खाँसी बढ़ती है, स्राव आरम्भ होते ही खाँसी घट जाती है।

उदरकी बीमारी—नाभीके चारो ओर दर्द, यह समूचे पेटमें फैल जाता है। खुलासा दस्त आनेपर तकलीफ घट जाती है। पानीकी तरह पतले दस्तके साथ कड़ापन। कभी कभी रक्तमाशयकी तरह कूथन और वेगके साथ खूनके दस्त आते हैं। कालिकका दर्द—कुकडी मारकर—पैर सिकोड़कर पडे रहनेपर कम हो जाता है।

ऋतुस्राव—ऋतुकी गड़बड़ीकी वजहसे होनेवाली किसी भी बीमारीमें अमेरिकामें घरेलू दवाके रूपमें इसका व्यवहार होता है। बाधक, ऋतुबन्द, अतिरज, अनियमित समयपर ऋतुस्राव होना और ऋतुस्राव आरम्भ होनेके पहले छाती, गला और मूत्राशयका प्रदाह प्रभृति इसके विशेष लक्षण हैं। (हैमामेलिस अध्याय देखिये)।

सदृश—प्लेट्रिस, फालोफाइलम, सिपिया प्रभृति ।

क्रम—ϕ—२ री शक्ति, Senecin—१x ।

फारमुला—३ ।

सेनेगा ।

(SENEGA)

(सेनेगा रूट नामके एक तरहके गुल्मको सुखाकर उसीसे टिंचर तैयार होता है)—सेनेका इण्डियन लोग इस वृक्षको साँप काटनेके (Rattle snake bite) दवाके रूपमें व्यवहार करते हैं। डा० जान टैनेट, नामक एक रूकाचने १८७४ ईस्वीमे न्यूयार्क स्टेटमें भ्रमण करते समय इस दवाका आविष्कार किया था। श्वासयन्त्रकी, आँखोंकी और पेशाबकी बीमारीमें ही इसका अधिक व्यवहार होता है। इसमें आँख और नाकके भीतर मिर्चा पीसकर लगा देनेकी तरह जलन होती है।

श्वास-यंत्रकी बीमारी—सेनेगा—श्वासनली की श्लैष्मिक झिल्लीके ऊपर अपनी क्रिया प्रकट करता है, इससे—श्लेष्मा, बलगम सहजमें ही निकल जाता है, इसीलिये यह नया और पुरानी ब्राङ्काइटिसमें भी फायदा करता है। किसी किसीका कथन है, कि यह वृद्धोंकी फेफड़ेकी बीमारीमें ज्यादा फायदा करता

है। अगर पुरानी ब्राङ्काइटिस हर बरस जाडेके दिनोंमे बढ जाती हो, तो इससे फायदा होता है।

स्वरयंलकी बीमारीमें—गाने या जोरसे बात करनेके बाद गला फस जाता है, स्वरभग हो जाता है। गलेमें बलगम जमा रहता है, उससे अच्छी तरह बोल नहीं सकता, जोरसे पढ़नेके कारण एकाएक गला फस लाता है, स्वरयत्र (vocal cord) का आंशिक पक्षाघात।

ब्राङ्काइटिसकी बीमारीमें—श्वासनली मे अधिक परिमाणमे श्लेष्मा जमा रहा करता है, पर सहजमें बलगम नहीं निकलता, बहुत कुछ चेष्टा करने बाद बडे कष्टसे बलगम निकलता है। श्वासमे तकलीफ और छातीमे दर्द होता है, इसमें कलेजे मे इतना अधिक दर्द होता है, कि छींकने, खाँसने, हाथसे थोडा भी दबाने—यहाँतक कि हाथ लगते ही भयानक कष्ट होता है। (ब्रायोनियाका दर्द हिलने डोलनेपर बढनेपर भी दबानेपर दर्द घटता है)। लैरिञ्जियल हो या ब्राङ्कियल हो, सेनेगामें—सवेरे, सध्यामे, रातमे, भोजनके पहले, दाहिनी करवट दबाकर सोनेपर और बिछावनकी गरमीसे उपसर्ग बढ़ जाते हैं।

फेफडेमे रक्तसचय, सूजन, इसके साथ ही बहुत अधिक श्वासकष्ट, दाहिनी ओरका निमोनिया, कलेजेमें घरघर शब्द और सुई गडनेकी तरह बेतरह दर्द, उसका खाँसने और जोरसे साँस लेनेपर बढना इत्यादि भी—सेनेगाके प्रधान लक्षण हैं।

प्लुरिसि—फुसफुस वेस्टमें पानी इकट्ठा होनेपर और उसके साथ ही दर्द और तकलीफ रहनेपर—ब्रायोनिया और ब्रायोनियासे फायदा न होनेपर—सेनेगा।

आँखकी बीमारी—एक चीजका दो दिखाई देना, आँखके सामने आँखके कण दिखाई देना और आँखके लेन्समें चोट लगनेके बाद अथवा मोतियाबिन्द कटवानेके बाद जो सब लेन्स-चूर्ण (fragments of lens) रह जाता है, उसे शीघ्र शोषण करनेके लिये—सेनेगाका प्रयोग करना चाहिये।

मूत्राशयके प्रदाहकी बीमारीमें—लगातार रोगी को पेशाब करनेकी इच्छा होनेके पहले और बाद—जल जानेकी तरह असह्य यन्त्रणा, लगातार पेशाबका परिमाण घटना और पेशाबमें श्लेष्माके टुकडे इत्यादि लक्षणोंमें—सेनेगा फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—ब्रायो, आर्निका, बेल, केम्फर।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के, लाइको, फास, सल्फ।

वृद्धि (aggravation)—घूमनेपर, दबानेपर, विश्राममें, स्थिर रहनेपर और सबेरे, रातमें, गरम हवा लगनेपर।

उपशम (amelioration)—पीछेकी ओर माथा झुकानेपर डकार आनेपर, खुली हवामें।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३० दिन।

क्रम—१—२०० शक्ति।

फास—

सेना ।

(SENNA)

(सूखी सोनामुखीकी पत्तीसे टिंचर तैयार होता है)—कब्जियत, पेट फूलनेके साथ बच्चोंको उदरशूलका दर्द (Infantile colic) और अनिद्राकी यह एक प्रधान दवा है। आकजैलुरिया (Oxaluria) नामकी पेशाबकी बीमारीमें—पेशाबका आपेक्षिक गुरुत्व और युरिया (urea) का अंश ज्यादा रहनेपर इससे विशेष लाभ होता है। स्वास्थ्यभंग, कब्जियत, मांसक्षय, दिनोदिन सूखते या कमजोर होते जाना—इन कई प्रधान लक्षणोंमें यह "टानिक" औषधरूपमें व्यवहृत हो सकताहै। बच्चा हो या युवक, अगर कोई मनुष्य पहले खूब हृष्ट-पुष्ट और सबल था, पर कोई खास बीमारी या कारण रहे विना ही यह दुबला होता होता अन्तमें हड्डी हड्डी-ढाँचा-सा रह जाये, तो सेना (Senna) इस तरहके रोगीका परम बन्धु है। बहुमूत्रकी बीमारीमें और कोई रोगी अधिक दिनोंतक अगर उदरामय आदि भोगता रहे और प्राय ऊपर लिखे ढंगकी अवस्था आ पड़े तो सेना उसमें फायदा करता है। सेनामें कभी-कभी यकृत भी बढ़ जाता है और वहाँ बहुत दर्द होता रहता है। बहुत जीर्ण-शीर्ण, जिनकी पेशियाँ क्षीण है, मल कड़ा रहता है, सेना इन तीनोंकी टानिक दवा है।

सदृश—कैलि-कार्ब, जेलापा।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैमो, नक्स।

क्रम—२—३० शक्ति।

फारमुला—३

सिपिया ।

(SEPIA)

(समुद्रकी कटल नामक मछलीका, स्याहीकी तरहका एक प्रकारका रस inky juice लेकर विचूर्ण तैयार होता है)—यह स्त्रियोंकी नाना प्रकारकी बीमारियोंमें लाभदायक है और एक एण्टिसोरिक दवा है ।

चरित्रगत लक्षण —

१ । पेटमें प्रसवके दर्दकी तरह दर्द, रोगिनी समझती है कि उसके पेटके भीतरके सभी यंत्र अर्थात नस-नाड़ियाँ प्रभृति सभी मानो योनिपथसे बाहर निकल पड़ेंगी, इसीलिये पैरपर पैर देकर बैठती है २ । जरायुका बाहर निकल पड़ना (Prolapsus uteri), ३ । गरमीके दिनोंमें बीमारीका बढ़ना , ४ । एकाएक शरीर सुन्न होकर सरमें चक्कर आ जानेका भाव और पसीना होने लगता है, भीतर खूब ध्यान रहता है, परन्तु रोगी हिल-डोल और बोल नहीं सकता है । ५ । गृहस्थीपर ध्यान न रखना, यहाँ-तक कि अपनी सन्तान वगैरहकी खबर नहीं लेती , ६ । जरायुका कड़ापन और दर्द , ७ । योनिके ऊपरी भागमें फुन्सियाँ, उसमें असह्य खुजली और भगोष्ठमें सूजन ; ८ । रक्तप्रदर ; ९ । ऋतुके समय पैरकी हड्डीमें कनकनी ; १० । प्रमेह रोगकी अन्तिम अवस्था-में जब स्रावमें जलन या कोई तकलीफ नहीं रहती ; ११ । कब्ज-

यत, मल बहुत कडा और आम-लिपटा, १२ पेटमे चक्कर खाता हुआ न जाने क्या ऊपर चढ़ता है, इसीलिये बोलनेमें तकलीफ होती है, १३। स्त्रियोंका पेट बडा होना, १४। पेटका हमेशा ही खाली खाली मालूम होना, १५। दूध बिलकुल ही सहन नहीं होता, १६। जरायुरोग ग्रस्त स्त्रियोंका अधकपारीका दर्द, १७। पेशाबमें बदबू, बच्चा पहली नींदमें ही बिछावनमें पेशाब कर देता है, १८। मलद्वारमें भार मालूम होनेके साथ भोजनकी बात मनमें आते ही वमन, १९। सवेरे मुँह धोनेके समय वमन या ओकाई आती है, २०। बहुत विषादित, बात बातमें आँखमें पानी भर आता है।

सिपिया—पल्सेटिलाकी भाँति शान्त स्वभाववाली स्त्रियोंके लिये उपयोगी है। साधारणत इसकी बीमारीके उपसर्ग सवेरे ११ बजनेके समय और शामको ४ बजे बढते हैं, इसके अलावा—धोवियोंकी तरह पानीमे हाथ भींजा रहनेपर, ऋतुके पहले रजोनिवृत्तिकी उमरमे दर्द वगैरहकी तकलीफ, भोजनके बाद और विश्रामके समय बढ़ती और खुली हवामे तथा थोडे परिश्रमसे घटती है।

गर्भस्राव—अगर पाँचवेंसे लेकर ७ वें महीनेमें गर्भस्राव हो—सिपिया फायदा करता है।

जरायुकी बीमारी—जरायुका प्रदाह, फूलना और स्थान-भ्रष्टना, इसको चलतू भाषामें हमलोग नला हटना कहते

है, उसके अलावा जरायुका बाहर निकलना और जरायु अगर घूम जाये या टेढा पड जाये तो—सिपिया फायदा करता है। लिलियम टिग्रियम भी इस बीमारीकी विशेष लाभदायक दवा है, पर रोगकी प्रबल और नयी अवस्थामे—लिलियम और बीमारी पुरानी हो जानेपर—सिपिया फायदा करता है। लिलियममे मूत्र-द्वार और मलद्वारमे जलन रहा करती है, इसके रोग लक्षण तीसरे पहर बढते है, सिपियामे—बल्कि इस समय रोग कुछ घटा रहता है, जरायुकी सभी बीमारियोंके साथ सिपियामें पेटके भीतरवाले सभी यन्त्र मानो योनिपथसे बाहर निकल पड़ेगे, इसीलिये रोगिनी पैरपर पैर चढ़ाकर बैठती है, ऊंचेपर बैठ नहीं सकती—यह लक्षण हमेशा याद रखना चाहिये, इसके अलावा उसके साथही कमरमे बहुत दर्द रहता है, रोगिनी अगर चलती फिरती या खडी रहती है तो उसे बहुत तकलीफ मालूम होती है, सोये रहनेपर बल्कि अच्छी रहती है, जरायुका शोथ, इससे रोगिनी को देखनेपर ऐसा मालूम होता है मानो आठ दस महीनोंका गर्भ है, (हेलीबोर, डिजि)

ऋतुस्राव—कभी-कभी ऋतुबन्द (amenorrhoea), कभी कभी अनियमित, ऋतु होता बहुत जल्दी-जल्दी है, अथवा बहुत देरसे होता है, स्राव बहुत थोडा, इसके साथही सिपियाके चरित्रगत दर्दके कारण कष्ट बना रहता है।

श्वेत-प्रदर—सिपियाका स्राव गाढा, पीला या पीला हरा मिला रगका, दूधकी तरह सफेद और खाल उधेड देनेवाला

रहता है, योनिदेश बहुत खुजलाया करता है, स्राव ऋतुके पहले, सवेरे और दिनके समय ज्यादा होता है, लिलियममे—स्राव पतला होता है। इसमे जल्दी जल्दी पेशाव लगाता है, मूत्रद्वार और जरायुमुखमे जलन हुआ करती है।

स्वामी सहवासमें दर्द—सिपियामे योनिपथ सूखा रहता है, इसी लिये स्वामी-सहवासमे बहुत दर्द होता है, अगर स्वामी सहवासमे दर्द हो और खून भी ज्यादा जाये तो क्रियोजोट फायदा करेगा।

पेशाव—वार वार पेशावका वेग, तलपेट भारी मालूम होता है, पेशाव रख छोडनेपर उसमे गदली, कुछ लाल रगकी या सफेद तली जमती है। स्त्रियोंकी इस रगकी बीमारीमे सिपिया ज्यादा फायदा करता है, सिपियाके पेशावमें इतनी बदबू रहती है, कि मनुष्य पास खडा नहीं रह सकता। नाइट्रिक और वेञ्जोयिक एसिडमे घोडेके पेशावकी तरह तेज गन्ध रहती है। सिपियाका पेशाव रातमे वढता है, (ग्रैफा, लाइको, सल्फ)।

सर-दर्द—सरमे किसी एक ओर दर्द (अधकपारीका दर्द), आँखतक दर्द होता है, किसी तरहकी आवाज या रोशनी सहन नहीं कर सकती, नींदके समय सर दर्द कुछ घटा रहता है। जरायु सम्बन्धी किसी भी बीमारीके साथ उस ढङ्गके सर दर्दका सिपिया अमोघ औषध है, किसी कामको करने समय एकाएक सरमे चक्कर आ जाता है।

डा० लिपि कहते हैं,—माथेकी बायीं ओरके सर दर्दमें सिपिया फायदा करता है, ऊपरी चक्षुगह्वरके स्नायुशूलके दर्दमें दाहिनी ओर रोगका आक्रमण होता है।

प्रमेह—ग्लीट (gleet) रोगमें अर्थात प्रमेह रोगकी पुरानी और अन्तिम अवस्थामें, जब जलन और यन्त्रणा एकदम कम हो जाती है, स्राव भी अधिक नहीं होता, थोडा-सा भी स्राव होनेपर पेशाबकी नली रुक जाती है, उस समय सिपिया फायदा करता है। अगर सिपियासे फायदा न हो तो कैलि आयोडका प्रयोग करना चाहिये। (मै ऐसे स्थानपर हाइड्रैस्टिस ३x या क्यूबेबाका प्रयोग करता हू, उससे ही अकसर बीमारी आराम हो जाती है। दवा कमसे कम २। ३ सप्ताह व्यवहार करनी चाहिये)।

कब्जियत—मलनालीकी क्रियाहीनता और पेशियोंकी कमजोरीकी वजहसे कब्ज, प्रत्येक बार काँखनेके समय काँच निकल पडती है, पतले दस्त भी बडी तकलीफसे बाहर निकलते हैं, पाखाना हो जाने बाद ऐसा मालूम होता है, मानो मलद्वार भरा हुआ है या मलद्वारपर कुछ दबावसा है जो निकलता नहीं है—सिपियाके ये ही लक्षण हैं। मलद्वारमें भार, गाँठ गाँठ मल बडी तकलीफसे निकलता है।

अजीर्ण—मुँह तीता या मुँहका स्वाद खट्टा, रोगी हमेशा खट्टा पानीय या खट्टे पदार्थ—जैसे चटनी, अचार इत्यादि खानेका आग्रह प्रकट करता है। वायुसे पेट फूल उठता है। कब्जियत, कोई भी चीज खानेपर, यहाँतक कि उस खाद्य पदार्थकी

गन्धसे मिचली—(कोलचिकम) आने लगती है, पेट भारी जाता है, मानो पेटमें कोई भारी पदार्थ भरा हुआ है। दूध स नहीं होता, खासकर गरम दूध बिलकुल ही सहन नहीं हो इससे पतले दस्त आने लगते हैं। माँससे अरुचि, ऊपर पेटसे तक और छातीमें जलन।

चर्मरोग—दाद, एकजिमा, हार्पिस, पीव भरे छोटे फोडे, बडा फोडा पकके बाद दूसरा निकला करता स्त्री—जननेन्द्रियपर छोटी छोटी फुन्सियाँ, उनमे असह्य खुज (Pruritis vagini) इन सब लक्षणोंमें—सिपिया फाय करता है (सलफर—सिपियाकी अनुपूरक दवा है, अर्थात् सिपि के बाद या पहले सलफरको जरूरत पडती है)। मुँह दाढीमें दाद होनेपर—सिपियासे फायदा होता है। कभी क त्वचा कामलाकी तरह पीली दिखाई देती है।

आँखकी बीमारी—जरायुकी बीमारीके साथ मोतियाबिन्द, पलकोंमें छोटी छोटी फुन्सियाँ, आँखके भीतर खो मारनेकी तरह दर्द, करकराहट, आँख रगडनेमे तकलीफ, आँख ठण्डे पानीसे धोनेपर आराम मालूम होना, धुँधली दृष्टि इत्या लक्षणोंमे सिपियासे फायदा होता है। दृष्टि-शक्तिका घटना, कि भी कारणसे हो नैट्रम-म्यूर, कैली-कार्ब, सिपिया, जैबोरेण्डी विशेष लाभ होता है। सिपियामे—एकाएक दृष्टिशक्ति लोप जाती है, सवेरे और शामको आँखसे ठण्डा पानी गिरता है

सविराम ज्वर—ज्वरमें सिपियाके धातुगत लक्षणके साथ—शीत, उत्ताप, पसीना—इन तीनों ही अवस्थाओंमें—प्रत्येक अवस्थाके बाद ही रोगीमें अस्वाभाविक दुर्बलता और बलक्षय दिखाई देनेपर सिपियाका प्रयोग करना चाहिये।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, मलनेपर, चित्त होकर सोनेपर, मानसिक परिश्रमसे, भोजनके बाद ही, नींदके बाद, सन्ध्यामें, पहले प्रहरमें और पहली नींदके समय।

ह्रास (amelioration)—जोरसे दबानेपर, निर्मल वायुमें और उत्ताप प्रयोगसे।

सम्बन्ध—नैट्रम-म्यूरके साथ सिपियाका अनुपूरक सम्बन्ध है। लैकेसिसके बाद, पहले और पल्सके साथ पर्यायक्रमसे सिपियाका व्यवहार नहीं होता।

बादकी दवा (follows well)—बेल, कैल्के, कार्बो, डलका, ग्रैफा, लाइको, नक्स, पल्स, फोनि, साइलि, सल्फ, रस।

क्रियानाशक (antidote)—एकोन, एसिड-फूड, एसिड-टार्ट, सल्फ, नाइट्रि-स्पिरिटस-डल, डिजिटेलिस और सभी एसिड।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—५० दिन।

क्रम—३x—२०० शक्ति।

फारमुला—विचूर्ण—७। टिंचर—४।

साइलिसिया ।

(SILICEA)

अग्निमिश्रित बालूसे इसका विचूर्ण तैयार होता है, इसका साधारण नाम—सिलिका है । यह एक दीर्घ क्रिया करनेवाली दवा है,इसीलिये इसका बार-बार प्रयोग करना मना है। Silicea is the chronic to Pulsatlilla अर्थात् जहाँ किसी नयी बीमारीमें पल्सेटिला, उसी रोगकी पुरानी अवस्थामें—साइलिसियाका प्रयोग होता है । शरीरके किसी भी स्थानमें पीब हो जानेपर साइलिसिया के प्रयोगसे पीबका परिमाण घटकर जखम आदि जल्द आराम हो जाते हैं । अस्थि, मज्जा और शरीरके किसी पोषण यन्त्रका क्षय होनेपर इससे वह पुष्ट हो जाता है ।

चरित्रगत लक्षण—

१ । बच्चेका पेट मोटा और कड़ा, पैर पतले, विलम्बसे चलना सीखता है । माथा—शरीरकी गढनकी अपेक्षा बड़ा , २ । माथेमें, कानकी बगलमें, हाथ-पैरमें, पसीना, बदबूदार पसीना , ३ । गर्दनपर बदबूदार एकजिमा , ४ । टीका देनेके दोषसे बीमारी , कण्ठमाला धातु, रेकाइटिस, बच्चेका ब्रह्मरन्ध्र बहुत दिनोंतक अपुष्ट रहता है , ६ । हाथ और तलहत्थीमें पसीना, एकाएक पसीना बन्द होकर बीमारी , ७ । अधकपारीका सर-दर्द—उसका आक्रमण दाहिनी ओर अधिक होता है । दर्द माथेके पिछले

भागसे आरम्भ होकर क्रमश' माथेके ऊपर चढता है, खूब जोरसे बाँधने या गरमीसे घटता है, ८। बच्चा बडा ही जिद्दी और हमेशा ही रोता है, किसी तरह शान्त नहीं होता, ९। कब्जियत मे—मल कुछ बाहर निकलकर फिर भीतर घुस जाता है, १०। अस्थि-क्षत (Caries), नासूर, उससे पीब और हड्डीके टुकडा निकलता है, ११। स्तनका दूध पीकर बच्चा छानेकी तरह वमन करता है, १२। आँख और स्तनके नासूरके जखममें—थूजाके बाद साइलिसिया, साइलिसियाके बाद—हिपर, एसिड-फ्लोरिक, १३। बीमारीके सभी उपसर्ग—ठण्डसे और अमावस्या तथा पूर्णिमाको बढ जाते हैं।

फोड़ा—फोडेका पीब जल्दी नहीं सूखता, पीब पतले रसकी तरह या माँसधोये पानीकी तरह, खून मिला, बदबूदार फोडे आदि आराम हो जानेपर भी अगर वहाँ कडापन बहुत दीनातक बना रहे तो साइलिसियामे फायदा होता है।

हिपर और साइलिसिया दोनो ही दवाओंका प्रयोग पीब पैदा होना, रोकनेके लिये होता है, दोनो ही दवाओंमे ठण्डे प्रयोगसे तकलीफ बढती है और गर्मीसे बीमारी घटती है। पर उनमे प्रभेद यह है कि—हिपरका पीब खूब गाढा यहाँतक कि मक्खन-की तरह गाढा और साइलिसियाका पीब पतला, खून मिला अथवा खून धोये हुए पानीकी तरह होता है। हिपरमे ऐसा दर्द रहता है कि उसमे दर्द सहन नहीं होता, साइलिसियामें—दर्द नहीं रहता।

डा० सुसलर कहते हैं—जब किसी फोडे आदिकी प्रादाहिक अवस्था बीत जानेके बाद सूजनका भाव रह जाता है पीब पैदा नहीं होता, न पकता है और न बैठता है, उस समय साइलिसिया ३x या ६x विचूर्ण बार बार प्रयोग करनेपर जल्द ही पीब पैदा हो जाता है और फोडा फट जाता है (फोडा आदि फाडनेके लिये—जहाँ दर्द ज्यादा रहता है वहाँ मै हिपर ३x, जहाँ दर्द नहीं रहता, वहाँ साइलिसिया ३x व्यवहार करता हूँ, इससे खास लाभ दिखाई देता है,) गुहौरी, गर्मी रोग-वाले मनुष्योंकी बाघी (हार्ड सैंकरकी बाघी), पुरानी कडी सूजन प्रभृतिमें सहजमें ही पीब पैदा नहीं होता। ऐसे स्थानपर इसका निम्न क्रम— १x, २x विचूर्ण बार बार सेवन करनेपर पीब पैदा हो जाता है। पीब पैदा होना बन्द करनेके लिये उच्चक्रम— ३०, २०० शक्ति प्रभृतिकी व्यवस्था करना चाहिये। बायोकेमिक विचूर्ण दवाओंका कई बार सेवन करना हो तो १५।२६ ग्रेन दवा प्राय ८ आउन्स चुआये हुए पानीके साथ मिलाकर उसकी २।१ चम्मच मात्रा, २।१ घण्टेका अन्तर देकर सेवन करनी पडती है। जखममें यह लगाया भी जाता है (१५ ग्रेन ३x विचूर्ण दवा १ आउन्स ग्लिसरिन या वेसोलिन-के साथ अच्छी तरह मिलाकर, लगानेकी दवा तैयार होगी)

फोडेके सिवा साइलिसिया—घुटना और उरु सन्धिका जखम, कार्बङ्कल, अँगुल बेढ़ा, किसी गाँठकी सूजन, और किसी जगहमें चोट आकर उसके पकनेकी सम्भावना, आँखमें कोई भी बाहरी चीज

र जानेके कारण आँखकी बीमारी, सुई आदिका गड जाना, भग-
र (Fistula of the anus) इत्यादिमें भी इसका प्रयोग होनेपर
ससे ज्यादा फायदा होगा। यह भी याद रखना चाहिये कि इसकी
लनकी तकलीफ गरम प्रयोगसे घटती और ठण्डे प्रयोगसे
ढती है। पीबकी प्रकृति ऊपर बतायी जा चुकी है। भगन्दरकी
मारीमें—अरम-म्यूर एक लाभदायक दवा है।

हड्डीकी बीमारी—हड्डीकी किसी बीमारीमें कोई
डी चीज प्रयोग करनेपर अर्थात पानी या हवातक लगनेपर रोगी-
 बहुत अधिक तकलीफ होती है (ठण्डे पानीसे घटना—
सिड फ्लोरिक)। ऊपर ही कहा जा चुका है कि साइलिसिया-
 पीब पतला होता है, पर फिर कभी कभी मक्खनकी तरह
ढा पीब भी निकलता है। हिप ज्वायण्ट (Hip-joint)
मक अस्थिकी बीमारीमें नासूर हो जानेपर और ऊपर लिखे ढङ्गका
यका लक्षण रहनेपर—साइलिसिया फायदा करता है। वर्टिब्रेल
तीज (मेरुदण्डका अस्थिक्षत) नामक बीमारीमें भी साइलिसिया
यदा करता है। बच्चोंकी मेरुदण्डकी अस्थिवक्रता (Spinal
rvature) की बीमारीकी भी यह एक अमोघ दवा है।

हिप-ज्वायण्ट-डिजीज—हिप ज्वायण्ट रोगका लक्षण—रोगीको
ले उसके ऊपरी अशमें (हिप ज्वायण्ट) और घुटनेमें थोडासा
 मालूम होता है, धीरे धीरे यह दर्द समूचे पैरमें फैल जाता
रोगी पैर धीरे धीरे पतला और लम्बा हुआ करता है। निरोगी

पैरकी अपेक्षा रोगी पैर लम्बा और बडा हो जाता है। ज्वर रहता, है। ज्वर १०० से १०३।१०४ डिगरीतक होता है। क्रमशः रोगी-की चलनेकी शक्ति लोप हो जाती है, पैर हिला नहीं सकता, कूल्हेकी माँसपेशी शिथिल हो जाती है, रोगवाली सन्धिकी जगह फूलती है, लाल होती है, चमकती है, टपक और करकरा-हट होती है, बहुत तकलीफ होती है, रातमे तकलीफ बढती है, चिकित्सा होनेपर अगर प्रदाह नहीं घटता है तो पीव हो जाता है, अस्थिमे अगर जखम हो जाता है, तो अस्थि नष्ट हो जाती है, धीरे धीरे पैर छोटे होते जाते हैं, इस समय पीवके कारण हेक्टिक ज्वर होता है, रोगी क्रमश कमजोर हो जाता है और मारात्मक हो जाता है।

<u>हिप ज्वायण्टकी प्रधान दवा</u>—कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, चायना, हिपर, एसिड-फास, साइलि, फास, कैल्के, हाइपोफास, प्रभृति।

बर्दवान जिलेके अन्तर्गत नवग्रामके रहनेवाले श्रीयुत राम-रञ्जन फेरेरके पुत्र—(उमर ६ वर्ष,) को एक बार हिप-ज्वायण्टकी बीमारी हुई, उनमें रोगके कई लक्षण विद्यमान थे। पहले वहांके कई नामजादे एलोपैथोंकी चिकित्सा हुई, पर कुछ दिनोंतक इलाज करनेपर जब कोई फायदा न हुआ और बालकका स्वरूप दिनोंदिन खराब होता गया, उसके पिता उसे कलकत्ता ले आये। इसके बाद एकके बाद दूसरे मेडिकल कालेजके कई चिकित्सकोंकी अधी-नतामें उसे रक्खा गया, बहुत धन खर्च करनेके बाद और बहुत

नोतक इलाज कर जब उन लोगोंने यह कह दिया कि अब nputation अर्थात उरुच्छेद 'करनेके सिवा और कोई उपाय हीं है, तब रोगीके पिता डरकर नश्तर लगवानेके पहले ामियोपैथिक चिकित्सा कराना उचित समझकर उसे मेरे पास आये। इस समय उस बालकको रोजाना १०३।१०४ डिगरी ज्वर ाता था, उरुसन्धिमें भीषण दर्द और सूजन, रोगी पैर अन्य रकी अपेक्षा प्राय १॥ इञ्च अधिक लम्बा, मुर्देकी तरह ावस्था इत्यादि कई उपसर्ग और लक्षण थे। मैंने इस रोगीको हले कई दिन साइलिसिया—३x सेवन कराया और फेरम-फास :x चूर्णका लिनिमेण्ट बाहरसे लगवाया और अन्तवाले कई दिन सेर्फ कैल्केरिया-फास ६x खानेकी व्यवस्था कर दी। इसका ारिणाम यह हुआ कि पहले दो सप्ताहोंके भीतर ही ज्वर, सूजन, र्द इत्यादि उपसर्ग गायब हो गये और एक महीनेके भीतर बालक एकदम आरोग्य हो गया। आराम होनेके बाद मेरे कहनेसे उस बालकको उन पहलेके चिकित्सकोंको एक बार दिखाया गया—सुना—वे सब ही उसको देखकर आश्चर्यमें आ गये।

तालुमूलका जखम—तालुमूल (टानसिल) पककर पीव होनेपर और साइलिसियाका चरित्रगत पीवका लक्षण रहनेपर, इस बीमारीमें—साइलिसिया फायदा करता है (फाइटोलैका और मार्क-सियानेटस देखिये)।

आँखकी बीमारी—जखम, स्वच्छ त्वचा (cornea)

मे जखम होकर छेद हो जाता है, उससे पीव निकलता है, पलकोंकी गुहौरी पककर पीव निकलता है।

आँखका मोतियाविन्द—रोगीकी धातु साइलिसियाकी होनेपर, इसका अधिक दिनोंतक व्यवहार करके भी यदि बीमारी आराम न हो, तो कमसे कम उससे मोतियाविन्दका बढना तो रुक ही जाता है। कोनियम और नेट्रम-म्यूर इत्यादि भी इस तरहकी बीमारीकी उपयोगी दवाएँ हैं। वृद्धोंका मोतियाविन्द और उसके साथ ही आँखमे स्नायविक दर्द रहनेपर—साइलिसिया फायदा करता है (३० वीं शक्तिका कई महीनोंतक व्यवहार करना पडेगा)। कैल्केरिया-फ्लोर और कास्टिकम देखिये।

साइलिसियाके रोगीको दिनके समय तकलीफ होती है, सूर्यकी रोशनी बिलकुल ही सहन नहीं कर सकता। आँखके भीतर भयानक दर्द, छूने नहीं देता, आँख बन्द किये रहनेपर भयानक तकलीफ होती है।

वाथ्रप्स—यह एक तरहके साँपके विषसे तैयार की जाती है। इसके रोगीको सूर्योदयके बाद कुछ भी दिखाई नहीं देता, यह दिनौंधी रोगकी और आँखसे रक्तस्रावकी एक श्रेष्ठ महौषधि है, क्रम ६—३० शक्ति व्यवहृत होती है।

सेलुलाइटिस—सेलुलर टीशू (कौषिक झिल्ली) (Net like formation composed of cells) सवपर बीमारीका हमला होकर अगर वहाँ पीव हो जाये और जखम

किसी तरह भी न सूझता हो—तो साइलिसियासे फायदा होता है। नीचेवाले मसूढ़ेमे जख्म होकर अगर हड्डी सड जाये (Necrosis) और दाँतकी जडके फोडेकी तकलीफ ठण्डे पानीसे बढ़े और गरम प्रयोगसे घटती हो तो इससे बहुत फायदा होगा। (हेक्ला-लावा देखिये।)

सर-दर्द—"चरित्रगत" लक्षणवाला परिच्छेद देखिये।

पसीना—"केल्केरिया-कार्ब" अध्याय देखिये।

कानकी बीमारी—साइलिसियाका चरित्रगत बदबूदार पतला पीब अगर बहुत दिनोंतक निकलता रहे, यहाँतक कि टिम्पेनाई-मेम्ब्रेन (कर्णपटहका आवरण) मे छेद होनेपर भी इससे फायदा होता है। (टेलुरियम अध्याय देखिये)। कान बन्द हो जाते हैं, मानो ताला लग गया है और उसमें सों सों आवाज होती है, अच्छी तरह सुन नहीं सकता।

पेशाब-सम्बन्धी रोग—साइलिसिया का पेशाब परिमाणमें बहुत ज्यादा होता है, क्रिमि-रोगवाले बच्चोंको रातमें बिछावनमें पेशाब करनेपर इससे यह कु-अभ्यास छूट जाता है। पेशाब फीका, गदला, तली लाल गिरती है और पीला चूर जमता है।

वात—पूर्व-पुरुषागत (hereditary) वात रोगमें यह ज्यादा फायदा करता है। दर्द रातके समय और रूई इत्यादिसे बँधे रहनेपर उसे खोल देनेपर तकलीफ बढ जाती है।

अतिसार—यदि टीका लगवानेके वाद अतिसार हो जाये और पतले दस्त आने लगें—तो साइलिसिया उसकी एक वहुत ही लाभदायक दवा है (थूजा)। साधारण उदरामयमें—मलमें बुरी सडी गन्ध, यहाँतक कि उसके नाकमें जानेपर वमन हो आता है, कभी खून और आम मिला चमकीला दस्त आता है और वह थोडा-थोडाकर बरावर निकलता है।

बच्चोंका हैजा—जिन बच्चोंका माथा वडा, पैर पतले, पेट मोटा और माथेमें पसीना होता है, उनकी बीमारीमें—साइलिसिया फायदा करता है। बच्चा स्तनका दूध नहीं पीता, पीनेसे ही उसका जी मिचलाने लगता है, भूख एकदम नहीं रहती, खाने-वाद फिर खाना नहीं चाहता, वल्कि थोडा-सा ठण्डा पानी पीता है, पर साबू, वार्ली, एकदम खाना नहीं चाहता, वायुसे पेट फूल उठता है। पेट कडा हो जाता है, पेशाव वन्द रहता है, जरासी औंघाई आती है, पर तुरन्त जाग उठता है। पैर ठण्डे, कपाल वहुत ठण्डा रहता है, माथा और कपालमें पसीना होता है, पैरमें पसीना होता है (माथेके पिछले भागमें पसीना—कैल्केरियामें अधिक होता है)। मल अजीर्ण खाद्य-पदार्थ मिला रहता है, किसी तरह-की तकलीफ नहीं रहती।

ज्वर—साइलिसियाका ज्वर—सविराम प्रकारका होता है। रातके १२ वजेसे ज्वर आरम्भ होकर दूसरे दिन दिनके ६ वजेसे १० वजेतक रहता है। कभी कभी दिनभर शीतका भाव रहकर सन्ध्याके

समय ज्वर आता है। अगर दिनके १२ बजे ज्वर आता है तो शीत नहीं रहता। शीतावस्थामें—प्यास नहीं रहती, पर शीत भाव ही बहुत अधिक रहता है, घुटनेमें लेकर पैरतक बरफकी तरह ठण्डा रहता है। इसी अवस्थामें रोगीको भूख मालूम होती है। उत्तापावस्थामें—तेज प्यास, सिहरावनका भाव इस अवस्थामें भी रहता है, रातके समय ज्वर बढ़ता है। पसीनेवाली अवस्थामें—खूब पसीना होता है, इससे माथेमें, कानकी जड़में और छातीमें अधिक पसीना होता है, पसीनेमें बहुत बदबू रहती है या खट्टी गन्ध आती है, पैरमें पसीना होता है। इससे पैरकी खाल उधड़ जाती जाती है (ग्रैफाइटिसमें भी यह लक्षण है)।

वृद्धि (aggravation)—पूर्णिमा या अमावस्याके समय (during new moon), दबानेपर, रोगवाली करवट सोनेपर, छूनेपर, आबहवाके परिवर्त्तनसे, अधड़-पानीमें, ठण्डकमें, दूध पीनेपर मानसिक परिश्रमसे, रातमें और ऋतुकालमें।

ह्रास (amelioration)—माथा ढकनेपर, घरके भीतर, विश्रामसे, गरम चीज पीनेपर, गरमीसे।

बादकी दवा (follows well)—आर्स, बेल, कैल्के, फ्लोरिक-एसिड, ग्रैफा, हिपर, लैके, लाइको, नक्स, फास, पल्स, रस, सल्फ, थूजा।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, फ्लोरिक-एसिड, हिपर। अधिक मात्रामें पारा सेवन करनेपर—साइलिसिया प्रतिषेधक

कार्य करता है, पर मर्करीके बाद या साइलिसियाके बाद मर्करी बिलकुल ही फायदा नहीं करता।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—६० दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति। फारमुला—७।

स्पाइजेलिया एन्थेलमिण्टिका।

(SPIGELIA ANTHELMINTICA)

(वेस्ट इण्डिज और साउथ अमेरिकामें एक प्रकारकी लता होती है, उसे सुखाकर, उससे टिंचर तैयार किया जाता है)। हृत्पिण्डपर उसकी प्रधान क्रिया होती है। इसमें शरीरके बाँयी ओर आक्रमण होता है।

होमियोपैथिक मेटीरिया-मेडिकामें जो दवाएँ शरीरके दाहिने और बायें भागपर अपनी क्रिया प्रकट करती हैं, उनकी एक सूची नीचे संक्षिप्त रूपसे दी जाती है।

दाहिनी ओर—एनाकार्ड, एमोनकार्ब, एपिस, बेल, ब्रायो चेलिडोन, क्रोटे, कैलि-कार्ब, लिथिया, लाइको, मैग-फास, पोडो फाइटो, सैंगुनेरि, टैरेण्टुला, कैलि-म्यूर, इग्वजिट, वायोला प्रभृति

बायीं ओर—अर्जेण्ट, एगारि, एस्टिरियस, सियानो, चेना पोड, कोलोसि, समिसिफ्यु, कुप्रम, रैके,लिलियम, फिक्स-लिकिडा

रियुमेनस, सैवाडिला, सैवाल, थूजा, नक्स-मस्के, स्पाइजे इत्यादि ।

स्पाइजेलियाका चरित्रगत लक्षण —

१। वक्षस्थलमें वात (नैजा, रियुम), २। कलेजा धडकना, जरा भी हिलनेपर और सामनेकी ओर झुकनेपर कलेजा धडकने लगता है, इतने जोरसे कलेजा धडकता है, कि कपडेके ऊपर, बाहरसे ही दिखाई देता है, (Systolic blowing of the apex) हृद्कपाटका उद्गीरण (Mitral regurgitation), सामने कनपटी- और माथेमें असह्य दर्द, आँखतक यह टनक होती है—ऐसा मालूम होता है, कि आँख बडी हो गयी है, ४। बायीं ओर अध- कपारीका दर्द ऐसा मालूम होता है कि माथेकी चारों ओर एक पट्टी बँधी हुई है, ५। छोटी-छोटी किमियाँ मलद्वारमें सुर सुराया करती हैं, खुजलाती हैं, किमिकी वजहसे बच्चोंके पेटके शूलका दर्द, ६। वक्षोस्थि अर्थात छातीके बीचकी हड्डीके नीचे तेज विधनेकी तरह दर्द, इसके साथ ही बायाँ हाथ सुन्न मालूम होना, ७। सोनेपर श्वास कष्ट, दाहिनी ओर दबाकर या माथा ऊँचाकर सोता है ; ८। चेहरेमे स्नायुशूलका दर्द, स्नायुका शूलका दर्द, धूम्रपानकी वजहसे दाँतका दर्द, ९। आल्पीन, सुई इत्यादि नोकीली चीज गड जानेका भय, १०। खाँसनेके समय कलेजेमें सुई गडनेकी तरह दर्द ।

हृत्पिण्डकी बीमारी—हृत्पिण्डकी बहुतसी पुरानी बीमारियोंमें यह फायदा करता है, बहुत जोर जोरसे कलेजा धडकता है, यहाँतक कि यह स्पन्दन कपडेके ऊपरसे—बाहर-

की ओरसे ही दिखाई देता है, कलेजा धड़कना—(Palpitation) स्टैथस्कोप लगाये बिना ही कलेजेके पास कान ले जाकर सुननेसे ही हृत्पिण्डके स्पन्दनका आघात शब्द सुन पडता है। हृत्पिण्डकी बीमारीकी पहली या नयी अवस्थामे भी यह फायदा करता है। हृत्कपाटकी बीमारी (Valvular disease) जोर जोरसे कलेजा धडकनेपर स्पाइजेलियाके प्रयोगसे बहुत जल्द यह हृत्स्पन्दन घट जाता है और कुछ दिनोंतक व्यवहार करनेपर असली हृद्रोग भी आरोग्य हो जाता है। रोगी बायीं करवट दबाकर सो नहीं सकता, क्योंकि उससे कलेजेकी धडकन बहुत बढ जाती है। हृत्पिण्डकी बीमारीमे स्पाइजेलियाके बाद—<u>कैलमियासे</u> ज्यादा फायदा होता है।

सर-दर्द—स्पाइजेलियामे माथेके एक ओर विशेषकर बायीं ओर ही दर्द अधिक होता है, (अधकपारीका सर दर्द) सर दर्द—माथेके पिछले भागमें गर्दनके ऊपरी भागसे आरम्भ होकर माथेके ऊपरी भागसे होता हुआ, अन्तमे आँखके ऊपरी भागमे उतर जाता है, सूर्य जितना ही बढता आता है, उतना ही यह दर्द बढता जाता है और ज्यों ज्यों सूर्य उतरता जाता है त्यों त्यों यह घटकर अन्तमे सूर्यास्त होनेपर आरोग्य हो जाता है। जिस ओर सर दर्द होता है, उसी ओरकी आँखसे पानी गिरता है, थोडी भी आवाज होने या हिलने डोलनेपर सर दर्द बढ जाता है, माथेके दाहिनी ओरके इस तरहके सर दर्दमे—<u>सैंगुनेरिया,</u> और साङ्गलिसिया दोनों ही फायदा

करते हैं, सर दर्दके साथ दाहिनी आँखसे पानी गिरनेपर—चेलिडोनियम फायदा करता है। ओनसमोडियम (Onosmodium)—ϕ—२०० इसका सरदर्द,—माथेके पिछले भाग (Occiput) से आरम्भ होकर नीचे गर्दन और ऊपर ब्रह्मतालु और वहाँसे कनपटीमें चला जाता है, माथेके बायीं ओर ही रोगका आक्रमण अधिक होता है, सर-दर्दके साथ-साथ मिचली रहती है। आर्सेनिक मेटालिकम—माथेके बायीं तरफ दर्द, दर्द आँख और कानके भीतरतफ चला जाता है।

चेहरेका स्नायुशूल—चेहरेके दाहिनी ओरका स्नायुशूल—कैलमिया और बायीं ओरके स्नायुशूलमें—स्पाइजेलिया फायदा करता है।

वात—रोगवाली जगहपर अकडनका तेज दर्द, भीतर मानो कोई सुई गडा रहा है, हृत्पिडकी किसी बीमारीके साथ वात होनेपर—स्पाइजेलिया फायदा करता है। मेरुदण्ड और पीठमे दर्द, श्वास लेनेपर दर्द बढता है।

निद्रा—रातमें हाथ पैर स्थिर नहीं रख सकता, सपना देखकर नींद खुल जाती है।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, शरीर हिलानेपर, भोजनके बाद ही, जलीय हवा लगनेपर, बरसातके दिनोंमें, दोपहरमें, धूम्रपानमें।

ह्रास (amelioration)—स्थिर रहनेपर, साँस लेनेपर, उत्तापसे, निर्मल हवामें।

सम्बन्ध—हृत्पिण्डके अन्तर्वेष्ट प्रदाहमें—एकोनाइटके बाद और आर्नि, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के, डिजि, कैलि-कार्ब, लाइको, फास, पल्स, सल्फ, जिंक, इनके साथ स्पाइजेलियाका घनिष्ट सम्बन्ध है ।

जहाँ रोगकी नयी अवस्थामें—आर्निकाका व्यवहार होता है, वहाँ रोगकी पुरानी अवस्थामें—स्पाइजेलियाका ।

क्रिया-नाशक (antidote)—आरम, कैम्फर, काकु, पल्स ।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० ।

क्रम—३०—२०० शक्ति । फारमुला—४ ।

स्पंजिया टोस्टा ।

(SPONGIA TOSTA)

(टर्की-स्पञ्जसे टिंचर या विचूर्ण तैयार होता है)—ग्रन्थियाँ, श्लैष्मिक झिल्ली और श्वासयन्त्रपर ही इसकी प्रधान क्रिया होती है । जो स्त्री या बच्चे गोरे रंगके होते है, जिनकी माँसपेशी ढीली रहती है, जिनकी टियुबर्युलर धातु रहती है, ग्रन्थियाँ फूलती है, उनकी बीमारीमें यह ज्यादा फायदा करता है ।

चरित्रगत लक्षण :—

१ । गलगण्ड, थाइरायड ग्लैण्डका फूलना, गला तथा अन्यान्य

स्थानोंकी ग्रन्थियाँ कडी और फूलीं, २। गलक्षत—मिठाई खानेसे बढना, ३। गला, स्वरयन्त्र, टेटुआ, वायुपथ प्रभृति श्वासपथकी श्लैष्मिक झिल्लीका बहुत अधिक सूखापन, ४। दिनरात सूखी खाँसी, कुछ भी बलगम नहीं निकलता, गला और छातीमें साँय-साँय आवाज होती है, कलेजेमें जलन होती है, ५। खाँसीकी आवाज कुत्तेकी आवाजकी तरह, बाजेकी आवाजकी भाँति, घरघर आवाज, ६। क्रूप-खाँसी—गलेमें आरीसे काठ चीरनेकी तरह, सीटी बजानेकी तरह या सीं सीं शब्द, ७। मीठी चीज खाने, ठण्डी चीज पीने, धूम्रपानसे, माथा झुकाकर सोने, ठण्डी हवामें बोलनेपर, गाना गानेपर और कुछ खानेपर खाँसीका बढना, ८। गरम चीज खानेपर खाँसीका घटना। ६। कलेजा बहुत धडकनेके साथ छातीमें दर्द, १०। एञ्जाइना—पेक्टोरिस (हृत्शूल) ११। एकाएक आधी रातके बाद श्वास-प्रश्वास बन्द हो जानेकी तरह होकर बिछावनसे उठ बैठता है, १२। अण्डकोषमें कुचल जानेकी तरह या पीस डालनेकी तरह दर्द और सूजन, १३। रुके हुए प्रमेहकी वजहसे अण्डकोष या शुक्ररज्जु (spermatic cord) में सूजन और दर्द, १४। नाक झाडनेपर खून निकलता है, नाकमें कच्ची सर्दी।

घुंड़ी—(काली खाँसी croup)—बालकोंकी क्रूप खाँसीकी यह एक बडी ही मूल्यवान दवा है। इस बीमारीमें श्वास-नली रुक जाती है, इसलिये साँस निकलनेमें बहुत तकलीफ होती है, बलगम बिल्कुल ही नहीं निकलता, छातीमें सर्दी खूब बैठ जाती

है, ऐसा भाव हो जाता है, मानो दम बन्द हो जायगा। आरीसे काठ चीरनेपर या हँसुएसे नेवारी काटनेके समय एक तरहकी जैसी आवाज होती है, स्पजियाके श्वास-प्रश्वासमें ठीक उसी तरह की आवाज हुआ करती है। इसके अलावा इसमें बहुत जल्दी-जल्दी कुत्तेकी आवाजकी तरह एक प्रकारकी खाँसी आती है। काली खाँसीकी पहली अवस्थामें जबतक तेज बोखार रहता है, तबतक स्पजियाका प्रयोग न करना चाहिये, इस अवस्थामें एकोनाइट उपयोगी है। एकोनाइटके बाद—स्पजियाकी जरूरत पडती है, बच्चों को अकसर सर्दी लगकर ही खाँसी होती है, पहली अवस्थामें जोरका पेशाब और छटपटी, जबतक रहे तबतक खूब जल्दी-जल्दी यहाँतक कि २०।२५ मिनिटके अन्तरसे—एकोनाइटका प्रयोग किया जा सकता है, इसके बाद जब ज्वर कम हो जाता है, खाँसी बढती है, श्वास-प्रश्वास बन्द होनेकी तरह भाव हो जाता है, गलेमें इस ढगकी आवाज और कलेजेमें खिंचाव होता रहता है, उस समय स्पजियाका बार बार प्रयोग करना आवश्यक है। जब स्पजियाके प्रयोगसे खाँसी कुछ ढीली हो जाये, तो उसके बाद हिपरके प्रयोगसे रोगी प्राय आरोग्य हो जाता है, इस बीमारीमें—ब्रोमियम, आयोडम प्रभृति दवाएँ भी फायदा करती है, पर जब हिपरसे कोई फायदा नहीं होता, तब सबके अन्तमें इनकी जरूरत पडती है (हिपर अध्याय पढे, एमोन-कार्ब देखिये)।

अण्डकोषकी बीमारी—अण्डकोष फूला और कडा,

उसमें बेतरह दर्द, शुक्ररज्जु फूलकर मोटी हो जाती है, जरा हिलने-डोलनेपर ही ऐसा मालूम होता है, मानो जान निकल जायगी। इस बीमारीमें—क्लिमेटिस, आरम, हैमामेलिस, पल्सेटिला, रोडोडेण्ड्रन इत्यादि दवाएं फायदा करती हैं। प्रमेहका स्राव रुककर अगर अण्डकोषका प्रदाह हो जाये तो पल्सेटिला और क्लिमेटिस दोनों ही फायदा करते हैं। वातकी वजहसे पैदा हुए अण्डकोष-प्रदाहमें—रोडोडेण्ड्रन, रोगीको अगर गरमीकी बीमारी हो—आरम। आरममें दाहिनी ओरका और स्पञ्जियामें बायीं ओरका कोष (testis) पर भी रोगका आक्रमण अधिक होता है।

हृत्पिण्डकी बीमारी—रोगीको हमेशा सर झुकाकर बैठे रहना पडता है, नहीं तो ऐसा मालूम होता है कि मानो दम बन्द होना चाहता है। सोया-सोया एकाएक ऐसा सोचता है, मानो साँस बन्द हो जायगी, मानो किसीने गला दबा रखा है, इसीलिये, नींद खुल जाती है, जल्दी जल्दी उठ बैठता है और खाँसता है।

गलगण्ड—इस रोगकी स्पञ्जिया एक अव्यर्थ दवा है, किसीका कथन है, कि—२।१ मात्रा देनेसे ही बीमारी आराम हो जाती है। इसमें गाठ खूब बडी और कडी रहती है, कभी कभी ऐसा मालूम होता है, मानो साँस बन्द हुई जाती है, सभी उपसर्ग रातमें बढते हैं। स्पञ्जियामें—थाइरायड ग्लैण्ड (गलग्रन्थि) पर बीमारीका हमला होता है।

यक्ष्मा और खाँसी—यक्ष्माकी जल्दी जल्दी आनेवाली खाँसी। यह खाँसी बोलने, ठण्डी हवा लगने और जोरसे साँस लेनेपर बहुत बढ जाती है, रोगीके शरीरसे बीच-बीचमे मानो आगकी लपट निकलती है। लैरिञ्जियल थाइसिस और पुराने स्वरभग रोगमे—स्पञ्जिया फायदा करता है। स्वरयन्त्र—सूखा, सकुचित, और उसमे जलन होती है।

वृद्धि (aggravation)—रोगके विषयमे सोचनेपर, मिठाई खानेपर दाहिनी करवट सोनेपर, रातके समय, सूखी ठण्डी हवा लगनेपर और पूर्णिमाके समय।

उपशम (amelioration)—सामनेकी ओर झुकनेपर, चित सोनेपर, गर्म खाने पीनेपर।

सम्बन्ध—खाँसी और क्रूप-रोगमे सूखापनकी प्रधानता रहनेपर एकोनाइट और हिपरके बाद स्पञ्जिया फायदा करता है। यदि छाती और गलेमे श्लेष्माकी घरघराहट होती हो, तो स्पञ्जियाके बाद हिपर उत्कृष्ट दवाके समान काम करता है। खासकर यदि खाँसी रातके अन्तिम भागमे बढती हो,—सन्ध्याके समय बढनेपर फास्फोरस फायदा करता है।

क्रम—६—२०० शक्ति। फारमुला—४।

स्टैनम मेटालिकम ।

(STANNUM METALLICUM)

(टीन धातुसे ट्राइटुरेशनके आकारमें यह तैयार होता है)—हुत अधिक कमजोरी ही इसका प्रधान लक्षण है ।

चरित्रगत लक्षण—

१ । बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक दुर्बलता और क्लान्ति, पक्षाघातकी तरह कमजोरी, गला और वक्षस्थलमें बहुत अधिक कमजोरीके कारण डोलने, हँसने या जोरसे बात करनेमें तकलीफ मालूम होना, २ । ऊपरसे नीचे उतरनेमें मानो बेहोशीकी तरह आ जाती है, पर ऊपर चढनेमें उतनी तकलीफ नहीं होती, ३ । दर्द धीरे-धीरे बढकर चरम सीमामें जा पहुँचता है और अन्तमें धीरे धीरे घट जाता है, ४ । शूलका दर्द बहुत जोरसे दबानेपर घट जाता है, । छोटी-छोटी क्रिमि मलद्वारमें सुडसुडाया करती है ; ६ । श्वेतप्रदर—इसके साथ ही बहुत कमजोरी, कमजोरी मानो कलेजेसे आरम्भ होती है (तलपेट या बस्तिगह्वरसे—सिपि, फास) ; ७ । पाकस्थली मानो शून्य और खाली (सिपि, फास, चेलि), ८ । थाइसिस या किसी दूसरी फेफडेकी बीमारीमें ढेरका ढेर पीब मिला बलगम या श्लेष्मा निकलना, इस बलगमका स्वाद नमकीन रहता है या मीठा ; ९ । रातमें खाँसी बढ जाया करती है, इसके साथ—ही श्वासमें कष्ट ; पसीना ;

१०। खाँसी मानो गभीर और घर घर करनेवाली, ऊपरके ऊपर लगातार तीन चार बार खाँसता है (दो बार—मर्कु रियस)।

श्वासयन्त्रकी बीमारी—यक्ष्माकी खाँसी हो, निमोनिया हो, ब्रांकाइटिस हो, सब तरहकी श्वासयन्त्रकी बीमारीमें ही खाँसीके साथ ढेरका ढेर बलगम या श्लेष्मा निकलनेपर, और श्लेष्माका स्वाद मीठा या नमकीन रहनेपर—स्टैनम यक बहुत ही बहुमूल्य दवा है। सिपिया और कैलि-आयोडका श्लेष्मा भी बहुत नमकीन रहता है, ऊपर लिखी तीनों दवाओंमें—ही निकला हुआ श्लेष्मा खूब गाढा और पीला या कुछ हरे रङ्गका होता है। स्टैनम और कैली-आयोडमें बहुत ज्यादा मात्रामे पसीना रातमे होता है, खाँसीके साथ वक्षस्थलमे कमजोरी रहती है और कलेजेके भीतर जलन होती है, यह जलन स्टैनमके सिवा-एसिड-फास और सलफरमे भी रहती है। एसिड-फासका श्लेष्मा—पीबकी तरह और बदबूदार रहता है। नयी-सर्दी-खाँसीमें खाँसी—दिनके दोपहरसे लेकर आधी राततक बढती है। सन्ध्याकी खाँसी सूखी, कुछ भी नहीं निकलता, नयी और पुरानी दोनो प्रकारकी खाँसीमें ही—हँसने, बोलने, गरम पतली चीज पीने और दाहिना पार्श्व दबाकर सोनेपर खाँसी बढती है। यक्ष्मामें छोटे ढेलेकी तरह बलगम निकलता है। श्वास-प्रश्वासके समय बायाँ करवट सोनेपर, कलेजेमें सुई गडनेकी तरह दर्द होता है।

स्टैनम-आयोडेटम (Stannum Iodatum)—यह यक्ष्माकी खाँसीको एक बहुत बढिया दवा है। जब बीमारी बहुत तेजीसे बढती है, स्टैनमका लक्षण रहनेपर भी फायदा नहीं होता, तीसरी अवस्थामें फेफडेमें पीव हो जाता है, उस समय इसकी—२x शक्तिका प्रयोग करना चाहिये। १ ग्रेन मात्रामें भोजनके बाद २।३ बार सेवन करना चाहिये। थाइसिसकी दूसरी अवस्थामें जब फेफडेमें पीव नहीं होता, उस समय—आरम-आयोड और पहली अवस्था-में—आर्सेनिक आयोडसे फायदा होना सम्भव है। क्रम २x—३x शक्ति, उक्त प्रकारसे सेवन करना चाहिये।

सैलविया (Salvia Officinalis)—थाइसिस रोगमें लगातार गलेमें सुरसुरी होकर खाँसी और रातके समय बहुत अधिक पसीना होते रहनेपर इससे फायदा होगा। क्रम ϕ, २० बूँद मात्रामें थोडेसे पानीके साथ पीनेपर दो घण्टे बादही क्रियाका होना आरम्भ हो जाता है और वह २ से ५।६ दिनोंतक रहती है।

प्लुरिसी—(वक्षावरक झिल्ली प्रदाह)—बायें वक्षके ऊपरी अशमें छुरी बिधने या काँटा गडनेकी तरह दर्द, साँस लेने, खाने और झुकनेपर दर्दका बढना।

स्त्री-रोग—मासिक ऋतुस्राव खूब जल्दी-जल्दी और परिमाणमें अधिक होता है। जरायु-पेशीकी कमजोरीके कारण जरायुका बाहर निकलना और श्वेत-प्रदरके साथ बहुत कमजोरी रहनेपर सिपियाकी अपेक्षा स्टैनम अधिक फायदा करता है। (लिलि-यम, म्युरेक्स)। पाखानेके समय काँखनेपर जरायुका निकल

पड़ना, यह लक्षण अगर कब्जके साथ रहे—स्टैनम और अतिसार-के साथ होनेपर पोडोफाइलम।

दर्द—स्टैनमका दर्द, धीरे धीरे बढकर, धीरे धीरे ही घटता है। स्नायुशूलका दर्द भी इसी तरह धीरे धीरे बढता और धीरे धीरे घटता है।। दर्द धीरे धीरे बढकर अगर एकाएक घट जाये—एसिड-सल्फ फायदा करता है। स्टैनम—मुँह और पेटके शूलके दर्द (Colic) मे फायदा करता है। स्टैनमका शूलका दर्द—खूब जोरसे दबा रखनेपर घटता है। कोलोसिन्थमें भी—यह लक्षण है। पर जहाँ ऐसा देखे—दर्द बहुत दिनोंका पुराना है, वहाँ कोलोसिन्थकी अपेक्षा—स्टैनम ही ज्यादा फायदा करता है। स्टैनमका रोगी अपने मनमें सदा दुःखी रहता है, वह एक प्रकारसे आशा-शून्य रहता है और लगातार रोनेकी इच्छा उसे हुआ करती है।

अतिसार—मलका रंग हरा, इसके साथ ही पेटमें स्टैनमका निर्दिष्ट दर्दका लक्षण रहनेपर—स्टैनम ज्यादा फायदा करता है।

क्रिमि—स्टैनम छोटी छोटी क्रिमिकी भी उत्तम दवा है। (सिना देखिये)।

कम्पन और पक्षाघात—पक्षाघातकी तरह कमजोरी, चीजें आदि हाथसे गिर जाती हैं, बैठनेकी चेष्टा करते ही प्रत्यंग आदि सरक जाते हैं। अग्रबाहु और हाथका आक्षेपिक कम्पन।

राइटर्स-क्रैम्प (लेखकोंकी अकड़न)—लिखनेके समय अंगुली धक्का मारकर हट जाती है। टाइपराइटरपर काम करनेवालोंकी अँगुलीका पक्षाघात।

वृद्धि (aggravation)—शरीर हिलानेपर, वक्तृता देने या हँसनेपर, नीचे उतरनेपर।

ह्रास (amelioration)—ज़ोरसे दबानेपर, कड़ी चीजके दबावसे, शरीर टेढ़ा करनेपर।

सम्बन्ध—कास्टिकम और सिपियाके बाद और केलि-फास, साइलि, सल्फ और टियुबर्कुलिनके पहले—स्टैनम बहुत फायदा करता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—पल्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३५ दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति, फारमुला—विचूर्ण ७—।

स्टैफिसेग्रिया।

(STAPHISAGRIA)

(दक्षिणी युरोपमें एक तरहका गाछ पैदा होता है, उसके पके फलके बीजसे टिंचर तैयार होता है)—मूत्रयन्त्र, जननेन्द्रिय, चर्म, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि इत्यादिके ऊपर इसकी क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण—

१। चिडचिडे मिजाजके साथ स्नायविक रोग, क्रोध आने या अपमानित होनेके बाद बीमारी, अस्वाभाविक इन्द्रिय-परिचालनकी वजहसे पैदा हुई बीमारी, २। पलकोंमें अजनी या टियुमर, ३। कीडे लगे दाँत, काले दाँत, दाँतमे कोई चीज या पानीय लगनेपर बहुत कनकनी होना, दाँतमे शूलका दर्द, रजस्राव के समय दाँतमे कनकनी होना, ४। दिनमें औंघाई, रातमें अनिद्रा, ५। खाने-पीने बाद पेटमे कनकनी हो जाना, ६। इन्द्रियकी उत्तेजनाकी वजहसे—शुक्रमेह, धातु-दौर्वल्य, ७। पेशाबका वेग पैदा होता है, लेकिन बहुत देर तक बैठनेपर पेशाव होता है, ८। पेशाबके समय नहीं, बल्कि दूसरे समय मूत्रनलीमे जलन, ९। स्वप्नदोष (खासकर स्कूलके छात्रोका), १०। स्पर्माटोरिया—इसके साथ ही आँख मुँह बैठ जाना और कमरम दर्द, ११। कमरमं दर्द—रातमें और शय्यासे उठनेके पहलेसे बढना, १२। केवल दिनके समय और भोजनके बाद खाँसी; १३। अगूठा और अँगूठेकी गाँठमे वातकी गोटियाँ।

मानसिक लक्षण—

बच्चा हमेशा ही उत्तेजित रहता है, क्रोधी, चिडचिडा, किसी तरह सन्तुष्ट नहीं रहता; खेलनेके लिये कोई चीज हाथमें देनेपर तुरन्त फेंक देता है।

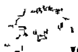
(ये लक्षण बहुत कुछ कैमोमिलाकी तरह हैं), इस ढगके लक्षणके साथ बच्चेकी अस्वाभाविक भूख, भूख मानो किसी

तरह बन्द नहीं होती, पेट भरा रहनेपर भी खानेके लिये खाऊँ खाऊँ करता है।

युवकगण हमेशा ही स्वाभाविक या अस्वाभाविक उपायसे काम-रिपु चरितार्थ करनेके लिये चिन्तित रहते हैं, निर्जन एकान्त स्थानको पसन्द करते हैं।

रोगीसे कोई अपमानकी बात कहनेपर वह उसी समय उसको अपमानजनक न समझकर, उसका बदला लिये बिना वह घर लौट आता है और उसी क्रोधको अपने भीतर दबाये रखकर नाना प्रकारकी बीमारियाँ भोगता है। कोई कोई मनुष्य थोड़ेमें ही क्रोधित हो जाते हैं, थोड़ा भी अन्याय सहन नहीं कर सकते।

दाँतकी बीमारी—पूर्व-पुरुषोंसे आया हुआ उपदंश या सूज़ाक रोगवाली सन्तानोंका दाँत बहुत जल्द नष्ट हो जाता है, दाँतमें कीड़े लग जाते हैं, दाँतमें काला दाग पड़ जाता है, दाँतोंको खा जाता है, अकसर मसूढ़े फूलते हैं, दर्द होता है, ज़रा भी अंगुली लग जानेपर या खानेकी चीज़ दाँतमें लगनेपर दाँतसे खून गिरने लगता है, बोल-चालकी भाषामें हम इसे दाँत सड़ना कहते हैं। इन सब लक्षणोंमें—स्टैफिसेग्रिया, ज्यादा फायदेमन्द है। क्रियोजोट—कीड़े लगे दाँतकी एक महान उपकारी दवा है। इसमें पहले दाँत पीले होते हैं, फिर दाँत काले रंगके होते हैं और क्रमशः नष्ट हो जाते हैं। इस तरह बच्चोंके दूधके दाँत अकसर नहीं दिखाई देते। दाँतके भीतर गड्ढे होकर दाँतमें अगर दर्द हो—मर्क्युरियस, कैमोमिला, इयुफोर्बिया प्रभृति दवाएँ फायदा करती



हैं (रोगी दाँतमें रुईसे—क्लोरोफार्म, क्रियोजोट, स्पिरिट्-कैम्फर, या प्लैण्टेगो—φ लगानेपर दर्द थोडी देरके लिये घट जाता है।) ऋतुस्राव होनेके समय और गर्भ धारण करनेके समयके दाँतके दर्दमें—स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। दाँतका दर्द—दाँतके अलावा कान और कनपटीतक चला जाता है, कुछ खानेपर, दाँतमें ठण्डा पानी लगनेपर, ठण्डी हवासे और थोडा भी दवाव पडनेसे दर्द बढता है, पर उसे खूब जोरसे दबानेपर घटता है (प्लैण्टेगो देखिये)

आँखकी बीमारी—पलकोपर लगातार गुहौरी यदि होती हो, और यह गुहौरी पककर जखम हो जाये—स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। ग्रैफाइटिसमे भी इस तरहका लक्षण है, पर उनमें प्रभेद यह है कि रोगी दुर्बल बच्चोंकी उस ढगकी आँखकी बीमारीके साथ स्टैफिसेग्रियाका दाँतका लक्षण रहनेपर—स्टैफि-सेग्रिया नहीं तो ग्रैफाइटिस फायदा करता है।

उपदशकी वजहसे आइराइटिस (चक्षुतारका प्रदाह)—आँख-के भीतर, कपालमे, रोगवाले पार्श्वके मुँहमे भीषण दर्द (थसाफिटि, मर्क-कोर, मर्क-प्रोटो, एसिड-नाई)।

उदर-शूलका दर्द—उपदश-विष-दूषित कमजोर बच्चों-के पेटका शूलके दर्दमें—कैमोमिला, कोलोसिन्थ, डायस्कोरिया प्रभृति अन्यान्य दवाओंकी अपेक्षा—स्टैफिसेग्रिया ज्यादा फायदा करता है।

पेशाबकी बीमारी—पेशाब करनेके समय नहीं, बल्कि दूसरे समय मूत्रनलीमें (ureter) जलन रहनेपर—स्टैफिसेग्रिया अमोघ दवा है। इसमें पेशाब करनेके समय जलन भी घट जाती है।

कायडोइलोमा (wart-like excrescence on the pudendaor anus)—इस बीमारीमें—एसिड-नाइट्रिक, थूजा और स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है पर स्टैफिसेग्रियाके उक्त दांतके लक्षण यदि रोगके साथ मौजूद रहें—तो स्टैफिसेग्रिया सबसे अधिक लाभ करता है।

जखम—धारदार अस्त्रसे कटकर जखम, पारा सेवन करनेकी वजहसे या उपदंशका जखम, उसका प्रभाव यदि हड्डीतक पहुँच जाये और उरुदेशकी हड्डीमें (femur bone) जखम हो जाये, उससे यदि हाडका चूर या टुकडे निकलते हों, तो स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। मुँह और मसूढेके जखममें—मुँहमें श्लेष्मा इकट्ठा होता है, खून मिली लार बहती है। मसूढेमें हाथ नहीं लगाया जाता, इतना दर्द रहता है।

आँखकी बीमारी—माथा और मुँहका एक तरहका सूखा एकजिमा होता है, उसपर खूब मोटी पपडी जमती है। रस-भरे एकजिमामें—यह रस माथेमें लगता है, यदि वहाँ फिर नया उद्भेद पैदा हो जाये, तो उन उद्भेदोंपर मोटी पपडी जमती है, सडी बदबू निकलती है। कीडे पैदा हो जाते हैं, और उनमें भया-

नक खुजली होती है, खुजली आराम होनेपर एक जगह खुजलाने पर दूसरी जगह खुजली पैदा हो जाती है—यदि ऐसा हो तो—स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है। खुजलीमें इसके लिनिमेण्टका बाहरी प्रयोग करनेपर ज्यादा फायदा होता है।

डिम्बकोषका प्रदाह—अगर स्वामी-सहवाससे वंचित होकर किसी स्त्रीको यह बीमारी होजाये—स्टैफिसेग्रिया फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—अतिसार, आमाशय इत्यादि पेटको बीमारियोंमें थोड़ा भी खाने-पीने और वात इत्यादिका दर्द—बरसातमें और रातमें बढ़ जाता है। रोगके उपसर्ग रातमें, अमावास्याके समय, पूर्णिमाके पहले और शीत ऋतुमें बढ़ते हैं।

सम्बन्ध—कास्टिकमके बाद कोलोसिन्थ, उसके बाद स्टैफिसेग्रिया।

क्रिया-नाशक (antidote)—पल्सा, कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति। फारमुला—४।

स्टिक्टा पल्मोनेरिया।

(STICTA PULMONARIA)

(इंगलैण्डके पहाड़ोंमें एक तरहका खूब बड़ा गाछ होता है। उसके तनेके छालसे टिंचर तैयार होता है)—इन्लुप जा।

नयी सर्दी और सर्दीकी पहली अवस्थामें इसके प्रयोगसे ज्यादा फायदा होता है ।

सर्दी खाँसी—ठण्ड लगकर सर्दी होनेपर पहले कपाल और नाककी जडमें भार मालूम होता है और दर्द होता है, उसके बाद सर्दीका स्राव जितना ही निकलता है, उतना ही यह दर्द और भार भी घटता जाता है । इसके अलावा सर्दीका स्राव सूख जानेके बाद सामनेके छेदमें और उसके मूलदेशमें बहुत दर्द रहता है। इसमें कभी-कभी नाककी सर्दी सूख जाती है ; पर उस समय भी नाककी उत्तेजना (irritation) मौजूद रहती है , इसलिये,रोगी बार-बार नाक छिडका करता है , छींक आती है, पर उसमें जरा भी बलगम नहीं निकलता , सर्दीका स्राव सूखकर नाकके भीतर पपडी जमती है । कैलिबाइक्रोममें—सर्दीका स्राव बन्द होकर स्टिक्टाकी तरह नाककी जडमें और सामने कपालमें भयानक दर्द होता है, इसमें नाककी दीवार (सेप्टम) अर्थात भेदक-अस्थि में छेद हो जाता है । स्टिक्टाका सर्दीका स्राव—मर्कुरियस, कैलि आयोड, आर्सेनिक और इयुफ्रेशियाकी तरह पानी जेसा नहीं होता और पल्सेटिला, सिपिया और केलि-सल्फकी तरह गाढा भी नहीं होता । खाँसीकी—स्टिक्टा एक महान उपकारी दवा है । स्टिक्टाकी खाँसी—रातमे होनेपर बढती है, इसलिये, रोगी सो नहीं सकता, खाँसी पहले सूखी रहती है, पीछे ढीली हो जाती है । गलेमें सुरसुरी होकर मिनिट तोपकी (minute-gun-coughs) तरह बार-बार

खाँसी आती है। छोटी माता रोगके बाद लगातार खाँसी आनेपर और यक्ष्माकी लगातार आनेवाली कष्टदायक खाँसीमें भी यह फायदा करता है, स्टिक्टाकी खाँसीमें अकसर नाक बन्द रहती है और छींक आया करती है।

वात—गर्दनका वात, गर्दन अकड़ जाया करती है। दाहिनी स्कन्ध-सन्धिकी (R. shoulder joint)की पेशीमें, कन्धेकी पेशी (deltoid), हाथकी पेशी (biceps) और उरु पेशीके वातमें भी स्टिक्टा फायदा करता है। उसमें गांठ और गाँठके पासकी पेशी (muscles) फूल जाती है, गरम और लाल हो जाती है, उनमें बहुत दर्द होता है, सर्दीका लक्षण प्रकट होनेके बाद भी वात रोग होनेपर यह फायदा करता है।

सदृश—एसिड-फास, एक्टिया-रेसि, कैल्केरिया, ड्रोसेरा, डालका, हाइड्रैस, ब्रायो, मार्क, रियुमेक्स, जेलसि, इग्ने।

क्रम—३—६ शक्ति।

फारमुला—जर्मनी—३, अमेरिकन ४।

स्टिलिञ्जिया सिलवैटिका।

(STILLINGIA SYLVATICA)

(ताजी जड़से टिंचर तैयार होता है)—पेरियास्टियमका (अस्थि आवरक-झिल्लीका) पुराना वात, कमर और प्रत्यंगोंका वात।

कण्ठमाला या उपदशकी वजहसे उत्पन्न वात, वातगुटी (nodes) उपदशकी दूसरी अवस्थामें शरीरकी त्वचापर उद्भेद निकलना और उसके बादके दूसरे-दूसरे उपसर्ग, गर्दनकी गाँठका बढना, हाथके और अगूठेके चर्मका पुराना उद्भेद निकलना, जखम और आक्षेपिक सूखी खाँसी और वक्ताओंका गला फँस जाना प्रभृतिमे यह व्यवहृत होता है। उपदश, वात इत्यादिके निमित्त कैलि-हाइड्रो अध्याय देखिये।

पेशावकी बीमारी—पेशाव साफ पानीकी तरह, बिना किसी रगका-पेशावमे, सफेद मैदेके चूरकी तरह तली (deposite white sediment), खूब गाढा दूध या चायकी तरह पेशाव होना। काइल्युरिया (Chyluria) नामक बीमारीमें इस तरहका पेशाव होता है—स्टिलिञ्जया फायदा करता है, एसिड-फास अध्याय देखिये। स्टिलिञ्जियाके मलका रग भी—सफेद रहता है देखनेमें वह दहीकी तरह रहता हैं।

वृद्धि (aggravation)—तीसरे पहर, जलीय वायुमें, हिलने-डोलनेपर।

ह्रास (amelioration)—सवेरे, सूखी गरम हवामें।

सदृश—वात गुटीमें—कारिडैलिस, सिफिलिनम, अरम, मर्करी स्टैफिसेमिया प्रभृति।

क्रम—φ, ३—६ शक्ति।

फारमुला—जर्मनी-४, अमेरिकन-२।

स्ट्रैमोनियम।

(STRAMONIUM)

(धतूरा, इसके पके फलसे टिंचर तैयार होता है)—गल-नली और मस्तिष्कके ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

ज्वर-विकार—विकारकी स्ट्रैमोनियम एक मूल्यवान दवा है। डा० नैशने—बेलेडोना, स्ट्रैमोनियम और हायोसियामस इन तीन दवाओंको "Trio" बताया है।

डा० टैलकेट कहते हैं—बेलोडोनाका रोगी प्रचण्ड और साहसी होता है, हायोसियामसका—प्रफुल्ल, स्ट्रैमोनियममें—चवलमति और डरपोक रहता है, वेरेट्रम-एल्बम—आशाहीन, साहसहीन, बेतरह विलाप करता है, जो मिलनेका नहीं है—उसी चीजके लिये प्रार्थना करता है।

चरित्रगत लक्षण—

१। विकारमें प्रलाप बकता है और ठीक मानो पागलोंकी तरह हो जाता है, इसमें रोगी कभी भी एक भावसे स्थिर नहीं रह सकता, एक बार सीधा होकर लम्बे भावसे, कभी आडे भावसे और कभी पैर और घुटना मोडकर सोता है; कभी हँसता है, कभी सीटी देता है, चिल्लाता है, गाली बकता है, लोगोंपर बकता है, नाना प्रकारकी विदेशी भाषाओंमें बातें करता है, इसके रोगीमें लगातार भिन्न-भिन्न भावोंका परिवर्तन दिखाई देता है;

स्ट्रैमोनियममें—और भी एक तरहका लक्षण दिखाई देता है—रोगी तकियेपर माथा रखकर सोया रहता है, एका-एक सर उठाकर कुछ देखता है और फिर माथा नीचा कर लेता है, मुँह गला सूखा रहनेपर भी पानी नहीं पीना चाहता। किसी चीजके निगलनेसे तकलीफ मालूम होती है, पाखाना-पेशाब बन्द रहता है, या बूँद-बूँदकर पेशाब निकलता है और अंग प्रत्यंग आदि काँपते हैं। स्ट्रैमोनियममें—रोगीका चेहरा लाल रंगका दिखाई देता है (बेलेडोनाकी तरह उतना घोर लाल नहीं), इस तरहका डर मालूम होता है, मानो कोई जन्तु उसकी ओर आ रहा है, अगर रोगी छोटा बच्चा रहता है, तो माँ कहकर रो उठता है। इसमें विकारकी बकवाद प्राय एकाङ्गी ढङ्गकी होती है और रोगी जबतक बिलकुलही थक नहीं जाता, तबतक लगातार बका करता है, इसके अलावा विकारके इस तरहके बकवादके साथ हाथ पैर घुमा-घुमाकर हिलाता है। रोगी अन्धेरेमें और अकेला नहीं रहना चाहता। यदि रहता है, तो विकारका भाव और बकवाद और भी बढ जाती है। लैकेसिसका बकना—एक विषयको बोलता-बोलता दूसरा विषय ला पटकता है, बेलेडोना यह रोगकी पहली अवस्थाकी दशा है, इसका विकार बहुत—ही प्रचण्ड होता है, रोगी बिछावनसे भाग जानेकी चेष्टा करता रहता है, मारता है, हायोसियामसमें—अज्ञान और अचैतन्य भाव धीरे-धीरे आता है, हाथकी अंगुली और बिछावनकी चादर नोंचता है, ऊपर हाथ उठाकर मानो कुछ पकडना चाहता है,

जीभ सूखी रहती है, बोल नहीं सकता, रोगी अनजानमें पेशाब करता है या पेशाब बिलकुल ही बन्द रहता है। स्ट्रैमोनियम—रोगीकी आँख एकदम खुली रहती है, आँखकी पुतली फैली, पागलोंकी तरह दृष्टि, २। कोई बात कहनेके पहले बहुत देरतक तोतलाया करता है और बडे कष्टसे बोलता है, बोलनेके लिये बहुत कुछ चेष्टा करनी पडती है, इसमें नाना प्रकारकी चेहरेकी भाव भङ्गी बन जाती है, ३। नींदका भाव रहता है, पर नींद नहीं आती, ४। हाथ पैर और समूचा शरीर काँपा करता है, ५। ज्ञानके साथ अकडन, चमकीली रोशनी, आयना या पानी देखनेसे ही फिर अकडन और बेहोशी पैदा हो जाती है, शरीरकी कोई एक पेशी या कितनी ही पेशियाँ अथवा ऊपरी अशक्री पेशी फडकती है, ७। किसी भी बीमारीमें तकलीफकी बात नहीं बताता, ८। जलातंक रोग (Hydrophobia), पानी देखते ही डर मालूम होता है। तरल पदार्थ बिलकुल ही पीना नहीं चाहता, मुँह और गला सूखा रहनेपर भी पानी पीना नहीं चाहता, ९। निगलनेमें कष्ट, १०। खानेकी चीजका स्वाद नहीं मिलता, ११ टाइफायडमें पेशाब बन्द।

ज्वर—सूतिका ज्वर, टाइफायड ज्वर, सविराम ज्वर, कोई भी और किसी तरहका भी ज्वर क्यों न हो, उसके साथ ही विकारका भाव रहनेपर और ऊपर लिखे चरित्रगत लक्षणका पहला अंश मिल जानेपर स्ट्रैमोनियम फायदा करता है (बेलोडोना अध्याय देखिये)।

लिनेरिया—इसकी प्रधान क्रिया न्युमोगैस्ट्रिक नर्भपर होती है। डकार, मिचली, लार बहना, पाकस्थलीमें दबाव मालूम होना प्रभृति इसके लक्षण हैं। टाइफायड ज्वरमें—गहरी नींदका अभाव और हृत्पिण्डमें बहुत कमजोरी और मस्तिष्कमें गडबडी प्रभृति रहनेपर इससे ज्यादा फायदा होता है। इसकी—३x, ६x, ६ शक्ति ज्यादा काममें लायी जाती है।

दमा—दमा साधारणत चार तरहका होता है—रेनैल, कार्डियक, ब्राकियल, और स्पाजमैडिक। रेनैल दमामें—अगर पेशाब ज्यादा होता है, तो रोगी स्वस्थ रहता है, पेशाब थोडा होनेपर खिंचाव, और खाँसी वगैरह कष्टकर उपसर्ग बढ जाते हैं। कार्डियक-दमामें—परिश्रम न करने, हृत्पिण्डकी अवस्था अच्छी रहनेपर, दमा और कष्ट बहुत कुछ घटा रहता है, इसमें व्यतिक्रम होते ही तकलीफ बढ जाती है। ब्राकियल दमामें—ठण्ड सहन नहीं होती, ऋतु परिवर्तन, ठण्ड और शीतमें भयानक कष्ट होता है, नहाना खाना बहुत सावधानतापूर्वक करना पडता है। स्पैजमोडिक दमा ठीक इसके विपरीत होता है, ठण्ड खूब सहन होती है, रोगी ठण्डककी ही इच्छा करता है, ठण्डमें अच्छा भी रहता है, रोज नहाना, ठण्डी चीजें खाना-पीना, ठण्डी हवा अर्थात बाहर भीतर ठण्डा खूब सहन होता है। इस अन्तवाली जातिके दमामें—रोगीका मानो दम बन्द हो जाता है, खुली हवाकी इच्छा करता

है, बोल नहीं सकता, साँस लेनेमे बहुत तकलीफ इत्यादि लक्षण रहनेपर—स्ट्रैमोनियमका प्रयोग करें। आक्षेपिक हूपिङ्ग खाँसी में यह खूब लाभ करता है (प्राय सब तरहके दमाका खिचाव ब्लेटा—φ, २ घण्टेके अन्तरसे सेवन करनेपर फायदा होता है।)

अकड़न—चेचक, छोटी माता या किसी दूसरी तरहका उद्भेद बैठकर या छोटी माता अथवा चेचकके साथ अकडन या टंकार पैदा होजाये तो स्ट्रैमोनियम फायदा करता है। बच्चे की छोटी माता, चेचक वगैरह उपसर्ग अच्छी तरह प्रकट नहीं होते, बच्चा छटपटाता है, सोया सोया रो उठता है, जिसे ही सामने पाता है, उसे ही पकड लेता है, मनुष्यको पहचान नहीं सकता। इन सभी लक्षणोंमें—स्ट्रैमोनियम फायदा करता है। छोटी माता, चेचक या किसी दूसरी तरहका उद्भेद एक बार निकलकर एकाएक यदि बैठ जाये और अकडन पैदा हो जाये—कूप्रम-मेट, और छोटी माता, चेचक प्रभृतिके उद्भेद अच्छी तरह बाहर न निकलकर, अगर विकार या अकडन पैदा हो जाये—स्ट्रैमोनियम फायदा करता है। कूप्रमकी अकडनमे मुँह और शरीरका रग नीला दिखाई देता है, स्ट्रैमोनियममे शरीरका रग लाल रहता है। ज्ञानके साथ अकड़नमे—चमकीली चीजें, रोशनी और पानी देखनेपर फिरसे टंकार पैदा हो जाता है।

उदरामय—वातश्लेष्मा ज्वर और सूतिका ज्वर भोगनेके समय अगर अतिसार हो जाये और बहुत बदबूदार दस्त आते हों तथा पाखानेके साथ पेटमें किसी तरहका दर्द न रहता

हो—स्ट्रैमोनियम फायदा करता है। सड़ी बदबू भरा मल ही-स्ट्रैमोनियमका चुनावका सहज उपाय है।

पेशाब-बन्द—टाइफायड ज्वरमें या प्रसवके बाद अगर पेशाब बन्द रहे—स्ट्रैमोनियम फायदा करता है। मूत्राशयमें पेशाब इकट्ठा होनेपर भी अगर पेशाब न हो,—ओपियम, हायोसियामस, आर्सेनिक इत्यादि फायदा करते हैं।

कामोन्माद—अगर लज्जावती साध्वी स्त्री एकाएक बहुत बकवाद करनेवाली हो जाये, अश्लील बातें कहे, कामोन्माद-का परिचय प्रदान करे, काम चरितार्थके लिये व्याकुल हो पड़े, शरीरसे एक तरहकी बदबू निकलती हो, तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

उन्मत्तता—हमेशा ही भय, अकेला और अन्धेरेमें नहीं रहना चाहता, कभी हँसता, कभी गाता, कभी गाली देता है, कसम खाता है, हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है, एक ही ढगकी बात लगातार बका करता है, बीच-बीचमें भाग जाता है (चरित्रगत लक्षणका परिच्छेद देखिये)।

सर-दर्द—सामने कपालमें और भवोंमें दर्द, यह दर्द सवेरे ६ बजे आरम्भ होता है, दो पहरतक रहता है, कानसे अच्छी तरह सुन नहीं पाता। कानकी बीमारी—कोई भी आवाज सहन नहीं होती, थोड़ी-सी आवाजमें ही चौंक उठता है।

हिपज्वायण्टकी बीमारी—उरु-सन्धिकी बीमारीमें

बायीं ओरकी उरु-सन्धिपर रोगका आक्रमण होता है, वहाँ भयानक दर्द होता है (साइलिसिया और कैल्केरिया-हाइपोफास देखिये)।

जलातंक रोग—इस बीमारीमें कोई चमकीली चीज, जैसे—काँच, आइना, पानी इत्यादि देखते ही रोगी पागलोंकी तरह बकने लगता है और अकडनकी तरह दौरा हो जाता है।

एनागेलिस—एक तरहके वृक्षसे टिंचर तैयार होता है। कुत्ता, सियार इत्यादि मारनेके कुछ दिन बाद जब रोगी पानी या किसी तरहकी चमकीली चीज देखकर डर जाता है, उस समय हमलोग कहते हैं, कि इसे हाइड्रोफोबिया या जलातक रोग हुआ है। एनागेलिस इस बीमारीकी बहुत पुरानी और लाभदायक दवा है। इस अवस्थामें रोगीको इसका मदर-टिंचर या १ म अथवा ३ री शक्तिका सेवन कराना पडता है (कन्धे और हाथमें दर्द, मूत्रनलीमें उत्तेजनाकी वजहसे रतिक्रियाकी इच्छा, पेशावका छिद्र रुका रहता है और पेशावमें जलन रहती है, कई धाराओंमें पेशाव होता है—एनागेलिस इसकी बढिया दवा है)।

सम्बन्ध—बेलेडोना और कुप्रमके बाद—स्ट्रैमोनियमके प्रयोगसे बहुत फायदा होता है, खासकर हृपिङ्ग खाँसीमें। प्रसवके बाद फूल अटक जानेकी वजहसे जरायुसे रक्तस्राव होनेके साथ ही साथ प्रलाप आदि भी वर्त्तमान रहता है। इस अवस्थामें—स्ट्रैमोनियमकी अपेक्षा—सिकेलिसे ज्यादा फायदा होता है।

क्रिया-नाशक (antidote)—एसेटिक-एसिड, बेल, हायो, नक्स, ओपि, पल्स ।

क्रम—(potency)—३०—२०० शक्ति ।

फारमुला—जर्मनी—१, अमेरिकन—४ ।

स्ट्रान्शियाना कार्बोनिका ।

(STRONTIANA CARBONICA)

(विचूर्णके आकारमें तैयार होता है)—वातका दर्द, पुराना मोच खा जानेका दर्द (Sprains), अस्थि-प्रदाह और अस्थिका जखम (इसमें फेमर अस्थिपर ही रोगका आक्रमण अधिक होता है), रातमें बहुत बेचैनी, अतिसार—रातमें लगातार पेशाबका वेग रहता है, सवेरे घट जाता है, पाखाना होने बाद बहुत देरतक मलद्वारमें जलन रहती है (रेटानहिया), पेट फूलना और पेट भारी हो जाना , पैरके तलवे और पैरकी पोटलीमें बहुत ही ऐंठन-का दर्द, हड्डीके भीतर चबानेकी तरह दर्द, पैरकी पँडीमें मोच आ आ जानेके कारण दर्द प्रभृतिकी एक बढिया दवा है ।

क्रम—६x विचूर्ण । फारमुला—७ ।

सलफर

(SULPHUR)

(गन्धक) यह महात्मा हनिमैन द्वारा आविष्कार की हुई एक प्रधान एण्टिसोरिक (सोरा-दोष नाशक) दवा है। चर्म्म और चमडेके समान जो तन्तु हैं, उनपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। सलफरके सभी उपसर्ग—गरमीसे बढ जाते हैं, ठण्डे पानीके बाहरी प्रयोगसे सर-दर्द और कभी-कभी चर्म्म-रोगकी खुजली हट जाया करती है।

विशेष-लक्षण—दुबला-पतला, कुबडा, तेजीसे चलनेवाला, तीक्ष्ण बुद्धि, जल्दबाज, मलिन, अपरिच्छन्न भाव, गन्दा, जिन्हें अकसर चर्म रोग हो जाया करते है, उनपर ही सलफरकी सबसे अधिक क्रिया होती है। सलफरके रोगी नहाना बिलकुल ही पसन्द नहीं करते, क्योंकि -इससे उनकी बीमारी बढती है। जब किसी रोगमें ठीक-ठीक दवाका प्रयोग करनेपर भी लाभ नहीं होता, उस समय २।१ मात्रा सलफरका प्रयोग करनेपर रोगीकी देहकी प्रति-क्रिया-शक्ति जाग उठती है।

चरित्रगत-लक्षण—

१। किसी तरहका उद्भेद, बाहरी दवा लगाने या स्वय ही बन्द होकर किसी बीमारीका पैदा हो जाना, रोग अच्छा हो जाता है पर कुछ दिन बाद फिर पैदा हो जाता है; २।

शरीरमें जगह-जगह आगसे जल जानेकी तरह जलन ; ३। पैर ठण्डे, पर ब्रह्मतालुमें ऐसा मालूम होता है मानो आग जल रहा है, ४। हाथ पैर—खासकर पैरके तलवेमें जलन, और इसी जलनकी वजहसे उसे हमेशा बिछावनके बाहर निकाले रखता है। ५। बार-बार अच्छी तरह शरीर धोनेपर भी उसकी बदबू नहीं जाती, ६। आधी रातके बाद रोगका बढ़ना, दिनके ११ बजनेके समय उदरमें खालीपन मालूम होना और जलन, ७। पेरकी पोटली और पैरके तलवेमें जलन और पेठन, ८। ओठ लाल, ९। दिनके समय औंघाई और रातमें नींद न आना। रातमें भर-पूर नींद न आनेके कारण आलसीभाव और तन्द्रा, १०। दिनमें दो-तीन वार सरमें चक्कर आना, ११। फेफड़ेमें बलगम इकट्ठा होकर गला घरघराना, (बायें फेफड़ेमें अधिक); सवेरे खाँसीका बढ़ना, १२। बच्चा लगातार भूखसे कातर बना रहता है, और सामने जो कुछ पाता है, वही खाता है, जिस किसी बीमारीमें भी बच्चा खानेके लिये रें-रें किया करता है, हमेशा मुँहसे खानेका पदार्थ लगाये ही रखना चाहता है, १३। क्षीण दृष्टि, १४। रातके अन्तिम भाग और सवेरेके वक्त बिना किसी तरहके दर्दके दस्त, पाखाना लगनेपर बिछावनसे उठनेमें देर सहन नहीं होती, १५। पेशाबकी जगह या मलद्वारकी खाल उधड़कर लाल हो जाती है, जहाँसे स्राव होता है वहाँकी खाल उधड़ जाती है। लाल रंगकी हो जाती है; १६। बवासीर—इसके साथ ही मलद्वारमें जलन,

खुजली, १७। पुराना प्रमेह, उसमे सफेद रगकी धातु निकलना, १८। भगोष्ठमे फुन्सियाँ, उनमे वहुत खुजली और खुजलाने वाद जलन, १६। सूखी खुजलीमें वहुत खुजलाहट, रस वहनेवाली खुजली,—वहुत सुरसुराया करती है, २०। किसी भी बीमारीमे छटपटी, शरीरमें दाह और और प्यास, ओठ और मुँह लाल रगके हो जाते हैं, रोगी केवल ठण्डी चीज पीना चाहता है और ठण्डी चीज ओठमे दवा रखना चाहता है। २१। गात्रदाह—इसलिये रोगी ठण्डेमे सोया रहना चाहता है, अथवा ठण्डी जगहमें हाथ पैर रखना चाहता है, २२। मुँह, गला सूखा, इसी वजहसे वार-वार घूँट लेता है, २३। शरीरकी त्वचा सूखी, सूखा पसीना नहीं रहता, २४। नये ज्वरमें एकोनाइट, ब्रायोनिया इत्यादिसे छटपटी घटकर जव रोगी आच्छन्न हो पडता है, २५। रक्तामाशयमे—मरकुरियस प्रभृतिके प्रयोगसे जव कूथन और शूलका दर्द घट जाता है, पर रक्त वर्त्तमान रहता है, २६। जीभके वीचका भाग सफेद, धार और किनारे लाल, २७। Eats little, drinks much (खाता कम, पीता ज्यादा है), २८। सभी काम गन्दे, ठीक ठीक नहीं करता।

मानसिक-लक्षण—सलफरके रोगीकी मनकी अवस्था कभी उत्तेजित और चिडचिडी होती है, किसीके साथ वात करना पसन्द नहीं करता, सवका ही दोष देखता है, चिकित्सक यदि उपदेश देता है तो उससे भी चिढता है। उसे

कुछ भी अच्छा नहीं लगता—किसी बातमें उसे आनन्द नहीं मिलता, लगातार थका और चिड़चिड़ाया करता है। कभी-कभी और खासकर सन्ध्याके समय मनकी अवस्था दूसरी ही तरहकी हो जाती है,—दुःखित हो जाता है, रोता है, कुछ भी साहस नहीं रहता, उसको प्रसन्न करनेका यदि कोई कुछ उपाय करता है, तो वह उपाय विफल हो जाता है। स्मरण शक्तिका घटना, नाम भूल जाता है।

उन्मत्तता—एक प्रकारका खाम ख्याल (Mania), जिसमें मामूली चीजको भी रोगी बहुत कीमती समझ लेता है। वह कपड़ेका एक टुकड़ा पहनता है, माथेपर कागजकी एक टोपी रखता है, और इसीसे अपने मनमें समझ लेता है कि वह एक राजा या रानी है। अपने सामनेकी सभी चीजोंको सुन्दर समझता है, एक टूटी लाठी या एक टुकड़ा पुराना फटा कपड़ा पहने रहता है और उसीको समझता है, कि एक बहुत बढ़िया जरदोजीके कामकी चीज है।

डा० टैल्कट कहते हैं—जब किसी उन्मादके रोगीमें उन्माद-के सभी लक्षण प्रकट नहीं होते, उस समय उसे २।१ मात्रा सलफर देनेपर मानसिक गुप्त अवस्थाएं पूर्ण भावसे प्रकाशित होने लगेगी।

पहले ही कहा है, कि सल्फर एक प्रधान एण्टिसोरिक दवा है। एण्टिसोरिकका अर्थ है—सोराविष-नाशक। अब यहाँ पाठक पूछ सकते हैं, कि सोराविष किसे कहते हैं ? [illegible]

महात्मा हैनिमैनने सब पुरानी बीमारियोंकी उत्पत्तिके तीन कारण बताये हैं, जैसे—सोरा, सिफिलिस और साइकोसिस। सोराका अर्थ है—तर और सूखी खुजली, खसडा इत्यादि (Itch, Scabies etc), सिफिलिसका अर्थ है—उपदंश, गर्मी (the venereal diseases), साइकोसिसका अर्थ है—मसा या मसोंकी तरह उद्भेद और प्रमेहकी बीमारी, अतएव किसी पुरानी बीमारीके इलाजके समय इन तीन विपयोंमेसे (the three chronic misma) कौन कौनसे शरीरमें छिपकर बैठे है, उनका पूरी तरह पता लगाकर खोजकर उनकी प्रतिविप दवा देना, जैसे एण्टि-सोरिक, एण्टि-सिफिलिटिक, एण्टि-साइकोटिक। कोई भी दवा धातुगत लक्षणोंपर निर्भरकर कुछ दिन धीरजके साथ व्यवहार करनेपर उससे वह दोप जडसे नष्ट हो जायगा अथवा उससे प्रतिक्रिया-शक्ति जागरित होनेपर दूसरी दवासे चिकित्सा द्वारा आरोग्यमे सहायता प्राप्त होगी।

हैनिमैनने अपने क्रानिक डिजीज नामक ग्रन्थमें उल्लेख किया है कि सभी पुरानी बीमारियोंमे चौदह आना भाग बीमारी "सोरासे" उत्पन्न होती है और बाकी दो आना आना-अश बीमारी "सिफिलिस" और "साइकोसिस" से उत्पन्न होती है।

चर्म-रोग—नाना प्रकारके चर्म-रोगोंमे सलफर उपयोगी है। लक्षण रोगके समान है प्रधान

एकजिमा,

कौता, दाद, तर खुजली इत्यादि सभी चर्म-रोग बहुत खुजलाते हैं। खुजलानेके समय रतिक्रियाकी तरह सुख मालूम होता है और इसके बाद भयानक जलन होती है। इस तरहके लक्षण रहनेपर, वहाँ सलफर फायदा करता है। सलफरके रोगीकी त्वचा देखनेमें बहुत ही गन्दी और मैली-कुचैली रहती है और उसको प्राय तर या सूखी खुजली हुआ करती है। सलफरके उद्भेद (eruption) के साथ—सेलिनियमके उद्भेदका बहुत अधिक सादृश्य है। सेलिनियममें—खुजलानेके बाद झुनझुनी और सलफरमें—खुजलानेके बाद जलन होती है। इन दोनोंमें यही प्रभेद है, इसका ख्याल रखना चाहिये, सलफरकी खुजली गरमीसे, बिछावनकी गरमीसे, रातमें और नहानेपर बढ़ जाती है।

अकौता—यह बीमारी अगर भीतरी दवाके सेवनसे आराम न हो तो घावपर खूब मोटा कर १ नं० अलकतरा लगा कर ऊपर कपड़ेकी राख छिड़क दे ताकि यह मोटे प्लैस्टर की तरह हो जाये। इसके बाद उसपर पान या कोमल केलेका पत्ता इत्यादि रखकर ढक देना चाहिये और कपड़ेसे बाँध रखना चाहिये। अगर ज्यादा तकलीफ न हो तो २।३ दिनोंतक यह रोज धोकर नयी पट्टी बदलते रहें। दवा १ मात्रा उच्च शक्ति सोरिनम, फाइटिस या क्रियोजोट।

कण्ठमाला—किसी भी तरहका एक दोष शरीरमें छिपा रहनेपर, उससे ही गाँठें फूलती हैं या कण्ठमाला निकलती

है। इसको अगरेजीमें स्क्राफुला कहते है। इस बीमारीमें—लसिका मराडल (Lymphatic—asmall transparent, absorbent vessel that carries lymph) पर बीमारीका आक्रमण होता है। कराठमालाके रोगीमें नीचे लिखे लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे,—माथेमें पसीना, चर्म-रोग या फोडे (boils, abscess), वरावर हुआ करते हैं, शरीर जितना लम्बा चौडा रहता है, उसके आयतनकी अपेक्षा माथा बडा रहता है। बच्चेको भूख अस्वाभाविक रहती है, खूब खानेपर भी शरीर पुष्ट नहीं होता, वह दिनो दिन दुबला होता जाता है, शरीरके चमड़ेमें सलवटे पड जाती है और वह बुड्ढेकी तरह दिखाई देता है। बच्चेका अस्थि-क्षत, मेरुदराड टेढा हो जाता है—ये ही कराठमाला धातुदोष के लक्षण है। यदि किसी रोगीमे थोडे वहुत ये सब लक्षण रहें तो पहली अवस्थामें—सलफर ज्यादा फायदा करता है, उससे रोगीका धातु-परिवर्त्तन हो जाता है। इस बीमारीमे—सलफरका धातु अगर हो तो अवश्य सलफरका प्रयोग करना चाहिये, नहीं तो ग्रेफाइटिस, साइलिसिया, लाइकोपोडियम, कैल्केरिया फास, कैल्केरिया-कार्ब इत्यादि दवाएं भी फायदा करती हैं। उनके अपने अपने अध्यायमें प्रभेद देखे ।

सुखण्डो—माताके स्तनमें दूधकी कमीके कारण ही प्राय यह बीमारी अधिक होती है। कोई विशेष कारण रहे विना शरीरकी मांस-पेशियोंका क्षय होता जाये तो उसे—मैरास्मस (सुखराडी) कहते हैं । मांसपेशी सूखी, त्वचा सिकुडी, पेट-

फूला, कब्जियत या उदरामय, पेटमें पेठनका दर्द, ज्वर, रक्त-हीनता, चेहरा गडहेमें धँसा, बहुत अधिक भूख, अच्छी तरह खानेपर भी शरीरका पुष्ट न होना, अनिद्रा, एकदम जीर्ण-शीर्ण, सिर्फ हड्डी ही हड्डी रह गयी हो, त्वचा सूखी, खुरखुरी प्रभृति इस रोगके लक्षण है, बच्चोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

शरीरका आयतन छोटा, शरीर सूखा, दिनके १०।११ बजेके समय भयानक भूख, माथेका ब्रह्मतालु गरम, पर दोनो पैर ठण्डे, ये ही सलफरके लक्षण है। केवल माथेका ब्रह्मतालु गरम—इस लक्षणमें—कैल्केरिया या फास्फोरस फायदा करता है। पर बहुत ही जीर्ण-शीर्ण और आकारमें छोटा, बुड्ढोकी तरह चेहरा—इन सब लक्षणोंमें—ओपियम फायदा करता है। आर्सेनिकमें—रोगीको पतले दस्त आया करते है और उसके शरीरकी त्वचा पीली दिखाई देती है। सल्फरमें—कब्जियत ही रहती है (एब्रोटेनम अध्याय देखिये)।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमे जलसचय)—इस बीमारीमें—एपिस,एपोसाइनम, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, हेलिबोरस, आयोडम, सल्फर, जिङ्कम, प्रभृति और भी कई दवाओंका व्यवहार होता है। कण्ठमाला धातुकी बीमारीमें—सल्फर उपयोगी है। इस रोगके रस-क्षरण (stage of exudation) मे सलफरकी तरह—एपिस भी लाभदायक है। अगर पहले एपिसका प्रयोग कर कोई फायदा न हो, तो अन्तमें प्रायः

है। इसको अगरेजीमें स्क्राफुला कहते हैं। इस बीमारीमें—लसिका मण्डल (Lymphatic—asmall transparent, absorbent vessel that carries lymph) पर बीमारीका आक्रमण होता है। कण्ठमालाके रोगीमें नीचे लिखे लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे,—माथेमे पसीना, चर्म-रोग या फोडे (boils, absc ess), बराबर हुआ करते हैं, शरीर जितना लम्बा चौडा रहता है, उसके आयतनकी अपेक्षा माथा बडा रहता है। बच्चेको भूख अस्वाभाविक रहती है, खूब खानेपर भी शरीर पुष्ट नहीं होता, वह दिनो दिन दुबला होता जाता है, शरीरके चमडेमे सलवटें पड जाती हैं और वह बुड्ढे की तरह दिखाई देता है। बच्चेका अस्थि-क्षत, मेरुदण्ड टेढा हो जाता है—ये ही कण्ठमाला धातुदोष के लक्षण हैं। यदि किसी रोगीमे थोडे बहुत ये सब लक्षण रहें तो पहली अवस्थामें—सलफर ज्यादा फायदा करता है, उससे रोगीका धातु-परिवर्त्तन हो जाता है। इस बीमारीमे—सलफरका धातु अगर हो तो अवश्य सलफरका प्रयोग करना चाहिये, नहीं तो ग्रैफाइटिस, साइलिसिया, लाइकोपोडियम, कैल्केरिया फास, कैल्केरिया-कार्ब इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती हैं। उनके अपने अपने अध्यायमें प्रभेद देखे ।

सुखण्डी—माताके स्तनमें दूधकी कमीके कारण ही प्राय यह बीमारी अधिक होती है। कोई विशेष कारण रहे विना शरीरकी मांस-पेशियोंका क्षय होता जाये तो उसे—मैरास्मस (सुखण्डी) कहते हैं। मासपेशी सूखी, त्वचा सिकुडी, पेट-

फूला, कब्जियत या उदरामय, पेटमें पेठनका दर्द, ज्वर, रक्त-हीनता, चेहरा गड्ढेहेमें धँसा, बहुत अधिक भूख, अच्छी तरह खानेपर भी शरीरका पुष्ट न होना, अनिद्रा, एकदम जीर्ण-शीर्ण, सिर्फ हड्डी ही हड्डी रह गयी हो, त्वचा सूखी, खुरखुरी प्रभृति इस रोगके लक्षण हैं, बच्चोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

शरीरका आयतन छोटा, शरीर सूखा, दिनके १०।११ बजेके समय भयानक भूख, माथेका ब्रह्मतालु गरम, पर दोनों पैर ठण्डे, ये ही सलफरके लक्षण हैं। केवल माथेका ब्रह्मतालु गरम—इस लक्षणमें—कैल्केरिया या फास्फोरस फायदा करता है। पर बहुत ही जीर्ण-शीर्ण और आकारमें छोटा, बुड्ढोंकी तरह चेहरा—इन सब लक्षणोंमें—ओपियम फायदा करता है। आर्सेनिकमें—रोगीको पतले दस्त आया करते हैं और उसके शरीरकी त्वचा पीली दिखाई देती है। सलफरमें—कब्जियत ही रहती है (एब्रोटेनम अध्याय देखिये)।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमें जलसंचय)—इस बीमारीमें—एपिस, एपोसाइनम, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, हेलिबोरस, आयोडम, सलफर, जिङ्कम, प्रभृति और भी कई दवाओंका व्यवहार होता है। कण्ठमाला धातुकी बीमारीमें—सलफर उपयोगी है। इस रोगके रस-क्षरण (stage of exudation) में सलफरकी तरह—एपिस भी लाभदायक है। अगर पहले एपिसका प्रयोग कर कोई फायदा न हो, तो अन्तमें प्राय

है। इसको अगरेजीमे स्क्राफुला कहते है। इस बीमारीमे—लसिका मण्डल (Lymphatic—asmall transparent, absorbent vessel that carries lymph) पर बीमारीका आक्रमण होता है। कण्ठमालाके रोगीमे नीचे लिखे लक्षण दिखाई देते है, जैसे,—माथेमे पसीना, चर्म-रोग या फोडे (boils, abscess), बराबर हुआ करते है, शरीर जितना लम्बा चौडा रहता है, उसके आयतनकी अपेक्षा माथा बडा रहता है। बच्चेको भूख अस्वाभाविक रहती है, खूब खानेपर भी शरीर पुष्ट नहीं होता, वह दिनो दिन दुबला होता जाता है, शरीरके चमडेमे सलवटें पड जाती है और वह बुड्ढे की तरह दिखाई देता है। बच्चेका अस्थि-क्षत, मेरुदण्ड टेढ़ा हो जाता है—ये ही कण्ठमाला धातुदोष के लक्षण है। यदि किसी रोगीमे थोडे बहुत ये सब लक्षण रहें तो पहली अवस्थामे—सलफर ज्यादा फायदा करता है, उससे रोगीका धातु-परिवर्त्तन हो जाता है। इस बीमारीमे—सलफरका धातु अगर हो तो अवश्य सलफरका प्रयोग करना चाहिये, नहीं तो ग्रैफाइटिस, साइलिसिया, लाइकोपोडियम, कैल्केरिया फास, कैल्केरिया-कार्ब इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती है। उनके अपने अपने अध्यायमें प्रभेद देखे।

सुखण्डी—माताके स्तनमें दूधकी कमीके कारण ही प्राय: यह बीमारी अधिक होती है। कोई विशेष कारण रहे बिना शरीरकी माँस-पेशियोका क्षय होता जाये तो उसे—मेरास्मस (सुखण्डी) कहते हैं। मांसपेशी सूखी, त्वचा सिकुडी, पेट-

फूला, कब्जियत या उदरामय, पेटमें पेठनका दर्द, ज्वर, रक्त-हीनता, चेहरा गडहेमें धँसा, बहुत अधिक भूख, अच्छी तरह खानेपर भी शरीरका पुष्ट न होना, अनिद्रा, एकदम जीर्ण-शीर्ण, सिर्फ हड्डी ही हड्डी रह गयी हो, त्वचा सूखी, खुरखुरी प्रभृति इस रोगके लक्षण हैं, बच्चोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

शरीरका आयतन छोटा, शरीर सूखा, दिनके १०।११ बजेके समय भयानक भूख, माथेका ब्रह्मतालु गरम, पर दोनों पैर ठण्डे, ये ही सलफरके लक्षण हैं। केवल माथेका ब्रह्मतालु गरम—इस लक्षणमें—कैल्केरिया या फास्फोरस फायदा करता है। पर बहुत ही जीर्ण-शीर्ण और आकारमें छोटा, बुड्ढोंकी तरह चेहरा—इन सब लक्षणोंमें—ओपियम फायदा करता है। आर्सेनिकमें—रोगीको पतले दस्त आया करते हैं और उसके शरीरकी त्वचा पीली दिखाई देती है। सलफरमें—कब्जियत ही रहती है (एब्रोटेनम अध्याय देखिये)।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमें जलसचय)—इस बीमारीमें—एपिस,एपोसाइनम, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, हेलिबोरस, आयोडम, सलफर, जिङ्कम, प्रभृति और भी कई दवाओंका व्यवहार होता है। कण्ठमाला धातुकी बीमारीमें—सल्फर उपयोगी है। इस रोगके रस-क्षरण (stage of exudation) में सलफरकी तरह—एपिस भी लाभदायक है। अगर पहले एपिसका प्रयोग कर कोई फायदा न हो, तो अन्तमें प्रायः

है। इसको अगरेजीमें स्काफुला कहते हैं। इस बीमारीमे—लसिका मण्डल (Lymphatic—asmall transparent, absorbent vessel that carries lymph) पर बीमारीका आक्रमण होता है। कण्ठमालाके रोगीमें नीचे लिखे लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे,—माथेमें पसीना, चर्म-रोग या फोडे (boils, abscess), बराबर हुआ करते हैं, शरीर जितना लम्बा चौडा रहता है, उसके आयतनकी अपेक्षा माथा बडा रहता है। बच्चेको भूख अस्वाभाविक रहती है, खूब खानेपर भी शरीर पुष्ट नहीं होता, वह दिनों दिन दुबला होता जाता है, शरीरके चमडेमें सलवटें पड जाती हैं और वह बुड्ढेकी तरह दिखाई देता है। बच्चेका अस्थि-क्षत, मेरुदण्ड टेढ़ा हो जाता है—ये ही कण्ठमाला धातुदोष के लक्षण है। यदि किसी रोगीमे थोडे बहुत ये सब लक्षण रहें तो पहली अवस्थामे—सलफर ज्यादा फायदा करता है, उससे रोगीका धातु-परिवर्त्तन हो जाता है। इस बीमारीमे—सलफरका धातु अगर हो तो अवश्य सलफरका प्रयोग करना चाहिये, नहीं तो ग्रैफाइटिस, साइलिसिया, लाइकोपोडियम, कैल्केरिया-फास, कैल्केरिया-कार्ब इत्यादि दवाएँ भी फायदा करती है। उनके अपने अपने अध्यायमे प्रभेद देखें।

सुखण्डी—माताके स्तनमे दूधकी कमीके कारण ही प्राय यह बीमारी अधिक होती है। कोई विशेष कारण रहे बिना शरीरकी माँस-पेशियोंका क्षय होता जाये तो उसे—मैरास्मस (सुखण्डी) कहते है। मासपेशी सूखी, त्वचा सिकुडी, पेट-

फूला, कब्जियत या उदरामय, पेटमें पेठनका दर्द, ज्वर, रक्त-हीनता, चेहरा गड्ढेमें धँसा, बहुत अधिक भूख, अच्छी तरह खानेपर भी शरीरका पुष्ट न होना, अनिद्रा, एकदम जीर्ण-शीर्ण, सिर्फ हड्डी ही हड्डी रह गयी हो, त्वचा सूखी, खुरखुरी प्रभृति इस रोगके लक्षण हैं, बच्चोंको ही यह बीमारी ज्यादा हुआ करती है।

शरीरका आयतन छोटा, शरीर सूखा, दिनके १०।११ बजेके समय भयानक भूख, माथेका ब्रह्मतालु गरम, पर दोनों पैर ठण्डे, ये ही सलफरके लक्षण हैं। केवल माथेका ब्रह्मतालु गरम—इस लक्षणमें—कैल्केरिया या फास्फोरस फायदा करता है। पर बहुत ही जीर्ण-शीर्ण और आकारमें छोटा, बुड्ढोंकी तरह चेहरा—इन सब लक्षणोंमें—ओपियम फायदा करता है। आर्सेनिकमें—रोगीको पतले दस्त आया करते हैं और उसके शरीरकी त्वचा पीली दिखाई देती है। सलफरमें—कब्जियत ही रहती है (एब्रोटेनम अध्याय देखिये)।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमें जलसञ्चय)—इस बीमारीमें—एपिस, एपोसाइनम, कैल्केरिया-कार्ब, कैल्केरिया-फास, हेलिबोरस, आयोडम, सल्फर, जिङ्कम, प्रभृति और भी कई दवाओंका व्यवहार होता है। कण्ठमाला धातुकी बीमारीमें—सलफर उपयोगी है। इस रोगके रस-क्षरण (stage of exudation) में सलफरकी तरह—एपिस भी लाभदायक है। अगर पहले एपिसका प्रयोग कर कोई फायदा न हो, तो अन्तमें प्रायः

सलफरसे फायदा होता है। जबतक मस्तिष्कका प्रदाह वर्तमान रहता है अर्थात बच्चा सो नहीं सकता, एकाएक चिल्लाकर रो उठता है, (piercing shriek) तबतक एपिस फायदा करता है। टियुबर्क्युलर हाइड्रोकेफालस (Tubercular-Hydrocephalus) की पहली अवस्थामें टकारकी तरह भयानक बेहोशी आती है, माथा झुक पडता है। सोया सोया चिल्लाकर रो उठता है, मानो बहुत डर गया है, चेहरा लाल हो जाता है। सब ही सलफरके लक्षण हैं। इसके अलावा, कितने ही स्थानोंपर उक्त सलफरके भी लक्षण नहीं रहते, पर ऐसी जगहपर भूलसे बेले-डोना न दे बैठें। हेलिबोरस भी—इस बीमारीकी सुन्दर दवा है; उसमें भी बच्चा एकदम अज्ञान-अचैतन्य भावसे पडा रहता है, पेशाब बन्द रहता है, शरीरका एक एक अंश फडका करता है (automatic motion), मुँह इस तरह हिलाता है, मानो कुछ चबा रहा है। रोगीको देखनेपर ऐसा नहीं मालूम होता कि प्यास लगी है, पर पानी देनेसे ही बडे आग्रहसे पीता है। सलफर और कैल्केरिया-फास हाइड्रोकेफालस रोगकी प्रतिषेधक (preventive) दवाएँ हैं। अगर पेशाब बन्द होकर हाइड्रोकेफालस हो जाये—हेलिबोरस और सलफर दोनों ही फायदा करते हैं।

हाइड्रोकेफालयेड—(हाइड्रोकेफालसकी अवस्था प्राप्त)—बच्चोंके हैजामें, बच्चोंको प्राय ऐसी ही अवस्था दिखाई देती है, यहाँतक कि बच्चेको स्वाभाविक पाखाना पेशाब होकर

भी भयानक छटपटीके साथ पहलेकी तरह दस्त-कै आरम्भ होकर अन्तमें अवस्था बहुत ही शोचनीय हो जाती है। उस समय इस ढग की छटपटी देखनेपर एकाएक एकोनाइटकी याद आ जाती है। पर एकोनाइट हाइड्रोकेफालायड अवस्थाके लिये बिलकुल ही उपयोगी नहीं है। यहाँ बल्कि—एसिड-कार्बोलिकका प्रयोग किया जा सकता है। हाइड्रोकेफालयेडमें—बच्चा अघोर भावसे पडा रहता है। उस समय कपालमें खूब अधिक ठण्डा पसीना होता है। पर यह ठण्डा पसीना और हिमांग अवस्थाके लक्षण आदि देखकर, वेरेट्रम देनेपर कुछ भी फायदा न होगा, क्योंकि यह हाइड्रोकेफालायेड अवस्था है। ऊपर लिखे लक्षणोंके साथ पेशाब बन्द, आँखें उलटी, एकाएक रो उठना, दस्त-कै या सभी स्राव बन्द, अंगका स्पन्दन इत्यादि लक्षण रहनेपर—सलफरसे बहुत फायदा होगा। यहाँ कभी भी—बेलेडोना, एपिस, रसटक्स प्रभृति दवा का नाम भी न ले. नहीं तो आप रोग और रोगी दोनोंको ही खो बैठेंगे। इस अवस्थामें पेशाब बन्द होना, हाथ-पैर ठण्डे होना, केवल पंजरे गरम रहना बहुत ही बुरा लक्षण है।

सर्दी-खाँसी—पुरानी सर्दी खाँसीके साथ स्वरभंग, गला फँस जाना, लगातार खाँसी इत्यादि लक्षणोंमें सल्फर फायदा करता है (ड्रोसेरा, वार्वेस्कम इत्यादिमें भी इसी तरहकी खाँसी आती है)। सल्फरके रोगीकी नाकसे पानी गिरता है, नाक फूलती है, नाकमें सूखी पपडी जमती है, नाककी ठोरकी खाल उधड़कर लाल हो जाती है।

ब्राङ्काइटिस—(श्वासनली-प्रदाह)—इस बीमारीकी पुरानी अवस्थामें जब पीवकी तरह बलगम निकलता है, फेफड़ेमें बहुत अधिक बलगम इकट्ठा होता है, रोगी बहुत ज्यादा खाँसता है, कभी कभी खाँसते-खाँसते कै भी हो जाती है, सोनेपर खाँसी उठती है, उस समय सलफर फायदा करता है।

निमोनिया—(फेफड़े का-प्रदाह)— इस बीमारीकी पहली अवस्थामें जब फेफड़ेके रक्तकी ज्यादती होती है, उस समय सलफरके विशेष लक्षण रहनेपर सलफरके सेवनसे बीमारी प्राय आरोग्य हो जाती है। एकजूडेशन (झिल्ली-आदिसे एक तरहका रस क्षरण) आरम्भ होनेपर—सलफरके प्रयोगसे बीमारीका बढना रुक जाता है, उसके अलावा बहुत दिनोंतक रेजोल्यूशन (स्वाभाविक नियमसे बीमारीका धीरे-धीरे घटना) न होनेपर भी इससे बहुत जल्द फायदा होता है। अन्तिम अवस्थामें यदि ऐसा दिखाई दे कि फेफड़ेकी अवस्थामें किसी तरहका भी परिवर्तन नहीं होता, फेफड़ेके तन्तु सब बहुत जल्द ही नष्ट हो जायँगे, उस समय भी—सलफरसे फायदा होता है। सलफरमें—स्टेथसकोपसे वक्ष परीक्षा करनेपर फेफड़ेके सभी स्थानमें ही श्लेष्माके राल्स (घर-घर शब्द) सुनने पड़ते हैं, बलगममें पीव मिला रहता है। बार बार ज्वर बना रहता है। अब स्पष्ट मालूम होता है कि निमोनियाकी प्राय सभी अवस्थाओंमें ही सलफरका प्रयोग किया जाता है। और बहुतसे रोगियों

ी जानको बच जाया करती है। निमोनियाके साथ बेतरह
वर, हाथ-पैरमे, खासकर पैरके तलवेमे जलन, शरीरमे दाह,
ट्पटी, माथेमे जलन, हमेशा ही शरीरपर ठण्डा पानी प्रयोग
रनेको इच्छा या ठण्डी जगहको खोजना, बीमारी बायें फेफडेपर
धिक आक्रमण करती है। ये सब लक्षण रहनेपर—सलफर उच्च
क्ति, २०० या उससे अधिक एक मात्रा प्रयोगकर फलाफलके
लिये दो एक दिन राह देखे, उससे निश्चय ही फायदा होगा।
गर बहुत ज्यादा पीबकी तरह बलगम निकलता हो—सैंगुने-
रिया और वक्षकी कमजोरीके साथ मीठे स्वादका बलगम
निकलता हो तो—स्टैनम उपयोगी है।

द्रष्टव्य—छोटे बच्चोंके ब्रांको-निमोनियामे सलफर बहुत
समझ-बूझकर प्रयोग करें, क्योंकि औषधकी क्रियाकी वजहसे
रोग वृद्धि (aggravation) होनेपर कितनीही बार उसीसे
रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

प्लुरिसि—(फुसफुस आवरक पर्देका प्रदाह) इस
बीमारीमें रस क्षरण अर्थात प्लुराका जल शोषण करनेके लिये
एपिस ही महौषध है। सलफर भी खूब फायदा करता है। सुई
गडनेकी तरह दर्द—बाये फेफडेके भीतरसे पीठ देश या बायीं
कन्धास्थिमे परिचालित होनेपर—सल्फरसे विशेष लाभ होता
है। रोगी अगर चित सोया रहता है तो तकलीफ बढ जाती है।

आँखकी बीमारी—फोटोफोबिया (रोशनीका सहन

ब्राङ्काइटिस—(श्वासनली-प्रदाह)—इस बीमारीकी पुरानी अवस्थामे जब पीवकी तरह बलगम निकलता है, फेफड़ेमें बहुत अधिक बलगम इकट्ठा होता है, रोगी बहुत ज्यादा खाँसता है, कभी कभी खाँसते-खाँसते कै भी हो जाती है, सोनेपर खाँसी उठती है, उस समय सलफर फायदा करता है।

निमोनिया—(फेफड़े का-प्रदाह)— इस बीमारीकी पहली अवस्थामे जब फेफड़ेके रक्तकी ज्यादती होती है, उस समय सलफरके विशेष लक्षण रहनेपर सलफरके सेवनसे बीमारी प्राय आरोग्य हो जाती है। एकजूडेशन (झिल्ली-आदिसे एक तरहका रस क्षरण) आरम्भ होनेपर—सलफरके प्रयोगसे बीमारी का बढ़ना रुक जाता है , उसके अलावा बहुत दिनोंतक रेजोल्यूशन (स्वाभाविक नियमसे बीमारीका धीरे-धीरे घटना) न होनेपर भी इससे बहुत जल्द फायदा होता है। अन्तिम अवस्थामें यदि ऐसा दिखाई दे कि फेफड़ेकी अवस्थामे किसी तरह का भी परिवर्तन नहीं होता, फेफड़ेके तन्तु सब बहुत जल्द ही नष्ट हो जायेंगे, उस समय भी—सलफरसे फायदा होता है सलफरमें—स्टेथसकोपसे वक्ष परीक्षा करनेपर फेफड़ेके सभी स्थानमें ही श्लेष्माके राल्स (फर-फर शब्द) सुनने पड़ते हैं बलगममें पीव मिला रहता है। बार बार ज्वर बना रहता है अत स्पष्ट मालूम होता है कि निमोनियाकी प्राय सभी अवस्थाओंमें ही सल्फरका प्रयोग किया जाता है। और बहुतसे रोगियों

की जानको बच जाया करती है। निमोनियाके साथ बेतरह ज्वर, हाथ-पैरमें, खासकर पैरके तलवेमें जलन, शरीरमें दाह, छटपटी, माथेमें जलन, हमेशा ही शरीरपर ठण्डा पानी प्रयोग करनेकी इच्छा या ठण्डी जगहको खोजना, बीमारी बायें फेफड़ेपर अधिक आक्रमण करती है। ये सब लक्षण रहनेपर—सलफर उच्च शक्ति, २०० या उससे अधिक एक मात्रा प्रयोगकर फलाफलके लिये दो एक दिन राह देखे, उससे निश्चय ही फायदा होगा। अगर बहुत ज्यादा पीबकी तरह बलगम निकलता हो—सैंगुनेरिया और वक्षकी कमजोरीके साथ मीठे स्वादका बलगम निकलता हो तो—स्टैनम उपयोगी है।

द्रष्टव्य—छोटे बच्चोंके ब्रांको-निमोनियामें सलफर बहुत समझ-बूझकर प्रयोग करें, क्योंकि औषधकी क्रियाकी वजहसे रोग वृद्धि (aggravation) होनेपर कितनीही बार उसीसे रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

प्लुरिसि—(फुसफुस आवरक पर्देका प्रदाह) इस बीमारीमें रस क्षरण अर्थात प्लुराका जल शोषण करनेके लिये एपिस ही महौषध है। सलफर भी खूब फायदा करता है। सुई गड़नेकी तरह दर्द—बायें फेफड़ेके भीतरसे पीठ देश या बायीं स्कन्धास्थिमें परिचालित होनेपर—सल्फरसे विशेष लाभ होता है। रोगी अगर चित सोया रहता है तो तकलीफ बढ़ जाती है।

आँखकी बीमारी—फोटोफोबिया (रोशनीका सहन

न होना)—रोशनीकी तरफ देखनेपर आँखकी तकलीफ बढती हैं, रातमे तकलीफ बहुत बढ जाती है, आँखके भीतर काँटा गडनेकी तरह दर्द होता है, आँख करकराती है, मानो आँखके भीतर बालू गिर गयी है, आँखके भीतर और पलकोंमें करकराहट होती है, जलन होती है, रोगी आँख या चेहरेमे पानी लगानेसे डरता है, क्योंकि उससे तकलीफ और भी बढती है। एक दूसरी तरहकी भी आँखकी बीमारी होती है—उसमे रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो काले-काले बिन्दु सब तैर रहे हैं, पढने-के समय आँखमे थकावट आ जाती है। वात या गर्मीकी बीमारीकी वजहसे पैदा हुई चक्षुतारका प्रदाह (Iritis) की बीमारी और आँखमें कुछ उडकर गिर जानेके कारण चक्षु-प्रदाह (Conjunctivitis) होनेपर सलफरसे फायदा होगा।

कानकी बीमारी—किसी तरह कुछ सुन नहीं पडता, मानो कानके भीतरसे नाना प्रकारकी आवाजे आती है। कानके भीतर एकजिमा, बहुत खुजलाता है, इसके साथ ही बहरापन। कानमें पीव, उसमें बदबू रहनेपर सलफरका प्रयोग करना चाहिये।

नाककी-बीमारी—नाकका भीतरी अंश लाल रंगका, सूखा, बहुत खुजलाता है। जो स्राव निकलता है, बदबूदार रहता है।

अजीर्णकी बीमारी—दूध पीना, घी तथा श्वेतसारमय जैसे पदार्थ और आलू, मैदा, आटा प्रभृति खानेके कारण अम्ल

ौर अजीर्णकी बीमारी होनेपर—सलफर फायदा करता है। :समें खट्टी डकार आती है, उसका स्वाद खट्टा रहता है, कभी-कभी तीता हो जाता है। सर्वग्रासी भूख—रोगी खाने बैठता है पर रक ग्रास खाते न खाते ऐसा मालूम होता है, कि पेट भर गया, फिर खानेकी इच्छा ही नहीं रह जाती। इसका एक प्रधान लक्षण है—दिनके १०।११ बजेके समय रोगी समझता है कि उसके पेटमें कुछ भी नहीं है, सब खाली हो रहा है, मानो बहुत दिनोंसे खाया ही नहीं है, इतना सुस्त हो पड़ता है कि क्षण भरका विलम्ब सहन नहीं कर सकता। जल्दी-जल्दी कुछ न कुछ खा लेना पड़ता है, और खा लेनेके बाद आराम मालूम होता है। सलफरमें—पेटमें वायु इकट्ठा होता, पेट फूल उठता है, पेटके भीतर कलकल गड़गड़ आवाज होती है। पेटमें दर्द होता है, हाथसे छूने नहीं देता, डकार आती है, वायु निकलता है, उसमें सड़े अण्डेकी तरह बदबू आती है, छातीमें जलन होती है। उदरकी सभी बीमारियोंमें नक्सके बाद यह फायदा करता है।

कब्जियत—कब्जियतके साथ ऐसा मालूम होता है, मानो पेटके बायीं तरफ न जाने कितना वायु इकट्ठा हो रहा है, तलपेट बहुत भारी, नीचेकी ओर पेटमें खींच रखनेकी तरह एक प्रकारका दर्द होता है, इसीलिये सीधा होकर खड़ा या चल नहीं सकता। बुड्ढेकी तरह कुबड़ा होकर खड़ा रहता है या चलता है। सलफर—नयीकी अपेक्षा पुरानी कब्जियतमें ज्यादा फायदा करता है। पाखाना लग आता है (बहुत कुछ नक्सकी

तरह)—उस समय ऐसा मालूम होता है, मानो पेटमें न जाने कितना मल इकट्ठा है, पाखाने जाता है, वेग देता है पर दस्त बहुत थोड़ा होता है, खुलासा नहीं होता।

अतिसार—सलफरमें पाखानेका रंग—हरा-पीला और पीवकी तरह फेन भरा और अजीर्ण-मिला, दस्त चाहे कैसा भी क्यों न आये, उसमें बहुत सड़ी गन्ध रहती है, कभी-कभी खट्टी गन्ध आती है, मल गरम, लगातार पाखाना होकर मलद्वारकी खाल उधड़ जाती है। पेटमें दर्द रह भी सकता है, और नहीं भी रह सकता है। सलफरमें—रातके अन्तिम भागसे दस्त आरम्भ होकर दिनके १०।११ बजेके बाद बन्द हो जाते हैं, पाखाना लगनेपर एक मिनिटकी भी देर सहन नहीं होती, तुरन्त दौड़कर पाखाने जाना पड़ता है, इसके अलावा इसमें पाखाना लगकर रोगीकी नींद खुलती है, बच्चोंके दाँत निकलनेके समयके पतले दस्त अर्थात अतिसारमें और किसी तरहका उद्भेद निकलना बन्द होकर अतिसार इत्यादि होनेपर सलफर ज्यादा फायदा करता है। पोडोफाइलम, एलो, ब्रायोनिया, नेट्रम-सल्फ, नूफर-लूटिया, रियुमेक्स प्रभृति दवाएँ सवेरेके वक्तके उदरामयकी दवाएँ हैं। उनका प्रभेद उनके अध्यायमें देखिये। नींद खुलते ही पाखाना लग आता है। इसमें अगर सलफरसे फायदा न हो तो—लैकेसिसकी परीक्षा करें।

आमाशय—पुराने आमाशयमें—मलके ऊपर लाल रंग-

का रङ्गका दाग, दस्त आते-आते सो जाना, मलमें केवल पीव, मलकी गन्ध नहीं रहती, बहुत भूख—केवल खाऊँ खाऊँ किया करता है। पाखाना होने बाद कुछ खाना ही चाहिये। इन सब लक्षणोंमें अगर कोई एक लक्षण भी मिले तो—सलफर अवश्य प्रयोग करें।

ज्वर—एक-ज्वर, सविराम, अविराम, वातश्लेष्मा, सूतिका, रक्तदूषित (सेप्टिक) प्रभृति सब तरहके ज्वरोंमें ही विशेष लक्षण रहनेपर—सलफर उपयोगी है। सविराम या अविराम ज्वरमें—जब ज्वर कुछ देरके लिये भी नहीं छूटता, सन्ध्यासे ज्वर बढ़ जाता है, और सवेरे कुछ कम रहता है, पसीना जरा भी नहीं होता, ठण्डा पानी पीनेकी बहुत इच्छा, शरीरमें जलन और पैरके तलवेमें भयानक जलन, आँख, मुँह और कानसे आगकी लपट निकलती है, नींद बिल्कुल ही नहीं आती, बहुत छटपटी, ओंठका रंग लाल रहता है, उस समय सलफरकी एक मात्रासे अभूतपूर्व उपकार होता है।

इरप्टिव-ज्वर—(जिस ज्वरके साथ उद्भेद निकलते हैं, उसे इरप्टिव ज्वर कहते हैं)। यदि ऐसा दिखाई दे कि उद्भेद भरपूर नहीं निकले या शरीरके किसी एक अंशमें थोड़ेसे निकले हैं, तो—सलफर फायदा करता है।

सविराम ज्वर—सलफरमें दिन-रातके बीचके समयमें सभी समय ज्वर आ सकता है ; पर इसमें शामको ही ज्वर

अधिक आता है। ज्वरकी पूर्वावस्थामे—तेज प्यास। शीतावस्थामे बहुत अधिक शीत, कभी-कभी कपकपी हो जाती है, कभी नहीं भी होती, सरमे दर्द रहता है, वदन ठण्डा रहता है, प्यास नहीं रहती। उत्तापावस्थामे—भयानक उत्ताप, वदनमे जलन, पैरके तलवेमे जलन, वीच-वीचमे शरीरके भीतर मानो आगकी लपट निकलती है। पसीनेवाली अवस्थामे—सवेरे नींद खुलनेके बाद पसीना होता है। माथेके पिछले भागमें अधिक पसीना, ज्वर छूटनेपर भी माथेके ब्रह्मतालुकी जलन नहीं छूटती, पसीनेमे गन्धककी गन्ध रहती है। रातमे अधिक पसीना, (वायना, फास, साइलि), थोडी-सी उत्तेजना होनेपर भी पसीना (पन्थ्रा, कैल्के-कार्ब, हिपर, फास, साइलि)।

अर्श—इस रोगमे सलफरका धातुगत लक्षण रहनेपर तो कोई वात ही नहीं,—सलफरसे ही बीमारी आराम हो जाती है। रोग बहुत दिनोका पुराना होनेपर, खासकर नक्स-वोमिकाके बाद सलफरका प्रयोग होनेसे बहुत फायदा होता है। इसमे मलद्वारमे डक मारनेकी तरह दर्द, जलन, कुटकुटाहट प्रभृति कितने ही लक्षण रहते हैं। अर्शका रक्तस्राव बन्द होकर अगर सर-दर्द प्रभृति बीमारियाँ हो जायें तो सलफर फायदा करता है।

प्रमेह—इस बीमारीमे पेशाब करनेके समय जलन रहे और पेशाबके द्वारमे चारो ओर लाल हो जाये, तो स्राव चाहे जैसा भी क्यो न हो,—सल्फरसे फायदा होगा।

सलफर-आयोड (Sulphur Iod)—दुरारोग्य चर्मरोग, हजामत बनवानेपर खुजलीके दाने निकल आना और मुँहासेकी यह एक उत्कृष्ट दवा है।

वृद्धि (aggravation)—दबानेपर, छूनेपर, हिलानेसे, जलीय तर हवामें, उत्तापसे, स्नान करनेपर, ठण्डा पीनेपर (प्यास) दूध पीनेसे और ऋतुके समय और आधी रातके बाद।

ह्रास (amelioration)—सूखी गर्म हवामें, दाहिनी करवट सोनेपर, गरम खानेपर, ठण्डा पानीका प्रयोग करनेपर (सर दर्द।)

सम्बन्ध—एलो और सोरिनमके साथ सल्फरका अनुपूरक सम्बन्ध है। सलफरके पहले कैल्केरियाका व्यवहार मना है। निमोनिया तथा दूसरी दूसरी नयी बीमारियोंमें—एकोनाइटके बाद सल्फर बहुत फायदा करता है। लाइकोके बाद सल्फर; पर सलफरके बाद लाइकोपोडियमका प्रयोग एकदम मना है। (Sulph follows Lyco but Lyco does not follow sulph —Kent)

बादकी दवा (follows well)—एल्यूम, एपिस, बेल, ब्रायो, बोरेक्स, कैल्के, कार्बो, ग्रैफा, गुयेक, सैम्बु, नक्स, पल्स, फास, पोडो, रस।

क्रियानाशक (antidote)—एकोन, कैम्फर, आर्स, कैमो, चायना, कोनि, कास्टि, नक्स, मार्क, पल्स, रस, सिलि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—४०—६० दिन।
क्रम—३०—२०० और इससे भी ऊँचा क्रम।
फारमुला—टिंचर—६ बी, विचूर्ण—७।

सिम्फाइटम आफिसिनेल।

(SYMPHYTUM OFFICINALE)

(आफुला गाछकी जड़से टिंचर तैयार होता है।) शरीरके किसी स्थानकी हड्डी अगर किसी कारणसे टूट जाये तो जुड़ जानेके लिये इसका व्यवहार होता है—२६२ पृष्ठमें आर्निका ४३५ पृष्ठमें—कैलेण्डुला और ६७७ पृष्ठमें लिडमका अध्याय देखिये। इसका भीतरी और बाहरी दोनों ही प्रयोग होता है, बाहरी प्रयोग-के लिये चोटवाली जगहपर मदर-टिंचर या इसका लिनिमेण्ट प्रयोग करें।

क्रम—६x—६ शक्ति। फारमुला—३।

सिफिलिनम।

(SYPHILINUM)

(यह उपदंशके जखमके विषसे तैयार होता है)—यह एक नोसोड जातिकी दवा है। किसी बीमारीका संक्रामक विष,

या बीजसे, उसी रोगकी दवा तैयार होनेपर, उसको अग-
में—नोसोड्स (Nosodes) कहते हैं। आजकल इस दवाकी
त सी नोसोड्स दवाओंका आविष्कार हुआ है। उनमें पन्थ्रा-
नम, बेसिलिनम, ट्यूबर्क्यूलिनम, मोरिनम, वेरियोलिनम,
स्सिनिनम, मेलाण्ड्रिनम और यह सिफिलिनम और मेडोरिनम—
कई दवाओंके विषयमें इस पुस्तकमें कुछ आलोचना की गयी
। नोसोड्स दवाएँ नयी और पुरानी दोनों तरहकी बीमारियोंके
कासमें आती हैं। सिफिलिनम—सेकेण्डरी और टार्सियरी
फिलिसमें ही सम्भवतः ज्यादा फायदा करती है। उपदंश-विषसे
षित धातुवाले मनुष्योंकी बीमारीमें जब किसी दूसरी दवासे
ायदा नहीं होता या स्थायी लाभ नहीं होता, उस समय बीच-
ीचमें इसकी एक मात्राका प्रयोग करनेपर ज्यादा फायदा होनेकी
म्भावना है। सिफिलिनमके सभी रोग-लक्षण—मर्क्युरियसकी
रह रातमें अर्थात सूर्योदयके समयके बीचमें बढ़ते हैं।

डा० एच० सी० एलेन, प्राथमिक उपदंशमें—पहले ही सिफि-
लिनमका प्रयोग करनेकी सलाह देते हैं। वे कहते हैं, इससे पहले
एक दो सप्ताह तो जख्म खूब बढ़ता है, इसके बाद धीरे धीरे
आराम होता आता है और गौण (Secondary) उपदंशके
लक्षण फिर पैदा ही नहीं होते, यदि उससे एकदम आरोग्य न
हो तो, अन्तमें नाइट्रिक एसिड—३० शक्ति, कुछ दिनोंतक खिलाने
पर, उससे बीमारी एकदम आराम हो जाती है (आर्स-हाइड्रो-
जेन देखिये)।

सिफिलिनमके द्वारा—उपदंशके कारण उत्पन्न मुँहका घाव, अस्थि-क्षत (उपदंशके कारण न भी हुआ हो), स्नायुगत सर-दर्द, माथेमे जगह जगह गुटिका (Nodes) निकलना, आँखकी बीमारी, दाँतकी बीमारी, पीनस (Syphilitic ozœna), चेहरेके दाहिनी ओरका पक्षाघात, बहुत दिनोंकी कब्जियत इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियाँ आरोग्य होती हैं।

सिफिलिनम २०० वीं शक्तिसे ऊँची शक्ति व्यवहार करना उचित है।

मैडोरिनम—(Medorrhinum)—यह भी सिफिलिनम की तरह एक नोसोड्स दवा है और सूजाकके पीवसे तैयार होती है।

सूजाककी बीमारीका अच्छी तरह इलाज न होने या सूजाक का स्राव बन्द होकर स्वास्थ्यमे नाना प्रकारकी खराबियाँ पैदा होने पर इससे बहुत फायदा होता है। इस दवाको वात-रोगका एक महौषध कहा जा सकता है। पुराना सन्धिवात, छोटी छोटी सन्धियोका वात, सारे शरीरका वात और स्नायुशूलमें इसकी एक मात्रासे कितने ही स्थानोंमे आश्चर्यजनक लाभ होता दिखाई देता है। डा० टी० वाइल्डस कहते हैं—किसी रोगीको वात होनेपर समझना होगा कि, वह या उसका पिता या पितामह प्रभृति पूर्व-पुरुषोंमेसे किसी न किसीको सूजाककी बीमारी थी। इसलिये, रोग मैडोरिनमसे आरोग्य होगा। डा० नैश कहते हैं—हड्डीका जखम,—अगर गर्मी रोगकी वजहसे न भी हो, तो भी—सिफि-

लिनमसे आरोग्य होता है। इसी तरह वातरोग—सूजाकसे उत्पन्न न होनेपर भी—मेडोरिनमसे आरोग्य होता है। डा० टी० वाइल्डसका और भी कथन है, कि—वातके सिवा बार बार होनेवाला ब्राङ्काइटिस (श्वासनली-प्रदाह), प्लुराइटिस (फुसफुसावरणका झिल्ली-प्रदाह), पेरिटोनाइटिस (अन्नावरक झिल्ली-प्रदाह), पैरामेट्राइटिस, एण्डोमेट्राइटिस (जरायुके भीतरी और बाहरी आवरणका-प्रदाह), सेलफिञ्जाइटिस (फाल्लनलका-प्रदाह), मेट्राइटिस (जरायुका-प्रदाह) इत्यादि बहुत-सी बीमारियाँ—१०० भागमें ६६ भाग रुके हुए प्रमेह-विषसे उत्पन्न होती हैं। इसलिये, इन बीमारियोंमें अगर दूसरी दवासे फायदा न हो, तो मेडोरिनम उच्च शक्ति (२०० या उससे अधिक) एक एक मात्रा—२।१ सप्ताहके अन्तरसे प्रयोग करना चाहिये। प्रमेहसे उत्पन्न वातमें—जैकारायडा—φ, से ३ री शक्ति व्यवहार कर फायदा होगा (स्टिलिञ्जिया देखिये)।

बच्चोंकी सुखण्डीमें—सिफिलिनमसे ही ज्यादा फायदा होता है। यदि न हो—मेडोरिनमसे तो फायदा अवश्य ही होगा (टि-वाइल्डस)।

सेरिब्रो-स्पाइनल-मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाह)—उक्त डा० वाइल्डस कहते हैं—पहले सिमिसिफ्युगासे रोगकी तेजी घट जाती है। इसके बाद—मेडोरिनम एक मात्रासे बहुत कुछ फायदा होता मालूम होता है। आरोग्यका लक्षण मालूम ...

ये अन्तमें—लाइकोपोडियमकी व्यवस्था करते हैं। उससे ही बीमारी आराम हो जाती है (जिङ्कम और एकटिया-रेसिमोसा देखिये)।

प्रमेहकी बीमारीमें—बार बार लिङ्गोच्छ्वास (chorde), पेशाव करनेके समय जलन और झटका देनेकी तरह दर्द, इसके अलावा—स्वप्नदोष, ध्वजभग, ग्लीट, समस्त मूत्रनलीमें घावकी तरह दर्द। मूत्रनली-प्रदाह, धातुका पतलापन, धोतीका वीर्य लगकर भी कडी न पडना, पेशावके साथ सूतकी तरह सफेद पदार्थ निकलना इत्यादि लक्षणोंमें—मेडोरिनम फायदा करता है।

बच्चोंका पेशाव—पेशाव बहुत गरम, लाल रंगका और तेज गन्धवाला, बच्चा रातमें निद्रित अवस्थामें बिछावनमें पेशाव कर देता है। मसानेकी बीमारीमें—मसानेकी जगह और कमरमें भयानक दर्द, पर पेशाव हो जाने बाद ही घट जाता है, मूत्रनलीमें असह्य यन्त्रणा, ऐसा मालूम होता है, मानो पथरी निकल रही है, पेशावपर तेलकी तरह पदार्थ तैरता है, इन सब लक्षणोंमें—मेडोरिनम फायदा करता है।

स्त्री-रोग—बहुत ज्यादा रजस्राव, स्वल्परज, डिम्बकोष की बीमारी, प्रदर, कुछ भी क्यों न हो, अपने या पतिके दोषसे जिनके शरीरमें प्रमेहका विष घुस गया है,—उनकी बीमारीमें मेडोरिनम फायदा करता है।

जलन—हाथ-पैरमें बेतरह जलन, इसीलिये, हाथ पैर बाहर निकाल रखता है। ठण्डे पानी या हवामें आराम मालूम होता है (सलफरकी तरह)।

ज्वर—जिस ज्वरमें हाथका सामनेवाला भाग, हाथका पिछला भाग (करभ) और पैर ठण्डे रहते हैं, पर मुँह, गर्दन इतनी गरम रहती है, मानो आगकी लपट निकल रही है, रोगी लगातार पखेकी हवा चाहता है, उसमें मेडोरिनम फायदा करता है।

माथेकी बीमारी—माथेमें दर्दके साथ जलन, माथेके बीचमें दबाव और भार मालूम होना, माथेमें खुजली, रूसी, केशमें जटा बँधना इत्यादिमें भी मेडोरिनम फायदा करता है।

सर्दी—नयी सर्दी नहीं, बहुत दिनोंकी पुरानी सर्दी, नाकसे पानी या सफेद रंगका बलगम निकलता है। नाकमें किसी चीजकी गन्ध नहीं आती।

द्रष्टव्य :—किसी नयी बीमारीमें मेडोरिनमका व्यवहार मना है, बहुत जरूरी न हो, तो कभी भी व्यवहार न करे। यदि करे भी तो महीनेमें २।१ मात्रासे अधिक न दे। आपके रोगीको कोई भी बीमारी क्यों न हो, यदि उसे या उसके पिता माताको कभी सूजाक हुआ हो और इसका प्रमाण मिले तथा किसी दूसरी दवासे फायदा न हो, तो इसकी दो एक मात्राका प्रयोग कर, राह देखे।

मेडोरिनम—२०० से उच्च शक्ति, २।१ सप्ताहका अन्तर देकर प्रयोग करना चाहिये।

टैबेकम।

(TABACUM)

हवानाकी सूखी तम्बाकूके पत्तेसे टिंचर तैयार होता है — १। लगातार वमन और मिचली, इसके साथ ही पसीना, २। हृत्पिण्ड और शरीरकी कमजोरी, तापका घट जाना, ३। सर-दर्दके साथ सरमें चक्कर आना और जी मिचलाना, ४, प्रलाप बकना, ५। हिमांग, हैजाका युरिमिक कन्वल्शन (मूत्रविकारके कारण अकड़न) इसका प्रधान चरित्रगत लक्षण है।

हैजा—दूसरी दूसरी दवाओंके प्रयोगसे दस्त बन्द हो गया है, पर लगातार कै होती जा रही है, भयानक मिचली, ओकाई, सारे शरीरमें ठण्डा पसीना, समूचा शरीर ठण्डा, पर पेट बहुत गरम, इन लक्षणोंमें—टैबेकम फायदा करता है।

धनुष्टंकार—मेरुदण्डपर रोगका हमला होकर अकड़न, खींचन और धनुष्टङ्कारकी तरह गर्दन और पीठका कड़ा पड़ जाना—इन लक्षणोंमें—टैबेकम लाभदायक है। तम्बाकूका पत्ता सिझाकर पिचकारीकी सहायतासे मलद्वारमें प्रयोग करनेपर

धनुष्टङ्कारकी अकडन (spasm) और कडापन जल्द आरोग्य हो जाता है—Dr. Arndt ।

तम्बाकू सेवनका दुष्परिणाम—जर्दा खाने का दोष दूर करनेके लिये—आर्सेनिक , तम्बाकू खानेके कारण दन्तशूलमें—क्लिमेटिस और प्लैण्टेगो , सरमें चक्कर और सर-दर्दमें—जेलसिमियम , तेज हिचकीमें—इग्नेशिया , मिचली और वमनमें—इपिकाक , ध्वजभग और अकडनमें—लाइकोपोडियम , मुँहका बेस्वादपन—नक्स , हृत्स्पन्दन, हृत्पिण्डकी क्षीणता और इन्द्रियमें सुस्ती आ जानेपर—फास्फोरस और मुँहकी दाहिनी ओर के स्नायुशूलमें और अजीर्ण रोगमें—सिपियाका प्रयोग करना चाहिये ।

नीचे लिखी कई बीमारियोंमें टैबेकम फायदा करता है —

सर-दर्दके साथ सरमें चक्कर, इसके साथ ही बहुत मिचली, इसका सर्दीसे घटना , गर्भावस्थामें मिचली और वमनके साथ पेट खाली मालूम होना और पसीना , शूलका दर्द—पाकस्थलीके ऊपरसे आरम्भ होकर बायें हाथतक चला जाता है, बच्चोंका हैजा—शरीर बरफकी तरह ठण्डा, हिमाङ्ग, वमन और मिचली—शरीर खोलनेपर घटना , हृच्छूलका दर्द (Angina pectoris)—कलेजेके ऊपरी अशमें या हृत्पिण्डमें सकोचनकी तरह दर्द, दर्द—छातीकी बीचकी हड्डी (स्टर्नम) के बीचसे बायें बाहुमें भी फैल जाता है इत्यादि ।

क्रम—६—३० शक्ति । फारमुला—४ ।

टैराक्सेकम ।

(TARAXACUM)

(सोरके साथ गाछसे टिंचर तैयार होता है)—१
की तरह लेप चढ़ी जीभ (लैके, नैट्र-म्यूर, मार्क), २
और पित्तकी बीमारी, सर-दर्द (gastric—headache
यकृत बढ़ा हुआ और कड़ा, इसके साथ ही कामला,
मानचित्रकी तरह दाग , ४ । कमजोरी, क्षुधालोप, डाइ
पित्तज्वरकी आरोग्यावस्थामें रातके समय बहुत अधिक प
ये कई इस दवाके चरित्रगत लक्षण हैं । बहुमूत्र रोगमें
फायदा होता है ।

सदृश—पाकाशयिक और पैत्तिक लक्षणमें—ब्रायो, चे
ड्रैस, नक्स ।

वृद्धि (aggravation)—सोनेपर, बैठनेपर, विश्रा
क्रम—ϕ—३ री शक्ति । फास्फु

टैरेण्टुला क्युबेन्सिस ।

(TARENTULA CUBENSIS)

(क्यूबा देशके जीवित मकड़ेसे टिंचर और ड्राइटुरेशन
तैयार होता है)—जैसे,—चेचकमें—वेरियोलिनम है ; खस

मार्बिलिनम है ; हैजामें-कुप्रम काम करता है : उसी तरह प्लेग-
रोगमें—यह टैरेण्टुला-क्यूबेन्सिस फायदा करता है।

प्लेगकी तरह अद्भुत और सांघातिक बीमारी दूसरी नहीं है;
यह एक तरहका साक्षात यम है, प्लेग जब बहुव्यापक रूपसे फैल
है, उस समय शहर गाँव मानो जन-शून्य बना देता है इस रोग
या शहरके रहनेवाले प्राणभयसे दूसरी जगह भाग जाते हैं। रोगि
में किसीको भी यह बीमारी होते देखते ही प्रत्येक गृहस्थको इसके
चारों ओर आग जलाना, भोजन और पानीय—सब गरमकर रोग
ज्यादा मात्रामें ने बूका एस पीना, मृत जीवजन्तुको दूरपर मिट्टीमें
गाड़ देना, खानेकी चीजोंपर मक्खी न बैठने देना, इन विषयपर
लक्ष्य रखना कि घरमें चूहा न घुसने न पाये और टैरेण्टुला
क्यूबेन्सिस ३० शक्ति, रोज या दो तीन दिनके अन्तरसे १ मात्रा
सेवन करना, ये नियम पालन करते रहनेपर सम्भवतः बीमारीके
हाथोंसे बहुत कुछ छुटकारा मिल सकता है।

इग्नेशिया बीन—बहुतोंका कहना है, कि इसके बीचवाले
भागमें छेदकर, उसमें सूता पहना, हाथ या कमरमें, पहननेपर,
प्लेग-रोगका आक्रमण नहीं हो सकता। यह भी प्रतिषेधक रूपमें
क्रिया करती है। आगोडम—टिंचरसे २री शक्तितक रोगकी उत्कृष्ट
दवा है।

आपरक्युलिना-टारपिथम (Operoulina-Turpithum)—
यह दवा प्लेग, ज्वर-विकार और कमजोर करनेवाले उदरामयमें
व्यवहृत होती है। इसका लक्षण—लसिका ग्रन्थियाँ खूब बड़ी और

)—१। नकशे
है), २। अम्ल
dache), ३।
कामला, जीभपर
, टाइफायड या
अधिक पसीना—
रोगमें भी इससे

-ग्रायो, चेलि, हाइ-

नेपर, विश्रामसे।
फारमुला—१।

स।
(...NSIS)

...र ड्राइटुरेशन औषध
...ल्लिनम है; खसडामे—

...ता है। हैनामें-कूमम काम करता है; इसी तरह [illegible]
...न्द है टैरेण्टुला-क्यूबेन्सिस फायदा करता है।

...की तरह टरह्युन और सांघातिक बीमारी दूसरी नहीं है
...ग तरहका साक्षात यम है, प्लेग [illegible]
...स समय शहर गांव मानो जन-शून्य बना देता है, [illegible]
...के रहनेवाले प्राणभयसे दूसरी जगह भाग जाते हैं। [illegible]
...को भी यह बीमारी होते देखते ही [illegible]
...और आग जलाना, भोजन और पानीय—[illegible]
...मात्रामें ने बूका रस पीना, [illegible]
...देना, खानेकी चीजोंपर मक्खी न बैठने देना, इन [illegible]
...रखना कि घरमें चूहा न घुसने न पावे और [illegible]
...न्सिस ३० शक्ति, रोज या दो तीन दिनके अन्तरमें [illegible]
...करना, ये नियम पालन करते रहनेपर सम्भवतः
...में बहुत कुछ छुटकारा मिल सकता है।

...लेशिया बीन—बहुतोंका कहना है, कि [illegible]
...में छेदकर, उसमें सूता पहना, हाथ या कमरमें,
...रोगका आक्रमण नहीं हो सकता। यह भी [illegible]
...करती है। आयोडम—[illegible]
...है।

आपरक्युलिना-ग्रपियम (Operculina [illegible]
...पेट, ज्वर-विकार और कमजोर [illegible]
[illegible]

टैराक्सेकम ।

(TARAXACUM)

(सोरके साथ गाछसे टिंचर तैयार होता है)—१। नकशे की तरह लेप चढ़ी जीभ (लैके, नैट्र-म्यूर, मार्क), २। अम्ल और पित्तकी बीमारी, सर-दर्द (gastric—headache), ३। यकृत बढा हुआ और कडा, इसके साथ ही कामला, जीमपर मानचित्रकी तरह दाग , ४। कमजोरी, क्षुधालोप, टाइफायड या पित्तज्वरकी आरोग्यावस्थामें रातके समय बहुत अधिक पसीना—ये कई इस दवाके चरित्रगत लक्षण है। बहुमूत्र रोगमें भी इससे फायदा होता है ।

सदृश—पाकाशयिक और पैत्तिक लक्षणमें—ब्रायो, चेलि, हाइड्रैस, नक्स ।

वृद्धि (aggravation)—सोनेपर, बेठनेपर, विश्रामसे ।

क्रम—φ—३ री शक्ति । फारमुला—१।

टैरण्टुला क्युबेन्सिस ।

(TARENTULA CU[illegible])

(क्यूबा देशके जीवित मकड़ेसे [illegible] तैयार होता है)—जैसे,—

मार्बिलिनम है, हैजामें-क्युप्रम काम करता है, उसी तरह प्लेग-रोगमें—यह टैरेण्टुला-फ्यूबेन्सिस फायदा करता है।

प्लेगकी तरह लरछुत और साँघातिक बीमारी दूसरी नहीं है, यह एक तरहका साक्षात यम है, प्लेग जब बहुव्यापक रूपमें फैलता है, उस समय शहर गाँव मानो जन-शून्य बना देता है, उस गाँव या शहरके रहनेवाले प्राणभयसे दूसरी जगह भाग जाते हैं। गाँवमें किसीको भी यह बीमारी होते देखते ही प्रत्येक गृहस्थको घरके चारों ओर आग जलाना, भोजन और पानीय—सब गरमकर पीना, ज्यादा मात्रामें नेंबूका रस पीना, मृत जीवजंतुको दूरपर मिट्टीमें गाड़ देना, खानेकी चीजोंपर मक्खी न बैठने देना, इन विषयोंपर लक्ष्य रखना कि घरमें चूहा न घुसने न पाये और टैरेण्टुला फ्यूबेन्सिस ३० शक्ति, रोज या दो तीन दिनके अन्तरमें १ मात्रा सेवन करना, ये नियम पालन करते रहनेपर सम्भवतः बीमारीके हाथोंसे बहुत कुछ छुटकारा मिल सकता है।

इग्नेशिया बीन—बहुतोंका कहना है, कि इसके बीचवाले भागमें छेदकर, उसमें सूता पहना, हाथ या कमरमें, पहननेपर, प्लेग-रोगका आक्रमण नहीं हो सकता। यह भी प्रतिषेधक रूपमें क्रिया करती है। आयोडम—टिंचरसे २x शक्तितक प्लेगकी उत्कृष्ट दवा है।

आपरक्युलिना-टारपिथम (Operculina-Turpithum)—यह दवा प्लेग, ज्वर-विकार और कमजोर करनेवाले उदरामयमें व्यवहृत होती है। इसका लक्षण—लसिका ग्रन्थियाँ खूब बड़ी और

कड़ी हो जाती है,फोडा खूब धीरे-धीरे पकता है। विकारमें—रोगी बहुत बेचैन होता है, लगातार बकता है, बिछावनसे उठकर लगातार भागनेकी चेष्टा करता है। अतिसारमें—हैजाकी तरह बहुत ज्यादा परिमाणमें पानीकी तरह पतले दस्त आते हैं, उससे नाडी दब जाती है। प्लेगमें—ज्वर, गाठोंका फूलना, भूल बकना, विकार-भाव इत्यादि इसके समस्त लक्षण हैं। इसीलिये इस बीमारीमें इससे फायदा होता है।

टैरेण्टुला-क्युबेन्सिस—प्लेग रोगके आक्रमणसे रक्षा करता है और रोग होनेपर उसको आरोग्य करता है—ये दोनों ही शक्तियाँ इसमें हैं। इस विषयमे डाक्टर बोरिक कहते हैं—Bubonic plague As a curative and preventive specially during the period of invasion. अर्थात् गाँठवाला प्लेग—इसमे यह आरोग्य-दायक और प्रतिषेधक दोनों ही है, खासकर आक्रमणावस्थामें इसकी बहुत क्रिया होती है।

रक्त विपाक्त होकर और भी कितनी ही बीमारियाँ—जैसे, डिफ्थिरिया, नाना प्रकारका भीषण यन्त्रणादायक प्रदाह, सांघातिक प्रकारका फोड़ा, विष-व्रण प्रभृति बहुत लाल रगके रहते हैं, जलन होती है, डक मारनेकी तरह दर्द होता है और पकता है। तथा बाघी और कार्बङ्कल गैंग्रीन (सडनेवाले घाव), छातीका केन्सर, वृद्धोंका जखम इत्यादिका यह महौषध है। इस दवाके सेवनसे मृत्युकालकी मृत्यु-यंत्रणा घट जाती है। निस्फोटकमें—पहले एक व्रण फूल उठता है, जल्द ही यह नीली आभा धारण करता है।

इसके बाद वर्रे काटनेसे पैदा हुए चकत्तेकी तरह एक बड़ा ज़खम हो जाता है।

अंगुलवेढ़ा और कार्वङ्कल—इसमें रोगवाली जगह नीली आभा लिये लाल हो जाती है और वहाँ भयानक जलन-यन्त्रणा, और डङ्क मारनेकी तरह दर्द रहता है। इसके अलावा,—एकोनाइट और आर्सेनिककी तरह शरीरमें जलन, छटपटी, तेज प्यास, ज्वर प्रभृति कई आनुसंगिक लक्षण भी रहते हैं, पर इससे विशेष उपकार न होगा, टॅरेण्टुला ही इसकी असली दवा है (पन्थ्रासिनम अध्याय देखिये)। वृद्धोंका ज़खम, गैंग्रीन तथा अन्यान्य दूषित फोड़ोंमें यह लक्षण रहनेपर टॅरेण्टुलाका प्रयोग करना चाहिये।

टॅरेण्टुला हिस्पानिया (Tarentula Hispana)—यह एपिलेप्टि फार्म हिस्टिरियामें विशेष लाभदायक है। डा० आर्नडका कथन है, कि मैंने एक हिस्टेरो—एपिलेप्सीके रोगीको बहुत दिनोंतक चिकित्सा की, पर कुछ भी लाभ न हुआ। अन्तमें टॅरेण्टुलाके प्रयोगसे दो तीन दिनोंमें ही बीमारी आरोग्य हो गयी, इस जातिकी बीमारीका फिट बहुत दिनोंतक स्थायी होता है अथवा खूब जल्दी जल्दी फिर आता है।

टॅरेण्टुला क्युबेन्सिस—आर्सेनिक, पाइरोजेन, एन्थ्रासिनम, एचिनेशिया, एपिस, बेलेडोना, क्रोटेलस प्रभृतिकी सदृश दवा है।

क्रम—६—३० शक्ति।

फ़ारमुला—जर्मनी ६ ; अमेरिकन—६ वाँ।

टेल्यूरियम ।

(TELLURIUM)

(धातव-पदार्थ, यह विचूर्णके आकारमे तैयार होता है ।)—कानकी बीमारी और रुपयेकी तरह गोलाकार चकत्ते, उसके चारों-ओरके किनारे कटे-कटे, इस तरहके कई चर्मरोग—जैसे, दाद इसमे यह ज्यादा फायदा करता है ।

कानमे पीव होनेपर हमलोग अक्सर—हिपर, साइलेसिया, कैल्केरिया-सल्फ, पल्सेटिला, सोरिनम, मर्कुरियस इत्यादि दवाओंकी व्यवस्था किया करते हैं । जहाँ देखें—पीव पानीकी तरह पतला, बहुत बदबूदार ठीक मानो मछलीका धोया हुआ पानी, स्राव जहाँ लगता है, वहींकी खाल उघड जाती है, वहाँ—टेलु-रियम फायदा करता है, टिम्पेनाई-मेम्ब्रेन (कर्ण-पटहका आवरक पर्दा) मे छेद होकर बहुत दिनोंतक अगर पीव गिरता रहे तो इससे विशेष उपकार होनेकी सम्भावना है । पल्सेटिलामे—गाढा पीव निकलता है ।

चर्म-रोग—दाद, चेहरेका दाद, शरीरके निम्नाङ्गका दाद, इसके सिवा शरीरके सभी स्थानोंमें दाद होनेपर और चोर खुजली (Barber itch) मे—टेल्यूरियम फायदा करता है । (सलफर आयोड) । दाद या दादकी प्रकृतिकी किसी तरहका चर्म-रोग रहे और उसमें बहुत खुजलाहट हो तो पहले इसका

प्रयोग करना चाहिये। कानकी बामारी और दादके लिये—यह कुछ अधिक दिनोंतक रोज २।३ बार सेवन करनेकी जरूरत होती है, क्योंकि इसकी क्रिया कुछ देरसे होती है। फायदा होते ही दवा सेवन करना बन्द कर देना चाहिये। पहले—६ठीं, इसके बाद—३० शक्ति दें।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—७।

टेरिबिन्थिना।

(TEREBINTHINA)

शुद्ध तारपीनका तेल—१ बूंद, ९९ बूँद स्पिरिटमें मिलाकर, इस दवाकी २x शक्ति तैयार होती है।

चरित्रगत लक्षण —

१। जीभ—चिकनी, चमकीली, लाल रंगकी, मानो उसपर जीभके काँटे ही नहीं हों, २। पेट बहुत फूलता है, फूलकर मानो ढोलकी तरह हो जाता है, पेट छूनेसे ही दर्द होता है, दर्द सहन नहीं होता, ३। उदरामयमें—मल पानीकी तरह पतला, हरा, आम-मिला, जल्दी जल्दी दस्त लगता है, अधिक परिमाणमें दस्त आना, खूनके दस्त, पानकी पीककी तरह दस्त, मलद्वारमें जलन होती है। ४। केचुएकी तरह क्रिमि, क्रिमिके लक्षणके साथ मुँहमें दुर्गन्ध

टेल्यूरियम ।

(TELLURIUM)

(धातव-पदार्थ, यह विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।)-
कानकी बीमारी और रुपयेकी तरह गोलाकार चकत्ते, उसके चार
ओरके किनारे कटे-कटे, इस तरहके कई चर्मरोग—जैसे, दाद इस
यह ज्यादा फायदा करता है ।

कानमें पीव होनेपर हमलोग अकसर—हिपर, साइलेसि
कैल्केरिया-सल्फ, पल्सेटिला, सोरिनम, मर्कुरियस इत्या
दवाओंकी व्यवस्था किया करते हैं । जहाँ देखें—पीव पानीकी त
पतला, बहुत बदबूदार ठीक मानो मछलीका धोया हुआ पा
स्राव जहाँ लगता है, वहाँकी खाल उघड़ जाती है, वहाँ—टे
रियम फायदा करता है, टिम्पेनाई-मेम्ब्रेन (कर्ण-पटहका आव
पर्दा) में छेद होकर बहुत दिनोंतक अगर पीव गिरता रहे
इससे विशेष उपकार होनेकी सम्भावना है । पल्सेटिलामें—ग
पीव निकलता है ।

चर्म-रोग—दाद, चेहरेका दाद, शरीरके निम्नाङ्
दाद, इसके सिवा शरीरके सभी स्थानोंमें दाद होनेपर और
खुजली (Barber itch) में—टेल्यूरियम फायदा करता
(सलफर आयोड) । दाद या दादकी प्रकृतिकी किसी तर
चर्म-रोग रहे और उसमें बहुत खुजलाहट हो तो पहले इस

प्रयोग करना चाहिये। कानकी बीमारी और दादके लिये—यह कुछ अधिक दिनोंतक रोज २।३ बार सेवन करनेकी जरूरत होती है, क्योंकि इसकी क्रिया कुछ देरसे होती है। फायदा होते ही दवा सेवन करना बन्द कर देना चाहिये। पहले—६ठीं, इसके बाद—३० शक्ति दें।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—७।

टेरिविन्थिना।

(TEREBINTHINA)

शुद्ध तारपीनका तेल—१ बूँद, ९९ बूँद स्पिरिटमें मिलाकर, इस दवाकी २x शक्ति तैयार होती है।

चरित्रगत लक्षण—

१। जीभ—चिकनी, चमकीली, लाल रंगकी, मानो उसपर जीभके काँटे ही नहीं हों, २। पेट बहुत फूलता है, फूलकर मानो ढोलकी तरह हो जाता है, पेट छूनेसे ही दर्द होता है, दर्द सहन नहीं होता, ३। उदरामयमें—मल पानीकी तरह मिला, जल्दी जल्दी खूनके दस्त, ४। केचुएकी

टेल्यूरियम ।

(TELLURIUM)

(धातव-पदार्थ, यह विचूर्णके आकारमें तैयार होता है ।)—कानकी बीमारी और रुपयेकी तरह गोलाकार चकत्ते, उसके चारों ओरके किनारे कटे-कटे, इस तरहके कई चर्मरोग—जैसे, दाद इसमें यह ज्यादा फायदा करता है ।

कानमें पीब होनेपर हमलोग अक्सर—हिपर, साइलेसिया, कैल्केरिया-सल्फ, पल्सेटिला, सोरिनम, मर्कुरियस इत्यादि दवाओंकी व्यवस्था किया करते हैं । जहाँ देखें—पीब पानीकी तरह पतला, बहुत बदबूदार ठीक मानो मछलीका धोया हुआ पानी, स्राव जहाँ लगता है, वहाँकी खाल उघड जाती है, वहाँ—टेल्यूरियम फायदा करता है, टिम्पेनाई-मेम्ब्रेन (कर्ण-पटहका आवरण पर्दा) में छेद होकर बहुत दिनोंतक अगर पीब गिरता रहे तो इससे विशेष उपकार होनेकी सम्भावना है । पल्सेटिलामें—गाढ़ा पीब निकलता है ।

चर्म-रोग—दाद, चेहरेका दाद, शरीरके निम्नाङ्गका दाद, इसके सिवा शरीरके सभी स्थानोंमें दाद होनेपर और दाँर खुजली (Barber itch) में—टेल्यूरियम फायदा करता है। (सलफर आयोड) । दाद या दादकी प्रकृतिकी किसी तरहका चर्म-रोग रहे और उसमें बहुत खुजलाहट हो तो पहले इसका

प्रयोग करना चाहिये। कानकी बीमारी और दादके लिये—यह कुछ अधिक दिनोंतक रोज २।३ बार सेवन करनेकी जरूरत होती है, क्योंकि इसकी क्रिया कुछ देरसे होती है। फायदा होते ही दवा सेवन करना बन्द कर देना चाहिये। पहले—६ठीं, इसके बाद—३० शक्ति दें।

क्रिया-नाशक (antidote)—नक्स।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति। फारमुला—७।

टेरिविन्थिना।

(TEREBINTHINA)

शुद्ध तारपीनका तेल—१ बूंद, ६६ बूंद स्पिरिटमें मिलाकर, इस दवाकी २x शक्ति तैयार होती है।

चरित्रगत लक्षण—

१। जीभ—चिकनी, चमकीली, लाल रंगकी, मानो उसपर जीभके काँटे ही नहीं हों, २। पेट बहुत फूलता है, फूलकर मानो ढोलकी तरह हो जाता है, पेट छूनेसे ही दर्द होता है, दर्द सहन नहीं होता, ३। उदरामयमें—मल पानीकी तरह पतला, हरा, आम-मिला, जल्दी जल्दी दस्त लगता है, अधिक परिमाणमें दस्त आना, खूनके दस्त, पानकी पीककी तरह दस्त, मलद्वारमें जलन होती है। ४। केचुएकी तरह क्रिमि, क्रिमिके लक्षणके साथ मुँहमें दुर्गन्ध

मलद्वारमें खुजली होती है, सूतकी तरह क्रिमि, फीता-क्रिमि, ५। मसानेकी जगहपर धीमा धीमा दर्द, पेशावके समय जलन, पेशाब करनेके समय कष्ट, बूँद बूँद पेशाब निकलना, पेशाबमें एल्बुमेन, पेशाबका रंग धूएँकी तरह, खूनका पेशाब, ८। मसानेकी बीमारीकी वजहसे शोथ, ७। हैजा-रोगमें पेशाब बन्द (कैन्थ-रिससे फायदा न होनेपर), ब्राइट्स डिजीज मसानेमें रक्तसंचय इत्यादि।

पेशाब—पेशाब करनेके समय जलन-यंत्रणा, बूँद बूँद पेशाब निकलना, कष्टसे पेशाब निकलना, खून-मिला पेशाब, इसके अलावा पेशाबमें अण्डलाल, इसीलिये पेशाबका रंग गदला और धूएँकी तरह दिखाई देता है। मसानेकी जगहपर लगातार धीमा धीमा दर्द, जलन, मसानेका दर्द,—मसानेसे शुरु होकर मूत्रनली (ureter) के भीतरसे जाता है इत्यादि टेरिबिन्थिनाके प्रयोगके लक्षण हैं। टाइफायड-ज्वरमें—आँतोंसे रक्तस्रावके सिवा पेशाबके साथ भी रक्त निकलना, पेटका बहुत फूलना, सूखी और चमकीली जीभ, ये सब लक्षण रहनेपर—टेरिबिन्थका प्रयोग करना चाहिये।

एल्बुमिनुरिया—इस रोगके पेशाबकी तली खून-मिली हो या कीचकी तरह गदला पेशाब होता हो अथवा केवल खूनका पेशाब हो और इसके साथ ही रोगीमें पेट फूलना, श्वास-कष्ट, कमजोरी इत्यादि लक्षण रहें—टेरिबिन्थिना फायदा करता है। एल्बुमिनुरिया रोगकी पहली अवस्थामें जिस तरह—टेरि-

विन्थिना, अन्तिम अवस्थामें—उसी तरह मर्कुरियस-कोर फायदा करता है।

इयोनाइमिन (Euonymin)—१ म—६ ठी शक्ति। यह एल्बुमिनुरिया, रोगकी एक बहुत बढ़िया दवा है। बूँद बूँद थोड़ा पेशाब, पेशाबमें एल्बुमेन, एपिथेलियल कास्टस, श्वासकष्ट, ज्वर, शोथ प्रभृति इसके प्रधान लक्षण हैं। गर्भावस्थामें प्रसूताको अगर अण्डलाल मिले पेशाबकी बीमारी हो जाये तो—उसकी निम्न शक्तिसे बहुत फायदा होता है।

खूनका पेशाब—इसके साथ ही पेशाबमें जलन, टनक और पेशाबमें बदबू रहनेपर—टेरिबिन्थ फायदा करता है।

मूत्र-विकार—हैजामें पेशाब इकट्ठा होकर भी अगर पेशाब न होता हो और यह बीमारी हो जाये तो पहले २।१ मात्रा कैन्थरिसका प्रयोग करनेपर पेशाब होता है; पर अगर केन्थरिस से फायदा न हो तो उसके बाद टेरिबिन्थ प्रभृतिकी जरूरत पड़ती है। टेरिबिन्थिनामें—पेशाबका कुछ भी वेग नहीं रहता, पेट फूला रहता है, पेटका फूलना मानो लगातार बढ़ता जाता है, नाड़ी क्षीण हो जाती है, साँसमें तकलीफ होती है, आच्छन्न भाव दिखाई देता है (मूत्राशयमें पेशाब न जमनेपर—दूसरी दवा देनी चाहिये, कैन्थरिस अध्याय देखिये)।

उदरी—मसानेकी बीमारीकी वजहसे शोथ या उदरी, उसके साथ ही पेट फूलना, पेशाबमें कष्ट, भयानक श्वासकष्ट, रोगी सो नहीं सकता है, तकियेपर अकड़न लगाकर बैठा रहता है।

पेट-फूलना—पेट बहुत फूलता है, उसमें छातीतक दबाव पडता है। रोगी मानो हाँफा करता है। पेट फूलनेमें चायना· लाइको, कार्बो, कोलचि, एसाफिट, रैफेनस, नक्स-मस्केटा इत्यादि से भी फायदा होता है।

वृद्धि (aggravation)—छूनेपर, दबानेपर, बाईं करवट सोनेपर, १ बजेसे ३ बजेके बीचमें, तर घरमें रहनेपर।

उपशम (amelioration)—दाहिनी करवट सोनेपर, झुकने पर, वायु-निकलनेपर और ठण्डे पानीके प्रयोगसे (मलद्वारमें जलन)।

क्रम—२x—३० शक्ति। फारमुला—६ वीं।

टियुक्रियम मेरम वेरम।

(TEUCRIUM MARUM VERUM)

(एक प्रकारके छोटी जातिके गाछसे टिंचर तैयार होता है)—बहुत दिनोंतक दवाका सेवन कर जिनका क्रमशः स्वास्थ्य बहुत खराब हो पडा हो, उनकी धातुके लिये यह ज्यादा लाभदायक है। नाककी पुरानी सर्दी, बदबूदार पपडी जमना, नकसीर (Ozœna), साँसमें बदबू, किसी चीजकी गन्ध न मिलना, पालिपस (Polypi), सर्दीसे नाक बन्द हो जाना, इन कई बीमारियोंमें और लक्षणोंमें

ह ज्यादा फायदा करता है। ओजिना—इसके साथ ही बहुत यादा परिमाणमें पीले रंगका बदबूदार स्राव और नाकके पालि-समें—सैंगुनेरिया भी फायदा करता है। इसके अलावा—नाक खी, नासारन्ध्रका जखम, नाकसे रक्तस्राव, प्रत्येक ऋतु-परिवर्तन- सर्दी लग जाना, ये सभी लक्षण—केल्केरिया-कार्बमें भी पाये जाते हैं। इसलिये, इस बीमारीमें किसी भी एक दवासे फायदा होनेपर रोगीकी धातुके अनुसार ये दोनों दवाएँ पर्य्याय दिन- अन्तरसे व्यवहार करनेपर जल्दी फायदा हो सकता है।

टियुक्रियम—छोटी-छोटी सूत्र-क्रिमिका महौषध है। इस जाति- ी क्रिमि प्राय: किसी भी दवासे एकदम मर नहीं जाती, इसकी ौर भी कितनी ही दवाएँ हैं, यह सिनाके अध्यायमें देखिये (बड़ी क्रिमिके लिये—चेनापोडियम-आयल देखिये)।

क्रम—१x—६ शक्ति। फारमुला—१।

थिया चिनेन्सिस।

(THEA CHINENSIS)

इस दवाका टिंचर चाय (tea) से तैयार किया जाता है। हुत ज्यादा चाय वगैरह पीनेके कारण—अजीर्ण, अनिद्रा, कलेजा डकना, पेटमें वायु होना इत्यादि मन्दाग्निके लक्षण प्रकट होनेपर

और हृत्पिण्डकी बीमारीमें—हृत्पिण्डकी जगहपर दर्द, बहुत कलेजा धड़कना, बाईं करवट सो न सकना, छातीके भीतर मानो कोई चिड़िया फड़फड़ा रही है, इस तरहका अनुभव होना—तेज, सविराम और अनियमित नाड़ी होनेपर इससे फायदा होगा।

क्रम—३—३० शक्ति।

Theine—⅟—⅟ के हाइपो-इन्जेक्शनसे साइटिका आरोग्य होता है।

थेरिडियन कुरासैविकम।

(THERIDION CURASSAVICUM)

(एक तरहके मकडेसे तैयार होता है)—कण्ठमाला और यक्ष्माके रोगीकी यह एक बढ़िया दवा है। थाइसिसकी पहली अवस्थामें इसका व्यवहार होनेपर इससे बहुत कुछ फायदा होनेकी सम्भावना रहती है। थेरिडियन—आँखके ऊपरी भागमें टपकका दर्द, सरमें चक्कर आनेके साथ ही साथ मिचली और जरा भी हिलने-डोलनेसे वमन, आँख बन्द करने या जरा जोरसे चलनेपर जी मिचलाने लगना और वमन, बायीं ओरकी छातीके ऊपरी भागमें और बायीं तैरती पसली (floating rib) की जगहपर दर्द, हृत्पिण्डमें दर्द, मेरुदण्डमें दर्द,—इसलिये पीठमें अकडन लगाकर

न सकना, थोडी भी आवाज या एक कदम चलनेपर ही दर्दका जाना, अस्ति-क्षत (Caries), नेक्रोसिस प्रभृति अस्थि क्षत-साथ शरीरकी प्रायः सभी हड्डियोंमें दर्द प्रभृति उपसर्ग इससे ोग्य हो जाते हैं।

वृद्धि (-aggravation)—छूनेपर, दबावसे, जलयात्रासे, ोंमें सवारी करनेपर, आँख बन्द करने और झटका लगनेपर, ण्डीसे, रोग बायीं ओर।

क्रम—६—२०० शक्ति।　　फारमुला—४।

थ्लैस्पि वर्सा पैस्टोरिस।

(THLASPI BURSA PASTORIS)

(एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार होता है)—इस दवाका हार केवल रक्तस्रावके लिये होता है। पैसिव-रक्तस्रावोंमें ित जिस रक्तस्रावमें रक्तका रंग काला हो जाता है, उसमें यह ा फायदा करता है। इसके द्वारा शरीरके सभी अंशोंसे रक्त- ा हो सकता है। नाकसे रक्तस्राव (एपिस्टैक्सिस), पेशाबकी से रक्तस्राव, जरायुसे रक्तस्राव, यह ऋतुके कारण हो, या वके बाद हो, यदि रक्त परिमाणमें बहुत ज्यादा आता हो, रक्त- रंग काला और थक्का थक्का हो, तो इससे फायदा होगा। के अलावा—श्लैष्मिक ऋतुस्रावमें जो रक्त निकलता है,

पदबू रहती है, ऋतुस्राव बन्द होनेपर श्वेत-प्रदर दिखाई देता है। मूत्राशयका पुराना प्रदाह, पित्त-पथरी, मूत्रकृच्छ्रता और मूत्र-पथरी की यह उत्कृष्ट दवा है।

इसका मूल अर्क—अर्थात मदर टिंचर अधिक व्यवहार होता है। फारमुला—२।

थूजा आक्सिडेण्टालिस।

(THUJA OCCIDENTALIS)

(कैनाडा और नार्दर्न-स्टेट्सके जगलोंमे एक तरहका गाछ पैदा होता है। उसके पत्तेसे टिंचर तैयार होता है)—यह एक प्रधान एण्टिसाइकोटिक दवा है। चर्म, मूत्रयंत्र और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

चरित्रगत लक्षण :—

१। बहुत ज्यादा परिमाणमे पेशाब होना, इतनेपर भी मूत्रनलीमें जलन, २। बहुत ज्यादा परिमाणमें प्रमेहका स्राव, ३। मसा, योनिमे या पु-जननेन्द्रियमे मसा, काण्डाइलोमाटा, ४। लुप्त प्रमेहसे उत्पन्न बीमारी या टीका होने बाद पैदा हुई कोई बीमारी, ५। बहुत जल्दी जल्दी दुबले होते जाना, ६। सवेरे पहली बार भोजनके बाद दस्त, पीले रगका दस्त, दस्त होनेके पहले पेटमे बहुत गडगडाहट; ७। उपदशसे उत्पन्न चर्म-रोग,

८। रैनुला (जीभका अर्बुद), जीभ और मुँहके भीतर घेघाले ; ६। कब्जियत ; १०। माथेके सिरा और सभी स्थानोंमें पसीना , ११। बदबूदार कानका स्राव।

जलीय—(Hydrogenoid)—धातु, प्रमेह विप-दूपित धातु और कुछ परिमाणमें सिफिलिस-धातुके व्यक्तियोंके लिये यह उपयोगी है।

मानसिक लक्षण —

जीवन-धारणसे अनिच्छा, हमेशा ही दुःखित, मनमें तेज नहीं रहता, ज्ञान-बुद्धि-हीन, निर्जन-स्थानमें रहनेकी इच्छा, ऐसा सोचता है, कि वह ऊँचे ससर्गमें रहनेके अयोग्य है। रोता है और भी एक तरहका लक्षण है—रोगी सोचता है, कि उसकी देह काँचकी तरहके किसी टूट जानेवाले पदार्थसे बनी है, सहजमें ही टूट जायगी, इसीलिये, किसी मनुष्यको पास नहीं आने देता, पेटके भीतर मानो न जाने क्या एक जीव हिलता है, आत्मा शरीरसे मानो अलग हो गया है, वह मानो किसी स्वर्गीय शक्तिसे परिचालित हो रहा है, कितनेही विदेशी मनुष्य उसके पासमें खडे हैं इत्यादि।

प्रमेह-रोग—स्राव पतला, रग हरा, या पीला, पेशाव करनेके समय बहुत जलन, पेशावका बहुत अधिक वेग रहनेपर भी जरा जरा कर बूँद बूँद पेशाव टपकता है, पेशावके साथ कभी कभी खून भी निकलता है, पेशाव होना खतम न होनेपर भी ऐसा मालूम होता है, कि भीतर कुछ पेशाव रह गया, पुराना प्रमेह

(Chronic Gonorrhœa) अगर किसी तरह भी आरोग्य न हो और बार बार बीमारी पैदा हो जाया करती हो, इसके अलावा प्रमेह रोगके कारण अराडकोषकी कोई बीमारी हो जाये—सूजन और दर्द रहे—तो थूजासे बहुत फायदा होता है। अगर पिचकारी लेकर सूजाक आराम किया गया है और इस तरह कोई दूसरी बीमारी पैदा हो जाये तो—थूजा ही महौषध है।

गो-बीजका टीका लेनेके कारण उत्पन्न बीमारियाँ—टीकाका बीज अगर अच्छा न हो तो बच्चेको नाना प्रकारकी बीमारी हो सकती है। ज्वर, अतिसार, जखम, चेचककी तरह गोटियाँ या उद्भेद इत्यादि टीका लेनेके दोषसे चाहे कोई भी बीमारी क्यो न हो, उसमे—थूजा फायदा करता है। साइलिसिया और कैलि-म्यूर भी इस तरहकी बीमारीकी महोषधियाँ है।

अतिसार—पीले रगका पानीकी तरह पतला दस्त, यह चोलकर, गड़गड, फलफल शब्दकर खूब वेगसे अगर निकलता हो और मलके साथ वायु भी निकलता हो—थूजा फायदा करता है। थूजामे—सवेरेके भोजनके बाद पाखाना आना बढ जाता है (क्रोटन अध्यायमे जैट्रोफा देखिये)।

सरमें चक्कर और सर-दर्द—आँख-मुँह बन्द करने पर ही सरमें चक्कर आता है। आँख खोलनेपर घटता है, गर्मीकी बीमारीसे उत्पन्न (Syphilitic origin) या स्नायविक सर-दर्द—

माथेकी खोपडीमें जखमकी तरह दर्द, रोगी तकियेपर सर रखकर सो नहीं सकता, रातमें दर्द बहुत बढ जाता है, प्राय सभी समय माथेमें दर्द रहता है, कभी छूट छूटकर होता है। कनपटीमें और माथेके ऊपर इस तरहका दर्द होता है, मानो कोई काटी ठोंक रहा है, हाथसे धीरे धीरे घसने या रगडनेपर दर्द कुछ घटा करता है। माथेका दर्द, मुँह और गण्डास्थितक चला जाता है और वहाँ असह्य दर्द होता है। कोई चीज चबा नहीं सकता, हाथ लगानेसे ही तकलीफ होती है। चाय पीनेकी वजहसे सर-दर्द या दाँतके दर्दमें भी—थूजा फायदा करता है।

मसे और रक्तार्बुद—कानके भीतर अर्बुद, अगुलीसे थोडा-सा रगडनेसे ही खून निकलने लगता है। कानमें पीब, स्रावमें सडे मांसकी तरह बदबू निकलना, नाकके ऊपर मसे (Warts), मलद्वारके पास मसे, अन्तवाले स्थानमें मसा निकलने के साथ मलद्वारमें फटे घाव (Fissure), उससे रस निकलना, मलद्वारके चारों ओर भींजेकी तरह, पेरिनियमके ऊपर बहुत अधिक पसीना इत्यादि लक्षण रहनेपर भी इससे फायदा होता है। जरायुका अर्बुद—उसमें इतना दर्द, जरा-सेमें ही रक्तस्राव होता है; जरायु-ग्रीवामें फूलकोबीकी तरह एक प्रकारके पदार्थकी उत्पत्ति; योनिके ऊपर मसे—उसमें इतना दर्द कि हाथ नहीं लगाया जाता और स्वरयन्त्रका अर्बुद (Vocal Cord)-में-थूजा लाभदायक है। मसा या अर्बुद अगर आकारमें बडा हो जाये, तो

रोज एक बार इसके मदर-टिंचरका बाहरी प्रयोग करनेपर जल्दी फायदा होता है।

शरीरके भिन्न भिन्न स्थानोंमें मसा होनेपर जो सब दवाएँ फायदा करती हैं, उनकी सूची :—

मुँहमें मसे—कास्टि, एसिड-नाई, थूजा, भँवमें—कास्टि, आँखकी पलकोंमें—एसिड-नाई, आँखके नीचे—सल्फ, नाकमें—थूजा, कास्टि, मुँहके कोनेमें—काण्डुरैंगो, दाढीमें—लाइको, जीभमें——आरम-म्यूर, गर्दनमें—एसिड-नाई, वक्षमध्योस्थिमें—एसिड-नाई, बाहुमें—कैल्के, कास्टि, एसिड-नाई, सिपि, सल्फ; तलहत्थीमें—नेट्रम-म्यूर, एनाकार्ड, अगुलीमें—बार्बे, कैल्के, कास्टि, लैके, नैट-म्यूर, एसिड-नाइट्रिक, सल्फ, थूजा, सिपि, वृद्धाङ्गुलिमे—लैकेसिस, लिङ्गाग्र चर्म, लिङ्गाग्रमुण्डमें और भीतर (छूनेपर ही रक्तस्राव)—सिनाबेर, इयुकैलिप्, लिङ्गमुण्डमें—एसिड-नाई, एसिड-फास, थूजा।

पुराना मसा—कास्टि, नैट-म्यूर, सल्फ, रक्तस्रावी मसे—सिनाबेर, एसिड-नाई, सिपि, साइलि, स्टैफि, सल्फ, जखम-भरे—आर्स, कैल्के, कास्टि, हिपर, लाइको, नैट-म्यूर, एसिड-नाई, फास, थूजा, दर्द-भरे—कास्टि, हिपर, लाइको, एसिड-नाई, पेट्रोलि फास, सिपि, सल्फ, दर्द-भरे—कास्टि, हिपर, लाइको, एसिड-नाई, पेट्रोलि, फास, सिपि, सल्फ, मुख चौडा, (flat)—लैके, कडा—एण्टि-क्रूड, कैल्के, कास्टि, एसिड—फ्लोर, लैके, रैनान-बल्बो, साइलि, सल्फ, सींगकी तरह—एण्टि-क्रूड, बोरेक्स,

कैल्के, ग्रेफा, एसिड-नाई, सल्फ, थूजा ; घड़ा—कास्टि, एसि-नाई, सिपि ; छोटे मसे—कल्के, फेरम, हिपर, लैके, एसिड-नाई, रस, सार्सा, सल्फ, थूजा ; प्रदाहित—एमोन-कार्ब, कास्टि, एसिड-नाई।

कैल्केरिया-कार्ब—चेहरेपर, गर्दनपर और शरीरके ऊपरी अंश मे मसे। यह कण्ठमाला, स्क्लोरोटिक और जलीय धातुके मनुष्यों की बीमारीमें फायदा करता है।

कास्टिकम—पुराना मसा, नाक, भौं, मुँह, नखके किनारे और अंगूठेका मसा (इसका अध्याय देखिये)।

लाइकोपोडियम—फटे फटे मसे।

नैट्रम-म्यूर—पुराना मसा, फट जानेकी तरह दर्द, हाथके अंगूठेमें अनगिनती मसे। यह रक्तहीन, कमजोर और हरित-पाण्डु रोग-ग्रस्ता स्त्रियोंकी बीमारीमें फायदा करता है।

नैट्रम-सल्फ—मसे गांठ-गांठ, मलद्वारमें, पेटमें और उरुके बीचमें मसेकी तरह उद्भेद, समूचे शरीरमें मसेकी तरह उद्भेद।

नाइट्रिक एसिड—मसे तर, भींजे भींजेकी तरह, फूलगोबीकी तरह, फटे, हमेशा ही बदबूदार रस निकलता है, छूनेपर खून निकलता है।

खाँसी—खाकर उठते ही खाँसी आनी आरम्भ हो जाती है।

आँखकी बीमारी—प्रमेहकी बीमारीकी वजहसे आँख-का प्रदाह (Gonorrhœal opthalmia), आँखके भीतरका रग

लाल, आँखसे पानी गिरना, करकराना, इसके अलावा आँखके भीतर या पलकोंमे मसे, पलकका अर्बुद, आइराइटिस (उपतारा-प्रदाह) इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियोंमे और नये पैदा हुए बच्चे की आँखका प्रदाह, गुहोरी, अँधेरा दिखाई देना प्रभृतिमें ही थूजा लाभदायक है।

उपदंश या गरमीकी बीमारी—इस बीमारीमें लिङ्ग के जखममे अगर कोई बाहरी दवा लगानेकी इच्छा करे तो थूजा— ϕ, २५।३० बूँद—१ आउन्स वैसोलिनके साथ मरहम बनाकर व्यवहार करे। यह भीतरी सेवन करनेपर भी गरमीकी बीमारीमें फायदा होता है।

शरीरकी त्वचापर उपदंश या पाराके उद्भेद—पूर्व-पुरुषोंसे आये हुए उपदंशकी वजहसे छोटे छोटे बच्चोंकी त्वचा पर पारदके उद्भेद निकलनेपर, पहले आर्सेनिक-आयोड—६ ठीं शक्ति, दिनमे २ मात्रा ३।४ दिन प्रयोग करनेके बाद थूजा २०० शक्ति, १ दिन सबेरे १ मात्रा सेवन करनेको देकर ५।६ दिन राह देखें। फायदा न होनेपर ५।६ दिन बाद फिर एक मात्राका प्रयोग करे। देखेंगे कि इसीसे आरोग्य हो जायगा। अगर कुछ बाहरी प्रयोग आवश्यक हो—१ आउन्स ओलिव-आयलमे २०।२५ बूँद, थूजा ϕ, मिलाकर एक लिनिमेण्ट तैयार कर व्यवहार करा सकते हैं (फ्लूअम-सल्फ अध्याय देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—रातके अन्तिम भागमें, ठण्डी चीजें खाने-पीने बाद, रोशनीसे और शुक्ल-पक्षमें।

उपशम—मलनेपर, दबानेपर और सरदी लगनेपर।

सम्बन्ध—मेडोरिन, मार्क और पल्सि-नाई, इनके बाद थूजा फायदा करता है।

बादकी दवा—(follows well)—केल्के, इग्ने, कैलि-कार्ब, लाइको, मार्क, पल्स, एसा-फिट, सैबाइना, साइलि।

क्रिया-नाशक—(antidote)—केम्फ, केमो, काकु, मार्क, पल्स, सल्फ, स्टैफि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६ दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति और बाहरी प्रयोग।

ट्रिब्यूलस टेरेस्ट्रिस।

(TRIBULUS TERRESTRIS)

(इक्षुगन्धा नामक एक तरहके छोटे गाछसे प्रस्तुत)—मूत्र-यन्त्र और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। जननेन्द्रियकी कमजोरी, स्पर्माटोरिया (पाखाना-पेशाबके समय वीर्य जाना)। हस्त-मैथुन या किसी अवैध रीतिसे शुक्रक्षयकर आंशिक या सम्पूर्ण ध्वजभग (एगनस देखिये), प्रोस्टैटाइटिस, (मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह), पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना, पेशाब लगनेपर एक मिनिटके लिये भी वेग नहीं रोक सकना, पेशाबमें जलन और

, आँखसे पानी गिरना, करकराना, इसके अलावा आँखके र या पलकोंमे मसे, पलकका अर्बुद, आइराइटिस (उपतारा-) इत्यादि बहुत तरहकी बीमारियोंमे और नये पैदा हुए बच्चे आँखका प्रदाह, गुहोरी, अँधेरा दिखाई देना प्रभृतिमे ही थूजा दायक है।

उपदंश या गरमीकी बीमारी—इस बीमारीमें लिङ्ग खममे अगर कोई बाहरी दवा लगानेकी इच्छा करे तो थूजा— ५।३० बूँद—१ आउन्स वैसोलिनके साथ मरहम बनाकर हार करे। यह भीतरी सेवन करनेपर भी गरमीकी बीमारीमें दा होता है।

शरीरकी त्वचापर उपदंश या पाराके उद्भेद— पुरुषोसे आये हुए उपदंशकी वजहसे छोटे छोटे बच्चोंकी त्वचा पारदके उद्भेद निकलनेपर, पहले आर्सेनिक-आयोड—६ ठीं , दिनमे २ मात्रा ३।४ दिन प्रयोग करनेके बाद थूजा २०० , १ दिन सबेरे १ मात्रा सेवन करनेको देकर ५।६ दिन राह । फायदा न होनेपर ५।६ दिन बाद फिर एक मात्राका ग करे। देखेंगे कि इसीसे आरोग्य हो जायगा। अगर कुछ री प्रयोग आवश्यक हो—१ आउन्स ओलिव-आयलमे २०।२५ , थूजा ϕ, मिलाकर एक लिनिमेण्ट तैयार कर व्यवहार करा ते हैं (क्रूप्रम-सल्फ अध्याय देखिये)।

वृद्धि (aggravation)—रातके अन्तिम भागमे, ठण्डी चीजें -पीने बाद, रोशनीसे और शुक्ल-पक्षमें।

उपशम—मलनेपर, दबानेपर और सरदी लगनेपर।

सम्बन्ध—मेडोरिन, मार्क और एसि-नाई, इनके बाद थूजा फायदा करता है।

बादकी दवा—(follows well)—कैल्के, इग्ने, कैलि-कार्ब, लाइको, मार्क, पल्स, एसा-फिट, सैबाइना, साइलि।

क्रिया-नाशक—(antidote)—केम्फ, कैमो, काकु, मार्क, पल्स, सल्फ, स्टैफि।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—६ दिन।

क्रम—३०—२०० शक्ति और बाहरी प्रयोग।

ट्रिब्यूलस टेरेस्ट्रिस।

(TRIBULUS TERRESTRIS)

(इक्षुगन्धा नामक एक तरहके छोटे गाछसे प्रस्तुत)—मूत्र-यन्त्र और जननेन्द्रियपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। जननेन्द्रियकी कमजोरी, स्पर्माटोरिया (पाखाना-पेशाबके समय वीर्य जाना)। हस्त-मैथुन या किसी अवैध रीतिसे शुक्रक्षयकर आंशिक या सम्पूर्ण ध्वजभग (एगनस देखिये), प्रोस्टैटाइटिस, (मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह), पेशाब रोकनेकी शक्तिका न रहना, पेशाब लगनेपर एक मिनिटके लिये भी वेग नहीं रोक सकना, पेशाबमें जलन

मुँहसे रक्त निकलता है, पेटमें जलन होती है, यह जलन गलेतक चढ़ती है।

नाककी बीमारी—नाकसे चमकीले लाल रंगका पैसिव रक्तस्राव (रोग एक जगह है, पर रक्तस्राव दूसरी जगहसे होता है इसीका नाम है—पैसिव)।

मलद्वारकी बीमारी—पुराना आमाशय या अतिसारमे मलद्वारसे रक्तस्राव, केवल ताजे चमकीले रक्तका दस्त। रक्तामाशयमें—मर्क-कोरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार कर कितने ही स्थानोंमे बहुत अधिक लाभ देखा गया है (ट्राम्बिडियम)।

ऋतुस्राव—कैल्केरिया-कार्ब अध्यायमे जरायुकी बीमारी और चायना तथा हैमामेलिस अध्यायमे ऋतुस्राव देखिये। ट्रिलियममें—जरा भी हिलने-डोलनेपर, चमकीले लाल रंगका रक्त वेगसे निकलता है, रक्तस्रावके साथ उरुमे और कूल्हेमे बहुत दर्द रहता है, जोरसे बाँधनेपर आराम मालूम होता है।

थाइसिस—बहुत ज्यादा पीबकी तरह बलगम, इसके साथ ही रक्त। यक्ष्माकी पहली अवस्थामे खून निकलनेके साथ खाँसी। गलेमे मानो कुछ अडा हुआ है, ऐसा मालूम होता है।

क्रम—ϕ,—३x, ६x, ६, ३०, २०० शक्ति।

फारमुला—३।

ट्रिटिकम रिपेन्स ।

(TRITICUM REPENS)

(ताजी जडसे टिंचर तैयार होता है)—पेशावकी कई बीमारियाँ, मूत्रनलीमे बहुत अधिक उपदाह, मूत्रपिण्डका प्रदाह, सिस्टाइटिस और प्रमेह रोगमे इसका व्यवहार होता है।

जहाँ ऐसा दिखाई दे—रोगी बडे कष्टसे पेशाव करता है, पेशावका जल्दी जल्दी वेग होता है, वेग बिलकुल ही रोक नहीं सकता। श्लेष्मा या पीवकी तरह स्राव (पैरिरा-ब्रावा), पेशाव गाढा (पतला—इयुरिया), इसके साथ ही मूत्रयत्रकी श्लैष्मिक झिल्लीका उपदाह (इरिटेशन), मूत्रकृच्छ्र, मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि बढनेके निमित्त पेशावमे कष्ट, वहाँ इसे स्मरण करें। दवा दिनमे ३।४ बार सेवन करना चाहिये।

क्रम—ϕ,—१x।

फारमुला—२।

ट्राम्बिडियम ।

(TROMBIDIUM)

(एक तरहके कीडेसे टिंचर तैयार होता है)—सबेरेके समय-का उदरामय, आमाशय और रक्तामाशयकी यह एक बढिया दवा है। आमरक्त, कूथन, शूलका दर्द, भूरे रगके पतले दस्त, खून मिला

मल, पाखाना होनेके समय पेटमें वायीं ओर तेज दर्द, नीचेकी ओर धक्का देनेकी तरह दर्द प्रभृति आमाशयकी बीमारी रहनेपर इससे तुरन्त फायदा होगा । खाने-पीनेसे ही उपसर्गोंका बढना—इस दवाका प्रधान लक्षण है । अतिसारमें—सवेरे, कोखमें और पञ्जरेके नीचे पेठनका दर्द, बिछावनसे उठते ही पाखानेका वेग, जल्दी जल्दी पाखाने जाना पडता है—बहुतसा पतला दस्त हो जाता है, पेटका दर्द, पाखाना हो जानेपर भी बन्द नहीं होता है। मलद्वारमें जलन, इन सब लक्षणोंमें—यह सलफर, नैट्रम-सल्फ, पलो, नूफर-लूटिया, ब्रायोनिया प्रभृति दवाओंकी अपेक्षा भी ज्यादा फायदा करता है ।

क्रम—६—३० शक्ति । फारमुला—६ बी ।

टियुबर्क्युलिनम ।

(TUBERCULINUM)

यह यक्ष्मा रोगीके फेफडेके जखमके पीवसे तैयार होता है। किसी भी बीमारीमें खासकर श्वासयन्त्रकी बीमारीमे सर्दी खाँसी, बार बार धीमा बोखार, खुसखुसी खाँसी, खाँसीके साथ खून निकलना, जल्दी जल्दी दुर्बल और कृश होते जाना, कामकाज करनेकी इच्छा न होना इत्यादि लक्षण रहने और यक्ष्माका सन्देह होनेपर

या जिनके पूर्व पुरुषोंमें यक्ष्माका इतिहास मिलता हो, उनकी बीमारीमें, इसकी २०० या और भी ऊँची शक्तिकी एक मात्राके प्रयोगसे बहुत कुछ फायदा हो जाता है। टियुबर्क्युलिनममें—रोग लक्षण बहुत ही अदला-बदला करते हैं, अर्थात—बीमारी आज एक यन्त्रमें, कल दूसरे यन्त्रमें, इसी तरह एकके बाद दूसरी सभी इन्द्रियोंपर बीमारीका आक्रमण होता है (स्टैनम आयोड देखिये)।

टियुबर्क्युलिनमके रोगीको जरा सी सर्दीमें ही ठण्ड लग जाती है। रोगी समझ नहीं पाता कि किस तरह सर्दी लग गयी। सामान्य ऋतुपरिवर्तनसे ही बीमार हो जाता है, जरासी सर्द हवा लगते ही सर्दी हो जाती है, किसी दवाकी भी स्थायी क्रिया नहीं होती। ठीक ठीक चुनी हुई दवा भी फायदा नहीं करती।

निमोनिया, ब्राङ्को-निमोनिया, यक्ष्मा-रोगीके फेफड़ेका कनजेशन, लोबर-निमोनिया, इन्फ्लुएञ्जा रोगमें—ब्राङ्काइटिस, लगातार गला खुसखुसाकर खाँसी, गलेमें दर्द, नयी प्रादाहिक सर्दी खाँसी प्रभृति कितनी ही फेफड़ेसे सम्बन्ध रखनेवाली बीमारियोंमें जब किसी भी चुनी हुई दवासे फायदा नहीं होता, उस समय इसके सेवनसे बहुत फायदा होता है। इससे कमजोरी दूर होती है, कफका परिमाण घटता है, भूख बढ जाती है, और इन्द्रिय सबल होती है। सँकरी छाती, रोगी रक्तहीन, दुबले-पतले व्यक्ति ही इसके क्षेत्र हैं।

वैसिलिनम (Bacillinum)—यह दवा ट्यिुवर्क्युलोसिस फेफडेको पानीसे तरकर तैयार की जाती है। इसके द्वारा बलगममें परिवर्त्तन हो जाता है और क्रमश बलगममें पीवका भाग कम हो जाता है, फेफडेमें हवा जानेके कारण फेफडा साफ होता है। असली यक्ष्मा न होनेपर भी फेफडेकी अगर कोई पुरानी बीमारी हो तो यह फायदा करता है। ब्राङ्कोरिया, अर्थात जिस बीमारीमें ढेरका ढेर पीवकी तरह बलगम निकलता है, श्वास-कष्ट होता है, दमाकी तरह खिंचाव होता है, उसमे और दमाकी बीमारीमे भी यह ज्यादा फायदा करता है।

इसके रोगीको भी सर्दी सहन नहीं होती, जरासी ठण्ड पडते ही सर्दी लग जाती है, सर्दी-खाँसी, गला फॅस जाना और गलेमे दर्द होता है।

बादकी दवा (follows well)—कैल्के-फास, कैल्के-कार्ब, सिलि।

क्रम—२०० या उससे ऊँचा।

टर्नेरा एफ्रोडिसियाका।

(TURNERA APHRODISIACA)

इसका दूसरा नाम—डामियाना है (Damiana), जिस उद्देश्यसे कविराज सब मदनानन्द-मोदक, कामेश्वर वटिका इत्यादि

बाजीकरण और शुक्रवर्द्धक औषधियाँ तैयार करते हैं, होमियो-पैथीमें उसी उद्देश्यसे इस दवाका भी व्यवहार होता है। स्नाय-विक दुर्बलताकी वजहसे इन्द्रिय-शक्तिका घटना, ध्वजभग (इस बीमारीमें पुरुषत्व घट जाता है, लिङ्गमे कडापन नहीं आता) वृद्धोंकी धारणा-शक्तिकी कमी, पाखाना-पेशाबमे वेग देनेके समय शुक्र-पतन इत्यादि नाना प्रकारकी जननेन्द्रियकी बीमारीमें बहुत सफलताके साथ इसका व्यवहार होता है। धातुदौर्बल्यमे कुछ अधिक दिनोंतक इसका व्यवहार करना उचित है। नियमित रूपसे इसका सेवन करनेपर युवती स्त्रियोंकी ऋतु-सम्बन्धी नाना प्रकारकी बीमारियाँ आरोग्य होकर ऋतुस्राव स्वाभाविक रूपसे होने लगता है।

मन्तव्य —शुक्र-क्षयके कारण उत्पन्न बीमारियोंमें—एसिड-फास अध्यायमें जो सब लक्षण लिखे गये हैं, उनके पढनेसे मालूम होता है, कि उनसे ही रोगी बिल्कुल आरोग्य हो जायगा, पर वैसा नहीं होता, ऐसे स्थानपर मैं टर्नेरा—φ १० बूँद, पानीके साथ सवेरे एक बार और सन्ध्यामे एवेना—१० बूँद गरम पानीके साथ सेवन करनेको देता हूँ इससे ३।४ सप्ताहमें ही फायदा होते देखा है (पेगनस-कैक्टस और सेलिनियम देखिये)।

साधारणत ध्वजभगकी बीमारी—अमिताचार, इन्द्रिय-दोष और प्रमेह, बवासीर, क्रिमि, बहुमूत्र प्रभृति बीमारियोंसे उत्पन्न होती हैं। अतएव, इस बीमारीको आरोग्य करनेके लिये रोगीको अपने स्वास्थ्यपर विशेप ध्यान रखना होगा, कु-अभ्यास, कु-संसर्ग,

दूर रखना होगा और पुष्ट करनेवाली चीजें खाना होगा। अगर कोई दूसरी बीमारी इस बीमारीका कारण हो, तो उसकी चिकित्सा करानी चाहिये और नियमित रूपसे दवा खानेके साथ ही साथ उडद (अन्दाजन एक छटांक) गायके घीमें भूनकर, दूधमें औंटाकर, चीनी या मिसरीकी बुकनी डाल रोज एक बार, एक महीनेतक भोजन करना चाहिये। पॅटी मछलीको घीमें तलकर खानेसे वीर्य गाढा और रति शक्ति बढती है।

लाइकोपोडियम—छोटी उमरमें अधिक स्त्री-ससर्गकर या हस्त-मैथुन इत्यादि अस्वाभाविक उपायसे इन्द्रिय-चालनकर जब क्रमश पुरुषत्वहीनता या ध्वजभग हो जाता है, बहुत ज्यादा इच्छा रहनेपर भी वासनाकी तृप्ति नहीं होती, लिङ्ग-शिथिल, ठण्डा और छोटा हो जाता है, लिङ्गमें कडापन नहीं आता, थोडा-सा आकर फिर शिथिल हो जाता है, उस समय लाइकोपोडियमसे फायदा हो सकता है। बहुत अधिक वीर्य-क्षयके कारण रमण-शक्ति घट जानेपर महात्मा हैनिमैन नक्स, सलफर, कैल्केरिया और लाइको—ये चार दवाएँ लक्षणभेदसे व्यवहार करनेका उपदेश देते हैं।

ल्युप्युलस—यह दवा एक तरहकी साग-सब्जीसे तैयार होती है। पु-जननेन्द्रियकी कमजोरी और बच्चोंके कामला (Jaundice) की बीमारीमें यह बहुत फायदेमन्द है। इस दवाका उग्रवीर्य (Lupulin)—१x शक्तिकी एक ग्रेन मात्रामें रोज दो तीन बार सेवन

करनेपर स्पर्माटोरिया (पाखाना-पेशाबके समय काँखनेपर शुक्र निकलना), इन्द्रिय और धातुदौर्बल्य, अत्यधिक तकलीफ देने-वाला लिङ्गका कड़ापन (Painful erection), हस्त-मैथुनके बाद इस तरहका लिङ्गोद्रेक, मूत्रनलीके भीतर जलन प्रभृति कई बीमारियोंमें और उपसर्गोंमें इससे फायदा होता है। अगर टर्नेरा वगैरह दवाओंसे फायदा न हो तो इसकी परीक्षा करें। क्रम—ϕ से ६ ठी शक्ति (ट्रिब्यूलस, एवेना प्रभृति भी इस बीमारीकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं)।

टर्नेरा—ϕ—१० से ३० बूँद, आध छटाँक पानीके साथ सबेरे और सन्ध्या दो बार सेवन करना चाहिये। टर्नेरा—गिरकर मेरुदण्ड में चोट, वृद्धोंका पेशाबका वेग धारण न कर सकना, दिन-रात बूँद बूँद कर पेशाब टपकना, स्वप्नदोष, अनजानमें शुक्र क्षरण (Spermatorrhea) इत्यादिकी बढ़िया दवा है।

इयुरिया ।

(UREA)

यह दवा मसानेकी बीमारीकी वजहसे शोथ, अण्डलाल-मिला पेशाब, बहुमूत्र, इयुरिमिया और जिन सब पेशाबकी बीमारियोंमें ऐसा अनुभव होता है, कि पेशाब पानीकी भी अपेक्षा पतला है

(पेशाव गाढा-ड्रिटिकम), पेशाव परीक्षामें—आपेक्षिक गुरुत्व बहुत कम, वहाँ इसका प्रयोग करें, फायदा होगा।

क्रम—३—६ शक्ति।

आर्टिका इयुरेन्स।

(URTICA URENS)

(उत्तर अमेरिका, एशिया और युरोपमें एक तरहके क्षुद्र जातिके गाछ पैदा होते हैं, उनसे ही टिंचर बनता है)—त्वचापर उस दवाकी प्रधान क्रिया होती है। इसके द्वारा शरीरमें आमवात की तरह एक प्रकारके उद्भेद निकलते हैं। डा० पियर्स कहते हैं— एक स्त्रीको तीन चार वर्षतक कोई सन्तान न हुई, किसी कारण-वश एक दिन उस स्त्रीने यही गाछ उबालकर उसका अन्दाजन दो आउन्स पी लिया, उससे पहले तो उसका स्तन फूल गया, इसके बाद स्तनसे रसकी तरह एक प्रकारका स्राव निकलने लगा, इसके बाद साफ दूध आने लगा। अतएव, प्रसवके बाद किसीके स्तनमें यदि दूध कम हो, या एकदम ही दूध न होता हो तो इसके सेवन से विशेष लाभ होता।

आमवात—एपिस अध्याय देखिये।

स्तनदुग्ध—स्तनका दूध घट जानेपर या न रहनेपर

इसके सेवनसे दूध पैदा होता है (फ्रेगेरिया, गैलेगो, एगनस अध्याय देखिये)।

गठिया वात—गठिया वातमें, इयुरेट आफ सोडा पैदा होता है। आर्टिका इयुरेन्स ϕ, की मात्रा ५ बूँद, गरम पानी के साथ ३।४ घण्टोका अन्तर देकर दिनमें ४।५ मात्रा सेवन करने पर पेशाबके साथ युरिक एसिड निकलकर बीमारी जल्द आरोग्य हो जायगी। दाहिने बाहुमें दर्द, हाथ घुमानेपर हाथमें दर्द होता है। दबाकर सोनेपर दर्द बढता है।

क्रम—ϕ—१x शक्ति।

फारमुला—जर्मनी १—अमेरिकन—२।

अस्टिलेगो।

(USTILAGO)

(बेंगका छत्ता—फाँगस जातीय एक तरहके पदार्थसे टिंचर तैयार होता है)—रक्त-प्रदर, मेट्रोरेजिया (जरायुसे रक्तस्राव), मेनोरेजिया—(अतिरज), रज स्राव बन्द होनेकी उमरमें रज-स्राव, जरायुका अपनी जगहसे हट जाना (नाभि टलना), जरायुका बढना, डिम्बकोषका प्रदाह (Ovaritis), रह रहकर बीच-बीचमें रज स्राव, प्रसवके बाद बहुत दिनोंतक रक्तस्राव प्रभृति स्त्रियोंकी कई बीमारियोंमें ही इससे फायदा दिखाई देता है।

विशेष लक्षणोंके लिये—वोविस्टा अध्यायमें—स्त्री-रोग और सिङ्कोना तथा हैमामेलिस अध्यायमें—रक्तस्राव परिच्छेद पढ़िये ।

क्रम—३x, ६, ३०, २०० वीं शक्तिसे कितनी ही वार बहुत ज्यादा फायदा होता है । फारमुला—७ ।

इयुवा उर्सी ।

(UVA URSI)

(ताजे पत्तेसे टिंचर तैयार होता है) इसका पेशावकी बीमारीमें ही अधिक व्यवहार होता है मसानेका प्रदाह, पेशावके साथ श्लेष्मा और रक्त, रक्तका पेशाव, जरायुसे रक्तस्राव, पेशावका वेग, कूथन, पेशावके वाद जलन, पथरी प्रभृति कई बीमारियोंमें इसके द्वारा विशेष उपकार होता है ।

पेशावकी बीमारीमें—जहाँ वार वार पेशावका वेग, मूत्राशयमें तेज आक्षेप, पेशावमें जलन और काटने-फाड़नेकी तरह दर्द होता है, पेशावमें-रक्त, पीव, लसदार श्लेष्मा, हरे रंगका पेशाव, कष्टकर पेशाव प्रभृति लक्षण रहें—वहाँ इसे अवश्य स्मरण करें । पथरी रोगके लक्षणोंके लिये—कैन्थरिस अध्याय देखिये ।

क्रम—φ, ५ से ३० बूँद और २ री शक्तिका भी व्यवहार होता है । फारमुला—२ ।

वैलेरियाना आफिसिनेलिस ।

(VALERIANA OFFICINALIS)

(सूखी जड़से टिंचर तैयार होता है)—बहुत अधिक स्नायविक उत्तेजना, हिस्टीरिया-ग्रस्त स्नायविक स्त्री, मिजाज और मनका परिवर्त्तन, इन्द्रियोंकी अत्यन्त प्रखरता, इन कई लक्षणोंमें साधारणतः इसका व्यवहार होता है। इसका रोगी सोचता है कि उसके गलेमें सूतका एक लच्छा झूल रहा है (जीभमें—नैट्रम-म्यूर, साइलि), बच्चोंको बहुत अधिक परिमाणमें जमी जमी, थक्का थक्का दूधकी कै होती है। इसी तरह दूधका दस्त भी होता है (इथूजा)।

हिस्टीरिया—इग्नेशिया अध्याय देखिये।

जिङ्क-वैलेरियाना—यह भी हिस्टीरियाकी दवा है। इग्नेशिया अध्याय देखिये।

क्रम—φ—१x शक्ति। फारमुला—७।

वेरियोलिनम ।

(VARIOLINUM)

(वैक्सिनिनाम (Vaccininum), मेलाण्ड्रिनम (Melandrinum) आजकल हमलोगोंको बाल-बच्चे होनेपर अगर एक

बरसके भीतर टीका नहीं लिया जाता है, तो सरकारी आइनके अनुसार दण्ड होता है। गो-जातिके चेचकका बीज लेकर यह टीका दिया जाता है। इसको अँगरेजीमें vaccination कहते हैं। युरोपके जेनर साहबने पहले-पहल इस टीकाका आविष्कार किया था, हमारे देशमें जब देशी टीकाकी प्रथा प्रचलित थी, उस समय चेचक (Smallpox) के बीजसे यह तैयार होता था। यही वैरियोलिनम (Variolinum) या मानव-चेचक बीज है। वैरियोलिन—बहुत ही तेज बीज है। इससे टीका देनेपर नाना प्रकारकी खराबियाँ पैदा हो जाती हैं। चेचकसे जो बीज तैयार होता है, उसका नाम—वैक्सिनिनम (Vaccininum) है और घोड़ेके चेचकसे जो बीज तैयार होता है—वह मेलाण्ड्रिनम (Malandrinum) कहलाता है। ये तीनो ही प्रकारके बीज चेचककी बीमारीमें लाभदायक हैं।

चेचककी बीमारी जब बहुव्यापक रूपमें अर्थात एक ही समय किसी जगहके बहुत-से मनुष्योंपर आक्रमण करती है, उस समय इन ऊपर कहे तीन तरहके रोगोंमें—वेरियोलिनमसे इलाज करनेपर बहुतसे रोगी-आरोग्य हो सकते हैं।

प्रेक्टिस आफ मेडिसिन नामक ग्रन्थमें—६ तरहके चेचकका उल्लेख है—१। डिसक्रिट—इसमें गोटियाँ अलग अलग निकलती हैं—यह सुसाध्य चेचक है, २। कानफ्लुएण्ट—इसमें गोटियाँ चिपटी और आपसमें सटी या जुडी रहती हैं। इसमें रस, रक्त और पीव रहता है, यह बहुत ही सांघातिक और मारात्मक बीमारी है, ३। सेमि-कान्फ्लुएण्ट—इसमें गोटियाँ अलग अलग

या बहुत ज्यादा परिमाणमें निकलती है, यह भी आरोग्य हो
है ; ४। कारिम्बोज—इसमें गोटियाँ अगूरके गुच्छेकी
निकलती हैं—यह भी प्राणघातक बीमारी है, ५। वेरियोल
हिमोरेजिका—या रक्त-चेचक—इसकी गोटियाँ सब लाल रहत
शरीर, मुँह, नाक, मलद्वार या मूत्रद्वारसे रक्त निकलता है,
प्राय ७।८ दिनोंमें ही रोगीकी मृत्यु हो जाती है, ६। वेरि
लाइड या माडिफायड—टीका देने बाद इसकी गोटि
निकलती है।

इन छः प्रकारके चेचकोंमें जिसमें बीमारी बहुत भीषण
धारण करती है, वहाँ—वेरियोलिनम और जहाँ रोग उतना भ
नक न हो, वहाँ वेक्सिनिनमका प्रयोग करना चाहिये। इ
आशासे अधिक फायदा होता है।

चेचककी गोटियाँ अच्छी तरह बाहर न निकल्कर बेठ ज
अच्छा लक्षण नहीं है, इससे नाना प्रकारके उपसर्ग पैदा होते
गोटियाँ बैठ जानेपर—कुप्रम, जिङ्कम, एपिस प्रभृति दवाएँ फाय
करती हैं, उनका लक्षण देखें। अगर गोटियाँ अच्छी तरह निक
कर रोगी बेहोशकी तरह पड़ा रहे—वेरियोलिनम फायदा कर
है। पर अगर रोगी बहुत छटपटाये, दूसरे दूसरे उपसर्गोंके स
ओंठ लाल हो जायें तो सलफर फायदा करता है। (सल
फरके दूसरे दूसरे लक्षण भी देखें)। अगर चेचकका बोखार बढ़क
विकार हो जाये,—एसिड-कार्बोल, पाइरोजिन, लैकेसिस, स्ट्रैमो

नियम प्रभृति दवाएं निर्दिष्ट हैं। चेचकके साथ ब्राङ्काइटिस, निमोनिया, प्रभृति रहनेपर—एण्टिम-टार्ट, फास्फोरस प्रभृतिकी जरूरत पडती है। रक्तस्रावी चेचकमें—क्रोटेलस, थ्लेस्पि-चार्सा, एल्यूमिना, आर्सेनिक प्रभृतिका भी प्रयोग कर देखा जा सकता है (क्रोटेल्स अध्याय देखिये)। चेचककी गोटियोंपर—थूजा हाइड्रैस्टिस—ϕ, या इसके लोशनका वाहरी प्रयोग किया जाता है।

चेचकवाले रोगीके शरीरपर—गधीका दूध लगाना और रोगीको गधेका दूध पिलाना बहुत फायदा करता है, यह चेचक रोगकी एक दवा मानी जाती है। देवी शीतलाने मानो यही शिक्षा देनेके लिये गधेको वाहनरूपमें ग्रहण किया है।

द्रष्टव्यः—सारासिनिया-पर्प्युरा—चेचककी एक तरहकी पेटेण्ट और प्रतिषेधक दवा है यह उसके अध्यायमें वताया जा चुका है। मेलाण्ड्रिनम, वैक्सिनिनम और वेरियोलिनम इन तीनोंमें वेरियोलिनम चेचककी सबसे श्रेष्ठ प्रतिषेधक दवा है (सारासिनिया)। जरूरत हो तो चेचकका रोगी देखनेके पहले चिकित्सकको स्वय एक दिन १ मात्रा ३० या २०० शक्तिका वैरियोलिनम सेवन कर लेना चाहिये, अगर ज्यादा जरूरत मालूम हो तो ८।१० दिन बाद फिर १ माता खा लें। रोग आक्रमणके भयसे किसीको भी बार बार न खाना चाहिये। नहीं तो स्वय ही बीमार हो जाना पडेगा। [illegible] निकलनेके समय और पकनेके [illegible] है, इसमें और रोगके साथ

निमोनिया, ब्राङ्काइटिस, सडा घाव, फोडा इत्यादि उपसर्ग पैदा हो जानेपर तथा रक्तस्रावी चेचकमें रोगीकी मृत्यु होती है ।

क्रम—३०—२०० शक्ति ।

वेरेट्रम-एल्वम ।

(VERATRUM ALBUM)

(मध्य युरोप और एशियाटिक रूसके एक तरहके गाछकी सूखी जडसे टिंचर तैयार होता है)—हैजा रोगकी यह एक प्रधान दवा है ।

चरित्रगत लक्षण—

१ । किसी बीमारीमें अगर जीवनी-शक्ति बहुत जल्दी जल्दी घटती जाती हो, ताकत क्षय होती जाती हो, हिमाँग शीत आ गया हो , २ । रोगी अकेले नहीं रह सकता और किसीसे बोलता भी नहीं है , ३ । मानसिक लक्षण और उन्मत्तता—हरेक चीजको काटना और कपडा फाडना चाहता है, खराब बातें कहता है, प्रेम या धर्मके विषयमें बकता है, प्रार्थना करता है , ४ । बहुत कमजोरी, थोडा भी परिश्रम करनेपर मूर्च्छित हो जाता है , ५ । स्त्री रहनेपर समझती है कि उसे गर्भ रह गया है, जल्द ही प्रसव होगा ; ६ । उसे ऐसा मालूम होता है, मानो माथे-

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२०—३० दिन।

क्रम—६—३० शक्ति।   फारमुला-

वेरेट्रम विरिडि।

(VERATRUM VIRIDE)

(कैनाडाके मैदानोंमें एक तरहका पौधा होता है, उस जडसे टिंचर तैयार होता है)।—बोखारका उत्ताप जब बहु अधिक चढ जाता है, यहाँतक कि टेम्परेचर (शरीरका ताप १०५।१०६ डिगरी तक चढ जाता है, उस समय इसके प्रयोग बहुत थोडे समयमें उत्ताप घटता है और १०२।१ तक उतर आत है। वेरेट्रम-विरिडिका—अधिक मात्रामें प्रयोग करनेपर हृत्पिण्ड की क्रियाका नाश हो जाता है, इससे रोगीकी मृत्युतक हो सकती है इसीलिये इसका प्रयोग करनेके समय हृत्पिण्डकी अवस्था खूब अच्छी तरह जाँच लेनी चाहिये और दो तीन मात्राओंसे ज्यादा कभी प्रयोग न करना चाहिये, निमोनियामें बहुत तेज बोखारके साथ रोगीको साँस लेने और छोडनेमें बहुत तकलीफ, पूर्ण और कठिन नाडी, बहुत सर-दर्द, अगर चेहरेका रंग नाला रहे और ऐसी अवस्थामें जबतक फेफडेमें रक्तकी अधिकता हो, तबतक इससे विशेष लाभ होता है। (एसिटैनिलिडियम देखिये)।

टंकार—प्रसूताका टंकार, मस्तिष्कमें रक्तसंचय, रोगिनी बहुत बेचैन हो पडती है, उसे बिलकुल ही ज्ञान नहीं रहता, खींचनका दौरा समाप्त हो जानेपर भी ज्ञानका लक्षण नहीं पैदा हो जाता, इसके बाद ही फिर अकडन पैदा हो जाती है, इस तरहके लक्षणमें—वेरेट्रम-विरिडि फायदा करता है। सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिञ्जाइटिस, इसके साथ ही जोरका बोखार।

वृद्धि (aggravation)—शरीर हिलानेपर, सवेरे नींद खुलने के बाद, सर्दी आदि लगनेपर।

ह्रास (amelioration)—स्थिर-भावसे रहनेपर, दबानेपर रगडने या मलनेपर।

सदृश—एकोन, एगिट्रम-टार्ट, वैप्टि, वेल, ब्रायो, डिजि, फेरम प्से, जेल्सि, ग्लोनोयिन, नक्स, हेलिबोरस, हायो, फास, टैवाक।

क्रम—३x—६ शक्ति। फारमुला—४। विचूर्ण—३

वार्बेस्कम थैप्सस।

(VERBASCUM THAPSUS)

इसका ही नाम है—मूलेन आयल। मूलेन-आयल कान पकने की बीमारी अर्थात कानमें पीव होनेपर, कानमें डालनेके लि बहुत दिनोंसे होमियोपैथीमें प्रचलित है और इससे फायदा

होता है। वार्वेस्कमकी एक तरहकी खाँसीमें भी जरूरत पडती है।

खाँसी—इसकी खाँसीकी आवाज ही दूसरी तरहकी होती है। रोगी जब खाँसता है, तब एक तरहकी ढ ढ आवाज होती है। (trumpet-like sound), खाँसते खाँसते गला फँस जाता है। स्वरभगकी तरह हो जाता है।

क्रम—३री शक्ति।

फारमुला-जर्मनी—१, अमेरिकन—३।

विनका माइनर।

(VINCA MINOR)

(एक तरहके छोटी जातिके गाछसे टिंचर तैयार होता है)

एक प्रकारका चर्म्म-रोग (एकजिमा), माथेमें एकजिमा—उसमें बहुत अधिक खुजलाहट होती है, बदबूदार रस निकलता है, केश चिपक जाते हैं, फाइब्रायड-टियुमरसे रक्तस्राव, बहुत ज्यादा परिमाणमें मासिक रज स्राव, ऋतु बन्द होनेकी उमरमें लगातार रक्तस्राव प्रभृतिमें भी इसका व्यवहार होता है।

चर्म्म-रोग—ग्रेफाइटिस अध्याय देखिये।

क्रम—१ म—६ ठी शक्ति। फारमुला—२।

वायोला ओडोरेटा।

(VIOLA ODORATA)

(एक तरहके क्षुद्र-जातीय गाछसे टिंचर तैयार होता है)—कानमें पीव, कानके भीतर तीर वेधनेकी तरह दर्द, कानके भीतर सो-सो आवाज, बहरा हो जाना प्रभृति कई कानकी बीमारियोंमें—बालक-बालिकाओंके क्रिमि-रोगमें और साँप काटने तथा मधु-मक्खीके काटनेपर इसका व्यवहार होता है।

बादकी दवा (follows well)—बेल, चायना, क्लोरैल, नक्स, पल्स।

क्रियानाशक—(antidote) कैम्फर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—२—४ दिन।

क्रम—φ—६ ठी शक्ति। फारमुला—३।

वायोला ट्राइकलर।

(VIOLA TRICOLOR)

(एक प्रकारके क्षुद्र गाछसे टिंचर तैयार होता है)—यह एकजिमाकी कडी बीमारीमें और स्वप्न देखकर स्वप्नदोष, पाखाना पेशाबके समय अनजानमें वीर्य निकल जाना—(स्पर्मा-

-टोरिया) लिङ्गाग्र-चर्मका फूलना, लिङ्गमुण्डका फूलना, खुजली प्रभृति कितनी बीमारियोंमे प्रयोग करनेपर बहुत फायदा होता है।

एकजिमा—माथा, मुँह और कानके पीछेका एकजिमा, बहुत खुजलाता है, जलन होती है, रस टपकता है। Eczema imp-etigonoides of the face (इम्पेटाइगो...) (इ‍ैफाइटिस अध्याय देखिये)।

बादकी दवा (follows well)—रस, पल्स, सिपि, स्टैफि।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, मार्क, पल्स, रस।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—८—१४ दिन।

क्रम—३—३० शक्ति। फारमुला—२।

वाइपेरा।

(VIPERA)

(जर्मनीके एक तरहके साँपके विषसे तैयार होता है)—शिरा-प्रदाह और शिराका बहुत अधिक फूलना (phlebitis), शिरा-प्रसारण (varicosis), यकृतका बढना, अन्ननलीका शोथ, और सूजन, हृत्पिण्डके कपाटकी बीमारीमे काम्पेन्सेसन फेल और जहाँ डिजिटेलिससे फायदा नहीं होता, छाती मानो खिंचा जाती है, इसलिये श्वासमे बहुत तकलीफ होती है , नाभीकी जडमे दर्द , हाथ, जीभ और दाहिनी आँखका फूलना और स्त्रियोंका रजःस्राव

बन्द होनेकी उमरमे बहुत ज्यादा रक्तस्राव या किसी दूसरी तर
की बीमारीमे यह ज्यादा फायदा करता है। एक चिकित्सक
कथन है —

एक वृद्धा स्त्री—उमर प्राय ६५ वर्ष, जरायुमे क्या हो ग
था, ठीक समझमे न आता था, बीच बीचमे अक्सर रजस्
होता था। एक दिन एकाएक उसे इतना ज्यादा रजःस्राव हु
कि उसे शीत आ गया, यह मूर्च्छित होकर शय्याशायी हो गयी
रोगिनीको कार्बो, सैबाइना, ग्लाटिना प्रभृति कई दवाएँ
तीन दिनोतक वृथा ही खिलायी गयीं, कोई फायदा न हुआ
अन्तमें वाइपेरा १२ वी शक्तिकी कई मात्राएँ सेवन करनेप
३६ घण्टोंमे स्रावका परिमाण क्रमश घटकर दो दिनोमे ही रज
स्राव बन्द हो गया। इसके बाद प्रतिमास एक मात्राके हिसाबसे
३।४ महीने—वाइपेरा सी-एम० शक्ति प्रदान करनेपर बीमार
सम्पूर्ण आरोग्य हो गयी और रोगिनी स्वस्थ हो गयी।

क्रम—निम्न और उच्च दोनो प्रकारकी शक्तियाँ फायद
करती हैं।

फारमुला—८।

विस्कम एल्बम ।

(VISCUM ALBUM)

(फल और पत्तेसे इसका टिंचर तैयार होता है) वात, गठिया-वात, प्रमेह, प्रमेहकी वजहसे वात, स्नायुशूल, दोनों ओरका सायेटिका, वात रोगियोंका दमा और खाँसी, हृदकपाटका दर्द, हाइपरट्राफी (हृत्पिण्डका बढ़ना), वैल्वूलरका दर्द, कम्पेन्सेशन फेलिंग (failing compensation) बहुत कलेजा धड़कना, श्वासकृच्छ्रता, बायीं ओर सोनेमें अक्षमता, कलेजा बहुत भारी मालूम होना, कभी भी एक स्थानपर बहुत देरतक नहीं रह सकना, High blood pressure प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें इसका व्यवहार होता है ; बायें कानका भारी मालूम होना, यह उसकी अच्छी दवा है ।

केलि आक्सैलिकम (Kali Oxalicum)—६ ठी शक्ति, लम्बेगो (कटिवात), कमरमें दर्द, बहुत तकलीफ (रसटक्स देखिये) ।

क्रम—φ—३० शक्ति । फारमुला—७ ।

जिङ्कम मेटालिकम ।

(ZINCUM METALLICUM)

(जिङ्क धातु जस्ता—इससे ट्राइटुरेशनके आकारमें पहले दवा तैयार की जाती है)—मस्तिष्क और मेरुदण्डपर इसकी प्रधान

बच्चोंका हैजा—दस्त कैके साथ तकियेपर लगातार माथा इधरसे उधर हिलाना, हाथ-पैर पटकना, मस्तिष्कमें जल-सचय (हाइड्रोकेफालस) का सन्देह और मेनिंजाइटिस इत्यादि लक्षणोंमें—जिङ्कम विशेष उपयोगी है। इसके अलावा जब पाखाना पेशाव सभी बन्द रहता है, इसके साथ ही ऊपर लिखे मस्तिष्कके लक्षण सब प्रकट होते हैं या एक बार पेशाब होकर उसके बाद उक्त प्रकारके मस्तिष्क लक्षणोंके साथ—छटपटी, प्यास, हाथ-पैर और समूचा शरीर ठण्डा, केवल छाती और पसलियाँ गरम, ये सब भयानक लक्षण यदि प्रकट हो, तो तुरन्त जिङ्कम प्रभृतिका प्रयोग करना होगा। एसिड-कार्बोलिक और मोनो-ब्रोमाइड आफ कैम्फर—इस तरहकी अवस्थामें भी विशेष लाभदायक है (कैलि-ब्रोम)। कैम्फोरा-मोनो-ब्रोम—बच्चोंके हैजाकी हिमाङ्ग अवस्थाके मस्तिष्कके लक्षण सब जैसे—विकार भाव, अकड़न, खींचन, इत्यादि लक्षणोंमें भी इसकी तरह लाभदायक दवा बहुत ही कम पायी जाती है और जो इसका एक बार व्यवहार करेंगे, सम्भवतः वे उसे फिर भूल न सकेंगे। क्रम—२x—३x शक्ति। बच्चोंके दाँत निकलनेके समयकी बीमारीमें लगातार सिर हिलाना, चौंक उठना, लगातार पैर हिलाना, इत्यादि लक्षणोंमे भी जिङ्कम फायदा करता है।

हाइड्रोकेफालस—(मस्तिष्कमे जल-सचय)—बच्चों-के हैजामें उपसर्गरूपमें यह बीमारी होनेपर, उसमें जिन-जिन

लक्षणोंमें इसका व्यवहार होता है, वे ऊपर बताये जा चुके
यदि उसमें हैजा न होकर, रोग स्वाधीनरूपसे (idiopatl
किसी दूसरी बीमारीके उपसर्गके रूपमें हो जाये, उस
टियुबर्क्युलर मेनिञ्जाइटिसमें यदि बच्चेको कुछ आच्छन्न भ
जाये और वह डर जानेकी तरह चिल्ला उठे, लगातार रोये,
काँपना, हमेशा पैर हिलाना प्रभृति कितने ही लक्षण, क
(खींचन) होनेके पहले या बाद दिखाई दे, तो—जिङ्कमक
करना चाहिये (कैलिब्रोम और उसके अध्यायमें मेनिः
देखिये) ।

जिङ्कम-ब्रोमेटम—मस्तिष्कमें जल-सञ्चयकी वं
ऊपर लिखे लक्षण रहनेपर और जिङ्कम मैटालिकके इन सब ल
के रहनेपर भी अगर लाभ न हो, तो इससे फायदा होगा ।
क दाँत निकलनेके समय हाइड्रोकेफालस होनेपर इससे ब
ज्यादा फायदा होता है । हाइड्रोकेफालसमें—छटपटीके बाद
बच्चा एकाएक बेहोश और अघोर भावसे पड़ा रहता है, उस
इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है । दाँत निकलनेके
ज्वर और इसी वजहसे उत्पन्न मस्तिष्क लक्षणमें भी यह
उपकारी है ।

क्रम—६x,—६—३० शक्ति ।

<u>एपोसाइनम-कैन</u>—३०, २०० वीं—हाइड्रोकेफालसकी
वाली अवस्थामें जब बच्चेकी अस्थिरता चिल्लाना प्रभृति उपर
रहकर, वह अज्ञान और अघोरकी तरह पड़ा रहता है, पेशाब

रहता है या बहुत थोडा होता है, प्यास रहती है, पाकस्थलीमें उत्तेजना रहती है, अर्थात् बीच बीचमें वमन और दस्त होता है, उस समय इससे फायदा होता है। बच्चोंकी इस ढङ्गकी अवस्था बहुत ही सांघातिक अवस्था है। इसमे अक्सर मृत्यु होती है।

मेनिञ्जाइटिस—(मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह) इस बीमारीमे मस्तिष्कमे जल-सचयकी तरह मस्तिष्कमे पानी नहीं इकट्ठा होता, बल्कि मस्तिष्कको ढकनेवाले पर्देमे प्रदाह हो जाता है। किसी तरहका चर्म-रोग बेठकर या बच्चोको दाँत निकलनेके समय यह बीमारी होनेपर और उसमें एकदम बेहोशी, अकडन, खींचन, कम्पन, डेरा देखना प्रभृति उपसर्ग सब रहें तो जिङ्कम लाभदायक है (एकिया-रेसिमोसा देखिये)। फेफडेकी किसी बीमारीके साथ मेनिञ्जाइटिस होनेपर—जिङ्कम-फास, कैलि-आयोड, और छोटी माता, खसडा वगैरह बीमारियोके उपसर्गके रूपमे मस्तिष्कका लक्षण प्रकट होनेपर—कूप्रम-मेट, कूप्रम-सल्फ फायदा करता है।

जिङ्कम सियानेटम—बच्चोका मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क-झिल्ली-प्रदाह), टकार और सेरिब्रो-स्पाइनल मेनिञ्जाइटिस (मस्तिष्क-मेरु-मज्जाका प्रदाह) की यह एक उत्कृष्ट दवा है। अगर जिङ्कम मेटालिकमसे फायदा न हो, तो उस स्थानपर इससे फायदा होगा। हिस्टिरिया, कोरिया (ताण्डव) और पैरालिसिस एजिटैन्स (सकम्प पक्षाघात) की बीमारीमें भी यह फायदा करता है। क्रम—६x—३० शक्ति।

जिङ्कम-सल्फ्युरिकम—मेनिंआइटिस और कान्वलशन (अकडन) की जितनी चुनी हुई दवाएँ हैं, इस दवाको मैं सबसे श्रेष्ठ स्थान प्रदान करता हूँ। इसके प्रयोगसे रोगका प्रधान उपसर्ग कम्पन और खींचनमें बहुत जल्द फायदा होता है। मेनिंआइटिस बहुत ही प्राणघातक बीमारी है, इसमें सैंकडे ९० रोगियों की मृत्यु हो जाती है। यह मालूम होते ही कि मेनिंआइटिसकी बीमारी है, माथा मुडवाकर, अकडन जबतक न घट जाये तबतक लगातार माथेपर बरफ रखें (आइसबैग) या पानी ढालनेकी व्यवस्था करें और किसी भी दवाका विशेष लक्षण अगर न मिले तो—जिङ्कम-सल्फ—३० या २०० शक्ति, २।३ घण्टेके अन्तरसे २।१ मात्रा देकर अपेक्षा करे कि क्या नतीजा होता है। सर-दर्द में—३ x विचूर्ण फायदेमन्द है। बच्चोंकी मेनिंआइटिसमें—बेल, साइक्यू, कूप्रम, हेलिबोर, एपिस, ग्लोनोयिन, उद्भेद बैठकर—बेल, रस, एपिस, लैके, कानमें पीब बन्द होकर—पल्स, सल्फ।

इस बीमारीमें लक्षणके अनुसार और भी कई दवाएँ व्यवहृत होती हैं। उनकी सूची :—

टियुबर्क्युलर मेनिंआइटिस—(यह बच्चोंको होता है)—बीमारी जल्दी जल्दी बढती है—एपिस ; धीरे धीरे बढती है—जिङ्कम, हेलिबोर, बेहोशीमें सरकी ओर हाथ उठाता है—हेलिबोर, एपिस ; चिल्लाता है—हेलिबोर, एपिस, जिङ्कम, माथा खुजलाता है, माथेपर हाथ रखता है—कैलि-फास ; दाँत [illegible]

मड़ाता है—टियुवक्युं ; कपाल सिकोड़ता है—स्ट्रैमो ; चुपचाप पड़ा रहता है, हिलता नहीं है—एपोसाइनम, आर्टिमिसिया ; अधिक प्यास—एपोसाइनम, टियुवक्युं, आर्टिमिसिया ; कानका पीव बन्द होकर बीमारी—मर्कुरियस, स्ट्रैमो, पल्स, सल्फ ; खींचनमें अंगुली अलग हो जाना—एपिस ; अंगूठा मुट्ठीमें—हेलिबोरस।

सेरिब्रो-स्पाइनल—बीमारी आरम्भ होते ही खींचन—ग्लोनोयिन, प्लम्बम, ओपि ; कई दिनोंतक कोई बीमारी भोगनेके बाद—साइक्यू , अर्द्ध-अज्ञानावस्थामें चित होकर सोया रहता है—हेलिबोर , दोनो भवें हिलाता है , एक ओरका हाथ-पैर हिलाता है, दूसरी ओरका हाथ-पैर स्थिर—हेलिबोर , शरीरमें हाथ छुलाते ही खींचन—साइक्यु , माथा गरम, हाथ-पैर ठण्डे—ग्लोनोयिन , आँख घूमती है, माथा गरम—बेलेडोना ; किसी एक तरफ गर्दन टेढी पड जाती है—मर्कुरियस , सब तरहका मेनिञ्जाइटिस—सिमिसि, इसके बाद मेडोहिनम—उच्च शक्ति। पेट फूला रहनेपर—मेड्रोहिनमके बाद—लाइको , आँख लाल रंगकी रहनेपर—बेलेडोना , ब्राङ्काइटिसके साथ—कैलि-आयोड, जिङ्क-फास।

जिङ्कम-वैलेरियाना—इनेशिया अध्यायमें देखिये।

कम्पन—कोई कड़ी बीमारीमें सारे शरीरका काँपना रहनेपर—जिङ्कम-मेट फायदा करता है। एक टाइफायड-मेनिन-

माइटिस रोगीको ऐलोपैथगणने hopeless कह कर छोड दिया। उसमे रोगीका समूचा अग कांपता था। पहले जिङ्कम-मेट २०० शक्ति प्रदान की गयी, पर उससे कोई ज्यादा फायदा न होनेपर, अन्तमें—अर्जेण्टम-नाइट्रिकम—२०० शक्तिकी दो गोलियाँ पानीमें मिलाकर सेवन करानेके ८ घण्टा बाद कम्पन आदि सभी गुरुतर उपसर्ग गायब हो गये और उस दिन रोगी निर्विघ्न चुपचाप सोया। तथा दूसरी दूसरी दवाओंके प्रयोगसे एक सप्ताहमे बीमारी एकदम आरोग्य हो गयी। शरीरका निम्नाङ्ग खासकर पैरका लगातार हिलना, ये लक्षण चाहे जिस बीमारीमे रहें—उसमें जिङ्कम-मेटसे फायदा होगा।

ज्वर-विकार—विकारके प्रधान कारण दो हैं —१। मस्तिष्कमें रक्तसचय, २। मस्तिष्कमें उपदाह या पक्षाघात। पहले बताये कारणसे विकार होनेपर—आँख सफेद रहा करती है। जहाँ बीमारीमें—रोगीकी आँख सफेद रहे, उसके साथ ही हाथ-पैर या समूचे शरीरमे कम्पन हो, वहाँ—जिङ्कम ही एकमात्र दवा है। जिङ्कममें—मस्तिष्कमे पक्षाघात उत्पन्न होकर विकार होता है। रक्तसचयकी वजहसे विकारमे अगर आँख लाल रहे और यदि उसके साथ ही हाथ-पैरमे कम्पन रहे—तो जिङ्कम बिलकुल ही फायदा न करेगा, दूसरी दवाकी जरूरत होगी। रक्तसचयकी वजह से बीमारीमे, रोगीके माथेपर आइस-बैग देना बहुत जरूरी है। जिङ्कमकी बीमारीमे आइस बैगकी बिलकुल ही जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि उससे हानि होती है।

दूसरी दूसरी कई बीमारियाँ—सन्ध्यामे पेट फूलने के साथ शूलका दर्द, पुराना रक्तामाशय, फ्लोटिङ्ग किडनीके उपसर्गकी वजहसे बीमारी, मूत्राशयका पक्षाघात इत्यादि।

मुद्रादोष—शायद आपलोगोंने देखा होगा, कि कितने ही मनुष्योंको ऐसा बुरा अभ्यास रहता है। वे खडे हों या कुर्सी अथवा बेंचपर बैठे हों या गाडीमे बैठे हों, लगातार पैर हिलाया करते हैं, किसी तरह भी स्थिर नहीं रह सकते। सोये सोये भी कितनी ही बार पैर हिलाया करते हैं। लोग इसे मुद्रा-दोष कहते हैं। जिङ्कम इसकी श्रेष्ठ दवा है।

अतिसार—अतिसार, आमाशय और बच्चोंके हैजाकी बढी हुई अवस्थामे—जिङ्कमका प्रयोग होता है। जभी ठीक सर नहीं रख सकता, चेहरा बदरंग, ज्वर नहीं है, मस्तिष्कमे जलसंचयकी तैयारी हो रही है उसी समय एक बार इस दवाको स्मरण करे (एपिस और हेलिबोरस अध्याय देखिये)। जिङ्कममे पेट खूब गडगडाया करता है।

जिङ्कममे—मलका रंग हरा, मलके साथ आम और कभी कभी कूथन भी रहती है, एकाएक दस्त बन्द होकर मस्तिष्कके लक्षण पैदा हो जानेपर—इससे बहुत ज्यादा फायदा होता है। अतिसारमे—मलद्वारमे बडत कुटकुटाहट होती है। ऐसा मालूम होता है, क्रिमि हो गयी है, पाखाना होनेके समय मलद्वारमे जलन होती है।

शिराओंका फूलना—किसी भी कारणसे शिराका रक्त एक ही जगहपर अगर अधिक देरतक जमा रहे और शिराएँ सब फूल उठें, तो इसको ही वैरिकोज-वेन्स या शिरास्फीति कहते हैं। इस बीमारीमें शरीरका निम्न-अंग अर्थात पैर फूलनेपर और वह सूजन योनितक चली जानेपर—जिङ्कम फायदा करता है। रोगकी नयी अवस्थामें—पल्सेटिला फायदा करता है। बीमारी कुछ पुरानी होनेपर—पल्सेटिलाके बाद जिङ्कमसे ज्यादा फायदा होता है।

सुरसुरी—पैर और पैरके तलवेमें सुरसुरी होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पैरपर खटमल चल रहा है, उससे नींदमें बाधा पडती है।

आँखकी बीमारी—आँखोंका प्रदाह, आँख लाल हो जाती है, पानी गिरता है, करकराती है। मानो बालू गिर गयी है, रोशनी सह्य नहीं होती। किसी भी आँखकी बीमारीमें जलन, यन्त्रणा, करकराहट इत्यादि उपसर्ग सवेरे या शामके बादसे बढ जायें और रातमें बहुत बढे तो—जिङ्कम बहुत फायदा करता है।

वृद्धि (aggravation)—शराब पीनेपर, छूनेपर, शरीर हिलानेपर, परिश्रमसे, सन्ध्यामें, रातमें, दिनके ११ से १२ बजेके बीचमें, गर्म घरमें, मिष्टान्न खानेपर, दूध पीनेपर।

ह्रास (amelioration)—स्रावके आरम्भमें, मलनेपर, खुजलानेपर और भोजनके समय।

सम्बन्ध—मस्तिष्कमें जल-सचयमें—कैलि-फास, बेलेडोनासे और—कैल्केरिया, सिङ्कोना, फास, पल्स, रस, सिपि और सल्फ के साथ तुलना करनी चाहिये।

क्रिया-नाशक (antidote)—कैम्फर, हिपर।

क्रियाका स्थितिकाल (duration)—३०—४० दिन।

क्रम—२०—२०० शक्ति। फारमुला—७।

जिञ्जिबार।

(ZINGIBER)

(अदरक या आदा, सूखी अदरकसे टिंचर तैयार होता है)—श्वास-प्रश्वास-सम्बन्धीय यन्त्र और आंत, पाकस्थली प्रभृतिपर इसकी प्रधान क्रिया होती है। स्वरयन्त्रकी उत्तेजना, गला फँसना, खाँसी और सवेरेके समयका सर-दर्द, मिचली, वमन, पाकस्थली बहुत भारी मालूम होती है। ऐसा मालूम होता है, मानो पत्थर भरा हुआ है। पेट फूलना, दर्द, उदरामय प्रभृति कितनी ही बीमारियोंमें और लक्षणोंमे इसका व्यवहार होता है। गन्दा दूषित पानी पीनेके कारण अगर अतिसार हो जाये और शराबियों के वमनमें इससे बहुत फायदा होता है। तरबूज खाकर अतिसार, पेटकी गड़बड़ी। दमाके कष्टकर उपसर्ग, सध्यासे बढ जाते हैं, रोगी सो नहीं सकता, बैठा रहता है।

क्रियानाशक (antidote)—नक्स ।

क्रम—१—६ शक्ति । फारमुला—७ ।

जिज़िया ।

(ZIZIA)

(एक तरहके गाछसे टिंचर तैयार होता है)। मृगी और ताण्डव रोगमें (Chorea) इसका व्यवहार होता है। मुँहकी पेशी का आक्षेपिक स्पन्दन, अन्यान्य पेशियोंका स्पन्दन , रातमें निद्रितावस्थामें अगर बढे तो अन्यान्य दवाओंकी अपेक्षा इससे ज्यादा फायदा होता है।

क्रम—निम्न शक्ति। फारमुला—३ ।

रोग और उनकी दवाएँ ।



इसी सूचीमें संक्षिप्त रूपसे विभिन्न रोगोंकी औषधियाँ तथा पृष्ठ-संख्याका उल्लेख किया गया है, पूरा विवरण इस ग्रन्थके अध्ययनसे ही प्राप्त होगा ।

अकड़न

अकौता ।

अङ्ग-प्रत्यङ्गका दर्द ।

अजीर्ण ।

अँगुलवेढ़ा ।

अण्डकोषकी बीमारी ।

अण्डकोष प्रदाह ।

अण्डकोषमें जलसंचय ।

अतिसार और आमाशय

अनुकल्प रजः।

अम्लकी बीमारी।

अम्लशूलका दर्द।

स्वच्छत्वचा या कनीनिका जखम।

आँखोंका प्रदाह या आँखका उठना।

आँखमें स्नायविक रोग।

आँखमें दिवांधता या दिनौंधी।

आँखमें रात्र्यन्धता या रतौंधी ।

आँखकी पलकें फड़कना ।

आँखमें दर्द ।

आँखमें अंजनी या गुहौरी ।

आमवात ।

आमाशय और रक्ता-माशय ।

इन्फ्लुएंजा ।

आमाशय और रक्ता-माशय ।

इन्फ्लुएंजा ।

उदरशूल ।

(गैस्ट्राइटिस, ग्रैस्ट्रैलजिया)

उदरी रोग ।

उन्माद रोग ।

उपजिह्वाका फूलना।

उपदंश या गर्मीका जखम।

उरु-सन्धिकी बीमारी।

ऋतुस्राव-संबंधी दोष।

ऋतु-शूल या वाधकका दर्द।

एपेण्डिसाइटिस।

कण्ठनालीका आक्षेप

कब्जियत।

कटिवात।

कम्पन ।

कानकी बीमारी ।

कानका दर्द ।

कोयलेके धुएँसे दम घुटना।

क्रिमि।

क्रूप खाँसी।

खाँसी।

खाँसी सूखी ।

खाँसी तर ।

खाँसी हूप।

खुजली।

गर्भावस्थामें वमन ।

गलकोषका प्रदाह ।

(लैरिञ्जाइटिस)

गलगण्ड (घेघा)

गलनलीको बीमारी ।

गलेके भीतरकी बीमारियाँ ।

चेचक।

चेहरेका स्नायुशूल

चोट।

जलन।

जलातङ्क रोग।

जले घाव।

जीभकी बीमारी।

जीभका कैन्सर।

जीभके जखम।

जीभका पक्षाघात।

ज्वर।

ज्वरमें छाले।

टंकार या अकड़न।

साइक्यूटा विरोसा	८२५
इपिकाकुआन्हा	८४३
स्टैमोनियम	१३६२
वेरेट्रम विरिडि	१४३६
एब्सिन्थियम	३०
कास्टिकम	५०३
कासिया	१२४७
इथूजा	१२१
क्यूप्रम मेटालिकम	६४४
साइमिपीडम	६५६
हायोसियामस	८२४

टाइफायड या वात-श्लेष्मा ज्वर।

(ज्वर-विकार)

एसिड म्यूरियेटिकम	५३, २७६
एसिड नाइट्रिकम	६५
एसिड फास्फोरिकम	७६
एगरिकस मस्केरियस	१२७
एल्यूमिना	१६१
एइलान्थस	१३६
एपिस मेलिफिका	२२८
आर्निका माण्टेना	३८१
आर्सेनिकम एल्बम	२७६
बैप्टिसिया टिङ्कटोरिया	३२७
सिमिसिफ्यूगा	११०
वेलेडोना	३४८
ब्रायोनिया एल्बा	३८१
सिना	५४४
कार्बो वेजिटेबिलिस	२७६
काकुलस इण्डिका	५७८
कोलचिकम आटमनेल	५६४
जेलसिमियम सेम्परविरेन्स	७३६
हेलिवोरस नाइजर	७८४
हैमामेलिस	२८०
लैकेसिस	६५३
लाइकोपोडियम क्लैवेटम	१००३
मिफाइटिस	१२८
नक्स मस्केटा	११२१
ओपियम	११७
फास्फोरस	११८६
रस टाक्सिकोडेण्ड्रन	१२६७
लेप्टेण्ड्रा	२८
मर्क्युरियस सल्फरिकस	

डिप्थीरिया ।

डिम्बकोषकी बीमारियाँ।

डिम्बकोषका अर्बुद ।

डिम्बकोषका प्रदाह ।

दर्द।

दाँतकी बीमारी ।

दाँतसे रक्तस्राव।

दाँतका दर्द और घाव।

दाँतका नासूर।

दाँतके मसूढ़े फूलना।

दाँतकी जड़ अलग होना।

दाँत कड़मड़ाना।

दाँत देरसे निकलना।

दाँतमें कीड़े लगना।

दाँत हिलना।

दाँत निकलनेके समयकी बीमारियाँ।

दाद।

दूधका बोखार।

दुर्बलता।

धनुष्टङ्कार।

धवलकुष्ठ।

धुध-दृष्टि।

ध्वजभंग।

नाककी बीमारी।

नाकका जखम।

नाकसे रक्तस्राव।

नाड़ी।

निद्रा।

निमोनिया—ब्रांको-निमोनिया,ब्रांकाइटिस।

नींदमें स्वप्न या भय।

पसीना।

पक्षाघातकी बीमारी।

पाइमिया (पीब-ज्वर)

पाकस्थलीकी बीमारी।

परेका घाव।

पथरीकी बीमारी।

पित्त-पथरी।

मिक्रोमेरिया कैलिफोर्निया ६६६
टेरिविन्थिना १४६०

पैर फूलना।

लैथाइरस सैटाइवस ६६४

पैरके तलवेकी बीमारी।

एण्टिमोनियम क्रूडम २०५
मैगेनम-म्यूरियेटिकम २०५
नैट्रम फार्वोनिकम १०८८
मैगेनम एसेटिकम १०२३
...फाइटोलैका १०२३
...डिम पैलस्टर १२०२
...रङ्ग स्टिस ६७४
...कार्डियम ओरियएटेलि ८१३
... ८१३

प्रदर रोग।

[श्वेत-प्रदर]

...त फैक्टस १३५
...यम फार्वोनिकम १७२
...नेन २२४
... नाइट्रिकम २६०
... रेसिमोसा २५०
... ३६६

बोविस्टा १५०३
कोनियम मेकुलेटम ३७४
ग्रैफाइटिस ६१६
पैलेडियम ७६१
सिपिया ११६१
एलेट्रिस फेरिनोसा १३२१
कै ल्केरिया फार्वोनिका १३७
काल्कोफाइलम ४१०
क्रियोजोटम ४६६
पल्सेटिला नेगरीकैन्स ६२६
म्यूरेक्स पर्पूरिया १२३६
मर्कुरियस सोल्यूबिलिस १०७८
१०४२

[रक्त-प्रदर]

हैमामेलिस ७७७
काल्कोफाइल्म ४६६
फेरम मेटालिकम ४०७, ७११
वाइवर्नम ओपुल्स १३८६
प्लाटिनम मेटालिकम १२०७
सिकेलि कोर्णुटम ४६७
मिचेला रिपेन्स १०७१
साइक्लामेन युरोपियम ४६७
... ...

प्रसूतिका टङ्कार।

प्रसवके बाद अधिक रक्तस्राव।

प्रमेह या सूजाक।

प्रसवका दर्द।

प्रसवके वादका दर्द।

प्रसवके वादका क्लेद-स्राव।

प्रसूतिका टङ्कार।

प्रसवके बाद अधिक रक्तस्राव।

प्रमेह या सूजाक।

प्रादाहिक रोग।

प्लीहा बढ़ना।

प्लुरिसि।

[वक्षावरक झिल्ली प्रदाह]

प्लुरोडाइनिया।

प्लेग।

फुन्सी फोड़ा।

फूल अटकना।

फेफड़ेकी बीमारी।

फेफड़ेका शोथ।

फेफडेकी वायुस्फीति।

फैरिन्जाइटिस ।

फोड़ा ।

वकवादीपन ।

बच्चोंको दाँत निकलनेके समयकी बीमारी ।

बच्चोंका पक्षाघात।

बच्चोंकी पेशाबकी बीमारी।

बच्चोंका वमन।

बच्चोंका हैजा।

बवासीर।

बहरापन।

बहुमूत्र।

वाघी ।

वात ।

सन्धिवात ।

बिछावनमें पेशाब ।

बिवाई फटना ।

बेरी-बेरी ।

व्रण ।

मस्तिष्क झिल्ली-प्रदाह।

[मेनिञ्जाइटिस]

[ट्युबरक्युलर]

[सेरिब्रोस्पाइनल]

[अन्य मस्तिष्क झिल्ली प्रदाह

स्तिष्कमें रक्तसञ्चालन।

मस्तिष्ककी रक्तशून्यता।

मस्तिष्ककी क्रिया लोप।

मस्तिष्ककी क्लान्ति।

मानसिक लक्षण।

मिचली।

मुँहकी बीमारी।

मुँहका घाव।

मुँहसे लार बहना।

मुँहका पक्षाघात।

मुँहासा।

मूत्र-रोग।

मूलमें रक्त।

मूलमें अण्डलाल।

मूत्र-विकार।

मूत्रनलीका-प्रदाह।

[प्रदाहकी दवाएँ देखिये]

मूलनलीका सङ्कोचन ।

[स्ट्रिक्चर]

मूलग्रन्थि प्रदाह ।

[प्रावाहिक रोग देखिये]

मूलनाश ।

मूत्राशय प्रदाह ।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थि-प्रदाह ।

मूत्राशय-मुखशायी-ग्रन्थिकी विवृद्धि ।

मूलाशय-मुखशायी-ग्रन्थिसे रसस्राव।

मूर्च्छा।

मूर्च्छावायु।

[हिस्टीरिया देखिये]

मृगी।

यक्ष्मा या थाइसिस।

योनिप्रदाह ।

रजःस्राव और रजःबन्ध।

रजोरोधकी वजहसे बीमारियाँ ।

रक्तस्राव ।

रक्तहीनता ।

रक्तविपाक्त होकर । बीमारी ।

रक्तोत्कास और रक्तवमन ।

राइटर्स-क्रैम्प।

[हाथ-काँपना]

रेकाइटिस।

लिङ्गाग्रचर्मका फूलना या चमड़ी रोग।

वक्षस्थलके रोग।

वमन।

आर्निका माण्टेना	२७१
डिजिटेलिस परपुरिया	६६६
फेरम मैटालिकम	७१३
फास्फोरस	११८६
पोडोफाइलम पेल्टेटम	१०२२
सिम्फोरि-कार्पस	६३२

वायुगोला।

चायना या सिङ्कोना	५४८
पल्सेटिला नैगरिकेन्स	१२३४
एपिस नाइग्रा	१४

वायुपित्तकी बीमारी।

नैट्रम-सल्फरिकम	१११३

विसर्प या इरिसि-पिलस।

एपिस मैलिफिका	२२६
कैन्थरिस वेसिक्यूलेरिस	४५६
लैकेसिस	६४८
रस टाक्सिकोडेण्ड्रन	१२६५
इयुफोर्बिया	७०१
पल्थ्रासिनम	१६५

विकार।

बेलेडोना	३४८
रस टाक्सिकोड्रेण्डन	१२६७
बेप्टीशिया	३०६
इयुफोर्बियम	७०१
एसिड फास्फोरिकम	७६
लैकेसिस	६४५
एगरिकस मस्केरियस	१२७
हेलिबोरस नाइजर	७६१
एपिस मैलिफिका	२२८
आर्निका माण्टेना	२६६

वीर्यपात या रेतःस्खलन।

[शुक्रस्खलन]

डिजिटेलिस परपुरिया	६६६
मस्कस	१०७६
कोनियम मैकुलेटम	६१७
सैलिक्स नाइग्रा	१२८८
एल्यूमिना	१६२
वायोला ट्राइकलर	१४३८
सेलिनियम	१३१२
नूफर लूटियम	१११८

शिरा फूलना या शिरा-स्फीति।

शूल का दर्द।

सरमें चक्कर।

सर्दी।

श्वासरोध।

श्वासनलीमुखका आक्षेप

सर-दर्द।

इपिकाकुआन्हा	८५७
कैलि बाइक्रोमिकम	८७५
लैक डिफ़्लोरेटम	६३७
मैग्नेशिया फास्फोरिका	१०१६
मिनियैन्थिस ट्राइफो-लियेटा	१०२६
मस्कस	१०७६
नेट्रम म्यूरियेटिकम	१०६५
नक्स-वोमिका	११३८
फैसियोलस नाना	११७२
सैबाडिला	१२८०
सैंगुनेरिया कैनाडेन्सिस	१२६२
सेलिनियम	१२१३
सिपिया	१३२२
साइलिसिया	१३३३
स्पाइजेलिया-पन्थालमिण्टिका	१३३८
नट्रम-म्यूरियेटिकम	१०६५
प्पिजिया रिपेन्स	६६३
स्ट्रैमोनियम	१३६३
थूजा आक्सिडेण्टैलिस	१४०६

सरमें चक्कर।

साइट्रस वलगैरिस	४०
एसिड नाइट्रिकम	६२
एमोनियम कार्बोनिकम	१७३
आर्जेण्टम नाइट्रिकम	२५६
काकुलस इण्डिका	५७६
कोनियम मैकुलेटम	६१५
मस्कस	१०७४
कैडमियम सल्फरिकम	३६७
कैल्केरिया सिलिका	४३०
ग्रैनेटम	७५१
थूजा आक्सिडेण्टेलि	१४०६
आरम मेटालिकम	३१३
कैल्केरिया सिलिका	४३०
चेलिडोनियम मेजस	५२५
सेबाडिला	१२८०
एसिड फास्फोरिकम	७७

सर्दी।

एकोनाइट नेपेलस	६७
एलान्थस	१३६
एलियम सिपा	[illegible]

सर्दी-गर्मी ।

सर्दी—खाँसी ।

स्तन-प्रदाह।

स्तनका अर्बुद।

स्तन-वृन्तका फटना।

स्तनमें दूधकी अधिकता

स्तनमें दूधकी कमी।

स्त्री-रोग।

स्नायु–दौर्बल्य ।

स्नायवीय रोग।

स्नायुशूल।

स्मृति-हीनता।

स्वप्न-दोष।

स्वरभङ्ग।

हिस्टिरिया।

[मूर्च्छावायु]

हृत्पिण्डकी बीमारी।

हृतस्पंदन ।

हृत्शूल ।

[एनजाइना पेक्टोरिस]

हृत्-वृद्धि।

हृत्कपाटका विकार।

हृदावरक झिल्लीप्रदाह।

हैजा।

❀ समाप्त ❀

धातुदौर्बल्य ।

धातु-दौर्बल्य कैसी भयकर बीमारी है, यह किसीसे छिपा नहीं है। एक इस रोगके हो जानेपर अनगिनती बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। मनुष्य एकदम निस्तेज, स्फूर्त्तिहीन और गृहस्थीके अनुपयुक्त हो पडता है। अतएव, आरम्भमें ही उसकी जड काट देना उचित है। इस पुस्तकमें धातुदौर्बल्य उत्पन्न करनेवाले सभी कारणोंको बताकर, उनसे बचनेका उपाय समझाकर, स्वप्नदोष, ध्वजभङ्ग, जननेन्द्रियकी दुर्बलता, हस्तमैथुन और उसका दुष्परिणाम और उसके बादके मानसिक रोग सब अर्थात् धातु-दौर्बल्यके कारण उत्पन्न बीमारियोंका परिचय और उनकी चिकित्सा इतनी खुलासा बता दी गयी है, कि एक अनभिज्ञ मनुष्य भी बहुत सरलता पूर्वक अपनी चिकित्सा है। धातु-दौर्बल्य सम्बन्धी इस ढगके नीति

भावसे लिखी

इसे प्रत्येक

रखना

डा० एन० सी० घोष प्रणीत बङ्ग-भाषाकी पुस्तकें

प्रैक्टिसनर्स गाइड ।

"प्रैक्टिसनर्स गाइड" बहुत ही सरल बंगला भाषामें व्याख्यान-सह लिखी गयी है । इसमें स्टेथास्कोपकी सहायतासे तथा दूसरी जितने प्रकारकी रोग-परीक्षा होती है, वे सभी ज्ञान, रोगका कारण, लक्षण, उपसर्ग, मारात्मक उपसर्ग, रोग भावी-फल, गति, समलक्षणवाली बीमारियोंका प्रभेद-विचार, रोग निर्णय कर, हरेक रोगमें दवाका चुनाव, दवाओंके विस्तृत लक्षण, किसी बीमारीके अन्तर्गत शारीरिक यन्त्रोंका हाल (एनाटोमी), उनकी स्वस्थ और अस्वस्थ अवस्थाकी क्रिया (फिजियालोजी), तथा पिचकारी, डूश, एनिमा, कैथिटर, इनहेलेसन्-गैसका प्रयोग, मलद्वारकी राहसे आहार डालना, पथ्या-पथ्य इत्यादि—सारांश यह कि चिकित्सकको जो कुछ करना और जानना चाहिये, वह सभी इसमें दे दिया गया है । दोनों खण्डोंकी पृष्ठ संख्या—७०० । मूल्य—३॥) रेजिस्टर्ड वी० पी० बुकपोस्टका खर्च ॥=)

कालेरा ट्रिटमेण्ट ।

(with injection)

बंगभाषामें यह नवीन पुस्तक तैयार हुई है । यद्यपि पुस्तकका आकार छोटा और दाम भी कम है, तथापि हैजाके साथ दस्त के-मिली दूसरी दूसरी कितनी ही बीमारियोंके प्रभेद विचारसे लेकर पैलोपैथियोंका सैलाइन-इन्जेक्शन क्या चीज है, उसकी नियमावली, कहाँ किस स्थानपर इन्जेक्शनकी जरूरत पड़ती है, हमलोग होमियोपैथोंको क्या करना उचित है, सैलाइनके बदले एक दूसरी नयी चीजका आविष्कार, और हैजाकी प्रत्येक अवस्थाकी चिकित्सा इस ग्रन्थमें जिस तरह सरल भावसे लिखी गयी है, वैसी किसी दूसरे ग्रन्थमें न मिलेगी । कामकाजी चिकित्सकोंको इससे बहुत लाभ होगा । मूल्य—१)